၄၇၁၆

အရှင်ဇနကာဘိဝံသ

၏

အမှတ်(၂၁)ကျမ်းစာ၊

# ပါရာဇိကကဏ်ဘာသာဋီကာ

ဒုတိယအုပ်

[ ပါရာဇိကကဏ် အဋ္ဌကထာကို နိဿယအဓိပ္ပါယ် စုံလင်စွာဖြင့် တန်ဆာဆင်ထားပါသည်။ ]

၁၃၂၃-ခု

ဂျပ်ထူ အဝတ်ဖုံး
နှုန်း-၁၅၊

နယူးဘားမား ပိဋကပုံနှိပ်တိုက်
အမရပူရမြို့။

# မှတ်ဘွယ်အက္ခရာစဉ် မာတိကာ


အကပ္ပိယကျောင်း ဖျက်ကောင်း .... .... ၅၀၃
အကုပ္ပေန .... .... ၃၅၈
အကြောင်း၏ အကြောင်းလှဲအကြောင်းဘဲ .... .... ၁
အက္ခဒဿာ .... .... ၅၆၀
အက္ခယိတံ .... .... ၄၂၈
အင်္ဂလာပုဒ်၏ ဝိဂ္ဂဟနှင့် ပုဒ်ပြီး .... .... ၄
အင်္ဂါရကာသု .... .... ၂၇၉
အဂါရံ အဇ္ဈာဝသတာ .... .... ၁၉၁
အစိရုပသမ္ပန္နော .... .... ၂၀၄
အစ္ဆရာ, နာဠိကာ .... .... ၂၃၀
အဇ္ဈတဂ္ဂေ .... .... ၇၉
အဇ္ဈိနက္ခိပ .... .... ၄၅၃
အညဝိဟိတ .... .... ၄၂၈
အဋ္ဌီယမာနော .... .... ၃၇၈
အဋ္ဌာနမေတံအဖွင့် .... ... ၃၁၁
အဋ္ဌံကတွာ .... .... ၃၅၂
အဋ္ဌုပ္ပတ္တိယုတ္တံ .... .... ၁၀၅
အဍ္ဍှာ .... .... ၂၀၇
အတ္တနာ၏ ပဋ္ဌမာအနက် .... .... ၂၂၈
အတ္တမသော .... .... ၄၁၄
အတိမညိဿတိ .... .... ၁၁၀
အတ္ထဝသေ .... .... ၂၈၈
အတ္ထသဉ္ဟိတံ .... .... ၁၀၄
အတ္ထသာဓကနိုးခြင်း .... .... ၅၄၇
အတ္ထိအမျိုးမျိုး .... .... ၂၅၁
အတ္ထိနာမ တာတ .... .... ၂၁၇
အဒိန္နာဒါန, မနုဿဝိဂ္ဂဟတို့သုခုမဖြစ်ပုံ .... .... ၃၃၅
အဒ္ဓါနက္ခမာ .... .... ၉၃
အဓိစိတ္တ .... .... ၁၂၉
အဓိဝါသေတု .... .... ၈၁
အနဂါရိယံအဖွင့် .... .... ၁၉၂
အနန္တရပဟိတာယ ဘူမိယာ .... .... ၁၉၉
အနနုဉ္ဉာဝိက်ံစသည် .... .... ၂၆၇
အနပေက္ခဝိသဇ္ဇန(အကပ်ိစ္စနှီ, ဝတ္ထုစ္စနှီ) .... ... ၄၆၃

အက္ခရာစဉ် မာတိကာ


အနဝယော .... .... ၄၉၅
အနာဂတေ လဗ္ဘီ ရက္ခိဿတိ .... .... ၃၂၇
အနာဂတံသဉာဏ် .... .... ၄၃
အနိဋ္ဌကံ .... .... ၁၁၄
အနုကမ္ပံ ဥပါဒါယ .... .... ၄၉၀
အနုတ္တာနပဒဝဏ္ဏနာ .... .... ၃၀၂
အနုပဒဝဏ္ဏနံ .... .... ၁၀၃
အနုပါဒါယ အာသဝေဟိ ဝိမုစ္စိံသု .... .... ၁၃၅
အနုဿရာမိအဖွင့် .... .... ၁၅
အနေကဝိဟိတံကို အနေကဝိဓံဖွင့် .... .... ၁၄
အနောကပ္ပနာမရိသနတ္တ .... .... ၂၁၉
အနောမဗုဒ္ဓိံ .... .... ၃၉၀
အပစ္စက္ခာယ .... .... ၃၇၂
အပိဓာယ န နိသီဒိတဗ္ဗံ .... .... ၄၁၂
အဗ္ဗုဒ, အာဒီနဝ .... .... ၁၅၇
အဗ္ဘောကာသ .... .... ၁၂၅
အဘိက္ကန္တံ .... .... ၆၅
အဘိနီဟာရသမ္ပန္န .... .... ၄၅၃
အဘိယုဉ္ဇတိ (ဓုရံနိက္ခိပတိ) .... .... ၅၄၂
အမလိနံ .... .... ၁၉၀
အယံဝါ၌ ဝါ၏ အဝဓာရဏတ္ထ
အရိယူပဝါဒကံ၏ ဝန်လေးပုံ .... .... ၄၅
အရှင်သာရိပုတြာ၏ သောဠသပညာ .... .... ၁၂၀
အလာဘာဝတစသည် .... .... ၂၄၅
အဝိနိပါတဓမ္မော .... .... ၁၆၀
အဝိသယှတာယ (အဝိသဟတာယ) .... .... ၁၀၁
အသင်္ခတံ, အမတံ .... .... ၃၉၂
အသဏှ (သဏှ) ကထာ .... .... ၄၁၁
အသုစိသင်္ကဿရသမာစာရော .... .... ၃၉၉
အဿုမုခံ ဉာတိပရိဝဋ္ဋံ .... .... ၂၀၃
အသေက္ခော .... .... ၃၅၆
အာကာရ, လိင်္ဂ, နိမိတ္တ .... .... ၄၀၀
အာကုလာ .... .... ၅၄၄
အာဂမေဟိအဖွင့် .... .... ၁၄၄

## မှတ်ဘွယ်အက္ခရာစဉ် မာတိကာ


| အက္ခရာစဉ် | မာတိကာ |
|---|---|
| အာစရိယမနဲ့ .... .... | ၅၃၇ |
| အာစရိယသုဒ္ဓိယာ ဝတ္တာ .... .... | ၃၂၉ |
| အာဏိဂဏ္ဍိကာဟတော .... .... | ၅၅၆ |
| အာဒိတ္တာယစသည် .... .... | ၂၇၀ |
| အာဘိဒေါသိကံ .... .... | ၂၁၁ |
| အာမန္တေသိ,အဘာသိ,သမ္မောဓေသိ .... .... | ၁၆၃ |
| အာမေဍိတံ .... .... | ၆၇ |
| အာယာမ အဖွင့် .... .... | ၁၆၇ |
| အာရညက ဓုတင် .... .... | ၂၀၅ |
| အာရာဓယိံသု .... .... | ၂၃၅ |
| အာရိယာယ ယာစနာယ .... .... | ၃၄၃ |
| အာလယ သမုဋ္ဌိတ .... .... | ၂၅၇ |
| အာလာပ သလ္လာပ .... .... | ၂၀၁ |
| အာသဝက္ခယဉာဏ် .... .... | ၅၅ |
| အာသဝဋ္ဌာနီယဓမ္မ .... .... | ၁၄၅ |
| အာသဝါနံ .... .... | ၂၀၄ |
| အာသီဝိသ .... .... | ၂၆၉ |
| ဣဋ္ဌာဝစာရ .... .... | ၁၀၉ |
| ဣဏာယိကေဟိ .... .... | ၂၂၅ |
| ဣတိဟ တေန ခဏေန .... .... | ၂၄၃ |
| ဣတောနိဒါနံ .... .... | ၂၇၂ |
| ဣဿာပကတာ .... .... | ၄၂၅ |
| ဣသိဂိလိ .... .... | ၄၀၀ |
| ဥက္ကဋ္ဌ ပိဏ္ဍပါတိက .... .... | ၂၀၉ |
| ဥက္ကဏ္ဌိတော .... .... | ၃၇၇ |
| ဥစ္ဆာဒန, နှာယန .... .... | ၂၀၃ |
| ဥဋ္ဌေန ပဂ္ဂဟေန .... .... | ၈၉ |
| ဥဇ္ဈာယန္တိ, ဝိပါစေန္တိ .... .... | ၅၂၁ |
| ဥတ္တမတ္ထံ .... .... | ၃၁၃ |
| ဥဒုက္ခလ .... .... | ၁၀၉ |
| ဥတ္တရာပထကာ .... .... | ၉၁ |
| ဥတ္တာနတ္ထံ .... .... | ၁၀၃ |
| ဥဒ္ဒါနဂါထာ .... .... | ၄၅၁ |
| ဥဒ္ဒိသေယျာထစ .... .... | ၃၀၀ |

အက္ခရာစဉ် မာတိကာ


ဥဒုက္ခလံ .... .... ၉၇
ဥဒ္ဒမ္မံ ဥဗ္ဗိနယံ .... .... ၁၅၇
ဥပက္ကိလေသ ၁၁ ပါး .... .... ၃၅
ဥပ္ပဏ္ဏာုပ္ပဏ္ဏာုက ဇာတော .... .... ၂၄၇
ဥပနိဿယသမ္ဗန္ဓ .... .... ၃၄၇
ဥပလဗ္ဘတိ, သံဝိဇ္ဇတိ .... .... ၂၅၀
ဥပ္ပလ, ပဒုမ, ပုဏ္ဍရီက .... .... ၆၀၉
ဥပသမ္ပန္နော .... .... ၃၆၁
ဥဿဟ, ဝိသဟ .... .... ၃၈၂
ဥဿာရဏာယ .... .... ၅၅၁
ဥဿေဒိတွာ .... .... ၉၃
ဥဋ္ဌာရုဋ္ဌာရဇနာ .... .... ၁၈၈
ကောဘင်္ဂေန နိပန္နက (အာ့ပတ်လွတ်သော့အိပ်နည်း) .... .... ၄၈၁
ကေကမ္ဗု, ကေုဒ္ဒေသ, သမသိက္ခာ .... .... ၄၁၉
ကေပဒဝီတိဟာရ .... .... ၁၁၈
ကေမ္ဗိဒိဝသံ့ဍ ပိအနက် .... .... ၁၈၉
ကေဘတ္တ, ကေသေယျ, ဗြဟ္မစရိယ .... .... ၃၈၁
ဝေံသမုဒ္ဒမိဒံ .... .... ၄၈
ဟေိဘိက္ခု .... .... ၃၄၈
ဩကန္တိကဓမ္မဒေသနာ .... .... ၂၈၄
ဩကန္တိကဝိနိစ္ဆယော .... .... ၄၅၈
ဩကလ္လကော .... .... ၃၉၇
ဩဠီ .... .... ၃၀၃
ဩဒကန္တိကံ .... .... ၂၇၄
ဩမင်္ဂံစသည် .... .... ၅၈၇
ဩဟိတသောတော .... .... ၃၅၃
ကတာကတဝေါဟာရ .... .... ၄၉၃
ကတိကဝတ္တ .... .... ၄၉၀
ကတိပါဟံ .... .... ၂၀၂
ကထံဟိနာမ ယှဉ်ရာ .... .... ၁၄၆
ကပ္ပိယာကပ္ပိယ ဝိနိစ္ဆယအရာ .... .... ၃၂၃
ကမ္မကာရဏာ .... .... ၂၂၇
ကမ္မဿကတာဉာဏ် (ဉာဏ် ၄ မျိုး) .... .... ၃၆၈
ကရိဿတိနာမဉ္စသဒ္ဒတ္တ .... .... ၄၉၈

အက္ခရာစဉ် မာတိကာ


| | |
|---|---|
| ကလိသာသနာရေပန .... .... | ၂၆၂ |
| ကသမ္ဗုဇာတော .... .... | ၄၀၀ |
| ကဥယဿဘေဒါ၊ပေ၊အပါယံ .... .... | ၄၉ |
| ကာသာယရသပီတတာယ .... .... | ၁၉၁ |
| ကိင်္ကိဏိကဇာလဿ .... .... | ၄၉၇ |
| တိသော .... .... | ၂၄၇ |
| ကုတ္တုမ္ဗ .... .... | ၂၄၄ |
| ကုမာရေ, စေလ္လကော, စေဋကော, မောဠိကတ္တော .... .... | ၃၉၀ |
| ကေသမဿုံ .... .... | ၁၉၁ |
| ခန္တီပရမံ စသည်အဖွင့် .... .... | ၁၂၆ |
| ခီဏာဇာတိစသည် .... .... | ၅၉ |
| ခုဒ္ဒမဓု .... .... | ၁၁၄ |
| ခါးပန်းကြိုး အပ်—မအပ် .... .... | ၅၀၉ |
| ဂန္ဓဗ္ဗော (သန္ဓေရခြင်းအကြောင်း) .... .... | ၂၄၀ |
| ဂဒ္ဒိတေန .... .... | ၄၁၃ |
| ဂဏ္ဍဂုဟာဏာအကြောင်း .... .... | ၂၃၇ |
| ဂဏ္ဍသဉ္ဈ ဥပစာအဆက်ဆက် .... .... | ၂၄၁ |
| ဂရဟာ ပေါင်းစရာမရှိသော သမ္ဘာဝနာ .... .... | ၁၀၃ |
| ဂရုဂါရဝသပ္ပတိဿာမိဝစနံ .... .... | ၁၁၁ |
| ဂါမန္တသေနာသနံ .... .... | ၂၀၅ |
| ဂိဇ္ဈကူဋအဖွင့် .... .... | ၄၀၆ |
| ဂိလာသု—ကိလာသု .... .... | ၁၂၂ |
| ဂိဟိ .... .... | ၃၀၀ |
| ဂီဝါ .... .... | ၅၀၆ |
| ဂေါနိသာဒိနိဝိဋ္ဌော .... .... | ၅၃၁ |
| ဃရေသု သာလာ .... .... | ၂၁၆ |
| ဃာသဉ္စာဒန ပရမတာယ .... .... | ၁၄၇ |
| ငါတို့ဘုရား ပွင့်ထိုက်ရာကာလ .... .... | ၁၄၂ |
| စက္ကလယုတ္တ, သံသရဏကိဋိက .... .... | ၄၇၃ |
| စတုဗ္ဗိဓဝိနယ (သုတ္တစသည်) .... .... | ၃၁၅ |
| စမရဝါဠေဟိ .... .... | ၄၅၃ |
| စိရဋ္ဌိတိကံ .... .... | ၁၁၉ |
| ဆန္နီယသဘာဝံ .... .... | ၂၁၃ |
| ဆမ္ဘိတတ္တံ .... .... | ၂၂၇ |

| အက္ခရာစဉ် | | | မာတိကာ |
|---|---|---|---|
| ဆိန္နဘိန္နပဋ္ဌမရော | .... | .... | ၃၄၅ |
| ဇဋ္ဌရဲ | .... | .... | ၅၈၆ |
| ဇနပဒစာရိက် | .... | | ၁၆၄,၄၉၄ |
| ဇနေတ္တိပုဒ်ပြီး | .... | .... | ၂၂၂ |
| ဇာတိ, အာဏာ, ဝိသယခေတ် | .... | .... | ၁၈ |
| ဉတ္တိစတုတ္ထနဲ့ အနက်မှန် | .... | .... | ၃၅၈ |
| ဉာတိပရိဝဋ္ဋံ | .... | .... | ၁၃၇ |
| ဉာတိသာလောဟိတ | .... | ... | ၁၉၃ |
| ဌာနာရဟေန | .... | .... | ၃၅၉ |
| တတောနိဒါနံ | .... | .... | ၂၂၆ |
| တဒါယတ္တဝုတ္တိတာယ | .... | .... | ၃၁၂ |
| တဒုပိယံ | .... | .... | ၉၈ |
| တရုဏဝိပဿနာ | .... | .... | ၁၆၅ |
| တိဏကုဋိ | .... | .... | ၄၈၈ |
| တိရောကရဏီယံ | .... | .... | ၂၂၁ |
| တီတိ ဝိတ္ထာရော | .... | .... | ၇၄ |
| တေနဟိ | ... | .... | ၂၈၅ |
| တေနဟိအဖွင့် | .... | .... | ၂၂၁,၆ |
| ထာလိပါကာ | .... | .... | ၂၀၉ |
| ထီးရိုး၌အရေးအကြောင်းဖျက် | .... | | ၅၀၄ |
| ထုလ္လစ္စယပုဒ်နက် | .... | .... | ၅၇၂ |
| ထေယျသံဝါသံ | .... | .... | ၅၃၉ |
| ဒဝါ,ရဝါ | .... | .... | ၄၀၄ |
| ဒါနပ္ပဒါန | .... | .... | ၂၀၀ |
| ဒါရုမီတလိကာ | .... | .... | ၄၆၆ |
| ဒါရုနိန္နင့်အဒိန္န ကံ ၂ မျိုး | .... | .... | ၅၂၃ |
| ဒိဋ္ဌိသီလသံဃာတေန သံဟတော | .... | .... | ၇၆ |
| ဒိဗ္ဗစက္ခုအဖွင့် | .... | .... | ၃၁ |
| ဒိဝါသေယျသိက္ခာပုဒ် | .... | .... | ၄၇၁ |
| ဒိသွာနဿ တေဒဟောသိ | .... | .... | ၁၈၇ |
| ဒုက္ကဋပုဒ်နက် | .... | .... | ၅၇၁ |
| ဒုက္ကဋ ၈ မျိုးအကျယ် | .... | .... | ၅၆၇ |
| ဒုက္ခသစ္စံ အဗ္ဘညာသိံ စသည် | .... | .... | ၅၆ |
| ဒုက္ခိ, ဒုမ္မနော | ... | .... | ၂၄၈ |

| အက္ခရာစဉ် | | | မာတိကာ |
|---|---|---|---|
| ဒုဂ္ဂဇနပဒဒ္ဓ ဒုဂ္ဂအဖွင့် | .... | .... | ၄၈၅ |
| ဒုန္ဒုလ္လံ | .... | .... | ၂၇၄ |
| ဒုဗ္ဗလံ | .... | .... | ၃၇၃ |
| ဒုဿရတာစသည် | .... | .... | ၂၇၆ |
| ဒုဿီကူတာစသည်အဖွင့် | .... | .... | ၈၅ |
| ဒုဿိဂ္ဂ | .... | .... | ၁၈၇ |
| ဒုမ္မင်္ကု | .... | .... | ၂၉၁ |
| ဒုဿီလ | .... | .... | ၂၉၂ |
| ဒူတံ သာသန် | .... | .... | ၃၈၄ |
| ဒွယံဒွယသမာပတ္တိံ | .... | .... | ၂၇၅ |
| ဓညမာယက (မာပက) | .... | .... | ၈၉ |
| ဓမကရဏာ (ရေစစ်) | .... | .... | ၅၈၈ |
| ဓမနီသန္တတဂတ္တော | .... | .... | ၂၄၇ |
| ဓီရတ္ထု အညာဏံ | .... | .... | ၆၄ |
| ဓုတဂုဏော | .... | .... | ၂၈၅ |
| ဓုတ္တာ | .... | .... | ၄၄၀ |
| နဝကမ္မယုတ္တော | .... | .... | ၃၄၁ |
| နသုကရာဖွင့်ပုံ | .... | .... | ၉၀ |
| နာနာဘာဝ ဝိနာဘာဝ | .... | .... | ၁၉၇ |
| နာပရံ ဣတ္ထတ္တာယ | ... | .... | ၆၁ |
| နိကုဋ္ဌိတံ ဥက္ကုဋ္ဌေယျ | .... | .... | ၆၉ |
| နိဂမော | .... | .... | ၁၁၅ |
| နိစ္စဘတ္တ သင်္ခေပေန | .... | .... | ၉၅ |
| နိဒါန်, ပကရဏာ | .... | .... | ၂၆၃ |
| နိဗ္ဗတ္တိတ လောကုတ္တရ | .... | .... | ၂၅၄ |
| နိဗဒ္ဓုပဋ္ဌာက | .... | .... | ၉၉ |
| နိဗ္ဗာနံ | .... | .... | ၂၅၀ |
| နိမိတ္တံ | .... | .... | ၂၁၅ |
| နိယတော, သမ္ဗောဓိပရာယဏော | .... | .... | ၁၆၂ |
| နိရုတ္တိဝသေန | .... | .... | ၃၆၃ |
| နီလကဟာပဏ | .... | .... | ၅၂၆ |
| နီလသမန္တာဂမေန (ဂုဏ္ဏပစာ) | .... | .... | ၃၅၆ |
| နောက်ဆိုအပ်သောစကားသည် ပမာဏ | .... | .... | ၅၃၄ |
| ပကတတ္တောဟိ | .... | .... | ၄၁၉ |

| အက္ခရာစဉ် | | | မာတိကာ |
|---|---|---|---|
| ပစ္စတ္ထိကာ | .... | .... | ၄၂၅ |
| ပစုရဇ္ဇေ | .... | .... | ၃၀၂ |
| ပဌမဗောဓိ | .... | .... | ၁၃၀ |
| ပစ္စုဋ္ဌ သယနာသန် | .... | .... | ၁၂၉ |
| ပတိသာမေတွာ | .... | .... | ၅၀၈ |
| ပတိသေဝတိ၌ တိဝိဘတ် | .... | .... | ၄၀၉ |
| ပထဗျာရာဇာစသည် | .... | .... | ၅၆၀ |
| ပထဝိမဏ္ဍ, ဩဇ, ပပ္ပဋက | .... | .... | ၁၁၃ |
| ပဏ္ဏပဏ္ဏပုလကံ (မူလကံ) | .... | .... | ၉၂ |
| ပယုတ္တဝါစာ | .... | .... | ၂၁၄ |
| ပရပဋိဗဒ္ဓ ဇီဝိကတ္တာ | .... | .... | ၃၄၄ |
| ပရိစာရေဟိ | .... | .... | ၁၉၉ |
| ပရိဒဟိတွာ | .... | .... | ၉၆ |
| ပရိဝတ္တကဒွါရ | .... | .. | ၄၇၂ |
| ပလိဗောဓ | .... | .... | ၃၁၁ |
| ပဝေသန် | .... | .... | ၄၂၆ |
| ပသန္နာကာရံ | .... | .... | ၇၂ |
| ပဟူတဓနေဒေ | .... | .... | ၂၀၈ |
| ပဟူတဝိတ္တူပကရဏ | .... | .... | ၁၇၁ |
| ပါဏုပေတံ | .... | .... | ၈၀ |
| ပါဒေသု ဂဟေတွာအဖွင့် | .... | .... | ၅၂၉ |
| ပါရာဇိကကို အကြွင်းထားတော်မမူ | .... | .... | ၄၃၁ |
| ပါရာဇိကော | .... | .... | ၄၁၆ |
| ပါရာဇိကဿ၌ အဿအနက် | .... | .... | ၄၂၄ |
| ပါရိဝါသိကံ | .... | .... | ၂၁၀ |
| ပိဏ္ဍိယာလောပဘောဇန် | .... | .... | ၃၄၄ |
| ပိဏ္ဍိန္ဒြိယော | .... | .... | ၂၄၉ |
| ပိတ္တမုစ္ဆကနှင့် ယက္ခမုစ္ဆက | .... | .... | ၄၄၃ |
| ပိယဝစနမေတံ | .... | .... | ၁၁၁ |
| ပိယော, မနာပေါ, သုခေမိတော | .... | .... | ၁၉၅ |
| ပုပ္ဖန္တိ လောဟိတဿ နာမံ | .... | .... | ၂၃၃ |
| ပုဗ္ဗဏှသမယံ | .... | .... | ၉၅ |
| ပုဗ္ဗေနိဝါသအဖွင့် | .... | .... | ၁၁ |
| ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏ်နှင့် ထူးပုံ မှတ်ချက် | .... | .... | ၁၆ |

| အက္ခရာစဉ် | | | မာတိကာ |
|---|---|---|---|
| ပုရာဏ ဒုတိယိက | .... | .... | ၂၂၀ |
| ပုရိသမဒ | .... | .... | ၂၅၆ |
| ပုရိသ ယုဂဝသေန | .... | .... | ၁၄၀ |
| ပုရိသသဏ္ဍာန် (လိန်ပြန်ပုံ) | .... | .... | ၄၅၆ |
| ပုဉ်းကံရှိသူပြုလျှင် အကောင်းချည်း | .... | .... | ၉၀ |
| ပေသလံ | .... | .... | ၂၆၅ |
| ပေါတ္ထကရူပ | .... | .... | ၄၀၅ |
| ဖုသတိဋ္ဌ ကမ္မရုပ်, ကတ္တုရုပ် | .... | .... | ၄၃၆ |
| ဗာဟိရကသုတ္တ စသည် | .... | .... | ၃၂၁ |
| ဗာဟုသစ္စ မဟတ္တံ | .... | .... | ၁၅၅ |
| ဗုဒ္ဓမာမကာ | .... | .... | ၉၄ |
| ဗေဥဓိပညာဏ် | .... | .... | ၃၉၀ |
| ဘဂဝတော ပစ္စဿောသိ | .... | .... | ၁၆၀ |
| ဘဏ္ဍာဒေယျံ | .... | .... | ၅၀၅ |
| ဘဏ္ဍာပွယောဇန ဥဒ္ဒါရိသာရဏာ | .... | .... | ၁၀၅ |
| ဘဗ္ဗကုလပုတ္တ | .... | .... | ၁၀၇ |
| ဘာဝဝိကပ္ပါကာရေန | .... | .... | ၃၀၀ |
| ဘာသိတာ, ဘာသိတွာ | .... | .... | ၅၁၉ |
| ဘိက္ခာစရိယံ | .... | .... | ၃၄၄ |
| ဘိသ, မုလာဠ | .... | .... | ၆၁၂ |
| ဘီသနကေ | .... | .... | ၁၃၄ |
| ဘုတ္တပါတရာသော | .... | .... | ၁၀၆ |
| ဘုမ္မဒေဝ | .... | .... | ၂၄၂ |
| ဘုရားကို အနှုရာယ်မပြုနိုင်ရာ ၄ ပါး | .... | .... | ၁၀၂ |
| ဘူမတ္ထရဏ | .... | .... | ၅၁၃ |
| မဂဓာနံ ဌသရော အနက် | .... | .... | ၅၂၅ |
| မဂ္ဂဖြဟ္မစရိယံ၌ ဥပစာ | .... | | ၂၄၆ |
| မဂ္ဂုရုက္ခဝိ (မင်္ဂုရုက္ခဝိ) | .... | .... | ၃၄၀ |
| မတ္တိကံ, ဌတ္တိကာယစသည် | .... | .... | ၂၂၂ |
| မန္ဒုရံ (မန္ဒိရံ) မှုကွဲ | .... | .... | ၉၁ |
| မမာယိတံ, တဏှာမမတ္တ | .... | .... | ၅၃၉ |
| မလဇလ္လိကာ | .... | .... | ၃၄၆ |
| မဟာဇန သမ္မဒ္ဒေါ | .... | .... | ၅၅၁ |
| မဟာပဒေသ | .... | .... | ၃၁၆ |

| အက္ခရာစဉ် | | | မာတိကာ |
|---|---|---|---|
| မာနမဒ | .... | .... | ၂၅၅ |
| မိတ္တာမစ္စာ | .... | .... | ၁၉၃ |
| မိလက္ခဘာသာသု | .... | .... | ၃၈၃ |
| မီးတဆွဲတစ် | .... | .... | ၄၂၇ |
| မူလစ္ဆန္ဒာယ | .... | .... | ၂၃၅ |
| မေထုနဓမ္မော | .... | .... | ၄၀၈ |
| မောဃပုရိသ | .... | .... | ၂၆ |
| ယတ္ထစ ဒိန္နံ မဟပ္ဖလံ၌ ဥပစာ | .... | .... | ၇၇ |
| ယထာကမ္မူပဂဉာဏ် | .... | .... | ၄၂ |
| ယထာတံ အပ္ပမတ္တဿ စသည်အနက် | .... | .... | ၂၉ |
| ယထာဘတံ နိက္ခိတ္တော | .... | .... | ၄၉ |
| ယထာဘိရန္တံ | .... | .... | ၁၇၉ |
| ယထာရုတမေဝ | .... | .... | ၃၈၉ |
| ယန္နူန | .... | .... | ၁၀၇ |
| ယဝကုမ္မာသံ | .... | .... | ၂၁၂ |
| ယာဝ, တာဝရှိရာ၌ထုံးစံ | .... | .... | ၈၃ |
| ယောကောစိ | .... | .... | ၃၄၀ |
| ရဇ္ဇညုမဟတ္တံ | .... | .... | ၁၅၁ |
| ရတ္တပံသုကုလန္တရတော၌ မှတ်ဘွယ် | .... | .... | ၃၄၈ |
| ရဟသံ | .... | .... | ၂၇၄ |
| ရုက္ခသူစိကဏ္ဋကဒွါရ | .... | .... | ၄၇၃ |
| လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ | .... | .... | ၁၅၄ |
| လုလိတာ | .... | .... | ၅၄၄ |
| လောကဝဇ္ဇံ, ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံ | .... | .... | ၃၀၅ |
| လောကာမိသ | .... | .... | ၁၄၇ |
| လောမဟံသော | .... | .... | ၂၂၈ |
| လောလုပစာရံ | .... | .... | ၂၀၆ |
| ဝဏ္ဏပုတ္တကာ | .... | .... | ၃၀၈ |
| ဝနကတေ-ဝိဝဋ္ဋေ | .... | .... | ၄၆၇ |
| ဝဏ္ဏဗ္ဗျက္ခ | .... | .... | ၈၉ |
| ဝဏ္ဏပဋ္ဋာနေ | .... | .... | ၃၈၉ |
| ဝဏ္ဏပေါက္ခရတာယ | .... | .... | ၄၅၄ |
| ဝဋ္ဋိတွာတိ ပဋ္ဋပတိဋ္ဌိတေန | .... | .... | ၈၃ |
| ဝဿံဥပဂစ္ဆန္တေန (ဝဿံအနက်) | .... | .... | ၄၈၉ |

| အက္ခရာစဉ် | | | မာတိကာ |
|---|---|---|---|
| ဝသန္တဝန် | .... | .... | ၄၀၆ |
| ဝသလဓမ္မံ | .... | .... | ၂၇၃ |
| ဝဿံဝုတ္ထပုဒ်ဖွင့်နှင့် နေ့ရက် | .... | .... | ၉၈၂ |
| ဝါသိ (ဒါး) | .... | .... | ၅၇၅ |
| ဝိကိရတိစသည် | .... | .... | ၁၃၃ |
| ဝိညတ္တိ | .... | ... | ၂၁၄ |
| ဝိတ္ထူပကရဏ | .... | .... | ၂၀၀ |
| ဝိတ္ထူနတိ | .... | .... | ၃၂၀ |
| ဝိနယပညတ္တိ | .... | .... | ၁၁၈ |
| ဝိနယရေလက္ခဏာ | .... | .... | ၃၂၅ |
| ဝိနယရေ၏ ဆုံးဖြတ်နည်း | .... | .... | ၃၃၁ |
| ဝိနယဓမ္မတာ | .... | .... | ၅၀၀ |
| ဝိနယာနုဂ္ဂဟတ္ထာယ | .... | .... | ၂၈၇ |
| ဝိပ္ပဋိသာရော | .... | .... | ၂၉၉ |
| ဝိပလ္လတ္ထသညာ | .... | .... | ၉၉၉ |
| ဝိပလ္လာသ | .... | .... | ၁၃၇ |
| ဝေပုလ္လမဟတ္တံ | .... | .... | ၁၅၃ |
| ဝေဝစနာနိ | .... | .... | ၃၀၀ |
| ဝေဟာသနှင့်အာကာသ | .... | .... | ၆၀၂ |
| ဝေါဟာရိက (တရားသူကြီး) | .... | .... | ၅၂၃ |
| သကိဉ္စနသပလိဗောဓ | .... | .... | ၃၀၁ |
| သညာဝိမောက္ခ | .... | .... | ၉၉၇ |
| သန္တတာယ | .... | .... | ၉၃၇ |
| သန္ဒဿေတွာစသည် | .... | .... | ၁၇၉ |
| သန္နိဋ္ဌ,သမ္ဘုတ္တ | .... | .... | ၉၀၇ |
| သန္ဒိဟ (သန္ဒေဟ) | .... | .... | ၂၈၂ |
| သပဒါနစာရိက | .... | .... | ၂၀၆ |
| သမ္ဗန္ဓပုဒ်ဖွင့် | .... | .... | ၁၁၃ |
| သမ္ပရာယိကံ | .... | .... | ၂၀၄ |
| သမ္ဗဟုလေဟိ | .... | .... | ၁၀၄ |
| သဗ္ဗာဝန္တံ | .... | .... | ၅၂၅ |
| သမညာယ ဘိက္ခု | .... | .... | ၃၄၆ |
| သမဏတေဇေန (အခေါ်) | .... | .... | ၂၂၅ |
| သမန္တပါသာဒိကာ | .... | .... | ၁၀၀ |

အက္ခရာစဉ် မာတိကာ


သမယညု .... .... ၃၀၆
သမာပန် ၂ မျိုး .... .... ၃၇၂
သမ္ဗွာန် ၆ ပါး .... .... ၄၄၆
သရဏံ ဂစ္ဆာမိ .... .... ၇၂
သလ္လဟုကဝုတ္တိတာ .... .... ၉၇
သလာက ဟတ္ထဥ္ပါရ .... .... ၄၇၄
သလ္လီန .... .... ၁၁၉
သဟာသာဝသေန .... .... ၄၀၅
သဟာယအဖွင့် .... .... ၁၀၄
သဟောဍ္ဍဂ္ဂဟိတော .... .... ၃၀၄
သာဇီဝအဖွင့် .... .... ၃၆၉
သာပတေယျံ .... .... ၂၃၂
သာလိမံသောဒန် .... .... ၁၁၀
သိက္ခာပဒံ .... .... ၂၀၅
သိက္ခိတဗ္ဗာ၏ အဖွင့် .... .... ၃၆၄
သုက်ဿာတံ .... .... ၅၄၂
သုဂတိံ သဂ္ဂံ လောကံ .... .... ၅၄
သုခန္တမိဝ သုဝဏ္ဏံ .... .... ၆
သုဒ္ဓမဆုံးဖြတ်နိုင်လျှင် တောကျောင်းထား .... .... ၃၃၇
သုဒ္ဓုတ္တရာသင်္ဂံ .... .... ၁၀၆
သုပ္ပဝတ္တိ .... .... ၃၂၅
သုဝဏ္ဏရသပိဥ္စရာဟိ .... .... ၁၆၉
သူစိဃဋိကာ .... .... ၄၉၆
သေတုဃာတော .... .... ၁၀၅
သံကိရတိ .... .... ၅၃၆
သံဃသုဋ္ဌုတာယစသည် .... .... ၂၉၀
သွာက္ခာတံ စသည် .... ၃၉၁
သွာတနာယ .... .... ၁၇၃
ဟတ္ထမုဒ္ဒါယ .... .... ၃၀၅
ဟိရည့် .... .... ၂၂၀
ဟီနာယာဝတ္တိတွာ အဖွင့် .... .... ၂၂၅
ဟေတုနှင့် ပစ္စယ .... .... ၁၂၁

ပုံနှိပ်, ထုတ်ဝေသူ (မောင်ကျော်)

ကျော်ပုံနှိပ်စက်
၈၄-လမ်း, ကွမ်းခြံ-မန္တလေး။

## ဝိဇ္ဇာ ၃ ပါး ပြခဏ်း

ဣတိ- သို့၊ စတ္တာရိ, ဈာနာနိ ဈာနာနိ- တို့သည်၊ ကေသဥ္စိ- အချို့ပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊ (ဈာနာနိ-တို့သည်၊)စိတ္တေကဂ္ဂတတ္ထာနိ- စိတ်၏ တည်ကြည်ခြင်းအကျိုး ရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ၊ ကေသဥ္စိ(ဈာနာနိ)ဝိပဿနာပါဒကာနိ- ဝိပဿနာ၏ အခြေခံတို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ ကေသဥ္စိ ( ဈာနာနိ ) အဘိညာပါဒကာနိ- အဘိညာဉ်၏ အခြေခံတို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ ကေသဥ္စိ ( ဈာနာနိ) နိရောဓ ပါဒကာနိ-နိရောဓသမာပတ်၏ အခြေခံတို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ ကေသဥ္စိ (ဈာနာနိ) ဘဝေါက္ကမနတ္ထာနိ- ရူပဘဝ, အရူပဘဝသို့ သက်ရောက်ရခြင်းအကျိုး ရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ၊ တတ္ထ – ထို အကျိုးတို့တွင်၊ (တနည်း) တတ္ထ – ထို ပုဂ္ဂိုလ်တို့တွင်၊ ခီဏာသဝါနံ-သုက္ခဝိပဿက ရဟန္တာပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊ (ဈာနာနိ) စိတ္တေကဂ္ဂတ္ထာနိ ဟောန္တိ၊[စိတ်တည်တည်ကြည်ကြည်နှင့် ပစ္စုပ္ပန်ဘဝ၌ချမ်းသာစွာ နေရခြင်းအကျိုး ရှိသည်–ဟူလို၊ ထိုအကျိုးကို ပြလို၍ "ဟေ ဟိ" စသည်မိန့်။] ဟိ-ချဲ့၊ တေ-ထို သုက္ခဝိပဿက ရဟန္တာတို့သည်၊ သမာပဇ္ဇိတွာ- ဈာန်သမာပတ်ကို ဝင်စား၍၊ ဧကဂ္ဂစိတ္တာ – တခုထည်းသော အာရုံရှိသော စိတ်ရှိကုန်သည်၊ (ဟုတွာ) သုခံ–စွာ၊ ဒိဝသံ-တနေ့ပတ်လုံး၊ ဝိဟရိဿာမ-နေကုန်အံ့၊ ဣတိ ဧဝံ-ဤအကျိုးကို မြှော်ကိုး၍သာလျှင်၊ ကသိဏပရိကမ္မံ - ကသိုဏ်းပရိကမ်ကို၊ ကတွာ-၍၊ အဋ္ဌသမာပတ္တိယော- ရှစ်ပါးသော သမာပတ်တို့ကို၊ နိဗ္ဗတ္တေန္တိ- ဖြစ်စေကုန်၏။

**စတ္တာရိ ဈာနာနိ။** ။အဘိညာဉ်အကျိုး, နိရောဓသမာပတ် အကျိုးတို့ကို ဈာန်သမာပတ် ရှစ်ပါးလုံး ရပြီးမှသာ ပြီးစေနိုင်၏၊ ထို့ကြောင့် စတ္တာရိဈာနာနိ အရ၌ အရူပဈာန် ၄ ပါးကိုပါ (စတုတ္ထဈာန်နှင့် ဈာန်အင်္ဂါချင်း တူသောကြောင့် ) သွင်းယူထားသည် – ဟု မှတ်။ [ ရူပဝိရာဂဝသေန ပဝတ္တံ စတုဗ္ဗိဓံပိ အရူပဇ္ဈာနံ သင်္ဂဟိတ မေဝါတိ အာဟ – စတ္တာရိ ဈာနာနီတိ။]

**အကြောင်း၏ အကြောင်းလဲ အကြောင်းဘဲ။** ။အဘိညာဉ်နှင့် နိရောဓသမာပတ်တို့ကို (အရူပဈာန်လည်း ပါဝင်သော) စတုတ္ထဈာန်ကသာ ပြီးစေနိုင်၏၊ သို့သော် စတုတ္ထဈာန် ရဘို့ရန်အကြောင်းမှာ ပဌမ , ဒုတိယ , တတိယဈာန်များတည်း၊ ဤသို့ အကြောင်း စတုတ္ထဈာန်၏ အကြောင်းဖြစ်သော ပဌမ , ဒုတိယ , တတိယဈာန်တို့ကို လည်း အဘိညာဉ် နိရောဓတို့၏ အကြောင်းဟု ယူဆ၍ "စတ္တာရိ ဈာနာနိ" ဟု ဈာန် ၄ ပါးလုံးကိုဆိုသည်၊ ဥပမာ-ထမင်း၏အကြောင်းသည် ဆန်, ဆန်၏အကြောင်းသည် မြက်ပင်(ကောက်ပင်)များတည်း၊ ထိုသို့ အကြောင်း၏ အကြောင်းဖြစ်သော မြက်ပင် များကို ထမင်း၏အကြောင်းဟု ယူ၍ "တိဏေဟိ ဘတ္တံ သိဒ္ဓံ–ကောက်ပင်တို့ကြောင့် ထမင်းသည် ပြီး၏" ဟု ဆိုသကဲ့သို့တည်း။ [ပဒဋ္ဌာနပဒဋ္ဌာနမ္ပိ ပဒဋ္ဌာနံ တွေဝ ဝုစ္စတိ၊ ကာရဏကာရဏမ္ပိ ကာရဏံတိ၊ ယထာ–တိဏေဟိ ဘတ္တံ သိဒ္ဓံတိ။]

သေက္ခပုထုဇ္ဇနာနံ-သေက္ခပုဂ္ဂိုလ် ပုထုဇဉ်ပုဂ္ဂိုလ်ဘို့၏၊ (ဈာနာနိ) သမာပတ္တိတော-မှ၊ ဝုဋ္ဌာယ-ထ၍၊ သမာဟိတေန- ကောင်းစွာ အာရုံ၌ ထားအပ်သော၊ ဝါ - တည်ကြည်သော၊ စိတ္တေန- ဖြင့်၊ ဝိပဿိဿာမ – ဝိပဿနာ ရှုကုန်အံ့၊ ဣတိ- ဤသို့ကြံ၍၊ နိဗ္ဗတ္တေန္တာနံ - ဖြစ်စေကုန်လသော်၊ ဝါ–ကုန်သော၊(သေက္ခပုထုဇ္ဇနာနံ- တို့၏၊ ဈာနာနိ၊)ဝိပဿနာပါဒကာနိ-ဝိပဿနာ၏ အခြေခံတို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ ပန-ကား၊ ယေ-အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ အဋ္ဌသမာပတ္တိယော-တို့ကို၊ နိဗ္ဗတ္တေတွာ-စေ၍၊ အဘိညာပါဒကံ- အဘိညာဉ်၏ အခြေခံဖြစ်သော၊ ဈာနံ-ကို၊ သမာပဇ္ဇိတွာ-၍၊ သမာပတ္တိတော-မှ၊ ဝုဋ္ဌာယ-၍၊ ဧကောပိ ဟုတွာ ဗဟုဓာ ဟောတီတိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တနယာ-ဟောတော်မူအပ်သော နည်းရှိကုန်သော၊ အဘိညာယော–တို့ကို၊ ပတ္ထေန္တာ - တောင့်တကုန်လျက်၊ နိဗ္ဗတ္တေန္တိ-န်၏၊ တေသံ ( ဈာနာနိ ) အဘိညာပါဒကာနိ ဟောန္တိ၊ ပန-ကား၊ ယေ အဋ္ဌသမာပတ္တိယော နိဗ္ဗတ္တေတွာ နိရောဓသမာပတ္တိံ သမာပဇ္ဇိတွာ, သတ္တာဟံ-ပတ်လုံး၊ အစိတ္တကာ-စိတ်မရှိကုန်သည်၊ ဟုတွာ,ဒိဋ္ဌေဝ ဓမ္မေ-မျက်မှောက်ဘဝ၌ပင်၊နိရောဓံ-စိတ်,စေတသိက်,စိတ္တဇရုပ်တို့၏ချုပ်ခြင်း ဟူသော၊ နိဗ္ဗာနံ-နိဗ္ဗာန်သို့၊ ပတွာ-ရောက်၍၊ သုခံ-စွာ၊ ဝိဟရိဿာမ - န်အံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ နိဗ္ဗတ္တေန္တိ၊ တေသံ(ဈာနာနိ) နိရောဓပါဒကာနိ ဟောန္တိ၊ ယေ ပန ၊ပေ၊ အပရိဟီနဇ္ဈာနာ - မယုတ်လျော့သောဈာန် ရှိကုန်သည်၊ပေ၊ ဟောန္တိ၊ ပန-ဆက်၊ ဘဂဝတာ–သည်၊ ဣဓံ စတုတ္ထဇ္ဈာနံ - ကို၊ ဗောဓိရုက္ခမူလေ-ဗောဓိပင်၏ အနီးအောက်၌၊ နိဗ္ဗတ္တိတံ-ဖြစ်စေတော်မူအပ်ပြီ၊ တဿ- ထိုမြတ်စွာဘုရား၏၊ တံ- ထိုစတုတ္ထဈာန်သည်၊ ဝိပဿနာပါဒကဉ္စေဝ-ဝိပဿနာ၏ အခြေခံသည်၎င်း၊ အဘိညာပါဒကဉ္စ-၎င်း၊ နိရောဓပါဒကဉ္စ-၎င်း၊ သဗ္ဗကိစ္စသာဓကဉ္စ - အလုံးစုံသော ကိစ္စကို ပြီးစေနိုင်သည်၎င်း၊ သဗ္ဗလောကိယ လောကုတ္တရဂုဏာဒါယကံ-အလုံးစုံသောလောကီဂုဏ်,လောကုတ္တရာဂုဏ်ကို ပေးနိုင်သည်၊ အဟောသိ၊ ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊

ဗောဓိရုက္ခမူလေ။ ။ဘုရားရှင်သည် ဤဘဝ၌ အာနာပါန–ဥဒက ရသေ့များအထံ စတုတ္ထဈာန်ကို ရခဲ့ဘူးသော်လည်း ထိုဈာန်သည် ဝိပဿနာပါဒက စသည် မဟုတ်၊ ဝိပဿနာပါဒက စသော အကျိုးရှိသော စတုတ္ထဈာန်ကိုကား ဗောဓိရုက္ခမူလ ၌သာ ဖြစ်စေတော်မူ၏၊ ထို့ကြောင့် "ဗောဓိရုက္ခမူလေ နိဗ္ဗတ္တိတံ" ဟု ဆိုသည်။ [သဗ္ဗကိစ္စ သာဓကဟူသည် အနုပုဗ္ဗဝိဟာရ(အစဉ်အတိုင်း သမာပတ်ဝင်စား၍ ဒိဋ္ဌဓမ္မ ချမ်းသာကို ခံစားခြင်း) စသော ကိစ္စများကို ပြီးစေခြင်းတည်း။]

သဗ္ဗလောကိယ၊ ပေ၊ ဒါယကံ။ ။ဤစကားကား ပြအပ်ပြီးသော ဝိပဿနာ ပါဒကစသော အားလုံးကိုပေါင်း၍ပြသောစကားတည်း၊ ရှေ့စကားများနှင့် အရမကွဲ

စ - ဆက်၊ ယေသံ ဂုဏာနံ - အကြင်ဂုဏ်တို့ကို၊ ဒါယကံ - ပေးနိုင်သည်၊ အဟောသိ၊ တေသံ-ထိုဂုဏ်တို့၏၊ ကေဒေသံ·တစိတ်တချို့ကို၊[အာသဝက္ခယ ( အရဟတ္တမဂ် ) ရဘို့ရန် ဝိပဿနာပါဒကဂုဏ်, ပုနှင့်ဒိ ရဘို့ရန် အဘိညာပါဒကဂုဏ်ကို့ ဟူလို။ ] ဒဿေန္တော ( ဟုတွာ ) , သော ဧဝံ သမာဟိတေ စိတ္တေတိ အာဒိံ-အစရှိသောစကားကို၊ အာဟ- ဟောတော်မူပြီ၊ တတ္ထ-ထို သော၊ပေ၊ရပ်၌၊ သောတိ-ကား၊ သော အဟံ-ထိုငါသည်၊ [ဝိဟာသိံ ဟု အမှယောဂကြိယာ ရှိသောကြောင့် သော အဟံဟု ဖွင့်၊] ဧဝန္တိ တံ-ဧဝံဟူသော ဤသဒ္ဒါသည်၊ စတုတ္ထဈာနက္ကမ နိဒဿနံ – စတုတ္ထဈာန် , စတုတ္ထဈာန်ကို ရကြောင်း အစဉ်ကို ညွှန်ပြကြောင်း သဒ္ဒါတည်း၊ ဣမိနာ ကမေန – ဤ ပဌမ ဒုတိယ တတိယဈာန် အစဉ်အားဖြင့်၊ စတုတ္ထဈာနံ-ကို၊ ပဋိလဘိတွာ-ရပြီး၍၊ ဣတိ - ဤအနက်သည်၊ ဝါ-ကို၊ ဝုတ္တံ - ဟောတော်မူအပ်သည်၊ ဝါ-လိုသည်၊ ဟောတိ၊ သမာဟိတေတိ - ကား၊ ဣမိနာ စတုတ္ထဈာန သမာဓိနာ - မိဖြင့်၊ သမာဟိတေ-ကောင်းစွာအာရုံ၌ ထားအပ်သော်၊ ဝါ - တည်ကြည်လသော်၊ (တနည်း) သမာဟိတေ-သော၊ ဝါ-သော၊ (စိတ္တေ-စတုတ္ထဈာန်စိတ်သည်၊) ပန-ကား၊ ပရိသုဒ္ဓေတိ အာဒီသု–ပရိသုဒ္ဓေ အစရှိသောပါဠိရပ်တို့၌၊(အတ္ထော

သောကြောင့် (စ) မပါဘဲ ထားသည်။ [“ဣမိနာ ယထာဝုတ္တံ ဝိပဿနာပါဒကတ္တာဒိ သဗ္ဗံ သမ္ပိဏ္ဍေတိ”–ဝိမတိ။] ဘုရားရှင်၏ အရဟတ္တမဂ်သည် သဗ္ဗညုတဉာဏ် တည်းဟူသော လောကိယဂုဏ်, အရဟတ္တဖိုလ်နိဗ္ဗာန် ဟူသော လောကုတ္တရာဂုဏ်ကို ပေးနိုင်၏၊ သဗ္ဗညုတဉာဏ်ဂုဏ်ကိုပေးနိုင်လျှင် ဘုရားဂုဏ်တော်အားလုံးကိုလည်း ပေးရာရောက်၏၊ ထို အရဟတ္တမဂ်၏ အကြောင်းကား စတုတ္ထဈာန်ပင်တည်း၊ ထို့ကြောင့် “တံ တဿ၊ပေ၊သဗ္ဗလောကိယ လောကုတ္တရဂုဏဒါယကံ”ဟုမိန့်သည်။

**စတုတ္ထဈာနက္ကမ နိဒဿနံ**။ ။ ဧဝံသည် နိဒဿနတ္ထ နိပါတ်တည်း၊ ထို ဧဝံဖြင့် ညွှန်ပြအပ်သော နိဒဿေတဗ္ဗကား စတုတ္ထဈာန်နှင့် စတုတ္ထဈာန်ရဘို့ရန်အစဉ်ဖြစ်သော ပဌမ ဒုတိယ တတိယဈာန်တည်း။ [ စတုတ္ထဈာနံစ + ကမောစ , စတုတ္ထဈာနက္ကမာ၊ တေသံ နိဒဿနံ စတုတ္ထဈာနက္ကမနိဒဿနံ၊ “ စတုတ္ထဈာနဿ တဿစ အဓိဂမမဂ္ဂဿ (စတုတ္ထဈာန်ကိုရင်း, ထို စတုတ္ထဈာန်ရကြောင်း လမ်းစဉ်ကိုရင်း) နိဒဿနံ”–ဋီကာ။ ] ပါဠိတော်၌ကား “ဧဝံ – ဤသို့၊ ဝါ– ဤ ပဌမ ဒုတိယ တတိယဈာန် အစဉ်အားဖြင့် စတုတ္ထဈာန်ကို ရပြီး၍”ဟု အနက်ပေး။

**သမာဟိတေ**။ ။အောက်ဈာန်သမာဓိများသည် စတုတ္ထဈာန်သမာဓိ၏ အခြေခံသာဖြစ်၏၊အဘိညာဉ်၏အခြေခံကား စတုတ္ထဈာန်သမာဓိသာတည်း၊ ထို့ကြောင့်“စတုတ္ထဈာနသမာဓိနာ သမာဟိတေ” ဟု ဖွင့်သည်၊ သံ + အာပုဗ္ဗ – ဓာ ဓာတ်သည် ထပန အနက်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့်“သမာဟိတေ–ကောင်းစွာ အာရုံ၌ထားအပ်သော်” ဟု သဒ္ဒတ္ထ, “တည်ကြည်လသော်” ဟု သင်္ကေတတ္ထပေး။

ဝေ ဝေဒိတဗ္ဗော)၊ ဥပေက္ခာသတိ ပါရိသုဒ္ဓိဘာဝေန-ဥပေက္ခာသည် ဖြစ်စေအပ်သောသတိ၏ ထက်ဝန်းကျင် စင်ကြယ်ခြင်းရှိသည်၏အဖြစ်ဖြင့်၊ ပရိသုဒ္ဓေ-ထက်ဝန်းကျင် စင်ကြယ်လသော်၊ ပရိသုဒ္ဓတ္တာ ဧဝ - ကြောင့်ပင်၊ ပရိယောဒါတေ - ထက်ဝန်းကျင် ဖြူစင်လသော်၊ ပဘဿရေ – ပြိုးပြိုး ပြက်ပြက် , ထွက်သော အရောင် ရှိလသော်၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ သုခါဒိနံ - နှ်သော၊ ပစ္စယာနံ-အကြောင်းတို့ကို၊ ဃာတေန- သတ်ပြီးခြင်းကြောင့်၊ ဝါ - အတွက်၊ ဝိဟတရာဂါဒိအင်္ဂဏတ္တာ-ပယ်ဖျောက်အပ်ပြီးသောရာဂအစရှိသောအင်္ဂဏရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ - ရာဂအစရှိသော အင်္ဂဏကို ပယ်ဖျောက်ပြီး၏

ဥပေက္ခာသတိ ပါရိသုဒ္ဓိဘာဝေန။ ။(ဥပေက္ခာသတိ ပါရိသုဒ္ဓိံပုဒ်တုန်းက) ဖွင့်ပြခဲ့သည့်အတိုင်း သတိကိုခေါင်းတပ်၍ဆိုအပ်သော စတုတ္ထဈာနသမ္ပယုတ်အားလုံး၏ စင်ကြယ်မှုကို ဥပေက္ခာသည် ပြုအပ်၏၊ ပရိသုဒ္ဓေအရလည်း ဤ စတုတ္ထဈာန်စိတ်ပင်ရ၏၊ထို့ကြောင့်“ဤ စတုတ္ထဈာန်စိတ်၏ ပရိသုဒ္ဓဖြစ်ခြင်းသည် အခြားမဟုတ်,ဥပေက္ခာသတိ ပါရိသုဒ္ဓိဖြစ်ခြင်းပင်တည်း ” ဟု ပြလို၍ “ဥပေက္ခာသတိပါရိသုဒ္ဓိဘာဝေန ပရိသုဒ္ဓေ”ဟု ဖွင့်သည်၊ ထို့ကြောင့် ဘာဝေနကို“အဖြစ်ကြောင့်” မ ဒပးဘဲ“အဖြစ်ဖြင့်” ဟု အဘိန္နဝိသေသန အနက်ပေးသည်။

ပရိသုဒ္ဓတ္တာ ဧဝ ။ ။ အခြေခံစင်ကြယ်မှ ဖြူဖြူစင်စင် အရောင်တင်၍ ရ၏၊ လှော်ပြီး ဥုးပြီးဖြစ်၍ စင်ကြယ်သော ရွှေသည် ပွတ်တိုက်လိုက်ရုံမျှဖြင့် အရောင်ထွက်လာသကဲ့သို့တည်း၊ ဤသို့ ပရိသြဒါတ ဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းသည် အခြား မဟုတ်, ရှေ့၌ ဆိုအပ်ပြီးသော ပရိသုဒ္ဓပင် ဖြစ်ရကား“ပရိသုဒ္ဓတ္တာဧဝ ပရိယောဒါတေ”ဟု ဖွင့်၏၊ ပရိသုဒ္ဓဖြစ်ပြီးအပေါ်မှာ အတော်အတန်ထပ်၍ ဝင်စားရုံမျှဖြင့် ပရိယောဒါတ ဖြစ်လာသည်-ဟူလို၊ “ဩဒါတ” အရ အဖြူရောင် ဟု ထင်မည်စိုး၍ “ပဘဿရေ”ဟု ဋီကာထွဖွင့်ပြန်သည်၊ “မည်သည့်အရောင်”ဟုမဆိုလို၊ အရောင်ထွက်သည် ဟု သာ ဆိုလိုသည်၊ ပဘာ+ သရတိ နိ သရတိ (ထွက်၏) ဣတော စိတ္တတောတိ ပဘဿရံ( ဈာနစိတ္တံ)။ [ဤစကားလည်း တကယ်အရောင် ထွက်ခြင်း မဟုတ် , အရောင်ထွက်သကဲ့သို့ ဖြစ်နေသည် ဟု ပြသော ရူပကအလင်္ကာ, တဒ္ဓမ္မူပစာ စကားတည်း။]

သုခါဒီနံ၊ပေ၊အနင်္ဂဏော။ ။“သုခသည် သောမနဿ၏ အကြောင်း, သောမနဿသည် ရာဂ၏အကြောင်း”စသည်ဖြင့် ရှေ့၌ ဆိုခဲ့ပြီ၊ ထိုစတုတ္ထဈာန်၌ “သုခဿစ ပဟာနာ” စသည်ဖြင့် ဟောတော်မူသည့် အတိုင်း ရာဂဒေါသတို့၏( ရာဂဒေါသကို အရင်းခံ၍ ကျန်ကိလေသာ အားလုံး၏ ) အကြောင်း ဖြစ်သော သုခဒုက္ခ စသည်ကို ပယ်ထားပြီး ဖြစ်ရကား “အနင်္ဂဏ”ဖြစ်သည်။ [အင်္ဂဏ္ဍ ဧတေဟိ တံသမင်္ဂီပုဂ္ဂလာ နိဟီနဘာဝံ ဂစ္ဆန္တီတိ အင်္ဂဏာနိ ( ရာဂါဒယော ) = ထိုတရားတို့နှင့် ပြည့်စုံသူတို့၏ ယုတ်ညံ့သူတို့အဖြစ်သို့ရောက်ကြောင်းဖြစ်သော ရာဂစသည်တို့၊( အနင်္ဂဏသုတ် ဋီကာ ဝိဂ္ဂဟ)၊ အဂိဓာတ်, ယုကို အနပြု၊ ပိသောဒရာဒိဂိုဏ်း ဖြစ်၍ န ကို ဏပြု၊]

အဖြစ်ကြောင့်၊ အနင်္ဂဏော-အင်္ဂဏ မရှိလသော်၊ အနင်္ဂဏတ္တာ ဝေ-ကြောင့် ပင်၊ ဝိဂတုပက္ကိလေသေ - ကင်းသော ဥပက္ကိလေသရှိလသော်၊ ဟိ-မှန်၊ အင်္ဂဏာန - ဏာသည်၊ စိတ္တံ-ကို၊ ဥပက္ကိလိဿတိ - ပူပန်စေအပ်၏၊ ဝါ—နှိပ်စက် အပ်၏၊ သုဘာဝိတတ္တာ-ကောင်းစွာ ပွါးစေအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ မုဒု ဘူတေ- နူးညံ့သည်ဖြစ်၍ ဖြစ်လသော်၊ ဝသိဘာဝပ္ပတ္တေ-ဝသိဘော်သို့ ရောက် လသော်၊ ဝါ - စွမ်းရည်သတ္တိ ရှိသူ၏ အဖြစ်သို့ ရောက်လသော်၊ ဇုတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဟိ-မှန်၊[မုဒုဘူတေကို"ဝသိဘာဝပ္ပတ္တေ"ဟု ဖွင့်ခြင်းသည် မှန်၏၊] ဝသေ-မိမိအလိုသို့၊ဝတ္တမာနံ-ဖြစ်သော၊(ဝသိဘော်သို့ရောက်သော-ဟူလို၊) စိတ္တံ-ကို၊ မုဒူဘိ-မုဒု ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ၊ မုဒုတ္တာဝေ - နူးညံ့သည်၏ အဖြစ်ကြောင့် ပင်၊ ကမ္မနိယေ ကမ္မက္ခမေ - အဘိညာဉ်အမှု၌ ခံ့လသော်၊ ကမ္မဒယောဂ္ဂေ—

**အနင်္ဂဏတ္တာ ဝေ။** ။[ဝေစ—ဟု ရှိ၏၊ ဝိသုဒ္ဓိမဂ်၌(စ)မပါ။] စိတ်မှာ ဥပက္ကိ လေသ ကင်းခြင်း၏ အကြောင်းသည် အခြားမဟုတ်၊ အင်္ဂဏ မရှိခြင်းပင် ဖြစ်သည်— ဟူလို။ [ဥပဂန္တွာ —ကပ်၍၊ စိတ္တံ—ကို၊ ကိလေသေန္တိ — နှိပ်စက်တတ် ပူပန်စေတတ် ကုန်၏၊ ဣတိ ဥပက္ကိလေသာ၊ ပြခဲ့သောရာဂ စသည်ပင် ရ၏၊ ယထာ ရာဂါဒယော စေတသော မလာသုစိဘာဝဒေန (အညစ်အကြေး မစင်မကြယ်တို့၏ အဖြစ်ကြောင့်) အင်္ဂဏာနီတိ ဝုစ္စန္တိ၊ ဇဝံ ဥပဂန္တွာ ကိလေသနဋ္ဌေန ဥပက္ကိလေသာတိ၊— ဋီကာ၊ ကိလိ ဿတိကိုလည်း "ဝိဗာဓိယတိ—ဥပတာပိယတိ"ဟု ဖွင့်။]

**သုဘာဝိတတ္တာ။** ။"ကောင်းစွာပွါးစေအပ်"ဟူသည် "အထပ်ထပ် ဝင်စား အပ်"တည်း၊ အဆပ်ထပ်နယ်အပ်သော သားရေသည် နူလာသကဲ့သို့ ဈာစတုတ္ထရှာန် စိတ်လည်း အထပ်ထပ် ဈာန်ဝင်စားမှု သုဘာဝိတကြောင့် နူးညံ့လာသည်၊ ထိုသို့ နူးညံ့လာသည် ကိုပင် "ဝသိဘာဝပ္ပတ္တ — ဝသိဘော်သို့ ရောက်ပြီ" ဟု ဆိုလိုသည်၊ [ဝသနံ သမတ္ထနံ ဝသော — စွမ်းနိုင်ခြင်း၊ ဝသော ယဿ အတ္ထိတိ ဝသီ = အာဝဇ္ဇန သမာပဇ္ဇန စသော ကိစ္စ ၅ပါး၌ အစွမ်းသတ္တိ ရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်၊ ဝသိနော+ ဘာဝေါ— ဝသိဘာဝေါ —အစွမ်းသတ္တိရှိသူ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ အစွမ်းသတ္တိရ၏။]

**မုဒုတ္တာ ဝေ၊ ဝေ၊ ယောဂ္ဂေ။** ။[ဤ၌လည်း စ-ပိုဟန်တူ၏၊] ကမ္မနိယဖြစ် ခြင်း၏အကြောင်းကား အခြားမဟုတ်, မုဒုတ္တပင်ဖြစ်သည်—ဟူလို၊ ထို့ကြောင့် ဝေဖြင့် ဆိုသည်၊ ကမ္မနိယ၌ "ကမ္မနိ—ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိ စသော အဘိညာဉ်အမှု၌+ ခမံ= ခံ့သောစိတ်တည်း၊ ကမ္မနိယံ"ဟု ခမအနက်၌ ဣယပစ္စည်း သက်ထားကြောင်း သိစေ လို၍ "ကမ္မက္ခမေ"ဟု ဖွင့်သည်၊ (န်) အာဂုမ်၊ မောဂ္ဂလ္လာန်တဒ္ဓိတ် (၇၃)သုတ်၌ နိယပစ္စည်း ဟု ဆို၏၊"အမှု၌+ ခံ့" ဟူသည် ထိုအဘိညာဉ် အမှုအား သင့်လျော်သော အရည်အချင်း ရှိနေခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ကမ္မယောဂ္ဂေ" ဟု ဥဇုကတ္ထ ပြသည်၊ ယုဇ္ဇိတဗ္ဗံ—ယှဉ်စပ်ထိုက်၏၊ ဣတိ ယောဂ္ဂံ (ယုဇ+ဏျ၊) ကမ္မေ+ ယောဂ္ဂံ ကမ္မယောဂ္ဂံ- အမှု၌+ယှဉ်စပ်ထိုက်၏ (သဒ္ဒတ္ထ၊) အမှုအား+ လျောက်ပတ်၏ (အဓိပ္ပါယတ္ထ)။

အဘိညာဉ်အမှု၌ ယှဉ်စပ်ထိုက်လသော်၊ ဝါ-အဘိညာဉ်အမှုအား လျော်ကပ်လသော်၊ ဇာတံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ သုဓန္တံ - ကောင်းစွာ မှုတ်အပ်ပြီးသော၊ ဝါ-လျော်ပြီးဉုံးပြီးသော၊ သုဝဏ္ဏံ- ရွှေသည်၊ ကမ္မနိယံ-ပုတီး, နားဒောင်းစသည်ကို ပြုလုပ်မှု၌ ခံ့သည်၊ ဟောတိ ဧဝ-ကဲ့သို့ (ဧဝံ-တူ၊) မုဒု-နူညံ့သော၊ စိတ္တံ-သည်၊ ကမ္မနိယံ - အဘိညာဉ် အမှု၌ ခံ့သည်၊ ဟောတိ၊ စ-ဆက်၊ တဒုဘယမ္ပိ-ထို မုဒု, ကမ္မနိယ ၂ပါးသည်လည်း၊ သုဘာဝိတတ္တာ ဝေ-ကောင်းစွာပွားစေအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ပင်၊ (ဟောတိ၊) ယထာဟ - နည်း၊ နာဟံ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ယထယိဒံ ဘိက္ခဝေ စိတ္တန္တိ-ဟူ၍၊ အာဟ-ပြီ၊ [ဘိက္ခဝေ, ဇာဒံ စိတ္တံယထာ-ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ ယံ - အကြင်တရားသည်၊ ဝါ-ကို၊ ဘာဝိတံ-ပွားစေအပ်သည်၊ ဗဟုလီကတံ - ကြိမ်ဖန် များစွာ, အလေ့အလာ ပြုအပ်သည်၊ (သမာန်-သော်၊ ) မုဒုစ-နူညံ့သည်ငှင်း၊ ကမ္မနိယဥ္စ - ထိုထို အမှု၌ ကောင်းသည်ငှင်း၊ ဟောတိ-၏၊ ဘိက္ခဝေ, အဟံ-ငါဘုရားသည်၊ အညံ-စိတ်မှတပါးသော၊ (တံ)ကေဝဋ္ဌမ္ပိ-ထို တခုသော တရားကိုလည်း၊ န သမနုပဿာမိ- မြင်တော်မမူ၊ (အင်္ဂုတ္တရ, ပဏိဟိတ-အဋ္ဌဝဂ်)။]

ဌေတသု ပရိသုဒ္ဓဘာဝ ဋ္ဌိသု - ဤ ပရိသုဒ္ဓဘောဂဏ် အစရှိသည်တို့၌၊ ဌိတတ္တာ- ကြောင့်၊ ဌိတေ - တည်တံ့လသော်၊ ဌိတတ္တာယေဝ- ပင်၊ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေ-တုန်လှုပ်ခြင်းမရှိသည်၏အဖြစ်သို့ ရောက်လသော်၊ အစလေ နိရိဥ္ဇနေ-တုန်လှုပ်ခြင်း မရှိလသော်၊ ဇာတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဝါ - တနည်း၊ မုဒုကမ္မညဘာဝေန - နူညံ့သည်၏အဖြစ်, အဘိညာဉ်အမှု၌ ခံ့သည်၏အဖြစ် ဖြင့်၊ အတ္တ

မုဒု ဟိ၊ပေ၊သုဓန္တမိဝ သုဝဏ္ဏံ ။ ။ လျော်ပြီး ဉုံးပြီးဖြစ်၍ နူညံ့သောရွှေသည် ပုတီးလက်ကောက် စသော တန်ဆာကိုပြုရာ၌ လိုသလို ဆွဲငင်ဘို့ရန် အထုအရိုက် ခံနိုင်သကဲ့သို့, ကိလေသာ အညစ်အကြေးကင်း၍ သန့်ရှင်းသောစိတ်လည်း နူညံ့နေသဖြင့် အဘိညာဉ်အမှုကို ပြုဘို့ရန် ခံနိုင်ရည်ရှိသည်-ဟူလို။ [ဓမီယိတ္တာတိ ဓန္တံ =မီးဖြင့်ကပ်၍ မှုတ်အပ်သော ရွှေ၊ သုဋ္ဌု+ ဓ န္တံ သုဓ န္တံ= ကောင်းစွာမှုတ်အပ်သောရွှေ၊ ရွှေကို အညစ်အကြေးထုတ်ရာ၌ မီးဖြင့်မှုတ်၍ ထုတ်ရ၏၊ တခါတရံ လျော်၍လည်း ထုတ်ရ၏၊ ထိုသို့ အညစ်အကြေးထုတ်သည်ကို "လျော်သည် ဉုံးသည်" ဟု လည်း ခေါ်၏။]

ဌေတသု၊ပေ၊အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေ။ ။ပရိသုဒ္ဓ စသောဂုဏ်များ ပျက်မသွားအောင် တည်တံ့နေသောစိတ်ကို "ဌိတ"ဟု ၎င်း, ထိုသို့ တည်တံ့နေသည့်အတွက်( ပျက်ဘို့ကို မဆိုထားဘိ) လှုပ်လှုပ်ရှားရှားပင် မရှိအောင် ငြိမ်သက်သောစိတ်ကို "အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တ" ဟု၎င်း ခေါ်၏၊ ["ဧဇ္ဇနံ-တုန်လှုပ်ခြင်း၊ ဣဉ္ဇနာ-ခြင်း၊ ဣဉ္ဇတိ အ ပဒ္ဓသည်း၊ နတ္ထိ+ ဣဉ္ဇနာ ယဿာတိ အနိဉ္ဇံ-တုန်လှုပ်ခြင်းမရှိသောစိတ်၊ အနိဉ္ဇဿ+ ဘာဝေါ (အာနိဉ္ဇံ-ဟု ဖြစ်သင့်လျက် ဣကို ဧပြု၍) အာနေဉ္ဇံ၊ အာနေဉ္ဇံ+ ပတ္တံ-အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တံ" ဟု ပြု၊ ဥဇုကတ္တ ပြုလို၍ "အစလေ-နိရိဉ္ဇနေ" ဟု ဖွင့်သည်။]

နော—၏၊ ဝသေ-အလို၌၊ ဌိတတ္တာ—တည်တန့်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဌိတေ-တည်တံ့လသော်၊ သဒ္ဓါဒိဟိ - သဒ္ဓါ အစရှိသော တရားတို့သည်၊ ပရိဂ္ဂဟိတတ္တာ - ထက်ဝန်းကျင် ယူအပ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ - ထောက်ခံအပ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေ-သော်၊ ဟိ-ချဲ့၊ သဒ္ဓါပရိဂ္ဂဟိတံ-သဒ္ဓါသည် ထက်ဝန်းကျင် ယူအပ်သော၊ ဝါ - သဒ္ဓါသည် ထောက်ခံအပ်သော၊ စိတ္တံ-သည်၊ အဿဒ္ဓိယေန-အဿဒ္ဓိယကြောင့်၊ ဝါ-သဒ္ဓါမရှိသူ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ အကုသိုလ်စိတ္တုပ္ပါဒ်ကြောင့်၊ န ဣဉ္ဇတိ-မတုန်လှုပ်၊ ဝီရိယပရိဂ္ဂဟိတံ-ဝီရိယသည်၊ပေ၊သော၊ ဝါ-သော၊(စိတ္တံ)၊ကောသဇ္ဇေန-ကောသဇ္ဇကြောင့်၊ ဝါ - ပျင်းရိသူ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ အကုသိုလ်စိတ္တုပ္ပါဒ်ကြောင့်၊ န ဣဉ္ဇတိ၊ သတိပရိဂ္ဂဟိတံ-သတိသည်၊ပေ၊သော၊ ဝါ-သော၊ (စိတ္တံ)၊ပမာဒေန-ပမာဒကြောင့်၊ ဝါ - မေ့လျော့ကြောင်း အကုသိုလ်စိတ္တုပ္ပါဒ်ကြောင့်၊ န ဣဉ္ဇတိ၊ သမာဓိ ပရိဂ္ဂဟိတံ - သမာဓိသည်၊ပေ၊သော၊ ဝါ- သော၊ (စိတ္တံ)၊ ဥဒ္ဓစ္စေန—ဥဒ္ဓစ္စကြောင့်၊ ဝါ - ပြန့်လွင့်သောစိတ်၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ ဥဒ္ဓစ္စကြောင့်၊ န ဣဉ္ဇတိ၊ ပညာ ပရိဂ္ဂဟိတံ - ပညာသည် ၊ပေ၊သော၊ ဝါ-သော၊ (စိတ္တံ)၊ အဝိဇ္ဇာယ-အဝိဇ္ဇာကြောင့်၊ ဝါ – ဉာဏ်၏ ဆန့်ကျင်ဘက်မောဟကြောင့်၊ န ဣဉ္ဇ

**မုဒုကမ္မည ဘာဝေနဝါ**။ ။ "မိမိအလို၌ တည်သည်ကို (ဝသိဘော်သို့ ရောက်နေသည်ကို) ဌိတ"ဟု ဤနည်း၌ ဆိုလို၏၊ ရှေ၌ "ဝသေ ဝတ္တမာနံ ဟိ စိတ္တံ" ဖြင့်လည်း ဝသိဘော်သို့ရောက်သောစိတ်ကိုပင် ပြခဲ့၏၊ သို့ဖြစ်လျှင် မုဒုကမ္မညအဖြစ်ကို ဝသိဘော်သို့ ရောက်ခြင်းဖြင့် မှတ်သားအပ်သကဲ့သို့ , ဝသိဘော်သို့ရောက်၍ ဌိတဖြစ်ခြင်းကိုလည်း မုဒုကမ္မညတာဖြင့် မှတ်သား၍ပြ၏ (အပြန်အလှန် မှတ်သားအပ်၏—ဟူလို)၊ [ယထာ မုဒုကမ္မညတာ ဝသိဘာဝပ္ပတ္တိယာ လက္ခီယန္တိ၊ ဧဝံ ဝသိဘာဝပ္ပတ္တိပိ မုဒုကမ္မညတာဟိ လက္ခီယတီတိ မုဒုကမ္မဘာဝေနဝါ၊ပေ၊ ဌိတေတိ ဝုတ္တံ၊ ယထာ ဟိ ကာရဏေန ဖလံ နိဒ္ဒိသိယတိ (ထုတ်ဆောင်အပ်၏)၊ ဧဝံ ဖလေနာပိ ကာရဏံ နိဒ္ဒိသီယတီတိ။ ]

**သဒ္ဓါဒီဟိ၊ပေ၊အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေ**။ ။ နိစ္စလဘာဝေန အဝဋ္ဌာနံ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တိ—မတုန်မလှုပ်၏ အဖြစ်ဖြင့် အာရုံ၌သက်ဝင်၍ တည်ခြင်းသည် အာနေဉ္ဇသို့ ရောက်ခြင်းမည်၏၊ သာစ သမ္ပယုတ္တဓမ္မေသု ထိရဘာဝေန ပဋိပက္ခေဟိ အကမ္ပနိယတာယစ သမ္ဘဝန္တိ—ထို အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တိသည်လည်း သမ္ပယုတ်တရားတို့၌ ခိုင်မြဲသည်၏ အဖြစ်ဖြင့်ရင်း, အသဒ္ဓိယ စသော ဆန့်ကျင်ဘက်တို့ မလှုပ်နိုင်သည်၏ အဖြစ်ဖြင့်ရင်း ဖြစ်လေသော်၊ သဒ္ဓါဒိဗလာနံ အာနုဘာဝေန ဟောတီတိ အာဟ — သဒ္ဓါဒိပရိဂ္ဂဟိတတ္တာ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေတိ၊ အချုပ်မှာ—လူတယောက်ကို အကျိုးလိုသူတို့က ဂုဏ်မပျက်အောင် ဝိုင်းဝန်းထောက်ပံ့ထားသကဲ့သို့ စတုတ္ထဈာန်စိတ်ကိုလည်း "မတုန်မလှုပ် ခိုင်မြဲအောင် သဒ္ဓါစသောတရားတို့က ဝိုင်းဝန်းထောက်ပံ့ထားကြသည်"ဟူလို၊ ထို့ကြောင့် ပရိဂ္ဂဟိတံကို "ဥပတ္ထမ္ဘိတံ" ဟု ဖွင့်သည်။ [ဋီကာ၌ ပါဌ်ပျက်၍ ပါဌ်မှန်ကို ထုတ်ပြလိုက်သည်။]

တိ၊ ဩဘာသဂတံ- ဖြစ်သောဉာဏ် အရောင်အလင်းရှိသော၊ (စိတ္တံ)၊ ကိံလေသန္ဓကာရေန-ကိလေသာအမိုက်မှောင်ကြောင့်၊ န ဇုဋ္ဌိတံ၊ ဆပ်-ခြောက်ပါးကုန်သော၊ ဇုမေဟိ ဓမ္မေဟိ - တို့သည်၊ ပရိဂ္ဂဟိတံ - ထက်ဝန်းကျင် ယူအပ်သော၊ ဝါ - ထောက်ခံအပ်သော၊ ( စိတ္တံ ) အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တံ ဟောတိ၊ ဧဝံ- ဤသို့လျှင်၊ အဋ္ဌင်္ဂသမန္နာဂတံ - ရှစ်ပါးသောအင်္ဂါနှင့် ပြည့်စုံသော၊ စိတ္တံ- သည်၊ အဘိညာ သစ္ဆိကရဏီယာနံ - အဘိညာဉ်ဖြင့် မျက်မှောက်ပြုထိုက်ကုန်သော၊ ဓမ္မာနံ - ပုဗ္ဗေနိဝါသစသော တရားတို့ကို၊ အဘိညာ သစ္ဆိကိရိယာယ-၄ါ၊ အဘိနီဟာရက္ခမံ-ရှေးရှုဆောင်ခြင်းငှါ ခံ့သည်၊ ဟောတိ။

အပရော - ရှေ့နည်းမှတပါး အခြားသော၊ နယော - နည်းကား၊ စတုတ္ထဇ္ဈာနသမာဓိနာ-မိဖြင့်၊သမာဟိတေ-သော်၊ဝါ-သော်၊ နီဝရဏဒူရီဘာဝေန- နီဝရဏတို့မှ ဝေးသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ပရိသုဒ္ဓေ - သော်၊ ဝိတက္ကာဒိ သမတိက္ကမေန-ဝိတက် အစရှိသည်တို့ကို လွန်မြောက်ခြင်းကြောင့်၊ ပရိယောဒါတေ- သော်၊ဈာနပရိလာဘပစ္စယာနံ-ဈာန်ရခြင်းဟူသောအကြောင်းရှိကုန်သော၊ ပါပကာနံ-န်သော၊ ဣစ္ဆာဝစရာနံ - အလိုဆိုးသည် သက်ရောက်အပ်ကုန်သော မာန, သာဌေယျ စသည်တို့၏၊ အဘာဝေန – မရှိခြင်းကြောင့်၊ အနင်္ဂဏေ-

**အဋ္ဌင်္ဂသမန္နာဂတံ။** ။သမာဟိတတာ, ပရိသုဒ္ဓတာ, ပရိယောဒါတတာ, အနင်္ဂဏတာ, ဝိဂတူပက္ကိလေသတာ,မုဒုဘာဝေါ,ကမ္မနီယတာ,အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တိယာ ဌိတတာ ( အာနေဉ္ဇသို့ ရောက်သော အားဖြင့် တည်တံ့သည်၏ အဖြစ် ) ဤ ရှစ်ပါးတည်း၊ တနည်း—ဤ ရှစ်ပါးသည် သမာဟိတ စိတ်၏ ဂုဏ်အင်္ဂါများ ဖြစ်သောကြောင့် သမာဟိတကို စိတ္တ၏ ဝိသေသနထား၍ "ဌိတေ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေ"ကို အင်္ဂါ ၂ ပါး ခွဲသော အားဖြင့်လည်း အဋ္ဌင်္ဂသမန္နာဂတစိတ် ဖြစ်နိုင်သည်။

**အပရောနယော။** ။ ဤနည်း၌ စိတ်ကို ညစ်နွမ်းအောင် ပြုတတ်သော နီဝရဏတို့မှ စင်ကြယ်ခြင်းကို ပရိသုဒ္ဓ ဟု ရင်း, စိတ်ကို လှုပ်ရှားစေတတ်သော ဝိတက် ဝိစာရနှင့် စိတ်ကို ပေါ်လွင်အောင် ပြုတတ်သော ပီတိတို့မှ စင်ကြယ်ခြင်းကို ပရိယောဒါတ ဟု ရင်း ဆိုသည်၊ ပဌမဈာန်သည် နီဝရဏတို့မှ ကင်းသော်လည်း ဤ စတုတ္ထဈာန်လောက် မဝေးကွာတတ်၊ ထို့အတူ ဒုတိယဈာန်သည် ဝိတက် ဝိစာရတို့မှ , တတိယဈာန်သည် ပီတိမှ ကင်းသော်လည်း ဤ စတုတ္ထဈာန်လောက် မလွတ်ကင်းတတ်ချေ၊ ထို့ကြောင့် ဤ စတုတ္ထဈာန်ကိုသာ "နီဝရဏ၊ပေ၊ပရိယောဒါတေ" ဟု မိန့်သည်။

**ဈာနပဋိလာဘပစ္စယာနံ၊ပေ၊အနင်္ဂဏေ။** ။ဈာန်ရမှုကို အကြောင်းပြု၍ မိမိကို မိမိ အထင်ကြီးသော မာနတမျိုးဖြစ်တတ်သေး၏၊မြတ်စွာဘုရားသည် ပဋိသတ်အလယ် တရားဟောတော်မူရာဝယ် ("ရဟန်း .. ဒီတရားကို သင်က ဘယ်လိုသဘောရသလဲ" စသည်ဖြင့်) ငါ့ကိုသာ မေး၍ မေး၍ တရားဟောတော်မူလျှင် ကောင်းလေစွ-ဟု မာန

သော်၊ အဘိဇ္ဈာဒီနံ – အဘိဇ္ဈာ အစရှိကုန်သော၊ စိတ္တုပက္ကိလေသာနံ – စိတ်ကို ပူပန်စေတတ်, နှိပ်စက်တတ်ကုန်သော တရားတို့၏၊ ဝိဂမေန – ကင်းခြင်းကြောင့်၊ ဝိဂတုပက္ကိလေသေ-သော်၊ စ·ဆက်၊ တော် ဥဘယမ္ပိ-ဤ အနင်္ဂဏအဖြစ် ဝိဂတုပက္ကိလေသ အဖြစ် ၂ ပါးစုံ ကိုလည်း၊ အနင်္ဂဏဝတ္ထသုတ္တာနုသာရေန - အနင်္ဂဏသုတ် , ဝတ္ထသုတ်သို့ အစဉ်လိုက်ခြင်းဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ- ၏၊ ဝသိပ္ပတ္တိယာ-ဝသီဘော်သို့ ရောက်ခြင်းကြောင့်၊ မုဒုဘူတေ- သော်၊ ဣဒ္ဓိပါဒဘာဝူပဂမေန-တန်ခိုး၏အခြေခံအဖြစ်သို့ ကပ်ရောက်ခြင်းကြောင့်၊ ကမ္မနိယေ-

ပါသော အလိုဆန္ဒတမျိုး ဖြစ်တတ်သေး၏၊ ရှိသောအပြစ်ကို ဖုံးထားလိုသော မာယာလည်းဖြစ်တတ်၏၊မရှိသောဂုဏ်ကို ရှိဟန်ဆောင်တတ်သော သာဌေယျလည်းဖြစ်တတ်၏၊ ထိုမာန မာယာ သာဌေယျ တရားသည် ပါပကဣစ္ဆာဝစရ မည်၏၊ [ ဣစ္ဆာယ– ယုတ်မာသောအလိုသည် (အလိုဆိုးသည်) + အဝစရာ– သက်ရောက်အပ်သောတရားတို့တည်း၊ ဣစ္ဆာဝစရာ– တို့။ ] ဤတရားတို့ကား နိဝရဏလော် မကြမ်းသော်လည်း စိတ်ညစ်နွမ်းအောင်ပြုတတ်၍ အင်္ဂဏဟုဆိုအပ်သော အနုစား အကုသိုလ်များတည်း။

ဝိမတိ ။ ။ ပေါတ္ထကေသု ပန "ဈာနပဋိလာဘပစ္စနီကာနံတိပိ လိခန္တိ၊ သော ပမာဒပါဌော (စာအုပ်တို့၌ ဈာနပဋိလာဘပစ္စနီကာနံ ဟု ရှိသော ပါဌ်သည် အမှတ်တမဲ့ ရေးအပ်မိသော ပါဌ်တည်း၊) ဘာ့ကြောင့်နည်း – ဈာန်ရခြင်း၏ ဆန့်ကျင်ဘက်ဟူသည် နီဝရဏတရားတို့တည်း၊ ထို နီဝရဏတို့၏ မရှိခြင်းကိုကား ပရိသုဒ္ဓေပုဒ်တုန်းကပင်"နီဝရဏ ဒူရီဘာဝေန ပရိသုဒ္ဓေ"ဟု ဖွင့်ခဲ့ပြီးဖြစ်သောကြောင့်တည်း။ [သာရတ္ထဋီကာ ဝိသုဒ္ဓိမဂ် မဟာဋီကာတို့လည်း အလားတူပင် ဖွင့်ကြသည်။ ]

**အဘိဇ္ဈာဒီနံ၊ပေ၊ကိလေသေ။** ။ [ဤ၌လည်း"ဈာန ပဋိလာဘ ပစ္စယာနံ"ကို လိုက်စေကြ၏။ ] အဘိဇ္ဈာ – ဟူသည် လောဘတည်း၊ ထိုလောဘသည် ကာမစ္ဆန္ဒ နီဝရဏအဖြစ်သို့ မရောက်သော မိမိဈာန်ကို မိမိနှစ်သက်မှု လောဘအနုစားတည်း၊ အာဒိဖြင့် ပြခဲ့သော မာနမာယာသာဌေယျကိုပင် ယူ။ [အဘိဇ္ဈာသဒ္ဒေနစ အနီဝရဏသဘာဝဿေဝ လောဘဿ, မာနာဒီနဉ္စ ဂဟဏံ၊ ဈာနပဋိလာဘပစ္စယာနန္တိ အနုဝတ္တမာနတ္တာ၊–ဝိမတိ။]

**ဥဘယမ္ပိစေတံ၊ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗံ ။** ။ အနင်္ဂဏတ္တံ ဝိဂတုပက္ကိလေသတ္တံစာတိ ဧတံ ဥဘယမ္ပိ ယထာက္ကမံ အနင်္ဂဏသုတ္တဝတ္ထသုတ္တာနုသာရေနေဝ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊ – ဝိမတိ၊ ထို ၂ သုတ်သည် မူလပဏ္ဏာသပါဠိတော်၌ ပါ၏၊ အနင်္ဂဏသုတ်၌ ဣစ္ဆာ( အလိုဆိုး )ကို စတည်၍ ဟောတော်မူ၏၊ ဝတ္ထသုတ်၌ အဘိဇ္ဈာကို စတည်၍ဟောတော်မူ၏၊ ထိုသုတ်တို့၌ နီဝရဏဖြစ်သော ကြမ်းတန်းသောအပြစ်များကိုလည်း ဟောထားတော်မူ၏၊ ဤအဋ္ဌကထာ၌ကား ဈာန်ရမှုကို အကြောင်းပြု၍ ဖြစ်သောကြောင့် နီဝရဏ မဖြစ်လော်သော သိမ်မွေ့သောအပြစ်များကိုသာပြသည်၊ ထို့ကြောင့်"အနင်္ဂဏဝတ္ထသုတ္တဝသေန– ထိုသုတ်များအတိုင်း" ဟု မဆိုဘဲ "အနုသာရေန– ထိုသုတ်များသို့ အစဉ်လိုက်သဖြင့်"ဟု ဆိုထားသည်။

သော်၊ ဘာ၀နာပါရိပူရိယာ - ဘာ၀နာ၏ ပြည့်စုံ လုံလောက်ခြင်းကြောင့်၊ ပဏီတဘာ၀ူပဂမေန-မွန်မြတ်သည်၏အဖြစ်သို့ ကပ်ရောက်ခြင်းဖြင့်၊ ဌိတေ- သော်၊ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေ-သော်၊ ယထာ-အကြင်အခြင်းအရာအားဖြင့် တည်လ သော်၊ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တံ-တုန်လှုပ်ခြင်းမရှိသည်၏ အဖြစ်သို့ရောက်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ဧဝံ-ဤအခြင်းအရာအားဖြင့်၊ (ဤတုန်လှုပ်ခြင်း မရှိနိုင်လောက်အောင်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊) ဌိတေ-သော်၊ ဉာတိ အဘွေ-နက်၊ ဝေမွိ-ဤသို့လည်း၊ ဝါ - ဤနည်းအား ဖြင့်လည်း၊ အဋ္ဌင်္ဂသမန္နာဂတံ - ရှစ်ပါးသော အင်္ဂါနှင့် ပြည့်စုံသော၊ စိတ္တံ- စိတ်သည်၊ အဘိညာသစ္ဆိကရဏီယာနံ- အဘိညာဉ်ဖြင့် မျက်မှောက် ပြုထိုက်ကုန်သော၊ ဓမ္မာနံ - ပုဗ္ဗေနိဝါသ စသော တရားတို့ကို၊ အဘိညာသစ္ဆိကိရိယာယ-ငှါ၊ အဘိနီဟာရက္ခမံ-ရှေးရှုဆောင်ခြင်းငှါခံ့သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပါဒကံ-အဘိညာဉ်၏အခြေခံသည်၊ ပဒဋ္ဌာနဘူတံ-အဘိညာဉ်၏ နီးစွာသော အကြောင်းဖြစ်၍ဖြစ်သည်၊(ဟောတိ-၏၊) ဉာတိအဘွေ -နက်။

ဘာ၀နာ၊ပေ၊ဘာ၀ူပဂမေန ॥ ॥ အဘိညာဉ်၏အာရုံသို့ ရှေးရှု ဆောင်ဘို့ရာ, ထို့ထက်ပို၍ ပြုဘွယ်မရှိတော့ဘဲ အခြေခံဘာ၀နာ ပြည့်စုံနေသည်ကို "ဘာ၀နာပါရိပူရိ "ဟု ဆိုသည်၊ ဤ ဘာ၀နာပါရိပူရိယာသည် ပဏီတဘာ၀ူပဂမေန၏ ဟိတ်တည်း၊ ထို့ကြောင့် စသဒ္ဒါမပါဘဲထား၍,ဋီကာ၌လည်း"တတောဧဝ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ဘာ၀နာ ပြည့်စုံလုံလောက်နေသည့်အတွက် ပဏီတ (ပြဋ္ဌာန်းသည်၏အဖြစ်သို့ ဆောင်အပ်သော) ဥတ္တမ (အမြတ်ဆုံး) ဈာန်အဖြစ်သို့ ရောက်နေသည်–ဟူလို။

ယထာ၊ပေ၊ဧဝံဌိတေ ॥ ॥ ဤအနက်ဖွင့်ကြည့်၍ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေသည် ဌိတေ၏ ဝိသေသနဖြစ်ကြောင်း သိနိုင်၏၊ ထို့ကြောင့် "အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တေ-အာနေဉ္ဇသို့ရောက်သော၊ ဝါ–ရောက်လောက်အောင်၊ ဌိတေ–သော်"ဟု ပေး၊ ဤ ၂ ပုဒ်မှ အင်္ဂါတပါးရ၏။

မှတ်ချက် ॥ ॥"ယထာ အာနေဉ္ဇဘာဝံ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တံ ဟောတိ၊ ဧဝံ ဌိတေ" ဟု ပါဌ်ပျက် တွေ့ရ၏၊ ဝိသုဒ္ဓိမဂ်၌ " ယထာ အာနေဉ္ဇပ္ပတ္တံ ဟောတိ၊ ဧဝံ ဌိတေ "ဟုသာ ရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် အာနေဉ္ဇဘာဝံသည် အာနေဉ္ဇံကို ဝိဂြိုဟ်လုပ်ပြရာမှ အပိုပါလာသော ပါဌ်ဖြစ်ဟန်တူ၏၊ ထိုပါဌ်ကို ပါစေလိုလျှင်"အနိဉ္ဇသ + ဘာဝေါ အာနေဉ္ဇံ"ဟု ဝိဂြိုဟ် ပြုရသည့်အတိုင်း " ယထာ အနိဉ္ဇဘာဝံ ( တုန်လှုပ်ခြင်းမရှိသည်၏ အဖြစ်ဟူသော) အာနေဉ္ဇံ (အာနေဉ္ဇသို့) ပတ္တံ ဟောတိ "ဟု ရှိရမည်။

ဧဝံပိ၊ပေ၊ပဒဋ္ဌာနဘူတံ ॥ ॥ ဧဝံပိ၌ ပိဖြင့် ရှေးနည်းကိုပေါင်း၊ "အဘိနီဟာ ရက္ခမ" ဟူသည် အဘိညာဉ် ဖြစ်ပေါ်လာအောင် ပုဗ္ဗေနိဝါသသို့ ရှေးရှုဆောင်ခြင်း၌ စတုတ္ထဈာန်စိတ်၏ ပါဒကဈာန်ဖြစ်နိုင်ခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် အဘိနီဟာရက္ခမံကိုပင် " ပါဒကံ– ပဒဋ္ဌာနဘူတံ" ဟု ဖွင့်သည်။ [ အဘိနီဟာရက္ခမံ၌ အဘိနီဟာရ၏ကံကို အဘိနိန္နာမေသိ (အဘိနီဟရိ) ကျမှ သာဓကပြမည်။]

ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိ ဉာဏာယာတိ- ကား၊ တေသို့ စိတ္တေ ၌ စတုတ္ထ ဈာန် စိတ်သည်၊ ဧဝံ-ဤဆိုအပ်ပြီးသော နည်းဖြင့်၊ အဘိညာပါဒကေ-အဘိ ညာဉ်၏ အခြေခံသည်၊ ဇာတေ - ဖြစ်လသော်၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိမ္ပိ- ဿတိ၌၊ ယံ ဉာဏံ-အကြင် ယှဉ်ဘက်ဉာဏ်သည်၊ (အတ္ထိ)၊ တဒတ္ထာယ- ထို ဉာဏ်အကျိုးငှါ၊(အဘိနိန္နာမေသိ၌ စပ်၊) တတ္ထ- ထို ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိ ဉာဏာယ ဟူသော ပါဌ်၌၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသောတိ-ကား၊ ပုဗ္ဗေ- ရှေး၌၊ အတီတ ဇာတိသု- အတိတ်ဘဝတို့၌၊ နိဝုတ္ထက္ခန္ဓာ- နေအပ်ဘူးသော ခန္ဓာတို့တည်း၊ နိဝုတ္ထာတိ - ဟူသည်ကား၊ အဇ္ဈာဝုတ္ထာ – စွဲမှီ၍ နေအပ်ဘူးကုန်သော၊ အနု ဘူတာ-အဖန်ဖန်ဖြစ်ပြီးကုန်သော၊ အတ္တနော-မိမိ၏၊ သန္တာနေ-သန္တာန်၌၊ ဥပ္ပဇ္ဇိတွာ-ဖြစ်၍၊ နိရုဒ္ဓါ-ချုပ်ပြီးကုန်သော၊ ခန္ဓာ-တို့တည်း၊ ဝါ- တနည်း၊

**ပုဗ္ဗေနိဝါသာ၊ပေ၊တတ္ထ။** ။ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိနှင့် ဉာဏကို "ပုဗ္ဗေနိဝါသာ နုဿတိယံ + ဉာဏံ – ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိဉာဏံ" ဟု သတ္တမီတပ္ပုရိသ် တွဲစေလို၍ "ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိမ္ပိ+ယံ ဉာဏံ"ဟု မိန့်၊ သတိသည် ဣတ္ထိလိန် ဖြစ်၍, သတိမှိကို လိင်ဝိပလ္လာသကြံ၊ သတိက ဉာဏ်အား သဟဇာတနိဿယယသတ္တိဖြင့်ကျေးဇူးပြုသော ကြောင့် " သတိမှိ " ဟု ( မှီရာ )အာဓာရ ထားသည်၊ တဒတ္ထာယဖြင့် ဉာဏာယ၌ အာယသည် တဒတ္ထသမ္ပဒါန်၌သက်သော သဝိဘတ်၏ ကာရိယ ဟု သိစေ၏၊ ထို့နေ့ "ပုဗ္ဗေနိဝါသ+ အနုဿတိ+ ဉာဏ" ၃ ပုဒ်ကို ခွဲခြား၍ အကျယ်ပြလိုသောကြောင့် "တတ္ထ"ဟု မိန့်သည်။

**ပုဗ္ဗေနိဝါသောတိ၊ပေ၊ခန္ဓာ။** ။"ဧကမ္ပိ ဇာတိံ,ဒွေပိ ဇာတိယော"စသည်ဖြင့် ဟောတော်မူအပ်သည့်အတိုင်း ပုဗ္ဗေသဒ္ဒါသည် အတိတ်ဘဝတို့ကို ဟော၏ ဟု သိစေ လို၍ " အတီတဇာတိသု " ဟု ဖွင့်၊ နိဝါသသဒ္ဒါသည် အတိတ်ကမ္မသာဓနဟော ဟု ၎င်း,ထိုနေအပ်ဘူးသော အရာဟူသည်လည်း ခန္ဓာ ၅ ပါးမှတပါး အခြား မရှိ ဟု ၎င်း သိစေလို၍ "နိဝုတ္ထ " ဟု အတိတ်ကံဟော တပစ္စည်းဖြင့် ၎င်း, ခန္ဓာ ဟု အဘိဓေယျ (ဟောနက်) ကို ၎င်း ဖွင့်သည်၊ "နိဝသီယိတ္ထ—နေအပ်ဘူးပြီ၊ ဣတိ နိဝါသော" ဟု ပြု၊ ပုဗ္ဗေ+ နိဝါသော-ပုဗ္ဗေနိဝါသော၊ (အလုတ္တသမာသ်)၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသောတိကို၎င်း, ပုဗ္ဗေနိဝါသံ အနုဿရ်ကို ၎င်း ထောက်၍ ကေဝုစ် ဝစနတ်ပြုသည်။ [ နိဝါသ သဒ္ဒေါ ကမ္မသာဓနော၊ ခန္ဓဝိနိမုတ္တောစ နိဝသိတဗ္ဗော နတ္ထိတိ အာဟ – နိဝုတ္ထက္ခန္ဓာတိ။ ]

**နိဝုတ္ထာတိ ပေ၊နိရုဒ္ဓါ။** ။နိဝုတ္ထက္ခန္ဓာဟူသည် နေရာဌာန ဘုံဘဝမဟုတ်၊ အဇ္ဈာ ဝုတ္ထာ (အဓိ+ အာဝုတ္ထာ) –မိမိသန္တာန်၌ စွဲ၍+နေအပ်ဘူးကုန်သော ခန္ဓာများတည်း၊ ထို အဇ္ဈာဝုတ္ထခန္ဓာဟူသည် အနုဘူတာ (အနုအနု+ ဘူတာ) – အဘန်ဘန် ဖြစ်ခဲ့ဘူး သော ခန္ဓာတို့တည်း၊ "အနုဘူတ"ဟူသည် "အတ္တနော သန္တာနေ ဥပ္ပဇ္ဇိတွာ နိရုဒ္ဓါ- မိမိသန္တာန်၌ဖြစ်ပြီး၍ ချုပ်ခဲ့ဘူးသော ( မိမိ၏ဆိုင်ရာ ) ခန္ဓာတို့တည်း"၊ ဤသို့ နိဝုတ္ထ ပုဒ်နက်ကို ပေါ်လွင်အောင် ထပ်၍ထပ်၍ ဖွင့်ပြလေသည်။

နိဝုတ္တဓမ္မာ – နေအပ်ဘူးသော တရားတို့သည်၊ (ပုဗ္ဗေနိဝါသောတိ - ဝါသ မည်၏၊ ရှေပြန်စပ်)၊ နိဝုတ္ထာတိ-ကား၊ ဂေါစရနိဝါသေန-အာရုံ ဖြစ်သော နိဝါသ အားဖြင့်၊ နိဝုတ္ထာ - နေအပ်ပြီးကုန်သော တရားတို့ တည်း၊ အတ္တနော- ၏၊ ဝိညာဏေန - ဖြင့်၊ ဝိညာတာ - သိအပ်ပြီးကုန်သော၊ ပရိစ္ဆိန္နာ–

**နိဝုတ္ထဓမ္မာဝါ ။** ။ ရှေနည်း၌ "နိဝုတ္ထက္ခန္ဓာ"ဟု ဆိုသောကြောင့် ခန္ဓာသာ တိုက်ရိုက်ရ၏၊ နာမဂေါတ္တစသည်မှာ မကောင်းရာ မကောင်းကြောင်းဖြစ်၍ ဆက်သွယ်ယူမှ ရသည်၊ ဤနည်း၌ "နိဝုတ္ထဓမ္မာ" ဟု ဆိုသောကြောင့် ခန္ဓာသာမက နိဗ္ဗာန်တရားနှင့် နာမ-ဂေါတ္တစသော ပညတ်တရားများပါ တိုက်ရိုက်ရ၏၊ ရှေ့နည်း၌"အတ္တနော သန္တာနေ ဥပ္ပန္နပုဗ္ဗာ နိရုဒ္ဓါ" ဟု ဆိုသောကြောင့် မိမိသန္တာန်၌ ဖြစ်ခဲ့သော ( မိမိအတွက်) ပုဗ္ဗေနိဝါသကိုသာ ပြ၏၊ ဤနည်း၌ကား"ဂေါစရနိဝါသေန နိဝုတ္ထာ"ဟု အကျယ်ဖွင့် သောကြောင့် မိမိသန္တာန်မှာဖြစ်ဖြစ်, သူတပါးသန္တာန်မှာဖြစ်ဖြစ်, သတ္တာသန္တာန်၏ အပြင်ပဗဟိဒ္ဓမှာဖြစ်ဖြစ်, ပုဗ္ဗေနိဝါသအားလုံးကိုပြသည်။ [ဝေံ သသန္တတိပရိယာပန္န ဓမ္မဝသေန နိဝါသသဒ္ဒဿ အတ္ထံ ဝတွာ ဣဒါနိ အဝိသေသေန ဝတ္တုံ နိဝုတ္ထဓမ္မာဝါ နိဝုတ္ထာတိ ဝတွာ တံ ဝိဝရိတုံ ဂေါစရနိဝါသေနာတိအာဒိ ဝုတ္တံ။–ဋီကာများ။]

**မှတ်ချက် ။** ။ ဋီကာအလိုအားဖြင့် "နိဝုတ္ထဓမ္မာဝါ နိဝုတ္ထာ, ဂေါစရနိဝါသေန နိဝုတ္ထာ "ဟု ဣတိ မပါဘဲ ပါဌ်ရှိရမည်၊ ထိုအလို သုတ်ကို ဝုတ္တိဖွင့်သကဲ့သို့ နိဝုတ္ထာကို " ဂေါစရဝသေန နိဝုတ္ထာ " ဟု ဣတိမပါဘဲ ဖွင့်သည်ဟု ဆိုလိုသည်၊ ယခုစာများ၌ "နိဝုတ္ထဓမ္မာဝါ၊ နိဝုတ္ထာတိ ဂေါစရနိဝါသေန နိဝုတ္ထာ " ဟု ရှိ၏၊ ဤစာရှိအလို "နိဝုတ္ထဓမ္မာဝါ"သည် ပုဗ္ဗေနိဝါသောဝယ် နိဝါသော၏အဖွင့်၊ထို နိဝုတ္ထကိုမှ"နိဝုတ္ထာတိ" ဟု တည်၍ "ဂေါစရနိဝါသေန နိဝုတ္ထာ" ဖွင့်သည်ဟု မှတ်ပါ။ [ဤအဖွင့်များကို ထောက်၍"အဇ္ဈာဝုတ္ထနိဝါသ, ဂေါစရနိဝါသ"ဟု ပုဗ္ဗေနိဝါသ ၂မျိုးကိုလည်းမှတ်။]

**အတ္တနော၊ပေ၊ပရိစ္ဆိန္နာ။** ။ထိုပုဗ္ဗေနိဝါသတရားသည်"မိမိဝိညာဉ်ဖြင့် သိအပ်သောတရား, သူတပါးဝိညာဉ်ဖြင့် သိအပ်သောတရား"ဟု ၂ မျိုးရှိ၏၊ ထိုတွင် "အတ္တနော၊ပေ၊ပရိစ္ဆိန္နာ" ပါဌ်ဖြင့် မိမိဝိညာဉ်ဖြင့် သိအပ်သောတရားများကို ပြ၏၊ ရှေးရှေး ဘဝ၌ မိမိခန္ဓာနှင့် ဆက်သွယ်၍ မိမိနာမည် အနွယ်အဆင်း အစာ သုခ ဒုက္ခတို့သည် ၎င်း, မိမိ၏ မိဘ- ဆွေမျိုး အပေါင်းအပေါင်း စသူတို့နှင့် နေရာဌာနတို့သည်၎င်း , မိမိ ဝိညာဉ်ဖြင့် တွေ့ကြုံ ခံစားခဲ့ရသော အာရုံများတည်း၊ ထိုသို့ သိရာ၌ ရှေးရှေးဘဝက စက္ခုဝိညာဉ် စသော ဝိညာဉ် ၆ ပါးဖြင့် သိကာမတ္တ မဟုတ်၊ မနောဒွါရိကဝီထိစိတ်ဖြင့် အမည်အနွယ်စသည် ခွဲခြား၍ ကွဲကွဲပြားပြား သိအပ်သည်– ဟု ပြလို၍ ဝိညာတာကို "ပရိစ္ဆိန္နာ"ဟု ထပ်ဖွင့်သည်။ [ရှာန်အဘိညာဉ်ရသော သာသနာပ (တိတ္ထိယ-ခေါ်) ရသေ့များနှင့် ပစ္စေကဗုဒ္ဓါ သာဝကတို့သည် မိမိ၏ ရှေးဖြစ်ပုံကိုသာ ဤ အဘိညာဉ်ဖြင့် သိနိုင်ကြ၏၊ ထို့ကြောင့် ဤနည်းကို နောက်နည်းမှ သီးခြား ပြရသည်၊ – တိတ္ထိယာစ ပုဗ္ဗေနိဝါသံ အနုဿရမာနာ အတ္တနာ ဒိဋ္ဌကတသုတမေဝ အနုဿရန္တိ၊ တထာ သာဝကာစ ပစ္စေကဗုဒ္ဓါစ"–မဟာပဒါနသုတ် အဋ္ဌကထာ။]

ပိုင်းခြားအပ်ပြီးကုန်သော တရားတို့တည်း၊ ဝါ - သည်သာ မကသေး၊ ဆိန္နဝဋုမကာနုဿရဏာဒီသု-ပြတ်ပြီးသော သံသရာလမ်းခရီးရှိသောရဟန္တာတို့ကိုအောက်မေ့ခြင်းအစရှိသည်တို့၌၊ ပရဝိညာဏဝိညာတာပိ-သူတပါးတို့ဝိညာဏ်ဖြင့်သိအပ်သည်လည်းဖြစ်ကုန်သော၊(ပရိစ္ဆိန္နာ-ပိုင်းခြားအပ်သောတရားတို့တည်း၊ ဤသို့ ပရိစ္ဆိန္နာပုဒ်ကိုလိုက်စေ။)

**ပရဝိညာဏ ဝိညာတာပိဝါ ။** ။ ဝါသဒ္ဒါသည် အနက် တမျိုးကို ပြသော အတ္တန္တရဝိကပ်၊ ပိသဒ္ဒါကား အတ္တနော ဝိညာဏဝိညာတကို ပေါင်းသော သမ္ပိဏ္ဍန၊ မိမိဝိညာဏ်ဖြင့် သိအပ်သောအာရုံများသာ နိဝုတ္ထ မဟုတ်သေး၊ ပရဝိညာဏဝိညာတ အာရုံများလည်း နိဝုတ္ထမည်သည်- ဟူလို။ [ " ပရဝိညာဏဝိညာဘာပိဝါ နိဝုတ္ထာတိ သမ္ဗန္ဓော"-ဋီကာ။] ကိုယ်တွေ့မဟုတ်ဘဲ သူတပါးတို့ တွေ့ကြုံခံစား ခဲ့ရသော အာရုံများကိုလည်း ပုဗ္ဗေနိဝါသ အဘိညာဉ်ရသူက ပြန်၍ သိနိုင်သည် -ဟူလို၊ သို့သော် ဤအဘိညာဉ်ကား ဘုရားရှင်တို့အဘိညာဉ်သာ။[ဗုဒ္ဓါပန အတ္တနာဝါ ပရေဟိဝါ ဒိဋ္ဌ-ကတ-သုတံ သဗ္ဗမေဝ အနုဿရန္တိ၊-သုတ်မဟာဝါအဋ္ဌကထာ။]

**မှတ်ချက် ။** ။ ဓမ္မပဒ အဋ္ဌကထာ စက္ခုပါလထေရ ဝတ္ထု၌ စက္ခုပါလထေရ်၏ ဆေးသမားဘဝတုန်းက ပြုလုပ်ခဲ့သောအမှုသည် ဘုရားရှင်ကိုယ်တိုင် ထိုစဉ်ကမတွေ့ခဲ့ရသော်လည်း ဘုရားဖြစ်သောအခါ စက္ခုပါလ၏ ဝိညာဉ်ဖြင့် တွေ့ကြုံ ခံစားခဲ့ရသော အာရုံအကြောင်းအရာစုကို ဤအဘိညာဉ်ဖြင့် ပြန်၍သိတော်မူသည်၊ ဘုရားအလောင်း မပါခဲ့သော အတိတ်ဝတ္ထုများကို ပြန်၍ဟောရာ၌ ဤပရဝိညာဏဝိညာတ အာရုံများကို ပုဗ္ဗေနိဝါသအဘိညာဉ်ဖြင့် သိတော်မူခြင်းချည်းတည်း။

**ဆိန္နဝဋုမကာနုဿရဏာဒီသု ။** ။ ဤစကားသည် ပရဝိညာဏဝိညာတ ဖြစ်သော ပုဗ္ဗေနိဝါသတို့တွင် သိခါပတ္တ (ထိပ်တန်းအကျဆုံး) ပုဗ္ဗေနိဝါသကို ဥဒါဟရုဏ် ပြသော စကားတည်း၊ " ဆိန္နဝဋုမက " ဟူသည် ပြတ်ပြီးသော သံသရာခရီးရှိသော ရဟန္တာတည်း၊ [ဆိန္နံ + ဝဋုမံ (သံသာရမဂ္ဂေါ) ယေသံတိ ဆိန္နဝဋုမကာ။] "တံ ပန သိခါပတ္တံ ပရဝိညာဏဝိညာတံ ပုဗ္ဗေနိဝါသံ ဒဿေတုံ ဆိန္နဝဋုမကာနုဿရဏာဒီသူတိ ဝုတ္တံ၊ တတ္ထ ဆိန္နဝဋုမကာ အတီတေ ပရိနိဗ္ဗုတာ ခီဏာသဝါ, ဆိန္နသံသာရမဂ္ဂတ္တာ။-ဝိမတိ၊ မဟာပဒါနသုတ်အဋ္ဌကထာ၌ကား " ဝဋုမန္တိ- ကုသလာကုသလကမ္မဝဋ္ဋံ ဝုစ္စတိ" ဟု တမျိုးဖွင့်၏။

**အဘိညာဉ်သိပုံ။** ။ပရိနိဗ္ဗာန်စံပြီးသော ရှေးဘုရားတဆူဆူကို အကြောင်း ပြု၍ " ထိုဘုရားသည် ဤသို့ ဝိပဿနာ ရှုတော်မူ၏၊ ဤသို့ မဂ်ကိုဖြစ်စေတော် မူ၏၊ ဤသို့ ဖိုလ်နိဗ္ဗာန်တို့ကို မျက်မှောက် ပြုတော်မူ၏၊ ဤသို့ ဝေနေယျတို့ကို တရားဟောပြ ဆုံးမတော်မူ၏"ဟု ရှေးဘုရားတို့ဝိညာဏ်ဖြင့် သိအပ်ပြီးသော ( ရှေးဘုရားတို့၏ ) ပုဗ္ဗေနိဝါသကို ဤဘုရားရှင်က ဤအဘိညာဉ်ဖြင့် ပြန်၍သိတော်မူသည်၊ ဆိန္နဝဋုမကာနုဿရဏာဒီသု၌ အာဒိဖြင့်ပရိနိဗ္ဗာန်မစံသေးသောရဟန္တာတို့၏ ပရဝိညာဏဝိညာတ ပုဗ္ဗေနိဝါသ သိခြင်းကိုယူ၊ ထိုသို့ သိရာ၌ ခန္ဓာစဉ်အတိုင်း တဘဝပြီး တဘဝ လိုက်

ပုဗ္ဗေနိဝါသာ နုဿတိဉာဏာယ - ဖြင့်၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသံ-သကို၊ အနုဿရတိ - အစဉ်လျှောက်၍ အောက်မေ့နိုင်၏၊ ဝါ - အခြားမဲ့၌ အောက်မေ့နိုင်၏၊ သာ(သတိ)-သည်၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိ-သတိမည်၏၊ ဉာဏန္တိ-ကား၊ တာယသတိယာ-နှင့်၊ သမ္ပယုတ္တဉာဏံ-ယှဉ်သောဉာဏ်တည်း၊ ဧဝံ-သို့၊ ဣမဿ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိဉာဏဿ-ဉာဏ်၏၊ အတ္ထာယ-အကျိုးငှါ၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိ ဉာဏာယ - အကျိုးငှါ၊ တေဿ ဉာဏဿ - ၏ ပုဗ္ဗေ၊ ပေ၊ သို့၊ ဝါ-ကို၊ အဓိဂမာယ-ရခြင်းငှါ၊ ပတ္တိယာ - ရောက်ခြင်းငှါ၊ (အဘိနိန္နာမေသိ°၌စပ်၊) ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ အဘိနိန္နာမေသိန္တိ - ကား၊ အဘိနီဟရိ° - ရှေးရှု ဆောင်တော်မူခဲ့ပြီ၊ သောတိ- ကား၊ သော အဟံ-ထိုငါသည်၊ အနေကဝိဟိတန္တိ-ကား၊ အနေကဝိဓံ-တပါးမကများသောအပြား

မနေဘဲ လိုရာဘဝကို ခုန်၍သိနိုင်၏၊ ထိုသို့သိခြင်းကို သီဟောက္ကန္တိက (ခြင်္သေ့၏ လိုရာ ခုန်လွှားသော) နည်း ဟု ဆိုသည်။ [ "အာဒိသဒ္ဒေန အပရိနိဗ္ဗုတာနံ (တို့၏) ပရဝိညာဏဝိညာတာနမ္ပိ သီဟောက္ကန္တိကဝသေန အနုဿရဏံ ဂဟိတံ"—ဝိမတိ။ ]

ယာယ၊ ပေ၊ သာ။ ။ " သာ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိ " ဟူသော နိယမဝါကျသည် ရှေးကမရှိဘဲ နောက်မှ ထည့်ပါ၌တည်း၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း " ယာယ သတိယာ ပုဗ္ဗေနိဝါသံ အနုဿရတိ၊ သာ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတီတိ အာနေတွာ သမ္ဗန္ဓိတဗ္ဗံ " ဟု ဋီကာတို့ကဆောင်ယူ၍ သမ္ဗန္ဓ်ရမည် ဆိုသောကြောင့်တည်း။ [ဤသို့ မူလတည်ပါ၌ကို ဆောင်ယူ၍ စပ်ရာ၌ နိဿယစာရှိကို ကြည့်၍ စာပြင်ဆရာတို့က ပါဠိအပို ထည့်ထားသောနေရာကို များစွာ တွေ့ရတတ်ပါသည်။]

အဘိနီဟရိ° ။ ။ အဘိနိန္နာမေသိ°၌ အဘိ+နိ+ပုဗ္ဗ နမုဓာတ်, ကာရိတ် ဏေ ပစ္စည်းတည်း၊ "အဘိနိန္နာမေသိ°—စိတ်ကို ရှေးရှုညွတ်စေ၏"ဟု သဒ္ဒတ္ထပေး၊ အဘိနီဟရိ°ကား အဓိပ္ပါယတ္ထ ဖွင့်တည်း၊ "ပုဗ္ဗေနိဝါသအာရုံသို့ စိတ်ကို ညွတ်စေ ကိုင်းစေ ရှိုင်းစေခြင်း "ဟူသည် စတုတ္ထဈာန်၏ အာနာပါနစသောအာရုံမှ စိတ်ကို ဖယ်ရှား၍ ပုဗ္ဗေနိဝါသအာရုံသို့ ရှေးရှု ဆောင်ခြင်းတည်း။ [ အဘိနီဟရိ°တိ—စိတ္တံ ဈာနာရမဏတော အပနေတွာ ပုဗ္ဗေနိဝါသာဘိမုခံ ပေသေသိ°၊ ဤအဖွင့်ကိုထောက်၍ အဘိနီဟာရကမ္မံ တုန်းကလည်း အဘိနီဟာရ၏ ကံကို "ပုဗ္ဗေနိဝါသံ"ဟု မှတ်။ ]

အနေကဝိဓံ။ ။"ဝိပုဗ္ဗ, ဓာဓာတ်, တပစ္စည်းဖြစ်သော ဝိဟိတသဒ္ဒါသည် ဝိပုဗ္ဗ ဓာဓာတ် အပစ္စည်း (ဇုတ္တိဓောတက အာပစ္စည်း) ဖြစ်သော ဝိဓသဒ္ဒါနှင့် အနက်တူ ပရိယာယ်တည်း "ဟု သိစေလို၍ အနေကဝိဟိတံကို " အနေကဝိဓံ " ဟု ဖွင့်သည်၊ " များသောအပြား " ဟူသည် အမျိုးမျိုးသော ဘဝ- ယောနိ- ဂတိ-ဝိညာဏဋ္ဌိတိ-သတ္တာဝါသ စသော အပြားတည်း၊ [ဝိဟိတသဒ္ဒေါ ဝိဓာသဒ္ဒပရိယာယောတိ အာဟ-အနေကဝိဓန္တိ၊ ဘဝယောနိ အာဒိဝသေန ဗဟုဝိဓန္တိ အတ္တော" — ဝိမတိ။ ]

ရှိသော၊ ဝါ-တနည်း၊ အနေကေဟိ-များစွာကုန်သော၊ ပကာရေဟိ-အပြားတို့သည်၊ ပဝတ္တိတံ-ဖြစ်စေတော်မူအပ်သော၊ သံဝဏ္ဏိတံ - ဖွင့်ပြတော်မူအပ်သော၊ ( ပုဗ္ဗေနိဝါသံ ၌စပ်၊ ) ဣတိ အတ္ထော—နက်၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသန္တိ- ကား၊ သမနန္တရာတီတံ— ကောင်းစွာ အခြားမဲ့၌ လွန်လေပြီးသော၊ ဘဝံ- ဘဝကို၊ အာဒိံ ကတွာ—အစပြု၍၊ တတ္ထတတ္ထ- ထိုထို ဘဝ၌၊ နိဝုတ္ထသန္တာနံ-နေအပ်ဘူးသော အစဉ်ကို၊ အနုဿရာမိတိ - ကား၊ ဧကမ္ပိဇာတိံ ဒွေပိ ဇာတိယော တိ-ဧကမ္ပိ၊ပေ၊ယော အစရှိသော၊ (ဣတိ အာချတ္တ၊) ဝံ - ဤ အခြင်း အရာ အားဖြင့်၊ ဇာတိပဋိပါဋိယာ - ဘဝအစဉ်အားဖြင့်၊ အနုဂတ္တွာ အနုဂတ္တွာ- အစဉ်လျှောက်၍ အစဉ်လျှောက်၍၊ သရာမိ - ၏၊ ဝါ - တနည်း၊ အနုဒေဝ- စိတ်ကို ညွတ်စေတော်မူခြင်း၏ အခြားမဲ့၌သာလျှင်၊ သရာမိ - အောက်မေ့တော်မူနိုင်၏၊ စိတ္တေ—ကို၊ အဘိနိန္နာမိတမတ္တေဝ - ရှေ့ရှု ညွတ်စေအပ်ခါမျှသော်သာ၊ သရာမိ-၏၊ ဣတိ-ဤအနက်ကို၊ ဒဿေတိ-ပြ၏၊ ဟိ-မှန်၊ ပူရိတပါရမီနံ-ဖြည့်အပ်ပြီးသော ပါရမီရှိကုန်သော၊ မဟာပုရိသာနံ-မြတ်သော ယောကျ်ား

**အနေကေဟိ၊ပေ၊ပဝတ္တိတံ ။** ။ဝိပုဗ္ဗ ဓာဓာတ်သည် "ဝိပုဗ္ဗော ဓာ ကရောတျတ္ထေ" ဟူသော ဓာတွတ္ထသင်္ဂဟနှင့်အညီ ပြုခြင်းအနက်ရှိ၏၊ "ပြုအပ်" ဟူသည် "ဖြစ်စေအပ်" နှင့် အနက်ညီမျှ၏၊ ထို့ကြောင့် ဝိဟိတံကို "ပဝတ္တိတံ" ဟု ဖွင့်သည်၊ "ဖြစ်စေ"ဟူသည်လည်း ကိုယ်ဖြင့်ပြု၍ ဖြစ်စေခြင်းမဟုတ်၊ တရားဟောမှု (ဒေသနာ) အားဖြင့် ဖြစ်စေခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် "သံဝဏ္ဏိတံ – ချဲ့ထွင် ဖွင့်ပြအပ်သော"ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်။ ["ပဝတ္တိတန္တိ ဒေသနာဝသေန ပဝတ္တိတံ၊ တေနာဟ—သံဝဏ္ဏိတန္တိ၊ ဝိတ္ထာရိတန္တိအတ္ထော" – သာရတ္ထ၊ ဝိမတိ၌ "အနေကပ္ပကာရဝိဟိတံ" ဟု ဆိုသင့်လျက် ပကာရအလယ်ပုဒ် ကြေ—ဟု ဆို၏၊ ထိုအလို "များသော အပြားတို့ဖြင့် ဖြစ်စေအပ်သော "ဟု ပေး၊ သာရတ္ထ၌ "သဟယောဂေစေတံ ကရဏဝစနံ"ဟု ဆို၏၊ "များသောအပြားတို့နှင့်ဘကွ ဖြစ်စေအပ်သော" ဟု ပေး။]

**ဧကမ္ပိဇာတိံ၊ပေ၊အနုဂန္တွာသရာမိ။** ။အနုဿရာမိ၌ အနုကို အနုဂတအနက် ဟောဟု သိစေလို၍ "အနုဂန္တွာ" ဟု ဖွင့်၊ "ဧကမ္ပိဇာတိံ ၊ ပေ၊ ဇာတိပဋိပါဋိယာ" ဖြင့် အစဉ်လျှောက်ပုံကိုပြ၏၊ တဘဝသိ ပြီးလျှင် နောက်တဘဝ ဆက်သိ၊ ထို့နောက် တဘဝ သိပြီးလျှင် ထိုမှတဆက် နောက်တဘဝ ဆက်သိ၊ ဤသို့ ဉာဏဂတိ အားဖြင့် ဘဝအစဉ်ကိုလျှောက်၍ အောက်မေ့နိုင်, သိနိုင်သည်—ဟူလို။

**အနုဒေဝဝါ။** ။အနုသဒ္ဒါသည် အနန္တရတ္ထ၊ "အဘိနိန္နာမေယံ" အရ စိတ်ကို ပုဗ္ဗေနိဝါသသို့ ညွတ်စေသောဝီထိ ဖြစ်၏၊ ထိုဝီထိ၏ အခြားမဲ့၌ပင် ပုဗ္ဗေနိဝါသ အာရုံ ထင်ပေါ်လာသည်၊ ထိုသို့ ပေါ်လာအောင် ပါဒကဈာန်ဝင်စားသော ဝီထိ, "ပုဗ္ဗေနိဝုတ္ထံ ဇာနာမိ"ဟု ပရိကမ်ပြုသော ဝီထိများ မလိုတော့—ဟူလို။ [အနုသဒ္ဒေါ အနန္တရဒီပကောတိ အာဟ—အဘိနိန္နာမိတမတ္တေ ဝေါတိ၊— ဝိမတိ။]

တို့၏၊ ပရိကမ္မကရဏ- ပရိကံ ပြုဘွယ်ကိစ္စသည်၊ နတ္ထိ-မရှိ၊ တေန - ကြောင့်၊ တေ-ထိုမဟာပုရိသတို့သည်၊ စိတ္တံ-ကို၊ အဘိနိန္နာမေတွာဝ - ပြီး၍ သာလျှင်၊ သရန္တိ-န်၏၊ ပန-ကား၊ အာဒိကမ္မိက ကုလပုတ္တာ-အစစွာသော အဘိညာဉ် အမှု၌ ယှဉ်သော အမျိုးကောင်းသားတို့သည်၊ ပရိကမ္မံ-ကို၊ ကတွာဝ-လျှင်၊ သရန္တိ-န်၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ( အာဒိကမ္မိကကုလပုတ္တတို့ ပရိကံကို ပြုပြီးမှသာ အောက်မေ့နိုင်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) တေသံ-ထို အာဒိကမ္မိက ကုလပုတ္တတို့၏၊ ဝါ-တို့နှင့်၊ ဝသေန - စပ်သဖြင့်၊ ပရိကမ္မံ - သည်၊ ဝါ - ကို၊ ဝတ္တဗ္ဗံ-ဆိုထိုက်သည်၊ သိယာ-၏၊ ပန-ထိုသို့ပင် ဆိုထိုက်ပါသော်လည်း၊ တံ-ထို ပရိကံသည်၊ ဝါ-ကို၊ ဝုစ္စမာနံ-ဆိုအပ်သော်၊ [ တနည်း၊ ဝုစ္စမာနံ-သော၊ တံ - သည်၊ ] အတိဘာရိယံ - အလွန်ထမ်းဆောင်ထိုက်သော၊ ဝါ - အလွန် ဝန်လေးသော၊ (အလွန်ကျယ်သော-ဟူလို၊) ဝိနယနိဒါနံ-ကို၊ ကရောတိ-၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ တံ- ထိုပရိကံကို၊ နဝဒါမ- မဆိုကုန်တော့အံ့၊ ပန- ထိုသို့ပင် မဆိုပါကုန်သော်လည်း၊ အတ္ထိကေဟိ-ပရိကံကိုအလိုရှိသောပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ ဝိသုဒ္ဓိမဂ္ဂေ- ၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ-လျှင်၊ ဂဟေတဗ္ဗံ-ယူထိုက်၏၊ ဝါ-ယူပါလေ၊ ပန- ဆက်၊ ဣဓ - ဤ သမန္တပါသာဒိက အဋ္ဌကထာ၌၊ ပါဠိမေဝ- ကိုသာ၊ ဝဏ္ဏယိဿာမ- ဖွင့်ကုန်အံ့။

သေယျထိဒန္တိ - သေယျထိဒံ ဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ အာရဒ္ဓပ္ပကာရ ဒဿ နတ္တေ - အားထုတ်အပ်သော ပုဗ္ဗေနိဝါသအပြားကို ပြခြင်းအနက်၌၊ [ အနု ဿရိတုံ အာရဒ္ဓဿ ပုဗ္ဗေနိဝါသဿ ပဘေဒဒဿနတ္ထေ။ ] ( ပဝတ္တော- သော၊) နိပါတော—တည်း၊ တေနေဝ-ကြောင့်ပင်၊ ယွာယံ ပုဗ္ဗေနိဝါသော- ကို၊ အာရဒ္ဓေါ - အပ်ပြီ၊ တဿ— ထို ပုဗ္ဗေနိဝါသ၏၊ ပကာရပ္ပဘေဒံ- အထူး အပြားကို၊ ဒဿေန္တော-ပြတော်မူလိုသည်၊(ဟုတွာ)ကေမ္ပိဇာတိန္တိ အာဒိ- တိ အစရှိသော ပါဠိရပ်ကို၊ အာဟ—ဟောတော်မူပြီ။

မှတ်ချက် ။ ။ တိတ္ထိယာ ( သာသနာပ ရဟန်းရသေ့တို့သည်) ခန္ဓပ္ပဋိပါဋိယာ အနုဿရန္တိ၊ သာဝကာပိ ခန္ဓပ္ပဋိပါဋိယာဝ အနုဿရန္တိ၊ ဗုဒ္ဓအဂ္ဂသာဝကာ ပန ပန္စေက ဗုဒ္ဓါစ စုတိပဋိသန္ဓိ ဝသေနာပိ သမ္ပဿန္တိ.. အားလုံးစုံ ပြီးပြီး...

တတ္ထ - ထို ကေမ္ဗိ ဇာတိ အစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ ကေမ္ဗိ ဇာတိန္တိ - ကား၊ ကေမ္ဗိ-တခုလည်း ဖြစ်သော၊ ပဋိသန္ဓိမူလံ - ပဋိသန္ဓေ အရင်းခံရှိသော၊ စုတိ ပရိယောသာနံ- စုတိ အဆုံးရှိသော၊ ဧကဘဝပရိယာပန္နံ - တခုသောဘ၌ အကျုံးဝင်သော၊ ခန္ဓသန္တာနံ-ခန္ဓာအစဉ်ကို၊ ဒွေပိ ဇာတိယောတိ အာဒိသု- ရပ်တို့၌၊ သေ နယော – တည်း၊ ပန – ကား၊ အနေကေပိ သံဝဋ္ဋကပ္ပေတိ အာဒိသု - ရပ်တို့၌၊ ပရိဟာယမာနော - ဆုတ်ယုတ် ပျက်စီးဆဲ ဖြစ်သော၊ ကပ္ပေ - အသင်္ချေယျကပ်သည်၊ သံဝဋ္ဋကပ္ပေ - သံဝဋ္ဋကပ် မည်၏၊ ဝဍ္ဎမာနော-တိုးပွားဆဲဖြစ်သော၊ ကပ္ပေ-သည်၊ ဝိဝဋ္ဋကပ္ပေ - ဝိဝဋ္ဋကပ်မည်၏၊ ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ တတ္ထ-ထို သံဝဋ္ဋကပ်, ဝိဝဋ္ဋကပ်တို့တွင်၊ သံဝဋ္ဋေန-သံဝဋ္ဋ ကပ်ဖြင့်၊ သံဝဋ္ဋဋ္ဌာယီ – ယီ ကပ်သည်၊ ဂါ–ကို၊ ဂဟိတော - ယူအပ်သည်၊ ဟောတိ၊ ( ကသ္မာ–နည်း၊ ) တံ မူလကတ္တာ - ထို သံဝဋ္ဋကပ်လျှင် အရင်းခံရှိ သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဝိဝဋ္ဋေနစ - ဖြင့်လည်း၊ ဝိဝဋ္ဋဋ္ဌာယီ - သည်၊

**ကေမ္ဗိ ၊ ပေ ၊ ခန္ဓသန္တာနံ။** ။ ဧကကမ္မနိဗ္ဗတ္တော – ကံတခုကြောင့် ဖြစ်သော အာဒါနနိက္ခေပပရိစ္ဆိန္နော-ခန္ဓာကိုစ၍ ယူခြင်း(ပဋိသန္ဓေ) ပစ်ချခြင်း (စုတိ) တို့ဖြင့် ပိုင်းခြားအပ်သော၊ အန္တောဂဓ ဓမ္မပ္ပဘေဒေါ–အတွင်း၌ပါဝင်သော တရားအမျိုးမျိုး အပြားရှိသော၊ ခန္ဓပ္ပဗန္ဓော – ခန္ဓာအစဉ်ကို၊ ဇာခ–၌ ပုဗ္ဗေနိဝါသအရာ၌၊ ဇာတိတိ– ဇာတိဟူ၍၊ အဓိပ္ပေတော–၏၊ ဇာယတီတိ ဇာတီတိ ကတွာ–၍သို့ ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြု၍တည်း၊ တေနာဟ–ကေမ္ဗိ၊ပေ၊ခန္ဓသန္တာနန္တိ။–သာရတ္ထ။

**ပရိဟာယ ၊ပေ၊ သံဝဋ္ဋကပ္ပေ ။** ။ သံဝဋ္ဋတိ – ပျက်တတ်၏၊ ဣတိ သံဝဋ္ဋော၊ [ဝိမတိ၌ "သံဝဋ္ဋနံ အသာ အတ္ထီတိ သံဝဋ္ဋော" ဟု ပြု၏၊] ကပ္ပီယတိ ပရိကပ္ပီယတိ– (ပရမတ္ထအားဖြင့် ထင်ရှားမရှိဘဲ လောကီလူတို့ ) ကြံစည်အပ် ပညတ်အပ်၏၊ ဣတိ ကပ္ပေါ၊ အခါကာလ ရှ၏၊ ထို့ကြောင့် " ပရိဟာယမာနော ၊ပေ၊ သံဝဋ္ဋကပ္ပေ "ဟု ဖွင့်သည်။ [ပရိဟာယမာနောတိ–ခိယမာနော ဝိနဿမာနော (ပျက်ဆဲ)၊ ကပ္ပေါတိ အသင်္ချေယျကပ္ပေါ၊ ( မဟာကပ်မဟုတ် – ဟူလို၊) သောပန အတ္ထတော ကာလော၊ ကာလသည် ပညတ်ဖြစ်၍ မပျက်နိုင်၊ ထို့ကြောင့် ထိုကာလ၌ဖြစ်သော သင်္ခါရတရားစု ကို ဌာနူပစာရအားဖြင့် "ကပ္ပ" ဟု ခေါ်၏၊ တဒါ ပဝတ္တမာနသင်္ခါရဝသေန အဿ (ထိုကာလ၏) ပရိဟာနိ ဝေဒိတဗ္ဗာ၊ –ဋီကာ။] သံဝဋ္ဋစသော ကပ် ၄ မျိုး၏ ဖြစ်ပုံ တည်ပုံကို ဆိုင်ရာသဂြိုဟ်အဖွင့်များ၌ ရှု။

**တံ မူလကတ္တာ။** ။သံဝဋ္ဋ ( ပျက်ဆဲ ), သံဝဋ္ဋဋ္ဌာယီ ( ပျက်မြဲအတိုင်း တည်နေ သော ) ကပ်၊ ဝိဝဋ္ဋ (ကမ္ဘာမြေနှင့် လနေစသော အဆောက်အဦးတို့ တိုးပွားဆဲ) ကပ်၊ ဝိဝဋ္ဋဋ္ဌာယီ (တိုးပွားပြီးအတိုင်း တည်နေသော) ကပ်၊ ထိုတွင် သံဝဋ္ဋကပ်သည် သံဝဋ္ဋဋ္ဌာယီကပ်၏ အရင်းခံ ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် ပါဠိတော်ဝယ် သံဝဋ္ဋသာ ပါသော်လည်း ထို သံဝဋ္ဋဖြင့် သံဝဋ္ဋဋ္ဌာယီကိုပါ ယူရသည်–ဟူလို။

ဝါ-ကို၊ ဂဟိတော ဟောတိ၊ ဟိ-အကျိုးကား၊ ဝေသတိ-ဤသို့ယူအပ်သော်၊ ( သံဝဋ္ဋကပ်ဖြင့် သံဝဋ္ဋဋ္ဌာယီကပ်ကို ， ဝိဝဋ္ဋဖြင့် ဝိဝဋ္ဋဋ္ဌာယီကပ်ကို ယူအပ်သည်ရှိသော်၊ )စတ္တာရိမာနိ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ဝိဝဋ္ဋဋ္ဌာယီတိ-ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ) ဝုတ္တာနိ-န်သော၊ ယာနိတာနိ - အကြင်ကပ်တို့သည်၊ (သန္တိ-၏၊) သဗ္ဗာနိ-န် သော၊ တာနိ-ထိုကပ်တို့သည်၊ ဝါ-တို့ကို၊ ပရိဂ္ဂဟိတာနိ - သိမ်းယူ အပ်ကုန်သည်၊ ဟောန္တိ၊ [ ဘိက္ခဝေ - တို့၊ ကပ္ပဿ - မဟာကပ်၏၊ အသင်္ချေယျာနိ- အသင်္ချေယျကပ်တို့သည်၊ ဣမာနိစတ္တာရိ - ဤ ၄ပါး တို့တည်း၊ ကတမာနိ စတ္တာရိ၊ သံဝဋ္ဋော-သံဝဋ္ဋကပ်ငှင်း, စသည်။]

တတ္ထ - ထို လေးပါးသော ကပ်တို့တွင်၊ သံဝဋ္ဋာ - သံဝဋ္ဋ ကပ်တို့သည်၊ တေဇောသံဝဋ္ဋော- တေဇောသံဝဋ္ဋကပ်ငှင်း၊ ဝါ-မီးကြောင့် ပျက်သောကပ်ငှင်း၊ အာပေါသံဝဋ္ဋော-ငှင်း၊ ဝါ-ရေကြောင့်ပျက်သောကပ်ငှင်း၊ ဝါယော သံဝဋ္ဋော - ငှင်း၊ ဝါ - လေကြောင့် ပျက်သောကပ်ငှင်း၊ ဣတိ, တယော- ၃ပါးတို့တည်း၊ သံဝဋ္ဋသီမာ-သံဝဋ္ဋကပ်၏ အထက် အပိုင်းအခြားတို့သည်၊ အာဘဿရာ-ရာဘုံငှင်း၊ သုဘကိဏှာ-ဘုံငှင်း၊ ဝေဟပ္ဖလာ - ဘုံငှင်း၊ ဣတိ တိဿော၊ ယဒါ-အကြင်အခါ၌၊ ကပ္ပေါ-ကမ္ဘာသည်၊တေဇေန-မီးကြောင့်၊ သံဝဋ္ဋတိ-ပျက်၏၊ (တဒါ-၌၊) အာဘဿရတော-ဘုံမှ၊ ဟေဋ္ဌာ-အောက်၌၊ ဝါ-အောက်တလျှောက်ကို၊ အဂ္ဂိနာ-မီးသည်၊ ဍယှတိ-လောင်အပ်၏၊ ယဒါ, ဥဒကေန-ရေကြောင့်၊ သံဝဋ္ဋတိ၊ (တဒါ), သုဘကိဏှတော-မှ၊ ဟေဋ္ဌာ-၌၊ ဝါ-သည်၊ ဥဒကေန - ကြောင့်၊ ဝိလီယတိ-ကျေမွ၏၊ ယဒါ, ဝါတေန - လေကြောင့်၊ သံဝဋ္ဋတိ၊ (တဒါ)ဝေဟပ္ဖလတော, ဟေဋ္ဌာ-၌၊ ဝါ-ကို၊ ဝါတေန-သည်၊ ဝိဒ္ဓံသိယတိ- ဖျက်ဆီးအပ်၏၊ ဝိတ္ထာရတော ပန - အကျယ်အပြန့်အားဖြင့်ကား၊ သဒါပိ - အခါ ခပ်သိမ်းလည်း၊ ( မီးကြောင့် ပျက်ရာအခါ စသည် အားလုံး)၊ ကေ် ဗုဒ္ဓခေတ္တံ-တခုသော ဗုဒ္ဓခေတ်သည်၊ ဝါ-ဗုဒ္ဓခေတ် တခုလုံးသည်၊ ဝိနဿတိ-ပျက်စီး၏၊ ဗုဒ္ဓက္ခေတ္တံနာမ-မည်သည်၊ ဇာတိက္ခေတ္တံ - ခေတ်ငှင်း၊ အာဏာက္ခေတ္တံ-ငှင်း၊ ဝိသယက္ခေတ္တဥ္စ-ငှင်း၊ (ဣတိ) တိဝိဓံ ဟောတိ၊ တတ္ထ-ထိုသုံးပါးတို့တွင်၊ ဇာတိက္ခေတ္တံ-ခေတ်သည်၊ဒသသဟဿစက္ကဝါဠပရိ

ဇာတိက္ခေတ္တံ။ ။[သဏ္ဍတ၌ "သေ္တတ္ထ" ဟု ရှိ၍ သ အစား ဒွေဘော်လာ။] ယတ္ထကေဌာနေ — ၌၊ တထာဂတဿ ပဋိသန္ဓိ ညာဏာနဘာဝေါ ပုညပ္ဖလ သမုဋ္ဌေဗိတော သရသေန ပရိဇမ္ဘတိ၊ တံ သဗ္ဗမ္ပိ ဗုဒ္ဓက်ုရဿ နိဗ္ဗတ္တနက္ခေတ္တံနာမာတိ အာဟ- ဇာတိက္ခေတ္တံတျာဒိ = ပဋိသန္ဓေ ဉာဏ်၏ အာနုဘော်သည် ကောင်းမှုအကျိုးသည် ကောင်းစွာ ထက်သန်စေအပ်သည်ဖြစ်၍ မိမိသဘောဖြင့် တင့်တယ်စမ္ပါယ်၏၊ ထိုဌာန

ယန္တံ-တသောင်းသောစကြာဝဠာအဆုံးအပိုင်းအခြားရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ယံ(ယသ္မိံ ဇာတိခေတ္တေ)- ယင်းဇာတိခေတ်၌၊ တထာဂတဿ-၏၊ ပဋိသန္ဓိ အာဒိသု - ပဋိသန္ဓေယူရာ အစရှိသည်တို့၌၊ ပထဝီ-သည်၊ ကမ္ပတိ - တုန်လှုပ်ရ၏၊ [ ယံ ယသ္မိံ ဇာတိခေတ္တေ - အကြင် ဇာတိခေတ်၌၊ တထာဂတဿ ပဋိသန္ဓိ အာဒိသု ပထဝီ, ကမ္ပတိ-ရ၏၊ (တံ)ဇာတိခေတ္တံ- သည်၊ ဒသ သဟဿ စက္ကဝါဠပရိယန္တံ—တသောင်းသောစကြာဝဠာအဆုံးအပိုင်းအခြားရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ဤသို့လည်း ပေးနိုင်သည်၊ ] အာဏာက္ခေတ္တံ - သည်၊ ကောဋိ သတသဟဿ စက္ကဝါဠ ပရိယန္တံ – ကုဋေတသိန်း စကြာဝဠာ အဆုံးအပိုင်းအခြားရှိသည်၊ ဟောတိ၊ ယတ္ထ- ယင်း အာဏာခေတ်၌၊ ရတနပရိတ္တံ- ရတနပရိတ်တော်ငင်း၊ ခန္ဓပရိတ္တံ - ငင်း၊ ဓဇဂ္ဂပရိတ္တံ - ငင်း၊ အာဋာနာဋိယပရိတ္တံ- ငင်း၊ မောရပရိတ္တံ-မောရပရိတ်တော်ငင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဣမေသံ ပရိတ္တာနံ- ဤပရိတ်တော်တို့၏၊ အာနုဘာဝေါ- အာနုဘော်သည်၊ ပဝတ္တတိ- ဖြစ်၏။

အားလုံးသည် (စကြာဝဠာတသောင်းသည်) ဘုရားအလောင်း ဖြစ်ပေါ်ခြင်း၏ နယ်နိမိတ်ဖြစ်သည်။ [ဇာတိ ဿ- ဖြစ်ခြင်း (ဖွားမြင်ခြင်း) ၏ + ခေတ္တံ—နယ်နိမိတ်တည်း၊ ဇာတိက္ခေတ္တံ—ဖွားမြင်ခြင်း၏ နယ်နိမိတ်။]

**အာနုဘာဝေါ ပဝတ္တတိ**။ ။[ပရိ (သမန္တတော) တာယတီတိ ပရိတ္တံ—ထက်ဝန်းကျင်မှ စောင့်ရှောက်တတ်သော အရံအကာ၊ ဝါ—ပရိတ်တော်။ ] ဣမ ဣဋ္ဌိမာ စေတောဝသိပ္ပတ္တော (ဤ သာသနာတော်၌ စိတ်၏ ဝသီဘော်သို့ရောက်ပြီး တန်ခိုးရှင်သည်) အာဏာခေတ္တပရိယာပန္နေ ယတ္ထကတ္ထစိ စက္ကဝါဠေ ဌတွာ (အာဏာခေတ်တွင် ပါဝင်သော စကြာဝဠာ တခုခု၌ တည်၍) အတ္တနော အတ္ထာယ ပရိတ္တံ ကတွာ (မိမိ အတွက် ပရိတ် အကာအကွယ်ပြုပြီးနောက်) တတ္ထေဝ အညံ စက္ကဝါဠံ ဂတောပိ ကတပရိတ္တောဧဝ ဟောတိ (ထို အာဏာခေတ်ထည်းက အခြားစကြာဝဠာ တခုသို့ သွားသော်လည်း ပြုအပ်မြဲတိုင်း အကာအကွယ်ရှိသည်သာ၊) ဣတိ တသ္မာ ဝုတ္တံ—(ဤသို့ နှလုံးသွင်း၍ "အာနုဘာဝေါ ပဝတ္တတိ"ဟု ဆိုအပ်ပြီ)။

**အထဝါ**။ ။တတ္ထ ကေသ္မိံ စက္ကဝါဠေ ဌတွာ (ထို အာဏာခေတ်ထည်းက တခုသော စကြာဝဠာ၌တည်၍) သဗ္ဗသတ္တာနံ အတ္ထာယ ပရိတ္တေ ကတေ (သတ္တဝါအားလုံး အတွက် ရတနသုတ် စသော ပရိတ်ကို ပြုအပ်သော် ) အာဏာခေတ္တေ သဗ္ဗသတ္တာနံ အဘိသမ္ဘုဏာတေဝ ပရိတ္တာနုဘာဝေါ ( အာဏာခေတ်တွင်းရှိ သတ္တဝါ အားလုံး အတွက် ပရိတ်အာနုဘော်ရောက်သည်သာ (ပြန့်နှံ့ သည်သာ)၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း— တတ္ထ ဒေဝတာဟိ ပရိတ္တာဏာယ သမ္ပဋိစ္ဆိတတ္တာ ( ထို အာဏာခေတ်တွင်းရှိ နတ် ဗြဟ္မာ တို့က ပရိတ်အာဏာတော်ကို လက်ခံအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ထို့ကြောင့်"အာနုဘာဝေါ ပဝတ္တတိ"ဟု မိန့်သည်၊ ထို့ကြောင့်ပင် စကြာဝဠာကုဋေတသိန်းကို "ပရိတ်အာဏာတော်၏နယ်နိမိတ်" ဟု သတ်မှတ်ရသည်။

ပန-ကား၊ ဝိသယက္ခေတ္တံ – သည်၊ အနန္တံ - အဆုံးအပိုင်း အခြား မရှိ၊ အပရိမာဏံ - အတိုင်းအရှည် မရှိ၊ ယံ - ယင်း ဝိသယခေတ်ကို၊ ( သန္နာယ-ရည်ရွယ်တော်မူ၍၊ ဋီကာ၊)ယာဝတာဝါ ပန အာကင်္ခေယျာတိ-ယျဟူသော စကားကို၊ (ဘဂဝတာ ) ဝုတ္တံ၊ ယတ္ထ - ယင်း ဝိသယခေတ်၌၊ ယံယံ - ဒဲကြင် အကြင် အာရုံကို၊ (အနုဿရိတုံ- ၄ါ၊) အာကင်္ခတိ-အလိုတော်ရှိ၏၊ တံတံ–ရုံကို၊ အနုဿရတိ-၏၊ ဝေံ- လျှင်၊ တီသု- နှ်သော၊ ဧတေသု ဗုဒ္ဓက္ခေတ္တေသု–တို့တွင်၊ ဧကံ အာဏာခေတ္တံ- အာဏာခေတ် တခေတ်လုံးသည်၊ ဝိနဿတိ–ပျက်စီး၏၊ ပန- ဆက်၊ တသ္မိံ - ထို အာဏာခေတ်သည်၊ ဝိနဿန္တေ-လသော်၊ ဇာတိက္ခေတ္တံ-သည်၊ ဝိနဋ္ဌမေဝ–ပျက်စီးရတော့သည်သာ၊ ဟောတိ၊ [ဇာတိ ခေတ်ကနယ်ကျဉ်း၍ အာဏာခေတ်ကနယ်ကျယ်သောကြောင့် အာဏာခေတ် ပျက်ရာတွင် ဇာတိခေတ်လည်း ပါဝင်တော့သည်-ဟူလို၊ ]ဝိနဿန္တဉ္စ-ပျက်ပြန် သော်လည်း၊ ဧကတောဝ- တပေါင်းတည်းသာလျှင်၊ ဝိနဿတိ-၏၊ သဏ္ဍဟ န္တမ္ပိ- တည်ပြန်သော်လည်း၊ ဧကတောဝ, သဏ္ဍဟတိ- တည်၏၊ တဿ- ထို အာဏာခေတ်၏၊ ဝိနာသော စ- ပျက်ပုံကိုရင်း၊ သဏ္ဍဟနဉ္စ - တည်ပုံကိုရင်း၊ ဝိသုဒ္ဓိမဂ္ဂေ(မယာ)ဝုတ္တံ၊အတ္ထိကေဟိ-အလိုရှိသောပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊တတော-ထို ဝိသုဒ္ဓိမဂ်မှ၊ ဂဟေတဗ္ဗံ- ယူရာ၏၊ ဝါ-ယူပါလေ၊

ပန–ဆက်၊ ယေတေ သံဝဋ္ဋဝိဝဋ္ဋာ - ကပ်တို့ကို၊ ဝုတ္တာ - ဆိုအပ်ကုန်ပြီ၊ ဧတေသု-တို့တွင်၊ ဘဂဝါ - သည်၊ ဗောဓိမဏ္ဍေ - လ္လိုင်၌၊ သမ္မာသမ္ဗောဓိ-အရဟတ္တမဂ်ဉာဏ်, သဗ္ဗညုတဉာဏ်တော်ကို၊ အဘိသမ္ဗုဇ္ဈနတ္ထာယ-ထိုးထွင်း၍ သိတော်မူခြင်း အကျိုးငှါ၊ နိသိန္နော–မူသည်၊ ( သမာနော-စဉ်၊ ) အနေ ကေပိ– များစွာလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ သံဝဋ္ဋကပ္ပေ - တို့ကိုရင်း၊ ပေ ၊ သရိ–အောက်မေ့တော်မူပြီ၊ ကထံ-အဘယ်နည်းဖြင့် အောက်မေ့တော်မူနိုင်သနည်း၊ အမုတြာသိန္တိ အာဒိနာ-အစရှိသော၊ နယေန- နည်းဖြင့်၊ (သရိ - မူပြီ)၊

**ဝိသယက္ခေတ္တံပန**။ ။ ရှင်ဘုရင် တဦး၏ ပိုင်ရာ နယ်မြေကို ဝိသယ (နိုင်ငံ) ဟု ခေါ်သကဲ့သို့, ဘုရားဉာဏ်တော်၏ အာရုံပြုရာ အရပ်ကိုလည်း ဝိသယ ဟု ခေါ်၏၊ ဝိသယော ဧဝ+ ခေတ္တံ ဝိသယခေတ္တံ – ဉာဏ်တော်၏ ဖြစ်ရာသည်ပင် နယ်နိမိတ်၊ ထို ဝိသယခေတ်နယ်နိမိတ်ကား အဆုံးအပိုင်းအခြားမရှိ၊ စကြာဝဠာအနန္တရှိသလို ဝိသယ ခေတ်လည်း အနန္တပင်တည်း။

**ယံယံ၊ပေ၊အနုဿရတိ**။ ။အာကင်္ခပ္ပဋိဗဒ္ဓဝုတ္တိတာယ ဉာဏဿ-ဉာဏ်တော်၏ အောက်မေ့လို သိလိုသော ဆန္ဒမျှနှင့် စပ်သော ဖြစ်ခြင်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် (သိလိုသော ဆန္ဒဖြစ်လျှင် ဉာဏ်တော်က သိနိုင်သောကြောင့် ) အနန္တစကြာဝဠာ အတွင်း၌ သိလိုသမျှ အာရုံအားလုံးကို သိနိုင်သည်–ဟူလို။

တဏ္ဍ - ထို အမုတြာသိံ အစရှိသောပါဠိ၌၊ အမုတြာသိန္တိ- ကား၊ အမုမှိ သံဝဋ္ဋကပ္ပေ - ထို မည်သောသံဝဋ္ဋကပ်၌၊ အဟံ - သည်၊ အမုမှိဘဝေ - ထို မည်သောဘဝ၌၊ အဟောသိံ - ပြီ၊ ဣတိဝါ - ဤသို့သော်ငှင်း၊ (အမုသ္မိံ) ယောနိယာ-ထိုမည်သောယောနိ၌၊ အဟောသိံ၊ ဣတိဝါ-ငှင်း၊ (အမုသ္မိံ) ဂတိယာ - တိ၌၊ အဟောသိံ၊ ဣတိဝါ၊ အမုသ္မိံ ဝိညာဏဋ္ဌိတိယာ - ဋ္ဌိတိ၌၊ အဟောသိံ၊ ဣတိဝါ၊ အမုမှိ သတ္တာဝါသေ-ဝါသ၌၊ အဟောသိံ၊ ဣတိဝါ၊ အမုမှိ သတ္တနိကာယေ—ထို မည်သော သတ္တာအပေါင်း၌၊ အဟောသိံ၊ ဣတိ ဝါ,(အနုဿရာမိ- ၏၊ဟု ထည့်စပ်၊) ဧဝံ နာမောတိ - ကား၊ ဝေဿန္တရော ဝါ - ဝေဿန္တရာမည်သူသည် သော်ငှင်း၊ ဇောတိပါလောဝါ - သော်ငှင်း၊ (အာသိံ၊) ဧဝံ ဂေါတ္တောတိ - ကား၊ ဘဂ္ဂဝေါဝါ - အနွယ်အားဖြင့် ဘဂ္ဂဝ မည်သူသည်သော်ငှင်း၊ ဂေါတမောဝါ-သော်ငှင်း၊ (အာသိံ)၊ ဧဝံ ဝဏ္ဏော တိ - ကား၊ ဩဒါတောဝါ - ဖြူသူသည်သော်ငှင်း၊ သာမောဝါ - ရွှေသူသည် သော်ငှင်း၊(အာသိံ)၊ ဧဝ မာဟာရောတိ-ကား၊ သာလိမံသောဒနာဟာရော ဝါ- သလေးသားပြွမ်းထမင်းဟူသော အာဟာရရှိသူသည် သော်ငှင်း၊ ပဝတ္တ ဖလ ဘောဇနောဝါ - အလိုလိုဖြစ်သော အသီးဟူသော အစာ ရှိသူသည်

**အမုမှိ သံဝဋ္ဋကပ္ပေ။** ။ဤ၌ ဝါသဒ္ဒါမပါဘဲ "ဘဝေဝါ" စသည်၌သာ ဝါသဒ္ဒါ ပါ၏၊ ထို့ကြောင့် ဘဝေဝါစသော စကားသည် သံဝဋ္ဋကပ်တခု၌ ပါဝင်သော ဘဝ အမျိုးမျိုး ယောနိအမျိုးမျိုး စသည်ကို ပြသောစကားဟု မှတ်၊ မည်သည့် သံဝဋ္ဋကပ် အခါတုန်းက ကာမစသော ဘဝ ၃ ပါးတွင် မည်သည့်ဘဝ , အဏ္ဍဇစသော ယောနိ ၄ ပါးတွင် မည်သည့်ယောနိ , ဒေဝစသော ဂတိ ၅ ပါးတွင် မည်သည့်ဂတိ , နာနတ္တ ကာယ နာနတ္တ သညီစသော ဝိညာဏဋ္ဌိတိသတ္တာဝါသ ၉ ပါးတို့တွင် မည်သည့် ဝိညာ ဏဋ္ဌိတိ-မည်သည့်သတ္တာဝါသ, ပေါဏိကနိကာယ စိက္ခလ္လိကနိကာယစသော အမျိုးမျိုး သော နိကာယတို့တွင် မည်သည့် သတ္တနိကာယ၌ ဖြစ်ခဲ့ပြီ။ [ သံဝဋ္ဋစသော ကပ် ၄ ပါး တွင် ပါဠိတော်၌အစထားသော သံဝဋ္ဋကပ်ကို ဥပလက္ခဏာနည်းအားဖြင့် ပြသော်လည်း သံဝဋ္ဋဋ္ဌာယီစသော ကပ်များ၌လည်း ဤနည်းအတိုင်း ချဲ့ထွင်၍သိပါ။ ]

**မှတ်ချက် ။** ။ ထိုဘဝ စသည်တို့တွင် ကာမဘဝဆိုလျှင် ယောနိ ၄ ပါး ဂတိ ၅ ပါးလုံးပါဝင်နေ၏၊ ဋ္ဌိတိသတ္တာဝါသနိကာယတို့လည်း အများပါဝင်၏၊ထို့ကြောင့် ဘဝကို အောက်မေ့လျှင် ယောနိစသည်ကို အောက်မေ့ချင်မှ အောက်မေ့မည်၊ ဘဝ ကိုသာ အောက်မေ့၍ ယောနိစသည်ကို မအောက်မေ့ဘဲလည်းရှိမည်၊ ထိုအားလုံးကို ဆက်ကာ ဆက်ကာ အောက်မေ့ခြင်းလည်း ရှိမည်၊ ထို့ကြောင့် ဝါ သဒ္ဒါတို့ကို အရေ လုံးလုံး မကွဲသောကြောင့် သမုစ္စည်းလည်း မဆိုသင့်, တခုမရ တခုရသောဝိကပ်လည်း မဆိုသင့်ရကား အနိယမတ္ထဟု ဆိုသင့်၏၊ ထို့ကြောင့်ပင် "အဟောသိံ ဣတိဝါ" ဟု ပုဒ်တိုင်းလိုက်စေ၍ အဆုံးကျမှ အနုဿရာမိဟု ထည့်စပ်စေသည်။

၄ ၈ ၁၆

သော်ငှင်း၊(အာသိ၊)စေ၀ံ သုခဒုက္ခပ္ပဋိသံဝေဒီတိ- ကား၊ အနေကပ္ပကာရေန- များသောအပြားအားဖြင့်၊ ကာယိက စေတသိကာနံ-ကိုယ်၌ဖြစ်ကုန်, စိတ်၌ ဖြစ်ကုန်သော၊ ( သုခ ဒုက္ခာနံ- တို့ကို၊ ) ဝါ - တနည်း၊ သာမိသနိရာမိသာဒိ ပ္ပဘေဒါနံ-သာမိသ နိရာမိသ အစရှိသောအပြားရှိကုန်သော၊ သုခဒုက္ခာနံ- တို့ကို၊ ပဋိသံဝေဒီ-ခံစားရခြင်းရှိသည်၊(အာသိ၊)ဝေမာယု ပရိယန္တော့တိ- ကား၊ ဧဝံ - သို့၊ ဝဿသတ ပရမာယု ပရိယန္တော၀ါ - အနှစ်တရာဟူသော လွန်ကဲသောအသက် အပိုင်းအခြားရှိသူသည် သော်ငှင်း၊ စတုရာသီတိ ကပ္ပ သဟဿ ပရမာယု ပရိယန္တော၀ါ - ကပ္ပါပေါင်း ရှစ်သောင်းလေးထောင် ဟူသော လွန်ကဲသော အသက်အပိုင်းအခြားရှိသူသည်သော်ငှင်း၊(အာသိ)။

သော တတောစုတော အမုတြ ဥဒပါဒိန္တိ - ကား၊ သော အဟံ - သည်၊ တတော ဘ၀တော-ထိုဘ၀မှ၊ ဝါ-တနည်း၊ တတော ယောနိတော-မှ၊ ဝါ, တတော ဂတိတော, ဝါ,တတော ဝိညာဏဋ္ဌိတိတော, ဝါ, တတော သတ္တာ ဝါသတော, ဝါ-တနည်း၊ တတော သတ္တနိကာယတော-ထိုသတ္တာအပေါင်း မှ၊ စုတော–စုတေသည်၊ (သမာနော-ဖြစ်လသော်၊) ပုန-တဖန်၊ အမုကသ္မိံ နာမဘဝေ-ထို မည်သောဘဝ၌၊ ဝါ- တနည်း၊ အမုယံနာမ ယောနိယာ-၌၊ ဝါ , အမုယံနာမ ဂတိယာ , ဝါ , အမုယံနာမ ဝိညာဏဋ္ဌိတိယာ , ဝါ, အမုကသ္မိံ နာမ သတ္တာဝါသေ,ဝါ-တနည်း၊ အမုကသ္မိံ နာမ သတ္တနိကာယေ- ထိုမည်သော သတ္တာအပေါင်း၌၊ ဥဒပါဒိံ-ထင်ရှားဖြစ်ခဲ့ပြီ၊ တတြာပါသိန္တိ-

ဓဝံနာမော စသည်။ ။ "ဓဝံနာမံ+ယဿာတိ ဓဝံနာမော" စသည်ဖြင့်၊ ဘုရားရှင်၏ ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏ် အခဏ်းဖြစ်၍ အမည် အနွယ်စသော အားလုံးကို ဘုရားနှင့် သက်ဆိုင်ရာချည်း ပြထား၏၊ သာလိမံသောဒနာဟာရောသည် မင်းဘဝ၌ အာဟာရ ဖြစ်၍, ပဝတ္တဖလာဟာရကား ရသေ့ဘဝ၌ အာဟာရတည်း၊ "ပဝတ္တ-ဖြစ်" ဟူသည် အလိုလို ကြွေကျသော အသီးတည်း၊ သုခ ဒုက္ခ၌ သာမိသ( တဏှာဖြင့် သုံးအပ်သော သုခ) ဟူသည် ဂေဟဿိတ - (ကာမဂုဏ်တည်းဟူသော အိမ်၌မှီသော ) လောဘမူ သုခတည်း၊ နိရာမိသ ( တဏှာသည် မသုံးသပ်အပ်သော သုခ ) ဟူသည် နေက္ခမ္မ သိတ (ဝိပဿနာဉာဏ်နှင့် ယှဉ်သော) သောမနဿတည်း၊ အာဒိဖြင့် ဝိဝေကသုခ ( ပဌမဈာန် ချမ်းသာ ) သမာဓိဇသုခ ( ဒုတိယဈာန်ချမ်းသာ ) များကို ငှိကာယူ၏၊ ကုသိုလ်အားလုံးနှင့် ယှဉ်သော သုခဟူသမျှလည်း လောဘမှ ထွက်မြောက်သောကြောင့် နေက္ခမ္မသိတ သုခချည်းတည်း။

မှတ်ချက်။ ။"ဝေဿန္တရော၀ါ–ဝေဿန္တရာအမည် ရှိသည်ငှင်း၊ ဘဂ္ဂဝေါ၀ါ- ဘဂ္ဂဝအနွယ်ရှိသည်ငှင်း" စသည်ဖြင့် အနက်ပေးကြ၏၊ "ရှိ" ဟု အဿတ္ထိဝိဂ္ဂဟ မဖြစ်နိုင်သောကြောင့် ထိုအနက်မျိုးကို အမြဲရှောင်ပါ။

ကား၊ အထ - ထိုသို့ ဖြစ်ရာအခါ၌ ( ဧဝံနာမေ - အာသိံ၌စပ်၊ ) တတြာပိ ဘဝေ-ထိုဘဝ၌လည်း၊ ဝါ-တနည်း၊ တတြာပိ ယောနိယာ - ၌လည်း၊ ဝါ, တတြာပိ ဂတိယာ, ဝါ, တတြာပိ ဝိညာဏဋ္ဌိတိယာ, ဝါ, တတြာပိ သတ္တာဝါသေ, ဝါ-တနည်း၊ တတြာပိ သတ္တနိကာယေ- ထိုသတ္တနိကာယ၌လည်း၊ ပုန-တဖန်၊ အဟောသိံ-ပြီ၊ ဧဝံနာမောတိ အာဒိ- ဧဝံနာမော အစရှိသော ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဝုတ္တနယမေဝ –ဆိုအပ်ပြီးသောနည်း ရှိသည်သာ။

အထဝါ-ထို့ပြင် တနည်းကား၊ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အမုတြာသိန္တိ-အမုတြာ သိံ-အစရှိသော၊ ဣဒံ-ဤအောက်မေ့ပုံသည်၊ အနုပုဗ္ဗေန - အစဉ်အားဖြင့်၊ အာရောဟန္တဿ-ဉာဏ်ဖြင့်တက်သွားသော မြတ်စွာဘုရား၏· ယာဝဒိစ္ဆကံ-အလိုတော် ရှိသလောက်၊ သရဏံ - အောက်မေ့တော် မူခြင်းတည်း၊ ဝါ-အောက်မေ့တော်မူပုံကို ပြသော စကားတည်း၊ သော တတော စုတောတိ-စုတောဟူသော ဤ ဆင်ခြင်တော်မူပုံသည်၊ပဋိနိဝတ္တန္တဿ-ဉာဏ်ဖြင့် ပြန်နစ် လာတော်မူသော မြတ်စွာဘုရား၏၊ ပစ္စဝေက္ခဏံ –( အောက် မှ အပ်ပြီး,

**အထဝါ**။ ။ အမုတြာသိံ – စသော ပါဠိများကို အောက်၌ သာမညအားဖြင့် အကျဉ်းပြခဲ့ပြီ၊ယခုတဖန် အထူးအားဖြင့် ခွဲခြားဝေဘန်ပြလိုသောကြောင့်“အထဝါ” စသည်မိန့်။ [ ဟေဋ္ဌာ သာမညတော ဝုတ္တမေဝတ္ထံ ဝိဘဇိတွာ ဒဿေတုကာမော အထဝါတိ အာဒိ မာဟ၊ – ဋီကာ။ ] ဤစကားဖြင့် ပဌမနည်းနှင့် ဤ အထဝါ တက်သော နည်းသည် သာမညနှင့် ဝိသေသလောက်သာ ထူး၏၊ ဖွင့်ပုံမှာ ဘုရားရှင် အတွက်ချည်း သာတည်း—ဟု မှတ်။

**ယသ္မာ အမုတြာသိန္တိ၊ပေ၊သရဏံ**။ ။ပါဠိတော်၌ “အမုတြာသိံ၊ ဧဝံနာမော ၊ပေ၊ ဝေမာယုပရိယန္တော ”သည် ဘုရားမဖြစ်မီ တုသိတာ ဘဝမှစ၍ လွန်ခဲ့ပြီးသော ဘဝအဆက်ဆက်ကို အလိုတော်ရှိသလောက် ပဋိလုံအားဖြင့် ဉာဏ်ဖြင့် နောက်ပြန် တက်၍ တက်၍ အောက်မေ့ပုံကို ပြသော စကားဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် အမုတြအရ ဘဝ များစွာ ဖြစ်သော်လည်း သာမညနိဒ္ဒေသ နည်းအားဖြင့် တခုတည်း ဆိုထားသည် ဟု မှတ်၊ တနည်း-အမုတြ အမုတြ ဟု ဆိုလိုလျက် ဝိစ္ဆာတပုဒ်ချေထားသော ဝိစ္ဆာလောပ ဟု မှတ်။ [ အမုတြာသိန္တိ သာမညနိဒ္ဒေသောယံ၊ ဗျာပနိစ္ဆာလောပေါဝါ၊ အာရောဟန္တဿာတိ ပဋိလောမတော ဉာဏေန ပုဗ္ဗေနိဝါသံ အာရောဟန္တဿ၊— ဋီကာ။ ]

**ပဋိနိဝတ္တန္တဿ ပစ္စဝေက္ခဏံ**။ ။ပါဠိတော်၌“သော တတော စုတော”ဟူသော စကားသည် (အလိုရှိသလောက် ဉာဏ်ဖြင့် နောက်ပြန်တက်သွားပြီးနောက်) ဉာဏ်ဖြင့် ပြန်၍ဆုတ်ရင်း အောက်မေ့အပ်ပြီး ပုဗ္ဗေနိဝါသတွေကို ပြန်၍ဆင်ခြင်ပုံကို ပြသောစကား ဖြစ်သည်။ [ ပဋိနိဝတ္တန္တဿာတိ-ပုဗ္ဗေနိဝါသံ အနုဿရဏဝသေန ယာဝဒိစ္ဆကံ ဂန္တွာ ပစ္စာဂစ္ဆန္တဿ၊ ပစ္စဝေက္ခဏန္တိ – အနုဿရိတဿ အနုဿရိတဿ ပစ္စဝေက္ခဏံ၊ န အနုဿရဏံ၊–မဟာဋီကာ။ ]

အောက်မေ့အပ်ပြီးကို ) ဆင်ခြင်တော်မူခြင်းတည်း၊ ဝါ– ဆင်ခြင်တော်မူပုံကို ပြသော စကားတည်း၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ ဧရုပပန္နောတိ- ဟူ၍၊ (ဝုတ္တာယ– ဟောတော်မူအပ်သော၊ ) ဧမိဿာ ဧရုပပတ္တိယာ - ဤ ဧရုပပတ္တိ၏၊ အန န္တရံ - အခြားမဲ့ဖြစ်သော၊ အမုတြ ဥဒပါဒိံတိ - အမုတြ ဥဒပါဒိံ ဟူသော စကားကို၊ တုသိတဘဝနံ - တုသိတာဘုံကို၊ သန္ဓာယ - ရည်ရွယ်တော်မူ၍၊ အာဟ-မိန့်တော်မူပြီ၊ ဧတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ။

တတြာပါသိံ ဧဝံ နာမောတိ-ကား၊တတြာပိတုသိတဘဝနေ-ထိုတုသိတာ နတ်ဘုံ၌လည်း၊ သေတကေတုနာမ- သေတကေတု မည်သော၊ ဒေဝပုတ္တော- သည်၊ အဟောသိံ၊ ဧဝံ ဂေါတ္တောတိ-ကား၊ တာဟိ ဒေဝတာဟိ - တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-တကွ၊ ဧကဂေါတ္တော-တူသော အနွယ်ရှိသည်၊(အာသိံ၊)ဧဝံဝဏ္ဏော တိ-ကား၊သုဝဏ္ဏဝဏ္ဏော-ရွှေအဆင်းနှင့်တူသောအဆင်းရှိသည်၊(အာသိံ၊) ဧဝ မာဟာရောတိ-ကား၊ ဒိဗ္ဗသုဓာဟာရော-နတ်၌ ဖြစ်သော သုဓာဟူသော အာဟာရရှိသည်၊ အာသိံ၊ [နတ်သုဓာအကြောင်းကို အသီတိနိပါတ် သုဓာ ဘောဇနဇာတ်မှာ ရှု၊ ] ဧဝံ သုခ ဒုက္ခပ္ပဋိသံဝေဒီတိ - ကား၊ ဧဝံ ဒိဗ္ဗသုခပ္ပဋိ သံဝေဒီ-ဤသို့ နတ်၌ ဖြစ်သော ချမ်းသာကို ခံစားခြင်းရှိသည်၊ ( အာသိံ၊) ဒုက္ခံပန-ဒုက္ခသည်ကား၊သင်္ခါရဒုက္ခ မတ္တမေဝ-သင်္ခါရဒုက္ခမျှသည်သာတည်း၊

တသ္မာ ၊ ပေ ၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ။ ။ပါဠိတော်၌ "သော တတော စုတော အမုတြ ဥဒ ပါဒိံ"ဟု ရှိပြီးနောက်, တဘန် "သော တတော စုတော ဧရုပပန္နော"ဟု ရှိပြန်၏၊ ယခုအဖွင့်သည် ပဌမ"သော တတော စုတော"၏ နောက်၌ရှိသော အမုတြ ဥဒပါဒိံ ၏ အဖွင့်တည်း၊ ထို့ကြောင့် "အမုတြ ဥဒပါဒိန္တိ တုသိတဘဝနံ သန္ဓာယာဟ" သည် လိုရင်းတည်း၊ "အမုတြ ဥဒပါဒိံ"သည် ၂ ဌာန၌ပါရှိရာ အဘယ်"အမုတြ ဥဒပါဒိံ" ပါနည်း – ဟု မေးဘွယ် ရှိသောကြောင့် " ဧရုပပန္နောတိ ဧမိဿာ ဧရုပပတ္တိယာ အနန္တရံ " ဟု ဝိသေသန ကူမ ရသည်၊ နောက်၌ ဧရုပပန္နော ဟု ဆိုအပ်သော ဧရ ဥပပတ္တိ (ဤ သိဒ္ဓတ္ထဘဝ၌ ဖြစ်ခြင်း) ၏ အခြားမဲ့ဖြစ်သော"အမုတြဥဒပါဒိံ" ဟူလို၊ တသ္မာဖြင့်လည်း ယသ္မာ၏ ဆိုင်ရာ ၂ဝါကျလုံးကိုပြန်၍စွဲ၊ "တသ္မာ–ထိုသို့ နောက်ပြန် တက်လျက် အလိုရှိတိုင်း အောက်မေ့ပြီးနောက် ပြန်၍ဆုတ်ရင်း ဆင်ခြင်ပုံကို ပြသော စကားတို့၏အဖြစ်ကြောင့်"(ပြန်ဆုတ်လာသောအခါ ဤဘဝ၏ရှေ့၌ ကပ်လျက်ရှိသော တုသိတာဘုံကို ရည်ရွယ်၍ "အမုတြ ဥဒပါဒိံ" ဟု ဟောတော်မူသည်–ဟူလို။)

မှတ်ချက် ။ ။ ဤနေရာဝယ် ဝိသုဒ္ဓိမဂ် အဋ္ဌကထာ၌ " တသ္မာ ဧရုပပန္နော တိ ဧမိဿာ ဧရုပပတ္တိယာ အနန္တရမေဝဿ ဥပ္ပတ္တိဋ္ဌာနံ သန္ဓာယ အမုတြ ဥဒပါဒိန္တိ ဧဒံ ဝုတ္တန္တိ ဝေဒိတဗ္ဗံ" ဟု ပါ၍ရှိ၏၊ ထိုကို မှီ၍ ဤ၌လည်း " အနန္တရံ တုသိတဘဝနံ သန္ဓာယ အမုတြ ဥဒပါဒိန္တိ အာဟာတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ"ဟု ရှိလျှင် အနန္တရံကို အမုတြ ဥဒ ပါဒိံတို့၌မစပ်ဘဲ တုသိတဘဝနံ၌ စပ်ရသောကြောင့် သာ၍ ရှင်းလင်းစရာရှိသည်။

ဝေမာယုပရိယန္တေ'တိ - ကား၊ ဧဝံ - သို့၊ သတ္တပညာသ ဝဿကောဋိသဋ္ဌိ ဝဿသတသဟဿာယုပရိယန္တေ - နှစ်ပေါင်း ၅၇ ကုဋေ ၆သန်းအသက်အပိုင်းအခြားရှိသည်၊ ( အာသိံ၊ ) သော တတော စုတောတိ-ကား၊ သော အဟံ- သည်၊ တတော တုသိတာဘဝနတော - ဘုံမှ၊ စုတော - သည်၊( သမာနော)၊ ဣဓူပပန္နော'တိ-ကား၊ ဣဓ-ဤဘဝ၌၊ မဟာမာယာယ-မဟာမာယာ မည်သော၊ ဒေဝိယာ- မိဖုရား၏၊ ကုစ္ဆိမှိ - ဝမ်း၌၊ နိဗ္ဗတ္တော-ဖြစ်ရပြီ။

ဣတီတိ-ကား၊ ဧဝံ- ဤသို့၊ သာကာရံ သဥဒ္ဒေသန္တိ - ကား၊ နာမဂေါတ္တဝသေန-အမည်အနွယ်နှင့် စပ်သဖြင့်၊ သဥဒ္ဒေသံ-ဥဒ္ဒေသနှင့် တကွ ဖြစ်သော၊ ဝဏ္ဏာဒိဝသေန-ဝဏ္ဏအစရှိသည်တို့နှင့်စပ်သဖြင့်၊ (ဝဏ္ဏ အာဟာရ သုခ ဒုက္ခ ပ္ပဋိသံဝေဒန အာယုပရိယန္တ တို့၏ အပြားအားဖြင့်၊) သာကာရံ- အာကာရနှင့် တကွဖြစ်သော၊ ဟိ-မှန်၊ (တနည်း)ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ နာမဂေါတ္တေန-ဖြင့်၊ သတ္တော- သတ္တာကို၊ ဒတ္တော'တိ- ဒတ္တဟူ၍ရင်း၊ တိဿော'တိ- ၍ရင်း၊ ဂေါတမော'တိ-၍ရင်း၊ဥဒ္ဒိသိယတိ-ညွှန်ပြအပ်၏၊ဝဏ္ဏာဒီဟိ-ဝဏ္ဏအစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ သြဒါတော'တိ-ဖြူသူ ဟူ၍ရင်း၊ သာမော'တိ- ရွှေသူ ဟူ၍ရင်း၊ နာနတ္တတော-ထူးသည်၏ အဖြစ်အားဖြင့်၊ ပညာယတိ-ထင်ရှား၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ နာမဂေါတ္တံ - အမည် အနွယ်သည်၊ ဥဒ္ဒေသော-သမည်၏၊ ဣတရေ - နာမဂေါတ္တမှ အခြားကုန်သော ဝဏ္ဏ အာဟာရ သုခဒုက္ခပ္ပဋိသံဝေဒန အာယု ပရိယန္တတို့သည်၊ အာကာရာ-ရတို့ မည်၏။

**သဥဒ္ဒေသံ**။ ။ပါဠိတော်၌ "သာကာရံ-သဥဒ္ဒေသံ" ဟု အာကာရပုဒ်က ရှေ့နေသော်လည်း "ဧဝံနာမော ဧဝံ ဂေါတ္တော " ဟု နာမဂေါတ္တတို့က ရှေ့ကျသောကြောင့် သံဝဏ္ဏနာ၌ နာမဂေါတ္တရသော ဥဒ္ဒေသကို အလျင်ပြသည်၊ ဧတေန-ဤ အမည်အနွယ်ဖြင့်၊ သတ္တော-သတ္တာကို၊ ဥဒ္ဒိသိယတိ - ညွှန်ပြအပ်၏၊ ဣတိ ဥဒ္ဒေသော၊ မြင်ရုံမျှဖြင့် "မည်သူ, မည်သည့်အနွယ်ရှိသူ"ဟု မသိရဘဲ မေး၍ကြည့်မှ"တိဿတဲ့, ဂေါတမတဲ့" ဟု အမည်အနွယ်ဖြင့် ညွှန်ပြ ပြောဆိုအပ်သည် - ဟူလို၊ သဟ+ဥဒ္ဒေသေန ယော'တိ သဥဒ္ဒေသော-ညွှန်ပြပြောဆိုအပ်ကြောင်း နာမဂေါတ္တနှင့်တကွဖြစ်သော ပုဗ္ဗေနိဝါသ။

**သာကာရံ**။ ။ဝဏ္ဏ,စားအပ်သောအာဟာရ,သုခဒုက္ခ, အာယုပရိယန္တတို့သည် မေး၍ မနေရ, မြင်ရုံဖြင့် သိရသောကြောင့် "အာကရီယတိ (ဒိသ္ဝာဝ သတ္တော ဝိညာယတိ) ဧတေဟီတိ အာကာရာ"ဧတေဟိ-ဤဝဏ္ဏစသည်တို့ဖြင့်၊ သတ္တော-ကို၊အာကရီယတိ-မြင်လျှင်မြင်ခြင်း (ဖြူတဲ့သူ, သလေးဆန် စားတဲ့သူ, ချမ်းသာသူ, ဆင်းရဲသူ, အသက်ရှည်သူ) ဟု ခွဲခြား၍ သိအပ် သိနိုင်၏၊ ဣတိ အာကာရာ၊ သဟ အာကာရေဟိ ယော'တိ သာကာရော - မြင်လျှင် မြင်ခြင်း သိအပ်ကြောင်းဖြစ်သော ဝဏ္ဏအာဟာရ သုခဒုက္ခပ္ပဋိသံဝေဒန အာယုပရိယန္တတို့နှင့် တကွဖြစ်သော(ပုဗ္ဗေနိဝါသ)။

ပန-ပရိဟာရပက္ခါပေါဒ္ဓ၊ ဗုဒ္ဓါယေဝ- ဘုရားရှင်တို့သည်သာ၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသံ-ကို၊ သရန္တိကိ -အောက်မေ့နိုင်ကုန်သလော၊ ဣတိ-ဤကားအမေးတည်း၊ (ပရိဟာရော မယာ) ဝုစ္စတေ၊ ဗုဒ္ဓါယေဝ-တို့သည်သာ၊ (ပုဗ္ဗေနိဝါသံ-ကို၊ သရန္တိ-န်သည်ကား၊)န-မဟုတ်သေး၊ ပစ္စေကဗုဒ္ဓ ဗုဒ္ဓသာဝက တိတ္ထိယာပိ-တို့သည်လည်း၊ ( ပုဗ္ဗေနိဝါသံ သရန္တိ-အောက်မေ့နိုင်ကုန်သေး၏၊)စခေါ်-ထိုသို့ပင် အောက်မေ့နိုင်ပါ ကုန်သော်လည်း၊ အဝိသေသေန - အထူး မမ သာမညအားဖြင့်၊ ဝါ-တန်းတူအားဖြင့်၊ နော သရန္တိ-အော်မေ့နိုင်ကုန်သည် မဟုတ်၊ ဟိ–ချဲ့၊ တိတ္ထိယာ–တိတ္ထိတို့သည်၊ စတ္တာလီသံယေဝ - ၄၀ သာလျှင် ဖြစ်သော၊ ကပ္ပေ-ကမ္ဘာတို့ကို၊ သရန္တိ-န်၏၊ တတော–ထိုကမ္ဘာ ၄၀ ထက်၊ ပရံ-အလွန်၊ န သရန္တိ-န်၊ ကသ္မာ - နည်း၊ ဒုဗ္ဗလပညတ္တာ - အားနည်းသော ပညာရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဟိ-မှန်၊(တနည်း၊) ဟိ–ချဲ့၊ တေသံ-ထို တိတ္ထိတို့၏၊ နာမရူပပရိစ္ဆေဒ ဝိရဟတော–နာမ်ရုပ်ကို ပိုင်းခြား၍ သိတတ် သောဉာဏ်မှ ကင်းခြင်းကြောင့်၊ ဒုဗ္ဗလာ - အားမရှိသော၊ ပညာ - သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ပန -ကား၊ သာဝကေသု- တို့တွင်၊ အသီတိ မဟာသာဝကာ– ရှစ်ကျိပ်သော မဟာသာဝကတို့သည်၊ ကပ္ပသတသဟဿံ-ကမ္ဘာတသိန်းကို၊ သရန္တိ၊ ဒွေ - န်သော၊ အဂ္ဂသာဝကာ - တို့သည်၊ ဧကံ အသင်္ချေယျံ- ကိုငင်း၊ သတ သဟဿံစ- ကမ္ဘာတသိန်းကိုငင်း၊ (သရန္တိ၊ ) ပစ္စေကဗုဒ္ဓါ- တို့သည်၊ ဒွေ အသင်္ချေယျာနိ-တို့ကိုငင်း၊ သတ သဟဿံစ - ကိုငင်း၊ (သရန္တိ၊) ဟိ-မှန်၊ တေသံ - ထို မဟာသာဝကစသော ပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊ အဘိနီဟာရော - စိတ်ကို ရှေးရှုဆောင်ကြောင်း ဖြစ်သော ပါရမီဖြည့်ရာအခါသည်၊ ဧတ္တကော - ဤမျှ အတိုင်းအရှည်ရှိ၏၊ ပန - ကား၊ ဗုဒ္ဓါနံ - တို့၏၊ ပရိစ္ဆေဒေါ - အပိုင်းအခြား

တိတ္ထိယာ။ ။ အညတိတ္ထိယာ — သာသနာပ တိတ္ထိတို့တည်း၊ တေပန ကမ္မဝါဒိ နော- ကံရှိ၏ ဟု ပြောလေ့ရှိကုန်သော၊ ကြိယဝါဒိနော-ကံကို ပြုအပ်၏ (ပြုရာရောက်၏) ဟု ပြောလေ့ရှိကုန်သော၊ တာပသာဒယော–ရသေ့ အစရှိသူတို့တည်း။

ဗုဒ္ဓါနံ ပန ။ ။ ပစ္စေကဗုဒ္ဓါ, အဂ္ဂသာဝကနှင့် မဟာသာဝကတို့သည် သူတို့၏ ပါရမီဖြည့်ခဲ့ရာကာလနှင့် ညီမျှသော ပုဗ္ဗေနိဝါသကိုသာ အောက်မေ့နိုင်ကြလျှင် ဘုရား ရှင်လည်း ပါရမီဖြည့်ရာကာလနှင့် ညီမျှသော ၄ အသင်္ချေနှင့် ကမ္ဘာတသိန်း စသည် သာ အောက်မေ့နိုင်သလော–ဟု မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် "ဗုဒ္ဓါနံ ပန "စသည်မိန့်၊ ဘုရားရှင်တို့ကား အပိုင်းအခြားမရှိ, အလိုရှိတိုင်း အောက်မေ့တော်မူနိုင်ကြသည်။

နိကာ။ ။ သတိပိ ကာလပရိစ္ဆေဒေ — ပါရမီဖြည့်ရာ ကာလ အပိုင်းအခြား ရှိပါ သော်လည်း၊ ကာရဏူပါယ ပရိဂ္ဂဟ ကောသလ္လာဒိနာ — အကြောင်းဥပါယ်တမည်ကို သိမ်းဆည်းခြင်း၌ ဘုရားရှင်တို့က ကျွမ်းကျင်တော်မူသည်၏အဖြစ် စသောအကြောင်း

သည်၊ နတ္ထိ၊ ယာဝ-အကြင်မျှလောက်၊ (သရိတုံ-၄၁၊)ဇာန္တိ-န်၏၊ တာဝ-လောက်၊ သရန္တိ-န်၏၊ စ-ဆက်၊ (ကာလမှတပါး အောင်မေ့ပုံ အခြင်းအရာကို ဆက်ဥုံးအံ့၊ ) တိတ္တိယာ - တို့သည်၊ ခန္ဓ ပဋိပါဋိယာ - ခန္ဓာအစဉ်အားဖြင့်၊ သရန္တိ-န်၏၊ ပဋိပါဋိံ - ကို၊ မုဉ္စိတွာ-လွှတ်၍၊ စုတိ ပဋိသန္ဓိဝသေန-စုတိ ပဋိသန္ဓေတို့၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ သရိတုံ- ၄၁၊ န သက္ကောန္တိ၊ ဟိ-မှန်၊ တေသံ-ထို တိတ္ထိတို့၏၊ အန္ဓာနံဝိယ - သူကာဏ်းတို့၏ ကဲ့သို့၊ ဣစ္ဆိတပဒေသောက္ကမနံ-အလိုရှိအပ်သောအရပ်သို့ သက်ရောံနိုင်ခြင်းသည်၊ နတ္ထိ၊ သာဝကာ-သာဝက တို့သည်၊ ဥဘယထာပိ - ၂ ပါးစုံသော အခြင်းရာ အားဖြင့်လည်း၊ သရန္တိ၊ [ခန္ဓာအစဉ်အားဖြင့်၎င်း, စုတိ ပဋိသန္ဓေအားဖြင့်၎င်း, အောက်မေ့နိုင်ကုန်၏-ဟူလို၊] ပစ္စေကဗုဒ္ဓါ-တို့သည်၊ တထာ- တည်း၊ ဗုဒ္ဓါပန - ကား၊ ခန္ဓ ပဋိပါဋိယာပိ - ၎င်း၊ စုတိ ပဋိသန္ဓိဝသေနပိ - ၎င်း၊ သီဟောက္ကန္တ ဝသေနပိ - ခြင်္သေ့ ခုန်နည်း၏အစွမ်းအားဖြင့်၎င်း၊ အနေကာသု-န်သော၊ ကပ္ပကောဋီသု-ကမ္ဘာ ကုဋေတို့၌၊ ဟေဋ္ဌာဝါ-အောက်၌၎င်း၊ ဥပရိဝါ - အထက်၌၎င်း၊ ယံယံ ဌာနံ ( သရိတုံ ) အာကင်္ခန္တိ - အလိုတော်ရှိကုန်၏၊ တံ သဗ္ဗံ - ထို အလုံးစုံသော အရပ်ကို၊ သရန္တိယေဝ-န်သည်သာ။

အယံ ခေါ မေ ပြာဟ္မဏာတိ အာဒိသု - ရပ်တို့၌၊ မေတိ-ကား၊ မယာ-ငါသည်၊ ဝိဇ္ဇာတိ-ကား၊ ဝိဒိတကရဏဋ္ဌေန - သိအပ်သည်ကို ပြုတတ်သည်၏ အဖြစ်ဟူသောအနက်ကြောင့်၊ ဝိဇ္ဇာ- ဝိဇ္ဇာမည်၏၊ ကိံ-အဘယ်ကို၊ ဝိဒိတံ-သိအပ်သည်ကို၊ ကရောတိ-ပြုသနည်း၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသံ-ကို၊ (ဝိဒိတံ ကရောတိ၊)

ကြောင့်၎င်း၊ သာတိသယတ္တာ မဟာဗောဓိသမ္ဘာရာနံ— သဗ္ဗညုတဉာဏ်၏ အဆောက်အဦးတို့က လွန်ကဲကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ အာနုဘာဝဿ ပရိစ္ဆေဒေါနာမ နတ္ထိ—အာနုဘော် အစွမ်းသတ္တိ၏ အပိုင်းအခြားမည်သည် မရှိ၊ ကုတော တံနိဗ္ဗတ္တာနံ အဘိညာဏာနံ — ထို အာနုဘော်ကြောင့်ဖြစ်သော အဘိညာဉ်တို့အတွက် အဘယ်မှာ ကာလအပိုင်းအခြားရှိတော့အံ့နည်း၊ (မရှိတော့ပြီ-ဟူလို)။

**ခန္ဓပဋိပါဋိယာ စုတိ ပဋိသန္ဓိဝသေန။** ။ တဘဝ၌ စုတိမှစ၍ ဖြစ်သမျှအစဉ်ကို နောက်ပြန် အဆက်ဆက်ကြည့်ကာ ပဋိသန္ဓေသို့ရောက်အောင်သွား၍ အောက်မေ့ခြင်းသည် ခန္ဓပဋိပါဋိအားဖြင့် အောက်မေ့ခြင်းတည်း၊ က ခ စသည်ကို စာအံရာ၌ "အ ဌ မှ စ၍ ခ က"တိုင်အောင် တလုံးမချန် အံခြင်းမျိုးတည်း၊ စုတိကို သိပြီးနေ၁် ခန်ကျော်၍ ပဋိသန္ဓေကိုသိခြင်း, ထို့နေ၁် ဘဝများ၌လည်း ဤသို့ အစ အဆုံးကိုသာ ကြည့်၍ လိုရာ ဘဝရောံမှ လိုရာအကြောင်းအရာကို ဆင်ခြင်ကြည့်ရှုခြင်းကား စုတိပဋိသန္ဓေအားဖြင့် အောက်မေ့ခြင်းမည်၏၊ သီဟောက္ကန္တ အမိပ္ပါယ်ကို ရှေ၌ရေးခဲ့ပြီ။ [ မဟာပဒါနသုတ် အဋ္ဌကထာ၌ "ခန္ဓပဋိပါဋိယာ"ဟု ရှိ၏၊ ကောင်းသည်။]

တဿေဝ ပုဗ္ဗေနိဝါသဿ - သ ကိုပင်၊ အဝိဒိတကရဏဋ္ဌေန – မသိအပ်သည်ကို ပြုတတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ တပ္ပဋိစ္ဆာဒကမောဟော - ထို ပုဗ္ဗေနိဝါသကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သောမောဟကို၊ အဝိဇ္ဇာတိ-၍၊ ဝုစ္စတိ၊ တမောတိ-ကား၊ သွေ့ဝမောဟော - ကိုပင်၊ တပ္ပဋိစ္ဆာဒကဋ္ဌေန – ထို ပုဗ္ဗေနိဝါသကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ တမောတိ-၍၊ ဝုစ္စတိ၊ အာလောကောတိ-ကား၊ သာယေဝဝိဇ္ဇာ-ဇ္ဇာကိုပင်၊ ဩဘာသကရဏဋ္ဌေန-မိမိအကြောင်းတို့သည်ပြုအပ်သောအရောင်အလင်း၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အာလောကောတိ-၍၊ ဝုစ္စတိ၊ စ—ဆက်၊ ဧတ္ထ - ဤ အယံ ခေါမေ ဖြာဟ္မဏ အစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ ဝိဇ္ဇာ အဓိဂတာတိ-တာ ဟူသော၊ အယံ-ဤအနက်သည်၊ အတ္ထော - လိုရင်းအနက်တည်း၊ သေသံ-ကြွင်းသောပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ပသံသာဝစနံ-ချီးမွမ်းကြောင်း စကားတည်း။

ဝိဒိတ ကရဏဋ္ဌေန ။ ။ "ဝိဒိတ—သိအပ်သည်ကို+ကရဏ—ပြုတတ်" ဟူသည် "ပုဗ္ဗေနိဝါသကို သိတတ်"ပင် ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် "ဝိဒတီတိ ဝိဇ္ဇာ" ဟု ကဏ္ဍုသာဓ်ပင်ပြု၊ အဝိဇ္ဇာ၌ "အဝိဒိတ ကရဏဋ္ဌေန"ဟု ဆိုသော်လည်း "န+ဝိဇ္ဇာ-အဝိဇ္ဇာ"ဟု ပြု၍ ဝိဇ္ဇာဉာဏ်၏ဆန့်ကျင်ဘက်မောဟ ရသည်၊ ဝိဇ္ဇာသည် ပဟာယက (ပယ်တတ်), အဝိဇ္ဇာက ပဟာတဗ္ဗ (ပယ်ထိုက်) ဖြစ်၍ ဆန့်ကျင်ဘက်ဖြစ်သည်။

သွေ့ဝ မောဟော၊ ပေ၊ တမော ။ ။ တမဓာတ်, ခေဒအနက်ဟော၊ တမန္တိ ဧတေနာတိ တမော – များသောအားဖြင့် သတ္တဝါတို့၏ ပင်ပန်းကြောင်း အမှောင်၊ အမှောင်သည် မျက်စိအမြင်ကို ချုတ်ချယ် ဖုံးကွယ်တတ်သကဲ့သို့, မောဟလည်း ဉာဏ်အမြင်ကို ဖုံးကွယ်တတ်ရကား တမနှင့် တူသည်။

ဩဘာသကရဏဋ္ဌေန အာလောကော ။ ။ ကတ္တုဗ္ဗတော ကရဏံ (ကတ္တုဗ္ဗန္တိ ကရဏံ—ပြု)၊ အဝဘာသတိ-ထွန်းလင်းတော်ပတတ်၏၊ ဣတိ ဩဘာသော(အရောင်အလင်း )၊ ဩဘာသော၀ ကရဏံ ဩဘာသကရဏံ – ဆိုင်ရာ အကြောင်းတို့သည် (ဩဘာသဖြစ်အောင်) ပြုအပ်သော အရောင်အလင်းတည်း။ [ အတ္တနော ပစ္စယေဟိ ဩဘာသဘာဝေန နိဗ္ဗတ္တေတဗ္ဗဋ္ဌေနာတိ အတ္ထော၊— ဋီကာ၊ ] ဤ၌ " ပစ္စယေဟိ " ဟူသောကတ္တားနှင့်"နိဗ္ဗတ္တေတဗ္ဗဋ္ဌေန"ဟူသော ကံဟောကြိယာကိုကြည့်၍ ကရဏကို ကမ္မသာဓ်ပြုသည်၊"အာလောကီယတိ ဧတေနာတိ အာလောကော=ရူပါရုံကို ကြည့်ရှုအပ်ကြောင်း အရောင်အလင်း။

အယံ အတ္ထော၊ သေသံ ပသံသာဝစနံ ॥ ॥ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိဉာဏ်ကို ပြသော အခန်းဖြစ်၍"ဝိဇ္ဇာ အဓိဂတာ-ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိဉာဏ်ဝိဇ္ဇာကို ရအပ်ပြီ" ဟူသော ဤအနက်သာ လိုရင်းဖြစ်၏၊ အဝိဇ္ဇာ ဝိဟတာ—စသော နောက် ၄ ဝါကျကား ချီးမွမ်းကြောင်း စကားများသာ ဖြစ်သည်။ [သေသံ ပသံသာဝစနန္တိ- ဟူသော ဤစကားကို၊ ပဋိပက္ခဝိဓမနပဝတ္တိဝိသေသာနံ ဗောခနတော ဝုတ္တံ= အဝိဇ္ဇာ ဟူသော

ပန–ဆက်၊ တွေ- ၍ အယံ ခေါမေ အစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ ယောဇနာ-ဝါကျတို့ကိုယှဉ်စေပုံကို၊(ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗာ၊) မေ- သည်၊ အယံဝိဇ္ဇာ-၍ ပုဗ္ဗေနိဝါသ ဉာဏ်ဝိဇ္ဇာကို၊ အဓိဂတာ-ရအပ်ပြီ၊ အဓိဂတဝိဇ္ဇဿ-ရအပ်ပြီးသော ဉာဏ်ဝိဇ္ဇာရှိသော၊ တဿ မေ- ထိုငါ၏၊ အဝိဇ္ဇာ-(ပုဗ္ဗေနိဝါသကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သော ) အဝိဇ္ဇာသည်၊ ဝိဟတာ - ကင်းပြီ၊ ဝိနဋ္ဌာ - ပျက်စီးပြီ၊ ဣတိ အတ္တော၊ [ဟနဓာတ်၏ ဂတိအနက်ကို ယူ၍ " ဝိဟတာ " ဟု သဒ္ဒတ္ထ ဖွင့်ပြီးနောက် "ဝိနဋ္ဌာ" ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်။] ကသ္မာ-ကြောင့်၊ (အဝိဇ္ဇာ-သည်၊ ဝိဟတာ-နည်း၊) ယသ္မာ–ကြောင့်၊ ဝိဇ္ဇာ-သည်၊ ဥပ္ပန္နာ-ပြီ၊ ( တသ္မာ, အဝိဇ္ဇာ, ဝိဟတာ- ပြီ၊) [ဣတိ- သို့၊ ယောဇနာ -ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-၏၊ ၍သို့ အပိုထည့်၍ ရှေ့ပြန်လှည့်။] ဣတရသ္မိံ - အခြားသော၊ ပဒဒွယေပိ-(တမောဝိဟတော၊ အာလောကော ဥပ္ပန္နောဟူသော) ပုဒ် ၂ ပါးအပေါင်း၌လည်း၊ ဧသနယော-တည်း။

ယထာ တန္တိ တွေ-ပါဌ်၌၊ ယထာတိ-ယထာ ဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ ဩပမ္မတွေ- ဥပမာအနက်၌၊ ( ပဝတ္တော- သော၊ နိပါတော - တည်း၊) တန္တိ- တံ ဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ နိပါတော-အနက်မရ, နိပါတ်မျှသာတည်း၊ သတိယာ-သတိနှင့်၊ အဝိပ္ပဝါသေန - မကင်းမူ၍ နေခြင်းအားဖြင့်၊ အပ္ပမတ္တဿ- မမေ့မလျော့သော၊ ဝါ- မမေ့မလျော့သည်ဖြစ်၍၊ ဝီရိယာတာပေန– ကိလေသာတို့ကို လွန်စွာ လောင်မြိုက်တတ်သောဝီရိယဖြင့်၊ အာတာပိနော–ကိလေသာတို့ကို လွန်စွာ လောင်မြိုက်တတ်သော ဝီရိယရှိသော၊ ဝါ – ရှိသည်ဖြစ်၍၊ ကာယေစ- ကိုယ်၌၎င်း၊ ဇီဝိတေစ-အသက်၌၎င်း၊ အနပေက္ခတာယ-ငဲ့ကွက်ခြင်းမရှိသည်၏ အဖြစ်အားဖြင့်၊ ပဟိတတ္တဿပေသိတတ္တဿ– လိုအပ်သော

တမဟူသော ဆန့်ကျင်ဘက်တို့ကို ပယ်ဖျောက်ခြင်း, ဝိဇ္ဇာဉာဏ် အရောင်အလင်းတို့၏ ဖြစ်ခြင်းဟူသော အထူးတို့ကို( ထိုစကားတို့က ) သိစေနိုင်ခြင်းကြောင့် ထိုစကားများကို ချီးမွမ်းသော စကား ဟု ဆိုအပ်၏။]

**ယသ္မာ ဝိဇ္ဇာ ဥပ္ပန္နာ။** ။အဝိဇ္ဇာကင်းဘို့ရာ အမိုက်မှောင်ကင်းဘို့ရာ အကြောင်း တမျိုးရှာဘွယ် မလို၊ ဝိဇ္ဇာဖြစ်ခြင်းသည်ပင် အဝိဇ္ဇာကင်းခြင်း၏ အကြောင်း, ဉာဏ်အရောင်ဖြစ်ခြင်းသည်ပင် အမိုက်မှောင်ကင်းခြင်း၏ အကြောင်းဖြစ်သည်၊ ထို့ကြောင့် "ယသ္မာ၊ပေ၊ဣတရသ္မိံပိ ပဒ ဒွယေ" ဟု မိန့်သည်။

**အာတာပိနော။** ။တပဓာတ်သည် ဒါဟ အနက်၌ စရာဒိတည်း၊ ကိလေသေ–တို့ကို၊ အာတာပေတိ–လွန်စွာ လောင်မြိုက်တတ်၏၊ ဣတိ အာတာပေါ၊ ဝီရိယရ၏၊ အာတာပေါ ယဿ အတ္ထိတိ အာတာပီ၊ ကိလေသာတို့ကို လွန်စွာ လောင်မြိုက်တတ်သော လုလ္လဝီရိယရှိသူ။

အကျိုးသို့စေလွှတ်အပ်သောစိတ်ရှိသော၊ ဝါ–ရှိသည်ဖြစ်၍၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်၊ ဣဒံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊(ကိံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊)အပ္ပမတ္တဿ-သော၊ ဝါ–၍၊ (ဝိဟရတော၌စပ်၊ ) အာတာပိနော– သော၊ ဝါ–၍၊ ပဟိတတ္တဿ- သော၊ ဝါ-၍၊ ဝိဟရတော –နေသော၊(အညဿ-ငါဘုရားမှတပါးသော၊ ကဿစိ-တစုံတယောက်သော၊ မာဒိသဿ- ငါကဲ့သို့ ရှုအပ်သော ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊)ဝိဇ္ဇာ-ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏ်ဝိဇ္ဇာသည်၊ ဥပ္ပဇ္ဇေယျ–ဖြစ်ရာ၏၊(တသ္မာ-ကြောင့်၊ ) အဝိဇ္ဇာ – ပုဗ္ဗေနိဝါသကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သော အဝိဇ္ဇာသည်၊ ဝိဟညေယျယထာ-ကင်းပျော်ရာသကဲ့သို့၊ (ယသ္မာ) အာလောကော- ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏ်ရောင်အလင်းသည်၊ ဥပ္ပဇ္ဇေယျ - ၏၊ ( တသ္မာ ) တမော- ပုဗ္ဗေနိဝါသကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သောအမိုက်မှောင်သည်၊ ဝိဟညေယျယထာ-ကဲ့သို့၊ [ပရိကပ္ပဥပမာဖြစ်၍ ပရိကပ္ပအနက်ဟောသတ္တမီဝိဘတ်ဖြင့် ဥပ္ပဇ္ဇေယျစသည် ထား၏။]ဝေမေဝ-ဤ့အတူသာလျှင်၊ မမ-ငါဘုရား၏၊(ယသ္မာ)ဝိဇ္ဇာ-သည်၊ ဥပ္ပန္နာ-ပြီ၊ (တသ္မာ) အဝိဇ္ဇာ– သည်၊ ဝိဟတာ- ကင်းပျောက်ပြီ၊ ( ယသ္မာ ) အာလောကော-သည်၊ ဥပ္ပန္နော-ပြီ (တသ္မာ )တမော-သည်၊ ဝိဟတော-ပြီ၊ မေ-သည်၊ (လဒ္ဓံ၌စပ်၊) ဝါ-၏၊(ဖလံ၌စပ်၊)တေဿ ပဓာနာနုယောဂဿ-၏ ကမ္မဋ္ဌာန်း အားထုတ်မှုအား၊ အနုရူပမေဝ - လျော်သည် သာလျှင်ဖြစ်သော၊ ဖလံ-ကို၊ လဒ္ဓံ-ရတော်မူအပ်ပြီ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ (ပြန်လှည့်)။

အယံခေါမေ၊ပေ၊အဘိညာကောသမှာတိ-ကား၊ ကုက္ကုဋစ္ဆာပကဿ-ကြက်ငယ်၏၊ မုခတုဏ္ဍကေနဝါ– နှုတ်သီးဖျားဖြင့်သော်၎င်း၊ ပါဒနခသိခါယဝါ– ခြေသည်းဖျားဖြင့်သော်၎င်း၊ အဏ္ဍကောသံ–အုခွံကို၊ ပဒါလေတွာ-ဖေါက်ခွဲ၍၊ တမှာအဏ္ဍကောသမှာ-မှ၊ အဘိနိဗ္ဗိဒါ-ပေါက်ထွက်ခြင်းသည်၊ နိက္ခန္တိ-ထွက်ခြင်းသည်၊ ကုက္ကုဋနိကာယေ - ကြက်အပေါင်း၌၊ ပစ္စာဇာတိ- ဖြစ်ခြင်းသည်၊ ဟောတိ ဧဝ-ကဲ့သို့၊ (တထာ-တူ၊) ဗြာဟ္မဏ-ဏား၊ မမ - ၏၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိညာဏ မုခတုဏ္ဍကေန - ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိဉာဏ်တည်းဟူသော နှုတ်သီးဖျ ားဖြင့်၊ ပုဗ္ဗေနိဝုတ္ထက္ခန္ဓ ပဋိစ္ဆာဒကံ - ရှေး၌ နေအပ်ဘူး

ပဟိတတ္တဿ။ ။ပပုဗ္ဗ ဟိ ဓာတ်သည် ပေသနအနက်ဟော၊ အတ္တ သဒ္ဒါကား "စိတ်" အနက်ဟော၊ ပဟိတော–အလိုရှိအပ်သော အကျိုးသို့ စေလွှတ်အပ်သော+အတ္တာ ယဿာတိ ပဟိတတ္တော – (ကိုယ်နှင့်အသက် မငဲ့ကွက်ဘဲ သေသေကြေကြေ အလိုရှိအပ်သော အကျိုးသို့ ရောက်အောင်) စေလွှတ်အပ်သော စိတ်ရှိသူ။ [ ပေသိတတ္တဿာတိ ယထာဓိပ္ပေတတ္ထသိဒ္ဓိယာ ပတိဝိသဇ္ဇိတတ္တဿ၊–ဋီကာ၊ ဋီကာ၌ အနည်းငယ် ပါဌ်ပျက်၍ သင့်မည်ထင်သောပါဌ်ကို ပြင်ထားသည်။]

သော ခန္ဓာကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သော၊ အဝိဇ္ဇာဏ္ဍကောသံ-အဝိဇ္ဇာတည်းဟူသော အုခွံကို၊ ပဒါလေတွာ-၍၊ ပဌမာ- ရှေးဦးစွာသော၊ အယံ အဘိနိဗ္ဘိဒါ- ဤ ပေါက်ထွက်ခြင်းသည်၊ပဌမာ-သော၊ အယံနိက္ခန္တိ-ဤထွက်ခြင်းသည်၊ပဌမာ- သော၊ အယံ အရိယဇာတိ-ဤအရိယ၏ ဖြစ်ခြင်းသည်၊ အဟောသိ - ဖြစ်ပြီ၊ ဣတိ-အပြီးတည်း။....ပုဗ္ဗေနိဝါသ ကထာ-သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။

သော ဧဝံ၊ပေ၊စုတူပပါတဉာဏာယာတိ-ကား၊ စုတိယာစ - စုတိအနီး၌ ၎င်း၊ ဥပပါတေစ-ပဋိသန္ဓေနေပြီးခါစ၌၎င်း၊ [သမီပတ္ထေ ဘုမ္မဝစနံ။] ဉာဏာ ယ-သိကြောင်းဉာဏ်အကျိုးငှါ၊ ယေန ဉာဏေန-ဖြင့်၊ သတ္တာနံ-တို့၏ စုတိစ- စုတိကို၎င်း၊ ဥပပါတောစ-ပဋိသန္ဓေကို၎င်း၊ [သမီပူပစာ၊] ဉာယတိ-သိအပ် ၏၊ တဒတ္ထံ- ထို စုံတူပပါတဉာဏ်အကျိုးငှါ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ စိတ္တံ အဘိ နိန္နာမေသိန္တိ-ကား၊ ပရိကမ္မစိတ္တံ-ကို၊ နီဟရိံ-ဆောင်တော်မူပြီ၊ ပန-ကား၊ သော ဒိဗ္ဗေန ၊ ပေ ၊ ပဿာမိ တိ ဧတ္ထ - ၌၊ ပူရိတပါရမီနံ - န်သော၊ မဟာ သတ္တာနံ - မြတ်သော သတ္တာ ဖြစ်ကြသော ဘုရားအလောင်းတို့၏၊ ပရိကမ္မ ကရဏံ နတ္ထိ၊ ဟိ-မှန်၊ တေ-ထိုဘုရားအလောင်းတို့သည်၊ စိတ္တေ-ကို၊ အဘိ နိန္နာမိတမတ္တေ ဧဝ - ရှေးရှု ညွတ်စေအပ်ခါမျှ သော်သာ၊ ဒိဗ္ဗေန စက္ခုနာ- ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်ဖြင့်၊ သတ္တေ-သတ္တာတို့ကို၊ ပဿန္တိ-မြင်နိုင်ကုန်၏၊ ပန- ကား၊ အာဒိကမ္မိကကုလပုတ္တာ ပရိကမ္မံ,ကတွာ-ပြုပြီး၍၊ ဝါ-ပြီးမှ၊(ပဿန္တိ၊) [တသ္မာမှ စ၍ ဝဏ္ဏယိဿာမ တိုင်အောင် ပုဗ္ဗေနိဝါသကထာ နည်းမှီး၍ ပေးပါ၊] သောတိ-ကား၊ သောအဟံ-သည်။

ဒိဗ္ဗေနာတိအာဒီသု-တို့၌၊(အတ္တော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊) ဒိဗ္ဗသဒိသတ္တာ- နတ်ပြည်၌ ဖြစ်သော စက္ခုနှင့် တူသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒိဗ္ဗံ- ဒိဗ္ဗ မည်၏၊ ဟိ-ချဲ့၊ ဒေဝတာနံ - နတ်တို့၏၊ သုစရိတကမ္မနိဗ္ဗတ္တံ - ကောင်းစွာ ကျင့်အပ်

**ဒိဗ္ဗသဒိသတ္တာ ဒိဗ္ဗံ။** ။ဒိဝိ– နတ်ပြည်၌+ဘဝံ – ဖြစ်သော စက္ခုတည်း၊ ဒိဗ္ဗံ– စက္ခု၊ [ဘဝအနက်၌ ဏျပစ္စည်း။] ဒိဗ္ဗသဒိသတ္တာဖြင့် သဒိသူပစာရကိုပြ၏၊ တနည်း– “ဒိဗ္ဗံ ဝိယာတိ ဒိဗ္ဗံ”ဟု ဥပမာတဒ္ဓိတ်ကိုပြ၏၊ ဤဥပမာလည်း ဟီနူပမာသာ၊ အဘိညာဉ် စက္ခုကား နတ်မျက်စိထက် မယှဉ်သာအောင် သာလွန်ပေသည်။ [ဒိဗ္ဗသဒိသတ္တာတိစ ဟီနူပမာဒဿနံ–(ဥပမေယျအောက် ယုတ်သောဥပမာကို ပြကြောင်းစကားတည်း၊) ဒေဝတာနံ ဒိဗ္ဗစက္ခုတောပိ ဣမဿ မဟာနုဘာဝတ္တာ၊–ဋီကာများ။]

**ဒေဝတာနံ ဟိ။** ။သဒ္ဒါများခြင်း, ဒိဋ္ဌိ (အယူ) ၏ စင်ကြယ်ခြင်း, အကျိုးကို မြင်ခြင်းတို့ကြောင့် “သုဋ္ဌု–ကောင်းသော+စရိတံ – အကျင့်ဘည်း၊ သုစရိတံ=ကျင့်၊ ရုပ်ဟိရာဒီဟိတိ အာဒိသဒ္ဒေန ဝါတရောဂါဒိနံ (လေ, ရောဂါစသည်တို့ကို) သင်္ဂဟော၊ “ ဥပက္ကိလေသ ” ဟူသည် ကံပြုစဉ်က လောဘ ဒေါသ စသော တရားများတည်း၊

သော ကံကြောင့်ဖြစ်သော၊ ပိတ္တသေမှရုဟိရာဒီဟိ- သည်းခြေ, သလိပ်, သွေး အစရှိသော အနှောက်အယှက် တို့သည်၊ အပလိဗုဒ္ဓံ - မနှောက်ယှက်အပ်သော၊ ဥပက္ကိလေသဝိနိမုတ္တာယ - ကပ်၍ နှိပ်စက်စေတတ်သော အပြစ်တို့မှ လွတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒူရေပိ-ဝေးသောအရပ်၌လည်း၊ [အနီးအာရုံကို ပကတိမျက်စိဖြင့် ယူနိုင်ရကား ပိဖြင့် သိမ်မွေ့ သေးငယ်သော အာရုံကိုသာ ဆည်းယူသည်၊] အာရမဏာ သမ္ပဋိစ္ဆန သမတ္ထံ- အာရုံကို ခံယူခြင်း၌ စွမ်းနိုင်သော၊ ဒိဗ္ဗံ-နတ်ပြည်၌ဖြစ်သော၊ ပသာဒစက္ခု-ပသာဒစက္ခုသည်၊ ဟောတိ၊ ဝီရိယဘာဝနာဗလ နိဗ္ဗတ္တံ- ဝီရိယပြဋ္ဌာန်းသော ဘာဝနာ၏ အစွမ်းကြောင့် ဖြစ်သော၊ ဉာဏစက္ခုပိ ဉာဏစက္ခု-၌ ဉာဏ်စက္ခုကိုလည်း၊ တာဒိသမေဝ-ထို ဒိဗ္ဗစက္ခုကဲ့သို့ရှုအပ်သည်သာ၊ ဟောတိ(တသ္မာ)ဒိဗ္ဗသဒိသတ္တာ-၌သို့နတ်ပြည်၌ ဖြစ်သောစက္ခုနှင့် တူသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒိဗ္ဗံ - ဒိဗ္ဗမည်၏၊ ဒိဗ္ဗဝိဟာရ ဝသေန- ဒိဗ္ဗဝိဟာရ၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ပဋိလဒ္ဓတ္တာ - ရအပ်သည်၏ အဖြစ်

ကံပြုစဉ်တုန်းက ထို ဥပက္ကိလေသတို့မှ လွတ်ကင်းခြင်းကိုပင် အကျိုးဝိပါက်(စက္ခု)၌ တင်စား၍ ကာရဏူပစာရအားဖြင့် စက္ခုကို "ဥပက္ကိလေသဝိနိမုတ္တ"ဟု ဆိုသည်။

ဝီရိယ၊ပေ၊နိဗ္ဗတ္တံ ။ ။ ဝီရိယာရမ္ဘဝသေနေဝ ဇာတ္တနတော သဗ္ဗာပိ ကုသလ ဘာဝနာ ဝီရိယဘာဝနာ=ဝီရိယကို အားထုတ်မှသာ ပြီးစီးနိုင်ခြင်းကြောင့် ကုသိုလ်ကို တိုးပွားစေခြင်း ဟူသမျှသည် ဝီရိယဘာဝနာ ချည်းတည်း၊ ပဓာနသင်္ခါရသမန္နာဂတာ ဝါ ဣဒ္ဓိပါဒဘာဝနာ ဝိသေသတော ဝီရိယဘာဝနာ= (တနည်း) လုလ္လ ဝီရိယသင်္ခါရနှင့် ပြည့်စုံသော ဣဒ္ဓိ၏အခြေခံ ဘာဝနာအထူး၏ အဖြစ်ကြောင့် ( ဒိဗ္ဗစက္ခုဉာဏ်ကို ဖြစ်စေတတ်သော ဘာဝနာကို ) ဝီရိယဘာဝနာဟု ခေါ်သည်၊ တဿာနုဘာဝေန နိဗ္ဗတ္တံ ဝီရိယဘာဝနာဗလနိဗ္ဗတ္တံ။

တာဒိသမေဝ ။ ။ ဥပက္ကိလေသဝိမုတ္တတာယ ( ဥပက္ကိလေသတို့မှ လွတ်ခြင်းအားဖြင့်ရင်း) ဒူရေပိ သုခုမဿပိ အာရမဏဿ သမ္ပဋိစ္ဆနသမတ္ထတာယစ ( စွမ်းနိုင်သည်၏ အဖြစ်အားဖြင့်ရင်း) တံသဒိသမေဝ (ထို နတ်မျက်စိနှင့် တူသည်သာ)။

ဒိဗ္ဗဝိဟာရဝသေန ပဋိလဒ္ဓတ္တာ ။ ။ ဤဟိတ်ကို ဒိဗ္ဗံ၌စပ်၊ ဒိဗ္ဗဝိဟာရဟူသည် ရူပဈာန် ၄ ပါးတည်း၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း, ဗြဟ္မာ့ပြည်၌ ထို ဈာန်တရားတို့အဖြစ်များ၍ ထိုဈာန်တရားဖြင့် နေရခြင်းကြောင့်တည်း၊ ဒိဝိ– ဗြဟ္မာ့ပြည်၌ + ဘဝေါ – ဖြစ်သော ဝိဟာရဘည်း၊ ဒိဗ္ဗောစ + သော + ဝိဟာရောစာတိ ဒိဗ္ဗဝိဟာရော၊ ထို ဒိဗ္ဗမည်သော ဈာန်ကြောင့် ရအပ်သော အဘိညာဉ်ကား ကာရဏူပစာရအားဖြင့် ဒိဗ္ဗမည်၏ – ဟု ပြလို၍ " ဒိဗ္ဗဝိဟာရ၊ပေ၊ပဋိလဒ္ဓတ္တာ"ဟု မိန့်သည်။ [ ဒိဗ္ဗဝိဟာရသင်္ခါတာနံ စတုန္နံ ဈာနာနံ ဝသေန ပဋိလဒ္ဓတ္တာ၊ ဇာမိနာ ကာရဏာဝသေန·သ ( ထို အဘိညာဉ်စက္ခု၏) ဒိဗ္ဗဘာဝမာဟ၊–ဋီကာ။]

ကြောင့်၎င်း၊ အတ္တနာ စ-မိမိကိုယ်တိုင်လည်း (အဘိညာဉ်ကိုယ်တိုင်-ဟူလို၊) ဒိဗ္ဗဝိဟာရသန္နိဿိတတ္တာ ပိ-ဒိဗ္ဗဝိဟာရကို မှီသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ဒိဗ္ဗံ-၏၊ [အပိဖြင့် ဒိဗ္ဗသဒိသတ္တာ ဒိဗ္ဗံကို ပေါင်းသည်၊ ဒိဗ္ဗ၊ပေ၊ပဋိလဒ္ဓတ္တာကိုကား စသဒ္ဒါဖြင့် ဆည်းသည်။] အာလောကပရိဂ္ဂဟေန-ကသိုဏ်းရောင်ကိုသိမ်းယူခြင်းကြောင့်၊ ဝါ - ယူသည့် အတွက်၊ မဟာဇုတိကတ္တာ ပိ - ကြီးကျယ်သော အရောင်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်လည်း၊ ဒိဗ္ဗံ-၏၊ တိရောကုဍ္ဍာဒိဂတရူပဒဿနေန-နံရံတဖက်စသောအရပ်၌ဖြစ်သော ရူပါရုံကို မြင်နိုင်ခြင်းကြောင့်၊ ဝါ-အတွက်၊ မဟာဂတိကတ္တာ ပိ - အံ့ဩဘွယ် ဖြစ်ခြင်း ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်လည်း၊ ဒိဗ္ဗံ-၏၊ တံ သဗ္ဗံ-ထို အလုံးစုံသော အနက်ငါးပါးအပေါင်းကို၊ သဒ္ဒသတ္ထာနုသာရေန-သဒ္ဒါကျမ်းသို့ အစဉ်လိုက်သဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏။

**အတ္တနာ စ ဒိဗ္ဗဝိဟာရသန္နိဿိတတ္တာ။** ။"ဧဝံသမာဟိတေ စိတ္တေ" စသည်ဖြင့် အင်္ဂါရှစ်ပါးရှိသော စတုတ္ထဈာန်ကို (ပါဒက) အခြေခံပြု၍ ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်ဖြစ်ရ၏၊ ထို့ကြောင့် ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်သည် ဒိဗ္ဗမည်သော ပါဒကစတုတ္ထဈာန်ကို မှီရသည်-ဟု ဆိုသည်။ [ အဋ္ဌင်္ဂသမန္နာဂတေန ဥတ္တံသဂတံ (အောက်အောက်ဈာန်ထက်၎င်း၊ ရိုးရိုး စတုတ္ထဈာန်ထက်၎င်း၊ လွန်ကဲသည်၏အဖြစ်သို့ ရောက်သော ) ပါဒကဇ္ဈာနသင်္ခါတံ ဒိဗ္ဗဝိဟာရံ နိဿာယ ပဝတ္တတ္တာ၊-ဋီကာ။ ] ဤ၌ ဥတ္တံသဂတံထောက်၍ အင်္ဂါ ၈ ပါး ရှိသော စတုတ္ထဈာန်ကိုသာ ဥက္ကဋ္ဌနည်းအားဖြင့် "ဒိဗ္ဗ"ဟု ခေါ်။

**တနည်း။** ။ဒိဗ္ဗမည်သော ဈာန်၄ ပါးတွင် ပါဝင်သော (မိမိဟူသော အဘိညာဉ် ဉာဏ်နှင့်လည်းယှဉ်သော) စတုတ္ထဈာန်ကို ဧကဒေသျူပစာရအားဖြင့် ဒိဗ္ဗ ဟု ခေါ်၏။ [ ဒိဗ္ဗဝိဟာရပရိယာပန္နံ ဝါ အတ္တနာ သမ္ပယုတ္တံ ရူပါဝစရစတုတ္ထဇ္ဈာနံ နိဿယပစ္စယ ဘူတံ သန္နိဿိတတ္တာ၊-ဋီကာ။ ] ထိုဒိဗ္ဗကို မှီ၍ ဖြစ်ရသော ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်ကား (သန္နိဿိတတ္တာ ထောက်၍ ) ဌာနူပစာရ အားဖြင့်၎င်း ( ထို စတုတ္ထဈာန်ကို အခြေခံခဲ့ရသောကြောင့်) ကာရဏူပစာရအားဖြင့်၎င်း ဒိဗ္ဗအမည် ရသည်။

**အာလောက၊ပေ၊မဟာဇုတိကတ္တာ။** ။ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်ကို ဖြစ်စေလိုသော တန်ခိုးရှင်သည် ပင်ကိုယ်က အရောင်ရှိသော တေဇော-ဩဒါတ-အာလောကကသိုဏ်း တို့တွင် တပါးပါးကို အာရုံပြု၍ စတုတ္ထဈာန်ကို ပါဒကဈာန်အဖြစ်ဖြင့် ဝင်စားရသည်၊ ထို့ကြောင့် "အာလောကပရိဂ္ဂဟေန"ဟု ဆိုသည်၊ မဟာဇုတိကတ္တာ၌"မဟတီ+ဇုတိ ယဿာတိ မဟာဇုတိကံ-ကြီးကျယ်သော အရောင်ရှိသော ဒိဗ္ဗစက္ခု"ဟု ပြု။

**တိရော၊ပေ၊မဟာဂတိကတ္တာ။** ။"မဟာနီယဂမနတ္တာ=ဝိမှယနီယ ပဝတ္တိကတ္တာ" ဟု ဋီကာဖွင့်သောကြောင့်"မဟာသဒ္ဒါသည် ဝိမှယအနက်ဟော"ဟုဆိုလိုဟန်တူသည်၊ နံရံ၏ ဟိုမှာဘက် စသည်မှာရှိသောရူပါရုံကို မြင်စွမ်းနိုင်သောကြောင့် "အံ့ဩဘွယ် ဖြစ်ခြင်းရှိသော စက္ခု" ဟု ဆိုလိုသည်။ [မဟတီ- အံ့ဩဘွယ်ကောင်းသော+ဂတိ- ဖြစ်ခြင်းသည်၊ ယဿာတိ မဟာဂတိကံ။]

ဒဿနဋ္ဌေန - မြင်တတ်သည်၏ အဖြစ်ဟူသော အနက်သဘောကြောင့်၊ စက္ခု-စက္ခုမည်၏၊ စက္ခုကိစ္စကရဏဋ္ဌေန-စက္ခု၏ကိစ္စကိုပြုခြင်းကြောင့်၊ စက္ခုမိဝ-စက္ခုနှင့်တူ၏၊ ဣတိပိ-ထို့ကြောင့်လည်း၊ စက္ခု-၏၊ စတုပ္ပပါတဒဿနေန-ဇုတိပဋိသန္ဓေကို မြင်နိုင်ခြင်းကြောင့်၊ ဝါ- အတွက်၊ ဒိဋ္ဌိဝိသုဒ္ဓိဟေတုတ္တာ-အယူစင်ကြယ်ခြင်း၏အကြောင်း၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝိသုဒ္ဓံ-ဝိသုဒ္ဓမည်၏၊ ဟိ-ချဲ့၊ ယော-အကြင် ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ စုတိမတ္တမေဝ-မျှကိုသာ၊ ပဿတိ-မြင်နိုင်၏၊ ဥပပါတံ-ပဋိသန္ဓေကို၊ န ပဿတိ-နိုင်၊ သော-သည်၊ ဥစ္ဆေဒဒိဋ္ဌိံ-ဥစ္ဆေဒဒိဋ္ဌိကို၊ ဂဏှာတိ-ယူ၏၊ ယော-သည်၊ ဥပပါတမတ္တမေဝ - သာ၊ ပဿတိ-၏၊ စုတိံ-

တံ သဗ္ဗံ သဒ္ဒသတ္ထာနုသာရေန။ ။"တံ သဗ္ဗံ"ဟု ဆိုသောကြောင့် ဆိုခဲ့ပြီးသော "ဒိဗ္ဗသဒိသတ္တာ, ဒိဗ္ဗဝိဟာရဝသေန ပဋိလဒ္ဓတ္တာ, ဒိဗ္ဗဝိဟာရသန္နိဿိတတ္တာ, မဟာဇုတိကတ္တာ, မဟာဂတိကတ္တာ ဒိဗ္ဗံ" ဟူသော ၅ နည်းလုံးကိုပင် ဆိုလိုဟန် တူသည်၊ ထို ၅ နည်းတွင် ရှေ့ ၃ နည်း၌ ဥပမာတဒ္ဓိတ်, သဒိသူ-ကာရဏူ-ဌာနူပစာ တင်ခြင်းသည်ပင် သဒ္ဒသတ္ထာနုသာရဟု ဆိုလိုဟန် တူ၏၊ နောက် ၂ နည်း၌ကား ဒိဝုဓာတ်၏ ဇုတိအနက်ကိုယူ၍ "ဒိဗ္ဗတိ ဇောတယတိ—ထွန်းတောက်တတ်၏၊ ဣတိ ဒိဗ္ဗံ" ဟုရင်း, ဂတိအနက်ကိုယူ၍ " ဒိဗ္ဗတိ အသဇ္ဇမာနံ ဂစ္ဆတိ— တိရောကုဋ္ဋ စသောအရပ်တို့၌ မငြိမကပ် သွားတတ်ဖြစ်တတ်၏၊ ဣတိ ဒိဗ္ဗံ"ဟုရင်း, ဓာတ်ကျမ်းသို့အစဉ်လိုက်၍ ဝစနတ္ထပြုခြင်းကို "သဒ္ဒသတ္ထာနုသာရ"ဆိုသည် ဟု မှတ်။.... [တံသဗ္ဗန္တိ ဟေဋ္ဌာ ဝုတ္တံ အတ္ထပဥ္စက မပေက္ခိတွာ ဝုတ္တန္တိ ဝဒန္တိ၊ ကေစိ ပန ဇုတိဂတိအတ္ထေသုပိ သဒ္ဒဝိဒူ ဒိဝုသဒ္ဒံ ဣစ္ဆန္တီတိ မဟာဇုတိကတ္တာ မဟာဂတိကတ္တာတိ ဣဒမေဝဒ္ဒယံ သန္ဓာယ ဝုတ္တံ၊ပေ၊ဝဒန္တိ။]

ဒဿနဋ္ဌေန၊ပေ၊တိပိ စက္ခု။ ။ဒဿနဋ္ဌေနပါဌ်ဖြင့် "စက္ခတိ ရူပံ ဝိဘာဝယတိ-ရူပါရုံကို ထင်စွာ ပြတတ်၏၊ ဣတိ စက္ခု" ဟူသော ဝစနတ္ထကို ပြ၏၊ "စက္ခုကိစ္စကရဏဋ္ဌေန" ဖြင့် "စက္ခုမိဝ စက္ခု" ဟု ဥပမာတဒ္ဓိတ် ပြုရခြင်း၏ အကြောင်းကို ပြ၏၊ "စက္ခုကိစ္စကို ပြု"ဟူသည် ပကတိစက္ခုသည် သမဝိသမ (ညီညွတ်သောအရာ မညီညွတ်သောအရာ)ကို ပြောပြသကဲ့သို့ဖြစ်၏၊ အဘိညာဉ် စက္ခုလည်း ထိုကဲ့သို့ပင် ပြောပြသကဲ့သို့ဖြစ်ခြင်းတည်း။ [ဒဿနဋ္ဌေနာတိ ရူပဒဿနဘာဝေန၊ ဣမိနာ စက္ခတိ ရူပံ ဝိဘာဝယတီတိ နိဗ္ဗစနတော စက္ခုတ္တံ (စက္ခု မည်သည်၏ အဖြစ်ကို) ဒဿေတိ၊ စက္ခုကိစ္စကရဏေနာတိဣဒံ စက္ခုမိဝ စက္ခုတိ ဥပမာယ သဒိသနိမိတ္တဒဿနံ(တူခြင်း၏ အကြောင်းပဝတ္တိနိမိတ်ကို ပြသောစကားတည်း။— ဝိမတိ။]

စုတူပပါတ၊ပေ၊ဝိသုဒ္ဓံ။ ။ဒိဋ္ဌိဝိသုဒ္ဓိဟေတုတ္တာကို ထောက်၍ "ဝိသုဇ္ဈတိ ဧတေနာတိ ဝိသုဒ္ဓံ"ဟု ပြု၊ ဥစ္ဆေဒဒိဋ္ဌိနှင့် နဝသတ္တပါတုဘာဝဒိဋ္ဌိတို့၏ စင်ကြယ်ကြောင်းဖြစ်သော စက္ခုတည်း။ ["နဝသတ္တ-(ရှေးဘဝက မဖြစ်ဘဲ ယခုမှ ဖြစ်ဟွာမင်းစသူတို့ ဖန်ဆင်းမှုကြောင့်) အသစ်သတ္တဝါတယောက်၏ + ပါတုဘာဝ-ထင်ရှား ပေါ်ပေါက်လာခြင်း"ဟု ယူခြင်းသည် နဝသတ္တပါတုဘာဝဒိဋ္ဌိ မည်၏။]

ကို၊ န ပဿတိ-နိုင်၊ သော-သည်၊ နဝသတ္တပါတုဘာဝဒိဋ္ဌိံ-အသစ် သတ္တာ၏ ထင်ရှားခြင်းဟူသော အယူကို၊ ဂဏှာတိ-၏၊ ပန-ကား၊ ယော - သည်၊ တဒုဘယံ-ထိုစုတိပဋိသန္ဓေ ၂ပါးစုံကို၊ ပဿတိ-၏၊ သော-သည်၊ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ဒုဝိဓမ္ပိ-သော၊ တံ ဒိဋ္ဌိဂတံ-ကို၊ အတိဝတ္တတိ-လွန်၍ဖြစ်၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ အဿ - ထို ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ တံ ဒဿနံ - ထို ဒိဗ္ဗစက္ခုဖြင့် မြင်ရခြင်းသည်၊ ဒိဋ္ဌိဝိသုဒ္ဓိဟေတု - အသိဉာဏ်ဟူသော အယူစင်ကြယ်ခြင်း၏ အကြောင်းသည်၊ ဟောတိ-၏၊ စ—ဆက်၊ ဘဂဝါ-သည်၊ တဒုဘယံ-ကို၊ အဒ္ဒသ-မူပြီ၊ တေန—ကြောင့်၊ စုတု ၊ ပေ ၊ ဝိသုဒ္ဓိတိ-ဟူသော၊ တံ- ဤစကားကို၊ (မယာ)ဝုတ္တံ။

ဝါ - တနည်း၊ ကောဒသ ဥပက္ကိလေသ ဝိရဟတော - တဆဲ့တပါးသော ဥပက္ကိလေသတို့မှ ကင်းခြင်းကြောင့်၊ ဝိသုဒ္ဓ—ဒ္ဓမည်၏၊ ဟိ-ချဲ့၊ ဘဂဝတော— ၏၊ ဒိဗ္ဗစက္ခု— ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်သည်၊ ကောဒသ ဥပက္ကိလေသ ဝိရဟိတံ- ၏၊ ယထာ (ကိံ ဝစနံ)- အဘယ်စကားကို၊ အာဟ-နည်း၊ သော ခေါ အဟံ အနုရုဒ္ဓါ ၊ပေ၊ နစ ဩဘာသံ သဉ္စာနာမိတိ ဝေမာဒိ - သဉ္စာနာမိ ဤသို့ အစ ရှိသော၊ ( ယံ သုတ္တံ - အကြင် ဥပက္ကိလေသသုတ်သည်၊ အတ္ထိ - ၏၊ တံ - ကို၊ အာဟ-ပြီ၊) ဝေံ-ဤသို့လျှင်၊ တံ - ထို ဒိဗ္ဗစက္ခုသည်၊ ကောဒသ ဥပက္ကိလေသ ဝိရဟတောစ-ကြောင့်လည်း၊ ဝိသုဒ္ဓ- မည်၏၊ [ပါဠိတော်နက်။ ။အနုရုဒ္ဓါ- အနုရုဒ္ဓါတို့၊ သောအဟံ – သည်၊ ဝိစိကိစ္ဆာ စိတ္တဿ ဥပက္ကိလေသောတိ- သောဟူ၍၊ ဝါ-ဝိစိကိစ္ဆာသည် စိတ်၏ ညစ်နွမ်းကြောင်းဟူ၍၊ ဣတိ-သို့၊ ဝိဒိတွာ–သိတော်မူ၍၊ စိတ္တဿ- ၏၊ ဥပက္ကိလေသံ - ညစ်နွမ်းကြောင်းဖြစ်သော၊ ဝိစိကိစ္ဆံ-ကို၊ ပဇဟိံ—ပယ်စွန့်တော် မူခဲ့ပြီ၊ အမနသိကာရော စိတ္တဿ ဥပက္ကိ လေသောတိ-သော ဟူ၍၊ ဣတိ ဝိဒိတွာ, စိတ္တဿ, ဥပက္ကိလေသံ - ညစ်နွမ်း

ယထာဟ။ ။ဥပရိပဏ္ဏာသ – ဥပက္ကိလေသသုတ်တည်း၊ အရှင် အနုရုဒ္ဓါ, အရှင် နန္ဒိယ , အရှင်ကိမိလ ၃ ပါးကို ( ကေသေသ နည်းအားဖြင့် ပေါင်း၍ ) ခေါ်တော် မူသောကြောင့် “ အနုရုဒ္ဓါ ” ဟု ပါဠိတော်၌ ဗဟုဝုစ်ချည်း ရှိသည်၊ ဘုရားမဖြစ်မီက အလောင်းတော်မှာ ဖြစ်ခဲ့ပုံကို အရှင် အနုရုဒ္ဓါစသော ထေရ်တို့အား ပြန်၍ဟောတော် မူအပ်သော သုတ်တည်း၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုဖြစ်ဘို့ရန် ပရိကမ်ပြုသောအခါ အရောင်အလင်း ပေါ်လာ၏၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုဖြင့် ရူပါရုံ အထူးအဆန်းတို့ကိုလည်း မြင်ရ၏။ ထိုအခါ....

ဝိစိကိစ္ဆာ ။ ။ “ ဣဒံ နုခေါ ကိံ–ဒီဟာတွေက ဘယ့်နဲ့ဟာတွေပါလိမ့် ” ဟု ယုံမှားသော ဝိစိကိစ္ဆာဖြစ်လာ၏၊ ထိုသို့ ဝိစိကိစ္ဆာဖြစ်လျှင်ပင် သမာဓိပျက်၍ အရောင် အလင်း ( ဩဘာသ)နှင့် ရူပါရုံတို့ကို မြင်မှု ( ရူပဒဿန )လည်း ကွယ်ပတော့၏၊ ထို့ကြောင့် “ဝိစိကိစ္ဆာ စိတ္တဿ ဥပက္ကိလေသော – ဝိစိကိစ္ဆာသည် စိတ်၏ ညစ်နွမ်း ကြောင်း”ဟု မိန့်တော်မူသည်။

ကြောင်း ဖြစ်သော၊ အမနသိကာရံ-နှလုံးမသွင်းဘဲ တိတ်ဆိတ်စွာ နေခြင်းကို၊ ပဇဟိ-ပြီ၊ [နောက်ဝါကျများ၌လည်း ဤနည်းအတိုင်း ဖေါ်၍ပေးပါ၊] ပေ၊ ထိနမိဒ္ဓံ–ထိန မိဒ္ဓကို၊ပေ၊ ဆမ္ဘိတတ္တံ - ကိုယ်တုန်လှုပ်သည်၏ အဖြစ်ဟူသော ကြောက်ခြင်းကို၊ပေ၊ ဥပ္ပိလဝံ– ဖူးတောင်း အသွင် , ပေါ်လွင်သော ပီတိကို၊ ၊ပေ၊ဒုဋ္ဌုလ္လံ- မကောင်းသည်ကိုမှီသော ကိုယ်၏ ပျင်းမှုပျင်းရာကို၊ ပေ၊အစ္စာရဒ္ဓဝီရိယံ- အလွန်အားထုတ်အပ်သော ဝီရိယကို၊ပေ၊အတိလီနဝီရိယံ-အလွန်

**အမနသိကာရော။** ။ထပ်၍ အားထုတ်သောအခါ ဩဘာသလည်း ပေါ်လာ၏၊ ရူပါရုံတို့ကိုလည်း မြင်ရပြန်၏၊ ထိုအခါ " ရူပါရုံတို့ကို နှလုံးသွင်းနေသောကြောင့် ငါ့မှာ ဝိစိကိစ္ဆာ ဖြစ်ရသည်၊ နှလုံး မသွင်းဘဲ တိတ်ဆိတ်စွာ နေတော့အံ့ " ဟု ကြံ၍ တိတ်ဆိတ်စွာနေလိုက်ရာ သမာဓိပျက်၍ ဩဘာသနှင့် ရူပဒဿနတို့ ကွယ်သွားပြန်၏၊ ထို့ကြောင့် အမနသိကာရကို " ဥပက္ကိလေသ " ဟု မိန့်တော်မူသည်။

**အမှာ ။** ။ နောက်၌လည်း ထပ်၍ ကြိုးစားသဖြင့် ဩဘာသနှင့် ရူပဒဿနတို့ ဖြစ်ပေါ်လာပုံ, နောက်တရားတမျိုးကြောင့် သမာဓိပျက်၍ ဩဘာသနှင့် ရူပဒဿနတို့ ကွယ်ပပုံကို သိပါ၊ ဥပက္ကိလေသ တရားဖြစ်ပုံကိုသာ ပြမည်။

**ထိနမိဒ္ဓံ။** ။ထိုထိုအာရုံတို့၌ ပြန့်နှံ့တတ်သော မနသိကာရ မဖြစ်သောအခါ ထိန မိဒ္ဓဝင်လာ၍ သမာဓိပျက်ပြန်၏။

**ဆမ္ဘိတတ္တံ ။** ။ ဟိမဝန္တာသို့ ကသိုဏ်းရောင် အဘိညာဉ်ရောင် ဖြန့်လိုက်သော အခါ ဒါနဝရက္ခိုသ်ကြီး စပါးကြီးမြွေကြီး များကို မြင်ရ၍ ကြောက်ရွံ့ တုန်လှုပ်သော ဆမ္ဘိတတ္တ ဖြစ်လာသဖြင့် သမာဓိ ပျက်ပြန်၏။

**ဥပ္ပိလဝံ ။** ။ ထိုနောက် ငါမြင်ရသော ကြောက်စရာတွေသည် ပကတိမျက်စိဖြင့် မမြင်နိုင်၊ အဘိညာဉ်စက္ခုဖြင့် ကြံကြံစည်စည် ကြည့်ရှုမှ မြင်ရသော အကောင်တွေကို ကြောက်နေတယ်ဆိုတာ ဘယ့်နှယ်ဟာတဲ့လဲ (ဘာကြောက်စရာလဲ) ဟု ဆင်ခြင်လိုက် သောအခါ အကြောက်ပြေသွား၏၊ ထိုအခါ မိမိ၏ ဆင်ခြင်တတ်သော ဉာဏ်စွမ်းကို အကြောင်းပြု၍ တက်ကြွမှုပီတိ ဖြစ်လာရာ သမာဓိ ပျက်သွားပြန်၏။ [ ဥပ္ပိလဝတိ– ဖူးတောင်းသည် ရေမှာပေါ်သကဲ့သို့ ပေါ်လွင်တက်ကြွတတ်၏၊ ဣတိ ဥပ္ပိလဝံ၊ ( ပီတိ ဂတံ) ဟု နပုလ္လိန်အဘိဓေယျ ငဲ့ထားသည်။]

**ဒုဋ္ဌုလ္လံ။** ။" ထိန မိဒ္ဓ, ဆမ္ဘိတတ္တတို့ ငြိမ်သွားအောင် လွန်စွာ ကြိုးစား သဖြင့် ပီတိဖြစ်လာရသည် " ဟု ကြံစည်၍ ကြိုးစားမှု ဝီရိယလျော့ခြင်းကို " ဒုဋ္ဌုလ္လ " ဟု ခေါ်၏၊ " ကာယာလသိယ ( အလသဿ+ဘာဝေါ အာလသိယံ)– ကိုယ်၏ ပျင်းရိသည်၏ အဖြစ်၊ ပျင်းမှုပျင်းရာ " ဟု ဖွင့်သည်၊ ဒုဋ္ဌ–မကောင်းသော ကိုယ်အမှု၌+နိဿိတံ– မှီသော ပျင်းရိမှုတည်း၊ ဒုဋ္ဌုလ္လံ။

**အစ္စာရဒ္ဓဝီရိယ။** ။ထို ဒုဋ္ဌုလ္လ မဖြစ်အောင် အလွန်အကျွံ ကြိုးစားသော အစ္စာ ရဒ္ဓဝီရိယ ဖြစ်ပြန်သောအခါ သမာဓိ ပျက်ပြန်၏။

လျော့သောဝီရိယကို၊ပေ၊အဘိဇပ္ပံ - အလွန် တောင့်တတတ်သော တဏှာကို၊ ၊ပေ၊နာနတ္တသညံ-အထူးထူးသော သဘောရှိသောအာရုံ၌ဖြစ်သောသညာကို၊ပေ ရူပါနံ-ရူပါရုံတို့၏၊ ဝါ-တို့ကို၊ အတိနိဇ္ဈာယိတတ္တံ-အလွန် ရှုးစိုက်စွာရှုအပ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကို၊ ဝါ – အလွန် ရှုးစိုက်စွာရှုခြင်းကို၊ ပဇဟိံ – ပြီ၊ အနုရုဒ္ဓါ – တို့၊ သော အဟံ - သည်၊ အပ္ပမတ္တော အာတာပီ ပဟိတတ္တော (ဟုတွာ) ဝိဟရန္တော-သော်၊ ဩဘာသဉ္စ - အရောင်အလင်းကိုသာ၊ သဉ္ဇာနာမိ-သိတော်မူရ၏ ရူပါနိစ-တို့ကိုကား၊ န ပဿာမိ-မြင်တော်မမူရ၊ ရူပါနိ ဟိ-တို့ကိုသာ၊ ပဿာမိ-၏၊ ဩဘာသံစ-ကိုကား၊ န သဉ္ဇာနာမိ-မသိရ၊ ]

**အတိလီနဝီရိယ**။ ။ဝီရိယ လွန်သောကြောင့် သမာဓိပျက်ရသည် – ဟု ယူဆ၍ ဝီရိယကို အလွန်လျော့ပြန်သောအခါလည်း သမာဓိပျက်ပြန်၏။

**အဘိဇပ္ပါ**။ ။အရောင် အလင်းကို နတ်ပြည်သို့ ဖြန့်လိုက်သော အခါ နတ်တို့ကို မြင်ရ၍ အလွန်ခွဲလမ်းစွာတောင်းတသောတဏှာဖြစ်သဖြင့် သမာဓိပျက်ပြန်၏။ [အဘိ နိဝေသနဝသေန, ဇပ္ပတိ–တောင်းတတတ်၏၊ ဣတိ အဘိဇပ္ပါ။]

**နာနတ္တသညာ**။ ။နတ်တည်းဟူသော ဇာတ်တူ ရူပါရုံတမျိုးတည်းကို ကြည့်နေသောကြောင့် တောင်းတမှုတဏှာ ဖြစ်ရသည် – ဟု ယူဆ၍ တခါတခါ နတ်ပြည်သို့ အရောင်ဖြန့်၍ နတ်အာရုံကို, တခါတခါ လူ့ပြည်၌ အရောင်ဖြန့်၍ လူ့အာရုံကို ပြောင်းလွဲ၍ ကြည့်ရှုသောအခါ အမျိုးမျိုးသော သဘောရှိသော အာရုံ၌ သညာ အမျိုးမျိုး ဖြစ်ပြန်ရကား သမာဓိပျက်ပြန်၏။ [ နာနတ္တေ– အမျိုးမျိုး သဘောရှိသောအာရုံ၌+ ပဝတ္တာ+သညာ နာနတ္တသညာ။]

**အတိနိဇ္ဈာယိတတ္တံ**။ ။ထပ်၍ ကြိုးစားသောအခါ ဩဘာသနှင့် ရူပဒဿနတို့ ပေါ်လာပြန်၏၊ ထိုအခါ"အမျိုးကွဲ ရူပါရုံတွေကို ပြောင်း၍ ပြောင်း၍ ကြည့်နေသောကြောင့် နာနတ္တသညာ ဖြစ်၍ သမာဓိ ပျက်ရသည်၊ ဣဋ္ဌာရုံဖြစ်စေ, အနိဋ္ဌာရုံ ဖြစ်စေ တမျိုးထည်းကိုသာ ကြည့်နေတော့အံ့"ဟု ကြံ၍ တမျိုးထည်းကိုကြည့်နေပြန်ရာ အတိနိဇ္ဈာယိတခေါ်သော အလွန်အမင်းကြည့်ရှုခြင်းသဘောဖြစ်လာ၍ သမာဓိပျက်ပြန်၏။ [အတိဝိယ+နိဇ္ဈာယိတာ–အတိနိဇ္ဈာယိတာ=အလွန် ရှုအပ်သော ရူပါရုံတို့၊ အတိနိဇ္ဈာယိတာနံ+ဘာဝေါ–အတိနိဇ္ဈာယိတတ္တံ။]

**ဩဘာသံ၊ပေ၊သဉ္ဇာနာမိတိ အာဒိ**။ ။ပရိကမ္မဘာဝနာကြောင့် ပေါ်လာသော အရောင်အလင်းကို ဩဘာသဟု ခေါ်၏၊ ထိုအရောင်ကို အကြည့်များနေသောအခါ ရူပါရုံကို မမြင်၊ ရူပါရုံကိုချည်း စိုက်၍ကြည့်သောအခါ အရောင်ကိုပင်မမြင်၊ အာဒိဖြင့် " ကေဝလမ္ပိ ရတ္တိံ, ကေဝလမ္ပိ ဒိဝံ, ကေဝလမ္ပိ ရတ္တိန္ဒိဝံ "စသော ပါဠိတော်ကိုယူ၊ နောက်အခါ၌ ဘုရားရှင်၏ ဒိဗ္ဗစက္ခုသည် ဤ ပြခဲ့သော ဉပက္ကိလေသ တဆယ့်တပါးမှ စင်ကြယ်တော့၏၊ ထို့ကြောင့် ဤနည်း၌"ဝိသုဒ္ဓေန-တဆယ့်တပါးသော ဉပက္ကိလေသ တို့မှ စင်ကြယ်သော"ဟု ပါဠိတော်မှာပေး။

မနုဿူပစာရံ- လူတို့၏ ဥစ္စာဖြစ်သော မြင်လောက်ရာ ရူပါရုံကို၊ အတိက္ကမိတွာ - လွန်၍၊ ရူပဒဿနေန – ရူပါရုံကို မြင်ခြင်းကြောင့်၊ အတိက္ကန္တ မာနုဿကံ-မည်၏၊ ဝါ-တနည်း၊ မာနုဿကံ-လူတို့၏ဥစ္စာဖြစ်သော၊ မံသစက္ခုံ-မံသစက္ခုကို၊ အတိက္ကန္တတ္တာ-လွန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊အတိက္ကန္တမာနုဿကန္တိ- ကံဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ- ၏၊ ဒိဗ္ဗေန- နတ်ပြည်၌ဖြစ်သော ပသာဒစက္ခုနှင့်တူသော၊ [ဝါ–ဒိဗ္ဗဝိဟာရမည်သော ဈာန် ၄ ပါးကြောင့်ရအပ်သော၊ ဝါ-ဒိဗ္ဗဝိဟာရတွင် အထက်ဆုံးစတုတ္ထဈာန်ကိုမှီသော၊ ဝါ-ထွန်းလင်းတောက်ပသော၊ ဝါ- တိရောကုဋ္ဋ အစရှိသောအရပ်သို့ မငြိမကပ်သွားတတ်သော၊] ဝိသုဒ္ဓေန-ဥစ္ဆေဒဒိဋ္ဌိ,နဝသတ္တပါတုဘာဝဒိဋ္ဌိတို့၏စင်ကြယ်ကြောင်းဖြစ်သော၊ ဝါ- တဆဲ့တပါးသော ဥပက္ကိလေသတို့မှစင်ကြယ်သော၊ အတိက္ကန္တ မာနုဿကေန-လူတို့၏ဥစ္စာဖြစ်သော မြင်လောက်ရာရူပါရုံကိုလွန်သော၊ ဝါ-လူတို့၏ဥစ္စာဖြစ်သော မံသစက္ခုကို လွန်သော၊ တေန စက္ခုနာ-ထိုအဘိညာဉ်စက္ခုဖြင့်၊ ( ပဿာမိ စပ်၊ ) သတ္တေ ပဿာမိတိ-ကား၊ မနုဿာ - တို့သည်၊ မံသစက္ခုနာ - ဖြင့်၊ ( ပဿန္တိဝိယ - မြင်ကုန်သကဲ့သို့၊ ဝါ–ကြည့်ကုန် သကဲ့သို့၊ တထာ-တူ၊ ) သတ္တေ-တို့ကို၊ ပဿာမိ-မြင်တော်မူ၏၊ ဝါ–ကြည့်တော်မူ၏၊ ဒက္ခာမိ- မြင်တော်မူ၏၊ ဩလောကေမိ-ကြည့်တော်မူ၏။

စ ဝမာနေ ဥပပဇ္ဇမာနေတိ ဧတ္ထ-၌၊(အမိပ္ပေတာ၌ စပ်၊)စုတိက္ခဏေဝါ-စုတိခဏ၌ရင်း၊ ဥပပတ္တိက္ခဏေ ဝါ-ပဋိသန္ဓေ၏ ခဏ၌ရင်း၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုနာ-ဖြင့်၊ ဒဋ္ဌုံ-ငှါ၊ န သက္ကာ-မတတ်နိုင်၊ ပန – ဆက်၊ ယေ - အကြင် သတ္တာတို့သည်၊

**မနုဿူပစာရံ၊ပေ၊မာနုဿကံ။** ။မနုဿာနံ-တို့၏+ဣဒံ,မာနုဿကံ=လူတို့၏+ဥစ္စာ၊ ထို"လူ့ဥစ္စာ"ဟူသည် ပကတိမျက်စိဖြင့် မြင်လောက်ရာအရပ်တည်း။ [မနုဿူပစာရန္တိ- မနုဿေဟိ ( တို့သည် )+ ဥပစရိတဗ္ဗဋ္ဌာနံ ( ပကာဘ်စက္ခုဖြင့် လှည့်လည်အပ်သော အရပ်တည်း၊) ထိုအရပ်-ဟူသည်လည်း ပကတိစက္ခုဖြင့် ယူနိုင်သော ရူပါရုံတည်း၊ ပကတိယာ စက္ခုဒွါရေန ဂဟေတဗ္ဗံ ဝိသယံ (အာရုံကို) ဣတ် အမိပ္ပါယော၊–ဋီကာ။] မာနုဿကံ – လူတို့၏ဥစ္စာဖြစ်သော မြင်လောက်ရာရူပါရုံကို+အတိက္ကန္တံ–လွန်သောစက္ခုတည်း၊ အတိက္ကန္တမာနုဿကံ - ကျ၊ "လွန်" ဟူသည်လည်း လူတို့မြင်ရိုးမြင်စဉ်အာရုံကိုလွန်၍ တိရောကုဋ္ဋစသည်၌ ရှိသောရူပါရုံကို မြင်နိုင်ခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် "အဘိက္ကမိတွာ ရူပဒဿနေန"ဟု ဖွင့်သည်။ ["မာနုဿကံဝါ" စသော ဒုတိယနည်း၌ "မာနုဿကံ" အရ (ရူပါရုံ) ကိုမကော်ဘဲ (စက္ခုပသာဒ) ကို ကော်ရခြင်းသာ ထူး၏၊ "လူတို့၏ဥစ္စာဖြစ်သော ပသာဒစက္ခုကို လွန်သော"ဟု ပေး။]

**စုတိက္ခဏေ၊ပေ၊အမိပ္ပေတာ။** ။စုတိခဏ, ပဋိသန္ဓေခဏဟူသည် စိတ္တက္ခဏ တချက်မျှဖြစ်၍ အလွန်မြန်သောကြောင့် ထိုအခိုက်ရှိ ရူပါရုံကို ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်ဖြင့်

**အာ**သန္နစုတိကာ-နီးသော စုတေခြင်းရှိကုန်၏၊ ဥဒါနိ-၌၊ စဝိဿန္တိ - စုတေ ကုန်တော့လတ့်၊ တေ - ထို စုတေခါနီး သတ္တ**ာ**တို့ကို၊ **စဝမာ**နာတိ- နတို့ဟူ၍၊ (အမိပ္ပေတာ-အပ်ကုန်၏၊) စ—ကား၊ ယေ-အကြင် သတ္တာတို့သည်၊ ဂဟိတ ပဋိသန္ဓိကာ-ယူအပ်ပြီးသော**ာ**ပဋိသန္ဓေရှိကုန်၏၊ ဝါ-တနည်း၊ သမ္ဘတိနိဗ္ဗတ္တာ- ဖြစ်ပြီး၍ယခုတခဏသာရှိကုန်၏၊ ဝါ-ဖြစ်ပြီးခါစတို့တည်း၊ တေ-ထိုပဋိသန္ဓေ နေပြီးခါစ ဖြစ်ပြီးခါစ သတ္တာတို့ကို၊ ဥပ ပဇ္ဇမာနာတိ-မာနတို့ဟူ၍၊ အမိပ္ပေ တာ - န်၏၊ ဝေရှပေ - န်သော၊ စဝမာနေ- စုတေခါနီး ဖြစ်ကုန်သော၊ တေ (သတ္တေ)-တို့ကိုငင်း၊ ဥပပဇ္ဇမာနေ-ပဋိသန္ဓေနေပြီးခါစ ဖြစ်ပြီးခါစ ဖြစ်ကုန် သော၊ တေ(သတ္တေ)စ—တို့ကိုငင်း၊ ပဿာမိ-၏၊ ဣတိ ဒဿေတိ- ၏။

ဟီနေတိ - ကား၊ မောဟနိဿန္ဒ ယုတ္တတ္တာ- မောဟ၏ အကျိုးဆက်နှင့် ယှဉ်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ဟီနာနံ-ယုတ်ညံ့ကုန်သော၊ဇာတိကုလဘောဂါ ဒီနံ- ဇာတ်, အမျိုး , စည်းစိမ် အစရှိသည်တို့၏၊ ဝသေန - အစွမ်းအ**ာ**းဖြင့်၊ ဟီဠိတေ - ရှုတ်ချအပ်ကုန်သော၊ ဩဟီဠိတေ - အထူးသဖြင့် ရှုတ်ချအပ်ကုန် သော၊ ဥည**ာ**တေ-အယုတ်အားဖြင့် သိအပ်ကုန်သော၊ အဝညာတေ—အထူး သဖြင့် အယုတ် အားဖြင့် သိအပ်ကုန်သော၊ ပဏီတေတိ - ကား၊ အဒေါသ

သော်မှလည်း မမြင်နိုင်၊မှန်၏—ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်မဖြစ်မီ မနောဒွါရာဝဇ္ဇန်း,ပရိကမ်, ဥပစာ, အနုလုံ, ဂေါတြဘုတို့ ဖြစ်ရသေး၏၊ စုတိစိတ္တက္ခဏ, ပဋိသန္ဓေခဏ၌ ထိုစိတ် ၅ မျိုးနှင့် အဘိညာဉ်ဖြစ်ချိန် မရ၊ ထို့ကြောင့် စဝမာနေဖြင့် စုတေခါနီး သတ္တာကို, ဥပပဇ္ဇမာနေဖြင့် ပဋိသန္ဓေ နေပြီးစ ဖြစ်ပြီးစ သတ္တာကို သမီပူပစာရအားဖြင့် ယူပါ။ [ဂဟိတပဋိသန္ဓိကာဖြင့် ဂန္ဓဗ္ဗသေယျကသတ္တာတို့ကို , သမ္ဘတိနိဗ္ဗတ္တာဖြင့် သံသေဒဇ- ဩပပါတိက သတ္တာတို့ကို ပြသည်—ဟု ခွဲ၊ သမ္ဘတိဇာတာကဲ့သို့ " သမ္ဘတိ+နိဗ္ဗတ္တာနံ ယေသံ တိ သမ္ဘတိနိဗ္ဗတ္တာ"ဟု သမာသ်ကြံ။]

**မှတ်ချက်။** ။ဒိဗ္ဗစက္ခုသည် ရူပါရုံကိုသာ အာရုံပြုနိုင်၏၊ သတ္တာပညတ်ကို အာရုံ မပြုနိုင်၊ ထို့ကြောင့် ရူပါရုံမြင်ခြင်းကို ပုဂ္ဂလာဓိဋ္ဌာန်နည်းအားဖြင့် "သတ္တေ ပဿာမိ— သတ္တာတို့ကို မြင်တော်မူ၏"ဟု ဟောတော်မူသည်။[ရူပဒဿနမေတ္တ သတ္တဒဿနန္တိ စဝမာနေတိအာဒိနာ ပုဂ္ဂလာဓိဋ္ဌာနေန ဝုတ္တံ ဟောတိ၊—ဝိမတိ။]

***ဟီနေ။*** ။ [ဟာဓာတ် , တပစ္စည်း , တ ကို န ပြု , အာကို ဤပြု။ ] ဟာယန္တိ— ယုတ်လျော့ကုန်၏၊ ဣတိ ဟီနာ၊ ပဏီတသတ္တာတို့အောက် (ဇာတိကုလဘောဂ စသည် ဖြင့်) ယုတ်လျော့နေသူများ ဖြစ်၍ ကဲ့ရဲ့ရှုတ်ချခံရ—အထင်သေး အမြင်သေး ခံရသော သတ္တာများတည်း၊ ထိုသို့ဖြစ်ရခြင်းမှာလည်း ရှေးဘဝက မောဟ၏အကျိုးဆက်တည်း၊ ထို့ကြောင့် "မောဟနိဿန္ဒ၊ ပေ၊ အဝညာတေ"ဟု အမိပ္ပါယ်ထုတ်ဖွင့်သည်၊ [မောဟူပ နိဿယံ—ကံ မပြုမီက မောဟလျှင် မှီရာရှိသော၊ ကမ္မံ—ကုသိုလ်ကံသည်၊ နိဟီနံ-ယုတ် ညံ့သည်၊ နိဟီနဖလံ-ယုတ်ညံ့သော အကျိုးရှိသည်၊ ဟောတီတိ အာဟ-မောဟနိဿန္ဒ

နိဿန္ဒယုတ္တတ္တာ-ကြောင့်၊ တမ္ဗပရိတော-ထိုဟိနန၏ ပြောင်းပြန်ဖြစ်ကုန်သော၊ သုဝဏ္ဏောတိ- ကား၊ အဒေါသနိဿန္ဒ ယုတ္တတ္တာ- ကြောင့်၊ ဣဋ္ဌကန္တမနာပ ဝဏ္ဏယုတ္တော- အလိုရှိအပ်, နှစ်သက်အပ်, မြတ်နိုးအပ်သော အဆင်းနှင့် ယှဉ် ကုန်သော၊ဒုဗ္ဗဏ္ဏောတိ-ကား၊ဒေါသနိဿန္ဒယုတ္တတ္တာ-ကြောင့်၊ အနိဋ္ဌာကန္တ အမနာပဝဏ္ဏယုတ္တော - အလို မရှိအပ်, မနှစ်သက်အပ် , မမြတ်နိုး အပ်သော အဆင်းနှင့်ယှဉ်ကုန်သော၊အဘိရူပေ-အလွန်လှသောပုံသဏ္ဌာန်ရှိကုန်သော၊ ဝါ - အချိုးကျ၍ လှကုန်သော၊ ဝိရူပေ-ဖေါက်ပြန်သော အဆင်းရှိကုန်သော၊ ဝါ-အရုပ်ဆိုးကုန်သော၊ ဣတိပိ အတ္ထော- သည်လည်း၊ (ဟောတိ)။

သုဂတေတိ-ကား၊သုဂတိဂတေ-ကောင်းသောဂတိသို့ရောက်ကုန်သော၊ ဝါ- တနည်း၊ အလောဘ နိဿန္ဒယုတ္တာ-ကြောင့်၊ အဍ္ဎေ-ကြွယ်ဝကုန်သော၊ မဟဒ္ဓနေ – များသော ဥစ္စာရှိကုန်သော၊ ဒုဂ္ဂတေတိ - ကား၊ ဒုဂ္ဂတိဂတေ- မကောင်းသော ဂတိသို့ရောက်ကုန်သော၊ ဝါ-တနည်း၊ လောဘနိဿန္ဒ ယုတ္တာ-ကြောင့်၊ ဒလိဒ္ဒေ - ဆင်းရဲကုန်သော၊ အပ္ပန္နပါနေ - နည်းသော အစား

ယုတ္တတ္တာတိ၊ ဟီနံဋ္ဌိတေတိ—ဂရဟိတေ၊ ဩဟီနံဋ္ဌိတေတိ ဝိသေသတော ဂရဟိတေ၊ဥညာ တေတိ လာမကဘာဝေန+ဉာတေ၊ အဝညာတေတိ ဝိသေသတော လာမကဘာဝေန ဉာတေ၊—ဋီကာ။ ]

ပဏီတေ။ ။ပ ပုဗ္ဗ နီဓာတ်,တ၊ သဏ္ဍာတ၌"မြဲ"ဟု ရှိသော ရ် နောက် ဖြစ်၍ နကို ဏပြု၊ ပကဋ္ဌ-မြင့်မြတ်သူ၏ အဖြစ်သို့+နီတာ–ဆောင်အပ်သူတို့တည်း၊ ပဏီတာ-တို့၊ ကုသိုလ်ကံပြုစဉ်က အမောဟ (ဉာဏ်) ပါလာ၍ ထိုအကျိုးဆက်ကြောင့် ဇာတိစသည် အထက်တန်းကျသူများတည်း။

သုဝဏ္ဏေ။ ။ "ဣဋ္ဌကန္တမနာပ " ဖြင့် သု၏ အနက်ကို၊ ဝဏ္ဏယုတ္တေ၌ ယုတ္တဖြင့် ဗဟုဗ္ဗိဟိသမာသ်ကို ပြ၏၊ သုန္ဒရော+ ဝဏ္ဏော ယေသန္တိ သုဝဏ္ဏာ၊ ထိုသို့ အဆင်းလှ ခြင်းသည် ဒေါသကင်းသော ကုသိုလ်၏အကျိုးဆက် ဟု သိစေလို၍"အဒေါသနိဿန္ဒ ယုတ္တတ္တာ"ဟု မိန့်၊ ဒုဗ္ဗဏ္ဏေ၌"ဒုဋ္ဌု+ ဝဏ္ဏော ယေသံ"ဟု ပြု။

အဘိရူပေ,ဝိရူပေ။ ။သုဝဏ္ဏ,ဒုဗ္ဗဏ္ဏ၏ တနည်းအဖွင့်တည်း၊ ရူပသဒ္ဒါသည် ပုံသဏ္ဌာန် အနက်ဟော၊ ဤနည်း၌ ဝဏ္ဏသဒ္ဒါလည်း အဆင်းဟော မဟုတ်။ [ ဣဒံ သဏ္ဌာနဝသေန ဝုတ္တံ၊ သဏ္ဌာနဝစနောပိ ဟိ ဝဏ္ဏသဒ္ဒေါ ဟောတိ။]

သုဂတေ, ဒုဂ္ဂတေ။ ။သု သဒ္ဒါသည် သုန္ဒရအနက်ဟော၊ သုန္ဒရံ—ကောင်းသော ဂတိသို့ + ဂတာ – သုဂတာ၊ ဒုက္ခံ (ကိစ္ဆံ) – ဆင်းရဲသောဂတိသို့+ ဂတာ ဒုဂ္ဂတာ၊ "အလောဘနိဿန္ဒ၊ပေ၊မဟဒ္ဓနေ"ဖြင့် "သုခံ + ဂတာ သုဂတာ-ချမ်းသာသို့ရောက်သူ တို့"ဟု ပြ၏၊ "လောဘနိဿန္ဒ၊ပေ၊အပ္ပန္နပါနေ"ဖြင့် "ဒုက္ခံ—ဆင်းရဲသို့+ ဂတာ—ဒုဂ္ဂ တာ" ဟု ပြ၏၊ အလောဘဓာတ်ခံရှိသူတို့သည် "ဝဒညူ—တောင်းရမ်းသောစကားကို အလိုက်သိတတ်ကြကုန်၏၊ ဝိတမစ္ဆရာ-ကင်းသောဝန်တိုခြင်း ရှိကြကုန်၏၊ ထို့ကြောင့်

အသောက် ရှိကုန်သော၊ ယထာ ကမ္မုပဂေတိ–ကား၊ ယံယံ ကမ္မံ - အကြင် အကြင်ကံကို၊ ဥပစိတံ-ဆည်းပူးအပ်ပြီ၊ တေန တေန-ထိုထိုကံကြောင့်၊ ဥပဂတေ - ကပ်ရောက်ကုန်သော၊ တတ္ထ- ထိုပုဒ်တို့တွင်၊ ပုရိမေဟိ - ရှေးဖြစ်ကုန်သော၊ စဝမာနေတိ အာဒီဟိ-စဝမာနေအစရှိသောပုဒ်တို့ဖြင့်၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုကိစ္စံ-ကို၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ပန-ကား၊ ဇာမိနာ ပဒေန-ဤယထာကမ္မုပဂေဟူသောပုဒ်ဖြင့်၊ ယထာကမ္မုပဂဉာဏကိစ္စံ - ယထာကမ္မုပဂဉာဏ်၏ ကိစ္စကို၊ ( ဝုတ္တံ။)

စ–ဆက်၊ အယံ- ဤဆိုအပ်လတ့်ကား၊ တဿဉာဏဿ- ထိုယထာကမ္မုပဂဉာဏ်၏၊ ဥပ္ပတ္တိက္ကမော-ဖြစ်စဉ်တည်း၊ သော- ထိုဒိဗ္ဗစက္ခုတန်ခိုးရှင်သည်၊ ဟေဋ္ဌာ-၌၊ နိရယာဘိမုခံ-ငရဲသို့ရှေးရှု၊ အာလောကံ-ကို၊ ဝဍ္ဎေတွာ-တိုးပွားစေ၍၊ မဟန္တံ–ကြီးစွာသော၊ ဒုက္ခံ-ဆင်းရဲကို၊ အနုဘဝမာနေ-ခံစားနေကုန်

ရောက်ရာဘဝ၌ ကြွယ်ဝချမ်းသာကြ၏၊ လောဘစာတ်ခံရှိသူတို့ကား“လုဒ္ဓါ–လောဘကြီးကြ၏၊ မစ္ဆရိနော–ဝန်တိုခြင်းရှိကြ၏၊ ထို့ကြောင့် ရောက်ရာဘဝ၌ ဥစ္စာမဲ့မွဲ ဆင်းရဲကြလေသည်။ [ အဓော၌ အာပုဗ္ဗ ဓမ္မာတ် က ပစ္စည်း၊ က် အနုဗန်ချေ, ဇ်လာ၍ “ အဓ္ဓော ”ဟု ဖြစ်ပြီးမှ ပိသောဒရာဒိဂိုဏ်းဖြစ်၍ ဇ္ဈကို ခုပြု၊ “ အဓ္ဓယန္တိ–လွန်စွာ သိတတ် စဉ်းစားကြံစည်တတ်ကုန်၏၊ ဣတိ အခုာ”ဟု ပြု၊ သက္ကတ၌“အာဓျ”ဟု ရှိ၏၊ ဒလိဒ္ဒန္တိ–ဆင်းရဲသို့ ရောက်တတ်ကုန်၏၊ ဣတိ ဒလိဒ္ဒါ–ဆင်းရဲသူတို့၊ ဒလိဒ္ဒ-ဒုဂ္ဂတေ” ဟူသောဓာတ်၊ အ ပစ္စည်း။]

**ယထာ ကမ္မုပဂေ။** ။ယံယံ+ကမ္မံ ယထာကမ္မံ-အကြင် အကြင် (ဆည်းပူးအပ်သော) ကံ၊ ဥပဂစ္ဆန္တီတိ ဥပဂါ (ဥပ+ ဂမု+ကွိ)၊ ယထာကမ္မံ – အကြင် အကြင် ဆည်းပူးအပ်သောကံကြောင့်+ဥပဂါ-ထိုထိုဘဝသို့ ကပ်ရောက်ရသူတို့တည်း၊ ယထာကမ္မုပဂါ – တို့။ [အခွင့်သာလျှင် အကျိုးပေးလောက်အောင် များသောကံကို “ဥပစိတ–ဆည်းပူးအပ်သောကံ” ဟု ခေါ်သည်။]

**စဝမာနေတိ အာဒီဟိ ၊ပေ၊ ဝုတ္တံ။** ။စဝမာန သတ္တာ စသည်တို့ကား အာရုံ (ဝိသယ) တည်း၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုကား အာရုံရှိသော (ဝိသယီ) တည်း၊ ထိုစဝမာန စသည်ဖြင့် ဝိသယတို့ကို တိုက်ရိုက်ပြလိုက်လျှင် ဝိသယီ၏ကိစ္စဗျာပါရကိုလည်း ကာရဏူပစာရအားဖြင့် ပြပြီးဖြစ်တော့၏၊ ထို့ကြောင့်“စဝမာနေတိအာဒီဟိ ဒိဗ္ဗစက္ခုကိစ္စံ ဝုတ္တံ”ဟု မိန့်သည်။ [ စဝမာနေတိအာဒီဟိ၌ စသဒ္ဒါကြေသည် - ဟု ဋီကာဆို၏၊ ရှေ့၌ဖြစ်သော “ ဒိဗ္ဗေန စက္ခုနာ၊ ပေ ၊ သတ္တေ ပဿာမိ ”ဖြင့်ရင်း , ဤ “စဝမာနေ”အစရှိသည်တို့ဖြင့်ရင်း ဒိဗ္ဗစက္ခုကိစ္စကို ဟောတော်မူအပ်ပြီ–ဟု ဆိုလိုသည်။]

**ဣမိနာ ပန ပဒေန။** ။ဤ၌ ပုဒ်ဆိုသော်လည်း တပုဒ်ထည်းမက “ယထာကမ္မုပဂေ သတ္တေ ပဇာနာမိ”ဟူသော ဝါကျတည်း၊ ထို့ကြောင့်“ပဇ္ဇတိ ဉာယတိ အတ္ထော ဣမိနာတိ ပဒံ”ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၍ ဝါကျကိုအရကောက်ပါ၊ (သာရတ္ထ၊) တနည်း–လိုရင်းဖြစ်သော“ယထာကမ္မုပဂေ”ကို ရည်ရွယ်၍ “ဣမိနာပဒေန”ဟု မိန့်သည်၊–ဝိမတိ။

သော၊ နေရယိကသတ္တေ-ငရဲသားသတ္တဝါတို့ကို၊ ပဿတိ-မြင်ရ၏၊ တံဒဿနံ-ထိုမြင်ရခြင်းသည်၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုကိစ္စမေဝ - ဒိဗ္ဗစက္ခု၏ ကိစ္စသာတည်း၊ သော-ထို ဒိဗ္ဗစက္ခု တန်ခိုးရှင်သည်၊ ဧဝံ- သို့၊ မနသိကရောတိ- နှလုံးသွင်း၏၊(ကိံ)၊ ကိံ ကမ္မံ-အဘယ်ကံကို၊ ကတွာ-၍၊ ဣမေသတ္တာ - တို့သည်၊ ဧတံ ဒုက္ခံ-ကို၊ အနုဘဝန္တိ နခေါ-ခံစားကြရပါကုန်လိမ့်မည်နည်း၊ ဣတိ-သို့၊ (မနသိကရောတိ- ၏၊) [ ပါဒကဈာန်၊ ပေ၊ ပရိကမ္မဝသေန မနသိကရောတိ၊– သာရတ္ထ။]

အထ-ထိုသို့ နှလုံးသွင်းရာအခါ၌၊ အဿ-ထို တန်ခိုးရှင်၏၊ ဣဒံနာမ-ဤမည်သောကံကို၊ ကတွာ - ၍ ( ဣမေသတ္တာ ဧတံဒုက္ခံ, အနုဘဝန္တိ - န်၏၊ ) ဣတိ-သို့၊ တံ ကမ္မာရမဏံ-ထို ကံဟူသော အာရုံရှိသော၊ ဉာဏံ-ဉာဏ်သည်၊ (ယထာကမ္မုပဂဉာဏ်သည်၊) ဥပ္ပဇ္ဇတိ- ၏၊ တထာ– ပါး၊ ဥပရိ-အထက်၌၊ ဒေဝလောကာဘိမုခံ-နတ်ပြည်သို့ ရှေးရှု၊ အာလောကံ ဝဍ္ဎေတွာ, နန္ဒနဝန မိဿကဝန ဖာရုသကဝနာဒီသု-နန္ဒနဥယျာဉ်, မိဿကဥယျာဉ်, ဖာရုသက ဥယျာဉ် အစရှိသည်တို့၌၊ ( အာဒိဖြင့် စိတ္တလတာဥယျာဉ် စသည်ကိုယူ၊ ) မဟာသမ္ပတ္တိံ - ကြီးစွာသော စည်းစိမ်ကို၊ အနုဘဝမာနေ သတ္တေ ပဿတိ၊ တမ္ပိဒဿနံ- သည်လည်း၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုကိစ္စမေဝ- တည်း၊ ပေ၊ ဧတံ သမ္ပတ္တိံ–၍ စည်းစိမ်ကို၊ပေ၊ဥပ္ပဇ္ဇတိ-၏၊ [အယံ - ဤသည်ကား၊ ဥင္တတ္တိက္ကမော - တည်း၊ ဤသို့ ပြန်အုပ်ပါ။]ဣဒံ-ဤဉာဏ်သည်၊ ယထာကမ္မုပဂဉာဏံနာမ- ပဂဉာဏ် မည်၏၊ [ ငရဲနှင့် နတ်ပြည်ကိုသာ ပြခြင်းသည် နိဒဿနနည်းတည်း၊ အခြား ဂတိ၌ရှိသော သတ္တဝါတို့ကိုလည်း ဒိဗ္ဗစက္ခုဖြင့်မြင်နိုင်သည်သာ၊ ....နေရယိက ဒေဝဂ္ဂဟဏဉ္စ နိဒဿနမတ္တံ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ - ဋီကာ။] ဣမဿ - ဤ ယထာကမ္မုပဂ ဉာဏ်၏၊ ဝိသုံ-ဒိဗ္ဗစက္ခုမှသီးခြား၊ ပရိကမ္မံနာမ - မည်သည်၊ နတ္ထိ၊ စ–ဆက်၊

**မဟာ နံ့ ဒုက္ခံ၊ ပေ၊ ပဿာမိ။** ။ဒိဗ္ဗစက္ခုအဘိညာဉ်ဖြင့် ငရဲသားတို့၏ ရူပါရုံကို မြင်၏၊ ထို့နောက် ဒုက္ခခံစားနေရပုံကို ရိုးရိုး မနောဒွါရိကဝိထိဖြင့် သိ၏၊ ထိုအခါ သူတို့၏ရှေးကံကို သိလိုလျှင် ဘုရားရှင်မှာ ယထာကမ္မုပဂ အဘိညာဉ်ဖြင့် ချက်ခြင်း သိတော်မူ၏၊ အခြားပုဂ္ဂိုလ်တို့ကား ပါဒကဈာနဝိထိ ဖြစ်ရသေး၏၊ ထိုပါဒကဈာန်မှ ထ၍ ထိုကံကိုအာရုံပြုသော ယထာကမ္မုပဂအဘိညာဝိထိဖြစ်၏၊ ထိုဝိထိ၌ မနောဒွါရာ ဝဇ္ဇန်း, ပရိကံ, ဥပစာ, အနုလုံ, ဂေါတြဘုတို့၏ နောက်၌ (အပ္ပနာဇော) စော၏၊ ထိုဇော၌ပါသောဉာဏ်ကို "ယထာကမ္မုပဂဉာဏ် "ဟု ခေါ်သည်။

**ဝိသုံ ပရိကမ္မံ နတ္ထိ။** ။"သီးခြား ပရိကမ် မရှိ "ဟူသည် ဒိဗ္ဗစက္ခုစသော အဘိ ညာဉ်တို့၌ ထိုအဘိညာဉ်ရအောင် ပရိကံ ( အဘန်ဘန် အားထုတ်မှု ) ရှိရသကဲ့သို့ ယထာကမ္မုပဂဉာဏ် ရဖို့ရန် ပရိကမ် သီးခြား အားမထုတ်ရတော့ ဟု ဆိုလိုသည်၊

ဇာမသာ–၍ ယထာကမ္မုပဂဉာဏ်၏၊ (ဝိသုံ ပရိကမ္မံ, နတ္ထိ) ယထာ- ကဲ့သို့၊ ဇဝံ, အနာဂတံသဉာဏသာသပိ - ၏လည်း၊ ( ဝိသုံ ပရိကမ္မံ နတ္ထိ၊) ဟိ- မှန်၏၊ (တနည်း) ဟိ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ ဇာမာနိ – ၍ ယထာကမ္မုပဂဉာဏ်, အနာဂတံသဉာဏ် တို့သည်၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုပါဒကာနေဝ - ဒိဗ္ဗစက္ခုသာလျှင် အခြေခံရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတ္ဝာ ) ဒိဗ္ဗစက္ခုနာ - နှင့်၊ သဟေဝ - လျှင်၊ ဇာဇ္ဈန္တိ- ပြည့်စုံကုန်၏။ [“တသ္မာ ဝိသုံ ပရိကမ္မံ နတ္ထိ”ဟု ဟိယသ္မာအလိုက် ပြန်အုပ်။]

ကာယဒုစ္စရိတေနာတိအာဒိသု(အတ္ထော ဇဝံဝေဒိတဗ္ဗော၊)ဒုဋ္ဌု-မကောင်းသဖြင့်၊ စရိတံ - ကျင့်အပ်သော အကျင့်တည်း၊ ဒုစ္စရိတံ - ကျင့်၊ ဝါ– တနည်း၊ ကိလေသပူတိကတ္တာ–ကိလေသာဖြင့် ပုတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒုဋ္ဌံ - ပျက်သော၊ စရိတံ- တည်း၊ ဇာတိ , ဒုစ္စရိတံ - မည်၏၊ ကာယေန-ကာယဒွါရဖြင့်၊ ဒုစ္စရိတံ-မကောင်းသဖြင့် ကျင့်အပ်သော အကျင့်တည်း၊ကာယဒုစ္စရိတံ-ကျင့်၊ ဝါ, ကာယတော-ကြောင့်၊ ဥပ္ပန္နံ- သော၊ ဒုစ္စရိတံ–ပျက်သော အကျင့်တည်း၊

ပါဒကဈာနဝီထိ, ပရိကမ္မဝီထိဟူသော ရှေ့အဘို့ ပရိကမ္မဝီထိကား ရှိရသေးသည်သာ၊ မှန်၏-“ကိံ နုခေါကမ္မံ ကတ္ဝာ ဣမေ သတ္တာ ဇတံ ဒုက္ခံ အနုဘဝန္တိ”ဟုနှလုံးသွင်းသော စိတ်သည် ပရိကမ္မဝီထိစိတ် ပင်တည်း၊ ထိုစိတ် မဖြစ်မီလည်း ပါဒကဈာန ( စတုတ္ထဈာန) ဝီထိဖြစ်ရသေးသည်၊ ထို့ကြောင့် ယထာကမ္မုဂ အဘိညာဝီထိ ဖြစ်ဘို့ရန် (ဒိဗ္ဗစက္ခုဖြင့် သတ္တဝါတို့ကိုမြင်၍,ရိုးရိုး ကာမာဝစရစိတ်ဖြင့် ဒုက္ခရောက်ပုံကို သိပြီးနောက်, “ပါဒကဈာန်, ပရိကမ်နှင့် , တဘန်ပါဒက , ဖြစ်ပြီးမှ , ကျတုံအဘိညာ ” နှင့်အညီ ၁–ပါဒကဈာနဝီထိ, ၂–ပရိကမ်ပြုသောဝီထိ, ၃– ပါဒကဈာနဝီထိ, ၄ – ထို့နောက် ယထာကမ္မုပဂအဘိညာဝီထိ, ၍အစဉ်အတိုင်း ဖြစ်ရမည်သာ။

**အနာဂတံသဉာဏသာသပိ။** ။ဒိဗ္ဗစက္ခု အဘိညာဉ်ဖြင့် ရူပါရုံကိုမြင်ပြီး၍ သတ္တဝါ အကောင်အထည်ကို ကာမာဝစရစိတ်ဖြင့် သိပြီးနောက်, ထိုသူ၏ အနာဂတ်အဘို့ကို ( အကြောင်းအရာကို ) သိလိုလျှင် ပါဒကဈာန် ဝင်စား၏၊ ထိုဈာန်မှ ထသောအခါ ထိုသူ၏ အနာဂတ်ဖြစ်မည့် အကြောင်းအရာကို နှလုံးသွင်းသော ပရိကမ္မဝီထိ ဖြစ်၏၊ ထို့နောက် ပါဒကဈာနဝီထိဖြစ်၏၊ ထိုနောက်မှ အနာဂတ်အကြောင်းအရာကိုသိသော အနာဂတံသဉာဏ အဘိညာဝီထိ ဖြစ်သည်၊ ထိုဝီထိ၌ယှဉ်သော ဉာဏ်ကို အနာဂတံသဉာဏ်ဟု ခေါ်၏။ [အနာဂတ+အံသ-အနာဂတ်အဘို့ အစုကို+ ဉာဏ-သိတတ်သော ဉာဏ်။] အပိဖြင့် ယထာကမ္မုပဂဉာဏ်မှာသာ သီးခြားပရိကမ်မရှိသည် မဟုတ်သေး၊ ၍ဉာဏ်မှာလည်း သီးခြားပရိကမ် မရှိဟု ပေါင်းသည်။

**ကာယဒုစ္စရိတေနာတိ ။** ။ ဒုစ္စရိတံ၌ ဒုသည် ဒုဋ္ဌုအနက်ဟော ဟု သိစေလို၍ “ဒုဋ္ဌု +စရိတံ ဒုစ္စရိတံ” ဟု မိန့်၊ ဒုဋ္ဌံဝါဖြင့် ဒုသဒ္ဒါသည် ဒုဋ္ဌ( ပျက်စီး ) အနက်ဟော၊ ထိုသို့ ပျက်စီးခြင်းမှာလည်း ကိလေသာတို့ဖြင့် ပုတ်နေသောကြောင့်တည်း ဟု ပြလို၍ “ဒုဋ္ဌံဝါ ကိလေသပူတိကတ္တာ”ဟု မိန့်၊ [“ဒုဋ္ဌုံဝါ”ဟု ရှိသည်ကား မကောင်း။]ဒုဋ္ဌု +

ဣတိ, ကာယဒုစ္စရိတံ- ရိုက်မည်၏၊ ဝေံ- ဤ့အတူ၊ ဝစီမနော ဒုစ္စရိတာနိပိ- ဝစီဒုစရိုက်, မနောဒုစရိုက် တို့ကိုလည်း၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗာနိ - ကုန်၏၊ သမန္နာဂတာတိ- ကား၊ သမင်္ဂီဘူတာ-ပြည့်စုံသည်ဖြစ်၍ဖြစ်ကုန်၏၊ အရိယာနံ ဥပဝါဒကာတိ- ကား၊ ဗုဒ္ဓ ပစ္စေကဗုဒ္ဓ ဗုဒ္ဓသာဝကာနံ—ဘုရား, ပစ္စေကဗုဒ္ဓါ , ဗုဒ္ဓသာဝက ဖြစ်ကုန်သော၊ အရိယာနံ—အရိယာတို့ကို၊ ( ဥပဝါဒကာဒ္ဓ စပ်၊ ) ဝါ—တို့၏၊ ( အနတ္ထကာမ စပ်၊ ) အန္တမသော- အားဖြင့်၊ ဂိဟိသောတာပန္နာနမ္ပိ - လူ ဝတ်ကြောင် သောတာပန်တို့ကိုလည်း၊ ဝါ - တို့၏လည်း၊ အနတ္ထကာမာ- စီးပွားမဲ့ကိုလိုလားကုန်သည်၊ ဟုတွာ, အန္တိမဝတ္ထုနာဝါ-အဆုံး၌ဖြစ်သော ပါရာဇိကဝတ္ထုဖြင့် သော်ငင်း၊ ဂုဏပရိဓံသနေနဝါ - ဈာန်စသော ဂုဏ်ကို ဖျက်ဆီးခြင်းဖြင့်သော်ငင်း၊ ဥပဝါဒကာ—စွပ်စွဲတတ်ကုန်၏၊ အက္ကောသကာ- ဆဲရေးတတ်ကုန်၏၊ ဂရဟကာ-ကဲ့ရဲ့တတ်ကုန်၏၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

တတ္ထ-ထိုအန္တိမဝတ္ထု, ဂုဏပရိဓံသနတို့တွင်၊ ဣမေသံ-ဤသူတို့၏၊ သမဏ ဓမ္မော- ရဟန်းတရားသည်၊ နတ္ထိ၊ ဧတေ-တို့သည်၊ အဿမဏာ-ရဟန်းစစ် မဟုတ်ကုန်၊ ဣတိ-သို့၊ ဝဒန္တော - ပြောဆိုသူသည်၊ အန္တိမဝတ္ထုနာ - ဖြင့်၊ ဥပဝဒတိ-စွပ်စွဲသည် မည်၏၊ ဝါ-စွပ်ဘွဲရာရောက်၏၊ ဣမေသံ-တို့၏၊ ဈာနံဝါ- ဈာန်သည်ငင်း၊ ဝိမောက္ခောဝါ, မဂ္ဂေါဝါ, ဖလံဝါ နတ္ထိ၊ ဣတိ ဝဒန္တော, ဂုဏပရိဓံသနေန-ဖြင့်၊ ဥပဝဒတိ၊ ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ သောစ - ထို စွပ်စွဲသူ သည်လည်း၊ ဇာနံ-အရိယာ့ အဖြစ်ကို သိသည်၊ [အရိယဘာဝံ ဇာနန္တော၊] ဟုတွာ ဝါ-သော်လည်း၊ ဥပဝဒေယျ-စွပ်စွဲရာ၏၊ အဇာနံ-အရိယာ့ အဖြစ်ကို မသိသည်၊ ဟုတွာ ဝါ ( ဥပဝဒေယျ၊ ) ဥဘယထာပိ - အားဖြင့်လည်း၊ အရိ ယူပဝါဒေါဝ-အရိယာကို စွပ်စွဲခြင်းသည်သာ၊ ဟောတိ-၏၊ အတိဘာရိယံ-

စရိတံကို ကာယေနနှင့် တွဲ၊ “ ကာယဒုစ္စရိတံ— ကာယဒွါရဖြင့် မကောင်းသဖြင့် ကျင့် အပ်သောအကျင့် ”ဟုပေး၊ ဒုဋ္ဌံ + စရိတံကို ကာယတော ဥပ္ပန္နနှင့်တွဲ၍ ဥပ္ပန္နအလယ် ပုဒ်ကြေ ဟု ကြံ၊ “ကာယဒွါရကြောင့်+ဖြစ်သော+ပျက်သော အကျင့် ”ဟု ပေး။

သမင်္ဂီဘူတာ။ ။သံ+အနု+အာပုဗ္ဗ ဂမုဓာတ်ဖြင့်ပြီးသော သမန္နာဂတာပုဒ်သည် “အညီအညွတ်+လျော်စွာ+ရောက်”ဟူသော အနက်ကို မဟော၊ “ပြည့်စုံ” ဟူသော အနက်ကို ဟောၔ—ဟု သိစေလို၍ “ သမင်္ဂီဘူတာ ” ဟု ဖွင့်သည်၊ အဝိဋ္ဌာ တဏှာ ဟူသော အကြောင်းရင်း အမြစ်ကို မဖြတ်နိုင်သေးသမျှ ထိုပုဂ္ဂိုလ်သန္တာန်၌ အကျိုးပေး နိုင်သော ကမ္မသတ္တိမကင်းသေးသည်ကို“ထို ဒုစရိုက်နှင့် ပြည့်စုံနေသည်”ဟု ဆိုသည်။ [သမံ—အညီအမျှ တကွ+ဂစ္ဆန္တိ ပဝတ္တန္တိ—ဖြစ်ကုန်၏၊ ဣတိ သမင်္ဂါ၊ သမင်္ဂါ ဟုတွာ ဘူတာ သမင်္ဂီဘူတာ — ကာယဒုစရိုက်စသည်တို့နှင့် အညီအမျှ တကွဖြစ်၍ ဖြစ်သူတို့ (သဒ္ဒတ္ထ)၊ ပြည့်စုံသူတို့ (သဘာဝတ္ထ)။]

အလွန်ထမ်းဆောင်ထိုက်သော၊ ဝါ—အလွန် ဝန်လေးသော၊ ကမ္မံ - သည်၊ (ဟုတွာ) သဂ္ဂါဝရဏံ - နတ်ပြည်ကို တားမြစ်နိုင်သည်ဇင်း၊ မဂ္ဂါဝရဏဉ္စ- မဂ်ကို တားမြစ်နိုင်သည်ဇင်း၊ (ဟောတိ)။

စ—ဆက်၊ တဿ-ထို ဝန်လေးသည်၏အဖြစ် စသော သဘောကို၊ အာဝိ ဘာဝတ္ထံ-ထင်စွာပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ [ဘာရိယာဒိသဘာဝဿ ပကာသနတ္ထံ၊] ဣဒံ ဝတ္ထုံ- ဤဝတ္ထုကို၊ ဥဒါဟရန္တိ- ထုတ်ဆောင်ကြကုန်၏၊ ကိရ— ချဲ့ဥုးအံ့၊ အညတရသ္မိံ ဂါမေ - တခုသော ရွာ၌၊ ဧကော - တပါးသော၊ ထေရောစ— ထေရ်သည်ဇင်း၊ ဒဟရဘိက္ခုစ-ရဟန်းငယ်သည်ဇင်း၊ ပိဏ္ဍာယ-ဆွမ်းအလို့ ငှါ၊ စရန္တိ-လှည့်လည်ကြကုန်၏၊ တေ- ထိုထေရ်, ရဟန်းငယ်တို့သည်၊ ပဌမ ဃရေယေဝ - ပဌမ အိမ်၌ပင်၊ ဥဠုင်္ကမတ္တံ – တယောက်ချို အတိုင်းအရှည် ရှိသော၊ ဥဏှယာဂုံ-ပူသော ယာဂုကို၊ လဘိံသု-ရကြကုန်ပြီ၊ ထေရဿစ-၏ လည်း၊ ကုစ္ဆိဝါတော - ဝမ်း၌ လေနာသည်၊ အတ္ထိ၊ သော-ထို ထေရ်သည်၊ စိန္တေသိ- ကြံပြီ၊ (ကိံ - နည်း၊ ) အယံယာဂု-သည်၊ မယှံ-အား၊ သပ္ပါယာ— လျောက်ပတ်၏၊ ယာဝ—လောက်၊ သီတလာ - အေးသည်၊ န ဟောတိ-မဖြစ် သေး၊ တာဝ-ထိုမအေးမီ၊ နံ-ထိုယာဂုကို၊ ပိဝါမိ- သောက်အံ့၊ ဣတိ(စိန္တေသိ၊) ဣတိ-ဤသို့ ကြံပြီး၍၊(ဣတိတလုံးကြေ၊)သော-ထိုထေရ်သည်၊ မနုဿေဟိ- တို့သည်၊ ဥမ္မာရတ္ထာယ-တံခါးခုံ အကျိုးငှါ၊ အာဟဋေ-ဆောင်ယူအပ်သော၊ ဒါရုက္ခန္ဓေ-သစ်တုံးပေါ်၌၊ နိသီဒိတွာ-ထိုင်၍၊ တံ-ထို ယာဂုကို၊ ပိဝိ-သောက်ပြီ၊ ဣတရော-အခြားသော ရဟန်းငယ်သည်၊ တံ- ထို ထေရ်ကို၊ ဝါ—ထို ထေရ်၏ အပြုအမူကို၊ [တံ ထေရံ. တံ ဝါ ကြိယံ။] ဇိဂုစ္ဆိ - စက်ဆုပ်ပြီ၊ ( ကိံ၊ ) အယံ မဟလ္လကော- ဤ သက်ကြီးအိုသည်၊ အတိစ္ဆာတော ဝတ- အလွန်ဆာတတ် လေစွတကား၊ အမှာကံ - ငါတို့၏၊ လဇ္ဇိတဗ္ဗကံ - ရှက်ဘွယ်ကို၊ အကာသိ— ပြုဘိ၏၊ ဣတိ - ဤသို့ ပြော၍၊ ( ဇိဂုစ္ဆိ၊ ) ထေရော ဂါမေ, စရိတွာ –ပြီး၍ ဝိဟာရံ- သို့၊ ဂန္တွာ-၍၊ ဒဟရဘိက္ခုံ အာဟ၊ အာဝုသော,တေ ၏၊ ဣမသ္မိံ

မဟလ္လကော။ ။မဟလ္လကောတိ (ဝုတ္တတ္ထာ၌ စပ်၊) သမဏာနံ သာရုပ္ပါသာ ရုပ္ပံ (လျောက်ပတ်, မလျောက်ပတ်ကို) လောက သမုဒါစာရမတ္တံ ဝါ (လောက ထုံးစံ ကိုမျှ) န ဇာနာတီတိ အဓိပ္ပါယေန ဝုတ္တတ္ထာ ဂုဏပဋိမံ သခေနန ဂရဟာတီတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ။

အမှာကံ လဇ္ဇိတဗ္ဗကံ ။ ။ သမဏေန နာမ ဧဝံ ကတံ ( ရဟန်းဆိုတာ ဒီလို လူသွားလမ်း အနီး တံခါးခုံပေါ်၌ စားသောက်မှုကို လုပ်အပ်ထာဘဲ ) ဣတိ ဝုစ္စေ ( လူအများက ပြောဆိုအပ်သော်) သီသံ ဥက္ခိပိတုံ န သက္ကောမာတိ အဓိပ္ပါယော— ဦးခေါင်းတောင် မမော်ဝံ့တော့ဘူး, ဟူလို။

သာသနေ - ၌၊ ပတိဋ္ဌာ - ထောက်တည်ရာသည်၊ အတ္ထိ ကိံ - လော၊ ဣတိ
(အာဟ)၊ ဘန္တေ၊ အာမ-မှန်ပါ၊ အဟံ, သောတာပန္နော - ပန်ပါတည်း၊
ဣတိ-ဤသို့ လျှောက်ပြီ၊ အာဝုသော, တေနဟိ-ထိုသို့သောတာပန်ဖြစ်လျှင်၊
ဥပရိမဂ္ဂတ္တာယ- အထက်မဂ်အကျိုးငှါ၊ ဝါယာမံ-လုလ္လမှုကို၊ မာ အကာသိ-
မပြုလင့်တော့၊ တယာ-သည်၊ ခီဏာသဝေါ-ရဟန္တာကို၊ ဥပဝဒိတော- စွပ်စွဲ
အပ်ပြီ၊ သော- ထို ရဟန်းငယ်သည်၊ တံ- ထိုထေရ်ကို၊ ခမာပေသိ - သည်းခံ
စေပြီ၊ ဝါ-ကန်တော့ တောင်းပန်ပြီ၊ တေန-ထိုသို့ ကန်တော့တောင်းပန်ခြင်း
ကြောင့်၊ အဿ-ထိုရဟန်းငယ်၏၊ တံ-ထိုအရိယူပဝါဒကံသည်၊ ပါကတိကံ-
ပင်ကိုယ်အတိုင်း ဖြစ်သည်၊ အဟောသိ-ပြီ၊ ဣတိ - သို့၊ ( ဥဒါဟရန္တိ-န်၏၊
အဟောသိတိ ဟု ဣတိပါလျှင် ကောင်း၏။)

တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ကန်တော့ တောင်းပန်သည့်အတွက် ပင်ကိုယ်အတိုင်း
ဖြစ်ခြင်းကြောင့်၊ အညောပိ - လည်းဖြစ်သော၊ ယော - အကြင် ရဟန်းသည်၊
အရိယံ- ကို၊ ဥပဝဒတိ-၏၊ တေန- ထို ရဟန်းသည်၊ ဂန္တွာ, အတ္တနာ-သည်၊
ဝါ-က၊ ဝုဍ္ဎတရော-အရိယာထက် ကြီးသည်၊ သစေဟောတိ အံ့၊ (ဝေံသတိ-
သော်၊) အဟံ- သည်၊ အာယသ္မန္တံ, ဣဒဉ္စိဒဉ္စ - ဤမည် ဤမည်သောစကား
ကိုလည်း အဝစံ-ပြောဆိုမိပါပြီ၊ မေ-၏၊ တံ-ထိုအပြစ်ကို၊ ခမာဟိ-ပါလော၊
ဣတိ-ဤသို့ပြော၍၊ခမာပေတဗ္ဗော-၏၊ ဝါ-၏၊နဝကတရော-အရိယာအောင်
ငယ်သည်၊ သစေ ဟောတိ၊ ( ဝေံသတိ ) ဝန္ဒိတွာ ဥက္ကုဋိကံ ၊ ပေ ၊ ခမာပေ
တဗ္ဗော – ၏၊ သော - ထို အရိယာ ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သစေ နက္ခမတိ-အကယ်၍
သည်းမခံအံ့၊ (ဝေံသတိဝါ-သော်ငင်း၊) ဒိသာပက္ကန္တော - အရပ် တပါးသို့
ဖဲသွားသည်၊ သစေ ဟောတိ၊ ဝေံသတိဝါ - ငင်း၊ တသ္မိံ ဝိဟာရေ - ၌၊ ယေ
ဘိက္ခူ ,ဝသန္တိ-န်၏၊ တေသံ သန္တိကံ ဂန္တွာ, အတ္တနာ-မိမိသည်၊ ဝါ-မိမိက၊
ဝုဍ္ဎတရော သစေ ဟောတိ, ( ဝေံသတိ၊ ) ဌိတကေနေဝ-ရပ်လျက်သာလျှင်၊
(ခမာပေတဗ္ဗော–၏၊) သစေ နဝကတရော ၊ ပေ ၊ ဣတိဝေံ-သို့၊ ဝဒန္တေန-
လျက်၊ ခမာပေတဗ္ဗော-၏၊ သော-ထို အရိယာပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ပရိနိဗ္ဗုတော-
ပရိနိဗ္ဗာန် စံပြီးသည်၊ သစေ ဟောတိ၊ ( ဝေံ သတိ ) ပရိနိဗ္ဗုတ မဉ္စဋ္ဌာနံ–

တံ ပါကတိကမေဝ။ ။ အရိယူပဝါဒကံသည် သဂ္ဂ – မဂ္ဂကို တားမြစ်နိုင်သော
သတ္တိရှိ၏၊ ကန်တော့ တောင်းပန်လိုက်သောအခါ ထို ကန်တော့တောင်းပန်မှုဟူသော
ပယောဂသမ္ပတ္တိ၏ တားမြစ်မှုကြောင့် သဂ္ဂ–မဂ္ဂကို တားမြစ်နိုင်သောသတ္တိ ပြယ်လေရ
ကား ပင်ကိုယ်အတိုင်း ဖြစ်တော့၏၊ "တံ ပါကတိကံ – ထိုကံ ပင်ကိုယ်အတိုင်းဖြစ်"
ဟူရာ၌ " ပင်ကိုယ်က ထိုပုဂ္ဂိုလ်မှာ ယင်ကံ မရှိတဲ့ အတိုင်း ဖြစ်သည်၊ အဟောသိကံ
ဖြစ်သွားသည် "ဟု ဆိုလိုသည်။

ပရိနိဗ္ဗာန်စံရာညောင်စောင်း၏ တည်ရာအရပ်သို့၊ [ပူဇာကရဏဋ္ဌာနံ သန္ဓာယာဟ- အလောင်းတော်ကို ပူဇော်မှုပြုရာဌာနကို ရည်ရွယ်သည်။ ] ဂတ္ဝာ, ယာဝ သိဝထိကံ-သင်္ချိုင်းတိုင်အောင်၊ ဂတ္ဝာပိ- လည်း၊ ခမာပေတဗ္ဗော-၏၊ ဧဝံ- သို့၊ ကတေ-ပြုအပ်သော်၊ ( တံ ကမ္မံ- သည်၊) သဂ္ဂါဝရဏာဉ္စ-သည်ငှင်း၊ မဂ္ဂါဝရဏာဉ္စ- ငှင်း၊ န ဟောတိ - တော့၊ ပါကတိကမေဝ - ပင်ကိုယ်အတိုင်းဖြစ်သည်သာ၊ ဟောတိ-၏။

မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကာတိ-ကား၊ ဝိပရီတ ဒဿနာ- ဖေါက်ပြန်သော အမြင်ရှိကုန်၏၊ ဝါ- မှားသော အယူရှိကုန်၏၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကမ္မသမာဒါနာတိ–ကား၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိဝသေန-ဖြင့်၊ သမာဒိန္နနာနာဝိဓကမ္မာ-ဆောင်တည်အပ်သော အထူးထူးအပြားပြားသော ကံရှိကုန်၏၊ စ - တနည်းကား၊ ယေ - အကြင်သူတို့သည်၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိမူလကေသု - မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ အရင်းခံ ရှိကုန်သော၊ ကာယကမ္မာဒီသု-ကာယကံအစရှိသည်တို့၌၊ အညေပိ - အခြားသူတို့ကိုလည်း၊ သမာဒါပေန္တိ-ဆောက်တည်စေကြ ကုန်၏၊ ( တေ - တို့သည်၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကမ္မသမာဒါနာ-ဒါနတို့မည်၏၊) တတ္ထ- ထို အရိယူပဝါဒ , မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကံတို့တွင်၊ ဝစီဒုစ္စရိတဂ္ဂဟဏေနေဝ-ဝစီဒုစ္စရိတသဒ္ဒါဖြင့်ပင်၊ အရိယူပဝါဒေ - အရိယူပဝါဒကံကို၊ (သင်္ဂဟိတေပိ - သိမ်းယူအပ်ပြီးပါသော်ငှင်း၊ ) မနောဒုစ္စရိတဂ္ဂဟဏေန စ–ဖြင့်လည်း၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိယာ-ဋ္ဌိကံကို၊ သင်္ဂဟိတာယပိ–သော်ငှင်း၊ ဣမေသံ ဒွိန္နံ-၌ အရိယူပဝါဒ, မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ ကံ ၂ ပါးတို့၏၊ ဝါ–တို့ကို၊ ပုန-တဘန်၊ ဝစနံ-

**မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ ဝသေန၊ ပေ၊ သမာဒါပေန္တိ။** ။မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကမ္မသမာဒါနာကို ၂ နည်းဖွင့်ထား၏၊ ထိုတွင် ပဌမနည်းဖြင့်“သမာဒိယန္တေတိ သမာဒါနာနိ၊ကမ္မာနိ+ သမာဒါနာနိ ယေသံတိ ကမ္မသမာဒါနာ၊မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိယာ-ကြောင့်၊ကမ္မသမာဒါနာ-ဆောက်တည်အပ်သော အမျိုးမျိုးသော ကံရှိသူတို့တည်း၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကမ္မသမာဒါနာ – တို့၊ ဒုတိယနည်း၌ “ အညေ သမာဒါပေန္တိ ” ဖြင့် “ သမာဒါပေန္တီတိ သမာဒါနာ ”ဟု ဟေတုကတ္တုသာဓ်ပြ၏၊ “ကာယကမ္မာဒီသု”ဖြင့် “ကမ္မေသု+သမာဒါနာ ကမ္မသမာဒါနာ” ဟု ပြ၏၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိယာ–ကြောင့်၊ ကမ္မသမာဒါနာ–ကံတို့၌ သူတပါးတို့ကို ဆောင်တည်စေတတ်သူတို့ဘည်း၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကမ္မသမာဒါနာ– တို့၊ ဆိုလိုရင်းကား မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ အရင်းခံရှိသဖြင့် မိမိကိုယ်တိုင်လည်း အကုသိုလ်ကို ပြုတတ်ကြ, သူတပါးတို့ကိုလည်း ပြုဘို့ရန် တိုက်တွန်း ဟောပြောတတ်ကြသည် – ဟူလို၊ ယခုကာလ မိစ္ဆာအယူရှိသူတို့ ဖြစ်ပုံမှာ ဤအတိုင်းပင်တည်း။ [မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိမူလကာသု ထေဝံ၌“မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ ယေသံတိ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိနိ– မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိအရင်းခံသောကံတို့၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိနိစ+တာနိ+ ကမ္မာနိစာတိ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကမ္မာနိ” ဟုလည်း ဝိဂ္ဂဟပြုသင့်၏၊ ဋီကာ၌ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိဝသေန ဟု ရှိသောကြောင့် “ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိယာ+ကမ္မသမာဒါနာ”ဟု ပြုလိုက်သည်။

ဆိုခြင်းသည်၊ မဟာသာဝဇ္ဇဘာဝ ဒဿနတ္ထံ-ကြီးသော အပြစ်ရှိကုန်သည်၏ အဖြစ်ကို ပြရခြင်း အကျိုးရှိ၏၊ ဣတိ ဧဒိတဗ္ဗံ။

ဟိ - ချဲ့၊ အရိယူပဝါဒေါ – အရိယူပဝါဒကံသည်၊ မဟာသာဝဇ္ဇော- ကြီးသောအပြစ်ရှိ၏၊အာနန္တရိယသဒိသော-အာနန္တရိယကံနှင့်တူ၏၊ယထာ ဟ–နည်း၊ သေယျထာပိ သာရိပုတ္တ ၊ပေ၊ နိရယေတိ–ယေ ဟူ၍၊ ( အာဟ၊ ) [သာရိပုတ္တ-ရာ၊ သေယျထာပိ-ဥပမာ မည်သည်ကား၊ သီလသမ္ပန္နော - သီလ နှင့် ပြည့်စုံသော၊ သမာဓိသမ္ပန္နော– သော၊ ပညာသမ္ပန္နော-သော၊ ဘိက္ခု– သည်၊ ဒိဋ္ဌေဝဓမ္မေ - မျက်မှောက်ဘဝ၌ပင်၊ အညံ-အရဟတ္တဖိုလ်ကို၊ အာရာ ဓေယျ သေယျထာပိ-ပြီးစေနိုင်ရာသကဲ့သို့၊ သာရိပုတ္တ, ဧဝံ- ဤ အရိယူပဝါဒ ကံကို၊ ဧဝံသမ္ပဒံ- ဤသို့ မချွတ်မယွင်း ပြီးစီး ခြင်းရှိ၏ဟူ၍၊ ဝဒါမိ၊ တံ ဝါစံ-ထို စွပ်စွဲကြောင်းစကားကို၊ အပ္ပဟာယ-မပယ်စွန့်မူ၍၊ တံ စိတ္တံ-ထို စွပ်စွဲကြောင်း စိတ်ကို၊ အပ္ပဟာယ-၍၊ တံ ဒိဋ္ဌိံ-ထိုစွပ်စွဲကြောင်းအယူကို၊ အပ္ပဋိ နိသဇ္ဇိတွာ- မပယ်စွန့်မူ၍၊ ဝါ- လျှင်၊ ( နိရယပါလေဟိ–ငရဲထိန်းတို့သည်၊ ) အာဘတံ–

သီလသမ္ပန္နော။ ။သီလသမ္ပန္နောတိ အာဒိ-ကို၊ ပရိပက္ကိန္ဒြိယဿ-အရဟတ္တဖိုလ် ရလောက်အောင် ရင့်ကျက်ပြီး ဣန္ဒြေရှိသော၊ မဂ္ဂသမင်္ဂီနော ဝသေန– အောက်မဂ်နှင့် ပြည့်စုံသော ပုဂ္ဂိုလ်အတွက်၊ ဝုတ္တံ၊ အဂ္ဂမဂ္ဂဿ ပန ဝတ္တဗ္ဗမေဝ နတ္ထိ၊–အရဟတ္တမဂ်၌ တည်သော သီလစသည်နှင့်ပြည့်စုံသူမှာ အရဟတ္တဖိုလ်ကို ယခုဘဝ ပြီးစေရာ၌ ဆိုဘွယ် ပင် မရှိတော့ ( သာ၍ ပြီးစေနိုင်သည်–ဟူလို၊ ) အထဝါ – အဂ္ဂမဂ္ဂပရိယာပန္နာ ဧဝ သီလာဒယော ဝေဒိတဗ္ဗာ—တနည်း သီလသမ္ပန္နောစသည်၌ သီလ သမာဓိ ပညာတို့ကို အရဟတ္တမဂ်မှာပါသည့် တရားများ ဟု သိပါ(ဋီကာ)။

အညံ။ ။အာပုဗ္ဗ + ဉာဓာတ်, အပစ္စည်း၊ အာ ( မရိယာဒံ ) ဇာနာတိ – မဂ် ၄ ပါးနှင့် အောက်ဖိုလ်တရားတို့ သိအပ်ပြီးသော သစ္စာ ၄ ပါး အပိုင်းအခြားအတိုင်း သိတတ်၏၊ ဣတိ အညံ [ အညိန္ဒြေ ဟူရာ၌ အလယ် မဂ်ဖိုလ်ဉာဏ် ၆ ပါးကို ယူရ သော်လည်း ဤနေရာ၌ကား အရဟတ္တဖိုလ်ကို "အညာ" ဟု ယူပါ။ [ အညန္တိ အရ ဟတ္တံ၊–ဋီကာ။ ]

ဧဝံ သမ္ပဒမိဒံ။ ။သမ္ပဇ္ဇနံ သမ္ပဒါ, နိပ္ဖတ္တိ (ပြီးစေခြင်း)၊ ဧဝံ အဝိရဇ္ဈနက နိပ္ဖတ္တိ ကံတိ အတ္ထော၊ ယထာတံ အဝဿံ ဘာဝိ–သီလ စသည်နှင့် ပြည့်စုံသူ၏ မျက်မှောက် ဤဘဝ၌ပင် ထိုအရဟတ္တဖိုလ်ကို ပြီးစေခြင်းသည် မချွတ်ဖြစ်လတ့်ကဲ့သို့၊ ဧဝမိဒမ္ပိ – ဤ ဆိုအပ်လတ့်သော အဖြစ်သည်လည်း ( အရိယူပဝါဒကံ၏ ငရဲ၌ ချခြင်းသည်လည်း) ဤအတူ (မချွတ်ဖြစ်လတ့်) ပင်တည်း၊–ဋီကာ။ [သမ္ပဒါဟု မူလလိန်မလိုက်ဘဲ အည ပုဒ်လိန်လိုက်၍"သမ္ပဒံ"ဟု ရှိသောကြောင့်ရင်း, "ဧဝံအဝိရဇ္ဈနနိပ္ဖတ္တိကံ"ဟု ဗဟုဗ္ဗီဟိ ဖွင့်သောကြောင့်ရင်း "ဧဝံသမ္ပဒံ"သည် ဗဟုဗ္ဗီဟိသမာသ်ပုဒ်တည်း ဟု သိပါ၊ ဧဝံ+ သမ္ပဒါ ယဿာတိ ဧဝံသမ္ပဒံ။]

ဆောင်ယူ၍၊ နိရယေ - ငရဲ၌၊ နိက္ခိတ္တော ယထာ - ချထားအပ်သကဲ့သို့၊ ဧဝံ– ဤ့အတူ၊ (အရိယူပဝါဒကမ္မေန– ကံသည်၊) နိရယေ, နိက္ခိတ္တော-ပြီ၊ [မူလပဏ္ဏာသ, မဟာသီဟနာဒသုတ်။] စ- သည်သာ မကသေး၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိတော- ထက်၊ မဟာသာဝဇ္ဇတရံ နာ:မ- သာ၍ ကြီးသော အပြစ်ရှိသည်မည်သော၊ အညံ - အခြားသောကံသည်၊ နတ္ထိ - မရှိတော့၊ ယထာဟ- သနည်း၊ နာဟံ ဘိက္ခဝေ ၊ ပေ ၊ ဝဇ္ဇာနီတိ - ဟူ၍၊ ( အာဟ-ပြီ၊ ကေင်္ဂုတ္တရ, ကေခမ္မဝဂ်၊ ) [ဘိက္ခဝေ-တို့၊ ဧဒံ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိယထာ-ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ ဝါ-ဤမိစ္ဆာဒိဋ္ဌိလော်၊ မဟာသာဝဇ္ဇတရံ-သော၊ အညံ-အခြားသော၊ ကေခမ္မမ္ဗိ-ကိုလည်း၊ အဟံ- သည်၊ န သမနုပဿာမိ– မမူ၊ ဘိက္ခဝေ– တို့၊ ဝဇ္ဇာနိ - တို့သည်၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ ပရမာနိ-မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိဟူသော လွန်ကဲသော အတိုင်းအရှည်ရှိကုန်၏။]

ကာယဿ ဘေဒါတိ - ကား၊ ဉပါဒိန္နက္ခန္ဓ ပရိစ္စာဂါ - ဉပါဒိန္န ခန္ဓာကို စွန့်ခြင်းဟူသော၊(မရဏာ-သေခြင်းမှ၊)ပရံမရဏာတိ-ကား၊ တဒနန္တရံ-ထို သေခြင်း၏အခြားမဲ့၌၊ အဘိနိဗ္ဗတ္တက္ခန္ဓဂ္ဂဟဏေ - အသစ်ဖြစ်သော ခန္ဓာကို

**ယထာဘတံ ၊ ပေ ၊ နိရယေ။** ။ ယထာ နိရယပါလေဟိ အာဟရိတွာ နိရယေ ထပိတော၊ ဧဝံ နိရယေ ( ဝသာပိတောယေဝ—အရိယူပဝါဒကံက နေစေအပ်တော့သည်သာ )၊ ဤဋီကာ၌ အာဟရိတွာသည် အာဘတံ၌ ဒုတိယာဝိဘတ်၏ ကြိယာဝိသေသနဖြစ်ကြောင်း ပြသောအဖွင့်တည်း၊ ထိုစကား၏ ဆိုလိုရင်းကား – ငရဲသားတို့က ဆောင်ယူ၍ ငရဲ၌ ချထားရာဝယ် သေချာသကဲ့သို့ , အရိယူပ ဝါဒကံကလည်း ငရဲ၌ချဘို့ရန် သေချာသည် – ဟု ဆိုလိုသည်၊ ထို့ကြောင့် “ နာဿ နိရယူပပတ္တိယာ ကောစိ ဝိဗန္ဓော=ငရဲရောံဘို့ရာ တစုံတရာမျှ အတားအဆီးမရှိတော့၊ တဗြာယံ ယုတ္တိ- နိရယူပဂေါ အရိယူပဝါဒီ, တဒါဒါယဿ (တံ+ အာဒါယဿ- ထိုအယူကို) အဝိဇဟနတော၊ သေယျထာပိ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌီတိ ( နိယတမိစ္ဆာအယူ မစွန့်သမျှ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိက ငရဲချဘို့ သေချာသကဲ့သို့)” ဟု ဆက်၍ဖွင့်သည်။

**ဉပါဒိန္နက္ခန္ဓပရိစ္စာဂါ။** ။ “အယဥ္စေဝကာယော ဗဟိဒ္ဓါစ နာမရူပံ” ဟူသော ပါဠိတော်၌ ကာယသဒ္ဒါသည် ခန္ဓာကိုယ်ကို ဟောသကဲ့သို့, ဤ ကာယဿလည်း ဉပါဒိန္နခန္ဓာကိုယ်ကိုဟော၏–ဟု သိစေလို၍ “ဉပါဒိန္နက္ခန္ဓ”ဟု ဖွင့်၏၊ “ပရိစ္စာဂါ”ကား ဘေဒါ၏ အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း။ [ ဉပါဒိန္နက္ခန္ဓပရိစ္စာဂ – ဟူရာ၌ ကမ္မဇရုပ်နှင့် ဝိပါက်စိတ်ကို ဉပါဒိန္နဟု ခေါ်၏၊ စုတိခဏ၌ ကမ္မဇရုပ်နှင့် ဝိပါက်စိတ္တုပ္ပါဒ်တို့၏ချုပ်ခြင်းကို ဉပါဒိန္နက္ခန္ဓ ပရိစ္စာဂဟု ဆိုသည်။]

**တဒနန္တရံ၊ ပေ၊ ဂဟဏေ ။** ။ ကာယဿဘေဒါသည် မရဏာ၏ ဝိသေသနတည်း၊ “ပျက်ခြင်းဟူသော သေခြင်း” ဟူလို၊ “သေခြင်း၏နောက်”ဟူရာ၌ ရဟန္တာ မဖြစ်သေးသမျှ အသစ်ခန္ဓာကိုယူရခြင်းပင်တည်း၊ ထို့ကြောင့် ပရံကို “အဘိနိဗ္ဗတ္တက္ခန္ဓဂ္ဂဟဏေ”ဟု သချပ်ဖေါ်သည်၊ “ပရံ–နောံဖြစ်သောအသစ်ခန္ဓာကို ယူ ခြင်း၌”ဟုပေး။

ယူခြင်း၌၊ အထဝါ - ထို့ပြင် တနည်းကား၊ ကာယဿ ဘေဒါတိ – ကား၊ ဇီဝိတိန္ဒြိယဿ-၏၊ ဥပစ္ဆေဒါ- ပြတ်စဲကြောင်း ဖြစ်သော၊ ပရံ မရဏာတိ- ကား၊ စုတိစိတ္တတော - စုတိစိတ်မှ၊ ဥဒ္ဓံ - အထက်ဖြစ်သော ပဋိသန္ဓေ စိတ္တက္ခဏ၌၊ အပါယန္တိ ဝေမာဒိ-အပါယံ ဤသို့အစရှိသော၊ သဗ္ဗံ-အလုံးစုံသော သဒ္ဒါသည်၊ နိရယဝေဝစနံ - နိရယသဒ္ဒါ၏ ဝေဝုစ်ပရိယာယ် စကားလှယ် တည်း၊ ဟိ - ချဲ့၊ နိရယော - ငရဲသည်၊ (အပါယော, ဒုဂ္ဂတိ, ဝိနိပါတောတို့၌ စပ်၊)သဂ္ဂမောက္ခဟေတုဘူတာ-နတ်ပြည်နိဗ္ဗာန်၏ အကြောင်းဖြစ်၍ဖြစ်သော၊ ပုညသမ္မတာ-ကောင်းမှုဟု သမုတ်အပ်သော၊ အယာ-အယမှ၊ အပေတတ္တာ-

ဇီဝိတိန္ဒြိယဿုပစ္ဆေဒါ။ ။ကာယဿကို "ဇီဝိတိန္ဒြိယဿ"ဟု ဖွင့်သည်မဟုတ်၊ ဇီဝိတိန္ဒြေပြတ်ခြင်းသည် ခန္ဓာကိုယ်၏ပျက်စီးကြောင်းဖြစ်ရကား ဘေဒါကိုသာ"ဇီဝိတိန္ဒြိယဿုပစ္ဆေဒါ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ဘိဇ္ဇတိ ဧတေနာတိ ဘေဒေါ၊ ဧတေန – ဤ ဇီဝိတိန္ဒြေ အဆက်ပြတ်ခြင်းကြောင့်၊ ဘိဇ္ဇတိ – ခန္ဓာကိုယ်တခုလုံး သေဆုံး ပျက်စီးရ၏၊ ဣတိ– ထိုသို့ ကာယ၏ပျက်စီးကြောင်း၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သော–ထို ဇီဝိတိန္ဒြေပြတ်ခြင်းသည်၊ ဘေဒေါ–၏။ [ယေန တိဋ္ဌတိ၊ တဿ ဥပစ္ဆေဒေနေဝ ကာယော ဘိဇ္ဇတီတိ အာဟ- ကာယဿ၊ပေ၊ဿုပစ္ဆေဒါတိ။]

စုတိစိတ္တတော ဥဒ္ဓံ။ ။ ပရံ မရဏာ၌ "မရဏာ" အရ ဝေါဟာရတ္တဖြစ်သော သေခြင်းအနက်ကို မယူဘဲ ပရမတ္ထဖြစ်သော စုတိစိတ်ကို ယူစေလို၍ "စုတိစိတ္တတော" ဟု ဖွင့်၏၊ ပရံကို အထက် (လာလတ့်) နောက်ကို ယူ ဟု သိစေလို၍"ဥဒ္ဓံ"ဟု ဖွင့်၏၊ မရေအပ်သေးသည်ကို အဆက်ဟု ခေါ်သော ရက္ခာရွှင့်(သစ်ပင်တက်) နည်းတည်း၊ "ပရံ–နောက်ဖြစ်သော ပဋိသန္ဓေစိတ္တက္ခဏ၌"ဟု ပေး။ [ရှေ့နည်းဖြင့် ပြောရိုးဝေါဟာ ရတ္တကိုပြ၍, နောက်နည်းဖြင့် ပရမတ္ထအနက်ကို ပြသည်-ဟု နည်း ၂ မျိုး အထူးကြံ။]

သဗ္ဗံနိရယဝေဝစနံ။ ။"အပါယံ ဒုဂ္ဂတိံ ဝိနိပါတံ"ဤ ၃ ပုဒ်ကို သဗ္ဗံဟုဆိုသည်၊ ထို ၃ ပုဒ်လုံး နိရယ်၏ ပရိယာယ်ချည်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် ပါဠိတော်အနက်ပေးသော အခါ အပါယစသည်ကို နိရယ၏ဝိသေသနအဖြစ်ဖြင့် ပေးကြသည်၊ ထိုသို့ ဖွင့်ခြင်းမှာ လည်း အရိယူပဝါဒကံနှင့် နိယတမိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကံ ရှိသူတို့၏ ဂတိကို ပြရာဌာန ဖြစ်သော ကြောင့်တည်း၊ မှန်၏–ထိုသူတို့မှာ ငရဲမှတပါး တိရစ္ဆာန်စသည် ဖြစ်ခွင့် မရှိကြ။

သဂ္ဂ၊ပေ၊အပေတတ္တာ။ ။ အပါယ၌ "အပကို အပေတ, အယကို သဂ္ဂမောက္ခ ဟေတုဘူတာ ပုညသမ္မတာ"ဟု ဖွင့်၏၊ "အယာ + အပေတောတိ အပါယော" ဟု ပြု၊ အယကိုကား သဂ္ဂမောက္ခဟေတုကို ကြည့်၍"တေဝိ ဣမဿ္မာ သုခန္တိ အယော" ဟု ဋီကာ ဝိဂ္ဂဟပြု၏၊ ဣမဿ္မာ-ဤကောင်းမှုမှ၊ သုခံ-လူနတ်ချမ်းသာ, နိဗ္ဗာန်ချမ်းသာသည်၊ ဧတိ–ဖြစ်တတ်၏၊ ဣတိ အယော (ပုည်)၊ "အပါယံ– သုခ၏ဖြစ်ကြောင်းကောင်းမှုမှ ကင်းသော" ဟု ပေး၊ " ငရဲရောက်လျှင် ကောင်းမှုပြုခွင့် မရတော့သဖြင့် ကောင်းမှုမှ ကင်းရာဌာနဖြစ်သည် "ဟူလို။

ကင်းသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ အပါယော - ယ မည်၏၊ ဝါ-တနည်း၊ သုခါနံ– သုခတို့၏၊ အာယဿ - ဖြစ်ပေါ်လာရာ ကောင်းမှု စသည်တို့၏ သုခသာဓန သတ္တိ၏၊ အဘာဝါ - မရှိခြင်းကြောင့်၊ အပါယော - ၏၊ ဒုက္ခဿ - ၏၊ ဂတိ– ရောက်ရာအရပ်တည်း၊ ပဋိသရဏံ - ရှေးရှုရောက်အပ်ရာ အရပ်တည်း၊ ဝါ– လည်းလျောင်းရာအရပ်တည်း၊ ဣတိ , ဒုဂ္ဂတိ - ဒုဂ္ဂတိမည်၏၊ ဝါ - တနည်း၊ ဒေါသဗဟုလတာယ – များသောဒေါသ ရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒုဋ္ဌေန– ပျက်သော၊ ကမ္မုနာ-ကြောင့်၊ နိဗ္ဗတ္တာ-ဖြစ်သော၊ ဂတိ - ဂတိတည်း၊ ဣတိ, ဒုဂ္ဂတိ-၏၊ တတ္ထ- ထိုငရဲ၌၊ ဒုက္ကဋကာရိနော - မကောင်းပြုအပ်သော အမှုကို ပြုလေ့ရှိသူတို့သည်၊ ဝိဝသာ– ကင်းသော အလိုရှိကုန်သည်၊ (ဟုတ္ဝာ၊) နိပတန္တိ-ကျရောက်ကြရကုန်၏၊ ဣတိ- ကြောင့်၊ (ထိုသို့ ကင်းသောအလိုရှိသည်ဖြစ်၍

**သုခါနံဝါ အာယဿ အဘာဝါ**။ ။ဤနည်း၌“အပ+အာယ”ဟု ခွဲ၊ ပုညကမ္မာဒီနံ သုခသာဓနံ– ကောင်းမှု စသည်တို့၏ သုခကို ပြီးစေနိုင်သော သတ္တိသည် အာယမည်၏၊ (ဋီကာ)၊ အာယန္တိ တေသ္မာ သုခါနီတိ အာယော၊ တေသ္မာ–ဤသုခသာဓန သတ္တိမှ၊ သုခါနိ–တို့သည်၊ အာယန္တိ – ဖြစ်လာရကုန်၏၊ ဣတိ အာယော၊ ဂတ်ဝိပ္ပတ္တိဖြစ်နေသော ငရဲရောက်လျှင် ရှေးဘဝကပါလာသော ကောင်းမှုများသည်ရှင်း, ဉာဏ်ဝိရိယစသော ပယောဂသမ္ပတ္တိသည်ရှင်း, သုခအကျိုးကို ပြီးစေနိုင်သော သတ္တိ မရှိကြတော့၊ ထို့ကြောင့်“အပါယ”ဟု ခေါ်သည်၊ အဋ္ဌကထာ၌ “အာယဿ+အဘာဝါ” ဟု ဆိုသော်လည်း မရှိခြင်းကြိယာကို မယူရ၊ မရှိရာဘုံဌာနကိုယူရမည်ဖြစ်၍“အာယာ-သုခတို့၏ ဖြစ်ပေါ်လာခဲ့ရာ ဖြစ်သော ကောင်းမှု စသည်တို့၏ သုခသာဓန သတ္တိမှ+အပေတော–ကင်းသော အရပ်တည်း၊ အပါယော” ပြု။ [“ သုခတို့၏ ဖြစ်ပေါ်လာရာ ဖြစ်သော ကောင်းမှုစသည်တို့၏ သုခသာဓနသတ္တိမှ ကင်းသော”ဟု ပေး။]

**ဒုက္ခဿဂတိ**။ ။“ဒုကို ဒုက္ခဿ, ဂတိကို ပဋိသရဏံ”ဟု ဖွင့်၏၊ ဂတိကိုလည်း “ဂစ္ဆတိ ဧတ္ထာတိ–(ဒုက္ခ၏) ရောက်ရာ”ဟု ပြုသင့်၏၊“ပဋိသရဏံ”၌လည်း “ပဋိ-ရှေးရှု+သရဏ–ရောက်အပ်ရာ”ဟု သဒ္ဒတ္ထ၊“လည်းလျောင်းရာ”ကား ဝေါဟာရတ္ထ။

**ဒေါသဗဟုလတာယဝါ**။ ။ကံပြုစဉ်က ဒေါသအားကြီးသည်ကို“ဒေါသဗဟုလတာယ” ဟု ဆိုသည်၊ ဒေါသအားကြီးသူသည် ငရဲ၌ ဖြစ်ရတတ်၏၊ ဤ “ဒုဂ္ဂတိ”အရလည်း ငရဲကို အရကောက်ရသည်၊ ဒေါသဗဟုလတာယကို“ဒုဋ္ဌေန”၌ စပ်၍ “ဒုဋ္ဌေန-ဒေါသသည် ဖျက်ဆီးအပ်သောကံကြောင့် + ဂတိ– ရောက်ထိုက်သောဂတိတည်း၊ ဒုဂ္ဂတိ”ဟု ပြု၊ [“နိဗ္ဗတ္တာ” အလယ်ပုဒ်ကြေဟု ကြံသင့်သော်လည်း မကြေဘဲ တိုက်ရိုက်အနက်မှန်ရလျှင် မချေလောပလုပ်ဘွယ် မလိုပါ။]

**ဝိဝသာ၊ပေ၊ဝိနိပါတော**။ ။ဝိကို ဝိဝသာ ဟု ဖွင့်၏၊ “နိပတန္တိ ဧတ္ထာတိ နိပါတော၊ ဝိဝသာနံ + နိပါတော ဝိနိပါတော” ဟု ဂရုကနည်းပြု၊ “ကျရောက်လိုသော ဆန္ဒမရှိဘဲ ကျရောက်ရာငရဲ” ဟူလို၊ နောက်နည်း၌ ဝိကို ဝိနဿန္တာဟု ဖွင့်၍, ဝိနဿ

ကျရောက်ရာ၏အဖြစ်ကြောင့်၊) ဝိနိပါတော-တ မည်၏၊ ဝါ-တနည်း၊ ဧတ္ထ-ဤအရပ်၌၊ ဝိနဿန္တာ-ပျက်စီးကုန်သည်၊ သမ္ဘိန္နမာနင်္ဂပစ္စင်္ဂါ-ပျက်စီးသော အင်္ဂါကြီးငယ် ရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတွာ၊ ) နိပတန္တိ - နိ၏၊ ဣတိ- ထို့ကြောင့်၊ (ထိုသို့ ပျက်စီးသော အင်္ဂါကြီးငယ် ရှိကုန်သည်ဖြစ်၍ ကျရောက်ရာ၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ ဝိနိပါတော - တ မည်၏၊ ဧတ္ထ - ဤ ငရဲ၌၊ အဿာဒသညိတော - သာယာဘွယ် ဟု, အသိအမှတ်ပြုအပ်သော၊ အယော- အယသည်၊ နတ္ထိ-မရှိ၊ ဣတိ, နိရယော-ယ မည်၏။

အထဝါ- ထို့ပြင်တနည်းကား၊ အပါယဂ္ဂဟဏေန - အပါယ သဒ္ဒါဖြင့်၊ တိရစ္ဆာနယောနိံ - တိရစ္ဆာန်တို့၏ ရောနှော နေထိုင်ရာ အရပ်ကို၊ ဝါ- တိရစ္ဆာန်ဘုံကို၊ [ဘုံသီးခြား မရှိသော်လည်း ပေးရိုးအတိုင်း ပေးလိုက်သည်၊] ဒီပေတိ-ပြ၏၊ဟိ-မှန်၏၊တိရစ္ဆာနယောနိ-တိရစ္ဆာန်တို့၏ ရောနှောနေထိုင်ရာ အရပ်သည်၊ ဝါ-တိရစ္ဆာန် ဘုံသည်၊ အပါယော-အပါယမည်၏၊(ကဿာ-နည်း၊) သုဂတိယာ- သုဂတိမှ၊ အပေတတ္တာ - ကင်းသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် တည်း၊ နဒုဂ္ဂတိ- ဒုဂ္ဂတိကား မဟုတ်၊ ဝါ-ဒုက္ခအပေါင်း၏ လည်းလျှောင်း

န္တာကို"သမ္ဘိန္နမာနင်္ဂပစ္စင်္ဂါ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ဝိနဿန္တိ- လက် ခြေအင်္ဂါအားဖြင့် ပျက်စီး ကုန်၏၊ ဣတိ ဝိနဿန္တာ"ဟု ပြုပါ၊ [အန္တပစ္စယ န္တဖြင့် ဖွင့်ရာ၌ အဿတ္ထိမကြံသင့်၊] "ဝိနဿန္တာနံ—လက်ခြေအင်္ဂါအားဖြင့် ပျက်စီးကုန်သည်ဖြစ်၍၊ နိပါတော-ကျရောံရာ ငရဲတည်း၊ ဝိနိပါတော"ဟု ပြု၊ ပါဠိတော်၌ ဝိဂ္ဂြိုဟ်အတိုင်း ၂ နက်ပေးပါ။

နိရယံ။ ။[နိ+အယ၊ သက္ကတ၌ "နိရ်" ဟု ရှိ၍ ကပ်ဘို့ရာ သရရှိသောကြောင့် (ရ်) လာသည်။] ဣယတိ အဿာဒီယတိ—သာယာအပ်၏၊ ဣတိ—အယော၊[မဟာ ဋီကာ ဝိဂ္ဂဟ၊ ဣဓာတ် ( ဓာတုနံ အနေကတ္ထတ္တာ-အရ အဿာဒအနက်ဟော၊အယော၌ ကံဟော အ ပစ္စည်း။ ] နတ္ထိ အယော ဧတ္ထာတိ နိရယော၊ " အယ = အဿာဒ (သာယာအပ်)"ဟူသည် သုခ သောမနဿဝေဒနာနှင့် ဣဋ္ဌာရုံများတည်း၊ထို့ကြောင့် "နိရယော—သာယာအပ်သော အဿာဒတရားတို့မရှိရာ ငရဲ"ဟု သဒ္ဒတ္ထပေး။

**အထဝါ, အပါယဂ္ဂဟဏေန ။** ။ ဤ အထဝါတက်သော နည်းကား အနိယုပ ဝါဒ, မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကံ ရှိသူတို့ ဂတိကို ပြသောနည်း မဟုတ်၊ အခြားနေရာဝယ် အပါယံ စသည်လာလျှင် ယူရန်ညွှန်အနက်ကိုပြသောနည်းတည်း၊ အပါယ၌"အပ+ အယ"ဟုပင် ခွဲ၊ "သုဂတိယာ+ အပေတတ္တာ" ထော်၍ "အယသဒ္ဒါသည် သုဂတိအနက်ဟော"ဟု သိပါ၊ အယတိ သုခံ ပဝတ္တတိ ဧတ္ထာတိ အယော—သုခ၏ ဖြစ်ခွင့်ရရာ သုဂတိ၊ အယ တော+ အပေတော အပါယော—သုဂတိမှကင်းသော တိရစ္ဆာန်ဘုံ၊ ထို တိရစ္ဆာန်ဘုံ၌ တန်ခိုးကြီးသော နဂါးမင်း—ဂဠုန်မင်းတို့ ဖြစ်သေးသောကြောင့်"ဒုက္ခဿ+ ဂတိ"ဟု ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြုရသော ဒုဂ္ဂတိကား မဟုတ်ချေ။ [ ယု — မိဿနေ၊ ယဝန္တိ ( ရောနှော နေသင့် ကြကုန်၏) ဧတ္ထာတိ ယောနိ။]

ရာကား မဟုတ်၊ (ကဿာ)၊ မဟေသက္ခာနံ - ကြီးသော တန်ခိုးရှိကုန်သော၊ နာဂရာဇာဒီနံ-နဂါးမင်း အစရှိသူတို့၏၊ သမ္ဘဝတော- ဖြစ်သင့်ခြင်းကြောင့်တည်း၊ ဒုဂ္ဂတိဂ္ဂဟဏေန - ဖြင့်၊ ပေတ္တိဝိသယံ - ပြိတ္တာတို့၏ နယ်မြေကို၊ ဝါ- ပြိတ္တာဘုံကို၊ ဒီပေတိ-၏၊ ဟိ-မှန်၊ သော-ထိုပြိတ္တာတို့၏နယ်သည်၊ ဝါ-သည်၊ အပါယောစေဝ-အပါယ်လည်း ဟုတ်၏၊ ဒုဂ္ဂတိစ-လည်း ဟုတ်၏၊(ကဿာ)၊ သုဂတိတော-မှ၊ အပေတတ္တာ-ကြောင့်ရင်း၊ ဒုက္ခဿ-၏၊ ဂတိဘူတတ္တာစ-လည်းလျောင်းရာဖြစ်၍ ဖြစ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်ရင်းတည်း၊နတုဝိနိပါတော-ဝိနိပါတကား မဟုတ်၊ ( ကဿာ )၊ အသုရသဒိသံ- ပြိတ္တာအသုရာနှင့် တူစွာ၊ အဝိနိပတိတတ္တာ - ဖေါက်ပြန်၍ ကျရောက်ရာမဟုတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဟိ - မှန်၊ ပေတမဟိဒ္ဓိကာနံ - ကြီးသော တန်ခိုးရှိကုန်သော ပြိတ္တာတို့၏၊ ဝိမာနာနိပိ-ဗိမာန်တို့သည်လည်း၊ နိဗ္ဗတ္တန္တိ-ဖြစ်ကုန်၏၊ ဝါ- ရှိကုန်၏၊ ဝိနိပါတဂ္ဂဟဏေန-ဖြင့်၊ အသုရကာယံ - အသုရာအပေါင်းကို၊ ဒီပေတိ-၏၊ ဟိ - မှန်၊ သော - ထို အသုရာအပေါင်းကို၊ ယထာဝုတ္တေန - အကြင် အကြင်ဆိုအပ်ပြီးသော၊ အတ္တေန-အနက်ကြောင့်၊ (သုဂတိတော အပေတတ္တာ ဒုက္ခဿစ ဂတိဘူတတ္တာဟူသော အနက်ကြောင့်) အပါယောတိစေဝ - အပ၊ါယ

**ဒုဂ္ဂတိ၊ပေ၊ဒုဂ္ဂတိစ**။ ။ဒုဂ္ဂတိပုဒ်၏ ဝစနတ္ထမှာ ပဌမနည်း၌ ပြခဲ့သော "ဒုဋ္ဌေန ကမ္မုနာ နိဗ္ဗတ္တာ ဂတိ"ပင်တည်း၊ ဤဒုဂ္ဂတိသဒ္ဒါဖြင့် ပေတ္တိဝိသယကိုပြ၏၊"သော ဟိ အပါယောစေဝ ဒုဂ္ဂတိစ= ပေတ္တိဝိသယသည် အပ၊ါယလည်းမည်, ဒုဂ္ဂတိလည်းမည်၏" ဟု ဆိုသော်လည်း ဒုဂ္ဂတိအမည်က ပေတ္တိဝိသယကို ဟောသောကြောင့် (ပါဠိသေသနည်း, ဂေါဗလိဗဒ္ဒနည်းအားဖြင့် ) တိရစ္ဆာနယောနိကိုသာ အပါယသဒ္ဒါက ဟောရတော့သည်။ [ ဝိသေသေန+သေန္တိ ပဝတ္တန္တိ ဧတ္ထာတိ ဝိသယော = အထူးအားဖြင့် ဖြစ်ရာနယ် (ဘုံ)။]

**နတု ဝိနိပါတော၊ပေ၊နိဗ္ဗတ္တန္တိ**။ ။ ပေတ္တိဝိသယသည် ပြိတ္တာအသုရာတို့ကဲ့သို့ သမ္ပတ္တိအပေါင်းမှ ဖေါက်ပြန်ကျရောက်ရာ ဝိနိပါတအမျိုး မဟုတ်၊ တန်ခိုးကြီးသော တချို့ပြိတ္တာတို့မှာ ဘုံဗိမာန်များပင် ရှိကြသေးသည်။

**ဝိနိပါတဂ္ဂဟဏေန**။ ။ ဝိနိပါတသဒ္ဒါဖြင့် ပြိတ္တာအကြီးစားဖြစ်သော အသုရကာယ်တို့ကို ယူရ၏၊ " သဗ္ဗသမုဿယေဟိတိ သဗ္ဗသမ္ပတ္တိသမုဿယေဟိ " –ဋီကာ၊ ဝိနိပတန္တိ ဧတ္ထာတိ ဝိနိပါတော = သမ္ပတ္တိ အပေါင်းတို့မှ ဖေါက်ပြန်၍ ကျရောက်ရာဖြစ်သော အသုရာအပေါင်း။ [ ဤ အသုရကာယ်ကိုလည်း အပါယ — ဒုဂ္ဂတိသဒ္ဒါတို့က ဟောနိုင်ပါ၏၊ သို့သော် ဝိနိပါတသဒ္ဒါက သီးခြားဟောမည် ဖြစ်၍ ပါဠိသေသ, ဂေါဗလိဗဒ္ဒနည်းအားဖြင့် ရှေ့၌ပြခဲ့သော သီးခြားအနက်ကိုသာ အပါယသဒ္ဒါ–ဒုဂ္ဂတိသဒ္ဒါတို့က ဟောကြရတော့သည်။]

ဟူ၍ငှင်း၊ ဒုဂ္ဂတိတိစ - တိ ဟူ၍ငှင်း၊ သဗ္ဗသမုဿယေဟိ - အလုံးစုံ သမုတ္တိ အပေါင်းတို့မှ၊ ဝိနိပတိတတ္တာ - ဖေါက်ပြန်၍ ကျရောက်ရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝိနိပါတောတိစ-တဟူ၍ငှင်း၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ နိရယဂ္ဂဟဏေန-ဖြင့်၊ အဝီစိအာဒိ အနေကပ္ပကာရံ- အဝီစိအစရှိသော တပါး မက များသော အပြားရှိသော၊ နိရယမေဝ- ကိုသာ၊ ဒီပေတိ-၏၊ ဥပပန္နာတိ- ကား၊ ဥပဂတာ - ကပ်ရောက်ကြရကုန်၏၊ တတ္ထ - ထိုငရဲ၌၊ အဘိနိဗ္ဗတ္တာ - ဖြစ်ကြရကုန်၏၊ ဣတိ - ကား၊ အဓိပ္ပါယော-တည်း။

ဝုတ္တ ဝိပရိယယေန- ဆိုအပ်ပြီး၏ ပြောင်းပြန်အားဖြင့်၊ သုက္ကပက္ခော-သုက္က ပက္ခကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော - ၏၊ အယံပန - ၌ ဆိုအပ်လတ္တံကား၊ ဝိသေသော- အထူးတည်း၊ ဧတ္ထ- ၌ သုက္ကပက္ခ၌၊ သုဂတိဂ္ဂဟဏေန-ဖြင့်၊ မနုဿဂတိပိ- လူ့ဂတိကိုလည်း၊ သင်္ဂယှတိ-သိမ်းယူအပ်၏၊ [ဂတိပိ၌ အပိဖြင့် ဒေဝဂတိကို ပေါင်း၊] သဂ္ဂဂ္ဂဟဏေန-ဖြင့်၊ ဒေဝဂတိယေဝ-နတ်ဂတိကိုသာ၊ သင်္ဂယှတိ၊ [ဧဝဖြင့် မနုဿဂတိကိုကန့်၊] တတ္ထ- ထို "သုဂတိံ သဂ္ဂံ လောကံ"ဟူသော ပါဌ်၌၊ သုန္ဒရာ – ကောင်းသော၊ ဂတိ - ဂတိတည်း၊ ဣတိ, သုဂတိ - သုဂတိ မည်၏၊ ရူပါဒိဝိသယေဟိ- ရူပါရုံ အစရှိသော အာရုံတို့ဖြင့်၊ သုဋ္ဌု-လွန်စွာ၊ အဂ္ဂေါ- မြတ်သည်တည်း၊ ဣတိ, သဂ္ဂေါ - သဂ္ဂမည်၏၊ သော သဗ္ဗောပိ-ထို အလုံးစုံသော လူ့ပြည် နတ်ပြည်သည်လည်း၊ လုဇ္ဇန ပလုဇ္ဇနဋ္ဌေန-ပျက်တတ် အလွန်ပျက်တတ်သည်၏ အဖြစ်ဟူသောအနက်ကြောင့်၊ လောကော- မည်၏၊ ဣတိ အယံ-၌ဆိုအပ်ပြီးကား၊ ဝစနတ္ထော- သဒ္ဒါနက်တည်း၊ ဝိဇ္ဇာတိ-ကား၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုဉာဏဝိဇ္ဇာ-ဒိဗ္ဗစက္ခုဉာဏ် ဝိဇ္ဇာကို၊ (အဓိဂတာ၌စပ်၊) အဝိဇ္ဇာတိ- ကား၊ သတ္တာနံ-တို့၏၊ စုတိ ပဋိသန္ဓိ ပဋိစ္ဆာဒိကာ-စုတိ,ပဋိသန္ဓေကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သော၊ အဝိဇ္ဇာ-အဝိဇ္ဇာသည်၊ (ဝိဟတာ၌ စပ်၊) သေသံ - ကြွင်းသော ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဝုတ္တနယမေဝ - ဆိုအပ်ပြီးသောနည်း ရှိသည်သာ၊ ဟိ—

ဝုတ္တဝိပရိယယေန သုက္ကပက္ခော။ ။"ဒုဋ္ဌု + စရိတံ" စသည်ဖြင့် ဆိုအပ်ပြီးမှ ပြောင်းပြန်ဖြစ်၍ "သုဋ္ဌု+ စရိတံ, သောဘနံဝါ+စရိတံ သုစရိတံ "စသည်ဖြင့် ကုသိုလ် ဘက်ကို သိပါလေ၊ ဝိ + ပရိ + ဣဓာတ်, အ ပစ္စည်းဖြင့်"ဝိပရိယယ"ဟု ထောမနိဓိရှိ၏။

သုဂတိံ။ ။"သုန္ဒရာ+ ဂတိ"အရ လူ့ဘဝကိုလည်း ကောင်းသောဂတိဖြစ်သော ကြောင့် သုဂတိဟု ဆိုရ၏၊ "ဣတော ဘော သုဂတိံ ဂစ္ဆ"ဟူရာ၌ သုဂတိအရ မနုဿ ဂတိပါ ယူရသကဲ့သို့တည်း။

သဂ္ဂံ လောကံ ။ ။ သဂ္ဂကို "သု + အဂ္ဂ" ဟု ဖြတ်၊ ရူပ-သဒ္ဒစသော ကာမဂုဏ် အာရုံတို့ဖြင့်"သုဋ္ဌု-လွန်စွာ+ အဂ္ဂေါ-မြတ်သောလောကတည်း၊ သဂ္ဂေါ-က" [လုဇ္ဇန ပလုဇ္ဇနဋ္ဌေန လောကော၏ ဝစနတ္ထကို လောကဝိဒူအဖွင့် သခါရလောက၌ ပြခဲ့ပြီ။]

အထူးကား၊ ဝေ- ၍ ဒိဗ္ဗစက္ခုဉာဏကထာ၌၊ အယမေဝ - ၍ ဆိုအပ်လတ့ံသော အနက်သည်သာ၊ ဝိသေသော - အထူးတည်း၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသကထာယံ- ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏကထာ၌၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိဉာဏမုခတုဏ္ဍကေန၊ ပေ၊ ပဒါလေတွာတိ - ပုဗ္ဗေ၊ပေ၊ပဒါလေတွာဟူ၍၊ ဝုတ္တံယထာ - ဆိုအပ်သကဲ့သို့၊ ဧဝံ တူ၊ ဣဓ-၍ဒိဗ္ဗစက္ခုဉာဏကထာ၌၊ စုတူပပါတဉာဏမုခတုဏ္ဍကေန ၊ပေ၊ပဒါလေတွာတိ-စုတူ၊ပေ၊တွာဟူ၍၊ ဝတ္တဗ္ဗံ-ဆိုထိုက်၏၊(ဣတိ-၍ဆိုအပ်ပြီးကား၊ ဝိသေသော၊ ) [ စုတူပပါတဉာဏမုခတုဏ္ဍကေန - စုတူပပါတဉာဏ်တည်းဟူသော နှုတ်သီးဖြင့်၊ စုတူပပါတပဋိစ္ဆာဒကံ - စုတိပဋိသန္ဓေကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သော၊ အဝိဇ္ဇဏ္ဍကောသံ- ကို၊ ပဒါလေတွာ- ၍။ ] ဣတိ- အပြီးတည်း။.... ဒိဗ္ဗစက္ခုဉာဏကထာ-သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။

သော ဧဝံ သမာဟိတေ စိတ္တေတိ- ကား၊ ဣဓ - ၍ အာသဝက္ခယဉာဏကထာ၌၊ ဝိပဿနာပါဒကံ - ဝိပဿနာ၏ အခြေခံဖြစ်သော၊ စတုတ္ထဇ္ဈာနစိတ္တံ-ဈာန်စိတ်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ အာသာဝါနံ ခယဉာဏာယာတိ- ကား၊ အရဟတ္တမဂ္ဂဉာဏတ္ထာယ-အရဟတ္တမဂ်ဉာဏ်အကျိုးငှါ၊ ဟိ- မှန်၊ အရဟတ္တမဂ္ဂေါ-ကို၊ အာသဝဝိနာသနတော – အာသဝေါတရားတို့ကို ဖျက်ဆီးတတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ အာသဝါနံ ခယောတိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- ၏၊ စ-ဆက်၊ တတြ-၌ဉာဏံ-၍သမ္မာဒိဋ္ဌိဉာဏ်သည်၊ တတြ- ထိုအရဟတ္တမဂ်၌၊ ဝါ- ထည်းက၊ (ဉာဏံ- တည်း၊ ကသ္မာ- နည်း၊ တေသ ဉာဏာဿ - ၍ သမ္မာဒိဋ္ဌိဉာဏ်၏၊) တပ္ပရိယာပန္နတ္တာ-ထိုအရဟတ္တမဂ်၌ အကျုံးဝင်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဣတိ-၍သို့မှတ်အပ်၏၊ စိတ္တံ အဘိနိန္နာမေသိန္တိ-ကား၊ ဝိပဿနာစိတ္တံ- ကို၊ အဘိနီဟရိ°-ပြီ၊ သော ဣဒံ ဒုက္ခန္တိ ဧဝမာဒီသု-ကွဲ့ အစရှိသော ပါဋ္ဌိရပ်တို့၌၊ (အတ္တော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ) ဒုက္ခံ- သည်၊ တွေကံ-၍မျှအတိုင်းအရှည်ရှိ၏၊

ခယဉာဏာယ။ ။ခယကို အရဟတ္တမဂ္ဂဟု ဖွင့်၏၊ "အာသဝါနံ ဝိနာသနတော" အဋ္ဌကထာနှင့် "အာသဝါနံ ခေပနတော" ဋီကာတို့ကို ထောက်၍ "ခိယန္တိ အာသဝါ ဧတေနာတိ ခယော= အာသဝေါတို့၏ကုန်ကြောင်းဖြစ်သော အရဟတ္တမဂ်" ဟု ကရဏသာဓ်ပြု။ ["ပြီးစေတတ်က, ပြီးကြောင်းရ၏, ကရဏ—ကတ္တု, ကာရကကို ဝိဂြိုဟ်ပြု" ဟူရာ၌ ကဲ့သို့တည်း။] "ခယ" အရ အာသဝေါတို့ကို တကန့်စီ တကန့်စီ ကုန်စေတတ်သော အောက်မဂ်တို့ပါရသော်လည်း ဥက္ကဋ္ဌနိဒ္ဒေသနည်းအားဖြင့် အရဟတ္တမဂ်ကိုသာ ယူ။ [ဥက္ကဋ္ဌနိဒ္ဒေသဝသေန အရဟတ္တမဂ္ဂဂ္ဂဟဏံ။ ] "မဂ်" ဟူရာ၌ မဂ္ဂင်ရှစ်ပါးလုံး ရသောကြောင့် ထိုမဂ္ဂင်၌ ပါဝင်သော သမ္မာဒိဋ္ဌိကို "ခယေ+ ဉာဏံ ခယဉာဏံ" ဟု ပြု။ [ခယေတိစ အာခရေ ဘုမ္မံ၊ န ဝိသယေ ( အရာ မဟုတ် ) တိ ဒဿနတ္ထံ တပ္ပရိယာပန္နတ္တာတိ အာဟ၊—ဋီကာ။]

ဠတော–ဤတရားထက်၊ ဘိယျော-အလွန်၊ န-မရှိတော့၊ ဠတိ-သို့၊ သဍ္ဍမ္ပိ-သော၊ ဒုက္ခသစ္စ-ကို၊(အဇ္ဈညာသိ စသည်၌စပ်၊)သရသလက္ခဏာပ္ပဋိဝေဓေန-မိမိ၏ သဘောလက္ခဏာကို ထိုးထွင်း၍သိခြင်းဖြင့်၊ ယထာဘူတံ–စွာ၊ အဇ္ဈညာသိံ, ဇာနိံ-သိတော်မူပြီ၊ ပဋိဝိဇ္ဈိံ-ထိုးထွင်းတော်မူပြီ၊ စ- ကား၊ တဿ ဒုက္ခဿ - ကို၊ နိဗ္ဗတ္တိကံ - ဖြစ်စေ တတ်သော၊ တဏှံ - ရှေး ဘဝတဏှာကို၊ အယံ–ဤတဏှာသည်၊ ဒုက္ခသမုဒယော ကြွင်းသောအကြောင်းနှင့် ပေါင်းမိလသော် ဒုက္ခ၏ဖြစ်ကြောင်းသမုဒယသစ္စာတည်း၊ ဠတိ (သရသလက္ခဏာ ပဋိဝေဓေန ယထာဘူတံ အဇ္ဈညာသိံ၊) [ဤသို့ အစုံအလင်ထည့်၍ စပ်, နောင်၌လည်း နည်းတူ၊] တဒုဘယမ္ပိ- ထို ၂ ပါးစုံသော ဒုက္ခ, သမုဒယသည်လည်း၊ ယံ ဌာနံ-အကြင်နိဗ္ဗာန်တည်းဟူသောအကြောင်းသို့၊ ပတွာ-၍၊ ဝါ-ကြောင့်၊

**သဍ္ဍမ္ပိ ဒုက္ခသစ္စံ။** ။“ဠဒံ ဒုက္ခံ–ဤဟာသည် ဒုက္ခ”ဟူရာဝယ် “ဤ” ဟူသော စကားဖြင့် ဒုက္ခသစ္စာကို မျက်မှောက်ပြုနိုင်ကြောင်း ပြ၏၊ ထိုသို့ မျက်မှောက် ပြုရာ၌ “ဧတ္တကံ ဒုက္ခံ”ဖြင့်“ဒုက္ခသစ္စာသည် ဤမျှဤမျှသာရှိ၏”ဟု ပိုင်းခြား၍သိနိုင်ကြောင်းကိုရင်း, “န ဠတော ဘိယျော ”ဖြင့် အကြွင်းမရှိ သိနိုင်ကြောင်းကိုရင်း ပြသည်၊ ထို့ကြောင့် “သဍ္ဍမ္ပိ ဒုက္ခသစ္စံ”ဟုမိန့်သည်။

**သရသလက္ခဏာပ္ပဋိဝေဓေန။** ။ “ သ+ရသ ” ဟူသည် ဖဿ၏ တွေ့ထိခြင်း သဘော, ပထဝီဓာတ်၏ ခိုင်မာခြင်းသဘော,စသော သဘောတည်း၊ ထိုသဘောရသသည်ပင် ထိုထိုတရား၏ အမှတ်အသားဖြစ်သောကြောင့် လက္ခဏာလည်း မည်၏၊ ထိုသဘောတည်းဟူသော လက္ခဏာကို ထိုးထွင်း၍ သိခြင်းသည် သရသလက္ခဏပဋိဝေဓ မည်၏၊ ထို့ကြောင့် “ သဘာဝသင်္ခါတဿ လက္ခဏဿ အသမ္မောဟတော ပဋိဝိဇ္ဈနေန”ဟု ဋီကာဖွင့်သည်။

**အသမ္မောဟပဋိဝေဓ။** ။အရဟတ္တမဂ်ဉာဏ် ဖြစ်လသော် နောင်အခါဝယ် ဒုက္ခသစ္စာ၏ သရုပ်သဘောကို ပိုင်းခြားရာ၌ တွေဝေခြင်းမရှိမှုကို အသမ္မောဟ ပဋိဝေဓ–မတွေဝေသောအားဖြင့် သိခြင်းဟု ဆိုသည်။ [အသမ္မောဟပဋိဝေဓောတိ – ယထာ တသ္မိံ ဉာဏေ ပဝတ္တေ ပစ္ဆာ ဒုက္ခဿ သရူပပရိစ္ဆေဒေ သမ္မောဟော နဟောတိ၊ တထာ ပဝတ္တိ၊ တေနာဟ–ယထာဘူတံ အဇ္ဈညာသိံတိ။]

**တဒုဘယမ္ပိ ယံ ဌာနံ ပတွာ။** ။ ယံဌာနံ ပတွာတိ ယံ နိဗ္ဗာနံ မဂ္ဂဿ အာရမ္မဏပစ္စယဋ္ဌေန ကာရဏဘူတံ အာဂမ္မ – မဂ်၏ အာရမ္မဏပစ္စည်း အဖြစ်ကြောင့် မဂ်၏ အကြောင်း ဖြစ်၍ဖြစ်သော အကြင်နိဗ္ဗာန်သို့ ရောက်၍၊ ဤ အဖွင့်အတိုင်း နိဿယ၌ ပေးသည်၊“တဒုဘယမ္ပိ ပတွာ–ထို ဒုက္ခ သမုဒယ ၂ ပါးစုံ၏ နိဗ္ဗာန်ဌာနသို့ ရောက်ခြင်း” ဟူသည် ထို ၂ ပါးစုံ ရှိနေသောပုဂ္ဂိုလ်၏ ရောက်ခြင်းတည်း။ [တဒုဘယဝတော ဟိ ပုဂ္ဂလဿ ပတ္တိ တဒုဘယပတ္တီတိ ဝုတ္တံ။ ] ပတွာတိဝါ ပါပုဏနဟေတု ( ပုဂ္ဂိုလ်က အာရုံပြုသောအားဖြင့် ရောက်ခြင်းကြောင့်)။

နိရုဇ္ဈတိ-ချုပ်ရ၏၊ တေသံ- ထို ဒုက္ခသမုဒယတို့၏၊ အပ္ပဝတ္တိ - မဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်သော၊ ဝါ-မဖြစ်ရာဖြစ်သော၊ တံ နိဗ္ဗာနံ-ကို၊ အယံ-ဤ နိဗ္ဗာန်သည်၊ ဒုက္ခ နိရောဓော- ဒုက္ခ၏ချုပ်ရာ နိရောဓသစ္စာတည်း၊ (ဣတိ ၊ပေ၊ အဗ္ဘညာသိ ၊) စ-ကား၊ တဿ-ထိုနိရောဓသို့၊ သမ္ပာပကံ-မိမိကိန်းရာပုဂ္ဂိုလ်ကို ကောင်းစွာ ရောက်စေတတ်သော၊[သဏ္ဍိကြိယာဝသေန သမ္ပဒေဝ ပါပကံ။]အရိယမဂ္ဂံ—ကို၊ အယံ - ဤ အရိယာမဂ်သည်၊ ဒုက္ခနိရောဓဂါမိနီ - ဒုက္ခ၏ချုပ်ရာ နိဗ္ဗာန်သို့ ရောက်ကြောင်းဖြစ်သော၊ ပဋိပဒါ– အကျင့်တည်း၊ ဣတိ၊ ပေ၊ ပဋိဝိဇ္ဈိ - ပြီ၊ ဣတိဧဝံ- ဤသို့၊ အတ္ထော—ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော။

ဧဝံ - ဤသို့လျှင်၊ သရူပတော - သရုပ်အားဖြင့်၊ သစ္စာနိ - သစ္စာတို့ကို၊ ဒဿေတွာ-ပြတော်မူပြီး၍၊ ဣဒါနိ-ယခုအခါ၌၊ ကိလေသဝသေန- အာသဝ ဟူသော ကိလေသာနှင့် စပ်သဖြင့်၊ [ အာသဝသင်္ခါတ ကိလေသဝသေန။ ] ပရိယာယတော- ပရိယာယ်အားဖြင့်၊ (သစ္စာနိ-သစ္စာတို့ကို၊) ဒဿေန္တော- ပြတော်မူလိုသည်၊ ဟုတွာ , [ ဒဿေန္တော သစ္စာနီတိ ယောဇနာ။ ] ဣမေ အာသဝါတိ အာဒိ - ပါဌ်ကို၊ အာဟ - ၏၊ တဿ မေ ဧဝံ ဇာနတော , ဧဝံ ပဿတောတိ - ကား၊ ဧဝံ - သို့၊ ဇာနန္တဿ - သိသော၊ ဧဝံ, ပဿန္တဿ–

အပ္ပဝတ္တိံ။ ။ပဝတ္တတိ ယာယာတိ ပဝတ္တိ, န+ပဝတ္တိ-အပ္ပဝတ္တိ-မဖြစ်ကြောင်း၊ အပ္ပဝတ္တိနိမိတ္တန္တိ–အပ္ပဝတ္တိနိမိတ္တံ၊ တေ ဝါ န ပဝတ္တန္တိ ဧတ္ထာတိ အပ္ပဝတ္တိ–မဖြစ်ရာ။

ပရိယာယတော ။ ။ အာသဝေါတရားတို့သည် ပရိယာယ်အားဖြင့် ဒုက္ခသစ္စာ မည်၏၊ ပရိယာယ်ဆိုသည်ကား ဒုက္ခသစ္စာ အတွင်း၌ အာသဝေါတရားများလည်း ပါဝင်သောကြောင့် ဒုက္ခသစ္စာအမည် ရနိုင်ကြသည်– ဟု ဆိုလိုသည်၊ အာသဝတို့က ဒုက္ခသစ္စာအမည်ရလျှင် တဏှာ စသည်ကိုလည်း အာသဝတို့၏ဖြစ်ကြောင်း, အာသဝ တို့၏ချုပ်ရာ, အာသဝတို့၏ ချုပ်ရာနိဗ္ဗာန်သို့ ရောက်ကြောင်း– ဟု ဆိုရတော့သည်။ [ ယသ္မာစ အာသဝါနံ ဒုက္ခသစ္စပရိယာယော, တပ္ပရိယာယပန္နတ္တာ၊ သေသသစ္စာနဉ္စ တံသမုဒယာဒိပရိယာယော အတ္ထိ၊ တသ္မာ ဝုတ္တံ ပရိယာယတောတိ။ ] ဤသို့ အာသဝ တို့ကိုမူတည်၍ သစ္စာ ၄ ပါး ပြခြင်းမှာလည်း "အာသဝါနံ ခယဉာဏာယ" ဟူသော မူလစကားနှင့် အဆင်သင့်အောင် ပြတော်မူလိုခြင်းကြောင့်–ဟု မှတ်။

အဗ္ဘညာသိံနှင့် ဇာနတော ။ ။ အဗ္ဘညာသိံကို မဂ်ခဏရည်ရွယ်၍ မိန့်တော် မူပါသော်လည်း ဝေရဉ္ဇပုဏ္ဏားအားဟောတော်မူခိုက်၌ သိပြီးဖြစ်သောကြောင့် "အဗ္ဘ ညာသိံ"ဟု အတိတ်ကြိယာကို သုံးစွဲတော်မူ၏၊ ထိုမဂ်ရစဉ်က သိဆဲခဏကိုမှန်း၍ တံ ကာလာပေက္ခဝတ္တမာနအားဖြင့် "ဧဝံ ဇာနတော ပဿတော"ဟု ပစ္စုပ္ပန်ဟော အန္တ ပစ္စည်းကို သုံးစွဲတော်မူပြန်သည်၊ တနည်း–ဇာနတော ပဿတော၌ အန္တပစ္စည်းသည် ဟိတ်အနက်၌သက်၏၊ "သိခြင်းကြောင့် မြင်ခြင်းကြောင့် လွတ်ပြီ" ဟူလို။

မြင်သော၊ တသ္သမယံ-ထိုငါ၏၊ (စိတ္တံ ဝိမုစ္စိတ္တ၌စပ်၊) (ဇုမိနာ - ဤ တသ္သ မေ၊ပေ၊တောဟူသော ပါဌ်ဖြင့်၊ ) ဝိပဿနာယ - ဝိပဿနာဉာဏ်နှင့်၊ သဟ— တက္ကံ၊ ကောဋိပ္ပတ္တံ-အထွဋ်အထိပ်သို့ ရောက်သော၊ မဂ္ဂံ-လောကုတ္တရာမဂ်ကို၊ ကထေသိ - ဟောတော်မူပြီ၊ [ဝိပဿနာက လောကီမဂ်ဖြစ်၍ လောကုတ္တရာ မဂ်နှင့် ပေါင်းပြီးလျှင် လောကီလောကုတ္တရာ ရောနှောသော မိဿကမဂ်ကို ဟောတော်မူသည် - ဟူလို၊ ] ကာမာသဝါတိ - ကား၊ ကာမာသဝတော- သဝမှ၊ (ဝိမုစ္စိတ္ထ၊) ဝိမုစ္စိတ္ထာတိ ဣမိနာ-ပါဌ်ဖြင့်၊ ဖလက္ခဏံ- ဖိုလ်ခဏကို၊ ဒဿေတိ-မူ၏၊ ဟိ-မှန်၊ မဂ္ဂက္ခဏေ- မဂ်ခဏ၌၊ စိတ္တံ-သည်၊ဝိမုစ္စတိ-လွတ်ဆဲ၊ ဖလက္ခဏေ-၌၊ ဝိမုတ္တံ-လွတ်ပြီးသည်၊ ဟောတိ-ဖြစ်၏၊ ဝိမုတ္တသ္မိံ ဝိမုတ္တမိတိ ဉာဏန္တိ ဣမိနာ-ဖြင့်၊ ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏံ-ကို၊ ဒဿေတိ—၏၊ ခီဏာဇာတီတိ အာဒီဟိ - တို့ဖြင့်၊ တဿ— ထို ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ်၏၊ ဘူမိံ - ဖြစ်ရာအာရုံကို၊ ဒဿေတိ-၏၊ ဟိ-မှန်၊ တေန ဉာဏေန-ထို ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ်ဖြင့်၊ဘဂဝါ-သည်၊ ပစ္စဝေက္ခန္တော - ဆင်ခြင်တော်မူလသော်၊ ခီဏာဇာတီတိ အာဒီနိ- ခီဏာဇာတိ အစရှိသည် ဘို့ကို၊ အဗ္ဘညာသိ-ပြီ။

ဝိမုစ္စိတ္ထ။ ။ " လွတ်ခဲ့ပြီ" ဟု အတိတ်ကြိယာကို သုံးစွဲပြန်ရာ၌ မဂ်ခဏမှနောက် ယနေ့အထိ ဝိမုစ္စနကြိယာသည် အတိတ်ချည်းဖြစ်ပါသော်လည်း,မဂ်ရပြီးနေ့ ပဌမဆုံး အတိတ်ခဏကိုမှန်း၍ ဝိမုစ္စိတ္ထဟု ဟောတော်မူရကား "ဝိမုစ္စိတ္ထာတိဣမိနာ ဖလက္ခဏံ ဒဿေတိ " ဟု အဋ္ဌကထာမိန့်သည်။ [ သောစ (ထို လွတ်ခြင်းသည်လည်း) ကာမံ မဂ္ဂက္ခဏတော (မဂ်ခဏမှနောက်၌) ပဘုတိ ယာဝဇ္ဇတနာ အတီတကာလိကောဧဝ၊ သဗ္ဗပဌမံ ပန ဿ (ထိုလွတ်ခြင်း၏) အတီတကာလိကတ္တံ ဖလက္ခဏေနေဝ ဝေဒိတဗ္ဗံတိ အာဟ- ဝိမုစ္စိတ္ထာတိ ဣမိနာ ပေ၊ဒဿေတီတိ။]

မှတ်ချက် ။ ။ ပါဠိတော်၌ " ကာမာသဝါပိ ၊ပေ၊ ဘဝါသဝါပိ ၊ပေ၊ အဝိဇ္ဇာ သဝါပိ စိတ္တံ ဝိမုစ္စိတ္ထ"ဟု အာသဝ ၃ ပါးသာပါ၍ ဒိဋ္ဌာသဝ မပါ၊ ထိုသို့မပါခြင်းကား အာသဝက္ခယ (အရဟတ္တမဂ်) အခန်းဖြစ်၍ သောတာပတ္တိမဂ်တုန်းကပင် ဒိဋ္ဌာသဝမှ လွတ်ခဲ့ပြီဖြစ်သောကြောင့် ဒိဋ္ဌာသဝကို မဟောဘဲ ထားသည်— ဟု ကြံသင့်၏၊ ဋီကာ၌ကား ဘဝါသဝဖြင့် ဒိဋ္ဌာသဝကိုပါ သွင်းယူထားသည်—ဟု ဆိုထား၏၊ စဉ်းစားပါ။

ဝိမုတ္တမိတိ။ ။ဝိမုတ္တသ္မိံ၏ နောက်၌ " ဝိမုတ္တမိတိ, ဝိမုတ္တမ္ဟိတိ"ဟု ပါဌ် ၂ ထွေ ရှိ၏၊ " စိတ္တေ—သည်၊ ဝိမုတ္တသ္မိံ— အာသဝေါတို့မှ လွတ်ပြီးလသော်၊ ဝိမုတ္တံ— ငါ၏ စိတ်သည် အာသဝေါတို့မှ လွတ်ပြီ " ဟု အာသဝေါတို့မှ လွတ်သော အရဟတ္တဖိုလ် စိတ်ကို အာရုံပြု၍သာ ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ် ဖြစ်နိုင်၏၊ " ဝိမုတ္တမှိ — ဝိမုတ္တော+ အဟံ— ငါသည် အာသဝေါတို့မှလွတ်ပြီ " ဟု မိမိကိုယ်ကို အာရုံပြု၍ ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ် မဖြစ် နိုင်။ [ "မဂ္ဂံ ဖလဉ္စ နိဗ္ဗာနံ, ပစ္စဝေက္ခတိ ပဏ္ဍိတော"ကို သတိပြု။ ] ထို့ကြောင့် ပစ္စဝေ က္ခဏာဉာဏ်ကို ပြသောအရာဌာနဖြစ်၍ "ဝိမုတ္တမိတိ"သာ ပါဌ်မှန်တည်း။

ပန-ပရိဟာရပက္ခမှ၊ပေ၊အံ့၊ ဘဂဝတော - ၏၊ **ကတမာဇာတိ** - အဘယ် ဇာတိ–သည်၊ **ခီဏာ** - ကုန်သနည်း၊ **ကထဉ္စ**– လျှင်၊ နံ-ထို ကုန်သောဇာတိကို၊ အဗ္ဘညာသိ-သနည်း၊ **ဣတိ**-ဤကားအမေးတည်း၊ (ပရိဟာရော မယာ) ဝုစ္စတေ-၏၊ တာဝ- အနာဂတ်ဇာတိမှ ရှေးဦးစွာ၊ အဿ-ထိုမြတ်စွာဘုရား၏၊ အတီတဇာတိ-သည်၊ နခီဏာ-ကုန်သည်မဟုတ်၊ (ကသ္မာ- နည်း၊)ပုဗ္ဗေဝ- ရှေး၌ပင်၊ ခီဏတ္တာ - ကုန်ခဲ့ပြီး၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ [ အတိတ်ဇာတိသည် အတိတ်ကာလ၌ပင် ကုန်ခဲ့ပြီ, ဟူလို၊ ] အနာဂတာ - အနာဂတ်ဇာတိသည်၊ နခီဏာ–ဟုတ်၊(ကသ္မာ၊)အနာဂတေ-အနာဂတ်တရား၌၊ ဝါယာမာဘာဝတော - အားထုတ်မှု ပယောဂ၏ မရှိခြင်းကြောင့်တည်း၊ ပစ္စုပ္ပန္နာ - သည်၊ န ခီဏာ (ကသ္မာ၊ ) ဝိဇ္ဇမာနတ္တာ - ထင်ရှား ရှိသေးသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ပန-စင်စစ်ကား၊ မဂ္ဂဿ-၏၊ ဝါ-ကို၊ အဘာဝိတတ္တာ-မဖြစ်စေအပ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဧကစတုပဉ္စဝေါကာရဘဝေသု-ဧကဝေါကာရ,စတုဝေါကာရ, ပဉ္စဝေါကာရဘဝတို့၌၊ ဧကစတုပဉ္စက္ခန္ဓပ္ပဘေဒါ - တပါးသော ခန္ဓာ,၄ ပါးသော ခန္ဓာ,၅ ပါးသော ခန္ဓာ အပြားရှိသော၊ ယာဇာတိ–သည်၊ ဥပ္ပဇ္ဇေယျ - ၏၊ သာ - ထိုဇာတိသည်၊ မဂ္ဂဿ - ၏၊ ဝါ - ကို၊ ဘာဝိတတ္တာ-

**ခီဏာဇာတိတိ၊ပေ၊ဘူမိံ**။ ။တဿာတိ ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏဿ၊ ဘူမိန္တိ ပဝတ္တိဋ္ဌာနံ (ဖြစ်ရာဋ္ဌာန–ဖြစ်ရာအာရုံကို)၊ ဤဋီကာအတိုင်း “ ခီဏာ ဇာတိ၊ ဝုသိတံ ဗြဟ္မစရိယံ၊ ကတံ ကရဏီယံ၊ နာပရံ ဣတ္ထတ္တာယ ” တို့သည် ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ်၏ အာရုံများကို ပြသော စကားတည်း – ဟု မှတ်၊ မှန်၏ – မဂ္ဂဝီထိ နောက်က ပစ္စဝေက္ခဏာဝီထိသည် မဂ္ဂဖလနိဗ္ဗာန်နှင့် ပဟီနကိလေသာတို့ကိုသာ အာရုံပြု၏၊ သို့သော်–ပဟီနကိလေသာကိုအာရုံပြုပြီးသောအခါ အဝိဇ္ဇာတဏှာတည်းဟူသော ကိလေသာအဖေါ်မပါသော ကံသည် ဘဝသစ်ကို မဖြစ်စေနိုင်ရကား “ ခီဏာ ဇာတိ=ဘဝကုန်ပြီ ”ဟု အသိဉာဏ် ဖြစ်ပြန်၏၊ မဂ်ဖိုလ်နိဗ္ဗာန်ကို ဆင်ခြင်ပြီးသောအခါ “ ဝုသိတံ ဗြဟ္မစရိယံ, ကတံ ကရဏီယံ, နာပရံ ဣတ္ထတ္တာယ ”ဟု သိနိုင်ပြန်၏၊ ထို့ကြောင့် “ ခီဏာဇာတိ ” စသည်ကို ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ်၏ အာရုံကိုပြသောစကား ဟုဆိုသည်။

**န အနာဂတာ**။ ။သတ္တာအများ၏ အနာဂတ်ဇာတိသာမညကို ရည်ရွယ်၍“န+ အနာဂတာ ” ဟု မိန့်သည်၊ ဖြစ်မှ မဖြစ်သေးသော အနာဂတ်ဇာတိ၌ ကုန်အောင် အားထုတ်ဘို့ရန် လုလ္လပယောဂပြုမှု မဖြစ် – ဟူလို၊ ရဟန္တာပုဂ္ဂိုလ်၏ ဇာတိဝိသေသကိုကား အကြောင်းဖြစ်သော အဝိဇ္ဇာတဏှာကို ပယ်ခွါသောအားဖြင့် ကုန်အောင် အားထုတ်၍ဖြစ်နိုင်၏၊ အဝိဇ္ဇာတဏှာပယ်လိုက်လျှင် အဝိဇ္ဇာတဏှာအဖေါ် မပါသော ကံတရားက ဇာတိအသစ်ကို မဖြစ်စေနိုင်၊ ထို့ကြောင့် “ ယာပန ” စသည် မိန့်သည်။ [ဥပ္ပဇ္ဇနံ ဥပ္ပါဒေါ၊ ဥပ္ပါဒေါစ+သော+ဓမ္မောစာတိ ဥပ္ပါဒဓမ္မော၊ နတ္ထိ+ဥပ္ပါဒဓမ္မော ယဿာတိ အနုပ္ပါဒဓမ္မာ (ဇာတိ)၊ အနုပ္ပါဒဓမ္မာယ+ဘာဝေါ အနုပ္ပါဒဓမ္မတာ။ ]

ကြောင့်၊ အနုပ္ပါဒဓမ္မတံ-နောင်တဖန် ဖြစ်ခြင်းသဘော မရှိသည်၏အဖြစ်သို့၊ အာပဇ္ဇနေန-ရောက်ခြင်းအားဖြင့်၊ ဒိဏ္ဏာ-ကုန်ပြီ၊ တံ-ထိုကုန်သောဇာတိကို၊ (အဇ္ဈညာသိဉ္စပ်၊) သော- ထိုမြတ်စွာဘုရားသည်၊ မဂ္ဂဘာဝနာယ- မဂ်ကို ဖြစ်စေခြင်းအားဖြင့်၊ပဟီနကိလေသေ-ပယ်အပ်ပြီးသောကိလေသာတို့ကို၊ပစ္စ ဝေက္ခိတွာ-ဆင်ခြင်တော်မူ၍၊ ကိလေသာဘာဝေ - ကိလေသာတို့၏ မရှိခြင်း သည်၊ ( သတိ ) ဝိဇ္ဇမာနမ္ပိ- ထင်ရှားရှိသည်လည်း ဖြစ်သော၊ ကမ္မံ - သည်၊ အာယတိံ-၌၊ အပ္ပဋိသန္ဓိကံ - ပဋိသန္ဓေ အကျိုးမရှိသည်၊ ဝါ- ပဋိသန္ဓေကို မဖြစ်စေနိုင်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ဇာတိ-သို့၊ ဇာနန္တော- မှုသည်၊ ( ဟုတွာ၊ ) အဇ္ဈညာသိ-ပြီ၊ (ဇာတိ- သို့၊ ပရိဟာရော ဝုတ္တော၊ ဤသို့ ပြန်အုပ်)။

ဝုသိတန္တိ-ကား၊ ဝုတ္ထံ, ပရိဝုတ္ထံ-ကျင့်သုံးအပ်ပြီ၊ ကတံ-ပြုအပ်ပြီ၊ စရိတံ- ကျင့်အပ်ပြီ၊ နိဋ္ဌိတံ-ပြီးဆုံးပြီ၊ ( ပါဠိ၌ရှိအတိုင်း၊ )နိဋ္ဌာပိတံ-ပြီးဆုံးစေအပ်ပြီ၊ ဇာတိအဘေတွာ- နက်၊ ဗြဟ္မစရိယန္တိ - ကား၊ မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယံ- ယကို၊ ဟိ- မှန်၊ (တနည်း)ဟိ ယသ္မာ,ပုထုဇ္ဇနကလျာဏကေန-ကလျာဏပုထုဇန်နှင့်၊ သဒ္ဓိံ, သတ္တ , သေက္ခာ - သေက္ခ ပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ ဗြဟ္မစရိယဝါသံ - ကျင့်သုံးအပ် သော မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယကို၊ ဝသန္တိနာမ-ကျင့်ကုန်ဆဲတို့မည်၏၊ ခီဏာသဝေါ- သည်၊ ဝုတ္ထဝါသော - ကျင့်သုံးအပ်ပြီးသော မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယရှိသော ပုဂ္ဂိုလ် မည်၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဘဂဝါ - သည်၊ အတ္တနော - ကိုယ်တော်၏၊ ဗြဟ္မ စရိယဝါသံ- ကို၊ ပစ္စဝေက္ခန္တော-သော်၊ ဝုသိတံ ဗြဟ္မစရိယန္တိ-ဝု၊ပေ၊ယံ ဟူ၍၊ အဇ္ဈညာသိ - ပြီ၊ ကတံ ကရဏီယန္တိ- ကား၊ စတူသု, သစ္စေသု - တို့၌၊ စတူဟိ, မဂ္ဂေဟိ - တို့ဖြင့်၊ ပရိညာ ပဟာန သစ္ဆိကိရိယာ ဘာဝနာဝသေန- ပရိညာ ကိစ္စ , ပဟာန ကိစ္စ , သစ္ဆိကိရိယ ကိစ္စ, ဘာဝနာကိစ္စတို့၏ အပြား

ဝုတ္ထံ, ပရိဝုတ္ထံ။ ။ [မောဂ္ဂလ္လာန်နိဿယသစ်အလို "ဝုဋ္ဌ, ပရိဝုဋ္ဌ" ဟု ရှိစေ။] ဝသဓာတ်သည် ဤနေရာ၌ " ပြု= ကျင့် "အနက်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့် ဝသဓာတ် တပစ္စည်းဖြင့် ဝုသိတံကို ဝုတ္ထံဟု ပရိယာယ်ပုဒ်ဖြင့်ဖွင့်ပြီးလျှင် နေခြင်းအနက်ကို မယူစေ လို၍ "ပရိဝုတ္ထံ" ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုကိုတဖန် " ကတံ— စရိတံ "ဟု ဖွင့်သည်၊ "ဝုတ္ထံ— ကျင့်သုံးအပ်"ဟူသော အနက်သည် ထို "ကတံ-စရိတံ"၏ အနက်တည်း၊ ထို့နောက် "နိဋ္ဌိတံ"ဟု တွေ့ရ၏၊ သကမ္မကဓာတ်ကို အကမ္မကဖြင့်ဖွင့်လျှင် ကာရိတ်ဝင်စေမှ မူလ အနက်ကို မှီသည်၊ ထို့ကြောင့် ကတံစရိတံနှင့် ညီမျှအောင် "နိဋ္ဌာပိတံ "ဟု ရှိသင့်၏၊ ကတံ ကရဏီယံ၌လည်း "နိဋ္ဌာပိတံ"ဟု ဖွင့်လတ့်။

ပရိညာ၊ပေ၊ဘာဝနာဝသေန။ ။ဒုက္ခ, သမုဒယ, နိရောဓ , မဂ္ဂသစ္စာတို့သည် အစဉ်အတိုင်း ပရိညာတဗ္ဗ,ပဟာတဗ္ဗ,သစ္ဆိကာတဗ္ဗ,ဘာဝေတဗ္ဗတို့တည်း၊ထို့ကြောင့် မဂ်တပါးလျှင် ပရိညာစသော ကိစ္စအားဖြင့် ၄ ပါးစီ ရှိရကား မဂ် ၄ ပါးအတွက် ကိစ္စ

အားဖြင့်၊ သောဠသဝိဓမ္ပိ - ၁၆ ပါး အပြားရှိသည်လည်း ဖြစ်သော၊ ကိစ္စံ— ကိစ္စကို၊ နိဋ္ဌာပိတံ, ဣတိ အတ္ထော၊ ဟိ-မှန်၊ (တနည်း) ဟိ ယသ္မာ, ပုထုဇ္ဇန ကလျာဏကာဒယော-တို့သည်၊ [ အာဒိဖြင့် သေက္ခပုဂ္ဂိုလ်တို့ကို ယူ။ ] တေံ ကိစ္စံ - ၎င်း မဂ်ကိစ္စကို၊ ကရောန္တိ - ပြုကုန်ဆဲတို့တည်း၊ ခီဏာသဝေါ - သည်၊ ကတကရဏီယော - ပြုအပ်ပြီးသော မဂ်ကိစ္စရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်တည်း၊ တသ္မာ၊ ပေါကတံကရဏီယံတိ-ဟူ၍၊ အဇ္ဈာသိ-ပြီ။

နာပရံ ဣတ္ထတ္တာယာတိ- ကား၊ ဣဒါနိ-၌၊ ပုန- တဖန်၊ ဣတ္ထံဘာဝါယ- ၌တဆဲ့ခြောက်ပါးပြားသောမဂ်ကိစ္စတို့၏ ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာအလို့ငှါ၊ ဧဝံ သောဠသကိစ္စဘာဝါယ-၌ ၁၆ ပါးသော မဂ်ကိစ္စတို့၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ နောက်ထပ်မဂ်ကိစ္စအလို့ငှါ၊ ဝါ-တနည်း၊ ကိလေသက္ခယာယ - ကိလေသာ

၁၆ ပါးဖြစ်၏။ [ "၎င်းတရား, ၎င်းတရားသည် ဒုက္ခ" ဟု ပိုင်းပိုင်းခြားခြားသိခြင်းသည် ပရိညာကိစ္စမည်၏၊ ပဟာနကား ထင်ရှားပြီ၊ မျက်စေ့အောက်မှာရောက်နေသော အရာဝတ္ထုကို မြင်ရသကဲ့သို့ နိဗ္ဗာန်ကိုမြင်ခြင်းသည် သစ္ဆိကိရိယာကိစ္စမည်၏၊ မိမိသန္တာန်၌ မဂ္ဂင်တရားကို ဖြစ်စေခြင်းသည် ဘာဝနာကိစ္စ မည်၏။ ]

ဣတ္ထတ္တာယ။ ။ "ဣတ္ထံဘာဝါယ " ဟူသော ပဌမသံဝဏ္ဏနာဖြင့် ဩပစ္စည်း၏ ဘာဝအနက် ဟောကြောင်းကိုသာ သိရ၏၊ ဣတ္ထံ၏အနက် အာယ၏အနက်ကို မသိရသေး၊ ထို့ကြောင့် ဋီကာ၌"ဣမေပကာရာ ဣတ္ထံ၊ တဗ္ဘာဝေါ၊ တဒတ္ထံ"ဟုဖွင့်သည်၊ တဗ္ဘာဝေါဖြင့် "ဣတ္ထံ + ဘာဝေါ ဣတ္ထတ္တံ"ဟု ပြုစေလို၏၊ တဒတ္ထံဖြင့် အာယသည် တဒတ္ထသမ္ပဒါနတ္ထ သဝိဘတ်၏ ကာရိယ ဟု သိစေသည်။

**ဧဝံသောဠသကိစ္စဘာဝါယ ။** ။ "ဣတ္ထံ၌ ဣမသဒ္ဒါဖြင့် ကတံ ကရဏီယံ၌ ပြခဲ့သော တဆဲ့ခြောက်ပါးသော မဂ်ကိစ္စကို ဖွဲ့ပါ" ဟု သိစေလို၍ ဣတ္ထံဘာဝါယကို "ဧဝံသောဠသကိစ္စဘာဝါယ" ဟု ထပ်၍ အနုသံဝဏ္ဏနာ ဆင့်သည်၊ ၎င်း၌ ဘာဝ၏ အနက်ကို သေချာစွာ မပြကြ၊ မဂ်တပါးရလျှင် နောက်ထပ် မဂ်ကိစ္စ ၄ ပါး တိုးပွား၏၊ "အပရံ နတ္ထိ-နောက်ထပ်မဂ်ကို ဖြစ်စေဘွယ် (တိုးပွားစေဘွယ်) ကိစ္စမရှိ"ဟု ဆိုသဖြင့် "၁၆ ပါး မပြည့်သေးလျှင် နောက်ထပ် တိုးစေဘွယ်ဖြစ်သော မဂ်ကိစ္စကို ဘာဝအနက်" ဟု ယူသင့်၏၊ ယခုသော်ကား ၁၆ ပါး ပြည့်နေပြီ ဖြစ်၍ ထို ၁၆ ပါးထက် တိုးဘို့ရာ မဂ်ကိစ္စမလိုတော့—ဟူလို။

**ကိလေသက္ခယာယဝါ။** ။ဣတ္ထံဘာဝါယကိုပင် တနည်းဖွင့်ပြသော အနုသံဝဏ္ဏနာတည်း၊ မဂ်ကိစ္စတို့တွင် ကိလေသာကို ကုန်စေတတ်သော ပဟာနကိစ္စသည် ပဓာန ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် ပဓာနနည်းအားဖြင့် ပဟာနကိစ္စကိုပြသည်၊ [ ပရိညာဒိသုစ ပဟာန မေဝ ပဓာနံ၊ (ဘာ့ကြောင့်နည်း) တဒတ္ထတ္တာယ ဣတရေသံ (ပရိညာစသော အခြား ကိစ္စတို့မှာ ပဟာနကိစ္စ ဟူသော အကျိုးရှိကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ) ဣတိ အာဟ—ကိလေသက္ခယာယဝါတိ။ ] ရှေ့နည်း၌ ဘာဝအတွက် (၁၆ ချက် မပြည့်သေး

တို့၏ ကုန်ကြောင်း ပဟာနကိစ္စ အကျိုး၄ါ၊ မေ-၏၊ ဝါ - မှာ၊ မဂ္ဂဘာဝနာ ကိစ္စံ-မင်ကို ဖြစ်စေဘွယ်ကိစ္စသည်၊ နတ္ထိ- တော့၊ ဣတိ ့ အဗ္ဘညာသိ-သိတော်မူပြီ၊ [ဘဂဝါ - ကတ္တားလိုက်လာ၍ " အဗ္ဘညာသိ " ဟု ပါ၌ရှိစေ၊ ဋီကာ၌ သုတ္တန်အဋ္ဌကထာတို့မှယူ၍ "နာပရံ ဣတ္ထတ္တာယ" ကို တနည်းဖွင့်သေး၏။]

ဣဒါနိ - ၌၊ ဧဝံ – ဤ ဆိုအပ်ပြီးသော နည်းဖြင့်၊ ပစ္စဝေက္ခဏာညာဏ ပရိဂ္ဂဟိတံ-သိမ်းယူအပ်သော ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ်ရှိသော၊ အာသဝါနံ-တို့၏၊ တံ ခယဉာဏာဓိဂမံ-ထို ကုန်ကြောင်း အရဟတ္တမဂ်ဉာဏ် ရခြင်းကို၊ ဗြာဟ္မဏဿ- အား၊ ဒဿေန္တော-နိဂုံးအဖြစ်ပြင့်ပြတော်မူလိုသည်၊ (ဟုတ္ဂာ)အယံ ခေါ မေ ဗြာဟ္မဏာတိ အာဒိ-ပါဠိရပ်ကို၊ အာဟ-၏၊ တတ္ထ–ထို ပါဠိရပ်၌၊ ဝိဇ္ဇာတိ-ကား၊ အရဟတ္တမဂ္ဂညာဏဝိဇ္ဇာ-အရဟတ္တမဂ်ဉာဏ် ဝိဇ္ဇာကို (အဓိဂတာ၌ စပ်၊) အဝိဇ္ဇာတိ - ကား၊ စတုသစ္စပ္ပဋိစ္ဆာဒိကာ - သစ္စာ ၄ ပါးကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သော၊ အဝိဇ္ဇာ-သည်၊ ( ဝိဟတာ၌ စပ်၊ ) သေသံ- ကြွင်းသော ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဝုတ္တနယမေဝ– သာ၊ အယံ ပန - ဤ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ဝိသေသော-အထူးတည်း၊ အယံ ခေါ မေ၊ ပေ၊ အဟောသိတိ ဧတ္ထ-၌၊(အတ္တော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊) ဗြာဟ္မဏ, ကုက္ကုဋစ္ဆာပကဿ- ၏၊ မုခတုဏ္ဍကေန ပါ-သော်ငှင်း၊ ပေ၊ ပစ္စာဇာတ်-ဖြစ်ခြင်းသည်၊ ဟောတိ ဣဝ-ကဲ့သို့၊ (တထာ-တူ၊) မမ-၏၊ အာသဝါနံ-တို့၏၊ ခယညာဏမုခတုဏ္ဍကေန-ကုန်ကြောင်းဖြစ်သော အရဟတ္တမင်ဉာဏ် တည်းဟူသော နှုတ်သီးဖျားဖြင့်၊ စတုသစ္စပ္ပဋိစ္ဆာဒိကံ-၄ ပါးသော သစ္စာကို ဖုံးလွှမ်းတတ်သော၊ အဝိဇ္ဇဏ္ဍကောသံ-ကို၊ ပဒါလေတွာ-၍၊ တတိယာ-သော၊ အယံအဘိနိဗ္ဘိဒါ-သည်၊ ပေ၊ အဟောသိ-ပြီ၊ ဣတိ- ဤကား အထူးတည်း၊ (အယံ ဝိသေသော-ပြန်လှည့်)၊

ဧတ္တာဝတာ- ဖြင့်၊ (ဘဂဝါ၊) ကိံ –ကို၊ ဒဿေတိ- နည်း၊ ဣတိ- ဤကား အမေးတည်း၊ ဟိ-အဖြေကိုဆိုဦးအံ့၊ ဗြာဟ္မဏ- ဏား၊ သော ကုက္ကုဋစ္ဆာပကော-သည်၊ ပေ၊ တတော-ထိုအုဥ်မှ၊ နိက္ခမန္တော-ထွက်လသော်၊ သကိံ မေဝ-

လျှင် နောက်ထပ်ဖြစ်စေဘွယ်ရှိသော) ကိစ္စ ၄ ပါးလုံးကိုယူ၏၊ ဤနည်း၌ ပဟာနကိစ္စ ကိုသာ ပဓာနနည်းအားဖြင့် ယူ၏၊ ဤသို့ နည်း ၂ ပါး ထူးကြသည်။ [ ဣတ္ထတ္တာယ၌ ဘွေဘာဝနှောင်း၍ နိဂ္ဂဟိတ်ကြေသော်လည်း ဣတ္ထံဘာဝါယ၌ကား ကြေဘွယ်မလို။]

ပစ္စဝေက္ခဏာညာဏပရိဂ္ဂဟိတံ ။ ။ ပဌမဒုတိယဉာဏာဓိဂမံ ဝိယ န ကေဝလံ= ပုဗ္ဗေနိဝါသ, ဒိဗ္ဗစက္ခုဉာဏ်ကိုရတုန်းကကဲ့သို့ တပါးချင်း မဟုတ်၊ ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ် လည်းပါသော အာသဝက္ခယဉာဏ်ကို ရခြင်း–ဟူလို။ [နိဂမနဝသေန ဒဿေန္တော– (ရှေ့၌ သရုပ်ထုတ်၍ ပြပြီးဖြစ်သောကြောင့်) ယခု နိဂုံးအဖြစ်ဖြင့် ပြလိုသည်– ဟူလို။]

တကြိမ်သာလျှင်၊ ဇာယတိ- ဖြစ်ရ၏၊ အဟံပန - ကား၊ပေ၊ပဌမံ - ဒိဗ္ဗစက္ခု, အာသဝက္ခယဉာဏ်တို့မှ ရှေးဦးစွာ၊ တာဝ - အစဉ်အတိုင်း၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသာနုဿတိဉာဏဝိဇ္ဇာယ - ဖြင့်၊ ဇာတော - ဖြစ်တော်မူရပြီ၊ တတော - ထိုမှနောက်၌၊ပေ၊ဇာတော - ပြီ၊ ဧဝံ - လျှင်၊ တီဟိ, ဝိဇ္ဇာဟိ - တို့ဖြင့်၊ တိက္ခတ္တုံ-၃ ကြိမ်၊ ဇာတော-သည်၊ အမှိ- ၏၊ မေ- ၏၊ သာစ ဇာတိ- ထိုဖြစ်ရခြင်းသည်လည်း၊ အရိယာ-မြတ်၏၊ သုပရိသုဒ္ဓါ-အလွန် ထက်ဝန်းကျင်စင်ကြယ်၏၊ ဇာတိဇာတံ-၍အနက်ကို၊ ဒဿေတိ – ၏၊ [စာအုပ်များ၌ ဒဿေသိဟု ရှိ၏၊ ပုဿာတုန်းက ဒဿေတိဟု ရှိသောကြောင့် ၎င်း၌လည်း ဒဿေတိရှိမှ ရှေ့နောက်ညီသည်၊ ဇာတိဖြင့် ရှေ့ကို ပြန်လှည့်နိုင်သောကြောင့်“ဇာဒံ ဒဿေတ်” လုံးလုံး မပါလျှင်လည်း ရှင်း၏။] စ-ဆက်၊ ဧဝံ, ဒဿေန္တော – သော်၊ ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏေန-ဖြင့်၊ အတီတံသဉာဏံ-အတိတ်ဖြစ်သော ခန္ဓာ အာယတန ဓာတ် အဘို့အစု၌ဖြစ်သောဉာဏ်ငှင်း၊ ဒိဗ္ဗစက္ခုနာ-ဖြင့်၊ပစ္စုပ္ပန္နာနာဂတံသဉာဏံ-ပစ္စုပ္ပန်အဘို့အစု,အနာဂတ်အဘို့အစု၌ဖြစ်သောဉာဏ်ငှင်း၊ အာသဝက္ခယေန - ဖြင့်၊ သကလ လောကိယ လောကုတ္တရ ဂုဏံ - အလုံးစုံသော လောကီ လောကုတ္တရာဂုဏ်ငှင်း၊ ဇာတိဝေံ-သို့၊ပေ၊အရိယာယ-၏၊ ဇာတိယာ-ဖြစ်ခြင်းအားဖြင့်၊ ဇေဋ္ဌသေဋ္ဌဘာဝံ–အကြီးဆုံး၏ အမြတ်ဆုံးအဖြစ်ကို၊ ဗြာဟ္မဏာဿ ဒဿေသိ-ပြီ၊ ဇာတိ- တည်း။…အာသဝက္ခယဉာဏကထာ-သည်၊ နိဋ္ဌိတာ။

ဧဝံ ဝုတ္တေ ဝေရဉ္ဇော ဗြာဟ္မဏောတိ - ကား၊ လောကာနုကမ္ပကေန-သတ္တလောကကို သနားစောင့်ရှောက်တော်မူတတ်သော၊ ဘဂဝတာ– သည်၊ ဗြာဟ္မဏံ – ကို၊ အနုကမ္ပမာနေန – သနား စောင့်ရှောက်တော် မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ) ဝိနိဂူဟိတဗ္ဗေပိ - အထူးသဖြင့် လျှို့ဝှက်ထိုက်သည်လည်းဖြစ်သော၊ အတ္တနော-၏၊ အရိယာယ-သော၊ ဇာတိယာ-အားဖြင့်၊ ဇေဋ္ဌသေဋ္ဌဘာဝေ-

တိက္ခတ္တုံဇာတောမှိ။ ။ပဌမဝိဇ္ဇာဖြင့် ရှေးဦးစွာဖြစ်လျှင် မိမိထက် ပုရေဇာတလည်းမရှိ, သဟဇာတလည်းမရှိ၍ အကြီးဆုံးဖြစ်လေပြီ၊ ၃ကြိမ် တိုင်အောင် (သူများအလျင်) ဖြစ်လျှင်ကား အကြီးဆုံးဖြစ်ကြောင်း ပြောဘွယ် မလိုတော့—ဟူလို။

ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏေန စသည်။ ။အတိတ် ကာလချင်း တူသောကြောင့် ပုဗ္ဗေနိဝါသဉာဏ်ဖြင့် အတီတံသဉာဏ်ကိုငှင်း, ပစ္စုပ္ပန်ချင်း တူသောကြောင့် ဒိဗ္ဗစက္ခုဖြင့် ပစ္စုပ္ပန္နံသဉာဏ်, ဒိဗ္ဗစက္ခုအရင်းခံရှိသောကြောင့် အနာဂတံသဉာဏ်ကိုငှင်း ယူသည်။

ပစ္စုပ္ပန္နာနာဂတံသဉာဏံ။ ။ပစ္စုပ္ပန္နံသောစ—ပစ္စုပ္ပန် အဘို့အစုလည်း၊ အနာဂတံသောစ—လည်း၊ ပစ္စုပ္ပန္နာနာဂတံသံ၊ ပစ္စုပ္ပန္နာနာဂတံသေ– ၌+ ဉာဏံ—တည်း၊ ပစ္စုပ္ပန္နာနာဂတံသဉာဏံ—ပစ္စုပ္ပန်အဘို့ကို သိတတ်သော ယထာကမ္မူပဂ စေတောပရိယဉာဏ်နှင့် အနာဂတ်အဘို့ကိုသိတတ်သော အနာဂတံသဉာဏ်။

အဖြစ်ကို၊ ဝိဇ္ဇတ္တယပကာသိကာယ - ဝိဇ္ဇာသုံးပါး အပေါင်းကို ထင်ရှားပြတတ်သော၊ ဓမ္မဒေသနာယ-တရားဒေသနာတော်ဖြင့်၊ ဝုတ္တေ-မိန့်တော်မူအပ်သော်၊ ( အဝေါစဉ် စပ်၊ ဤ အထိ ဝေံဝုတ္တေ၏ အဖွင့်၊ ) ပီတိဝိပ္ဖါရ ပရိပုဏ္ဏဂတ္တစိတ္တော - ပီတိ၏ပြန့်နှံ့ခြင်းဖြင့် ပြည့်သော ကိုယ်စိတ်ရှိသော၊ [ ပီတိယာ ဝိပ္ဖါရော-ပြန့်နှံ့ခြင်း။ ] ဝေရဉ္ဇော, ဗြာဟ္မဏော-သည်၊ ဘဂဝတော-၏၊ အရိယာယဇာတိယာ, တံဇေဋ္ဌသေဋ္ဌဘာဝံ- ကို၊ ဝိဒိတွာ - သိရ၍၊ အဟံ–သည်၊ သဗ္ဗလောကဇေဋ္ဌသေဋ္ဌံ - အလုံးစုံသော သတ္တဝါ အပေါင်းထက် အကြီးဆုံး အမြတ်ဆုံး ဖြစ်တော်မူသော၊ သဗ္ဗ ဂုဏ သမန္နာဂတံ-အလုံးစုံသော ဂုဏ်တို့နှင့် ပြည့်စုံတော်မူသော၊ သဗ္ဗညုံ-အလုံးစုံကို သိတော်မူသော၊ ဤဒိသံနာမ-ဤသို့ ရှုအပ်သည်မည်သော ပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ အညေသံ-အခြားသူ တို့ကို၊ (အဘိဝါဒနဉ်စပ်၊) အဘိဝါဒနာဒိကမ္မံ-ရှိခိုးခြင်းအစရှိသောအမှုကို၊ န ကရောတိ-မပြုတတ်၊ ဣတိ-သို့၊ အဝစံ-ပြောမိပြီ၊ ရေ-အချင်းတို့၊ အညာဏံ-မသိခြင်း၏၊ ဓိ-စက်ဆုပ်ဘွယ်သည်၊ အတ္တုဝတ- ဖြစ်လေစွတကား၊ ဣတိ-သို့၊ အတ္တာနံ-မိမိကို၊ ဂရဟိတွာ-ကဲ့ရဲ့၍၊ အယံ-ဤအရှင်ဂေါတမသည်၊ ဒါနိ-၌၊လောကေ-သတ္တလောက၌၊ အရိယာယ,ဇာတိယာ- ဖြင့်၊ ပုရေဇာတဋ္ဌေန - ရှေးဦးစွာဖြစ်သည်၏အဖြစ်ဟူသော အနက်ကြောင့်၊ ဇေဋ္ဌော-အကြီးဆုံးတည်း၊ သဗ္ဗဂုဏေဟိ-အလုံးစုံသော ဂုဏ်တို့ဖြင့်၊ အပ္ပဋိသမဋ္ဌေန- အတုမရှိသည်၏အဖြစ်ဟူသောအနက်ကြောင့်၊ သေဋ္ဌော-အမြတ်ဆုံးတည်း၊ဣတိ-သို့၊ နိဋ္ဌံ-ဆုံးဖြတ်ခြင်းသို့၊ ဂန္တွာ-ရောက်၍၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ ဇေဋ္ဌော ဘဝံဂေါတမော,သေဋ္ဌော ဘဝံဂေါတမောတိ-ဟူသော၊ တေံ- ဤစကားကို၊ အဝေါစ-ပြီ၊

စ ပန-ထပ်၍ဆက်ဦးအံ့၊ ဝေံ ဝတွာ-လျှောက်ပြီး၍၊ ပုန,ဘဂဝတော-၏၊ တံ ဓမ္မဒေသနံ-ကို၊ အဗ္ဘနုမောဒမာနော-လွန်စွာဝမ်းမြောက်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ အဘိက္ကန္တံ ပေ၊မာတိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ - လျှောက်ပြီ၊ တတ္ထ ထို အဘိက္ကန္တံ

ဤဒိသံ နာမ။ ။ဤ နာမသဒ္ဒါသည် သမ္ဘာဝနာ အနက်ဟောတည်း၊ "ဤကဲ့သို့ ရှုအပ်သည် မည်သော ပုဂ္ဂိုလ်ထူး ပုဂ္ဂိုလ်မြတ်ကို" ဟူလို၊ အဝစံနှင့်တွဲ၍ မိမိကို ကဲ့ရဲ့သော ဂရဟာအနက် ဟု ကြံကြသေး၏၊ ထို ဂရဟာအနက်ဟောနာမသဒ္ဒါရှိရာ၌ကား "သမာပဋိ္ဌဿသိနာမ" စသည်ဖြင့် အနာဂတ် ကြိယာနှင့် တွဲလေ့ ရှိသောကြောင့် "အဝစံ" ဟူသော အတိတ်ကြိယာနှင့် မတွဲသင့်။

ဓိရတ္ထု အညာဏံ။ ။အညာဏာဿာတိ အတ္တော၊ ဓိသဒ္ဒဿ ယောဂတော ဟိ သာမိအတ္တေ ဥပယောဂဝစနံ၊ သက္ကတ၌ "ဓိက်" ဟု ရှိ၏၊ ပါဠိ၌ (က်) ပျောက်၍ ကပ်ဘို့ သရရှိလျှင် (ရ်) လာ၊ ဓိရတ္ထု ဟု ဖြစ်၏၊ သရမရှိလျှင် ဒီဃပြု၍"ဓီ တံ ဇမ္မိ ဇရေ အတ္ထု" စသည် ဖြစ်၏။

ဘောဂေါတမ အစရှိသောပါဠိရပ်၌၊ အယံအဘိက္ကန္တသဒ္ဒေါ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ ခယ သုန္ဒရာဘိရူပ အဗ္ဘနုမောဒနေသု - ခယ အနက်, သုန္ဒရအနက်, အဘိရူပ အနက်, အဗ္ဘနုမောဒနအနက်တို့၌၊ ဒိဿတိ-၏၊ ဝါ-အပ်၏၊ ဟိ-ချဲ့၊ ဘန္တေ-မြတ်စွာဘုရား၊ ရတ္တိ - ညဉ့်သည်၊ အဘိက္ကန္တာ - ကုန်လွန်ပါပြီ၊ ပဌမော ယာမော- သည်၊ နိက္ခန္တော- ထွက်သွားပါပြီ၊ ဘိက္ခုသံဃော- သည်၊ စိရနိ သိန္နော-ထိုင်နေသောရဟန်းသံဃာ၏ ကြာမြင့်သောကာလရှိပါပြီ၊[ စူဠဝါ-ပါဠိမောက္ခဌပနက္ခန္ဓက၊ ] ဣတိ အာဒိသု – ရပ်တို့၌၊ ခယေ – ကုန်ခြင်း အနက်၌၊ ဒိဿတိ-၏၊ အယံ-ဤပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ စတုန္နံ-၄ယောက် ကုန်သော၊ ဣမေသံ ပုဂ္ဂလာနံ-တို့ထက်၊ အဘိက္ကန္တတရောစ-သာလွန်နှစ်သက်အပ်သည် ၎င်း ( သဒ္ဒတ္တ )၊ ဝါ– အလွန် ကောင်းသည်၎င်း ( အမိပ္ပါယတ္တ )၊ ပဏီတ တရောစ-သာလွန်မွန်မြတ်သည်၎င်း၊(ဟောတိ-၏၊)ဣတိ အာဒိသု သုန္ဒရေ-အကောင်းဟူသော အနက်၌၊ (ဒိဿတိ၊) [စတုက္ကင်္ဂုတ္တရ,အသုရဝဂ်၊] ဣဒ္ဓိ ယာ-နတ်တို့၏ တန်ခိုးဖြင့်၎င်း၊ ယသသာ-နတ်တို့၏ အခြွေအရံဖြင့်၎င်း၊ ဇလံ-တောက်ပလျက်၊ အဘိက္ကန္တေန-အလွန် နှစ်သက်အပ်သော ရုပ်ပုံ သဏ္ဌာန် ဖြင့်၎င်း၊ ဝဏ္ဏေန - ကိုယ်အဆင်းဖြင့်၎င်း၊ ဝါ–ကိုယ်ရောင် ကိုယ်ဝါဖြင့်၎င်း၊ သဗ္ဗာ- နှ်သော၊ ဒိသာ - အရပ်မျက်နှာတို့ကို၊ ဩဘာသယံ – ထွန်းလင်းစေ လျက်၊ မေ-၏၊ ပါဒါနိ-တို့ကို၊ ဝန္ဒတိ - ရှိခိုးလာသူကား၊ ကော–အဘယ်သူ နည်း၊ ဣတိ အာဒိသု, အဘိရူပေ-အလွန်လှပသော ရုပ်ပုံသဏ္ဌာန် ဟူသော

အဘိက္ကန္တာ ဘန္တေ ။ ။ အဘိက္ကန္တာ ဝိဂတာတ်အတ္တောတိ အာဟ – ခယေ ဒိဿတီတိ၊ အဘိပုဗ္ဗ , ကမုဓာတ်၊ ဂတိ အနက်ဟော၊ ဤ အဖွင့်အတိုင်း " ကုန်လွန် ပါပြီ " ဟု ပေးကြ၏။ [ စိရံ+နိသိန္နဿ အဿာတိ စိရနိသိန္နော။ ]

အဘိက္ကန္တတရော စ။ ။အတိဝိယ+ကန္တတရော, မနောရမ္မော ( စိတ်၏ မွေ့ လျော်ရာ)၊ တာဒိသော စ သုန္ဒရော ဘဒ္ဒကောနာမ ဟောတီတိ အာဟ–သုန္ဒရေ ဒိဿ တီတိ၊ အဘိပုဗ္ဗ ကမုဓာတ်၊ ဣစ္ဆာ (လိုချင်နှစ်သက်ခြင်း) အနက်ဟော။

ကော မေ ၊ ပေ ၊ အဘိရူပေ။ ။ဤဂါထာသည် သတ္တာ ဒေဝမနုဿာနံ ဂုဏ် တော်၌လည်း ပါခဲ့ပြီ၊ "အဘိက္ကန္တေနာတိ အတိဝိယ+ကန္တေန ကမနီယေန"ဟုဖွင့်၏၊ ကမုဓာတ် ဣစ္ဆာအနက်ပင်၊ သို့သော် အရကောက်ရာ၌ သုန္ဒရအနက်ကို မကောက်ဘဲ "အဘိရူပ" အနက်ကို အရကောက်ရ၏၊ အဘိရူပကိုလည်း "ဥဠာရရူပ (အထက်တန်း ကျသောရုပ်) သမ္ပန္နရူပ (ပြည့်စုံသောရုပ်)"ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုသို့ အဘိရူပ ( လွန်ကဲသော မြင့်မြတ်သောပြည့်စုံသောရုပ်ပုံသဏ္ဌာန်)ကို အရကောက်ရသောကြောင့်၎င်း,ဝဏ္ဏေနကို "ဆဝိဝဏ္ဏေန, သရီရနိဘာယ"ဟု ဖွင့်သောကြောင့်၎င်း အဘိက္ကန္တေနနှင့် ဝဏ္ဏေနကို ဝိသေသနဝိသေသျမလုပ်ဘဲ ခွဲ၍အနက်ပေးလိုက်သည်။

အနက်၌၊ (ဒိဿတိ၊) [ပုရိသဝိမာနဝတ္ထု]၊ အဘိက္ကန္တ ဘန္တေ တိ အာဒိသု, အဗ္ဘနုမောဒနေ-လွန်စွာ ဝမ်းမြောက်ရြင်းအနက်၌၊(ဒိဿတိ၊) [သီလက္ခန်, သာမညဖလသုတ်၊ ] ဣဓ ပန-ဤအဘိက္ကန္တ ဘော ဂေါတမ ဟူသောပါဠိ၌သည်း၊ အဗ္ဘနုမောဒနေယေဝ- ၌သာ၊ ဟောတိ- ၏။

စ-ဆက်၊ ယသ္မာ,အဗ္ဘနုမောဒနေ-၌၊ ဟောတိ၊ တသ္မာ,ဘောဂေါတမ-အရှင်ဂေါတမ၊ သာဓုသာဓု- ကောင်းပါပေစွ, ကောင်းပါပေစွ၊ ဣတိ၊ပေ၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊ စ-ဆက်၊ ဘယေ-ကြောက်ခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ-ကြောက်ရာ အခါ၌၎င်း၊ ကောဓေ-အမျက်ထွက်ခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ-အခါ၌၎င်း၊ ပသံသာယံ-ချီးမွမ်းခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ-အခါ၌၎င်း၊ တုရိတေစ-အဆောတလျင်၌၎င်း၊ ဝါ-အဆောတလျင်ပြုရာ အခါ၌၎င်း၊ ကောတုဟလေ-အသစ်အဆန်း၌၎င်း၊ ဝါ- အသစ်အဆန်းကို မြင်ရာအခါ၌၎င်း၊ အစ္ဆရေ-အံ့ဩခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ - အံ့ဩရာ အခါ၌၎င်း၊ ဟာသေ – ရွှင်လန်းခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ - ရွှင်လန်းရာ အခါ၌၎င်း၊ သောကေ-ဝမ်းနည်းခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ-ဝမ်းနည်းရာ အခါ၌၎င်း၊ ပသာဒေစ- ကြည်ညိုခြင်း

ဘယေ ကောဓေ။ ။"စောရော စောရော-သူခိုး သူခိုး၊ သပ္ပေါ သပ္ပေါ-မြွေမြွေ" ဟု အော်ရာဝယ် ကြောက်လန့်ခြင်းကြောင့်ပြုအပ်သော အာမေဍိတ်တည်း၊"ဝိဇ္ဈ ဝိဇ္ဈ-ထိုးဟ ထိုးဟ၊ ပဟရ ပဟရ–ပုတ်ခတ်ဟ, ပုတ်ခတ်ဟ"ဟု အော်ရာဝယ် စိတ်ဆိုးခြင်းကြောင့် ပြုအပ်သော အာမေဍိတ်တည်း။

ပသံသာယံ, တုရိတေ။ ။"သာဓု သာဓု"ကား ချီးမွမ်းရာ၌ အာမေဍိတ်တည်း၊ "ဂစ္ဆ ဂစ္ဆ–သွားသွား၊ လုနာဟိ လုနာဟိ-ရိတ်ရိတ်"ဟူသော စကားသည် အဆောတလျင် ပြောရာ၌ အာမေဍိတ်တည်း။

ကောတုဟလေ အစ္ဆရေ။ ။ " အထူးအဆန်းကို စုံစမ်းရာ၌ " ဟု အဘိဓာန်ဋီကာယသစ် ပေး၏၊"အာဂစ္ဆ အာဂစ္ဆ–လာ, လာ" ဟူရာဝယ် အသစ် အဆန်းကို ကြည့်ရအောင် ခေါ်ရာ၌ အာမေဍိတ်တည်း၊ "ဗုဒ္ဓေါ ဗုဒ္ဓေါ–ဘုရား, ဘုရား"ဟူသော ဘုရားဂုဏ်တော်ကို စဉ်းစားမိ၍ တအံ့ တဩ ဖြစ်ရာ၌ အာမေဍိတ်တည်း။

ဟာသေ သောကေ။ ။"အဘိက္ကမထာယသ္မန္တော, အဘိက္ကမထာယသ္မန္တော-အရှင်ဘုရားတို့.... ရှေ့ ကြွကြွပါဘုရား, အရှင်ဘုရားတို့.... ရှေ့ ကြွကြွပါဘုရား"ဟူရာ၌ ရွှင်လန်း ဝမ်းမြောက်ခြင်းကြောင့် အာမေဍိတ်တည်း၊ "ကဟံ ဧကပုတ္တက , ကဟံ ဧကပုတ္တက–တယောက်ထည်းသော သားကလေးရယ် ဘယ်မှာလဲကွယ်, တယောက်ထည်းသော သားကလေးရယ် ဘယ်မှာလဲကွယ် " ဟု ငိုရာ၌ ဝမ်းနည်း ပူဆွေးသော အာမေဍိတ်တည်း။

ပသာဒေ။ ။"အဟောသုခံ အဟောသုခံ-ဩော် ချမ်းသာလေစွ,ဩော် ချမ်းသာလေစွ" ကား စိတ်ကြည်နူးသော အာမေဍိတ်တည်း၊ ပသာဒေစ၌ "စသဒ္ဒေါ အဝုတ္တ

ဒ္ဒိုင်း၊ဝါ-ကြည်ညိုရာအခါ၌ဒိုင်း၊ ဗုဓော-ပညာရှိသည်၊ အာမေဍိတံ-အာမေဍိတ်ကို၊ ကရေ- ပြုရာ၏၊ ဣတိ ဣမိနာ လက္ခဏေန - ဤ သဒ္ဒါလက္ခဏာဖြင့်၊ ဣဓ - ဤ အဘိက္ကန္တံ ဘောဂေါတမ ဟူသောပါဌ်၌၊ ပသာဒဝသေန - ဒိုင်း၊ ပသံသာဝသေနစ - ဒိုင်း၊ အယံ - ဤ အဘိက္ကန္တသဒ္ဒါကို၊ ဒွိက္ခတ္တုံ - ၂ ကြိမ်၊ ဝုတ္တော - ဆိုအပ်ပြီ၊ ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗော။

အထဝါ-ထို့ပြင် တနည်းကား၊ အဘိက္ကန္တံ အဘိက္ကန္တံ-ကား၊ အတိဣဋ္ဌံ-အလွန်အလိုရှိအပ်ပါပေစွ၊ အတိမနာပံ- အလွန်မြတ်နိုးအပ်ပါပေစွ၊ အတိသုန္ဒရံ-အလွန်ကောင်းပါပေစွ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ တတ္ထ - ထို အဘိက္ကန္တသဒ္ဒါ ၂ ပါးတို့တွင်၊ ဧကေန-သော၊ အဘိက္ကန္တသဒ္ဒေန- ဖြင့်၊ ဒေသနံ-ဒေသနာကို၊ ထောမေတိ- ချီးမွမ်း၏၊ ဧကေန-သော၊ (အဘိက္ကန္တသဒ္ဒေန) အတ္တနော-၏၊ ပသာဒံ - ကို၊ ( ထောမေတိ၊ ) ဟိ- ထင်ရှားပြဦးအံ့၊ ဧတ္ထ - ဤ အဘိက္ကန္တံ ဘော ဂေါတမဟူသော ပါဌ်၌၊ အယံ- ဤ ဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ အဓိပ္ပါယော-ပုဏ္ဏားရဲ့အလိုတည်း၊ ဘော ဂေါတမ - မ၊ ဘောတော ဂေါတမဿ - ၏၊ ယဒိဒံ ( ယာ + အယံ) ဓမ္မဒေသနာ - သည်၊ ( အတ္ထိ, ဓမ္မဒေသနာသဒ္ဒါတံ-သော၊ တံ ဝစနံ-ကို၊) အဘိက္ကန္တံ-အလွန် နှစ်သက်အပ်ပါပေစွ၊ ဝါ- အလွန်ကောင်းပါပေစွ၊ ဘောတော ဂေါတမဿ,ဓမ္မဒေသနံ-ကို၊ အာဂမ္မ-ရောက်၍၊ ဝါ-စွဲ၍၊ မမ-၏၊ ယဒိဒံ (ယော+အယံ) ပသာဒေါ-သည်၊ (အတ္ထိ, တံ ပသာဒံ-ကို၊) အဘိက္ကန္တံ- စွ၊ ဝါ- စွ၊ ဣတိ-ဤကား ပုဏ္ဏားရဲ့အလိုတည်း။

သမုစ္စယတ္ထော"ဟုဖွင့်သောကြောင့်"ပါပေါပါပေါ-လူယုတ်မာ,လူယုတ်မာ"ဟူသော ဂရဟာအာမေဍိတ်, " အဘိရူပက အဘိရူပက— တယ် ချောကွာ, တယ် ချောကွာ " ဟူသော အသမ္မာန (မမြတ်နိုး၍ လှောင်ပြော-ပြောအပ်သော) အာမေဍိတ်စသည် ယူ။

**အာမေဍိတံ**။ ။အာ+မေဍ-ဥမ္မာဒေ၊ အာမေဍေန-ရူးသူသည်+ အာစရိယတေ-ပြုကျင့်အပ်၏၊ ဣတိ , အာမေဍိတံ = အရူးသည် ထပ်၍ ထပ်၍ ပြောအပ်သော စကားကဲ့သို့, အထပ်ထပ် ပြောအပ်သောစကားကို "အာမေဍိတ်" ဟု ခေါ်၏။

**အထဝါ**။ ။နယိဒံ အာမေဍိတဝသေန ဒွိက္ခတ္တုံ ဝုတ္တံ (အနက်တပါးထည်းကိုပင် အာမေဍိတ်အားဖြင့် ၂ ကြိမ်ဆိုအပ်သည် မဟုတ်၊ ) အထခေါ အတ္ထဒ္ဒယဝသေနာဘိ (အမှန်မှာ အနက် ၂ မျိုးဖြစ်၍ ကိုယ့်အနက်နှင့်ကိုယ် ဆိုအပ်သောစကားဟု) ဒဿေန္တော အထဝါတိ အာဒိမာဟ။ [နိဿယအနက်ပေးရာ၌ "အဘိက္ကန္တံ အဘိက္ကန္တံ—အဘိက္ကန္တံ ဟူသောစကားကို၊ ဝစနံ အပေက္ခိတွာ-ဝစနံပုဒ်ကိုငဲ့၍၊ နပုံသကလိင်္ဂဝသေန ဝုတ္တံ၊ တံ ပန ဘဂဝတော ဝစနံ—ထိုဘုရား စကားတော်ဟူသည်၊ ဓမ္မဿ ဒေသနာ-ဓမ္မဒေသနာတည်း၊ ဣတိကတွာ—ဤသို့ပြု၍၊ ဝုတ္တံ—၊ပေ၊ဒေသနာတိ' ဟူသော အဖွင့်အတိုင်း ပဌမနည်း အနက်ပေးသည်။]

[(တနည်း၊) ဘော ဂေါတမ, ဘောတော ဂေါတမဿ, ယဒိဒံ (ယာ+အယံ) ဓမ္မဒေသနာ– သည်၊ (အတ္ထိ, အယံ ဓမ္မဒေသနံ- ကို၊ ) အဘိက္ကန္တံ (အဘိက္ကန္တာ)- စွ၊ ဝါ- စွ၊ ဘောတော ဂေါတမဿ ဓမ္မဒေသနံ အာဂမ္မ မမ, ယဒိဒံ (ယော + အယံ) ပသာဒေါ- သည်၊ (အတ္ထိ, အယံ ပသာဒေါ- ကို၊ ) အဘိက္ကန္တံ (န္တော)- စွ၊ ဣတိ- ဤကား ပုဏ္ဏား၏အလိုတည်း။]

ဝါ-တနည်းကား၊ ဘဂဝတောဃေဝ-၏ပင်၊ ဝစနံ-ကို၊ ဒွေဒွေ အတ္ထေ-၂ပါး ၂ပါးသော အနက်တို့ကို၊ သန္ဓာယ-၍၊ ထောမေတိ - ၏၊ ဘောတော ဂေါတမဿ-၏၊ ဝစနံ-ကို၊ ဒေါသနာသတော- ရာဂ အစရှိသောအပြစ်တို့ကို ဖျက်တတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အဘိက္ကန္တံ၊ ဂုဏာဓိဂမနတော – သီလ စသောဂုဏ်ကို ရစေတတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အဘိက္ကန္တံ၊ တထာ – ထို အတိုင်းပင်၊ သဒ္ဓါဇနနတော – သဒ္ဓါကို ဖြစ်စေတတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့် ၎င်း၊ ပညာဇနနတော-၎င်း၊(အဘိက္ကန္တံ)၊ သာတ္ထတော-အနက်အဓိပ္ပါယ်နှင့် ပြည့်စုံသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် ၎င်း၊ သဗျဉ္ဇနတော – သဒ္ဒါနှင့် ပြည့်စုံ သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ (အဘိက္ကန္တံ)၊ ဥတ္တာနပဒတော - ပေါ်လွင်သောပုဒ် ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ဂမ္ဘီရတ္ထတော - နက်နဲသော အနက်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ကဏ္ဏသုခတော-နား၌ချမ်းသာသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊

**တနည်း။** ။အတ္ထမတ္တဒဿနံ ဝါ တော်-ဤအဘိက္ကန္တသဒ္ဒါသည် အနက်သာမည်ကို ပြသော သဒ္ဒါဖြစ်၏၊ တသ္မာ, အတ္ထဝသေန– အဘိဓေယျ ဟောနက်၏ လိင်္ဂဝိဘတ်နှင့် စပ်သဖြင့်၊ လိင်္ဂဝိဘတ္တိဝိပရိဏာမော ဝေဒိတဗ္ဗော– လိင်္ဂဝိဘတ်ပြောင်းလဲပုံကို သိပါ၊ [ ယဒိဒံပုဒ်၌ လိင်္ဂဝုစ်အပြောင်းအလွဲ ပြုရသကဲ့သို့တည်း။ ] ဤအဖွင့်ကို မှီး၍ ဒုတိယ တနည်း အနက်ပေးထားသည်။

**တထာ သဒ္ဓါဇနနတော။** ။ဤ သဒ္ဓါဇနနတော – စသော ၂ ဝါကျ ကား ဂုဏာဓိဂမနတော၏ ဂုဏ်ကို သရုပ်ဖေါ်ပြသော စကားတည်း၊ ဂုဏာဓိဂမန၌"ဂုဏ" ဟူသည် သဒ္ဓါ ပညာ ဂုဏ်တည်း– ဟူလို၊ လောကီ ဂုဏ်တို့တွင် သဒ္ဓါသည် ပဓာန, လောကုတ္တရာ ဂုဏ်တို့တွင် ပညာသည် ပဓာနတည်း။ [ တထာဖြင့် အဘိက္ကန္တံပုဒ်ကို ပြန်ညွှန်းသည်။]

**သာတ္ထ စသည်။** ။သီလ စသော အနက်နှင့် ပြည့်စုံသောကြောင့် သာတ္ထဖြစ်၏၊ သဘာဝနိရုတ္တိ (မာဂဓဘာသာ) ဖြစ်၍ သဒ္ဒါစကားလုံး ပြည့်စုံသောကြောင့် သဗျဉ္ဇန ဖြစ်၏၊ သဒ္ဒါအားဖြင့် လွယ်ကူသောကြောင့် ဥတ္တာနပဒဖြစ်၏၊ သိမ်မွေ့ နက်နဲသော အဓိပ္ပါယ်ရှိသောကြောင့် ဂမ္ဘီရတ္ထ ဖြစ်၏၊ စကားအသုံးအနှုန်း ပြေပြစ် ညက်ညော ချောမော နူးညံ့သောကြောင့် ကဏ္ဏသုခဖြစ်၏၊ ပြန့်ပြော ကျယ်ဝန်း သန့်ရှင်းစင်ကြယ် နှစ်သက်ဘွယ်ကောင်းသောကြောင့် ဟဒယင်္ဂမန ဖြစ်၏။

ဝါ– နားဝင်ချိုသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ၡင်း၊ ဟဒယင်္ဂမနတော – စိတ်နှလုံး၌ သက်ရောက်ခြင်း ကြောင့်ၡင်း၊ ဝါ - နှလုံး အသဲ စွဲလောက်ခြင်းကြောင့်ၡင်း၊ အနုတ္တုဠက္ခိသနတော မိမိကို မမြှောက်ပင့်ခြင်း ကြောင့်ၡင်း၊ အပရဝမ္ဘန တော-သူတပါးကို မရှုံ့ချခြင်းကြောင့်ၡင်း၊ ( အဘိက္ကန္တံ၊ ) ကရုဏာသီတလ တော- ကရုဏာတော်ဖြင့် အေးမြသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ၡင်း၊ ပညာဝဒါတ တော - ပညာဖြင့် ဖြူစင်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်ၡင်း၊ (အဘိက္ကန္တံ )၊ အာပါတ ရမဏီယတော – သောတဒွါရသို့ ရှေးရှု ရောက်လသော် မွေ့လျော်ဘွယ် ကောင်းသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ၡင်း၊ ဝိမဒ္ဒက္ခမတော – နှိပ်နယ်ခြင်းကို ခံနိုင် သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ၡင်း၊ ( အဘိက္ကန္တံ၊ ) သုယျမာနသုခတော- ကြားနာ အပ်သည်ရှိသော် နားကို ချမ်းသာ စေတတ်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်ၡင်း၊ ဝိမံသိယမာနဟိတတော – စူးစမ်းအပ်သည်ရှိသော် စီးပွားရှိသည်၏ အဖြစ် ကြောင့်ၡင်း၊ ( အဘိက္ကန္တံ )၊ ဧဝမာဒီဟိ - ဤသို့ အစရှိသော အနက် တို့ဖြင့်၊ ယောဇေတဗ္ဗံ- ယှဉ်စေရာ၏၊

တတော-ထိုအဘိက္ကန္တံ ဘော ဂေါတမဟူသောစကားရပ်မှ၊ပရမ္ပိ-နောင်၌ လည်း၊ စတူဟိ- ၄ ပါးကုန်သော၊ ဥပမာဟိ – ဥပမာတို့ဖြင့်၊ ဒေသနံယေဝ- တော်ကိုပင်၊ ထောမေတိ – ၏၊ တတ္ထ - ထို ဥပမာစကားရပ်၌၊ နိကုဇ္ဇိတန္တိ- ကား၊ အဓောမုခထပိတံ - အောက်၌ မျက်နှာဝရှိအောင် ထားအပ်သော အိုးခွက်ကို၊ ဝါ-တနည်း၊ ဟေဋ္ဌာမုခဇာတံ-အောက်၌ မျက်နှာဝရှိသည်ဖြစ်၍ ဖြစ်သော အိုးခွက်ကို၊ ဝါ - အလို အလျောက် မှောက်နေသော အိုးခွက်ကို၊

**အနုတ္တုဠက္ခိသနစသည်**။ ။မာန-အတိမာနအသံ မပါသောကြောင့် အနုတ္တုဠက္ခိသန ဖြစ်၏၊ ခက်ထန် ကြမ်းတန်းမှုကို နှိမ်ထားပြီး ဖြစ်သောကြောင့် အပရဝမ္ဘန ဖြစ်၏၊ ကြားနာသူတို့၏ ရာဂအပူမီးကို ငြိမ်းစေနိုင်သောကြောင့် ကရုဏာသီတလ ဖြစ်၏၊ ကိလေသာမှောင်ကို ပယ်နိုင်သောကြောင့် ပညာဝဒါတ ဖြစ်၏၊ ကရဝိက်သံကဲ့သို့ သာယာခြင်းကြောင့် အာပါတရမဏီယ ဖြစ်၏၊ ရှေ့စကားနှင့် နောက်စကားဆန့်ကျင် ဘက်မပါသောကြောင့် ဝိမဒ္ဒက္ခမဖြစ်၏၊ (ကပ်သီးကပ်သတ် မေးမြန်းသော အားဖြင့် အကြိတ် အနယ် ခံနိုင်၏ – ဟူလို )၊ အာပါတရမဏီယကြောင့်ပင် သုယျမာနသုခ, ဝိမဒ္ဒက္ခမကြောင့်ပင် ဝိမံသီယမာနဟိတ ဖြစ်၏။

နိကုဇ္ဇိတံ။ ။ [ကုဇ္ဇဓာတ်သည် အဓောမုခီကရဏ ( အောက်၌ မျက်နှာပြုခြင်း၊) အနက်ကို ဟော၏၊ နိ ဥပသာရလည်း “ နိရ ” မှ ဖြစ်သော နိမဟုတ်သောကြောင့် ထို့နောက်၌ ဋ္ဌေဘော်မလာရ၊ ဥတ္တုဋ္ဌေယျ၌ကား ဥဒ် ဥပသာရ နောက်ဖြစ်၍ ( ဒ် ) အစား ဋ္ဌေဘော်လာရသည်။ ] အဓောမုခ ထပိတံ၌ “ထပိတံ–ထားအပ်” ဟူသော စကားကိုထောက်၍ “တစုံတယောက်က တမင်လာ၍ မှောက်ထားအပ်သော အိုးခွက်”

ဥက္ကုဋ္ဌေယျာတိ-ကား၊ ဥပရိမုခံ – အထက်၌ မျက်နှာ၁၀ ရှိသည်ကို၊ ကရေယျ သေယျထာပိ-ပြုရာသကဲ့သို့ရင်း၊ ပဋိစ္ဆန္နန္တိ - ကား၊ တိဏပဏ္ဏာဒိ ပဋိစ္ဆာဒိတံ-မြက်,သစ်ရွက် အစရှိသည်တို့ဖြင့် ဖုံးထားအပ်သောအရာဝတ္ထုကို၊ ဝိဝရေယျာတိ - ကား၊ ဥဃ္ဃါဋေယျ သေယျထာပိ – ဖွင့်ပြရာသကဲ့သို့ရင်း၊ မူဠှဿာတိ-ကား၊ ဒိသာမူဠှဿ-အရပ်မျက်နှာတို့၌ တွေဝေနေသူအား၊ ဝါ - မျက်စိလည် လမ်းမှားနေသူအား၊ မဂ္ဂံ အာစိက္ခေယျာတိ - ကား၊ ဟတ္ထေ-၌၊ ဝါ-ကို၊ ဂဟေတွာ-၍၊ ဧသ-ဤလမ်းကား၊ မဂ္ဂေါ- လမ်းဖြောင့် လမ်းမှန်တည်း၊ ဣတိ,ဝဒေယျ သေယျထာပိ–ပြောပြရာသကဲ့သို့ရင်း၊ အန္ဓကာရေတိ-ကာဠ ပက္ခစာတုဒ္ဒသီ အဍ္ဎရတ္တ ဃနဝနသဏ္ဍ မေဃပဋလေဟိ - လဆုတ် ပက္ခ ၁၄ ရက်, ညဥ့်ထက်ဝက် သန်းခေါင်, တခဲနက်သော တောအုပ်, မိုးတိမ်လွှာ

ဟု သိရ၏၊ [ ကေနစိ အဓောမုခံ ထပိတံ– (ဋီကာ)၊ "နိကုဇ္ဇိယတေ–မှောက်ထားအပ်၏၊ ဣတိ နိကုဇ္ဇိတံ" ဟု ကမ္မသာဓ်ပြု၊ ] ဟေဋ္ဌာမုခဇာတံဖြင့် "သူ့ဘာသာ မှောက်ပြီး ဖြစ်နေသော အိုးခွက်" ဟု သိရ၏၊ [သဘာဝေနေဝ ဟေဋ္ဌာမုခဇာတံ၊– (ဋီကာ)၊ "နိကုဇ္ဇတိ –အလိုလို မှောက်နေ၏၊ ဣတိ နိကုဇ္ဇိတံ"ဟု ကတ္တုသာဓ်ပြု။]

မှတ်ချက်။ ။ဤသို့ ၂နည်းပြရခြင်းမှာလည်း နောက် ဥပမေယျ၌ "သဒ္ဓမ္မဝိမုခံ, အသဒ္ဓမ္မေပတိဋ္ဌိတံ"ဟု အနက် ၂မျိုးပြလိုသောကြောင့်တည်း၊ သဒ္ဓမ္မဝိမုခ – သူတော်တရားမှ မျက်နှာ ပြောင်းပြန် ဖြစ်နေခြင်းသည် ဟေဋ္ဌာမုခဇာတ အိုးခွက်နှင့် တူ၏၊ အသဒ္ဓမ္မေပတိဋ္ဌိတံ – မသူတော်တရား၌ တည်နေခြင်းသည် အဓောမုခထပိတအိုးနှင့် တူ၏၊ ဥပမာန ၂ခုနှင့် ဥပမေယျ ၂ ခုကို အစဉ်အတိုင်း မဟပ်ရဘဲ ထိုက်သလို ဟပ်ရ သောကြောင့် ယထာသချ်နည်းဟု မမှတ်ဘဲ ယထာရဟနည်းဟု မှတ်။ [ ဟေဋ္ဌာမုခ ဇာတတာယ သဒ္ဓမ္မဝိမုခံ,အဓောမုခထပိတတာယ အသဒ္ဓမ္မေ ပတိဋ္ဌိတန္တိ ဧဝံ ပဒဒွယံ ယထာရဟံ ယောဇေတဗ္ဗံ, န ယထာသချံ၊–ဋီကာ။]

ဥဃ္ဃာဋေယျ။ [ဥပုဗ္ဗ,စုရာဒိ ဃဋ ဓာတ်သည် ဖွင့်လှစ်ခြင်း အနက်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့် ဝိပုဗ္ဗ ဝရဓာတ်ကို "ဥဃ္ဃာဋေယျ"ဟု ဖွင့်သည်။]

မူဠှဿ။ ။မုဟဓာတ် တပစ္စည်းဖြင့်"မုဠှော"ဟု ပြီးသင့်သော်လည်း သဒ္ဒါကျမ်းတို့၌ ဒီဃပြု၍ "မူဠှ"ဟု ရှိ၏၊ မုယှတိ–တွေဝေတတ်၏၊ ဣတိ မူဠှော၊ အရှေ့ဘက်ကို တောင်ဘက်ထင်, တောင်ကို အနောက်ထင်, စသည်ဖြင့် အထင်မှားနေသူကို "ဒိသာ မူဠှ"မြန်မာလို"မျက်စိလည်သူ"ဟု ခေါ်၏။

အန္ဓကာရေ။ ။ "အန္ဓ–မျက်စိ မမြင်အောင် (ကာဏ်းအောင်) + ကရောတိ– ပြုတတ်၏"နှင့် အညီ အမှောင်ကို "အန္ဓကာရ" ဟု ခေါ်၏၊ လဆုတ် ၁၄ ရက်, ထိုရက်တွင်လည်း ညဥ့်သန်းခေါင်အချိန်, သစ်ပင်တို့ဖြင့် ပိတ်နေသော တခဲနက်တောအုပ်, မိုးတိမ်အုပ်ခြင်း, ဤ ၄ ပါးကို အင်္ဂါ ၄ ပါး ဟု ခေါ်၏၊ ထို အင်္ဂါ ၄ ပါးစုံသော အမှောင်သည် ရှိးရှိးအမှောင်တို့တွင် အမှောင်ဆုံးတည်း။

တို့ဖြင့်၊ စတုရင်္ဂတမသိ- ၄ ပါးသောအင်္ဂါရှိသော အမိုက်မှောင်၌၊(ခါရေယျ ၌စပ်၊ ) အယံ - ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ တာဝ - အမိပ္ပါယယောဇနာမှ ရှေးဦး စွာ၊ အနုတ္တာနပဒတ္ထော—မပေါ်လွင်သောပုဒ်တို့၏ အနက်တည်း။

ပန-ကား၊ အယံ - တံ့ကား၊ အမိပ္ပါယယောဇနာ - အမိပ္ပါယ်ကို ယှဉ်စေ ခြင်းတည်း၊ ကောစိ-တစုံတယောက်သည်၊ နိကုဇ္ဇိတံ—မှောက်ထားအပ်သော အိုးခွက်ကို၊ ဝါ-အလို့ အလျောက် မှောက်နေသော အိုးခွက်ကို၊ ဥက္ကုဇ္ဇေယျ ယထာ-လှန်ပြရာသကဲ့သို့၊ ဧဝံ-အတူ၊ သဒ္ဓမ္မဝိမုခံ—သူတော်ကောင်း တရားမှ မျက်နှာလွှဲဖြစ်သော၊ အသဒ္ဓမ္မေ— မသူတော်တို့၏ တရား၌၊ ပတိဋ္ဌိတံ - တည် သော၊ မံ—တပည့်တော်ကို၊ အသဒ္ဓမ္မာ-မသူတော်တို့၏တရားမှ၊ ဝုဋ္ဌာပေန္တေ န—ထစေတော်မူသည်လည်းဖြစ်သော၊(ဘောတာ ဂေါတမေန၌စပ်၊နောက် အန္တပစ္စယန္တ ၃ ပုဒ်လည်း နည်းတူ၊) ပဋိစ္ဆန္နံ—မြက်,သစ်ရွက် အစရှိသည် တို့ဖြင့် ဖုံးလွှမ်းအပ်သော အရာဝတ္ထုကို၊ ဝိဝရေယျ ယထာ—ဖွင့်ပြရာသ ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ ကဿပဿ ဘဂဝတော-ကဿပဘုရားရှင်၏သာသနန္တရဓာနာ- သာသနာတော် ကွယ်ရာ အခါမှ၊ ပဘုတိ - စ၍၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ ဂဟနပ္ပဋိစ္ဆန္နံ- မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိတည်းဟူသောတောရှုပ်သည်ဖုံးထားအပ်သော၊ သာသနံ-ကို၊ဝိဝရ န္တေန- ဖွင့်ပြတော်မူသည်လည်း ဖြစ်သော၊ မူဠှဿ- အား၊ မဂ္ဂံ- လမ်းဖြောင့် လမ်းမှန်ကို၊ အာစိက္ခေယျ ယထာ,ဧဝံ, ကုမ္မဂ္ဂ မိစ္ဆမဂ္ဂ ပ္ပဋိပန္နဿ-စက်ဆုပ် အပ်သော လမ်းခရီး, မှားယွင်းသောလမ်းခရီး၌ သွားနေသော၊ မေ-အား၊ သဂ္ဂမောက္ခမဂ္ဂံ-နတ်ပြည်လမ်း နိဗ္ဗာန်လမ်းကို၊ အာစိက္ခန္တေန-ပြောပြတော် မူသည်လည်းဖြစ်သော၊ အန္ဓကာရေ-၌၊ တေလပဇ္ဇောတံ ဆီမီးတန်ဆောင်

**မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ ဂဟနပဋိစ္ဆန္နံ**။ ။ယူခြင်းအနက်ကို ဟောရာ၌ သက္ကတဝယ် "ဂြဟ" ဟု ရှိရကား ရကြောင့် နကို ဏပြု၍ "ဂဟဏ" ဟု ဖြစ်၏၊ တောအရှုပ်ကိုဟောရာ၌ ကား "ဂါဟ= ဂါဟူ (ဝိလောထနေ)—မွှေနှောက်ခြင်း" ဟူသောဓာတ်, ယုပစ္စည်း, အာကို ရဿပြု၍ပြီးရကား"ဂဟန" ဟု ဖြစ်ရသည်၊ ဂါဟတိ—မွှေနှောက်ရှုပ်ထွေး၏၊ ဣတိ ဂဟနံ။ [မိစ္ဆဒိဋ္ဌိသခ်ါတံ+ဂဟနံ၊ တေန ပဋိစ္ဆန္နံ။]

**ကုမ္မဂ္ဂ မိစ္ဆာမဂ္ဂ**။ ။ ကုစ္ဆိတော + မဂ္ဂေါ ကုမ္မဂ္ဂေါ = အပါယ်ရောက်ကြောင်း အကုသိုလ်အားလုံးတည်း၊ မိစ္ဆာ ( ဝိပရီတော ) + မဂ္ဂေါ မိစ္ဆာမဂ္ဂေါ = မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိ, မိစ္ဆာသက်ပ္ပစသော သမ္မာမဂ္ဂင်၏ ပြောင်းပြန်ရှစ်ပါးတည်း။

**တေလပဇ္ဇောတံ**။ ။ပကာရေန+ ဇောတတီတိ ပဇ္ဇောတော — အပြားအားဖြင့် တောက်ပသောမီးရောင်၊ တေလသန္နိဿယော-ဆီဟူသော မှီရာရှိသော+ပဇ္ဇောတော တေလပဇ္ဇောတော၊ သန္နိဿယပုဒ်ကြေ၊ ထောပတ်စသည် မှီရာရှိသော မီးရောင်သည် ဆီမီးလောက် အရောင်မတောက်၊ ထို့ကြောင့် "တေလ ပဇ္ဇောတံ" ဟု ဆိုသတတ်။

ကို၊ ခါရေယျယထာ-ညှိထွန်း ဆောင်ပြုရာသကဲ့သို့၊ ဧဝံ, မောဟန္ဓကာရေ-၌၊ နိမုဂ္ဂဿ – နစ်မြုပ်နေသော၊ ဝါ- သည်ဖြစ်၍၊ ( အပဿတောစပ်၊ ) ဗုဒ္ဓါဒိ ရတနတ္တယ ရူပါနိ-ဘုရား အစရှိသော ရတနာ ၃ ပါးတည်းဟူသော အဆင်းတို့ကို၊ အပဿတော - မမြင်ရသော၊ မေ- ၏၊ (မောဟစပ်၊) တပ္ပဋိစ္ဆာဒက မောဟန္ဓကာရ ဝိဒ္ဓံသက ဒေသနာပဇ္ဇောတံ - ထို အဆင်းတို့ကို ဖုံးလွှမ်းထား သော မောဟတည်းဟူသော အမိုက်မှောင်ကို ဖျက်ဆီးတတ်သော ဒေသနာ တော်ရောင်ကို၊ ဓာရေန္တေန- ဆောင်ပြုတော်မူသည်လည်း ဖြစ်သော၊ [ဓာရ ဏေနဟု မှုကွဲရှိ၏၊ ဝုဋ္ဌာပေန္တေနစသော ရှေ့ ၃ ပုဒ်နှင့် အလားတူ ဓာရေ န္တေနဟု ရှိသောပါဠ်သာ ပါဠ်မှန်၊ ] ဘောတာ ဂေါတမေန - သည်၊ မယှံ- အား၊ ဧတေဟိ ပရိယာယေဟိ-ဤ ပရိယာယ်တို့ဖြင့်၊ပကာသိတတ္တာ-ကြောင့်၊ အနေကပရိယာယေန- ဖြင့်၊ ဝါ- ဖြင့်၊ ဓမ္မော- ကို၊ ပကာသိတော - ထင်ရှား ပြတော်မူအပ်ပါပေပြီ၊ ဣတိ- ကား၊ (အဓိပ္ပါယ ယောဇနာ- တည်း။)

ဧဝံ– သို့၊ ဒေသနံ, ထောမေတွာ- ပြီး၍၊ ဣမာယ ဒေသနာယ—ကြောင့်၊ ရတနတ္တယေ-ရတနာ ၃ပါးအပေါင်း၌၊ ပသန္နစိတ္တော – ကြည်ညိုသော စိတ် ရှိသည်၊ (ဟုတွာ)၊ ပသန္နာကာရံ - ကြည်ညိုသူတို့ ပြုထိုက်သော ဆည်းကပ် မှုကို၊ ကရောန္တော - ပြုလိုသည်၊ ( ဟုတွာ ) ဧသာဟန္တိအာဒိံ - စကားကို၊ အာဟ၊ တတ္ထ-၌၊ ဧသာဟန္တိ-ကား၊ ဧသောအဟံ- သည်၊ ဘဝန္တံ ဂေါတမံ သရဏံ ဂစ္ဆာမီတိ- ကား၊ ဘဝန္တံ ဂေါတမံ – ကို၊ သရဏန္တိ - ကိုးကွယ်ရာ

ဧတေဟိ ပရိယာယေဟိ။ ။ နိကုဇ္ဇိတဥက္ကုဇ္ဇန ဥပမာ, ပဋိစ္ဆန္နဝိဝရဏ ဥပမာ စသော နည်းပရိယာယ်တို့ဖြင့်၊ ဝါ–အရသရူပတာ စသည်တို့၏ ပုဒ္ဓါးရည်ရွယ်ချက်မှ အခြားတမျိုးအားဖြင့် ကိုယ်တော်မှာရှိကြောင်းကို ပြသော နည်းပရိယာယ် , ဈာန် တည်းဟူသော ဒိဗ္ဗဝိဟာရ ရှိကြောင်းကိုပြသော နည်းပရိယာယ်,ဝိဇ္ဇာ ၃ ပါး ထင်ရှား ပြရင်း သဗ္ဗညုတဂုဏ်တော်ကို ထင်ရှားစေသောနည်းပရိယာယ်, ဤသို့ အမျိုးမျိုးသော နည်းပရိယာယ်တို့ဖြင့်။

ပသန္နာကာရံ။ ။ပသန္နေဟိ – ကြည်ညိုသူတို့သည် + ကာရော – ပြုထိုက်သော ရိုသေမှုတည်း၊ ပသန္နာကာရော–မှု၊ "ပသန္နကာရံ" ဟု ဖြစ်သင့်လျက် ဝါစောသိလိဋ္ဌ ဒီဃပြုထားသည်၊ [ပသန္နေဟိ+ကာတဗ္ဗ+သက္ကာရံ–ဋီကာ။]

သရဏန္တိ ဂစ္ဆာမိ ။ ။ " သရဏံ ဂစ္ဆာမိ "၌ သရဏံဝယ် ဣတိကြေသည် ဟု ပြလို၍-"သရဏန္တိ"ဟု ဖွင့်သည်၊ မှန်၏– ဂစ္ဆာမိ၌ ဂမုဓာတ်သည် ကေကမ္မက ဓာတ် တည်း၊ ထိုဓာတ်၏ကံလည်း "ဘဝန္တံ ဂေါတမံ"ဟု ရှိပြီးဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် သရဏံကို ဂမနာကာရပြသော အာကာရပါဠ်ဟု သိစေလို၍ အာကာရဇောတက ဣတိကို ထည့် သည်။ ["ဗုဒ္ဓံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိ" စသည်၌လည်း နည်းတူ။]

ဟူ၍၊ ဂစ္ဆာမိ - ဆည်းကပ်ပါ၏၊ ဝါ – သိပါ၏၊ ဘဝံ ဂေါတမော - သည်၊ မေ – ၏၊ သရဏံ – ကိုးကွယ်ရာတည်း၊ ပရာယဏံ- လည်းလျောင်းရာတည်း၊ အဃဿ-မကောင်းမှုမှ၊ တာတာ-စောင့်ရှောက်တတ်ပါပေ၏၊ ဟိတဿစ- စီးပွားကိုလည်း၊ ဝိဓာတာ- စီမံတတ်ပါပေ၏၊ ဣတိ ဣမိနာ အဓိပ္ပါယေန- ဤအလိုဖြင့်၊ ဘဝန္တံ ဂေါတမံ- ကို၊ ဂစ္ဆာမိ- ဆည်းကပ်ပါ၏၊ ဝါ–သိပါ၏၊ ဘဇာမိ - ဆည်းကပ်ပါ၏၊ သေဝါမိ- မှီဝဲပါ၏၊ ပယိရုပါသာမိ - ချဉ်းကပ်ပါ၏၊ ဝါ-တနည်း၊ ဧဝံ- ဤသို့ "အရှင်ဂေါတမသည် ငါ၏ကိုးကွယ်ရာ "ဟူ၍၊ ဇာနာမိ ဗုဇ္ဈာမိ - သိပါ၏၊ ဣတိ - ဤကား အနက်၊ ဟိ–မှန်၊ ( တနည်း )

**ဘဝံ မေ၊ ပေ၊ ဂစ္ဆာမိ။** ။"ဘဝံ မေ၊ပေ၊ဝိဓာတာတိ ဣမိနာ အဓိပ္ပါယေန" သည် " သရဏံ တိ " ကို ထပ်၍ဖွင့်သော အကျယ် စကားတည်း၊ သရဏံ ပရာယဏံ တို့သည် နိစ္စနပုံလိန်တည်း၊ ထို့ကြောင့် ဘဝံဂေါတမောနှင့် လိန်မတူဘဲ ရှိရသည်၊ ပရာယဏံ၌ "ပရံ+အယနံ-အလွန်ရောက်အပ်သောအရာ(အလွန်ရောက်အပ်ရာ)တည်း" ဟု သဒ္ဒတ္ထဖြစ်၏၊ ရကြောင့် ဏပြန်ထားသည်၊ "လည်းလျောင်းရာ" ဟူသော အနက်ကား သင်္ကေတတ္ထတည်း၊ ယုံကြည်စိတ်ချသောအားဖြင့် အမိအပေါ်၌ လှဲလျောင်းနေသကဲ့သို့ စိတ်ချလက်ချ ကိုးကွယ်ရာဖြစ်သည်–ဟူလို။

**အဃဿ၊ ပေ၊ ဝိဓာတာ။** ။ထိုသို့ ယုံကြည်စွာဖြင့် လည်းလျောင်းနေရာ ဖြစ်ခြင်းမှာလည်း "စီးပွါးမဲ့ကို တား, စီးပွါးလမ်းကို သွားစေခြင်းကြောင့် ( မကောင်းမြစ်တား, ကောင်းရာညွှန်ကြားခြင်းကြောင့် ) "ဟု သိစေလို၍ အဃဿ–စသည်မိန့်၊ အဃ သဒ္ဒါသည် " ပါပဥ္စ ကိဗ္ဗိသံ ဝေရာ–ဃံ ဒုစ္စရိတဒုက္ကဋံ " အဘိဓာန်နှင့် အညီ ပါပ အနက်ဟောတည်း၊ တာတာ၌ တာ – ဓာတ်, တုပစ္စည်း တည်း၊ ထို့ကြောင့် "ရက္ခဏတ္ထာနမိစ္ဆိတံ"သုတ်နှင့်အညီ အပါဒါန်ကို ငဲ့သောကြောင့် အပါဒါန်အနက်၌ ဆဋ္ဌီသက်၍ "အဃဿ–မှ"ဟု ရှိရသည်၊ [အဃဿာတိ ဒုက္ခတောတိ ဝဒန္တိ၊ ပါပတောတိ ပန အတ္တော ယုတ္တော၊ နိဿက္ကေစေတံ သာမိဝစနံ။] "အဃဿ ဟတာ"ဟု ရှိသည်ကား ပါဌ်ပျက်၊ ဝိဓာတာ၌ "ဝိပုဗ္ဗော ဓာ ကရောတျတ္တေ" ဓာတ်, တုပစ္စည်း။

**ဂစ္ဆာမိ ဘဇာမိ၊ပေ၊ပယိရုပါသာမိ။** ။ဘဇာမိ, သေဝါမိ, ပယိရုပါသာမိတို့ကား ဂစ္ဆာမိကို အနက်ထင်အောင် အထပ်ဆပ်ဖွင့်ခြင်းသာတည်း၊ "ဂစ္ဆာမိ–ဆည်းကပ်ပါ၏ " ဟု အနက်ပေးပါ–ဟူလို၊ [ ဂစ္ဆာမီတိအာဒီသု ပုရိမဿ ပုရိမဿ ပစ္ဆိမံ ပစ္ဆိမံ အတ္ထဝစနံ။ ] တနည်း – ကိုးကွယ်လိုသော အားဖြင့် သွားခြင်းသည် ဘဇန, အနီး၌ လှည့်လည်နေခြင်းသည် သေဝန, ဝတ်ကြီး ဝတ်ငယ်ပြုလျက် အနီး၌ အမြဲနေခြင်းသည် ပယိရုပါသန- ဟု ၃ နက်ခွဲ၍ ဂစ္ဆာမိကိုပင် ဖွင့်သည်။ [ ဘဇနံဝါ သရဏာဓိပ္ပါယေန ဥပသင်္ကမနံ၊ သေဝနာ သန္တိကာဝစရတာ၊ ပယိရုပါသနံ ဝတ္တပဋိဝတ္တကရဏေန ဥပဋ္ဌာနံတိ ဧဝံ သဗ္ဗထာပိ အနညသရဏံယေဝ ( ဤအားလုံးဖြင့် အခြား ကိုးကွယ်ရာ မရှိကြောင်းကိုသာ) ဒီပေတိ။]

ဟိ ယသ္မာ, ယေသံခဝါတူနံ- တို့၏၊ ဂတိအတ္ထော - ဂတိအနက်သည်၊ (အတ္ထိ၊) တေသံ- ထို ဓါတ်တို့၏၊ ဗုဒ္ဓိပိအတ္ထော- သိခြင်းအနက်သည်လည်း၊ (အတ္ထိ၊) တသ္မာ-ကြောင့်၊ ဂစ္ဆာမိတိ ဣမဿ - ဂစ္ဆာမိ ဟူသော ဤပုဒ်၏၊ ဇာနာမိ ဗုဇ္ဈာမိတိ အယံပိ အတ္ထော-ကိုလည်း၊ (မယာ) ဝုတ္တော၊

ပန- ကား၊ ဓမ္မဥ္စ ဘိက္ခုသံဃဉ္စာတိ ဧတ္ထ- ပါဌ်၌၊ ( အတ္တော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊) အဓိဂတမဂ္ဂေ-သိအပ် ရအပ်ပြီးသော မဂ်သစ္စာရှိကုန်သော၊ သစ္ဆိကတနိရောဓေ-မျက်မှောက် ပြုအပ်ပြီးသော နိရောဓသစ္စာရှိကုန်သော ဖလဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်တို့ကိုရင်း၊ယထာနုသိဋ္ဌံ-အကြင်အကြင်ဆုံးမတော်မူအပ်သည့်အတိုင်း၊ ပဋိပဇ္ဇမာနေစ-ကျင့်ဆဲ မဂ္ဂဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်တို့ကိုရင်း၊ စတူသု-န်သော၊ အပါယေသု-တို့၌၊ အပတမာနေ – မကျသည်တို့ကို၊ ကတွာ - ၍၊ ဓာရေတိ - ဆောင်ထားတတ်၏၊ ဣတိ, ဓမ္မော-မည်၏၊ သော-ထို တရားဟူသည့် အတ္ထတော-အနက်သဘောအားဖြင့်၊ အရိယမဂ္ဂေါစေဝ - မဂ်ရင်း၊ နိဗ္ဗာနဥ္စ - ၎င်းတည်း၊ ဟိ-သာဓကကား၊ယာဝတာ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊အဂ္ဂမက္ခာယတီတိ-တိဟူသော၊ ဧတံ (သုတ္တံ- ကို၊ ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ- ပြီ၊ ဣတိ- ဤသို့ အစရှိသော၊ ဝိတ္ထာရော-ကို၊

ဧဝံဝါ ဇာနာမိ ဗုဇ္ဈာမိတိ။ ။ဂစ္ဆာမိကိုပင် " ဇာနာမိ ဗုဇ္ဈာမိ " ဟု တနည်းဖွင့်၏၊"ဂစ္ဆာမိပုဒ်၏ ဗုဇ္ဈာမိဟူသောအနက်ကို အဘယ်နည်းဖြင့် ရနိုင်ပါသနည်း"ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ "ယေသဉ္ဓိ"စသည်မိန့်၊ ဂတိအနက်ရှိသော ဓာတ်၏ ဗုဒ္ဓိအနက်ကိုလည်း ဟောနိုင်သောကြောင့် ဂစ္ဆာမိအတွက် ဗုဇ္ဈာမိအနက်ကို ဖွင့်နိုင်သည်—ဟူလို။ [ ယေ ဂတျတ္ထာ တေ ဗုဒ္ဓျတ္ထာ, ပဝတ္တိပါပုဏတ္ထကာ"—ဓာတ်ကျမ်း။ ]

အဓိဂတ၊ပေ၊ပဋိပဇ္ဇမာနေစ။ ။"အဓိဂတ,သစ္ဆိကတ"တို့၌ တ ပစ္စည်းသည် အတိတ်ဟောတည်း၊ "ရအပ်ပြီးသော မဂ္ဂသစ္စာရှိသူ၊ ဝါ– မဂ္ဂသစ္စာကို ရပြီးသူ "ဟု ဆိုသဖြင့် ဖလဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကို ပြကြောင်းထင်ရှား၏၊ သစ္ဆိကတနိရောဓ ၌လည်း နည်းတူ၊ ပဋိပဇ္ဇမာနေစ၌ မာနပစ္စည်းကား ပစ္စုပ္ပန်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့် ကျင့်ဆဲမဂ္ဂဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကို ပြ၏၊ မာနေစ-ဟု ဋီကာ၌ စလည်းပါ၏။ [ ပဒဒ္ဓယေနာပိ ဖလဋ္ဌာဧဝ ဒဿိတာ၊ န မဂ္ဂဋ္ဌာတိ တေ (မဂ္ဂဋ္ဌတို့ကို) ဒဿေန္တော ယထာနုသိဋ္ဌံ ပဋိပဇ္ဇမာနေစာတိ အာဟ။ ]

မှတ်ချက် ။ ။ ဆုံးမတော်မူသည့်အတိုင်း ကျင့်သော ကလျာဏပုထုဇဉ်ကိုလည်း "ယထာနုသိဋ္ဌံ ပဋိပဇ္ဇမာန"ဟု ဆိုထိုက်ပေ၏၊ သို့သော် ပုထုဇဉ်ကိုကား အပါယ်မကျအောင် ဆောင်ဘို့ရာ မသေချာသောကြောင့် မဂ္ဂဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကိုသာ ပဋိပဇ္ဇမာနေ အရ ယူရသတဲ့။["အပတမာနေ(ကတွာ)"ဟု သီဟိုဠ်မူရှိ၏၊ ကြိယာဝိသေသန ပေးရမည်ဖြစ်၍ ကောင်းသကဲ့သို့ထင်၏။ ]

ဣတိ ဝိတ္ထာရော။ ။ဤသို့ ဝိတ္ထာရောနှင့်တွဲလာသော ဣတိသဒ္ဒါကို အာဒိအနက်ဟော, တနည်း–ပကာရ (အတူ)အနက်ဟောဟု ဖွင့်ကြရိုးတည်း၊ တနည်း–"ဝိတ္ထာ

(ဝေဒိတဗ္ဗော - ၏၊) [ဘိက္ခဝေ , ယာဝတာ - အကြင်မျှလောက်ကုန်သော၊ သင်္ခတာ-သင်္ခတဖြစ်ကုန်သော၊ ဓမ္မာ - တို့သည်၊ (သန္တိ - န်၏၊) တေသံ-ထို သင်္ခတတရားတို့တွင်၊ အရိယော-မြတ်သော၊ အဋ္ဌင်္ဂိကော- ၈ ပါးသော အင်္ဂါ ရှိသော၊ မဂ္ဂေါ-မဂ်ကို၊ အဂ္ဂံ - အမြတ်ဆုံးဟူ၍၊ အက္ခာယတိ - ဟောတော်မူ အပ်၏။] စ - ဆက်၊ ကေဝလံ - ဖိုလ် , ပရိယတ်မဘက် သက်သက်၊ အရိယ မဂ္ဂေါစေဝ-သည်၎င်း၊ နိဗ္ဗာနဥ္စ-သည်၎င်း၊ (ဓမ္မော-မည်သည်၊) န – မဟုတ် သေး၊ အပိစ-စင်စစ်ကား၊ အရိယဖလေဟိ-တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ , ပရိယတ္တိဓမ္မောပိ- မှသည်လည်း (ဓမ္မော-မှ မည်သေး၏၊) ဟိ-သာဓကကား၊ ဆတ္တမာဏဝက ဝိမာနေ-ဆတ္တမာဏဝက ဝိမာနဝတ္ထုဌ်၌၊ ရာဂဝိရာဂ၊ပေ၊မုပေဟိတိ-ဟူသော၊ ဧတံ-၌ ဂါထာဗန္ဓကို၊ (ဘဂဝတာ) ပိ, ဝုတ္တံ-ပြီ။

[ဂါထာအနက်၊ ။ရာဂဝိရာဂံ - ရာဂ၏ မတပ် နှစ်သက်ကြောင်းဖြစ် သော၊ ဝါ-ရာဂကို ပယ်ကြောင်းဖြစ်သော၊ ဓမ္မံ - အရိယာမဂ် တရားကို၎င်း၊ အနေဇံ-တုန်လှုပ်တတ်သော တဏှာမရှိသော၊ အသောကံ - ဝမ်းနည်းခြင်း မရှိသော၊ ဓမ္မံ-အရိယာဖိုလ်တရားကို၎င်း၊ အသင်္ခတံ-၄ပါးသော အကြောင်း တရားတို့သည် မပြုပြင်အပ်ထသော၊ အပ္ပဋိကူလံ-တစုံတခုနှင့် ဆန့်ကျင်ဘက် မရှိသော၊ ဝါ-အလိုရှိအပ် ကောင်းမြတ်သော၊ ဓမ္မံ - နိဗ္ဗာန်တရားကို၎င်း၊ မဓုရံ-ချိုဆိမ့်ကောင်းမြတ်သော အရသာနှင့်တူထသော၊ ပဂုဏံ-အဝါးဝစွာ လေ့လာ အပ်ပြီးထသော၊ ဝါ – မြတ်သော ဂုဏ်ရှိထသော၊ သုဝိဘတ္တံ- ကောင်းစွာ ဝေဘန်အပ်ထသော၊ ဣမံ ဓမ္မံ-၌ပရိယတ် တရားတော်ကို၎င်း၊ ဣမံ ဓမ္မံ-၌ မဂ်ဖိုလ် နိဗ္ဗာန် ဓမ္မက္ခန်ဟု ဆယ်တန်သောတရားတော်မြတ်ကို၊ သရဏတ္တံ-ကိုးကွယ်ရာအကျိုး၄ါ၊ (သရဏာယ ပရာယဏာယ (သီ–ဋီသစ်) သကို ဌ္ဌံပြု , အာယပြု၊ ) ဥပေဟိ - ဆည်းကပ်ပေတော့။] .... ဟိ – ဆက်၊

ရော" ဟူသောစကားဖြင့် ကျန်သမျှကို ချုံလေဟုပြ၏၊ ဇာတိ—ကား နိဒဿနတ္ထ ရိုးရိုး သာတည်း၊ ထို ဇာတိဝိတ္ထာရောပုဒ်ဖြင့် " ယာဝတာဝါ ဘိက္ခဝေ သင်္ခတာဝါ အသင်္ခ တာဝါ ဝိရာဂေါ (နိဗ္ဗာနံ)၊ တေသံ အဂ္ဂမက္ခာယတိ" ဟူသော စတုက္ကအင်္ဂုတ္တရ–စက္က ဝဂ္ဂ, ပသာဒသုတ် ပါဠိတော်ကိုဆက်၍ ယူ။

အမှာ ။ ။ ဒေါဓကဂါထာဟု ယူ၍ " မဓုရမိ "၌ မနှင့် ဓုကို ဒီဃတလုံးသာဟု သီလက္ခန်ဋီကာသစ်၌ ဆို၏၊ [ န, ဇ, ဇ, ယ ဖြစ်၍ တာမရသဂါထာပါဒဟု ယူ၍ ဥပ ဇာတိဂါထာဟုလည်း ဆိုကြ၏။ ] နောက်ဂါထာ၌လည်း "စတုသုသ+စီသုပု+ရိသ ယု + ဂေသု " ဟု ၎င်း, ရှိစေလို၏ – ဟု သာမညဖလသုတ် ဋီကာသစ် ဆို၏၊ စတု ၂ လုံးမှ ဒီဃတခုယူ၊ ရိ၌ ဆန္ဒာနုရက္ခဏာ ဒီဃ၊ "ပုဂ္ဂလ"ကား ဆန္ဒာနုရက္ခဏာရဿတဲ့။

ထွေ-၍ဂါထာ၌၊ ရာဂဝိရာဂန္တိ-ဂံဟူသောပါဌ်ဖြင့်၊ မဂ္ဂေါ-ကို၊ ကထိတော-ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊ အနေဇမသောကန္တိ-ဖြင့်၊ ဖလံ, ( ကထိတံ - ပြီ၊ ) ဓမ္မမသင်္ခတန္တိ-ဖြင့်၊ နိဗ္ဗာနံ ကထိတံ၊ အပ္ပဋိကူလံ၊ပေ၊သုဝိဘတ္တန္တိ-ဖြင့်၊ ပိဋကတ္တယေန-ပိဋက ၃ပုံဖြင့်၊ ဝိဘတ္တာ-ခွဲခြားဝေဘန်အပ်ကုန်သော၊ သဗ္ဗဓမ္မက္ခန္ဓာ-အလုံးစုံသော ဓမ္မက္ခန္ဓာတို့ကို၊ ကထိတာ-နံပြီ၊ ဣတိ-၍သို့မှတ်ထိုက်၏။

ဒိဋ္ဌိသီလသင်္ဃာတေန-အယုသီလ၏ပေါင်းစပ်အပ်သည်၏အဖြစ်အားဖြင့်၊ ဝါ- အယုသီလ တူမျှသည်၏ အဖြစ်အားဖြင့်၊ သံဟတော - ပေါင်းအပ်သည်တည်း၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ သံဃော-သံဃမည်၏၊ သော-ထိုသံဃဟူသည်၊ အတ္တ

**ရာဂဝိရာဂန္တိ မဂ္ဂေါ။** ။ကာမရာဂေါ ဘဝရာဂေါတိ ဧဝမာဒိဘေဒေါ သဗ္ဗောပိ ရာဂေါ ဝိရဇ္ဇတိ ပဟီယတိ ဧတေနာတိ ရာဂဝိရာဂေါတိ မဂ္ဂေါ ကထိတော။ [“ဝိရဇ္ဇတိ ဧတေနာတိ ဝိရာဂေါ၊ ရာဂဿ+ဝိရာဂေါ ရာဂဝိရာဂေါ” ဟု ဂရုကနည်းပြု။]

**အနေဇမသောကန္တိ ဖလံ ။** ။ ဧဇာသင်္ခါတာယ တဏှာယ, အန္တော နိဇ္ဈာနလက္ခဏဿ (အတွင်း၌ပူလောင်ခြင်း လက္ခဏာရှိသော) သောကဿစ တဒုပ္ပတ္တိယံ (ထို ဖိုလ်ဖြစ်ရာအခါ၌ ) သဗ္ဗသော ပရိက္ခီဏတ္တာ အနေဇ မသောကန္တိ ဖလံ ကထိတံ။

**အပ္ပဋိကူလန္တိ။** ။အဝိရောဓဒီပနတော ကေနစိ အဝိရုဒ္ဓံ – ဆန့်ကျင်ဘက်ကို မပြခြင်းကြောင့် ဘယ်သူနှင့်မျှမဆန့်ကျင်သော၊ ဣဋ္ဌံ ပဏီတန္တိ အဓိပ္ပာယ်-အလိုရှိအပ်သော၊ တနည်း-မွန်မြတ်သောဟု အနက်မှတ်။ [ပတိဝိရုဒ္ဓံ+ကူလံ (ပက္ခော) ယဿာတိ ပဋိကူလော = ဆန့်ကျင်ဘက် အဘို့အစု (ဘက်သား) ရှိသော တရား၊ န+ ပဋိကူလော အပ္ပဋိကူလော။]

**ပဂုဏံ။** ။ပဂုဏရူပေန ပဝတ္တိတတ္တာ ( ပဂုဏံ – အဝါးဝစွာ လေ့လာအပ်ပြီးသော ) ပကဋ္ဌဂုဏဝိဘာဝနတော ဝါ ပဂုဏံ—မြတ်သောဂုဏ်ရှိသော။ [ဝိမတိ၌ကား "ဝါစာယ ပဂုဏီကတတ္တာ ဒ္ဓတော ပကဋ္ဌေဟိ သဗ္ဗတ္ထဂုဏေဟိ ယောဂတော ဝါ" ဟု ဖွင့်၏၊ သဘောတူပင်။] ထောမနိမိ၌ “ပကတော + ဂုဏော ယေန” ဟုရင်း “ပကဋ္ဌော+ဂုဏော ယဿဝါ” ဟုရင်း ဝိဂ္ဂဟပြု၍ “ဥဇုကဝတိ—ဖြောင့်မတ်သည်၏အဖြစ်ရှိသောအရာ၌၊— ဒက္ခေစ—ကျွမ်းကျင် လိမ္မာသူ၌” ဟုရင်း ဖွင့်၏။

**ဒိဋ္ဌိ၊ပေ၊သံဃော။** ။ ဋီကာ၌ “ ဝေဝုတ္တာယ ဒိဋ္ဌိယာ ၊ပေ၊ သီလာနဉ္စ သံဟတဘာဝေန”ကို ထောက်၍ “သံဟညတေ – ပေါင်းစပ်အပ်၏၊ ဣတိ သံဃာတော” ဟု ပြုပြီးလျှင် ဘာဝပ္ပဓာနကြံ၍ “ပေါင်းစပ်အပ်သည်၏ဖြစ်ခြင်းဖြစ်ရာကို အရကော်၊ ထို “ သံဃာတဘာဝ ” ဟူသည်လည်း တူသည်၏အဖြစ်တည်းဟူသော ဂုဏ်တည်း၊ ထို့ကြောင့်“ဒိဋ္ဌိသီလ သာမညေနာတိ အတ္ထော”ဟု ဋီကာဖွင့်သည်၊ သံဃောကိုလည်း “ သံဟညတေတိ သံဃော ” ဟု ပင် ပြု။ [ မဟာတာ ဘိက္ခုသံဃေနဉ္စလည်း ဤထက် ကျယ်ဝန်းစွာဖွင့်ခဲ့ပြီ၊ စာနေချင်းမတူဘတ်၍ ထပ်ပြရသည်၊ အချို့စာ၌ “ သာမည သံဃာတေန”ဟု သာမညပါနေ၏၊ ဋီကာနှင့် မညီ။ ]

တော , အဋ္ဌအရိယပုဂ္ဂလသမူဟော - ရှစ်ပါးသော အရိယာပုဂ္ဂိုလ် တို့၏ အပေါင်းတည်း၊ ဟိ-သာဓကကား၊ တသ္မိံ ယေဝ ဝိမာနေ- ထို ဆတ္တမာဏဝကဝိမာနဝတ္ထု၌ပင်၊"ယဇ္ဇတံ၊ပေ၊မုပေဟိ"တိ-ဟူသော၊ တော- ဤဂါထာဗန္ဓကို၊(ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ၊ [စတုသု-၄ စုံကုန်သော၊ သုစီသု- စင်ကြယ်ကုန်သော၊ ယဇ္ဇ ပုရိသယုဂေသုစ-အကြင်ယောကျ်ားအစုံတို့၌လည်း၊(မောဂ္ဂလ္လာန်အလို အာဓာရ၊)ဝါ- တို့အားလည်း၊ (ကစ္စည်းအလို သမ္ပဒါန်၊) ဒိန္နံ-ပေးလှူအပ်သော ပစ္စည်းဝတ္ထုကို၊ ဝါ – ပေးလှူကြောင်း ဒါနစေတနာကို၊ မဟပ္ဖလံ-များသောအကျိုးရှိ၏ဟူ၍၊ အာဟု-ဟောတော်မူကြကုန်ပြီ၊ ဓမ္မဒသာ-သစ္စာ ၄ ပါး တရားကို သိမြင်ကြကုန်သော၊ တေပုဂ္ဂလာ - တို့သည်၊ အဋ္ဌစ– အသီးအခြား ခွဲသောအားဖြင့် ၈ ပါးတို့သည်လည်း၊ ဟောန္တိ၊ ဧသံ သံဃံ - အစုံ ၄ပါး,သီးခြားရှစ်ဘော်,ဤသံဃာတော်ကို၊ သရဏတ္ထံ-၄ါ၊ ဥပေဟိ-လော့။] ဘိက္ခူနံ- တို့၏၊ သံဃော-အပေါင်းတည်း၊ ဘိက္ခုသံဃော-ပေါင်း၊ စ·ဆက်၊ ဧတ္တာဝတာ-အစဉ်ဖြင့်၊ ဗြာဟ္မဏော-သည်၊ တိဏ္ဏံ- န်သော၊ သရဏဂမနာနံ-သရဏဂုမ်တို့ကို၊ ပဋိဝေဒေသိ-သိစေပြီ၊ ဝါ-လျှောက်ပြီ။

ဧတ္ထ ဒါနိ-၌၊ တေသွေဝသရဏဂမနေသု-တို့၌ပင်၊ ကောသလ္လတ္ထံ-ကျွမ်းကျင်သူ၏အဖြစ်ဟူသောအကျိုး၄ါ၊ သရဏံ-သရဏငှင်း၊သရဏဂမနံ-သရဏဂုမ်ငှင်း၊ ယော-အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သရဏံ-ကိုးကွယ်ရာဟူ၍၊ ဂစ္ဆတိ - ဆည်းကပ်၏၊ ( သော- ထိုပုဂ္ဂိုလ်ငှင်း၊ ) သရဏဂမနပ္ပဘေဒေါ- ဂုမ် အပြားငှင်း၊ သရဏဂမနဖလံ - သရဏဂုမ်၏အကျိုးငှင်း၊ သံကိလေသော - သရဏဂုမ်၏ ညစ်နွမ်းပုံငှင်း၊ ဘေဒေါ-သရဏဂုမ်၏ပျက်ခြင်းငှင်း၊ ဣတိ အယံဝိဓိ- ဤအစီအရင်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ ပန-ထိုသို့ပင် သိထိုက်ပါသော်လည်း၊ သော-ထို အစီအရင်ကို၊ ဝါ-သည်၊ ဧသ-ဤသမန္တပါသာဒိကာမည်သော ဝိနည်း အဋ္ဌကထာ၌၊ ဝုစ္စမာနော-ဆိုအပ်သော်၊ ဝါ-ဆိုလိုက်လျှင်၊ အတိဘာရိယံ-သော၊ ဝါ–သော၊ ဝိနယနိဒါနံ - ကို၊ ကရောတိ - ပြု၏၊ ဣတိ- ကြောင့်၊ ( မယာ )

**ယဇ္ဇ စ၊ ပေ၊ ဓမ္မဒသာ။** ။"ဒါတဗ္ဗံတိ ဒိန္နံ"အရ ပေးလှူအပ်သော ဒါနဝတ္ထု ရသော်လည်း " မဟပ္ဖလံ " ထောက်၍ စေတနာကို အရ ကောက်ရသည်၊ အာရုံ အကြောင်းဖြစ်သောဒါနဝတ္ထု၏ ဒိန္နအမည်ကို အာရမဏိက အကျိုး စေတနာ၌ တင်စားသော ကာရဏူပစာ:ရစကားတည်း၊ တနည်း– "ဒီယတိ အနေနာတိ"ဟု ကရဏ သာဓ်ပြု၍ ပေးလှူကြောင်းစေတနာကို တိုက်ရိုက်ကောက်၊ ဓမ္မံ–သစ္စာ၄ပါးတရားကို+ ပဿန္တိ – မျက်မှောက် မြင်နိုင်ကုန်၏၊ ဣတိ ဓမ္မဒသာ။ [ ပုရိသယုဂဋ္ဌဝသေန စတ္တာရောပိ (အစုံအားဖြင့် ၄ပါးရှိကုန်သော်လည်း ) ပုဂ္ဂလဝသေန အဋ္ဌေဝ၊ အရိယဓမ္မဿ ပစ္စက္ခဒဿာဝိတာယ (တိုက်ရိုက်မြင်တတ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်) ဓမ္မဒသာ။ ]

န ဝုတ္တော၊ ပန-ထိုသို့ပင် မဆိုအပ်ပါသော်လည်း၊ အတ္ထိကေဟိ-အလိုရှိသော အမျိုးကောင်း သားတို့သည်၊ ပပဉ္စသူဒနိယံ- ပပဉ္စသူဒနီမည်သော၊ မဇ္ဈိမဋ္ဌကထာယံ - ထာ၌၊ ဘယဘေရဝသုတ္တဝဏ္ဏနတော ဝါ – သယဘေရဝသုတ် အဖွင့်မှသော်ငင်း၊ သုမင်္ဂလဝိလာသိနိယံ-နီမည်သော၊ဒီဃနိကာယဋ္ဌကထာ ယံ-ထာ၌၊ သရဏာဝဏ္ဏတောဝါ–သရဏာအဖွင့်မှ သော်ငင်း၊ (သာမညဖလ သုတ် အဖွင့်မှ ) ဂဟေတဗ္ဗော - ယူထိုက်၏၊ ဝါ- ယူပါလေ၊ ဣတိ- ဤကား၊ အမှာ စကားချပ်တည်း။

ဥပါသကံ၊ပေ၊ဓာရေတူတိ-ကား၊ မံ-တပည့်တော်ကို၊ ဘဝံ ဂေါတမော- သည်၊ အယံ-ဤပုဏ္ဏားသည်၊ ဥပါသကော-ကာတည်း၊ ဣတိ ဧဝံ-သို့၊ ဓာရေ တု-စိတ်၌ ဆောင်တော်မူပါ၊ ဝါ-မှတ်တော်မူပါ၊ ဣတိ အတ္ထော၊ ပန-ဆက်၊ ဧတ္ထ-ဤ ဥပါသကံ၊ပေ၊တု ဟူသောပါဌ်၌၊ ဥပါသကဝိဓိကောသလ္လတ္ထံ- ဥပါ သက အစီအရင်၌ ကျွမ်းကျင်သူ၏အဖြစ်ဟူသော ဉာဏ်အကျိုးငှါ၊[ဥပါသက ဘာဝဝိဓာနကောသလ္လတ္ထံ - ဥပါသကာ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ အစီအရင်၌ ကျွမ်းကျင်သူ၏အဖြစ် အကျိုးငှါ- ဟူလို၊ သီ ဋီ သစ်၊] ကော-အဘယ်သူသည်၊ ဥပါသကော–ဥပါသကာ မည်သနည်း၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊ ဥပါသကောတိ- ကာ ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-ပ်သနည်း၊ အဿ-ထို ဥပါသကာ၏၊ သီလံ - သီလဟူသည်၊ ကိံ-နည်း၊ အာဇီဝေါ-အသက်မွေးဝမ်းကျောင်းသည်၊ ကော-နည်း၊ ဝိပတ္တိ- ပျက်စီးခြင်းသည်၊ ကာ–နည်း၊ သမ္ပတ္တိ-ပြည့်စုံခြင်းသည်၊ ကာ-နည်း၊ ဣတိ- သို့၊ ဣဒံ ပကိဏ္ဏကံ-ဤ ရောပြွမ်းသော အဆုံးအဖြတ်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ တံ- ထိုပကိဏ္ဏကကို၊ အတ္ထဘာရိယကရဏတော-အလွန်ဝန်လေးအောင်ပြုတတ် သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဣဓ-ဤသမန္တ၊ပေ၊ထာ၌၊ န ဝိဘတ္တံ-မဝေဘန်အပ်၊ ပန–ထိုသို့ပင် မဝေဘန်အပ်ပါသော်လည်း၊ အတ္ထိကေဟိ-တို့သည်၊ ပပဉ္စသူဒ နိယံ-သော၊ မဇ္ဈိမဋ္ဌကထာယံ–၌၊ ဝုတ္တနယေန-ဖြင့်ပင်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏။

အဇ္ဈတဂ္ဂေတိ ဧတ္ထ-၌၊ အယံ အဂ္ဂသဒ္ဒေါ-ဤအဂ္ဂသဒ္ဒါသည်၊အာဒိကောဋိ ကောဋ္ဌာသ သေဋ္ဌေသု–အစဟူသော အနက်, အစွန် အဖျားဟူသောအနက်, အဘို့အစု ဟူသော အနက် , အမြတ်ဟူသော အနက်တို့၌၊ ဒိဿတိ - ထင်၏၊ ဟိ–ချဲ့၊ သမ္မ ဒေါဝါရိက–အချင်း တံခါးစောင့်၊ အဇ္ဇတံ - ယနေ့ကို၊ အဂ္ဂေ- အစပြု၍၊ နိဂဏ္ဌာနံ-နိဂဏ္ဌယောကျ်ားတို့၏ရင်း၊ နိဂဏ္ဌီနံ-နိဂဏ္ဌမိန်းမတို့၏ ရင်း၊ ဒွါရံ-တံခါးကို၊အာဝရာမိ-ပိတ်လိုက်၏၊ဣတိအာဒီသု-ရပ်တို့၌၊အာဒိမှ- အစဟူသော အနက်၌၊ ဒိဿတိ- ၏၊ [ မဇ္ဈိမနိကာယ် , မဇ္ဈိမပဏ္ဏာသက, ဥပါလိသုတ်။ ] တေနေဝ အင်္ဂုလဂ္ဂေန–ထိုလက်ချောင်းဖျားဖြင့် သာလျှင်၊ တံ

အင်္ဂုလဂ္ဂံ- ကို၊ ပရာမသေယျ- သုံးသပ်ရာ၏၊ ဥစ္စင်္ဂံ-(ဥစ္စ+အင်္ဂ) ကြီးအဖျားကို၊ ဝေဠင်္ဂံ -( ဝေဠု + အင်္ဂ ) ဝါးအဖျားကို၊ ဣတိ အာဒီသု - ရပ်တို့၌၊ ကောဋ္ဌိယံ- အစွန်အဖျားဟူသောအနက်၌၊ [ ကောဋိယန္တိ ပရိယန္တကောဋိယံ၊ ] ဒိဿတိ-ထင်၏၊ ဘိက္ခဝေ- ဘိက္ခုတို့၊ အမ္ဗိလဂ္ဂံဝါ-ချဉ်သော သစ်သီးအဘို့အစုကိုငင်း၊ မဓုရဂ္ဂံဝါ - ချိုသောသစ်သီး အဘို့အစုကိုငင်း၊ တိတ္တကဂ္ဂံဝါ-ခါးစပ်သောသစ်သီးအဘို့အစုကိုငင်း၊ ဝိဟာရဂ္ဂေနဝါ-နေရာအခန်းအဘို့အစုအားဖြင့်သော်ငင်း၊ ပရိဝေဏဂ္ဂေနဝါ-ပရိဝုဏ်အဘို့အစုအားဖြင့်သော်ငင်း၊ ဘာဇေတုံ - ဝေဘန်ခြင်းငှါ၊ အနုဇာနာမိ - ခွင့်ပြုတော်မူ၏၊ ဣတိ အာဒီသု, ကောဋ္ဌာသေ- အဘို့အစုဟူသော အနက်၌၊ ( ဒိဿတိ- ၏၊) ဘိက္ခဝေ- တို့၊ ယာဝတာ-အကြင်မျှ အတိုင်းအရှည်ရှိကုန်သော၊ အပဒါဝါ- အခြေမရှိသည်မူလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ဒွိပဒါဝါ-အခြေ ၂ ချောင်းရှိသည်မူလည်း ဖြစ်ကုန်သော ၊ပေ၊ သတ္တာ - တို့သည်၊ ( သန္တိ )၊ တေသံ - ထို သတ္တာတို့တွင်၊ တထာဂတော-ကို၊ အဂ္ဂံ-အမြတ်ဆုံးဟူ၍၊ အက္ခာယတိ- ဆိုအပ်၏၊ ဣတ် အာဒီသု, သေဋ္ဌေ - အမြတ်ဟူသော အနက်၌၊ (ဒိဿတိ - ၏၊ အင်္ဂုတ္တရ စတုက္က, စက္ကဝဂ်၊) ပန - အထူးသြါရသာမည မှတပါး ၊ပေ၊ အံ့၊ ဣဓ-၌ အဇ္ဇတဂ္ဂေ ပါဏုပေတံဟူသောပါဌ်၌၊ အယံ-၍ အဂ္ဂသဒ္ဒါကို၊ အာဒိမှိ-အစဟူသော အနက်၌၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော- ၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ အဇ္ဇတဂ္ဂေတိ ဧတ္ထ -၌၊ အဇ္ဇတံ- ယနေ့ကို၊

**ဝိဟာရဂ္ဂေန**။ ။သြဝရက ကောဋ္ဌာသေန (အစု) ။ [ ကျောင်းတိုက်တခု၌ရှိသော သစ်သီးများကို ဝေဘန်သောအရာဖြစ်၍ "ဝိဟာရဂ္ဂ — ကျောင်းတိုက်အစု"ဟု အနက်မဖြစ်နိုင်၊ "ဝိဟာရတိ ဧတ္ထာတိ ဝိဟာရော"ဟု ပြု၍ နေရာအခန်းအစုကို"ဝိဟာရဂ္ဂ"ဟု မှတ်ပါ။ ] ဣမသ္မိံ ဂေဟေ ဝသန္တာနံ ဣဒံ နာမ ဖလံ ( " ဣဒံ ပနသဖလံ—၍ ပိန်းနဲသီး" မူကွဲ ) ပါပုဏာတီတိ အာဒိနာ တံတံ ဝသနဋ္ဌာနကောဋ္ဌာသေနာတိ အတ္ထော။ [ ပရိဝုဏ်ဟူသည်ကား ကျောင်းတိုက်အတွင်း၌ အသီးအသီး ဝင်းကာထားသော ကျောင်းဆောင်တခုတည်း။ ]

**အဇ္ဇတံ အာဒိံ ကတွာ**။ ။"အဇ္ဇဒိဝသံ အတ္ထော"ဟု ဝေဖြင့် တာပစ္စည်းအနက်ကိုကန့်သော ဋီကာဖွင့်ပုံထောက်၍ အဇ္ဇတဂ္ဂေ (အဇ္ဇတံ+အဂ္ဂေ ) ၌ တာပစ္စည်းအနက်သီးခြားမရှိဟု သိရ၏၊ "အဇ္ဇတံ-ယနေ့ကို"ဟု ပေး၊ "အာဒိံ ကတွာ" ကား အဂ္ဂေ၏အဖွင့်တည်း၊ အဂ္ဂေ၌ အံကို သုတ်ကြီးဖြင့် ပြေ၊ တနည်း—ဒုတိယာမှ သတ္တမီပြန်နေသော ဝိဘတ္တိဝိပလ္လာသ ဟု ကြံ၊ "ကတွာ"ဟုလည်း ထည့်စေလိုသည်၊ "အဇ္ဇ-ယနေ့ကို၊ အဂ္ဂေ – အစပြု၍" ဟု တပုဒ်စီ ခွဲပေးပါ။ [ "အဂ္ဂေတိဧတ္ထ ဥပယောဂဝစနဿ ဧကာရာဒေသော၊ ဝစနဝိပလ္လာသောဝါ၊ ကတွာသဒ္ဒေါစ သေသောတိ ဝုတ္တံ အာဒိံ ကတွာတိ" — သီ, ဋီ သစ်။ ]

အာဒိံ - အစကို၊ ကတွာ – ၍၊ ဣတိဝံ အတ္တော ဝေဒိတဗ္ဗော၊ အဋ္ဌတန္တိ-ကား၊ အဋ္ဌဘာဝံ-ယနေ္တ့၌ဖြစ်သော ဆည်းကပ်မှုကို၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဝါ-တနည်း၊ အဋ္ဌဒဂ္ဂေ ဣစ္စေဝ-အဋ္ဌဒဂ္ဂေဟူ၍သာ၊ ပါဠော-ပါဠ်ရှိ၏၊ ဒကာရော-သည်၊ ပဒသန္ဓိကရော- ပုဒ်တို့၏စေ့စပ်မှုကို ပြုတတ်၏၊ အဋ္ဌ- ယနေ္တကို၊ အဂ္ဂံ-အစကို၊ ကတွာ- ၍၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

ပါဏုပေတန္တိ-ကား၊ ပါဏေဟိ-အသက်တို့ဖြင့်၊ ဥပေတံ-ဆည်းကပ်တတ်သော၊ ယာဝ-အကြင်မျှလောက်၊ မေ - အကျွန်ုပ်၏၊ ဇီဝိတံ - အသက်သည်၊ ပဝတ္တတိ-ဖြစ်တည်၏၊ တာဝ-ထိုအသက်ရှည်သမျှ ကာလပတ်လုံး၊ ဥပေတံ-သော၊ (ဥပါသကံ၌စပ်) ဘဝံ ဂေါတမော-သည်၊ မံ-ကို၊ အနညသတ္ထုကံ-အခြားဆရာမရှိသော၊ တီဟိ-န်သော၊ သရဏဂမနေဟိ-တို့ဖြင့်၊ သရဏံ-၍၊ ဂတံ-ဆည်းကပ်သော (ဥပါသကံ-ဟူ၍၊)ဓာရေတု-စိတ်၌ဆောင်တော်မူပါ၊ ဇာနာတု-သိတော်မူပါ၊ (ကသ္မာ-ကြောင့်၊ ဓာရေတု - စိတ်၌ ဆောင်တော်

အဋ္ဌတန္တိ အဋ္ဌဘာဝံ။ ။ယခုစာများ၌ "အဋ္ဌဘာဝံ" ဟု တွေ့ရ၏၊ သီလက္ခန် ဋီကာသစ်၌ ဘာဝံပါဠ်ကိုပင်ယူ၍ ဘာဝအနက်ကို အကျယ်ပြထား၏၊ ထို အဋ္ဌဘာဝံ ပါဠ်သည် " အဋ္ဌတန္တိ အဋ္ဌဣစ္စေဝ အတ္ထော " ဟူသော ဋီကာများနှင့် ဆန့်ကျင်၏၊ ဝိမတိ၌ကား "အဋ္ဌဘာဝန္တိ အသ္မိံ အဟနိ ပဝတ္တံ ပသာဒါဒိံ (ဤနေ့၌ဖြစ်သော ကြည်ညို ခြင်း စသည်ကို)" ဟု ရှိ၏၊ ထိုဘာဝ (ပဝတ္တ) သဒ္ဒါဖြင့်လည်း တာပစ္စည်းအနက်ကို ပြသည် မဟုတ်၊ "အဋ္ဌတံ-ယနေ္တကို" ဟူရာဝယ် "ယနေ္တ၌ဖြစ်သော ကြည်ညိုဆည်းကပ် မှုကို "ဟု ဥဇုကတ္ထပြခြင်းသာတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ဝုတ္တံ ဟောတိ " ဟု မိန့်သည်။

ပါဏေဟိ ဥပေတံ။ ။ပါဏုပေတောသည် "ပါဏေဟိ–အသက်တို့ဖြင့်+ဥပေ တော – ဆည်းကပ်တတ်သူ " ဟု ဝိဂ္ဂဟပြုရသော သမာသ်ပုဒ်တည်း ဟု သိစေ၏၊ " ယာဝ မေ ဇီဝိတံ ပဝတ္တတိ၊ တာဝ ဥပေတံ "ဖြင့် အသက်တို့ဖြင့် ဆည်းကပ်ပုံကို သရုပ်ဖော်သည်၊ ယခုလျှောက်ထားသော စကားဖြင့်ရင်း, စိတ္တုပ္ပါဒ် တကြိမ်ဖြစ်ကာမျှ ဖြင့်ရင်း ဆည်းကပ်ခြင်းမဟုတ်ပါ၊ အသက်ကိုစွန့်၍ (အသက်ထက်ဆုံး) ဆည်းကပ် ခြင်း ဖြစ်ပါသည်–ဟူလို၊ "ဥပေမိ ဗုဒ္ဓံ သရဏံ" စသော ပါဠိကိုထောက်၍ ဥပေတ၌ ဥပုဗ္ဗ ဣဓာတ်သည် (ဥပဂမန–ဆည်းကပ်ခြင်း) အနက်ဟောတည်းဟု မှတ်၊ "အသက် တို့နှင့် ပြည့်စုံသော"ဟု ပေးကြသည်မှာ (အသက်တို့နှင့် မပြည့်စုံသော ဥပါသကာ–ဟု ကန့်စရာ မရှိသောကြောင့်) အဓိပ္ပါယ်မပါသော အနက်ဖြစ်သည်။

အနည၊ ပေ၊ ဇာနာတု။ ။အညော – ဘုရားမှ တပါးသော+သတ္ထာ အည သတ္ထာ၊ နတ္ထိ+အညသတ္ထာ ယဿ (ဥပါသကဿ) ဣတိ အနညသတ္ထုကော၊ ဤ "အနညသတ္ထုကံ တီဟိ သရဏဂမနေဟိ သရဏံ ဂတံ "တို့ကား ပါဠိတော်၌ "သရဏံ ဂတံ "၏ အဖွင့်တည်း၊ "ဓာရေတု-စိတ်၌ဆောင်ထားတော်မူပါ" ဟူရာဝယ် "အသိ အမှတ်ပြုတော်မူပါ"ဟု အဓိပ္ပါယ်ကိုပြလို၍ "ဇာနာတု" ဟု ဖွင့်သည်။

မူရာပါသနည်း၊) ဟိ–အကြင့်ကြောင့်၊ အဟံ-သည်၊ [ နေဝ ဝဒေယျံ၌ စပ်၊ ] မေ-၏၊ တိခိဏေန-ထက်လှစွာသော၊ အသိနာ- သန်လျက်ဖြင့်၊ သီသံ–ကို၊ ဆေပိဆိန္ဒေယျ-အကယ်၍ပင် ဖြတ်စေဦးတော့၊ (ဆေဒံသတိပိ-လည်း၊) ဗုဒ္ဓံ–ဘုရားကို၊ နဗုဒ္ဓေါ-ဘုရားမဟုတ်၊ ဣတိဝါ-သို့ငှင်း၊ပေ၊နေဝ ဝဒေယျံ-မပြော ဆိုရာတော့ပါ၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ (ခါရေတု-ပါ၊) စ–ဆက်၊ ဧတ္ထ-ဤဥပါသကံ မံ အစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ ဗြာဟ္မဏော-သည်၊ ပါဏုပေတံ သရဏဂတန္တိ-တံ ဟူ၍၊ ပုန-တဖန်၊ သရဏဂမနံ-သရဏဂုံကို၊ ဝဒန္တော-လျှောက်လသော်၊ ဝါ–လျှော်သော၊ ဗြာဟ္မဏော- သည်၊ အတ္တသန္နိယျာတနံ - မိမိကို အပ်နှင်းကြောင်း သရဏဂုံကို၊ ပကာသေတိ- ထင်ရှားပြ၏၊ ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗာ၊

ဧဝံ-သို့၊ အတ္တာနံ–ကို၊ နိယျာတေတွာ- အပ်နှင်းပြီး၍၊ ဘဂဝန္တံ–ကို၊ သပရိသံ–နှင့်တကွ၊ ဥပဋ္ဌာတုကာမော- ပြုစုလုပ်ကျွေးလိုသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ အဓိဝါသေတုစ မေ၊ ပေ ၊ သံဃေနာတိ - ဟူ၍၊ အာဟ - လျှောက်ပြီ၊ ကိံ ဝုတ္တံ, ဟောတိ-နည်း၊ ဘဝံ ဂေါတမော-သည်၊ မံ-ကို၊ ဥပါသကန္တိ-ကာဟူ၍လည်း၊ ဓာရေတု - ပါ၊ မေ –၏၊ ဝေရဉ္ဇာယံ - ၌၊ ဝဿာဝါသံစ - မိုယ်းလပတ်လုံး သီတင်းသုံးတော်မူခြင်း ကိုလည်း၊ အဓိဝါသေတု - ကိုယ်တော်၏ အထက်၌ ဝင်သက် တည့်နေစေတော်မူပါ၊ ဝါ- လက်ခံတော်မူပါ၊ တယောမာသေ–

**ပုန သရဏဂမနံ။** ။“ဥပါသကံ မံ ဘဂဝါ ဓာရေတု အဇ္ဇတဂ္ဂေ (အဇ္ဇဒဂ္ဂေ)” ဟူသော စကားဖြင့်ပင် သရဏဂမနကိစ္စ ပြီးပြီးဖြစ်သောကြောင့်,“ပါဏုပေတံ သရဏံ ဂတံ”ကို“ပုန သရဏဂမန”ဟု ဆိုသည်၊ ထိုသို့ နောက်ထပ်လျှောက်သဖြင့် သရဏဂုံ ၄ ပါးတွင် အတ္တသန္နိယျာတနသရဏဂုံကိုပြသည်–ဟူလို၊ သရဏဂုံ ၄ ပါးကား“အတ္တ သန္နိယျာတန, တပ္ပရာယဏတာ, သိဿဘာဝူပဂမန, ပဏိပါတ”တည်း၊ အကျယ်ကို သီလက္ခန် သာမညဖလသုတ် အဋ္ဌကထာဖွင့်မှာ ရှု။ [အတ္တ– မိမိကို+ သန္နိယျာတန–ကောင်းစွာ အပ်နှင်းကြောင်း သရဏဂုံ၊“အသက်အပ်၍ ကိုးကွယ်ဆည်းကပ်ကြောင်း သရဏဂုံ”ဟူလို၊ ထို့ကြောင့်“တိခိဏေန သဗ္ဗေန”စသည်ကို လျှောက်သည်။]

**အဓိဝါသေတု။** ။“အဓိ-ကိုယ်တော်မြတ်၏ အသက်၌+ဝါသေတု-နေစေတော် မူပါ”ဟု သဒ္ဒတ္ထဖြစ်၏၊ “ ဝါတွင်း၌ သီတင်းသုံးဘို့ရန် တောင်းပန်သော စကားကို ပယ်တော်မူလိုက်လျှင် ကိုယ်တော်၏အထက်၌ နေစေရာ မရောက်၊ ပယ်တော်မမူမှသာ နေစေရာရောက်သည်၊ ထို့ကြောင့် ပယ်တော်မမူဘဲ ကိုယ်တော်၏အထက်၌ သက်ဝင် နေပါစေ ” ဟူလို၊ ထိုသို့ နေစေခြင်းသည် တောင်းပန်သော စကားကို သာယာရာ ရောက်သောကြောင့် “ သာဒယတု ”ဟု ဋီကာ၌ရှင်း, လက်ခံရာရောက်သောကြောင့် “သမ္ပဋိစ္ဆတု”ဟု အဋ္ဌကထာ၌ရှင်း အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်သည်။ [ဝဿံ–မိုးလပတ်လုံး+ အာဝါသော–အမြဲနေခြင်းတည်း၊ ဝဿာဝါသော–ခြင်း။]

၃ လတို့ ပတ်လုံး၊ ဝေရဉ္စံ–ကို၊ ဥပနိဿာယ - ၍၊ မမ-ကို၊ အနုဂ္ဂဟတ္ထံ-၄ါ၊ ဝါသံ- သီတင်းသုံးတော်မူခြင်းကို၊ [ ဝဿာဝါသံ ဟု သီဟိုဠ်မူရှိ၏၊ ] သမ္ပဋိစ္ဆတု–လက်ခံတော်မူပါ၊ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊အဓိဝါသေသိ၊ပေ၊နာတိ–ကား၊ အထ–လျှောက်ရာ ထိုအခါ၌၊ အဿ- ထိုပုဏ္ဏားအား၏၊ ဝစနံ သုတွာ ဘဂဝါ, ကာယင်္ဂံ ဝါ- ကိုယ်၏ အစိတ် အပိုင်းကိုငှင်း၊ ဝါစင်္ဂံ ဝါ- ကိုငှင်း၊ အစောပေတွာ-မလှုပ်စေမူ၍၊ အဗ္ဘန္တရေယေဝ-ကိုယ်တွင်း၌သာလျှင်၊ ခန္တိံ-နှစ်သက်ခြင်းကို၊ ဓာရေတွာ-၍၊ ("ခန္တိံ ဓာရေတွာ-နှစ်သက်ခြင်းကို+ဖြစ်စေ၍" ဟုလည်း မှုကွဲရှိ၏၊) တုဏှီဘာဝေန-ဆိတ်ဆိတ် အဖြစ်ဖြင့်၊ အဓိဝါသေသိ-ပြီ၊ ဝါ- ပြီ၊ ဗြာဟ္မဏဿ- ကို၊ အနုဂ္ဂဟတ္ထံ- ၄ါ၊ မနသာဝ - စိတ်တော်ဖြင့်သာ၊ သမ္ပဋိစ္ဆိ- လက်ခံတော်မူပြီ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

အထခေါ၊ ပေ၊ ဝိဒိတွာတိ - ကား၊ အထ - ထိုအခါ၌၊ (တိတ်တိတ် နေသောအားဖြင့် လက်ခံတော်မူရာ ထိုအခါ၌ – ဟူလို၊ ) ဝေရဉ္ဇော - သော၊ ဗြာဟ္မဏော- သည်၊ (အကြား၌ ကြိယာဝိသေသနများနှင့်တကွ နောက်ဆုံးပဏ္ဍမိတိုင်အောင်စပ်၊) သမဏော ဂေါတမော-သည်၊ မေ–၏ (တောင်းပန်ခြင်းကို) သဒ္ဒေနာဓိဝါသေယျ-အကယ်၍ လက်မခံအံ့၊ (ဧဝံသတိ-သော်၊) ကာယေနဝါ-ကိုယ်ဖြင့်သော်ငှင်း၊ ဝါစာယဝါ-ငှင်း၊ ပဋိက္ခိပေယျ-ပယ်မြစ်တော်မူရာ၏၊ ပန- အနွယကား၊ ယသ္မာ, အပ္ပဋိက္ခိပိတွာ - ပယ်တော် မမူဘဲ၊ အဗ္ဘန္တရေ-အတွင်း၌၊ ခန္တိံ-ကို၊ ဓာရေသိ- ပြီ၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ မေ–ငါ၏ ( တောင်းပန်ခြင်းကို၊ ) မနသာဝ - သာ၊ အဓိဝါသေတိ-၏၊ ဣတိ ဧဝံ-သို့၊ အာကာရသလ္လက္ခဏကုသလတာယ- အခြင်းအရာကို မှတ်ခြင်း၌ ကျွမ်းကျင်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ( အကဲခတ်ကောင်းသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) ဘဂဝ

**ကာယင်္ဂံ ဝါစင်္ဂံ**။ ။ကာယဿ–၏+အင်္ဂံ-အစိတ်အပိုင်းဖြစ်သော ဦးခေါင်းစသည်တည်း၊ ကာယင်္ဂံ – လက်ခံသော အားဖြင့် ဦးခေါင်းစသည် မလှုပ်ခြင်းကို "ကာယင်္ဂံ အစောပေတွာ"ဟု ဆိုသည်၊ ဝါစာယ-နှုတ်မြွက်ခြင်း၏+အင်္ဂံ–အစိတ်အပိုင်းဖြစ်သော စကားတည်း၊ ဝါစင်္ဂံ၊"ဟောတု-လျှောက်သည့်အတိုင်း ရှိစေတော့၊ သာဓု–ကောင်းပြီ" ဟု မိန့်တော်မမူခြင်းကို " ဝါစင်္ဂံ အစောပေတွာ " ဟု ဆိုသည်။ [ဝိမတိ၌ ဤအဓိပ္ပါယ်ကို ကေစိဝါဒ ဟု ဆို၍ ကာယဝိညတ် ဝစီဝိညတ်ကို"ကာယ–ဝါစာ"တို့အရ ယူပြီးလျှင် အင်္ဂသဒ္ဒါကိုလည်း ဟေတုအနက်ဟော ဟု ယူ၍ " ကာယဝိညတ် ဟူသော အကြောင်းရှိသော ကိုယ်အစိတ်အပိုင်းကို"ကာယင်္ဂ"ဟု ငှင်း, ဝစီဝိညတ်ဟူသော အကြောင်းရှိသော နှုတ်, လျှာ စသည်ကို "ဝါစင်္ဂ"ဟုငှင်း, ဆိုသည်၊ [စောပေတွာ၌ စုပဓာတ်သည် အနဝဋ္ဌာန– မရပ်မတည်လည်ခြင်း ( လှုပ်ရှားခြင်း ) အနက်ကို ဟော၏၊ ကာရိတ်ဏေပစ္စည်းကြောင့် အစောပေတွာကို"အစာလေတွာ"ဟု ဖွင့်ကြသည်။ ]

တော-၏၊ အမိဝါသနံ-ကို၊ ဝိဒိတွာ-၍၊ အတ္တနော-၏၊ နိသိန္နာသနတော-ထိုင်ရာနေရာမှ၊ (နိသိန္န-ထိုင်ရာဖြစ်သော+အာသန-နေရာ၊) ဝုဋ္ဌာယ-ထ၍၊ စတုသု-န်သော၊ ဒိသာသု-အရပ်တို့၌၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ သက္ကစ္စံ-ကောင်းစွာပြု၍၊ (သံနှင့်ကစွကို စပ်ထားသောသမာသ်ပုဒ်၊) (တနည်း)သက္ကစ္စံ-ရိုရိုသေသေ၊ (အာဒရတ္ထနိပါတ်ပုဒ်၊) ဝန္ဒိတွာ- ဝပ်ချပြီး၍၊ တိက္ခတ္တုံ-၃ ကြိမ်၊ ပဒက္ခိဏံ-လက်ျာရစ် လည်သည်ကို၊ ကတွာ-၍၊ အာဂတကာလတော-လာခဲ့ရာအခါမှ၊ ပဘုတိ - စ၍၊ ဇာတိမဟလ္လက ဗြာဟ္မဏာနံ - ဇာတိမဟလ္လက ပုဏ္ဏားတို့ကို၊ အဘိဝါဒနာဒီနိ-ရှိခိုးမှု အစရှိသည်တို့ကို၊ န ကရောတိ-မပြုတတ်၊ ဣတိ, ဂရဟိတွာပိ-ကဲ့ရဲ့ပြီး၍လည်း၊ ဣဒါနိ- ၌၊ ဝိညာတဗုဒ္ဓဂုဏော - သိအပ်ပြီးသော ဘုရားဂုဏ်တော်ရှိသည်၊ ဝါ-ဘုရားဂုဏ်တော်တို့ကို သိပြီးသည်၊ (ဟုတွာ), ကာယေန-ဖြင့်ဝှင်း၊ပေ၊အနေကက္ခတ္တုံ- အကြိမ်များစွာ၊ ဝန္ဒန္တောပိ-ဝပ်ချရပါသော်လည်း၊ အတိတ္တောယေဝ - အားမရနိုင်သည်သာလျှင်၊ ဟုတွာ, ဒသနခသမောဓာနသမုဇ္ဇလံ- ဆယ်ချောင်းသော လက်သည်း အပေါင်းတို့ဖြင့် တောက်ပသော၊ အဉ္ဇလိံ - လက်အုပ်ကို၊ ပဂ္ဂယှ - ချီမြှောက်၍၊ သိရသ္မိံ - ဦးခေါင်းပေါ်၌၊ ပတိဋ္ဌာပေတွာ - တည်စေ၍၊ ယာဝ - အကြင်မျှလောက်, ဒဿနဝိသယော-မြင်လောက်ရာအရပ်သည်၊ အတ္ထိ-၏၊ [ယာဝ တာဝရှိသမျှ၌ အလယ်ပုဒ်မှာ ပဌမာရှိမြဲ။] တာဝ - ထို မြင်လောက်ရာအရပ် တိုင်အောင်၊ ပဋိမုခေါဝ - ဘုရားဘက်သို့ ရှေးရှု မျက်နှာမူလျက် သာလျှင်၊ အပသက္ကိတွာ-နောက်ဆုတ် နောက်ဆုတ်သွား၍၊ ဒဿနဝိသယံ-ကို၊ ဝိဇဟနဋ္ဌာနေ-စွန့်ရာအရပ်၌၊ (မမြင်လောက်မှ-ဟူလို၊) ဝန္ဒိတွာ-ဝပ်ချ၍၊ ပက္ကာမိ -ပြီ။

**အထ၊ပေ၊ဝိဒိတွာ။** ။"ပုဏ္ဏားသည် ပရစိတ္တဝိဇာနနဉာဏ် မရှိပါဘဲလျက် အဘယ်နည်းဖြင့် ဘုရားရှင်၏ လက်ခံတော်မူခြင်းကိုသိသနည်း"ဟု မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် "အထ၊ပေ၊ဝိဒိတွာ" ဟု မိန့်၊ "ရဟန်းဂေါတမသည် ငါ၏ လျှောက်ထားချက်ကို လက်မခံလျှင် ပယ်သင့်၏"ဟူသော ဗျတိရေကနည်း"ထိုသို့မပယ်ဘဲ အတွင်း၌နှစ်သက်မှုကို ဆောင်ထားပြီ" ဟူသော အနွယနည်းအားဖြင့် အခြင်းအရာကို မှတ်သားခြင်း၌ ကျွမ်းကျင်သောဉာဏ်ဖြင့် ( အကဲခတ် ကောင်းသော ဉာဏ်ဖြင့် ) သိသည် — ဟူလို။ [လက်ခံခြင်း၏ဆန့်ကျင်ဘက်ကို ဗျတိရေက, အလျော်ကို အနွယ—ဟု ဋီကာဆို၏။]

**ပဋိမုခေါ အပသက္ကိတွာ။** ။ယခုစာများ၌ "အပက္ကမိတွာ" ဟု ရှိ၏၊ နောက်၌လည်း "ပက္ကမိ" ဟု အပရကာလကြိယာ ရှိသောကြောင့် ဤ၌ "အပသက္ကိတွာ " ဟု ရှိသင့်သည်၊ သက္ကဓာတ်သည် ဂတိအနက်ဟော၊ ရှေ့-ထူပါရုံတည်ခဏ်း၌လည်း"ဟတ္ထိနာဂေါ ပေ၊အပသက္ကန္တော" ဟု တွေ့ခဲ့ပြီ။ [ ဝန္ဒိတွာတိ ပဉ္စပတိဋ္ဌိတေန—လက် ခြေ နဖူး, တတောင် ဒူးဟု, ငါးဦးသော တည်ခြင်းဖြင့်၊ ဝန္ဒိတွာ—ဝပ်ချ၍၊ ]

တေန၊ ပေ၊ ဟောတိတိကား၊ ယသ္မိံ သမယေ-၌၊ ဝေရဉ္ဇေန - သော၊ ဗြာဟ္မဏေန-သည်၊ ဘဂဝါ-ကို၊ ဝေရဉ္ဇံ-မြို့ကို၊ ဥပနိဿာယ-မှီ၍၊ ဝဿာဝါသံ-ကို၊ ယာစိတော-တောင်းပန်အပ်ပြီ (ဤစကားဖြင့် တေန၏ အနိယမ ဝါကျကိုထည့်သည်၊ ယာစဓာတ်က ဒွိကမ္မကဖြစ်၍"ဘဂဝါ,ဝဿာဝါသံ" ဟု ကံ ၂ မျိုးရှိရသည်၊ ) တေန သမယေန - ထိုအခါ၌၊ ( ဝေရဉ္ဇာပုဏ္ဏားဏ် တောင်းပန်အပ်ရာ ထိုအခါ၌၊) ဝေရဉ္ဇာ-ဝေရဉ္ဇာမြို့သည်၊ ဒုဗ္ဘိက္ခာ-မပြည့် စုံသော ထမင်းရှိသည်၊ ဝါ-ငတ်မွတ်ခေါင်းပါး, အစာရှားသည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ဒွဳဟိက္ခာတ်-ကား၊ ဒုလ္လဘဘိက္ခာ - ခဲယဉ်းသဖြင့် ရအပ်သော ထမင်း ရှိသည်၊ ပန-ဆက်၊ သာဒုလ္လဘဘိက္ခတာ- ထို ခဲယဉ်းစွာရအပ်သော ထမင်း ရှိသည်၏ အဖြစ်သည်၊ ( ဟောတိ, အဟောသိ တို့၌ စပ်၊ ) ယတ္ထ – အကြင် အရပ်၌၊ မနဿာ-တို့သည်၊ အသဒ္ဓါ-သဒ္ဓါမရှိကုန်သည်၊ အပ္ပသန္နာ-ရတနာ ၃ပါး၌ မကြည်ညိုကုန်သည်၊ ဟောန္တိ-နံ၏၊ တတ္ထ - ၌၊ သုသဿကာလေပိ– ကောင်းသော ကောက်ရှိရာအခါ၌သော်မှလည်း၊ ဝါ-ပြည့်စုံသောကောက်ရှိရာ အခါ၌သော်မှလည်း၊ ပုဗ္ဗဏ္ဏာပရဏ္ဏေ– ကောက်, ပဲသည်၊ အတိသမဂ္ဃေပိ– အလွန်နည်းသော အဘိုးရှိပါသော်လည်း၊ ဝါ– အလွန် အဘိုးချိုရာ အခါ၌ သော်လည်း၊ ဟောတိ-ဖြစ်တတ်၏၊ ပန-အန္ဓယကား၊ ဝေရဉ္ဇာယံ-၌၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ တထာ - ထို အခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ ဝါ – ထို အကြောင်းကြောင့်၊ (အသဒ္ဓ အပ္ပသန္နကြောင့် ဟူလို၊) န ဟောတိ-ဖြစ်သည်မဟုတ်၊ အပိစခေါ–

ဒုလ္လဘဘိက္ခာ။ ။ဒုဗ္ဘိက္ခ၌ ဒုသဒ္ဒါသည် အသမိဒ္ဓိ (မပြည့်စုံခြင်း) အနက်ဟော– ဟု သိစေလို၍ "ဒုလ္လဘ" ဟု ဖွင့်သည်၊ မှန်၏ – သုဘိက္ခာကို "သုလဘဘိက္ခာ" ဟု ဖွင့်သော်လည်း သုသဒ္ဒါသည် သမိဒ္ဓိအနက်ဟောသာ ဖြစ်သကဲ့သို့တည်း၊ ထို့ကြောင့် ဒု၏ပရိယာယ်ဖြင့် " အသမိဒ္ဓိ + ဘိက္ခာ ယတ္ထာတိ ဒုဗ္ဘိက္ခာ " ဟု ပြုမှ ထုံးစံကျမည်၊ အများအားဖြင့် ဒုသဒ္ဒါ၏ ဒုလ္လဘအနက်ကို သိစေလို၍ "ဒုလ္လဘဘိက္ခာ" ဖွင့်သည် ဟု ယူလိုကြပေလိမ့်မည်၊ သို့သော် အဘိဓာန်တို့၌ ဒုသဒ္ဒါ၏ ဒုလ္လဘ အနက်ဟော မပါ၊ အသမိဒ္ဓိအနက်သာ ပါ၏။

အတိ၊ ပေ၊ ပရဏ္ဏေ။ ။သံသဒ္ဒါ အပ္ပတ္ထ၊ အပ္ပေါ+အဂ္ဃော ယဿာတိ သမဂ္ဃော၊ အတိဝိယ + သမဂ္ဃော အတိသမဂ္ဃော၊ " သော် " ဟု လက္ခဏာ အနက်ကို ပေးရာ၌ ကာလာဓာရသဘောလည်း ပါသောကြောင့် " အခါ " ဟုလည်း ပေးသည်။ [ယဒါ ကိဉ္စိဒေဝ ဒတွာ (တစုံတခုကိုပေး၍) ဗဟုံ ပုဗ္ဗဏ္ဏာပရဏ္ဏံ ဂဏှန္တိ၊ တာဒိသေ ကာလေ ပိတိ အတ္ထော။] ပုဗ္ဗေ–ပဲ၏ရှေ့၌ (ရှေးဦးစွာ) + ပဝတ္တံ–သော+ အန္နံ–အစာတည်း၊ "ပြုဗ္ဗ"ဟု ရှိ၍ (ရ်) ကြောင့် နှကို ဏ္ဏပြု၊ အပရံ–ကောက်၏ နောက်၌+ပဝတ္တံ+အန္နံ အပရဏ္ဏံ။

စင်စစ်ကား၊ ဒုဿဿတာယ - မကောင်းသော (မပြည့်စုံသော) ကောက်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ–တွက်၊ ဆာတကဒေါသေန-ငတ်မွတ်ခြင်း တည်းဟူသောအဖြစ်ကြောင့်၊ အဟောသိ-ဖြို၊တဿာ-ကြောင့်၊ တမတ္ထံ-ထိုအနက်ကို၊ ( ဆာတကဒေါသကြောင့် ဖြစ်ရခြင်း ဟူသော အနက်ကို၊ ) ဒဿေန္တော (ဟုတ္တာ)၊ ဒွိဟိတိကာတိ အာဒိံ-ကို၊ (အာယသ္မာ ဥပါလိတ္ထေရော+သည်၊) အာဟ - လျှောက်ပြီ၊ ( တနည်း၊ ) သံဂီတိကာရော - သံဂါယနာတင် ထေရ်အပေါင်းသည်၊ အာဟ-မိန့်တော်မူပြီ။

တတ္ထ–၌၊ ဒွိဟိတိကာတိ-ကား၊ ဒွိဓာ– ၂ ပါး အပြားအားဖြင့်၊ ပဝတ္တဤဟိတိကာ– ဖြစ်သော အမူအရာရှိသည်၊(ဟောတိ-၏၊ ပါဠိတော်၌ စပ်၊) ဤဟိတံနာမ- သည်၊ ဣရိယာ-အမူအရာတည်း၊ တွေ- ဤဝေရဉ္စာမြို့၌၊ ကိဉ္စိ-တစုံတခုကို၊ဘိက္ခမာနာ-တောင်းကုန်လသော်၊လဒ္ဓုံ-ရကုန်အံ့လော၊

ဆာတက ဒေါသေန။ ။“ဆဒိ–ဇိဃစ္ဆာယံ”ဟူသော စုရာဒိဓာတ်ဖြင့်“ဆာဒန်-အလိုရှိခြင်း၊ ဝါ-ဆာလောင်ငတ်မွတ်ခြင်း၊ ဆာဒေါ-ခြင်း”ဒကို တပြု၍“ဆာတော”ဟု ဖြစ်၏၊ ဆာတောယေဝ ဆာတကော ( သွတ္ထ၌ ကပစ္စည်း၊ ) ဆာတကောစ+သော+ဒေါသောစာတိ ဆာတကဒေါသော။

တတ္ထ ဒွိဟိတိကာတိ။ ။[ဤအဖွင့်၌ စာနေ–ပိုဒ်နေ ရှုပ်ထွေး၏၊ အထူးဂရုစိုက်ကြပါလေ။] “ဒွိဓာ ပဝတ္တာ ဤဟိတိကာ”ဟု တချို့စာရှိ၏၊ ဝေရဉ္စာကို အရကောက်ရမည် ဖြစ်သောကြောင့်ရင်း“ဒွိဓာ+ပဝတ္တံ+ဤဟိတံ ဧတ္ထာတိ ဒွိဟိတိကာတိ မဇ္ဈေပဒလောပီဗာဟိရတ္ထသမာသော·ယံတိ ( ပဝတ္တအလယ်ပုဒ် ကြေသော ဗဟုဗ္ဗီဟိသမာသ်ဟု) ဒဿေန္တော”ဟုရင်း ဋီကာဖွင့်သောကြောင့်“ဒွိဓာ ပဝတ္တဤဟိတိကာ”ရှိသင့်၏၊ ထို့ကြောင့် နိဿယ၌ (ပဝတ္တဤဟိတိကာကို) သမာသ်အဖြစ်ဖြင့် အနက်ပေးထား၏။

ဤဟိတံ နာမ ဣရိယာ။ ။ဒွိဟိတိကာ၌ “ဒွိ+ဤဟိတ”၂ ပုဒ်ကို သမာသ်စပ်၍ သမာသန္တ (က) ပစ္စည်း သက်ပြီးနောက် ဣတ္ထိလိင် အရာဝယ် က နှောင်းလျှင် (အ)ကို (ဣ) ပြုမြဲဖြစ်ရကား “ဒွိဟိတိကာ”ဟု ဖြစ်သည်၊ ထို ဒွိဟိတိကာမှ“ဤဟိတ”သက်သက်ကို အနက်ဖွင့်လို၍“ဤဟိတံ နာမ ဣရိယာ ” ဟု ဖွင့်သည်၊ ထိုသို့ ဖွင့်သဖြင့် “ ဤဟနံ–ဖြစ်ခြင်း၊ ဤဟိတံ–ခြင်း”ဟု ဘာဝသာဓနကို သိစေသည်။ [ ဤဟနံ ဤဟိတန္တိ ဤဟိတသဒ္ဒေါ ဘာဝသာဓနောတိ အာဟ–ဤဟိတံနာမ ဣရိယာတိ။]

ဒွိဓာ ပဝတ္တာ၊ပေ၊ဧတ္ထ။ ။ ဤစကားရပ်ဝယ် ရှေ့၌ ပြခဲ့သောဣရိယာကို “စိတ္တဣရိယာ”ဟု ရင်း, တဘန် စိတ္တဣရိယာကို “ စိတ္တဤဟာ ” ဟု ရင်း ဖွင့်၏၊“ဤဟာ”ဟူသည် အမူအရာ ကြောင့်ကြဖျာပါရတည်း။ [ဓာတွတ္ထော ၀ ကြိယာနာမ, ကာစီဟာ (ကာစ+ဤဟာ) ဘေဒစိန္တာ။]ဧတ္ထဖြင့် ဝေရဉ္စာကို အရကောက်ဘို့ရာ သတ္တမီဗဟုဗ္ဗီဟိသမာသ်ကို ပြ၏၊ [ယောဇနာ၌“ဧတ္ထဥာနေ”ဟု စွဲ၏၊ “လဒ္ဓုမ–သက္ကုဿာမ”တို့၌ စပ်စေလိုဟန်တူသည်၊ မကောင်း။]

နလဇ္ဇာမ နုခေါ-လော၊ ဉတိ—သို့၊ ဒွိဓာ- ဖြင့်၊ ပဝတ္တာ-ဖြစ်သော၊ စိတ္တဇုရိယာ-စိတ်၏ အမူအရာသည်၊ စိတ္တ ဉှဟာ- စိတ်၏ ကြောင့်ကြ ဗျာပါရသည်၊ (အတ္ထိ)၊ ဝါ-တနည်း၊ ဧတ္ထ- မြို့၌၊ ဇီဝိတုံ-အသက်ရှည်ခြင်းငှါ။ သက္ခိဿာမ နုခေါ စွမ်းနိုင်ကုန်အံ့လော၊နော သက္ခိဿာမနုခေါ-လော၊ ဉတိ-သို့၊ ဒွိဓာ, ပဝတ္တာ၊ စိတ္တဇုရိယာ စိတ္တဉှဟာ (အတ္ထိ၊)၊ ဉတိအယံ - ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ ဧတ္ထ—ဒွိဟိဘိကာ ဟူသောပါဌ်၌၊ အဓိပ္ပါယော-ပွါယ်တည်း၊ အထဝါ-ကား၊ ဒုဗ္ဘိဝိကာ- ဆင်းရဲသဖြင့် အသက်မွေးရခြင်းရှိသည်၊ ( ဟောတိ၊) ဤဟိတံ-တံပုဒ်ငင်း၊ ဤဟာ - ငင်း၊ ဤရိယနံ - ငင်း၊ ပဝတ္တနံ- ငင်း၊ [“ဇီဝနံ ဝုတ္တိ ဇီဝိကာ၊ အာဇီဝေါဝတ္တနံ စာထ ” အဘိဓာန်နှင့်အညီ “ ဝတ္တနံ ” ဟု ရှုလျှင်ကောင်း၏၊] ဇီဝိတံ-တံပုဒ်ငင်း၊ ဉတိ အာဒီနိ-န်သော၊ ပဒါနိ-တို့သည်၊ ဧကတ္ထာနိ-တူသောအနက်ရှိကုန်၏၊ တသ္မာ- ထို့ ကြောင့်၊ (ဤဟိတံနှင့် ဇီဝိတံပုဒ်တို့၏ တူသောအနက် ရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ) ဧတ္ထ - ဤဝေရဥ္စာမြို့၌၊ ဒုက္ခေန- ဆင်းရဲသဖြင့်၊ ဤဟိတံ-အသက်မွေးရခြင်းသည်၊ ပဝတ္တတိ-၏၊ ဉတိ-ကြောင့်၊ ဒွိဟိတိကာ– ကာမည်၏၊ ဉတိအယံ - ကား၊ ဧတ္ထ-ဤ ဒွိဟိတိကာပုဒ်၌၊ ပဒတ္ထော–တည်း၊

ဧတ္ထ-ဤ ဝေရဥ္စာမြို့၌၊ သေတကာနိ-ဖြူကုန်သော၊ အဋ္ဌိနိ- အရိုးတို့သည်၊ (သန္တိ၊) ဉတိ-ကြောင့်၊ (ဖြူသောအရိုးရှိရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) သေတဋ္ဌိကာ-ကာမည်၏၊ ဒိဝသံမ္ပိ - တနေ့ပတ်လုံးလည်း၊ ယာစိတွာ - တောင်း၍၊ ကိဉ္စိ–ဘာကိုမျှ၊ အလဒ္ဓါ - မရမူ၍၊ ဝါ - ကြောင့်၊ မတာနံ – သေကြရကုန်သော၊ ကပဏမနုဿာနံ-အထီးကျန်မွဲ, လူဆင်းရဲတို့၏၊ အဟိဿုတ္တက ဝဏ္ဏောဟိ–မှို အဆင်းနှင့်တူသော အဆင်းရှိကုန်သော၊ အဋ္ဌိဟိ-တို့ဖြင့်၊ တတြ တတြ-ထိုထို

**လဇ္ဇာ၊ပေ၊အယမေတ္ထ အဓိပ္ပါယော။** ။“လဇ္ဇာမနုခေါ ကိဉ္စိဘိက္ခမာနာ, နလဇ္ဇာမ”ဖြင့် တောင်းရမ်းစားသောက်ရသော လူဆင်းရဲတို့၏ စိတ်အမူအရာ ဗျာပါရ ၂မျိုးကိုပြ၏၊ “ဇီဝိတုံ ဝါ သက္ခိဿာမနုခေါ နော ”ဖြင့် အစိုးရသူ လူချမ်းသာတို့၏ စိတ်အမူအရာ ဗျာပါရ ၂ မျိုးကိုပြ၏၊ “လူချမ်းသာတို့မှာ မစားရသူတို့၏ လုယက်မှုကို ခံရမည်ဖြစ်၍ အသက်မှ ရှည်နိုင်ပါ့မလား , မရှည်ဘဲများ နေမလား ” ဟု ကြောင့်ကြစိတ် ၂ မျိုးဖြစ်ရသည်–ဟူလို။ [ ကထံ ပနေတ္ထ ဤဟိတံ ဒွိဓာ ပဝတ္တတီတိ အာဟ–လဇ္ဇာမနုခေါတိ အာဒိ။]

**အထဝါ။** ။ပဌမနည်း၌ကဲ့သို့“ဒွိ + ဤဟိတ”ဟု မခွဲဘဲ,ဤနည်း၌“ဒု + ဤဟိတ” ဟု ပုဒ်ခွဲ၏၊ ဒု ၏ ဥ ကို ဝ ပြု“ဒွိဟိတိကာ”ဟု ပြီးသည်၊ ဒုသဒ္ဒါသည် အဘိဓာန်လာ အနက်တို့တွင် ကိစ္ဆအနက်ဟော၊ ထို့ကြောင့် “ဒုက္ခေန” ဟု ဖွင့်သည်၊ ဤဟိတသဒ္ဒါလည်း ဇီဝိတ၏ ပရိယာယ်တည်း၊ “ပဝတ္တတိ” ကား အတ္ထိကဲ့သို့ ကြိယာထည့်ပါဌ်၊ “ဒုက္ခေန+ဤဟိတံ+ဧတ္ထာတိ ဒွိဟိတိကာ”ဟု ပြုစေလိုရင်းဖြစ်သည်။

အရပ်၌၊ ပရိကိဏ္ဏာ-ရေးပြွမ်းသည်၊(ဟောတိ) ဇာတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ သေတန္တိကာတိပိ-ကာဟူ၍လည်း၊ ပါဌော-ပါဌ်ရှိသေး၏၊ တဿ-ထိုပါဌ်၏၊အတ္ထော-ကား၊ ဧတ္ထ—ဤ ဝေရဉ္စာမြို့၌၊ သေတာ-ဖြူသော၊ ဝါ- ဖြူအောင် နှိပ်စက်တတ်သော၊ အန္တိ - ကောက်ရောဂါသည်၊ ( အတ္ထိ )၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ( ဖြူအောင် နှိပ်စက်တတ်သော ကောက်ရောဂါရှိရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) သေတန္တိကာ—ကာမည်၏၊ အန္တိတိ-ကား၊ အာတုရတာ-ကျင်နာသည်၏အဖြစ်တည်း၊ဗျာဓိ-နှိပ်စက်တတ်သောအနာတည်း၊ ရောဂေါ—ရောဂါတည်း၊ စ- ဆက်၊ တတ္ထ-ထို ဝေရဉ္စာမြို့၌၊ သဿာနံ- ကောက်တို့၏၊ ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏကာလေ - ကိုယ်ဝန်ယူရာအခါ၌၊ ဝါ - ဖုံးချိန်၌၊ သေတကရောဂေန - ဖြူအောင် ပြုတတ်သော ရောဂါသည်၊ ဝါ—ဖလံဖြူနာသည်၊ ဥပဟတမေဝ—နှိပ်စက်အပ်သည်သာလျှင်၊ (ဟုတွာ)၊ ပစ္ဆိန္နခီရံ - ပြတ်စဲသောနို့ရည် ရှိသော၊ အဂ္ဂဟိတတဏ္ဍုလံ- မယူအပ်သောအဆန်ရှိသော၊ဝါ-အဆန်ကိုမယူနိုင်သော၊ ပဏ္ဍုရံ ပဏ္ဍုရံ-ဖွေးဖွေးဖြူ ဖွေးဖွေးဖြူသော၊ သာလိသီသံဝါ - သလေးနှံသည်၎င်း၊ ယဝဂေါဓုမသီသံ ဝါ-မယောနှံ နတ်ကောက်နှံသည်၎င်း၊ နိက္ခမတိ-ထွက်ရ၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ သေတန္တိကာတိ-ကာဟူ၍ ဝုစ္စတိ-၏။

**သေတာ+အန္တိ။** ။ "သေတကရောဂေန ပဏ္ဍုရံ ပဏ္ဍုရံ"ကို ထောက်၍ ရောဂါကြောင့် ဖြူနေသော သလေးနှံ မုယောနှံတို့၏ သေတအမည်ကို အကြောင်းရောဂါ၌ တင်စား၍ ဖလူပစာရအားဖြင့် ရောဂါကိုလည်း "သေတ" ဟု ဆိုထားသည်ဟု မှတ်။ [သေတံ+ကရောတီတိ သေတကော (ရောဂေါ)။]

**အန္တိတိ အာတုရတာ ဗျာဓိရောဂေါ။** ။ဘူဝါဒိ အဒ္ဓဓာတ်သည်"ဝဓ-ညှဉ်းဆဲနှိပ်စက်ခြင်း" အနက်ကို ဟော၏၊ အဒ္ဒတေ—ညှဉ်းဆဲ နှိပ်စက်တတ်၏၊ ဣတိ အန္တိ ( ဣပစ္စည်း၊ ) ညှဉ်းဆဲနှိပ်စက်တတ်သော ရောဂါကို "အန္တိ"ဟု ခေါ်၏၊ ဒိဝါဒိ ဗျဓဓာတ်သည် တာဠ (ညှဉ်းဆဲပုတ်ခတ်ခြင်း) အနက်ကိုဟော၏၊ ဗျဇ္ဈတိ—ညှဉ်းဆဲတတ်၏၊ ဣတိ ဗျာဓိ၊ ရုဇ္ဇတီတိ ရောဂေါ၊ ဤ ၃ ပုဒ်လုံးပင် အနာဟောပရိယာယ် ချည်းတည်း။ [ဗျာဓိ,ရောဂေါတိ ဧတာနိ အာတုရတာတိ ဣမဿ ဝေဝစနာနိ၊ ဤဋီကာထောက်၍ အန္တိကို " အာတုရတာ "ဟု ဖွင့်၍ အာတုရတာကိုမှ "ဗျာဓိ, ရောဂေါ" ဖွင့်သည်ဟု မှတ်။] တေန သေတန္တိကာနာမ ဧကော ရောဂဇာတီတိ ဒဿေတိ။

**ပစ္ဆိန္နခီရံ။** ။ဧကော ကိရ ပါဏကော နဠမဇ္ဈဂတံ (ရိုးတန်၏ အလယ်၌ တည်သော၊) ကဏ္ဍံ ( အတွင်းရိုးတံကို၊ ) တနည်း ( ဂဏ္ဍိံ—အဆစ်ကို၊ ) ဝိဇ္ဈတိ—ထိုး၏၊ ယေန ဝိဒ္ဓတ္တာ (ယင်းပိုးငယ်သည် ထိုးအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) နိက္ခန္တမ္ပိ သာလိသီသံ ခီရံ ဂဟေတုံ န သက္ကောတိ၊ တေနာဟ— ပစ္ဆိန္နခီရန္တိ အာဒိ၊ ဤကောက်ရောဂါကို အဆန်မပါဘဲ အသီးတွေဖြူနေအောင် ပြုတတ်သောကြောင့် " ဖလံဖြူနာ " ဟု၎င်း, အဆစ်၌ ပိုးထိုးသောကြောင့် "ဆစ်ပိုးနာ"ဟု၎င်း ခေါ်ကြသည်။

ဝပ္ပကာလေ-စိုက်ပျိုးအပ်ရာ အခါ၌၊ သုဋ္ဌု-ကောင်းစွာ၊ အဘိသင်္ခရိတွာ ဗီ - ပြုစီမံ၍လည်း၊ ဝုတ္တသဿံ - စိုက်ပျိုးအပ်သော ကောက်သည်၊ တတ္ထ-ထိုဝေရဉ္ဇာမြို့၌၊ သလာကာဝ-ရိုးတံချည်းသာ၊ သမ္ပန္နတိ- ပြီးစီး၏၊ (ပြည့်စုံ-ဟု မပေးနှင့်၊ မပြည့်စုံလို့ အရိုးချည်းဖြစ်နေသည်၊) ဣတိ- ကြောင့်၊ (ရိုးတံချည်းသာ ငြီးစီးရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) သလာကာဝုတ္တာ- တွာ မည်၏၊ ဝါ-တနည်း၊ တတ္ထ - ထို ဝေရဉ္ဇာမြို့၌ သလာကာယ - စာရေးတံမဲဖြင့်၊ ဇီဝိတံ-အသက်ကို၊ ဝတ္တေန္တိ-ဖြစ်စေကြရကုန်၏ ဣတိ-ထို့ကြောင့်၊ (စာရေးတံ မဲဖြင့် အသက်ကို ဖြစ်စေကြရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) သလာကာဝုတ္တာ-၏၊ ကိံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ကိံရ-ချဲ့ဥုံးအံ့၊ တတ္ထ - ထို ဝေရဉ္ဇာမြို့၌၊ ဓညဝိက္ကယိကာနံ - စပါးရောင်းသူတို့၏၊ သန္တိကံ - အထံသို့၊ ကယိကေသု-ဝယ်သူတို့သည်၊ ဂတေသု-

ဝပ္ပကာလေ ဝုတ္တသဿံ။ ။ဝပန် ဝပ္ပံ—စိုက်ပျိုးခြင်း၊ (ဝပဓာတ်, ယတ်ပစ္စည်းကြံ၊ သက္ကတ၌ ရန်ပစ္စည်းဖြင့် "ဝပြ" ဟု ရှိ၏)၊ ဝပ္ပဿ+ကာလော ဝပ္ပကာလော။ ["ဝပန္တိ ဧတ္ထာတိ ဝပ္ပေါ၊ ဝပ္ပေါစ+သော+ကာလောစာတိ ဝပ္ပကာလော" လည်း သင့်၏။] ဝပ္ပတေ-စိုက်ပျိုးအပ်၏၊ ဣတိ ဝုတ္တံ။ [ ဝပဓာတ်, တပစ္စည်း၊ ဝ၏ အကို ဥပြု။] ဝုတ္တဉ္စ+တံ+သဿဉ္စာတိ ဝုတ္တသဿံ။

သလာကာဝုတ္တာ။ ။သလာကာမတ္တံ+ဝုတ္တံ ဧတ္ထာတိ သလာကာဝုတ္တာ၊ ပုရိမပဒေ (သလာကာမတ္တဟူသော ရှေ့ပုဒ်၌၊) "ဥတ္တရပဒလောပေနာယံ နိဒ္ဒေသော " ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ [မတ္တ နောက်ပုဒ်ကိုချေခြင်းဖြင့် ညွှန်ပြအပ်သော သဒ္ဒါ, " သလာကာဝ" ဟူသော အဋ္ဌကထာ၌ ဧဝသည် မတ္တ၏အနက်ပြတည်း။] ဤဝိဂ္ဂဟ၌ ဝုတ္တသဒ္ဒါလည်း " စိုက်ပျိုးအပ်သော ကောက် " ဟူသော အနက်ကို မဟော၊ သမ္ပန္နတ်ကို ဆောက်၍ နိပ္ဖတ္တိ ( ပြီးစီးခြင်း ) အနက်ဟောဟု ဋီကာဆိုသည်။ [ သမ္ပန္နတီတိ စ ဣမိနာ ၊ ပေ ၊ ဝုတ္တသဒ္ဒေါ နိပ္ဖတ္တိအတ္ထောတိ ဒဿေတိ၊ ဤအလို " ဝတ္တတိ သမ္ပန္နတိ ဧတ္ထာတိ ဝုတ္တာ၊ သလာကာမတ္တံ – ရိုးတံမျှ+ဝုတ္တာ သလာကာဝုတ္တာ " ဟု ဝိဂ္ဂဟ အစစ်ပြု၊ "(စိုက်ပျိုးအပ်သောကောက်၏) ရိုးတံမျှသာ ပြီးစီးရာသည်"ဟုပေး။]

သလာကာယဝါစသည်။ ။ ဝုတ္တာ၌ ဝတုဓာတ် တပစ္စည်း၊ ဝ၏ အကို ဥပြု၊ "ဝတ္တေန္တိ ဧတ္ထာတိ ဝုတ္တာ၊ သလာကာယ+ဝုတ္တာ သလာကာဝုတ္တာ"ဟုပြု၊ "စာရေးတံ လက်မှတ်ဖြင့် အသက်ကို ဖြစ်စေရာမြို့ " ဟူလို။ [ ကီဓာတ်, အပစ္စည်းဖြင့် ကယော—ဝယ်ခြင်း၊ ဝိက္ကယော—ရောင်းခြင်း၊ ကယေန + ဇီဝတီတိ ကယိကော ( ဌနိ ပစ္စည်း ) ဝိက္ကယော အဿ အတ္ထီတိ ဝိက္ကယိကော(ဌနိ)ဟု ထောမနိဓိ ဆိုသည်၊ ဌကို ကပြု၍, ဣလာဟန် တူ၏၊ ထို့ကြောင့် "ကယိကေသု, ဓညဝိက္ကယိကာ" တို့သည် ပါဠ်မှန်တို့တည်း၊ ပါဠိအဘိဓာန်၌ "ကယိကောတုဝ ကာယိကော"ဟု ရှိပြန်သောကြောင့် ဏိက ပစ္စည်းဖြင့်"ကာယိကော"လည်းပါဠ်မှန်ပင်၊"ဝိက္ကာယိကော"ဟုရင်း,"ကာယကော" ဟု ဏွုပစ္စည်းဖြင့်ရင်း, ကြံလျှင် ဖြစ်နိုင်သော်လည်း အဘိဓာန်၌ မတွေ့ရ။

သွားကုန်လသော်၊ ဒုဗ္ဗလမနုဿေ - အားမရှိသော လူတို့ကို၊ အဘိဘဝိတွာ-လွှမ်းမိုး၍၊ ဗလဝမနုဿာ-အားရှိသော လူတို့သည်၊ ခဇ္ဇံ- စပါးကို၊ ကိဏိတွာ-ဝယ်ပြီး၍၊ ဂစ္ဆန္တိ—သွားကြကုန်၏၊ ဒုဗ္ဗလမနုဿာ-တို့သည်၊ အလဘမာနာ-မရကုန်လသော်၊ မဟာသဒ္ဒံ-ကျယ်စွာသော အသံကို၊ ကရောန္တိ-န်၏၊ ခဇ္ဇဝိက္ကယိယာ—တို့သည်၊ သဗ္ဗေသံ-အလုံးစုံတို့ကို၊ သင်္ဂဟံ—ချီးမြှောက်မှုကို၊ ကရိဿာမ-ကုန်အံ့၊ ဣတိ- ဤသို့ကြံ၍၊ ခဇ္ဇကရဏဋ္ဌာနေ-စပါးချင့်မှုကို ပြုရာအရပ်၌၊ ဝါ-စပါးကျီ၏ အနီး၌၊[ကောဋ္ဌာဂါရဿ သမီပဋ္ဌာနေ၊ ခဇ္ဇမိနနဋ္ဌာနေတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။]ခဇ္ဇမာပကံ(တနည်း)ခဇ္ဇမာယကံ-စပါးချင့်သူကို၊ နိသီဒါပေတွာ-ထိုင်စေ၍၊ဧကပဿေ-တခုသောနံဘေး၌၊ဝဏ္ဏဇ္ဈက္ခံ-အသပြာကို ကြည့်ရှုစိစစ်တတ်သူကို၊ ဝါ-ငွေသိမ်းသူကို၊ နိသီဒါပေသုံ - န်ပြီ၊ ခဇ္ဇတ္ထိကာ-စပါးဖြင့် အလိုရှိသူတို့သည်၊ ဝဏ္ဏဇ္ဈက္ခဿ-၏၊ ဝါ-၏၊ သန္တိကံ - သို့၊ ဂစ္ဆန္တိ၊ သော - ထို ငွေသိမ်းသူသည်၊ အာဂတပ္ပဋိပါဋိယာ - ရောက်လာသော အစဉ်အားဖြင့်၊ မူလံ-အဘိုး ကို၊ ဂဟေတွာ- ၍၊ ဣတ္ထန္နာမဿ - ဤ အမည်ရှိသူအား၊ ဧတ္တကံ—ဤမျှ အတိုင်းအရှည်ရှိသော စပါးကို ဒါတဗ္ဗံ-ပေးထိုက်၏၊ ဣတိ—သို့၊ သလာကံ—စာရေးတံကို၊ လိခိတွာ-ရေး၍ (ဝါ-လက်မှတ်ထိုး၍၊) ဒေတိ—ပေးလိုက်၏၊ တေ-ထိုဝယ်သူတို့သည်၊ တံ-ထိုလက်မှတ်ကို၊ပေ၊ဂဏှန္တိ-န်၏၊ ဧဝံ-သို့၊ တတ္ထ- မြို့၌၊ သလာကာယ—စာရေးတံဖြင့်၊ ဝါ- လက်မှတ်ဖြင့်၊ ဇီဝိတံ—ကို၊ ဝတ္တေန္တိ – ဖြစ်စေကြရကုန်၏၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ( စာရေးတံဖြင့် အသက်ကို ဖြစ်စေရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) သလာကာဝုတ္တာ- တ္တာ မည်၏။

န သုကရာ ဥဉ္ဆေန ပဂ္ဂဟေန ယာပေတုန္တိ-ကား၊ ပဂ္ဂဟေန-ပွေ့ယူအပ်သော သပိတ်ဖြင့်၊ ယော ဥဉ္ဆော-အကြင် ဆွမ်းရှာခြင်းသည်၊ (အတ္ထိ ) တေန

ခဇ္ဇမာယကံ။  ။ "ခဇ္ဇမာပကံ"ဟု စာအမျိုးရှိသော်လည်း မာခါတ် ဏ ပစ္စည်းဖြင့်ပြီးသော "ခဇ္ဇမာယော" သည် ဏွုပစ္စည်းဖြင့် "ခဇ္ဇမာယကော" ဟု ဖြစ်သင့်၏၊ ခဇ္ဇမာပကောပုဒ်၌ ရုပ်ပြီးပုံကို ကြံကြပါလေ။

ဝဏ္ဏဇ္ဈက္ခံ။  ။ ဝဏ္ဏ + အဇ္ဈက္ခ၊ "အဇ္ဈက္ခော အဓိဂတော — အကြီး အကဲ (အရာရှိ)"ဟုအဘိဓာန်ရှိ၏၊ အက္ခ-မိမိသက်ဆိုင်သောအရာကို + အဓိဂတော-အစိုးရသော အကြီးအကဲတည်း၊ အဇ္ဈက္ခော၊ သာရတ္ထ၌ "ဝဏ္ဏဇ္ဈက္ခန္တိ ကဟာပဏပရိက္ခကံ-အသပြာကို ကြည့်ရှုစိစစ်တတ်သူကို" ဟု ဖွင့်၏၊ "ဝဏ္ဏေ— အသပြာ၌၊ အဇ္ဈက္ခော— အကြီးအကဲတည်း၊ ဝဏ္ဏဇ္ဈက္ခော—ငွေသိမ်းသူ"ဟု ကြံ။

ပဂ္ဂဟေန ယော ဥဉ္ဆော။  ။ ပဂ္ဂယှတိ— ပွေ့ပိုက်၍ ယူအပ်၏၊ ဣတိ ပဂ္ဂဟော၊ (သပိတ်)။ ["ပဂ္ဂယှတိ တေနာ"ဟု ဝိမတိ၌ ကရဏသာဓ်ပြု၏၊ ဆွမ်းကိုယူကြောင်း သပိတ် ဟူလို။] ဥဆိဓာတ်သည် ရှာခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ ဥဉ္ဆနံ ဥဉ္ဆော။

(ဥဒ္ဓေန)-ထိုရှာခြင်းဖြင့်၊ ယာပေတုံ-ရှည်သော အခွန့်သို့ရောက်စေခြင်းငှါ၊ ဝါ – မျှတခြင်းငှါ၊ နသုကရာ - လွယ်ကူစွာ ပြုအပ်သည်၏အဖြစ် မရှိ၊ ဝါ– မလွယ်ကူ၊ ပတ္တံ- ကို၊ ဂဟေတွာ-ယူ၍၊ အင်္ဂုဏာ- အရိယာ ပုဂ္ဂိုလ် တို့သည်၊ ယံ ဥဉ္ဆံ- အကြင်ဆွမ်းရှာခြင်းကို၊ ကရောန္တိ- နိ၏၊ ဘိက္ခာစရိယံ-ဆွမ်းအလို့ငှါ လှည့်လည်ခြင်းကို၊ စရန္တိ-လှည့်သည်ကြကုန်၏၊ တေန ဥဒ္ဓေန-ထို ဆွမ်းရှာခြင်းဖြင့်၊ ယာပေတုံ-ငှါ၊ နသုကရာ-မရှိ၊ ဝါ–ကူ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ တဒါ–ဝေရဉ္ဇာမြို့ဝယ် ဝါကပ်တော်မူရာ ထိုအခါ၌၊ တတ္ထ-ထိုမြို့၌၊ သတ္တင္ဂ ဂါမေ-ခုနစ်ရွာ, ရှစ်ရွာတို့ကို၊ ဝိဏ္ဏာယ-ငှါ၊ စရိတ္တာ - ၍၊ ဝါ–လှည့်လည် ြင်းကြောင့်၊ [ဝိဏ္ဏာယ စရဏာဟေတု၊] ကေဒိဝသမ္ပိ-တနေ့မျှလည်း၊ ယာပန မတ္တံ- မျှတလောက်ရုံမျှကို၊ န လဘန္တိကိရ- မရကုန်သတတ်။

တေန ခေါ ပန သမယေန၊ ပေါဥဒ္ဒ ဘ္ဗလသဒ္ဒနိ(ဗ္ဗေ)ပါဋ္ဌ၌၊ တေနာတိ- ကား၊ ယသ္မိံသမယေ-၌၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဝေရဉ္ဇံ-ကို၊ ဥပနိဿာယ-၍၊ ဝဿာ ဝါသံ-မိုယ်းလပတ်လုံး သီတင်းသုံးတော်မူခြင်းသို့၊ ဥပဂတော - ကပ်ရောက် တော်မူပြီ၊ ( တအတွက် အနီယမဝါကျ၊ ) တေန သမယေန – ထို အခါ၌၊ (မြတ်စွာဘုရား၏ ဝေရဉ္ဇာမြို့ကို မှီ၍ ဂါကပ်တော်မူရာ ထိုအခါ၌၊) ဥတ္တရာ ပထဝါသိကာ-ဥတ္တရာပထတိုင်း၌ နေကုန်သော၊ ဝါ-ဂင်္ဂါမြစ်၏မြောက်ဘက် အရပ်၌ နေကုန်သော၊ ဝါ–တနည်း၊ ဥတ္တရာပထတော - တိုင်းမှ၊ ဝါ–ရပ်မှ၊

**နသုကရာ။** ။"သုခေန+ကရီယတေတိ သုကရာ"ဟုပြုလျှင် လွယ်ကူခြင်းကြိယာ မရ,ပြုအပ်သောအမှုကိစ္စသာရ၏၊ ထို့ကြောင့် လွယ်ကူခြင်းကြိယာရအောင် သုကရာ၌ ဘာဝပ္ပစ္စနကြံ၍ "သုကရဘာဝေါ ဗ္ဗေ နတ္ထိတိ န သုကရာ "ဟု ဋီကာဖွင့်သည်။

**ဘိက္ခာစရိယံ စရန္တိ။** ။" ဘိက္ခာစရိယံ " အရ ဆွမ်းခံ လှည့်လည်ခြင်းရ၍ " စရန္တိ "အရလည်း လှည့်လည်ခြင်းရသောကြောင့် အဘေဒဘေဒူပစာကြံ။ [ စရိ တဗ္ဗာတိ စရိယာ–လှည့်လည်အပ်သော အရပ်၊ ဘိက္ခာယ+ စရိယာ ဘိက္ခာစရိယာ– ဆွမ်းအလို့ငှါ လှည့်လည်အပ်သောအရပ်၊ ဤသို့ တနည်း ကြံကြသေး၏။]

**ဥတ္တရာပထကာ။** ။[ "ဥတ္တရာ"ဟု အာကာရန္တ အဗျယပုဒ်တမျိုးကို ထောမနိဓိ၌ တွေ့ရ၏၊ နိဝါသ,အာဂတ ၂နက်၌ ဏပစ္စည်းသက်၍, က အက္ခရာ လာ။ ] "ဥတ္တရာ ပထော + နိဝါသော ဧတေသံတိ ဥတ္တရာပထကာ၊ ဥတ္တရာပထတော အာဂတာတိ ဥတ္တရာပထကာ "ဟု ပြု၊ ပထသဒ္ဒါလည်း ဒေသအနက်ဟောတည်း၊ [ဂင်္ဂါယ ဥတ္တရ ဒိသာပဒေသော ဥတ္တရာပထော။ (ဝိမတိ) ] " ဥတ္တရာပထကာ "ဟု ဋီကာ၌ မှုကွဲပြု၍ နိရုတ္တိနည်းအားဖြင့် ပထကို ဟပြုလေ၏၊"(တနည်း)ဥတ္တရံ-ထူးခြားသောဘဏ္ဍာကို+ အာဟရန္တိ–ဆောင်ယူလာတတ်ကုန်၏၊ (တနည်း ) ဥတ္တရံ– ပိုလွန်သော အဖိုးကို+ အာဟရန္တိ–ဆောင်ယူတတ်ကုန်၏၊ ဣတိ ဥတ္တရာဟကာ "ဟုလည်း ကြံလေသေး၏။

အာဂတတ္တာ-လာကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဧဝံ-ဤသို့ ဥတ္တရာပထကဟူ၍၊ လဒ္ဓဝေါဟာရာ-ရအပ်သော အခေါ်အဝေါ်ရှိကုန်သော၊ အဿဝါဏိဇာ-မြင်းကုန်သည်တို့သည်၊ ဥတ္တရာပထေ-၌၊ ဝါ-၌၊ အဿာနံ- မြင်းတို့၏၊ ဥဋ္ဌာန ဋ္ဌာနေ - ပေါ်ထွက်ရာ အရပ်၌၊ ပဉ္စအဿသတာနိ - ငါးရာသော မြင်းတို့ကို၊ ဂဟေတွာ- ယူ၍၊ ဒွိဂုဏံ တိဂုဏံ- နှစ်ဆတက်, သုံးဆတက် ဖြစ်သော၊ ဝါ- နှစ်ထမ်းပိုး , သုံးထမ်းပိုး မြတ်သော၊ လာဘံ - လာဘ်ကို၊ ပတ္တယမာနာ - တောင့်တကုန်လျက်၊ ဒေသန္တရံ – အရပ် တပါးသို့၊ ဂစ္ဆန္တာ – သွားကုန်လသော်၊ အတ္တနော-မိမိ၏၊ ဝိဏ္ဏာယိကဘဏ္ဍာဘူတေဟိ-ရောင်းခြင်း၌ ယှဉ်သော ဘဏ္ဍာ ဖြစ်၍ ဖြစ်ကုန်သော၊ ဝါ – ရောင်းအပ်သော ဘဏ္ဍာ ဖြစ်၍ ဖြစ်ကုန်သော၊ ပဉ္စ မတ္တေဟိ – ငါးလီ အတိုင်းအရှည် ရှိကုန်သော၊ တေဟိ အဿသတေဟိ-ထို မြင်းအရာတို့နှင့်တကွ၊ ဝေရဉ္ဇံ-၌၊ [ဘုမ္မတ္တေ ဟေတံ ဥပ ယောဂဝစနံ၊] ဝဿာဝါသံ-မိုးလပတ်လုံးနေခြင်းသို့၊ ဥပဂတာ-ကပ်ရောက်ကုန်သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊ ( ဥပဂတာ ဟောန္တိ-နည်း၊ ) ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ တသ္မိံ ပဒေသေ-ထို ဝေရဉ္ဇာအရပ်၌၊ ဝဿိကေ-မိုး ဥတု ဖြစ်ကုန်သော၊ စတ္တာရောမာသေ-၄လတို့ပတ်လုံး၊ အဒ္ဓါနံ - ရှည်သော ခရီးကို၊ ပဋိပဇ္ဇိတုံ-သွားခြင်းငှါ၊ န သက္ကာ- မတတ်ကောင်း၊(ဣတိ- ကြောင့်၊ ဥပဂတာ-န်သည်၊ ဟောန္တိ- န်၏၊ )စ- ဆက်၊ (ဥပဂတာဟောန္တိကို ပြန်၍ ဆက်သော ဝါကျာရမ္ဘ၊ ) ဥပဂစ္ဆန္တာ- ကပ်ရောက်ကုန်လသော်၊ ဗဟိနဂရေ-မြို့ပြင်ဘက်၌၊ ဥဒကေန - သည်၊ အနဇ္ဈောတ္ထရဏီယေ - မလွှမ်းမိုးနိုင်သော၊ ဌာနေ- အရပ်၌၊ အတ္တနော – ၏၊ ဝါသာဂါရာနိစ – နေရာ အိမ်တို့ကိုငှင်း၊ အဿာနံ-မြင်းတို့၏၊ မန္ဒုရံစ- တင်းကုပ်ကိုငှင်း၊ ဝါ- ဇောင်းကိုငှင်း၊ ကာရာ ပေတွာ–စေ၍၊ ဝတိယာ စည်းဖြင့်၊ ပရိက္ခိပိံသု – ကာရံကြကုန်ပြီ၊ တေသံ–ထို မြင်းကုန်သည်တို့၏၊ တာနိ ဝသနဋ္ဌာနာနိ-ထို နေရာအရပ်တို့သည်၊ အဿ မဏ္ဍလိကာယောတိ - လိကာတို့ဟူ၍၊ ပညာယိံသု - ထင်ရှားကုန်ပြီ၊ တေန-ကြောင့်၊ တေဟိ ၊ ပေ ၊ ဟော ၊တီတိ- တိဟူ၍၊ ( အာယသ္မာ ဥပါလိတ္ထေရော ) အာဟ။

မန္ဒုရံ။ ။ထောမနိမိဉ် မန္ဒုရာ (ဣတ္ထိလိန်) ကို မဒိဓာတ် ဥရစ်ပစ္စည်းဖြင့်“အဿ သာလာ ” ဟု ဖွင့်၏၊ သာရတ္ထလည်း နည်းတူ၊ “ အသုန္ဒရတ္တာ– မကောင်းသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အမန္ဒိ ( ဇင္ဃတ္တံ အဂမိ ) – ညံ့ဖျင်းသည်၏ အဖြစ်သို့ ရောက်ပြီ၊ ဣတိ မန္ဒုရာ ” ဟု ဓာတွတ္ထသဂြိုဟ် ဝိဂ္ဂဟပြု၏။ [ “ မန္ဒိရံ ” ဟု ရှိသည်ကား ပါဠ်ပျက်။ ] မဏ္ဍလေန–အဝိုင်းအားဖြင့်+ကတာ မဏ္ဍလိကာ၊ ထိုအဝိုင်းမျိုး အများဖြစ်၍“မဏ္ဍလိ ကာယော” ဟု ဗဟုဝုစ်ထားသည်။

ပဏ္ဍပဏ္ဍု ပုလကန္တိ-ကား၊ ကေမေကဿ-တပါးတပါးသော၊ ဘိက္ခုနော- ဘို၊ ပဏ္ဍုပဏ္ဍုပမာဏံ-တကွမ်းစား တကွမ်းစားအတိုင်းအရှည်ရှိသော၊ ဝါ- တစလယ် တစလယ် အတိုင်းအရှည်ရှိသော၊ ပုလကံ-မုယောဆန်သည်၊ (ပညတ္တံ ဟောတိ - ၌စပ်၊) ပဏ္ဏောနာမ – ပဏ္ဏမည်သည်၊ နာဠိမတ္တံ- တကွမ်းစား အတိုင်းအရှည်ရှိသည်၊ ကေဿ-သော၊ ပုရိသဿ-၏၊ ဝါ-ဘို၊ ယာပနာယ- ရှည်သောအဖွန့်သို့ ရောက်စေခြင်းငှါ၊ ဝါ–မျှတခြင်းငှါ၊ အလံ-စွမ်းနိုင်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ဟိ-သာဓကကား၊ပဏ္ဏောဒနော နာလမယံ ဒုဝိန္နန္တိ-နှံဟူသော၊ တော် – ၌ ဂါထာပါဒကို၊ ( မဇ္ဈရိယကောသိယေနပိ – မဇ္ဈရိယကောသိယ သေဋ္ဌေးသည်လည်း၊ ) ဝုတ္တံ - ဆိုအပ်ပြီ၊ [ ပဏ္ဏောဒနော - တကွမ်းစားချက် ထမင်းဖြစ်သော၊ အယံ-ဤနို့ယနာသည်၊ ဒုဝိန္နံ- သင်နှင့်ငါ ၂ ယော်တို့အား၊ နာလံ-မလောက်၊ ] နိဗ္ဗုဿံ–အခွံ မရှိသည်ကို၊ ကတ္ဘာ - ၍၊ ဥဿေဒိတ္ဘာ– ပေါင်း၍၊ ဝါ - ပြုတ်၍၊ ဂဟိတ ယဝတဏ္ဍုလာ - ယူအပ်သော မုယောဆန် တို့ကို၊ ပုလကံနာမ–ပုလကမည်၏ ဟူ၍၊ ဝုစ္စန္တိ–နှ်၏၊ ဟိ- ဆက်၊ (တနည်း)

**ပဏ္ဏောနာမ၊ပေ၊ ယာပနာယ ။** ။ “ ပဏ္ဍုပဏ္ဍုပုလကံ ” ဟူသော သမာသ် ပုဒ်ဝယ် ပဏ္ဍုပဏ္ဍု ဟူသော ဝိစ္ဆာပုဒ်ကို ဖွင့်ပြလို၍“ပဏ္ဏောနာမ၊ပေ၊ယာပနာယ”ဟု မိန့်၊ ယောကျ်ားတယောက် မျှတလောက်သော (ဝလောက်သော) တစလယ် အတိုင်း အရှည်ကို“ပဏ္ဍု”ခေါ်သည်–ဟူလို၊ [“ပဏ္ဏောတု နာဠိ နာရိယံ”ဟူသော အဘိဓာန် (၄ဂ၄ ) အတိုင်းပင်တည်း။ ] “ ပဏ္ဏောဒနော နာလ·မယံ ဒုဝိန္နံ ” ကား အသီတိ နိပါတ်–သုဓာဘောဇနဇာတ်တော် ဂါထာ၏ စတုတ္ထပါဒတည်း၊ မဇ္ဈရိယကောသိယ သဋ္ဌေးသည် သူတပါးအား ပေးရမည် စိုးသောကြောင့် ဂင်္ဂါမြစ်ကမ်း ချုံကြား၌ တိတ်တိတ်ပုန်း နို့ဃနာချက်နေစဉ် ပုဏ္ဏားယောင်ဆောင်၍လာသော သကြားမင်းက တောင်းရာ၌ ပြောဆိုအပ်သောစကားဖြစ်သည်။ [“တစလယ်သည် တယောက်သော ယောကျ်ားအတွက် မျှတလောက်၏” ဟူသော စကားကို “ ပဏ္ဏောဒနော န+ အလံ အယံ ဒုဝိန္နံ-ဤ တစလယ်ချက်ထမင်းသည် သင်နှင့်ငါ ၂ ယောက်အတွက် မလောက် (တယောက်အတွက်သာ လေ၁်သည်) ”ဟူသောစကားက ထောက်ခံသည်–ဟူလို။ ]

**ပါဠ်မျက်တတ်ပုံ ။** ။ “ ပဏ္ဏောဒနော နာဠိမယံ ဒုဝိန္နံ၊ ပဏ္ဏောဒနော–သည်၊ နာဠိမယံ–ကွမ်းစားဖြင့်ပြီး၏၊ ဒုဝိန္နံ–ရခဲ၏ ” ဟု ပါဠ်ပျက်ကို တွေ့၍ အနက်ပျက်ပေး ကြ၏၊ ထို ပါဠ်အနက်သည် မူလဇာတ်ပါဠိနှင့် ဆန့်ကျင်ရုံ မက , “ ပဏ္ဏောဒနော ” ဟူသော ပုလ္လိင်နှင့် အရတူပုဒ်များကို “ နာဠိမယံ ဒုဝိန္နံ ” ဟု နပုလ္လိင်ထားခြင်းက စ၍ အားလုံးအမှားချည်းသာတည်း။

**ပုလကံနာမ၊ပေ၊ဝုစ္စန္တိ။** ။ပဏ္ဍုပုဒ်ကို ဖွင့်ပြီး၍ တွဲဘက်ဖြစ်သော ပုလကပုဒ်ကို ဖွင့်လိုသောကြောင့်“ပုလကံနာမ၊ပေ၊ဝုစ္စန္တိ”ဟု မိန့်သည်၊ ထိုဝါကျ၌ “ ပုလကံနာမ– ယဝတဏ္ဍုလာ ဝုစ္စန္တိ”သာ လိုရင်းတည်း၊“မုယောဆန်တို့ကို ပုလက ဟု ခေါ်သည် ”

ဟိယသ္မာ,သထုသာ-ဖွဲ့နှင့်တကွ ဖြစ်ကုန်သည်၊ ယဒိဟောန္တိ-နံအံ့၊(ဓေဝံသတိ-သော်၊) ပါဏကာ-ပိုးငယ်တို့သည်၊ ဝိဇ္ဈန္တိ—ထိုးတတ်ကုန်၏၊ အဒ္ဓါနက္ခမာ-အခွန့်ရှည်သော ကာလပတ်လုံး ခံနိုင်ကုန်သည်၊ ဝါ - အရှည်ခံကုန်သည်၊ နဟောန္တိ၊ တသ္မာ—ကြောင့်၊ တေဝါဏိဇာ- တို့သည်၊ အဒ္ဓါနက္ခမံ-သည်ကို၊ ဝါ- အောင်၊ ကတ္တာ- ၍၊ ယဝတဏ္ဍုလံ- ကို၊ အာဒါယ- ၍၊ အဒ္ဓါနံ- အခွန့်ရှည်သောခရီးကို၊ ပဋိပဇ္ဇန္တိ- သွားကြကုန်၏၊(ကိံ- အဘယ်သို့ကြံ၍ ယူသွားကုန်သနည်း၊) ယတ္ထ - အကြင်အရပ်၌၊ အဿာနံ – တို့၏၊ ခါဒနီယံ - ခဲဘွယ်ဖြစ်သော၊ တိဏံ — မြက်သည်၊ ဝါ - ကို၊ ( ခါဒနီယတိဏံဟု လည်း သမာသ်ရှိ၏၊) ဒုလ္လဘံ-သည်၊ ဘဝိဿတိ- တံ့၊ တတ္ထ–၌၊ ဧတံ- ဤ မုယောဆန်သည်၊ အဿဘတ္တံ-မြင်းစာသည်၊ ဘဝိဿတိ-တံ့၊ ဣတိ–ဤသို့ကြံ၍ ယူသွားကုန်ပြီ။

ဟူလို၊ ထောမနိမိဠ် နပုလ္လိန်ပုလကနှင့် ပုလ္လိန်ပုလာကကို ပရိယာယ် ဟု ဆို၏၊ ဿာလီပုလာကကို“ဿာလီဿာ+ပုလာကာ တဏ္ဍုလာ သန္တိ အတြ”ဟုဖွင့်၏၊ထို၌ ပုလာကကို တဏ္ဍုလာ ဟု ဖွင့်ခြင်းသည် ဤ၌ “ ပုလကံနာမ.... ယဝတဏ္ဍုလာ ” ဟု ဖွင့်ခြင်းနှင့် ထပ်မိ၏၊ ထို့ကြောင့် “ ပတ္တပတ္တပုလကံ ” ဟု ပြင်ကြခြင်းသည် သက္ကတအဘိဓာန်နှင့် ညီညွတ် ပါပေသည်၊ “ ဝုစ္စန္တိ ” ဟု ဆိုသောကြောင့် ပုလကပုဒ်၏ ဆန် သာမညကို ဟောရာဝယ် ဤနေရာ၌“ယဝတဏ္ဍုလ”ဟူသော ဆန်ဝိသေသကို ဧကဒေသူပစာရ အားဖြင့် ယူစေလိုကြောင်းသိသာ၏၊ [ဝုစ္စတိ ဝုတ္တံ,နာမံ ပရိယာယ,ရှိလကမ္မ,ဥပစာ၊—နိယာမ်။ ] ထိုပုလက၌လည်း“ပုလ— မဟတ္တေ” ဓာတ်နောင် ကပစ္စည်း၊ (က် အနုဗန် ရှိသော အပစ္စည်း )သက်၍ သွတ္တုန္ဒ ကန်ပစ္စည်း ထပ်သည်—ဟု ဆိုသည်။

**ဥဿေဒိတွာ။** ။ ဥပုဗ္ဗ သိဒဓာတ်သည် ချက်ခြင်း , ပြုတ်ခြင်း , ပေါင်းတင်ခြင်း အနက်ကို ဟော၏၊ ဘူဝါဒိဓာတ် ဖြစ်သောကြောင့် “ ဥဿေဒိတွာ ” ဟု ရှိသင့်၏၊ ပြုတ်ဆန်သဘော ဖြစ်အောင်“ပေါင်းတင်၍”ဟု ပေး၊ ထိုသို့ ပေါင်းပြီးနောက် အခြောက်လှန်း၍ ယူသွားကြသည်၊ ယဝ — “ မုယော (ဂျုံဖြူ) ” ဟု အမရကောသ နိဿယ၌ ဆရာတို့ အနက်ပေးကြ၏၊ “နိတ္ထုသံ ကတ္တာ—ဖွဲ့မပါအောင် ပြု၍”ဟူသော စကားကို ကောက်ချက်ချပြီးလျှင် “ ပတ္တပတ္တမူလကံ ” ဟု ရှေးကပြင်ခဲ့ကြ၍ “ မူလကံ= မုယောဆန်ရင်း”ဟု လည်း အနက်ပေးခဲ့ကြ၏၊ သို့သော်“နိတ္ထုသံ ကတ္တာ”သည် ဤဝါကျ၏ လိုရင်းမဟုတ်၊ “ယဝတဏ္ဍုလာ”သာ လိုရင်းတည်း၊ မူလကံပုဒ် သက်သက်ကလည်း “ဆန်ရင်း”ဟူသော အနက်ကို မဟောနိုင်၊ ဖွဲ့မပါရုံမျှကိုလည်း“ဆန်ရင်း”ဟု မခေါ်နိုင်သေး၊ ဆန်ကွဲ ဆန်ကျိုးမပါမှသာ ဆန်ရင်းဟု ခေါ်နိုင်သည်၊ ထို့ကြောင့် မူလကံကို ပါဌ်ပျက် အနက်ပျက် ဟု သာ ယူသင့်တော့သည်။

**အဒ္ဓါနက္ခမာ။** ။ “ကာလေ ဒီဃဉ္စသေဒ္ဓါနံ” အဘိဓာန်နှင့် အညီ အဒ္ဓါန သဒ္ဒါသည် အခွန့်ရှည်သောအခါကို ဟော၏၊ အဒ္ဓါနံ—ရှည်သော ကာလပတ်လုံး၊ ခမာ—ခံနိုင်သော မုယောဆန်တို့တည်း၊ အဒ္ဓါနက္ခမာ—တို့။ [ဒီဃကာလံ ပဝတ္တေတုံ ခမာ။ ]

ပန်-ပရိဟာရ၊ပေ၊အံ့၊ကသ္မာ-ကြောင့်၊တေဟိ-ထိုမြင်းကုန်သည်တို့သည်၊ တံ- ထို မုယောဆန်ကို၊ ဘိက္ခူနံ- ရဟန်းတို့ အကျိုးငှါ၊ ဝါ-တို့ဘို့၊ ပညတ္တံ-ဝတ်တည်အပ်သနည်း၊ ဣတိ-ဤကား အမေးတည်း၊ (ပရိဟာရော မယာ) ဝုတ္တတော၊ ဟိ-ချဲ့၊ တေ-ထိုဥတ္တရာပထတိုင်းသားတို့သည်၊ဒက္ခိဏာပထမနုဿာ ဝိယ-ထတိုင်းသားလူတို့ကဲ့သို့၊ [ဥတ္တရာကဲ့သို့ ဒက္ခိဏာဟု အဇ္ဈယတမျိုးရှိ၏။] အဿဒ္ဓါ- သဒ္ဓါ မရှိကုန်သည်၊ အပ္ပသန္နာ -ရတနာ ၃ ပါး၌ မကြည်ညိုကုန်သည်၊ န- မဟုတ်ကုန်၊ ပန- အန္တယကား၊ တေ- ထို ဥတ္တရာပထတိုင်းသားတို့သည်၊ သဒ္ဓါ, ပသန္နာ, ဗုဒ္ဓမာမကာ – ဘုရား ဟူသော ငါ့ဥစ္စာ ရှိကုန်သည်၊ ဝါ – ဘုရားကို မြတ်နိုးကြကုန်သည်၊ ဓမ္မမာမကာ, သံဃမာမကာ – နှ်သည်၊ (ဟောန္တိ၊) ဧတ-တို့သည်၊ ပုဗ္ဗဏှသမယံ-၌၊ ကေနစိဒေဝ-တစုံတခုသောလျှင် ဖြစ်သော၊ ကရဏီယေန-ပြုဘွယ် ကိစ္စကြောင့်၊ နဂရံ- သို့၊ ပဝိသန္တာ–န်လ သော်၊ ဒွေတဧယာ= (ဒွိတ္တယော) ဒိဝသေ-တို့ပတ်လုံး၊ သုနိဝတ္ထေ-ကောင်း စွာ ဝတ်အပ်သော သင်းပိုင်ရှိကုန်သော၊ သုပါရုတေ-ကောင်းစွာရုံအပ်သော အပေါ်ရုံရှိကုန်သော၊ [ သုဋ္ဌု +နိဝတ္ထံ ယေသံတိ သုနိဝတ္ထာ၊ သုဋ္ဌု +ပါရုတံ ယေသံတိ သုပါရုတာ။ ] ဣရိယာပထသမ္ပန္နေ – ဣရိယာပုထ်နှင့် ပြည့်စုံကုန် သော၊ သကလမ္ပိနဂရံ-တမြို့လုံးကိုလည်း၊ ပိဏ္ဍာယ-ငှါ၊ စရိတွာ-၍၊ ကိဉ္စိ မျှ၊ အလဘမာနေ- မရရှာကြကုန်သော၊ သတ္တဋ္ဌဘိက္ခူ - ခုနစ်ပါး ရှစ်ပါးသော ရဟန်းတို့ကို၊ အဒ္ဒသံသု-န်ပြီ၊ ဒိသွာန- ကြောင့်၊ နေသံ- ဥတ္တရာပထတိုင်းသား တို့၏၊ တေ ံ အဟောသိ ( ကိံ ) အယျာ- တို့သည်၊ ဣမံ နဂရံ ဥပနိဿာယ ဝဿံ,ဥပဂတာ-န်ပြီ၊ ဆာတကဥ္ဆ-ဆာလောင်ငတ်မွတ်ခြင်းဘေးသည်လည်း၊ ဝတ္တတိ - ဖြစ်နေ၏၊ ကိဉ္စိစ - ဘာကို မျှလည်း၊ န လဘန္တိ - မရ ရှာကြကုန်၊ အတိဝိယ–သာလျှင်၊ ကိလမန္တိ-ပင်ပန်းရှာကြကုန်၏၊ မယဥ္စ,အာဂန္တုကာ-ဧည့်သည်တို့သည်၊ အမှ-န်၏၊ နေသံ – ထို အရှင်တို့ဘို့၊ ဒေဝသိကံ - နေ့တိုင်း

ဗုဒ္ဓမာမကာ။ ။မမ+အယံတိ မာမကော၊ အယံ–ဤ အရာသည်+မမ – ငါ၏ ဥစ္စာတည်း၊ ဣတိ မာမကော။ [အမှ တည်, အယံ (ဣဒံ) အနက်၌ ဏပစ္စည်း၊ တဒ မိနာ ဒိနိ–ဟူသော မောဂ္ဂလ္လာန်သုတ်ကြီးဖြင့် အမှကို မာမကပြု၊] ဗုဒ္ဓေါ+မာမကော ဧတေ သန္တိ ဗုဒ္ဓမာမကာ—ဘုရားဟူသော ငါ့ဥစ္စာရှိသူတို့၊ ''ဘုရားကို ကိုယ့်ဥစ္စာဟု မြတ်နိုး သူတို့'' ဟူလို၊ [ဓမ္မမာမကာ, သံဃမာမကာ တို့၌လည်း နည်းတူ။] ဤသို့ သဒ္ဒတ္ထ ဖြစ် သောကြောင့် '' အမှာကံ ဗုဒ္ဓေါတိ ဧဝံ ဗုဒ္ဓံ မမာယန္တီတိ ဗုဒ္ဓမာမကာ '' ဟူသော သာရတ္ထကို အမိပ္ပါယ်ဖွင့်ဟု မောဂ္ဂလ္လာန် နိဿယသစ် ဏွာဒိကဏ္ဍ ( ၃၃ ) သုတ်၌ ဆုံးဖြတ်တော်မူသည်။ [ယောဇနာ၌ကား ''ဗုဒ္ဓံ + မမာယန္တီတိ ဗုဒ္ဓမာမကာ''ဟု ပြု၏၊ ထို ယောဇနာအတိုင်း ရုပ်ပြီးပုံကို စဉ်းစားကြပါလေ။]

နေ့တိုင်း၊ ယာဂုဉ္စ-ကိုဂုင်း၊ ဘတ္တဉ္စ, ပဋိယာဒေတုံ - ပြည့်စုံစေခြင်းငှါ၊ ဝါ- စီရင်ခြင်းငှါ၊ [ပတိ ပုဗ္ဗ ယတခါတ်, ဏောပစ္စည်း, တကို ဒပြု၊ "သမ္ပာဒေတုံ" ဋီကာ။] န သက္ကောမ-နိ၊ ပန-ဆက်၊ အမှာကံ,အသော-တို့သည်၊ သာယဉ္စ- ညနေချမ်း အခါ၌ဂုင်း၊ ပါတောစ-ဂုင်း၊ ဒွိက္ခတ္တုံ၊ ဘတ္တံ လဘန္တိ၊ မယံ ၊ ပေ ၊ ယန္နူန ဒဒေယျာမ - အကယ်၍ လှူရပါကုန်မူကား ကောင်းပေစွ၊ ဧဝံ-ဤသို့ ပေးလှူကုန်လသော်၊ အယျာစ၊ပေ၊ဣတိ - ဤသို့ အကြံဖြစ်ပြီ၊ (ဣတိ–ဤသို့ ကြံပြီး၍၊) တေ- ထို မြင်းကုန်သည်တို့သည်၊ ဘိက္ခူနံ၊ပေ၊အာရောစေတွာ-၍၊ ဘန္တေ-တို့၊ တုမှေ,ပတ္ထပတ္ထ ပုလကံ-ကို၊ ပဋိဂ္ဂဟေတွာ-ခံယူ၍၊ ယံဝါ တံဝါ- သင့်သလို တော်သလို၊ ကတွာ၊ ပေ ၊ ပညပေသုံ - ဝတ်တည်ထားကြ ကုန်ပြီ၊ တေန-ကြောင့်၊ တေဟိ၊ ပေ ၊ ဟောတီတိ(အာယသ္မတာ ဥပါလိတ္ထေရေန), ဝုတ္တံ- ပြီ၊ ပညတ္တန္တိ- ကား၊ နိစ္စဘတ္တသခေ်ပေန- မြဲသောဆွမ်း၌ ထည့်သွင်း အပ်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ဝါ – နိစ္စဘတ် အသွင်အားဖြင့်၊ ထပိတံ- ထားအပ်သည်၊ (ဟောတိ)။

ဣဒါနိ – ၌၊ ဘိက္ခူ ၊ပေ၊အာဒိသု - အစရှိသော ပါဠိရပ်တို့၌၊ (အတ္ထော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ဣဒါနိ၏ စပ်ပုဒ်ထည့်သည်၊) ပုဗ္ဗဏှ သမယန္တိ- ကား၊ ဒိဝ သဿ-နေ့၏၊ ပုဗ္ဗဘာဂ သမယံ- ရှေ့အဘို့ဖြစ်သော အခါ၌၊ ပုဗ္ဗဏှသမယေ- နေ့၏ ရှေ့အဘို့ဖြစ်သောအခါ၌၊ ဣတိအတ္ထော- နက်၊ ဝါ-တနည်း၊ ပုဗ္ဗဏှေ- နေ့၏ ရှေ့အဘို့၌၊ ဝါ- တွင်၊ သမယံ - တခုသော အခါပတ်လုံး၊ ပုဗ္ဗဏှေ- ၌၊ ဝါ-တွင်၊ ဧကံ-သော၊ ခဏံ-ခဏပတ်လုံး၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဧဝံ- သို့၊ အစ္စန္တသံယောဂေ-ဂ အနက်၌၊ ဥပယောဂဝစနံ- ဒုတိယာဝိဘတ်ကို၊ လဗ္ဘတိ-

**နိစ္စဘတ္တ ၊ ပေ ၊ ထပိတံ**။ ။ပပုဗ္ဗ ဥ ပဓာတ်သည် ထားခြင်းအနက်ဟောဖြစ်၍ "ထပိတံ"ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုထားခြင်းလည်း "တရက်အတွက်မဟုတ်"ဟု ပြလို၍ နိစ္စဘတ္တ သခေ်ပေန"ဟု ဝိသေသနပြုသည်၊ နိစ္စ+ဘတ္တံ နိစ္စဘတ္တံ ( မြဲသောဆွမ်း )၊ နိစ္စဘတ္တေ- ၌+သခေ်ပေါ– ထည့်သွင်း (ရေတွက်) ရခြင်းတည်း၊ နိစ္စဘတ္တသခေ်ပေါ–ခြင်း၊ "နိစ္စ ဘတ္တာကာရေန–နိစ္စဘတ်အခြင်းအရာ (နိစ္စဘတ်အသွင်) ဖြင့် "ဟူသော ဋီကာကား အဓိပ္ပါယတ္ထပြတည်း။ ["ဘိက္ခူနံ ပညတ္တံ"၌ ဘိက္ခူနံသည် တဒတ္ထသမ္ပဒါန်တည်း။]

**ပုဗ္ဗဏှသမယံ**။ ။[ပုဗ္ဗ အဟ။] "အဟဿ– နေ့၏၊ ပုဗ္ဗော–(ရှေ့ပိုင်း) တည်း၊ ပုဗ္ဗဏှော"ဟု ပြုစေလို၍ "ဒိဝသဿ+ပုဗ္ဗဘာဂံ" ဟု ဖွင့်သည်၊ ပုဗ္ဗဏှောစ+သော+ သမယောစာတိ ပုဗ္ဗဏှသမယော၊ "သမယံ၌ ဒုတိယာလည်း သတ္တမီအနက်၌ သက်" ဟု ပြလို၍ "ပုဗ္ဗဏှသမယေ"ဟု အနက်ဖွင့်သည်၊ နောက်နည်း၌ ပုဗ္ဗဏှနှင့် သမယကို သတ္တမီတပ္ပုရိသ်တွဲ၍ သမယံ၌ ဒုတိယာကို အစ္စန္တသံယောဂ အနက်၌ သက်စေသည်၊ နိဿယ ၂ နက်တွင် ပဌမ၌ ပုဗ္ဗဏှေ+သမယံကို အပေါင်းအာဓာရ+အဓိတ်အာဓေယ်

အပ်၏၊ နိဝါသေတွာတိ-ကား၊ ပရိဒဟိတွာ- ဝတ်၍၊ တော- ဤ နိဝါသေတွာ ဟူသောပုဒ်ကို၊ ဝိဟာရ နိဝါသနပရိဝတ္တန ဝသေန-ကျောင်းဝတ်သင်္ကန်းကို ပြင်ဆင်၍ဝတ်ခြင်း၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ဟိ-မှန်၊ တေ-ထို ရဟန်း တော်တို့သည်၊ တတော - ထို ဆွမ်းခံချိန်မှ၊ ပုဗ္ဗေ - ၌၊ အနိဝတ္ထာ - ဝတ်အပ် သောသင်းပိုင် မရှိကုန်သည်၊ န အဟေသုံ - မဖြစ်ကုန်၊ ပတ္တ စီဝရမာဒါယာ တိ- ကား၊ ပတ္တံ- သပိတ်ကို၊ ဟတ္ထေဟိ- လက်တို့ဖြင့်၊ စီဝရံ- ကို၊ ကာယေန- ဖြင့်၊ အာဒိယိတွာ-ယူ၍၊ သမ္ပဋိစ္ဆိတွာ-ဖုံးလွှမ်း၍၊ ဓာရေတွာ-ဆောင်၍၊ ဣတိအတ္ထော-နက်၊ ဟိ-မှန်၊ ယေနဝါ တေနဝါ - အမှတ်မထား တပါးပါး သော၊ ပကာရေန-အပြားအားဖြင့်၊ ဂဏှန္တာ-ယူသူတို့ကို၊အာဒါယ-ဣစ္စေဝ- အာဒါယဟူ၍သာ၊ ဝုစ္စန္တိ- န်၏၊ ယထာ – ဥဒါဟရဏ်ကား၊ သမာဒါယေဝ ပက္ကမတီ'ဘိ-တိဟူရာ၌ကဲ့သို့တည်း၊[သမာဒါယေဝ-ပရိက္ခရာ ၈ ပါး တည်းဟူ သောဝန်ကို ကောင်းစွာယူ၍သာလျှင်၊ ပက္ကမတိ-ဖဲသွားနိုင်၏၊(ဒီဃနိကာယ် သာမညဖလသုတ်။)]

စပ်၊ ဒုတိယအနက် ပေးပုံ၌ “ နိဒ္ဓါရဏာသမ္ပဒါယ + နိဒ္ဓါရဏီယ ” စပ်၊ ခဏာများစွာ ပေါင်းမိလျှင် သမယတခုဖြစ်၏။ [သက္ကတ၌ “ပြဒ္ဓ”ဟု ရှိသောကြောင့် အဟာကို အဏှာ ပြု၍ “ပုဒ္ဓဏှ”ဟု ရှိရသည်။]

ပရိဒဟိတွာ။ ။နိပုဗ္ဗ + ဝသဓာတ်, စုရာဒိဏေဖြင့် “နိဝါသေ” သည် အစ္ဆာဒန (ဖုံးလွှမ်း = ဝတ်ခြင်း) အနက်ကို ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် ပရိပုဗ္ဗဓာဓာတ်ဖြင့် “ ပရိဒ ဟိတွာ”ဟု ဖွင့်သည်၊“ပုဗ္ဗဏှသမယံ နိဝါသေတွာ–နံနက်စောစော သင်းပိုင်ဝတ်၍” ဟု ဆိုသောကြောင့် “ နဂိုရ်က သင်းပိုင်မဝတ်ဘဲ နေကြသည်” ဟု ထင်မှားဘွယ်ရှိ၍ “ ဝိဟာရ နိဝါသနပရိဝတ္တန ဝသေနဘဲ”စသည် မိန့်။

မှတ်ချက်။ ။ပရိဝတ္တနသဒ္ဒါသည် လဲလှယ်ခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ အခြားရဟန်း များအတွက်မူ “ဝိဟာရ နိဝါသနပရိဝတ္တန-ကျောင်းဝတ်သင်းပိုင်ကို ရွာဝတ်သင်းပိုင် ဖြင့် လဲလှယ်ခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်”ဟုပင် ပေးရလိမ့်မည်၊သို့သော် ဝေရဉ္ဇာ၌ ဝါကပ်သော ရဟန်းတော်များကား တိစီဝရိကင်္ဂဓုတင်ဆောင်များဖြစ်၍ လဲလှယ်စရာမရှိသောကြောင့် ဝိဟာရ နိဝါသနပရိနိဝတ္တနဉ္စ – ကိုလည်း “ ဝိဟာရေ နိသိန္နကာလေ , နိဝတ္ထမ္ပိ– ဝတ်အပ်ပြီး သင်းပိုင်ကိုလည်း၊ ပုန, ဂါမပ္ပဝေသနသမယေ–၌၊ စာလေတွာ– ခါ၍၊ ဣတော ဣတော စ, သဏ္ဍာပေတွာ – ကောင်းစွာ တည်စေ၍၊ သက္ကစ္စံ နိဝါသနမေဝ– သေခိယနှင့်အညီ ကောင်းမွန်စွာပြင်၍ ဝတ်ခြင်းကိုသာ,ဝေဒိတဗ္ဗံ”ဟု ဋီကာဖွင့်သည်။

ပတ္တံ ဟတ္ထေဟိ ။ ။ “ ပတ္တစီဝရ မာဒါယ ”၌ “ သပိတ် သင်္ကန်းကို လက်ဖြင့် ယူသွားလေသလား”ဟု ယုံမှားမည်စိုး၍ “ပတ္တံ ဟတ္ထေဟိ”စသည်မိန့်။ [ “သမာဒါ ယေဝပက္ကမတိ”ဟု သာမညဖလသုတ်ပါဠိတော်ရင်းအတိုင်း ကေဝစနဏှသာပါဌ်မှန်၊ “မိမိသွားလိုရာသို့ ပရိက္ခရာကို (အပိုမပါဘဲ) ယူသွားနိုင်၏”ဟူသောစကားတည်း။]

ပိဏ္ဍံ အလဘမာနာတိ- ကား၊ သကလမ္ပိ ဝေရဥ္စံ- ကိုလည်း၊ စရိတွာ-၍၊ (အလဘမာနာ၃ှ စပ်၊) ပိဏ္ဍော- ဆွမ်းသည်၊ တိဋ္ဌတု- တည်စေဦး၊ အန္တမသော- အောက်ထစ်ဆုံးအားဖြင့်၊ အတိဋ္ဌထာတိဝါစမ္ပိ- အတိဋ္ဌထဟူသော စကားကိုလည်း၊ ဝါ-ကတော့ဆွမ်းဟူသောစကားကိုလည်း၊ အလဘမာနာ- မရကုန်သည်၊ ( ဟုတ္ဝာ၊ ) ပတ္တပတ္တပုလကံ အာရာမံ အာဟရိတွာတိ- ကား၊ ဂတဂတဋ္ဌာနေ- ရော်အပ် ရော်အပ်သောအရပ်၌၊ [ အသဿ မဏ္ဍလိကာသု သမ္ပတ္တ သမ္ပတ္တဋ္ဌာနေ။ ] လဒ္ဓံ – ရအပ်သော၊ ဧကမေကံ ပတ္တပတ္တပုလကံ- တကွမ်းစား တကွမ်းစားသော မုယောဆန်ကို၊ ဂဟေတွာ အာရာမံ,နေတွာ- ဆောင်၍၊ ဥဒုက္ခလေ၊ပေ၊ပရိဘုဥ္ဇန္တီတိ-ကား၊ ယော-အကြင် ကပ္ပိယကာရက သည်၊ နေသံ–ထို ထေရ်တို့ဘို၊ တံ-ထို မုယောဆန်ကို၊ ဂဟေတွာ,ယာဂုံဝါ- ကိုသော်၎င်း၊ ဘတ္တံဝါ - သော်၎င်း၊ ပစေယျ - ကျိုချက်ပေးရာ၏၊ ထေရာနံ- တို့၏၊ ဝါ–တို့မှာ၊ ကောစိ-သော၊ (သော) ကပ္ပိယကာရကော - သည်၊ နတ္ထိ၊ သာမမ္ပိ· လည်း၊ ပစနံ-သည်၊ သမဏသာရုပ္ပံ- ရဟန်းတို့အား လျောက်ပတ်သည်၊ န ဟောတိ - မဖြစ်၊ နစဝဋ္ဋတိ - အပ်လည်းမအပ်၊ တေ- ထို ထေရ်တို့သည်၊ ဧဝံ - ဤသို့ စားကုန်လသော်၊ နော - တို့၏၊ သလ္လဟုက ဝုတ္တိတာစပေါ့သော အသက်မွေးခြင်း ရှိကုန်သူတို့၏ အဖြစ်သည်၎င်း၊ သာမံပါက ပရိဓောစနဥ္စ- ကိုယ်တိုင် ချက်ခြင်းအပြစ်မှ လွတ်မြောံခြင်းသည်၎င်း၊ ဘဝိဿတိ- တံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ အဋ္ဌ အဋ္ဌ-ဂ ပါး ဂ ပါးကုန်သော၊ ဇနာဝါ- ရဟန်းတော်တို့သည်သော်၎င်း၊ ပေ၊ဥဒုက္ခလေ - ဆုံယ်၌၊ ကောဋ္ဋေတွာ ကောဋ္ဋေတွာ-ထောင်း၍ ထောင်း၍၊ သကံ သကံ-မိမိဥစ္စာ မိမိဥစ္စာဖြစ်သော၊ပဋိဝိသံ- အဘို့ကို၊ ဥဒကေန-ဖြင့်၊ တေမေတွာ- စိုစေ၍၊ ပရိဘုဥ္ဇန္တိ - ဘုဉ်းပေးကုန်၏၊ ဧဝံ-သို့၊ ဘုဥ္ဇိတွာ-ဘုဉ်းပေးပြီး၍၊ အပ္ပေါ်သုက္ကာ-သမဏဓမ္မမှတပါး အခြား အလုပ်၌ အားထုတ်ခြင်း မရှိကြကုန်သည်၊ ( ဟုတ္ဝာ ) [ '' သမဏဓမ္မတော အညတ္ထ နိရုဿာဟာ'' - ဋီကာ၊ ] သမဏဓမ္မံ-ကို၊ ကရောန္တိ-နှ်၏။

ဥဒုက္ခလံ။ ။ ထောမနိမိဥ္စ် ''ဥဒူခလ'' ဟု ရှိ၏၊ ဥဒ္ဓံ+ခ သဒ္ဒါပုဗ္ဗ လာခတ် ကပစ္စည်း၊ (က်အနုဗန်ချေ)၊''ဥဒ္ဓံ–အထက်၌+ခံ-အပေါက်ကို+ လာတိ-ယူတတ်၏'' ဟု ဝစနတ္ထပြု၊ အထက်က မျက်နှာဝအပေါက် ရှိသောကြောင့် ''ဥဒ္ဓခလ''ဟု ပြီးသော ပုဒ်ကို နိရုတ္တိနည်းဖြင့် ''ဥဒုက္ခလ'' ပြီးအောင် စီရင်ရသည်။

သလ္လဟုက ဝုတ္တိတာ။ ။ဘာဇနာဒိ ပရိဟရဏဝ သေန-သွားလေရာသို့ အိုး ခွက်စသောဘဏ္ဍာကို ယူဆောင်ရခြင်း၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဗဟုဘဏ္ဍိကတာယ– များစွာသောဘဏ္ဍာရှိသူတို့၏အဖြစ်၏၊အဘာဝတော ဝုတ္တံ သလ္လဟုကဝုတ္တိတာတိ။ [သလ္လဟုကာ+ဝုတ္တိ ယေသန္တိ သလ္လဟုကဝုတ္တိနော၊ တေသံ+ ဘာဝေါ သလ္လဟုကဝုတ္တိတာ။]

ပန- ဆက်၊ ဘဂဝတော-အား၊ ( ဒေဝ္တိ ၌ စပ်၊ ) တေအသဿဝါဏိဇာ- တို့သည်၊ ပတ္တပုလကဋ္ဌ - တစလယ်သော မုယောဆန်ကို ၎င်း၊ တဒုပိယံ- ထို ဆန်အား လျောက်ပတ်သော၊ သပ္ပိမဓုသက္ကရဉ္စ – ထောပတ် ပျားရည် သကြားကို၎င်း၊ ဒေန္တိ - လှူကြကုန်၏၊ တံ-ထို လှူဘွယ် ဝတ္ထုကို၊ အာယသ္မာ အာနန္ဒော- သည်၊ အာဟရိတွာ - ဆောင်ယူ၍၊ သိလာယံ - ကျောက်ပြင်၌၊ ပိသတိ- ကြိတ်၏၊ [ ပိသော စုဏ္ဏော - အမှုန့်ပြုခြင်း၌၊ (ဓာတ်ကျမ်း၊)၊ ] ပုည ဝတာ-ပုဉ်းထူး ကံထူး ရှိသော၊ ပဏ္ဍိတပုရိသေန-ပညာရှိ ယောကျ်ားသည်၊ ကတံ-ပြုအပ်သော အမှုသည်၊ မနာပမေဝ-မြတ်နိုးဘွယ် ကောင်းသည်သာ၊ ဟောတိ-၏၊ အထ-ကြိတ်ပြီးရာ ထိုအခါ၌၊ နံ-ထို မုယောဆန်မှုန့်ကို၊ (ပိသိ တွာ ဟု ရှိသည်ကား အပိုတည်း၊ ပါဠိတော်မှာရှိ၍ ထည့်ကြဟန် တူသည်၊ ) သပ္ပိအာဒီဟိ- တို့ဖြင့်၊ သမ္မာ - စွာ၊ ယောဇေတွာ- ယှဉ်စေ၍၊ ဝါ- ရောစပ်၍၊ ဘဂဝတော - အား၊ ဥပနာမေသိ - ဆက်ကပ်ပြီ၊ အထ- ထိုအခါ၌၊ ဒွေ- ၌ မုယောဆန်ခဲမှုံ၌၊ ဒေဝတာ- တို့သည်၊ ဒိဗ္ဗောဇံ- နတ်ဩဇာကို၊ ပက္ခိပန္တိ- ထည့်ကြ ကုန်၏၊ တံ- ထို မုယောဆန်ခဲမှုံကို၊ ဘဂဝါ - သည်၊ ပရိဘုဉ္ဇတိ- ဘုဉ်းပေးတော်မူ၏၊ ပရိဘုဉ္ဇိတွာ-၍၊ ဖလသမာပတ္တိယာ-ဖြင့်၊ ကာလံ-အချိန် ကို၊ အတိနာမေဘိ - လွန်စေတော်မူ၏၊ တတော - ထိုအခါမှ၊ ပဋ္ဌာယ-စ၍၊ ပိဏ္ဍာယ-၄ါ၊ န စရတိ-လှည့်လည်တော်မမူ။

ပန- ပရိဟာရပက္ခမှတပါး စောဒကပက္ခကို ဆိုဉ်းအံ့၊ အာနန္ဒတ္ထေရော- အရှင် အာနန္ဒာထေရ်သည်၊ တဒါ-၌၊ ဘဂဝတော-၏၊ ဥပဋ္ဌာကော-အလုပ် အကျွေးသည်၊ ဟောတိ ကိံ - ဖြစ်သလော၊ ဥတိ - ဤကား အမေးတည်း၊ ဟောတိ - ၏၊ စခေါ - ထိုသို့ပင် ဖြစ်ပါသော်လည်း၊ ဥပဋ္ဌာကဋ္ဌာနံ - အလုပ် အကျွေး အရာကို၊ လဒ္ဓါ - ရ၍ ( ဥပဋ္ဌာကော - လုပ်ကျွေး သူသည်၊ ) နော ဟောတိ-မဟုတ်၊ [''လဒ္ဓေါ'' ဟုလည်းရှိ၏၊ ''နော လဒ္ဓေါ-မရသေး'' ဟု

တဒုပိယံ။ ။''စုရာဒိ ဥပဓာတ်သည် ဥပပတ္တိ—သင့်လျော်ခြင်း အနက်ဟော'' ဟု သဒ္ဒနီတိဆို၏၊ ထို့ကြောင့် '' ဥပေတိ—သင့်လျော်၏၊ ဣတိ ဥပိယံ ''ဟု ပြု၊ ဈာပစ္စည်း ဣအာဂုံကြ၊ ဥကို ဝုဒ္ဓိမပြုရ၊ တဿ — ထို တစလယ်သော မုယောဆန်အား + ဥပိယံ— သင့်လျော် လျောက်ပတ်သည်တည်း၊ တဒုပိယံ-သည်။ [တဒုပိယန္တိ-တဒနုရူပံ။]

ပုညဝတာ။ ။ပုညဉာဏဝိသေသေဟိ—ပုဉ်းကံ အထူး ဉာဏ်အထူးရှိသူတို့သည်၊ ကတ္တဗ္ဗကမ္မဿ — ပြုအပ်သောအလုပ်၏၊ မနာပတာ — မြတ်နိုးဘွယ်၏ အဖြစ်သည်၊ ဟောတိတိ အာဟ-ပုညဝတာတိ အာဒိ၊ မုယောဆန်မှုန့်ကို ထောပတ်စသည်နှင့် တွဲ၍ အခဲလုပ်အပ်သော (ရှင်အာနန္ဒာလုပ်) မှုံ၏ ကောင်းမွန်ကြောင်းကို ပြလိုသော စကား တည်း၊ ရှင်အာနန္ဒာတို့လို ဉာဏ်ရှိသူလုပ်သမျှ အကောင်းချည်းဖြစ်သည်—ဟူလို။

ပေးနိုင်သော်လည်းစာသွားမလှ။]ဟိ-မှန်၊(တနည်း)ဟိ-ချဲ၊ ဘဂဝတော-၏၊ ပဌမဗောဓိယံ-ပဌမဗောဓိ၌၊ [ သတ္တာတို့ကို သစ္စာ ၄ ပါးသိစေရာ ပဌမနှစ် အပိုင်းကို "ပဌမဗောဓိ" ဟု ခေါ်၏၊ ၄၅ ဝါကို ၃ပိုင်း ပိုင်း၍ ပဌမ, ဒုတိယ တတိယဗောဓိ ဟု ခွဲသည်။ ] ဝီသတိ ဝဿန္တရေ – ဝါတော် ၂၀ အတွင်း၌၊ နိဗဒ္ဓုပဋ္ဌာကော နာမ-အမြဲလုပ်ကျွေးသူမည်သည်၊ နတ္ထိ-မရှိ၊ [နိဗဒ္ဓတိ-အမြဲ စပ်ဖွဲ့၏၊ ဣတိ နိဗဒ္ဓေါ။] ကဒါစိ-တရံတခါ၌၊ နာဂသမာလတ္ထေရော-သည်၊ ဘဂဝန္တံ - ကို၊ ဥပဋ္ဌာသိ - လုပ်ကျွေးပြီ၊ ကဒါစိ , နာဂိတတ္ထေရော – သည်၊ ( ဥပဋ္ဌာသိ၊ ) ပေ၊ ကဒါစိ, လစ္ဆဝိပုတ္တော - လစ္ဆဝီမင်း၏ သားဖြစ်သော၊ သုနက္ခတ္တတ္ထေရော ( ဥပဋ္ဌာသိ၊ ) တေ-ထို ထေရ်တို့သည်၊ အတ္တနော-မိမိ၏၊ ရုစိယာ- အလိုအားဖြင့်၊ ဥပဋ္ဌဟိတွာ-လုပ်ကျွေးပြီး၍၊ ယဒါ-အကြင်အခါ၌၊ (ပက္ကမိတုံ-ဖဲသွားခြင်းငှါ၊) ဣစ္ဆန္တိ-အလိုရှိကုန်၏၊ တဒါ-၌၊ ပက္ကမန္တိ-န်၏၊ အာနန္ဒတ္ထေရော-သည်၊ တေသု-ထို ထေရ်တို့သည်၊ [ " တေသု တေသု " ဟု ဝိစ္ဆာရှိသည်ကား မကောင်း၊ ဝိစ္ဆာဆိုလျှင် "တသ္မိံ တသ္မိံ ဥပဋ္ဌဟန္တေ"ဟု ရှိမှ ကောင်းသည်၊] ဥပဋ္ဌဟန္တေသု–လုပ်ကျွေးကုန်လသော်၊ အပ္ပေါ်သုက္ကော- လုပ်ကျွေးမှု၌ အားထုတ်ခြင်းမရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပက္ကန္တေသု- ဖဲသွားကုန် လသော်၊ သယမေဝ – ကိုယ်တိုင်သာလျှင်၊ ဝတ္တပဋိပတ္တိံ – ဝတ်အကျင့်ကို၊ ကရောတိ-၏၊ ဘဂဝါပိ-သည်လည်း၊ မေ-၏၊ ဉာတိသေဋ္ဌော - ဆွေမျိုးမြတ် သည်၊ ဥပဋ္ဌာကဋ္ဌာနံ-အလုပ်အကျွေး ရာထူးကို၊ ကိဉ္စာပိ နတာဝ လဘတိ– အကယ်၍ကား မရသေး၊ အထခေါ်-ထိုသို့ပင် မရသေးပါ သော်လည်း၊ ဧဝ ရူပေသု-န်သော၊ဌာနေသု-တော်မွတ်ရာဌာနတို့၌၊အယမေဝ-ဤအာနန္ဒာသည် သာ၊ ပဋိရူပေါ-လျောက်ပတ်၏၊ ဣတိ-ဤသို့ ကြံတော်မူ၍၊ အဓိဝါသေသိ– လက်ခံတော်မူပြီ၊ တေန-ကြောင့်၊ အာယသ္မာ ပနာ နန္ဒော၊ပေ၊ပရိဘုဥ္ဇတိတိ- ဟူ၍၊ အာယသ္မတာ ဥပါလိတ္ထေရေန- သည်၊ (တနည်း) သံဂိတိကာရေဟိ- တို့သည်၊ ဝုတ္တံ-မိန့်ဆိုအပ်ပြီ။

နနုစ- စောဒနာပါဥုးအံ့၊ (ကိံ) မနုဿာ- တို့သည်၊ ဒုဗ္ဘိက္ခကာလေ– ငက်မွတ်ခေါင်းပါး အစာရှားရာအခါ၌၊ အတိဝိယ-လျှင်၊ ဥဿ ဟဇာတာ- ဖြစ်သော အားထုတ်ခြင်း ရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတွာ ) ပုညာနိ- တို့ကို၊ ကရောန္တိ နနု- ပြုကြကုန်သည် မဟုတ်လော၊ အတ္တနာ- မိမိသည်၊ အဘုတ္တွာပိ – မစား မူ၍လည်း၊ ဘိက္ခူနံ- တို့အား၊ ဒါတဗ္ဗံ- ပေးထိုက်၏ ဟူ၍၊ မညန္တိ နနု– မှတ် ထင်ကုန်သည် မဟုတ်လော၊ တေ- ထိုလူတို့သည်၊ တဒါ- ၌၊ ကသ္မ - ကြောင့်၊ ကဋစ္ဆုဘိက္ခမ္ပိ-တယောက်ချိုမျှသော ဆွမ်းကိုလည်း နအဒံသု မပေးလှူကုန်

သနည်း၊ ဝေရဉ္ဇာ - ဝေရဉ္ဇာမြို့၌ မွေးဘွားသော၊ အယဉ္စ ဗြာဟ္မဏော– ဤ ဥဒယပုဏ္ဏားသည်လည်း၊ မဟတာ- ကြီးစွာသော၊ ဥဿာဟေန - အားထုတ်ခြင်းဖြင့်၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ ဝဿာဝါသံ- မိုးလပတ်လုံး သီတင်းသုံးတော်မူခြင်းကို၊ ယာစိ - ပြီ၊ သော-ထို ဝေရဉ္ဇာ ပုဏ္ဏားသည်၊ ကသ္မာ - ကြောင့်၊ ဘဂဝတော-၏၊ အတ္တိဘာဝမ္ပိ - ရှိသည်၏ အဖြစ်ကိုလည်း၊ ဝါ - ရှိမှန်းကိုလည်း၊ န ဇာနာတိ-မသိရသနည်း၊ ဣတိ-သို့၊ ( နနုစ - စောဒနာပါ၏၊ ပရိဟာရော-ကို၊ မယာ၊ ) ဝုစ္စတေ-၏၊ မာရာဝဋ္ဋနာယ-မာရ်နတ်၏လှည့်ပတ်ခြင်းကြောင့်၊ [မာရေန-သည်၊ ကတစိတ္တာ·ဝဋ္ဋနာယ-၍ အပ်သော စိတ်၏ လည်နေခြင်းကြောင့်၊ " မာရ်နတ်၏ စိတ်ကိုလှည့်ပတ်ထားခြင်းကြောင့် " ဟူလို၊] (တေ-ထိုလူတို့သည်၊ တဒါ-၌၊ ကဏ္ဍာဘိက္ခမ္ပိ-ကိုလည်း၊ န အဒံသု–ကုန်၊ သော စ ဗြာဟ္မဏော - ထို ဝေရဉ္ဇာပုဏ္ဏား သည်လည်း၊ ဘဂဝတော - ၏၊ အတ္တိဘာဝမ္ပိ-ကိုလည်း၊ ဝါ-မှန်းကိုလည်း၊ န ဇာနာတိ-မသိ၊)

ဟိ- ချဲ့၊ ဘဂဝတော–၏၊ သန္တိကာ–မှ၊ ပက္ကမန္တမတ္တမေဝ– ဖဲသွားပြီးခါမျှ ဖြစ်သော၊ ဝေရဉ္ဇံ- သော၊ ဗြာဟ္မဏံ- ကိုငှင်း၊ သကလံ-သော၊ နဂရံစ-ကိုငှင်း၊ ဝါ - မြို့နေသူ လူအပေါင်းကိုငှင်း၊ ( အဘေဒေါပစာ၊ ) သမန္တာ-ပတ်ဝန်းကျင်၌၊ ယောဇနမတ္တံစ–တယူဇနာ အတိုင်းအရှည်ရှိသော အရပ်ကိုငှင်း၊ ဝါ - တယူဇနာ အတွင်း၌ နေသူ လူအပေါင်းကိုငှင်း၊ ယတ္တ - အကြင်အရပ်၌၊ ပုရေဘတ္တံ-ဆွမ်း၏ ရှေ့အဘို့၌၊ ဝါ - နံနက် အခါ၌၊ ပိဏ္ဍာယ - ငှါ၊ စရိတွာ-၍၊ ပစ္စာဂန္တုံ - ပြန်လာခြင်းငှါ၊ သက္ကာ - တတ်ကောင်း၏၊ တံသဗ္ဗံ-ထို အလုံးစုံသော အရပ်ကို၊ ဝါ-ထိုအလုံးစုံသော အရပ်၌ နေသူ လူအပေါင်းကို၊ မာရော - သည်၊ အာဝဋ္ဋေတွာ - စိတ်ကို လည်စေ၍၊ ဝါ - လှည့်ပတ်၍၊ မောဟေတွာ-တွေဝေစေ၍၊ သဗ္ဗေသံ-အလုံး စုံသောလူတို့၏၊ အသလ္လက္ခဏာဘာဝံ-မှတ်သားခြင်းမရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကို၊ကတွာ ပက္ကမိ၊တသ္မာ-ကြောင့်၊ ကောစိ-သည်၊ အန္တမသော-ဖြင့်၊ သာမိစိကမ္မမ္ပိ - ရှိသေမှုကိုလည်း၊ ကတ္တဗ္ဗံ-ပြုထိုက်၏ ဟူ၍၊ န မညိတ္ထ-မမှတ်ထင်တော့၊ [အာကို ထ္ထ ပြုထားသည်၊]

ကိံ ပန- အသို့နည်း၊ ဘဂဝါပိ - သည်လည်း၊ မာရာဝဋ္ဋနံ–ကို၊ အဇာနိတွာဝ-သိတော်မမူ၍သာ၊ ဝါ- မူခြင်းကြောင့်သာ၊ တတ္ထ - မြို့၌၊ ဝဿံ-ဝါသို့၊ ဥပဂတော - ကပ်တော်မူသလော၊ ဣတိ - မေး တည်း၊ အဇာနိတွာ, နော ဥပဂတော – ကပ်တော်မူသည် မဟုတ်၊ ( ဣတိ– ဤကား အဖြေတည်း၊ ) အထ - ထိုသို့ သိတော်မူပါလျက်၊ ကသ္မာ - ကြောင့်၊ စမ္ပါသာဝတ္ထိရာဇဂဟာဒီနံ - စမ္ပာ, သာဝတ္ထိ , ရာဇဂြိုဟ် အစရှိသော မြို့တို့တွင်၊ အညတရသ္မိံ-မြို့၌၊

( ဝဿံ ) န ဥပဂတော - ကပ်တော်မမူသနည်း၊ ဣတိ - မေးတည်း၊ စမ္ပာ သာဝတ္ထိရာဇဂဟာဒီနိ - မြို့တို့သည်၊ တိဋ္ဌန္တု - တည်ပါစေကုန်ဦး၊ ဝါ- ထားလိုက်ပါကုန်ဦး၊ ဘဂဝါ-သည်၊ တသ္မိံ သံဝစ္ဆရေ-၌၊ ဥတ္တရကုရုံဝါ- မြောက်ကျွန်းသို့သော်၎င်း၊ တိဒသပုရံဝါ-တာဝတိံသာ နတ်ပြည်သို့သော်၎င်း၊ ဂန္တွာ-၍၊ ဝဿံ, သစေပိ ဥပဂစ္ဆေယျ-အကယ်၍ပင် ကပ်တော်မူစေဦးတော့၊ (ဧဝံ သတိပိ-လည်း၊)တမ္ပိ-ထိုအရပ်ကိုလည်း၊ ဝါ-ထိုအရပ်နေသူ လူအပေါင်းကိုလည်း၊ မာရော – သည်၊ အာဝဋ္ဋေယျ – ရာ၏၊ သော– ထို မာရ်နတ်သည်၊ တံသံဝစ္ဆရံ - ၌၊ အတိဝိယ– လျှင်၊ အာဃာတေန - ပြင်းစွာ နှိပ်စက်တတ်သော ဒေါသသည်၊ ဝါ- ရန်ငြိုးသည်၊ ပရိယုဋ္ဌိတစိတ္တော-ထက် ဝန်းကျင် လုယူအပ်သော စိတ်ရှိသည်၊ အဟောသိကိရ - ဖြစ်သတတ်၊ ပန- ဆက်၊ဣမံ-၍ဝေရဥ္ဇာမြို့၌၊ဘဂဝါ,ဣမံ အတိရေကကာရဏံ-၍အပိုအလွန် အကြောင်းကို၊ အဒ္ဒသ-မြင်တော်မူပြီ၊ (ကိံ-အဘယ်သို့မြင်တော်မူသနည်း၊) အဿဝါဏိဇာ - တို့သည်၊ ဘိက္ခူနံ - တို့ကို၊ သင်္ဂဟံ - ချီးမြောက်ခြင်းကို၊ ကရိဿန္တိ - န်လတ့ံ၊ ဣတိ- ၍အကြောင်းကို၊ အဒ္ဒသ- ပြီ၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဝေရဥ္ဇာယမေဝ ဝဿံ ဥပဂစ္ဆိ၊ ကိံ ပန- အဿိနည်း၊ မာရော- သည်၊ ဝါဏိဇကေ - တို့ကို၊ အာဝဋ္ဋေတုံ - လှည့်ပတ်ခြင်းငှါ၊ န သက္ကောတိ - မစွမ်းနိုင် သလော၊ ဣတိ - ၍ကား အမေးတည်း၊ နော နသက္ကောတိ - မစွမ်းနိုင်သည် မဟုတ်, စွမ်းနိုင်သည်သာ၊ ပန-ထိုသို့ စွမ်းနိုင်ပါသော်လည်း၊ တေ– ထိုမြင်း ကုန်သည်တို့သည်၊ အာဝဋ္ဋိတ ပရိယောသာနေ-လှည့်ပတ်အပ်ပြီး၏အဆုံး၌၊ အာဂမိံသု- ရောက်လာကြကုန်ပြီ၊ ပဋိနိဝတ္တိတွာ -ပြန်နစ်၍၊ ကသ္မာ, နာဝ ဋ္ဋေတိ-မလှည့်ပတ်သနည်း၊ ဣတိ-မေးတည်း၊အဝိသဟတာယ-မရဲဝံ့သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ [အဝိသယှတာယ- မလွှမ်းမိုးနိုင်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊] ( နာဝဋ္ဋေတိ- မလှည့်ပတ်။ )

**တမ္ပိ မာရော အာဝဋ္ဋေယျ။** ။ဖုဿဘုရားလက်ထက်၌ ဘုရားအလောင်းဘဝက ဖုဿဘုရားရှင်၏ သာဝကတို့ကို "မုယောဆန် စားကြ, သလေးဆန် မစားကြနှင့်"ဟု ကြိမ်းမောင်းခဲ့ဘူးသတတ်၊ ထို အကုသိုလ်ကံသည် ထိုဝါတွင်း၌ အကျိုးပေးခွင့် ကြုံနေ သောကြောင့် မြောက်ကျွန်း သို့မဟုတ် တာဝတိံသာ၌ ဝါကပ်တော်မူစေကာမူ ထို၌ နေသူများကိုလည်း မာရ်နတ်သည် လှည့်ပတ်မည်သာ။

**အဝိသယှတာယ ။** ။ ယခုစာတို့၌ "အဝိသဟတာယ" ဟု ရှိ၏၊ "မရဲဝံ့သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်"ဟု ပေးကြ၏၊ မာရ်နတ်သည် ဘုရားကိုသော်မှ မကြောက်,မြင်းကုန်သည် လောက်ကို အဘယ်မှာ ကြောက်မည်နည်း၊ ထို့ကြောင့်"အဝိသဟတာယ" ပါဌ်သည် မကောင်း၊ ဋီကာ၌ "အသက္ကုဏေယျတာယ" ဟု ဖွင့်၏၊ ဝိပုဗ္ဗ သဟဓာတ် ဏျပစ္စည်း

ဟိ-မှန်၊ သော-မာရ်နတ်သည်၊ တထာဂတဿ-ဘို၊ အဘိဟဋ္ဌ ဘိက္ခာယ-ရှေးရှု ဆောင်ပို့အပ်သော ဆွမ်း၏၎င်း၊ နိဗဒ္ဓဒါနဿ - မြဲသောဒါန၏၎င်း၊ အပ္ပိတဝတ္တဿ-ပစ္စည်း ၄ ပါးကို သတ်မှတ်၍အပ်နှံအပ်သော ဝတ္တု၏၎င်း၊ အန္တရာယံ-ရာယ်ကို၊ ကာတုံ-၄ါ၊ နဝိသဟတိ-မစွမ်းနိုင်၊ ဟိ-ချဲ့၊စတုန္နံ-၄ပါး တို့၏၊ အန္တရာယော-သည်၊ ဝါ-ကို၊ ကာတုံ- ၄ါ၊ နသက္ကာ- နိုင်၊ ကတမေသံ စတုန္နံ - တို့၏နည်း၊ တထာဂတဿ - ၏၊ အဘိဟဋ္ဌဘိက္ခာသင်္ခေပေန ဝါ-ရှေးရှု ဆောင်ပို့အပ်သောဆွမ်း၌ ထည့်သွင်းအပ်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၎င်း၊ နိဗဒ္ဓဒါန အပ္ပိတဝတ္တု သင်္ခေပေန ဝါ - မြဲသောဒါန , အပ်နှံအပ်သော ဝတ္ထု၌ ထည့်သွင်းအပ်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၎င်း၊ ပရိစ္စတ္တာနံ - စွန့်လှူ အပ်ကုန်သော၊ စတုန္နံ-န်သော၊ ပစ္စယာနံ-ပစ္စည်းတို့၏၊ ကေနစိ-တစုံတယောက် သည်၊ အန္တရာယော-သည်၊ ဝါ-ကို၊ ကာတုံ-၄ါ၊ နသက္ကာ-မတတ်နိုင်၊ ဗုဒ္ဓါနံ - တို့၏၊ ဇီဝိတဿ - အသက်တော်၏၊ ကေနစိ အန္တရာယော ကာတုံ, နသက္ကာ-နိုင်၊ အသီတိယာ-ရှစ်ဆယ်သော၊ အနုဗျဉ္ဇနာနံ - အဖန်ဖန် ထင်ရှားပြတတ်ကုန်သော လက္ခဏာတော်ငယ်တို့၏၎င်း၊ ဗျာမပ္ပဘာယ ဝါ- တလံမျှ လောက်သော ကိုယ်ရောင်တော်၏၎င်း၊ပေ၊ ဟိ-ချဲ့၊ စန္ဒိမ သူရိယဒေဝဗြဟ္မာနံပိ-လ, နေ, နတ်,ဗြဟ္မာတို့၏လည်း၊ ပဘာ-အရောင်သည်၊ တထာဂတဿ-၏၊ အနုဗျဉ္ဇန ဗျာမပ္ပဘာပ္ပဒေသံ-လက္ခဏာတော်ငယ်,တလံမျှလောက်သော ကိုယ်ရောင်တော်အရပ်သို့၊ ပတ္တာ-ရောက်၍ ဝါ-လသော်၊ ဝိဟတာနုဘာဝါ-ကင်းသော အာနုဘော်ရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ - န်၏၊ ဗုဒ္ဓါနံ, သဗ္ဗညုတဉာဏ-ဿ-၏၊ပေ၊ဥတိ-သို့၊ စတုန္နံ-န်သော၊ ဌမေသံ–၌ အရာဝတ္ထုတို့၏၊ ကေနစိ

ဖြင့် ပြီးသော"အဝိသယ္ဟ"ပုဒ်ကိုသာ သကမာတ် ဥဏာပစ္စည်း, ဏျပစ္စည်းဖြင့် "သက္ကုဏေယျ" ဟု ဖွင့်နိုင်၏၊ ဝိသယှန္တေတိ ဝိသယှာ၊ န+ဝိသယှာ အဝိသယှာ – မလွှမ်းမိုးအပ် မလွှမ်းမိုးနိုင်သော ကုန်သည်တို့၊ တေသံ + ဘာဝေါ အဝိသယှတာ။ [နောက်၌ "ကာဘုံ နဝိသဟတိ-ပြုခြင်းငှါမစွမ်းနိုင်"ဟူသောစကားလည်း"မပြုအပ်-မပြုနိုင်"နှင့် သဘောတူပင်တည်း။]

အဘိဟဋ္ဌဘိက္ခာ၊ပေ၊ဝတ္ထု။ ။အိမ်၌ ချက်ပြီး၍ ဆောင်ပို့အပ်သော ဆွမ်းသည် "အဘိဟဋ္ဌာ– ရှေးရှု ပို့ဆောင်အပ်သော + ဘိက္ခာ – တည်း" အရ အဘိဟဋ္ဌဘိက္ခာမည်၏၊ တလ, သို့မဟုတ် ၂ လ စသည်ဖြင့် သတ်မှတ်၍ ဘုရားရှင်အား နေ့စဉ် လှူအပ်သော ပစ္စည်းသည် နိဗဒ္ဓဒါန ( မြဲသောအလှူ ) မည်၏၊ " အပ္ပိတဝတ္ထု " ကား ဗုဒ္ဓမြတ်စွာ၏ ပစ္စည်း ၄ ပါးအတွက်ဟု လျှော်ထား၍ ကျောင်း၌ တခါတည်း အပ်နှံထားအပ်သော ပစ္စည်းဝတ္ထုတည်း၊ အပ္ပိတံ–အပ်နှံအပ်သော+ ဝတ္ထုံ – ပူဇော်ဘွယ်ဝတ္ထုတည်း။ ["ဝိဟာရံ နေတွာ ဒိန္နဝတ္ထုနော" ဋီကာ။]

အန္တရာယော ကာတုံ နသက္ကာ၊(ကတမေသံစတုန္နံ၏အမေးကို ပြန်အုပ်သည်၊) တသ္မာ-ကြောင့်၊ မာရေန-သည်၊ အကတန္တရာယံ-မပြုအပ်သော အန္တရာယ် ရှိသော၊ ဝါ-အန္တရာယ်မပြုနိုင်သော၊ ဘိက္ခံ-ကို၊ ဘဂဝါ-သည်၊ သသာဝက သံဃော-သာဝကသံဃာနှင့်တကွ ဖြစ်တော်မူသည်၊(ဟုတ္ဝာ)၊ တဒါ-ဝေရဉ္ဇာ မြို့ဝယ် ဝါကပ်တော်မူရာ ထိုအခါ၌၊ ပရိဘုဉ္ဇတိ- မှီ၏၊ ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗော။

စ-ဆက်၊ ဧဝံ-သို့၊ ပရိဘုဉ္ဇန္တော-ဘုန်းပေးတော် မူစဉ်၊ ကေဒိဝသံ-၌၊ (သုဏိ၌ စပ်၊ ) အသောသိ ခေါ၊ပေ၊သဒ္ဒန္တိ-ကား၊ ဘဂဝါ - သည်၊ ပတ္ထ ပတ္ထပုလကံ-ကို၊ ကောဋ္ဋေန္တာနံ-ထောင်းကုန်သော၊ ဘိက္ခူနံ-တို့၏၊ မုသလ သဉ္ဃဋ္ဋနိတံ - ကျည်ပွေ့၏ ထိခိုက်ခြင်းသည် ဖြစ်စေအပ်သော၊ ဥဒုက္ခလ သဒ္ဒံ-ဆုံငယ်သံကို၊ သုဏိ-ကြားတော်မူရပြီ၊ တတော-ထို အသောသိခေါ ဘဂဝါ ဥဒုက္ခလသဒ္ဒံ ဟူသော ဝါကျမှ၊ ပရံ - နောက်၌၊ ဇာနန္တာပိ တထာ ဂတာတိ ဧဝမာဒိ-တာ ဤသို့ အစရှိသောစကားကို၊(ဝုတ္တံ၌စပ်၊)ပရတော- နောက်၌၊ ကိံ နုခေါ သော အာနန္ဒ ဥဒုက္ခလသဒ္ဒေါတိ-ဒွေ ဟူသော၊ ယံ- အကြင် ပြဿနာကို၊ ပုစ္ဆိ-မေးတော်မူပြီ၊ တဿ-ထို ပြဿနာ၏၊ ပရိဟာရ ဒဿနတ္ထံ - အဖြေကို ပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ ( အာယသ္မတာ ဥပါလိတ္ထေရေန ) ဝုတ္တံ-လျှောက်အပ်ပြီ၊ တတြ-ထိုဇာနန္တာပိတထာဂတာ အစရှိသောဝါကျ၌၊ အယံ - ဤ ဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ သင်္ခေပ ဝဏ္ဏနာ - အကျဉ်းချုပ် အဖွင့်တည်း၊ တထာဂတာနာမ-ဘုရားရှင်တို့ မည်သည်၊ ဇာနန္တာပိ - သိတော်မူကုန်လျက် လည်း၊ (ပုစ္ဆန္တိ၌စပ်၊) တာဒိသံ-ထိုကဲ့သို့ ရှုအပ်သော၊ ပုစ္ဆာကာရဏံ-မေး တော်မူခြင်း၏ အကြောင်းသည်၊ သစေ ဟောတိ-အကယ်၍ရှိအံ့၊ (ဧဝံသတိ- သော်၊) ပုစ္ဆန္တိ-မေးတော်မူကြကုန်၏၊ ပန-သို့မဟုတ်၊ တာဒိသံ - ထိုကဲ့သို့ ရှုအပ်သော၊ ပုစ္ဆာကာရဏံ - သည်၊ သစေ နတ္ထိ - အံ့၊ ( ဧဝံသတိ- သော်၊ )

ဣမေသံ စတုန္နံ။ ။(၁) ဘုရားရှင်ဘို့ ရည်ရွယ်အပ်သော ဆွမ်း စသော ပစ္စည်း ဝတ္ထု, (၂) ဘုရားရှင်၏ဇီဝိတ (အသက်တော်), (၃) ရှစ်ဆယ်သော လက္ခဏာ တော်ငယ်နှင့် တလံမျှလောက်သော ကိုယ်ရောင်တော်, [ ကိုယ်ရောင်တော်ကို မလင်း အောင်ပြုခြင်းသည် အန္တရာယ်ပြုခြင်းမည်၏။] (၄) သဗ္ဗညုတဉာဏ်တော်,ဤ ၄ ပါး တည်း။ [ " သဗ္ဗညုတဉာဏ်တော်၏ အန္တရာယ် " ဟူသည် ဉေယျဓမ်တရားတို့ကို မသိအောင် ပိတ်ပင်ထားခြင်းတည်း။]

ဇာနန္တာပိ။ ။ဤ ပိ သဒ္ဒါသည် သိခြင်းကို ချီမြှောက်သော အနုဂ္ဂဟတ္ထ (သမ္ဘာ ဝနာ) ဇောတကတည်း၊ သမ္ဘာဝနာပိသည် ဂရဟာကို ပေါင်းဆည်းမြဲဟု ပြောစမှတ် ပြုကြသော်လည်း ဤနေရာ၌ (မသိခြင်းဟူသော) ဂရဟာတ္ထမရှိသောကြောင့် ပေါင်းစရာ မလို—ဟု မှတ်။

ဇာနန္တာပိ-လည်း၊ နပုစ္ဆန္တိ - မေးတော်မမူကြကုန်၊ ပန-ဆက်၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ဗုဒ္ဓါနံ- ရှင်တို့၏၊ အဇာနနံနာမ-မသိခြင်းမည်သည်၊ နတ္ထိ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ထိုသို့ မသိခြင်းမည်သည်မရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) အဇာနန္တာပိတိ-အဇာနန္တာပိဟူ၍၊ (အာယသ္မတာဥပါလိတ္ထေရေန-သည်၊)နဝုတ္တံ-အပ်၊ ကာလံ ဝိဒိတွာ ပုစ္ဆန္တီတိ - ကား၊ တဿာပုစ္ဆာယ–ထို မေးတော်မူခြင်း၏၊ သောကာလော-ထို မေးသင့်ရာအခါသည်၊ သစေ ဟောတိ-ရှိအံ့၊ ဧဝံ-ဤသို့ ရှိလသော်၊ တံ ကာလံ-ထို မေးသင့်ရာအခါကို၊ ဝိဒိတွာ-သိတော်မူ၍၊ ပုစ္ဆန္တိ၊ (သော ကာလော-သည်၊) သစေ နဟောတိ-အံ့၊ ဧဝမ္ပိ- ဤသို့ မဟုတ်ပြန်သော်လည်း၊ ကာလံ-ကို၊ ဝိဒိတွာဝ-၍သာလျှင်၊ နပုစ္ဆန္တိ-န်၊ စ–ဆက်၊ ဧဝံ–သို့၊ ပုစ္ဆန္တာပိ-ကုန်သော်လည်း၊ အတ္ထသဉှိတံ-အကျိုးနှင့်စပ်ယှဉ်သောစကားကို၊ တထာဂတာ – တို့သည်၊ ပုစ္ဆန္တိ၊ ယံ–အကြင်စကားသည်၊ အတ္ထနိဿိတံ-အကျိုးကို မှီ၏၊ ကာရဏနိဿိတံ - အကြောင်းကိုမှီ၏၊ တဒေဝ- ထိုအကျိုး အကြောင်းကိုမှီသောစကားကိုသာ၊ ပုစ္ဆန္တိ၊ အနတ္ထသဉှိတံ-အကျိုးနှင့် မစပ်ယှဉ်သော စကားကို၊ နော ပုစ္ဆန္တိ - မမူကြကုန်၊ ကသ္မာ၊ ( အနတ္ထသဉှိတံ-စကားကို၊ နော ပုစ္ဆန္တိ-သနည်း၊ )ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အနတ္ထသဉှိတေ-အကျိုးနှင့် မစပ်ယှဉ်သောစကား၌၊ဝါ-ကို၊ တထာဂတာနံ-တို့၏၊သေတုဃာတော-အရဟတ္တမဂ်ဖြင့် အကြွင်းမဲ့ ဖြတ်ခြင်းသည်၊(ဟောတိ–၏၊)''တသ္မာ အနတ္ထသံဟိတံ နောပုစ္ဆန္တိ''ဟု ဖလဝါကျထည့်၊မဂ္ဂေါ-ကို၊ သေတု-တုဟူ၍၊ဝုစ္စတိ-

အတ္ထသဉှိတံ။ ။အတ္ထသဒ္ဒါသည် ပယောဇန ( အကျိုး ) အနက်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ပယောဇန သာဓကံ"ဟု ဋီကာဖွင့်သည်၊ ထိုအကျိုးသည်ပင် မေးခြင်း၏ အကြောင်းလည်း ဖြစ်သောကြောင့်"အတ္ထနိဿိတံ ကာရဏနိဿိတံ"ဟု ဖွင့်ပြန်သည်၊ ဤနေရာ၌ အတ္ထနှင့်ကာရဏအရတူ တခုတည်းဖြစ်သောကြောင့်(စ)မပါ။ [အတ္ထေန+ သံဟိတံ အတ္ထသဉှိတံ၊ "သံဟိတံ၌" သံ ပုဗ္ဗ ဓာဓာတ်, တ ပစ္စည်း၊ အာကို ဣပြု၊ သန္ဓိကဲ့သို့ "စပ်–ဆက်စပ်" အနက်ဟော။]

အနတ္ထသံဟိတေ။ ။"ဘယ်အပေါ်၌ သတ်သနည်း"ဟု မေးဘွယ် ရှိသောကြောင့် "အနတ္ထသံဟိတေ" ဟု မိန့်ရကား အနတ္ထသံဟိတေ၌ သတ္တမီသည် ဘုမ္မတ္ထ၌သက်၊ တနည်း–"တာဒိသဿ ဝစနဿ"ဟု အဖြောင့်ပြဝါကျကို ထောက်၍ သာမိအနက်၌ သတ္တမီသက်ဟု မှတ်။ [ အနတ္ထသံဟိတေ ဝစနေ၊ ဃာတာပေက္ခံ ဘုမ္မဝစနံ၊ သာမိအတ္ထေဝါ(ဆဋ္ဌီကံ)ဘုမ္မဝစနန္တိ မညမာနော (သ်သည်ဖြစ်၍) ဧဝံ (ဤသို့ တာဒိသဿ ဝစနဿဟူ၍ ) အာဟ။ ] " စကားကို အကြွင်းမဲ့ဖြတ်ခြင်း " ဟူသည် ထို အကျိုးမဲ့ စကားကို ပြောဆိုကြောင်း ကိလေသာကို ဖြတ်ခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် အကြောင်း ဖြတ်ခြင်းကို အကျိုး၌ တင်စားသော"ကာရဏူပစာရ"ဟု မှတ်။

အပ်၏၊ မဂ္ဂေနေ၀- ဖြင့်သာလျှင်၊ တာဒိသဿ – ထိုကဲ့သို့ ရှုအပ်သော၊ ဝစနဿ-စကားကို၊ ဃာတော- သတ်ခြင်းသည်၊ သမုစ္ဆေဒေါ - အကြွင်းမဲ့ဖြတ်ခြင်းသည်၊ (ဟောတိ)၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

ဣဒါနိ - ၌၊ အတ္ထသံဟိတန္တိ ဧတ္ထ- ဟိတံဟူသော ဤပါဌ်၌၊ ယံအတ္ထသန္နိဿိတံ-အကြင်အကျိုးကို မှီသော၊ ဝစနံ-ကို၊ တထာဂတော-တို့သည်၊ ပုန္ဒန္တိ-န်၏၊ တံ-ထိုအကျိုးကို၊ ဒဿေန္တော ( ဟုတ္វာ ) ဒွိဟာကာရေဟိတိအာဒိံ-ဟိ အစရှိသော စကားကို၊ အာဟ-ပြီ၊ တတ္ထ- ထိုဒွိဟာကာရေဟိ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ အာကာရေဟီတိ-ကား၊ ကာရဏေဟိ- အကြောင်းတို့ကြောင့်၊ (ပုန္ဒန္တိ၌ စပ်၊)ဓမ္မဝါ ဒေသေဿာမာတိ-ကား၊ အဋ္ဌုပ္ပတ္တိယုတ္တံ-အဋ္ဌုပ္ပတ္တိနှင့်ယှဉ်သော၊ ဝါ–ပစ္စုပ္ပန်ဝတ္ထုနှင့်ယှဉ်သော၊ သုတ္တံဝါ-သုတ်ကိုသော်၎င်း၊ ပုဗ္ဗစရိတ ကာရဏယုတ္တံ – ရှေး၌ ကျင့်အပ်သော အကြောင်းနှင့် ယှဉ်သော၊

**သေတုဃာတော**။ ။ သိခ၁တ်သည် သွာဒိဂိုဏ်းဖြစ်မှု ထက်အောင် သွေးခြင်း အနက်ကို ဟော၏၊ "သီယတေ-ဝိပဿနာ အစဉ်ဖြင့် ထက်အောင် သွေးအပ်၏၊ ဣတိ သေတု"ဟု ကြံ၊ ထို့ကြောင့် မဂ်ကို "သေတု"ဟု ခေါ်နိုင်၏၊ သေတုနာ + ဃာတော သေတုဃာတော–အရဟတ္တမဂ်ဖြင့်(ထိုကဲ့သို့သော စကားကို) အကြွင်းမဲ့ ဖြတ်ခြင်း။

**ယံအတ္ထနိဿိတံ**။ ။ယော + အတ္ထော ယံအတ္ထော၊ ယံအတ္ထံ + နိဿိတံ ယံအတ္ထနိဿိတံ (ဝစနံ၊) အကြင်အကျိုးကိုမှီသောစကား၊ဤသို့ ယံပုဒ်ကို အတ္ထပုဒ်နှင့် သမာသ်တွဲမှ "တံ + ဒဿေန္တော-ထိုအကျိုးကို ပြလို၍ "ဒွိဟာကာရေဟိ–စသော စကားကိုမိန့်" ဟူသော နိယမဝါကျနှင့် အဓိပ္ပါယ်ဆက်မိမည်၊ ယ– တ နှင့် သမာသ်တွဲရာ၌ နိဂ္ဂဟိတ်လာရကြောင်းကိုလည်း သတိပြုပါ။ [ယောဇနာ၌ကား "ယံ"ကို ဝစနံနှင့် တွဲစေလို၍ "တံတိ ဝစနံ"ဟု ဖွင့်လေသည်၊ ထိုအဖွင့်အတိုင်း "တံ + ဒဿေန္တော- ထို စကားကို ပြလို၍"ဒွိဟာကာရေဟိ"စသည်ကို မိန့် ဟု အဓိပ္ပါယ် စပ်–မစပ်ကို စဉ်းစားပါလေ။]

**ဒွိဟာကာရေဟိ**။ ။ပုန္ဒာစကား၏ အကျိုးကား တရားဟောရခြင်း သိက္ခာပုဒ်ပညတ်တော်မူရခြင်းတည်း၊ ထိုအကျိုးသည်ပင် မေးခြင်း၏ အကြောင်းလည်း ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် အာကာရေဟိကို "ကာရဏေဟိ"ဟု ဖွင့်လေသည်၊ ရှေ့၌ "အတ္ထနိဿိတံ ကာရဏနိဿိတံ"ဟု ဆိုခဲ့ပုံနှင့် သဘောတူပင်။ [အာကရောတိ (ဖလံ နိပ္ဖာဒေတိ) တိ အာကာရော၊ အတ္တနော အနုရူပတာယ- မိမိဟူသော အကြောင်းအား လျော်သည်၏ အဖြစ်ဖြင့်၊ အာကရောတိ သမရိယာဒံ သပရိစ္ဆေဒံ ဖလံ နိပ္ဖာဒေတိ–အပိုင်းအခြားနှင့် တကွအကျိုးကိုပြုတတ်,ဖြစ်စေတတ်၏၊ ဣတိ အာကာရော (ကာရဏံ)၊ အာသဒ္ဒါသည် မရိယာဒ အနက်ဟော။]

**အဋ္ဌုပ္ပတ္တိယုတ္တ**။ ။အတ္ထ သဒ္ဒါသည် " ဝတ္ထုကြောင်း " အနက်ကို ဟော၏၊ " ဝတ္ထု " ဟူသည်လည်း တရားဟောခြင်း၏ တည်ရာ ( ဖြစ်ပုံ ပျက်ပုံ လုပ်ကိုင်ပုံ ) အလုံးစုံတည်း၊ အရဏီယတော အတ္ထော၊ သုတ္တဒေသနာယ ဝတ္ထု – သိအပ်သော

ဇာတကံဝါ-ကိုသော်ငှင်း၊ ကထယိဿာမ-ဟောတော်မူကုန်အံ့၊သာဝကာနံ ဝါ သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမာတိ - ကား၊ သာဝကာနံ - တို့အား၊ တာယ ပုစ္ဆာယ - ဣာဖြင့်၊ ဝီတိက္ကမံ - လွန်ကျူးမှုကို၊ ပါကဋံ – ထင်ရှားသည်ကို၊ ကတွာ-၍၊ ဂရုကံဝါ-လေးသည်မှုလည်း ဖြစ်သော၊ ( ပါရာဇိကနှင့် သံဃာ ဒိသေသ်ကို ယူ၊) လဟုကံဝါ- ပေါ့သည်မှုလည်းဖြစ်သော၊(ထုလ္လစ္စဥ်းစသော အာပတ်တို့ကို ယူ၊ ) သိက္ခာပဒံဝါ - ပုဒ်ကိုလည်း၊ ပညပေဿ မ - ပညတ် တော်မူကုန်အံ့၊ အာဏံ – အာဏာ တော်ကို၊ ထပေဿာမ - ထားတော်မူ ကုန်အံ့၊ ဣတိ-ဤအကြောင်းတို့ကြောင့်၊(ပုစ္ဆန္တိ-န်၏၊ ဣတိအယံ–ဤ ဆိုအပ် ပြီးကား၊ သင်္ခေပဝဏ္ဏနာ - တည်း၊ ) [ဂရုကံဝါလဟုကံဝါတို့၌ ဝါသည် အညမညဝိကပ်၊ သာဝကာနံဝါ၌ ဝါသဒ္ဒါကား ဓမ္မံဝါ၏ ဝိကပ်။ ]

အထခေါ ဘဂဝါ၊ ပေ ၊ တေမတ္တံ အာရောစေသီတိ ဩ - သိ ဟူသော ဤပါဌ်၌၊ ကိဉ္စိ-တစုံတခုသော၊ ဝတ္တပ္ပံ-ဆိုဘွယ်သည်၊ နတ္ထိ၊ ဟိ–မှန်၊ ပုဗ္ဗေ– ရှေ့၌၊ ဝုတ္တမေဝ - ဆိုအပ်ပြီးသာလျှင် ဖြစ်သော၊ ဘိက္ခူနံ-တို့၏၊ ပတ္တပတ္တ ပုလကပဋိလာဘံ – တကွမ်းစား တကွမ်းစားသော မုယောဆန်ကို ရခြင်းကို ငှင်း၊ သလ္လဟုကဝုတ္တိတံ-ပေါ့ပါးသော အသက်မွေးခြင်းရှိကုန်သည်၏အဖြစ် ကိုငှင်း၊သာမံပါကပရိမောစနဥ္စ-ကိုယ်တိုင်ချက်ခြင်းဟူသောအပြစ်မှလွတ်စေ ခြင်းကိုငှင်း၊ အာရောစေန္တော– လျှောက်ခသော အရှင်အာနန္ဒာကို၊ တေမတ္တံ အာရောစေသီတိ-သိဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ပန - ဆက်၊ သာဓု သာဓု အာနန္ဒာတိ ဣဒံ - န ဟူသော ဤ အာမေဍိတ်စကားကို၊ ဘဂဝါ - သည်၊ အာယသ္မန္တံ အာနန္ဒံ- ကို၊ သမ္ပဟံသေန္တော-ကောင်းစွာ အပြားအားဖြင့် ရွှင်လန်းစေလို တော်မူသည်၊ (ဟုတွာ) အာဟ၊ [ ''ဘယေ ကောဓေ ပသံသာယံ'' စသည် နှင့်အညီ ဟာသ (ရွှင်စေသော) အရာဖြစ်၍ ''သာဓုသာဓု'' ဟု အာမေဍိတ် ရှိရသည်-ဟူလို၊ ]

ကြောင့် သုတ်ကိုဟောခြင်း၏ အကြောင်းဝတ္ထုသည် အဋ္ဌမည်၏၊ [''အရိယတေတိ အဋ္ဌော'' ဟု မြွ။] ''အဋ္ဌဿ+ဥပ္ပတ္တိ အဋ္ဌုပ္ပတ္တိ၊ အဋ္ဌုပ္ပတ္တိယေဝ (ဋ္ဌကို ဋ္ဌပြု၍) အဋ္ဌုပ္ပတ္တိ'' ဟု သီလက္ခန် မြဟ္မဇာလသုတ် ဋီကာဖွင့်၏၊ [ ''ပစ္စုပ္ပန္နဝတ္ထုံ၊ နိဿယ ပဝတ္တံ''–သာရတ္ထ။ ]

ဝိမတိ။ ၊အဋ္ဌသဒ္ဒါ၏ ဟေတုအနက်ကိုယူ၍ ''ဓမ္မဒေသနာယ ဟေတု+ဥပ္ပတ္တိ ဋ္ဌော''ဟုငှင်း, ပယောဇန အနက်ကိုယူ၍ ''ဓမ္မဒေသနာဒိကော အဋ္ဌော (အကျိုး) ဥပ္ပဇ္ဇတိ တောယာတိ အဋ္ဌုပ္ပတ္တိ, ပစ္စုပ္ပန္နဝတ္ထု၊''ဟုငှင်း တမျိုးဖွင့်လေသည်၊ ဤအလို ''အဋ္ဌုပ္ပတ္တိ – တရားဟောရခြင်း၏ အကြောင်း၏ဖြစ်ရာ ပစ္စုပ္ပန်ဝတ္ထု၊ ဝါ–တရား ဟောရခြင်းစသော အကျိုး၏ဖြစ်ကြောင်း ပစ္စုပ္ပန်ဝတ္ထု၊'' ဟု အနက်ပေး။

ပန-ဆက်၊ သာရဏီယ ကထံ-ကောင်းခြီးကို၊ ဝတွာ - ပေးတော်မူပြီး၍၊ ဥဒ္ဒိဿသု- နှ်သော၊ အာကာရေသု – ( ဓမ္မဒေသနာ , သိက္ခာပဒပညာပနဟူသော ) အကြောင်းတို့တွင်၊ ဧကံ- (ဓမ္မဒေသနာဟူသော) တခုသော အကြောင်းကို၊ ဂဟေတွာ – ၍၊ ဓမ္မံ – ကို၊ ဒေသေန္တော - မူလိုသည်၊ ( ဟုတ္ဝာ၊ ) တုမှေဟိ အာနန္ဒ ၊ ပေ ၊ အတိမညိဿတီတိ- ဟူ၍၊ အာဟ – မိန့်တော်မူပြီ၊ တတြ- ထို တုမှေဟိအာနန္ဒအစရှိသောစကားရပ်၌၊ အယံ-ဤဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ အဓိပ္ပါ ယော - ဘုရားရှင်၏အလိုတော်တည်း၊ အာနန္ဒ-နှ၁၊ သပ္ပုရိသေဟိ- သူတော် ကောင်းဖြစ်ကြကုန်သော၊ တုမှေဟိ-တို့သည်၊ ဝေ-သို့၊ ဒုဗ္ဘိက္ခေ - ခဲယဉ်း စွာ ရအပ်သော ဆွမ်းရှိရာအခါ၌၊ ဝါ- ရှိရာအရပ်၌၊ ဒုလ္လဘပိဏ္ဍေ- ခဲယဉ်းစွာ ရအပ်သောဆွမ်းရှိရာအခါ၌၊ ဝါ-အရပ်၌၊ ဧကမာယ သလ္လဟုကဝုတ္တိတာယ- ဤ ပေါ့ပါးသော အသက်မွေးခြင်း ရှိကုန်သည်၏ အဖြစ်ဖြင့်၎င်း၊ [တောင်း, ခွက် တို့၌ ထည့်ရလောက်အောင် ဘဏ္ဍာများစွာ မရှိခြင်းကို “ သလ္လဟုက ဝုတ္တိတာ” ဟု ဆိုသည်။] ဧမိနာ သလ္လေခေနစ-ဤ သလ္လေခအကျင့်ဖြင့်၎င်း၊ [ အပိုအမို တောင့်တခြင်း မရှိသည်ကို “ သလ္လေခ ” ဟု ဆိုသည်။ ] ဝိဇိတံ- အောင်အပ်ပြီ၊ ဝါ – နိုင်အပ်ပြီ၊ ကံ - ကို၊ ဝိဇိတံ-သနည်း၊ ဧတိ - ဤကား အမေးတည်း၊ ဒုဗ္ဘိက္ခံ - ထမင်း၏ မပြည့်စုံခြင်းကို၊ ဝါ-ငတ်မွတ် ခေါင်းပါး, အစာရှားခြင်းကို၊ ဝိဇိတံ-ပြီ၊ လောဘော-လောဘကို၊ ဝိဇိတော-ပြီ၊ ဧ စ္ဆာ စာရော-ယုတ်မာသော အလို၏ ဖြစ်ခြင်းကို၊ ဝါ-အလိုဆိုးကို၊ ဝိဇိတော-ပြီ။

ကထံ-အဘယ်သို့ အောင်အပ်သနည်း၊ အယံ ဝေရဥ္ဇာ-မြို့သည်၊ဒုဗ္ဘိက္ခာ- ခဲယဉ်းစွာ ရအပ်သော ထမင်းရှိ၏၊ ဝါ – ငတ်မွတ်ခေါင်းပါး, အစာရှား၏၊ သမန္တတော-ပတ်ဝန်းကျင်၌၊ အနန္တရာ-အကြား မရှိကုန်သော၊ ဝါ-အခြား မဲ့ဖြစ်ကုန်သော၊ ဂါမနိဂမာ ပန – ရွာနိဂုံးတို့သည်ကား၊ ဖလဘာရနမိတ သဿာ - အသီးဟူသောဝန်ဖြင့် ညွတ်ကိုင်းသော ကောက်စပါးရှိကုန်သည်၊ သုဘိက္ခာ-လွယ်ကူစွာရအပ်သော ဆွမ်းရှိကုန်သည်၊ သုလဘပိဏ္ဍာ- နှ်သည်၊ (ဟောန္တိ၊) ဧဝံသန္တေပိ–ဤသို့ဖြစ်ပါလျက်လည်း၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဧဝ ခေ- ဤ ဝေရဥ္ဇာမြို့၌သာ၊ အမှေ - တို့ကို၊ နိဂ္ဂဏှိတွာ - နှိမ်၍၊ ဝသတိ- နေဘိ၏၊ ဧတိ-ဤသို့၊ ဘေဘိက္ခုဿပိ-တပါးသော ရဟန်း၏လည်း၊ စိန္တာ ဝါ-ကြံခြင်း

ဒုဗ္ဘိက္ခေ။ ။ဒုလ္လဘာ+ဘိက္ခာ ဧတ္ထာတိ ဒုဗ္ဘိက္ခော—ကာလော, ဒေသော ဝါ၊ “ဒုလ္လဘပိဏ္ဍေ” ကား ဒုဗ္ဘိက္ခေ၏ အနက်ဖွင့်၊ ထိုသို့ဖွင့်သဖြင့် ဒု၏ ဒုလ္လဘ အနက်, ဘိက္ခ၏ ပိဏ္ဍ (ဆွမ်း) အနက်ကို သိရသည်၊ “ ဒုဗ္ဘိက္ခံ ဝိဇိတံ ” ၌ကား “ ဘိက္ခာယ+ အသမိဒ္ဓိ–(မပြည့်စုံခြင်းတည်း) ဒုဗ္ဘိက္ခံ ” ဟု အဖျယ်ဘောပြု။

သည်ဋင်း၊ ဝိဃာတောဝါ–ပင်ပန်းခြင်းသည်ဋင်း၊ [စိတ်ဖြစ်ရုံမျှကို "စိန္တာ" ဟုဋင်း, အဘန်ဘန် ဝမ်းနဲ၍ စိတ်ပင်ပန်းခြင်းကို " ဝိဃာတော " ဟုဋင်း ဆိုသည်။] နတ္ထိ- မရှိ၊ ဧဝံ - ဤသို့လျှင်၊ တာဝ- လောဘဇဋ္ဌာစာရတို့မှ ရှေး ဦးစွာ၊ ဒုန္နိက္ခံ -ကို၊ ဝိဇိတံ–ပြီ၊ အဘိဘူတံ-လွှမ်းမိုးအပ်ပြီ၊ အတ္တနော- ၏၊ ဝသေ- အလို၌၊ ဝတ္တိတံ–ဖြစ်စေအပ်ပြီ၊ ကထံ - အဘယ်သို့၊ လောဘော- ကို၊ ဝိဇိတော – အောင်နိုင်အပ်သနည်း၊ အယံ ဝေရဉ္ဇာ– သည်၊ ဒုန္နိက္ခာ - ၏၊ သမန္တတော–၌၊အနန္တရာ-နီသော၊ ဂါမနိဂမာပန-တို့သည်ကား၊ပေ၊ဟန္ဒ- ယခု၊ မယံ-တို့သည်၊ တတ္ထ-ထိုရွာနိဂုံးတို့သို့၊ ဂတ္ဝာ-သွား၍၊ ပရိဘုဉ္ဇိဿာမ- သုံးဆောင်ကြကုန်စို့၊ ဣတိ–သို့၊ လောဘဝသေန - လောဘ၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ကေဘိက္ခုနာပိ- သည်လည်း၊ ရတ္တိစ္ဆေဒေါဝါ – ညဉ့်ဖြတ်ခြင်းကိုသော်ဋင်း၊ ပန္တိမိကာယ-ပန္တိမဝါ၌၊ တတ္ထ - ထိုရွာနိဂုံးတို့၌၊ ဝဿံ-ဝါသို့၊ ဥပဂစ္ဆာမ- ကပ်ကုန်အံ့၊ ဣတိ - ဤသို့ကြံ၍၊ ဝဿစ္ဆေဒေါဝါ-ဝါဖျက်ခြင်းကိုသော်ဋင်း၊ နကတော-မပြုအပ်၊ ဧဝံ-လျှင်၊ လောဘော-ကို၊ ဝိဇိတော-နိုင်အပ်ပြီ။

ကထံ-လျှင်၊ ဇဋ္ဌာစာရော-ယုတ်မာသောအလို၏ ဖြစ်ခြင်းကို၊ ဝါ-အလို ဆိုးကို၊ ဝိဇိတော - သနည်း၊ အယံ ဝေရဉ္ဇာ - သည်၊ ဒုန္နိက္ခာ – ၏၊ ဣမေစ မနုဿာ–တို့သည်လည်း၊ အမှေ- တို့ကို၊ ဒွေတယော (ဒွတ္တယော) မာသေ- နှစ်လ, သုံးလတို့ပတ်လုံး၊ ဝသန္တေပိ - နေသည်တို့ကိုလည်း၊ ကိဉ္စိ - တစုံ တခုသောဂုဏ်၌၊ နမည္တန္တိ-မမှတ်ထင်ကြကုန်၊ မယံ-တို့သည်၊ ဂုဏာဝါကိဋ္ဌ- ဂုဏ်ကို ကုန်သွယ်ခြင်းကို၊ ( ဂုဏ်ဖြင့် ပစ္စည်းကို လဲလှယ်ခြင်းကို၊ ) ကတ္ဝာ-

ရတ္တိစ္ဆေဒေါဝါ။ ။"သတ္တာဟကရဏီယ-၇ရက် အတွင်း ပြုဘွယ်ကိစ္စ" ရှိလျှင် ဝါတွင်း၌ အခြားအရပ်သို့ သွားကောင်း၏၊ ဤဝေရဉ္ဇာ၌လည်း ဒုန္နိက္ခ ဖြစ်နေသော ကြောင့် သတ္တာဟကိစ္စဖြင့် သွားမည်ဆိုလျှင် သွားကောင်း၏၊ ထိုသို့ သွား၍ ၇ ရက် အတွင်း မပြန်ဘဲ ၈ ရက်မြောက် အာရုဏ်ကို ဝါဆိုရာတိုက်၏ ပြင်ဘက်၌ တက်စေမှ ရတ္တိ စ္ဆေဒအတွက် ဒုက္ကဋ်အာပတ်သင့်သည်၊ ဤသို့ အာပတ်သင့်သည့် တိုင်အောင် သွား၍ နေဘို့ကို မဆိုထားဘိ သွားကောင်းသော သတ္တာဟကိစ္စနှင့်မျှ မသွားကြခြင်းကို"ရတ္တိ စ္ဆေဒေါဝါ န ကတော"ဟု မိန့်တော်မူသည်။

ဝဿစ္ဆေဒေါဝါ န ကတော။ ။လောဘ အတွက်ကြောင့် ပုရိမဝါကပ်ပြီးကို ဖျက်၍ ပန္တိမဝါကပ်ဘို့ရာ သုဘိက္ခဖြစ်သောအရပ်သို့ မသွားကြခြင်းကို"ဝဿစ္ဆေဒေါ န ကတော"ဟု မိန့်သည်၊ ဒုန္နိက္ခအရပ်၌ ကပ်ပြီးသော ဝါကို ဖျက်၍ သုဘိက္ခအရပ်သို့ သွားကောင်းပါ၏၊ ဝိနည်းပြစ်မရှိပါ၊ သို့သော် လောဘကြောင့်သွားလျှင် အကုသိုလ် ဖြစ် မကင်းချေ၊ ထိုသို့ မသွားကြသောကြောင့် " လောဘကို အောင်နိုင်အပ်ပြီ " ဟု မိန့်တော်မူသည်။

၍၊ အသုကော-ထိုမည်သော၊ ဘိက္ခု-သည်၊ပဌမသာ ဈာနသာ-ပဌမဈာန်ကို၊ လာဘီ-ရခြင်းရှိ၏၊ပေ၊ အသုကော-သော၊ ဘိက္ခု ဆဠဘိညော-ခြောက်ပါး သော အဘိညာဉ်ရှိ၏၊ ဣတိ ဧဝံ-သို့၊ မနုဿာနံ-တို့အား၊ အညမညံ-အချင်း ချင်းကို၊ ပကာသေတွာ-ထင်ရှားပြ၍၊ ကုစ္ဆိံ-ဝမ်းကို၊ ပဋိဇဂ္ဂိတွာ-စောင့်ရှောက် ၍၊ ဝါ-လုပ်ကျွေး၍၊ ပစ္ဆာ - နောက်မှ၊ သီလံ - ပျက်သောအာဇီဝ ပါရိသုဒ္ဓိ သီလကို၊ ယံနူန အဓိဋ္ဌဟေယျာမ - အကယ်၍ ဆောက်တည်ရပါကုန်မူကား ကောင်းလေစွ၊ ဣတိ-သို့၊ ဧကေ ဘိက္ခုနာပိ- တပါးသော ရဟန်းသည်လည်း၊ ဝေရူပါ - ဤသို့ သဘောရှိသော၊ ဣစ္ဆာ - အလိုဆိုးကို၊ န ဥပ္ပါဒိတာ - မဖြစ် စေအပ်၊ ဧဝံ-လျှင်၊ ဣစ္ဆာစာရော-ကို၊ ဝါ-ကို၊ ဝိဇိတော-ပြီ၊ အဘိဘူတော- ပြီ၊ အတ္တနော-၏၊ ဝသေ-၌၊ ဝတ္တိတော-ပြီ။[ဣတိ ပါသည်ကား ပိုဟန်တူ၏၊ အဓိပ္ပါယ်ယောပြန်လှည့်ဘွယ် မလိုသေး။]

အနာဂတေပန-နောင်အခါ၌ကား၊ ပစ္ဆိမာ- နောက်၌ဖြစ်သော၊ ဇနတာ– ရဟန်းအပေါင်းသည်၊ ဝိဟာရေ- ၌၊ နိသိန္နာ - နေကုန်လျက်၊ အပ္ပကသိရေ နေဝ-မငြိုငြင်မပင်ပန်းသဖြင့်သာလျှင်၊လဘိတွာပိ-ရ၍လည်း၊ ဝါ-ရပါလျက် လည်း၊ ဣဒံ-ဤဟာသည်၊ ကိံ-ဘယ့်နှယ်ဟာနည်း၊ ဥတ္တဏ္ဍုလံ - အထက်၌ ဆန်ရှိ၏၊ ဝါ - မနပ်၊ ဣမိနာ - ဤ မနပ်သောထမင်းဖြင့်၊ ကောအတ္ထော- အဘယ်အကျိုးရှိအံ့နည်း၊ (ဣဒံ - သည်၊ ကိံ - နည်း၊) အတိကိလိန္နံ-အလွန် ပျော့၏၊ ဝါ - ပျော့လွန်း၏၊ ဣမိနာ - ဤ ပျော့လွန်းသောထမင်းဖြင့်၊ ကော အတ္ထော၊[ဤသို့ လိုက်သင့်သောပုဒ်များကို လိုက်ပေးပါ။]၊ပေ၊အလောဏံ- ဆားမရှိ၊ ဝါ-ပေါ့၏၊ပေ၊အတိလောဏံ-လွန်သောဆားငံ၏၊ ဝါ-ဆားငံ၏၊ ပေ၊ အနမ္ဗိလံ-အချဉ်မရှိ၊ ဝါ-အချဉ်မပါ၊ပေ၊အစ္စမ္ဗိလံ-လွန်သောအချဉ် ရှိ၏၊ ဝါ-အလွန်ချဉ်၏၊ ဣမိနာ, ကောအတ္ထော - အဘယ်အကျိုးရှိအံ့နည်း၊ ဣတိ အာဒိနာ - ဤသို့ အစရှိသော၊ နယေန - ဖြင့်၊ သာလိမံသောဒနံ - အသား

ဣစ္ဆာစာရော။ ။[ဣစ္ဆာယ-ယုတ်မာသော အလို၏+စာရော-ဖြစ်ခြင်းတည်း။] အသက်မွေးဝမ်းကြောင်း အတွက် "မည်သူသည် ဈာန်ရ၏, မဂ်ဖိုလ်ရ၏" စသည်ဖြင့် ပြောလိုသော ဆန္ဒကို "ဣစ္ဆာစာရ"ဟု ခေါ်၏၊ ထိုသို့ ပြောမိလျှင် အာဇီဝပါရိသုဒ္ဓိ သီလပျက်သောကြောင့်"ပစ္ဆာ သီလံ အဓိဋ္ဌဟေယျာမ–နောက်မှ သီလကို ဆောက်တည် ကြရလျှင် ကောင်းလေစွ"ဟု မိန့်သည်။

ကိံဣဒံ ဥတ္တဏ္ဍုလံ။ ။ကိံ ဣဒန္တိ ဂရဟနဝသေန ဝုတ္တံ၊ "ကိံဣဒံ – ဒိဟာက ဘာလဲ"ဟူသောအပြောသည် ပို၍လာသောဆွမ်းကို ကဲ့ရဲ့ရှုတ်ချသောအပြောတည်း၊ "ဥဒ္ဓံ + တဏ္ဍုလံ ယဿာတိ ဥတ္တဏ္ဍုလံ" ဟု ကြံ၊ အထက်၌ တက်သောဆန် ရှိ၏၊ (သဒ္ဒတ္ထ) ဝါ-မနပ် (ဝေါဟာရတ္ထ)။

ရေးပြွမ်း သလေးဆွမ်းကို၊ အတိမညိဿတိ – ကျော်လွန်၍ မှတ်ထင်လတ့်၊ ဩညာတံ အဝညာတံ - အယုတ်အားဖြင့် သိအပ်သည်ကို၊ ဝါ - အထင်သေး မှုကို၊ ကရိဿတိ-ပြုလတ့်၊

အထဝါ-ထို့ပြင်တနည်းကား၊ ဇနပဒေါနာမ-ပုဒ်မည်သည်၊ သဗ္ဗကာလ်-အလုံးစုံသောအခါ၌၊ ဝါ-အခါခပ်သိမ်း၊ ဒုဗ္ဘိက္ခော-ရှိသည်၊ ဝါ-ရှားသည်၊ န ဟောတိ - မဖြစ်၊ ကေဒါ - တရံဘခါ၌၊ ဒုဗ္ဘိက္ခော ဟောတိ၊ ကေဒါ-၌၊ သုဘိက္ခော - လွယ်ကူစွာ ရအပ်သောထမင်း ရှိသည်၊ ဝါ-သာယာ ဝပြော အစာပေါသည်၊ ဟောတိ၊ သွာယံ - ထိုဇနပုဒ်သည်၊ ယဒါ - ၌၊ သုဘိက္ခော ဘဝိဿတိ၊ တဒါ-၌၊ သပ္ပုရိသာနံ-နှ်သော၊ တုမှာကံ - တို့၏၊ ဣမာယ ပဋိပတ္တိယာ-၏ အကျင့်ကြောင့်၊ [ဝေရဉ္ဇာယံ ပုရိတာယ သုဒုက္ကရာယ ပဋိပတ္တိယာ- ဝေရဉ္ဇာ၌ ဖြည့်အပ်သောအလွန်ပြုနိုင်ခဲသော အပ္ပိစ္ဆအကျင့်ကြောင့်။] ပသန္နာ-ကြည်ညိုကုန်သော၊ မနုဿာ-တို့သည်၊ ဘိက္ခူနံ - တို့အား၊ ယာဂုခဇ္ဇကာဒိပ္ပဘေဒေန-ယာဂု ခဲဘွယ် အစရှိသော အပြားအားဖြင့်၊ အနေကပ္ပကာရံ- တပါးမကများသော အပြားရှိသော၊ သာလိဝိကတိံ - အထူးပြုအပ်သော သလေးဆွမ်းကိုဎင်း၊ မံသောဒနဉ္စ – အသားထည့်ခပ်အပ်သော ဆွမ်းကိုဎင်း၊ [ (တနည်း၊ ) အနေကပ္ပကာရံ- သော၊ သာလိဝိကတိံ-သလေးဆန်ဖြင့် အထူးပြုအပ်သော၊မံသောဒနံ-အသားရောပြွမ်းသောဆွမ်းကို၊] ဒါတဗ္ဗံ-လှူထိုက်၏ဟူ၍၊ မညိဿန္တိ - နှ်လတ့်၊ တုမှေ - တို့ကို၊ နိဿာယ- ၍၊ ဥပ္ပန္နံ-

သာလိမံသောဒနံ။ ။မံသေန–ဖြင့်၊ ဥပသိတ္တော–သွန်းလောင်း ထည့်ခတ်အပ်သော၊ ဩဒနော မံသောဒနော၊ သာလိနာ – သလေးဆန်ဖြင့် + သမ္ပာဒိတော–ပြီးစေအပ်သော + မံသောဒနော သာလိမံသောဒနော၊ "တံ သာလိမံသောဒနံ " ဟု ဝိဘတ္တဂ္ဂ ပြု။ [သာလိတဏ္ဍုလေဟိ + သမ္ပာဒိတံ + မံသေန + ဥပသိတ္တံ + ဩဒနံ သာလိမံသောဒနံ၊–ဋီကာ။] အဋ္ဌကထာနေ၁ံနား၌"သာလိဝိကတိံ မံသောဒနဉ္စ"ဟု ဖွေ့ရာ၏၊ ထိုအလို "သလေးဆွမ်းတမျိုး, အသားထည့်ခတ်အပ်သော ဆွမ်းဘမျိုး–ဟု ယူဘွယ် ရှိ၏၊ စ မပါဘဲ "သာလိဝိကတိံ မံသောဒနံ"ဟုရှိမှ ဤဋီကာနှင့် ညီသည်။

အတိမညိဿတိ။ ။ထိုမံသောဒနကို"အောက်တန်းအစာ"ဟု ရှုတ်ချသောအား ဖြင့် "အတိ–မံသောဒနကို ကျော်လွန်၍+မညိဿတိ–မှတ်ထင်လိမ့်မည်" (သဒ္ဒတ္ထ)၊ "မံသောဒနကို အထင်သေးလိမ့်မည် " ( အဓိပ္ပါယတ္ထ )၊ ထို့ကြောင့် " ဩညာတံ အဝညာတံ ကရိဿတိ"ကို အဓိပ္ပါယတ္ထ ဟု မှတ်။ [အတိမညိဿတီတိ–အဝညာတ ကရဏဝသေန အတိက္ကမိတွာ မညိဿတိ၊ ပေ၊ ဟေဋ္ဌာကတွာ – အောက်၌ထား၍၊ နိဟီနံကတွာ –အယုတ်အညံ့ ဟု ပြု၍ + ဉာတံ ဩညာတံ၊ (အဝကို ဩပြုထားသည်၊) ထို့ကြောင့် "အဝညာဘဉ္စ တဿေဝ ဝေဝစနံ " ဟု ဋီကာဖွင့်သည်။]

ဖြစ်သော တံ သဏ္ဍာရံ-ထိုကောင်းစွာပြုအပ်သောလာဘ်ကို၊ တုမှာကံ-တို့၏၊ သမြဟ္မစာရိသဒ်ါတာ-သီတင်းသုံးဖေါ်ဟု ဆိုအပ်သော၊ [ဆဗ္ဗဂ္ဂိယာဒယော ဝုတ္တာ၊] ပန္တိမာ - သော၊ ဇနတာ-ရဟန်း အပေါင်းသည်၊ တုမှာကံ - တို့၏၊ အန္တရေ-အလယ်၌၊ နိသီဒိတွာ-နေ၍၊ [တုမှာကံ မဇ္ဈေ နိသီဒိတွာ, တုမှေဟိ သဒ္ဓိံ နိသီဒိတွာတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။] အနုဘာဝမာနာဝ-ခံစားလျက်ပင်၊ ဝါ-ခံစားရင်းပင်၊ အတိမညိဿတိ - တုံ၊ တပ္ပစ္စယံ - ထို ခံစားရခြင်းအကြောင်း ရှိသော၊ မာနဥ္စ-ရိုးရိုးမာန်ကိုင်း၊ ဩမာနဥ္စ-လွန်ကဲသောမာန်ကိုင်း၊ ဝါ-ရှုတ်ချအပ်သော မာန်ကိုင်း၊ ကရိဿတိ-လတ့ံ၊ ကထံ - အဘယ်သို့ ပြုလတ့ံ နည်း၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊ ထွေကံ- ဤမျှ အတိုင်းအရှည်ရှိသည်ကို၊ ဝါ-ဤမျှ လောက် များအောင်၊ ပက္ကံ-ချက်အပ်သနည်း၊ ယတ္ထ-အကြင် အိုးခွက်တို့၌၊ အတ္တနော- ၏၊ သန္တကံ- ဥစ္စာကို၊ ပက္ခိပိတွာ-ထည့်၍၊ ထပေယျာထ- ထား ကုန်ရာ၏၊ တုမှာကံ-တို့၏၊ ဝါ-တို့မှာ၊ (တာနိ)ဘာဇနာနိ-ထိုအိုးခွက်တို့သည်၊ နတ္ထိကိံ-မရှိကုန်တော့သလော၊ ဣတိ-သို့၊ (ကရိဿတိ-တုံ၊)ဣတိ-ဤကား၊ အဓိပ္ပါယော-ဘုရားအလိုတော်တည်း။

အထခေါ် အာယသ္မာ မဟာမောဂ္ဂလ္လာနောတိ အာဒီသု - နော အစ ရှိသော ပါဠိရပ်တို့၌၊ အာယသ္မာတိ ဇတံ - အာယသ္မာ ဟူသော ဤ စကား သည်၊ ပိယဝစနံ-ချစ်ဘွယ်သော စကားတည်း၊ အာယသ္မာတိ ဇတံ - သည်၊ ဂရုဂါရဝသပ္ပတိဿာ-ဓိဝစနံ – အလေးပြုအပ်သူတို့၌ ရှိသေခြင်းအားဖြင့်

**မာနဥ္စ ဩမာနဥ္စ။** ။မာနရိုးရိုးထက် လွန်ကဲသော မာနကို " အတိမာန " ဟု ခေါ်၏၊ ထို အတိမာနကိုပင် ဤနေရာ၌ ကဲ့ရဲ့ရှုတ်ချအပ်သောကြောင့် "ဩမာန" ဟု ဆိုထားသည်။ [ "ဩမာနန္တိ အတိမာနံ၊ အတိမာနော ယေဝ ဟေတ္ထ နိဟီနတာယ (ရှုတ်ချအပ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့် အဝသဒ္ဒါ၏ကာရိယဩဖြင့်)ဩမာနန္တိ ဝုတ္တော"။]

**ပိယဝစနမေတံ။** ။ပိယာယိတဗ္ဗံ-ချစ်ခင်မြတ်နိုးဘွယ်တည်း၊ဣတိ ပိယံ၊ ပိယံစ+ တံ+ဝစနံစာတိ ပိယဝစနံ၊ "ဝိညုဇာတိကာ ဟိ ပရံ ပိယေန သမုဒါစရန္တာ—ပညာရှိ သဘောရှိသူတို့သည် သူတပါးကို ချစ်ဘွယ်စကားဖြင့် ပြောဆိုကြကုန်လသော်၊ ဘဝန္တိ ဝါ ဒေဝါနံပိယာတိ ဝါ အာယသ္မာတိ ဝါ သမုဒါစရန္တိ၊ တသ္မာ သမ္မုခါ (မျက်မှောက်၌) သမ္မောဓနဝသေန (သိစေခြင်း ခေါ်ဝေါ်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့် ၊ အာဝုသောတိ (အရှင် ဘုရား+ငါ့ရှင်) တိရောက္ခံ (မျက်ကွယ်၌) အာယသ္မာတိ သမုဒါစရော။—ဋီကာ။

**ဂရုဂါရဝ၊ပေ၊ဝစနံ။** ။ " အာယသ္မာတိ ပိယဝစနမေတံ " ဖြင့် အထက်တန်း အောက်တန်း မခွဲခြားဘဲ "ချစ်ဘွယ်သော စကား"ဟု သာမညအားဖြင့် ပြပြီး၍ တဘန် အထက်တန်း ပုဂ္ဂိုလ်ခေါ်ရာ အတွက်သာ ဟု ပြလိုသောကြောင့် "ဂရု၊ပေ၊ဝစနမေတံ" ဟု မိန့်ပြန်သည်။ ["အာယသ္မာတိ ပိယဝစနမေတန္တိ ဥစ္စနီစသာမညဝသေန ဝတွာ

မှိရာနှင့်တကွဖြစ်သူ၏ ပြောဆိုအပ်သော စကားတည်း၊ မဟာမောဂ္ဂလ္လာနော တိ - ကား၊ ဂုဏမဟန္တတာယ - ဂုဏ်အားဖြင့် မြတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ မဟာစ - မြတ်သော ပုဂ္ဂိုလ်လည်း ဟုတ်၏၊ သော - ထို မြတ်သော ပုဂ္ဂိုလ် ဟူသည်၊ ဂေါတ္တေန-အနွယ်အားဖြင့်၊ မောဂ္ဂလ္လာနောစ-လ္လာနလည်းမည်၏၊ ဣတိ - ဤ နှစ်ပါးသော သတ္တိကြောင့်၊ မဟာမောဂ္ဂလ္လာနော - န မည်၏၊ ဧတဒဝေါစာတိ- ကား၊ ဧတံ- ဤစကားကို၊ အဝေါစ - လျှောက်ပြီ၊ ဣမိနာ- ဤဧတဒဝေါစ ဟူသောပါဌ်ဖြင့်၊ (ဒဿေတိ၏ ကရိုဏ်းထည့်သည်၊)ဣဒါနိ- ဤ၊ ဝတ္တဗ္ဗံ - လျှောက်ထိုက်သော၊ ဧတရဟိ ဘန္တေတိ အာဒိဝစနံ— ဧန္တေ အစ ရှိသောစကားကို၊ ဒဿေတိ-ပြ၏၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊ အဝေါစ-နည်း၊ ကိရ— ချဲ့၊ ထေရော-ကို၊ ဝါ-သည်၊ ဝေဗ္ဗဇိတွာ-ရှင်ရဟန်းပြုပြီး၍၊ သတ္တမေ ဒိဝသေ- ၌၊ သာဝကပါရမိ ညာဏဿ - ဏ်၏၊ မတ္တကံ - အထွဋ်အထိပ်သို့၊ ပတ္တော- ရောက်ပြီ၊ သတ္ထာရာပိ-သည်လည်း၊ မဟိဒ္ဓိကတာယ-ကြီးသော တန်ခိုးရှိသူ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဧတဒဂ္ဂေ- ဧတဒဂ်အရာ၌၊ ထပိတော - ထားတော်မူအပ်ပြီ၊ သော-ထိုအရှင်မဟာမောဂ္ဂလ္လာန်သည်၊အတ္တနော-၏၊တံ မဟိဒ္ဓိကတံ-ဖြစ်ကို၊ နိဿာယ- ၍၊ စိန္တေသိ- ပြီ၊ပေ၊ဘိက္ခူစ- တို့သည်လည်း၊ ကိလမန္တိ- ပင်ပန်း ကုန်၏၊ အဟံ-သည်၊ ပထဝိံ-ကို၊ ပရိဝတ္တေတွာ-ထက်အောက်လှန်၍၊ ဘိက္ခူ- တို့ကို၊ပပ္ပဋကောဇံ(ပပ္ပဋက+ဩဇံ)-မြေလွှာ မြေဩဇာကို၊ယန္နူန ဘောဇေ

ပုန ဥဒ္ဓဇနာဝဏိကဝသေနေဝ ဒဿေန္တော— ဂရုပေ၊မိဝစနန္တိ အာဟ၊ တတ္ထသဟ ပတ်သေယန (နိဿယေနာ) တိ သပ္ပတိဿော (သနိဿယော)၊ တဿ(၏) ဂရုဂုဏ ယုတ္တေသု ဂါရဝဝစနန္တိ အတ္ထော၊ ဣဓ ပန ဝစနမေဝ အမိဝစနံ”—ဝိမတိ။]

မှတ်ချက်။ ။ဤဋီကာ အလိုအားဖြင့် “ သဟ+ပတိဿေန (နိဿယေန) ယော ဝတ္တတီတိ သပ္ပတိဿော—မှိရာ အကြီးအကဲနှင့် တကွဖြစ်သော (မိမိ အထက်၌ အကြီး အကဲ ရှိသော ) ငယ်သားပုဂ္ဂိုလ်၊ သပ္ပတိဿဿ — ၏ + အမိဝစနံ— စကားတည်း၊ (အမိအနက် မရှိ) သပ္ပတိဿာမိဝစနံ၊ ဂရူသု- တို့၌၊ ဂါရဝေန—ရိုသေခြင်းအားဖြင့်၊ သပ္ပတိဿာမိဝစနံ — မှိရာအကြီးအကဲ ရှိသူ၏ စကားတည်း၊ ဂရုဂါရဝသပ္ပတိဿာမိ ဝစနံ”ဟု ဝစနတ္ထပြု။ [သာရတ္ထ၌“သပ္ပတိဿဝ”ဟု ပါဌ်ရှိ၏၊“ရှေးရှုနားထောင်ခြင်း နှင့် တကွဖြစ်သူ”ဟု ပေး၊ ဝိမတိအလို ပတိပုဗ္ဗ+သိဓာတ်, သာရတ္ထအလို“ပတိပုဗ္ဗ+ သုဓာတ်”ဟု မှတ်။]

ဂုဏမဟန္တတာယ ။ ။ မဟာမောဂ္ဂလ္လာနော၌ စူဠမောဂ္ဂလ္လာန်တပါး ရှိသေး သောကြောင့် “မဟာ”ဟု ဝိသေသနပြုသည် မဟုတ်, ဂုဏ်အားဖြင့် မြတ်သောကြောင့် “မဟာ” ဟု ဝိသေသနပြုသည် — ဟု ပြလို၍ “ဂုဏမဟန္တတာယ” ဟု မိန့်သည်၊ ဤ စကားဖြင့်“မဟီယတေ-ပူဇော်အပ် မြတ်၏၊ ဣတိ မဟန္တော” ဟု ပြ။ [ပူဇာဝစနော ဟေတ္ထ မဟန္တသဒ္ဒေါ၊ မဟာပုရိသောတိ အာဒီသုဝိယ”—ဗုဒ္ဓဃောသမအဖွင့် သာရတ္ထ။]

ယျံ - အကယ်၍ ဘုဉ်းပေးစေရပါမူကား ကောင်းလေစွ၊ ဣတိ- ဤသို့ အကြံ ဖြစ်ပြီ၊ အထ - အကြံဖြစ်ပြီးရာ ထိုအခါ၌၊ အဿ - လှာန်၏၊ တော် - ဤအကြံ သည်၊ အပေါဟသိ-ပြန်ပြီ၊ (ကိံ)၊ အဟံ, ဘဂဝတော-၏၊ သန္တိကေ-အနီး၌၊ ဝိဟရန္တော-နေပါလျက်၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ အယာစိတွာ-ခွင့်မတောင်းမူ၍၊ ဧဝံ-သို့၊ ဝါ - ဤမြေလှန်မှုကို၊ သစေကရေယျံ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ) မေ-၏၊ တော်-ဤ မြေလှန်မှုကို ပြုခြင်းသည်၊ ပဋိရူပံ - လျောက်ပတ်သည်၊ န အဿ - မဖြစ်ရာ၊ ဘဂဝတာ-နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ ယုဂဂ္ဂါဟော ဝိယ - အစုံယူခြင်းကဲ့သို့၊ ဝါ-အပြိုင် ပြုခြင်းကဲ့သို့၊ ကတော-ပြုအပ်သည်၊ ဝါ-ပြုရာရောက်သည်၊ ဘဝေယျ-ရာ၏၊ ဣတိ - ဤသို့ အကြံဖြစ်ပြန်ပြီ၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ယာစိတုကာမော - သည်၊ (ဟုတွာ၊) အာဂတွာ-၍၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ တော်- ကို၊ အဝေါစ-ပြီ။

ဟေဋ္ဌိမတလံ သမ္ပန္နန္တိ - ကား၊ ပထဝိယာ-၏၊ ဟေဋ္ဌိမတလေ - အောက် အပြင်၌၊ ပထဝိမဏ္ဍော - မြေအဆီသည်၊ ပထဝေါဇော - မြေဩဇာသည်၊ ပထဝိပပ္ပဋကော-မြေအလွှာသည်၊အတ္ထိကိရ-ရှိသတတ်၊တံ-ထိုမြေဆီမြေလွှာ မြေဩဇာကို၊ သန္ဓာယ-၍၊ ဝဒတိ-လျှောက်၏၊ တတ္ထ-ထို ဟေဋ္ဌိမဘာလံ သမ္ပန္နံ ဟူသော ပါဌ်၌၊ သမ္ပန္နန္တိ-ကား၊ မဓုရံ - ချိုဆိမ့်ပါ၏၊ သာဒုရသံ - သာယာ အပ်သောအရသာ ရှိပါ၏၊ ဣတိအတ္တော၊ ဟိ - ဥပမာဆောင်, ထင်အောင် ပြအံ့၊ တတြာသာ ရုက္ခော သမ္ပန္နဖလော ဥပပန္နဖလောစာတိ တွေ-လောစ ဟူသော ဤပါဌ်၌၊ မဓုရဖလောတိ အတ္တော-မဓုရဖလောဟူသောအနက်ကို၊ (ဝေဒိတဗ္ဗော)ယထေဝ-သိထိုက်သကဲ့သို့၊ ဧဝံ-ဤအတူ၊ ဣဓာပိ-ဤဟေဋ္ဌိမ

ပထဝိမဏ္ဍော၊ ပေ၊ ပပ္ပဋကော။ ။မဏ္ဍဓာတ် ဥပစ္စည်းဖြင့် ပြီးသောမဏ္ဍကို "သမ္ပန္နာဒံ-အစာအားလုံးတို့၏+အဂ္ဂရသေ-အမြတ်ဆုံးအရသာ၌"ဟု ထောမနိဓိ၌ အနက်ပြု၏၊ ထို့ကြောင့် မြေ၏အဆီအနှစ်ကို"ပထဝိမဏ္ဍော"ဟု ခေါ်သည်၊ ထိုအဆီ ကိုပင်"ပထဝေါဇ-မြေဩဇာ"ဟုခေါ်၏၊ ပထဝိပပ္ပဋကကို"မဟာပထဝိယာ ဟေဋ္ဌိမ တလေ သမုဋ္ဌိတံ-မြေ၏အောက်အပြင်၌ နွားနို့ပေါ်ဝယ် မလိုင်တက်သကဲ့သို့ ပေါ်ထွက် သော ( ဥဒကောဃေန အဇ္ဈောတ္ထတေ ဘူမိပဒေသေ သဥ္ဇာတကဒ္ဒမပဋလသဒိသံ - ရေလွှမ်းမိုးထားသော မြေပြင်ဝယ် ဖြစ်ပေါ်လာသော နွံညွန်လွှာနှင့်တူသော ) " ဟု ဖွင့်သောကြောင့် မြေလွှာဟု အနက်ပေးကြသည်၊ ထို မြေဆီ မြေဩဇာ မြေလွှာသည် တမျိုးတည်းပင်တည်း။

သမ္ပန္နံ။ ။"သမ္ပန္နံ သာလိကေဒါရံ" ဟူရာ၌ ပရိပုဏ္ဏ – ထက်ဝန်းကျင် ပြည့်နေ သော အလွန်ကောင်းသော သလေးခင်းကို သမ္ပန္နဟု ခေါ်၏၊"သမန္တတော-ပတ်ဝန်း ကျင်မှ + ပန္နံ – ရောက်သည်တည်း၊ သမ္ပန္နံ – ထက်ဝန်းကျင် ရောက်သည် " ဟု ပြု၊

တလံ သမ္ပန္နံဟူသောပါဠ်၌လည်း၊ သမ္ပန္နန္တိ–နှံ့ ဟူသောပုဒ်၏၊ မဓုရံ– ချိုဆိမ့်၏၊ သာဒုရသံ- သာယာအပ်သော အရသာရှိ၏၊ ဣတိ- ဤအနက်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ–၏၊ [တတြ-ထိုအရပ်၌၊ ရုက္ခော-သည်၊ သမ္ပန္နဖလော စ- ချိုဆိမ့်သော အသီးရှိသည်၎င်း၊ ဥပပန္နဖလော စ-များသောအသီးရှိသည်၎င်း၊အဿ-၏၊] ပန-ကား၊ သေယျထာပိ ခုဒ္ဒမဓုံ အနီဠကန္တိ ဣဒံ-ကံ ဟူသော ဤ စကားကို၊ အဿ-ထိုမြေ၏အောက်အပြင်၏၊ ဝါ-မြေ့အောံအပြင်၌ရှိသော မြေလွှာ၏၊ မဓုရတာယ-ချိုဆိမ့်သည်၏ အဖြစ်၌၊ ဩပမ္မနိဒဿနတ္ထံ - ဥပမာကို ညွှန်ပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဝုတ္တံ- လျှောက်အပ်ပြီ၊ ခုဒ္ဒမဓုန္တိ - ကား၊ ခုဒ္ဒကမက္ခိကာဟိ– ပျားငယ်တို့သည်၊ ကတမဓု - ပြုအပ်သော ပျားရည်ကို၊ ( အဿာဒံ၌ စပ်၊ ) အနီဠကန္တိ-ကား၊ နိမ္မက္ခိကံ-ပျားကောင်မရှိသော၊ နိမ္မက္ခိကဏ္ဍကံ-ပျားအု မရှိသော၊ ပရိသုဒ္ဓံ-ထက်ဝန်းကျင် စင်ကြယ်သော ( ခုဒ္ဒမဓု၌စပ်၊ ) ဧတံ မဓု- ဤပျားငယ်ရည်သည်၊ သဗ္ဗမဓူဟိ - အလုံးစုံသော ပျားရည်တို့ထက်၊ အဂ္ဂဉ္စ– မြတ်သည်၎င်း၊ သေဋ္ဌဉ္စ – အထူးသဖြင့် ချီးမွမ်းအပ်သည်၎င် ၊ သုရသဉ္စ – ကောင်းသော အရသာရှိသည်၎င်း၊ ဩဇဝန္တဉ္စ - ဩဇာရှိသည်၎င်း၊ ဟောတိ ကိရ-တတ်၊ တေန-ကြောင့်၊ သေယျထာပိ၊ပေ၊ဿာဒန္တိ-ဟူ၍ အာဟ-ပြီ၊

"ဣမိနာပါတိမောက္ခသံဝရေနသမ္ပန္နော သမန္နာဂတော"ဟူရာ၌ ပါတိမောက္ခသီလသို့ ကောင်းစွာရောက်သည်ကို"သမ္ပန္န–ပြည့်စုံသည်" ဟုခေါ်သည်၊ " သံ(သမ္မဒေဝ) – ကောင်းစွာသာလျှင်+ပန္နော–ရောက်သည်တည်း၊ သမ္ပန္နော"ဟုပြု၊"တတြာဿ ရုက္ခော သမ္ပန္နဖလော ဥပပန္နဖလော" ဟူရာ၌ ချိုမြိန်သော အရသာနှင့် ပြည့်စုံသော အသီးကို "သမ္ပန္န"ဟု ခေါ်၏။ [သမ္ပန္နန္တိ မဓုရရသေန ဥပေတံ၊ တေနာဟ သာဒုရသန္တိ၊ ဥပပန္န ဖလောတိ ဗဟုဖလော၊–ဝိမတိ။]

ခုဒ္ဒမဓု။ ။ခုဒ္ဒါဟိ–ပျားငယ်တို့သည်+ကတံ-ပြုအပ်သော+မဓု-ပျားရည်တည်း၊ ခုဒ္ဒမဓု၊ (အလယ်ပုဒ်ကျေသော မဇ္ဈေလောပီတပ္ပုရိသ်၊) ဝါစာသိလိဋ္ဌနိဂ္ဂဟိတ်လာ၍ "မဓုံ"ဟုရှိသည်၊ မဟာမက္ခိက (ပျားကြီး) ဘမရမက္ခိကာဒိ (ပျားပိတုန်းစသည်တို့) ကတေဟိ–ပြုအပ်သော ပျားရည်တို့ထက်၊ အဂ္ဂံ–အကောင်းဆုံး အမြတ်ဆုံး အရသာ ဩဇာအရှိဆုံးဖြစ်၏။

အနီဠကံ ။ ။ ဠောဝုစ္စတိ ဒေါသော = အပြစ်ကို "ဠော" ဟု ဆိုအပ်၏၊ နတ္ထိ+ ဠော ယဿာတိ အနေဠကံ ( သမာသန္တ ကပစ္စည်းသက် )၊ "နိဒ္ဒေါသံ" ဟု ဋီကာ ဖွင့်သည်၊ ထိုသို့ အပြစ်မရှိ၍ သန့်ရှင်းသောကြောင့်"ပရိသုဒ္ဓံ"ဟု အဋ္ဌကထာဖွင့်သည်၊ ထိုအပြစ်ဟူသည် ပျားရည်၌ပါတတ်သော"ပျားကောင်, ပျားအုတည်း'"ဟု သိစေလို၍ "နိမ္မက္ခိကံ နိမ္မက္ခိကဏ္ဍကံ"ဟု မိန့်သည်၊ ဤပုဒ်ပြီးပုံ အလိုအားဖြင့်"အနေဠကံ"ရှိလျှင် ကောင်း၏၊ ယခုစာအုပ်များ၌"အနီဠကံ"ဟု ရှိသောကြောင့် ကော် သုတ်ကြီးဖြင့် ဤပြု။ [မက္ခိက+အဏ္ဍံ–အအု၊ နတ္ထိ+မက္ခိကဏ္ဍံ ယတ္ထာတိ နိမ္မက္ခိကဏ္ဍကံ။]

သာခါဟံ ဘန္တေတိ-ကား၊ ဘန္တေ- မြတ်စွာဘုရား၊ အဟံ- တော်သည်၊ သာခု- တောင်းပန်ပါ၏၊ ဧတ္တ-ဤသာခါဟံ ဘန္တေဟူသော စကားရပ်၌၊ သာခုတိဧတံ-ခုဟူသော ဤသဒ္ဒါသည်၊အာယာစနဝစနံ-တောင်းပန်ကြောင်း သဒ္ဒါတည်း၊[အာယာစနဝစနမေတန္တိ ဧရမိနာ သမ္ပဋိစ္ဆန(ကောင်းပါပြီ ဟု ဝန်ခံခြင်း) သမ္ပဟံသနာဒိ အတ္ထံ နိဝတ္တေတိ။ ] ဟိ - မှန်၊ ပထဝိပရိဝတ္တနံ- မြေကို ပြောင်းပြန်လှန်ခြင်းကို၊အာယာစန္တော-ခွင့်တောင်းလိုသည်၊(ဟုတ္တာ၊) ထေရော-သည်၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ ဧဝံ- ဤသို့ သာခါဟံဘန္တေဟူ၍၊ အာဟ- ပြီ၊ ပရိဝတ္တေယျန္တိ-ကား၊ ဥက္ကုဇ္ဇေယျံ-လှန်လိုပါ၏၊ ဝါ- လှန်ပါရစေ၊ ယေဟို့မ တလံ-ကို၊ ဥပရိမံ-အထက်၌ ဖြစ်သည်ကို၊ ဝါ-အောင်၊ ကရေယျံ-ပြုလိုပါ၏၊ ဝါ-စေ၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊(ဧဝံ-ဤသို့၊အာဟ-နည်း)၊ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ ဧဝံ-ဤမြေလှန်မှုကို၊ ကတေ—ပြုအပ်သော်၊ သုခေန- လွယ်ကူသဖြင့်၊ ဘိက္ခူ– တို့သည်၊ ပပ္ပဋကောဇံ- မြေအလွှာ မြေဩဇာကို၊ ပထဝိမဏ္ဍံ- မြေဆီကို၊ ပရိဘုဉ္ဇိဿန္တိ- နှလတံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ အကြံဖြစ်ခြင်းကြောင့်၊ ဧဝံ- ကို၊ အာဟ- ပြီ၊ ( "ကသ္မာ ကရေယျံ" ဟု မေး၍ "ဣတိကရေယျံ" ဟု လည်း ဖြေနိုင်၏၊ ) အထ - လျှောက်ပြီးရာ ထိုအခါ၌၊ အနနုဇာနာတုကာမော - ခွင့်ပြုတော်မမူ လိုသည်၊ (သမာနော) ပိ-လည်း၊ ထေရံ- ကို၊ သီဟနာဒံ - ခြင်္သေ့ဟောက်ဟန် ရဲရင့်သောအသံကို၊ နဒါပေတုံ - မြည်စေခြင်းငှါ၊ ယေပန တေ ၊ပေ၊ ကရိဿ သီတိ-ဟူ၍၊ ပုစ္ဆိ-တော်မူပြီ၊ ပထဝိနိဿိတာ-မြေ၌မှီကုန်သော၊ ဂါမနိဂမာ ဒိသု - ရွာနိဂုံး အစရှိသောအရပ်တို့၌၊ ယေပါဏာ - အကြင် သတ္တဝါတို့သည်၊ (သန္တိ၊) တေ - ထိုသတ္တဝါတို့ကို၊ ပထဝိယာ – မြေကို၊ ပရိဝတ္တိယမာနာယ- လှန်အပ်သော်၊ အာကာသေ-၌၊ သဏ္ဌာတုံ-ကောင်းစွာ တည်ခြင်းငှါ၊ အသ က္ကောန္တေ-မစွမ်းနိုင်သူတို့ကို၊ ကထံ-အဘယ်အရပ်၌၊ကရိဿသိ-နည်း၊ကတ္ထ- အဘယ်အရပ်၌၊ ထပေဿသိ-ထားလတံ့နည်း၊ ဣတိ-ဤသို့မေးတော်မူပြီ။

အထ-မေးတော်မူရာ ထိုအခါ၌၊ ထေရော-သည်၊ ဘဂဝတာ-သည်၊ တေ ဒင္ဂ- ၌၊ ထပိတဘာဝါနုရူပံ- ထားအပ်သူ၏အဖြစ်အားလျော်သော၊ အတ္တ နော– ၏၊ ဣဒ္ဓါနုဘာဝံ - တန်ခိုးအာနုဘော်ကို၊ ပကာသေန္တော – ထင်ရှား

နိဂမော။ ။ နိဗန္ဓ ဝိပုလာဂမော — အမြဲ များစွာသောအခွန်အတုပ်၏ လာရာ ဖြစ်သော ရွာကြီးသည်၊ နိဂမော-နိဂုံးမည်၏။ [နိ-နိဗန္ဓအနက်ဟော၊ "နိအာဂမော" ဟု ဆိုလိုလျက် အာချေ၍ "နိဂမော"ဟု ပြီးသည်၊ ပဝတ္တိတ မဟာအာယော—ဖြစ်စေ အပ်သော များသောအခွန်အတုပ်ရှိသော၊ မဟာဂါမော — ရွာကြီးတည်း၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ။—( သာရတ္ထ။ )ဝိမတိ၌ကား "ခုဒ္ဒကော ဂါမော— ငယ်လျှင်ရွာ၊ မဟန္တော သာပဏော နိဂမော—ကြီး၍ ဈေးရှိလျှင် နိဂုံး"ဟု ခွဲခြား၏။]

ပြလိုသည်၊ ( ဟုတ္တာ )၊ ကောဟံဘန္တေတိ အာဒိ - အစရှိသော စကားကို၊ အာဟ - လျှောက်ပြီ၊ တဿ - ထို ကောဟံဘန္တေ အစရှိသော စကားရပ်၏၊ အတ္ထော—ကား၊ ဘန္တေ – မြတ်စွာဘုရား၊ အဟံ-သည်၊ ကော - တဖက်သော၊ ဟတ္ထံ - ကို၊ [အဘိနိမ္မိ ဿာမိ ကရိဿာမိတို့၌စပ်၊ ] အယံ ပထဝီယထာ-ဤ ပကတိ မြေကြီးကဲ့သို့၊ ဧဝံ-ဤအတူ၊ အဘိနိမ္မိနိဿာမိ- ဖန်ဆင်းပါအံ့၊ ပထဝိ သဒိသံ-မြေနှင့်တူသည်ကို၊ ဝါ-အောင်၊ကရိဿာမိ-ပါအံ့၊ ဧဝံ-သို့၊ ကတွာ-ပြီး၍၊ ပထဝိနိဿိတာ- န်သော၊ ယေပါဏာ – တို့သည်၊ (သန္တိ၊) ကေသို့- သော၊ ဟတ္ထတလေ - လက်အပြင်၌၊ ဌိတေ - တည်ကုန်သော၊ တေပါဏေ- တို့ကို၊ တတော-ထိုလက်မှ၊ ဒုတိယဟတ္ထတလေ- နှစ်ခုမြောက် လက်အပြင်၌၊ သင်္ကာမေဿာမိယ – ပြောင်းရွှေ့သကဲ့သို့၊ တထာ - တူ၊ တတ္ထ - ထို နိမ္မိတ မြေ၌၊ သင်္ကာမေဿာမိ-ပြောင်းရွှေ့ပါအံ့၊ ဣတိ (အတ္ထော)-နက်၊ အထ- လျှောက်လားရာ ထိုအခါ၌၊ အဿ-ထို အရှင်မဟာမောဂ္ဂလ္လာန်၏၊ အာယာ စနံ - တောင်းပန်ခြင်းကို၊ ပဋိက္ခိပန္တော - ပယ်မြစ်တော်မူလိုသည်၊ (ဟုတ္တာ) အလံ မောဂ္ဂလ္လာနာတိ အာဒိ-အစရှိသောစကားကို၊ အာဟ-မိန့်တော်မူပြီ၊ တတ္ထ-ထို အလံမောဂ္ဂလ္လာနအစရှိသောစကားရပ်၌၊ အလန္တိ-အလံဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ပဋိက္ခေပဝစနံ-ပယ်မြစ်ကြောင်းသဒ္ဒါတည်း၊ ဝိပလ္လာသမ္ပိ သတ္တာ ပဋိလဘေယျုန္တိ- ကား၊ သတ္တာ- တို့သည်၊ ဝိပရိတဂ္ဂါဟမ္ပိ– ဖေါက်ဖေါက် ပြန်ပြန် ယူခြင်းသို့လည်း၊ သမ္ပာပုဏေယျုံ-န်ရာ၏၊ ကထံ-အဘယ်သို့ ရောက်ကုန် ရာသနည်း၊ အယံ - ဤမြေသည်၊ ပထဝီနုခေါ - နဂိုမြေလေလော၊ ဥဒါဟု- သို့မဟုတ်၊ အယံ- ဤမြေသည်၊ န ပထဝီနုခေါ - နဂိုမြေ မဟုတ်လေသလော၊ ဣတိ-သို့၊ သမ္ပာပုဏေယျုံ-ရာ၏၊ အထဝါ-ကား၊ အယံ-ဤရွာသည်၊ အမှာ ကံ - တို့၏၊ ဂါမောနုခေါ - ရွာလေလော၊ ဥဒါဟု – သို့မဟုတ်၊ အညေသံ- အခြားသူတို့၏၊ဂါမောနုခေါ-လေလော၊ ဣတိ-သို့၊ သမ္ပာပုဏေယျုံ-န်ရာ၏၊ နိဂမဇနပဒခေတ္တာရာမာဒီသု-နိဂုမ်း, ဇနပုဒ်,လယ်ယာ,အာရာမ် အစရှိသည် တို့၌၊ ဧဝံ—ဤအတူတည်း။

ဝါ—တနည်း၊ သေဝိပလ္လာသော—ဤဆိုအပ်ပြီးသော ဝိပလ္လာသသည်၊ န— မဖြစ်နိုင်၊ ( ကသ္မာ - ကြောင့်၊ န- နိုင်သနည်း၊) ဟိ(ယသ္မာ)—ကြောင့်၊ ဣဒ္ဓိ မတော-တန်ခိုးရှင်၏၊ ဣဒ္ဓိဝိသယော - တန်ခိုးအရာကို၊ အစိန္တေယျော-မကြံ

အယံနုခေါ၊ပေ၊န အယံ။ ။ဖန်ဆင်းအပ်သောမြေကိုရင်း, ပကတိမြေကိုရင်း, မြေ ၂ မျိုးကို မြင်နေကြရသောကြောင့် “ဤမြေက ငါတို့နေရာ နဂိုရ်မြေလား, သို့မဟုတ် အခြားမြေတမျိုးလား” ဟု ကုက္ကုစ္စ (သံသယ) ဖြစ်စရာရှိသည်။

အပ် မကြံနိုင်၊ (တသ္မာ- ကြောင့်၊ သေ ဝိပလ္လာသော - သည်၊ န-နိုင်၊ ) ပန-စင်စစ်ကား၊ ဧဝံ-သို့၊ ဝိပလ္လာသံ-ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန်ဖြစ်ခြင်းကို၊ ပဋိလဘေယျုံ - ရကုန်ရာ၏၊ ( ကိံ - အဘယ်သို့ ရကုန်ရာသနည်း၊ ) ဣဒံ ဒုဗ္ဘိက္ခံနာမ-မည်သည်၊ ဣဒါနိယေဝ- ယခုအခါ၌သာ၊ န ဟောတိ-ဖြစ်သည် မဟုတ်သေး၊ အနာဂတေပိ-၌လည်း၊ ဘဝိဿတိ-ဖြစ်ဦးလတ့်၊ တဒါ-ထိုနောင် အခါ၌၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ တာဒိသံ-ထို အရှင်မဟာမောဂ္ဂလ္လာန်ကဲ့သို့ ရှုအပ်သော၊ ဣဒ္ဓိမန္တံ - တန်ခိုးရှိသော၊ သပြဟ္မစာရိံ – သီတင်းသုံးဘော်ကို၊ ကုတော-အဘယ်မှ၊ လဘိဿန္တိ-ရကုန်လတ့်နည်း၊ တေ-ထိုအနာဂတ်ရဟန်းတို့သည်၊ သောတာပန္န၊ပေ၊ခီဏာသဝါ- သောတာပန်, သကဒါဂါမ်, သုက္ခဝိပဿကရဟန္တာ,ဈာနလာဘီ ရဟန္တာ, ပဋိသမ္ဘိဒါပတ္တ ရဟန္တာတို့သည်၊ သမာနာပိ- ကုန်သော်လည်း၊ ဣဒ္ဓိဗလာဘာဝါ- တန်ခိုးအစွမ်း၏ မရှိခြင်းကြောင့်၊ ပရကုလာနိ-သူတပါးအိမ်တို့သို့၊ ပိဏ္ဍာယ- ငှါ၊ ဥပသင်္ကမိဿန္တိ-ချဉ်းကပ်ကြရကုန်လတ့်၊ တတြ–ထိုသို့ ချဉ်းကပ်ရာ၌၊ မနုဿာနံ-တို့၏၊ ဧဝံ-ဤအကြံသည်၊ ဘဝိဿတိ၊ (ကိံ)၊ ဗုဒ္ဓကာလေ-ဘုရားလက်ထက်တော်၌၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ သိက္ခာသု-တို့၌၊ပရိပူရကာရိနော-ဖြည့်ကျင့်မှုကို ပြုလေ့ရှိကုန်သည်၊ အဟေသုံ-န်ပြီ၊ တေ-ထိုရဟန်းတို့သည်၊ ဂုဏေ-ဈာန်အဘိညာဉ်ဂုဏ်တို့ကို၊ နိဗ္ဗတ္တေတွာ-ဖြစ်စေ၍၊ပေ၊ဣဒါနိ ပန - ယခုအခါ၌ကား၊ သိက္ခာယ - ၌၊ (သိက္ခာတပါး၌သော်မှ, ဟူလို၊) ပရိပူရကာရိနော, နတ္ထိ - န်၊ ယဒိ သိယုံ-အကယ်၍ ရှိကုန်အံ့၊ (ဧဝံသတိ-သော်၊) တထေဝ-ထိုရှေးရဟန်းတို့ အတိုင်းပင်၊ ကရေယျုံ-န်ရာ၏၊ အမှာကံ - တို့အား၊ ယံကိဉ္စိ - အမှတ်မရှိ တစုံတခုသော၊ ပဏ္ဍံဝါ-အကျက်ကိုသော်၎င်း၊ အာမံဝါ- အစိမ်းကိုသော်၎င်း၊ ခါဒိတုံ-ခဲစားခြင်းငှါ၊ ဝါ-ခဲစားခွင့်ကို၊ န ဒဒေယျုံ-န်ရာ၊ ဣတိ- ဤအကြံသည်၊ ဘဝိဿတိ၊ ဧဝံ- သို့၊ တေ-ထို အနာဂတ်လူတို့သည်၊ [ပဋိလဘေယျုံ၌ စပ်ရမည်ဖြစ်သောကြောင့် တေသံ ဟု မရှိရ၊] တေသုယေဝ အရိယပုဂ္ဂလေသု- တို့၌ပင်၊ အရိယပုဂ္ဂလာ-တို့သည်၊ နတ္ထိ– န်၊ ဣတိ- သို့၊ ဣမံ ဝိပလ္လာသံ - ကို၊ ပဋိလဘေယျုံ- န်ရာ၏၊ [ကိံ အမေးကို ဖြေသည်။]စ-ဆက်၊ ဝိပလ္လာသဝသေန-ဖြင့်၊ အရိယေ-တို့ကို၊ ဥပဝဒန္တာ- ကဲ့ရဲ့မိကုန်သည်၊ (ဟုတွာ) အပါယုပဂါ - အပါယ်သို့ ကပ်ရောက်

**ဧဝံ ပန ဝိပလ္လာသံ။** ။ဤကား “ တခြား ဝိပလ္လာသတမျိုး ဖြစ်စရာရှိ၏ ” ဟု ပြသော စကားတည်း၊ ထို ဝိပလ္လာသကား အရိယာပုဂ္ဂိုလ်တို့ အပေါ်၌ “ အရိယာ မဟုတ် ”ဟု အထင်မှားခြင်းတည်း၊ ဝိ– ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန်+ပရိ( ပရိဝတ္တိတွာ )– ပြောင်းလွဲ၍(အရိယာရှိလျက် အရိယာမရှိ ဟု ပြောင်းပြန်ပြု၍) အာသော-ဖြစ်ခြင်း။]

ကြွ၍ ကုန်သည်၊ ဘဝေယျုံ-နိရာ၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ တေ-အား၊ ပထဝိံ-ကို၊ ပရိဝတ္တေတုံ - လှန်ခြင်းငှါ၊ ဝါ - ခြင်းသည်၊ မာရုစ္စိ – မနှစ်သက်လင့်၊ ဣတိ-ဤသို့ မိန့်တော်မူပြီ။

အထ – မိန့်တော်မူရာ ထိုအခါ၌၊ ထေရော - သည်၊ ဣမံ ယာစနံ - ကို၊ အလဘမာနော - သည်၊ ( ဟုတ္ဝာ၊ ) အညံ - အခြားတမျိုးကို၊ ယာစန္တော (ဟုတ္ဝာ) သာဝ ဘန္တေတိ အာဒိမာဟ၊ အဿ-ထိုအရှင်မဟာ မောဂ္ဂလ္လာန်၏၊ တမ္ပိ-ထိုတောင်းပန်ခြင်းကိုလည်း၊ ဘဂဝါ ပဋိက္ခိပန္တော(ဟုတ္ဝာ)အလံ မောဂ္ဂလ္လာနာတိ အာဒိမာဟ၊တတ္ထ- လ္လာနအစရှိသောစကားရပ်၌၊ ဝိပလ္လာသမ္ပိ သတ္တာ ပဋိလဘေယျုံတိ - ယျုံဟူ၍၊ ကိဥ္စာပိ န ဝုတ္တံ – အကယ်၍ကား မိန့်တော်မမူအပ်၊ အထ-ခါ-ထိုသို့ မိန့်တော်မမူအပ်ပါသော်လည်း၊ ပုဗ္ဗေ-၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ - ဖြင့်သာ၊ ဂဟေတဗ္ဗံ– ယူရာ၏၊ စ – ဆက်၊ အဿ – ထို ဝိပလ္လာသမ္ပိ၊ ပေ ၊ ယျုံဟူသော ပါဌ်၏၊ အတ္ထောပိ - ကိုလည်း၊ ဝုတ္တသဒိသမေဝ-ဆိုအပ်ပြီးသော အနက်နှင့် တူစွာသာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

ပန-ပဋိဟာရပက္ခါ၊ပေ၊အံ့၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ယဒိ အနုဇာနေယျ-အကယ်၍ ခွင့်ပြုတော်မူအံ့၊ (ဧဝံသတိ) ထေရော-သည်၊ ကိံ - အဘယ်ကို၊ ကရေယျ-ရာ သနည်း၊ ဣတိ-ဤကား အမေးတည်း၊ ယထာ-အကြင်အခြင်းအရာအားဖြင့် ပြု၍ ပြုလသော်၊ ဘိက္ခူ - တို့သည်၊ ဂေါဓာဂေါမံဝိယ - ဆွမ်းခံရွာကို ကဲ့သို့၊ ယထာသုခံ-ချမ်းသာသည်အားလျော်စွာ၊ ပိဏ္ဍာယ- ငှါ၊ ပဝိသိတွာ-၍၊ နိက္ခမေယျုံ-ပြန်ထွက်ကုန်ရာ၏ (တထာ-ထိုအခြင်းအရာအားဖြင့်)၊မဟာသမုဒ္ဒံ-ကို၊ဧကေနပဒဝီတိဟာရေန-ခြေတလှမ်းဖြင့်၊အတိက္ကမိတဗ္ဗံ–ကျော်လွန်ထိုက် သော၊ မာတိကာမတ္တံ- မြောင်းငယ်မျှကို၊ အဓိဋ္ဌဟိတွာ- အဓိဋ္ဌာန်၍၊ နဋ္ဌေရုပုစိမန္တတော - နဋ္ဌေရု တမာပင်မှ၊ ဥတ္တရကုရုံ - မြောက်ကျွန်းသို့၊ အဘိမုခံ–ရှေးရှုဖြစ်သော၊ မဂ္ဂံ-ကို နီဟရိတွာ-ထုတ်ဆောင်၍၊ ဥတ္တရကုရုံ-ကို၊ ဂမနာ ဂမနသမ္ပန္နေ-သွားလမ်း လာလမ်းနှင့်ပြည့်စုံသော၊ ဌာနေ-အရပ်၌၊ ဒဿေယျ - ပြရာ၏၊ ဣတိ - အဖြေတည်း။....စ-နိဂုံးကို ဆိုဦးအံ့၊ မဟာမောဂ္ဂလ္လာနဿ- ၏၊ သီဟနာဒကထာ- သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။

ဧကပဒဝီတိဟာရေန။ ။[ ဧကပဒဝီတိဟာရေန - ခြေတလှမ်းဖြင့်၊ အတိက္ကမိတဗ္ဗံ၌- ကျော်လွန်ထိုက်သောအရပ်ဟူသည်လည်း၊ သမ္မဂမနေနန-မှန်မှန်သွားခြင်းအားဖြင့်၊ ဗိုန်ပဒါန် အနူရေ-ခြေ ၂ ဘက်တို့၏ အကြားနှ၊ မဋ္ဌိရတနပဟတ္ထံ-တောင်ဆုပ်ခန့် ရှိ၏၊ ထိုကြောင့် "မာတိကာမတ္တံ" ၌ တောင်ဆုပ်ခန့် ကျယ်သော မြောင်းငယ်ကလေး-ဟု မှတ်။]

ဣဒါနိ–၌၊ အာယသ္မာဥပါလိ-သည်၊ ဝိနယပညတ္တိယာ - ဝိနည်းပညတ်တော်၏၊ မူလတော- အရင်းအစမှ၊ ပဘုတိ - စ၍၊ နိဒါနံ–ကို၊ ဒဿေတုံ- ငှါ၊ သာရိပုတ္တတ္ထေရဿ-၏၊ သိက္ခာပဒပ္ပညတ္တိယာစနံ- သိက္ခာပုဒ်နှင့် စပ်ယှဉ်သော၊ ဝိတက္ကုပ္ပါဒံ - အကြံဖြစ်ခြင်းကို၊ ဒဿေန္တော-လိုသည်၊ (ဟုတ္ဝာ) အထခေါ၊ ပေ၊အာဒိံ-ကို၊အာဟ-လျှော်ပြီ၊ တတ္ထ-ထို အထခေါ်အစရှိသောစကားရင်း၌၊ ရဟောဂတဿာတိ- ကား၊ ရဟသိ-ဆိတ်ငြိမ်ရာအရပ်၌၊ ဂတဿ-ရောက်သည် ဖြစ်၍၊ [မနောဂိုဏ်းဖြစ်၍ "ရဟော"ဟု သမာသ်အလယ်ထားသည်၊] ပတိသလ္လီနဿာတိ-ကား၊ သလ္လီနဿ-တခုတည်းသောအာရုံ၌ ကောင်းစွာငြိကပ်စဉ်၊ ဝါ - ကိန်းအောင်းစဉ်၊ ဧကီဘာဝံ - တပါးထည်းအဖြစ်သို့၊ ဂတဿ-ရောက်စဉ်၊ (ဥဒပါဒိ၌စပ်၊) ကတမေသာနန္တိ - ကား၊ အတီတေသု- လွန်ပြီးကုန်သော၊ ဝိပဿီအာဒိသု - ဿီ အစရှိကုန်သော၊ ဗုဒ္ဓေသု - တို့တွင်၊ ကတမေသံ-အဘယ် ဘုရားရှင်တို့၏၊ (ဗြဟ္မစရိယံ၌စပ်၊) အဿ-ထို ဗြဟ္မစရိယ၏၊ စိရံ-ကြာမြင့်စွာသော ကာလပတ် လုံး၊ ဋ္ဌိတိ-တည်ခြင်းသည်၊ (အတ္ထိ၊) ဣတိ- ကြောင့်၊ တံ-ထို ဗြဟ္မစရိယသည်၊ စိရဋ္ဌိတိကံ- မည်၏၊ ဝါ- တနည်း၊ အဿ-ယ၏၊ စိရာ - ကြာမြင့်သော၊ ဋ္ဌိတိ - တည်ခြင်းသည်၊ (အတ္ထိ၊) ဣတိ (တံ) စိရဋ္ဌိတိကံ၊ ဧတ္ထ - ဤ ကတမေသာနံ အစရှိသောဝါကျ၌၊ သေသံ- ကြွင်းသော ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဥတ္တာနပဒတ္ထမေဝ-ပေါ်လွင်သော ပုဒ်နက်ရှိသည်သာ။

**ဝိနယပညတ္တိယာ။** ။ဝိနည်းပညတ်ဘို့ရန်တောင်းပန်ချိန်၌ တချို့သိက္ခာပုဒ်များ ပညတ်တော်မူပြီးလေပြီ၊ တချို့ ပညတ်တော်မူပြီးကြောင်းကိုလည်း "သာမံပါက ပရိမောစနဥ္စ , ရတ္တိစ္ဆေဒေါ , ဝဿစ္ဆေဒေါ" ဟူသော ရှေ့စကားတို့ဖြင့် သိသာ၏၊ ထို့ကြောင့် မပညတ်ရသေးသော သိက္ခာပုဒ်တချို့ကို ရည်ရွယ်၍"ဝိနယပညတ္တိယာ" ဟု ဆိုသတတ်။

**သလ္လီနဿ ။** ။ ပတိအနက် မရှိ ဟု ပြလို၍ "သလ္လီနဿ"ဟု ဖွင့်၊ "သံ+လီန" ဟူသည် စိတ်ကို အမျိုးမျိုးအာရုံ၌မဖြစ်စေဘဲ တခုထည်းသောအာရုံ၌"သံ–သမ္မဒေဝ-ကောင်းစွာသာလျှင် + လီန – ငြိကပ်နေခြင်းတည်း"၊ ထိုသို့ တခုထည်းသောအာရုံ၌ ငြိကပ်နေလျှင် တပါးထည်းမဟုတ်သော်လည်း တပါးထည်းနေသူနှင့် သဘောတူပင် ဖြစ်သောကြောင့် " ဧကီဘာဝံ ဂတဿ "ဟု အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်သည်၊ "ပတိသလ္လီနဿ – တခုထည်းသောအာရုံ၌ ငြိကပ်စဉ်၊ ဝါ–တပါးထည်းကိန်းအောင်းစဉ် "ဟု ပေး။

**စိရံဋ္ဌိတိ၊ပေ၊စိရဋ္ဌိတိကံ။** ။စိရန္တိ ကာလာပေက္ခံ အစ္စန္တသံယောဂေ ဥပယောဂဝစနံ၊ စိရာတိ စိရကာလယုတ္တာ–သော၊ ဋ္ဌိတိ–ကို၊ အဘေဒေန–ကာလနှင့် ကာလ၌ တည်ခြင်းကို မခွဲခြားသော အဘေဒေါပစာရအားဖြင့်၊ ဝုတ္တာ၊ ဤနည်း၌ " စိရာ–ကြာမြင့်သော+ဋ္ဌိတိ–တည်ခြင်း" ဟု ပေး၊ "တည်ရာကာလ"ဟု မပေးနှင့်။

ပန- ပရိဟာရပက္ခ ၊ပေ၊ အံ့၊ ထေရော - သည်၊ အတ္တနော - ၏၊ ဣမံ ပရိဝိတက္ကံ-၌အကြံကို၊ သယံ-ကိုယ်တိုင်၊ဝိနိစ္ဆိတုံ-ဆုံးဖြတ်ခြင်းငှါ၊နသက္ကောတိ ကိံ-နိုင်သလော၊ ဣတိ- ၌ကား အမေးတည်း၊ (ပရိဟာရော မယာ၊) ဝုစ္စတေ၊ သက္ကောတိစ - တချို့လည်း စွမ်းနိုင်၏၊ န သက္ကောတိစ - တချို့လည်း မစွမ်းနိုင်၊ ဟိ- ချဲ့၊ အယံ—၌ အရှင်သာရိပုတြာသည်၊ ဣမေသံနာမ ဗုဒ္ဓါနံ-၌မည်သော ဘုရားရှင်တို့၏၊ သာသနံ-သည်၊ စိရဋ္ဌိတိကံ- ကြာမြင့်စွာသော ကာလပတ်လုံး တည်ခြင်းရှိသည်၊ နအဟောသိ- မဖြစ်၊ ဣမေသံနာမ ဗုဒ္ဓါနံ-တို့၏၊ သာသနံ-သည်၊ စိရဋ္ဌိတိကံ- သည်၊ အဟောသိ - ပြီ၊ ဣတိဧတ္တကံ - ၌မျှလောက်ကို၊ ဝိနိစ္ဆိတုံ - ငှါ၊ သက္ကောတိ-၏၊ ဣမိနာကာရဏေန-ကြောင့်၊ စိရဋ္ဌိတိကံ-သည်၊ န အဟောသိ၊ ဣမိနာကာရဏေန စိရဋ္ဌိတိကံ အဟောသိ၊ ဣတိဧတံ ပန-၌အရာကိုကား၊(ဝိနိစ္ဆိတုံ)နသက္ကောတိ - နိုင်။

ပန-ဝါဒန္တရကား၊ မဟာပဒုမတ္ထေရော- သည်၊ အာဟ-မိန့်ပြီ၊ ( ကိံ)၊ တေမ္ပိ- ၌အကြောင်းအရာကို ဆုံးဖြတ်ခြင်းသည်လည်း၊ သောဠသဝိဓာယ-၁၆ ပါး အပြားရှိသော၊ ပညာယ-၏၊ မတ္ထကံ- အထွဋ် အထိပ်သို့၊ ပတ္တဿ-ရောက်ပြီးသော၊ အဂ္ဂသာဝကဿ - ၏၊ ဘာရိယံ- ဝန်လေးဘွယ်သည်၊ န-မဟုတ်၊ ပန-ထိုသို့ပင် ဝန်လေးဘွယ် မဟုတ်ပါသော်လည်း၊ သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓေန-နှင့်၊ သဒ္ဓိံ- တကွ၊ ဧကဋ္ဌာနေ —တနေရာထည်း၌၊ ဝသန္တဿ - နေပါလျက်၊ ဝါ-နေသော၊(ထေရဿ-၏၊ )သယံ၊ ဝိနိစ္ဆယကရဏံ- ဆုံးဖြတ်မှုကိုပြုခြင်းသည်၊ တုလံ - ချိန်ခွင်ကို၊ ဆဍ္ဍေတွာ - စွန့်၍၊ ဟတ္ထေန - ဖြင့်၊ တုလနသဒိသံ-ချိန်ဆခြင်းနှင့်တူသည်၊ ဟောတိ၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ဘဂဝန္တံယေဝ - ကိုသာ၊ ဥပသင်္ကမိတွာ-၍၊ ပုစ္ဆိ-မေးလျှောက်ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊(အာဟ-ပြီ၊)အထ-လျှော်ရာ ထိုအခါ၌၊ အဿ- ထို ရှင်သာရိပုတြာ၏၊ ဘဂဝါ-သည်၊ တံ- ထို အမေးကို၊ ဝိသဇ္ဇေန္တော - လိုသည်၊ (ဟုတွာ ) ဘဂဝတော၊ ပေ၊ အာဒိမာဟ၊ တံ-ထို ဝိပဿိဿ အစရှိသောစကားသည်၊ ဥတ္တာနတ္ထမေဝ-နက်ရှိသည်သာ။

သောဠသဝိဓပညာ။ ။မဟာပညာ— အာရုံများစွာသို့ ပြန့်နှံ့သောပညာ, ပုထုပညာ — (ပါးပါးလှပ်လှပ် မဟုတ်) ထုထယ် (ဒုဒယ်) ကောင်းသောပညာ, ဟာသပညာ — (ခြောက်ကပ်ကပ်မဟုတ်) ရွှင်ပျသောပညာ, ဇဝနပညာ— (ထုံထိုင်းထိုင်း မဟုတ်) လျင်မြန်သောပညာ , တိက္ခပညာ— ( တုံးတိတိ မဟုတ် ) ထက်မြက်သောပညာ , နိဗ္ဗေဓိကပညာ — ( မထွင်းနိုင် မဖေါက်နိုင်မဟုတ် ) တကယ် အခက်အခဲကို ဖျက်ခွဲနိုင်သောပညာ၊ ဤ ၆ ပါးနှင့်တကွ အနုပုဗ္ဗဝိဟာရမည်သော သမာပတ် ၉ ပါးနှင့် အရဟတ္တမဂ်ပညာတည်း။

ပုန - တဖန်၊ ထေရော - သည်၊ ကာရဏံ - အကြောင်းကို၊ ပုစ္ဆန္တော-မေးလျှောက်လိုသည်၊ (ဟုတွာ )၊ ကောနုခေါ ဘန္တေ ဟေတူတိအာဒိံ - ကို၊ အာဟ- ပြန်ပြီ၊ တတ္ထ - ထို ကောနုခေါအစရှိသောစကားရပ်၌၊ ကောနုခေါ ဘန္တေတိ – န္တေ ဟူသော ပုစ္ဆာသည်၊ ကာရဏပုစ္ဆာ – အကြောင်းကိုမေးကြောင်းပုစ္ဆာတည်း၊ တ ဿ-ထိုကောနုခေါ ဘန္တေဟူသောပါဌ်၌၊ ဘန္တေ-မြတ်စွာဘုရား၊ ကတမောနုခေါ - အဘယ်ပါနည်း၊ ဣတိ အတ္ထော - နက်၊ ဟေတု,ပစ္စယောတိ-ယောဟူသော၊ ဧတံ ဥဘယံ-ဤ ၂ပါးသောသဒ္ဒါသည်၊ ကာရဏာဓိဝစနံ-အကြောင်းကိုဟောသောသဒ္ဒါတည်း၊ဟိ-မှန်၊(တနည်း) ဟိ (ယသ္မာ)–ကြောင့်၊ ကာရဏံ–အကြောင်းကို၊ (ဝုစ္စတိတို့၌ စပ်၊) တေန-ထိုအကြောင်းကြောင့်၊တဿ-ထိုအကြောင်း၏၊ ဖလံ-အကျိုးသည်၊ ဟိနောတိ ပဝတ္တတိ - ဖြစ်၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ( အကျိုး၏ ဖြစ်ကြောင်း၏ အဖြစ်ကြောင့်၊)ဟေတူတိ-တုဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ–၏၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ တံ-ထိုအကြောင်းကို၊ ပဋိစ္စ- စွဲ၍' (ဖလံ) ဧတိပဝတ္တတိ-ဖြစ်၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ (စွဲ၍ဖြစ်ရာ၏

**ဟေတု,ပစ္စယော ။** ။ တချို့အရာ၌“ အသာဓာရဏအကြောင်းသည် ဟေတု, သာဓာရဏအကြောင်းသည် ပစ္စယ ”ဟု၎င်း, “ ဇနကအကြောင်းသည် ဟေတု, ဥပတ္ထမ္ဘကအကြောင်းသည် ပစ္စယ ” ဟု၎င်း ဤသို့စသည်ဖြင့် ဟေတုနှင့်ပစ္စယသဒ္ဒါတို့မှာ အနက်ထူးရှိသော်လည်း ဤ၌ ဝိပဿီစသော ဘုရားရှင်တို့၏ ဗြဟ္မစရိယ ကြာရှည်စွာ တည်ခြင်း–မတည်ခြင်း၏ အကြောင်းကိုပင် ဟေတု–ပစ္စယဟု ၂ မည်ခွဲ၍ပြသည်–ဟု သိစေလို၍ “ဥဘယမေတံ ကာရဏာဓိဝစနံ”ဟု မိန့်။

**ကာရဏံ ဟိ (ယသ္မာ)။** ။ရှေ့စကားကို ခိုင်မြဲစေလို၍“ကာရဏံဟိ”စသည်မိန့်၊ ဟိနောက်၌ “ယသ္မာ” ဟု စာအုပ်များ၌ တွေ့ရ၏၊ သို့သော် “ ဟိ” နိပါတ်သည်ပင် ရှေ့ကိုထောက်လျှင် ဒဠှီဇောတက, တသ္မာပါသော နောက်ဝါကျထောက်လျှင် ကာရဏဇောတက ဖြစ်နိုင်သောကြောင့် “ယသ္မာ”သည် အပိုဖြစ်ဟန်တူ၏၊ ကာရဏံကိုလည်း နောက် ဝုစ္စတိ ၂ ပုဒ်၌ စပ်နိုင်ရကား ဒုတိယဝုစ္စတိတိုင်အောင် ဧဠ္ဌိဝါကျတရပ်ဟု မှတ်၊ ထို့နောက်မှ အတွင်းဝါကျများကို ပက္ခ+ပက္ခန္တရ, ကာရဏ+ဖလဟု ခွဲ။

**တေန၊ ပေ၊ ဟေတူတိဝုစ္စတိ ။** ။ ဤဝါကျဖြင့် “ ဟိနောတိ ပဝတ္တတိ ဖလံ ဧတေနာတိ ဟေတု ”ဟု ကရဏသာဓနကိုပြ၏၊ ဟိဓာတ်သည် ဂတိအနက်ကို ဟော၏၊ ထို ဂတိလည်း ပဝတ္တိ အနက်ဟောတည်း– ဟု သိစေလို၍ “ ပဝတ္တတိ ” ဟု ဖွင့်သည်၊ “အကျိုးတရား၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်သော အကြောင်း” ဟူလို။ [ဋီကာ၌ “ဂတိ”အရ ဥပဂမန (ကပ်ရောက်ခြင်း) ကို ယူ၍ “ဟိနောတိ (ဖလဿ ဟေတုဘာဝံ ဥပဂစ္ဆတိ) - အကျိုး၏ အကြောင်းအဖြစ်သို့ရောက်တတ်၏၊ ဣတိ ဟေတု ”ဟု ကတ္တုသာဓ်လည်း ပြသေး၏။]

အဖြစ်ကြောင့်၊)ပစ္စယောတိ – ယော့ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ - ၏၊ ဝေံ- သို့၊ အတ္ထတော-လိုရင်းအနက်အားဖြင့်၊ ကော် - တခုထည်းသည်၊ (သမာန်)ပိ- သော်လည်း၊ ဝေါဟာရဝသေနစ - ပြောဆိုရိုး၏ အစွမ်း ဖြင့်ငင်း၊ ဝစနသိလိဋ္ဌတာယစ–သဒ္ဒါ၏ ပြေပြစ်ညက်ညောသည်၏ အဖြစ်ဖြင့်ငင်း၊ တတြတတြ - ထိုထိုပါဠိ ရပ်၌၊ တော် ဥဘယမ္ပိ- ဤ ၂ ပါးစုံကိုလည်း၊ ဝုစ္စတိ -၏၊ ထွေ-ဤကောနခေါ ဘန္တေ အစရှိသောဝါကျ၌၊ သေသံ-သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထမေဝ-သာ။

ဌာဒါနိ-၌၊ တံ ဟေတုဥ္စ - ထိုအကြောင်းကိုငင်း၊ တံ ပစ္စယဥ္စ- ထိုအရာကိုငင်း၊ ဒသေ တုံ-ငှါ၊ ဘဂဝါစ သာရိပုတ္တ ဝိပဿိတိ အာဒိမာဟ၊ တတ္ထ - ထို ဘဂဝါ စသောစကားရပ်၌၊ ကိလာသုနော အဟေသုန္တိ-ကား၊ အာလသိယ ကိလာသုနော– ပျင်းရိကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့် ပင်ပန်းရှိသာ ဟု သဘော ထားတော်မူကြကုန်သည်၊ ဝါ- ပျင်းရိပေ၊ကြောင့် အားထုတ်တော်မမူကြ ကုန်သည်၊ နဟောန္တိ-မဟုတ်ကုန်၊ ဟိ - မှန်၊ ဗုဒ္ဓါနံ-တို့၏၊ အာလသိယံဝါ-ပျင်းရိကုန်သည်အဖြစ်သည်ငင်း၊ ဩသန္န ဝီရိယတာဝါ- ဆုတ်နစ်သောဝီရိယ ရှိကုန်သည်၏ အဖြစ်သည်ငင်း၊ န အတ္ထိ- ကုန်၊ ဟိ- ခြဲ၊ ဗုဒ္ဓါ- တို့သည်၊ ဧက

ယသ္မာတံ ပဋိစ္စ၊ပေ၊ပစ္စယောတိ။ ။[ရှေ့၌ပါခဲ့သော ဟိ (ယသ္မာ) သည် ဤ၌လည်း စပ်နိုင်သောကြောင့် ဤ ယ-သ္မာလည်း ဗိုဟန်တူသည်။ ] ပစ္စယကို " ပတိ+ အယ''ဟု ပုဒ်ခွဲ၊ အယ၌ ဣဓာတ်သည် ပဝတ္တနအနက်ဟော၊ ''တံ ပတိစ္စ-ဒုံအကြောင်း ကိုစွဲ၍'' ဟု ဆိုသဖြင့် ''ထိုအကြောင်းသည် အကျိုး၏ဖြစ်ခဲ့ရာ အကြောင်းတည်း '' ဟု သိသာ၏၊ ထို့ကြောင့်''ပတိစ္စ- တေသ္မာ ဧတိတိ ပစ္စယော''ဟုပြုစေလိုသည်၊ ပဋ္ဌာန်း အဋ္ဌကထာ၌ တိုက်ရိုက်ရှိ၏။ [တေသ္မာ-ဤအကြောင်းမှ၊ ပတိစ္စ—ထိုအကြောင်းကိုစွဲ၍၊ ဖလံ-သည်၊ ဧတိ (ပဝတ္တတိ)—၏၊ ဣတိ—ဤသို့ အကျိုး၏စွဲ၍ ဖြစ်ရာ၏အဖြစ်ကြောင့်၊ သော—ထိုအကြောင်းသည်၊ ပစ္စယော—မည်၏။]

ဝေါဟာရ–ဝစနသိလိဋ္ဌတာ။ ။ဟေတုနှင့်ပစ္စယ ၂ ပုဒ်လုံး၏အရမှာ ကာရဏ ကိုချည်း ဟောခံ့ရသော်လည်း ထို ၂ ပုဒ်ကိုပူးတွဲ၍ ဟေတု, ပစ္စယ (အကြောင်း,အရာ) ဟု ပြောရိုးရှိသောကြောင့်ငင်း, ထိုသို့ ပူးတွဲ၍ပြောမှုလည်း စကားချောသောကြောင့် ငင်း, ထိုထိုနေရာ၌ ၂ ပုဒ်တွဲ၍ ပြောလေ့ ဟောလေ့ရှိကြသည်။

ကိလာသုနော=ဂိလာသုနော။ ။သက္ကတအဘိဓာန်၌ "ဠ္လါသူ – မကျန်းမာ သော ပုဂ္ဂိုလ်''ဟု ရှိ၏၊ ဋ္ဌေဓာတ် သူပစ္စည်း-ဟူ၏၊ ထိုကို ပါဠိပြန်လျှင် ဂိလေဓာတ် သူပစ္စည်းဖြင့် ''ဂိလာသူ''ဟု ဖြစ်ဘွယ်ရှိ၏၊ ဂိလေဓာတ်ကား''ကိလမ–ပင်ပန်းခြင်း'' အနက်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့် ကိလာသုနော၏ ဆိုင်ရာဓာတ်ပစ္စည်းကိုမတွေ့ရကား ''ဂိလာသုနော''ကိုသာ ပါဠိရင်း ဟု ဆရာတို့ ယူဆတော်မူကြသည်။ [ တချို့ကား ''အပ္ပကံ–အနည်းငယ်ကို + လသန္တိ – အလိုရှိကြကုန်၏၊ ဣတိ ကိလာသုနော '' ဟု ကြံကြသေး၏၊ ထိုအကြံ၌ အခြေအမြစ်ကို ရှာသင့်သည်။]

ဿဝါ-တယောက်အားသော်၎င်း၊ ဒွိန္နံဝါ-၎င်း၊ သကလ စက္ကဝါဠဝါသိဿ-အလုံးစုံသော စကြာဝဠာအား သော်၎င်း၊ (စကြာဝဠာ၌ နေသူ သတ္တာအပေါင်းကို အဘေဒေါပစာအားဖြင့် ဆိုသည်၊) ဓမ္မံ-ကို၊ ဒေသေန္တာ-နံလသော်၊ သမကေနေဝ-တူမျှသည်သာလျှင်ဖြစ်သော၊ ဥဿာဟေန-အားထုတ်ခြင်းဖြင့်၊ ဒေသေန္တိ-နံ၏၊ ပရိဿယ-၏၊ အပ္ပဘာဝံ - နည်းသည်၏အဖြစ်ကို၊ ဒိသွာ-မြင်တော်မူ၍၊ ဩသန္နဝီရိယာ -ရှိကုန်သည်၊ န ဟောန္တိ - ကုန်၊ မဟန္တာဘာဝံပိ - များသည်၏ အဖြစ်ကိုလည်း၊ ဒိသွာ , ဥဿန္နဝီရိယာ - များသောဝီရိယရှိကုန်သည်၊ န ဟောန္တိ-ကုန်။

ဟိ-ဥပမာဆောင် ထင်အောင်ပြအံ့၊ မိဂရာဇာ- သားတို့၏မင်းဖြစ်သော၊ သီဟော - သည်၊ သတ္တန္နံ ဒိဝသာနံ - ခုနစ်ရက် တို့၏၊ အစ္စယေန - လွန်ရာအခါ၌၊ ဂေါစရာယ-စားကျက်အလို့ငှါ၊ဝါ-ကျက်စားရာအရပ်သို့၊[ဂတျတ္ထ ဓာတ်၏ ကံ၌ သ ကို အာယပြု။] ပက္ကန္တော – သွားလသော်၊ ခုဒ္ဒကေဝါ-ငယ်သည်မူလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ မဟန္တေဝါ - ကုန်သော၊ ပါဏေ - တို့သို့၊ ဧကသဒိသေနေဝ - တထပ်ထည်း တူသည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊ ဝေဂေန - အဟုန်ဖြင့်၊ ဓာဝတိယေဝ - ပြေးသွား သကဲ့သို့၊ ကိဿဟေတု – အဘယ် အကြောင်းကြောင့်၊ (ဧကသဒိသေနေဝ ဝေဂေန , ဓာဝတိ - နည်း၊ တံ-အနက် မရှိ၊) မေ - ၏၊ ဇဝေါ- လျင်မြန်သော အဟုန်သည်၊ မာ ပရိဟာယိ-မဆုတ်ယုတ်ပါစေလင့်၊ ဣတိ- ဤသို့အကြံဖြစ်ခြင်းကြောင့်၊(ဧကသဒိသေနေဝ ဝေဂေန, ဓာဝတိ-၏၊) ဧဝံ-တူ၊ ဗုဒ္ဓါ-တို့သည်၊ အပ္ပကာယဝါ - နည်းသည်မူလည်းဖြစ်သော၊ မဟတိယာဝါ-သော၊ ပရိသာယ-အား၊ သမကေနေဝ-သော၊ ဥဿာဟေန-ဖြင့်၊ ဓမ္မံ-ကို၊ ဒေသေန္တိ-နံ၏၊ ကိဿဟေတု - ကြောင့်၊ (သမကေနေဝ ဥဿာဟေန ဓမ္မံ,ဒေသေန္တိ-နည်း၊)နော-တို့၏၊ဓမ္မဂရုတာ-တရား၌ လေးစားခြင်းရှိကုန်သည်၏အဖြစ်သည်၊ မာ ပရိဟာယိ-လင့်၊ ဣတိ-ဤသို့ ကြံတော်မူခြင်းကြောင့်၊ (သမကေနေဝ ဥဿာဟေန ဓမ္မံ, ဒေသေန္တိ-နံ၏၊) (ကသ္မာ-ကြောင့်)နော-တို့၏၊ ဓမ္မဂရုတာ မာပရိဟာယိ၊ ဣတိ-ဤသို့ ကြံတော်မူသနည်း၊ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ဗုဒ္ဓါ-တို့သည်၊ ဓမ္မဂရုနော-တရား၌ လေးစားခြင်း ရှိကုန်၏၊ ဓမ္မဂါရဝါ - တရား၌ ရှိသေခြင်း ရှိကုန်၏၊ [ ဓမ္မေ+ဂရု ဧတေသန္တိ ဓမ္မဂရုနော၊ ဓမ္မေ+ဂါရဝံ ဧတေသန္တိ ဓမ္မဂါရဝါ။] ဣတိ-ထို့ကြောင့်(နော ဓမ္မဂရုတာ,မာပရိဟာယိ- လင့်၊ ဣတိ-မူပြီ။)

ပန-ဆက်၊ အမှာကံ-တို့၏၊ ဘဂဝါ-သည်၊ မဟာသမုဒ္ဒံ-ကို၊ပူရယမာနော ဝိယ – ပြည့်စေတော် မူသကဲ့သို့၊ ဝိတ္ထာရေန - အကျယ်အားဖြင့်၊ ဓမ္မံ - ကို၊

ဒေသေတိ ယထာ-ဟောတော်မူသကဲ့သို့၊ ဇဝံ- တူ၊ တေ-ထို ဝိပဿီ အစရှိသော ဘုရားရှင်တို့သည်၊(ဝိတ္ထာရေန ဓမ္မံ၊)န ဒေသေသုံ-နှ်၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊ ( ဝိတ္ထာရေန ဓမ္မံ, န ဒေသေသုံ - နှ်သနည်း၊ ) သတ္တာနံ - တို့၏၊ အပ္ပရဇက္ခတာယ-ပညာမျက်စိ၌ နည်းသောကိေလသာမြူ ရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ (ဝိတ္ထာရေန ဓမ္မံ န ဒေသေသုံ-နှ်၊) တေသံ-ထို ဝိပဿီအစရှိသော ဘုရားရှင်တို့၏၊ ကာလေ-လက်ထက်တော်၌၊ ဒီဃာယုကာ-ရှည်သော အသက် ရှိကုန်သော၊ သတ္တာ-တို့သည်၊ အပ္ပရဇက္ခာ-နှ်သည်၊ အဟေသုံကိရ-သတတ်၊ တေ-ထိုသတ္တာတို့သည်၊ ဧတုဿစ္စပ္ပဋိသံယုတ္တံ- ၄ပါးသောသစ္စာနှင့်စပ်ယှဉ်သော၊ ဧကဂါထမ္ပိ - တစ်ဂါထာ ကိုလည်း၊ သုတွာ–၍၊ ဝါ–လျှင်၊ ဓမ္မံ-ကို၊ အဘိသမေန္တိ- ထိုးထွင်း၍ သိကြကုန်၏၊ [ပဋိဝိဇ္ဈန္တိ၊ အဘိ+သံ+ဣဓာတ်၊ ပဋိဝိဇ္ဈနအနက်ဟော၊] တသ္မာ-ကြောင့်၊ ဓမ္မံ-ကို၊ ဝိတ္ထာရေန-အားဖြင့်၊ နဒေသေသုံ-မမူကြကုန်၊ တေနေဝ ကာရဏေန – ထို အကြောင်း ကြောင့်ပင်၊ ( တရားအကျယ် ဟောတော်မမူကြသောကြောင့်ပင်၊) နေသံ-ထိုဝိပဿီအစရှိသော ဘုရားရှင်တို့၏၊ သုတ္တံ - သုတ်သည်ရင်း၊ပေ၊ဝေဒလ္လံ - ဝေဒလ္လသည်ရင်း၊ အပ္ပကန္တု-နည်းသည်သာလျှင်၊ အဟောသိ၊ ဣတိ-ဤသို့မှတ်အပ်၏၊ တတ္ထ-ထိုအပ္ပကန္တု နေသံ အစရှိသော ပါဌ်၌၊ သုတ္တာဒိနံ-သုတ္တ အစရှိသည်တို့၏၊ နာနတ္တံ-ထူးကုန်သည်၏အဖြစ်ကို၊ ပဌမသင်္ဂီတိဝဏ္ဏနာယံ–၌၊ ဝုတ္တမေဝ-သာ။

အပညတ္တံ သာဝကာနံ သိက္ခာပဒန္တိ-ကား၊ သာဝကာနံ-တို့၏၊နိဒ္ဒေါသတာယ–ကျူးလွန်မှုအပြစ် မရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ [ဝီတိက္ကမဒေါသာနံ အဘာဝတော၊ ] ဒေါသာနုရူပတော – အပြစ်အားလျော်သောအားဖြင့်၊ ပညပေတဗ္ဗံ – ပညတ်ထိုက်သော၊ သတ္တာပတ္တိက္ခန္ဓဝသေန - ခုနစ်ပါးသော အာပတ် အစုတို့၏ အစွမ်းဖြင့်၊ အာဏာသိက္ခာပဒံ – အာဏာ သိက္ခာပုဒ်တော်ကို၊ အပညတ္တံ–ပညတ်တော် မမူအပ်၊ အနုဒ္ဒိဋ္ဌံ ပါတိမောက္ခန္တိ-ကား၊ အန္ဝဍ္ဍမာသံ - အစဉ် အႃးဖြင့် လခွဲတိုင်း၊ ဝါ- လခွဲတကြိမ်၊ အႃဏာ ပါတိမောက္ခံ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ အနုဒ္ဒိဋ္ဌံ-မရွတ်ပြအပ်သည်၊ အဟောသိ–ပြီ၊ ဩဝါဒပါတိမောက္ခမေဝ- ကိုသာ၊ တေ-ထို ဝိပဿီအစရှိသော ဘုရားရှင်တို့သည်၊ ဥဒ္ဒိသိံသု - ဟောပြတော်မူကုန်ပြီ၊ စ-ဆက်၊ တမ္ပိ- ထို ဩဝါဒပါတိမောက်ကိုလည်း၊ အန္ဝဍ္ဍမာသံ-တိုင်း၊ ဝါ-လခွဲတကြိမ်၊ နောဥဒ္ဒိသိံသု-ဟောပြတော်မမူကုန်၊ တထာဟိ – ထိုစကားကို ချဲ့ဦးအံ့၊ ဝိပဿီ – မည်တော်မူသော၊ ဘဂဝါ - သည်၊ ဆန္နံဆန္နံဝဿာနံ - ၆ နှစ် ၆ နှစ်တို့၏၊ ( အစ္စယေန- လွန်ရာအခါ၌၊) (တနည်း) ဆန္နံဆန္နံဝဿာနံ - ၆ နှစ် ၆နှစ်တို့၏အဆုံးနေ့၌၊ သကိံ

သကိံ-တကြိမ်တကြိမ်၊ ဩဝါဒပါတိမောက္ခံ-ကို၊ ဥဒ္ဒိသိ - ဟောပြတော်မူပြီ၊ တစ္ဆ- ထို ဩဝါဒပါတိမောက်ကိုလည်း၊ သာမံယေဝ - ကိုယ်တော်တိုင်သာ၊ ဥဒ္ဒိသိ-ပြီ၊ အဿ- ထို ဝိပဿီမြတ်စွာဘုရား၏၊ သာဝကာ ပန- တို့သည်ကား၊ အတ္တနောအတ္တနော-၏၊ ဝသနဋ္ဌာနေသု-နေရာအရပ်တို့၌၊ န ဥဒ္ဒိသိံသု-ကုန်၊ သကလဇမ္ဗုဒီပေ-အလုံးစုံသောဇမ္ဗူဒိပ်၌၊ ဧကသ္မိံ ယေဝဌာနေ- တခုထည်းသောအရပ်၌သာ၊ ဗန္ဓုမတိယာ - ဗန္ဓုမတီ မည်သော၊ ရာဇဓာနိယာ- မင်းနေပြည်၌၊ ခေမေ - ခေမမည်သော၊ မိဂဒါယေ - မိဂဒါယုံ၌၊ [ ဋ္ဌသိပတန မိဂဒါယုံ တောမျိုးတည်း၊]ဝိပဿိဿ-သော၊ ဘဂဝတော-၏၊ ဝသနဋ္ဌာနေ-၌၊သဗ္ဗေပိ-သော၊ဘိက္ခူသံဃော-သည်၊ဥပေါသထံ-ကို၊အကာသိ-ပြီ၊တစ္ဆ-ထိုဥပုသ်ကိုလည်း၊ သံဃုပေါသထမေဝ-ကိုသာ၊ အကာသိ၊ ဂဏုပေါသထံ-ဂဏဥပုသ်ကို၊ န အကာသိ- ပြုသည်မဟုတ်၊ ပုဂ္ဂလုပေါသထံ - ပုဂ္ဂလ ဥပုသ်ကို၊ န အကာသိ၊ ပါရိသုဒ္ဓိဥပေါသထံ-ကို၊ န အကာသိ၊ အဓိဋ္ဌာနုပေါသထံ-ကို၊ န အကာသိ၊ တဒါ - ၌၊ ဇမ္ဗုဒီပေ - ဇမ္ဗူဒိပ်၌၊ စတုရာသီတိ ဝိဟာရသဟဿာနိ-ရှစ်သောင်းလေးထောင်သော ကျောင်းတိုက်တို့သည်၊ ဟောန္တိ ကိရ- နှ်သတတ်၊ ဧကမေကသ္မိံ-တတိုက် တတိုက်သော၊ ဝိဟာရေ-ကျောင်းတိုက်၌၊ အဗ္ဗောကိဏ္ဏာနိ - ဝိသဘာဂ ရဟန်းတို့နှင့် မရောပြွမ်း ကုန်သော၊ ဒသပိ ဘိက္ခုသဟဿာနိ – တသောင်းသော ရဟန်း တို့သည်ပင်း၊ ဝီသတိပိ ဘိက္ခုသဟဿာနိ - ၂ သောင်းသော ရဟန်းတို့သည်ပင်း၊ ဝသန္တိ - နေကြကုန်၏၊ ဘိယျောပိ-ထို့ထက် အလွန်လည်း၊ ဝသန္တိ-န်၏၊ ဥပေါသထာရောစိကာ-ဥပုသ်နေ့ကို လျှောက်ကြကုန်သော၊ ဒေဝတာ - တို့သည်၊ တတ္ထ တတ္ထ-ထိုထို ကျောင်းတိုက်သို့၊ ဂန္တွာ- သွား၍၊ အာရောစေန္တိ - လျှောက်ကြကုန်၏၊

**ဆန္နံဆန္နံဝဿာနံ**။ ။အစ္စယေနာတိ ပါဌ်သေသော ဒဋ္ဌဗ္ဗော၊ အထဝါ ဆန္နံဆန္နံ ဝဿာနံ ဩသာနဒိဝသံ ( အဆုံးနေ့ ) အပေက္ခိတွာ သကိံသကိန္တိ ဝုတ္တံတွာ, တဒပေက္ခမိဒံ သာမိဝစနံ – ထို အဆုံးနေ့ကို ငဲ့သော သာမီဝိဘတ် ရှိသော သဒ္ဒါတည်း။ [“မေ–တပည့်တော်၏+ စကားကို” ဟု ပေးရသောပုဒ်မျိုးဖြစ်သည်။]

**အဗ္ဗောကိဏ္ဏာနိ**။ ။ [ န+ဝေါကိဏ္ဏာနိ။ ] ဝိသဘာဂပုဂ္ဂလေဟိ အသံသဋ္ဌာနိ၊ ဤသို့ ဋီကာ ဖွင့်သော်လည်း ထို အတိုင်း ဟုတ်မည် မထင်၊ ဘုရားရှင်၏ ဩဝါဒ ပါတိမောက်ပြသောခေတ်၌ ဝိသဘာဂပုဂ္ဂိုလ်အတွက် ယုံမှားဘွယ်မရှိသင့်၊ “တသောင်း ၂ သောင်း စသည် နေကြရာဝယ် အရောရော အနှောနှောနှင့် ကြပ်ကြပ် တည်းတည်းလား” ဟု မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် “အဗ္ဗောကိဏ္ဏာနိ” ဟု ဆိုဟန်တူသည်၊ ထို့ကြောင့် ဒီဃနိကာယ် အဋ္ဌကထာ ဤနေရာ၌ “ တေသဗ္ဗေပိ ဒွါဒသသဟဿဘိက္ခုဂဏနကာ မဟာဝိဟာရာ အဘယဂိရိ စိတ္တလပဗ္ဗတဝိဟာရသဒိသာစ အဟေသုံ”–ဟု မိန့်သည်။

( ကိံ )၊ မာရိသာ-အရှင်ဘုရားတို့၊ ကေံဝသံ – တနှစ်သည်၊ အတိက္ကန္တံ – လွန်ပါပြီ၊ ဒွေ ဝဿာနိ - တို့သည်၊ အတိက္ကန္တာနိ- နံပြီ ၊ပေ၊ ပဉ္စ ဝဿာနိ အတိက္ကန္တာနိ၊ ဧဒံ- ဤနှစ်သည်၊ ဆဋ္ဌံ - ဖြ ခြောက်သော၊ ဝဿံ - နှစ်ပါတည်း၊ အာဂါမိနိယာ-လာလတံ့ဖြစ်သော၊ ပုဏ္ဏမာသိယာ - လပြည့်နေ့၌၊ ဗုဒ္ဓဒဿနတ္ထံ - ဘုရားဖူးခြင်း အကျိုးငှါငှင်း၊ ဥပေါသထကရဏတ္ထဉ္စ - ဥပုသ်ပြုခြင်းအကျိုးငှါငှင်း၊ ဂန္တုံ-သွားရာပါ၏၊ ဝေါ - သွားချိန် တန်ပါပြီ၊ ဝေါ– အရှင်ဘုရားတို့၏၊ သန္နိပါတကာလော-စည်းဝေးရာအခါသည်၊ သမ္ပတ္တော– ရောက်ပါပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ အာရောစေန္တိ-နံ၏။

တတော- ထိုသို့လျှောက်ခြင်းကြောင့်၊ သာနုဘာဝါ - တန်ခိုးအာနုဘော် ရှိကုန်သော၊ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ အတ္တနော အတ္တနော-၏၊ အာနုဘာဝေန-ဖြင့်၊ ဂစ္ဆန္တိ-နံ၏၊ ဣတရေ- အနုဘော်ရှိသော ရဟန်းတို့မှ အခြားရဟန်းတို့သည်၊ (တန်ခိုး မရှိသော ရဟန်းတို့သည်၊)ဒေဝတာနုဘာဝေန- ဖြင့်၊ ဂစ္ဆန္တိ-ကုန်၏၊ ကထံ-အဘယ်သို့ သွားကြကုန်သနည်း၊ ကိရ-ချဲ့၊ တေဘိက္ခူ- တို့သည်၊ ပါစီန သမုဒ္ဒန္တေဝါ-အရှေ့ သမုဒ္ဒရာ၏အစွန်၌သော်ငှင်း၊ ပစ္ဆိမသမုဒ္ဒန္တေဝါ- ငှင်း၊ ပေ၊ဌိတာ - တည်ကုန်လျက်၊ ဂမိယဝတ္တံ - ခရီးသွားမည့် ရဟန်းတို့၏ဝတ်ကို၊ ပူရေတွာ- ၍၊ ပတ္တစီဝရံ–ကို၊ အာဒါယ-ယူ၍၊ ''ဂစ္ဆာမ- နံအံ့၊'' ဣတိ - သို့၊ စိတ္တံ- ကို၊ ဥပ္ပါဒေန္တိ-ဖြစ်စေကြကုန်၏၊ စိတ္တုပ္ပါဒါ - စိတ်ဖြစ်ခြင်းနှင့်၊ သဟ-တကွ၊ ဝါ - တပြိုင်နက်၊ [ သဟယောဂ၌ ကတ္တုရိစ၌ စဖြင့် ပဉ္စမီသက်၊ တချို့ အရာ၌''သဟာသဒ္ဒေ ကတေ မယုံ''ဟု သတ္တမီလည်း သက်၏၊ ] ဥပေါသထဂ္ဂံ- ဥပုသ်ယူရာ အရပ်သို့၊ ဝါ-ဥပုသ်ကျောင်းဆောင်သို့၊ ဂတာဝ–ရောက်ပြီးကုန် သည်သာ၊ ဟောန္တိ-ကုန်၏၊ တေ- ရဟန်းတို့သည်၊ ဝိပဿိံ–မူသော၊ သမ္မာ သမ္ဗုဒ္ဓံ–ကို၊ အဘိဝါဒေတွာ - ၍၊ နိသီဒန္တိ - နံ၏၊ ဘဂဝါပိ- လည်း၊ သန္နိ သိန္နာယ - အညီအညွတ် ထိုင်နေပြီးသော၊ ပရိသာယ- ၌၊ ဣမံ ဩဝါဒပါတိ မောက္ခံ- ကို၊ ဥဒ္ဒိသတိ- မူ၏၊(ကိံ )ခန္တီ၊ပေ၊ သာသနံတိ-ဟူ၍၊ ဥဒ္ဒိသတိ-၏၊

တိတိက္ခာ - အရာရာဝယ် , အနာခံခြင်း ဟူသော၊ ခန္တီ - အဓိဝါသနခန္တီ သည်၊ ပရမံ-မွန်မြတ်သော၊ တပေါ-အကျင့်တည်း၊ ဗုဒ္ဓါ-မြတ်ဘုရားတို့သည်၊

ခန္တီ။ ။ပရူပဝါဒ - သူတပါးတို့၏ စွပ်စွဲကဲ့ရဲ့ခြင်းလည်း ဖြစ်သော၊ ပရာပကာရံ ( ပရ + အပကာရံ ) သူတပါးတို့၏ ကျေးဇူးမဲ့ပြုခြင်းလည်း ဖြစ်သော၊ သီတုဏှာဒိ ဘေဒေစ–သီတဉဏှ ( အာဒိဖြင့် ဇိဃစ္ဆာ, ပိပါသ, ဍံသ, မကသ, သရီသပသမ္ဖဿ ကိုယူ၊ ) အစရှိသည်လည်း ဖြစ်သော၊ ဂုဏောပရောဓံ ( ဂုဏ + ဥပရောဓံ ) –အကောင်း ဂုဏ်ကို နှောက်ရှက်ဖျက်ဆီးမှုကို၊ ခမတိ သဟတိ–သည်းခံတတ်၏၊ အဓိဝါသေတိ–

နိဗ္ဗာနံ–နိဗ္ဗာန်ကို၊ ပရမံ–အမြတ်ဆုံးဟူ၍၊ ဝဒန္တိ - ဟောတော်မူကုန်၏၊ ပရူပဃာတီ– သူတပါးကို ညှဉ်းဆဲတတ်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ နဟိ ပဗ္ဗဇိတော–ပဗ္ဗဇိတအစစ် မဖြစ်နိုင်၊ ပရံ - သူတပါးကို၊ ဝိဟေဌယန္တော - ညှဉ်းဆဲတတ်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သမဏော–သမဏအစစ်သည်၊ န ဟောတိ-မဖြစ်နိုင်။

ပြန်၍မပြော ပြန်၍ မပြုဘဲ သူတပါးက ပြောသမျှ ပြုသမျှကို (အဓိ) မိမိ အပေါ်၌သာ+ဝါသေတိ– တည်နေစေ၏၊ ( မိမိသာ အနာခံ၏–ဟူလို၊) ဣတိ ခန္တိ–ခန္တိမည်၏။ [ခမုခမတ်+တိပစ္စည်း၊ ဆန်းကြောင့် ဒီဃပြု၍“ခန္တီ”ဟု ဖြစ်သည်။]

**ပရမံ တပေါ တိတိက္ခာ။** ။သီလာဒီနံ ပဋိပက္ခဓမ္မ-သီလစသည်တို့၏ ဆန့်ကျင်ဘက် လောဘ ဒေါသစသော တရားတို့ကို၊ (သဝိသေသံ-အထူးနှင့် တကွ၊) တပတိ–လောင်မြိုက် ( ပယ်ဖျောက် ဖျက်ဆီး) တတ်၏၊ ဣတိ တပေါ၊ ချွဲဉုးအံ့–ဆာလောင်မွတ်သိပ်ခြင်းကို သည်းမခံနိုင်လျှင်, သည်းမခံနိုင်၍ စိတ်လည်းဆင်းရဲလျှင် စားသောက်ချင်သော လောဘနှင့် လိုတာမရ၍ ဆင်းရဲသော ဒေါမနဿ ဒေါသဖြစ်၏၊ သူတပါးက စွပ်စွဲလျှင် ဒေါသဖြစ်၏၊ ဤသို့ လောဘဒေါသစသော တရားများ ဖြစ်လျှင် ပါဏာတိပါတစသော သီလပျက်မှုဖြစ်တော့၏၊ ထို သီလပျက်ကြောင်းတရားတို့ကို လောင်မြိုက်တတ်သောကြောင့် ခန္တီသည် အမြတ်ဆုံးအကျင့် ဖြစ်၏။ [ဥပနိဇ္ဈာယနခန္တိ–အာရုံ၌ ရှုဆင်ခြင်လျက် နှစ်သက်တတ်သော ဉာဏ်ကိုလည်း “ ခန္တိ ” ဟု ခေါ်ရကား ထို ဥပနိဇ္ဈာယနခန္တိကို တားမြစ်လို၍“တိတိက္ခာ”ဟု ဝိသေသန ကူ (မ) ရသည်။]

**နိဗ္ဗာနံ၊ပေ၊ဗုဒ္ဓါ။** ။ ဝါန ( တဏှာ )မှ ထွက်မြောက်သောကြောင့် သက္ကတလို “နိရ္ဝါဏ”ပါဠိလို“နိဗ္ဗာန”မည်သော တရားသည် သန္တ-ငြိမ်သက်,ပဏီတ-မွန်မြတ်, နိပုန-သိမ်မွေ့, သိဝ-ဧမြ, ခေမ - ဘေးမရှိ, ဟူသော အားလုံးသော အခြင်းအရာဖြင့် (ဘယ်တရားနှင့် ယှဉ် ၎ှဉ်) အသာဆုံး ဟု ဘုရားရှင်တို့ ဟောတော်မူကြသည်။

**နဟိ၊ပေ၊ပရူပဃာတီ။** ။ပြခဲ့သော အဓိဝါသနခန္တိ မရှိသောကြောင့် သူတပါးကို ညှဉ်းဆဲနှိပ်စက်သူသည် ပဗ္ဗဇိတ မမည်နိုင်၊ မှန်၏–“ပရံ+ဥပဃာတေတီတိ ပရူပဃာတီ” နှင့်အညီ သူတပါးကို နှိပ်စက်သူသည် “ ပဗ္ဗာဇေတီတိ – အကုသိုလ်တရားတို့ကို မိမိသန္တာန်မှ ထွက်သွားစေတတ်၏” ဟူသော ဝစနတ္ထနှင့် မကိုက်ညီရကား“ပဗ္ဗဇိတ” အစစ် မဖြစ်နိုင်ချေ၊ ဤ ဝစနတ္ထအလို “ပဗ္ဗဇိတ”၌ ကာရိတ်ပစ္စည်းကြေ၊ “န သမဏော၊ပေ၊ယန္တော” ဟူသော စတုတ္ထပါဒကား တဘ်ယပါဒ၏ ဝေဝုစ်ပရိယာယ် တည်း၊ သူတပါးကို ညှဉ်းဆဲသူသည် “သမေတိ – ဒေါသစသော ကိလေသာတို့ကို ငြိမ်းစေတတ် ”ဟူသော ဝစနတ္ထနှင့် မကိုက်ညီသောကြောင့် သမဏအစစ် မဖြစ်နိုင်–ဟူလို။ [နဟိ ပဗ္ဗဇိတောတိ ဧတဿ ဟိ နသမဏော ဟောတီတိ ဝေဝစနံ၊ပရူပဃာတီတိ ဧတဿ ပရံ ဝိဟေဌယန္တောတိ ဝေဝစနံ။]

**တနည်း။** ။ပရူပဃာတီ၌ ပရကို ဥတ္တမ (အမြတ်) ဟု အနက်ယူ၍“ပရူပဃာတီ-မြတ်သောသီလကို ဖျက်ဆီးသူ”ဟု အနက်ပေး။ [“ပုဂ္ဂလပရောပရညူ–ပုဂ္ဂိုလ်အမြတ်

သဗ္ဗပါပဿ - အလုံးစုံသော အကုသိုလ်ကို၊ အကရဏံ - မပြုမကျင့် ရှောင်ကြဉ်ခြင်းသည်၎င်း၊ ကုသလဿ - စတုဘူမကကုသိုလ်ကို၊ ဥပသမ္ပဒါ- ပြီးစေခြင်းသည်၎င်း၊ သစိတ္တပရိယောဒါပနံ - မိမိစိတ်ကို ဖြူစင်စေခြင်းသည် ၎င်း၊ ဧတံ- ဤသုံးမျိုးသည်၊ ဗုဒ္ဓါနံ- တို့၏၊ သာသနံ- အဆုံးအမတော်တည်း။

အနုပဝါဒေါ-နှုတ်ဖြင့် မစွပ်စွဲခြင်းသည်၎င်း၊ အနုပဃာတော- ကိုယ်စိတ် တို့ဖြင့် မညှဉ်းဆဲမနှိပ်စက်ခြင်းသည်၎င်း၊ ပါတိမောက္ခေ-ပါတိမောက္ခသီလ၌၊

အယုတ်ကိုသိသူ'' ဟူရာ၌ ပရပုဒ်ကဲ့သို့တည်း။ [ဤနည်းအလို ''ယောစ သမဏော- သည်ကား၊ ပရံ– အခြားသတ္တဝါကို၊ ဝိဟေဌယန္တော – ညှဉ်းဆဲလျက်၊ ပရူပဃာတီ– မိမိ၏ မြတ်သောသီလကို ဖျက်ဆီးတတ်၏၊ သော သမဏော-သည်၊ န ဟိ ပဗ္ဗဇိတော- ပဗ္ဗဇိတမဟုတ်''ဟု ပေး၊ ဤနည်း၌ န တလုံး အနက်မရှိ။ [''ပရူပဃာတီဖြင့် သူတပါး ကို သေအောင်သတ်သူ'' ယူ၍ '' ဝိဟေဌယန္တောဖြင့် အသေမသတ်ဘဲ ညှဉ်းဆဲရုံ ညှဉ်းဆဲသူ ''ယူသော နောက်တနည်းနှင့် ထို့နောက် အခြားတနည်းကိုလည်း ဋီကာ ပြသေး၏။]

**သဗ္ဗ၊ပေ၊ဿုပသမ္ပဒါ။** ။''သဗ္ဗပါပ–အလုံးစုံအကုသိုလ်''ဟူသည် အကုသိုလ် စိတ္တုပ္ပါဒ်တွင် ပါဝင်သော အပြစ်ရှိသော တရားအားလုံးတည်း၊ ထိုတရားအားလုံးကို မိမိသန္တာန်၌မဖြစ်အောင် ရှောင်ကြဉ်ခြင်းကို ''အကရဏံ'' ဟု ဆိုသည်၊ ''ကုသလ'' အရ ကာမ-ရူပ-အရူပ- လောကုတ္တရာဟူသော စတုဘူမကကုသိုလ်ကိုယူ၊ ထိုကုသိုလ်ကို မိမိသန္တာန်၌ ဖြစ်စေခြင်းသည် ဥပသမ္ပဒါမည်၏။

**သစိတ္တပရိယောဒါပနံ။** ။အဝပုဗ္ဗ, ဒါဓာတ်ဖြင့် '' ဩဒါန'' ဖြစ်၍ ကာရိတ် ဏာပေပစ္စည်းဖြင့်''ဩဒါပနံ''ဟု ဖြစ်၏၊ သက္ကတ၌ ''ပရ်ိယ'' ဟု ရှိသောကြောင့် ပရိ နောက်၌ သရရှိလျှင် အမြဲ (ယ်) လာ၊ ''ပရိယတ္တိ, ပရိယာပုဏာတိ, ပရိယောသာနံ'' စသည်ဘည်း၊ '' တံပန အရဟတ္တေန ဟောတိ – ထိုစိတ်ကို ဖြူစင်စေခြင်းသည် အရ ဟတ္တဖိုလ်ကျမှပြီးဆုံး၏''–ဋီကာ၊ ထို့ကြောင့် အစွမ်းကုန်ဖြူစင်သောအရဟတ္တဖိုလ်ကို ရည်ရွယ်၍ ''သစိတ္တပရိယောဒါပနံ''ဟု မိန့်သည်။

**အနုပဝါဒေါ အနုပဃာတော။** ။ဝါစာယ ကာယေန အနုပဝဒနံ–နှုတ်ဖြင့်တစုံ တယောက်ကိုမျှ မစွပ်စွဲခြင်းသည် အနုပဝါဒ မည်၏၊ အနုပဃာတောတိ ကာယေန မနသာစ ကဿစိ ဥပဃာတာကရဏံ–ကိုယ်ဖြင့်၎င်း စိတ်ဖြင့်၎င်း တစုံတယောက်ကိုမျှ မညှဉ်းဆဲ, ညှဉ်းဆဲဘို့ရန် မကြံခြင်းသည် အနုပဃာတမည်၏။

**ပါတိမောက္ခေ စ သံဝရော။** ။ပ အတိမောက္ခံ–အလွန်မြတ်သော၊ (တနည်း) ပါတိ သုဂတိဘယေဟိ–သုဂတိဘဝ၌ဖြစ်တတ်သော အတ္တာနုဝါဒ စသော ဘေးတို့မှ စောင့်ရှောက်တတ်, မောက္ခေတိ ဒုဂ္ဂတိဘယေဟိ–ဒုဂ္ဂတိဘေးတို့မှလွတ်စေတတ်သော ကြောင့် ပါတိမောက္ခမည်သော သီလကို (ဝိနည်းပိဋကင်လာသောသီလအားလုံးကို) ပါတိမောက္ခသီလ ဟုခေါ်၏၊ ထိုသီလကို မလွန်ကျူးခြင်းသည် ပါတိမောက္ခသီလ၌ စောင့်စည်းခြင်းမည်၏။

သံဝရောစ- စောင့်စည်းခြင်းသည်၎င်း၊ ဘတ္တသ္မိံ -ဆွမ်း၌၊ မတ္တညုတာစ—ခံယူ သုံးဆောင်ခြင်း၌ အတိုင်းအရှည် ပမာဏကို သိသူ၏ အဖြစ်သည်၎င်း၊ ပန္တံ- အစွန်အဖျားကျ၍ဆိတ်ငြိမ်သော၊ သယနာသနံစ-အိပ်ရာနေရာကျောင်းသည် ၎င်း၊ ဝါ - အိပ်ရာ နေရာကျောင်း၌ ကိန်းအောင်းခြင်းသည်၎င်း၊ အဓိစိတ္တေ- ဝိပဿနာ၏ အခြေခံဖြစ်သော လွန်ကဲသော သမာပတ်စိတ်၌၊ ဝါ- မဂ်ဖိုလ် စိတ်၌၊ အာယောဂေါစ-လွန်စွာကြိုးကုတ်, အားထုတ်ခြင်းသည်၎င်း၊ ဧတံ- ဤ ၅မျိုးသည်၊ ဗုဒ္ဓါနံ- ဘုရားရှင်တို့၏၊ သာသနံ- အဆုံးအမတော်တည်း။

ဧတေနေဝ ဥပါယေန - ဤနည်းဖြင့်ပင်၊ ဣတရေသမ္ပိ - ဝိပဿီဘုရားမှ အခြားလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ဗုဒ္ဓါနံ-တို့၏၊ ပါတိမောက္ခုဒ္ဒေသော-ဒ္ဒေသကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ဟိ–မှန်၊ သဗ္ဗဗုဒ္ဓါနံ-တို့၏၊ တိဿောဝ- ၃ ဂါထာသာလျှင် ဖြစ်ကုန်သော၊ဣမာဩဝါဒပါတိမောက္ခဂါထာယော-ဤ ဩဝါဒပါတိမောက် ဂါထာတို့သည်၊ ဟောန္တိ–နိ၏၊ တာ- ထိုဂါထာတို့သည်၊ ဒီဃာယုကဗုဒ္ဓါနံ-

**မတ္တညုတာစ ဘတ္တသ္မိံ**။ ။ဤပါဠိဖြင့် ဘောဇနမတ္တညုတာမည်သော စရဏ (အကျင့်) ကိုပြ၏၊ လှူသောအခါ မိမိအားမျှတလောက်ရုံခံယူခြင်းဟူသော ပဋိဂ္ဂဟဏ မတ္တညုတာ, သုံးဆောင်သောအခါ မိမိနှင့် သင့်တော်သောအစာကို စားခြင်းဟူသော ပရိဘောဂမတ္တညုတာဟု ၂မျိုးရှိ၏။

**ပန္တဉ္စ သယနာသနံ**။ ။ပန္တ–ပ+အန္တ၊ ပရိယန္တနှင့်အနက်တူပုဒ်၊ ဇနသံဗာဓန ဝိရဟိတံ-လူအများ၏ရှုပ်ထွေးထိပါးခြင်းမှကင်းသော၊ နိဇ္ဇနသမ္ဗာဓံ-လူအပေါင်းဖြင့် ကျဉ်းမြောင်းခြင်းမရှိသော၊ ဝိဝိတ္တံ သေနာသနံ-လူတို့မှ ဆိတ်ငြိမ်သောကျောင်းတည်း၊ ထိုကျောင်းမျိုး၌ နေခြင်း—ဟူလို။

**မှတ်ချက်**။ ။မတ္တညုတာစဘတ္တသ္မိံ, ပန္တဉ္စသယနာသနံဖြင့် ဆွမ်း, ကျောင်း ဟူသော ပစ္စည်း ၂ပါး၌ သန္တောသ (တင်းတိမ်ရောင့်ရဲမှု) အကျင့်ကိုပြ၏၊ ထို ၂ပါး၌ သန္တောသဖြစ်ပုံကို တိုက်ရိုက်ပြသဖြင့် သင်္ကန်း ဆေးဟူသောအခြား၂ပါး၌ သန္တောသ ဖြစ်ပုံကိုလည်း (သန္တောသလက္ခဏာချင်းတူသောကြောင့် ဥပလက္ခဏနည်း, လက္ခဏ ဟာရနေတ္တိ နည်းအားဖြင့်) ပြပြီးဖြစ်တော့သည်။ [ဒွီဟိယေဝ ပစ္စယေဟိစ စတုပစ္စယ သန္တောသော ဒီပိတောတိ ဝေဒိတဗ္ဗော,ပစ္စယသန္တောသသာမညေန ဣတရဒွယဿပိ လက္ခဏဟာရနယေန ဇောတိတဘာဝတော။]

**အဓိစိတ္တေစ အာယောဂေါ**။ ။ဝိပဿနာပါဒကံ အဋ္ဌသမာပတ္တိစိတ္တံ အဓိစိတ္တံ- (ဈာန်သမာပတ်ကိုအခြေခံ၍ ဝိပဿနာအားထုတ်ရာ၌) ဝိပဿနာ၏အခြေခံဖြစ်သော သမာပတ်ရှစ်ပါးစိတ်သည် အဓိစိတ္တ (လွန်ကဲသော စိတ်)၊ တတောပိစ မဂ္ဂဖလစိတ္တ မေဝ အဓိစိတ္တံ၊ တသ္မိံ ယထာဝုတ္တေ အဓိစိတ္တေ အာယောဂေါ၊ အနုယောဂေါတိ အတ္ထော၊ .... အနုပဝါဒန , အနုပဃာတန , ပါတိမောက္ခသံဝရ , ပန္တသေနာသန သေဝန, အဓိစိတ္တာနုယောဂ, ဤ၅ ပါးလည်း ဘုရားရှင်တို့၏ ဩဝါဒတော်တည်း။

ရှည်သော သက်တော်ရှိသော ဘုရားရှင်တို့၏၊ ယာဝ သာသနပရိယန္တာ - အဆုံးအမတော် ဆုံးသည့်တိုင်အောင်၊ [ဓရမာနကဗုဒ္ဓါနံ အနုသာသနပရိယန္တံ(ဆုံးမတော်မူခြင်း၏ အဆုံးကို)သန္ဓာယ ဝုတ္တံ၊ "ရဟန်းအသွင်ဟူသော လိင်္ဂသာသနာမှာ ထို့နောက် အကြာကြီးတည်သေးသောကြောင့် "သာသနပရိယန္တာ"အရ အဆုံးအမကို "သာသန"ဟု ယူရသည်-ဟူလို၊ ] ဥဒ္ဒေသံ- ရွတ်ပြအပ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်သို့၊ အာဂစ္ဆန္တိ-ရောက်ကုန်၏၊ အပ္ပါယုကဗုဒ္ဓါနံ- နည်းသော ( တိုသော ) သက်တော်ရှိသော ဘုရားရှင်တို့၏၊ ပဌမဗောဓိယံ ယေဝ-ပဌမဗောဓိ၌သာ၊ ဥဒ္ဒေသံ- သို့၊ အာဂစ္ဆန္တိ-န်၏၊ ပန-ဆက်၊ သိက္ခာပဒ ပညတ္တိကာလတော-သိက္ခာပုဒ် ပညတ်တော်မူပြီးရာ အခါမှ၊ ပဘုတိ-စ၍၊ အာဏာပါတိမောက္ခမေဝ-အာဏာပါတိမောက်ကိုသာ၊ ဥဒ္ဒိသီယတိ-ရွတ်ပြအပ်၏၊ တဥ္စ - ထို အာဏာပါတိမောက် ကိုလည်း၊ ဘိက္ခူဧဝ- ရဟန်းတို့သည်သာ၊ ဥဒ္ဒိသန္တိ- န်၏၊ ဗုဒ္ဓါ-တို့သည်၊ န ဥဒ္ဒိသန္တိ-ရွတ်ပြတော်မမူကြကုန်၊ တသ္မာ - ထို့ကြောင့်၊ အမှာကမ္ပိ - တို့၏လည်း၊ ဘဂဝါ - သည်၊ ပဌမဗောဓိယံ-မိ၌၊ ဝီသတိဝဿ မတ္တမေဝ- ဝါတော် ၂၀ မျှ ကာလပတ်လုံးသာ၊ ဣမံ ဩဝါဒပါတိမောက္ခံ-ကို၊ ဥဒ္ဒိသိ- တော်မူပြီ၊ အထ- ထိုမှနောင်၌၊ ဧကဒိဝသံ- ၌၊ ပုဗ္ဗာရာမေ- ပုဗ္ဗာရုံကျောင်းတိုက်တော်၌၊ မိဂါရမာတုပါသာဒေ-မိဂါရသေဋ္ဌေး၏အမိအရာ၌တည်သော ဝိသာခါ၏ပြာသာဒ်၌၊ နိသိန္နော-နေတော်မူလျက်၊ ဘိက္ခူ - တို့ကို၊ အာမန္တေသိ - သိစေတော်မူပြီ၊ ဝါ - မိန့်တော်မူပြီ၊ (ကိံ)၊ ဘိက္ခဝေ-တို့၊ အဟံ-သည်၊ ဒါနိ-၌၊ ဣတော-ဤနေ့မှ၊ ပရံ-၌၊ ဥပေါ

ပဌမဗောဓိယံ ယေဝ။ ။"ပဌမဗောဓိယံ ဝီသတိ ဝဿဗ္ဘန္တရေ"ဟု ရှေ့၌ ဆိုခဲ့သောကြောင့် ပဌမဗောဓိကို ဝါတော် ၂၀ အတွင်း ဟု မဟာဂဏ္ဌိပုဒ်၌ ဆို၏၊ သုတ္တန်ဋီကာတို့ကိုပြုသော အရှင်ဓမ္မပါလထေရ်ကား ၄၅ ဝါကို ၃ ပိုင်းပိုင်း၍ ပဌမ ၁၅ ဝါကို ပဌမဗောဓိ (သစ္စာ ၄ ပါးကို သိကြရာ ပဌမအပိုင်း ) ဟု ၎င်း, ဒုတိယ ၁၅ ဝါကို မဇ္ဈိမဗောဓိ, တတိယ ၁၅ ဝါကို ပစ္ဆိမဗောဓိ ဟု ၎င်း မိန့်တော်မူ၏၊ "ပဌမဗောဓိယံ ဝီသတိ ဝဿဗ္ဘန္တရေ" ဟူသောစကားကိုကား "ဝါ ၂၀ အတွင်း၌ ပဌမဗောဓိပါဝင်သော ကြောင့် ဆိုသည် "ဟု မိန့်သည်။

သိက္ခာပဒပညတ္တိကာလတော။ ။ဤစကားကား သိက္ခာပုဒ် မပညတ်ရသေးလျှင် အာဏာပါတိမောက်မရှိ၊ သိက္ခာပုဒ်ပညတ်မှ အာဏာပါတိမော် ရှိကြောင်းကို ပြသော စကားတည်း၊ "သိက္ခာပုဒ် ပညတ်" ဟူရာ၌လည်း သိက္ခာပုဒ်တချို့ ပညတ်ပြီးရုံမျှဖြင့် အာဏာပါတိမောက် ခွင့်ပြုတော်မမူသေး, ဝါတော် ၂၀ ကျော်၍ ဩဝါဒပါတိမောက် ဟောပြတော်မူမည့် ပရိသတ်တွင် ဒုဿီလပါဝင်နေမှ အာဏာပါတိမောက် ပြဘို့ရန် ခွင့်ပြုတော်မူသည်၊ အကျယ်ကို ပါတိမောက္ခုဋ္ဌပနက္ခန္ဓကမှာ ရှု။

သထံ- ကို၊ န ကရိဿာမိ-မပြုတော့အံ့၊ ပါတိမောက္ခံ - ဩဝါဒပါတိမောက်ကို၊ န ဥဒ္ဒိသိဿာမိ-ရွတ်ပြတော်မမူတော့အံ့၊ ဘိက္ခဝေ-တို့၊ ဒါနိ-၌၊ တုမှေဝ-တို့ချည်းသာ၊ ဣတော- ဤနေ့မှ၊ ပရံ - ၌၊ ဥပေါသထံ- ကို၊ ကရေယျာထ-န်လော၊ ပါတိမောက္ခံ- ကို၊ ဥဒ္ဒိသေယျာထ- န်လော၊ ဘိက္ခဝေ, ယံ- အကြင်အကြောင်းကြောင့်၊ ဝါ-အကြင်အရာကြောင့်၊ တထာဂတော- သည်၊ အပရိသုဒ္ဓါယ - မစင်ကြယ်သော၊ ပရိသာယ - ၌ ၊ပေ၊ ဥဒ္ဒိသေယျ - ၏၊ ဧတံ - ဤအကြောင်းသည်၊ အဋ္ဌာနံ - သင့်သောအကြောင်း မဟုတ်၊ အေသော - ဤအရာသည်၊ အနဝကာသော - သင့်သောအရာမဟုတ်၊ ဣတိ - သို့၊ (အာမန္တေသိ-ပြီ၊) တတော-ခါမှ၊ ပဋ္ဌာယ-၍၊ ဘိက္ခူ - တို့သည်၊ အာဏာပါတိမောက္ခံ- ကို၊ ဥဒ္ဒိသန္တိ- န်၏၊ ဣဒံ အာဏာပါတိမောက္ခံ - သည်၊ ဝါ- ကို၊ တေသံ- ထိုဘုရားရှင်တို့သည်၊ အနုဒ္ဒိဋ္ဌံ-အပ်သည်၊ အဟောသိ - ပြီ၊ တေန- ကြောင့်၊ အနုဒ္ဒိဋ္ဌံ ပါတိမောက္ခန္တိ- ကွဲ့ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ။

တေသံ ဗုဒ္ဓါနန္တိ - ကား၊ ဝိပဿီ အာဒီနံ - ဿီ အစရှိကုန်သော၊ တိဏ္ဏံ-၃ ဆူကုန်သော၊ တေသံဗုဒ္ဓါနံ -တို့၏၊ အနန္တရဓာနေနာတိ - ကား၊ ခန္ဓန္တရဓာနေန-ခန္ဓာတော်၏ကွယ်လွန်တော်မူခြင်းကြောင့်၊ပရိနိဗ္ဗာနေန-ပရိနိဗ္ဗာန်စံတော်မူခြင်းကြောင့်၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဗုဒ္ဓါနုဗုဒ္ဓါနန္တိ - ကား၊ တေသံဗုဒ္ဓါနံ- တို့၏၊အနုဗုဒ္ဓါ - အတုလိုက်၍ သစ္စာ ၄ ပါး တရားကို သိကုန်သော၊ ယေသမ္မုခသာဝကာ-အကြင်မျက်မှောက် သာဝကတို့သည်၊ (သန္တိ၊)တေသံ-ထိုမျက်မှောက် သာဝကတို့၏၊ ခန္ဓန္တရဓာနေနစ - ကြောင့်၎င်း၊ ယေ တေ ပစ္ဆိမာ သာဝကာတိ-ကား၊ တေသံ သမ္မုခသာဝကာနံ- တို့၏၊ သန္တိကေ-၌၊ ပဗ္ဗဇိတာ-ရှင်ရဟန်းပြုကြကုန်သော၊ ပစ္ဆိမာ- နောက်၌ဖြစ်ကုန်သော၊ ယေ သာဝကာ-တို့သည်၊ (သန္တိ၊) နာနာနာမာတိ-ကား၊ ဗုဒ္ဓရက္ခိတော—က္ခိတ၊ ဓမ္မရက္ခိတော - တ၊ ဣတိအာဒိ နာမဝသေန - ဤသို့ အစရှိသောအမည်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဝိဝိဓနာမာ - အထူးထူးသောအမည် ရှိကုန်သော၊ နာနာဂေါတ္တာတိ-ကား၊ ဂေါတမော - ဂေါတမ၊ မောဂ္ဂလ္လာနော - လ္လာန်၊ ဣတိ အာဒိ ဂေါတ္တဝသေန - ဤသို့ အစရှိသောအနွယ်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဝိဝိဓ ဂေါတ္တာ- အထူးထူးသော အနွယ်ရှိကုန်သော၊ နာနာဇစ္စာတိ- ကား၊ ခတ္တိ

သမ္မုခ၊ပေ၊ပဗ္ဗဇိတာတိ။ ။သဗ္ဗန္တိမာနံ — သာဝကအားလုံးတို့၏ နောက်ဆုံးဖြစ်ကုန်သော၊ သုဘဒ္ဒသဒိသာနံ — ( ဘုရား ပရိနိဗ္ဗာန်စံမည့် ညဉ့်မှ တရားနာရ၍ တရားထူးရသော ) သုဘဒ္ဒနှင့်တူကုန်သော၊ သမ္မုခသာဝကာနံ သန္တိကေ ပဗ္ဗဇိတေ သန္ဓာယ ဝဒတိ (သမ္မုခသာဝကာနံ သန္တိကေ ပဗ္ဗဇိတာဟူသောစကားကိုဆိုသည်) ။

ယော-ခတ္တိယ၊ ဗြာဟ္မဏော-ဏာ၊ ဣတိ အာဒိဇာတိဝသေန - သောဇာတ်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ နာနာဇစ္စာ - အထူးထူးသောဇာတ် ရှိကုန်သော၊ နာနာ ကုလာ ပဗ္ဗဇိတာတိ - ကား၊ ခတ္တိယကုလာဒိဝသေနေဝ - ခတ္တိယအမျိုး အစ ရှိသည်တို့၏ အစွမ်းဖြင့်ပင်၊[ခတ္တိယဟု ရှေ၌ ပါပြီးဖြစ်သောကြောင့် သန္နိဋ္ဌာန ဝေကိုထည့်သည်၊ အခြားအမျိုးမဟုတ်,ဆိုအပ်ပြီးသော ခတ္တိယစသောအမျိုး ပင်-ဟူလို၊] ဝိဝိဓကုလာ-အထူးထူးသောအမျိုးမှ၊ နိက္ခမ္မ-ထွက်၍၊ ပဗ္ဗဇိတာ- ရှင်ရဟန်းပြုကြကုန်သော၊ ဝါ - တနည်း၊ ဥစ္စနီစဥဠာရဟူဠာရဘောဂါဒိကုလ ဝသေန - မြင့်သောအမျိုး , နိမ့်သောအမျိုး , အလွန် မွန်မြတ်သောစည်းစိမ် ရှိသောအမျိုး အစရှိသောအမျိုး၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဝိဝိဓကုလာ-မှ၊ နိက္ခမ္မ- ၍၊ ပဗ္ဗဇိတာ-န်သော၊ (ယေတေ သာဝကာ၌စပ်၊)

တေ တံ ဗြဟ္မစရိယန္တိ-ကား၊ ပစ္ဆိမာ-န်သော၊တေ သာဝကာ-တို့သည်၊ [ဝိဟေဌေန္တာ-စသော အရတူပုဒ်များနှင့်တကွ "အန္တရဓာပေသုံ" ၌ စပ်၊] ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ကေနာမာ - တူသောအမည် ရှိကုန်သော၊ ကေဂေါတ္တာ, ကေဇာတိကာ, ကေကုလာ-တူသောအမျိုးမှ၊(နိက္ခမိတွာ-၍)ပဗ္ဗဇိတာ-န် သော၊(သာဝကာ-တို့သည်၊) အမှာကံ-တို့၏၊ သာသနံ - သာသနာတော် တည်း၊ တန္တိ-အစဉ်တော်တည်း၊ ပဝေဏီ-အဆက်တော်တည်း၊ ဣတိ-ဤသို့ ပြော၍၊ အတ္တနော-၏၊ ဘာရံ-တာဝန်ကို၊ ကတွာ-၍ ဗြဟ္မစရိယံ - သာသန ဗြဟ္မစရိယကို၊ ရက္ခန္တိ-န်၏၊ စိရံ-စွာ၊ ပရိယတ္တိဓမ္မံ- ပရိယတ်တရားတော်ကို၊ ပရိဟရန္တိ-ဆောင်ရွက်ကြကုန်၏၊ ဣမေစ-ဤသာဝကတို့သည်ကား၊ [နာနာ နာမ - စသည် ဖြစ်ကြသော ဤ သာဝကတို့သည်ကား- ဟူလို၊] တာဒိသာ- ထိုကဲ့သို့ ရှုအပ်သော ပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ န ဟောန္တိ-မဟုတ်ကြကုန်၊ [သာသနာ တော်ကို မိမိတို့တာဝန်ဟု ယူဆ၍ စောင့်ရှောက်သူများ မဟုတ်ကြ—ဟူလို၊ ] တသ္မာ - ကြောင့်၊ အညမညံ - အချင်းချင်း၊ ဝါ—တယောက်တယောက်ကို၊

ဥစ္စ၊ ပေ၊ ကုလဝသေန ဝါ။ ။[ဝါ—ကား "ခတ္တိယ ကုလာဒိဝသေနေဝ" ၏ ဝိကပ်တည်း။]ဥစ္စနီစကုလ, ဥဠာရဟူဠာရဘောဂါဒိကုလ—ဟု ၂မျိုးခွဲ၊ ခတ္တိယ ဗြာဟ္မဏ ဂဟပတိကုလကို ဥစ္စကုလ, ဝေဿ သုဒ္ဒ ကုလကို နီစကုလဟု ခွဲ၊ "ဥဠာရ ဥဠာရ" ဟု အနက်တူသဒ္ဒါ ၂ ခုဖြင့် ဥဠာရတရတမဥပဘောဂဝန္တ-အလွန့်အလွန်မြတ်သော အသုံး အဆောင် စည်းစိမ်ရှိသောအမျိုးဟု သိစေသည်။ [ဥဠာရာတိသယဇောတနတ္ထံ ဟိ ပုန ဥဠာရဂ္ဂဟဏံ, ဒုက္ခဒုက္ခန္တိ အာဒီသု ဝိယ။]

ဘောဂါဒိ ။ ။ အာဒိဖြင့် ဥဠာရသာမည စည်းစိမ်ရှိသော အမျိုး, အနုဠာရ— မမြတ်သော(အောက်တန်းကျသော) စည်းစိမ်ရှိသော အမျိုးကိုယူ။ [အာဒိ သဒ္ဒေန ဥဠာရ အနုဠာရာနံ ဂဟဏံ ဝေဒိတဗ္ဗံ။]

ဝိဟေဌေန္တာ-ညှဉ်းဆဲကုန်လျက်၊ ဝိလောမံ-ဆန့်ကျင်ဘက်ကို၊ ဂဏှန္တာ-န်လျက်၊ အသုကော ထေရော-ထိုမည်သော ထေရ်သည်၊ ဇာနိဿတိ- သိလတ့ံ၊ ဝါ-သိလိမ့်မည်ပေါ့၊ အသုကော ထေရော-သည်၊ ဇနိဿတိ-လတ့ံ၊ ဝါ-ပေါ့၊ [သူ+သိလိမ့်မပေါ့၊ ငါတို့နှင့်မဆိုင်ပါ-ဟူလို၊] ဣတိ-ဤသို့ပြော၍၊ သိထိလံ-ပေါ့ပေါ့လျော့လျော့ကို၊ ကရောန္တာ-ပြုကုန်လျက်၊ တံဗြဟ္မစရိယံ-ထိုသာသနမြဟ္မစရိယကို၊ ခိပ္ပမေဝ - သာလျှင်၊ အန္တရဓာပေသုံ - ကွယ်ပစေကြကုန်ပြီ၊ သင်္ဂဟံ- သင်္ဂါယနာသို့၊ အာရောပေတွာ-၍၊ နရက္ခိံသု- မစောင့်ရှောက်ကြကုန်။

သေယျထာပိတိ-ပိ ဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ တသ္မိံ-ထို အလျင်အမြန်ကွယ်ပခြင်းဟူသော အနက်အဓိပ္ပါယ်၏၊ ဩပမ္မနိဒဿနံ - ဥပမာကို ညွှန်ပြကြောင်း သဒ္ဒါတည်း၊ ဝိကိရတီတိ-ကား၊ ဝိက္ခိပတိ-အထူးထူး အပြားပြားပစ်လွှင့်၏၊ ဝါ- ကြဲဖြန့်၏၊ ဝိဓမတီတိ - ကား၊ ဌာနန္တရံ - အရပ်တပါးသို့၊ နေတိ-ဆောင်၏၊ ဝါ-ရောက်အောင် မှုတ်လွှင့်၏၊ ဝိဒ္ဓံသေတီတိ-ကား၊ ဌိတဋ္ဌာနတော-တည်ရာအရပ်မှ၊ အပနေတိ-ဖယ်ရှား၏၊ ဝါ-ဖယ်သောအားဖြင့်ဖျက်ဆီး၏၊ ယထာ တံ သုတ္တေန အသင်္ဂဟိတတ္တာတိ- ကား၊ သုတ္တေန- ချည်ဖြင့်၊ အသင်္ဂဟိတတ္တာ - မသိမ်းယူအပ် ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အဂန္ထိတတ္တာ-မသီကုံးအပ်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ အဗဒ္ဓတ္တာ-မဖွဲ့အပ်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝိကိရတိယထာ - ကြဲဖြန့်သကဲ့သို့၊ ဧဝံ- ဤအတူ၊ ဝိကိရတိ-၏၊ သုတ္တေန- ဖြင့်၊ အသင်္ဂဟိတာနိ-မသိမ်းယူအပ် (မသီကုံးအပ်)ကုန်သော ပန်းတို့ကို၊ ( ဝါတော- သည်၊ ) ဝိကိရတိယထာ-ကဲ့သို့၊ ဧဝံ- ဤအတူ၊ ဝိကိရတိ-၏၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဧဝမေဝ ခေါတိ - ခေါ ဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ ဩပမ္မသမ္ပဋိပါဒနံ-ဥပမာနကို ဥပမေယျနှင့် ကောင်းစွာပြီးစေကြောင်းသဒ္ဒါတည်း၊ ဝါ-ဥပမာနကို ဥပမေယျနှင့် နှိုးနှောတိုက်ဆိုင်ကြောင်း သဒ္ဒါတည်း၊ အန္တရဓာပေသုန္တိ - ကား၊ ဝဂ္ဂသင်္ဂဟ ပဏ္ဏာသသင်္ဂဟာဒိဟိ – ဝဂ္ဂသင်္ဂဟ ပဏ္ဏာသသင်္ဂဟ အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ [ထိုသင်္ဂဟတို့ကိုပဌမသံဂါယနာအခန်း၌

**ဝိကိရတိ စသည်။** ။တည်ရာပတ်လည်၌ ကြဲဖြန့်ခြင်းကို ဝိကိရတိ, တခြားနေရာရောက်သွားအောင် မှုတ်လွှင့်ခြင်းကို ဝိဓမတိ, နဂိုရ်နေရာ၌မရှိအောင် ဖယ်ရှားခြင်းကို ဝိဒ္ဓံသေတိဟု ဆိုသည်။ [ယခုစာတို့၌ "ဝိကိရိယန္တိ"ဟု ကမ္မဝါစ်ဗဟုဝုစ်ရှိသော်လည်း ပါဠိတော်၌"တာနိ ဝါတော ဝိကိရတိ"ဟုရှိရကား ထိုပါဠိတော်ကို အဖြောင့်ဖွင့်သော အဋ္ဌကထာ၌လည်း ဝါတောဟု ကတ္တားထည့်၍ "အသင်္ဂဟိတာနိ ဝိကိရတိ" ဟုသာရှိသင့်၏၊ သို့မှလည်း "ဧဝံ ဝိကိရတိ"ဟု ဥပမေယျဝါကျရှိပုံနှင့် လျော်သည်၊ "ဩပမ္မနိဒဿနံ"ဟု ဆိုသောကြောင့် ယထာ ဧဝံတို့၌လည်း အာကာရအနက်မပေးသင့်။]

ပြခဲ့ပြီ။] အသင်္ကျေနှာ-မသိမ်းယူကုန်ဘဲ၊ (ဝိနာသေသုံ၌စပ်၊) ယံယံ- အကြင် အကြင် တရားသည်၊ အဗ္ဗနော - အား၊ ရုစ္စတိ – နှစ်သက်၏၊ ( ရောစနတ္ထ သမ္ပဒါန်၊ ) တံဘဒေဝ- ထိုနှစ်သက်အပ်သော တရားကိုသာ၊ ဂဟေတွာ- ၍၊ ဒဿေသုံ-ပြကြကုန်ပြီ၊ သေသံ- ကြွင်းသောတရားကို၊ (မနှစ်သက်အပ်သော တရားကို – ဟူလို၊ ) ဝိနာသေသုံ - ဖျက်ဆီးကြကုန်ပြီ၊ အဒဿနံ - မမြင်အပ် သည်၏အဖြစ်သို့၊ (ဘာဝပ္ပဓာန၊) နယိံသု- နှံပြီ၊

အကိလာသုနော စ ၊ ပေ ၊ ဩဝဒိတုန္တိ - ကား၊ အပိစ-ထိုမှ တပါးကား၊ [" အပိစ "သည် ပါဠိတော်လာ အကိလာသုနောစ၌ စ၏ အဖွင့်တည်း၊] သာရိပုတ္တ-ဤ၊ တေဗုဒ္ဓါ- ထိုဝိပဿီ အစရှိသော ဘုရားရှင်တို့သည်၊ အတ္တ နော-၏၊ စေတသာ-တော်ဖြင့်၊ သာဝကာနံ-တို့၏၊ စေတော-ကို၊ ပရိစ္စ-ပိုင်း ခြားကာ သိ၍၊ [ပရိ- ပိုင်းခြားကာ+ဣစ္စ- သိ၍၊ ဣစ္စ၌ ဣဓာတ်, တွာပစ္စည်း၊ ဣ-ဂတိမှ၊ ယေ ဂတျတ္ထာ,တေ ဗုဒ္ဓျတ္ထာ။]ပရိစ္ဆိန္ဒိတွာ-ပိုင်းခြား၍ [မည်သည့် စိတ်ဖြစ်နေသည်– ဟု ပိုင်းပိုင်းခြားခြား သိ၍၊ ] ဩဝဒိတုံ - ငှါ၊ အကိလာ သုနော-ပင်ပန်းရှိသာဟု သဘောထားတော်မမူကြကုန်သည်၊ အဟေသုံ-နှံပြီ၊ ပရစိတ္တံ – သူတပါးတို့၏ စိတ်ကို၊ ဉတွာ - ၍၊ အနုသာသနိံ - ဆုံးမတော် မူခြင်းကို၊ ဘာရိယတော - ဝန်လေးသည်၏ အဖြစ်အားဖြင့်၊ န အဒ္ဒသံသု– ရှုတော်မမူကြကုန်၊ ဘူတပုဗ္ဗံ သာရိပုတ္တာတိ အာဒိ-တွအစရှိသောစကားကို၊ တေသံ- ထို ဝိပဿီ အစရှိသောဘုရားရှင်တို့၏၊ အကိလာသုဘာဝပ္ပကာသန တ္ထံ- အကိလာသု အဖြစ်ကို ထင်ရှားပြခြင်း အကျိုးငှါ၊ ဝုတ္တံ - အပ်ပြီ၊ ဘိံသန ကေတိ - ကား၊ ဘယာနကေ - ကြောက်စရာကောင်းသော၊ ဘယဇနနကေ- ကြောက်ခြင်းကို ဖြစ်စေတတ်သော၊(ငနသဏ္ဍေ၌ စပ်)၊

**ပရစိတ္တံ၊ ပေ၊ အဒ္ဒသံသု။** ။"ပရစိတ္တံ ဉတွာ"သည် စေတောပရိစ္စ၏ အနက်ဖွင့် (ဥဇုကတ္ထ) တည်း၊ အနုသာသနိံသည် ဩဝဒိတုံ၏ အနက်ဖွင့်၊ " န ဘာရိယတော အဒ္ဒသံသု"သည်"အကိလာသုနော အဟေသုံ"၏ အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း၊နဘာရိယတော ကို " န ပပဉ္စတော " ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ တချို့စာ၌ " အဒံသု "ဟု ရှိ၏, မကောင်း၊ သာဝကတို့၏စိတ်ကိုသိ၍ သွန်သင်ဘို့ရန်ကိုကား ထို ဘုရားရှင်တို့သည် ဝန်လေးဘွယ် ဟု ရှုတော်မမူကြ၊ ကိစ္စလုပ်ငန်းကို ရှုံရာရောက်သည် ဟု ရှုတော် မမူကြ–ဟူလို။

**ဘိံသနကေ။** ။"ဘိသိ"ဟု ဣကာရန္တဓာတ်ဖြစ်၍ နိဂ္ဂဟိတ်လာလျက် "ဘိံသ" ဟု သဒ္ဒနီတိ ဆို၏၊ သဏ္ဍတ၌ ဘီဓာတ်ကို ဘီသပြုသောကြောင့်"ဘီသ"ဟု ရှိစေလို၏၊ "ဘီသယတီတိ ဘီသနကော" ဟု သွဲ့ဆွ၌ ကပစ္စည်းသက်၊ ဘယာနကေ၌ကား "ဘီ ဓာတ်+ အာနကပစ္စည်း"ဟုဆို၍"ဝိဘေတိ တေသ္မာတိ ဘယာနကော"ဟု ထောမန်ဓိ ဝိဂြိုဟ်ပြု၏၊ "ဘယဇနနကေ"ကား ဘယာနကေ၏ အဓိပ္ပါယတ္ထ အဖွင့်တည်း။

ဇဝံ ဝိတက္ကေထာတိ-ကား၊ နေက္ခမ္မဝိတက္ကာဒယော-နေက္ခမ္မဝိတက် အစ ရှိကုန်သော၊ (အာဒိဖြင့် အဗျာပါဒ အဝိဟိံသတို့ကိုယူ၊) တယော-န်သော၊ ဝိတက္ကေ-တို့ကို၊ ဝိတက္ကေထ-ကြံကြကုန်လော၊ မာဧဝံ ဝိတက္ကယိတ္ထာတိ-ကား၊ ကာမဝိတက္ကာဒယော-န်သော၊(အာဒိဖြင့် ဗျာပါဒ ဝိဟိံသ ကိုယူ၊) တယော အကုသလဝိတက္ကေ,မာ ဝိတက္ကယိတ္ထ-န်လင့်၊ ဧဝံ မနသိကရောထာတိ- ကား၊ အနိစ္စံ-အနိစ္စ၊ ဒုက္ခံ-ဒုက္ခ၊ အနတ္တာ-အနတ္တ၊ အသုဘံ - အသုဘ၊ ဣတိ - သို့၊ မနသိ-၍၊ ကရောထ-န်လော၊ (တနည်း၊)မနသိကရောထ-နှလုံးသွင်းကြကုန် လော၊ မာဧဝံ မနသာကရိတ္ထာတိ-ကား၊ နိစ္စံ-စ္စ၊သုခံ အတ္တာ သုဘံ,ဣတိ-သို့၊ မနသိ- ၍၊ မာ အကရိတ္ထ– ကုန်လင့်၊ ဣဒံ ပဇဟထာတိ- ကား၊ အကုသလံ- သိုလ်ကို၊ပဇဟထ– ပယ်စွန့်ကြ ကုန်လော၊ ဣဒံ ဥပသမ္ပဇ္ဇ ဝိ ဟရထာတိ– ကား၊ကုသလံ- ကို၊ ဥပသမ္ပဇ္ဇ- ရ၍၊ ဝါ- ပြီးစေ၍၊ ပဋိလဘိတွာ- ရ၍၊ နိပ္ဖါ ဒေတွာ–ပြီးစေ၍၊ ဝိဟရထ-န်လော။

အနုပါဒါယ၊ ပေ၊ ဝိမုစ္စိံသူတိ - ကား၊ အဂ္ဂဟေတွာ - အာရုံပြုသော အားဖြင့် မယူမူ၍၊ ဝိမုစ္စိံသု-လွတ်အပ်ကုန်ပြီ၊ ဟိ– ချဲ့၊ တေသံ-ထို တထောင်

**ဧဝံ**။ ။ဧဝံသည် အာကာရအနက်ရှိ၏၊ယထာနုသိဋ္ဌာယ အနုသာသနိယာ-ဆုံးမ အပ်တိုင်းသော အနုသာသနီကို၊ ဝိမိဝသေန-(ဧဝံ ဝိတက္ကေထ စသည်ဖြင့်) စီရင်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်ရင်း၊ ပဋိသေဓနဝသေနစ– ( မာ ဧဝံ ဟု) တားမြစ်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်ရင်း၊ ပဝတ္တိတာကာရပရာမသနံ-ဖြစ်စေအပ်သောအခြင်းအရာကို သုံးသပ်ကြောင်းသဒ္ဒါ။

**အဂ္ဂဟေတွာ ဝိမုစ္စိံသု**။ ။ [ အနုပါဒါယ—န+ဥပ+အာဒါယ။ ] ဥပအနက် မရှိ—ဟု သိစေလို၍ “အဂ္ဂဟေတွာ”ဟု ဖွင့်၊ “ဝိမုစ္စိံသု”၌ကား ကတ္တုရုပ်ဟု ဆိုလျှင် ဒိဝါဒိဂိုဏ်းသွင်း၍ “လွတ်ကုန်ပြီ”ဟု အကမ္မကအနက်ဖြစ်၏၊ ကမ္မရုပ်ဆိုလျှင် ရုဓာဒိ ဂိုဏ်းသွင်း၍ “ လွတ်အပ်ကုန်ပြီ ” ဟု သကမ္မကအနက် ဖြစ်၏၊ ထိုတွင် ရုဓာဒိဂိုဏ်း ကမ္မရုပ် ဟု ပြလို၍ “တေသံ ဟိ စိတ္တာနိ ယေဟိအာသဝေဟိ ဝိမုစ္စိံသု ”ဟု မိန့်သည်။

**သာရတ္ထ**။ ။အာသဝေဟီတိ ကတ္တုအတ္ထေ ကရဏနိဒ္ဒေသော၊ စိတ္တာနီတိ ပစ္စတ္တ ဗဟုဝစနံ၊ ဝိမုစ္စိံသူတိ ကမ္မသာဓနံ၊ တသ္မာ အာသဝေဟိ ကတ္တုဘူတေဟိ အနုပါဒါယ (အာရမဏကရဏဝသေန အဂ္ဂဟေတွာ) စိတ္တာနိ ဝိမောစိတာနီတိ ဧဝမေတ္ထ အတ္ထော ဂဟေတဗ္ဗောတိ အာဟ—တေသံ ဟိ စိတ္တာနီတိ အာဒိ၊ ဝိမတိလည်း ဤအတိုင်းပင်။

**မှတ်ချက်**။ ။ဥပလက္ခဏမတ္တဉ္စေတံ၊ တဒေကဋ္ဌတာယ ဟိ သဗ္ဗေဟိပိ ကိလေသေ ဟိ သဗ္ဗေဟိပိ ပါပဓမ္မေဟိ စိတ္တံ ဝိမုစ္စတိယေဝ၊ ( သီ-ဋီသစ်- အရှင်အာနန္ဒာ ရဟန္တာ ဖြစ်ခဏ်း)၊ အာသဝေါတရားတည်းဟူသောအစိတ်ကို မှတ်၍ဆိုသဖြင့် အလုံးစုံသော ကိလေသာအပေါင်းကိုလည်း ရသောကြောင့် အာသဝေဟိ၌ ဥပလက္ခဏနည်း, ဧကေ ဒေသူပစာ—ဟု မှတ်။ [ သာမညဖလသုတ်၌ကား “ အာသဝဝိမုတ္တသီသေနေဝ သဗ္ဗ ကိလေသဝိမုတ္တိ ဝုတ္တာ”ဟု ဖွင့်ပြန်သောကြောင့် ပဓာနနည်းလည်း ရသည်။]

သော ရဟန်းတို့၏၊ စိတ္တာနိ-တို့ကို၊ ယေဟိ အာသဝေဟိ-တို့သည်၊ ဝိမုစ္စိံသု-နှ်ပြီ၊ တေ - ထို အာသဝေါတို့သည်၊ တာနိ-ထို စိတ်တို့ကို၊ ဂဟေတွာ-အာရုံပြုသောအားဖြင့်ယူပြီး၍၊ ဝါ-ယူပြီးမှ၊ န ဝိမုစ္စိံသု-လွတ်စေကုန်သည်မဟုတ်၊ ပန - အနွယကား၊ အနုပ္ပါဒနိရောဓေန - နောင်တဖန် ဖြစ်ခြင်း မရှိသော ချုပ်ခြင်းဖြင့်၊ နိရုဇ္ဈမာနာ - ချုပ်ကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ အဂ္ဂဟေတွာ - အာရုံပြုသောအားဖြင့် မယူမူ၍၊ ဝိမုစ္စိံသု- လွတ်စေကုန်ပြီ၊ တေန- ကြောင့်၊ အနုပါဒါယ၊ပေ၊ဝိမုစ္စိံသူတိ- သုဟူ၍၊ ဝုတ္တံ - မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ သဗ္ဗေပိ-န်သော၊ တေ – ထို ရဟန်းတို့သည်၊ အရဟတ္တံ – သို့၊ ပတ္တာ - ၍၊ သူရိယရသ္မိသမ္ဖုဋ္ဌ-နေရောင်ခြည်သည် ကောင်းစွာထိအပ်သော၊ ပဒုမဝနံဣဝ-ပဒုမာကြာတောကဲ့သို့၊ ဝိကသိတစိတ္တာ-ပွင့်လင်းသော စိတ်ရှိကုန်သည်၊ အဟေသုံ-နှ်ပြီ။

တေသံ ဟိ၊ပေ၊ ဝိမုစ္စိံသု။ ။ယေဟိ အာသဝေဟီတိ ထွောပိ ကတ္တုအတ္ထေဝေ ကရဏနိဒ္ဒေသော၊ ဝိမုစ္စိံသူတိ ကမ္မသာဓနံ၊ [ ဤ အဖွင့်အတိုင်း နိဿယ ပေးထားသည်။ ] န တေ တာနိ ဂဟေတွာ ဝိမုစ္စိံသူတိ တေ အာသဝါ တာနိ စိတ္တာနိ အာရမ္မဏဝသေန န ဂဟေတွာ ဝိမုစ္စိံသု မောစေသုံ၊ ဤဝါကျ၌ကား "တေ"ဟု ပဌမာ ကတ္တားရှိသောကြောင့် တာနိကို အဝုတ္တကံ, ဝိမုစ္စိံသုကို ကတ္တုသာဓနဟု ဖွင့်ရသည်၊ "မောစေသုံ ( လွတ်စေကုန်ပြီ ) " ဟု ဖွင့်သောကြောင့် ဝိမုစ္စိံသု၌ ကာရိတ်ပစ္စည်း ကြေသည် ဟု ဆိုလိုဟန်တူသည်၊ သို့မဟုတ်"ဝိမုဉ္စိံသု-လွှတ်ကုန်ပြီ"ဟူသော သကမ္မက ကြိယာကို"မောစေသုံ"ဟု အကမ္မကကြိယာနှောင် ကာရိတ်သွင်း၍ ဖွင့်ဟန်တူသည်၊ ဤအတိုင်းမှန်လျှင် ဤဝါကျနှင့် နောက်ဝါကျ၌ "ဝိမုဉ္စိံသု" ဟု ရှိရလိမ့်မည်။

မှတ်ချက်။ ။"အာသဝေဟိ စိတ္တာနိ ဝိမုစ္စိံသု"၌ အာသဝေဟိကိုကတ္တားလုပ်၍ ကံဟောဝါကျအနေအားဖြင့် ဋီကာ ၂စောင်လုံးဖွင့်ရခြင်းမှာလည်း "န တေ"စသော ၂ဝါကျ၌ အာသဝေါတရားတို့ကို "တေ"ဟု ကတ္တားအဖြစ်ဖြင့် အဋ္ဌကထာ ဆိုထားသောကြောင့် ဖြစ်သည်၊ အဋ္ဌကထာ ဆရာက အာသဝတို့ကို ကတ္တား အနေအားဖြင့် ပြရခြင်းမှာလည်း " အနုပါဒါယ–စိတ်တို့ကို အာရုံပြုသောအားဖြင့် အာသဝေါတို့က မယူမူ၍" ဟူသော ဝိသေသန ကြိယာကြောင့် ဖြစ်သည်၊ ထို့ကြောင့် ဤ အဋ္ဌကထာ အတိုင်းဆိုလျှင် ဋီကာတို့ဖွင့်ပုံမှ တပါး ကြံစရာ မရှိတော့ပြီ။

သို့ရာဝယ် " ကာမာသဝါပိ စိတ္တံ ဝိမုစ္စတိ " စသည်ဖြင့် ပါဠိတော်၌ပင် အာသဝတို့ကို ဝိမုစ္စနကြိယာ၏အပါဒါန် , စိတ္တံကို ကတ္တားအဖြစ်ဖြင့် တိုက်ရိုက်ပြသောကြောင့် အဋ္ဌကထာဖွင့်ပုံကိုပင် အားရပုံမရသော ဝိမတိဋီကာဆရာသည် "အထဝါ-အာသဝေဟီတိ နိဿက္ကဝစနံ ( အပါဒါန် )၊ ဝိမုစ္စိံသူတိ ကတ္တုသာဓနံ၊ တသ္မာ ကဉ္စိ သင်္ခတဓမ္မံ တဏှာဒိဋ္ဌိဝသေန အနုပါဒိယိတွာ ( တစုံတခုသော သင်္ခတကို တဏှာဒိဋ္ဌိအစွမ်းဖြင့် ငါ့ဉစ္စာ အတ္တဟု မယူမူ၍ ) စိတ္တာနိ ဝိမုတ္တဝန္တာနိ အဟေသုံတိ အတ္ထော ဂဟေတဗ္ဗော" ဟု အဋ္ဌကထာနည်းမှ တမျိုးဖွင့်ပြလေသည်၊"ဝိမုတ္တဝန္တော"ကား ဝိမုစ္စိံသု၏ ကတ္တား ဟောဖြစ်ကြောင်း သိသာအောင် ဖွင့်ခြင်းတည်း။

တတြသုဒံ၊ပေ၊ ဟောတီတိ(ဧတ္ထ) - ဟောတိဟူသော ဤပါဠိ၌၊ တတြာတိ-တတြဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ ပုရိမဝစနာပေက္ခံ- ရှေ့စကားကိုငဲ့သောသဒ္ဒါ တည်း၊ [အညတရသ္မိံ ဘီသနကေ ဝနသဏ္ဍေတိ ဝုတ္တဝစနာပေက္ခံ၊] သုဒန္တိ-သုဒံသဒ္ဒါသည်၊ ပဒပူရဏမတ္တေ- ပုဒ်၏ပြည့်ကြောင်းမျှ၌၊ ( ပဝတ္တော ) နိပါ တော-တည်း၊သာရိပုတ္တာတိ-သဒ္ဒါသည်၊အာလပနံ-ရှေးရှုခေါ်ဝေါ်ကြောင်း သဒ္ဒါတည်း၊ ပန-ဆက် (တနည်း)ပန-ထင်ရှားအောင် ပြဦးအံ့၊(တပ္ပါကဋီကရဏ။) အယံ - ဤဆိုအပ်လတ္တံကား၊ ဧတ္ထ- ဤတတြသုဒံသာရိပုတ္တ အစရှိ သောဝါကျ၌၊ အတ္ထယောဇနာ - အနက်ကို ယှဉ်စေခြင်းတည်း၊ တတြာတိ-ကား၊ အညတရသ္မိံဘီသနကေ ဝနသဏ္ဍေတိ - ဏ္ဍေဟူသော၊ ယံ - အကြင် စကားကို၊ ဝုတ္တံ- မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ တတြ- ထို အညတရသ္မိံ ဘီသနကေ ဝန သဏ္ဍေဟူသောစကားရပ်၌၊ ယောသောဝနသဏ္ဍော–အကြင် တောအုပ်ကို၊ ဘီသနကောတိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တော- ပြီ၊ ဘီသနကဿ - ကြောက်စေတတ်သော၊ တဿဝနသဏ္ဍဿ-၏၊ ဘီသနကတသ္မိံ- ကြောက်စေမှုကိုပြုခြင်း၌၊ ဟောတိ၊ ဘီသနကြိယာယ- ကြောက်စေမှုကို ပြုခြင်း၌၊ ဟောတိ - ၏၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်။[ကရဏံ-ပြုခြင်း၊ ကတံ-ခြင်း၊ ဘီသနဿ-ကို၊ ကတံ,ဘီသနကတံ၊ ဤသို့ သိစေလို၍‘‘ဘီသနကြိယာယ’’ဟု ဖွင့်သည်၊ ] ကိံ - အဘယ်သည်၊ ဟောတိ-သနည်း၊ ဣဒံ-ဤပြောစမှတ် စကားရပ်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ [ ပါဠိတော်လာ ဟောတိ ကြိယာအတွက် ဣဒံကတ္တား ထည့်သည်။ ] ( ကိံ - အဘယ်သို့ဖြစ် သနည်း၊ ) ယောကောစိ - အကြင် အမှတ်မရှိ တစုံတယောက်သော၊ အဝီတ ရာဂေါ-မကင်းသောရာဂရှိသောပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ တံဝနသဏ္ဍံ–ထိုတောအုပ်သို့၊ ပဝိသတိ-ဝင်အံ့၊(တဿ- ထို အဝီတရာဂပုဂ္ဂိုလ်၏၊) ယေဘုယျေန- အားဖြင့်၊ လောမာနိ-အမွေးတို့သည်၊ ဟံသန္တိ- ရှင်ကုန်၏၊ ဣတိ-ဤသို့ဖြစ်၏။

အထဝါ – ထို့ပြင် တနည်းကား၊ တတြာတိ – တတြသဒ္ဒါသည်၊ သာမိ အတ္ထေ-၌၊ ဘုမ္မံ– သတ္တမီဝိဘတ်ရှိသော သဒ္ဒါတည်း၊ သု ဣတိ-သုသဒ္ဒါသည်၊ နိပါတော-တည်း၊ (ကတ္တဝိယ– အဘယ်၌ကဲ့သို့နည်း၊) ကိံ သု နာမ တေ၊ပေ၊ မြာဟ္မဏာတိ အာဒီသုဝိယ- ကိံသု၊ပေ၊မြာဟ္မဏာ အစရှိသော ပါဠိရပ်တို့၌

**အထဝါ** ။ ။ ဤ အထဝါတက်သော ဝိကပ်ဝယ် တတြ၌ ဤပစ္စည်း၏ သာမိ အနက်၌ သက်ခြင်း, ‘‘သုဒံ’’ ဟု နိပါတ်တပုဒ်ထည်း မကြံဘဲ ‘‘သု’’ နိပါတ်နှင့်‘‘ဣဒံ’’ နာမ်ပုဒ် ၂ ခုကို သန္ဓိစပ်ထားသည်ဟု ကြံခြင်း, ‘‘ ဘီသနကတ္တသ္မိံ ’’ဟု ဘာဝတ္ထ- တ္တ ပစ္စည်းနှင့် တ တလုံးအကြေကြံ၍ (သို့မဟုတ် တာပစ္စည်းကြံ၍) သတ္တမီဝိဘတ်ကိုလည်း နိမိတ်အနက်၌ သက်စေခြင်းသည် ရှေ့ဝိကပ်မှ တမျိုးတဖုံ ထူးခြားပုံတည်း။

ကဲ့သို့တည်း၊ ဣဒန္တိ-သဒ္ဒါသည်၊ ဇႏမ္ပြေတမတ္တံ-အလိုရှိအပ်သောအနက်ကို၊ ပစ္စက္ခံဝိယ – မျက်မှောက်ကိုကဲ့သို့၊ ( ဣမသဒ္ဒါ အနီးဟောဖြစ်သောကြောင့် ပစ္စက္ခံဝိယဟု ဆိုသည်၊ ) ကတွာ – ၍၊ ဒဿနဝစနံ - ပြႏကြောင်းသဒ္ဒါတည်း၊ သု+ဣဒန္တိ–သု+ဣဒံဟူသော ပုဒ် ၂ ခုသည်၊ သုဒံ-သုဒံဟု ဖြစ်၏၊ သန္ဓိဝသေန-သန္ဓိစပ်ခြင်း၏အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဣကာရလောပေါ-ဣ အက္ခရာကျေခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ (ကတ္တုဝိယ- နည်း၊) စက္ခုန္ဒြိယံ– စက္ခုန္ဒြေ၊ ဣတ္ထိန္ဒြိယံ-န္ဒြေ၊ အနညာတညဿာမီတိန္ဒြိယံ-န္ဒြေ၊ ဣဓ-၌လောက၌၊ ဝိတ္တံ–ဥစ္စာကား၊ ကိံ-အဘယ်နည်း၊ ဣတိ အာဒီသုဝိယ - သို့တည်း၊ ပန - ဆက်၊ ( တနည်း ) ပန-ထင်ရှားအောင် ပြဥုႏအံ့၊ အယံ - ဤ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ဧတ္ထ - ၌ တကြသုဒံ အစရှိသောပါဌ်၌၊အတ္ထယောဇနာ-တည်း၊သာရိပုတ္တ-ပုတြာ၊ဘီသနကဿ-ကြောက်စေတတ်သော၊ တဿဝနသဏ္ဍဿ- ၏၊ ဘီသနကတသ္မိံ - ကြောံစေတတ်သည့်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဣဒံ-၌ ပြောစမှတ်စကားရပ်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ (ဣတိ-၌ကား အတ္ထယောဇနာတည်း၊)

ဘီသနကတသ္မိန္တိ-ကား၊ ဘီသနကဘာဝေ-ဖြစ်ကြောင့်၊ ဣတိအတ္ထော-နက်၊ ဧကေဿ–တလုံးသော၊ တကာရဿ- ၏၊ လောပေါ- ကို၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော-၏၊ ဝါ-တနည်း၊ ဘီသနကတ္တသ္မိန္တိ ယေဝ-သို့ ဟူ၍ပင်၊ ပါဌော-ပါဌ်ရှိ၏၊ [ “တ–တလုံးမကြေဘဲလည်း ပါဌ်ရှိ၏”ဟုမှတ်ပြသည်။]ဝါ-နည်း၊ဘီသနကတာယာတိ-တာယဟူ၍၊ ဝတ္တဗ္ဗေ-တာပစ္စည်းဖြင့် ဆိုထိုက်လျက်၊ လိင်္ဂဝိပလ္လာသော-ဣတ္ထိလိန်၏ နပုံလိန်ဖေါက်ပြန်ခြင်းကို၊ ကတော - ပြုအပ်ပြီ၊ [ ဤနည်း၌ တ တလုံးချေဘွယ် မလို။]စ-ဆက်၊ တေံ–ဤဘီသနကတသ္မိံ ဟူသော သဒ္ဒါသည် နိမိတ္တတ္ထေ – နိမိတ်အနက်၌၊ ဘုမ္မ၁စနံ– သတ္တမီဝိဘတ်ရှိသော သဒ္ဒါတည်း၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ဧဝံ–သို့၊ သမ္ဗန္ဓော- ပုဒ်တို့၏စပ်ခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော - ၏၊ ဘီသနကဘာဝေ-ကြောံစေတတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဣဒံ- ၌ပြောစမှတ်စကားရပ်သည်၊ ဟောတိ – ၏၊ ( ကိံ )၊ ဘီသနကဘာဝနိမိတ္တံ , ဘီသနကဘာဝဟေတု , ဘီသနကဘာဝပစ္စယာ - ကြောက် စေတတ်သည်၏ အဖြစ်ဟူသောအကြောင်းကြောင့်၊[နိမိတ္တံနှင့်ဟေတုတို့၌ ပဌမာဝိဘတ်နိမိတ်အနက်

**ဘီသနက တာဝေတျာဒိ။** ။“ဘာဝေ ”သည့် တ္တ (သို့မဟုတ်–တာ) ပစ္စည်း၏ အနက်ဖွင့်တည်း၊ နိမိတ္တံ, ဟေတု,ပစ္စယာတို့ကား သို့ံဝိဘတ်၏ နိမိတ်အနက်ဖွင့်တည်း၊ နိမိတ္တံဖြင့် နိမိတ်အနက်ကိုပြ၍ ထုံ “နိမိတ္တ” အတွက်“အမှတ်အသား” ဟူသောအနက်ကို ယူမည်စိုး၍ “ဟေတု” ဟု ၎င်း, ထို ဟေတုအတွက် ဟိတ်စသောအနက်ကို ယူမည်စိုး၍ “ပစ္စယာ”ဟု ၎င်း ပရိယာယ်ဖွင့်သည်။

၌သက်ထားသည်၊]ဣဒံ-ဤပြောစမှတ်စကားရပ်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ (ဣတိ-သို့၊ သမ္ဗန္ဓော ဝေဒိတဗ္ဗော၊) ယောကောစိ၊ပေ၊ဟံသန္တိ-ကား၊ ဗဟုတရာနိ- များစွာကုန်သော၊ လောမာနိ- အမွေးတို့သည်၊ ဟံသန္တိ- ရှင်ကုန်၏၊ ဥဒ္ဓံမုခါနိ-အထက်၌အဖျားရှိကုန်သည်၊သူစိသဒိသာနိ-အပ်နှင့်တူကုန်သည်ဖြင်း၊ ကဏ္ဍကသဒိသာနိစ- ဆူးနှင့်တူကုန်သည်ဖြင်း၊ ဟုတွာ-၍၊ တိဋ္ဌန္တိ-တည်ကုန်၏၊ အပ္ပါနိ-အနည်းငယ်ကုန်သော၊ ( လောမာနိ- တို့သည်၊) နဟံသန္တိ - နံ၊ ဝါ- တနည်း၊ ဗဟုတရာနံ- နံသော၊ သတ္တာနံ-တို့၏၊ (လောမာနိ) ဟံသန္တိ-နံ၏၊ အပ္ပကာနံ-နံသော၊ အတိသူရပုရိသာနံ-အလွန်ရဲရင့်သော ယောက်ျားတို့၏၊ (လောမာနိ) နဟံသန္တိ- နံ။

ဣဒါနိ- ၌၊ အယံခေါ သာရိပုတ္တ ဟောတူတိ အာဒိ- တု အစရှိသော ဝါကျသည်၊ နိဂမနံ - နိဂုံး ဝါကျတည်း၊ စ - ဆက်၊ တွေ-ဤ ဘဂဝါ၊စ သာရိပုတ္တ ဝိပဿီ အစရှိသော ဝါကျ၌၊ ယံ - အကြင်ပုဒ်ကို၊ အန္တရန္တရာ - အကြားအကြား၌၊ န ဝုတ္တံ-မဖွင့်ဆိုအပ်၊ တံ - ပုဒ်သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထမေဝ-နက်ရှိသည်သာ၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ပါဠိက္ကမေနေဝ-ပါဠိအစဉ်အားဖြင့် သာလျှင်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ ပန-ဆက်၊ န စိရဋ္ဌိတိကံ အဟောသီတိ - သိ ဟူသော၊ ယံ- အကြင်စကားကို၊ ဝုတ္တံ- အပ်ပြီ၊ တံ- စကားကို၊ ပုရိသယုဂဝသေန-ယောက်ျားတို့၏ ဖြစ်ရာကာလ၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဝုတ္တံ - မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ ဣတိ- ဤသို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ — ၏၊ ဟိ — ချဲ့၊ ဝဿဂဏနာယ — နှစ်အရေ အတွက် အားဖြင့်၊ ဝိပဿိဿ - သော၊ ဘဂဝတော - ၏၊ အသီတိ ဝဿသဟဿာနိ - အနှစ်

**ယေဘုယျေန လောမာနိ**။ ။ဤနည်း၌"ယေဘုယျေန"ကို လောမနှင့် အဓိပ္ပါယ် စပ်ရ၏၊ " များသောအားဖြင့် အမွေးတို့သည် ( များစွာကုန်သောအမွေးတို့သည် ) ရှင်ကုန်၏ " ဟူလို၊ " အမွေးတို့ + ရှင် " ဟူသည် အမွေးတွေ အပ်ကလေးများလို ဆူးကလေးများလို ထောင်လာခြင်းတည်း၊ ထိုသို့ ထောင်လာသောအခါ ကြက်သတ္တာတို့၏ အမွေးရင်းက အသီးကလေးများနှင့် တူသောကြောင့် "ကြက်သီးမွေးညှင်းထ" ဟု ခေါ်ကြသည်။

**ဗဟုတရာနံဝါ**။ ။ ဤနည်းကား "ယေဘုယျေန" ကို လောမဝန္တ ( ကြက်သီးမွေးညှင်းထသော) ပုဂ္ဂိုလ်နှင့်စပ်၍ အဓိပ္ပါယ်ယူရသောနည်းတည်း၊ [ယေဘုယျဂ္ဂဟဏံ လောမဝန္တဝသေနာပိ ယောဇေတဗ္ဗံ၊န လောမဝသေနေဝါတိ အာဟ-ဗဟုတရာနံ ဝါတိ အာဒိ။]"များစွာသောသတ္တာတို့၏အမွေးတို့သည် ရှင်ကုန်၏"ဟုဆိုလိုခြင်း ဖြစ်လို၍ "ဗဟုတရာနံဝါ သတ္တာနံ"ဟု မိန့်သည်၊ ဗဟုတရာနံသည် ယေဘုယျေနအတွက် အဓိပ္ပါယ်အနက်သာ၊ မူလအနက်မှာ"များသောအားဖြင့်"ဟူသော ဝိသေသနအနက်သာတည်း။ [ဝိမတိ၌ကား "ဗဟုတရာနံသည် ယေဘုယျေန၏အနက်"ဟု ဆို၏။]

ရှစ်သောင်းတို့သည်၊ အာယု - အသက်တော်တည်း၊ ဝါ-သက်တော် ရှည်ရာ ကာလတည်း၊ အဿ - ထို ဝိပဿီ မြတ်စွာဘုရား၏၊ သမ္မုခသာဝကာနမ္ပိ- မျက်မှောက် သာဝကတို့၏လည်း၊ တတ္တကမေဝ- ထိုမျှလောက် အတိုင်း အရှည် ရှိသည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊ ( အာယု - အသက်တည်း၊ ဝါ-အသက် ရှည်ရာ ကာလတည်း၊ ) ဧဝံ- ဤသို့လျှင်၊ ဝါ- ဤနည်းအားဖြင့်၊ အဿ-ထိုမြတ်စွာ ဘုရား၏၊ သဗ္ဗပစ္ဆိမကော-အလုံးစုံသော သာဝကတို့၏ နောက်၌ဖြစ်သော၊ ယွာယံသာဝကော- သည်၊ ( အတ္ထိ၊) [ငါတို့ဘုရား·လက်ထက်၌ အရှင်သုဘဒ္ဒ ကဲ့သို့ နောက်ဆုံးရဟန်းပြုသူကို " သဗ္ဗပစ္ဆိမက " ဟု ခေါ်သည်၊ ] တေန- ထို နောက်ဆုံးသာဝကနှင့်၊ သဟ-ကွ၊ ယဒေ့တွာ-ပေါင်းစပ်၍၊ [ယဋ ဓာတ်သာ သဃ်ာတ-ပေါင်းစပ်ခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် " ယန္တေ့တွာ " ဟု မရှိစေရ။ ] သတသဟဿံ-တသိန်းပတ်လုံးငင်း၊ သဋ္ဌိမတ္တာနိ - ခြောက်ဆယ် အတိုင်းအရှည် ရှိကုန်သော၊ ဝဿသဟဿာနိစ- နှစ်အထောင်တို့ ပတ်လုံး ငင်း၊ (တနည်း၊) သဋ္ဌိမတ္တာနိ ဝဿသဟဿာနိစ-အနှစ်ခြောက်သောင်းတို့ ပတ်လုံးငင်း၊ မြဟ္မစရိယံ - သာသနာ့ မြဟ္မစရိယသည်၊ အဋ္ဌာသိ - တည်ပြီ၊ ပန - ထိုသို့ပင် အနှစ်တသိန်း ခြောက်သောင်းပတ်လုံး တည်ပါသော်လည်း၊ ပရိသယုဂဝသေန-ယောက်ျားတို့၏ ဖြစ်ရာကာလ၏အစွမ်းဖြင့်၊ ယုဂပရမ္ပရာ ယ-ယုဂ အဆက်ဆက်ဖြင့်၊ အဂတ္ဘွာ-မသွားမူ၍၊ ဒွေယေဝ- ၂ဆက်သာလျှင် ဖြစ်ကုန်သော၊ ပုရိသယုဂါနိ – ယောက်ျားတို့၏ ဖြစ်ရာကာလတို့ ပတ်လုံး၊ အဋ္ဌာသိ-ပြီ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ နစိရဋ္ဌိတိကန္တိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ။

ပန - ကား၊ သိခိဿ - သိခိ မည်တော်မူသော၊ ဘဂဝတော-၏၊ သတ္တတိ ဝဿ သဟဿာနိ-အနှစ် ၇သောင်းတို့သည်၊ အာယု - တည်း၊ ဝါ-တည်း၊ အဿ-ထို သိခိမြတ်စွာဘုရား၏၊ သမ္မုခသာဝကာနမ္ပိ - တို့၏လည်း၊ တတ္တက

**ပုရိသ ယုဂ ဝသေန**။ ။"ယုဂေါ ကပ္ပမှိ-ယုဂသဒ္ဒါသည် ကပ္ပအနက်၌ဖြစ်၏"ဟု အဘိဓာန် (ဂဂ၂)၌ ဆိုသောကြောင့် ဤ၌ ကပ္ပ ( ကာလ ) အနက်ကို ယူ၍ "ပုရိသ ကာလ ဝသေန" ဟု ငင်း, ထိုကာလလည်း "အသက်ရှည်ရာ ကာလ—အသက်တမ်း အတိုင်းအရှည် ကာလ" ဟု သိစေလို၍ "အာယုပ္ပမာဏဝသေနာတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ " ဟုငင်း ဋီကာဖွင့်သည်။ [ ပုရိသာနံ – တို့၏+ ယုဂံ – အသက်ရှည်ရာ ကာလတည်း၊ ပုရိသယုဂံ—လ။ ]

**မှတ်ချက်**။ ။ထိုခေတ်က သုံးစွဲရိုး စကားအတိုင်း "ပုဒ္ဒိသယုဂံ" ဟု သုံးစွဲထား သည်၊ အစစ်အမှန် အားဖြင့်ကား ပုရိသမှတပါး " ပုရိသယုဂံ " ဟု မရှိ၊ ထို့ကြောင့် "ပုရိသဝသေန—ယောက်ျားတို့၏ အစွမ်းဖြင့်"ဟုသာ ဆိုလိုရင်းဟုမှတ်။ [အဘိလာပ မတ္တမေဝ စေတံ၊ အတ္ထတော ပန ပုရိသောဝ ပုရိသယုဂံ။]

မေဝ-သော၊ (အာယု၊) ဝေဿဘုဿ- သော၊ ဘဂဝတော-၏၊ သဋ္ဌိဝဿ သဟဿာနိ - အနှစ် ခြောက်သောင်းတို့သည်၊ အာယု - တည်း၊ ဝါ-တည်း၊ အဿ- ထို ဝေဿဘူ မြတ်စွာဘုရား၏၊ သမ္မုခသာဝကာနမ္ပိ - တို့၏လည်း၊ တတ္တကမေဝ-သော၊ (အာယု၊) ဧဝံ-လျှင်၊ ဝါ-အားဖြင့်၊ တေသမ္ပိ-ထို သိခီ ဝေဿဘူ ဘုရားရှင်တို့၏လည်း၊ သဗ္ဗပစ္ဆိမကာ - န်သော၊ ယေသာဝကာ– တို့သည်၊ (သန္တိ၊) တေဟိ-ထိုသာဝကတို့နှင့်၊ သဟ-ကွ၊ ဃဋေတွာ-၍၊ သတ သဟဿတော - တသိန်းမှ၊ ဥဒ္ဓံ-အထက်၌၊ စတ္တာလီသ မတ္တာနိ–လေးဆယ် အတိုင်းအရှည် ရှိကုန်သော၊ ဝဿသဟဿာနိ - နှစ်အထောင်တို့ ပတ်လုံး ၎င်း၊ (တနည်း)စတ္တာလီသမတ္တာနိ ဝဿသဟဿာနိ - အနှစ်လေးသောင်း တို့ပတ်လုံး၎င်း၊ ဝီသတိမတ္တာနိ – ၂၀ အတိုင်းအရှည် ရှိကုန်သော၊ ဝဿ သဟဿာနိစ-တို့ပတ်လုံး၎င်း၊ (တနည်း)ဝီသတိမတ္တာနိ ဝဿ သဟဿာနိ စ-အနှစ် ၂သောင်းတို့ပတ်လုံး၎င်း၊ ဗြဟ္မစရိယံ-သည်၊ အဋ္ဌာသိ-ပြီ၊ ပန-ထိုသို့ ပင် အနှစ်တသိန်းလေးသောင်း, တသိန်းနှစ်သောင်း ပတ်လုံး တည်ပါသော် လည်း၊ ပုရိသယုဂ ဝသေန-ဖြင့်၊ ယုဂပရမ္ပရာယ-ဖြင့်၊ အဂတ္တွာ-မသွားမူ၍၊ ဒွေဒွေယေဝ - ၂ဆက် ၂ ဆက် သာလျှင် ဖြစ်ကုန်သော၊ ပုရိသယုဂါနိ - တို့ ပတ်လုံး၊ အဋ္ဌာသိ-ပြီ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ နစိရဋ္ဌိတိကန္တိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-ပြီ။

ဧဝံ-သို့၊ အာယသ္မာ သာရိပုတ္တော-သည်၊ တိဏ္ဏံ-န်သော၊ ဗုဒ္ဓါနံ-ဝိပဿီ သိခီ ဝေဿဘူ ဘုရားရှင်တို့၏၊ ဗြဟ္မစရိယဿ-၏၊ နစိရဋ္ဌိတိကာရဏံ - ကြာ မြင့်စွာ မတည်ခြင်း၏ အကြောင်းကို၊ သုတွာ - ၍၊ ဣတရေသံ - ဝိပဿီ သိခီ ဝေဿဘူဘုရားရှင်တို့မှအခြားကုန်သော၊ တိဏ္ဏံ-န်သော၊(ဗုဒ္ဓါနံ-ကကုသန်, ကောဏာဂုံ,ကဿပ ဘုရားရှင်တို့၏၊)ဗြဟ္မစရိယဿ-၏၊ စိရဋ္ဌိတိကာရဏံ- ကြာမြင့်စွာ တည်ခြင်း၏အကြောင်းကို၊ သောတု ကာမော-သည်၊ (ဟုတွာ) ပုန-တဖန်၊ ဘဂဝန္တံ - ကို၊ ကော ပန ဘန္တေ ဟေတူတိ အာဒိနာ – ဟေတု အစ ရှိသော၊ နယေန - ဖြင့်၊ ပုစ္ဆိ-ပြီ၊ ဘဂဝါပိ - သည်လည်း၊ အဿ–ထို အရှင်သာရိပုတြာအား၊ ဗျာကာသိ-ဖြေတော်မူပြီ၊ တံသဗ္ဗံ- ထိုအလုံးစုံသော စကားရပ်ကို၊ ဝုတ္တ ပဋိပက္ခဝသေန - ဆိုအပ်ပြီးသော စကားရပ်၏ ဆန့်ကျင်

**ယုဂပရမ္ပရာယ အဂန္တွာ**။ ။"ဒွေယေဝ ယုဂါနိ" ထောက်လျှင် "အာဂန္တွာ" ဟု မရှိဘဲ "အဂန္တွာ"ဟုသာ ရှိသင့်၏၊ မှန်၏–ဆက်ကာဆက်ကာ အတော်များများ သွားမှ "ပရမ္ပရာ" ဟု ခေါ်၏၊ ၂ဆက်မျှ သွားသည်ကို " ပရမ္ပရာ " ဟု မခေါ်သင့်။ [ ဘုရားလက်ထက်တော်၌ တဆက်, ပစ္ဆိမသာဝကတို့ လက်ထက်၌ တဆက်, ဤသို့ အားဖြင့် ဒွေယုဂါနိ ဖြစ်သည်။]

ဘက်၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ [ကိလာသုနော၌ အကိလာသုနော,နုစိရဋ္ဌိ တိကံ၌ စိရဋ္ဌိတိကံ ဟု ဆန့်ကျင်ဘက် သိလေ - ဟူလို၊ ] စ—ဆက်၊ ဓွေ - ၌ ဘဂဝါစ သာရိပုတ္တ ကကုသန္ဓောအစရှိသော ဝါကျ၌၊ စိရဋ္ဌိတိကဘာဝေဗိ- ကြာမြင့်စွာသောကာလပတ်လုံး တည်ခြင်း ရှိသည်၏ အဖြစ်၌လည်း၊ တေသံ ဗုဒ္ဓါနံ-တို့၏၊ အာယုပရိမာဏဘောဗိ-အသက် အတိုင်းအရှည်အားဖြင့်၎င်း၊ ပုရိသယုဂတောဗိ - အားဖြင့်၎င်း၊ ဥဘယထာ - နှစ်ပါးစုံကုန်သော အပြား အားဖြင့်၊ စိရဋ္ဌိတိကတာ – ကြာမြင့် စွာသော ကာလ ပတ်လုံး တည်ခြင်း ရှိသည်၏အဖြစ်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ- ၏၊ ဟိ-ချဲ့ ၊ပေ၊ စတ္တာလီသဝဿသဟဿာ နိ – အနှစ် လေးသောင်းတို့သည် ၊ ပေ ၊ တိံသ ဝဿ သဟဿာနိ – အနှစ် သုံးသောင်းတို့သည် ၊ ပေ ၊ ဝီသတိ ဝဿသဟဿာနိ - အနှစ် ၂ သောင်းတို့ သည်၊ပေ၊ စ-ဆက်၊ နေသံ- ထို ဘုရားရှင်တို့၏၊ ဗဟူနိ - များစွာ ကုန်သော၊ သာဝကယုဂါနိ-သာဝကတို့သည်၊[သာဝကာဝေ သာဝကယုဂါနိ၊သာဝက တို့မှတပါး"ယုဂ"ဟု အနက်သီးခြား မရ၊] ပရမ္ပရာယ-ဖြင့်၊ မြဟ္မစရိယံ—ကို၊ ပဝတ္တေသုံ- ဖြစ်စေကြကုန်ပြီ၊ ပေ၊ [ " ဇဝံ တေသံ အာယုပရိမာဏတောပိ သာဝကယုဂတောပိ"ဟု စာရှိ၏၊ အထက်၌ ပုရိသယုဂတောပိ ဟု ရှိခဲ့သော ကြောင့် ပုရိသနှင့် သာဝကကို သဘောတူ ဟုမှတ်။]

ပန-ကား၊ အမှာကံ-တို့၏၊ ဘဂဝတာ–သည်၊ ["အမှာကံ ဘဂဝတော" ဟု တချို့စာရှိ၏၊ အသမ္ဘုဏာန္တေနနှင့် အရတူဖြစ်၍ "ဘဂဝတာ" ဟုသာ တတိယန္တ ရှိရမည်၊ ] ပေ၊ ဥပနှာယုကပ္ပမာဏေ - ထက်ဝက် အသက်တမ်း အတိုင်းအရှည်ရှိသော၊ ဒသဝဿသဟဿာယုကကာလေ–အနှစ်တသောင်း အသက်တမ်းရှိရာအခါ၌၊ ဥပ္ပဇ္ဇိတဗ္ဗံ– ဖြစ်တော်မူထိုက်သည်၊ သိယာ- ဖြစ်ရာ ၏၊ တံ - ထို အနှစ်တသောင်း သက်တမ်းရှိရာ အခါကို၊ အသမ္ဘုဏာန္တေန- မရောက်လသော်၊ ဝါ-မမှီလသော်၊ ["သံပုဗ္ဗ+ဘူ—ပတ္တိယံ"ဟူသောဓာတ်၊ ဥဏာ ပစ္စည်း။ ] ပဋ္ဌဝဿသဟဿာယုကကာလေဝါ – အနှစ် ငါးထောင် အသက်တမ်းရှိရာ အခါ၌သော်၎င်း၊ ကေဝဿသဟဿာယုကကာလေဝါ- အနှစ်တထောင် အသက်တမ်းရှိရာ အခါ၌သော်၎င်း၊ ပဥ္စဝဿသတာယုက ကာလေဝိဝါ– အနှစ်ငါးရာ အသက်တမ်းရှိရာ အခါ၌သော်၎င်း၊ ဥပ္ပဇ္ဇိတဗ္ဗံ- သည်၊ သိယာ- ၏၊ ပန- ထိုသို့ပင် ဖြစ်ထိုက်ပါသော်လည်း၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ အသ - ထို ငါတို့ဘုရားရှင်၏၊ ဗုဒ္ဓတ္တကာရကေ- ဘုရားအဖြစ်ကို ပြုတတ်ကုန် သော၊ ဓမ္မေ - ပါရမီဘရားတို့ကို၊ သေန္တဿ ပရိယေသန္တဿ - ရှာမှီးတော် မူစဉ်၊ ဉာဏံ - ကို၊ ပရိပါစေန္တဿ - ရင့်ကျက်စေတော်မူစဉ်၊ ဂဗ္ဘံ – ဉာဏ်

တည်းဟူသော ကိုယ်ဝန်ကို၊ ဂဏှာပေန္တသာ - ယူစေတော်မူစဉ်၊ [ သဗ္ဗညုတ ဉာဏာသ ဝိဇာယနတ္ထံ ဉာဏဂဗ္ဘံ ဂဏှာပေန္တသ၊ ] ဝဿသတာယုက ကာလေ–အနှစ်တရာ အသက်တမ်းရှိရာ အခါ၌၊ ဉာဏံ - ဉာဏ်တော်သည်၊ ပရိပါကံ-သို့၊ အဂမာသိ- ပြီ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ အတိပရိတ္တာယုကကာလေ– အလွန်နည်းသော အသက်တမ်းရှိရာ အခါ၌၊ ဥပ္ပန္နော- ဖြစ်တော်မူရပြီ၊ ဝါ- ပွင့်တော်မူရပြီ၊ တေန–ထို့ကြောင့်၊ အဿ– ထို ငါတို့ဘုရားရှင်၏၊ သာဝက ပရမ္ပရာဝသေန– သာဝက အဆက်ဆက်၏ အစွမ်းဖြင့်၊ စိရဋ္ဌိတိကံ- ကြာမြင့် စွာတည်ခြင်းရှိသည်၊ ( သမာနံပိ-သော်လည်း၊ ) မြဟ္မစရိယံ- သည်၊ အာယု ပရိမာဏဝသေန- ဖြင့်၊ ဝဿဂဏနာယ- အားဖြင့်၊ နစိရဋ္ဌိတိကမေဝ-သာ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝတ္တုံ-ဆိုခြင်းငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ- သင့်၏။

အထခေါ အာယသ္မာ သာရိပုတ္တောတိ - ပုတ္တောဟူသော ဝါကျ၌၊ အနု သန္ဓိ-ရှေ့နောက်စကားတို့၏ အဆက်သည်၊ ကော - နည်း၊ [ပုဗ္ဗာပရကထာနံ ကိံ အနုသန္ဓာနံ၊ ကော သမ္ဗန္ဓောတိအတ္ထော၊ ]၊ပေ၊သိက္ခာပဒ ပညတ္တိယေဝ- သိက္ခာပုဒ်ပညတ်တော်မူခြင်းသည်သာလျှင်၊စိရဋ္ဌိဘိကဘာဝဟေတု-ကြာမြင့် စွာသော ကာလပတ်လုံး တည်ခြင်း ရှိသည်၏ အဖြစ်၏ အကြောင်းတည်း၊ ဣတိ-သို့၊ နိဋ္ဌာနံ-ဆုံးဖြတ်ခြင်းသို့၊ ဂတ္ဝာ- ရောက်၍၊ ဘဂဝတောပိ- ၏လည်း၊ မြဟ္မစရိယဿ-၏၊ စိရဋ္ဌိကိကဘာဝံ - ကို၊ ဣစ္ဆန္တော- အလိုရှိသော၊ အာယ သ္မာ သာရိပုတ္တော – သည်၊ ဘဂဝန္တံ - ကို၊ သိက္ခာပဒပညတ္တိံ - မူခြင်းကို၊ ယာစိ- ပြီ၊ တဿာ- ထို သိက္ခာပုဒ် ပညတ်တော်မူခြင်း၏၊ ယာစနဝိဓိဒဿ နတ္ထံ– တောင်းပန်ပုံ အစီအရင်ကို ပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ အထခေါ၊ ပေ၊ စိရဋ္ဌိတိ ကန္တိ-ဟူသော၊ တော်-ဤစကားကို၊(အာယသ္မတာ ဉပါလိတ္ထေရေန- သည်၊) ဝုတ္တံ– ဈောက်အပ်ပြီ၊ တတ္ထ - ထို အထခေါ အာယသ္မာ သာရိပုတ္တော အစ ရှိသောဝါကျ၌၊ အဒ္ဓနိယန္တိ - ကား၊ အဒ္ဓါနက္ခမံ-ရှည်သောကာလပတ်လုံး ခံနိုင်သည်၊ [အဒ္ဓါနံ- ရှည်သောကာလပတ်လုံး+ခမံ-ဖြစ်သည်တည်း (ခံနိုင် သည်တည်း)၊ဣတိ–ကြောင့်၊အဒ္ဓနိယံ၊ အဒ္ဓနောင် ဣယပစ္စည်း(န်)အာဂုံ။] ဒီဃကာလံ- ရှည်သောကာလပတ်လုံး ဖြစ်တည်နိုင်သည်၊(အဿ-ဖြစ်ရာ၏၊) ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ သေသံ- ကြွင်းသောပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဥတ္တာနတ္ထမေဝ- ပေါ်လွင်သော အနက်ရှိသည်သာ။

အထ- တောင်းပန်ရာထိုအခါ၌၊ အဿ - ထို အရှင်သာရိပုတ္တရာအား၊ ဘဂဝါ- သည်၊ အယံ- ဤအခါသည်၊ န တာဝ သိက္ခာပဒပညတ္တိကာလော- သိက္ခာပုဒ် ပညတ်ခြင်း၏ အခါမဟုတ်သေး၊ ဣတိ - ဤ အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊

ပကာသေန္တော– ထင်ရှားပြတော်မူလိုသည်၊ ( တိုက်ရိုက် မပြဘဲ"အာဂမေဟိ " စသည်ဖြင့် သွယ်ဝိုက်၍ ပြတော်မူလိုသည်၊ ဟုတ္ဝာ ) အာဂမေဟိ တွံ သာရိပုတ္တာတိ အာဒိံ-ကို၊ အာဟ- ပြီ၊ တတ္ထ-ထို အာဂမေဟိ တွံ သာရိပုတ္တ အစရှိသောဝါကျ၌၊ အာဂမေဟိ တွန္တိ- သည်ကား၊ တွံ-သည်၊ တာဝတိဋ္ဌ- ရပ်တည်ဦးလော၊ ဝါ- ဆိုင်းငံ့ဦးလော၊ တွံ -သည်၊ တာဝ အဓိဝါသေဟိ- သည်းခံဦးလော၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ စ- ဆက်၊ ဧတံ - ဤ အာဂမေဟိ တွံ သာရိပုတ္တဟူသော စကားကို၊ အာဒရဝသေန - လေးစားခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ (လေးနက်အောင်- ဟူလို၊)ဒွိက္ခတ္တုံ-ကြိမ်၊ ဝုတ္တံ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ ဧတေန- ဤအာဂမေဟိ တွံ သာရိပုတ္တဟူသော ပါဌ်ဖြင့်၊ ဘဂဝါ - သည်၊ သိက္ခာပဒ ပညတ္တိယာ-သိက္ခာပုဒ် ပညတ်ခြင်း၏၊ သာဝကာနံ-တို့၏၊ ဝိသယဘာဝံ-အရာ ၏ အဖြစ်ကို၊ ပဋိက္ခိပိတွာ-ပယ်မြစ်တော်မူ၍၊ သိက္ခာပဒပညတ္တိ - သိက္ခာပုဒ် ပညတ်ခြင်းသည်၊ ဗုဒ္ဓဝိသယော ဝ - ဘုရား့အရာတော်သာ၊ ဣတိ - ဤ အနက် အဓိပ္ပါယ်ကို၊ အာဝိကရောန္တော – ထင်စွာပြုတော်မူလိုသည်၊ [ သွယ်ဝိုက်၍ ပြတော်မူလိုသည်၊] (ဟုတွာ) တထာဂတော ဝ ါတိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ-ပြီ။

စ- ဆက်၊ ဧတ္ထ - ဤတထာဂတော ဝ တတ္ထ ကာလံ ဇာနိဿတိ ဟူသော ဝါကျ၌၊ တတ္ထာတိ - တတ္ထဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ သိက္ခာပဒ ပညတ္တိယာစနာ ပေက္ခံ-တောင်းပန်အပ်သော သိက္ခာပုဒ် ပညတ်ခြင်းကို ရှုငဲ့သော၊ ဘုမ္မဝစနံ- သတ္တမီဝိဘတ်ရှိသောသဒ္ဒါတည်း၊[သိက္ခာပဒပညတ္တိယေဝ+ယာစနာ သိက္ခာ ပဒ ပညတ္တိယာစနာ၊] တတြ- ထိုတထာဂတော ဝ တတ္ထ ကာလံ ဇာနိဿတိ ဟူသော ဝါကျ၌၊ အယံ- ဤ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ယောဇနာ– ပုဒ်အနက်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းတည်း၊ သိက္ခာပဒံ ပညပေယျာတိ - ယျ ဟူသော ပါဌ်ဖြင့်၊ ယံ– အကြင် သိက္ခာပုဒ်ပညတ်ခြင်းကို၊ ဝုတ္တံ- လျှော်အပ်ပြီ၊ ဝါ- တောင်းပန်အပ်ပြီ၊ တတ္ထ-တဿာ သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ-ထိုသိက္ခာပုဒ်ပညတ်ခြင်း၌၊ ကာလံ-ကို၊ တထာဂတော ဝ-ဘုရားရှင်ကိုယ်တော်တိုင်သာလျှင်၊ ဇာနိဿတိ-သိတော်မူ လိမ့်မည်၊ ဣတိ-ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊(ယောဇနာ-တည်း၊) ဧဝံ - သို့၊ ဝတွာ– မိန့်တော်မူပြီး၍၊ တာဝ–ကာလမှရှေးဦးစွာ၊ အကာလံ-ကို၊ ဝါ-သိက္ခာပုဒ် ပညတ်သင့်ရာ မဟုတ်သော အခါကို၊ ဒဿေတုံ-ငှါ၊ နတာဝသာရိပုတ္တာတိ

ယံ ဝုတ္တံ ။ ။ သိက္ခာပဒံ ပညပေယျာတိ ဣမိနာ ယံ သိက္ခာပဒံ ဝုတ္တံ၊ ယာစိတန္တိ အတ္ထော၊ တတ္ထ တဿာ သိက္ခာပဒပညတ္တိယာတိ တဿံ ယာစိယမာနသိက္ခာပဒပည တ္တိယန္တိ အတ္ထော၊ "တဿာသိက္ခာပဒပညတ္တိယာ"သည် တတ္ထ၏ အဖွင့်ဖြစ်၍"၌" ဟု ပေးပါ–ဟူလို၊ [တတ္ထာတိပဒဿ ဝိဝရဏံ တဿာ၊ပေ၊ယာတိ၊ ယောဇနာ။]

အာဒိံ-ကို၊ အာဟ-ပြီ၊ တတ္ထ- ထို နတာဝ သာရိပုတ္တ အစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ ( အတ္ထော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ) တေသု – ၎င်း ကျူးလွန်မှုတို့၌၊ အာသဝါ- အာသဝတို့သည်၊ တိဋ္ဌန္တိ–တည်ကုန်၏၊ ယုတိ - ကြောင့်၊ ဝါ-ထိုသို့ အာသဝ တို့၏ တည်ရာ၏ အဖြစ်ကြောင့် (တေ-ထိုကျူးလွန်မှုတို့သည်၊) အာသဝဋ္ဌာ နီယာ-ယတို့မည်၏၊ ယေသု-အကြင် ကျူးလွန်မှုတို့၌၊ ( တိဋ္ဌန္တိယေဝ၌ စပ်၊) ဒိဋ္ဌဓမ္မိက သမ္ပရာယိကာ–မျက်မှောက်ဘဝ၌ ဖြစ်ကုန် တမလွန်ဘဝ၌ ဖြစ်ကုန် သော၊ဒုက္ခာသဝါစ-ဒုက္ခ ဟူသော အာသဝတို့သည်၎င်း၊ကိလေသာသဝါစ- ကိလေသာ ဟူသော အာသဝတို့သည်၎င်း၊(ပရူပဝါဒ ဝိပ္ပဋိသာရ ဝဓဗန္ဓနာ ဒယော– သူတပါးတို့၏ စွပ်စွဲခြင်း , နှလုံးမသာမယာ ဖြစ်ခြင်း , ညှဉ်းပန်း နှိပ်စက်ခြင်း, ချုပ်နှောင်ခြင်း အစရှိကုန်သော၊ (အာသဝါ) စေ ၁-တို့သည် ၎င်း၊ အပါယဒုက္ခဝိသေသဘူတာ-အပါယ်ဆင်းရဲ အထူးဖြစ်၍ဖြစ်ကုန်သော၊ အာသဝါစ- တို့သည်၎င်း၊ တိဋ္ဌန္တိယေဝ - နှ်သည်သာ၊) ယသ္မာ - ကြောင့်၊ နေသံ-ထိုအာသဝတို့၏၊ တေ- ထိုကျူးလွန်မှုတို့သည်၊ ကာရဏာ - တို့သည်၊ ဟောန္တိ–န်၏၊ (တသ္မာ- ကြောင့်၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာ-ယာတို့ မည်၏၊) ဣတိ အတ္ထော-နက်၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာ - အာသဝ၏ တည်ရာဖြစ်ကုန်သော၊ တေ ဝီတိက္ကမ ဓမ္မာ– ထို ကျူးလွန်မှု တရားတို့သည်၊ ယာဝ - အကြင်မျှလောက်၊ သံဃေ- ၌၊ န ပါတုဘဝန္တိ- ထင်ရှားမဖြစ်ကုန်သေး၊ တာဝ- ထိုမျှလောက်၊

**အာသဝါ၊ပေ၊ဋ္ဌာနီယာ ။** ။ “ တိဋ္ဌန္တိ တေသုတိ ဌာနီယာ၊ အာသဝါနံ+ ဌာနီယာ အာသဝဋ္ဌာနီယာ”ဟု ပြု၊“အနီယပစ္စည်းသည် ဘော - ကံ ကို အဟောများ သော်လည်း ၌၌ အဓိကရဏသာဓနဟောတည်း။

**အာသဝ။** ။အာသဝန္တိ တေနတေန ပဋ္ဌယေန ပဝတ္တန္တိတိ–ထိုထိုအကြောင်း ကြောင့် ဖြစ်တတ်သောကြောင့်“အာသဝ”တို့မည်၏၊ ထိုအာသဝတို့ဟူသည် မျက်မှောက် ဘဝ၌ ပရူပဝါဒ ( သူတပါးတို့၏ ကဲ့ရဲ့ခံရမှု ဟူသော ပရာနုဝါဒဘေး ) ဝိပ္ပဋိသာရ (ပြုပြီးနောက် နှလုံးမသာမယာဖြစ်မှု အတ္တာနုဝါဒဘေး) ဝဓ(ညှဉ်းဆဲနှိပ်စက် ခံရမှု) ဗန္ဓ (အချုပ်အနှောင်ခံရမှုဟူသောဒဏ္ဍဘေး) , နောက်ဘဝဝယ် အပါယ်၌ဖြစ်သော ဒုက္ခအထူးဟူသောဒုဂ္ဂတိဘေးများနှင့် အာသဝေါဟု ခေါ်အပ်သော ကိလေသာများ တည်း။ [ “ပရူပဝါဒ၊ပေ၊ဗန္ဓနာဒယော” သည် ဒိဋ္ဌဓမ္မိကအာသဝ၏ သရုပ်ပြတည်း၊ “အပါယ ဒုက္ခဝိသေသဘူတာ”သည် သမ္ပရာယိက၏သရုပ်ပြတည်း၊ ]ကိလေသာသဝ အတွက်ကား“အာသဝေါတရား ၄ ပါး”ဟု ထင်ရှားပြီးဖြစ်၍ သရုပ် မပြတော့။

**တေကာရဏာ၊ပေ၊ဓမ္မာ။** ။ကာရဏာဖြင့် “ဌာနီယာ ” ၏ အနက်ကို ပြ၏၊ “တည်ရာ”ဟူသည် ဌာန ( ဝတ္ထု ) မဟုတ်, အကြောင်း–ဟူလို၊ “ဝီတိက္ကမဓမ္မာ” ဖြင့် “မေထုန်မှီဝဲခြင်း”စသော ကျူးလွန်မှုကို အရကောက်ပါဟုပြသည်။

သတ္တာ-သည်၊ သာဝကာနံ-တို့အား၊ သိက္ခာပဒံ- ကို၊ န ပညပေတိ-ပညတ်တော် မမူသေး၊ ဣတိ အယံ-ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ ဧတ္ထ - ဤ နတာဝ သာရိပုတ္တ အစရှိသော ဝါကျ၌၊ ယောဇနာ-ပုဒ်အနက်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းတည်း၊

ဟိ - ဆက်၊ ယဒိ ပညပေယျ– အကယ်၍ ပညတ်တော်မူအံ့၊ ( ဧဝံသတိ) ပရူပဝါဒါ - သူတပါးတို့မျက်ကွယ် စွပ်စွဲခြင်းမှငှင်း၊ ပရူပါရမ္ဘာ–ပြောအပ်သမျှ စကားတို့၌ သူတပါးတို့၏ အပြစ် တင်ခြင်းမှငှင်း၊ ဂရဟဒေါသာ-မျက်မှော်ကဲ့ရဲ့ခြင်းအပြစ်မှငှင်း၊ န ပရိမုစ္စေယျ–မလွတ်ရာ၊ ကထံ- အဘယ်သို့ မလွတ်ရာသနည်း၊ ဟိ–ချဲ့၊ ပညပေန္တေန– ပညတ်တော်မူလသော်၊ ယောပနဘိက္ခု မေထုနံ ဓမ္မံ ပဋိသေဝေယျာတိ အာဒိ-သေဝေယျ အစရှိသော၊ သဗ္ဗံ-အလုံးစုံသောသိက္ခာပုဒ်သည်၊ ဝါ-ကို၊ ပညပေတဗ္ဗံ-ပညတ်တော်မူထိုက်သည်၊ ဘဝေယျ - ရာ၏၊ ဝီတိက္ကမဒေါသံ – ကျူးလွန်ကြောင်း အပြစ်ကို၊ အဒိသွာဝ–မမြင်မူ၍သာ၊ ဣမံ ပညတ္တိံ-ဤ ပညတ်တော်ကို၊ ဉတ္ဂာ-သိ၍၊ ဝါ-မြင်၍၊ ပရေ-အခြားသူတို့သည်၊ ဧဝံ-သို့၊ ဥပဝါဒဥ္စ–မျက်ကွယ် စွပ်စွဲခြင်းကိုငှင်း၊ ဥပါရမ္ဘဥ္စ- ပြောအပ်သမျှစကားတို့၌ အပြစ်တင်ခြင်းကိုငှင်း၊ ဂရဟဥ္စ- မျက်မှော်ကဲ့ရဲ့ခြင်းကိုငှင်း၊ ပဝတ္တေယျုံ- ဖြစ်စေကုန်ရာ၏၊ (ကိံ - နိ်ရာသနည်း၊) ကထံဟိ-အဘယ့်ကြောင့်၊ သမဏော ဂေါတမော- သည်၊ ဘိက္ခုသံဃော- ရဟန်းအပေါင်းသည်၊ မေ- ၏၊ အန္ဒွာယိကော – နောက်လိုက်သည်၊ ဝစနကရော-စကားကိုပြုရသည်၊ ဝါ- စကားကိုနားထောင်ရသည်၊(ဟောတိ-၏၊) ဣတိ-ဤသို့ ကြံ၍၊ ဓြော္ဂဝတာ - ဤမျှ အတိုင်းအရှည်ရှိသော အစဉ်လိုက်ခြင်း နားထောင်ခြင်းဖြင့်၊ သိက္ခာပဒေဟိ – ပုဒ်တို့ဖြင့်၊ ဝေဌေဿတိနာမ- ရစ်ပတ်ရတုန်ဘိသနည်း၊ ပါရာဇိကံ - ကကို၊ ပညပေဿတိနာမ - ပညတ်ရတုန်ဘိ

ပရူပါပေါနမုစ္စေယျ။ ။ပရမ္မုခါ အက္ကောသနံ ပရူပဝါဒေါ-မျက်ကွယ်၌ ဆဲရေးခြင်းသည် ပရူပဝါဒမည်၏၊ ပရေဟိ– သူတပါးတို့သည်၊ ဝါ– တို့က၊ ဝစနေသု–မိမိ ပြောအပ်သမျှ စကားတို့၌၊ ဒေါသာရောပနံ – အပြစ်တင်ခြင်းသည်၊ ပရူပါရမ္ဘော (ပရ+ ဥပါရမ္ဘော) – မည်၏၊ သမ္မုခါဂရဟဏံ– မျက်မှောက်ကဲ့ရဲ့ခြင်းသည်၊ ဂရဟဒေါသော-မည်၏။

ကထံဟိနာမ။ ။ကထံဟိနာမ ပလိဝေဌေဿတီတိ သမ္ဗန္ဓော၊ ကထံသဒ္ဒယောဂေ- ကထံသဒ္ဒါနှင့် ယှဉ်ရာ၌၊ အနာဂတပ္ပယောဂေါ – အနာဂတ် "ဿတိ" ဝိဘတ်ကို သုံးစွဲခြင်းကို၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော – ၏၊ အနက်မှာ ပြီးပြီးအတိတ်ဖြစ်သော်လည်း သဒ္ဒါကိုကား အနာဂတ်ဝိဘတ်ကို သုံးရသည် – ဟူလို၊ [ အန္ဒွာယိကောတိ အနုဝတ္တကော၊ အနု+ အယဓာတ်၊ ဏွုကို အကပြု၊ အကို ဣပြု၊ "အန္ဒွာယကော" ရှိလျှင် သာ၍ကောင်း၏၊ "အနုအယတီတိ အန္ဒွာယကော" ဟု ပြု။]

သနည်း၊ ဈာမေ ကုလပုတ္တာ- တို့သည်၊ မဟန္တံ - များစွာသော၊ ဘောဂက္ခန္ဓံ- စည်းစိမ် အစုကိုငှင်း၊ [ ဘောဂရာသိံ ၊ ] မဟန္တံ – သော၊ ဉာတိပရိဝဋ္ဋံစ– အဆက်ဆက်လည်တတ်သော ဆွေမျိုး အသိုင်းအဝိုင်းကိုငှင်း၊ ဟတ္ထဂတာနိ– လက်၌ရောက်ကုန်သော၊ ရဇ္ဇာနိပိစ – တိုင်းပြည်တို့ကိုသော်မှငှင်း၊ (ပိ- သည် သမ္ဘာဝနာဇောတက၊ ) ပဟာယ– ၍၊ ပဗ္ဗဇိတာ - ရှင်ရဟန်း ပြုကုန်သည်၊ ( ဟုတ္ဂာ၊ ) ဃာသစ္ဆာဒနပရမတာယ - အစားအဝတ် ဟူသော လွန်သော အတိုင်းအရှည် ရှိကုန်သည်၏ အဖြစ်၌၊ ဝါ - စားလောက်ရုံ ဝတ်လောက်ရုံ ဟူသော လွန်သော အတိုင်းအရှည်ရှိကုန်သည်၏အဖြစ်၌၊ သဏ္ဌိတာ-ကောင်းစွာ တည်ကြကုန်သည်၊ သိက္ခာယ –သိက္ခာ၌၊ တိဗ္ဗဂါရဝါ– ထက်သန်သော လေးစားခြင်းရှိကြကုန်သည်၊ ကာယေစ-၌ငှင်း၊ ဇီဝိတေစ-၌ငှင်း၊ နိရပေက္ခာ- ငဲ့ညှာခြင်း မရှိကြကုန်သည်၊ ( ဟုတ္ဂာ၊ ) ဝိဟရန္တိ နနု– နေရှာကြကုန်သည် မဟုတ်လော၊ တေသု - ထို ဆိုအပ်ပြီးသော ဂုဏ်တို့နှင့် ပြည့်စုံသော ရဟန်း တို့တွင်၊ ကောနာမ - အဘယ်မည်သော ရဟန်းသည်၊ လောကာမိသဘူတံ -

**ဉာတိ ပရိဝဋ္ဋံ** ။ ။ အမှာကံ ဧတေတိ ဉာယန္တီတိ ဉာတီ – ဤသူတို့သည် ငါတို့၏ ဥစ္စာတို့တည်းဟု သိအပ်ကုန်သောကြောင့် “ဉာတိ” တို့မည်၏၊ ပိတာမဟ, ပိတု, ပုတ္တာဒိ ဝသေန ပရိဝဋ္ဋနဋ္ဌေန–ဘိုး, အဘ, သား စသည်တို့၏အစွမ်းဖြင့် ဆက်ကာ ဆက်ကာ လည်တတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ပရိဝဋ္ဋော–မည်၏၊ “ပရိဝဋ္ဋတီတိ ပရိဝဋ္ဋော” ဟု ပြု၊ ဉာတီယေဝ+ပရိဝဋ္ဋော ဉာတိပရိဝဋ္ဋော-အဆက်ဆက် လည်တတ်သောဆွေးမျိုးများ။

**ဃာသစ္ဆာဒနပရမတာယ** ။ ။ ဃသိတဗ္ဗောတိ ဃာသော–(စားအပ်သော) အစာ၊ အစ္ဆာဒိယတေ အနေနာတိ အစ္ဆာဒနံ-ကိုယ်ကိုဖုံးကြောင်းအဝတ်၊ ဃာသစ္ဆာ ဒနေ–အစားအဝတ်ကြောင့်၊ ပရမတာယ–( အပိုမတောင်းတတ်သဖြင့် ) မြတ်သူ၏ အဖြစ်၌၊ ဥက္ကဋ္ဌဘာဝေ သဏ္ဌိတာတိ အတ္ထော။ [ ပရမတာယကို “ ဥက္ကဋ္ဌဘာဝေ ” ဟု အာခါရဖွင့်ပုံ “ သဏ္ဌိတာ ” ဟု ရှိပုံကိုထောက်၍ အဋ္ဌကထာ၌ “ သန္တုဋ္ဌာ ” မရှိဘဲ “သဏ္ဌိတာ” ဟု ရှိသင့်သည်။ ]

**တနည်း**။ ။ဃာသစ္ဆာဒနမေဝ ပရမံ ( ပရမာ ကောဋိ ) ဧတေသံ (န ဧတေ တတော ပရံ ကိဉ္စိ အာမိသဇာတံ ပရိယေသန္တိ ပစ္စာသီသန္တိ စာ ) တိ ဃာသစ္ဆာဒန ပရမာ=အစားအဝတ်ဟူသော (စားလောက်ရုံ ဝတ်လောက်ရုံသော) အလွန်ဆုံး အပိုင်း အခြားရှိကြသည်၊ စားလောက်ရုံ ဝတ်လောက်ရုံထက် ပို၍မရှာကြ , တောင်းလည်း မတောင်းတကြ–ဟူလို၊ တေသံ+ ဘာဝေါ ဃာသစ္ဆာဒနပရမတာ။

**လောကာမိသဘူတံ**။ ။လောကပရိယာပန္နံ ဟုတ္ဂာ ကိလေသေဟိ အာမသိတဗ္ဗတ္တာ လောကာမိသဘူတံ၊ ကိလေသေဟိ အာမသိတဗ္ဗန္တိ အာမိသံ၊ လောကပရိယာပန္နံ+ အာမိသံ လောကာမိသံ၊ ပရိယာပန္နပုဒ်ကြေ၊ လောက၌ ပါဝင်၍ ကိလေသာတို့သည် သုံးသပ်အပ်သောကြောင့် မေထုန်ကို “လောကအာမိသ” ဟု ဆိုသည်။

လောကအာမိသ ဖြစ်၍ဖြစ်သော၊ မေထုနံဝါ-မေထုန်ကိုမူလည်း၊ ပဋိသေဝိ သတိ- မှီဝဲလတ့်နည်း၊ ပရဘဏ္ဍံဝါ-သူတပါးတို့၏ ဥစ္စာကိုမူလည်း၊ ဟရိသ တိ-ဆော င်ယူလတ့်နည်း၊ ပရဿ-သူတပါး၏၊ ဇုဝ္ဍ-အလိုရှိအပ်သော၊ ကန္တံ- နှစ်သက်အပ်သော၊ အတိမဓုရံ - အလွန် ချိုဆိမ့်သော အရသာနှင့် တူသော၊ ဇီဝိတံဝါ- ကိုမူလည်း၊ ဥပစ္ဆိန္ဒိဿတိ- ဖြတ်လတ့်နည်း၊ အဘူတဂုဏကထာ ယ-မဟုတ်မမှန်သော ဂုဏ်စကားဖြင့်၊ ဇီဝိတံဝါ- အသက်ကိုမူလည်း၊ ကပ္ပေ ဿတိ-ပြုလတ့်နည်း၊ ဝါ- မွေးမြူသတ့်နည်း၊ ပါရာဇိကေ-ကကို၊ အပညတ္တေ ပိ-မပညတ်အပ်ပါသော်လည်း၊ ပမ္ဗဇ္ဇာသခ်ေပေနေဝ-ရှင့်အဖြစ်၌ ထည့်သွင်း ကြောင်းဖြစ်သော ဆယ်ပါးသီလဖြင့်ပင်၊ [ ပါဏာတိပါတာ ဝေရမဏီတိ အာဒိနာ ပမ္ဗဇ္ဇာမုခခေနေဝ - ရှင့် အဖြစ်၌ ပဓာနဖြစ်သော ပါဏာတိပါတာ ဝေရမဏီစသောသိက္ခာပုဒ်ဖြင့်ပင်၊] တေံ-၎ မေထုန်စသောအမှုတို့ကို မပြုခ ခြင်းကို၊ ပါကဋံ-ထင်ရှားသည်ကို၊ ကတံနနု-ပြုအပ်ပြီးမဟုတ်ပါလော၊ ဣတိ- ၍သို့၊(ဥပဝါဒဥ္စ ဥပါရမ္ဘဥ္စ ဂရဟဥ္စ-ကိုရင်း၊ ပဝတ္တေယျုံ-ဖြစ်စေကုန်ရာ၏၊)

စ-သည်သာမကသေး၊ တထာဂတဿ-၏၊ ထာမဥ္စ-သိက္ခာပုဒ် ပညတ်နိုင် သော အစွမ်းကိုရင်း၊ ဗသဥ္စ - ဉာဏ်တော်အားကိုရင်း၊ သဘ္ဘာ– တို့သည်၊ န ဇာနေယျုံ- မသိကုန်ရာ၊ ပညတ္တမ္ပိ - ပညတ်အပ်ပြီးလည်း ဖြစ်သော၊ သိက္ခာ ပဒံ - သည်၊ ကုပ္ပေယျ–ပျက်ရာ၏၊ ယထာဌာနေ- တည်မြဲတိုင်းသော အရာ၌၊ ဝါ- ပညတ်တိုင်းသော အရာ၌၊ န တိဋ္ဌေယျ - မတည်ရာ၊ သေယျထာဒိနာမ- ဥပမာမည်သည်ကား၊ အကုသလော - မကျွမ်းကျင်သော၊ [တိကိစ္ဆိတုံ ယုတ္တ ကာလဿ အပရိဇာနနတော အကုသလော - ဆေးကုချိန်ကို နားမလည် သော၊] ဝေဇ္ဇော - ဆေးဆရာသည်၊ ကိဉ္စိ-တစုံတယောက်သော၊ [ပုရိသံ-ဟူသော ပုလ္လိန်ကို ငဲ့၍ " ကဉ္စိ " ဟု ရှိစေလို၏၊ ] အနုပ္ပန္နဂဏ္ဍံ - မဖြစ်သေးသော အနာရှိသော၊ ပုရိသံ–ကို၊ ပက္ကောသာပေတွာ- ခေါ်စေ၍၊ ဘောပုရိသ- အို

ထာမဉ္စ ဗလဉ္စ ။ ။ ထာမန္တိ သိက္ခာပဒါနံ ပညာပနကြိယာယ သာမတ္ထိယံ (ပညတ်မှုကိုပြုခြင်း၌ စွမ်းနိုင်သည်၏အဖြစ်) အစွမ်းသတ္တိကို၊ ဗလန္တိ ယာထာဝတော သဗ္ဗဓမ္မာနံ ပဋိဝေဓသမတ္ထံ ဉာဏဗလံ။

တေံ၊ ပေ၊ ကတံ။ ။တေန္တိ မေထုနာဒီနံ အကရဏံ၊ ပါဏာတိပါတာဝေရမဏီဖြင့် တတိယပါရာဇိက , အဒိန္နာဒါနာဝေရမဏီဖြင့် ဒုတိယ , အဗြဟ္မစရိယာ ဝေရမဏီဖြင့် ပဌမ, မုသာဝါဒါဝေရမဏီဖြင့် စတုတ္ထပါရာဇိကများ ထင်ရှားပြီ–ဟူလို။

ကုပ္ပေယျ။ ။ကုပ္ပံ ဘဝေယျ၊ တေသောဝ·တ္တဿ ပါကဋကရဏံ "န ယထာဌာနေ တိဋ္ဌေယျာ"တိ ( န ယထာဌာနေ တိဋ္ဌေယျသည် ကုပ္ပေယျကို ထင်ရှားအောင်ပြသော စကား၊) ပညတ္တိဋ္ဌာနေ န တိဋ္ဌေယျာတိ အတ္ထော။

ယောက်ျား၊ ဟေိ-လာပါလော၊ ဝါ- ဆေးကုလှည့်လော၊ တေ-၏၊ ဋမသ္မိံ သရီရပ္ပဒေသေ-၌ကိုယ်အရပ်၌၊ မဟာဂဏ္ဍော - ကြီးစွာသော အနာသည်၊ ဥပ္ပန္နော- ၍၊ အနယဗျသနံ - မကြီးပွားခြင်း ဆင်းရဲခြင်းသို့၊ [ အဝုဒ္ဓိ-မကြီးပွားခြင်းသည်၊ အနယော- မည်၏၊ ဗျသနံ - ဟူသည်၊ ဒုက္ခံ - တည်း၊ ] ပါပေဿတိ-ရောက်စေလတံ့၊ ပဋိကစ္စေဝ-စောစောကပင်၊ နံ-ထိုအနာကို၊ တိကိစ္ဆာပေဟိ—ဆေးကုစေလော၊ ဣတ်-သို့၊ ဝတွာ—၍၊ အာစရိယ - ဆရာ၊ သာဓု-ကောင်းပါပြီ၊ တွံယေဝ-အရှင်ဆရာသည်သာ၊ နံ-ထို အနာကို၊ တိကိစ္ဆသု-ဆေးကုပါလော၊ ဣတိ - သို့၊ ဝုတ္တေ - အပ်သော်၊ တဿ-ထိုယောက်ျား၏၊ အရောဂံ-ရောဂါမရှိသော၊ သရီရပ္ပဒေသံ-ကိုယ်အရပ်ကို၊ ဖာလေတွာ - ခွဲ၍၊ လောဟိတံ-သွေးကို၊ နီဟရိတွာ-ထုတ်၍၊ အာလေပန ဗန္ဓန ဓောဝနာဒီဟိ-ဆေးလိမ်းခြင်း, ကြပ်စည်းခြင်း, ဖန်ဆေးခြင်း အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ တံပဒေသံ-ကို၊ သဥ္ဆဝိံ-တင့်တယ်သောအရေရှိသည်ကို၊ [သုန္ဒရဝိံ- ဟု ယောဇနာ၌ မူကွဲပြ၏။] ကတွာ-၍၊ တံပုရိသံ-ကို၊ ဝဒေယျ- ရာ၏၊ (ကိံ-ရာသနည်း၊) ဟော-၏၊ မဟာရောဂေါ-ကြီးစွာသော ရောဂါကို၊ မယာ-သည်၊ တိကိစ္ဆိတော- ဆေးကုအပ်ပြီ၊ မေ- အား၊ ဒေယျဓမ္မံ - ပေးထိုက်သော သဘောရှိသော ဝတ္ထုကို၊ ဒေဟိ-ပေးပါလော၊ ဣတိ-သို့၊ (ဝဒေယျ၊)သော- ထို ယောကျ်ားသည်၊ တံ-ထိုဆေးဆရာကို၊ အယံ ဗာလဝေဇ္ဇော-၌မိုက်သော ဆေးဆရာသည်၊ မေ-၏၊ ကတရော-အဘယ်မည်သော၊ ရောဂေါ—ကို၊ တိကိစ္ဆိတောကိရ-ဆေးကုအပ်သတဲ့နည်း၊ အယံ-၌ဆေးဆရာသည်၊ မေ-၏၊ ဒုက္ခဥ္စ-ဆင်းရဲကိုလည်း၊ ဇနေတိ နနု-ဖြစ်စေသည် မဟုတ်လော၊ (မံ - ကို၊) လောဟိတက္ခယဥ္စ - သွေးတို့၏ ကုန်ခြင်းသို့လည်း၊ ပါပေတိနနု- ရောက်စေသည် မဟုတ်လော၊ [မေကို မံ ဟု ဝိဘတ်ပြင်၍ လိုက်စေ၊ လောဟိတက္ခယဥ္စ မံ ပါပေတီတိ ဝိဘတ္တိဝိပရိဏာမံ ကတွာ ယောဇေတဗ္ဗံ၊ ] ဣတိ ဝေံ—သို့၊ ဥပဝဒေယျစေဝ- မျက်ကွယ်၌လည်း စွပ်စွဲရာ၏၊ ဥပါရမ္ဘေယျစ -ဆရာပြောအပ်သမျှစကားတို့၌လည်း အပြစ်ဘင်ရာ၏၊ ဂရဟေယျစ-မျက်မှောက်၌လည်း ကဲ့ရဲ့ရာ၏၊ စ-သည်သာ မကသေး၊ အဿ- ထိုဆေးဆရာ၏၊ [ယောဇနာ၌ "န ဝါဿ" ဟု ရှိ၏၊ ထို ဝါလည်း သမုစ္စည်းပင်၊]ဂုဏံ-ကို၊ န ဇာနေယျ-ရာ၊ ဧဝမေဝ -ပင်၊ ဝီတိက္ကမဒေါသေ-ကျူးလွန်မှု အပြစ်သည်၊ အနုပ္ပန္နေ-မဖြစ်သေးမီ၊ပေ၊ ဝုတ္တံ—ခိန့်တော်မူအပ်ပြီ။

ဧဝံ-လျှင်၊ အကာလံ- အကာလကို၊ ဝါ - သိက္ခာပုဒ်ပညတ်သင့်ရာ မဟုတ်သောအခါကို၊ ဒဿေတွာ-၍၊ ပုန-တဖန်၊ကာလံ-ကာလကို၊ ဝါ-သိက္ခာပုဒ်ပညတ်သင့်ရာ အခါကို၊ ဒဿေတုံ - တော်မူခြင်းငှါ၊ ယတော စ ခေါ သာရိ

ပုဗ္ဗာဝတိ အာဒိံ–ကို၊ အာဟ-ပြီ၊ တတ္ထ-ထိုယတောစ ခေါ် သာရိပုတ္တ အစ ရှိသောပါဠိရပ်၌၊ ယတောတိ-ကား၊ ယဒါ- အကြင်အခါ၌၊ ယသ္မိံ ကာလေ-၌၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ သေသံ - ယတောမှ ကြွင်းသောပုဒ်အပေါင်း၏ ပဒ ယောဇနာပြုခြင်းကို၊ ဝုတ္တာနုသာရေနေဝ – ဆိုအပ်ပြီးသောနည်းကို အစဉ် လိုက်သဖြင့်သာလျှင်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ- ၏၊ [ သေသံ ပဒယောဇနေဒဿနံ၊– ဝိမတိ၊ သေသန္တိ သေသံ ပဒံ-ယောဇနာ။]

ဟိ-ထင်ရှားအောင်ပြဉုးအံ့၊ ဧတ္ထ–ဤယတောစ ခေါ် အစရှိသော ဝါကျ၌၊ အယံဝါ- ဤ ဆိုအပ်လတ္တံ့သော အနက်သည်သာလျှင်၊ သင်္ခေပတ္ထော- အကျဉ်းချုပ် အနက်တည်း၊ (လိုရင်းမှာ ဤဆိုအပ်လတ္တံ့သော အနက်ပါတဲ– ဟူလို၊) ယသ္မိံ သမယေ - ၌၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာ ဓမ္မာတိ – ဓမ္မာဟူ၍၊ သင်္ချံ - ခေါ်ဝေါ်အပ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ဂတာ-ရောက်ကုန်သော၊ ဝီတိက္ကမဒေါသာ- ကျူးလွန်မှုအပြစ်တို့သည်၊ သံဃေ-၌၊ ပါတုဘဝန္တိ– ထင်ရှားဖြစ်ကုန်၏၊ပေ၊ ပါတိမောက္ခံ–အာဏာပါတိမောက်ကို၊ ဥဒ္ဒိသတိ–ဟောပြတော်မူ၏၊ ကသ္မာ- အဘယ်ကြောင့်နည်း၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာဓမ္မာတိ- ဟူ၍၊ သင်္ချံ- သို့၊ ဂတာနံ- န်သော၊ တေသံယေဝ ဝီတိက္ကမဒေါသာနံ - ထို ကျူးလွန်မှု အပြစ်တို့ကိုပင်၊ ပဋိဃာတာယ-ပယ်ဖျောက်ခြင်း အကျိုးငှါတည်း၊ ဧဝံ-လျှင်၊ ပညပေန္တော- ပညတ်တော်မူလသော်၊ ယထာနာမ - ဥပမာ မည်သည်ကား၊ ကုသလော- ကျွမ်းကျင်သော၊ ဝေဇ္ဇော - ဆေးဆရာသည်၊ ဥပ္ပန္နံ – ဖြစ်နေသော၊ ဂဏ္ဍံ- အနာကို၊ ဖာလန လေပန ဗန္ဓန ဓောဝနာဒီဟိ- ခွဲစိတ်ခြင်း, ဆေးလိမ်းခြင်း, ကြပ်စည်းခြင်း,ဖန်ဆေးခြင်းအစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ တိကိစ္ဆန္တော-ဆေးကုလျက်၊ (ရောပေတွာ-အသားနုတက်စေ၍၊) ရောဂံ ကို၊ ဝူပသမေတွာ- ငြိမ်းပျောက် စေ၍၊ သဉ္ဆဝိံ - ကို၊ ကတွာ - ၍၊ ဥပဝါဒါဒိရဟော-ဥပဝါဒ အစရှိသည်ကို ထိုက်သည်၊ နတွောဟောတိ-မဖြစ်တော့သည်သာ၊ သကော-မိမိဥစ္စာဖြစ်သော၊

အယံ ဝါဧတ္ထ။ ။ဣဒါနိ ယောဇနံ ဒဿေန္တော အာဟ အယံဝါဟေတ္ထာတိ အာဒိ၊ တတ္ထ ဝါသဒ္ဒေါ အဝဓာရဏော၊ ဟိ သဒ္ဒေါ ပသိဒ္ဓိယံ၊ အယမေဝ ဟေတ္ထာတိ အတ္ထော၊ (ဝိမတိ)။ [ ယခုစာချုပ်၌ "ဧတ္ထ "ဟုသာ ရှိ၏၊ ဟိ- မပါ။] ယောဇနာ၌ ကား "ဟေ့ာ ပန သေသံ ဝုတ္တာနုသာရေနေဝ ဝေဒိတဗ္ဗံတိ ဝုတ္တတ္တာ အပရံ နယံ ဥဇပေန္တော အယံဝါတိ အာဒိ မာဟ၊ဝါတိ အပရော နယော"ဟုဝါကို ဝိကပ်ဖွင့်သည်။

ရောပေတွာ။ ။ဖာလိတဋ္ဌာနေ နိန္နံ မံသံ သမံ ဝနေတွာ—ခွဲအပ်ပြီးသော အရပ်၌ နိမ့်နေသောအသားကို ညီမျှအောင် တိုးပွားစေ၍ (အသားနုတက်စေ၍)။ – ဝိမတိ၊ သာရတ္ထ၌ "ဖာသုံကတွာ" ဟု ဖွင့်၏၊ [ "ရောဟေတွာ"ဟု မူကွဲရှိ၏။ ] ဤ ပါဌ် ၂ မျိုး လုံးပင် ယခုစာတို့၌ မတွေ့ရ၊ ရောဂံ ဝူပသမေတွာ၏ ရှေ့နား၌ ပါသင့်၏။

အာစရိယကေစ-ဆရာ၏အဖြစ်ကြောင့်လည်း၊ ဝါ-ဆရာ၏ ဆေးကုမှုကြောင့်လည်း၊ [ အာစရိယဿ+ဘာဝေါ, ကမ္မံဝါ အာစရိယကံ၊ နိမိတ္တတ္ထေ ခေတံ ဘုမ္မဝစနံ။]ဝိဒိတာနုဘာဝေါ-ထင်ရှားသောအာနုဘော်ရှိသည်၊ဝါ-နာမည်ကျော်သည်၊ ဟုတွာ-၍၊ သက္ကာရံ-ပူဇော်သက္ကာရသို့၊ ဝါ-ကို၊ ပါပုဏာတိ-(ယထာ-ရောက်သကဲ့သို့၊ ဝါ-ရသကဲ့သို့၊)ဧဝံ-ဤအတူ၊ဥပဝါဒါဒိရဟောစ-သည်လည်း၊ န ဟောတိ-မဖြစ်၊ သကေ - သော၊ သမ္မုညဝိသယေစ - သမ္ဗုည အရာကြောင့်လည်း၊ ဝိဒိတာနုဘာဝေါ – ရှိသည်၊ ဟုတွာ-၍၊ သက္ကာရံ-သို့၊ ပါပုဏာတိ-၏၊ အဿ- ထိုမြတ်စွာဘုရား၏၊ တဥ္စ သိက္ခာပဒံ-ထို သိက္ခာပုဒ်သည်လည်း၊ အကုပ္ပံ-သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ယထာဌာနေ–၌၊ ဝါ-၌၊ တိဋ္ဌတိ-၏၊ ဣတိ–ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ (သမ်ေပတ္ထော)။

ဧဝံ - လျှင်၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာနံ - အာသဝတို့၏ တည်ရာဖြစ်ကုန်သော၊ ဓမ္မာနံ-တို့၏၊ အနုပ္ပတ္တိံ - မဖြစ်ခြင်းကို၊ သိက္ခာပဒ ပညတ္တိယာ-၏၊ အကာလံ တိ - အကာလဟူ၍၎င်း၊ ဥပ္ပတ္တိံ - ဖြစ်ခြင်းကို၊ ကာလန္တိစ - ကာလဟူ၍၎င်း၊ ဝတွာ - မိန့်တော်မူပြီး၍၊ ဣဒါနိ - ၌၊ တေသံ ဓမ္မာနံ – ထို အာသဝဋ္ဌာနီယ တရားတို့၏၊ အနုပ္ပတ္တိကာလဥ္စ-မဖြစ်ရာအခါကို၎င်း၊ ဥပ္ပတ္တိကာလဥ္စ - ဖြစ်ရာအခါကို၎င်း၊ ဒဿေတုံ-ငှါ၊နတာဝ သာရိပုတ္တ ဣဓေကစ္စေတိ အာဒိံ-ကစ္စေ အစရှိသောစကားကို၊ အာဟ– မိန့်တော်မူပြီ၊ တတ္ထ-ထို နတာဝ သာရိပုတ္တ ဣဓေကစ္စေ အစရှိသောစကားရပ်၌၊ ဥတ္တာနတ္ထာနိ- ကုန်သော၊ ပဒါနိ-တို့ကို၊ ပါဠိဝသေနေဝ-ပါဠိ၏ အစွမ်းဖြင့်သာလျှင်၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ-န်၏၊ အယံပန-ဤ ဆိုအပ်လတံ့ကား၊ အနုတ္တာနပဒ ဝဏ္ဏနာ - မပေါ်လွင်သောပုဒ်တို့၏ အဖွင့်တည်း၊ရတ္တိယော-တို့ကို၊ဇာနန္တိ-သိကုန်၏၊ဣတိ-ကြောင့်၊ရတ္တညူ-တို့မည်၏၊ အတ္တနော- ၏၊ ပဗ္ဗဇ္ဇိတ ဒိဝသတော- ရှင်ရဟန်းပြုရာနေ့မှ၊ ပဋ္ဌာယ - ၍၊ ဗဟုကာ-များစွာကုန်သော၊ရတ္တိယော-တို့ကို၊ ဇာနန္တိ-န်၏၊စိရပဗ္ဗဇိတာ-ရဟန်းပြုပြီး၍ ကြာမြင့်သော ကာလရှိကုန်သော ထေရ်ကြီး ဝါကြီးတို့၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ရတ္တညူဟိ-ရဟန်းပြုရာကာလမှစ၍ များစွာသောညဥ့်တို့ကို သိကုန်သော ထေရ်ကြီး ဝါကြီး တို့ဖြင့်၊ မဟတ္တံ - များသည်၏ အဖြစ်သို့၊ ရတ္တညု မဟတ္တံ–သို့၊ စိရပဗ္ဗဇိတေဟိ- တို့ဖြင့်၊ မဟန္တဘာဝံ– များသည်၏အဖြစ်သို့၊ (ပတ္တော ဉ္စပ်)၊ ဣတိ အတ္ထော။

**ရတ္တညုမဟတ္တံ**။ ။မဟန္တဿ-များသော သံဃာ၏+ဘာဝေါ-ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာများခြင်း ဂုဏ်တည်း၊ မဟတ္တံ-ခြင်းဂုဏ်၊ "မဟန္တတ္တံ" ဟု ဖြစ်သင့်လျက် (န္တ) ချေ၍ "မဟတ္တံ "ဟု ဖြစ်သည်။ [ပါဠိတော်၌ "ပတ္တော"ဟု စပ်ပုဒ်ရှိသောကြောင့် မဟတ္တံ

တတြ - ထို န တာဝ သာရိပုတ္တ အစရှိသော ဝါကျ၌၊ သံဃေ - သည်၊ ရတ္တညုမဟတ္တံ-သို့၊ ပတ္တေ-ရောက်လသော်၊ ဝဏ္ဏပုတ္တံ-ဝဏ္ဏပုဏ္ဏားမ၏သား ဖြစ်သော၊ ဥပသေနံ- ဥပသေနကို၊ အာရဗ္ဘ- ၍၊ သိက္ခာပဒံ- ကို၊ ပညတ္တံ- ပြီ၊ ဣတိ ဝေဒိ တဗ္ဗံ၊ ဟိ- ချဲ့ဥုးအံ့၊ သော အာယသ္မာ - ထိုအရှင်သည်၊ ဦနဒသ ဝဿေ- ယုတ်လျော့သော ဆယ်ဝါရှိကုန်သော၊ ဝါ- ဆယ်ဝါ မရသေးကုန် သော၊ ဘိက္ခူ-ရဟန်းတို့ကို၊ ဥပသမ္ပါဒေန္တေ-ပြင့်မြတ်သောဥပဥ္စင်းအဖြစ်သို့ ရောက်စေသည်တို့ကို၊ ဝါ- ဥပဇ္ဈာယ်လုပ်၍ ပဥ္စင်းခံပေးသည် တို့ကို၊ ဒိသွာ- ၍၊ ဧကဝဿော-တဝါသာရှိသည်၊(ဟုတ္ဝာ-လျက်၊)သဒ္ဓိဝိဟာရိကံ-အတူနေ တပည့်သာမဏေကို၊ ဥပသမ္ပါဒေသိ-မြင့်မြတ်သော ပဥ္စင်းအဖြစ်သို့ ရောက်စေ ပြီ၊ အထ-ထိုအခါ၌၊ ဘဂဝါ-သည်၊ န ဘိက္ခဝေ ၊ပေ၊ ဒုက္ကဋဿာတိ-ဒုက္က ဋဿဟူ၍၊ သိက္ခာပဒံ- ကို၊ ပညတ္တံ-ပြီ၊ [ ဘိက္ခဝေ—တို့၊ ဦနဒသဝဿေန- သော ရဟန်းသည်၊ နဥပသမ္ပါဒေတဗ္ဗော - မြင့်မြတ်သော ပဥ္စင်းအဖြစ်သို့ မရောက်စေထိုက်၊ ဝါ – ဥပဇ္ဈာယ်လုပ်၍ ပဥ္စင်းခံမပေးထိုက်၊ ယော- အကြင် ရဟန်းသည်၊ ( ဦနဒသဝဿော ဟုတွာ ) ဥပသမ္ပာဒေယျ - အံ့၊ ဝါ - အံ့၊ (တဿ-ထိုရဟန်း၏၊) ဒုက္ကဋဿ-ဒုက္ကဋ်အာပတ်သို့၊ အာပတ္တိ- ရောက်ခြင်း သည်၊(ဟောတိ-၏။)]

ဇဝံ-လျှင်၊ သိက္ခာပဒေ-ပုဒ်ကို၊ ပညတ္တေ-ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးသော်၊ ပုန- တဖန်၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ (မယံ- တို့သည်၊) ဒသဝဿာ-ဆယ်ဝါရှိကုန်သည်၊ အမှ - ဖြစ်ကုန်၏၊ (မယံ) ဒသဝဿာ အမှ , ဣတိ - ဤသို့ပြော၍၊ ဗာလာ- ဝိနည်းအရာတွင် မကျွမ်းကျင်ကုန်သည်၊ အဗျတ္တာ - မထက်မြက်ကုန်သည်၊ (ဟုတွာ - ၍၊) ဥပသမ္ပာဒေန္တိ - န်၏၊ အထ - ၌၊ ဘဂဝါ- သည်၊ န ဘိက္ခဝေ ဗာလေန၊ပေ၊အတိရေက ဒသဝဿေနဝါ ဥပသမ္ပာဒေတုန္တိ—တုံဟူ၍၊ အပရ မ္ပိ-လည်းဖြစ်သော၊ သိက္ခာပဒံ-ကို ပညာပေသိ-ပြီ၊ [ဘိက္ခဝေ-တို့၊ ဗာလေန- ဝိနည်းအရာတွင် မကျွမ်းကျင်သော၊ အဗျတ္တေန-မထက်မြက်သော (ဘိက္ခုနာ- သည်၊ ) န ဥပသမ္ပာဒေတဗ္ဗော - စေထိုက်၊ ယော ( ဗာလော အဗျတ္တော ဟုတ္ဝာ-လျက်၊)ဥပသမ္ပာဒေယျ၊ (တဿ-၏၊)ဒုက္ကဋဿ-သို့၊ အာပတ္တိ-သည်၊ (ဟောတိ-၏၊) ဘိက္ခဝေ- တို့၊ ဗျတ္တေန- ဝိနည်းအရာ၌ ထက်မြက်သော၊ ပဋိ

မဟန္တဘာဝံတို့ကို ဒုတိယန္တ ဟု မှတ်။ [ “ ရဟန်းပြုရာကာလမှစ၍ များစွာသော ညဥ့် တို့ကို သိ ” ဟူသော စကားဖြင့် ထိုပုဂ္ဂိုလ်တို့၏ အသက်သိက္ခာ ( ဝါ ) ကြီးပုံကိုရင်း, ဇာနန္တိ အရ “ထို ရေ်ကြီး ဝါကြီးတို့၏ အသိပညာ သတိကောင်းကြပုံကိုရင်း ပြ၏၊ ထို့ကြောင့် ရတ္တညူအဖြစ်ကို ဂဏ်တမျိုး—ဟု မှတ်။ ]

ဗလေန - သဒ္ဓိဝိဟာရိက တပည့်တို့ကို စောင့်ရှောက်ခြင်း၄ါ စွမ်းနိုင်သော၊ ဒသဝဿေနဝါ-ဆယ်ဝါရှိသည်မူလည်း ဖြစ်သော၊ အတိရေက ဒသဝဿေ နဝါ-ဆယ်ဝါထက်ပိုသော ဝါရှိသည်မူလည်း ဖြစ်သော၊ ဘိက္ခုနာ - သည်၊ ဥပသမ္ပာဒေတုံ-၄ါ၊ အနုဇာနာမိ- ခွင့်ပြုတော်မူ၏။] ဣတိ - သို့လျှင်၊ (ဣတိ တလုံး အကြေကြံ၊ ) ရတ္တညုမဟတ္တံ - ရဟန်းပြုရာကာလမှစ၍ များစွာသော ညဉ့်တို့ကိုသိကုန်သော ထေရ်ကြီး ဝါကြီးတို့ဖြင့် များသည်၏အဖြစ်သို့၊ ပတ္တကာလေ-ရောက်ရာအခါ၌၊ ဒွေ-၂ ပါးကုန်သော၊ သိက္ခာပဒါနိ- တို့ကို၊ ပည ဏ္ဍာနိ-မူအပ်ကုန်ပြီ။

ဝေပုလ္လ မဟတ္တန္တိ- ကား၊ ဝိပုလဘာဝေန - ပြန့်ပြောသည်၏ အဖြစ်ဖြင့်၊ မဟတ္တံ - များသည်၏ အဖြစ်သို့၊ ("ပတ္တော နဟောတိ" ၌စပ်၊ ) ဟိ - ချဲ့၊ သံဃော - သည်၊ ယာဝ - လောက်၊ ထေရနဝမဇ္ဈိမာနံ - မတို့၏၊ ဝသေန– အပြားအားဖြင့်၊ဝေပုလ္လမဟတ္တံ-ပြန့်ပြောသည်၏အဖြစ်ဖြင့်များသည်၏အဖြစ် သို့၊ ပတ္တော-သည်၊ န ဟောတိ-သေး၊ တာဝ–ထို ဝေပုလ္လမဟတ္တသို့ မရောက် သေးသမျှကာလပတ်လုံး၊ သေနာသနာနိ - ကျောင်း, အိပ်ရာ နေရာတို့သည်၊ ပဟောန္တိ – လောက်ကုန်သေး၏၊ သာသနေ – ၌၊ ဧကေစ္စ – ကုန်သော၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာ –န်သော၊ ဓမ္မာ-အာဝေါသ မဣရိယစသော့တရားတို့သည်၊ [ "စသော " ဖြင့် ကျောင်းလုခြင်း စသည်တို့ကို ယူ၊] န ဥပ္ပဇ္ဇန္တိ - ကုန်သေး၊ ပန- အန္တယကား၊ ဝေပုလ္လမဟတ္တံ - သို့၊ ပတ္တေ - သော်၊ တေ - ထို အာသဝ ဋ္ဌာနီယဓမ္မတို့သည်၊ ဥပ္ပဇ္ဇန္တိ – ၏၊ အထ - ၌၊ သတ္ထာ- သည်၊ သာဝကာနံ- တို့အား၊ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ ပညပေတိ- ၏၊ တတ္ထ-ထို န တာဝ သာရိပုတ္တ အစရှိ သော စကားရပ်၌၊ သံဃေ-သည်၊ ဝေပုလ္လမဟတ္တံ-သို့၊ ပတ္တေ-သော်၊ ပညတ္တ သိက္ခာပဒါနိ-ပညတ်အပ်သော သိက္ခာပုဒ်တို့ကို၊ ယောပနဘိက္ခုပေပါစိတ္တိ ယန္တိ-ပါစိတ္တိယံ ဟူသော၊ ဣမိနာနယေန- ဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ- န်၏၊ [သိက္ခာ ပုဒ်များကို အနက်ပေးပါ၊ ဣမိနာ နယေနာတိ ဧတေန - ဖြင့်၊ ပဒသောဓမ္မ သိက္ခာပဒါဒိနံ-တို့ကို၊ သင်္ဂဟော ဒဋ္ဌဗ္ဗော။]

**ဝေပုလ္လမဟတ္တံ**။ ။ဝိပုလဿ – ပြန့်ပြော များပြားသော သံဃာ၏ + ဘာဝေါ ဝေပုလ္လံ၊ ဤ"ဝေပုလ္လ–ပြန့်ပြော" ဟူသည် ရတ္တညူတို့ဖြင့် များနေရုံမက, "ထေရ-နဝ-မဇ္ဈိမ "ပုဂ္ဂိုလ် ၃ မျိုးလုံး အသီးအသီး ပြန့်ပြော များပြားနေခြင်းတည်း၊ ဤ ဝေပုလ္လ ပုဒ်သည် မဟတ္တံ၏ အဘိန္နဝိသေသနတည်း၊ "ဝေပုလ္လေန (ဝိပုလဘာဝေန) +မဟတ္တံ ဝေပုလ္လမဟတ္တံ" ဟု ပြု၊ ထေရ နဝ မဇ္ဈိမပုဂ္ဂိုလ်အားဖြင့် ကျယ်ပြန့်သည်ကို ဝေပုလ္လဟု ဆို၍, ထိုပုဂ္ဂိုလ် ၃ မျိုးလုံး များသည်ကို မဟတ္တဟု ဆိုသည်။

လာဘဂ္ဂမဟတ္တန္တိ-ကား၊ လာဘဿ-လာဘ်၏၊ အဂ္ဂမဟတ္တံ - ကောင်းမြတ်သော မဟန္တ၏ အဖြစ်သို့၊ ( ပတ္တော န ဟောတိ , ပါဠိတော်၌ စပ်၊ ) လာဘဿ-၏၊ အဂ္ဂေါ ဥတ္တမော-ကောင်းမြတ်သော၊ ယောမဟန္တဘာဝေါ-အကြင် မဟန္တ၏ အဖြစ်သည်၊(အတ္ထိ၊)တံ-ထို ကောင်းမြတ်သော မဟန္တ၏ အဖြစ်သို့၊ ပတ္တော - သည်၊ ဟောတိ - ၏၊ ဣတိ အတ္ထော၊ ဝါ - တနည်း၊ လာဘေန-လာဘ်အားဖြင့်၊ အဂ္ဂမဟတ္တံပိ-မြတ်သည်၏အဖြစ်, များသည်၏ အဖြစ်သို့လည်း၊ လာဘေန-အားဖြင့်၊ သေဋ္ဌတ္တဉ္စ-မြတ်သည်၏ အဖြစ်သို့၎င်း၊ မဟန္တတ္တဉ္စ-များသည်၏ အဖြစ်သို့၎င်း၊ ပတ္တော-သည်၊ (န ဟောတိ)၊ ဣတိ အတ္ထော၊ ဟိ-ချဲ့၊ယံ၊ ယော-သည်၊ ယာဝ-အကြင်မျှလောက်၊ လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ-လာဘ်၏ အမြတ်ဟူသော မဟန္တ၏အဖြစ်သို့၊ ဝါ-လာဘ်အားဖြင့် မြတ်သည်၏အဖြစ်များသည်၏အဖြစ်သို့၊ ပတ္တော-ရောက်သည်၊ န ဟောတိ-သေး၊တာဝ-

လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ။ ။ဤပါဠိကို အဋ္ဌကထာ၌ ၂ နည်းဖွင့်၏၊ ပဌမနည်း၌ "လာဘဿ+အဂ္ဂမဟတ္တံ"ဟု အကျဉ်းပြ၍ "ယော၊ပေ၊ တံ" ဟု အကျယ်ပြ၏၊ ထိုအကျယ်၌ "အဂ္ဂေါ ဥတ္တမော"ဝယ် အဂ္ဂေါသည် လာဘဂ္ဂ၌ အဂ္ဂတည်း၊ ထိုအဂ္ဂ၏ ဥတ္တမအနက်ကို ယူစေလို၍ "ဥတ္တမော" ဟု ဖွင့်သည်၊ "မဟန္တဘာဝေါ" သည် မဟတ္တံ၏ အဖွင့်တည်း၊ ထိုမဟန္တဘာဝေါကို"အဂ္ဂေါ ဥတ္တမော"ဟု ဝိသေသနပြုထား၏၊ ထို့ကြောင့် "လဘိတဗ္ဗောတိ လာဘော၊မဟန္တဿ + ဘာဝေါ မဟတ္တံ၊ အဂ္ဂံစ +တံ+ မဟတ္တဉ္စာတိ အဂ္ဂမဟတ္တံ၊ လာဘဿ + အဂ္ဂမဟတ္တံ လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ" ဟု ပြု၊ ဤနည်း၌"လာဘ်တွေ ကောင်းခြင်း, မွန်မြတ်ခြင်း (တနည်း—များခြင်း) ကို ပြ၏"ဟု မှတ်။

သာရတ္ထ။ ။စီဝရာဒိလာဘိတဗ္ဗပစ္စယော လာဘော၊ တဿ (လာဘဿ) အဂ္ဂံ မဟတ္တံ၊ ပဏီတတာ, ဗဟုဘာဝေါစ၊ အဋ္ဌကထာ၌ "ယော လာဘဿ အဂ္ဂေါ ဥတ္တမော မဟန္တဘာဝေါ" ဟု အဂ္ဂကို မဟန္တဘာဝေါ၏ ဝိသေသနအဖြစ်ဖြင့် ဖွင့်သောကြောင့် ဤဋီကာ၌လည်း အဂ္ဂံကို မဟတ္တံ၏ဝိသေသနဟုပင် ယူရတော့မည်၊ မဟတ္တံကိုလည်း "ပဏီတတာ, ဗဟုဘာဝေါစ"ဟု ၂ နည်းဖွင့်၏၊ ထိုတွင် "ပဏီတတာ"ဖြင့် လာဘ်၏ အထက်တန်းကျ၍ အဂ္ဂဖြစ်သည့်အပြင်,မွန်မွန်မြတ်မြတ်ဖြစ်ပုံကိုပြ၏၊ ဤအလို "လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ — လာဘ်၏ ကောင်း မွန်သည်၏အဖြစ်သို့"ဟု ပေး၊ ဗဟုဘာဝဖြင့် လာဘ်၏ကောင်း၍ များသည်၏အဖြစ်ကို ပြ၏၊ ဤအလို "လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ—လာဘ်၏ ကောင်းသောအများ၏ အဖြစ်သို့" ဟု ပေး၊ အညံ့စားတွေ များနေသည်မဟုတ်, အကောင်းတွေများနေသည်—ဟူလို။

လာဘေန ဝါ၊ပေ၊ပတ္တော။ ။ဤနည်းဝယ် တချို့စာတို့၌"အဂ္ဂံ မဟန္တံပိ"ဟု ရှိ၏၊ ယောဇနာ၌ "အဂ္ဂမဟတ္တံပိ" ဟု ရှိ၏၊ ထို အတိုင်းကောင်းသည်၊ ပိသဒ္ဒါသည် ရှေ့နည်းကို ပေါင်းသော သမ္ပိဏ္ဍနတည်း၊ "အဂ္ဂမဟတ္တံ"ကို"သေဋ္ဌတ္တဉ္စ မဟန္တတ္တဉ္စ" ဖွင့်သောကြောင့် အဂ္ဂနှင့် မဟန္တကို အရတူမယူဘဲ အရကွဲဒွန် ဟု ယူစေသည်၊အဂ္ဂေါစ-အမြတ်လည်း + မဟန္တောစ— အများလည်း၊ အဂ္ဂမဟန္တံ၊ အဂ္ဂမဟန္တဿ + ဘာဝေါ

ထိုလာဘဂ္ဂမဟတ္တသို့ မရောက်သေးသမျှ ကာလပတ်လုံး၊ လာဘံ-ကို၊ ပဋိစ္စ-စွဲ၍၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာ-န်သော၊ ဓမ္မာ-(ဇုသော မစ္ဆရိယ အရင်းခံသော) ကျူးလွန်မှုတရားတို့သည်၊ န ဥပ္ပဇ္ဇန္တိ - န်သေး၊ ပန - အန္ဓယကား၊ ပတ္တော-သော်၊ ဥပ္ပဇ္ဇန္တိ - န်၏၊ အထ-၌၊ သတ္ထာ သာဝကာနံ သိက္ခာပဒံ ပညပေတိ၊ (ကိံ-အဘယ်သို့ ပညတ်တော်မူသနည်း၊)ယောပနဘိက္ခု ၊ပေ၊ ပါစိတ္တိယန္တိ-ပါစိတ္တိယံ ဟူ၍၊(ပညပေတိ)၊ ဟိ-မှန်၏၊ ဇုဒံ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ သံဃေ-သည်၊ လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ-လာဘဂ္ဂမဟတ္တသို့၊ ပတ္တေ-သော်၊ ပညတ္တံ-ပညတ်အပ်ပြီ။

ဗာဟုသစ္စမဟတ္တန္တိ-ကား၊ ဗာဟုသစ္စသ - များသော သုတရှိသော သံဃာ၏ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ များစွာတတ်ကျွမ်းမှု၏၊ မဟန္တဘာဝံ-ကြီးကျယ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ( ပတ္တော နဟောတိ၊ ) ဟိ-ချဲ့၊ သံဃော - သည်၊ ယာဝ-လောက်၊ ဗာဟုသစ္စမဟတ္တံ - များသောသုတရှိသော သံဃာ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ များစွာတတ်ကျွမ်းမှု၏ ကြီးကျယ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ပတ္တော နဟောတိ၊ တာဝ-ထိုဗာဟုသစ္စ မဟတ္တသို့ မရောက်သေးသမျှကာလပတ်လုံး၊အာသဝဋ္ဌာနီယာ ဓမ္မာ, န ဥပ္ပဇ္ဇန္တိ-န်သေး၊ ပန - အန္ဓယကား၊ ဗာဟုသစ္စမဟတ္တံ-တ္တသို့၊ ပတ္တေ-သော်၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ဧကမ္ပိနိကာယံ-နိကာယ်တရပ်ကိုရင်း၊

အဂ္ဂမဟတ္တံ။ [တ္တကို“အဂ္ဂတ္တံ မဟတ္တံ”ဟု အဂ္ဂနှင့်လည်းတွဲ၊ “ဒွန်၏နောက်၌, ရှိသောပုဒ်, ယှဉ်လိုက်ပုဒ်တိုင်းသာ” ပင်တည်း။] လာဘေန+အဂ္ဂမဟတ္တံ လာဘဂ္ဂမဟတ္တံ၊ ဤနည်း၌ “လာဘ်အားဖြင့် မြတ်” ဟူသည် လာဘ်ပေါများသဖြင့် သံဃာတွေ အဆင့်အတန်းမြင့်နေခြင်းတည်း၊ “လာဘ်အားဖြင့် များ”ဟူသည် လာဘ်ပေါသဖြင့်(လာဘ်ပေါသောကြောင့်) ရဟန်းပြုသူတွေ များလာခြင်းတည်း။

**ဗာဟုသစ္စမဟတ္တံ**။ ။ဗဟု+သုတံ ယေန (သံဃေန) တိ ဗဟုဿုတော၊ ဗဟုဿုတဿ+ ဘာဝေါ ဗာဟုသစ္စံ — များသော သုတရှိသော သံဃာ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ (ပိဋကတ်၌ တတ်ကျွမ်းမှု) ဂုဏ်တည်း၊ ထိုဂုဏ်၏ မဟတ္တဟူသည် တတ်ကျွမ်းမှုတွေ ကျယ်ဝန်းများပြားလာခြင်းတည်း။

**ဆက်ဉူးအံ့**။ ။ ပိဋကတော်နှင့် ဘာသန္တရပါ တတ်ကျွမ်းမှု များသော အခါ ယောနိသော မနသိကာရရှိ၍ သင့်တော်အောင်နှလုံးသွင်းတတ်လျှင်သာသနာတော်ကို တည်တံ့ တိုးတက်အောင် ပြုနိုင်၏၊ ယောနိသော မနသိကာရ မရှိလျှင်ကား ပိဋကတော်၌ “ ထိုတရားသည် လောကဓာတ်နည်းနဲ့ မကိုက်ညီ, ဤတရားကား ဘုရားဟော မဟုတ်, “ဘုရား” ဆိုသော ပုဂ္ဂိုလ်သည်ပင် ထိုခေတ်က ပညာရှိတပါးသာ”ဟု ဝေဘန်လျက် ဘုရား အဆုံးအမ တော်ကို ရှေ့ကဖျက် နောက်ကဖျက်နှင့် ( သာမန် အာသဝဋ္ဌာနီယမျှ မကဘဲ) သာသနာပျက်လောက်သော အာသဝဋ္ဌာနီယဓမ္မများကို ဖြစ်စေကြပါလိမ့်မည်။

ဋ္ဌေပိ နိကာယေ – တို့ကိုငင်း၊ တယောပိ နိကာယေ, စတ္တာရောပိ နိကာယေ, ပဉ္စပိ နိကာယေ - နိကာယ် ၅ရပ်တို့ကိုငင်း၊ ဥဂ္ဂဟေတွာ - သင်ယူပြီး၍၊ အယောနိသော - မသင့်သော အကြောင်းအားဖြင့်၊ ဥမ္မုဇ္ဇမာနာ - မိမိကိုယ်ကို ဖေါ်ကြကုန်သော၊ဝါ-မော်ကြမော်ကြကုန်သော၊ ပုဂ္ဂလာ-တို့သည်၊ရသေန-အနဝဇ္ဇသဘောနှင့်၊ ရသံ-သာဝဇ္ဇသဘောကို၊ [(တနည်း၊) ရသေန-အပြစ်မရှိသော ဖဲမွေ့ရာ အစရှိသည်တို့၏အတွေ့ကို သာယာခြင်းနှင့်၊ ရသံ-အပြစ်ရှိသော မာတုဂါမ၏ အတွေ့ကို သာယာခြင်းကို၊ [သံ သန္ဒိတွာ - သဘောတူ ရောနှော၍၊သတ္ထု-၏၊ သာသန်-တော်ကို၊ ဥဒ္ဓမ္မံ-ထွက်သွားသော ဓမ္မရှိသည်ကို၊ ဝါ - တရားမှ ထွက်သွားအောင်၊ ဥဗ္ဗိနယံ - ထွက်သွားသော ဝိနည်းရှိသည်ကို၊ ဝါ-ဝိနည်းမှ ထွက်သွားအောင်၊ ဒီပေန္တိ -ပြကြကုန်၏၊ အထ – ၌၊ သတ္ထာ-သည်၊ ယော ပန ဘိက္ခု၊ပေ၊စေ ဝဒေယျာတိ အာဒိနာ – ယျ အစရှိသော၊ နယေန-ဖြင့်၊ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ ပညပေတိ – မူ၏၊ ဣတိ – ဤ ကား၊ အနုတ္တာနပဒဝဏ္ဏနာ-တည်း၊ (အယံ ပန အနုတ္တာနပဒဝဏ္ဏနာကို ပြန်အုပ်၊)

ဝေံ-လျှင်၊ ဘဂဝါ - သည်၊ အာသဝဋ္ဌာနီယာနံ-န်သော၊ ဓမ္မာနံ-တို့၏၊ အနုပ္ပတ္တိကာလဥ္စ-မဖြစ်ရာအခါကိုငင်း၊ ဥပ္ပတ္တိကာလဥ္စ- ကိုငင်း၊ ဒဿေတွာ-မူပြီး၍၊ တသ္မိံ သမယေ-၌၊(အရှင်သာရိပုတြာ တောင်းပန်ရာထိုအခါ၌၊)သဗ္ဗသောပိ - အလုံးစုံသော အခြင်းအရာ အားဖြင့်လည်း၊ တေသံ - ထို အာသဝဋ္ဌာနီယဓမ္မတို့၏၊ အဘာဝံ- မရှိခြင်းကို၊ ဒဿေန္တော - မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ၊) နိရဗ္ဗုဒေါ ဟိ သာရိပုတ္တာတိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ - မူပြီ၊ တတ္ထ- ထို နိရဗ္ဗုဒေါ

**အယောနိသော ဥမ္မုဇ္ဇမာနာ။** ။ အနုပါယေန – စီးပွါးချမ်းသာကို ရခြင်း၏ အကြောင်းမဟုတ်သောအားဖြင့်၊ အဘိနိဝိသမာနာ-နှလုံးသွင်းကြကုန်သော၊ ဝိပရီတတော–ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန်အားဖြင့်၊ ဇာနမာနာ– (အလွဲသိ) သိကြကုန်သော။

**ရသေန ရသံ သံသန္ဒိတွာ။** ။အနဝဇ္ဇသဘာဝေန သာဝဇ္ဇသဘာဝံ သံမိဿိတွာ၊ (ဝိမတိ၊ ) အနုညာတပစ္စတ္ထရဏာဒီသု – ခွင့်ပြုတော်မူအပ်သော အခင်းအရှို အစရှိသည်တို့၌၊ သုခသမ္ဖဿသာမညတော – ကောင်းသောအတွေ့ချင်း တူသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဥပါဒိန္နက ဖဿရသေပိ–ဥပါဒိန္နက ဖြစ်သော မာတုဂါမ၏ အတွေ့ ဟူသော အရသာ၌လည်း၊ ဝါ–အရသာကိုသာယာခြင်း၌လည်း၊ အနဝဇ္ဇသညိတာယ-အပြစ်မရှိဟု မှတ်ထင်ခြင်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အနုပါဒိန္နက ဖဿရသေန ဥပါဒိန္နက ဖဿရသံ သံသန္ဒိတွာ၊ သမာနဘာဝံ ဥပနေတွာတိ အတ္ထော၊ (သာရတ္ထ။)

**ဥဒ္ဓမ္မံ ဥဗ္ဗိနယံ။** ။ဥဂ္ဂတဓမ္မံ ဥဂ္ဂတဝိနယဉ္စ၊ ဥသဒ္ဒေါသည် ဥဂ္ဂတအနက်ဟောတည်း၊ ယထာ ဓမ္မောစ ဝိနယောစ ဝိနဿိဿတိ၊ ဧဝံကတွာတိ အတ္ထော – ဓမ္မဝိနယကို ပျက်အောင်လုပ်၍ဟု အနက်မှတ်။

အစရှိသောစကားရပ်၌၊ နိရဗ္ဗုဒေါတိ-ကား၊ အဗ္ဗုဒဝိရဟိတော- အဗ္ဗုဒမှကင်း၏၊ စောရာ-တို့ကို၊ အဗ္ဗုဒါ- ဒတို့ဟူ၍၊ ဝုစ္စန္တိ- န်၏၊ နိစ္စောရော- ခိုးသူမရှိ၊ ဣတိအတ္ထော-နက်၊ စ-ဆက်၊ ဣမသ္မိံ အတ္ထေ - ၌ နိရဗ္ဗုဒေါ ဟိ သာရိပုတ္တ ဘိက္ခုသံဃောဟု ဆိုအပ်သော ဘိက္ခုသံဃာ ဟူသောအနက်၌၊ [ နိရဗ္ဗုဒေါဟိ သာရိပုတ္တ ဘိက္ခုသံဃောတိ ဧဝံ ဝုတ္တဘိက္ခုသံဃသည်တေ အတ္ထေ။ ] ဒုဿီလာ-ဒုဿီလရဟန်းတို့ကို၊ စောရာတိ- ရတို့ဟူ၍၊ အဓိပ္ပေတာ- အလိုရှိအပ်ကုန်၏၊ ဟိ- မှန်၊ (တနည်း၊) ဟိ (ယသ္မာ)- ကြောင့်၊ တေ - ထို ဒုဿီလရဟန်းတို့သည်၊ အဿမဏာဝ - ရဟန်းအစစ် မဟုတ်ကုန် သည်သာလျှင်၊ ဟုတ္వာ-၍၊ သမဏပ္ပဋိညတာယ-ရဟန်းဟု ဝန်ခံခြင်းရှိကုန်သည်၏ အဖြစ်ဖြင့်၊ [ သမဏောဟ္ကတိ ပဋိညာ ယေသံတိ သမဏပဋိညာ၊ တေသံ + ဘာဝေါ သမဏပဋိညတာ။] ပရေသံ-အခြားသော လူဒါယကာတို့၏၊ ပစ္စယေ-တို့ကို၊ စောရေန္တိ- ခိုးရာရောက်ကုန်၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ နိရဗ္ဗုဒေါတိ (ဧတ္ထ)- ၌ ပါဌ်၌၊ နိစ္စောရော-ခိုးသူမရှိ၊ နိဒ္ဒုဿီလော-ဒုဿီလမရှိ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ [ ခိုးသူနှင့်တူသော ဒုဿီလတို့ကို အဗ္ဗုဒဟု ခေါ်ရာ၌ သဒိသူပစာ, ရုဠှီနည်းတည်း၊ တနည်း–" အဗ္ဗုဒါဝိယာတိ အဗ္ဗုဒါ" ဟု ဥပမာတဒ္ဓိတ်ဆင့်ပါ - ဟု ပြသည်။] နိရာဒီနဝေါတိ - ကား၊ နိရုပဒ္ဒဝေါ - ဥပဒ္ဒဝေါမရှိ၊ နိရုပသဂ္ဂေါ-ဘေးရန်မရှိ၊ ဒုဿီလာဒီနဝ ဝိရဟိတော-ဒုဿီလဟူသော ဘေးရန်မှကင်း၏၊

**အဗ္ဗုဒါ၊ပေ၊ စောရာ ။** ။ ထောမနိမိ၌ အဗ္ဗုဒသဒ္ဒါသည် " အဗ္ဗုဒအသားတစ်သဏ္ဍာန်ရှိသော ရောဂါအထူး , အဗ္ဗုဒသင်္ချာ , အဗ္ဗုဒမည်သောတောင် " ဟူသောအနက်များကိုဟော၏-ဟု ဆို၏၊ ရေမြှုပ်ပွက်ဟူသောအနက်ကို ဟောရာ၌ "အဗ္ဗုဒ" ဟု မရှိ၊ "ဗုဗ္ဗုဒ" ဟုသာ ရှိ၏၊ ခိုးသူအနက်ကို ဟောရာ၌ ပါဠိသုံးသက်သက် ရုဠှီသဒ္ဒါဟု ကြံသင့်၏၊ ထို့ကြောင့် အထင်ရုဠှီသဒ္ဒါဖြစ်ကြောင်း သိစေလို၍ " အဗ္ဗုဒါ ဝုစ္စန္တိ စောရာ" ဟု ဝုစ္စန္တိသဒ္ဒါဖြင့် ဆိုဟန်တူသည်။ [ အချို့က အဗ္ဗဓာတ်၏ ဟိံသာအနက်ကိုယူ၍ "အဗ္ဗန္တိ ဟိံသန္တိတိ အဗ္ဗုဒါ"ဟု ကြံကြသေး၏၊ ဥဒကို ဘယ်ကရမည်တဲ့နည်း၊ ဤသို့ အန္တတ္ထအမည်ဖြစ်လျှင် "အဗ္ဗနတော ဟိံသနတော" ဟု ဟိတ်ပါဌ်ပါရာ၏၊ ထိုသို့ မပါသောကြောင့် အန္တတ္ထလည်း မဖြစ်နိုင်။]

**နိရာဒီနဝေါ။** ။အာပုဗ္ဗ-ဒီဓာတ်သည် ကုန်ခန်းခြင်း (ခယ) အနက်ကို ဟော၏၊ အာဒီနပုဗ္ဗ + ဝါဓာတ်၊ က ( အနုဗန် "က်" ရှိသောအ) ပစ္စည်းဖြင့် "အာဒီနဝ"ဟု ဖြစ်၏၊ သဏ္ဍတအဘိဓာန်၌ "အာဒီနံ + ဝါတိ (ပါပုဏာတိ) ဧတေနာတိ"ဟု ပြု၏၊ ဆင်းရဲ ပင်ပန်းခြင်းသို့ ရောက်ကြောင်းဘေးရန်ကို " အာဒီနဝ " ဟု ယူပြီးလျှင် ထိုဘေးရန်မရှိသည်ကို "နတ္ထိ+ အာဒီနဝေါ ယဿာတိ နိရာဒီနဝေါ"ဟု ပြုစေလို၍ "နိရုပဒ္ဒဝေါ, နိရုပသဂ္ဂေါ" ဟု ဖွင့်သည်။ [ဥပဒ္ဒဝနှင့် ဥပသဂ္ဂကား ပရိယာယ်။]

ဧတိယေ၀- ဤအနက်သည်သာ၊ ၀ါ - ကိုသာ၊ ၀ုတ္တံဟောတိ၊ [ ယေ၀ါတိဒ္ဓ ဝေကို အဋ္ဌာနပယောဂကြ၍ " ဧတိဝေ " ဟု တွဲ၊ ဤ၌လည်း ဒုဿီလတို့ကို သဒိသူပစာ ဥပမာတဒ္ဓိတ်အားဖြင့် အာဒီနဝဟု ခေါ်၊]

အပဂတကာဠကောတိ ဧတ္ထ-ပါဌ်၌၊ ဒုဿီလာယေ၀-ဒုဿီလရဟန်းတို့ ကိုပင်၊ ကာဠကာ -ကာဠကတို့ဟူ၍၊ ၀ုစ္စန္တိ-၏၊ [အာဒီနဝကဲ့သို့ ဒုဿီလချင်း တူ၍ "ဝေ"ဖြင့် ပြသည်၊] ဟိ-မှန်၊ တေ -ထို ဒုဿီလရဟန်းတို့ကို၊ သုဝဏ္ဏ ၀ဏ္ဏာ - ရွှေအဆင်းနှင့် တူသော အဆင်းရှိကုန်သည်၊ သမာနာပိ - နှ်သော် လည်း၊ ကာဠကဓမ္မယောဂါ-မည်းညစ်သော အကုသိုလ် တရားတို့နှင့် ယှဉ် ခြင်းကြောင့်၊ [ဤ ပါဌ်ဖြင့် အကုသိုလ်၏ အမည်းအနက်ဂုဏ်ကို ပုဂ္ဂိုလ်၌ တင် စားသော "ဂုဏူပစာ" ဟု ပြ၏၊] ကာဠကာတွေဝ-ကာဠကတို့ ဟူ၍သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ - ကုန်၏၊ တေသံ -ထိုဒုဿီလဟူ, မည်းညစ်သူတို့၏၊ အဘာ၀ါ- မရှိခြင်းကြောင့်၊ အပဂတကာဠကော-ဠကမည်၏၊ အပဟတ ကာဠကောတိ ပိ-ဠကဟူ၍လည်း၊ ပါဌော - ပါဌ်ရှိသေး၏၊ [ဟနလည်း ဂတိ အနက်ဟော ဖြစ်၍ အပဂတနှင့် အနက်တူပင်၊] သုဒ္ဓေါတိ-ကား၊ အပဂတ ကာဠကတ္တာ ယေ၀ - ကင်းသော မည်းညစ်သူ ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ပင်၊ သုဒ္ဓေါ - စင် ကြယ်၏၊ ပရိယောဒါတော – ထက်ဝန်းကျင် ဖြူစင်၏၊ ပဘဿရော – ပြိုးပြိုး ပြက်ပြက်ထွက်သော သီလရောင်ရှိ၏၊ [ပဘဿရသီလော၊ ဝိမတိ၌ " ပဘာ ယနသီလော-တောက်ပသောသီလရှိ၏ " ဟု ရှိ၏၊ ] သာရေ ပတိဋ္ဌိတောတိ ဧတ္ထ - ဤ ပါဌ်၌၊ သီလ သမာဓိ ပညာ ဝိမုတ္တိ ဝိမုတ္တိဉာဏဒဿနဂုဏာ- သီလဂုဏ်၊ပေ၊ဝိမုတ္တိဉာဏဒဿနဂုဏ်တို့ကို၊သာရောတိ-သာရဟူ၍၊ဝုစ္စန္တိ- န်၏၊[သာသနမြဟ္မစရိယဿ သာရဘူတတ္တာ သီလာဒယော ဂုဏာ သာရော တိ ဝုစ္စန္တိ၊ ] တသ္မိံသာရေ - ထို သီလဂုဏ်၊ ပေ၊ ဝိမုတ္တိဉာဏဒဿနဂုဏ် ဟူသောအနှစ်၌၊ ပတိဋ္ဌိတတ္တာ-တည်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သာရေ ပတိဋ္ဌိ တော-သာရေပတိဋ္ဌိတော-မည်၏၊

ဝေံ လျှင်၊ သာရေ - အနှစ်၌၊ ပတိဋ္ဌိတ ဘာဝံ - တည်သည်၏ အဖြစ်ကို၊ ၀တွာ-မိန့်တော်မူပြီး၍၊ ပုန-တဖန်၊ အဿ-ထိုဘိက္ခုသံဃာ၏၊ သာရေ-၌၊ သောစ ပတိဋ္ဌိတဘာဝေါ- ထို တည်သည်၏ အဖြစ်ကိုလည်း၊ ဝေံ-သို့၊ ဝေဒိ တဗ္ဗော-၏၊ ဧတိ-ဤအနက်ကို၊ ဒဿေန္တော - သည်၊ ( ဟုတွာ၊ ) ဣမေသံ ဟိ သာရိပုတ္တာ တိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ-ပြီ၊ တတြ-ထို ဣမေသံ ဟိ သာရိပုတ္တ အစရှိသောပါဠိရပ်၌၊ အယံ-ဤဆိုအပ်လတ့်ကား၊ သခေ်ပဝဏ္ဏနာ-အကျဉ်း ချုပ်အဖွင့်တည်း၊ ဝေရဉ္ဇာယံ-၌၊ ဝဿာဝါသံ-မိုးလပတ်လုံး နေခြင်းသို့၊

ဥပဂတာနိ-ကပ်ရောက်ကုန်သော၊ ယာနိ ဇုမာနိ ပဉ္စဘိက္ခုသတာနိ-အကြင် ငါးရာသော ရဟန်းတို့သည်၊ ( သန္တိ )၊ ဣမေသံ-ဤ ငါးရာသော ရဟန်းတို့ တွင်၊ ယော ဘိက္ခု - သည်၊ ဂုဏဝသေန - ဂုဏ်၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ပစ္ဆိမကော-နောက်ဆုံး၌ ဖြစ်၏၊ သဗ္ဗပရိတ္တဂုဏော – အလုံးစုံသော ရဟန်းတို့အောက် နည်းသောဂုဏ်ရှိ၏၊ [သဗ္ဗေဟိ- နိဟီနဂုဏော, အပ္ပဂုဏောဝါ၊] သော-ထို ရဟန်းသည်၊ သောတာပန္နော - သောတာပန်တည်း၊ သောတာ ပန္နောတိ-ကား၊ သောတံ - အရိယာမဂ်သို့၊ အာပန္နော - ရောက်သူတည်း၊ စ – ဆက်၊ သောတောတိ ဧတံ- သောတောဟူသော ဤအမည်သည်၊ မဂ္ဂဿ- အရိယာ မဂ်၏၊ အဓိဝစနံ- အမည်တည်း၊ သောတာပန္နောတိ ဧတံ - သောတာပန္နော ဟူသော ဤအမည်သည်၊ တေန-ထိုအရိယာမဂ်နှင့်၊ သမန္နာဂတဿ- ပြည့်စုံ သော၊ပုဂ္ဂလဿ-၏၊ အဓိဝစနံ-တည်း၊ [ရှေ့ဝါကျမှ ''ဧတံ အဓိဝစနံ''လိုက် စေ။] ယထာဟ-အဘယ်သို့ ဟောတော်မူသနည်း၊ သောတော သောတော တိ၊ပေ၊ဇဝံ ဝေါစ္ဆောတိ-ဟူ၍၊ (အာဟ-ပြီ၊) [သာရိပုတ္တ-တြာ၊ သောတော သောတောတိ- သောတော သောတောဟူ၍၊ ဣဒံ – ဤစကားကို၊ ဝုစ္စတိ-ပ်၏၊ သာရိပုတ္တ၊ သောတော - သောတ ဟူသည်၊ ကတမောနုခေါ - အဘယ် နည်း၊ ဣတိ – ဤသို့ မေးတော်မူပြီ၊ ဘန္တေ – မြတ်စွာဘုရား၊ အရိယော-မြတ်သော၊ အဋ္ဌင်္ဂိကော-ရှစ်ပါးသော အင်္ဂါရှိသော၊ အယမေဝမဂ္ဂေါ- ဤ မဂ်သာလျှင်ပါတည်း၊ သေယျထိဒံ-ထို မဂ်ဟူသည် အဘယ်နည်း၊ သမ္မာဒိဋ္ဌိ-ၑင်း၊ ပေ၊သမ္မာသမာဓိ-ၑင်းတည်း၊ ဣတိ-ဤသို့ လျှောက်ပြီ၊ သာရိပုတ္တ-တြာ၊ သောတာပန္နောသောတာပန္နောတိ–သောတာပန္နောသောတာပန္နော ဟူ၍၊ ဣဒံ–ဤစကားကို၊ ဝုစ္စတိ- ဆိုအပ်၏၊ သာရိပုတ္တ–တြာ၊ သောတာပန္နော–သောတာပန္နောဟူသည်၊ ကတမောနုခေါ–နည်း၊ ဣတိ - ပြီ၊ ဘန္တေ - ရား၊ ယော-အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ အရိယေန- သော၊ အဋ္ဌင်္ဂိကေန-ရှိသော၊ ဣမိနာ မဂ္ဂေန–ဤမဂ်နှင့်၊ သမန္နာဂတော- သည်၊ (ဟောတိ၊) အယံ- ဤပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ သောတာပန္နော-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ–၏၊ ယောယမာယသ္မာ - အကြင်ကဲ့သို့သော

**မဂ္ဂဿေတံ အဓိဝစနံ ။** ။ ပဋိပက္ခဓမ္မာနံ – ဆန့်ကျင်ဘက် ကိလေသာတို့ကို၊ အနုဝသေသတော–ဖြင့်၊ သဝနတော ပေလနတော – ပယ်ရှားတတ်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ သောတော အရိယမဂ္ဂေါ-သောတဟူသည့် အရိယမဂ်တည်း၊ ''သဝတိပေလ တီတိ သောတော''ဟု ပြု၊ ဤနည်းအရ အရိယာမဂ်ကို မုချအားဖြင့် '' သောတ '' ဟု ခေါ်နိုင်သည်၊ [ အခြားနေရာ၌ အရိယာမဂ်တည်းဟူသော ရေအလျဉ်ကို ''သောတ'' ဟု ဖွင့်ကြ၏၊ ထိုနည်း၌ကား သဒိသူပစာတည်း၊ ထိုနည်းကို ဤနေရာ၌ မဖွင့်။]

ဤ အရှင်သည်၊ ဧဝံနာမော - ဤသို့ သောတာပန်ဟူသော အမည်ရှိ၏၊ ဧဝံ ဂေါတ္တော–ဤသို့ သောတာပန် အနွယ်ရှိ၏၊(သော အယံ အာယသ္မာ- ထိုကဲ့သို့သော ဤအရှင်ကို၊ သောတာပန္နော–ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- ဆိုအပ်ပါ၏၊) ဣတိ- ဤသို့ လျှောက်ပြီ၊ ( မဟာဝဂ္ဂသံယုတ် , ဝေဠုဒွါရဝဂ်, ပဉ္စမသုတ်။ )] ပန- မုချတ္ထမှတပါး ဥပစာရတ္ထကို ဆိုဦးအံ့၊ ဣဓ-ဤ ဣမေသံ ဟိ သာရိပုတ္တ အစ ရှိသော ပါဠ်၌၊ မဂ္ဂေန-အဋ္ဌင်္ဂိက(သတ္တင်္ဂိက)မဂ်သည်၊ [ပဌမဈာန်မဂ်ဖြစ်လျှင် အဋ္ဌင်္ဂိကမဂ်,ဒုတိယဈာန်စသည်ဖြစ်လျှင် သမ္မာသင်္ကပ္ပမပါသောသတ္တင်္ဂိကမဂ် တည်း။] ဖလဿ - အဋ္ဌင်္ဂိကဖိုလ်အား၊ ဝါ - သတ္တင်္ဂိက ဖိုလ်အား၊ နာမံ- သောတ ဟူသော အမည်ကို၊ ဒိန္နံ-ပေးအပ်ပြီ၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ဖလဋ္ဌော- ဖိုလ်၌တည်သော ပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ သောတာပန္နော-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

အဝိနိပါတ ဓမ္မောတိ ( ဧတ္ထ ) - ၌၊ ( အဝယဝတ္ထော - အစိတ်အစိတ် ဖြစ်သောအနက်ကို၊ ဧဝံ- ဤ ဆိုအပ်လတ္တံ့သောနည်းဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊) ဝိနိပါတေတိ - ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျစေတတ်၏၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ဝိနိပါ

ဣဓပန၊ပေ၊ဒိန္နံ ။ ။ အာပန္နော၌ တ ပစ္စည်းသည် ပစ္စုပ္ပန်အနက်ဟောတည်း၊ “ဖလသစ္ဆိကိရိယာယ– ဖိုလ်ကို မျက်မှောက်ပြုခြင်းငှါ၊ ပဋိပန္နော – ကျင့်သူ” ဟူရာ၌ တ ပစ္စည်းသည် ပစ္စုပ္ပန်အနက်ဟောဖြစ်၍ မဂ္ဂဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကို ဟောသကဲ့သို့, ဤ သောတာပန္နောပုဒ်လည်း မဂ္ဂဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကိုဟောရင်းဖြစ်သည်၊ ဤ “ ယော ပစ္ဆိမကော , သောတာပန္နော” ဝါကျ၌ကား ဖလဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကိုသာ သောတာပန္နဟု မိန့်တော်မူလိုရင်း ဖြစ်သောကြောင့် မဂ်၏သောတအမည်ကို ကာရဏူပစာရအားဖြင့် ဖိုလ်ပေါ်၌ တင်ပေးလိုက်ရကား ဖိုလ်လည်း သောတမည်တော့၏၊ ထို့နောက် “ သောတံ + အာပန္နော” အရ ဖလဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်လည်း သောတာပန္နမည်တော့သည် – ဟူလို။ [ဣဓ အာပန္နသဒ္ဒေါ ဖလသစ္ဆိကိရိယာယ ပဋိပန္နောတိအာဒီသု ဝိယ ဝတ္တမာနကာလိကောတိ အာဟ– မဂ္ဂေန ဖလဿ နာမံ ဒိန္နံတိ။]

ပုချန္ဘမည် ။ ။ အာပန္နော၌ တ ပစ္စည်းကို အတိတ်အနက်ဟောဟု ယူလျှင် “သောတံ–အရိယာမဂ်သို့+ အာပန္နော–ရောက်ပြီးသောပုဂ္ဂိုလ်” ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၍ ဖလဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကိုပင် သောတာပန္နဟု တိုက်ရိုက်ဆိုနိုင်သည်၊ ဤအလို ဥပစာရတ္ထမဟုတ်,မုချတ္ထသာ။ [အတီတကာလိကတ္တေ ပန သရသတောဝ နာမလာဘော သိယာ။]

ဝိနိပါတေတီတိ။ ။“ဝိရူပံ–ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန်၊ သဒုက္ခံ သ ဥပါယာသံ–ဒုက္ခ ဥပါယာသ(ဒေါသ) နှင့်တကွ၊ နိပါတေတိ-(အပါယ်၌) ကျရောက်စေတတ်၏၊ ဣတိ ဝိနိပါတော ” ဟု ပြု၊ အပါယဒုက္ခေ ခေပနကော – အပါယ်ဒုက္ခ၌ ပစ်ချတတ်သော သဘော၊ ဝိကို “ဝိရူပံ” ဟု ဖွင့်၍ ဝိရူပအရကို “ သဒုက္ခံ သ ဥပါယာသံ ” ဟု ထပ်၍ ပြသည်။ [ဓမ္မောတိ သဘာဝေါ။]

တော-တ မည်၏၊ အဿ-ထိုရဟန်း၏၊ ဝိနိပါတော-ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျစေတတ်သော၊ ဓမ္မော - သဘောသည်၊ ဝါ- ဒိဋ္ဌိ အစရှိသော အကုသိုလ် တရားသည်၊ န-မရှိ၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ အဝိနိပါတဓမ္မော-ဓမ္မမည်၏၊ အတ္တာနံ-မိမိကို၊ အပါယေသု - တို့၌၊ ဝိနိပါတန သဘာဝေါ - ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျစေတတ်သောသဘောသည်၊ န-မရှိ၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊ (အဝိနိပါတ ဓမ္မော – အပါယ်တို့၌ ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျစေတတ်သော သဘောမရှိသနည်း၊ ) ယေဓမ္မာ - အကြင် ဒိဋ္ဌိအစရှိသော အကုသိုလ်တရား တို့သည်၊ အပါယဂမနီယာ - အပါယ်သို့ ရောက်စေတတ်ကုန်၏၊ [ဂမနီယာ၌ အနီယပစ္စည်း,ကတ္တားဟော,ကာရိတ်ကြေ၊] တေသံ-အကုသိုလ်တရားတို့၏၊ ပရိက္ခယာ-ကုန်ခြင်းကြောင့်၊ (အဝိနိပါတဓမ္မော-မရှိ။)

ဝါ-တနည်း၊ ဝိနိပတနံ-ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျခြင်း၊ ဝိနိပါတော-ခြင်း၊ အဿ – ထို သောတာပန် ရဟန်း၏၊ ဝိနိပါတော – ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျခြင်းဟူသော၊ ဓမ္မော-သဘောသည်၊ န-မရှိ၊ ဣတိ- ကြောင့်၊ အဝိနိပါတ

**အထဝါ**။ ။"ဓမ္မောတိ အပါယေသု ခိပနကော သက္ကာယဒိဋ္ဌိအာဒိကော အကုသလဓမ္မော – အကုသိုလ်တရား" ဟု သာရတ္ထ၌ တနည်းဖွင့်သေး၏၊ ထို ရှေနည်း၌ " အဝိနိပါတဓမ္မော – အပါယ်တို့၌ ကျစေတတ်သောသဘော မရှိ " ဟု ဓမ္မအတွက် သာမညသဘာဝ အနက်ပေး၊ ဤ အထဝါတက်သော နည်း၌ " အပါယ်တို့၌ ကျစေ တတ်သော ဒိဋ္ဌိစသော အကုသိုလ်တရား မရှိ " ဟု ဓမ္မအတွက် အကုသိုလ်တရား ဟု အနက်ပေး၊ အကုသိုလ်တရား ဟူသည်လည်း သဘာဝဝိသေသ ( သဘာဝတရား အထူး )ပင်တည်း၊ အဘိဓာန်၌ တရားဟူသမျှကို ဓမ္မသဒ္ဒါကဟောရာဝယ်"သဘာဝ" အနက်ဟု ဆိုထားသည်၊ ထို့ကြောင့် ဝိမတိ၌ ဓမ္မအတွက် သဘာဝအနက်သာ ပြ၏၊ နောက်နည်းအလို "အပါယ်တို့၌ ကျစေတတ်သော အကုသိုလ်တရားမရှိလျှင် အပါယ် တို့၌ကျစေတတ်သောသဘော မရှိရာရောက်သောကြောင့်"န အတ္တာနံ၊ပေ၊ ဝိနိပါတန သဘာဝေါတိ ဝုတ္တံဟောတိ" ဟု အဋ္ဌကထာဖွင့်သည်။

**ဝိနိပတနံဝါ** ။ ။ ဤ ဝါတက်သော အဋ္ဌကထာနည်း၌ ရှေနည်းကဲ့သို့ ဟေတု ကတ္တုသာဓနမကြံဘဲ သုဒ္ဓဘာဝသာဓနကြံခြင်း,ဓမ္မအရလည်း ရှေနည်းကဲ့သို့ သဘာဝ အနက် အကုသလဓမ္မအနက် ၂ မျိုးမကြံဘဲ သဘာဝအနက်ဟော တမျိုးသာ ကြံခွင့် ရှိတော့ခြင်းသည် ရှေနည်းမှထူး၏၊ သုဒ္ဓဘာဝသာဓနဖြစ်သောကြောင့်ပင် အဖြောင့်ပြ ဝါကျ၌ " အပါယေသု ဝိနိပတနသဘာဝေါ " ဟု ရှိစေရမည်၊ "ဝိနိပါတန" ဟု ပါဠ် ဒီဃ မရှိစေရ၊ [ ဝိနိပတနသဘာဝေါတိ ဥပ္ပဇ္ဇနသဘာဝေါ—ဋီကာ။ ] ဤအဖွင့်များကို ကြည့်၍ ပါဠိတော်၌ " အဝိနိပါတဓမ္မော – ဖေါက်ဖေါက် ပြန်ပြန် ကျစေတတ်သော သဘော မရှိ၊ ဝါ– ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျစေဘတ်သော သက္ကာယဒိဋ္ဌိစသော အကု သိုလ်တရား မရှိ၊ ဝါ-ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် ကျခြင်းသဘောမရှိ"ဟု ၃ နက်ပေးပါ။

ဓမ္မော-မည်၏၊ အသ-၏၊ အပါယေသု- တို့၌၊ ဝိနိပတနသဘာဝေါ- ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန်ကျခြင်းသဘောသည်၊ နတ္ထိ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ သမ္မတ္တနိယာမေန - မဖေါက်မပြန်သည်၏ အဖြစ်ကို မှတ်သားတတ်သော၊ မဂ္ဂေန - မိမိရအပ်သောမဂ်သည်၊ နိယတတ္တာ—မှတ်သားအပ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ- ပိုင်းခြားသတ်မှတ် ဆုံးဖြတ်အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ နိယတော-နိယတော မည့်၏၊ အသ – ထို သောတာပန်ရဟန်း၏၊ သမ္ဗောဓိ – သစ္စာ ၄ ပါးကို ကောင်းစွာသိတတ်သော အထက်မဂ်ဟူသော၊ ပရံ-အလွန်၊ အယနံ-ရောက်အပ်သောတရားသည်၊ ( ပရာ – အလွန်ဖြစ်သော၊ ဂတိ - ရောက်အပ်သောတရားသည်၊ ) အဿ - ၏၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ သမ္ဗောဓိပရာယဏော - ယဏာ မည်၏၊ ဥပရိမဂ္ဂတ္တယံ - အထက်မဂ် ၃ ပါးအပေါင်းသို့၊ အဝဿံ - မချွတ်၊ သမ္ပာပကော—ရောက်တတ်သူတည်း၊ ဣတိအတ္ထော၊ ကသ္မာ- နည်း၊ ပဋိလဒ္ဓ

**သမ္မတ္တနိယာမေန မဂ္ဂေန ။** ။ [ သမ္မာဘာဝနိယာမကေန – မဖေါက်မပြန်သည်၏ အဖြစ်ကို မှတ်သားတတ်သော၊ ပဋိလဒ္ဓမဂ္ဂေန – မိမိရအပ်သော မဂ်သည်။ ] သမ္မတ္တကို "သမ္မာဘာဝ" ဟု ဖွင့်သောကြောင့်"သမ္မာ+ ဘာဝေါ သမ္မတ္တံ"ဟု ပြုရ၏၊ နိယာမေနကို " နိယာမကေန " ဟု ကတ္တားဟော ဏျုပစ္စည်းဖြင့် ဖွင့်ပြသောကြောင့် နိယာမဠ် ကတ္တုသာဓနဟု သိရ၏၊ ထို"သမ္မတ္တနိယာမေန မဂ္ဂေန"ဟူသော ကတ္တားဖြင့် " နိယတော " ဝယ် ကမ္မသာဓန ဟု ပြ၏၊ [ သံဝဏ္ဏေကြုတ်, ရှိသည့်ပုဒ်ကို, အဝုတ် ကတ္တား, ဖွင့်ပြထားမူ, ပြုခြားကမ္မ, သာဓနတည်း။ ] နိပုဒ္ဓ ယမုဓာတ်လည်း " ဆုံးဖြတ်ခြင်း "အနက်ကိုဟော၏၊ " မှတ်သား " ဟူသည်လည်း ဆုံးဖြတ်ခြင်းပင်တည်း။

**နိယတောတိဝါ။** ။ဟောင်ဝိမန္တတော သတ္တမာဘဝတော ဥပရိ အနုပ္ပဇ္ဇနဓမ္မတာယ နိယတော—အောက်ထစ်ဆုံးအားဖြင့် ခုနစ်ဘဝမှအထက်၌ မဖြစ်တော့ခြင်းသဘောရှိသည်၏အဖြစ်ဖြင့် မြဲ၏၊ ဤနည်းကား – အဋ္ဌကထာကိုလိုက်၍ ဖွင့်သော နည်းမဟုတ်၊ အခြားနေရာ၌ အဋ္ဌကထာအဖွင့်မှ ယူ၍ ဋီကာသက်သက် ဖွင့်သော နည်းတည်း။ [ ပဌမ နည်းအလို " နိယတော- သမ္မတ္တနိယာမ မဂ်သည် (ခုနစ်ဘဝမှ အထက်မဖြစ်ဘို့ရန် ) ပိုင်းခြားသတ်မှတ် ဆုံးဖြတ်အပ်၏"ဟု ပေး၊ ဒုတိယ ဋီကာနည်းအလို " နိယတော— ခုနစ်ဘဝမှအထက် မဖြစ်ခြင်းသဘောအားဖြင့် မြဲ၏" ဟု ပေး၊ ဤ အဋ္ဌကထာ ဋီကာတို့ ဖွင့်ပုံနှင့် အဋ္ဌသာလိနီ သမ္မတ္တနိယတပုဒ်ဖွင့်ပုံမှာ တမျိုးစီသာ။ ]

**သမ္ဗောဓိပရာယဏော။** ။သမ္ဗုဇ္ဈိဿတီတိ သမ္ဗောဓိ—သစ္စာ ၄ ပါးကို ကောင်းစွာ(ဆက်၍) သိလတ့်သော အထက် မဂ် ၃ ပါး၊ တနည်း—"သမ္ဗုဇ္ဈတီတိ သမ္ဗောဓိ" ဟု ပစ္စုပ္ပန် ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြု၍ အရိယာမဂ် ၄ ပါးလုံး ရသော်လည်း ပဌမမဂ်ကို ရပြီးဖြစ်၍ ပါရိသေသနည်းအားဖြင့် အထက်မဂ် ၃ ပါးကိုသာ ယူ၊ ထို့ကြောင့် "ဥပရိမဂ္ဂတ္တယံ" ဟု သမ္ဗောဓိအရ ဖွင့်သည်၊ [ သောစ ဣဓ ပဌမမဂ္ဂဿ အဓိဂတတ္တာ အဝသိဋ္ဌောဝေ အဓိဂန္တဗ္ဗဘာဝေန ဣစ္ဆိတဗ္ဗော။ ]

ပဌမမဂ္ဂတ္တာ - ရအပ်ပြီးသော ပဌမမဂ်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဣတိ- ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ (သခ်ေပဏ္ဏာနာ- တည်း၊ ဟု ပြန်အုပ်)။

ဧဝံ - လျှင်၊ ဓမ္မသေနာပတိံ – တရားစစ်သူကြီး ဖြစ်တော်မူသော အရှင်သာရိပုတြာကို၊ သညာပေတွာ-ကောင်းစွာသိစေတော်မူပြီး၍၊ ဝေရဉ္ဇာယံ-၌၊ တံသဿာဝါသံ-၊ ထိုမိုးလပတ်လုံး သီတင်းသုံးတော်မူခြင်းကို၊ ဝါ-ထိုဝါကို၊ ဝီတိနာမေတွာ-လွန်စေတော်မူပြီး၍၊ ဝုဋ္ဌဝဿော-မိုးလပတ်လုံး သီတင်းသုံးတော်မူပြီးသည်၊(ဟုတ္တွာ)၊ မဟာပဝါရဏာယ– သီတင်းကျွတ်လပြည့် မဟာပဝါရဏာနေ့၌၊ ပဝါရေတွာ - ပပါရဏာ ပြုစေတော်မူပြီး၍၊ [ ဘုရားရှင်ကိုယ်တော်တိုင် ပဝါရဏာပြုဘို့မလို, ရဟန်းအပေါင်းကို ပြုစေပြီး၍,ဟူလို၊ ] အထခေါ - ဝါကျွတ်ပြီးရာ ထိုအခါ၌၊ ဘဝဝါ–သည်၊ အာယသ္မန္တံ အာနန္ဒံ-ကို၊ အာမန္တေသိ–ခေါ်၍သိစေတော်မူပြီ၊ အာမန္တေသီတိ- ကား၊ အာလပိ– ခေါ်တော်မူပြီ၊အဘာသိ-မိန့်တော်မူပြီ၊ သမ္ဘောဓေသိ-ကောင်းစွာ သိစေတော်မူပြီ၊ ကိန္တိ–အဘယ်သို့လျှင်၊ (အာမန္တေသိ-သနည်း၊ ဝါ-သနည်း၊)အာစိဏ္ဏံ ခေါပနေတန္တိဧဝမာဒိ - အာစိဏ္ဏံ ခေါပနေတံ ဤသို့ အစရှိသည်ဟူ၍၊ ( အာမန္တေသိ– ပြီ၊) အာစိဏ္ဏန္တိ - ကား၊ စရိတံ – ကျင့်အပ်သော အကျင့်တည်း၊ ဝတ္တံ–ကျင့်ဝတ်တည်း၊ အနုဓမ္မတာ–လောကုတ္တရာတရားသို့အစဉ်လိုက်သော သဘောတည်း၊ [ လောကုတ္တရဓမ္မာနုဂတော ဓမ္မော၊ အနု – လောကုတ္တရာတရားသို့ အစဉ်လိုက်သော+ဓမ္မော-သဘော။] ပန-ဆက်၊ တံဧတံ အာစိဏ္ဏံ-ထို လေ့ကျက်အပ်သော အလေ့အကျင့်သည်၊ ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏံ-ဘုရားရှင်တို့ အလေ့အကျင့်ဌင်း၊ သာဝကာစိဏ္ဏံ- သာဝကတို့ အလေ့အကျင့်ဌင်း၊ ဣတိ–သို့၊ ဒုဝိဓံ ဟောတိ၊ ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏံ - ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏ ဟူသည်၊ ကတမံ - နည်း၊ တာဝ–သာဂကာ

ပရာယဏ်၌“ပရံ+အယနံ”ဟု ခွဲ၍ အယနံကို “ဂတိ”ဟု ဖွင့်သည်၊ “အယိတဗ္ဗံ–ရောက်ထိုက်၏၊ ဣတိ အယနံ” ဟု ပြု၊ ပရံ – သောတာပတ္တိမဂ်ထက် ပိုလွန်သော+အယနံ- ရောက်ထိုက်သော တရား။ [ ပရံ+ အယနံ ပရာယဏံ ( ရကြောင့် ဏပြန်)၊ သမ္ဗောဓိ+ပရာယဏံ ယဿာတိ သမ္ဗောဓိပရာယဏော။ ] “ဥပရိမဂ္ဂတ္တယံ အဝဿံ သမ္ပာပကော” ကား အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်သာ၊ “သမ္ပာပုဏာတီတိ သမ္ပာပကော”ဟု ဋီကာ ပြု၏၊ ဧကန်ရတော့မည် ဖြစ်ရကား “ လက်ရှိရနေသော အဖြစ်မျိုးဖြင့် ပစ္စုပ္ပန် ဝိဂ္ဂဟ ပြုဟန်တူသည်၊“သမ္ပာပုဏိဿတီတိ သမ္ပာပတော”ဟုလည်း ပြုသင့်မည် ထင်သည်။

အာမန္တေသိ ။ ။ “အာပုစ္ဆမန္တဓာတ်သည် အာလပနအနက်ဟောတည်း ” ဟု သိစေလို၍“အာလပိ”ဟုဖွင့်၊ထိုအာလပနဟူသည်လည်း ခေါ်ရုံ(အာလုပ်)မျှ မဟုတ် “ခေါ်၍ အကြောင်းအရာကို မိန့်တော်မူခြင်း, သိစေတော်မူခြင်းတည်း” ဟု သိစေလို၍“အဘာသိ, သမ္ဗောဓေသိ”ဟု ဖွင့်သည်။

စိဏ္ဏာမှ ရှေးဥုးစွာ၊ ဉဒံ - ဤဆိုအပ်လတ္တံကား၊ ကေ-တမျိုးသော ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏ တည်း၊[အခြား ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏများ ရှိသေး၍"ကေံ"ဟု ဆိုသည်။] ယေဟိ-အကြင် ဒါယကာတို့သည်၊ နိမန္တိတာ-ပင့်ဖိတ်အပ်ကုန်သည်၊(ဟုတွာ)၊ ဝဿံ-မိုယ်း လပတ်လုံး၊ ဝသန္တိ-သီတင်းသုံးတော် မူကြကုန်၏၊ တေ- ထို ဒါယကာတို့ကို၊ အနပလောကေတွာ - မပန်ပြောမူ၍၊ အနာပုစ္ဆိတွာ - မပန်ပြောမူ၍၊ ဇနပဒ စာရိကံ-ဇနပုဒ်ဒေသစာရီကို၊ ဝါ-ဇနပုဒ်တို့၌ လှည့်လည်ခြင်းကို၊ နပက္ကမန္တိ- ဖဲကြွတော်မမူကြကုန်၊ ( ဉတိ–ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ ကေံ - သော၊ ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏံ- တည်း၊ ဤသို့ပြန်အပ်၊) သာဝကာပန- တို့သည်ကား၊အပလောကေတွာဝါ- ပန်ပြော၍ သော်ငှင်း၊ အနပလောကေတွာဝါ - မပန်ပြော မူ၍ သော်ငှင်း၊ ယထာသုခံ-ချမ်းသာသည်အားလျော်စွာ၊ ဝါ-အလိုရှိတိုင်း၊ ပက္ကမန္တိ-နိ၏။

အပရမ္ပိ- အခြားလည်းဖြစ်သော၊ ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏံ-ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏကား၊ ဝုဋ္ဌဝဿာ- မိုယ်းလပတ်လုံး သီတင်းသုံးတော်မူပြီးကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ပဝါရေတွာ– ပဝါရဏာ ပြုစေတော်မူပြီး၍၊ ဇနသင်္ဂဟတ္ထာယ-လူအပေါင်းကို ချီးမြှောက်ခြင် အကျိုးငှါ၊ ဇနပဒ စာရိကံ-ဇနပုဒ် ဒေသစာရီကို၊ ပက္ကမန္တိယေဝ-ဖဲကြွတော် မူကြကုန်သည်သာ၊ [ အမြဲ ဖဲကြွရိုးရှိသည်-ဟု ပြလို၍ " ဧဝ " ထည့်သည်။] ဇနပဒစာရိကံ-ကို၊ စရန္တာစ- လှည့်လည်တော်မူကြကုန်သော်လည်း၊ မဟာ မဏ္ဍလံ-မဟာမဏ္ဍလငှင်း၊ မဇ္ဈိမမဏ္ဍလံ–ငှင်း၊ အန္တိမမဏ္ဍလံ- ငှင်း၊ [ခုဒ္ဒက မဏ္ဍလံ၊ ဉတရေသံဝါ မဏ္ဍလာနံ အညတရဿ အန္တိမမဏ္ဍလံ အဋ္ဌ

ပက္ကမန္တိ။ ။ဤပုဒ်နောက်၌ ဉတိသဒ္ဒါရှိသင့်သော်လည်း သိလောက်သောကြောင့် မထည့်ဘဲ ထားသည်၊ ဤသို့ သိလောက်၍ မထည့်ခြင်းကို "ဂမျမာန–သိအပ် သိလေ့ သော ပုဒ်"ဟု ခေါ်သည်၊ဉတိသဒ္ဒါ အပိုထည့်၍ ပေးရသမျှ၌ ဂမျမာန်ချည်းတည်း၊ [ဇနပဒစာရိကံ ပက္ကမန္တိတိ ဧတ္ထ ဉတိသဒ္ဒေါ ဂမျမာနတာယ န ဝုတ္တော၊ ဧဝံအညတ္ထာပိ ဤဒိသေသု ဋ္ဌာနေသု။ ]

ဇနပဒစာရိကံ နပက္ကမန္တိ။ ။ဇနပဒေသု+စရဏံ၊ ဤအလို "စရဏံ စာရိကာ" ဟု ပြု၊ ဏျပစ္စည်း, ဣလာ၊ ယကိုကပြု၊ စရဏံဝါ စာရော၊ သောဧဝစာရိကာ၊ ဤအလို စာရောဟူသော ကိတ်နောင် သွတ္ထ၌ ဏိကပစ္စည်းသက်၊ ဇနပဒေသု+ စာရိကာ ဇနပဒ စာရိကာ၊ တံ ပက္ကမန္တိ၊ ဇနပဒဂမနံ ဂစ္ဆန္တိတိ အတ္ထော၊(သာရတ္ထ)။ [စာရိကာ အရ သွားခြင်း , ပက္ကမန္တိ အရလည်း သွားခြင်းဖြစ်၍ ကံနှင့် ကြိယာ မပြားသောကြောင့် အဘေဒဘေဒူပစာရ ကြံပါ။ ]

စရန္တာစ ။ ။ ဇနပဒစာရိကံ ပက္ကမန္တိတိ ဧတ္ထ ဋ္ဌတွာ ( ဤစကား၌ တန့်ရပ်၍) ဘဂဝတော စာရိကာပက္ကမနဝိမိ' ဒဿေန္တော ( ဒေသစာရီ လှည့်လည်တော်မူခြင်း၏ အပြားကို ပြလိုသည်ဖြစ်၍) အာဟ—ဇနပဒစာရိကံ စရန္တာစာတိ အာဒိ။

န္တရိမင်္ဂလန္တိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။] ဣတိ – သို့၊ တိဏ္ဏံ - န်သော၊ ဣမေသံ မဏ္ဍလာနံ - တို့တွင်၊ အညတရသ္မိံ - သော၊ မဏ္ဍလေ - ၌၊ စရန္တိ - န်၏၊ တတ္ထ-ထိုမဏ္ဍလတို့တွင်၊ မဟာမဏ္ဍလံ- သည်၊ ဝါ– ကြီးသော အဝန်းအဝိုင်းသည်၊ နဝ ယောဇနသတိကံ-ယူဇနာကိုးရာ ရှိ၏၊ မဇ္ဈိမမဏ္ဍလံ-သည်၊ ဝါ–အလယ်အလတ်ဖြစ်သော အဝန်းအဝိုင်းသည်၊ ဆ ယောဇနသတိကံ-ယူဇနာ ခြောက်ရာရှိ၏၊ အန္တိမမဏ္ဍလံ–သည်၊ ဝါ–ငယ်သော အဝန်းအဝိုင်းသည်၊ တိယောဇနသတိကံ–ယူဇနာ ၃ ရာရှိ၏၊ ယဒါ-၌၊ မဟာမဏ္ဍလေ–၌၊ စာရိကံ-ကို၊ စရိတုကာမာ-လိုကုန်သည်၊ ဟောန္တိ–န်၏၊ တဒါ-၌၊ မဟာပဝါရဏာယ ပဝါရေတွာ, ပါဋိပဒဒိဝသေ- အထွက် တရက်နေ့၌၊ မဟာဘိက္ခုပရိဝါရာ - များစွာသော ရဟန်းသံဃာ အခြံအရံရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတွာ ) နိက္ခမိတွာ - ၍၊ ဂါမနိဂမာဒိသု - ရွာ နိဂုံး အစရှိသော အရပ်တို့၌၊ မဟာဇနံ - ကို၊ အာမိသပဋိဂ္ဂဟေန - အာမိသကို ခံယူတော်မူခြင်းဖြင့်၊ အနုဂ္ဂဏှန္တာ - ချီးမြှောက်တော်မူကုန်လျက်ငင်း၊ ဓမ္မဒါနေန-တရားတော်ကို ပေးတော်မူခြင်းဖြင့်၊ အဿ-ထိုလူအပေါင်း၏၊ ဝိဝဋ္ဋူပနိဿိတံ- ဝိဝဋ္ဋကိုမှီသော၊ ကုသလံ-ကို၊ ဝဍ္ဎေန္တာစ-တိုးပွားစေတော်မူကုန်လျက်ငင်း၊ နဝဟိ မာသေဟိ- ၉ လတို့ဖြင့်၊ ဇနပဒစာရိကံ-ကို၊ ပရိယောသာပေန္တိ - ပြီးဆုံးစေတော်မူကြကုန်၏။

ပန-ကား၊ အဗ္ဘန္တရဝဿေ-ဝါတွင်း၌၊ ဘိက္ခူနံ-တို့၏၊ သမထ ဝိပဿနာ-တို့သည်၊ တရုဏာ - နုကုန်သည်၊ သစေဟောန္တိ - န်အံ့၊ (ဧဝံသတိ၊ ) မဟာပဝါရဏာယ-၌၊ အပ္ပဝါရေတွာ-ပဝါရဏာ ပြုစေတော်မမူဘဲ၊ ပဝါရဏာသင်္ဂဟံ-ဏာကို ချီးမြှောက်တော်မူခြင်းကို၊ ဒတွာ-မူ၍၊ [အနုမတိဒါနဝသေန ဒတွာ - ပဝါရဏာမပြုသေးဘဲ နေနိုင်ရန် ခွင့်ပြုခြင်း၏အစွမ်းဖြင့် ပေးတော်မူ၍။] ကတ္တိကပုဏ္ဏမာယံ- တန်ဆောင်မုန်းလပြည့်နေ့၌၊ ပဝါရေတွာ- စေ၍၊ မာဂသိရဿ-နတ်တော်လ၏၊ ပဌမဒိဝသေ-ပဌမနေ့၌၊ [ယခုအခေါ်အားဖြင့် တန်ဆောင်မုန်းလပြည့်ကျော် တရက်ကိုပင် နတ်တော်လဆန်း တရက်ဟု ခေါ်ထားသည်၊ နောက် "ဖုဿမာသဿ ပဌမဒိဝသေ" ၌လည်း ဤနည်းပင်၊ ] မဟာဘိက္ခုသံဃ ပရိဝါရာ - ရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတွာ )၊ မဇ္ဈိမမဏ္ဍလေ အဋ္ဌဟိ မာသေဟိ စာရိကံ, ပရိယောသာပေန္တိ- န်၏။

တရုဏာဟောန္တိ ။ ။ဧတ္ထ တရုဏာဝိပဿနာတိ သင်္ခါရပရိစ္ဆေဒနေ ဉာဏံ (နာမရူပပရိစ္ဆေဒဉာဏ်),ကင်္ခါဝိတရဏေ ဉာဏံ,သမ္မသနေ ဉာဏံ,မဂ္ဂါမဂ္ဂေ ဉာဏံတိ စတုန္နံ ဉာဏာနံ အဓိဝစနံ၊ သမထဿ တရုဏဘာဝေါပန ဥပစာရသမာဓိဝသေန ဝေဒိတဗ္ဗော။

ပန - ကား၊ ဝုဋ္ဌဝဿာနံ-မိုယ်းလပတ်လုံး သီတင်းသုံးတော်မူပြီးကုန်သော၊ နေသံ-ထိုဘုရားရှင်တို့၏၊ ဝေနေယျသတ္တာ - ဆုံးမထိုက်သော သတ္တာတို့သည်၊[ဝိနေတဗ္ဗာ–ဆုံးမထိုက်ကုန်၏၊ ဣတိ ဝိနေယျာ၊ ဝိ+နီ - ဏျ၊ ယခုစာတို့၌၊ ''ဝေနေယျ " ဟု ရှိ၏၊ သွတ္တ၌ ဏာပစ္စည်း ထပ်သက်။ ] အပရိပါကိန္ဒြိယာ-မရင့်ကျက်သေးသော ဣန္ဒြေရှိကုန်သည်၊ သစေ ဟောန္တိ–နိအံ့၊ ( ဧဝံ သတိ၊ ) တေသံ - ထို ဝေနေယျသတ္တာတို့၏၊ ဣန္ဒြိယပရိပါကံ - သဒ္ဒါစသော ဣန္ဒြေတို့၏ ရင့်ကျက်ချိန်ကို၊ အာဂမေန္တာ– ဆိုင်းငံ့တော်မူကုန်လျက်၊ မာဂသိရမာသမ္ပိ - နတ်တော်လ ပတ်လုံးလည်း၊ တတ္ထေဝ - ထို ဝါကပ်တော်မူရာအရပ်၌ပင်၊ ဝသိတွာ-သီတင်းသုံးတော်မူပြီး၍၊ ဖုဿမာသဿ - ပြာသိုလ၏၊ ပဌမဒိဝသေ - ၌၊ မဟာဘိက္ခုသံဃ ပရိဝါရာ၊ပေ၊ပရိယောသာပေန္တိ- နိ၏၊ စ-ဆက်၊ တေသုမဏ္ဍလေသု-တို့တွင်၊ ယတ္ထ ကတ္ထစိ-တစုံတခုသော မဏ္ဍလ၌၊ ဝိစရန္တာပိ- ကုန်သော်လည်း၊ တေတေသတ္တေ- တို့ကို၊ ကိလေသေဟိ-တို့နှင့်၊ ဝိဧယာဇေန္တာ - မယှဉ်စေတော် မူကုန်လျက်၊ သောတာပတ္တိ ဖလာဒီဟိ - တို့နှင့်၊ ပယောဇေန္တာ – ယှဉ်စေတော်မူကုန်လျက်၊ ဝေနေယျဝသေနေဝ-ဝေနေယျတို့၏အစွမ်းဖြင့်သာ၊[ဧဝဖြင့်''န စီဝရာဒိဟေတု''ဟု ကန့်။]နာနာဝဏ္ဏာနိ - အမျိုးမျိုးသော အဆင်းရှိကုန်သော၊ ပုပ္ဖါနိ - တို့ကို၊ ဩစိနန္တာဝိယ - ဆွတ် ခူးကုန်သကဲ့သို့၊ စရန္တိ - နိ၏။ [ ပန်း ခူးသူသည် ပန်းများများရှိသော ခြို၌ ကြာကြာနေ၍ ပန်းကုန်လျှင် အခြားခြို့သို့ ပြောင်းသကဲ့သို့ , ဘုရားရှင်တို့လည်း ဝေနေယျရှိရာ၌သာ ကြာကြာနေ၍, ဝေနေယျမရှိလျှင် လိုရာသို့ ကြွတော်မူကြသည်၊]

အပရမ္ပိ-သော၊ ဗုဒ္ဓါနံ-တို့၏၊ အာစိဏ္ဏံ-အလေ့အကျင့်ကား၊ ဒေဝသိကံ-နေ့တိုင်းနေ့တိုင်း၊ ပစ္စူသ သမယေ-မိုယ်းသောက် အခါ၌၊ သန္တံ-ငြိမ်းသော၊ ဝါ-ကိလေသာတို့မှငြိမ်းကြောင်းဖြစ်သော၊သုခံ-ချမ်းသာကြောင်းဖြစ်သော၊ [ သန္တ သဘာဝတ္တာ , ကိလေသသမနဟေတုတာယဝါ သန္တံ၊ သုခကာရဏာ တော သုခံ၊ ]နိဗ္ဗာနံ-ကို၊ အာရမဏံ ကတွာ-အာရုံပြု၍၊ ဖလသမာပတ္တိ သမာပဇ္ဇနံ-ဖလသမာပတ် ဝင်စားတော်မူခြင်းငှါ၊ ဖလသမာပတ္တိယာ-မှ၊ ဝုဋ္ဌဟိတွာ-၍၊ဒေဝသိကံ-တိုင်း၊မဟာကရုဏာသမာပတ္တိယာ-မဟာကရုဏာသမာပတ်ကို၊ သမာပဇ္ဇနံ - ဝင်စားတော်မူခြင်းငှါ၊ တတော- ထို မဟာကရုဏာသမာပတ်မှ၊ ဝုဋ္ဌဟိတွာ – ၍၊ ဒသသဟဿ စက္ကဝါဠေ - တသောင်းသော စကြာဝဠာ၌၊ ဗောဓနေယျ သတ္တသမဝလောကနံ - သစ္စာ ၄ ပါးကို သိစေထိုက်သောသတ္တာတို့ကို ကောင်းစွာ ကြည့်ရှုတော်မူခြင်းငှါတည်း၊ [ ဇာတိ

ခေတ္တဘူတာယ ဒသသဟဿလောကဓာတုယာ၊ ဇာဒ္ဓ ဒေဝမြဟ္မာနံ ဝသေန ဂုတ္တံ၊ မနုဿာပန ဇာမသ္မိံယေဝ စတ္တဝါဠေ ဗောဓနေယျာ ဟောန္တိ။.... ဗောဓနံ-သစ္စာ ၄ ပါးသိစေခြင်းကို+အရဟန္တီတိ ဗောဓနေယျာ။]အပရမ္ပိ-သော၊ အာစိဏ္ဏံ-ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏကား၊ အာဂန္တုကေဟိ-အာဂန္တုကတို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ ပဋိမတရိံ-ရှေးဦးစွာ၊ ပဋိသန္ဓာရကရဏံ - ပဋိသန္ဓာရကို ပြုတော်မူခြင်း ငှင်း၊ အတ္ထုပ္ပတ္တိဝသေန- အကြောင်းဝတ္ထု ဖြစ်ပေါ်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဓမ္မ ဒေသနာ- တရားဟောတော်မူခြင်းငှင်း၊ ဒေါသေ - အပြစ်သည်၊ ဩတိဏ္ဏေ- သက်ရောံလသော်၊ သိက္ခာပဒ ပညာပနံ- သိက္ခာပုဒ်ပညတ်တော်မူခြင်းငှင်း၊ ဇာတိ-ဤသည်တည်း၊ ဇာဒံ-ဤ ဆိုအပ်ပြီးအားလုံးသည်၊ ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏံ-တည်း။

သာဝကာစိဏ္ဏံ - သာဝကာစိဏ္ဏသည်၊ ကတမံ - နည်း၊ ဗုဒ္ဓဿ - အလုံးစုံသောတရားတို့ကို သိတော်မူပြီးသော၊ ဘဂဝတော - ၏၊ ကာလေ- အခါ၌၊ ဝါ- လက်ထက်တော်၌၊ ဝဿုပနာယိကာယ— ဝါကပ်ရာနေ့၏၊ ပုရေ- ရှေ၌၊ ကမ္မဋ္ဌာနဂ္ဂဟဏတ္ထဉ္စ—ကမ္မဋ္ဌာန်းယူခြင်းအကျိုးငှါငှင်း၊ ဝုဋ္ဌဝဿာနံ - မိုဃ်းလပတ်လုံး နေပြီးကုန်သော ရဟန်းတို့၏၊ အဓိဂတဂုဏာရောစနတ္ထဉ္စ—ရအပ်ပြီးသောဂုဏ်ကို လျှောံခြင်းအကျိုးငှါငှင်း၊ ဒွိက္ခတ္တုံ- ၂ ကြိမ်၊ သန္နိပါတော-စည်းဝေးခြင်းသည်၊ ( ဟောတိ )၊ ဇာဒံ - ဤ ဆိုအပ်ပြီးသော အလုံးစုံသည်၊ သာဝကာစိဏ္ဏံ-တည်း၊ ပန - ဆက်၊ ဇာမ- ဤအရာ၌၊ ဗုဒ္ဓါစိဏ္ဏံ- ကို၊ ဒဿေန္တော – ပြတော်မူလိုသည်၊ ( ဟုတွာ - ၍၊ ) အာစိဏ္ဏံ ခေါ ပနေတံ အာနန္ဒ တထာဂတာနန္တိ- ဟူ၍၊ အာဟ-ပြီ၊ အာယာမာတိ- ကား၊ အာဂစ္ဆ-လာ၊ ယာမ—သွားကြစို့၊ အပလောကေဿာမာတိ-ကား၊ စာရိကံ—ဒေသစာရီကို၊ စရဏတ္ထာယ—လှည့်လည်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ အပလောကေဿာမ- ပန်ပြောချေကြစို့၊ ဧဝန္တိ-ဧဝံဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ သမ္ပဋိစ္ဆနတ္ထေ - လက်ခံခြင်းအနက်၌၊ (ပဝတ္တော - သော၊ )နိပါတော - တည်း၊ ဘန္တေတိ တေ – ဘန္တေဟူသော ဤ သဒ္ဒါသည်၊ ဂါရဝါဓိဝစနံ - ရိုသေခြင်းအားဖြင့် အလေးပြုအပ် သူကို

**အာယာမ**။ ။အာသဒ္ဒေါ အာဂစ္ဆာတိ ဇာမိနာ သမာနတ္ထောတိအာဟ- "အာယာမာတိ အာဂစ္ဆ, ယာမာ"တိ၊ ဇေဟိ ဂစ္ဆာမာတိ အတ္ထော။ [ "ယာ-ဂတိမှိ" ဓာတ်နက်အတိုင်း ယာမကို ဂစ္ဆာမဟု ဖွင့်သည်။]

**ဂါရဝါဓိဝစနံ** ။ ။"ဇဝံ" ဟု ဝန်ခံရာဝယ် ရိုခဲသမှုကို ပြသောအားဖြင့် ရိုသေထိုက်သူကို ဟောသောသဒ္ဒါဖြစ်သည်၊ "ဇဝံ, ဘန္တေ— မှန်ပါ, အရှင်ဘုရား"ဟု ပေး၊ [ဂါရဝေန + အဓိဝစနံ ဂါရဝါဓိဝစနံ၊ ဘဂဝါအဖွင့်တုန်းက ဂရုဂါရဝါဓိဝစနံ "နှင့်

ဟောသောသဒ္ဒါတည်း၊ သတ္တုနော- မြတ်စွာဘုရားအား၊ ပဋိဝစနံ - စကား တုံ့ပေးခြင်းတည်း၊ ဣတိဝိ- ဤသို့လည်း၊ ဝဒန္တိ- ဆိုကြကုန်သေး၏၊ ဘဂဝ တော ပစ္စဿောသိတိ-ကား၊ ဘဂဝတော-၏၊ ဝစနံ-တော်ကို၊ ပဋိအဿော သိ- ရှေးရှု နားထောင်ပြီ၊ အဘိမုခေါ- ဘုရားရှင်သို့ ရှေးရှုသည်၊ (ဟုတွာ)၊ သုဏိ-နားထောင်ပြီ၊ သမ္ပဋိစ္ဆိ -လက်ခံပြီ၊ဝေဠတ္တိ ဣမိနာဝစနေန- ဝံဟူသော ဤစကားဖြင့်၊ ပဋိဂ္ဂဟေသိ-လက်ခံပြီ၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ။

အထခေါ ဘဂဝါ နိဝါသေတွာတိ ဣဓ-နိဝါသေတွာဟူသော ဤပါဌ်၌၊ ပုဗ္ဗဏှသမယန္တိ ဝါ-ပုဗ္ဗဏှသမယံ ဟူ၍၎င်း၊ သာယန္ဟ သမယန္တိ ဝါ- သာယန္ဟ သမယံ ဟူ၍၎င်း၊ ( အာယသ္မတာ ဥပါလိတ္ထေရေန - သည်၊ ) န ဝုတ္တံ - မလျှောက်အပ်၊ ဧဝံသန္တေပိ-ဤသို့ ဖြစ်ပါသော်လည်း၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ကတ ဘတ္တကိစ္စော—ပြုအပ်ပြီးသော ဆွမ်းကိစ္စရှိတော်မူသည်၊ (ဟုတွာ၊)မဇ္ဈန္ဟိကံ- နေ့၏ အလယ်အဘို့ကို၊ ဝါ-မွန်းတည့်ချိန်ကို၊ ဝီတိနာမေတွာ- လွန်စေတော် မူ၍၊အာယသ္မတံ့ အာနန္ဒံ-ကို၊ပစ္ဆာသမဏံ-နောက်လိုက် ရဟန်းကို၊[ပစ္ဆာ- နောက်၌၊ဝါ-နောက်က+အနုဂတော သမဏော ပစ္ဆာသမဏော။]ကတွာ- ၍၊ နဂရဒ္ဓါရတော-မြို့တံခါးမှ၊ ပဋ္ဌာယ—စ၍၊ နဂရဝီထိယော-မြို့လမ်းတို့ကို၊

သဘောတူပင်ဖြစ်၍ ဘဂဝါအဖွင့်ကို ပြန်ကြည့်ပါ။] ပဋိဝစနဒါန်-ဟူသော ဝဒန္တိဝါဒ အလိုမှ "ဘန္တေ-အရှင်ဘုရား"ဟု ပေး၊ [စကားတုံ့ပေးခြင်းဟူသည် ခေါ်သောအခါ ထူးခြင်းပင်တည်း။]

ဘဂဝတောဝစနံ။ ။"ဘဂဝတော ပစ္စဿောသိ"ပါဠိကို "ဝစနံ" ဟု ထည့်၍ ဖွင့်သောကြောင့် ဘဂဝတော၌ သာမိအနက် ဟု သိစေ၏၊ ဘဂဝတောတိ သာမိဝစနံ အာမန္တနဝစနမေဝ ( ဘုရားရှင်၏ အာမန္တန စကားတော်ကိုပင် ) သမ္ဗန္ဓိအန္တရံ ( သမ္ဗန္ဓိ အထူး အနေပြု၍ ) အပေက္ခတီတိ ဣမိနာ အဓိပ္ပါယေန ဘဂဝတော ဝစနံ ပတ်အဿောသီတိ ဝုတ္တံ (အဋ္ဌကထာ၌ ဆိုအပ်ပြီ )၊ ဘဂဝတောတိ ပန ဣဒံ (ထိုသို့ အဋ္ဌကထာ ဆိုအပ်ပါသော်လည်း ဘဂဝတော ဟူသော ဤ သဒ္ဒါသည် ) ပတိဿဝ သမ္ဗန္ဓေန သမ္ပဒါနဝစနံ (ပတိ+သုဓာတ်နှင့် စပ်သောကြောင့် သမ္ပဒါန်တည်း၊) ဤသို့ ဋီကာဖွင့်ရကား အဋ္ဌကထာအလို ဘဂဝတောကို သမ္ဗန် ဟု မှတ်၊ ဝစနံပုဒ်ကို ထည့်၍ စပ်ရမည်၊ ဋီကာအလိုမှာ သဒ္ဒါကျမ်းအဆိုနှင့်တူစွာ ပတိ+သုဓာတ်၏ယှဉ်ရာ သမ္ပဒါန် ဖြစ်၍"အား"ဟု ပေးရမည်။

အဘိမုခေါ ဟုတွာ။ ။ပစ္စဿောသီတ်ထွေ ပတိသဒ္ဒေါ အဘိမုခဝစနောတိ အာဟ — ပေ၊ သုဏိဘ်၊ ဘဂဝတော — ၏၊ မုခါဘိမုခေါ ဟုတွာ (မျက်နှာတော်သို့ ရှေးရှုလျက် ) အဓိဝါသေတွာ (မိမိအပေါ်၌နေစေ၍) သုဏိ၊ န ဥဒါသီနော ဟုတွာတိ အဓိပ္ပါယော—လစ်လျူမရှုဘဲ—ဟူလို။

သုဝဏ္ဏရသပိဉ္ဇရာဟိ-ရွှေရေအလျဉ်ကဲ့သို့ ရွှေအဆင်းရှိကုန်သော၊ဗုဒ္ဓရသ္မိဟိ-ဘုရားရောင်ခြည်တော်တို့ဖြင့်၊ သမုဇ္ဇောတယမာနော-ကောင်းစွာတောက်ပစေတော်မူလျက်၊ ယေန-အကြင်အရပ်၌၊ ဝေရဥ္စဿ- သော၊ ဗြာဟ္မဏဿ-၏၊ နိဝေသနံ - အိမ်သည်၊ (အတ္ထိ၊ ) တေန - ထို ဝေရဥ္စာပုဏ္ဏား၏ အိမ်ရှိရာအရပ်သို့၊ ဥပသင်္ကမိ-ကြွတော်မူပြီ၊ စ-ဆက်၊ အဿ-ထိုပုဏ္ဏား၏၊ ပရိဇနော-အခြွေအရံလူအပေါင်းသည်၊ ဃရဒွါရေ-အိမ်တံခါး၌၊ဌိတမတ္တမေဝ-ရပ်တော်မူကာမျှသာဖြစ်သော၊ ဘဂဝန္တံ - ကို၊ ဒိသွာ - ၍၊ အာရောစေသိ - ပြောပြီ၊ ဗြာဟ္မဏော-သည်၊ သတိံ-သတိကို၊ ပဋိလဘိတွာ- ရ၍၊ သံဝေဂဇာတော–ဖြစ်သော ထိတ်လန့်ခြင်းရှိသည်၊ ( ဟုတွာ ) သဟသာ – အဆောတလျင်၊ ဝုဋ္ဌာယ- ထ၍၊ မဟာရဟံ - မြတ်သူတို့အားထိုက်သော၊ အာသနံ-နေရာကို၊ ပညပေတွာ - ခင်း၍၊ ဘဂဝန္တံ - ကို၊ ပစ္စုဂ္ဂမ္မ- ခရီးဦးကြိုဆို၍၊ ဧတု ဘဝံ ဂေါတမော-၍ ... အရပ်သို့၊ ဘဂဝါ- သည်၊ ဥပသင်္ကမတု - ကြွတော်မူပါ၊ ဧတိ–သို့၊ အာဟ-လျှောက်ပြီ၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဥပသင်္ကမိတွာ - ၍၊ ပညတ္တေ – ခင်းထားအပ်ပြီးသော၊ အာသနေ-၌၊ နိသီဒိ-ပြီ။

အထခေါ-၌၊ ဝေရဉ္စော-ဗြာဟ္မဏော-သည်၊ ဘဂဝန္တံ-သို့၊ ဥပနိသီဒိတုကာမော-ကပ်၍ ထိုင်လိုသည်၊(ဟုတွာ)၊ အတ္တနော- ၏၊ ဌိတပဒေသတော–တည်ရာအရပ်မှ၊ ယေန-အကြင် အရပ်၌၊ ဘဂဝါ - သည်၊ ( အတ္ထိ၊ ) တေန-ဘုရားရှိတော်မူရာ ထို အရပ်သို့၊ ဥပသင်္ကမိ – သွားပြီ၊ ဧတ္ထ ဧတေ - ၌ယေန ဘဂဝါ တေနုပသင်္ကမိ ဟူသော ပုဒ်မှ၊ ပရံ - နောက်ဖြစ်သော ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဥတ္တာနတ္ထမေဝ - ပေါ်လွင် ထင်ရှားသော အနက်ရှိသည်သာ၊ ပန–ကား၊ အပိစ ယောဒေယျဓမ္မော သော နဒိန္နောတိ- နဒိန္နော ဟူသော၊ ယံ-အကြင်စကားကို၊ ဗြာဟ္မဏော-သည်၊ အာဟ-လျှောက်ပြီ၊ တတြ- ထိုစကားရပ်၌၊ အယံ - ၌ ဆိုအပ်လတံ့ကား၊ အဓိပ္ပါယော - ပုဏ္ဏား၏ အလိုတည်း၊ မယာ-တပည့်တော်သည်၊ နိမန္တိတာနံ- ပင့်ဖိတ်အပ်ကုန်သည် ဖြစ်၍၊ ဝဿံ-မိုးလပတ်လုံး၊ ဝုဋ္ဌာနံ–သီတင်းသုံးတော်မူပြီးကုန်သော၊ တုမှာကံ-အရှင်ဘုရားတို့အား၊ တေမာသံ-ဝါတွင်းသုံးလပတ်လုံး၊ ဒိဝသေ ဒိဝသေ-နေ့တိုင်းနေ့တိုင်း၌၊ ပါတော-နံနက်စောစော၌၊ ယာဂုခဇ္ဇကံ- ယာဂုခဲဘွယ်ငရုံး၊ မဇ္ဈန္ဟိကေ–နေ့၏ အလယ်အဘို့၌၊ ခါဒနိယ ဘောဇနိယံ - ခဲဘွယ် ဘောဇဉ်ငရုံး၊

သုဝဏ္ဏ၊ပေ၊ရသ္မိဟိ။ ။ဗုဒ္ဓ ရသသဒ္ဒေါ ဥဒကပရိယာယော၊ ပိဉ္ဇရသဒ္ဒေါ ဟေမဝဏ္ဏပရိယာယော၊ တသ္မာ သုဝဏ္ဏဇလဓာရာဝိယံ – ရွှေရေအလျဉ်ကဲ့သို့၊ ( ဝိမတိ၌ "ဝိလီနသုဝဏ္ဏဇလံဝိယ–ကြေမွသောရွှေရေကဲ့သို့") သုဝဏ္ဏဝဏ္ဏာဟိ ရသ္မိဟိ။

သာယန္ဟေ – ညနေချိန်၌၊ အနေက·ဝိဓ ပါနဝိကတိ ဂန္ဓပုပ္ဖါဒီဟိ - တပါးမက များသော အပြားရှိသော အထူးတလယ် ပြုအပ်သော သောက်ဘွယ်,နံ့သာ ပန်းအစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ ပူဇာသက္ကာရော-ကောင်းစွာပြုအပ်သော ပူဇော်ဘွယ် ၎င်း၊ ဣတိဧဝမာဒိကော - ဤသို့ အစရှိသော၊ ယောဒေယျဓမ္မော - အကြင် ပေးလှူထိုက်သော သဘောရှိသော ပစ္စည်းသည်၊ ဝါ–ကို၊ ဒါတဗ္ဗော-ပေးလှူ ထိုက်သည်၊ အဿ-ဖြစ်ပါ၏၊ [ဒေယျော+ဓမ္မော ယဿာတိ ဒေယျဓမ္မော၊] သော- ထို ဒေယျဓမ္မကို၊ န ဒိန္နော- မပေးလှူအပ်သေးပါ၊ ဣတိ - ဤ ဆိုအပ် ပြီးကား၊ (အမိပ္ပါယော–ပုဏ္ဏားဧ၏ အလိုတည်း။)

ပန-ကား၊ တဋ္ဌခေါ နော အသန္တံ နတ္တိ ဧတ္တ - နံ့ ဟူသော ဤပါဌ်၌၊ လိင် ဝိပလ္လာသော-ပုလ္လိန်၏ နပုလ္လိန်ပြန်ခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ [ဒေယျဓမ္မော ဟူသော ပုလ္လိန်မှ နပုလ္လိန်ပြန်၍ " တဋ္ဌ " ဟု ဆိုထားသည်- ဟူလို၊] ဟံ - မှန်၊ သောစ ဒေယျဓမ္မော - ထိုပေးလှူထိုက်သော သဘောရှိသော ပစ္စည်းသည် လည်း၊ အမှာကံ-တပည့်တော်တို့၏၊ ဝါ-တို့မှာ၊ နော အသန္တော–ထင်ရှား မရှိသည် မဟုတ်ပါ၊ ဣတိ အယံ-ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ ဧတ္တ–ဤတဋ္ဌခေါ နော အသန္တံ့ ဟူသော ပါဌ်၌၊ အတ္ထော - တည်း၊ အထဝါ–ထို့ပြင် တနည်းကား၊ ယံ ဒါနဝတ္ထုံ - အကြင်ဒါန ဝတ္ထုကို၊ မယံ–တပည့်တော်တို့သည်၊ တုမှာကံ- အရှင်ဘုရားတို့အား၊ ဒဒေယျာမ - ပေးလှူကုန်ရာပါ၏၊ တဋ္ဌ - ထို ဒါနဝတ္ထု သည်လည်း၊ နော အသန္တံ-ထင်ရှားမရှိသည်မဟုတ်ပါ၊ ဣတိ ဧဝံ–သို့၊ ဧတ္တ- ဤ တဋ္ဌခေါ နော အသန္တံ ဟူသောပါဌ်၌၊ အတ္ထော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

နော ပိ အဒါတုကမျတာတိ-ကား၊ ပဟူတဝိတ္တူပကရဏာနံ-များသော နှစ်သက်ခြင်း၏အကြောင်းဖြစ်သော ဥစ္စာစပါး စသည်ရှိကုန်သော၊ မစ္ဆရိနံ- ဝန်တိုခြင်း ရှိသူတို့၏၊ ( အဒါတုကာမတာ-မပေးလှူလို သူတို့၏အဖြစ်သည်၊ အတ္တိ ယထာ- ရှိသကဲ့သို့၊ တထာ - တူ၊) အဒါတု ကာမတာပိ- သည်လည်း၊

အထဝါ။ ။သိင်္ဂဝိပလ္လာသ မဟုတ်ဘဲ ပါဌ်ရှိအတိုင်း အနက်ဖွင့်လို၍"အထဝါ" ဟု မိန့်၊ မည်သည့် လှူဘွယ် ဟု နာမည်မတပ်ဘဲ သာမည ပြောအပ်သော အရာဖြစ်၍ "တဋ္ဌ"ဟု နပုလ္လိန်ဖြင့် ညွှန်ပြရသည်– ဟူလို။ [ ဣမိနာ သာမညဝစနတော ဧတ္တ နပုံ သကလိင်္ဂနိဒ္ဒေသောတိ ဒဿေတိ။]

အဒါတု၊ပေ၊နော,နတ္တိ။ ။နော ပိမှ အပိကို အဒါတုကာမတာနှင့် တွဲရမည်ဟု သိစေလို၍ "အဒါတုကာမတာပိ နော"ဟု ဖွင့်၏၊ "နတ္တိ"ကား နော၏အဖွင့်တည်း၊ ယထာစသည်ကား ဝိသဒိသူပမာ ဝါကျတည်း၊ မစ္ဆရိပုဂ္ဂိုလ်တို့မှာ မပေးလိုစိတ် ရှိသကဲ့ သို့, မိမိ (ဝေရဉ္ဇာပုဏ္ဏား) မှာ မပေးလိုစိတ် မရှိပါ–ဟူလို။

နော,နတ္ထိ-မရှိပါ၊ တံကုဒေတဗ္ဗ၊ ပေ၊ဝါသာတိ-ဟူသော၊ တဗ္ဗ - ထို စကား ရပ်၌၊ အယံ – ကား၊ ယောဇနာ – ပုဒ်အနက်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းတည်း၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ဃရာဝါသာ - အိမ်ဟူသော အာဝါသတို့သည်၊ ဝါ-အိမ်ရာ တည်ထောင် လူ့ဘောင်တို့သည်၊ ဗဟုကိစ္စာ - များသော ကိစ္စ ရှိပါကုန်၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ဧတ္ထ - ဤ ဃရာဝါသ၌၊ ဒေယျဓမ္မ - ပေးလှူထိုက်သော သဘောရှိသော ပစ္စည်းသည်၊သန္တေပိ-ရှိသော်လည်း၊ စ-သည်သာမကသေး၊ ဒါတုကမျတာယ-ပေးလှူလိုသူ၏အဖြစ်သည်၊(သန္တိယာပိ)-ရှိပါသော်လည်း၊ ယံ-အကြင်အကြောင်းကြောင့်၊ မယံ-တို့သည်၊ တုမှာကံ-တို့အား၊ ဒေယျဓမ္မံ-ကို၊ ဒဒေယျာမ-နိ၏၊ တံ - ထိုအကြောင်းကို၊ ကုတော - အဘယ်မှ၊ လဗ္ဘာ-ရအပ်ပါအံ့နည်း၊ တံ –ထိုအကြောင်းကို၊ ကုတော–မှ၊ လဒ္ဓုံ - ငှါ၊ သက္ကာ– တတ်ကောင်း ပါအံ့နည်း၊ [ (တနည်း၊ ) မယံ တုမှာကံ ဒေယျဓမ္မံ - ကို၊ ယံ ဒဒေယျာမ- အကြင်ပေးလှူကုန်ရာပါ၏၊ တံ- ထိုပေးလှူခြင်းကိစ္စကို၊ ကုတော- မှ၊ လဗ္ဘာ-နည်း၊ တံ-ထိုပေးလှူခြင်း ကိစ္စကို၊ ကုတော လဒ္ဓုံ, သက္ကာ-နည်း၊]

**မှတ်ချက်။** ။ သာရတ္ထဋီကာ၌ "နော နတ္ထီတိ နော (အမှာကံ) နတ္ထိ" ဟု ပဌမ နည်းဖွင့်၏၊ ဤအဖွင့်ကို စဉ်းစားသင့်၏၊ ပဒတောပရ မဟုတ်လျှင် အမှကို "နော" မပြုရ၊ ဤနောလည်း ("နောဝိ အဒါတုကမျတာ" ဟု) ဝါကျ၏အစဖြစ်၍ ပဒတော ပရ မဟုတ်၊ ထို့ကြောင့်ပင် ဤနည်းကို ဋီကာဆရာ့ကိုယ်တိုင်ပင် စိတ်မချ၍"နောတိဝါ ဧတေဿ ဝိဝရဏံ နတ္ထီတိ–နတ္ထိသည် နော၏အဖွင့်"ဟု ဒုတိယတနည်း ပြလေသည်။

**ပဟူတ၊ပေ၊ကရဏာနံ။** ။ဝိတ္တိံယာ– နှစ်သက်ခြင်း၏+ဥပကရဏံ - အကြောင်း တည်း၊ ဝိတ္တူပကရဏံ၊ [ တုဋ္ဌိကာရဏန္တိ အတ္ထော – ဋီကာ၊ ] ပဟူတံ + ဓနဓည ဇာတရူပရဇတ နာနာဝိဓာလင်္ကာရသုဝဏ္ဏဘာဇနာဒိဘေဒံ ဝိတ္တူပကရဏံ ဧတေသန္တိ ပဟူတ၊ပေ၊ကရဏာ၊ များစွာသော (ဥစ္စာ, စပါး, ရွှေငွေ,တန်ဆာအမျိုးစုံနှင့် ရွှေအိုး, ရွှေခွက်စသော) နှစ်သက်ခြင်း၏အကြောင်း ဖြစ်သော ဥစ္စာဘဏ္ဍာရှိသူတို့။

**သန္တေပိ၊ပေ၊ဒါတုကမျတာယစ။** ။သန္တေပိ၌ ပိသည် သမ္ဘာဝနာဇောတက၊ ဒေယျဓမ္မ ရှိတာတောင်မှ ပေးလှူခြင်း၏အကြောင်း (ပေးလှူခြင်းကိစ္စ ) ကို မရနိုင်တုံ သေး၏၊ ဒေယျဓမ္မမရှိလျှင်ကား ဆိုဘွယ်ရာပင်မရှိ–ဟူလို၊ ဒါတုကမျတာယစ၌ (စ) ကား ဒေယျဓမ္မရှိခြင်းကို ပေါင်းသော သမ္ပိဏ္ဍနတည်း၊ ဤ၌လည်း သန္တေပိကို "သန္တိ ယာပိ " ဟု ပြင်၍လိုက်စေ၊ ဒေယျဓမ္မရှိရုံတွင်မက , လှူလိုစိတ် ရှိတာတောင်မှလည်း ထိုအကြောင်း (ထို လှူခြင်းကိစ္စကို)မရတုံသေး၏၊ လှူလိုစိတ် မရှိလျှင်ကား ဆိုဘွယ်ပင် မရှိ–ဟူလို။

**တံ ကုတော၊ပေ၊ ဒဒေယျာမ။** ။ တံပါသောဝါကျ၏ အနိယမဝါကျကို "ယံ ၊ပေ၊ဒဒေယျာမ"ဟု အပိုထည့်သည်၊ "တန္တိ တံ ကာရဏံ, တံ ကိစ္စံဝါ"ဟု တံ အစွဲကို ၂ မျိုးပြထား၏၊ ထိုတွင် " တံ ကာရဏံ " အလို " ယံ ယေန ကာရဏေန" ဟုရင်း,

ဇုတိ- သို့၊ ယရာဝါသံ- ကို၊ ဂရဟန္တော – ကဲ့ရဲ့လျက်၊ အာဂဟ - လျှောက်ပြီး၊ သော - ထိုပုဏ္ဏားသည်၊ မာရေန - သည်၊ အာဝဋ္ဋိတဘာဝံ - လှည့်ပတ်အပ်သည်၏အဖြစ်ကို၊ နဇာနာတိ ကိရ - မသိသတတ်၊ ယရာဝါသ ပလိဗောဓေန- ယရာဝါသဟူသော အနှောက်အရှက်ကြောင့်၊ မေ - ၏၊ သတိသမ္မောသော- သတိ၏ ပျောက်ကင်းခြင်းသည်၊ ဝါ - မေ့လျော့ခြင်းသည်၊ ဇာတော - ဖြစ်ပြီး၊ ဇုတိ-သို့၊ မညိ- မှတ်ထင်ပြီ၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဧဝံ- သို့၊ အာဂဟ- လျှောက်ပြီး၊ အပိစ- တနည်းကား၊ တံကုတေတ္ထ လဏ္ဍာတိ- ကား၊ ဇုမသ္မိံ တေမာသဏ္ဍန္တရေ- ဤဝါတွင်း သုံးလအတွင်း၌၊ ယံ-အကြင်ပစ္စည်းဝတ္ထုကို၊ အဟံ- တပည့်တော်သည်၊ တုမှာကံ - တို့အား၊ ဒဒေယျံ - ပေးလှူရာပါ၏၊ တံ - ထိုပစ္စည်းဝတ္ထုကို၊ ကုတော- မှ၊ လဏ္ဍာ - နည်း၊ ဟဲ - မှန်၏၊ ယရာဝါသာ - တို့သည်၊ ဗဟုကိစ္စာ- န်၏၊ ဇုတိဧဝံ- သို့၊ ဧတ္ထ- ဤ တံ ကုတေတ္ထလဏ္ဍာ ဟူသောပါဌ်၌၊ ယောဇနာ-ပုဒ်အနက်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ–၏။

အထ–လျှောက်ပြီးရာ ထိုအခါ၌၊ ဗြာဟ္မဏော–သည်၊ အဟံ–ငါသည်၊ (ဒဒေယျံ၌စပ်) ယံ - အကြင် ဒါနဝတ္ထုသည်၊ ဝါ- ကို၊ မေ - သည်၊ ဒါတဗ္ဗံ- သည်၊ သိယာ-၏၊ တံသဗ္ဗံ-ထိုအလုံးစုံသော ဒါနဝတ္ထုကို၊ ကေဒိဝသေနေဝ- တနေ့ထည်းဖြင့် သာလျှင်၊ ယန္ဓုန ဒဒေယျံ – အကယ်၍ ပေးလှူရပါမူကား ကောင်းလေစွ၊ ဇုတိ,စိန္တေတွာ- ပြီး၍၊ အမိဝါသေတု မေ ဘဝံ ဂေါတမော တိ အာဒိံ-ကို၊ အာဂဟ- ပြီ၊ တတ္ထ - ထို အမိဝါသေတု မေ ဘဝံ ဂေါတမော အစရှိသော စကားရပ်၌၊ သွာတနာယာတိ-ကား၊ မေ-တပည့်တော်၏၊ ဝါ- သည်၊ တုမှေသု - တို့၌၊ သက္ကာရံ - ပူဇော်သက္ကာရကို၊ ကရောတော - ပြုလသော်၊ ဝါ-ပြုသော၊ မေ-တော်၏၊ သွေ - နက်ဖန်ခါ၌၊ ယံ ပုညဥ္စေဝ-အကြင် ကောင်းမှုသည်ရင်း၊ ယံ ပီတိပါမောဇ္ဇဥ္စ - အကြင် နှစ်သက်ဝမ်းမြောက်ခြင်း

"ဧတ္တ ဃရာဝါသေ"ဟု ရင်း စွဲပါ၊ "တံ ကိစ္စံ" အလို " ယံ ဒဒေယျာမ " ဟု ကြိယာပရာမသနစွဲ၍ ဧတ္တကိုကား ရှေးနည်းအတိုင်း"ဃရာဝါသေ" ဟုပင် စွဲ။ [ယန္တိ ယေန ကာရဏေန၊ ကြိယာပရာမသနံဝါ။] တံ ကုတောလဏ္ဍာကိုပင် "ကုတော တံ သက္ကာ လဋ္ဌုံ"ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ ထိုသို့ ဖွင့်သဖြင့် လဏ္ဍာနိပါတ်ပုဒ်သည် ဤနေရာ၌ ကံအနက်ကို ဟောသော ကိတန္တ ပတိရူပက (ကိတ်ပုဒ်နှင့် အလားတူသော) နိပါတ်ပုဒ်ဟု သိစေသည်။ [ယုဇ္ဇသက္ကာ, အရဟာဒိ, စရှိဖွင့်လတ်, ကမ္မသာဓ်ခပ။]

အပိစ။ ။"တံ ကုတေတ္ထလဏ္ဍာ"ကိုပင် တနည်းဖွင့်ပြလို၍ "အပိစ" စသည်မိန့်၊ ဤ အဋ္ဌကထာ ဒုတိယနည်းကိုပင် ဋီကာ၌ " ဒုတိယေပန အတ္ထဝိကပ္ပေ တန္တိ ဒေယျဓမ္မသ ပရာမသနံ၊ ဧတ္ထာတိ ဇုမသ္မိံ တေမာသဏ္ဍန္တရေတိ အဓ္ဓော"ဟု ရင်း, "ယန္တိ ဒေယျဓမ္မန္တိအဓ္ဓော"ဟု ရင်း ဖွင့်၏၊ ဤအတိုင်းပင် နိဿယ၌ အနက်ပေးထားသည်။

သည်ငှင်း၊ ဘဝိဿတိ-ဖြစ်ပါလတ္တံ့၊ တဒတ္ထာယ- နက်ဖန်ဖြစ်လတ္တံ့သော ထိုကောင်းမှု ပီတိပါမောဇ္ဇအကျိုးငှါ၊ (အဓိဝါသေတု ၌စပ်၊) အထ-လျှောက်ပြီးရာ ထိုအခါ၌၊ တထာဂတော-သည်၊ (အဓိဝါသေတိ၌ စပ်၊) အဟံ-သည်၊ သစေ နာဓိဝါသေယျံ-အကယ်၍လက်ခံတော် မမူအံ့၊ ( ဧဝံသတိ - သော်၊ ) အယံ-ဤရှင်ဝေါတမသည်၊(နပတိဂ္ဂဏှာတိ၌စပ်၊)တေမာသံ-ပတ်လုံး၊ ကိဋ္ဋိ-တစုံတခုကို၊အလဒ္ဓါ-မရ၍၊ဝါ-ကြောင့်၊ကုပိတောမဉော-စိတ်ဆိုးလေယောင်တကား၊ တေန-ထိုသို့ စိတ်ဆိုးခြင်းကြောင့်၊ မေ - ငါ၏၊ ဝါ-သည်၊ ယာစိယမာနော-တောင်းပန်အပ်ပါလျက်၊ ဧကဘတ္တမ္ပိ-တထပ်သော ဆွမ်းကိုလည်း၊ န ပတိဂ္ဂဏှာတိ-မခံယူ၊ ဣမသ္မိံ - ဤ အရှင် ဝေါတမ၌၊ အဓိဝါသနခန္တိ-အဓိဝါသနခန္တီသည်၊ နတ္ထိ-မရှိ၊ အယံ-ဤ ရှင်ဝေါတမသည်၊ အသဗ္ဗညူ—သဗ္ဗညူမဟုတ်၊ ဣတိဧဝံ- သို့၊ ဗြာဟ္မဏောစ-သည်၎င်း၊ ဝေရဉ္ဇဝါသိနောစ-ဝေရဉ္ဇာမြို့၌နေလေ့ရှိသူတို့သည်၎င်း၊ ဂရဟိတွာ-ကဲ့ရဲ့၍၊ ဗဟုံ-စွာ၊အပုညံ-ကို၊ပသဝေယျုံ-တိုးပွားစေကုန်ရာ၏၊ တေသံ-ထိုသူတို့၏၊ တံ-ထိုမကောင်းမှု၏ တိုးပွားခြင်းသည်၊ မာ အဟောသိ-မဖြစ်ပါစေလင့်၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံတော်မူ၍၊တေသံ-ထိုသူတို့၏(အပေါ်၌၊)အနုကမ္ပာယ-သနားတော်မူခြင်းကြောင့်၊အဓိဝါသေတိ-လက်ခံတော်မူ၏၊ တေန-ထို့ကြောင့်၊အဓိဝါသေသိ ဘဂဝါတုဏှီဘာဝေနာတိ- ဟူ၍၊ အာယသ္မတာ ဥပါလိတ္ထေရေန - သည်၊ ဝုတ္တံ-လျှောက်အပ်ပြီ၊ [ ပါဠိတော်၌"အဓိဝါသေသိ ဘဂဝါ တုဏှီဘာဝေန "ဟု တိုက်ရိုက်ပါ၏။]

စ - ဆက်၊ အဓိဝါသေတွာ - မူပြီး၍၊ အထခေါ- လက်ခံတော်မူပြီးရာထိုအခါ၌၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဝေရဉ္ဇံ-သော၊ ဗြာဟ္မဏံ- ကို၊ ဃာရာဝါသ ပလိဗောဓစိန္တာယ - ဃရာဝါသဟူသော အနှောက်အရှက်ကို ကြံစည်ခြင်းဖြင့်၊

**သွာတနာယ**။ ။ "ယံ မေ၊ပေ၊တဒတ္ထာယ"ကို ကြည့်၍"သွေ+ဘဝံ သွာတနံ" ဟု ပြု၊ ဘဝအနက်၌ တနပစ္စည်းသက်၊ သွေ၏ ဧ ကို အာပြု၍ "သွာတနံ" ဟု ဖြစ်၏၊ ပုညံနှင့် ပီတိပါမောဇ္ဇကို အရကောက်၊ ထို့နောက် တဒတ္ထသမ္ပဒါန် ( သ ) ကို အာယ ပြု၍"သွာတနာယ"ဟု ဖြစ်၏။

**မှတ်ချက်**။ ။"အထ တထာဂတော"ဟု ၎င်း,"အဓိဝါသေသိ ဘဂဝါ"ဟု ၎င်း ရှိ၏၊ထိုစာရှိ အတိုင်းဆိုလျှင် အဓိဝါသေတိ ကြိယာတခုတည်း၌ ကတ္တား၂ခုထပ်လျက် ရှိ၏၊ ထို့ကြောင့်"အထ တထာဂတော၊ပေ၊ အနုကမ္ပါယ အဓိဝါသေတိ၊ တေန ဝုတ္တံ အဓိဝါသေသိ ဘဂဝါ တုဏှီဘာဝေနာတိ " ဟု ရှိသင့်၏၊ နိဿယ၌ ဤအတိုင်းပေးထားသည်၊ယောဇနာနှင့် ရှေးနိဿယ၌ကား"တထာဂတော-သော၊ ဘဂဝါ-သည်" ဟု တထာဂတောကို ဝိသေသနလုပ်၍ အနက်ပေး၏။

အလံ-အကျိုးမရှိ၊ ဣတိ, သညာပေတွာ-နားလည်စေတော်မူပြီး၍၊ တဒ်ဏာနုရူပါယ- ထိုခဏ၌ (အဇ္ဈာသယဖြစ်ပုံအား) လျောက်ပတ်သော၊ ဓမ္မိယာ-တရားရှိသော၊ ကထာယ - စကားဖြင့်၊ ဒိဋ္ဌဓမ္မိကသမ္ပရာယိကံ - မျက်မှောက်ဘဝ၌လည်းဖြစ် တမလွန်ဘဝ၌လည်းဖြစ်သော၊ အတ္ထံ-စီးပွားကို၊ သန္ဒဿေတွာ- ကောင်းစွာ ပြတော်မူပြီး၍၊ ကုသလေ, ဓမ္မေ-တို့ကို၊ သမာဒါပေတွာ-ကောင်းစွာယူစေတော်မူပြီး၍၊ ဂဏှာပေတွာ-၍၊ [သမာဒါပေတွာကို ဂဏှာပေတွာဟု ဖွင့်၊] တတ္ထ - ထို ကုသိုလ်တရားတို့၌၊ နံ- ထိုပုဏ္ဏားကို၊ သမုတ္တေဇေတွာ- ကောင်းစွာ ထက်သန်စေတော်မူးပြီး၍၊ သဥဿာဟံ- အားထုတ်ခြင်းနှင့်တကွဖြစ်သည်ကို၊ ကတွာ- ပြုတော်မူပြီး၍၊ တာယ သ ဥဿာဟတာယစ ထိုအားထုတ်ခြင်းနှင့်တကွဖြစ်သည်၏အဖြစ်ဖြင့်၎င်း၊ အညေဟိ-အခြားကုန်သော၊ ဝိဇ္ဇမာန ဂုဏေဟိစ-ထင်ရှားရှိသောဂုဏ်တို့ဖြင့်၎င်း၊ သမ္ပဟံသေတွာ-ကောင်းစွာ အပြားအားဖြင့် ရွှင်လန်းစေတော်မူပြီး၍၊ ဓမ္မရတနဝဿံ-တရားရတနာမိုယ်းကို၊ ဝဿေတွာ-ရွာစေတော်မူပြီး၍၊ အာသနာ-မှ၊ ဥဋ္ဌာယ-၍၊ ပက္ကမိ-မူပြီ။

**အလံ၊ပေ၊ သညာပေတွာ။** ။ "ဗြာဟ္မဏ,....ငါဘုရားကို သတိမရမှုကို ဆရာဝါသ ပလိဗောဓသည် ပြုအပ်သည်မဟုတ်၊ မာရ်နတ်၏ လှည့်ပတ်ခြင်းသည် ပြုအပ်၏" ဟု ပုဏ္ဏားကို နားလည်စေပြီး၍။

**တဒ်ဏာနုရူပါယ။** ။ "ယာဒိသီ တဒါ တဿ ( ထိုပုဏ္ဏား၏ ) အဇ္ဈာသယ ပဝတ္တိ၊ တဒနုရူပါယ — ထို အဇ္ဈာသယဖြစ်ခြင်းအား လျောက်ပတ်သော" ဤအဖွင့်ကို ထောက်၍ "တံခဏေ+အဇ္ဈာသယဿ+ အနုရူပါ တံခဏာနုရူပါ"ဟု ပြု၊ "ထိုခဏ၌+အဇ္ဈာသယဖြစ်ပုံအား လျောက်ပတ်သော" ဟူလို။

**တတ္ထစ နံ သမုတ္တေဇေတွာ။** ။ " ဆောက်တည်စေအပ်ပြီးသော ထိုကုသိုလ်တရား၌ ထက်သန်စေခြင်း" ဟူသည် ကုသိုလ်ပြုခြင်း၌ စိတ်အားထက်သန်လာအောင် ဝိဝဋ္ဋကုသိုလ်ကို ပြုလိုသောအားဖြင့် စိတ်သန့်ရှင်းလာအောင် ပြုပေးခြင်းတည်း။ [သမုဒေဝ ( သံအဖွင့် ) ဥပရုပရိ ( ဥ အဖွင့် ) ပုညကြိယာယ — ၌၊ တိက္ခဝိသဒဘာဝံ-ထက်သန်သည်၏အဖြစ် သန့်ရှင်းသည်၏အဖြစ်သို့+ အာပါဒေတွာ — ရောက်စေ၍။] တံပန-ထို ထက်သန်စေခြင်းဟူသည်၊ အတ္ထတော တဿ, ဥဿာဟဇနနံ- အားတက်သရော ဖြစ်စေခြင်းသည်၊ ဟောတီတိ အာဟ-သ ဥဿာဟံ ကတွာတိ။

**သမ္ပဟံသေတွာ။** ။သမ္ပဒေဝ ဟဋ္ဌတုဋ္ဌဘာဝံ အာပါဒေတွာ၊ ကုသိုလ်ပြုခြင်း၌ စိတ်အားထက်သန်လာခြင်းသည်၎င်း, ကုသိုလ်ပြုနိုင်ဘို့ရန်ပစ္စည်းပြည့်စုံခြင်း ယုံကြည်မှုသဒ္ဓါ၏ ပြည့်စုံခြင်းစသော ဂုဏ်သည်၎င်း ဒိဋ္ဌဓမ္မိကသမ္ပရာယိက စီးပွား၏အကြောင်းဖြစ်၍ ကောင်းမြတ်ရကား တွေးတိုင်းတွေးတိုင်း ရွှင်လန်း နှစ်သက်စရာဖြစ်လေသည်၊ ထို့ကြောင့် " သ ဥဿာဟတာယ၊ပေ၊ သံပဟံသေတွာ"ဟု မိန့်သည်။

စပန-ထပ်၍ ဆက်ဦးအံ့၊ ဘဂဝတိ-သည်၊ ပဏ္ဏေ-သော်၊ ဝေရဉ္စော-သော၊ မြာဟ္မဏော-သည်၊ ပုတ္တဒါရံ- သားမယားကို၊ အာမန္တေသိ-ခေါ်၍ ပြောပြီ၊ (ကိံ)၊ ဘဏေ- တို့၊ မယံ-တို့သည်၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ တေမာသံ- လုံး၊ နိမန္တေတွာ- ပင့်ဖိတ်ပြီး၍၊ ကေဒိဝသံ- ၌၊ ဝါ- မျှ၊ ကေဘတ္တမ္ပိ- တထပ်သော ဆွမ်းကိုလည်း၊ နာဒမှ – မပေးလှူခဲ့ကြရကုန်၊ ဟန္ဒ – တိုက်တွန်းပါ၏၊ ( ပဋိယာဒေထ၌စပ်၊) ဒါနိ- ယခုအခါ၌၊ ယထာ- အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့် စီရင်လသော်၊ တေမာသိကောပိ – ဝါတွင်းသုံးလ၌ ပေးလှူထိုက်သည်လည်း ဖြစ်သော၊ [ တေမာသံ+ဒါတဗ္ဗော တေမာသိကော။ ] ဒေယျဓမ္မော-သည်၊ သွေ- ၌၊ ကေဒိဝသေနေဝ – တနေ့ထည်းဖြင့် သာလျှင်၊ ဒါတုံ – ငှါ၊ သက္ကာ-တတ်ကောင်းသည်၊ ဟောတိ-၏၊ တထာ – ထို အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ဒါနံ-လှူဘွယ်ဝတ္ထုကို၊ ပဋိယာဒေထ- စီရင်ကြကုန်လော၊ ဣတိ–၍သို့သိစေပြီ။

တတော- ထိုမှနောက်၌၊ ပဏီတံ - မွန်မြတ်သော၊ ဒါနံ - ကို၊ ပဋိယာဒါပေတွာ-စီရင်စေပြီး၍၊ ယံ ဒိဝသံ-၌၊ [ယံ ဒိဝသန္တိ ယသ္မိံဒိဝသေ။] ဘဂဝါ-ကို၊ နိမန္တိတော- ပင့်ဖိတ်အပ်ပြီ၊ တဿာရတ္တိယာ- ထို ပင့်ဖိတ်ရာနေ့ညဥ့်၏၊ [ (တနည်း) တဿ – ထို ပင့်ဖိတ်ရာနေ့၏၊ ရတ္တိယာ - ညဥ့်၏၊ ] အစ္စယေန-လွန်ရာ အခါ၌၊ အာသနဋ္ဌာနံ – ထိုင်နေရာ အရပ်ကို၊ အလင်္ကာရပေတွာ-တန်ဆာဆင်စေ၍၊ မဟာရဟာနိ- မြတ်သူတို့အားထိုက်ကုန်သော၊[မဟန္တာနံ+အရဟာနိ မဟာရဟာနိ၊] အာသနာနိ-တို့ကို၊ ပညပေတွာ-ခင်းစေပြီး၍၊ ဂန္ဓဝုမ ဝါသ ကုသုမ ဝိစိတြံ–အနံ့, အခိုး,အထုံ,ပန်းတို့ဖြင့်ဆန်းကြယ်သော၊ မဟာပူဇံ - ကြီးစွာသော ပူဇော်ဘွယ်ကို၊ သဇ္ဇေတွာ - အသင့် ပြင်ဆင်ပြီး၍၊ ဘဂဝတော - အား၊ ကာလံ- ကို၊ အာရောစာပေသိ - ပြီ၊ တေန– ကြောင့်၊ အထခေါ၊ပေ၊ နိဋ္ဌိတံ ဘတ္တန္တိ - ဟူ၍၊ ( အာယသ္မတာ ဥပါလိတ္ထေရေန - သည်၊)ဝုတ္တံ-လျှောက်အပ်ပြီ၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဘိက္ခုသံဃပရိဝုတော-ရဟန်း သံဃာ ခြံရံအပ်သည်၊ ( ဟုတွာ)၊ တတ္ထ- ထို ပုဏ္ဏားအိမ်သို့၊ အဂမာသိ-ပြီ၊ တေန - ကြောင့်၊ အထခေါ၊ ပေ၊ သံဃေနာတိ- ဟူ၍၊ ( အာယသ္မတာ ဥပါလိတ္ထေရေန) ဝုတ္တံ- ပြီ။

**တဿာရတ္တိယာ။** ။ပါဠိတော်မှာပင် "တဿာရတ္တိယာ"ဟု ရှိ၏၊ "ယံဒိဝသံ ဘဂဝါ နိမန္တိတော"ဟု ထည့်ထားသောအနိယမဝါကျ၌"ယံဒိဝသံ"ကိုထောက်လျှင် "တဿ (ထို ဆွမ်းစားပင့်ရာနေ့၏) ရတ္တိယာ–၏"ဟု ပါဠိတော် အဋ္ဌကထာ ၂ ဖြာလုံးမှာပင် (တဿ–ဟု) ရှိသင့်မည်ထင်သည်။

အထခေါ ဝေရဉ္စော ဗြာဟ္မဏော ဗုဒ္ဓပ္ပမုခံ ဘိက္ခုသံဃန္တိ ဧတ္ထ-၌ပါဠိ၌၊ ဗုဒ္ဓပ္ပမုခန္တိ – ကား၊ ဗုဒ္ဓပရိဏာယကံ – မြတ်စွာဘုရား ဟူသော ရှေ့ဆောင်အကြီးအကဲ ရှိသော၊ ဗုဒ္ဓံ-ကို၊ သံဃတ္ထေရံ-ကို၊ ကတွာ–၍၊ နိသိန္နံ- ထိုင်နေသော၊ ( ဘိက္ခုသံဃံ ၌စပ်၊ ) ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ပဏီတေနာတိ - ကား၊ ဥတ္တမေန-ကောင်းမြတ်သော၊ (ခါဒနီယေန ဘောဇနီယေန၌စပ်၊) သဟတ္ထာတိ-ကား၊ သဟတ္ထေန- မိမိလက်ဖြင့်၊ [နာ ကို အာ ပြု-ဟု သိစေသည်၊] သန္တပ္ပေတွာတိ-ကား၊ သုဋ္ဌု-ကောင်းစွာ၊ တပ္ပေတွာ-နှစ်သက်စေ၍၊ ဝါ-တင်းတိမ်ရောင့်ရဲစေ၍၊ ပရိပုဏ္ဏံ - ပြည့်စုံ လုံလောက်သည်ကို၊ သုဟိတံ - ကောင်းစွာ ဆောင်နိုင်သည်ကို၊ ဝါ-ဝသည်ကို၊ ယာဝဒတ္ထံ - အလိုရှိတိုင်းကို၊ ကတွာ- ၍၊ သမ္ပဝါရေတွာတိ-ကား၊ သုဋ္ဌု-စွာ၊ ပဝါရေတွာ-ပယ်မြစ်စေပြီး၍၊ အလန္တိ-အလံ ဟူ၍၊ ဝါ-တော်ပြီ ဟူ၍၊ [သီလက္ခန်၌ အလံအလံ ဟု ၌၏]ဟတ္ထသညာယ- လက် အမှတ်အသားဖြင့်ရင်း၊ မုခသညာယ -မျက်နှာ အမှတ်အသားဖြင့်ရင်း၊ ဝစီဘေဒေန-နှုတ်မြွက်ခြင်းဖြင့်ရင်း ပဋိက္ခိပါပေတွာ-ပယ်မြစ်စေပြီး ၍၊

ဗုဒ္ဓပရိဏာယကံ။ ။ပရိဏေတိ – ထက်ဝန်းကျင် ဆောင်သွားတတ်၏၊ ဣတိ ပရိဏာယကော၊ [ ပရိပုဗ္ဗ+နီ, ဏျ၊ ရကြောင့် ဏပြန်၊ ] ဗုဒ္ဓေါ + ပရိဏာယကော ယဿ ( ဘိက္ခုသံဃဿ )တိ ဗုဒ္ဓပရိဏာယကော၊ ပမုခ ( အကြီးအမှူး ) ကိုပင် "ပရိဏာယက"ဟု ဖွင့်သည်၊ ထို့ကြောင့် "ဗုဒ္ဓပ္ပမုခန္တိ ဗုဒ္ဓပရိဏာယကံ"ဟု စကားဖြတ်၍ "ဘိက္ခုသံဃံ" ၌စပ်၊ "ဗုဒ္ဓံပေ၊ဝုတ္တံ ဟောတိ" ကား ဥဒ္ဓကဏ္ဍပြတည်း။

သန္တပ္ပေတွာ။ ။တပ္ပဓာတ်သည် ပီဏန–နှစ်သက်ခြင်း(တင်းတိမ်အားရခြင်း) အနက်ကို ဟော၏၊ သံကို သုဋ္ဌု ဟု ဖွင့်၍ ကာရိတ်ပစ္စည်းနှင့် တကွ တပ္ပေတွာကို "ပရိပုဏ္ဏံ၊ပေ၊ကတွာ"ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်၊ "ပရိပုဏ္ဏံ–ပြည့်စုံ လုံလောက်အောင်" ကို "သုဟိတံ"ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ [သု + ဓာ + တ၊ ဓာကို ဟပြု,အာကို ဣပြု၊ သု-ကောင်းစွာ+ဓာ – ဆောင်။ ] ထိုခဲဘွယ်ဘောဇဉ်က ကောင်းစွာ ဆောင်နိုင်" ဟူသည်ကို ယခုကာလ၌ "ဝခြင်း, တင်းတိမ် အားရခြင်း " ဟု ဆိုသည်၊ ထိုသုဟိတံကို တဖန်ထပ်၍ "ယာဝဒတ္ထံ"ဟု ဖွင့်ပြန်သည်၊ "ယာဝ + အ တ္ထာ ယာဝဒတ္ထံ" ဟု အဗျယီဘောပြု၊ "အလိုရှိတိုင်း, စားနိုင်သလောက်, စားချင်သလောက်" ဟု ဆိုလိုသည်။

သမ္ပဝါရေတွာ။ ။ဝရဓာတ်သည် အာဝရဏ-တားမြစ်ခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် သံအတွက် သုဋ္ဌုဟု ဖွင့်၍ ပဝါရေတွာ၌ ပအတွက် " အလံ အလန္တိ၊ပေ၊ ဝစီဘေဒေန"ဟု ဖွင့်ပြီးလျှင် ဝါရေတွာအတွက်"ပဋိက္ခိပါပေတွာ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ဟတ္ထသညာဟူသည် (တော်ပြီ–ဟူသောအထိမ်းအမှတ်ဖြင့်) လက်ကာ၍ပြခြင်းတည်း၊ မုခသညာဟူသည် ( မလိုတော့ဘူးဟူသော အထိမ်းအမှတ်ဖြင့် ) မျက်နှာအရိပ်အကဲကို ပြခြင်း, ဦးခေါင်းရမ်းခြင်းတည်း၊ ဝစီဘေဒကား "တော်ပြီ-ပြည့်စုံပြီ-မလိုတော့" ဟု နှုတ်ဖြင့် တိုက်ရိုက်ပြောခြင်းတည်း။

ဘုတ္တာဝိန္တိ-ကား၊ ဘုတ္တာဝန္တံ-ဆွမ်းဘုဉ်းပေးတော်မူပြီးသော၊[တာဝိပစ္စည်းကို တဝန္တုပစ္စည်းဖြင့် လဲ၍ ဖွင့်သည်။]ဩနီတပတ္တပါဏိန္တိ-ကား၊ပတ္တတော-သပိတ်မှ၊ ဩနီတပါဏိံ အပနီတဟတ္ထံ - ဖယ်အပ်ပြီးသော လက်ရှိတော်မူသော၊ (ဘဂဝန္တံ၌စပ်၊) ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ တိစီဝရေန အစ္ဆာဒေသီတိ-ကား၊ တိစီဝရံ- သုံးထည်သော သင်္ကန်းကို၊ ဘဂဝတော- အား၊ အဒါသိ-ပြီ၊ပန-ဆက်၊ဣဒံ-ဤတိစီဝရေန အစ္ဆာဒေသိဟူသောစကားသည်၊ဝေါဟာရဝစနမတ္တံ-ပြောရိုး စကားမျှသည်၊ ဟောတိ- ၏။ [ ထို ခေတ်က လှူသည်ကို "အစ္ဆာဒေသိ"ဟု ပြောရိုးရှိ၍ "အစ္ဆာဒေသိ" ဟု ဆိုသည်၊ အမှန်အားဖြင့် "လှူပြီ"ဟု ဆိုလိုသည်။]

စ-ဆက်၊ တသ္မိံ တိစီဝရေ-ထိုသုံးထည်သော သင်္ကန်းတွင်၊ ဧကမေကော-တထည် တထည်သော၊ သာဋကော - အဝတ်သည်၊ သဟဿံ-တထောင်ကို၊ အဂ္ဃတိ-ထိုက်တန်၏၊ဣတိ-ဤသို့လျှင်၊မြာဟ္မဏော-သည်၊ဘဂဝတော-အား၊ တိသဟဿဂ္ဃနကံ- ၃ ထောင်ထိုက်တန်သော၊ ဥတ္တမံ-ကောင်းမြတ်သော၊ ကာသိကဝတ္ထသဒိသံ-ကာသိတိုင်း၌ ဖြစ်သော အဝတ်နှင့်တူသော၊ တိစီဝရံ-ကို၊ အဒါသိ-လှူပြီ၊ဧကမေကဿ ဘိက္ခုနော ဧကမေကေန ဒုဿယုဂေနာတိ-ကား၊ ဧကမေကေန-တစုံတစုံသော၊ဒုဿယုဂဠေန-အဝတ်အစုံဖြင့်၊(အစ္ဆာဒေသိ၌စပ်၊)တတြ-ထိုအဝတ် အစုံတွင်၊ဧကသာဋကော-တထည်သောအဝတ်သည်၊ ပဉ္စသတာနိ-ငါးရာတို့ကို၊အဂ္ဃတိ-ထိုက်တန်၏၊ဧဝံ-လျှင်၊ပဉ္စန္နံ ဘိက္ခုသတာနံ-ငါးရာသောရဟန်းတို့အား၊ ပဉ္စသတသဟဿဂ္ဃနကာနိ-ငါးသိန်း ထိုက်တန်ကုန်သော၊ဒုဿာနိ-အဝတ်တို့ကို၊ အဒါသိ-ပြီ၊ မြာဟ္မဏော-သည်၊တွေကမ္ပိ-ဤမျှအတိုင်းအရှည်ရှိသောပစ္စည်းကိုလည်း၊ဒတွာ-လှူရ၍၊ အတုဋ္ဌော-မတင်းတိမ်နိုင်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ပုန-တဖန်၊ သတ္တဋ္ဌသဟဿဂ္ဃနကေ- ခုနစ်ထောင်ရှစ်ထောင် ထိုက်တန်ကုန်သော၊ အနေကရတ္တကမ္ဗလေစ – များစွာသော

ပတ္တတော ဩနီတပါဏိံ။ ။ "ပတ္တောနီတပါဏိံ"ဟု ဆိုသင့်လျက် ပတ္တနှင့် ဩနီတကို ရှေ့နောက်ပြန်၍ "ဩနီတပတ္တ"ဟု ဆိုသည်၊ ဩနီတော+ပတ္တတော+ပါဏိ ယဿာတိ ဩနီတပတ္တပါဏိ"ဟု ဘိန္နာဓိကရဏ တိပဒ ဗဟုဗ္ဗီဟိသမာသ်ပြု၊"အပနီတဟတ္ထံ"ဖြင့် ဩနီတအရ "ဖယ်၍ ဆောင်အပ်" ဟူသော အပနီတ အနက်, ပါဏိ အရ ဟတ္ထ အနက်ကို ယူပါ, ဟု သိစေသည်၊ "ဆွမ်းဘုဉ်းပေးခဲ့က သပိတ်နှင့် ဆက်သွယ်နေသော လက်တော်ကို (ဆွမ်းဘုဉ်းပေးပြီးဖြစ်၍) သပိတ်မှ ဖယ်ထားသည်"ဟု ဆိုလိုသည်။ [အဝပုဗ္ဗနီဓာတ် ဖြစ်၍"ဩနီတ"ဟု ပါဌ်မှန် ရှိစေ၊ အမ္ဗဋ္ဌသုတ် အဋ္ဌကထာ၌ "ဩဏိတ္တပတ္တပါဏိံ"ဟု ပါဌ်တမျိုး ပြသေး၏၊ ထို အဖွင့်မှာရှု။]

ကမ္ဗလာနိတို့ကိုရင်း၊ ပတ္တုဏ္ဏပဋ္ဋပင္ဓေစ-ပတ္တုဏ်တိုင်း စိန့်တိုင်း၌ ဖြစ်သော အဝတ်တို့ကိုရင်း၊ ဖါလေတွာဖါလေတွာ - ခွဲ၍ ခွဲ၍၊ ဝါ - ဆုတ်၍ ဆုတ်၍၊ အာယောဂ အံသဗဒ္ဓက ကာယဗန္ဓန ပရိဿာဝနာဒိနံ - အာယောဂပတ် , ပခုံးလွယ် , ခါးပန်းကြိုး , ပုဝါရေစစ် အစရှိသော အသုံးအဆောင် တို့၏၊ အတ္တာယ - ၄၊ အဒါသိ - ပြီ၊ သတပါက သဟဿပါကာနံ - အကြိမ်တရာ ချက်အပ် , အကြိမ်တထောင် ချက်အပ်ကုန်သော၊ ဘေသဇ္ဇ တေလာနံစ-ဆေးဖြစ်သော ဆီတို့ဖြင့်လည်း၊ တုမ္ဗာနိ-သားရေဗူး တို့ကို၊[ဘေသဇ္ဇသမ္ဗာကေန-ဆေးဖြစ်အောင် ကောင်းစွာချက်ခြင်းဖြင့်+သာဝိတတေလာနံ-(ပုဝါရေစစ်၌ ) စစ်အပ်သော ဆီတို့ဖြင့်၊ စမ္မမယတေလဘာဇနာနိ - သားရေဖြင့် ပြုအပ်သော ဆီဗူးတို့ကို၊] ပူရေတွာ-ပြည့်စေ၍၊ ကေမေကဿ-တပါးတပါးသော၊ ဘိက္ခုနော-အား၊ အဍ္ဎဠ္ဍနတ္တာယ-ခြေနယ်ဆီ အကျိုး၄၊ သဟဿဍ္ဍနကံ-တထောင်ထိုက်တန်သော၊ တေလံ- ကို အဒါသိ - ပြီ၊ ဗဟုနာ - များစွာ ဆိုခြင်းဖြင့်၊ ကိံ-ဘယ်အကျိုးရှိအံ့နည်း၊ စတူသု-န်သော၊ ပစ္စယေသု-တို့တွင်၊ ကောစိ-သော၊ ပရိက္ခာရော - ရာ ဖြစ်သော၊ သမဏပရိဘောဂေါ - ရဟန်း အသုံးအဆောင်သည်၊ အဒိန္နောနာမ - မပေးလှူအပ်သည် မည်သည်၊ န အဟောသိ-မရှိပြီ၊ ပန - ထိုသို့ပင် မပေးလှူအပ်သော ပရိက္ခရာမည်သည် မရှိပါသော်လည်း၊ ပါဠိယံ-တော်၌၊ စီဝရမတ္တမေဝ- သင်္ကန်းမျှကိုသာ၊ ဝုတ္တံ-ဆိုအပ်ပြီ၊ [ဥပလက္ခဏနည်းဖြင့် သင်္ကန်းကိုသာမှတ်၍ ဆိုသည်-ဟူလို၊]

ဇဝံ-လျှင်၊ မဟာယာဂံ-ကြီးစွာသော ပူဇော်မှုကို၊ ယဇိတွာ-ပူဇော်ပြီး၍၊ သပုတ္တဒါရံ-သားမယားနှင့်တကွ၊ ဝန္ဒိတွာ-ရှိခိုး၍၊ နိသိန္န-သော၊[ပါဠိတော်၌

ပဏ္ဍုကမ္ဗလပဋ္ဋပင္ဓေစ။ ။ပတ္တုဏ္ဏဒေသေ ဘဝါ-ပတ္တုဏ္ဏအရပ်၌ဖြစ်သော အဝတ်တို့၊ ပဋ္ဋာနိ ပန စိနပဋ္ဋာနိ၊ (သာရတ္ထ၊) ဝိမတိ၌လည်း“ပတ္တုဏ္ဏပဋ္ဋေ, စိနပဋ္ဋေစ ” ဟု သဘောတူပင်ဖွင့်၏။ [အဘိဓာန်နိဿယသစ်၌ “ ပတ္တုဏ္ဏ (ပတ္တောဏ္ဏ)—ဖွပ်လျှော် အပ်ပြီးသော ပိုးချည် အဝတ်၊ ဝါ—ပဏ္ဍုဏ္ဏတိုင်းဖြစ် ပိုးထည်အဝတ်” ဟု ပေး၏၊ ကောသိယပိသေဃသောတိပိ ဝဒန္တိ – ပိုးချည်ဖြင့် ယက်အပ်သော အဝတ်အထူးကို “ပတ္တုဏ္ဏခေါ်၏” ဟု သာရတ္ထ၌လာသော ဝဒန္တိဝါဒနှင့် သဘောတူပုံရသည်။]

အာယောဂ၊ံသ၊ပရိဿာဝနာဒီနံ။ ။ထိုင်သောအခါ ဒူး ၂ ဘက်ကို ထောင်၍ ထိုဒူး ၂ ဘက်နှင့် ကိုယ်ကို သိုင်း၍ ပတ်၍ ထားကြောင်း အဝတ်ကို “ အာယောဂပတ်”ဟု ခေါ်၏၊ အံသ—ပခုံး၌+ ဗဒ္ဓ—ဖွဲ့ကြောင်း အဝတ်ကား သပိတ်အိတ် စသည်၌ တပ်အပ်သော ပခုံးသိုင်း (ပခုံးလွယ်) ကြိုးတည်း၊ ကာယဗန္ဓန— အဝတ်ခါးပန်းကြိုး၊ “ပရိ—ထက်ဝန်းကျင်+ သာဝန—ရေကို ယိုကျစေသော ရေစစ် ” ဟူသည် ရေအိုးပေါ် စသည်၌ ဖြန့်၍ စစ်ရသော ပုဝါရေစစ်တည်း။

အထခေါ ဘဂဝါ ဝေရဉ္စံ ပြာဟ္မဏံ" ဟု ရှိသောကြောင့် ထိုအတိုင်းထား၍ "ဝေံ၊ ပေ၊ နိသိန္နံ" ဟု ဝိသေသန ထည့်ပြသည်။ ] ဝေရဉ္စံ, ပြာဟ္မဏံ-ကို၊ အထခေါ-ထိုင်နေရာ ထိုအခါ၌၊ ဘဂဝါ-သည်၊ တေမာသံ-လုံး၊ မာရာဝဋ္ဋနေန- ကြောင့်၊ ဓမ္မဿဝနာမတရသပရိဘောဂပရိဟီနံ-တရားနာရခြင်းဟူသော အမြိုက်အရသာကို သုံးဆောင်ရခြင်းမှ ယုတ်လျော့သည်ကို၊ ဧကဒိသသေနေဝ- ဖြင့်သာလျှင်၊ ဓမ္မာမတဝဿံ - တရားတည်းဟူသော အမြိုက်မိုယ်းကို၊ ဝဿေတွာ - ရွာစေတော်မူ၍၊ ပရိပုဏ္ဏသင်္ကပ္ပံ - ပြည့်စုံသော အကြံအစည်ရှိသည်ကို၊ ကုရုမာနော-မူလျက်၊ ဓမ္မိယာ-ရှိသော၊ ကထာယ - ဖြင့်၊ သန္ဒဿေတွာ-ပစ္စုပ္ပန် သံသရာ, စီးပွား ၂ ဖြာကို, ကောင်းစွာပြတော်မူပြီး၍၊ သမာဒပေတွာ-ကုသိုလ်တရားတို့ကို ကောင်းစွာယူစေတော်မူပြီး၍၊သမုတ္တေဇေတွာ - ကုသိုလ်တရားတို့၌ ကောင်းစွာ ထက်သန်စေတော် မူပြီး၍၊ သမ္ပဟံသေတွာ-အားတက်သရော်ရှိပုံ ထင်ရှားရှိသောအခြားဂုဏ်တို့ဖြင့် ကောင်းစွာအပြားအားဖြင့် ရွှင်လန်းစေတော်မူပြီး၍၊ အာသနာ-မှ၊ ဥဋ္ဌာယ—၍၊ ပက္ကမိ-မူပြီ၊ ပြာဟ္မဏောပိ-သည်လည်း၊ သပုတ္တဒါရော-တကွ၊ ဘဂဝန္တဥ္စ-ကိုရင်း၊ ဘိက္ခုသံဃဥ္စ, ဝန္ဒိတွာ-၍၊ ဘန္တေ - မြတ်စွာဘုရား၊ ပုနပိ–နောက်ထပ်လည်း၊ အမှာကံ–တို့အား၊ အနုဂ္ဂဟံ - ကို၊ ကရေယျာထ - ပါကုန်၊ ဣတိ ဧဝမာဒီနိ-ဤသို့ အစရှိသော စကားတို့ကို၊ ဝဒန္တော - လျှောက်လျက်၊ အနုဗန္ဓိတွာ-အစဉ်လိုက်ပို့၍၊ [ "အနုပဗ္ဗိတွာတိ အနုဂတွာ" ဟု ဖွင့်သော ဋီကာအလို "အနုပဗ္ဗိတွာ"သာ မူဟောင်း၊ အနုဗန္ဓိတွာနှင့်အနက်တူ။ ] အဿူနိ-မျက်ရည်တို့ကို၊ ပဝတ္တယမာနော - ဖြစ်စေလျက်၊ နိဝတ္တိ-ပြန်နစ်ရှာလေပြီ။

အထခေါ၊ပေ ဝိဟရိတွာတိ - ကား၊ ယထာဇ္ဈာသယံ - အဇ္ဈာသယအားလျော်စွာ၊ ယထာရုစိ-စွာ၊ တံဝါသံ-ထိုဝေရဉ္စာမြို့၌ သီတင်းသုံးတော်မူခြင်းကို၊ဝသိတွာ-မူပြီး၍၊ [တံဝါသံနှင့် ဝသိတွာ ပုဒ်သည် အရမပြား၊ ထို့ကြောင့်

ပရိပုဏ္ဏသင်္ကပ္ပံ။ ။တေမာသံ သောတဗ္ဗ ဓမ္မံ အဇ္ဇေဝ သုဏိဿာမိတိ နိသိန္နဿ-ဝါတွင်းသုံးလ နာရမည့် တရားကို တနေ့ထည်း၌ နာလိုက်မည် ဟု ကြံ၍ ထိုင်နေသော ပုဏ္ဏား၏၊ တံအဇ္ဈာသယံ ပူရေတွာ ဒေသိတတ္တာ ဝုတ္တံ ပရိပုဏ္ဏသင်္ကပ္ပံ ကုရုမာနောတိ။

ယထာဘိရန္တံ။ ။အဘိရန္တကို "မွေ့လျော် (ပျော်)"ဟု ပေးရိုး ရှိသော်လည်း ဘုရားရဟန္တာတို့မှာ ပင်ကိုယ်ကပင် ပျင်းရိခြင်း မရှိသောကြောင့် "ပျော်—မပျော်" လျှဉ်းပါးဘွယ် မရှိ၊ ထို့ကြောင့် "အဇ္ဈာသယ—အလိုဆန္ဒ"ကို "အဘိရန္တ"ဟု မှတ်၊ [အဘိရန္တသဒ္ဒေါစာယံ အဘိရုစိပရိယာယော။ ] "အလိုတော်"ဟူသည်လည်း ဝိနေယျသတ္တဝါတို့ကို ဆုမ္မဘွယ် ရှိသေးလျှင် နေတော် မူလိုခြင်း, ဆုမ္မခြင်းကိစ္စ ပြီးဆုံးလျှင် နေတော်မမူလိုဘဲ အခြားဆုမ္မဘွယ်ရှိရာသို့ ကြွတော်မူလိုခြင်းတည်း။ ["ယထာဘိရန္တံ-ကျွတ်ထိုက်ကြသား, ဝေနေယျားကို, ထော်ထားရှုမြော်, အလိုတော်အတိုင်း"ဟု ပေး ]

အဘေဒဘေဒူပစာကြီ ] ဝေရဉ္ဇာယ-မှ၊ နိက္ခမိတွာ-မှ၍၊ မဟာမဏ္ဍလ စာရိကာယ - မဟာမဏ္ဍလဒေသစာရီကို၊ စရဏကာလေ-၌၊ ဂန္တုံ - ကြွတော်မူထိုက်သော၊ဗုဒ္ဓဝီထိံ-ဘုရားလမ်းမတော်ကို၊ ပဟာယ-မှ၍၊ဒုဗ္ဘိက္ခဒေါသေန-ဒုဗ္ဘိက္ခအပြစ်ကြောင့်၊ကိလန္တ-ပင်ပန်းနေသော၊ ဘိက္ခုသံဃံ-ကို၊ ဥဇုနာဝ-ဖြောင့်မတ်သည်သာလျှင်ဖြစ်သော၊မဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ဂဟေတွာ-ခေါ်ယူတော်မူ၍၊ ဂန္တုကာမော-ကြွတော်မူလိုသည်၊(ဟုတွာ)၊ သောရေယျာဒီနိ-သောရေယျ အစရှိသော အရပ်တို့ကို၊ အနုပဂမ္မ-မကပ်ရောက်မူ၍၊ [ သောရေယျ စသော အရပ်တို့ကား မဟာမဏ္ဍလ ဒေသစာရီ ခရီးစဉ်တည်း၊ ] ပယာဂပတိဋ္ဌာနံ-ပယာဂရွာသို့၊ ဝါ-ပယာဂ ဆိပ်ကမ်းသို့၊ ဂန္တွာ-၍၊[ဋီကာ၌ ''ပယာဂပတိဋ္ဌာနန္တိ ဂါမဿာပိ, တိတ္ထဿာပိ''ဟု ရှိ၏၊] တတ္ထ- ထိုပယာဂဆိပ်ကမ်း၌၊ ဂင်္ဂံ နဒိံ-ကို၊ ဥတ္တရိတွာ-ဖြတ်ကူးတော်မူ၍၊ ယေန- အကြင်လမ်းဖြင့်၊ ဗာရာဏသီ-ဏသီမြို့သို့(အာသရိတဗ္ဗာ-သက်ရောက်ထိုက်၏၊) တံ- ထို လမ်းဖြင့်၊ (ဗာရာဏသိံ-သို့၊) အဝသရိ-သက်ရောက်တော် မူပြီ၊ တေန အဝသရိ-တေန အဝသရိ ဟူသော အနက်၌၊ တဒဝသရိ-တဒဝသရိ ဟု ဖြစ်၏၊[တဒဝသရီတိ ဋ္ဌေ တန္တိ ကရဏဋ္ဌေ ဥပယောဂဝစနံ၊]တတြာပိ-ထိုဗာရာဏသီမြို့၌လည်း၊ ယထာဇ္ဈာသယံ- အဇ္ဈာသယတော် အားလျော်စွာ၊ ဝိဟရိတွာ-၍၊ ဝေသာလိံ - သို့၊ အဂမာသိ - မူပြီ၊ တေန-ကြောင့်၊ အနုပဂမ္မ သောရေယျံ ၊ ပေ ၊ သာလာယန္တိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊....သမန္တပါသာဒိကာယ-သမန္တပါသာဒိကာမည်သော၊ ဝိနယသံဝဏ္ဏနာယ-ဝိနည်းအဋ္ဌကထာ၌၊ ဝေရဉ္ဇကဏ္ဍဝဏ္ဏနာ-ဝေရဉ္ဇကဏ္ဍ အဖွင့်သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ၊

တတြ - ထို သမန္တပါသာဒိကာယ ဝိနယသံဝဏ္ဏနာယ ဟူသော စကားရပ်၌၊ သမန္တပါသာဒိကာယ - သမန္တပါသာဒိကာ အဋ္ဌကထာ၏၊ သမန္တပါသာဒိကတ္တသ္မိံ-အကုန်အစင် ကြည်လင်ခြင်းကို ဖြစ်စေတတ်သည်၏ အဖြစ်

သမန္တပါသာဒိကာ။ ။[သမန္တတော သဗ္ဗသော ပသာဒံ+ ဇနေတီတိ သမန္တပါသာဒိကာ၊–ဋီကာ၊ ဤ၌ သမန္တတောပုဒ်သည် သဗ္ဗသောနှင့် အနက်တူတည်း။ ] ပသာဒံ + ဇနေတီတိ ပါသာဒိကာ၊ သမန္တတော– ကြွင်းမဲ့ဥဿုံ အလုံးစုံအားဖြင့်+ ပါသာဒိကာ– ကြည်ညိုရှုသူတို့ စိတ်၏ ကြည်လင်ခြင်းကို ဖြစ်စေတတ်သော အဋ္ဌကထာတည်း၊ သမန္တပါသာဒိကာ။

တတြိဒံ၊ပေ၊တ္တသ္မိံ။ ။သမန္တပါသာဒိကာ၌ သမန္တ (အလုံးစုံ) ဟူသော စကားသည် ဂုဏ်ကို ရည်ရွယ်သော စကားတည်း ဟု ပြလို၍ ''တတြိဒံ၊ပေ၊တ္တသ္မိံ'' ဟု အချီစကားကို မိန့်သည်၊ ထို ဂုဏ်အပြားတို့ကား ''အာစရိယ ပရမ္ပရတော'' အစရှိသော

၌၊ ဍွဒံ-ဤ ဆိုအပ်လတ္တံ့သော စကားရပ်သည်၊ (ဟောတိ-၏၊ ကိံ - အဘယ် စကားရပ်သည်၊ ဟောတိ-သနည်း၊) အာစရိယ ပရမ္ပရတော- ဆရာ အဆက်ဆက်အားဖြင့်၎င်း၊ နိဒါန ဝတ္ထုပ္ပဘေဒ ဒီပနတော-နိဒါန်းအပြားကို ပြခြင်း, အာစရိယဝါဒဟူသော ဝတ္ထုအပြားကို ပြခြင်းအားဖြင့်၎င်း၊ ပရသမယ ဝိဝဇ္ဇနတော-သူတပါး အယူကို ရှောင်ကွင်းခြင်းအားဖြင့်၎င်း၊ သကသမယ ဝိသုဒ္ဓိတောစေဝ-မိမိအယူဝါဒ၏ စင်ကြယ်ကြောင်း စကားရပ်အားဖြင့်၎င်း၊ ဗျဉ္ဇနပရိသောဓနတော-သဒ္ဒါပုဒ်ပါဠိကို သုတ်သင်ခြင်းအားဖြင့်၎င်း၊ ပဒတ္ထတော-ပုဒ်အနက်အားဖြင့်၎င်း၊ ပါဠိယောဇနက္ကမတော-ပါဠိတော်ကို ယောဇနာပုံ

အပြားတို့တည်း။ [“ယေ ပန ပကာရေ သန္ဓာယ သမန္တပါသာဒိကာတိ ဝုတ္တံ၊ တေ ပကာရေ ဝိတ္ထာရေတွာ ဒဿေတုံ တတြိဒံတိအာဒိ ဝုတ္တံ၊ တတ္ထ သမန္တပါသာဒိကာတိ ယာ သံဝဏ္ဏနာ ဝုတ္တာ၊ တတြ တဿံ သမန္တပါသာဒိကာယံ၊ သမန္တပါသာဒိကာဘာဝေ ဍွဒံ ဝက္ခမာနဂါထာဝစနံ ဟောတီတိ ယောဇနာ၊-ဝိမတိ။]

**အာစရိယပရမ္ပရတော**။ ။“ဥပါလိ ဒါသကောစေဝ”စသည်ဖြင့် ဆရာ အစဉ်အဆက်ကို ပြပုံလည်း ပါသာဒိက ဖြစ်၏၊ ထို ဆရာ အစဉ်အဆက်ကို သိရသဖြင့် ဤ အဋ္ဌကထာကြည့်ရသူတို့မှာ စိတ်ကြည်နူးကြသည်-ဟူလို။

**နိဒါနဝတ္ထုပ္ပဘေဒ ဒီပနတော**။ ။“နိဒါနပဘေဒဒီပနတော, ဝတ္ထုပ္ပဘေဒဒီပနတော” ဟု ခွဲပါ၊ ဤအဋ္ဌကထာ၌ ဗာဟိရနိဒါန်း, အဗ္ဘန္တရ (အဇ္ဈတ္တိက) နိဒါန်း, သိက္ခာပုဒ်တပါးတပါး၏ နိဒါန်းအားဖြင့် နိဒါန်းအပြားကိုလည်းပြထား၏၊ထေရဝါဒ အမျိုးမျိုး ပြခြင်းကို ဝတ္ထုပ္ပဘေဒဒီပန ဟု သာရတ္ထ၌ ဆို၏၊ ထိုထိုသိက္ခာပုဒ်၏ သုဒ္ဓိန္န ဝတ္ထု မက္ကဋီဝတ္ထုစသည်တို့မှာ သိက္ခာပုဒ်နိဒါန်းတွင် ပါဝင်လေပြီ-ဟု ဆိုလို၏၊ ဝိမတိကား-သုဒိန္နဝတ္ထုစသည်ကို ပြခြင်းကို “ဝတ္ထုပ္ပဘေဒဒီပန” ဟု ဆိုလိုသည်။

**ပရ၊ပေ၊ဝိဝဇ္ဇနတော**။ ။“သကာယ ပဋိညာယ မေတ္တိယံ ဘိက္ခုနိံ နာသေထ” ဟူသော ပါဠိတော်ကို ဖွင့်ပြရာ၌ သူတပါးတို့၏ အယူဝါဒကို ပြ၍ ထိုဝါဒကို ပယ်ခြင်းမျိုးကဲ့သို့ ပရသမယကို ရှောင်ကွင်းပယ်ရှားသော စကားများလည်း ကျေနပ် ကြည်ညိုဘွယ်ရာ ပါရှိသည်-ဟူလို၊ ထိုသို့ ပရသမယကို ပယ်လိုက်လျှင် သကသမယ (မိမိအယူဝါဒ) ကိုလည်း စင်ကြယ်စေပြီး ဖြစ်ရကား“သကသမယ ဝိသုဒ္ဓိတော”ဟု မိန့်သည်။ [ဝိသုဇ္ဈတိ ဧတာယာတိ ဝိသုဒ္ဓိ၊ သကသမယဿ+ ဝိသုဒ္ဓိ သကသမယဝိသုဒ္ဓိ၊ အချို့စာ၌ “သုဒ္ဓိတော” ဟု ရှိ၏၊ အရိယာ ဂါထာဖြစ်၍ “ဝိသုဒ္ဓိတော”ဟု ရှိရမည်။]

**ဗျဉ္ဇနပရိသောဓနတော**။ ။သဒ္ဒါပုဒ်ပါဠိကို အမှားအမှန် သုတ်သင်ခြင်း၊တနည်း-သဒ္ဒါကျမ်းအားလျော်အောင် ဝိဂြိုဟ်ပြု၍ ပုဒ်ပြီးပုံကို ပြခြင်း။ [ပါဠိဝိသောဓနေန ဗျဉ္ဇနပရိသောဓနံ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊ သဒ္ဒသတ္ထာနုသာရေန ဝါ နိဗ္ဗစနံ ဒဿေတွာ ပဒနိပ္ဖတ္တိဒဿနံ ဗျဉ္ဇနပရိသောဓနံ။]

အစဉ်အားဖြင့်၎င်း၊သိက္ခာပဒနိဿယတောစ-သိက္ခာပုဒ်ကို ဆုံးဖြတ်ခြင်းအား ဖြင့်၎င်း၊ [ အချို့စာများ၌ ဝိနိဿယ- ဟု ဝိပါနေ၏၊ ပထျာအရိယာ ဂါထာ ဖြစ်၍ (ဝိ) မလို၊ ] ဝိဘင်္ဂနယဘေဒဒဿနတော - ဝိဘင်း ဖွင့်သကဲ့သို့ ဖွင့်ပုံ နည်းအပြားကို ပြခြင်းအားဖြင့်၎င်း၊ သမ္ပဿတံ–ဉာဏ်စက္ခုဖြင့် ကောင်းစွာ ကြည့်ရှုကြကုန်သော၊ ဝိညူနံ – ပညာရှိတို့သည်၊ ( ဒိဿတိ၌ စပ်၊ ) ဝါ- တို့၏၊ ( အပါသာဒိကံ၌ စပ်၊ ယောဇနာ၌ " သမ္ပဒါန် " ဟု ဆို၍ ဒိဿတိ၌ စပ်၏၊)ယတော-အကြင့်ကြောင့်၊ ဧတ္ထ-ဤအဋ္ဌကထာ၌၊ ကိဉ္စိ-တစုံတခုသော၊ အပါသာဒိကံ-စိတ်၏ ကြည်လင်ခြင်းကို မဖြစ်စေနိုင်သော အရာကို၊ န ဒိဿ တိ-မတွေ့မြင်အပ်၊ တသ္မာ–ထို့ကြောင့်၊ (ထိုသို့ အပါသာဒိကကို မတွေ့မြင် အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) ဝိနေယျဒမနကုသလေန – ဝိနေယျ သတ္တဝါကို ဆုံးမခြင်း၌ ကျွမ်းကျင်တော်မူသော၊ လောကံ - သတ္တလောကကို၊ အနုကမ္ပ မာနေန-သနားစောင့်ရှောက်တော်မူသော၊လောကနာထေန-သတ္တလောက၏ ကိုးကွယ်ရာ မြတ်ဘုရားသည်၊ ဝုတ္တဿ–ဟောတော်မူအပ်သော၊ ဝိနယဿ- ဝိနည်း ပိဋကတ် ပါဠိတော်မြတ်၏၊ အယံ သံဝဏ္ဏနာ - ဤအဖွင့် အဋ္ဌကထာ သည်၊ သမန္တပါသာဒိကာတွေဝ - သမန္တပါသာဒိကာ ဟူ၍သာ၊ ပဝတ္တာ– ဖြစ်ပြီ၊ ဣတိ–ဤဆိုအပ်ပြီးသော ဂါထာ စကားရပ်ဖြစ်၏၊ ( တကြိမ်ကို ပြန် အုပ်သည်၊) ဣတိ– အပြီးတည်း၊ ( ဣတိ တလုံး အကြေကြံ )။....အဋ္ဌုတ္တိက နိဒါနဝဏ္ဏနာ - အဋ္ဌုတ္တိကနိဒါန်းအဖွင့်သည်၊ နိဋ္ဌိတာ–ပြီးပြီ။

ဝိဘင်္ဂနယဘေဒ ဒဿနတော ။ ။ သိက္ခာပုဒ် ပါဠိတော်ကို အကျယ်ဖွင့်ရာ၌ "တိဿော ဣတ္ထိယော မနုဿိတ္ထီ အမနုဿိတ္ထီ တိရစ္ဆာနဂတိတ္ထီ" စသည်ဖြင့် အကျယ် ဖွင့်လေ့ရှိ၏၊ ထိုစကားကို "ဝိဘင်္ဂ" ဟု ခေါ်၏၊ ပါဠိတော်လာ ဝိဘင်္ဂနည်းကိုမှီး၍ ဤ အဋ္ဌကထာ၌လည်း အကျယ်ဖွင့်နည်းအပြားကို ပြထားသည်–ဟူလို။

သမ္ပဿတံ၊ ပေ၊ ဝိညူနံ ။ ။ သမ္ပဿတံတိ ဉာဏစက္ခုနာ သမ္မာပဿန္တာနံ–ဤ အာစရိယပရမ္ပရ ပြပုံစသည်ကို ဉာဏ်စက္ခုဖြင့် ကောင်းစွာကြည့်ရှုသော ပညာရှိတို့မှာ ဤအဋ္ဌကထာ၌ မကျေနပ်စရာ တစုံတခုမျှ မပါဝင်ချေ, အားလုံးကျေနပ်စရာချည်းသာ ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် ဝိနည်းပါဠိတော်၏ ဤအဖွင့်အဋ္ဌကထာအတွက် "သမန္တပါသာ ဒိကာ"ဟူသောနာမည်သာလျှင် အန္ဝတ္ထနာမည် အဖြစ်ဖြင့် ဖြစ်ရပေသည်–ဟူလို။

ဝေရဉ္ဇကဏ္ဍဘာသာဋီကာ

ပြီး၊ ပြီ။

# သုဒ္ဓိန္နကဏ္ဏာ ဘာသာဋီကာ

ဥဂ္ဂတော-ဤဝေရဉ္ဇကဏ္ဍမှ၊ ပရံ- နောက်ဖြစ်သော၊ တေန ခေါ ပန သမယေန ဝေသာလိယာ အဝိဒူရေတိအာဒိ - အစရှိသော ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ယေဘုယျေန – ဖြင့်၊ ဥတ္တာနတ္ထံ – ထွက်သွားသော အကျယ်အနက် ရှိ၏၊ (သဒ္ဒတ္ထ၊) ဝါ-ပေါ်လွင်သောအနက် ရှိ၏၊ (အဓိပ္ပါယတ္ထ၊) တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ဤဝေရဉ္ဇကဏ္ဍမှ နောက်ဖြစ်သောပုဒ်အပေါင်း၏ များသောအားဖြင့်ပေါ်လွင်ထင်ရှားသောအနက် ရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ) အနုပဒဝဏ္ဏနံ – ပုဒ်တိုင်းပုဒ်တိုင်းဖွင့်ခြင်းကို၊ ဝါ-ပုဒ်တို့၏အစဉ်အားဖြင့် ဖွင့်ခြင်းကို၊ ပဟာယ-ပယ်စွန့်၍၊ ယတ္ထ ယတ္ထ - အကြင်အကြင် ပုဒ်၌၊ ဝတ္တဗ္ဗံ - ဆိုဘွယ်သည်၊ အတ္ထိ - ၏၊ တံ တံ ဒေဝ-(ဆိုဘွယ်ရှိသော) ထိုထိုပုဒ်ကိုသာ၊ ဝဏ္ဏယိဿာမ-ဖွင့်ကုန်တော့အံ့၊ ကလန္ဒဂါမောတိ ( ဧတ္ထ ) – ၌၊ [ အပေါင်းတည်ထ , စိတ်ဖွင့်ပြ , ဧတ္ထမရှိ ထည့်လေမြဲ။ ] ကာဠကာ– ရှဉ့်တို့ကို၊ ကလန္ဒကာ - ကတို့ဟူ၍၊ ဝုစ္စန္တိ- န်၏၊ [ပရိယာယ်ဖွင့်၊] တေသံ-ထိုရှဉ့်တို့၏၊ ဝါ- တို့နှင့်၊ ဝသေန - အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဝါ- စပ်သဖြင့်၊ လဒ္ဓနာမော - ရအပ်သောအမည်ရှိသော၊ ဂါမော- သည်၊

**ဥတ္တာနတ္ထံ** ။ ။ ဥဂ္ဂတော + တာနော ယသ္မာတိ ဥတ္တာနော၊ (ထောမနိမိ၊) ယသ္မာ—အကြင်အနက်မှ၊ တာနော (ဝိတ္ထာရော)—အကျယ်သည်၊ ဥဂ္ဂတော—ထွက်ပြီ၊ ဣတိ ဥတ္တာနော၊ ထွက်သွားသောအကျယ် ရှိသောအနက်၊ "ပုဒ်ရင်းအတိုင်း ထင်ရှားနေပြီဖြစ်၍ အကျယ်ဖွင့်ဘွယ်မလိုသောအနက်"ဟူလို၊ ဥတ္တာနော+ အတ္ထော ယဿာတိ ဥတ္တာနတ္ထံ၊ "ယဿ (ပဒဇာတဿ)—အကြင်ပုဒ်အပေါင်း၏၊ ဥတ္တာနော-ထွက်သွားသောအကျယ်ရှိသော၊ ဝါ—ပေါ်လွင်ထင်ရှားသော၊ အတ္ထော အတ္ထိ"ဟု ပေး။

**အနုပဒ ဝဏ္ဏနံ**။ ။ပဒံပဒံပတိ +ဝဏ္ဏနံ၊ ပဒါနုက္ကမေန+ ဝဏ္ဏနံဝါ၊ (သာရတ္ထ၊) ပဒံပဒံ+ပတိ အနုပဒံ—ပုဒ်တိုင်း ပုဒ်တိုင်း၊ "ပဒံပဒံ+အနု, အနုပဒံ"ဟု လည်း ပြုကြ၏၊ (ဝိစ္ဆာ အဗျယီဘော)၊ ပဒါနံ+အနုက္ကမော အနုပဒံ = ပုဒ်တို့၏အစဉ်၊ (အနုက္ကမတ္ထ အဗျယီဘော)၊ အနုပဒံ-ပုဒ်တိုင်း၊ ဝါ-ပုဒ်တို့၏အစဉ်အားဖြင့်+ ဝဏ္ဏနာ အနုပဒဝဏ္ဏနာ။ [ဋီကာ၌ "ဝဏ္ဏနံ"ကား ဒုတိယန္တတည်း။]

**တေသံ ဝသေန**။ ။ "ထို ရှဉ့်တို့၏အစွမ်းအားဖြင့်=ထို ရှဉ့်တို့နှင့်စပ်သဖြင့် ရအပ်သော အမည်ရှိသောရွာ"ဟု ဆိုသောကြောင့်"ကလန္ဒကာနံ+ ဂါမော ကလန္ဒဂါမော" ဟု (ဆက်စပ်ခြင်း သမ္ဗန်အနက်ကိုပြသော) ဆဋ္ဌီတပ္ပုရိသ်သမာသ်ပြုပါ။ [ ရှေးနိဿယ တစောင်၌ ဌာနီကလန္ဒတို့၏ အမည်ကို ဌာနရွာပေါ်တင်စားသော ဌာနျူပစာရဟု ဆိုလေသည်၊ ထိုအလို"ကလန္ဒောစ+ သော+ ဂါမောစ"ဟု ပြုရမည်ဖြစ်၍ မကောင်း။]

(အတ္ထိ)၊ ကလန္ဒပုတ္တောတိ-ကား၊ ဂါမ၀သေန-ရွာ၏အစွမ်းဖြင့်၊ ၀ါ-ရွာနှင့် စပ်သဖြင့်၊ လဒ္ဓနာမဿ-ရအပ်သောအမည်ရှိသော၊ ရာဇသမ္မတဿ-မင်းဟု သမုတ်အပ်သော၊ ၀ါ-လူကြီးမင်းဟု အခေါ်ခံရသော၊ စတ္တာလီသကောဋိ ၀ိဘ၀ဿ-ကုဋေလေးဆယ် စည်းစိမ်ရှိသော၊ ၀ါ-ကုဋေလေးဆယ် ဥစ္စာ ကြွယ်သော၊ ကလန္ဒသေဋ္ဌိနော-ကလန္ဒသဋ္ဌေး၏၊ ပုတ္တော-သားဖြစ်သော၊ (သေဋ္ဌိပုတ္တော၌စပ်၊)ပန-ဆက်၊ (သေဋ္ဌိပုတ္တောဟု ပါဠိတော်မှာ မိန့်ရခြင်း၏ အကြောင်းကို ဆက်ဦးအံ့-ဟူလို၊) ယသ္မာ-ကြောင့်၊ တသ္မိံ ဂါမေ-ထို ကလန္ဒ ရွာ၌၊ အညေပိ-ကလန္ဒသဋ္ဌေးမှ အခြားလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ကလန္ဒနာမကာ-ကလန္ဒအမည် ရှိကုန်သော၊ မနုဿာ-တို့သည်၊ အတ္ထိ-ရှိကုန်သေး၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ကလန္ဒရွာ၀ယ် ကလန္ဒမည်သော အခြားလူတို့ ရှိကုန်သေးသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊)ကလန္ဒပုတ္တောတိ-ဟူ၍၊ ၀တွာ-မိန့်တော်မူပြီး၍၊ ပုန-ဖန်၊ သေဋ္ဌိပုတ္တောတိ-ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရကာ-တို့သည်၊)၀ုတ္တံ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ [ကလန္ဒပုတ္တောဟုသာ ဆိုလျှင် အခြား ကလန္ဒပုတ္တတို့နှင့် ဆက်ဆံနေသောကြောင့် ''သေဋ္ဌိပုတ္တော''ဟု ၀ိသေသန ကူ(မ)ရသည်-ဟူလို၊]

သမ္ဗဟုလေဟီတိ- ကား၊ ဗဟုကေဟိ-များစွာကုန်သော၊ သဟာယကေ ဟီတိ-ကား၊ သုခဒုက္ခာနိ-သုခဒုက္ခတို့သို့၊ သဟ-ကွ၊ အယန္တိ ဥပဂစ္ဆန္တိ-ကပ်ရောက်တတ်ကုန်၏၊ ဣတိ-ထို့ကြောင့်၊ (ထိုသို့ သုခဒုက္ခ ဟူသမျှသို့ တကွ ကပ်ရောက်တတ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ကောင်းတူ ဆိုးဘက်တို့၏ အဖြစ်

ဂါမ၀သေန။ ။ ဤ၌ကား ဌာနရွာ၏ ကလန္ဒအမည်ကို ဌာနီလူပေါ်၌ တင်စားသော ဌာနူပစာရ (နာနန္တရိကနည်း)တည်း၊ ထို့ကြောင့် ထိုသဋ္ဌေးကို “ကလန္ဒ”ဟု ခေါ်နိုင်ပြီ၊ [ကလန္ဒဿ+ပုတ္တော ကလန္ဒပုတ္တောဟု ဆင့်။]

သမ္ဗဟုလေဟိ။ ။ သံပုဗ္ဗ, ဗဟိဓာတ်, ကုလစ်ပစ္စည်း၊ ဓာတွန်ဗှုနှင့် က်စ်အနုဗန် ချေ၊ အနေကသင်္ချာန္တိတေ ပစုရေ-များသောသင်္ချာသည် အစဉ်လိုက်အပ်သော အများ ဟူသောအနက်၌ ဖြစ်၏၊ (ယောမနိမိ) ဗဟုလပုဒ်ဖွင့်၊ သမ္ဗဟန္တိ (ဝုဍ္ဎိံ ဂစ္ဆန္တိ)တိ သမ္ဗဟုလာ – တိုးပွားကုန် များပြားကုန်သူတို့၊ “ သမ္ဗဟူနိ + လာန္တိ ဂဏှန္တီတိ သမ္ဗ ဟုလာနိ ” ဟု လည်း တနည်းပြု၊ ဗဟုသဒ္ဒူပပဒ လာဓာတ်, က (က် အနုဗန်ရှိသော အ)ပစ္စည်း၊ ဤသဒ္ဒါနည်းနှင့်အညီ“ဗဟုကေဟိ”ဟု ပရိယာယ်ဖွင့်သည်၊ ဗဟုကေဟ် ၌လည်း ဗဟိဓာတ် ကုပစ္စည်းဖြင့် ‘‘ဗဟု’’ဟု ပြီးမှ “ဗဟူယေ၀+ဗဟုကာ”ဟု သွတ္တ၌ က ပစ္စည်းသက်၊ သီလက္ခန်ဋီကာသစ် မြဟ္မဇာလသုတ်ဖွင့်၌ကား “သမ္ဗဟုလ” ပုဒ်ကို အတည်ယူ၍ “ သမ္ဗာ+ ပဟောန္တိ တံတံကမ္မံတိ သမ္ဗဟုလာ (ဗဟ၀ေါ)၊ တေနာဟ– ဗဟုကာနန္တိ”ဟု ဖွင့်လေ၏၊ [သံပုဗ္ဗ ပဟဓာတ်, ဥလပစ္စည်း။] ထိုအလို ပရိယာယ်ဖွင့် မဟုတ်၊ ဗဟုကေဟိသည် အဘိဓေယျဖွင့်တည်း။

ကြောင့်၊ သဟာယာ–သဟာယတို့ မည်၏၊ [ သဟ+အာယ ဟု ခွဲ၊ အာယ၌ အယ, ဏာပစ္စည်း၊ ] သဟာယာဝေ - သဟာယတို့သည်ပင်၊ သဟာယကာ- သဟာယကတို့ မည်၏၊ [ ကပစ္စည်း သွတ္ထ၊ ] တေဟိ သဟာယကေဟိ - ထို သဟာယ်ချင်းတို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကား၊ ကေတော-တပေါင်းတည်း၊(အဂမာသိ၌ စပ်၊) ကေနစိဒေဝ ကရဏီယေနာတိ- ကား၊ ကေနစိဒေဝ-တစုံတခုသာလျှင် ဖြစ်သော၊ ဘဏ္ဍာပ္ပယောဇနဥဒ္ဓါရသာရဏာဒိနာ-ဘဏ္ဍာကိုရောင်းခြင်းကိစ္စ၌ ယှဉ်စေခြင်း, အညွန့်အတိုး ကုန်ဘိုးဆောင်ယူခြင်း, ပေးရန်နေ့ရက်ကို သတိ ရစေခြင်း အစရှိသော၊ ကိစ္စေန- စီးပွားရေး ကိစ္စကြောင့်၊(အဂမာသိ၌စပ်၊) ကတ္တိကနက္ခတ္တကီဠာကိစ္စေန - ကြတ္တိကာ နက္ခတ်သဘင် ပျော်ရွှင်ကစားခြင်း ကိစ္စကြောင့်၊ (အဂမာသိ) ဣတိပိ- ဤသို့လည်း၊ ဝဒန္တိ - ဖွင့်ဆိုကုန်၏၊ ဟိ- ဆိုသင့်၏၊(တနည်း)ဟိ ·ချဲ့၊ ဘဂဝါ–သည်၊ ကတ္တိကဇုဏှပက္ခေ–တန်ဆောင်

**ဘဏ္ဍာပေါဒိနာ ။** ။ ဝိက္ကာယိကဘဏ္ဍဿ ဝိက္ကိဏနံ ဘဏ္ဍပ္ပယောဇနံ=ရောင်း ထိုက်သောဘဏ္ဍာ(ကုန်)ကိုရောင်းခြင်းသည် ဘဏ္ဍာကိုရောင်းခြင်း ကိစ္စ၌ ယှဉ်စေခြင်း မည်၏၊ [ဝိမတိ၌ “ဣဏဒါနဥ– ကြွေးပေးခြင်းကိုလည်း “ဘဏ္ဍပ္ပယောဇန” ဟု ဆိုသေး၏။]ဒါတုံ သင်္ကေတိတေ ဒိဝသေ ဂန္တွာ ဂဟဏံ ဥဒ္ဓါရော=ပေးဘို့ရန် ချိန်းချက် အပ်ရာနေ့၌ သွား၍ယူခြင်းသည် ဥဒ္ဓါရမည်၏၊ အသုကသ္မိံဒိဝသေ ဒါတဗ္ဗန္တိ သတုပ္ပါ ဒနံ သာရဏံ = မည်သည့်နေ့၌ ပေးရမည်ဟု ( မေ့နေသူအား ) သတိကို ဖြစ်စေခြင်း (သတိပေးထားခြင်း) သည် အမှတ်ရစေခြင်းမည်၏။

**မှတ်ချက်။** ။အဘိဓာန်၌“ဥဒ္ဓါရောတု ဣဏံ ဝုတ္တံ”ကြွေးမြီကို “ဥဒ္ဓါရ”ဟု ဆို၏၊ “ဥဒ္ဓရိတဗ္ဗောတိ ဥဒ္ဓါရောတိ ဝဓ္ဍိ ဝုစ္စတိ= ကြွေးပေးရာမှ တိုးပွားသော အတိုး အညွန့် ကို ဥဒ္ဓါရခေါ်သည်”ဟု သတိပဋ္ဌာန ဝိဘင်္ဂဋီကာဖွင့်၏၊ ဥဒ္ဓရိတဗ္ဗော–နဂိုရ်ကြွေးထက် အတိုးအဖြစ်ဖြင့် ထုတ်ဆောင်အပ် ယူအပ်၏၊ ဣတိ ဥဒ္ဓါရော၊ ထို့ကြောင့် ချိန်းချက် ထားရာနေ့၌ အတိုးအညွန့်ကို ထုတ်ဆောင်ခြင်း (ယူခြင်း) ကို ဥဒ္ဓါရဟု မှတ်၊ ဝိမတိ၌ “ မူလဿ သဟဝဍ္ဎိယာ ဂဟဏဝါယာမော = အတိုးနှင့်တကွ အရင်းကို တောင်းယူ ဘို့ရန် အားထုတ်မှုကို ဥဒ္ဓါရ” ဟု ဆိုသည်။

**ကတ္တိကနက္ခတ္တ ကီဠာကိစ္စေန ။** ။ ကြတ္တိကာနက္ခတ်ကို အကြောင်းပြု၍ ပြုလုပ် အပ်သောပွဲကို ကာရဏူပစာရအားဖြင့်“ကတ္တိကနက္ခတ္တ”ဟုခေါ်၊“သကြာန်ရေသဘင်” ပွဲမျိုးတည်း၊ ကတ္တိကနက္ခတ္တေ-ပွဲ၌+ကီဠာ-ပျော်မြူးခြင်းတည်း၊ ကတ္တိကနက္ခတ္တကီဠာ- ခြင်း၊ ကတ္တိကနက္ခတ္တကီဠာစ+ သာ+ကိစ္စဉ္စာတိ ကတ္တိက၊ပေ၊ကိစ္စံ။ [ဤ ဒုတိယနည်း ကို အဋ္ဌကထာဆရာ သဘောကျသောကြောင့် “ ဘဂဝါ ဟိ ” စသည်ဖြင့် ယုတ္တိဒင်္ဂီ, တနည်း ဝိတ္ထာရဝါကျကို မိန့်သည်၊ သမ္ဗဟုလေဟိ သဟာယကေဟိကို ထောက်၍လည်း တပျော်တပါးသွားကြောင်းသိနိုင်ရကား ဤဒုတိယနည်းကိုပင်နှစ်သက်သင့်ပေသည်။]

မုန်း လဆန်းပက္ခ၌၊ ဝေသာလိံ - သို့၊ သမ္ပာပုဏိ-ရောက်တော်မူပြီ၊ ကတ္တိက နက္ခတ္တကီဠာစ - ကြတ္တိကာနက္ခတ် ပွဲသဘင်သည်လည်း၊ တေသု - ဤဝေရဉ္စာ မြို့၌၊ ဥဋ္ဌာရာ - မွန်မြတ်သည်၊ ဝါ - ကြီးကျယ် ခမ်းနားသည်၊ ဟောတိ- ၏၊ တဒတ္တံ- ထို ကြတ္တိကာနက္ခတ်သဘင် ပျော်ရွှင်ကစားခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဂတော- သွားပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

အဒ္ဒသခေါတိ-ကား၊ ကထံ-သို့၊ အဒ္ဒသ-မြင်သနည်း၊ ကိရ-ချဲ့၊ သော- ထို သုဒိန်သည်၊ နဂရတော-မှ၊ ဘုတ္တပါတရာသံ- စားအပ်ပြီးသော နံနက်စာ ရှိသော၊ ( မဟာဇနံ ၌စပ်၊ ) ဝါ - စားအပ်ပြီးသော နံနက်စာ ရှိသည်ဖြစ်၍၊ (နိက္ခမန္တံ၌ စပ်၊) သုဒ္ဓုတ္တရာသင်္ဂံ-ဖြူစင် သန့်ရှင်းသော အပေါ်ခြုံ တဘက် ရှိသော၊ ဝါ-ရှိသည်ဖြစ်၍၊ မာလာဂန္ဓဝိလေပနဟတ္ထံ- လက်တို့၌ ပန်း,နံ့သာ, နံ့သာပြောင်းရှိသော၊ ဝါ- ပန်း နံ့သာ နံ့သာပြောင်းတို့ကို လက်စွဲလျက်၊ ဗုဒ္ဓ ဒဿနတ္ထံ - ဘုရားဖူးခြင်း အကျိုးငှါငှင်း၊ ဓမ္မဿဝနတ္ထဉ္စ - တရားနာခြင်း အကျိုးငှါငှင်း၊ နိက္ခမန္တံ - ထွက်သွားသော၊ မဟာဇနံ - များစွာသော လူ အပေါင်းကို၊ ဒိသွာ-၍၊ ကွ-အဘယ် အရပ်သို့၊ ဂစ္ဆထ - သွားကြမလို့နည်း၊ ဣတိ-သို့၊ ပုစ္ဆိ-ပြီ၊ ဗုဒ္ဓဒဿနတ္ထံ-ငှါငှင်း၊ ဓမ္မဿဝနတ္ထဉ္စ-ငှါငှင်း၊(ဂစ္ဆာမ- သွားကြမလို့၊)ဣတိ-ဤသို့ပြောကြကုန်ပြီ၊တေနဟိ-ထိုသို့ဖြစ်လျှင်၊(ဘုရားဖူး တရားနာသွားကြမည် ဖြစ်လျှင်၊ ) အဟမ္ပိ - ကျွန်ုပ်သည်လည်း၊ ဂစ္ဆာမိ - လိုက်လိုပါ၏၊ ဝါ-လိုက်ပါရစေ၊ ဣတိ-ဤသို့ ပြော၍၊ ဂန္တွာ-လိုက်သွား၍၊ စတုဗ္ဗိဓာယ- ၄ ပါးအပြားရှိသော၊ [ ခတ္တိယ ဗြာဟ္မဏ ဂဟပတိ သမဏာနံ ဝသေန စတုဗ္ဗိဓာယ၊ ဘိက္ခု ဘိက္ခုနီ ဥပါသက ဥပါသိကာနံ ဝသေန ဝါ။ ] ပရိသာယ- သည်၊ ပရိဝုတံ- ခြံရံအပ်သော၊ ဝါ- အပ်လျက်၊ ဗြဟ္မဿရေန- မြတ်သော အသံတော်ဖြင့်၊ ဝါ-ဗြဟ္မာမင်း၏ အသံနှင့် တူသော အသံတော် ဖြင့်၊ ဓမ္မံ-ကို၊ ဒေသေန္တံ-တော်မူသော၊ ဘဂဝန္တံ - ကို၊ အဒ္ဒသ - ပြီ၊ တေန- ကြောင့်၊ အဒ္ဒသခေါ၊ ပေ၊ ဒေသေန္တံတိ- ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ)ဝုတ္တံ-ပြီ။

ဘုတ္တပါတရာသံ။ ။အသိတဗ္ဗော ဘက္ခိတဗ္ဗောတိ အာသော၊ [အသ—ဘက္ခနေ၊ ဏ၊ “ အ—ဣပစ္စယ, ဒုတိယဏော, ဤသဘော, အဟောပုလ္လိန်သာ။”] ပါတော+ အာသော ပါတရာသော၊ ( ရ အာဂုံ၊ ) ဘုတ္တော + ပါတရာသော ယေနာတိ ဘုတ္တ ပါတရာသော (မဟာဇနော)။

သုဒ္ဓုတ္တရာသင်္ဂံ၊ပေ၊ဟတ္ထံ ။ ။ သုဒ္ဓေါ+ဥတ္တရာသင်္ဂေါ ယဿာတိ သုဒ္ဓုတ္တရာ သင်္ဂေါ — ဖြူစင် သန့်ရှင်းသော အပေါ်ခြုံ တဘက်ရှိသော လူအများ၊ ဟဲတ္ထသု+ မာလာဂန္ဓဝိလေပနာနိ ယဿာတိ မာလာဂန္ဓဝိလေပနဟတ္ထော (မဟာဇနော)။

ဒိသွာနသဿာတိ- ကား၊ ဒိသွာန – ကြောင့်၊ အဿ- ထိုသုဒိန်၏၊ (တေဒ ဟောသိဘ်စပ်၊) တေဒဟောသီတိ- ကား၊ ပုဗ္ဗေ – ၌၊ ကတပုညတာယ- ပြုအပ် ပြီးသော ကောင်းမှုရှိသူ၏ အဖြစ်သည်၊ ( ပြုအပ်ပြီးသော ကောင်းမှုရှိသူ၏ ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာ ရှေးကောင်းမှုသည်၊ ) စောဒိယမာနဿ - တိုက်တွန်း အပ်သော၊ ဘဗ္ဗကုလပုတ္တဿ- ကျွတ်ထိုက်သော အမျိုးကောင်းသား၏၊ ဧတံ (ပရိဝိတက္ကနံ)-သည်၊ အဟောသိ-ပြီ၊ ကိံ-သို့၊ အဟောသိ-နည်း၊ အဟမ္ပိ- သည်လည်း၊ ဓမ္မံ–ကို၊ ယန္နူန သုဏေယျံ-အကယ်၍ နာရပါမူကား ကောင်း လေစွ၊ ဣတိ – ဤအကြံသည်၊ ( အဟောသိ- ပြီ၊ ) တတ္ထ - ထိုယန္နူနာဟမ္ပိ အစရှိသော ဝါကျ၌၊ ယန္နူနာတိ ဧတံ - ယန္နူနဟူသော ဤ နိပါတ်ပုဒ်သည်၊ ပရိဝိတက္ကဒဿနံ - ကြံပုံကိုပြကြောင်းဖြစ်သော နိပါတ်ပုဒ်တည်း၊ ကိရ - ချဲ့၊ အဿ-ထိုသုဒိန်၏၊ ဧဝံ-သို့၊ ပရိဝိတက္ကော-သည်၊ ဥပ္ပန္နော-ပြီ၊ (ကိံ-နည်း၊) အယံပရိသာ-သည်၊ဧကဂ္ဂစိတ္တာ-တတည်းခုသော အာရုံရှိသော စိတ်ရှိသည်၊ ဝါ-တည်ကြည်သောစိတ်ရှိသည်၊(ဟုတွာ- ၍၊)ယံဓမ္မံ-ကို၊ သုဏာတိ-နာ၏၊ အဟမ္ပိ- သည်လည်း၊ တံ- ထိုတရားကို၊ သုဏေယျံ- နာရပါမူကား၊ အဟော ဝတ-ဧြော်….ကောင်းလေစွ၊ ဣတိ-သို့၊ (ဥပ္ပန္နော-ပြီ။)

**ဒိသွာန အဿ။** ။ဟေတုအတ္ထော အယံ ဒိသွာနသဒ္ဒေါ၊ပေ၊ဒဿနကာရဏာတိ ဧတံ ပရိဝိတက္ကနံ အဟောသိ၊ ဒိသွာန၌ တွာန၏ ကတ္တားသည် သုဒိန္နောတည်း၊ အဟောသိ၏ ကတ္တားကား ဧတံတည်း၊ ဤသို့ကတ္တားကွဲသောကြောင့် တွာနပစ္စည်းကို ဟိတ်အနက်၌ သက်စေရသည်၊ "ဃတံ ပိဝိတွာ ဗလံ ဟောတိ=ထောပတ်ကို သောက်ရ ခြင်းကြောင့် အားဖြစ်၏" (သီဟံ ဒိသွာ ဘယံ ဟောတိ) ဟူရာ၌ ကဲ့သို့တည်း။

**ဘဗ္ဗကုလပုတ္တဿ၊** ။ဘဝိတဗ္ဗော–သစ္စာ ၄ ပါးကို သိဘို့ရန် ဖြစ်ထိုက်၏၊ ဝါ– ကျွတ်ထိုက်၏၊ ဣတိ ဘဗ္ဗော၊ဘဗ္ဗောစ+သော+ကုလပုတ္တောစာတိ ဘဗ္ဗကုလပုတ္တော၊ ရှင်သုဒိန်ကို "ဘဗ္ဗ"ဟု ဆိုသော်လည်း တရားထူးကား ရမည်မဟုတ်၊ မှန်၏-'အရိယာ ဖြစ်ဘို့ရန် အခြေခံပါလာသူပင် ဖြစ်သော်လည်း တရားဟောပုဂ္ဂိုလ်၏ ဟောကြားမှု ကြိယာ , မိမိ၏ ပြုလုပ်မှု ကြိယာ ချို့ယွင်းခြင်းကြောင့်သော်လည်း အရိယာမဖြစ်ဘဲ ရှိတတ်၏၊ ပါပမိတ္တနှင့် ပေါင်းမိခြင်းကြောင့်သော်လည်း အရိယာမဖြစ်ဘဲ ရှိတတ်၏၊ ရှင်သုဒိန်မှာ မိခင်၏ တိုက်တွန်းမှုကြောင့် မေထုန်ပြုမိရကား (မိခင်ဟူသော ပါပမိတ္တ, မေထုန်ပြုမိခြင်းဟူသောကြိယာကြောင့်) အရိယာ မဖြစ်ဘဲ ရှိရသည်။

**ယန္နူန။** ။ "ပရိဝိတက္ကနတ္ထေ နိပါတော"ဟု သာရတ္ထဖွင့်သောကြောင့် ပရိဝိတ က္ကနအနက်ဟောနိပါတ်တပုဒ်ထည်းသာ၊ ဓမ္မံ သုဏေယျံတကြိယာပဒေန ဝုစ္စမာနော ဧဝ ဟိ အတ္ထော ယန္နူနာတိ နိပါတပဒေန ဇောတီယတိ၊ "အဟံ ယန္နူန ဓမ္မံ သုဏေ ယျန္တိ ယောဇနာ၊ ယန္နူနာတိစ ယဒိပနာတိ အတ္ထော။

အထခေါ သုဒိန္နော၊ပေ၊သော ပရိသာဝတိဇုမ - ဟူသော၌ပါဠိ၌၊ ကသ္မာ- ကြောင့်၊ ယေန ဘဂဝါတိ- ဟူ၍၊ အဝတွာ-မဆိုမူ၍၊ ယေန သာပရိသာတိ- ဟူ၍၊ ( သံဂီတိကာရေဟိ ) ဝုတ္တံ - ဆိုအပ်သနည်း၊ ဇုတိစေ - ဤသို့ မေးအံ့၊ ဟိ-အဖြေကား၊ (တနည်း) ဟိ- ချဲ့၊ [ဥပသင်္ကေ့ာတိုင်အောင် မျှော်သည်၊] (တနည်း)ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ [ဇုတိတသ္မာ၏ ဟေတုဝါကျ၊] ဘဂဝန္တံ- ကို၊ ပရိဝါရေတွာ - ထက်ဝန်းကျင် ကာဆီး၍၊ ( သဒ္ဒတ္ထ၊ ) ဝါ-ဝန်းရံ၍၊ (ဝေါဟာရတ္ထ၊)ဥဠာရဠာရဇနာ-အလွန် မွန်မြတ်သော လူအပေါင်းရှိသော၊ ဝါ– လူကြီး လူကောင်းရှိသော၊ မဟတီ– များစွာသော၊ ပရိသာ-ပရိသတ် သည်၊ နိသိန္နာ - ထိုင်နေပြီ၊ တတြ - ထို လူကြီး လူကောင်းရှိရာ ပရိသတ်၌၊ ပစ္ဆာ-နောက်၌၊ ဝါ-မှ၊ အာဂတေန - ရောက်လာသော၊ ဇုမိနာ-ဤ သုဒိန် သည်၊ ဘဂဝန္တံ –သို့၊ ဥပသင်္ကမိတွာ- ချဉ်းကပ်၍၊ နိသီဒိတုံ-ငှါ၊ န သက္ကာ- မတတ်နိုင်၊ ပန- အနွယကား၊ ပရိသာယ - ၏၊ ဧကသ္မိံ ပဒေသေ- တခုသော အရပ်၌၊ (နိသီဒိတုံ - ငှါ၊) သက္ကာ - ၏၊ ဇုတိ (တသ္မာ) - ကြောင့်၊ (ထိုသို့ နောက်မှ ရောက်လာသောသုဒိန်၏ မြတ်စွာဘုရားသို့ ချဉ်းကပ်၍ ထိုင်ခြင်းငှါ မတတ်နိုင်ဘဲ ပရိသတ်၏ တခုသောအရပ်၌ ထိုင်ခြင်းငှါသာ တတ်နိုင်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) သော-ထို သုဒိန်သည်၊ တံ ပရိသံယေဝ-ထို ပရိသတ်သို့သာ၊ ဥပသင်္ကေ့ာ-ချဉ်းကပ်ရပြီ။ [ နိသီဒိ၏အဖွင့် ဖြစ်ရကား "ဥပသင်္ကေ့ာ" ဟု အတိတ်ဟော တ ပစ္စည်းဖြင့် ရှိစေ။] တေန- ကြောင့်၊ အထခေါ၊ပေ၊ ပရိ သာတိ-ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ၊) ဝုတ္တံ–ပြီ။

ဧကမန္တံ၊ပေ၊ဧတဒဟောသိတိ- ကား၊ နိသိန္န မတ္တဿေဝ- ထိုင်ပြီးကာမျှ သာလျှင်ဖြစ်သော၊ (သုဒိန္နဿ - ၏၊ ဧတံ - ဤအကြံသည်၊ ) န အဟောသိ- ဖြစ်သည်မဟုတ်၊ အထခေါ- အဟုတ်ကား၊ ဘဂဝတော– ၏၊ သိက္ခတ္တယုပ သံဟိတံ-သိက္ခာ ၃ ပါးအပေါင်းနှင့် စပ်ယှဉ်သော၊ [အဓိသီလ အဓိစိတ္တ အဓိ ပညာသင်္ခါတသိက္ခတ္တယယုတ္တံ၊] ထောက်-အနည်းငယ်သော၊ ဓမ္မကထံ- ကို၊ သုတွာ-နာရခြင်းကြောင့် (ဧတံ အဟောသိ)၊ [ဇုမာပိ သုတွာသဒ္ဒေါ ဟေတု

ဥဠာရုဠာရဇနာ။ ။[ခတ္တိယမဟာသာလာဒိဥဠာရုဠာရဇနာကိဏ္ဏာ-များသော ဥစ္စာနှစ်ရှိသော ခတ္တိယစသော လူကြီး လူ့ကောင်းတို့ဖြင့် ရောပြွမ်းသော ပရိသတ်။] ဥဠာရာနံ+ဥဠာရာ ဥဠာရုဠာရာ = မွန်မြတ်သူတို့ထက် မွန်မြတ်သူတို့၊ .... (တနည်း) အနက်တူသဒ္ဒါ ၂ ချက်ဆင့်၍ မြင့်သောအနက်ကိုယူ၊ " အလွန် မွန်မြတ်သူ (အလွန် အထက်တန်းရောက်သူ)တို့"၊ဥဠာရုဠာရာ+ဇနာ ယဿာတိ ဥဠာရုဠာရဇနာ(ပရိသာ)၊ ဤသို့ ပြုစေလို၍ "ဇနာကိဏ္ဏာ"ဟု ဖွင့်သည်။

အတ္တောတိ ဒဠှဗ္ဗော၊] ပန-ထိုသို့ပင် တရားတော်ကိုနာရခြင်းကြောင့် ဖြစ်ပေါ်သော်လည်း၊ တံ-ထိုအကြီးသည်၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ကေမန္တံ-၌၊ နိသိန္နသော၀-ထိုင်ပြီးသည်သာလျှင်ဖြစ်သော၊ အဿ-ထို သုဒိန်၏ (သန္တာန်၌)၊ အဟောသိ - ပြီ၊ တေန - ကြောင့်၊ ကေမန္တ ၊ပေ၊ တေဒဟောသီတိ - ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ၊) ဝုတ္တံ - ပြီ၊ ကိံ - အဘယ်အကြီးသည်၊ အဟောသိ-နည်း၊ ဣတိ-၍ကားအမေးတည်း၊ ယထာ ယထာခေါတိ အာဒိ- ယထာ ယထာခေါ အစရှိသောအကြီးသည်၊ (အဟောသိ-ပြီ၊) (ဣတိ-၍ကားအဖြေတည်း၊) တတြ-ထို ယထာ ယထာခေါ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ အယံ-၍ဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ သင်္ခေပကထာ-အကျဉ်းချုပ်စကားတည်း၊အဟံ-သည်၊ ယေန ယေန အာကာရေန - အကြင် အကြင်သို့သော အခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ ဘဂဝတာ – သည်၊ ဒေသိတံ-သော၊ ဓမ္မံ—ကို၊ အာဇာနာမိ-သိ၏၊ တေန တေန (အာကာရေန)-ဖြင့်၊ မေ-အား၊(ဧဝံ ဟောတိ၌စပ်၊) ဝါ - သည်၊ ဥပပရိက္ခတော – စူးစမ်းဆင်ခြင်လသော်၊ ဧဝံ-သို့၊ ဟောတိ-ဖြစ်လာ၏၊ [ ဧဝံ ဥပဋ္ဌာတိ-၍သို့ စိတ်ထည်းမှာ ထင်လာ၏၊ ] ( ကံ )၊ ယဒေတံ သိက္ခတ္တယမြဟ္မစရိယံ - အကြင် သိက္ခာ ၃ ရပ်ဖြင့် သိမ်းယူအပ်သည့် မြတ်သော အကျင့်ကို၊ ကေမ္ပိဒိဝသံ-

**သင်္ခေပကထာ**။ ။တပုဒ်စီ တပုဒ်စီ သံဝဏ္ဏေတဗ္ဗတည်၍ မဖွင့်ဘဲ ပုဒ်အားလုံးကို ပေါင်းရုံး ဖွင့်သောကြောင့်"သင်္ခေပကထာ"ဟု ဆိုသည်၊ ဖွင့်ပုံမှာကား မကျဉ်းလှပါ၊ [ဝိသုံ ဝိသုံ ပဒုဒ္ဓာရံ—(တပုဒ်စီ တပုဒ်စီ ထုတ်ပြခြင်း= သံဝဏ္ဏေတဗ္ဗ အဖြစ်ဖြင့် ဣတိ သဒ္ဒါဖြင့် တည်ခြင်းကို) အကတွာ သမာသတော (အကျဉ်းအားဖြင့်) အတ္ထဝဏ္ဏနာ။

**ယေန ယေန အာကာရေန**။ ။ ယေနယေန ပကာရေန-(ဋီကာ)၊ အာကာရ၏ ပကာရအနက်ကို ဖွင့်ခြင်းမဟုတ်၊ အခြင်းအရာ အာကာရတွေ များပြားသောကြောင့် "ပကာရေန" ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထ ဖွင့်ခြင်းဖြစ်သည်၊ ထိုအာကာရေနကို ဒေသိတံ၌စပ်၊ မှန်၏—ထိုအချိန်၌ ဘုရားရှင် ဟောတော်မူအပ်သော တရားတော်ဝယ် ကာမာဒီနဝ (ကာမ၏ အပြစ်) များလည်း ပါ၏၊ နေက္ခမ္မာနိသံသ (ကာမမှ ထွက်မြောက်ကြောင်း ဖြစ်သော ရဟန်းအဖြစ်၏ အကျိုး) လည်း ပါ၏၊ ၍သို့ များပြားသော အခြင်းအရာ အားဖြင့် ဟောတော်မူသည်။

**ကေမ္ပိဒိဝသံ**။ ။"ကေဒိဝသမတ္တမ္ပိ"-ဋီကာ၊ အခဏ္ဍံကတွာ၌စပ်၊ ပိကား အနည်းနောင်ထိုင်သော်လည်း ဂရဟာဇောတကမဖြစ်သင့်၊ "တနေ့မျှမကြိုးမပြတ်ဘဲ ကျင့်ထိုက်လောက်အောင် မွန်မြတ်ပါပေသည်"ဟု တရားကို မြင့်တင်သော အနုဂ္ဂဟတ္ထ—သမ္ဘာဝနာ ဇောတကသာ ဖြစ်သင့်သည်။

[ **ဆောင်** ] အနည်းအယုတ်,ပုဒ်နောင်ထုတ်၍, ပိ ယုတ် ဂရဟာ,ဖြစ်တုံပါလည်း,
စဉ်ရာပုဒ်မှာ, များမြတ်ပါမူ, သမ္ဘာဝနာသာ ယူ။

တနေ့မျှလည်း၊ အခဏ္ဍံ - ကြိုးပြတ်ခြင်း မရှိသည်ကို၊ ဝါ - ကြိုး, ပေါက်, ပြောက်ကျားခြင်း မရှိသည်ကို၊ ကတွာ - ၍၊ စရိမကစိတ္တံ - နောက်ဆုံး စိတ်သို့၊ ဝါ - စုတိစိတ်သို့၊ [ စရိမကသဒ္ဒါသည် အဆုံးအနက်ကို ဟော၏၊ တဘဝ၏ အဆုံးဟူသည် စုတိစိတ်တည်း၊ စရိမက စိတ္တံတိ - စုတိ စိတ္တံ၊ ] ပါပေတဗ္ဗတာယ - ရောက်စေထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဧကန္တ ပရိပုဏ္ဏံ - စင်စစ် ထက်ဝန်းကျင် ပြည့်စုံစွာ၊ ဝါ - ပြည့်စုံအောင်၊ စရိတဗ္ဗံ - ကျင့်ထိုက်၏၊ စ - သည်သာ မကသေး၊ ဧကဒိဝသမ္ပိ - လည်း၊ ကိလေသမလေန - ကိလေသာ အညစ်အကြေးအားဖြင့်၊ ( မလိနံဝယ် မလဝ္ဂ အဘိန္နဝိသေသန၊ ) အမလိနံ - အညစ်အကြေး မရှိသည်ကို၊ ကတွာ - ၍၊ စရိမကစိတ္တံ - သို့၊ ဝါ - သို့၊ ပါပေယဗ္ဗတာယ - ကြောင့်၊ ဧကန္တပရိသုဒ္ဓံ - စင်စစ် ထက်ဝန်းကျင် စင်ကြယ်စွာ၊ ဝါ - အောင်၊ သင်္ခလိခိတံ လိခိတသင်္ခသဒိသံ - ခြစ်ပစ်အပ်သော ခရုသင်းနှင့် တူစွာ၊ ဓောတသင်္ခ သပ္ပဋိဘာဂံ-ဆေးကြော ပွတ်တိုက်အပ်သော ခရုသင်းနှင့် တူသော အဘို့ရှိအောင်၊ စရိတဗ္ဗံ-၏။

**အခဏ္ဍံကတွာ။** ။ဒုက္ကဋဒုဗ္ဘာသိတမတ္တဿပိ အနာပဇ္ဇနေန— ဒုက္ကဋ်ဒုဗ္ဘာသိတ သို့မျှ မရောက်စေရခြင်းအားဖြင့်၊ အခဏ္ဍိတံကတွာ—ကြိုးပြတ်ခြင်းမရှိအောင်ပြု၍၊ အစ္ဆိဒ္ဒ, အသဗလ, အကမ္မာသဖြစ်အောင်လည်း ပြုရမည်သာ ဖြစ်သောကြောင့် အခဏ္ဍံသည် ဥပလက္ခဏ စကားသာတည်း။ [အခဏ္ဍ အစ္ဆိဒ္ဒါဒိဘာဝါပါဒနေန (ကြောင့်) အခဏ္ဍ လက္ခဏဝစနဉ္စေတံ။]

**ဧကန္တပရိပုဏ္ဏံ။** ။ ကိဉ္စိပိ ဧကဒေသံ အသေသေတွာ ( ဇိုးဇဉ်းအနည်းငယ် တချို့တလေကိုမျှ မကြွင်းစေဘဲ ) ဧကန္တေနေဝ ပရိပူရေတဗ္ဗတာယ ဧကန္တပရိပုဏ္ဏံ။ [မည်သည့် ဗြဟ္မစရိယတော့ ကျင့်ဘို့မလိုပါ—ဟု ဆိုစရာမရှိ၊ အားလုံး သိက္ခာပုဒ်များ သမာဓိကျင့်စဉ်များ ပညာများသည် သူ့နေရာနှင့်သူ ဖြည့်စရာချည်း ဖြစ်သည်။]

**အမလိနံကတွာ။** ။မလံ ယဿ အတ္ထီတိ မလီ=အညစ်အကြေးရှိသော ဗြဟ္မစရိယ၊ န + မလိ အမလိ၊ [ န ပုလ္လိင်ဖြစ်၍ ရဿပြု။ ] သုခကာရိန်ကဲ့သို့ " အမလိနံ " ဟု ရှိစေ၊ တနည်း—ဗျာဓိတပုဒ်ကဲ့သို့ သဉ္ဇာတအဿအနက်၌ "ဣတ" ပစ္စည်းသက်, တကို နပြု၍လည်း "အမလိနံ" ဟု ပင် ရှိသင့်၏။ [ တဏှာသံကိလေသာဒိနာ အသံကိလိဋ္ဌံ ကတွာ စိတ္တုပ္ပါဒမတ္တမ္ပိ ကိလေသမလံ အနုပ္ပါဒေတွာ အစ္စန္တမေဝ ဝိသုဒ္ဓံကတွာ ပရိဟရိတဗ္ဗတာယ (ဆောင်ရွက်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်) ဧကန္တပရိသုဒ္ဓံ။]

**သင်္ခလိခိတံ။** ။ "သင်္ခလိခိတံ " သည် ပါဠိရင်းတည်း၊ ဝိသေသနပုဒ် နောက်ကျသည် ဟု ၎င်း, သင်္ခ၌ ဥပမာတဒ္ဓိတ် ( တနည်း-သဒိသူပစာ ) ဟု၎င်း သိစေလို၍ "လိခိတ သင်္ခသဒိသံ" ဟု ပဌမဖွင့်သည်၊ လိခိတအရ " ခြစ် " ဆိုသည်မှာလည်း ဖြူစင်အောင် ပွတ်တိုက်အပ်သည်ကို ဆိုလိုသည် ဟု ပြလို၍ "ဓောတသင်္ခသပ္ပဋိဘာဂံ" ဟု ဒုတိယ ဖွင့် ပြန်သည်၊ သပ္ပဋိဘာဂံကား သဒိသံ၏ ပရိယာယ်တည်း၊ ဤသင်္ခလိခိတံပုဒ်သည် ဧကန္တ

ဇာဒံမြဟ္မစရိယံ-ဤသိက္ခာ ၃ ရပ်ဖြင့် သိမ်းယူအပ်သော မြတ်သောအကျင့်ကို၊ အဂါရံ-အိမ်၌၊ အဇ္ဈာဝသတာ-နေသူသည်၊ အဂါရမဇ္ဈေ-အိမ့်အလယ်၌၊ ဝသန္တေန - သည်၊ ဧကန္တပရိပုဏ္ဏံ - စင်စစ်ထက်ဝန်းကျင် ပြည့်စုံစွာ၊ ဝါ-အောင်၊ ဧကန္တပရိသုဒ္ဓံ– စင်စစ် ထက်ဝန်းကျင် စင်ကြယ်စွာ၊ ဝါ - အောင်၊ သင်္ခလိခိတံ-ပွတ်တိုက်ဆေးကြောအပ်သော ခရုသင်းနှင့်တူစွာ၊ဝါ-ပွတ်သစ်စ ခရုသင်းနှင့် တူအောင်၊ စရိတုံ–ကျင့်ခြင်းငှါ၊ န သုကရံ - လွယ်ကူစွာ မပြုအပ်၊ [သုကရံ၌ ကံဟော ခပစ္စည်းတည်း၊] ဝါ-မလွယ်ကူ၊ အဟံ-သည်၊ ကေသေစဆံတို့ကိုငင်း၊ မဿုံစ-မုတ်ဆိတ်ကျင်စွယ်ကိုငင်း၊ ဩဟာရေတွာ-ပယ်ရှား၍၊ ဝါ–ရိတ်၍၊ ကသာယရသ ပီတတာယ- သောက်အပ်သော ဖန်ရည်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ- ဖန်ရည်ကိုသောက်တတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ကာသာယာနိ – ဖန်ရည်ဖြင့် ဆိုအပ်ကုန်သော၊ မြဟ္မစရိယံ – မြတ်သောအကျင့်ကို၊ စရန္တာနံ-ကျင့်သူတို့အား၊ အနုစ္ဆဝိကာနိ-လျောက်ပတ်ကုန်သော၊ ဝတ္ထာနိ-

ပရိသုဒ္ဓံပုဒ်ကိုပင် ထင်ရှားအောင် ဥပမာပြသော ပုဒ်တည်း၊ ထို့ကြောင့် အဋ္ဌကထာ၌ ဧကန္တပရိသုဒ္ဓံ သင်္ခလိခိတံ ၂ ပုဒ်မှ စရိတဗ္ဗံ ဟု ကြိယာတချက်ပြသည်၊"ဧကန္တပရိသုဒ္ဓ ဖြစ်သောကြောင့် ပွတ်သစ်စ ခရုသင်းအတူ ဖွေးဖွေးဖြူနေသည်"ဟူလို။ [တတော ဧဝ သင်္ခံ°ဝိယ လိခိတန္တိ သင်္ခလိခိတံ။]

**မှတ်ချက်။** ။"သင်္ခံ°ဝိယ"သည် (မူလဒုတိယန္တ အတိုင်း) ဥပမာတဒ္ဓိတ်ပြတည်း၊ တနည်း–သဒ္ဒိသူပစာပြတည်း၊ အမှန်ဝစနတ်ပြုသောအခါ သင်္ခသဒ္ဒါ ပုလ္လိန်ဖြစ်၍"လိခိ ယိတ္ထာတိ လိခိတော၊သင်္ခေါ၊စ+သော+လိခိတောစာတိ သင်္ခလိခိတော၊ သင်္ခလိခိတော ဝိယာတိ သင်္ခလိခိတံ (မြဟ္မစရိယံ)" ဟု ပြုပါ၊ သမာနော +ပဋိဘာဂေါ ( ပြိုင်ဘက် အတူ) ယဿာတိ သပ္ပဋိဘာဂံ၊ သမာနကို ( သ ) ပြု၊ ဓောတသင်္ခေန + သပ္ပဋိဘာဂံ ဓောတသင်္ခသပ္ပဋိဘာဂံ (မြဟ္မစရိယံ)။

**အဂါရံ အဇ္ဈာဝသတာ ။** ။ အဓိ အာပုဗ္ဗဝသဓာတ်၏ ယှဉ်ရာ၌ သတ္တမီအနက်ဝယ် ဒုတိယာသက်ရသောကြောင့် အဂါရံကို"အဂါရမဇ္ဈေ"ဟု ဖွင့်သည်။ [တတိယာ သတ္တမီနဉ္စသုတ်အဖွင့် ကာရကရူပသိဒ္ဓိကိုကြည့်ပါ၊ အမ္ဗုဋ္ဌသုတ်အဋ္ဌကထာ၌ အဓိ+အာ ဥပသာရတို့အနက်ရှိ ကြံသောအဖွင့်လည်း ရှိသေး၏။]

**ကေသမဿုံ ။** ။ ဒါဌိကာပိ မဿုဂ္ဂဟဏေနေဝ ဂဟေတွာ မဿုတွေဝ ဝုတ္တံ၊ ဥတ္တရာဓရမဿုံ (အထက်မုတ်ဆိတ်, အောက်မုတ်ဆိတ်) ဣတိ အဓိပ္ပာယော၊ အထက်က မုတ်ဆိတ်ကိုပင် ဒါဌိကာ, (ဝါ–နှုတ်ခမ်းမွေး) ဟု ခေါ်သည်။

**ကသာယရသ ပီတတာယ။** ။ပီတော – သောက်အပ်ပြီးသော+ ကသာယရသော ယေဟီတိ ကသာယရသပီတာနိ = သောက်အပ်ပြီးသော ဖန်ရည်ရှိသော အဝတ်တို့၊ ဇိတိန္ဒြိယောကဲ့သို့ ကတ္တားပုဒ်ရ၍ "ဖန်ရည်ကိုသောက်ပြီးသော အဝတ်တို့" ဟု မှတ်၊ ဤအဖွင့်ဖြင့်"ကသာယေန+ရတ္တာနိ ကာသာယာနိ" ဟူသော ဝိဂြိုဟ်ကိုပြသည်။

အဝတ်သက်န်းတို့ကို၊ အစ္ဆာဒေတွာ–ဆီး၍၊ ပရိဒဟိတွာ- ဝတ်ရုံ၍၊ အဂါရ သွာ– အိမ်မှ၊ နိက္ခမိတွာ - ၍၊ [ အဂါရသွာသည် ဥပါတစိသယ အပါဒါန် ဖြစ်၍ " နိက္ခမိတွာ " ဟု စပ်ပုဒ်ထည့်ပါ - ဟုလို၊ ] အနဂါရိယံ – လယ်ထွန် ကုန်ရောင်း နွားကျောင်းမှုမရှိရာ ရဟန်းဘောင်သို့၊ ယံနူန ပဗ္ဗဇေယျံ- လူ့ကိစ္စ များ , စွန့်ခွါထား၍ , သွားရောက်ရပါမူကား ကောင်းလေစွ၊ ဣတိ - သို့၊ ( ဟောတိ - ထင်ရှား၏၊ ) [ စေ်ဟောတိကို ပြန်အုပ်ပါ၊ ] ဣတိအယံ– ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ သခ်ပကထာ-တည်း၊ (ဣတိတလုံး အကြေကြီး၊)

စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ-ဤ အနဂါရိယံ ပဗ္ဗဇေယျံဟူသောပါဌ်၌၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အဂါရဿ - အိမ်၌နေခြင်း၏၊ ဟိတံ - စီးပွားဖြစ်သော၊ ကသိဝါဏိဇ္ဇာဒိ ကမ္မံ -လယ်ထွန်ခြင်း,ကုန်သန်းရောင်းဝယ်ခြင်း အစရှိသော အလုပ်ကို၊ အဂါရိ ယံဘိ - ယံ ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ – ၏၊ တဥ္စ - ထိုအိမ်၌ နေခြင်း၏ စီးပွားဖြစ်သော လယ်ထွန် ကုန်ရောင်း နွားကျောင်းမှု သည်လည်း၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာယ-ရှင်ရဟန်းအဖြစ် ၌၊နတ္ထိ-မရှိ၊တသ္မာ-ကြောင့်၊(ထိုသို့ အိမ်၌နေခြင်း၏စီးပွားဖြစ်သော လယ်ထွန် ကုန်ရောင်း နွားကျောင်းမှုမရှိရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) ပဗ္ဗဇ္ဇာ-ရှင်ရဟန်းအဖြစ် ကို၊ အနဂါရိယာတိ - ယာဟူ၍၊ ဉာတဗ္ဗာ–၏၊ အနဂါရိယံ–အိမ်၌နေ ခြင်း၏ စီးပွားဖြစ်သော လယ်ထွန် ကုန်ရောင်း နွားကျောင်းမှု မရှိရာဖြစ်သော၊ တံ ပဗ္ဗဇ္ဇံ–ထို ရှင်ရဟန်းအဖြစ်သို့၊ ပဗ္ဗဇေယျန္တိ– ကား၊ (ယန္နူန) ပရိဗ္ဗဇေယျံ– လူ့ကိစ္စများ, စွန့်ခွါထား၍, သွားရောက်ရပါမူကား ကောင်းလေစွ၊

ပရိဒဟိတွာ။ ။အစ္ဆာဒေတွာ၏ အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်တည်း၊ အာပုဗ္ဗ စုရာဒိဆဒဓာတ် သည် သံဝရဏ (စောင့်ရှောက်ဖုံးလွှမ်းခြင်း , ဆီးခြင်း ) အနက်ကိုဟော၏၊ " ကိုယ် အတွင်းကို လူမမြင်ရအောင် ဆီးကာထားခြင်း" ဟူသည် အဝတ်ကို ဝတ်ခြင်းတည်း၊ ပရိပုဗ္ဗ ဓာဓာတ်ဖြင့်ပြီးသော"ပရိဒဟန"သည်"နိဝါသ-ဝတ်ခြင်း"အနက်ကိုဟော၏၊ ဤနေရာ၌ သင်းပိုင်ကိုဝတ်၍ , အပေါ်ရုံကို ရုံခြင်း ရုံခြင်းကို " ပရိဒဟိတွာ " ဟု ဆိုသည်၊ [ပရိဒဟိတွာတိ နိဝါသေတွာ ပါရုပိတွာစ။]

အဂါရဿ ဟိတံ ။ ။ အဂါရဝါသော အဂါရံ ( ဥတ္တရပဒလောပေန – ဝါသ နေခံပုဒ်ကိုချေသဖြင့် "အဂါရံ" ဟု ဖြစ်၏၊)၊ တဿ - ထိုအိမ်၌ နေခြင်း၏၊ ဝဍ္ဎိပယံ- တိုးပွားမှုကို ဆောင်တတ်သော အလုပ်သည်၊ အဂါရဿ–၏၊ ဟိတံ–စီးပွားမည်၏၊ [အဂါရဿ + ဟိတံ အဂါရိယံ၊ ဟိတအနက်၌ ဣယသက်၊ နတ္ထိ + အဂါရိယံ ဧတ္ထာတိ အနာဂါရိယာ (ပဗ္ဗဇ္ဇာ) ။] ပဗ္ဗဇ္ဇာ၌ "ပပုဒ္ဒ, ဝဇ–ဂတ်မှ်" ဟူသော ဓာတ်တည်း၊ သဒ္ဒ ကမ္မစာဂေန ဝိဓာနေန (လယ်ထွန် ကုန်ရောင်း စသော ကိစ္စကို စွန့်ခြင်း အစီအရင်ဖြင့်) အဿမန္တရဂမနေ–ကမ္မဋ္ဌာန်းကျောင်းသို့ သွားနေခြင်း၌"ဟု သောမနိမိဖွင့်၏၊ ပ နှင့် ပရိပ္ပဗ္ဗဇေယျံ၌ ပရိတို့သည် ပရိစ္စာဂအနက်ဟောတည်း။

အစိရဝုဋ္ဌိတာယ ပရိသာယ ယေန ဘဂဝါ, တေနုပသင်္ကမိတိ - ကား၊ သုဒိန္နော-သည်၊ ပရိသာယ-သည်၊ အဝုဋ္ဌိတာယ-မထသေးမီ၊ ဘဂဝန္တံ-ကို၊ ပဗ္ဗဇ္ဇံ- ကို၊ န ယာစိ - တောင်းပန်သည် မဟုတ်၊ ကသ္မာ - နည်း၊ တတြ-ထို ပရိသတ်၌၊အဿ-ထိုသုဒိန်၏၊ ဗဟူ-န်သော၊ ဉာတိသာလောဟိတာ-ဆွေမျိုး သွေးသား တော်စပ်သူတို့သည်ဂင်း၊မိတ္တာမစ္စာ—မိတ်ဆွေ,အဖေါ်သဟာယ ချင်းတို့သည်ဂင်း၊ သန္တိ-န်၏၊ တေ-ထိုဉာတိသာလောဟိတ မိတ္တာမစ္စတို့သည်၊ တံ—သည်၊ မာတာပိတူနံ - မိဘတို့၏၊ ဧကပုတ္တကော - သနားစောင့်ရှောက် အပ်သော တယောက်သော သားတည်း၊ တယာ - သည်၊ ပဗ္ဗဇိတုံ – ၄၇၊ နလဗ္ဘာ—မရအပ်၊ ဣတိ- ဤသို့ ပြော၍၊ ဗာဟာယံ- လက်မောင်း၌၊ ဝါ—ကို၊ ဂဟေတွာပိ-ကိုင်၍လည်း၊ အာကဍ္ဎေယျုံ- ဆွဲငင်ကုန်ရာ၏၊ တတော– ထိုသို့ ဆွဲငင်ခြင်းကြောင့်၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာယ-ရှင်ရဟန်းအဖြစ်၏၊ အန္တရာယော-သည်၊ ဘဝိ ဿတိ—တံ့၊ ဣတိ—ဤသို့ အကြံဖြစ်ခြင်းကြောင့်၊ ( နယာစိ - မတောင်းပန်၊ ) ပရိသာယ - နှင့်၊ သဟေဝ - တကွသာလျှင်၊ ဥဋ္ဌဟိတွာ - ထပြီး၍၊ ထောကံ- အနည်းငယ်၊ ဂန္တွာန-သွားပြီး၍၊ ပုန—ဖန်၊ ကေနစိ- တစုံတခုသော၊ သရီရ ကိစ္စလေသေန-ကျင်ကြီးကျင်ငယ်စသော အနည်းငယ်သော ကိုယ်ကိစ္စကြောင့်၊ (ကိုယ်ကိစ္စကို အကြောင်းပြသဖြင့်၊) [ဥစ္စာရပဿာဝါဒိသရီရကိစ္စလေသေ

ဉာတိ သာလောဟိတာ။ ။အယံ အဇ္ဈတ္တိကောတိ – "ဤသူသည် အတွင်းလူ" ဟူ၍၊ ဇာနန္တိ – သိလည်း သိတတ်ကုန်၏၊ (ကတ္တုသာဓန) ဉာယန္တိစ – သိလည်း သိအပ်ကုန်၏၊ (ကမ္မသာဓန) ဣတိ, ဉာတီ – ဉာတိတို့မည်၏၊ [ဉာဓာတ် တိပစ္စည်း ပုလ္လိန်၊ ]ခလောဟိတေန+သမ္ဗန္ဓာ သာလောဟိတာ-သွေးအားဖြင့် စပ်သူတို့(သွေးသား စပ်သူတို့)၊ [သံ + လောဟိတ၊ သံ ဥပသာရသည် သမ္ဗန္ဓ (သင်္ဂတ) အနက်ဟော၊ နိဂ္ဂဟိတ်ချေ, ဒီဃပြု။] အဘဘက်ဆွေမျိုးကို ဉာတိ, အမိဘက်ဆွေးမျိုးကို သာလော ဟိတ, ဟု ခွဲ၊ တနည်း – မိဘ ၂ ဘက်ဆွေမျိုးကို ဉာတိ , ယောက္ခမဘက် ဆွေမျိုးကို သာလောဟိတဟု ခွဲ၊–(ဋီကာ)။

မိတ္တာ မစ္စာ။ ။မိဇ္ဇန္တိ သိနိဟန္တိ – ချစ်တတ်ကုန်၏၊ ဣတိ မိတ္တာ၊ [မိဒ—သိနေ ဟေ + တ။ ] မိနန္တိ သဗ္ဗဂုယှေသု အန္တော ပက္ခိပန္တိ – အလုံးစုံ လျှို့ဝှက်အပ်သော တိုင်ပင်ဘွယ်တို့၌ အတွင်းသွင်းတတ်ကုန်၏၊ ဣတိ ဝါ မိတ္တာ၊ [မိ—ပက္ခေပေ+ တ။] ဋီကာ၌ " မိတ္တာယန္တိတိ" ဟု တွေ့ရ၏၊ "မိဒယန္တိ " ဟု စုရာဒိဂိုဏ်းဖြင့် ရှိသင့်မည် ထင်သည်၊ ထို မိဒယန္တိလည်း " မိဇ္ဇတိ " နှင့် အနက်တူပင်၊ အမစ္စကား – သဟနှင့် အနက်တူသော "အမာ" နိပါတ်နောင် ဘဝတိအနက်၌ "တျက်" ပစ္စည်းဖြင့် ပြီးသော တဒ္ဓိတ်ပုဒ်တည်း၊ က်အနုဗန်ကိုချေ၊ တျကို စပြု, ဒွေဘော်လာ၊ "သဗ္ဗကိစ္စေသု-တို့၌၊ အမာ—အတူတကွ၊ ဘဝန္တိ (ထောမနိမိ၌ "ဝသတိ") ဣတိ အမစ္စာ။

န၊.... လေသဿဒ္ဒါ အနည်းငယ် အနက်ဟော၊ ] နိဝတ္တိတွာ- ပြန်နစ်၍၊ ဘဂဝန္တံ-သို့၊ ဥပသင်္ကမ္မ-၍၊ ပဗ္ဗဇ္ဇံ- ကို၊ ယာစိ- ပြီ၊ တေန - ကြောင့်၊ အထခေါ သုဒ္ဒိန္နော၊ပေ၊ဘဂဝါတိ - ဟူ၍၊ ( သံဂီတိကာရေဟိ ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ပန - ဆက်၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ ရာဟုလ ကုမာရဿ - ၏၊ ပဗ္ဗဇိတတော- ရှင်ပြုရာ အခါမှ၊ ပဘုတိ-စ၍၊ မာတာပိတူဟိ-တို့သည်၊ အနနုညာတံ-ခွင့်မပြု အပ်သော၊ ပုတ္တံ-ကို၊ နပဗ္ဗာဇေတိ-ရှင်ဖြစ်စေတော်မမူ၊ ဝါ-ရှင်ပြုပေးတော် မမူ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (မိဘတို့ ခွင့်မပြုအပ်သော သားကို ရှင်ပြုပေးတော်မမူ သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) နံ-ထိုသုဒ္ဒိန်ကို၊ အနုညာတောသိ၊ပေ၊ပဗ္ဗဇ္ဇာယာတိ- ဟူ၍၊ ပုစ္ဆိ - မေးတော်မူပြီ။

ဣတော-ဤအနုညာတောသိ အစရှိသော ဝါကျမှ၊ ပရံ-နောက်၌၊ ပါဠိယာ နုသာရေနေဝ- ပါဠိသို့ အစဉ်လျော်သဖြင့်သာလျှင်၊ (ပါဠိလျော်က်အားဖြင့် သာလျှင်၊) ဂတွာ - ညက်သွား သွား၍၊ တံ ကရဏီယံ တီရေတွာတိ ဧတ္ထ-၌၊ ဧဝံ-သို့၊ အတ္ထော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊(ကိံ)၊ ခုရနိက္ခေပနေဝ-တာဝန်ကို လျော့ချခြင်းဖြင့်သာလျှင်၊ တံကရဏီယံ - ထို ပြုဘွယ် ကိစ္စကို၊ နိဋ္ဌာပေတွာ- ပြီးဆုံးစေပြီး၍၊ [ ဘဏ္ဍာပဋ္ဌယောဇနာဒီသု ခုရနိက္ခေပေန၊ တေနာဟ - နဟိတိ အာဒိ၊] ဣတိ-ဤအနက်ကို၊ (ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ) ဟိ - မှန်၊ ( တနည်း ) ဟိ (ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာယ-၌၊ တိဗ္ဗစ္ဆန္ဒဿ· ထက်သန်သော ဆန္ဒရှိသူ၏၊ ဘဏ္ဍာပဋ္ဌယောဇနဥဒ္ဓါရသာရဏာဒီသုဝါ-စေခြင်းအစရှိသည်တို့၌ငှင်း၊နက္ခတ္တ ကိစ္စာယံဝါ- ခြင်း၌ငှင်း၊ စိတ္တံ-သည်၊ န နမတိ-မညွတ်တော့၊(တသ္မာ-ကြောင့်၊ ခုရနိက္ခေပနေဝ-လျှင်၊ တံ ကရဏီယံ-ကို၊ နိဋ္ဌာပေတွာ-၍ ဣတိ အတ္ထော- ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊)

ပန-ကား၊အမ္မတာတာတိ ဧတ္ထ-၌၊အမ္မာတိ-အမ္မဟူသောပါဠိဖြင့်၊မာတရံ- ကို၊ အာလပတိ- ခေါ်၏၊ တာတာတိ- တာတဟူသော ပါဠိဖြင့်၊ ပိတရံ- ကို၊ (အာလပတိ-၏၊)တုံ့ခေါ်သီတိ(ပဒဿ)-တုံ့ခေါ်သိဟူသောပုဒ်၏၊ တုံ့ခေါ်အသိ (တိ ပဒစ္ဆေဒေါ-တုံ့ခေါ်အသိဟု ပုဒ်ဖြတ်ခြင်းကို၊ ကာတဗ္ဗော-၏၊ ) ကေပုတ္တ ကောတိ-ကား၊ ကောဝ-တယောက်ထည်းသာလျှင် ဖြစ်သော၊ ပုတ္တကော- သနားစောင့်ရှောက်အပ်သော သားသည်၊ (အသိ- ၏၊) တေ- ၏၊ ဝါ-မှာ၊ အညော - အခြားသော၊ ဇေဋ္ဌော ဝါ - အကိုကြီးသည်ငှင်း၊ ကနိဋ္ဌော ဝါ- ညီငယ်သည်ငှင်း၊ နတ္ထိ - မရှိ၊ စ - ဆက်၊ ဧတ္ထ- ဤ ကေပုတ္တကောဟူသော ပါဠိ၌၊ ကေပုတ္တောတိ – ဟူ၍၊ ဝတ္တဗ္ဗေ - ဆိုထိုက်လျက်၊ အနုကမ္ပာဝသေန- သနားခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ကေပုတ္တကောတိ - ဟူ၍၊ (မာတာပိတူဟိ) ဝုတ္တံ- ပြီ၊ [“အနုကမ္ပိတော+ကေပုတ္တော ကေပုတ္တကော” ဟု ပြု။]

ပိယောတိ - ကား၊ ပီတိဇနနကော - နှစ်သက်ခြင်းကို ဖြစ်စေတတ်သော၊ (ကေပုတ္တကော၌စပ်၊) မနာပေါတိ- ကား၊ မနဝဍ္ဎနကော- စိတ်ကို တိုးပွား စေတတ်သော၊ (စိတ်ကြီးဝင်လေ့သော၊ ) သုခေဓိတောတိ-ကား၊ သုခေန- ချမ်းသာသဖြင့်၊ ဧဓိတော- ကြီးပွားစေအပ်သော၊သုခသံဝဍ္ဎိတော-ချမ်းသာ သဖြင့် ကြီးပွားစေအပ်သော၊ ဉာတိအတ္ထော- နက်၊ သုခပရိဟတောတိ-ကား၊ သုခေန–သဖြင့်၊ ပရိဟတော – ရွက်ဆောင်အပ်သော၊ ဇာတကာလတော– မွေးဖွားရာအခါမှ၊ ပဘုတိ – စ၍၊ ခတီဟိ – ကလေးထိန်းတို့သည်၊ အင်္ကတော- ရင်ခွင် တခွင်မှ၊ အင်္ကံ- ရင်ခွင် တခွင်သို့၊ ဟရိတွာ - ဆောင်၍၊ ခာရိယ မာနော - ချီပွေ့ဆောင်ရွက်အပ်သည်၊ (ဟုတွာ - ဧင်း၊) အဿကရထကာ ဒီဟိ-မြင်းရုပ် ရထားကလေး အစရှိကုန်သော၊ ဗာလကီဠနကေဟိ- ကလေး ကစားဘွယ်တို့ဖြင့်၊ ကီဠာပီယမာနော-ကစားစေအပ်သည်၊ (ဟုတွာ-ဧင်း၊)

**ပိယော။** ။ပီ–တပ္ပနေ (နှစ်သက်ခြင်း ချစ်ခြင်း) ကပစ္စည်း၊ (က်အနုဗန်ချေ)၊ အပစ္စည်းသော်လည်းကြံ၊ ဤကို ဇူယပြု၊ “ပိယာယိတဗ္ဗော-ချစ်ခြင်းဖြင့် ရောက်အပ်၏၊ ဣတိပိယော”ဟု ဋီကာဝိဂ္ဂိုဟ်ပြု၏၊“ပီယတေ—ချစ်အပ်၏၊ ဣတိ ပိယော”ဟု ခာတွတ္ထ သင်္ဂဟပြုသည်၊ “ ပီတိဇနနကော ” ကား သဘာဝတ္ထအဖွင့်၊“ချစ်အပ်သူသည် မိမိကို ချစ်သောမိဘ၏ ပီတိကိုဖြစ်စေတတ်သော သဘောရှိသည် ”ဟူလို။

**မနာပေါ ။** ။ မန+အာပ၊ အာပ၌ အပ ခာတ်, ကာရိတ်ကြေ၊ အပစ္စည်း၊ “မနံ- စိတ်ကို + အပယတိ – တိုးပွားစေတတ်၏၊ ဣတိ မနာပေါ” ဟု ပြုစေလို၍ “မနဝဍ္ဎ နကော” ဟု ဖွင့်သည်၊ “ မိဘ၏စိတ်ကို တိုးပွားစေ ” ဟူသည် စိတ်ကြီးဝင်စေခြင်း တည်း၊ မိဘတို့သည် ရုပ်အဆင်းနှင့် အရည်အချင်းပြည့်ဝသော သားသမီးတို့ကိုရလျှင် စိတ်ကြီးဝင်တတ်ကြ၏၊ “မနေန—စိတ်သည်+အပီယတေ-ရောက်အပ်၏၊ ဣတိ မနာ ပေါ”ဟုလည်း အခြားနေရာ၌ ပြုရ၏၊“မြတ်နိုးအပ်”ကား သင်္ကေတအနက်တည်း။

**သုခေဓိတော။** ။သုခ+ဧဓိတော၊ “ဧဓေတု လာဘဝုဍ္ဎိသု”—ခာတွတ္ထသင်္ဂဟ၊ ဤနေရာ၌ ဝုဍ္ဎိအနက်ဟော၊ ထို့ကြောင့် “သုခသံဝဍ္ဎိတော”ဟု ဖွင့်သည်၊ ဧဓိယတေ- ကြီးပွားစေအပ်၏၊ ဣတိ ဧဓိတော”ဟု ပြု၊ ယောဇနာ၌“ဧဓေ–ဝုဍ္ဎိယံ”ဟု ဆို၍“သုခေ ဋ္ဌိတော”ဟု မှုကွဲပြ၏။ [တချဏာဒါရကကာလေ တဲ့တာပရဠ သာဒုရသမနုညဘောဇ နာဒိအာဟာရ သမ္ပတ္တိယာ သုခေဓိတော။]

**သုခပရိဟတော ။** ။ ပရိဟရိယတေ – ဆောင်ရွက်အပ်၏၊ ဣတိ ပရိဟတော၊ သုခေန+ပရိဟတော သုခပရိဟတော၊ [ “ကီဠမာနော” ဟု ကတ္တုရုပ်တွေ့ရ၏၊ ပရိ ဟတောဟူသော ကမ္မရုပ်၏ ဆောင်ရွက်ပုံသရုပ်ပြဖြစ်၍“ကီဠာပီယမာနော”ဟု ရှိသင့် ၏၊ ထိုသို့ရှိမှ“ခာတီဟိ”ဟူသော ကတ္တားနှင့်လည်းလျော်မည်၊“ခာရေတိ-ဆောင်ရွက် တတ်၏၊ ဣတိ ခာတိ” ဟု ပြု၊ အဿက၌ ကပစ္စည်းသည် ဥပမာအနက်ဟော၊ အဿာ ဝိယာတိ အဿကာ၊ ရထကာ၌ကား ခုဒ္ဒက အနက်ဟော၊ ခုဒ္ဒကာ+ရထာ ရထကာ။ ]

သာဒုရသဘောဇနံ-သာယာအပ်သော အရသာရှိသောဘောဇဉ်ကို၊ ဘောဇိယမာနော-စားစေအပ်သည်၊ ဝါ-ကျွေးအပ်သည်၊ (ဟုတ္ဘာ-ၵင်း၊) သုခေန-သဖြင့်၊ ပရိဟတော-အပ်သော၊ (ကေပုတ္တကော၅ စပ်၊)

န တွံ၊ပေ၊ဇာနာသိတိ-ကား၊ တာတသုဒိန္န - ချစ်သားသုဒိန်၊ တွံ- သည်၊ ဒုက္ခဿ-၏၊ ကိဉ္စိ - ဗိုးဇဉ်းအနည်းငယ်ကိုမျှ၊ အပ္ပမတ္တကံ-နည်းသော အတိုင်းအရှည်ရှိသော၊ ကလဘာဂံပိ-တစိတ်သောအဘို့ကိုလည်း၊ [ကိဉ္စိကိုဖွင့်သည်၊ ကိဉ္စိသဒ္ဒါ အပ္ပတ္ထဝါစကနိပါတ်၊] န ဇာနာသိ-မသိရ၊[ယခုတိုင်အောင် မသိရသေးသောကြောင့် ပစ္စုပ္ပန္နဝိဘတ် ဝတ္တမာန် သိ ဝိဘတ်ဖြင့် ထားသည်၊ ]အထဝါ - ထို့ပြင် တနည်းကား၊ ကိဉ္စိ - တစုံတခုသော၊ ဒုက္ခေန - ဒုက္ခဖြင့်၊ (ဝိသယံ - အာရုံကို၊) နာနုဘောသိ - မခံစားရ၊ ဣတိအတ္ထော - နက်၊ ကရဏတ္ထေ - ကရိုဏ်းအနက်၌၊ သာမိဝစနံ - သာမိဝိဘတ်တည်း၊ စ - သည်သာမကသေး၊ အနုဘဝနတ္ထေ-အနုဘဝနအနက်၌၊ ဇာနနာ-ဇာနနကြိယာသည်၊ (ဟောတိ - ၏၊) အထဝါ-ကား၊ ကိဉ္စိ-သော၊ ဒုက္ခံ- ကို၊ နဿရတိ - အမှတ်မရ၊ ဣတိအတ္ထော-နက်၊ ဥပယောဂတ္ထေ- ဒုတိယာဝိဘတ်၏အနက်၌၊ သာမိဝစနံ-တည်း၊ စ-သည်သာမကသေး၊ သရဏတ္ထေ-သရဏအနက်၌၊ ဇာနနာ-ဇာနနကြိယာသည်၊ (ဟောတိ၊) ဝိကပ္ပဒွယေပိ-ဒုတိယ တတိယဝိကပ်နှစ်ပါးအပေါင်း၌လည်း၊ ပုရိမပဒဿ-ကိဉ္စိဟူသော ရှေ့ပုဒ်၏၊ ဥတ္တရပဒေန-ဒုက္ခဿ

အထဝါ, အနုဘဝနတ္ထေ ဇာနနာ ။ ။ ဤနည်း၌ "ကိဉ္စိဒုက္ခဿ—တစုံတခုသောဒုက္ခဖြင့်၊ (ဝိသယံ—အာရုံကို၊) န ဇာနာသိ — မခံစားရ"ဟု ပါဠိတော်မှာပေး။ [ ယဒါ ဇာနာတိသဒ္ဒေါ ဗောဓနတ္ထော နဟောတိ — ဇာနာတိကြိယာသည် သိခြင်းအနက်ကို မဟော၊ တဒါ တဿ ပယောဂေ— ထိုဇာနာတိသဒ္ဒါ၏ ယှဉ်ရာ၌၊ သပ္ပိနော ဇာနာတိ , မဓုနော ဇာနာတီတိ အာဒီသုဝိယ — ထောပတ်ဖြင့် အရသာကိုခံစား၏, ပျားရည်ဖြင့် အရသာကိုခံစား၏,စသည်တို့၌ကဲ့သို့၊ ကရဏတ္ထေ သာမိဝစနံ သဒ္ဒသတ္ထဝိဒူ ဣစ္ဆန္တီတိ အာဟ— ကိဉ္စိဒုက္ခေန နာနုဘောသီတိ၊ပေ၊ဝိသယံ နာနုဘောသီတိ ဧဝ မတ္ထော ဝေဒိတဗ္ဗော။]

အထဝါ၊ပေ၊သရဏတ္ထေ ဇာနနာ။ ။"ကိဉ္စိဒုက္ခဿ=တစုံတခုသောဒုက္ခကို၊ နဇာနာသိ—အမှတ်မရ"ဟု ပါဠိတော်မှာပေး၊"ခံစားရသောဒုက္ခက မရှိသောကြောင့် ပင်ဘာဒုက္ခကိုမျှ မမှတ်မိ" ဟူလို။ [ယဒါပန ဇာနာတိသဒ္ဒေါ သရဏတ္ထော ဟောတိ၊ တဒါ သရဏတ္ထာနံ ဓာတုသဒ္ဒါနံ ပယောဂေ "မာတုသရတိ ( အမိကို အမှတ်ရ၏), ပိတု သရတိ, ဘာတု ဇာနာတိ (အမှတ်ရ၏)"ဣတိ အာဒီသုဝိယ ဥပယောဂတ္ထေ သာမိဝစနံ သဒ္ဒသတ္ထဝိဒူ ဣစ္ဆန္တီတိအာဟ—အထဝါ ကိဉ္စိဒုက္ခံ နဿရတီတိ အတ္ထောတိ။]

ဟူသော နောက်ပုဒ်နှင့်၊ သမာနဝိဘတ္တိလောပေါ - တူသော သာမိဝိဘတ်၏ ကြေခြင်းကို၊ ဒွန္ဒဗြော-၏၊ တံသဗ္ဗံ-ထိုအလုံးစုံသောစကားရပ်ကို၊ သဒ္ဒသတ္ထာနုသာရေန-သဒ္ဒါကျမ်းကို အစဉ်လိုက်သဖြင့်၊ ဉာတဗ္ဗံ-သိထိုက်၏။

မရဏောနပိ မယံ တေ အကာမကာ ဝိနာ ဘဝိဿာမာတိ - ကား၊ တဝ- သင်၏၊ အမ္မေသု - တို့သည်၊ ဇီဝမာနေသု - အသက်ရှင်နေကုန်လသော်၊ ဝါ- ကုန်စဉ်၊ မရဏံ-သေခြင်းသည်၊ သစေပိ ဘဝေယျ- အကယ်၍မူလည်းဖြစ်အံ့၊ (ဝေံသတိ-သော်၊ )တေ-၏၊ တေန မရဏေနပိ- ကြောင့်လည်း၊ မယံ-တို့သည် အကာမကာ အနိစ္ဆကာ - ခွဲခွါခြင်းငှါ အလိုမရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတ္ဝာ – ၍၊ ) အတ္တနော- ၏၊ နရုစိယာ- အလိုမဟုတ်ဘဲ၊ ဝိနာ- ခွဲခွါ၍၊ ဘဝိဿာမ- ဖြစ်ရကုန်လိမ့်အံ့၊ တယာ– သင်နှင့်၊ ဝိယောဂံ– ကွေကွင်းခြင်းသို့၊ ပါပုဏိဿာမ-

**ဝိကပ္ပဒွယေဝိ ။** ။ "ဝိကပ် ၂ ခု" ဟူသည် အထဝါတက်သော အနုဘဝနတ္ထုသရဏတ္ထကိုပြသော ဒုတိယ တတိယဝိကပ်တည်း၊ " ကိဋ္ဌိဟူသော ရှေ့ပုဒ်၏ ပိဘတ်ကို ဒုက္ခသဟူသော နောက်ပုဒ်နှင့်တူအောင် ဆဋ္ဌီကေဝုစ် (သ) ချေပါ– ဟူလို။ [ကိဋ္ဌိသည် နိပါတ်ပုဒ်ဖြစ်သောကြောင့် ထိုပုဒ်နောင် အလိုရှိရာဝိဘတ်များ ချေနိုင်သည်။]

**သဒ္ဒသတ္ထာ နုသာရေန။** ။"ဓာတူနံ အနေကတ္ထတ္တာ"ဟူသော ပရိဘာသာနှင့်အညီ ဓာတ်တို့၏အနက်များစွာကို ဟောနိုင်သောကြောင့် ဇာနာသ်၌ ဉာဓာတ်သည် အနုဘဝနအနက်, သရဏအနက်ကို ဟောနိုင်၏၊ ထိုသို့ ဟောနိုင်ပုံကိုကား သဒ္ဒါကျမ်းသို့ အစဉ်လိုက်ဘွယ်မလို၊အနုဘဝနအနက်၏ယှဉ်ရာဝယ် ကရိုဏ်းအနက်၌ ဆဋ္ဌီသက်ရခြင်း, သရဏတ္ထယှဉ်ရာဝယ် ကံအနက်၌ ဆဋ္ဌီသက်ရခြင်းကိုသာ သဒ္ဒါကျမ်းသို့ လိုက်ဘို့လိုသည်၊ ထိုတွင် "သရဏတ္ထကမ္မနိ-သရဏာတ်နက်၏ယှဉ်ရာ ကံအနက်၌ ဆဋ္ဌီသက်" သုတ်ကိုသာ ကာတန္တ (ကာရက)၌ တွေ့ရ၏၊ အခြားတသုတ်ကို ရှာကြပါလေ။

**အကာမကာ။** ။"နတ္ထိ+ကာမော (အလို) ယေသံ အမှာကံတိ (တေမယံ) အကာမကာ" ဟု ပြုစေလို၍ "အနိစ္ဆကာ"ဟု ဖွင့်သည်၊ "ကာမ" အရ ဝတ္ထုကာမ, ကိလေသာကာမ ကာမနတ်, မေထုန်အနက်များကိုမယူဘဲ "ဣစ္ဆာ" အနက်ကိုယူပါ-ဟူလို၊ အနိစ္ဆကာ၌လည်း"နတ္ထိ+ဣစ္ဆာ ယေသံတိ အနိစ္ဆကာ"ဟု ပြု, သမာသန္တကပစ္စည်းသက်၊ ထို အနိစ္ဆကာကိုပင် "န အတ္တနော ရုစိယာ—မိမိ၏သဘောကျမဟုတ်ဘဲ၊ ဝါ—ကျေနပ်မှုမရှိဘဲ"ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထ (ဘာဝတ္ထ) ဖွင့်သည်။

**ဝိနာ ဘဝိဿာမ။** ။သေကွဲ ကွဲရခြင်းကို "ဝိနာဘာဝ"ဟု ခေါ်၏၊ [ပိယေဟိ မနာပေဟိ နာနာဘာဝေါ ဝိနာဘာဝေါ၊ – ဒသမ္ဗသုတ်, အင်္ဂုတ္တိုရ်။] ဝိနာနိပါတ်သည် ဝဇ္ဇန (ကင်းခြင်း, ခွဲခွါခြင်း) အနက်ကိုဟော၏၊ "ဝဇ္ဇနေတု ဝိနာ နာနာ, အန္တရေန ရိတေ ပုထု၊—အဘိဓာန် (၁၁၃၇) ၌ ဝဇ္ဇနအနက်မှတပါး ဝိယောဂအနက်ဟု သီးခြားမရှိ၊ ထို့ကြောင့် ဝိယောဂံသည် ဝိနာ၏ ကွေကွင်း ခွဲခွါခြင်းအနက်ကိုဖွင့်သော

ရောက်ရကုန်လိမ့်အံ့၊ဣတိ အတ္တော-နက်၊ကိံပန မယံတန္တိ-ကား၊ ဧဝံသန္တေ-ဤသို့ဖြစ်လသော်၊ ဝါ - ဤသို့ဖြစ်ပါလျက်၊ ယေန ( ကာရဏေန ) - အကြင်အကြောင်းကြောင့်၊ မယံ- တို့သည်၊ တံ- သင့်ကို၊ ဇီဝန္တံ - အသက်ရှင်ဆဲကို၊ အနုဇာနိဿာမ-ခွင့်ပြုရ ကုန်လိမ့်အံ့၊တံကာရဏံ-ထိုခွင့်ပြုရခြင်း၏အကြောင်းသည်၊ ကိံပန , ကိံနာမ - အဘယ်မည်သည့် အကြောင်းတဲ့နည်း၊ အထဝါ-ကား၊ ကိံပန မယံ တန္တိ - ကား၊ ကေန ကာရဏေန – အဘယ်အကြောင်းကြောင့်၊ မယံ–တို့သည်၊ တံ – သင့်ကို၊ ဇီဝန္တံ – အသက်ရှင်ဆဲကို၊ အနုဇာနိဿာမ-ခွင့်ပြုနိုင်ကုန်အံ့နည်း၊ (နအနုဇာနာမ ဧဝ- ခွင့်မပြုနိုင်ကုန်သည်သာ၊) ဣတိဧဝံ-သို့၊ ဧတ္ထ- ကိံပန မယံ အစရှိသောဝါကျ၌၊ အတ္တော ဒဋ္ဌဗ္ဗော။

ပုဒ်ပင်တည်း၊ တယာ ဝိယောဂံ၌ တယာကား မယံတေ၌ တေ၏ ဝိနာစပ်နိုက် သဟာဒိယောဂအနက်လည်း ရနိုင်ကြောင်းကို ပြသောပုဒ်တည်း၊ ရှေ့၌ “တေ + မရဏေန”ဟု မရဏေန၏ သမ္ဗန်အဖြစ်ဖြင့်လည်း ဖွင့်ခဲ့ပြီ။ [မယံ တေတိဧတ္ထ တေတိပဒဿ သဟတ္ထေ ကရဏဝသေနပိ (ဝိဖြင့် သမ္ဗန်ကိုပေါင်း ) အတ္ထံ ဒဿေတုံ တယာဝိယောဂံ ပါပုဏိဿာမာတိ အတ္တန္တရံ (အနက်တမျိုးကို) ဝုတ္တံ၊–ဝိမတိ။] “ဝိယောဂံဝါ”ဟု တချို့စာ၌ ဝါပါသည်ကား မကောင်း၊ ရဋ္ဌပါလသုတ် အဋ္ဌကထာ၌လည်း (ဝါ) မပါ။

ဧဝံသန္တေ ။ ။ ရှေ့ဝါကျအနက်ကိုပင် “ဧဝံသန္တေ” ဟု ပြန်၍ လက္ခဏာပြုသည်၊ “ဤသို့ မတော်လို့များ သေကွဲ-ကွဲရလျှင်တောင်မှ မတတ်သာလှ၍ မကျေနပ်ဘဲ ခွဲလိုက်ရမည်ဖြစ်ပါလျက် အသက်ရှင်နေသော သင့်ကို ဘာ့ကြောင့် ရှင်ခွဲ–ခွဲနိုင်ပါ့မလဲ”ဟူလို။

နိုကာ။ ။နန္ မယံ သုဒိန္န သာမာဒီသု ကေနစိ ဥပါယေန (သာမဥပါယ်စသောတစုံတခုသော ဥပါယ်တမည်ဖြင့်) အပ္ပဋိသေဓနေန ( မတားနိုင်ခြင်းကြောင့်) အပ္ပဋိကာရေန ( ရောဂါဖြစ်သည်ကို မကုနိုင်ခြင်းကြောင့်) မရဏေနပိ တယာ အကာမကာ ဝိနာ ဘဝိဿာမ၊ ဧဝံ-တိ၊ [သာမာဒီသု၌ အာဒိဖြင့် ဘေဒ , ဒဏ္ဍ, ဒါန, ၃ ပါးကိုယူ၊တဘက်ရန်ကို တားနိုင်ခြင်း၏အကြောင်းနည်းလမ်းကို“ဥပါယ”ဟု ခေါ်ကြသည်၊ အကျယ်ကို အဘိဓာန် (၃၄၈) နိဿယသစ်မှာရှု။]

ကိံပန မယံ တံ။ ။ကိံကို ကိံနာမဖွင့်၍ တံကို “တံကာရဏံ”ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုသို့ဖွင့်သဖြင့် တံကို နိယမဝါစက ဟု ၎င်း, ထိုတံ၏ အနိယမကို “ ယေန မယံ တံ ဇီဝန္တံ အနုဇာနိဿာမ” ဟု ထည့်ပါ ဟု ၎င်း သိစေသည်၊ ပါဠိတော်၌ ဤအတိုင်း အနိယမဝါကျထည့်၍ အနက် ပေးပါ။

အထဝါ ။ ။ ရှေ့နည်းဝယ် မယံ၏ နောက်၌ ရှိသော တံကို ရှေ့သို့ လှည့်၍ စပ်ရသဖြင့် အသိခက်သောကြောင့်“အထဝါ”ဟု တနည်း ပြသည်၊ ဤနည်း၌ကား ကိံကို ကာရဏအနက်၌ ပဌမာဝိဘတ် ကြေသောပုဒ် ဟု ၎င်း , တံကို တုမ္မဝါစက ဟု ၎င်း, ရှေ့နည်း၌ ကဲ့သို့ ၂ ဝါကျမခွဲဘဲ တဝါကျတည်း ဟု ၎င်း သိစေသည်။ [ကိံပနာတိ ဧတ္ထ ကိံတိ ကာရဏတ္ထေ ပစ္စတ္တဝစနန္တိ ဒဿေန္တော အာဟ-ကေနပန ကာရဏေနာတိ။]

တဗ္ဗေဝါတိ - ကား၊ ယတ္ထ - အကြင်အရပ်၌၊ ဋ္ဌိတံ – တည်သော၊ နံ– ထိုသုဒိန်ကို၊မာတာပိတရော-တို့သည်၊ နာနုဇာနိံသု-ခွင့်မပြုကြကုန်၊ တဗ္ဗေဝ ဌာနေ-ထိုခွင့်မပြုရာ အရပ်၌ပင်၊ (နိပဇ္ဇိ၌စပ်၊) အနန္တရဟိတာယာတိ-ကား၊ ကေနစိ- တစုံတခုသော၊ အတ္ထရဏေန - အခင်းဖြင့်၊ အနတ္ထတာယ- ခင်းအပ်သော အခင်းမရှိသော၊ ( ဘူမိယာ နိပဇ္ဇိ – ၌စပ်၊ ) ပရိစာရေဟီတိ - ကာ ၊ ဂန္ဓဗ္ဗ နဋ နာဋကာဒီနိ-သီချင်းဆိုသူ, ပွဲကသူ, ၎ျမ်းသွားအစရှိသူတို့ကို၊ ပစ္စုပဋ္ဌာပေတွာ - ရှေးရှုတည်စေ၍၊ ဝါ - သီဆိုကပြစေ၍၊ တတ္ထ - ထိုအာရုံတို့၌၊ သဟာယကေဟိ-တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ယထာသုခံ-ချမ်းသာသည်အားလျော်စွာ၊ ဣန္ဒြိယာနိ–စက္ခုစသော ဣန္ဒြေတို့ကို၊ စာရေဟိ - လှည့်လည်စေပါလော၊ သဥ္စာရေဟိ - ပတ်ဝန်းကျင် လှည့်လည်စေပါလော၊ ဣတောစိတောစ– ဤအာရုံ ဤအာရုံသို့လည်း၊ ဥပနေဟိ-ကပ်၍ဆောင်ပါလော၊ ဣတိ-ဤအနက်သည်၊ ဝါ – ကို၊ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ အထဝါ - ထို့ပြင် တနည်းကား၊ ပရိစာရေ

**အနန္တရဟိတာယ**॥ ॥ [အန္တရ–ဓာ, တ၊ ဓ ကို ဟပြု, အာကို ဣ ပြု၊ "အန္တရဟိတ"ဟု ဖြစ်၏။] အန္တရေ–လူနှင့် မြေတို့၏ အကြား၌+ ဓီယတေ– ထားအပ်၏၊ ဣတိ အန္တရဟိတံ ( အတ္ထရဏံ )၊ နတ္ထိ + အန္တရဟိတံ ယဿာတိ အနန္တရဟိတာ၊ "အကြား၌ ထားအပ်သော အခင်းမရှိ" သဒ္ဒတ္ထ၊"ကေနစိ၊ပေ၊အနတ္ထတာယ "ကား အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း၊ အတ္ထရီယတေ–ခင်းအပ်၏၊ဣတိ အတ္ထဘာ၊အာပုဗ္ဗ ထရ(အစ္ဆာဒနေ) ဓာတ်, တပစ္စည်းဖြင့်"အတ္ထတ"ဟု ဖြစ်၏၊ န+ အတ္ထတာ အနတ္ထတာ။

**ဂန္ဓဗ္ဗနဋ နာဋကာဒီနိ** ॥ ॥ ဂန္ဓဗ္ဗာနာမ ဂါယနကာ (သီဆိုတတ်သူတို့)၊ နဋာ နာမ ရင်္ဂနဋာ ( ပွဲသဘင်၌ ကသူတို့ )၊ နာဋကာ လင်္ဃနကာဒယော ( ၎ျမ်းသမား, ဘားကစားသူ စသည်တို့)။

**ပရိစာရေဟိ**॥ ॥ပရိပုဗ္ဗ, စရဓာတ်, ဏေပစ္စည်း၊ ပရိသည် ပရိတော (ပတ်ဝန်းကျင်) အနက်ဟော, စာရသည် လှည့်လည်စေခြင်း အနက်ဟောတည်း၊ ဣန္ဒြိယာနိဟု ကံကိုထည့်ပါဟု သိစေလို၍ "ဣန္ဒြိယာနိ စာရေဟိ" စသည်မိန့်၊ သဥ္စာရေဟိ၌ "သမန္တတော + စာရေဟိ"ဟု ဥဇုကတ္ထဖွင့်သည်၊ စက္ခု ဣန္ဒြေကို အကဆီသို့ ပို့ဆောင်လိုက်, သောတဣန္ဒြေကို အဆိုဆီသို့ ပို့ဆောင်လိုက် , ဇိဝှါ ဣန္ဒြေကို အစားအသောက်ဆီသို့ ပို့ဆောင်လိုက်၊ ဤသို့စသည်ဖြင့် ဣန္ဒြေတို့ကို ဟိုဟိုဒီဒီသို့ လှည့်လည်ပါစေ – ဟူလို၊ [ပရိတော တတ္ထတတ္ထ ယထာသကံ ဝိသယေသု (မိမိ မိမိ၏ ဥစ္စာဖြစ်သော အာရုံတို့၌) စာရေဟီတိ အတ္ထောတိ အာဟ–ဣန္ဒြိယာနိ စာရေဟီတိ အာဒိ–ဋီကာ။]

**အထဝါ**॥ ॥ဤနည်း၌ ပရိစာရသဒ္ဒါသည် ပြုစုလုပ်ကျွေးစေခြင်း (အပြုစုခံခြင်း) အနက်ကို ဟော၏၊ ဥပမာ–မယားကို"ပါဒပရိစာရိကာ–ခြေရင်း အလုပ် အကျွေး" ဟူရာ၌ရင်း, "အတ္တကာမ ပါရိစရိယာ–မိမိကို ကာမဖြင့် ပြုစုလုပ်ကျွေးခြင်း" ဟူရာ၌

ဟိတိ-ကား၊ ဂန္ဓမ္ဗနင္ဇနာဇ္ဝကာဒိနိ-တို့ကို၊ ပစ္စုပဋ္ဌာပေတွာ-၍၊ ဝါ-၍၊ တတ္ထ-တို့၌၊ သဟာယကေဟိ-တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ (ပရိစာရေဟိ-ပြုစုလုပ်ကျွေးစေပါလော၊) လင္ဃ-မြူးတူးပါလော၊ ဥပလင္ဃ - ကပ်၍ မြူးတူးပါလော၊ ရမ-ပျော်ပါးပါလော၊ ကီဠသု-ကစားပါလော၊ ဣတိပိ-ဤအနက်သည်လည်း၊ ဝါ-ကိုလည်း၊ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊

ကာမေ ပရိဘုဉ္ဇန္တော-တိ-ကား၊ အတ္တနော-၏၊ ပုတ္တဒါရေဟိ-သားသမီးဇနီးတို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ- ကွ၊ ဘောဂေ - ခံစားအပ်သော ကာမဂုဏ်တို့ကို၊ ဘုဉ္ဇန္တော-ခံစားလျက်၊ ပုညာနိ ကရောန္တော-တိ - ကား၊ ဗုဒ္ဓဥ္စ - ကိုရင်း၊ ဓမ္မဥ္စ, သံဃဥ္စ, အာရဗ္ဘ-အကြောင်းပြု၍၊ ဒါနပ္ပဒါနာဒိနိ-နေ့စဉ်အလှူ,ဥပုသ်နေ့စသည်တို့၌

ရင်း,သုံးစွဲအပ်သော ပရိစရဏာမျိုးတည်း၊ ဤ၌ ကာရိတ် ပစ္စည်းပါခြင်းသာ ထူး၏၊ [ထိုသို့ အပြုအစုခံခြင်းသည် မြူးတူးပျော်ပါး ကစားခြင်းဖြစ်သောကြောင့် လင္ဃစသည် ဖြင့် ဥဒ္ဒကတ္တပြ၍ လင္ဃကို ဥပလင္ဃ ဟု ရင်း, ရမကို ကီဠသု ဟု ရင်း ဆင့်၍ ဖွင့်သည်၊]

ဋီကာ များ၊ ။ ပရိစာရေဟီတိဝါ သုခုပကရဏေဟိ (ချမ်းသာခြင်း၏ အဆောင်အဥုံးတို့ဖြင့်) အတ္တာနံ ပရိစာရေဟိ—ပြုစုလုပ်ကျွေးစေပါလော၊ အတ္တနော ပရိစရဏံ ကာရေဟိ—မိမိကို ပြုစုခြင်းကို ပြုစေပါလော၊ ဤသို့ ပရိစာရေဟိအတွက် သဒ္ဒတ္ထ ဖွင့်ပြီးလျှင်"တထာဘူတော စ(ထိုသို့ မိမိကိုယ်ကိုပြုစုစေသူ အပြုအစုခံသူသည်လည်း) ယသ္မာ လင္ဃန္တော ကီဠန္တော နာမ ဟောတိ၊ တသ္မာ လင္ဃာတိ အာဒိ ဝုတ္တံ" ဟု ရင္ဟပါလသုတ် ဋီကာ ဖွင့်သည်။ [သာရတ္ထ၌လည်း ထိုဋီကာအတိုင်း ပါ၍မှန် ရှိစေ။]

ဘောဂေ ဘုဉ္ဇန္တော။ ။ကာမေကို ဘောဂေ ဟု ဖွင့်၏၊ [ဘုဉ္ဇိတဗ္ဗာတော ပရိဘုဉ္ဇိတဗ္ဗတော ဝိသေသတော ပဉ္စကာမဂုဏာ ဘောဂါနာမာတိ အာဟ — ဘောဂေ ဘုဉ္ဇန္တောတိ-သုံးဆောင် ခံစားထိုက်သောကြောင့် အထူးအားဖြင့် ကာမဂုဏ် ငါးပါးတို့သည် ဘောဂမည်၏။ ] စီးပွား ဥစ္စာများလည်း ဘောဂအမည်ရကြ၏၊ သို့သော် ဤနေရာ၌ ဝိသေသဘောဂ (စည်းစိမ် အထူး) ဖြစ်သောကြောင့် အတိသယနည်းအားဖြင့် ကာမဂုဏ်ငါးပါးကိုသာ ဘောဂဟု ဆိုလိုသည်။

ဒါနပ္ပဒါနာဒိနိ။ ။ပသဒ္ဒါသည် ပကဋ္ဌ (အမြတ်) အနက်ကိုဟော၏၊ ထို့ကြောင့် နိစ္စဒါနံ ဒါနံနာမ—ဆွမ်းလောင်းမှု စသော နိစ္စဒါနသည် ဒါနသာမည်၏၊ ဥပေါသထဒိဝသာဒိသု ဒါတဗ္ဗံ အတိရေကဒါနံ ပဒါနံနာမ=ဥပုသ်နေ့စသော နေ့ထူးနေ့မြတ်တို့၌ ပေးအပ်ရသော အပိုအမိုဒါနသည် ပဒါနမည်၏၊ ပဝေဏီဝသေနဝါ ဒီယမာနံ ဒါနံ= မျိုးရိုးစဉ်လာ လှူနေကျ ဒါနသည် ဒါနမည်၏၊ အတ္တနာဝ ပဋ္ဌပေတွာ (ကိုယ်တိုင် စတည်၍) ဒီယမာနံ ပဒါနံနာမ၊—[ဤနည်း၌ ပသည် အာဒိကမ္မအနက်ကို ဟော၏။] ပဍုရဇနသာဓာရဏံဝါ နာတိဥဠာရံ ဒါနံနာမ= အများလှူနိုင်သော အလွန်မကောင်းလှသော အလှူသည် ဒါနမည်၏၊ အနညသာဓာရဏံ အတိဥဠာရံ ပဒါနံ နာမ" ဟု ဋီကာဖွင့်သည်၊ အာဒိသဒ္ဒေန သီလာဒိနိ သင်္ဂဏှာတိ။

အထူးပြုအပ်သော မြတ်သောအလှူအစရှိကုန်သော၊ သုဂတိမဂ္ဂသောဓကော နိ - သုဂတိလမ်းကို သုတ်သင်တတ်ကုန်သော၊ ကုသလကမ္မာနိ - ကုသိုလ်ကံတို့ကို၊ ကရောန္တော-ပြုလျက်၊(အဘိရမသု-၌စပ်၊)တုဏှီအဟောသိတိ-ကား၊ ကထာနုပ္ပဗန္ဓဝိစ္ဆေဒနတ္ထံ- စကားအဆက်ကို ဖြတ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ နိရာလာပ သလ္လာပေါ- စ၍ပြောခြင်း အတုံ့ပြန်၍ပြောခြင်းမရှိသည်၊ အဟောသိ-ပြီ။

အထ-၌၊ အသ-ထိုသုဒိန်၏၊ မာတာပိတရော-တို့သည်၊တိက္ခတ္တုံ-၃ ကြိမ်၊ ဝတွာ-၍၊ ပဋိဝစနမ္ပိ-စကားတုံ့ကိုမျှလည်း၊ အလဘမာနာ- မရကုန်သည်၊ (ဟုတွာ )၊ သဟာယကေ – တို့ကို၊ ပက္ကောသာပေတွာ - ခေါ်စေ၍၊ ဝေါ-အမောင်တို့၏၊သေသဟာယကော-ဤ သဟာယ်ချင်းသည်၊ပဗ္ဗဇိတုကာမော-ရှင်ရဟန်းပြုလို၏၊ နံ- ထို သဟာယ်ချင်းကို၊ နိဝါရေထ- တားပေးကြပါကုန်၊ ဣတိ—သို့၊ အာဟံသု – နှ်ပြီ၊ တေပိ- ထို သဟာယ်ချင်းတို့သည်လည်း၊ တံ- ထို သုဒိန်ကို၊ [အဝေါစုံ- ၌စပ်၊] ဝါ– သို့၊ ဥပသင်္ကမိတွာ-၍၊ တိက္ခတ္တုံ –ကြိမ်၊ အဝေါစုံ-နှ်ပြီ၊ တေသမ္ပိ-ထို သဟာယ်ချင်းတို့အားလည်း၊ တုဏှီ- ဆိတ်ဆိတ်၊ အဟောသိ-ပြီ၊ တေန-ကြောင့်၊ အထခေါသုဒိန္နဿ၊ပေ၊အဟောသိတိ-ဟူ၍၊ ( သံဂီတိကာရေဟိ ) ဝုတ္တံ – ပြီ။ [ သက္ကတ၌ " တုဿီ " ဟု ရှိသောကြောင့် "တုဏှီ"ဟု ဤကာရန္တရှိစေ။]

အထ– ၌၊ အသ– ထို သုဒိန်၏၊ သဟာယကာနံ- တို့၏၊ ဧတံ-ဤအတိုင်အပင်သည်၊ အဟောသိ၊ (ကိံ)၊ အယံ-ဤသုဒိန်သည်၊ ပဗ္ဗဇ္ဇံ–ကို၊ အလဘမာနော-သော်၊သစေမရိဿတိ-အံ့၊(ဧဝံသတိ၊)ကောစိ-တစုံတခုသော၊ဂုဏော-အကျိုးကျေးဇူးသည်၊န ဘဝိဿတိ-ဖြစ်လိမ့်မည်မဟုတ်၊ ပန-အန္တယကား၊ပဗ္ဗဇိတံ - ရှင်ရဟန်းပြုပြီးသော၊ နံ – ထိုသုဒိန်ကို၊ မာတာပိတရောပိ – တို့သည်လည်း၊ ကာလေနကာလံ – ရံဖန် ရံခါ၊ ပဿိဿန္တိ - မြင်ကြရကုန် လတ္တံ့၊ မယမ္ပိ-တို့သည်လည်း၊ ပဿိဿာမ-နှ်လတ္တံ့၊ စ-ဆက်၊ ဧသော ပဗ္ဗဇ္ဇာပိနာမ-ဤ ရှင်ရဟန်းအဖြစ် မည်သည်လည်း၊ ဘာရိယာ – ထမ်းဆောင်အပ်သော တာဝန်တမျိုးတည်း၊ ဝါ - ဝန်ဒလေး၏၊ ဒိဝသေဒိဝသေ - ၌၊ မတ္တိကာပတ္တံ-မြေခွက်ကို၊ ဂဟေတွာ -စွဲကိုင်၍၊ ပိဏ္ဍာယ – ငှါ၊ စရိတဗ္ဗံ - လှည့်လည်ရာ၏၊ ဝါ–လှည့်လည်ရ၏၊ ဧကသေယျံ - တယောက်ထည်းသာ အိပ်ရခြင်းရှိသော၊

**နိရာလာပ သလ္လာပေါ** ။ ။စ၍ ပြောခြင်းသည် အာလာပ၊ [ အာသဒ္ဒါသည် အာဒိကမ္မ အနက်ဟော၊ ] ပြန်၍ ပြောခြင်းသည် သလ္လာပ၊ [သံသဒ္ဒါသည် ပတိအနက်ဟော၊ ] နတ္ထိ+ (ဝစနပဋိဝစနသင်္ခါတော) အာလာပသလ္လာပေါ ဧတဿာတိ နိရာလာပသလ္လာပေါ၊ (ဋီကာ)။

ကောဘတ္တံ-တထပ်ထည်းသောနံနက်စာထမင်းရှိသော၊ မြဟ္မစရိယံ-မြတ်သော အကျင့်ကို၊ အတိဒုက္ကရံ - အလွန်ခဲယဉ်းစွာ ပြုအပ်၏၊ ဝါ - အလွန်ပြုနိုင်ခဲ၏၊ အယဥ္စ– ဤ သုဒိန်သည်လည်း၊ သုခုမာလော- သိမ်မွေ့ နုနယ်၏၊ နာဂရိက ဇာတိယော - မြို့သား၏အဖြစ်ဟူသော သဘောရှိ၏၊ [ နာဂရိကဉ္စ ဘာဝပ္ပ ဓာန ''နာဂရိကော + ဇာတိ ယဿ''ဟု ပြု၊ ဏိကမှ ကကို ယပြု။] သော–ထို သုဒိန်သည်၊ တံ – ထိုဗြဟ္မစရိယကို၊ စရိတုံ - ငှါ၊ အသက္ကောန္တော - သည်၊ (ဟုတ္វာ)၊ ပုန-ဖန် ဃရမေဝ-ဤအိမ်သို့သာ၊ အာဂမိဿတိ- ပြန်လာလတံ့၊ ဟန္ဒ-ယခုအဿ-ဤ သုဒိန်၏၊ မာတာပိတရော-တို့ကို၊ အနုဇာနာပေဿာမ- ခွင့်ပြုစေကြကုန်စို့၊ ဣတိ-ဤအတိုင်အပင်သည်၊(အဟောသိ-ပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့ တိုင်ပင်ပြီး၍၊)ခတ-ထိုသဟာယ်ချင်းတို့သည်၊တထာ-ထိုတိုင်ပင်သည့်အတိုင်း၊ အကံသု–န်ပြီ၊ မာတာပိတရောပိ–တို့သည်လည်း၊ နံ-ထိုသုဒိန်ကို၊ အနုဇာနိံ သု - န်ပြီ၊ တေန - ကြောင့်၊ အထခေါ၊ပေ၊ပဗ္ဗဇ္ဇာယာတိ - ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-ပြီ။

ဟဋ္ဌောတိ-ကား၊ တုဋ္ဌော နှစ်သက်သည်၊ ဥဒဂ္ဂေါတိ-ကား၊ ပီတိဝသေန- ပီတိ၏အစွမ်းဖြင့်၊ အဗ္ဘုန္နတ ကာယစိတ္တော(အဘိ+ဥန္နတ+ကာယစိတ္တော)- အလွန်တက်ကြွသောကိုယ်စိတ်ရှိသည်၊(ဟုတွာ ဝုဋ္ဌာသိ-ထပြီ။)[ဥဒ္ဓံ-အထက် ဉ်+အဂ္ဂံ - အဖျားရှိသော ကိုယ်စိတ်သည်၊ အဿ အတ္ထိတိ ဥဒဂ္ဂေါ။] ကတိ ပါဟန္တိ - ကား၊ ကတိပယာနိ - အနည်းငယ်ကုန်သော၊ ဒိဝသာနိ - ရက်တို့ ပတ်လုံး၊ ဗလံ ဂါဟေတွာတိ-ကား၊ သပ္ပါယဘောဇနာနိ- လျော်ကပ်သော

ကတိပါဟံ ။ ။ ကတိပိ + အဟံ၊ ကတိသဒ္ဒါသည် သူချည်းသက်သက် ဖြစ်လျှင် '' ဘယ်လောက်နည်း '' စသည်ဖြင့် သင်္ချာအပိုင်းအခြားကို မေးခြင်းအနက်၌ ဖြစ်၏၊ ကတိ+ပိ ဟု ပိနိပါတ်နှင့်တွဲသောအခါ''ကိဥ္စိပိ '' ကဲ့သို့ အနည်းငယ် အနက်ဟော ဟု ကြံသင့်၏၊ '' ၂ ရက် ၃ ရက် '' ဟု ပေးကြသည်ကား အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း၊ '' ကတိပိ+ အဟာနိ ကတိပါဟံ''ဟု ဒိဂုသမာသ်ပြု၊ ကတိပိလည်း သင်္ချာသဘောပင်တည်း၊ ကတိ ပယ၌ ကတိပိနောင် သွတ္တနည်း၌ အယပစ္စည်းသက်လျှင် '' ကတိပယ '' ဟု ဖြစ်နိုင်၏။ [ ထောမနိဓိ၌ကား– ''ကတိနောင်, အယစ်ပစ္စည်း''ပုက်''လာ၊ ဥက်ချေ''ဟု ဆိုလေ သည်။ ] ဤသို့ ကတိပိနှင့် ကတိပယ, အဟနှင့်ဒိဝသတို့ ပရိယာယ် ဖြစ်သောကြောင့် ''ကတိပယာနိ+ဒိဝသာနိ''ဟုဖွင့်သည်။ [ဒိဝသာနိကို လိင်္ဂဝိပလ္လာသကြံ။]

ဗလံ ဂါဟေတွာ ။ ။ '' ကာယဗလံ ဇနေတွာ'' ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်၏၊ အားကို လက်ဖြင့်ယူ၍ မဖြစ်နိုင်၊ အားရှိအောင် စားသောက်နေထိုင်ခြင်းကိုပင် အားကိုယူခြင်း ဟု ဆိုလိုသည်။ [ဗလဂ္ဂဟဏံနာမ ကာယဗလဿ-ကို၊ ဥပ္ပါဒနမေဝါတိ အာဟ-ကာယ ဗလံ ဇနေတွာတိ။ ] ဤဋီကာဖွင့်ကိုထောက်၍ '' ဂါဟေတွာ '' ဟု ကာရိတ်မပါစေရ၊ ရဋ္ဌပါလသုတ် အဋ္ဌကထာ၌လည်း ''ဂဟေတွာ''ဟုပင် ရှိ၏။

ဘောဇဉ်တို့ကို၊ ဘုဥ္စန္တော (စ) - စားလျက်ငင်း၊ ဥဿာဒန နှာယနာဒိဟိ- နှံ့သာမှုန့်တို့ဖြင့် ပွတ်တိုက်ခြင်း, ရေချိုးခြင်း အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ ကာယံ- ကိုယ်ကို၊ ပရိဟရန္တော စ - ရွက်ဆောင်လျက်ငင်း၊ ကာယဗလံ-ကိုယ်အားကို၊ ဇနေတွာ-ဖြစ်စေ၍၊ မာတာပိတရော-တို့ကို၊ ဝန္ဒိတွာ-၍၊ အဿုမုခံ-မျက်နှာ၌ မျက်ရည်ရှိသော၊ ဝါ – မျက်ရည်တယိုယို, ငိုရှဲနေသော၊ ဉာတိပရိဝဋ္ဋံ- ဆွေမျိုး အသိုင်းအဝိုင်းကို၊ ပဟာယ-၍၊ပေ၊ဘန္တေ-ရား၊ ဘဂဝါ-သည်၊ မံ- ကို၊ ပဗ္ဗာဇေတု-ရှင်ဖြစ်စေတော်မူပါ၊ ဝါ-ရှင်ပြုပေးတော်မူပါ၊ ဣတိ-ဤသို့ လျှော်ပြီ၊ဘဂဝါ-သည်၊ သမီပေ-၌၊ဌိတံ-သော၊ အညတရံ-မထင်မရှားတပါး သော၊ ပိဏ္ဍစာရိကံ - ဆွမ်းခံလှည့်လည်လေ့ရှိသော၊ ဝါ - ပိဏ္ဍပါတ်ဓုတင် ဆောင်သော၊ ဘိက္ခုံ-ကို၊ အာမန္တေသိ- အမိန့်ရှိတော်မူပြီ၊ (ကိံ)၊ ဘိက္ခု- ရဟန်း၊ တေနဟိ-ထိုသို့သုဒိန်က ရဟန်းပြုလိုလျှင်၊သုဒိန္နံ-ကို၊ ပဗ္ဗာဇေဟိစေဝ- ရှင်လည်းဖြစ်စေလော၊ ဝါ-ရှင်လည်းပြုပေး လော၊ ဥပသမ္ပာဒေဟိစ-အထက် တန်းလည်းပြည့်စုံစေလော၊ ဝါ-ပဉ္စင်းလည်းပြုပေးလော၊ ဣတိ-သို့၊(အာမ န္တေသိ-ပြီ၊) ဘန္တေ-ရား၊ သာဓု-ပြီ၊ ဣတိခေါ-လျှင်၊ သောဘိက္ခု-သည်၊ ဘဂ ဝတော- အား၊ ပဋိဿုဏိတွာ- ရှေးရှု နားထောင်၍၊ ဝါ- ဝန်ခံ၍၊ သုဒိန္န- မည်သော၊ ကလန္ဒပုတ္တံ - ကို၊( ပဗ္ဗာဇေသိ-စသည်၌စပ်၊) ဇိနဒတ္တိယံ - ဘုရား ပေးတော်မူအပ်သော၊ သဒ္ဓိ ဝိဟာရိကံ- အတူနေတပည့်ကို၊ လဒ္ဓါ- ရ၍၊ ပဗ္ဗာ ဇေသိစေဝ - ပြီ၊ ဝါ - ပြီ၊ ဥပသမ္ပာဒေသိစ - ပြီ၊ ဝါ - ပြီ၊ တေန - ကြောင့်၊ အလတ္ထခေါ၊ပေ၊ဥပသမ္ပဒန္တိ-ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ-ပြီ။

ပန-ဆက်၊ဧတ္ထ-ဤအလတ္ထ ပဗ္ဗဇ္ဇံ အလတ္ထ ဥပသမ္ပဒံဟူသောပါဌ်၌၊ဌတွာ- ၍၊ သမ္ဗအဋ္ဌကထာသု-တို့၌၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာစ- ရှင့်အဖြစ်ကိုငင်း၊ ဝါ-ရှင်ပြုပေးပုံကို ငင်း၊ ဥပသမ္ပဒါစ - အထက်တန်းဖြစ်သော ပြည့်စုံပုံကိုငင်း၊ [ ဥပရိဘူတာ+ သမ္ပဒါ ဥပသမ္ပဒါ။] ဝါ - ရဟန်းပြုပေးပုံကိုငင်း၊ ကထိတာ- ဆိုအပ်ပြီ၊ မယံ

**ဥဿာဒန နှာယနာဒိဟိ ။** ။ ဘူဝါဒိ စုရာဒိ ဆဒဓာတ်သည် သံဝရဏအနက်ကို ဟော၏၊ ဤနေရာ၌ မကောင်းသောအနံ့မှ စောင့်ရှောက်ဘို့ရန် နံ့သာမှုန့် (ပေါင်ဒါမှုန့်) စသည်တို့ဖြင့် ပွတ်တိုက်ခြင်းကို“ဥဿာဒန”ဟု ဆို၏၊ “နှာပန”ဟု ယခုစာများ၌ ရှိ၏၊ သူတပါးကိုသာ “ နှာပန – ရေချိုးစေရ၏၊” ကိုယ်တိုင်ရေချိုးရာ၌ကား “ နှာယန” ဖြစ်သင့်၏၊ မိမိကိုယ်ကို နံ့သာရည်တို့ဖြင့် ရေချိုးခြင်းတည်း။

**အဿု၊ ပေ၊ ဝဋ္ဋံ။** ။အဿူနိ+မုခေ ယဿာတိ အဿုမုခေါ၊ ပရိ-ပတ်ဝန်းကျင်+ ဝဋ္ဋတိ – လည်တတ်၏၊ ဣတိ ပရိဝဋ္ဋော၊ ဉာတိယေဝ + ပရိဝဋ္ဋော ဉာတိပရိဝဋ္ဋော= ပတ်ဝန်းကျင်လည်၍နေသော ဆွေမျိုး အသိုင်းအဝန်း။

ပန- ကား၊ ယထာဋ္ဌိတ ပါဠိဝသေနေဝ - အကြင် အကြင် တည်မြဲတိုင်းသော ပါဠိတော်၏ အစွမ်းဖြင့်သာလျှင်၊ ခန္ဓကေ-မဟာဝဂ္ဂ ခန္ဓက၌၊ ကထယိဿာမ- ဖွင့်ဆိုကုန်တော့အံ့၊ စ-ဆက်၊ ကေဝလံ– သက်သက်၊ တေံ-ဤ ပဗ္ဗဇ္ဇ ဥပသမ္ပဒ ကထာကိုသာ၊ န ( ကထယိဿာမ)-ဖွင့်ဆိုကုန်လိမ့်မည် မဟုတ်သေး၊ အည မ္ပိ-အခြားလည်းဖြစ်သော၊ ခန္ဓကေ ວါ- ၌သော်၎င်း၊ ပရိဝါရေဝါ-သော်၎င်း၊ ကထေတဗ္ဗံ-ဖွင့်ဆိုထိုက်သော၊ ယံ- အကြင်စကားကို၊ အဋ္ဌကထာစရိယေဟိ- တို့သည်၊ ဝိဘင်္ဂေ-သိက္ခာပုဒ်ပါဠိတော်၏ ဝိဘင်၌၊ ဝါ - ပဒဘာဇနီ၌၊ ကထိ တံ-ဖွင့်ဆိုအပ်ပြီ၊ တံသဗ္ဗံ - ထိုအလုံ စုံကို၊ တတ္ထတတ္ထေဝ-ထိုထိုခန္ဓက, ပရိဝါ ၌သာ၊ ကထယိဿာမ-န်တော့အံ့၊ ဟိ-လဒ္ဓဂုဏ်ကား၊ ["ဟိယသ္မာ-ကြောင့်" ဟု လည်း ပေးနိုင်၏၊ နောက်၌ ဧတိပါသည်။] ဧဝံ-သို့၊ (ထိုထိုခန္ဓက ပရိဝါ ကျမှသာ)၊ ကထိယမာနေ - ဖွင့်ဆိုအပ်သော်၊ ပါဠိက္ကမေနေဝ – ပါဠိတော် အစဉ်အားဖြင့်သာ၊ ဝဏ္ဏနာ - အဖွင့်သည်၊ ဝါ - ကို၊ ကတာ - ပြုအပ်သည်၊ ဟောတိ - ၏၊ တတော - ထိုသို့ ပါဠိတော်အစဉ်အားဖြင့် ဖွင့်ပြခြင်းကြောင့်၊ တေန တေန ဝိနိစ္ဆယေန-ထိုထို အဆုံးအဖြတ်ဖြင့်၊ အတ္ထိကာနံ-အလိုရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊ ပါဠိက္ကမေနေဝ - ဖြင့်သာ၊ ဌမံ ဝိနယသံဝဏ္ဏနံ - ကို၊ ဩလော ကေတွာ-၍၊ သောသောဝိနိစ္ဆယော -သည်၊ ဝါ-ကို၊ သုဝိညေယျော-လွယ်ကူ စွာသိအပ်သည်၊ ဝါ - သိလွယ်သည်၊ ဘဝိဿတိ- လတ့်၊ ဧတိ-ဤကား လဒ္ဓ ဂုဏ်တည်း၊ (တနည်း) ဧတိ- ကြောင့်၊ တတ္ထတတ္ထေဝ ကထယိဿာမ။

အစိရူပသမ္ပန္နောတိ-ကား၊အစိရံ-မကြာမြင့်သောကာလ၌၊ဝါ-မကြာမီက၊ ဥပသမ္ပန္နော-မြင့်မြတ်သောပဉ္စင်းအဖြစ်သို့ရောက်ပြီးသည်၊ဟုတွာ-၍၊(ဝတ္တတိ- ၌စပ်၊) ဥပသမ္ပဒတော - ရဟန်းဖြစ်ရာအခါမှ၊ နစိရကာလေယေဝ - မကြာ မြင့်သော ကာလ၌ပင်၊ [ အစိရံ - မကြာမြင့်သေးသော ကာလ၌၊ ဝါ - က+ ဥပသမ္ပန္နော အစိရူပသမ္ပန္နော။]ဧတိ – ဤ အဓိပ္ပါယ်အနက်သည်၊ ဝါ - ကို၊ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဧဝရူပေတိ– ကား၊ ဧဝံဝိဓေ -ဤသို့ အပြားရှိကုန်သော၊ ဧဝံ

ဧဝဠ် ။ ။ ဤ ဝါကျမျိုးကို လဒ္ဓဂုဏဝါကျ (ပါဠိတော် တိုက်ရိုက်ရှိရာ၌သာ ထို ပါဠိတော်၏အနက်ကို ဖွင့်ပြခြင်း၏အကျိုးရပုံကိုပြသောဝါကျ) ဟု မှတ်၊ ဟိသည် လဒ္ဓ ဂုဏဇောတက၊ ထိုသို့ လဒ္ဓဂုဏ်ဝါကျရှိရာ၌ ရှေ့ဝါကျကိုလည်း ယုတ္တိဝါကျ ( ထိုသို့ ဆိုရခြင်း၏ သင့်တင့်ပုံကိုပြသောဝါကျ) ဟု နာမည်မှည့်ကြသည်။

ဧဝရူပေ ။ ။ ဧဝံ+ရူပံ ယေသံတိ ဧဝရူပါ(ဗုတဂုဏ)၊ ရူပ၏ သဒ္ဒါနက်မှာ "သဘာဝ"အနက်ပင်တည်း၊ ဝိဓ—ဇာတိကတို့မှာ အဓိပ္ပါယ်နက်သာ၊ [ဝိဓ—အပြား၊ ဇာတိ—အမျိုးအစား။]

ဇာတိကေ- ဤသို့ အမျိုးအစားရှိကုန်သော၊ ဓုတဂုဏေတိ - ကား၊ ကိလေသ နိဒ္ဓုနနကေ – ကိလေသာတို့ကို လှုပ်ခါကြောင်းဖြစ်ကုန်သော၊ ဂုဏေ – ဂုဏ် အကျင့်တို့ကို၊ သမာဒါယ ဝတ္တတီတိ- ကား၊ သမာဒိယိတွာ ဂဏှိတွာ- ယူ၍၊ [သံ အနက်မရှိ၊] ဝတ္တတိ- ဖြစ်၏၊ စရတိ – ကျင့်၏၊ ဝိဟရတိ-နေ၏၊ အာရညိ ကော ဟောတီတိ-ကား၊ ဂါမန္တသေနာသနံ- ရွာကျောင်းကို၊ ပဋိက္ခိပိတွာ- ပယ်မြစ်၍၊ အာရညက ဓုတင်္ဂဝသေန -အာရညကဓုတင်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ အရညဝါသိကော - တော၌ နေခြင်းအလေ့ရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပိဏ္ဍပါတိ ကောတိ-ကား၊ အတိရေကလာဘပဋိက္ခေပေန- ပိဏ္ဍိယာလောပဘောဇနမှ ပိုလွန်သောလာဘ်ကို ပယ်ခြင်းဖြင့်၊ [ရဟန်းခံ ဩဝါဒခဏ်း၌ပါသော အတိ ရေကလာဘ်ကိုပယ်ခြင်းဖြင့်-ဟူလို၊ ] စုဒ္ဒသဘတ္တာနိ – တဆဲ့လေးပါးသော ဘတ်တို့ကို၊ [စုဒ္ဒသဘတ္တကို သာရတ္ထမှာ ရှု၊ ] ပဋိက္ခိပိတွာ - ၍၊ ပိဏ္ဍပါတိက ဓုတင်္ဂဝသေန-ပိဏ္ဍပါတ် ဓုတင်၏အစွမ်းဖြင့်၊ ပိဏ္ဍပါတိကော-ဆွမ်းခံ လှည့် လည်လေ့ရှိသည် ၊ဝါ-ပိဏ္ဍပါတ်ဓုတင်ဆောင်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပံသုကူလိ ကောတိ – ကား၊ ဂဟပတိစီဝရံ – အိမ်ရှင်ဒါယကာတို့ ပေးလှူအပ်သော

ဓုတဂုဏော ။ ။ ဓူဓာဒိ ဓုဓာတ်သည် စလန – လှုပ်ခါခြင်း အနက်ကို ဟော၏၊ ကိလေသေ ဓုနန္တိ (လှုပ်တတ်, ခါချတတ်ကုန်၏၊) ဓေတောဟီတိ ဓုတာ၊ ဓုတာစ+တေ+ ဂုဏာစာတိ ဓုတဂုဏာ၊ ဤသို့ ပြုစေလို၍ "ကိလေသနိဒ္ဓုနနကေ ဂုဏော" ဟု ဖွင့်၊ [နိ– အကြွင်းမရှိအောင်+ဓုနနက-လှုပ်ခါကြောင်း၊ ဓုဓာတ်,ဏာပစ္စည်းမှ ဏကို နပြု၊ ယုကို အနပြု၊ နိဒ္ဓုနနာယေဝ နိဒ္ဓုနနကာ။ ]

ဝတ္တတိ ။ ။ ဝတ္တု(ဝတု)ဓာတ်သည် ဖြစ်ခြင်း အနက်ကို ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် စရတိ ဝိဟရတိတို့သည် အဓိပ္ပါယတ္ထတို့သာတည်း၊ "ဖြစ်" ဟူသည် ကျင့်ခြင်း, ကျင့်၍ နေခြင်းတည်း–ဟူလို။

ဂါမန္တသေနာသနံ။ ။ဂါမောယေဝ ဂါမန္တသေနာသနံ၊ ဂါမပရိယာပန္နတ္တာ ဂါမန္တသေနာသနသ = " ဂါမန္တသေနာသန ဟု ခေါ်အပ်သော ကျောင်းက ရွာ၏ ဥပစာ၌ တည်သဖြင့် ရွာ၌ ပါဝင်သောကြောင့် ဂါမန္တနှင့် သေနာသနကို အရတူ ကမ္မ ဓာရဲတွဲပါ " ဟူလို၊ အန္တသဒ္ဒါလည်း အနက်သီးခြား မရှိ၊ ဂါမောယေဝ ဂါမန္တံ၊ ဂါမန္တံစ+တံ+သေနာသနံစာတိ ဂါမန္တသေနာသနံ။

အာရညကဓုတင်္ဂဝသေန။ ။ [အာရညိကော- စသည်တို့၏ ပုဒ်ပြီးပုံကို " တမ ဓီတေ" စသော သုတ်အဖွင့် ရူပသိဒ္ဓိစသည်မှာ ရှု၊ ] အာရညကဌကား မောဂ္ဂလ္လာန် တဒ္ဓိတ်(၂၅)သုတ်၌ ကဏ်ပစ္စည်းဖြင့် ပြီးစေ၏၊ "အရညေ+ဘဝေါ အာရညကော" ဟု ပြု၊ ဓုတံစ + တံ + အင်္ဂံစ ( အကြောင်းလည်း ဟုတ်၏) ဣတိ ဓုတင်္ဂံ၊ ဓုတသဒ္ဒါ သက်သက်သည် ပုဂ္ဂိုလ်ကို မဟော၊ ပုဂ္ဂိုလ်ဟောရာ၌"ဓုတဓရော"ဟု ရှိ၏။

သက်န်းကို၊ ပဋိက္ခိပိတွာ-၍၊ ပံသုကူလိကစုတင်္ဂဝသေန-ဖြင့်၊ ပံသုကူလိကော-ပံသုကူ ဆောင်လေ့ရှိသည်၊ ဟောတိ - ၏၊ သပဒါနစာရိကောတိ - ကား၊ လောလုပစာရံ- အလွန်လိုချင်သူ၏ လှည့်လည်ခြင်းကို၊ (တနည်း) လောလုပ္ပစာရံ-အလွန်လိုချင်တတ်သော တဏှာဖြင့်လှည့်လည်ခြင်းကို၊ပဋိက္ခိပိတွာ-၍၊ သပဒါနစာရိက ဓုတင်္ဂဝသေန – ဖြင့်၊ သပဒါနစာရိကော – အိမ်စဉ်မလပ်ဆွမ်းရပ်လေ့ ရှိသည်၊ ဟောတိ – ၏၊ ဃရပဋိပါဋိယာ - အိမ်စဉ်အားဖြင့်၊ ဘိက္ခာယ- ဆွမ်းအလို့ငှါ၊ ပဝိသတိ- ဝင်၏၊ ဝဇ္ဇိဂါမန္တိ- ကား၊ ဝဇ္ဇီနံ-ဝဇ္ဇီမင်းတို့၏၊ ဂါမံ- ကို၊ ပါ-တနည်း၊ ဝဇ္ဇီသု-ဝဇ္ဇီဟုဗဟုဝုစ်အမည်ရသော ဇနပုဒ်၌၊ ဝါ-ဇနပုဒ်ထည်းက၊ ဂါမံ-ကို၊ [ ဝဇ္ဇီ အရ ပဌမနည်း၌ ဝဇ္ဇီမင်းများကို ယူ, ဒုတိယနည်း၌ ဇနပုဒ်ကိုယူ။]

လောလုပစာရံ။ ။လုဘဓာတ်, အပစ္စည်း၊ လုလုဟု ဒွေဘော်ပြု၊ လု၏ ဥကို ဩပြု၊ "လောလုဘ"ဟု ပုဒ်ရင်း၊ ဘကို ပပြု၍"လောလုပ"ဟု လည်း ရှိ၏၊ (ထောမနိဓိ၊) လောလုပဿ—အလွန် လိုချင်တတ်သူ၏၊ ဝါ-လျှပ်ပေါ်လော်လီသူ၏၊ စာရော—လှည့်လည်ခြင်းတည်း၊ လောလုပစာရော-ခြင်း၊ မရမှာစိုး၍ ဣန္ဒြေမဆောင်နိုင်ဘဲ ပြာယီပြာယာ ဆွမ်းခံလှည့်ခြင်း။

သာရတ္ထ။ ။ ကုသလဘဏ္ဍာဿ ဘုသံ ဝိလုမ္ပနဋ္ဌေန ( ကုသိုလ်ဘဏ္ဍာကို လွန်စွာ လုယူတတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့် ) လောလုပ္ပံ ဝုစ္စတိ တဏှာ၊ လောလုပ္ပေန + စရဏံ လောလုပ္ပစာရော၊ လောလုပ္ပစာရော – ကုသိုလ်ဘဏ္ဍာကို လွန်စွာလုယူတတ်သော တဏှာဖြင့် လှည့်လည်ခြင်း၊ တဏှာဝသေန ဃရပ္ပဋိပါတိံ အတိက္ကမိတွာ ဘိက္ခာယ စရဏံ၊ ဤဋီကာအလို"လုပ"ဓာတ်, လုလုဟု ဒွေဘော်ပြု၊ ရုဓာဂိုဏ်း လုပဓာတ်သည် ဝိလုမ္ပန-လုယူခြင်းကိုဟော၏၊ သို့သော်"လောလုမ္ပ"မရှိဘဲ "လောလုပ္ပ"ဟု ရှိသောကြောင့် ထောမနိဓိလောက် မရှင်း။

မှတ်ချက်။ ။အာရညကစသော ဓုတင်တို့ကို ပဓာနနည်းအားဖြင့် ပြသောကြောင့် ကြွင်း ဓုတင်များကိုလည်း ကျင့်သည်ဟု မှတ်။ [ ဧတ္ထစ အာရညကင်္ဂါဒိပဓာနင်္ဂဝသေန သေသဓုတင်္ဂါနိ ဂဟိတာနေဝ ဟောန္တီတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊–ဋီကာ။]

သပဒါနစာရိက။ ။"ဒါ-အဝခဏ္ဍနေ"ဟူသောဓာတ်, ယုပစ္စည်း၊ ဒါနတော-ပိုင်းဖြတ်ခြင်းမှ၊ အပဂတံ–ကင်းသည်တည်း၊ အပဒါနံ – ပိုင်းဖြတ်ခြင်းမှ ကင်းသည်၊ "သဟ + အပဒါနေန ( ပိုင်းဖြတ်ခြင်းမှ ကင်းသည်၏အဖြစ်နှင့်တကွ၊ ဘာဝပ္ပဓာန) ယော ဝတ္တတီဘိ သပဒါနော – [ အိမ်တွေကို ကျော်၍ မသွားဘဲ , အိမ်စဉ်အတိုင်း သွားခြင်း၊ ] သပဒါနံ – ပိုင်းဖြတ်ခြင်းမှ ကင်းသည်၏ အဖြစ်နှင့် တကွ၊ ဝါ – အစဉ်အတိုင်း (ကြိယာဝိသေသန) စရတိ သီလေနာတိ သပဒါနစာရိကော၊ [ ဃရပ္ပဋိပါတိယာ–စသည်ကား ထို လှည့်လည်ပုံ၏ သဘာဝကိုပြသောအဖွင့်တည်း။]

အနှာမဟဒ္ဓနာတိအာဒိသု - ပါဠိတို့၌၊ ဥပဘောဂပရိဘောဂုပ ကရဏ မဟန္တတာယ - သုံးဆောင် ခံစားအပ်သော ကာမဂုဏ် , ထို ကာမဂုဏ်၏ အဆောက်အဦးတို့၏ များကုန်သည်တို့၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အနှာ – ကြွယ်ဝ ကုန်၏၊ ဟိ-မှန်၊ တေသံ(ညာတီနံ)-တို့၏၊ ယေ ဥပဘောဂါ-အကြင် ကာမဂုဏ် တို့သည်ငှင်း၊ ယာနိ ဥပဘောဂုပကရဏာနိစ- အကြင် ကာမဂုဏ်၏ အဆောံ အဦးတို့သည်ငှင်း၊ (သန္တိ - နိ၏၊) တာနိ·ထို ကာမဂုဏ်, ထို ကာမဂုဏ်၏ အဆောက်အဦးတို့သည်၊ မဟန္တာနိ – များမြတ်ကုန်သည်၊ ဗဟုလာနိ– များကုန်သည်၊ သာရကာနိ-ကောင်းမြတ်ကုန်သည်၊ (ဟောန္တိ၊) [မဟန္တကို ဗဟုလ, သာရက–ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊] ဇာတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ နိဓေတွာ-မြုပ်နှံ၍၊ ထပိတဓန မဟန္တတာယ- ထားအပ်သော ဥစ္စာတို့၏ များကုန်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊မဟဒ္ဓနာ–မြေဝယ်မြှုပ်ထားများသောဥစ္စာရှိကုန်၏၊မဟာဘောဂါ တိ - ကား၊ ဒိဝသပရိဗ္ဗယ သင်္ခါတဘောဂ မဟန္တတာယ-နေ့စဉ်နေ့စဉ် ပတ် ဝန်းကျင် အကုန်အကျ ဟု ဆိုအပ်သော အသုံးအဆောင်၏ များကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ မဟာဘောဂါ- နေ့စဉ်အမြဲသုံးစွဲအပ်သော များသောအသုံး

**ဥပဘောဂ၊ပေ၊အနှာ။** ။“အာဍ္ဍ”ဟူသော သဏ္ဍတမှ ပါဠိ၌ “အနှ” ဟု ဖြစ် ၏၊ [ပုဒ်ပြီးပုံကို ဒိဗ္ဗစက္ခု၌ ပြခဲ့ပြီ။ ] ကြွယ်ဝပုံကို သရုပ်ပြ၍ “ ဥပဘောဂ ပရိဘောဂု ပကရဏမဟန္တတာယ ” ဟု မိန့်သည်၊ ထိုတွင် “ ဥပဘောဂ” ဟူသည် သုံးဆောင် ခံစားအပ်သော ရူပသဒ္ဒ စသော ကာမဂုဏ် ငါးပါးတည်း၊ ဥပဘုဉ္ဇီယန္တိ – ကပ်၍ ခံစားအပ်ကုန်၏၊ ဣတိ ဥပဘောဂါ၊ ထိုဥပဘောဂ၏ အဆောက် အဦးများကို “ပရိ ဘောဂ+ဥပကရဏ”ဟု ခေါ်သည်၊ ပရိဘောဂဿ– ခံစားခြင်း၏+ ဥပကရဏာနိ– အဆောက် အဦးတို့တည်း၊ ပရိဘောဂုပကရဏာနိ – တို့။ [ရူပါရုံသည် ဥပဘောဂ၊ လှပသော ဆင်မြင်း မိန်းမစသည်တို့သည် ဥပဘောဂုပကရဏ, ဤသို့ စသည်ဖြင့်ခွဲပါ။]

**ဆက်ဦးအံ့။** ။“မဟန္တာနံ+ဘာဝေါ မဟန္တတာ၊ ဥပဘောဂပရိဘောဂုပကရ ဏာနံ + မဟန္တတာ ဥပ၊ပေ၊တာ” ဟု ပြု၊ ဥပဘောဂုပကရဏကိုပင် “ပရိဘောဂုပ ကရဏ ” ဟု ဆိုသည်၊ ထို့ကြောင့်“ယေဟိ”စသည် တက်သော ဒဋီဝါကျ၌“ယာနိစ ဥပဘောဂုပကရဏာနိ”ဟု ဆိုသည်။ [ ပဉ္စကာမဂုဏသင်္ခါတာနံ ဥပဘောဂါနံစေဝ ဟတ္ထိ အဿ ရထ ဣတ္ထိယာဒိ ဥပဘောဂုပကရဏာနံစ မဟန္တတာယ ဥပဘောဂုပ ကရဏာနေဝ ဟိ ဣဓ ပရိဘောဂုပကရဏာသဒ္ဒေန ဝုတ္တာနိ။]

**မဟာဘောဂါ ။** ။ အနှာတုန်းက ခံစားအပ်သော စည်းစိမ်ကို ယူခဲ့ပြီးဖြစ်၍ ဤ “ဘောဂ” အရ၌ “နေ့စဉ်သုံးစွဲ၍ ကုန်ကျသောအသုံးအဆွဲများကို ယူစေလိုရကား “ ဒိဝသပရိဗ္ဗယသင်္ခါတဘောဂ”ဟု မိန့်သည်၊ ပရိ-ပတ်ဝန်းကျင်+ဝယ (ဝိ+အယ)- ပျက်ပြားကုန်ခန်းသော (သုံးစွဲ၍ကုန်သွားသော) အသုံးစရိတ်နှင့် အစားအသောက်

အဆောင်ရှိကုန်၏၊ အညေဟိ - အခြားကုန်သော၊ ဥပဘောဂေဟိ - အသုံးအဆောင်တို့ထက်၊ ဇာတရူပ ရဇတဿေဝ-ရွှေငွေ၏သာလျှင်၊ ပဟူတတာယ-များသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ပဟူတ ဇာတရူပရဇတာ-သာ၍များသော ရွှေငွေရှိကုန်၏၊ အလင်္ကာရဘူတဿ-တန်ဆာဖြစ်၍ဖြစ်သော၊ ဝိတ္တူပကရဏဿ-နှစ်သက်ခြင်းကိုပြုတတ်သော၊ ပီတိ ပါမောဇ္ဇကရဏဿ-နှစ်သက် ဝမ်းမြောက်ခြင်းကိုပြုတတ်သော အသုံးအဆောင်၏၊ ပဟူတတာယ- များသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ပဟူတဝိတ္တူပကရဏာ - များသော နှစ်သက်ခြင်းကို ပြုတတ်သော အဝတ်တန်ဆာရှိကုန်၏၊ ဝေါဟာရဝသေန - ရောင်းဝယ်ဖေါက်ကားခြင်း စသည်၏အစွမ်းဖြင့်၊ ပရိဝတ္တေန္တဿ- လဲလှယ်အပ်သော၊ ဓနဓညဿ-ရွှေငွေ စသော ဥစ္စာ , ကောက်ပဲသီး နှံ၏၊ ပဟူတတာယ - ကြောင့်၊ ပဟူတ ဓနဓညာ-များသောဥစ္စာ, ကောက်ပဲသီးနှံရှိကုန်၏၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ- နှ်၏။

သေနာသနံ သံသာမေတွာတိ – ကား၊ သေနာသနံ – အိပ်ရာနေရာကို၊ [ညောင်စောင်း အင်းပျဉ် စသည်ကို ဆိုသည်၊ ] ပတိသာမေတွာ-သိုမှီးပြီး၍၊ ယထာ - အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့် ထားလသော်၊ နဝိနဿတိ - မပျက်

အသုံးအဆောင်၊ ဒိဝသေဒိဝသေ + ပရိဗ္ဗယော ဒိဝသပရိဗ္ဗယော (ဝိစ္ဆာတပုဒ်ချေ)၊ ဒိဝသပရိဗ္ဗယသင်္ခါတော + ဘောဂေါ ဒိဝသပရိဗ္ဗယသင်္ခါတဘောဂေါ၊ “ဒိဝသပရိဗ္ဗယသင်္ခါတ” ဟူသော ဝိသေသနဖြင့် “ ဘောဂ ” အရ သုံးဆောင် ခံစားအပ်သော စည်းစိမ်ကို မယူရ, နေ့စဉ် သုံးစွဲအပ်သော အသုံးအဆောင် အသုံးစရိတ်ကိုယူပါ—ဟု ပြသည်၊ မဟန္တော+ဘောဂေါ ယေသန္တိ မဟာဘောဂါ။

ဝိတ္တူပကရဏ။ ။ ဝိတ္တိံဘိ တုဋ္ဌိ (နှစ်သက်ခြင်း)၊ ဝိတ္တိယာ—ကို+ဥပကရဏံ—ပြုတတ်သောတန်ဆာတည်း၊ဝိတ္တူပကရဏံ—ဆာ၊ ပဟူတံ+ နာနာဝိဓာလင်္ကာရဘူတံ (အမျိုးမျိုး တန်ဆာဖြစ်၍ဖြစ်သော) ဝိတ္တူပကရဏံ ယေသန္တိ ပဟူတ ဝိတ္တူပကရဏာ၊ (ဋီကာ၊) [ “ပြဘူတ”မှ “ပဟူတ” ဖြစ်ကြောင်းကို ပြခဲ့ပြီ၊ ] ပီတိပါမောဇ္ဇသည် ဝိတ္တိ၏အဖွင့်၊ ကရဏကား ဥပကရဏ၏အဖွင့်၊ ဥပအနက်မရှိ—ဟူလို။

ပဟူတဓနဓည။ ။ ဝေါဟာရဝသေနကို “ဝါဏိဇ္ဇဝသေန ဝဍ္ဎိတာဒိဝသေန (ကူးသန်းရောင်းဝယ်ခြင်း,အတိုးပေးခြင် စသည်၏အစွမ်းဖြင့်ရင်း)”ဟုဋီကာဖွင့်၏၊ ကူးသန်းရောင်းဝယ်ခြင်း အတိုးပေးခြင်းအားဖြင့်လှည့်လည်နေသော ရတနာခုနစ်ပါးဟူသော ဓန, ကောက်ပဲသော ဓညတွေ များစွာရှိကြသည်—ဟူလို၊ ပဟူတံ+ ဓနဓညံ ယေသံတိ ပဟူတဓနဓညာ။

ပတိသာမေတွာ ။ ။ စုရာဒိ သမဓာတ်သည် သံ – ပတိရှေးရှိရာ၌ သိုမှီးခြင်း သိမ်းဆည်းခြင်း အနက်ကိုဟော၏၊ထို့ကြောင့် သံသာမေတွာကို “ပတိသာမေတွာ” ဟု ပရိယာယ်ဖွင့်၍ “ယထာ၊ပေ၊အဌေပေတွာ”ဟု သဘာဝတ္ထ (သိမ်းဆည်းပုံ သဘောကို) ဖွင့်ပြသည်၊ “မပျက်စီးအောင် ထားခြင်းကို သိမ်းဆည်း”ဟု ခေါ်သည်-ဟူလို။

စီးနိုင်၊ တထာ - ထို မပျက်စီးနိုင်လောက်အောင်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊
သုဋ္ဌု- ကောင်းစွာ၊ ထပေတွာ - ထားပြီး၍၊ (ပက္ကမိ–၌စပ်၊) ဉတိအဘွော-
နက်၊ သဋ္ဌိမဘွော ထာလိပါကေတိ- ကား၊ ဂဏန ပရိစ္ဆေဒတော-ဂဏန်းဖြင့်
ပိုင်းခြားခြင်းအားဖြင့်၊ သဋ္ဌိ-ခြောက်ဆယ်သော၊ ထာလိပါကေ- ဆွမ်းချက်ရာ
အိုးတို့ကို၊ ဝါ-ဆွမ်းချက်အိုးတို့ကို၊ (အဘိဟရိံသု-၌စပ်၊) စ-ဆက်၊ တွေ–၌
ဆွမ်းချက်ရာအိုးတို့တွင်၊ ဧကမေကော-တလုံး တလုံးသော၊ ထာလိပါကော-
သည်၊ ဒသန္နံ-တကျိပ်ကုန်သော၊ ဘိက္ခုနံ-ရဟန်းတို့ဘို့၊ [“ကထိနသာဒုသံ”
ကဲ့သို့ ဘိက္ခုနံ၌ တဒတ္ထသမ္ပဒါန်၊ ] ဘတ္တံ–ဆွမ်းကို၊ ဂဏှာတိ- ယူနိုင်၏၊ ဝါ–
ဆန့်၏၊ တံ သဗ္ဗမ္ပိ-ထိုအလုံးစုံသည်လည်း၊ ဆန္နံ ဘိက္ခုသတာနံ-ခြောက်ရာသော
ရဟန်းတို့ဘို့၊ ဘတ္တံ – ဆွမ်းသည်၊ ဟောတိ - ၏၊ ဘတ္တာဘိဟာရံ အဘိဟရိံ
သူတိ ဧတ္ထ-၌၊ အဘိဟရိယတိ-ရှေးရှု ဆောင်ပို့အပ်၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ အဘိ
ဟာရော – မည်၏၊ ကိံ - အဘယ်ကို၊ အဘိဟရိယတိ - ရှေးရှု ဆောင်ပို့အပ်
သနည်း၊ ဘတ္တံ- ကို၊ (အဘိဟရိယတိ - အပ်၏၊) ဘတ္တမေဝ - သည်ပင်၊ အဘိ
ဟာရော – ရှေးရှုဆောင်အပ်သော အစာတည်း၊ ဘတ္တာဘိဟာရော - ရှေးရှု
ဆောင်အပ်သောဆွမ်း၊ တံ ဘတ္တာဘိဟာရံ-ကို၊ အဘိဟရိံသူတိ-ကား၊အဘိ
မုခါ-ရှေးရှုကုန်သည်၊ (ဟုတွာ-၍၊) ဟရိံသု – ဆောင်ကြကုန်ပြီ၊ ဝါ-ပို့ကြ
ကုန်ပြီ၊ တဿ–ထိုအရှင်သုဒိန်၏၊ သန္တိကံ-သို့၊ ဂဟေတွာ-ယူ၍၊အာဂမိံသု-
န်ပြီ၊ ဣတိအဘွော- ဤကား အဓိပ္ပါယ်နက်တည်း၊ တေသ-၌ ပို့အပ်သော
ဆွမ်း၏၊ပမာဏံ-ပမာဏကား၊ကိံ-နည်း၊ ဣတိ-ဤကားအမေးတည်း၊သဋ္ဌိ-
သော၊ ထာလိပါကာ- တို့တည်း၊ ( ဣတိ - ဤကား အဖြေတည်း။ ) တေန-
ကြောင့်၊သဋ္ဌိမဘွော၊ပေ၊အဘိဟရိံသူတိ-ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊
ဘိက္ခုနံ ဝိသဇ္ဇေတွာတိ - ကား၊ သယံ - မိမိသည်၊ ဝါ - မိမိက၊ ဥက္ကဋ္ဌ
ပိဏ္ဍပါတိကတ္တာ - ဥက္ကဋ္ဌ ပိဏ္ဍပါတ်ဓုတင်ဆောင်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သပဒါန
စာရံ-အိမ်စဉ်မလပ်, လှည့်လည်ခြင်းကို၊ စရိတုကာမော- သည်၊ ( ဟုတွာ )၊

**ထာလိပါကာ ။** ။ ပစန္တိ ဧတ္ထာတိ ပါကာ၊ ထာလိယော စ + ပါကာ ထာလိ
ပါကာ၊ ထို ဆွမ်းချက်ရာအိုးတို့သည် “ခြံဆယ်ရှိ၏” ဟု ဂဏန်းအားဖြင့် ပိုင်းခြား
ပြလို၍ “ သဋ္ဌိမဘွော ” ဟု ဝိသေသန ကူမသည်၊ ဂဏနပရိစ္ဆေဒေါကို “ ဂဏနေန +
ပရိစ္ဆိန္ဒနံ”ဟု မူလပံ–အနုဂဏ္ဍာသုတ် ဋီကာဖွင့်၏။
**ဥက္ကဋ္ဌ ပိဏ္ဍပါတိကတ္တာ ။** ။ ပိဏ္ဍပါတိက ဓုတင်ဆောင်ပုဂ္ဂိုလ်သည် ဥက္ကဋ္ဌ,
မဇ္ဈိမ, ဩမက, ဟု ၃ မျိုးရှိ၏၊ ထိုတွင် ဥက္ကဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်သည် ဆွမ်းခံသွားစဉ် ရှေ့မှ နောက်မှ
လောင်းလှူအပ်သောဆွမ်း, အိမ်တံခါးပေါက်၌ သပိတ်ကိုတောင်း၍ လောင်းလှူအပ်

ဘိက္ခုနံ-တို့၏၊ ပရိဘောဂတ္ထာယ – ဘဉ်းပေးခြင်းအကျိုးငှါ၊ ပရိစ္စဇိတွာ-စွန့်၍၊ ဒတွာ - ပေးလှူ၍၊ ( ပိဏ္ဍာယ ပါဝိသိ—၌ စပ်၊ ) ဟိ—မှန်၊ (တနည်း) ဟိ(ယသ္မာ)- ကြောင့်၊ အယံ အာယသ္မာ - ဤအရှင် သုဒိန်သည်၊ ဘိက္ခုစ-တို့သည်လည်း၊ လာဘံ-လာဘ်ကို၊ လစ္ဆန္တိ-ရကုန်လတ္တံ့၊ အဟဉ္စ-သည်လည်း၊ ပိဏ္ဍကေန-ဆွမ်းဖြင့်၊ န ကိလမိဿာမိ-မပင်ပန်းရလိမ့်အံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ ကြံ၍၊ တေဒတ္ထမေဝ- ဤအကျိုးငှါသာ၊ အာဂတော - လာခဲ့ပြီ၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ( ရဟန်းတို့၏ လာဘ်ရခြင်း မိမိ၏ ဆွမ်းဖြင့် မပင်ပန်းခြင်း အကျိုးငှါ လာခဲ့သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) အာဂမနာနုရူပံ-လာခြင်းအား လျောက်ပတ်သော အမှုကို၊ ကရောန္တော-ပြုလိုသည်၊(ဟုတွာ)၊ဘိက္ခုနံ-တို့အား၊ ဝိသဇ္ဇေတွာ—စွန့်ပြီး၍၊ သယံ- မိမိသည်၊ ဝါ-မိမိက၊ ပိဏ္ဍာယ-ငှါ၊ ပါဝိသိ-ဝင်ပြီ။

ဉာတိဒါသီတိ-ကား၊ ဉာတကာနံ-ဆွေမျိုးတို့၏၊ ဒါသီ- ကျွန်မသည်၊အာဘိ ဒေါသိကန္တိ-ကား၊ ပါရိဝါသိကံ-မကောင်းသော အနံ့တို့ဖြင့် ထုံအပ်သော၊ ဧကရတ္တာတိက္ကန္တံ—တညဉ့်ကို လွန်သော၊(ဧကရတ္တာတိက္ကန္တတ္တာ-၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ပောတုမန္တဝိသေသန)၊ ပူတိဘူတံ - ပုတ်သိုးသည်ဖြစ်၍ ဖြစ်သော၊ (ကုမ္မာသံ- ၌စပ်၊) တတြ - ထို အာဘိဒေါသိကံ ဟူသော ပါဌ်၌၊ အယံ - ဤ

သော ဆွမ်း , ရွာတွင်း ဆွမ်းစားစရပ်၌ ပို့လှူအပ်သောဆွမ်းကိုသာ ခံယူ၏၊ ထိုနေ့၌ ဆွမ်းခံ မသွားဘဲ နေ၍ကား ဆွမ်းကို မခံယူ၊ အရှင်သုဒိန်သည် ဤဥက္ကဋ္ဌပိဏ္ဍပါတိက ဓုတင်ဆောင်ပုဂ္ဂိုလ်တည်း၊ ထို့ကြောင့် ပို့လှူအပ်သောဆွမ်းကို တဆင့်လှူသည်၊ ထိုသို့ ပိဏ္ဍပါတ်ဓုတင်ဆောင်ဖြစ်သည့် အပြင် သာပဒါနစာရိက စသော အခြား ဓုတင်များ ကိုလည်း ဆောင်သေးကြောင်း သိစေလို၍ “ သာပဒါနစာရံ စရိတုကာမော” ဟု မိန့်သည်။ [သ+အပဉ္စ အကို ဒီဃပြု—မပြု၂ မျိုးရှိ၏။]

ဉာတကာနံ ဒါသီ ။ ။ “ဉာတိဘူတာ + ဒါသီ ဉာတိဒါသီ = ဆွေမျိုးဖြစ်သော ကျွန်မ”ဟု ယုံမှားမည်စိုး၍ “ဉာတကာနံ ဒါသီ” ဟု ဖွင့်၊ “ဉာတီနံ + ဒါသီ”ဟု ဆဋ္ဌီ တပ္ပုရိသ်ပြုပါ—ဟူလို၊ သာရတ္ထဋီကာ:—အိမ်၌ မွေးဖွားသောကျွန်မ ဖြစ်ရကား ဆွေလို မျိုးလိုဖြစ်သောကြောင့် “ဉာတိသဒိသီ + ဒါသီ”ဟု သဒိသီပုဒ်ကြေသော မဇ္ဈေလောပီ ကမ္မဓာရဲလည်း တနည်းပြုစေလို၍“အဓ္ဈာဂါတတာယ ဝါ ဉာတိသဒိသီ ဒါသီ”ဟု ဝါနှင့်တကွ မိန့်လေသည်။

ပါရိဝါသိကံ။ ။“ဝါသ—သုရဘိကရဏေ (အနံ့ကောင်းအောင် ပြုခြင်း)” ဟု ဓာတ်နက်ရှိ၏၊ ပရိဥပသာရ၏ ပြောင်းပြန်ပြုခြင်း အနက်ကြောင့် မကောင်းအနံ့ ထုံခြင်း အနက်ကိုယူ၊ ပရိဝါသီယတေ—မကောင်းနံ့ထုံအပ်၏၊ ဣတိ ပရိဝါသော၊ ပရိဝါသောယေဝ ပါရိဝါသိကော (ဏိကပစ္စည်း သွတ္ထ၊) ဝိမတိ၌“ပရိဝုတ္ထံ”ဟု ရှိသော ကြောင့် ကမ္မသာဓနလုပ်၍ ဏိကကို သွတ္ထကြံသည်။

ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ပဒတ္ထော-ပုဒ်နက်တည်း၊ ပူတိဘာဝဒေါသေန - ပုတ်သိုးသည်၏ အဖြစ်ဟူသော အပြစ်သည်၊ အဘိဘူတော – လွှမ်းမိုးအပ်သော ကုမ္ဘာသတည်း၊ ဣတိ–ကြောင့်၊ အဘိဒေါသော - မည်၏၊ အဘိဒေါသော၀-ပုတ်သိုးသည်၏ အဖြစ်ဟူသော အပြစ်သည် လွှမ်းမိုးအပ်သော ကုမ္ဘာသ သည်ပင်၊ အာဘိဒေါသိကော-ကမည်၏၊ ( ဣတိ- ဤကား ပုဒ်နက်တည်း၊ ) ဝါ- တနည်း၊ အာဘိဒေါသိကောတိ - ဟူသော၊ ယဒိဒံ ( ယာ+အယံ ) နာမ သညာ-အကြင် အမည် သညာသည်၊ (အတ္ထိ - ၏၊) သော-ဤ အမည်သညာ သည်၊ ကေရတ္ထာတိက္ကန္တဿ – တည၌ကို လွန်သော ဘောဇဉ်၏၊ နာမ သညာ-တည်း၊ အာဘိဒေါသိကံ-ပုတ်သိုးသည်၏အဖြစ်ဟူသော အပြစ်သည်

**တတြာယံ ပဒတ္ထော**။ ။ပါရိဝါသိကံစသော အဖွင့်သည် ပဒတ္ထ (သဒ္ဒတ္ထ) မဟုတ်၊ ထို ကုမ္ဘာသ၏ သိုးပုတ်နေပုံသဘောကိုဖွင့်သော သဘာဝတ္ထတည်း၊ ထို့ကြောင့် ပဒတ္ထ (သဒ္ဒတ္ထ) ကိုပြလို၍ "တတြာယံ" စသည်မိန့်၊ "အဘိ + ဒေါသ" ဟု ခွဲ၊ ဒေါသအရ ပုတ်ခြင်း (သိုးခြင်း) အပြစ်ကိုယူ၍ " အဘိဥပသာရအတွက်လည်း အဘိဘူတအနက်ကိုယူပါ"ဟု သိစေလို၍ "ပူတိဘာဝ" စသည်မိန့်၊ "ဒေါသေန + အဘိဘူတော အဘိဒေါသော"၊ ထို့နောက် ဏိကပစ္စည်း သွတ္တ။

**ကေရတ္တာတိက္ကန္တဿ ဝါ** ။ ။ ဤနည်း၌ တည၌လွန်သော အပုတ်အသိုးကို " အာဘိဒေါသိက " ဟု ပြောလေ့ရှိသောကြောင့် ရုဋ္ဌီအမည်သာ ဖြစ်သည်ဟု သိစေ လို၍ "ကေရတ္တာတိက္ကန္တဿ ဝါ နာမသညာ"ဟု မိန့်သည်။ ["အမိဝစနံ, နာမံရှိက, များလှနက်တွင်, လိုအင်နက်မှီ,ထင်ရူဋ္ဌီ"–နိယာမ်။] ဤသို့ အထင်ရူဋ္ဌီကိုပြသော်လည်း ဝိဂ္ဂဟ်ဝစနတ်ကား မပြုအပ်မဟုတ် ပြုအပ်သည်သာ၊ ထို့ကြောင့် ဋီကာတို့၌ " ပူတိဘာဝေန လက္ခိတဗ္ဗဒေါသော ဝါ အာဘိဒေါသိကော၊ အဘိဒေါသံ ဝါ ၊ပေ၊ အာဘိဒေါသိကော"ဟု ၂ နည်းပြသည်၊ ထိုတွင် ပဌမနည်း၌ အဘိသဒ္ဒါသည် လက္ခဏအနက်ဟော၊ အဘိ (လက္ခိတော) +ဒေါသော အဘိဒေါသော– ပုတ်သိုးသည်၏ အဖြစ်ဖြင့် မှတ်သားအပ်သောအပြစ်၊ "အဘိဒေါသော + ယဿ အတ္ထိတိ အာဘိဒေါသိကော"၊ ဒုတိယနည်း၌ "အဘိဒေါသံ+ အတိက္ကန္တော အာဘိဒေါသိကော—သန်းခေါင်ကိုလွန်၍ မိုးသောက်အခါသို့ ရောက်သောအစာ" ဟူလို။

**မှတ်ချက်** ။ ။ အဘိဒေါသသဒ္ဒါကို (မဟာဝါ–ဥဒကရာမပုဘ္ဘကထာ အဖွင့်၌ ) "အဍ္ဍရတ္တ (သန်းခေါင် ) အနက်ဟော "ဟု သာရတ္ထဖွင့်၏၊ သန်းခေါင်ကိုလွန်လျှင် မိုးသောက်သို့ ရောက်တော့၏၊ ထို့ကြောင့် "အဘိဒေါသံ ဝါ အတိက္ကန္တော , ပစ္စူသံ ဂတော ပတ္တောတိ အာဘိဒေါသိကော " ဟု ဋီကာ၌ ပါဌ်မှန်ရှိသင့်သည်၊ ယခု ဋီကာ များ၌ "အဘိဒေါသံ ဝါ ပစ္စူသကာလံ ဂတော ပတ္တော အတိက္ကန္တောတိ အာဘိဒေါသိကော"ဟု ရှိသည်ကို ဆင်ခြင်ပါ။ [ပါဠိအဘိဓာန်၌ "အဘိဒေါသော ပဒေါသော–ညဉ့်ဦး"ဟု ရှိ၏၊ သက္ကတအဘိဓာန်၌ "အဘိဒေါသ" မရှိ။]

လွှမ်းမိုးအပ်သော၊ဝါ-တည်၌ကို လွှန်သော၊ တံ(ကုမ္မာသံ)-ထိုကုမ္မာသကို၊ ကုမ္မာသန္တိ- ကား၊ ယဝကုမ္မာသံ-မုယောမှုံကို၊ (ရှေးနိဿယ၊) ဝါ-မုယော ဆန်လုပ်,တဝက်ကျက်ပြုတ် ဘောဇဉ်ကို၊ [ဘောဇဉ် ငါးပါးတွင် ပါဝင်သော ဘောဇဉ်တမျိုး - ဟူလို၊] ဆဋ္ဌေတုကာမာဟောတီတိ-ကား၊ယဿာ-ကြောင့်၊ အန္တမသော - အောက်ထစ်ဆုံးအားဖြင့်၊ ဒါသကမ္မကရာနမ္ပိ-ကျွန်,အမှုလုပ် သွားတို့၏ သော်မှငင်း၊ ဂေါရူပါနမ္ပိ – နွားအပေါင်းတို့၏ သော်မှငင်း၊ [ ဝိသဒ္ဒါ ဂရဟာ၊ ရူပသဒ္ဒါသည် အတူလှည့်လည်ဘက် ဖြစ်သော သတ္တာ တို့၏ အစုကို ဟော၏၊] အပရိဘောဂါရဟော–သုံးစားခြင်းကို မထိုက်သည်၊ (ဟောတိ- ၏၊ ) [ ပူတိဘာဝေန ပရိဘောဂံ န အရဟတီတိ အပရိဘောဂါ ရဟော၊(အယုတ္တသမာသ်၊) ] တဿာ- ကြောင့်၊ (ကျွန်,အမှုလုပ်သွား, နွား အပေါင်းတို့သော်မှ သုံးစားခြင်းကို မထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) တံ-ထို မုယောဆန်လုပ် , တဝက်ကျက် ပြုတ်အပ်သောဘောဇဉ်ကို၊ ကစဝရံဝိယ– အမှိုက်ကိုကဲ့သို့၊ဗဟိ-ပြင်ဘက်၌၊ဆဋ္ဌေတုကာမာ-စွန့်လိုသည်၊ ဟောတိ-၏၊ သစေတံတို (ပဒဿ)- ၏၊ သစေ+ တေံ(တိ ပဒစ္ဆေဒေါ - ကို၊ ကာတဗ္ဗော-

ယဝကုမ္မာသံ။ ။သက္ကတ၌“ကုလ္မာသ”ဟု ရှိ၏၊ တဝက်ကျက်ရုံ ပြုတ်အပ်သော ဘောဇဉ်တမျိုးတည်း၊ မုံ့မဟုတ်ပါ၊ တဝက်ကျက်ဖြစ်သောကြောင့်ပင် တည်၌လွှန်ရုံဖြင့် သိုးရလေသည်၊ထိုကုမ္မာသကို ယဝ (မုယောဆန်) ဖြင့်လည်းလုပ်၏၊ အခြားကုလားပဲ စသည်တို့ဖြင့်လည်း လုပ်၏၊ ဤနေရာ၌ကား မုယောဆန်ဖြင့် လုပ်အပ်သော ကုမ္မာသ ကို ယူစေလို၍ “ ယဝကုမ္မာသံ ” ဟု ဖွင့်သည်၊ [ “အဒ္ဓသိန္နာစဂေါဓုမာ, အဉ္ဇေစ ဏကာဒယော၊ ကုမ္မာသဗ္ဗုတိ ကထျန္တေ”–ထောမန်မိ၊ အမရကောသ အဘိဓာန်၌ ကား“ယာဝက:,ကုလ္မာသး”ဟု ယဝဖြင့်ပြုလုပ်အပ်သော ကုမ္မာသကိုသာ ဆိုသည်၊ ပဝါရဏာသိက္ခာပုဒ် အဋ္ဌကထာ၌မူ “ ကုမ္မာသောနာမ ယဝေဟိ ကတကုမ္မာသော၊ အညေဟိ ပန မုဂ္ဂါဒီဟိ ကတကုမ္မာသော ပဝါရဏံ နဇနေတိ”ဟု ဆို၏၊ ထို့ကြောင့် ယဝကုမ္မာသ, မုဂ္ဂကုမ္မာသစသည်ဖြင့် ကုမ္မာသအမျိုးမျိုး ရှိသည်ဟု မှတ်။

မှတ်ချက် ။ ။ဏာဒိဝုတ္တိ မောဂ္ဂလ္လာန်၌ “ ကုလတိ ပဏ္ဏရတိ–ဖြန့်တတ်၏၊ ဧတိ ကုမ္မာသော”ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၍“ဘက္ခဝိသေသော–စားဘွယ် အထူး”ဟု အဘိဓေယျပြ၏၊ ရုပ်ကိုလည်း “ ကုလဓာတ် , သက်ပစ္စည်း , ရှေ့၌(မာ) လာ၊ ဓာတ္ထန် လကို ( မ ) ပြု၍ ပြီးစေသည်။ [ပဝါရဏာသိက္ခာပုဒ် ယောဇနာ၌ ကုပုဗ္ဗ မသဓာတ်ကြံ၍“ကုန္တိ တေန + မသီယတိ အာမသီယတီတိ ကုမ္မာသော” ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၏၊ ကုလဓာတ်ဖြစ်၍ ထိုအကြံကို စဉ်းစားပါလေ။]

သစေတံ။ ။သစေတံ၌ တံပုဒ် ဟု ယူလျှင် တသဒ္ဒါက အဝေးအနက်ကို ညွှန်ပြ သောကြောင့် ဤနေရာနှင့် မသင့်၊ ရှင်သုဒိန်၏ ခပ်နီးနီး ရောက်နေသော အစာကို ညွှန်ပြသော အရာဖြစ်၍ ဧတသဒ္ဒါဖြင့် ညွှန်ပြမှ သင့်မည်၊ ထို့ကြောင့်“သစေ+ ဧတံ”ဟု

ပြုထိုက်၏၊) [တော- အဲဒီဟာသည်၊ သစေ(ဟောတိ)-အံ့၊ ] ဘဂိနီတိ- ဘဂိနီ ဟူသောပ'ဒ်ဖြင့်၊ အရိယ ဝေါဟာရေန- အရိယာတို့၏ ခေါ်ဝေါ်နည်းဖြင့်၊ ဉာတိဒါသိ'-ဆွေမျိုးတို့၏ ကျွန်မကို၊ အာလပတိ-ခေါ်၏၊ [အရိယာတို့သည် မာတုဂါမကို "ဘဂိနီ" ဟုခေါ်လေ့ရှိ၏၊ ရှင်သုဒိန်လည်း ထိုအသုံးအနှုန်း လိုက်၍ ခေါ်သည် - ဟူလို၊ ] ဆန္ဒနိယဓမ္မန္တိ - ကား၊ ဆန္ဒေတဗ္ဗသဘာဝံ- စွန့်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ဟူသော သဘောရှိသည်၊ ( သစေ ဟောတိ၊ ) ဣဒံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ (ကိံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ )ဘဂိနိ- နှမ၊ တော-အဲဒီဟာသည်၊ ဗဟိ- အိမ်ပြင်ဘက်၌၊ဆန္ဒနိယဓမ္မံ-စွန့်ထိုက်သည်၏အဖြစ်ဟူသော သဘောရှိသည်၊ နိသဋ္ဌပရိဂ္ဂဟံ - စွန့်လွှတ်အပ်သော သိမ်းပိုက်ခြင်းရှိသည်၊ သစေ (ဟောတိ)- အံ့၊(ဧဝံသတိ၊)တော-အဲဒီဟာကို၊မေ-၏၊ ဣမ ပတ္တေ-၌သပိတ်၌၊ အာကိရ- လောင်းထည့်ပါလော၊ ဣတိ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ (ဝုတ္တံ ဟောတိ။)

ပန- ပရိဟာရပက္ခမှတပါး, စောဒကပက္ခကို ဆိုဦးအံ့၊ ဧဝံ - သို့၊ ဝတ္တုံ- ဆိုခြင်းငှါ၊ ဝါ - ဆိုခွင့်ကို၊ လဗ္ဘတိကိံ - ရအပ်ပါသလော၊ ဝိညတ္တိဝါ- တောင်းခြင်းသည်သော်ရှင်း၊ ပယုတ္တဝါစာဝါ-ပစ္စည်းနှင့်စပ်သော ပရိယာယ် စကားသည်သော်ရှင်း၊နဟောတိကိံ-မဖြစ်ပါသလော၊ဣတိ-၌ကား အမေး တည်း၊ ( ဝိညတ္တိဝါ - သည်ရှင်း၊ ပယုတ္တဝါစာဝါ - သည်ရှင်း၊ ) နဟောတိ- မဖြစ်ပါ၊ (ဣတိ-တည်း၊) ကသ္မာ-ကြောင့်နည်း၊ နိသဋ္ဌပရိဂ္ဂဟတ္တာ-စွန့်လွှတ် အပ်သော သိမ်းပိုက်ခြင်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ( ငါ့ဟာ ငါ့ဟာဟု သိမ်းပိုက်ခြင်းကို စွန့်လွှတ်ပြီး၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ) ဟိ - ချဲ့၊ ( တနည်း )

ပဒစ္ဆေဒသံဝဏ္ဏနာကို ပြသည်။ [ စွန့်ပစ်ဘို့ရာ သေချာပြီး ဖြစ်သော်လည်း မေးသော ပုဂ္ဂိုလ်ကမူ မသေချာသေးသည့် အနေအားဖြင့်သာ မေးသင့်သောကြောင့်"သစေ"ဟု ပရိကပ္ပဇောတကနိပါတ်ထည့်၍ မေးသည်။ ]

**ဆန္ဒနိယသဘာဝံ။** ။ဓမ္မသဒ္ဒါ၏ သဘာဝအနက်ဟောကြောင်းပြလို၍"သဘာဝံ" ဟု ဖွင့်သည်၊ ဆန္ဒေတဗ္ဗောတိ ဆန္ဒနိယော (ကုမ္မာသော၊) ဤသို့ ဆန္ဒနိယအရ စွန့်ပစ် ထိုက်သော ကုမ္မာသ ရ၏၊ ဓမ္မ (သဘာဝ) အရကား စွန့်ပစ်စရာကောင်းလေဒံ့အောင် သိုးနေခြင်းသဘော ရ၏၊ ထို့ကြောင့် ဓမ္မနှင့် အရတူအောင် " ဆန္ဒနိယ " ၌ ဘာဝ ပုဒ်အကြေကြံပါ ၊တနည်း — ဘာဝပ္ပဓာန ကြံ၁ါ၊ ဆန္ဒနိယော ( စွန့်ပစ်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ဟူသော ) + ဓမ္မော ယဿာတိ ဆန္ဒနိယဓမ္မံ၊ မည်သည့်အရာဝတ္ထု ဟု နာမည် မတပ်ဘဲ သာမညဖြစ်၍ (တော ဟု) နပုလ္လိင်ချသည်၊ အမှန်မှာ—ဂုမ္မာသောပင်တည်း။

**နိသဋ္ဌပရိဂ္ဂဟံ။** ။ဥစ္စာရှင်က (ငါ့ဥစ္စာ ဟု ) သိမ်းပိုက်မှုကို ပရိဂ္ဂဟ ဟု ခေါ်၏၊ "နိသဋ္ဌော+ပရိဂ္ဂဟော ယဿ ( ဝတ္ထုဿ ) တိ နိသဋ္ဌပရိဂ္ဂဟံ—စွန့်လွှတ်အပ်သော သိမ်းပိုက်ခြင်းရှိသော (ငါ့ဥစ္စာ ဟု သိမ်းပိုက်မှုမှ စွန့်လွှတ်ထားသော) ဝတ္ထု။

ဟိ (ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ ယံ-အကြင်ဝတ္ထုသည်၊ ဆန္ဒနီယမမွံ-စွန့်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ဟူသော သဘောရှိ၏၊ နိသဋ္ဌပရိဂ္ဂဟံ-စွန့်လွှတ်အပ်သော သိမ်းပိုက်ခြင်း ရှိ၏၊ ယတ္ထ – အကြင်ဝတ္ထု၌၊ သာမိကာ – ဥစ္စာရှင်တို့သည်၊ အနာလယာ– တွယ်တာခြင်းမရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ တံ သဗ္ဗံ-ထို အလုံးစုံသောဝတ္ထုကို၊ (ဝတ္ထုံ၌စပ်၊ ) ဒေထ - ပေးကုန်လော၊ အာဟရထ – ဆောင်ခဲ့ကုန်လော၊ ဣမ- ဤသပိတ်၌၊ အာကိရထ - လောင်းထည့်ကုန်လော၊ ဣတိ-သို့၊ ဝတ္တုံ– ဆိုခြင်းငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ-အပ်၏၊ တထာဟိ-ထို စကားမှန်၏၊ အဂ္ဂအရိယဝံသိကော- အရိယဝံသအကျင့်ကိုဖြည့်ကျင့်သူတို့တွင် အမြတ်ဆုံးဖြစ်သော၊ [ အရိယဝံသ ပဋိပတ္တိပူရကာနံ အဂ္ဂေါဥတ္တမော၊အရိယဝံသံ-အရိယာတို့၏အနွယ်ဖြစ်သော အကျင့်ကို၊ ပူရေတီတိ အရိယဝံသိကော၊ အရိယဝံသိကာနံ + အဂ္ဂေါ အဂ္ဂ အရိယဝံသိကော-ဟု ပြု၊ ] အာယသ္မာ ရဋ္ဌပါလော ဝိ-အရှင် ရဋ္ဌပါလသော်မှ လည်း၊ ဆန္ဒနီယမမွံ – စွန့်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ဟူသော သဘောရှိသော၊ ကုမ္မာသံ – မုယောဆန်လုပ် , တဝက်ကျက်ပြုတ် ဘောဇဉ်ကို၊ မေ - ငါ၏၊ ဣမပတ္တေ - ၌၊ အာကိရ - လော၊ ဣတိ - သို့၊ အဝစ- ပြောဘူးပြီ၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ( ဆန္ဒနီယမမ္မ, နိသဋ္ဌပရိဂ္ဂဟ , အနာလယဖြစ်သော ထို အလုံးစုံ သောဝတ္ထုကို ပေးကုန်လော, ဆောင်ခဲ့ကုန်လော, ဤသပိတ်၌ လောင်းထည့် ကုန်လောဟု ပြောကောင်းသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ) ဝေရူပံ- ဤသို့ သဘော ရှိသော၊ ဆန္ဒနီယမမွံ-သော၊ ယံ-အကြင်ဝတ္ထုသည် (အတ္ထိ)၊ အညံ-အခြား သော၊ အပရိဂ္ဂဟိတံ - တစုံတယောက်သည် မသိမ်းပိုက်အပ်သော၊ ဝနမူလ ဖလ ဘေသဇ္ဇာဒိကံ-တောသစ်မြစ်, သစ်သီး, ဆေး အစရှိသော၊ (ယံ)ဝါ- အကြင်ဝတ္ထုသည်လည်း၊ (အတ္ထိ )တံသဗ္ဗံ-ထို အလုံးစုံသောဝတ္ထုကို၊ ယထာ သုခံ - ချမ်းသာသည့်အားလျော်စွာ၊ ဝါ - အလိုရှိတိုင်း၊ အာဟရာပေတွာ- ဆောင်စေ၍၊ ပရိဘုဉ္ဇိတဗ္ဗံ - သုံးဆောင်ကောင်း၏၊ [ "ယထာသုခံ၊ပေ၊ဘုဉ္ဇိ တဗ္ဗံ " ဟု ဆိုသော်လည်း ကပ္ပိယကာရကလူနှင့် သာမဏေများကိုသာ ခိုင်း ကောင်းသည်၊ ကုဋိကာရသိက္ခာပုဒ် အဖွင့် ကြည့်ပါ၊ ] နကုက္ကုစ္စာယိတဗ္ဗံ- ကုက္ကုစ္စကို မပြုထိုက်၊ [ ကုက္ကုစ္စနောင် အာစာရအနက်၌ အာယပစ္စည်း၊]

ဝိညတ္တိဝါ ပယုတ္တဝါစာဝါ။ ။"အာကိရ–ထည့်လိုက်ပါ"ဟူသောစကားသည် "ဝိညတ္တိ– တောင်းမှု" စကား ဖြစ်၏၊ " သစေ ဆန္ဒနီယမမွံ" ဟူသော စကားကား ပေးချင်လာအောင် ပြောသောကြောင့်"ပယုတ္တဝါစာ"သဘော သက်ရောက်၏၊ဉာတိ ပဝါရိတ မဟုတ်သူ၏ အထံ၌ ထို ၂ မျိုးလုံး မပြောကောင်းသောကြောင့် " ကံ°ပန " စသည်ဖြင့် ပုစ္ဆာထုတ်၍ " ဥစ္စာရှင်က စွန့်ပစ်ဘို့ သေချာ၍ မသိမ်းပိုက်တော့သော ကြောင့် ဝိညတ္တိ – ပယုတ္တဝါစာ မဖြစ်ပါ"ဟု ဖြေသည်။

ဟတ္ထာနန္တိ-ကား၊ ဘိက္ခာဂ္ဂဟဏတ္ထံ-ဆွမ်းကို ခံယူခြင်းအကျိုးငှါ၊ ပတ္တံ-ကို၊ ဥပနာမယတော-ကပ်၍ ညွှတ်စေစဉ်၊ ဝါ-ကပ်၍ညွှတ်စေသော၊(အာယသ္မတော သုဒိန္နဿ - ၏၊) မဏိဗန္ဓတော - လက်ကောက်ဝတ်မှ၊ ပဘုတိ-စ၍၊ ဒိဋ္ဌမတ္တံ-နှစ်ဘက်လည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ဟတ္ထာနံ - လက်တို့၏ငှင်း၊ ပါဒါနန္တိ-ကား၊ နိဝါသနန္တတော-သင်းပိုင်အဆုံးမှ၊ ပဋ္ဌာယ—၍၊ ဒိဋ္ဌမတ္တံ-နှ်သော၊ ပါဒါနံ - တို့၏ငှင်း၊ သရဿာတိ-ကား၊ သစေတံ ဘဂိနီတိ-ဟူ၍၊ ဝါစံ-ကို၊နိစ္ဆာရယတော-မြွက်ဆိုသော၊ (အာယသ္မတော သုဒိန္န ဿ-၏၊) သရဿစ-အသံ၏ငှင်း၊ နိမိတ္တံ အဂ္ဂဟေသီတိ-ကား၊ ဂိဟိကာလေ-လူဖြစ်စဉ်အခါ၌၊ သလ္လက္ခိတပုဗ္ဗံ- ရှေး၌ မှတ်သားအပ်ပြီးသော၊ အာကာရံ - အခြင်းအရာကို၊ [ လက် ခြေ နေပုံ စကားပြောပုံ အခြင်းအရာကို၊] အဂ္ဂဟေသိ-ယူပြီ၊ သဉ္ဇာနိ-ကောင်းစွာ သိပြီ၊ သလ္လက္ခေသိ-မှတ်သားပြီ၊ ဟိ-မှန်၊ (တနည်း) ဟိ (ယသ္မာ) - ကြောင့်၊ သုဒိန္နော – အရှင်သုဒိန်သည်၊ ဘဂဝတော-၏၊ ဒွါဒသမေ ဝဿေ-တဆဲ့နှစ်ဝါမြောက်၌၊ ပဗ္ဗဇိတော - ရှင်ရဟန်းပြုခဲ့ပြီ၊ ဝီသတိမေ ဝဿေ- အဝါ ၂၀ မြောက်၌၊ သယံ-ကိုယ်တိုင်၊ ပမ္ဗဇ္ဇာယ-ရှင်ရဟန်းအဖြစ်ဖြင့်၊ အဋ္ဌဝဿိကော-ရှစ်ဝါရှိသည်၊ဟုတွာ-၍၊ ဉာတိကုလံ-ဆွေမျိုးအိမ်သို့၊ ပိဏ္ဍာယ-ငှါ၊ ပဝိဋ္ဌော-ဝင်ပြီ၊ တေန-ကြောင့်၊(ရှစ်နှစ်ကြာမှ ဆွမ်းခံဝင်လာသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊) နံ-ထို အရှင်သုဒိန်ကို၊ သာ ဉာတိဒါသီ-သည်၊ ဒိသွာဝ-မြင်၍သာလျှင်၊ ဝါ-မြင်လျှင်မြင်ခြင်း၊ န သဉ္ဇာနိ-ကောင်းစွာမသိ၊ ဝါ-မမှတ်မိ၊ နိမိတ္တံပန-ရှေး၌ မှတ်သားအပ်သောအခြင်းအရာကိုကား၊အဂ္ဂဟေသိ-ပြီ၊ဣတိ-သို့ မှတ်အပ်၏။

သုဒိန္နဿ မာတရံ ဧတဒဝေါစာတိ-ကား၊ အတိဂရုနာ-လူ့ဘောင်တန်းကပင် အလွန် လေးစားအပ်သော၊ ပဗ္ဗဇ္ဇူပဂတေန-ယခုအခါ ရဟန်းအဖြစ်သို့ ကပ်ရောက်နေသော၊ သာမိပုတ္တေန–အရှင့်သားနှင့်၊ သဒ္ဓိံ – ကွ၊ ဘန္တေ-ရား၊ တွံ- အရှင်သည်၊ မေ–တပည့်တော်၏၊ အယျော သုဒိန္နော နုခေါ-အရှင် သုဒိန်ပါလော၊ ဣတိ အာဒိဝစနံ - ဤသို့ အစရှိသောစကားကို၊ ဝတ္တုံ - ငှါ၊ အဝိသဟန္တီ- မရဲဝံ့သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဝေဂေန - လျင်မြန်စွာ၊ ဃရံ - သို့၊ ပဝိသိတွာ-၍၊ သုဒိန္နဿ—၏၊ မာတရံ- ကို၊ ဧတံ- ကို၊ အဝေါစ-ပြီ၊ ယဘ္ဃေတိ- ယဘ္ဃေ ဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ အာ ရာစနတ္ထေ-ပြောခြင်းအနက်၌၊(ပဝတ္တော-သော၊)နိပါတော - တည်း၊ [ " ယဘ္ဃေ - ပြောပါရစေ" ဟု အနက်ပေးပါ-

နိမိတ္တံ။ ။နိပုဗ္ဗ,မိဓာတ်သည် မှတ်သားခြင်းအနက်ကိုဟော၏၊ ထို့ကြောင့်"နိမိယတိ သညာယတီတိ နိမိတ္တံ"ဟု ဋီကာပြု၏၊ ဤသို့ ကမ္မသာဓ်ပြုစေလိုသောကြောင့်ပင် "သလ္လက္ခိတပုဗ္ဗံ"ဟု တပစ္စည်းဖြင့် ဖွင့်၍ "အာကာရံ"ဟု အဘိဓေယျပြုသည်။

ဟူလို၊ ] သစေ ဇေ သစ္စန္တိ ဧတ္ထ – ၌၊ ဇေတိ – ဇေ သဒ္ဒါသည်၊ အာလပနေ– ခေါ်ခြင်း အနက်၌၊ ( ပဝတ္တော ) နိပါတော - တည်း၊ ဟိ - မှန်၊ (တနည်း) ဟိ (ယသ္မာ) -ကြောင့်၊ ဇဝံ-ဤသို့ ဇေဟူ၍၊ တသ္မိံ ဒေသေ—ထိုအရပ်၌၊ ဒါသိ ဇနံ-ကျွန်မဖြစ်သူကို၊ အာလပန္တိ-နိ၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ထိုအရပ်၌ ကျွန်မကို ဇေဟု ခေါ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊)ဘောတိဒါသိ-မ၊ တွံ-သည်၊သစ္စံ-မှန်သော စကားကို၊ သစေဘဏသိ-အကယ်၍ပြောအံ့၊ ဧတိဝံ—ဤသို့၊ ဧတ္ထ-ဤ သစေ ဇေ သစ္စံဟူသောပါ႒်၌၊ အတ္တော-ကို၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော-၏။

အညတရံ ကုဋ္ဋမူလန္တိ ဧတ္ထ - ၌၊ ( ဂုဋ္ဌတ္တံ - ကို၊ ကိရ - ထုတ်ပြဦးအံ့၊ ) (တနည်း) ကိရ(ယသ္မာ)–ကြောင့်၊ တသ္မိံ ဒေသေ - ၌၊ ဒါနပတီနံ-အလှူ ရှင်တို့၏၊ ယနေ့ရသု-အိမ်ဝင်းတို့၌၊ သာလာ - ဆွမ်းစား စရပ်တို့သည်၊ ဟောန္တိ– ရှိကုန်၏၊ စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ-ဤ ဆွမ်းစားစရပ်တို့၌၊ အာသနာနိ- နေရာတို့သည်၊ ဝါ - တို့ကို၊ ပညတ္တာနိ - ခင်းထားအပ်ပြီးကုန်သည်၊ ဟောန္တိ - နိ၏၊ ဥဒက ကဉ္ဇိယံ-သောက်ရေ သုံးရေ,ပုန်းရည်ကို [ ဥဒကဉ္စ + ကဉ္ဇိယဉ္စ၊ " သောဝီရံ ကဉ္ဇိယံ ဝုတ္တံ၊"–အဘိဓာန်(၄၆၀)၊]ဥပဋ္ဌာပိတံ-တည်ထားအပ်ပြီ၊တတ္ထ–ထို စရပ်တို့၌၊ ပဗ္ဗဇိတာ– ရသေ့ရဟန်းတို့သည်၊ ပိဏ္ဍာယ - ငှါ၊ စရိတွာ - ပြီး၍၊ နိသီဒိတွာ–၍၊ ဘုဉ္ဇန္တိ – ဘုဉ်းပေးကြကုန်၏၊ ( ဒါနပတီနံ - တို့၏၊ သန္တကံ- ဥစ္စာကို၊ ဂဏှိတုံ-ယူခြင်းငှါ၊)သစေ ဣစ္ဆန္တိ-အကယ်၍ အလိုရှိကုန်အံ့၊ (ဧဝံ သတိ၊ )ဒါနပတီနံ-တို့၏၊ သန္တကမ္ပိ–ကိုလည်း၊ ဂဏှန္တိ-နိ၏၊(ယူ၍ စားသော် ကြကုန်၏၊)တသ္မာ-ကြောင့်၊ တမ္ပိ- ထို နံရံ ခြေရင်းကိုလည်း၊ အညတရဿ- မထင်မရှား တဦးသော၊ ကုလဿ - ၏၊ ဤဒိသာယ-ဤကဲ့သို့ ရှုအပ်သော၊ သာလာယ-၏၊ အညတရံ-သော၊ ကုဋ္ဋမူလန္တိ-နံရံခြေရင်း ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ- ၏၊ ဟိ-မှန်၊(တနည်း) ဟိ(ယသ္မာ) – ကြောင့်၊ ပဗ္ဗဇိတာ - တို့သည်၊ ကပဏာ မနုဿာဝိယ-အထီးကျန်မွဲ လူဆင်းရဲတို့ကဲ့သို့၊အသာရုပ္ပေ-မလျော်ပတ်သော၊

ဃရေသုသာလာ ။ ။ ဃရေသု ဧကမန္တေ ဘောဇနသာလာ ဟောန္တိ ပါကာရ ပရိက္ခိတ္တာ ( အိမ်နှင့် မရောအောင် တံတိုင်းဖြင့် ကာရံအပ်ကုန်သော )၊ သုသံဝိဟိတ ဒွါရဗန္ဓာ ( ကောင်းစွာ စီမံအပ်သော တံခါးဖွဲ့ တံခါးပေါင်ရှိကုန်သော , တံခါး တပ် ထားအပ်ကုန်သော ) သုသမ္မဋ္ဌဝါလိကင်္ဂဏာ ( ကောင်းစွာ တံမြက်လှည်းအပ်သော သဲဖြန့်ထားသောလွင်ပြင်=တလင်းပြင်ရှိကုန်သော ) ဘောဇနသာလာ ဟောန္တိ-ဋီစပ်။ [ "ဃရ" အရ အိမ်၏အနီး ဝင်း အရပ်ကို သမီပူပစာအားဖြင့် ယူစေလို၍ "ဃရေသု ဧကမန္တေ"ဟု ဖွင့်သည်။]

ဌာနေ-၌၊နိသိဒိတွာ-၍၊နဘုဥ္ဇန္တိ-ကုန်၊ ဍုတိ(တသ္မာ)-ကြောင့်၊(ဤဒိသာယ-သော၊ သာလာယ-၏၊ အညတရံ-သော၊ ကုန္ဇမူလန္တိ–ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏)။

အတ္ထိနာမ တာတာတိဧွေ–၌၊အတ္ထိတိ-ဒအတ္ထိသဒ္ဒါသည်၊ ဝိဇ္ဇမာနဧွေ-"ထင်ရှားရှိ"ဟူသောအနက်၌၊(ပဝတ္တော နိပါတော)၊နာမာတိ-နာမသဒ္ဒါသည်၊ ပုစ္ဆနဧွေ-၌၎င်း၊ မညနဧွေစ-မှတ်ထင်ခြင်းအနက်၌၎င်း၊ (ပဝတ္တော-သော၊) နိပါတော-တည်း၊ ဟိ- ထင်ရှားအောင်ပြဉ္ုးအံ့၊ (တနည်း) ဟိ-ချဲ့၊ ဍုဒံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊(ကိံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊)တာတသုဒိန္န-ချစ်သားသုဒိန်၊ ယေသံ နော– အကြင်ငါတို့၏၊ (ပုတ္တော– သော၊) တုံ–သည်၊ [ယေသံနော ပုတ္တော တွံ၊]ဤဒိသေ-ဤကဲ့သို့ ရှုအပ်သော၊ ဌာနေ-သုတပါးပိုင်အရပ်၌၊ နိသိဒိတွာ-၍၊ အာဘိဒေါသိကံ–သော၊ ကုမ္မာသံ- ကို၊ ပရိဘုဥ္ဇိဿသိ - သုံးဆောင်ဘိ၏၊ (တေသံ)အမှာကံ-တို့၏၊ဝါ–တို့မှာ၊ဓနံ–သည်၊ အတ္ထိနုခေါ်-ရှိသည် မဟုတ်ပါလော၊မယံ-တို့ကို၊ နိဒ္ဓနာတိ-ဥစ္စာမရှိသူတို့ဟူ၍၊ န ဝတ္တဗ္ဗာ–မဆိုထိုက်ပါကုန်၊ တထာ - သည်သာမကသေး၊ တာတသုဒိန္န - ဒိန်၊ ယေသံခနော- တို့၏၊ (ပုတ္တော-သော၊)တွံ-သည်၊ဤဒိသေ-သော၊ ဌာနေ-၌၊နိသိဒိတွာ-၍၊အာဘိ

နဟိ။ ။"ကုန္ဇမူလံ" အရ သာမညဖြစ်သော နံရံအခြေကိုမယူဘဲ အဘယ့်ကြောင့် ဤသို့ ကျနစွာ ဆောက်လုပ်ထားအပ်သော ဆွမ်းစားစရပ်၏ နံရံအခြေကိုသာ ယူရသနည်း–ဟု မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် "နဟိ" စသည်ခိန့်၊ [နဟိတက်ရာ, ဟိနက်မှာ, ဟိတ်ပါဒဋ္ဌိစွဲ" နှင့်အညီ နောက်၌ ဍုတိပါရှိသောကြောင့် ဟိကို ဟိတ်အနက်စွဲရသည်၊ ဟိတ်အနက် စွဲစေလိုသောကြောင့်ပင် ဋီကာ၌ "ကသ္မာပန ဤဒိသာယမေဝ သာလာယ အညတရံ ကုန္ဇမူလန္တိ အဃမဗ္ဗော ဝုတ္တော" ဟု ပုစ္ဆာဖြင့် ကျမ်းတက်ပြသည်။]

ဍုဒံဟိ ဝုတ္တံ ဟောတိ ။ ။ ဤဝါကျမျိုးကို အခြားနေရာ၌ ဥဇုကတ္ထ (အဖြောင့်အနက်ကို ဖွင့်ပြသော) တပ္ပါကဋ္ဌိကရဏဝါကျဟု ဆိုကြ၏၊ ဤ၌လည်း သခင္ဘေးကြီး၏ ဆိုလိုရင်းကို ထင်ရှားပြသောကြောင့် တပ္ပါကဋ္ဌိကရဏဝါကျလည်း သင့်၏၊ အကျယ်ပြသောကြောင့် ဝိတ္ထာရဝါကျလည်း ဆိုသင့်၏။

အတ္ထိနုခေါ ။ ။ နုသဒ္ဒါ ပုစ္ဆနဧွေ၊ ခေါသဒ္ဒါ ဝစနသိလိဋ္ဌတာယ ဝုတ္တော၊ ဤအလို "အတ္ထိနု– ရှိသည်မဟုတ်ပါလော" ဟု ပေး၊ နုခေါတိဝါ နိပါတသမုဒါယော (နိပါတ် ၂ ခု အပေါင်း) ပုစ္ဆနဧွော၊ ဤအလို "အတ္ထိနုခေါ– လော"ဟု ပေး၊ တေန နာမသဒ္ဒဿ (အတ္ထိနာမ၌ နာမသဒ္ဒါ၏) ပုစ္ဆနတ္ထတံ ဒဿေတိ။

ဤဒိသေဌာနေ။ ။ "ဒီလိုနေရာမျိုး" ဟူသောစကားသည် နေရာကို မကျေနပ်သောစကားတည်း၊ ထိုနေရာသည် ရဟန်းများအတွက် လျော်ပတ်သော်လည်း သခွေး သားတယောက်အတွက်မှာ သုတပါးပိုင်စရပ်ဖြစ်၍ မလျောက်ပတ် – ဟု ဆိုလိုသည်၊ ထို့ကြောင့်ပင်"နနုနာမ၊ပေ၊သကံဂေဟံ ဂန္တ္တုံ"ဟု (ပါဠိတော်၌) ဆက်၍ ပြောသည်။

ဒေါသိကံ - သော၊ ကုမ္မာသံ - ကို၊ ပရိဘုဉ္ဇိဿသိ - သုံးဆောင်ဘိ၏၊ (တေသံ) အမ္မာကံ–တို့၏၊ ဝါ-တို့မှာ၊ ဇီဝိတံ- အသက်သည်၊ အတ္ထိနုခေါ-ရှိသေးသည် မဟုတ်ပါလော၊ မယံ-တို့ကို၊ မတာတိ-သေကုန်ပြီဟူ၍၊ န ဝတ္တဗ္ဗာ-ပါကုန်။

တထာ- ထိုမှတပါး၊ (ပုန္နနတ္တမှတပါး, မညနတ္တကား၊ ) တာတသုဒိန္န-ဒိန်၊ ယံတွံ – သည်၊ သုဘောဇနရသ သံဝနိတော – ကောင်းသောဘောဇဉ် အရသာတို့ဖြင့် ကြီးပွားစေအပ်သည်၊ (သမာနော) ပိ -ဖြစ်ပါလျက်လည်း၊ ဇိဂုစ္ဆနေယျံ - စက်ဆုပ်ခြင်းကို ထိုက်သော (အရဟတိတဒ္ဓိတ်)၊ ( တနည်း ) ဇိဂုစ္ဆနီယံ- စက်ဆုပ်ထိုက်သော (အနီယပစ္စည်း)၊ အာဘိဒေါသိကံ– သော၊ ဠမ်ကုမ္မာသံ-ကို၊ အခတမိဝ-အမြိုက်သုဓာကိုကဲ့သို့၊ နိဗ္ဗိကာရော- ဖေါက်ပြန်ခြင်းမရှိသည်၊ ဝါ- ရွံရှာခြင်းမရှိသည်၊ (ဟုတွာ)၊ပရိဘုဉ္ဇိဿသိ-သုံးဆောင်ဘိ၏၊ (တဿ) တဝ-ထို သင်၏၊ အဗ္ဘန္တရေ-အတွင်း၌၊ သာသနံ-သာသနာတော်ကို၊ နိဿာယ–မှီ၍၊ ပဋိလဒ္ဓေါ–ရအပ်သော၊ သမဏဓမ္မော– ရဟန်းတို့၏ ဂုဏ်အကျင့်သည်၊ အတ္ထိမညေ–ရှိနေ၏ဟု ထင်၏၊ ဣတိ-ဤအနက်သည်၊ ဝါ - ကို၊ (ဝုတ္တံ ဟောတိ၊) ပန - ထိုသို့ပင် ဤအနက်ကျယ်ကို ဆိုလိုပါသော်လည်း၊ သော ဂဟပတိ- ထို အိမ်ရှင်သူကြွယ်သည်၊ ဒုက္ခာဘိတုန္နတာယ-စိတ်ဆင်းရဲခြင်းသည် နှိပ်စက်အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ တေမတ္တံ - ဤအနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊ ပရိပုဏ္ဏံ- ပြည့်စုံသည်ကို၊ ဝါ-အောင်၊ ကတွာ-၍၊ ဝတ္တုံ-ဆိုခြင်းငှါ၊ အသက္ကောန္တော-မစွမ်းနိုင်သည်၊ (ဟုတွာ - ၍၊) အတ္ထိနာမ၊ပေ၊ပရိဘုဉ္ဇိဿသီတိ-ဟူ၍၊ ဧတ္တကမေဝ-ဤမျှလောက်ကိုသာ၊ အဝေါစ-ပြောနိုင်ရှာပြီ။

တထာ။ ။အညေနပိပကာရေန နာမသဒ္ဒဿ ပုန္နနတ္တမေဝ ဒဿေန္တော အာဟ-တထာ အတ္ထိနုခေါ တာတာတိ အာဒိ၊ တထာတိ သမုစ္စယတ္ထော ( ရှေးအနက်ကို ဆည်းခြင်းအနက်ရှိ၏)၊ ထို့ကြောင့် "သည်သာမကသေး"ဟု အနက်ပေးရသည်။

တထာ အတ္ထိမညေ။ ။ဣဒါနိ နာမသဒ္ဒဿ မညနတ္တံ ( ပြခဲ့သော ၂ နက်တွင် မညနအနက် ရှိသည်၏အဖြစ်ကို) ဒဿေန္တော အာဟ–တထာ အတ္ထိမညေတိ အာဒိ၊ ဤနည်း၌ကား တထာသဒ္ဒါသည် ပက္ခန္တရဇောတကတည်း။

သောပန ။ ။ ဤကဲ့သို့ အကျယ်ဖွင့်ပြအပ်သော အနက်ကို သဌေးကြီးဆိုလိုလျှင် အဘယ့်ကြောင့် ပြည့်စုံအောင်မဆိုသနည်း–ဟု မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် "သောပန" စသည်မိန့်၊ သားကိုမြင်ရာ၌ စိတ် ဆင်းရဲလွန်းလှသောကြောင့် (ဝမ်းထည်း၌ ဆို့သလို ဖြစ်နေရကား) ပြည့်စုံစွာ မဆိုနိုင်ရှာ–ဟူလို။ [ဒုက္ခာဘိတုန္နတာယာတိ-မာနသိကေန ဒုက္ခေန အဘိပိဠိတတ္တာ။]

ပန-ဝါဒန္တရကား၊အက္ခရစိန္တကာ-အက္ခရာပုဒ်ပါဌ်ကို သိတတ်ကုန်သော သဒ္ဒါဆရာတို့သည်၊ ဧတ္ထ-ဤအတ္တိနာမအစရှိသော ဝါကျ၌၊ ဇှမ်လက္ခဏံ-၌ အမှတ်အသားကို၊ ဝဒန္တိ-န်၏(ကိံ)၊အနောကပ္ပနာမရိသနတ္ထဝသေန-မယုံကြည်ခြင်းအနက်, သည်းမခံနိုင်ခြင်း အနက်၏ အစွမ်းဖြင့်၊ အတ္တိနာမသဒ္ဒေ-အတ္တိနာမသဒ္ဒါဟူသော၊[အတ္တိသဒ္ဒေ-ဟုလည်း မူကွဲရှိ၏၊]ဥပပဒေ-အနီးပုဒ်သည်၊ (သတိ-ရှိလသော်၊) ပရိဘုဉ္ဇိဿသီတိ- ပရိဘုဉ္ဇိဿသိ ဟူသော၊ ဧတံ အနာဂတဝစနံ-၌ အနာဂတ်သဒ္ဒ'ကို၊ ကတံ-ပြုအပ်ပြီ၊ ဇုတိ-သို့၊(ဝဒန္တိ)၊ တဿ – ထို အတ္တိနာမ အစရှိသော ဝါကျ၏၊ အယံ - ဤ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ အတ္ထော-အဓိပ္ပါယ်အနက်တည်း၊ တာတသုဗိန္န- ဗိန်၊ အတ္တိနာမ - ရှိမှ ရှိရပလေ၊ ဝါ-ဖြစ်မှ ဖြစ်ရပလေ၊ တွံ-သည်၊ အာဘိဒေါသိကံ-သော၊ ကုမ္မာသံ-ကို၊ ပရိဘုဉ္ဇိဿသိ– သုံးဆောင်ဘိ၏၊ ဇုဒံ - ဤသို့ သုံးဆောင်ခြင်းကို၊ ပစ္စက္ခမပိ-မျက်မှောက်ဖြစ်ပါသော်လည်း၊ ဝါ-ကိုယ်တွေ့ဖြစ်ပါသော်လည်း၊အဟံ-သည်၊ န သဒ္ဒဟာမိ–မယုံကြည်နိုင်ပါ၊ န မရိသယာမိ–သည်းမခံနိုင်ပါ၊ ဇုတိ (အယံ)-ကား၊ အ တ္ထာ-တည်း။

**ဇှမ်လက္ခဏံ၊ပေ၊ ကတံတိ ။** ။ သုတ်တိုက်ရိုက် မဟုတ်၊ သုတ်၌ ဆိုအပ်သော အမှတ်အသားကိုပင် “ ဇှမ်လက္ခဏံ” ဟု ဆိုသည်၊ တိုက်ရိုက်သုတ်ကား– “ အနော ကပ္ပနာမရိသေသု အကိံဝုတ္တေဗိ”တည်း၊ [ပါဏိနိ,(၃,၃,၁၄၅)။] အနောကပ္ပနာ မရိသေသု–မယုံကြည်ခြင်း သည်းမခံခြင်း အနက်တို့ကို၊ ဂမျမာနေ–သိအပ်ကုန်သော်၊ အကိံဝုတ္တေဗိ–ကိံသဒ္ဒါဖြင့် ပြီးသော ပုဒ်ကို မဆိုအပ်သော်လည်း၊ (“ကထံဟိနာမ” စသည် မပါဘဲ, အတ္တိနာမ– စသော သဒ္ဒါကို ယှဉ်စေရာ၌လည်း၊) လိင်လုဋ်ပစ္စယာ– သတ္တမီ ဘဝိဿန္တီ ဝိဘတ်တို့သည်၊ ဟောန္တိ – န်၏၊ (သုတ်နက်)၊ ဤသုတ်အဆိုနှင့် အညီ “အတ္တိနာမ”သဒ္ဒါ၏ယှဉ်ရာဝါကျ၌ ပစ္စုပ္ပန်အနက်ဝယ် “ ပရိဘုဉ္ဇိဿသိ” ဟု အနာဂတ် ဝိဘတ်သက်ထားသည်၊ ပစ္စုပ္ပန်အနက် ဖြစ်ကြောင်းကိုလည်း “ဇုဒံ ပစ္စက္ခ မပိ”နှင့်“န သဒ္ဒဟာမိ, န မရိသယာမိ” ကြည့်၍ သိနိုင်သည်။

**ပါဌ်မှန်။** ။ ပြခဲ့သော သုတ်ကို ထောက်၍ “ အနောကပ္ပနာပရိသဟနတ္ထ” ဟု မရှိရ၊“အနောကပ္ပနာမရိသနတ္ထ”ဟု ရှိပါစေ၊ န+ဩကပ္ပန–အနောကပ္ပန (မသက်ဝင် မယုံကြည်ခြင်း)၊ ထောမနိဓိ၌ ဘူဝါဒိ စုရာဒိ “ မရိသ ” ဓာတ်သည် သည်းခံခြင်း အနက်ဟော ဟု ဆို၏၊ ထို့ကြောင့်“န သဒ္ဒဟာမိ, န မရိသယာမိ” ဟု ပါဌ်မှန်ရှိပါစေ၊ ဘူဝါဒိဆိုလျှင် “ န မရိသာမိ”လည်း သင့်၏။

**သာရတ္ထ ။** ။ အနောကပ္ပနာမရိသနတ္ထဝသေနာတိ ဧတ္ထ–အနောကပ္ပနံ အသဒ္ဒဟနံ၊အနာဂတဝစနံ-အနာဂတသဒ္ဒပ္ပယောဂေါ၊အတ္ထော ပန ဝတ္တမာနကာလိကောဝ၊ တေနာဟ–ပစ္စက္ခမပီတိ၊ နမရိသယာမီတိ–န သဟာမိ၊ ဤသို့ ပါဌ်မှန်ရှိပါစေ။

တတာယံ အာဘိဒေါသိကောတိ- ကား၊ တဝ-၏၊ တတော ဂေဟတော-မှ၊ အာဘိဒေါသိကော- သော၊ အယံ ကုမ္မာသော-ကို၊ လဒ္ဓေါ - ရအပ်ပါပြီ၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်၊ တတောယန္တိပိ - ဟူ၍လည်း၊ ပါဌော - ပါဌ်ရှိသေး၏၊ တဒါယန္တိပိ-ဟူ၍လည်း၊ ပဌန္တိ - ရွတ်ဆိုကြကုန်၏၊ တံ-ထိုတဒါယံ ဟူသော ပါဌ်သည်၊ န သုန္ဒရံ-မကောင်း၊ ယေန သကပိတု နိဝေသနန္တိ-ကား၊ ယေန-အကြင် အရပ်၌၊ သကဿ-မိမိ၏၊ ပိတု-ခမည်းတော်၏၊ အတ္တနော-၏၊ ပိတု-၏၊ (သကဿ ပိတုကို ထပ်ဖွင့်) နိဝေသနံ-အိမ်သည်၊ (အတ္ထိ - ၏၊ ) ဣတိ အတ္ထော- နက်၊ ထေရော - သည်၊ ပိတရိ - ၌၊ ပေမေနေဝ - ချစ်ခြင်းကြောင့် သာလျှင်၊ သမ္ဗဇော-လွယ်ကူစွာ ပြောဆိုအပ်သော စကားရှိသည်၊ ဟုတွာ-၍၊ အဂမာသိ-လိုက်သွားပြီ၊ အဓိဝါသေသီတိ - ကား၊ ထေရော-သည်၊ ဥက္ကဋ္ဌပိဏ္ဍပါတိကော-ဥက္ကဋ္ဌ် ပိဏ္ဍပါတ် ဓုတင်ဆောင် ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သမာနောပိ-သော်လည်း၊ကေဘဉ္စမ္ပိ-တထပ်သော ဆွမ်းကိုလည်း၊ သစေ နဂဟေဿာမိ-အကယ်၍ မခံယူအံ့၊(ဝေံသတိ၊)နေသံ-ထိုမယ်တော် ခမည်းတော်တို့၏၊ အတိဝိယ-လျှင်၊ ဒေါမနဿံ-စိတ်မချမ်းသာခြင်းသည်၊ ဘဝိဿတိ-တံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ ကြံ၍၊ ဉာတီနံ - တို့၏ အပေါ်၌၊ အနုကမ္ပာယ - သနားစောင့်ရှောက်ခြင်း (ကရုဏာ)ကြောင့်၊ အဓိဝါသေသိ-လက်ခံပြီ။

သြပုဋ္ဌာပေတွာတိ-ကား၊ဥပလိမ္ပာပေတွာ-လိမ်းကျံစေပြီး၍၊ကော် ဟိရညဿာတိဧတ္တ - ၌၊ ကဟာပဏော - ငွေအသပြာကို၊ ဟိရညန္တိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-၏၊ နာတိဒီဃော- အလွန်မရှည်သော၊ ဝါ- မမြင့်လွန်းသော၊ နာတိ

ဥက္ကဋ္ဌပိဏ္ဍပါတိကောပိ။ ။ နိဒဿနမတ္တမိဒံ—ဤစကားသည် နိဒဿနနည်းမျှသာ၊ထေရော သပဒါနစာရိကောသုပိ ဥက္ကဋ္ဌောယေဝ၊ပေ၊ဥက္ကဋ္ဌသပဒါနစာရိကတ္တာပိ သွာတနာယ ဘိက္ခံ နာဓိဝါသေတိ—လက်မခံလို၊ အထ (ထိုသို့ လက်မခံလိုလျှင်) ကသ္မာ အဓိဝါသေတီတိ (ဤသို့ မေးဘွယ်ရှိရကား) အာဟ—သစေ ကေဘတ္တမ္ပိ န ဂဟေဿာမိတိ အာဒိ၊ ပဏ္ဍိတာ ဟိ မာတာပိတူနံ အာစရိယုပဇ္ဈာယာနံ ဝါ ကာတဗ္ဗံ အနုဂ္ဂဟံ အဉ္ဇုပေက္ခိတွာ ဓုတင်္ဂသုဒ္ဓိကာ နဘဝန္တိ—ဓုတင်ဖြင့် စင်ကြယ်သူများ မဖြစ်လိုကြကုန်။

သြပုဋ္ဌာပေတွာ။ ။အဝပုဋ္ဌပုဇ်ခါတ်သည် လိမ္ပနအနက်ကိုဟော၏၊ ထို့ကြောင့် “ ဥပလိမ္ပာပေတွာ ” ဟု ဖွင့်သည်၊ ပုဇ်ခါတ်သက်သက်ကား ရာသိကရဏ ( အစုပြုခြင်း) အနက်ကိုဟော၏၊ ထို့ကြောင့် “ဒွေပုဥ္ဇေ—၂ ပုံတို့ကို”ဟု ပေးရသည်။

ဟိရညံ။ ။ဟိရညသဒ္ဒါသည် အသပြာပြုလုပ်အပ်ပြီး — မပြုလုပ်ရသေးသော ရွှေငွေ ၂ မျိုးလုံးကို ဟော၏၊ ဤနေရာ၌ကား “ သုဝဏ္ဏဿ”ဟု ပါဠိတော်၌ တွဲဘက်ရှိသောကြောင့်“ဟိရည”အတွက်ငွေဒင်္ဂါးကိုယူစေလို၍“ကဟာပဏော”ဟုဖွင့်သည်။

ရသော-အလွန်မတိုသော၊ ဝါ- မပုလွန်းသော၊ မဇ္ဈိမပ္ပမာဏော- အလယ် အလတ် ပမာဏရှိသော ယောက်ျားကို၊ [ စတုဟတ္ထော ပုရိသော မဇ္ဈိမပ္ပမာဏော၊] ပုရိသောတိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ တိရောကရဏီယန္တိ- ယံဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ ကရဏတ္ထေ-ကရိဏ်းအနက်၌၊ ဘုမ္မံ-သတ္တမီဝိဘတ်ရှိသော သဒ္ဒါတည်း၊ သာဏိပါကာရေန-အဝတ်အကာဖြင့်၊ [အဝတ်အကာကိုပင် ရှေးက " တင်းတိမ်ကန့်လန့်ကာ " ဟု ခေါ်သည်၊ ] ပရိက္ခိပိတွာ – ကာရံ၍၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်၊ အထဝါ – ကား၊ တေန - ၍ အဝတ်အကာဖြင့်၊ တိရော-ဗိလာကန့်လန့်၊ ဝါ – ခြားကွယ်အောင်၊ ကရောန္တိ - ပြုကြရကုန်၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊(ထိုသို့ခြားကွယ်အောင်ပြုကြောင်း၏အဖြစ်ကြောင့်၊)(တံ-ထို အဝတ်အကာသည်၊) တိရော ကရဏီယံ - ဏီယမည်၏၊ တံ - ထို အဝတ်အကာကို၊ ပရိက္ခိပိတွာ-ပတ်ဝန်းကျင် ပစ်ချ၍၊ ဝါ-ကာရံ၍၊ သမန္တတော-ပတ်ဝန်းကျင်၌၊ ကတွာ-ပြု၍၊ ဝါ-ကာရံ၍၊ ဣတိအတ္ထော – နက်၊ [ပရိသည် သမန္တတော အနက်ဟော၊ "ပတ်ဝန်းကျင်+ခိပ-ပစ်ချ" ဟူသည်(ကာ)ထားခြင်းတည်း။]

တေနဟိတိ-ကား၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အဇ္ဇ-ယနေ့၊ သုဒိန္နော- သုဒိန်သည်၊ အာဂမိဿတိ-လာလိမ့်မည်၊ တေနကာရဏေန-ကြောင့်၊(သုဒိန်လာလိမ့်မည် ဟူသော အကြောင်းကြောင့်၊) ဟိ ဣတိ- ဟိ ဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ ပဒပူရဏမတ္တေ-ပုဒ်၏ ပြည့်ကြောင်းမျှ၌၊(ပဝတ္တော၊)နိပါတော၊[ဟိ-ပါသောကြောင့် တေနပုဒ်၌ ရှုတ်၍ ချောမောသည်-ဟူလို၊] ဝါ-တနည်း၊ တေနာတိ အယမ္ပိ-တေနဟူသော ဤသဒ္ဒါသည်လည်း၊ ဥယျောဇနတ္ထေ-တိုက်တွန်းခြင်းအနက်၌၊(ပဝတ္တော) နိပါတောယေဝ- ပင်တည်း၊ ပုဗ္ဗဏှသမယန္တိ တွေ-၌၊ ပါဠိယံ-တော်၌၊ ကာလာရောစနံ-အချိန်လျှောက်ကြောင်း စကားကို၊(သံဂီတိကာရေဟိ)ကိဍ္ဍာပိ န ဝုတ္တံ-အကယ်၍ကား မိန့်တော်မမူအပ်ပါပေ၊ အထခေါ-ထိုသို့

**တိရော ကရဏီယံ။** ။ပဌမနည်း၌ "တိရော + ကရောန္တိ တောယာတိ တိရောကရဏီ"ဟု ပြု၍ပစ္စယန္တဧ္ဂတ္တလိန်ပုဒ်ဟု ဆိုလို၏၊ ထို့ကြောင့် နာဝိဘတ်ဖြင့် "တိရောကရဏီယာ" ဟု ဆိုလိုလျက် သို့ံဝိဘတ်သက်ထားကြောင်း, သို့ံကို (ဗုတ္တိယံကဲ့သို့) ယံ ပြုထားကြောင်း သိစေလို၍ "ကရဏတ္ထေ ဘုမ္မံ"ဟုဖွင့်သည်၊ ကရဏီယံဝယ် "ကရဏီ" ဟု ဏီ၌ ရဿရှိစေ၊ အထဝါတက်သော ဒုတိယနည်း၌ကား "အနီယ " ပစ္စည်းဖြင့် "တိရောကရဏီယံ"ဟု နပုလ္လိန်ပုဒ်ရင်းတည်း၊ "ဏီ"ဟု ဒီဃရှိစေ။

**တေနဟိ** ။ ။ ပဌမနည်း၌ တေနသည် နိယမဝါစက သဗ္ဗနာမ်ပုဒ်၊ ( ဟိ ) သာ နိပါတ်၊ ဒုတိယနည်းဝယ် အယမ္ပိ၌ ပိဖြင့် ဟိသာ နိပါတ်ဖြစ်သည် မဟုတ်သေး၊ တေနလည်း နိပါတ်ပင်ဖြစ်သည်—ဟု ပေါင်းသည်၊ အနက်ပေးသော အခါ နိပါတ် ၂ ခုတွဲ၍ "တေန×ဟိ—တိုက်တွန်းပါ၏"ဟု ပေး။

မိန့်တော် မမူအပ်ပါသော်လည်း၊ ["ကာလော တာတသုဒိန္န,နိဋ္ဌိတံ ဘတ္တံ" ဟု ပါဠိတော်မှာ မိန့်တော်မမူအပ်သော်လည်း- ဟူလို၊] ကာလေ- အချိန်ကို၊ အာရောစိတေယေဝ-လျှောက်အပ်သော်သာ၊ အဂမာသိ-သွားပြီ၊ ဉာတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

ဉာဒံ တေ တာတာတိ-ဟူသော စကားကို၊ ဒွေ ပုဉ္ဇေ-ငွေပုံ ရွှေပုံ ၂ ပုံတို့ကို၊ ဒဿေန္တော-ပြလျက်၊ အာဟ-ပြောပြီ၊မာတုဘတ်-ကား၊ ဇနေတ္တိယာ-အမိရင်း၏၊ မတ္တိကန္တိ-ကား၊ မာတိတော- အမိမှ၊ အာဂတံ- လာသော ဥစ္စာတည်း၊ ဉာဒံ - ဤ ဥစ္စာတွေသည်၊ တေ-၏၊ မာတာမဟိယာ - အဖွားသည်၊ ဝါ-က၊ (ဒိန္နံ-၌စပ်၊) ဉာမံ ဂေဟံ-သို့၊ အာဂစ္ဆန္တိယာ - လိုက်လာသော၊ မာတု-အမိအား၊ဒိန္နံ-ပေးအပ်သော၊ ဝါ- လက်ဖွဲ့အပ်သော၊ ဓနံ-တည်း၊ ဉာတိအဆွော၊ ဉာတ္တိကာယ ဉာတ္တိဓနန္တိ-ဟူသောစကားကို ဟီဠေန္တော-ဥစ္စာကို ရှုံ့ချလိုသည်၊ (ဟုတ္ဝာ)၊ အာဟ- ပြီ၊ ဉာတ္တိကာယနာမ - ဉာတ္တိကာယမည်သော၊ ဉာတ္တိပရိဘောဂါနံ ယေဝ - မိန်းမတို့၏ အသုံးအဆောင်သာလျှင် ဖြစ်ကုန်သော၊ နှာန စုဏ္ဏာဒီနံ- ရေချိုးဘိုရာ ဆပ်ပြာမှုန့် အစရှိသည်တို့၏၊ အတ္ထာယ - အကျိုးငှါ၊

ဇနေတ္တိယာ။ ။မွေးစားမိခင်ကို တားမြစ်လို၍ "ဇနေတ္တိယာ" ဟု ဖွင့်သည်၊ "ဇနေတိ – ဖြစ်စေတတ် မွေးတတ်၏၊ ဣတိ ဇနေတ္တိ" ဟု ပြု၊ သဒ္ဒါတ၌ ဇနဓာတ် ကာရိတ် ဏယ, တြိစ် ပစ္စည်းဖြင့် "ဇနယတြိ—အဘ" ဟု ဖြစ်၏၊ ဣတ္ထိဇောတက ဤ ပစ္စည်းထပ်သက်လျှင် "ဇနယတြီ—အမိ"ဟု ဖြစ်၏၊ ပါဠိ၌ ဏေပစ္စည်း, တိပစ္စည်း၊ ရ် အစား ဒွေဘော်လာ၍ "ဇနေတ္တိ – အမိ" ဟု ဖြစ်၏၊ တ်ပစ္စည်းက သဘာဝ ဣတ္ထိ ဝါစက ဖြစ်၍ (ဤ) ပစ္စည်းလည်း သက်ဘွယ်မလို။

မာတိတော အာဂတံ။ ။မတ္တိကံ၏ ဝိဂ္ဂဟတည်း၊ "မာတိတော+ အာဂတံ မတ္တိကံ"ဟု ပြုပါ—ဟူလို၊ အာဂတအနက်၌ ဏိကသက်, တ ဒွေဘော်လာ, မာ၌ ရဿပြု၊ ဤ မာတိတော၌"မာတာ"ဟူသည် သုဒိန်၏အမိ မဟုတ်၊ သုဒိန်အမိ၏ အမိ(အဖွား)တည်း၊ ထို့ကြောင့်"ဉာဒံ တေ မာတာမဟိယာ ဒိန္နံ ဓနံ"ဟု အဖြောင့်ဖွင့်၏၊ ထို အဖွားက "ဘယ်တုန်းက ပေးလိုက်အပ်သနည်း" ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ "မာတု ဉာမံ ဂေဟံ အာဂစ္ဆန္တိယာ"ဟု ထပ်၍ဖွင့်သည်။

ဟီဠေန္တော။ ။မိန်းမဘာဝကိုရှုံ့ချခြင်းမဟုတ်၊ ဥစ္စာ၏ မကြီးကျယ်ကြောင်း ရှုံ့ချခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ဟီဠေန္တော" ထောက်၍ "ဉာတ္တိကာယနာမ—ယုတ်ညံ့သော မိန်းမ၏မည်သည်"ဟု အနက်ပေး မမှားစေသင့်။

ဉာတ္တိကာယ နာမ။ ။ဉာတ္ထိကာယကိုပင် "ဉာတ္တိပရိဘောဂါနံ ယေဝ၊ အတ္ထာယ"ဟု ဖွင့်၏၊ "ဉာတ္တိကာယာတိ-ဟူသည်ကား"ဟု ဉာတိဖြင့်တည်သော သံဝဏ္ဏနာမျိုးတည်း၊ ထို အဖွင့်ကို ကြည့်၍ "ဉာတ္တိယာ + သန္တကာနိ ဉာတ္တိကာနိ" ဟု သန္တကတဒ္ဓိတ် ပြု၊ က ပစ္စည်း၊ တဒ္ဓိတ်သမာသ်မှုဒါန်အနက်၌ သက်သော ( သ ) ကို အာယပြု၍ "ဉာတ္တိ

လဒ္ဓံ- ရအပ်ခဲ့သော၊ ခနံ- သည်၊ ကိတ္တကံ - အဘယ်မျှ အတိုင်းအရှည်ရှိသည်၊ ဘဝေယျ - ဖြစ်သနည်း၊ တဿာပိ - ထိုဥစ္စာ၏လည်း၊ ပရိမာဏံ - အတိုင်းအရှည်ကို၊ တာဝပဿ-ကြည့်ပါဦးလော့။

အထဝါ-ထို့ပြင်တနည်းကား၊ တာတသုဒိန္န-ဒိန်၊ ဧဒံ-ဤငွေနှင့်ရွှေ ဥစ္စာတွေသည်၊ တေ-၏၊ မာတု-အမိ၏၊ ခနံ- တည်း၊ တဥ္စ- ထို ဥစ္စာသည်လည်း၊ မတ္တိကံ - သင့်မိခင်၏ ဥစ္စာတည်း၊[မယာ - ငါခမည်းတော်သည်၊ နဒိန္နံ - ပေးအပ်သောဥစ္စာမဟုတ်၊ တဝ - ၏၊ မာတုယောဝ - ၏သာလျှင်၊ သန္တကံ-ဥစ္စာတည်း၊ ဧတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊] ပန-ဆက်၊ တံ ဓေတံ - ထိုဥစ္စာသည်၊ ကသိယာ-လယ်ထွန်ခြင်းအားဖြင့်၊ န သမ္ဘူတံ - ဖြစ်သည်လည်းမဟုတ်၊ ဝါဏိဇ္ဇာယ-ကူးသန်းရောင်းဝယ်ခြင်းအားဖြင့်၊ န သမ္ဘူတံ-မဟုတ်၊ အပိစခေါ- အဟုတ်ကား၊ ဉာတ္တိကာယ-မိန်းမသား၏၊ ဉာတ္တိခနံ- မိန်းမ၏ဥစ္စာတည်း၊ ဉာတိကုလ

ကာယ" ဟု ဖြစ်၏၊ " ရေချိုးဘို့ ဆပ်ပြာ, သနပ်ခါး, ပန်းမာလ်ဘိုးမျှဖြစ်သော ဥစ္စာတွေပင် ဘယ်လောက်များနေသည်ဆိုတာ ကြည့်စမ်းပါဦး"—ဟူလို။

**ပါဠိတော်အနက်**။ ။တာတသုဒိန္န — ဒိန်၊ ဧဒံ — ဤငွေနှင့်ရွှေ ဥစ္စာတွေသည်၊ တေ-၏၊ မာတု-၏၊ မတ္တိကံ-အမိမှလာသော ဥစ္စာတည်း၊ [ဤသို့ တဝါကျပြတ်အောင်ပေး၊ ထို့နောက်မှ ထိုဥစ္စာကို ရှုံ့ချလို၍ "ဉာတ္တိကာယ" စသည်တက်။] ဉာတ္တိကာယ-မိန်းမတို့၏ ဥစ္စာဖြစ်သော ဆပ်ပြာမှုန့် စသော အသုံးအဆောင်အကျိုးငှါ၊ ( လဒ္ဓံ—သော၊) ဉာတ္တိခနံ—မိန်းမဥစ္စာတည်း၊ ဤသို့ ပါဠိတော် အနက်ပေးပါ။

**အထဝါ**။ ။ဤနည်း၌ "မာတုယောဝ သန္တကံ"ထောက်၍ "မာတု+သန္တကံ မတ္တိကံ " ဟု ပြု၊ မာတုအရ အမိ၏ အမိမဟုတ်၊ ရှင်သုဒိန်၏ အမိပင်တည်း၊ ထို့ကြောင့် "တဝ မာတုယောဝ"ဟု ဖွင့်သည်၊ သို့ဖြစ်လျှင်"မာတု မတ္တိကံ"ဟု ပါဠိတော်၌ရှိသောကြောင့်"အမိအနက် ၂ ခါထပ်နေသည်မဟုတ်လော"ဟု စောကြောဘွယ်ရှိ၏၊ အဖြေကား — တဒ္ဓိတ်ပုဒ်တို့သည် "မာတု + သန္တကံ" ကဲ့သို့ ဝါကျတွင်း၌ "အမိ၏ဥစ္စာ"ဟု ဝိသေသအနက်ကို ဟောနိုင်သော်လည်း တဒ္ဓိတ်ပြီးသော အခါ ဥစ္စာသာမညကိုသာ ဟောသည်၊ [သမာသ်၌လည်း နည်းတူ။] ဤသို့ "မာတု မတ္တိကံ" ဟူရာ၌ "မတ္တိကံ-အမိဥစ္စာ" ဟု ရသော်လည်း ဥစ္စာသာမညသာ ရသောကြောင့် "မာတု" ဟု ဝိသေသနတခု ကူပေးရသည်။ [ " သမာသောစ တဒ္ဓိတောစ, ဝါကျေသု ဝိသေသကာ၊ ပသိဒ္ဓိယံ တု သာမညံ, တေလံ သုဂတစီဝရံ။]

**ဉာတ္တိကာယ** ။ ။ ကပစ္စည်းသည် ဟီနအနက်၌ သက်၊ ဟီနာ — ယောကျ်ားကို ထောက်ဆ၍ အောက်ကျသော+ဉာတ္တိ—တည်း၊ ဉာတ္တိကာ — အောက်ကျသောမိန်းမ၊ ဤပုဒ်၌ ပဌမနည်းကဲ့သို့ တဒတ္ထသမ္ပဒါန်မဟုတ်၊ သမ္ဗန္ဓဆဋ္ဌီသာ၊ " ဉာတ္တိကာယ— ၏၊ ဉာတ္တိခနံ-မိန်းမ၏+ဥစ္စာ"ဟု သမ္ဗန် ၂ ချက် ပါနေသော်လည်း "မာတု မတ္တိကံ"ကဲ့သို့ သဒ္ဒါ့ထုံးစံအရ အပြစ်မရှိဟု မှတ်၊ တနည်း—"လဒ္ဓဗ္ဗံ"ကို ကြည့်၍ "ဉာတ္တိကာယ-သည်၊

တော– ဆွေမျိုးအိမ်မှ၊ သာမိကကုလံ- လင့်အိမ်သို့၊ ဂစ္ဆန္တိယာ- လိုက်သွားသော၊ ဉာတ္တိကာယ-မိန်းမသားသည်၊ လဒ္ဓဗ္ဗံ-ရထိုက်သော၊ (ဉာတ္တိဓနံ၌စပ်၊) နှာနစုဏ္ဏာဒိနံ - ရေချိုးဆပ်ပြာမှုန့် အစရှိသည်တို့၏၊ အတ္ထာယ - ၄၊ ယံ ဉာတ္တိဓနံ- သည်၊ (အတ္ထိ၊) တံ - ထိုမိန်းမ၏ ဥစ္စာသည်၊ တာဝ ဧတ္တကံ - ဤမျှ အတိုင်းအရှည် ရှိသေး၏၊ ဝါ – ဤမျှလောက် များပြားသေး၏၊ ဉာတိ ဓနံ– သို့၊ ဧတ္ထ - ဤ ဉာတ္တိကာယ ဉာတ္တိဓနံဟူသောပါဌ်၌၊ အတ္ထော ဒဋ္ဌဗ္ဗော-၏၊

အညံ့ ပေတ္တိကံ အညံ့ ပိတာမဟန္တိ-ကား၊ တေ-၏၊ ပိတုစ-၏ရင်း၊ ပိတာမဟာနဉ္စ-ဘိုးဘေးတို့၏ရင်း၊ ယံ သန္တကံ- အကြင်ဥစ္စာသည်(အတ္ထိ၊) တံ-ထို ဥစ္စာသည်၊ အညံ့ယေဝ - ဤ ငွေနှင့် ရွှေ ဥစ္စာတွေမှ တခြားသာတည်း၊ နိဟိတဉ္စ-မြေ၌မြှုပ်ထားအပ်သော ဥစ္စာသည်ရင်း၊ပယုတ္တဉ္စ-အတိုးအပွား ချထားသောအားဖြင့် ယှဉ်စေအပ်သော ဥစ္စာသည်ရင်း၊ အတိဝိယ-အလွန်သာလျှင်၊ ဗဟု-များပါသေး၏၊ စ - ဆက်၊ ဧတ္ထ- ဤ အညံ့ ပိတာမဟံ ဟူသော ပါဌ်၌၊ ပိတာမဟံတိ – ပိတာမဟံ ဟူသော ပုဒ်ကို၊ တဒ္ဓိတလောပံ - တဒ္ဓိတ်ပစ္စည်း ကြေခြင်းကို၊ ကတွာ – ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ - ၏၊ ပေတာမဟန္တိဝါ - ဟံ ဟူ၍လည်း၊ ပါဌော-ပါဌ်ရှိသေး၏။

လဒ္ဓဗ္ဗံ-သော၊ ဉာတ္တိဓနံ-တည်း” ဟု လဒ္ဓဗ္ဗံထည့်၍သော်လည်း စပ်၊ ဤအဖွင့်အလို....
“ တာတသုဒိန္န , ဣဒံ , တေ–၏၊ မာတု–၏၊ မတ္တိကံ–အမိဥစ္စာတည်း၊ဉာတ္တိကာယ–သား၏၊ဝါ-သည်၊လဒ္ဓဗ္ဗံ-သော၊ဉာတ္တိဓနံ-မိန်းမဥစ္စာတည်း”ဟု ပါဠိတော်ပေး။

ပေတ္တိကံ။ ။“ပိတုစ ပိတာမဟာနဉ္စ သန္တကံ” ထောက်၍ “ပိတုနော+သန္တကံ ပေတ္တိကံ”ဟု ပြု၊ ပိဋ္ဌ ဝုဒ္ဓိ ( တ ) ဒွေဘော်လာ၊“ပိတိမတော + အာဂတံ ပေတ္တိကံ”ဟု အာဂတတဒ္ဓိတ်မပြုနှင့်၊ အဘိုးမှ လာသောဥစ္စာကို“ပိတာမဟံ”ဖြင့် ပြလိမ့်မည်။

နိဟိတံပယုတ္တံ။ ။နိဟိတန္တိ ဘူမိဂတံ– မြေ၌တည်သောဥစ္စာ (အမိပ္ပါယ်ဖွင့်) သဒ္ဒတ္ထမှာ “ မြေ၌မြှုပ်ထားအပ် ” တည်း၊ ပယုတ္တန္တိ – ဝဍ္ဎိဝသေန ပယောဇိတံ– ယှဉ်စေအပ်သောဥစ္စာ၊ ပယုတ္တံ၌ ပပုဗ္ဗ ယုဇဓာတ်, ကာရိတ်ပစ္စည်းကြေ။

ပိတာမဟံ။ ။ပိတုနော+ပိတာ ပိတာမဟော–အဘ၏အဘ၊ ဝါ–အဘိုး၊ ပိတု အနက်၌ အာမဟပစ္စည်းသက်၊ ဤနေရာ၌ အဘိုးတယောက်ကိုသာ ဆိုလိုသည်မဟုတ်၊ ဘိုးဘေးစသော အထက် ၇ ဆက်ကိုဆိုလို၏၊ ထို့ကြောင့် ဗဟုဝုစ်ထားသည်၊ ထို့နေ ာ် အာဂတအနက် သန္တကအနက်တို့၌ ဏ ပစ္စည်းသက်၍ ထို ဏ ပစ္စည်းကို ချေသောကြောင့် ဝုဒ္ဓိမပြုရဘဲ “ပိတာမဟံ– ဘိုးဘေးတို့မှလာသော ဥစ္စာ၊ ဝါ – ဘိုးဘေးတို့၏ ဥစ္စာ ” ဟု ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် “ ပိတာမဟန္တိ တဒ္ဓိတလောပံ ကတွာ ဝေဒိတဗ္ဗံ”ဟု မိန့်သည်၊ “ ပေတာမဟံ ” ဟု ဝုဒ္ဓိပြုထားသောပါဌ်ကား တဒ္ဓိတ် ဏပစ္စည်းကို မချေ

လဒ္ဓာ တာတ သုဒိန္န ဟီနာယာဝတ္တိတွာတိ- ကား၊ တာတသုဒိန္န - ဒိန်၊ ဥတ္တမံ – မြတ်သော၊ အရိယဒ္ဓဇံ - အရိယာတို့၏ အလံသဘွယ် ဖြစ်သော၊ ပဗ္ဗဇိတလိင်္ဂံ - ရဟန်းအသွင်ကို၊ ပဟာယ - ပယ်စွန့်၍၊ ဟီနာယ– ယုတ်ညံ့သော လူ့အဖြစ်အကျိုး၄ါ၊ ဂိဟိဘာဝါယ – လူ့အဖြစ်အကျိုး၄ါ၊ အာဝတ္တိတွာ– ပြန်လည်၍၊ ဘောဂေ - စည်းစိမ်တို့ကို၊ ဘုဉ္ဇိတုံ – သုံးဆောင် ခံစားခြင်း၄ါ၊ လဒ္ဓာ – ရအပ်ပါကုန်၏၊ [ကိတ်ပုဒ်နှင့်တူသော "လဒ္ဓာ" နိပါတ်ပုဒ်တမျိုးတည်း၊]ဘုဉ္ဇိတုံ-၄ါ၊ အလဒ္ဓာ-မရအပ်ကုန်သည်ကား၊ န-မဟုတ်ပါကုန်၊ တွံ-သည်၊ ရာဇဘီတော- မင်းဘေးမှကြောက်သည်၊ [အပရာဓကာရဏာ (မင်းပြစ်ဟူသော အကြောင်းကြောင့်) ရာဇကုလာ ဘီတော၊ ] (ဟုတွာ – ၍)၊ န ပဗ္ဗဇိတော - ရဟန်းပြုခဲ့သူမဟုတ်ပါ၊ ဣဏာယိကေဟိ - ကြွေးရှင်တို့သည်၊ ပလိဗုဒ္ဓေါ- နှောင့်ရှက်အပ်သည်၊ ဟုတွာ-၍၊ န (ပဗ္ဗဇိတော)-ပါ၊ ဣတိ-ဤကား သဋ္ဌေးကြီး၏ ဆိုလိုရင်းတည်း။

ပန-အဘို့တပါးကား၊ တာတ နဉဿဟာမိတိ ဣတ္တ-၌၊ တာတာတိဝစနံ-တာတဟူသော စကားကို၊ ဂေဟဿိတပေမေန – အိမ်၌ မှီသော ချစ်ခြင်းအားဖြင့်၊ အာဟ - ပြောပြီ၊ [ ဂေဟေ+သိတံ နိဿိတံ+ပေမံ၊ အိမ်သူ အိမ်သားတို့၏ ချစ်ခြင်းမျိုးတည်း၊ ] သမဏတေဇေန- ရဟန်းတို့၏ အရှိန် အဝါ

သောပါဠိတည်း။ [ ဝိမတိ၌ကား " တဒ္ဓိတလောပံတိ ပိတာမဟာတော + အာဂတံ ပေတာမဟံတိဝတ္တဗ္ဗေ တဒ္ဓိတပစ္စယနိမိတ္တဿ ဧကာရဿ လောပံ ကတွာတိ အတ္တော" ဟု ပစ္စည်းကိုမချေဘဲ, ဝုဒ္ဓိပြုအပ်ပြီးသော ဧကိုချေခြင်းဟု တမျိုးဖွင့်လေသည်။]

**ဟီနာယ**။ ။"ဟီန"ဟု သာမညဆိုသော်လည်း ရဟန်းဘဝမှ ပြန်လှည့်ဘို့ရာသည့် လူ့ဘဝသာဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့်"ဂိဟိဘာဝါယ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ဟီနဖြစ်သော လူ့အသွင်ကိုထောက်၍ ရဟန်းအသွင်သည် အထက်တန်းဖြစ်ရကား "ဥတ္တမံ အရိယဒ္ဓဇံ ပဗ္ဗဇိတလိင်္ဂံ ပဟာယ"ဟု ထည့်၍ဖွင့်သည်၊ ဘာဝါယ၌ အာယဖြင့် ဟီနာယ၌ တဒတ္ထသမ္ပဒါန်ဖြစ်သော သ၏ ကာရိယ အာယ ဟု ပြသည်။

**ဣဏာယိကေဟိ**။ ။ "ဣဏံ ဂဏှာတိ, ဓာရေတိ ဝါတိ ဣဏာယိကော" ဟု ပြုလျှင် ကြွေးယူသူကိုရ၏၊ " န ဘိက္ခဝေ ဣဏာယိကော ပဗ္ဗာဇေတဗ္ဗော " စသည်၌ ကြွေးယူသူ (မြီစား) ကို"ဣဏာယိက"ဟုခေါ်၏၊ ဤ၌ကား "ကြွေးပေးသူ (မြီရှင်)" ကို"ဣဏာယိက"ဟု ဆိုလိုသည်၊ [ ယေသံ သန္တကံ ဓနံ ဂဟိတံ၊ တေ (ထိုဥစ္စာရှင်တို့သည်) ဣဏာယိကာ ( ဋီကာ )၊ " ဣဏံ ဒဒန္တီတိ ဣဏာယိကာ" ဟု ပြု။]

**သမဏတေဇေန**။ ။သမဏာနံ+တေဇော-ရဟန်းတို့၏+အရှိန်အဝါ၊ ရဟန်းတို့၏ အရှိန်အဝါဖြင့်"ဂဟပတိ"ဟု ခံ့ခံ့ကြီး မခေါ်ဘဲ ဂေဟဿိတပေမဖြင့်"တာတ" ဟု ခေါ်သည်-ဟူလို။

ဖြင့်၊ န (အာဟ)−ပြောသည် မဟုတ်၊ န ဥဿဟာမီတိ-ကား၊ န သက္ကောမိ-မတတ်နိုင်ပါ၊ န ဝိသဟာမီတိ- ကား၊ န ပဟောမိ - မစွမ်းနိုင်ပါ၊ သမတ္ထော-စွမ်းနိုင်သည်၊ န အမှိ-မဖြစ်ပါ၊[ န ဥဿဟာမိ, န ဝိသဟာမိတို့ကား အနက်တူ ဖြစ်၍"န သက္ကောမိ. န ပဟောမိ" ဟု အနက်တူ ဖွင့်သည်၊] ဝဒေယျာမ ခေါ တံ ဂဟပတီတိ ဣဒံဝစနံ ပန-တိ ဟူသော ဤ စကားကိုကား၊ သမဏာ တေဇေန-ဖြင့်၊ အာဟ-ပြီ၊ နာတိကမ္မေယျာသီတိ- ကား၊ တေ-၏၊ မယိ - ငါ့ အပေါ်၌၊ ယံ ပေမံ-အကြင် ချစ်ခြင်းသည်၊ ပတိဋ္ဌိတံ-တည်ပြီ၊ တံ-ထိုတည်ပြီး သော ချစ်ခြင်းကို၊ ကောမဝသေန-အမျက်ထွက်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊(သစေ) န အတိကမေယျာသိ - အကယ်၍ မဆွဲငင်အံ့၊ ဝါ-အကယ်၍ ဆွဲငင်မပစ်အံ့၊ သစေ န ကုပ္ပေယျာသိ-အကယ်၍ စိတ်မဆိုးအံ့၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

တတော- ထိုမှနောက်၌၊ သေဋ္ဌိ- သည်၊ မေ-၏၊ ပုတ္တော- သည်၊ သင်္ဂဟံ-ချီးမြှောက်ခြင်းကို၊ ကတ္တုကာမော မညေ- ပြုလို၏ဟု ထင်၏၊ ဣတိ – ဤသို့ ကြံ၍၊ ဥဒဂ္ဂစိတ္တော - တက်ကြွသောစိတ် ရှိသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ ဝဒေဟိ တာတ သုဒိန္နာတိ−ဟူ၍၊ အာဟ - ပြီ၊ တေနဟိတိ - ဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ ဥယျော ဇနတ္တေ - တိုက်တွန်းခြင်း အနက်၌၊ ဝိဘတ္တိပတိရူပကော - ဝိဘတျန္တပုဒ်နှင့် အလားတူသော၊ နိပါတော - တည်း၊ တတော နိဒါနန္တိ-ကား၊ တံနိဒါနံ တံ ဟေတုကံ - ထိုဥစ္စာဟူသော အကြောင်းရှိသော၊ ( ဘယံဝါ စသည်၌စပ်၊ ) ဣတိ-သို့၊ ပစ္စတ္တဝစနဿ- ပဌမာဝိဘတ်၏၊ တော အာဒေသော- တောအပြု ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ စ-ဆက်၊ သမာသေ- ၌၊ အဿ- ထို ပဌမာဝိဘတ်၏၊ ( တနည်း ) အဿ – ထို တတောဟူသောပုဒ်၏၊ တော လောပါဘာဝေါ-

**နာတိကမေယျာသိ**။ ။"မိမိအပေါ်မှာ နဂိုရ်က ရှိနေသော ချစ်ခြင်းကို ဆွဲငင် (ထုတ်ပစ်) ခြင်း" ဟူသည် အချစ်ပျောက်၍ အမုန်းရောက်ခြင်း စိတ်ဆိုးခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့်"န ကုပ္ပေယျာသိ"ဟု ဥဇုကတ္တ ဖွင့်သည်။

**တေနဟိ**။ ။ဟိသည် ပဒပူရဏ၊ တေနသည် ဥယျောဇနတ္တ နိပါတ် ဟု ရှေ့၌ ဖွင့်ခဲ့ပြီ၊ ဤ၌"ဝိဘတ္တိပတိရူပက" ဟု အပိုပါခြင်းသာ ထူး၏၊"ဝိဘတ်ဆုံးသော နာမ် ပုဒ်နှင့် အလားတူသော နိပါတ်ပုဒ်တမျိုး"ဟု ဆိုလိုသည်၊ ဝိဘတ္တိဖြင့် ဝိဘတျန္တပုဒ်ကို ယူပါ၊ ထို့ကြောင့်"ဝိဘတျန္တပဋိရူပကော"ဟု ရှိလျှင် သာ၍ ရှင်း၏။ [ဝိဘတ္တိပတိရူပကောတိ တေနာတိပဒံ သန္ဓာယာဟ။]

**တတော နိဒါနံ**။ ။"တတော+ နိဒါနံ အဿ"ဟု ဗဟုဗ္ဗီဟိ ဝိဂ္ဂဟပြု၊ (တ) နောင် သိသက်၍,ထိုသိကို တောပြုသောကြောင့်"ပစ္စတ္တဝစနဿ တောအာဒေသော" ဟု ဆိုသည်၊ ထိုတောကိုလည်း မချေရသောကြောင့် "အလုတ္တဗဟုဗ္ဗီဟိ" ဟု မှတ်။ ["တောပစ္စည်းကို ပဌမာအနက်၌ သက်၏"ဟု လည်း တချို့နေရာ၌ ဆို၏။]

တောအပြ ကြောက်ခြင်း၏ မရှိခြင်းသည်၊ (ဟောတိ)၊ ဘယံဝါတိ- ကား၊ ကိန္တိ- အဘယ်သို့လျှင်၊ မေ-၏၊ ဘောဂေ- တို့ကို၊ ရာဇာနော- တို့သည်၊ နေဝ ဟရေ ယျုံ- မဆောင်ကုန်ရာအံ့နည်း၊ ဣတိ အာဒိနာ- သော၊ နယေန- ဖြင့်၊ ဝုတ္တံ- ဟောတော်မူအပ်သော၊ ရာဇာဒိဘယံ-မင်း အစရှိသည်တို့မှ ကြောက်ခြင်းသည်၊ စိတ္တုတြာသော - စိတ်၏ ထိတ်လန့်ခြင်းသည်၊ ( ဘဝိဿတိ - ဖြစ်ရာ၏၊ ) ဣတိ အတ္ထော - နက်၊ ဆမ္ဘိတတ္တန္တိ - ကား၊ ရာဇူဟိဝါ - မင်းတို့သည်သော်၎င်း၊ စောရေဟိဝါ- သော်၎င်း၊ ဓနံ-ကို၊ ဒေဟိ- လော့၊ ဝါ- ပေးရမည်၊ ဣတိ-သို့၊ ကမ္မကာရဏံ- ညှဉ်းပန်းနှိပ်စက်ကြောင်း အမှုကို၊ ဝါ - ကံကြမ္မာကို၊ ကရိယ မာနဿ-ပြုအပ်သူ၏၊ ဝါ-အပြုခံရသူ၏၊ ကာယိဉ္ဇနံ (ကာယ+ဣဉ္ဇနံ)ကာယ

**သမာသေစဿ တောလောပါဘာဝေါ**။ ။အဿာတိ ပစ္စတ္တဝစနဿ,ပဒဿ ဝါ၊ (ဋီကာ)၊ ဤဋီကာ၌ အဿကို တောလောပဝယ် တော၌စပ်စေလို၏၊ "အဿ+ တော" ထိုပဌမာ ဝိဘတ်၏(အာဒေသဖြစ်သော) တောဟု၎င်း, "ထိုတောပုဒ်၏+ တော"ဟု၎င်း စပ်ပါ။ [တချို့စာ၌ "တောလောပါဘာဝေါ" ဟု မရှိဘဲ " လောပါ ဘာဝေါ"ရှိ၏၊ ထိုသို့ရှိရာ၌ သာရတ္ထဖွင့်ပုံနှင့် မညီသော်လည်း " အဿ- ထိုတော၏၊ လောပါဘာဝေါ-ကြေမှု၏ မရှိခြင်း"ဟု ပေးနိုင်သည်။]

**ဘယံ**။ ။ဘယံသည်"ဉာဏဘယ (သံဝေဂဉာဏ်),အာရမဏဘယ (ကြောက်စရာ အာရုံ), စိတ္တုတြာသဘယ ( စိတ်၏ ကြောက်လန့်ခြင်း ) "ဟု ၃ မျိုးရှိ၏၊ ထိုတွင် ဤနေရာ၌ စိတ်၏ ကြောက်လန့်ခြင်းဘယကို ယူစေလို၍"စိတ္တုတြာသောတိ အတ္ထော"ဟု ဖွင့်သည်၊ မင်း,ခိုးသူစသော ရန်သူမျိုးငါးပါးကြောင့် စိတ်၏ ကြောက်ရွံ့ထိတ်လန့်ခြင်း- ဟူလို၊"ဘာယနံ-ကြောက်ရွံ့ထိတ်လန့်ခြင်း၊ ဘယံ—ခြင်း"ဟု ဘာဝသာဓနပြု၊ တရား ကိုယ်မှာ ဒေါမနဿ ပြဋ္ဌာန်းသော ဒေါသမူ စိတ္တုပ္ပါဒ်တည်း၊ ကြောက်စရာအာရုံကို အရကောက်ရာ၌ကား"ဘာယတိ ဧတသ္မာတိ ဘယံ"ဟု ပြု၊ သံဝေဂဉာဏ်ကို ကောက်ရာ၌မူ " ဘာယတိ ဧတေနာတိ ဘယံ—ကြောက်လန့်ကြောင်းဉာဏ်"ဟု ပြု။

**ဆမ္ဘိတတ္တံ**။ ။ " ဆမ္ဘိတဿ + ဘာဝေါ ဆမ္ဘိတတ္တံ " ဟု ပြု၍ ဘာဝ (တ္တ) ပစ္စည်းအရမှာ တုန်လှုပ်ခြင်းကြီးယာရ၏၊ ထို့ကြောင့် "ကာယိဉ္ဇနံ- ကာယကမ္ပော"ဟု ဖွင့်သည်၊ထိုသို့တုန်လှုပ်ရာ၌ အထူးအားဖြင့် ရင်ထဲ၌ရှိသော နှလုံးသား၏ တုန်လှုပ် ခြင်းတည်းဟု သိစေလို၍"ဟဒယမံသစလနံ"ဟု ဖွင့်သည်။ [သက္ကတ၌"သ္တမ္ဘ"ဓာတ်မှ "ဆမ္ဘ" ဟု ဖြစ်လာဟန်တူ၏၊ ထိုဓာတ်သည် တောင့်မာခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ ကြောက်လွန်းအားကြီး၍ ခန္ဓာကိုယ်တုန်နေခြင်း တောင့်မာခြင်းတည်း၊ ("ခက်တရော် ဖြစ်ခြင်း"ဟု ရှေးကဆို၏၊) သဥ္ဇာတော ဆမ္ဘော အဿ အတ္ထီတိ ဆမ္ဘိတော"ဟုပြု။]

**ကမ္မကာရဏံ ကရိယမာနဿ**။ ။ကရဓာတ်သည် "ဟိံသာ" အနက်ကိုလည်း ဟော၏၊ ကာရိတ်ပစ္စည်းလည်း သွဒ္ဓအနက်၌ သက်၏ဟု ထောမနိဓိ၌ဆို၏၊ ကရိ ယတေ-ညှဉ်းဆဲခြင်း၊ ကာရဏာ-ခြင်း။ [ကာရဏာတုစ ယာတနာ၊ (၄၀၇) အဘိ

ကမ္ဘော-ကိုယ်၏တုန်လှုပ်ခြင်းသည်၊ ဟဒယမံသစလနံ-နှလုံးသား၏ လှုပ်ရှားခြင်းသည်၊ [ရင်ထဲ၌ တဒိတ်ဒိတ်လှုပ်ရှားခြင်း–ဟူလို၊] (ဘဝိဿတိ၊)လောမဟံသောတိ-ကား၊ ဘယေ- ကြောက်ခြင်းသည်၊ ဥပ္ပန္နေ-ဖြစ်လသော်၊ လောမာနံ-အမွေးတို့၏၊ ဟံသနံ – ရွှင်ပြင်းသည်၊ ဥဒ္ဓဂ္ဂဘာဝေါ - အထက်၌ အဖျားရှိကုန်သည်တို့၏ အဖြစ်သည်၊ ဝါ - ကြက်သီးမွေးညှင်း ထခြင်းသည်၊ ( ဘဝိဿတိ၊)အာရကွောတိ-ကား၊ အန္တောစ-အတွင်း၌၎င်း၊ဗဟိစ-၌၎င်း၊ရတ္တိံစ-၌၎င်း၊ ဒိဝါစ-၎င်း၊ အာရက္ခဏံ-စောင့်ရှောက်ရခြင်းသည်၊(ဘဝိဿတိ။)

တေနဟိ ဝဇ္ဇတိ-ကား၊ သေဋ္ဌိ-သော၊ ဂဟပတိ–သည်၊ ခနံ–ကို၊ ဒသော တွာ-ပြ၍၊ ပုတ္တံ-ကို၊ အတ္တနာ-ကိုယ်တိုင်၊ ဂိဟိဘာဝတ္ထာယ-လူ့အဖြစ် အကျိုးငှါ၊ ပလောဘေတုံ – အပြားအားဖြင့် အလိုရှိစေခြင်းငှါ၊ ( သဒ္ဒတ္ထ၊ ) ဝါ- ဖြားယောင်းခြင်းငှါ၊ (ဝေါဟာရတ္ထ၊)အသက္ကောန္တော-သည်၊ (ဟုတွာ-၍၊) ဒါနိ- ၌၊ [ယောဇနာ၌ "အနက်မရှိ"ဟု ဆို၏၊] ပုရိသာနံ- တို့၏၊ ဝါ-တို့မှာ၊ မာတုဂါမသဒိသံ- သော၊ ဗန္ဓနံ - အနှောင်အဖွဲ့သည်၊ နတ္ထိ- မရှိ၊ ဣတိ-သို့၊ မညိတွာ-မှတ်ထင်၍၊ တဿ-ထို ရှင်သုဒိန်၏၊ ပုရာဏဒုတိယိကံ-ဇနီးဟောင်းကို၊ တေနဟိ ဝဇ္ဇတိ-ဟူ၍၊ အာမန္တေသိ-သိစေပြီ၊ ဝါ-ခေါ်၍ပြောပြီ၊ ပုရာဏဒုတိယိကန္တိ-ကား၊ ပုရာဏံ-ရှေး၌ဖြစ်သော၊ ဒုတိယိကံ-၂ ယောက်မြောက်

မာန်။] ကရီယတေတိ ကမ္မံ၊ ကမ္မဋ္ဌ + တံ + ကာရဏာစာတိ ကမ္မကာရဏာ-ပြုအပ်သော ညှဉ်းဆဲမှု၊ ထို့နောက် "ကာရီယ"ဟု ဝုဒ္ဓိနှင့်တကွ တွေ့ရ၏၊ "ပြုစေအပ်"ဟု အနက်မဖြစ်နိုင်ဘဲ၊ "ကရီယမာန-ပြုအပ်၊ ဝါ-အပြုခံရ"ဟု သာ ဖြစ်နိုင်ရကား "ကရီယမာနသ"ဟု ပါဌ်မှန်ရှိစေသင့်၏။

**လောမဟံသော။** ။"လောမာနံ+ဟံသော-အမွေးတို့၏ ရွှင်လန်းခြင်း"ဟူသည် အမွေးများ ထောင်လာခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ဥဒ္ဓဂ္ဂဘာဝေါ" ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်၊ ဥဒ္ဓံ + အဂ္ဂေါ ယေသံတိ ဥဒ္ဓဂ္ဂါ၊ [ဥ+အဂ္ဂပုဒ်ရင်းဖြစ်၍ (ဒ်) လာလျှင်"ဥဒဂ္ဂ" ဟု ဖြစ်သင့်၏၊ "ဥဒ္ဓဂ္ဂ"ဟု မဖြစ်သင့်။] ဥဒ္ဓဂ္ဂါနံ +ဘာဝေါ ဥဒ္ဓဂ္ဂဘာဝေါ။

**အတ္တနာ။** ။ပစ္စတ္တေ ကရဏဝစနံ – ပဌမာဝိဘတ်၏အနက်၌ ကရိုဏ်းဝိဘတ် သက်ထားသဖြင့်"အတ္တနာ"ဟု ဖြစ်ရသည်၊ သယန္တိ့အတ္တော၊ ဤသို့ သာရတ္ထ ဖွင့်သော်လည်း တချို့နေရာ၌ "နိပါတ်" ဟု လည်း ဆို၏၊ [ အတ္တနာတိဝါ အယံ ဝိဘတျန္တ ပတိရူပကော အဗျယသဒ္ဒေါ၊– သီ,ဋီသစ်, သံဂါယနာသမ္မုတိညတ် အဖွင့်။]

**ပုရာဏဒုတိယိကံ။** ။ပုရာ+ ဘဝါ ပုရာဏာ၊ (ပုရာနောင် ဘဝအနက်၌ အနုဗန် မဟုတ်သော ဏ ပစ္စည်း၊ ) ဒုတိယာဝေ ဒုတိယိကာ၊ ( ဏိကပစ္စည်း သွတ္ထ၊ ) ပုရာဏာစ + သာ + ဒုတိယိကာစာတိ ပုရာဏဒုတိယိကာ၊ "မိမိ" ဟူသော တယောက်ထည်း၏ "နှစ်ယောက်မြောက်" ဟူသည် မိမိကလွဲလျှင် အရေးအကြီးဆုံး အဖေါ်တည်း၊

ဖြစ်သူကို၊ ပုဗ္ဗေ-ရှေး၌၊ ဂိဟိကာလေ - လူဖြစ်စဉ်အခါ၌၊ ဒုတိယိကံ - သော၊ ဂေဟဿိတ သုခုပဘောဂသဟာယိကံ – အိမ်၌မှီသော သုခကို ခံစားခြင်း၌ အဖေါ်ဖြစ်သော၊ ဘူတပုဗ္ဗဘရိယံ-ရှေး၌ဖြစ်သော ဇနီးကို၊ ဝါ-ဇနီးဟောင်းကို၊ (အာမန္တေသိ၌စပ်၊)ဉာတိအတ္တော-နက်၊ တေနဟိတိ-ကား၊ ယေန ကာရဏေန - အကြင် အကြောင်းကြောင့်၊ မာတုဂါမသဒိသံ – သော၊ ဗန္ဓနံ– အနှောင်အဖွဲ့သည်၊ နတ္ထိ- တော့၊ (တေန ကာရဏေန - ကြောင့်၊ မာတုဂါမနှင့်တူသော အနှောင်အဖွဲ့ မရှိသည်၏အဖြစ်ဟူသော ထိုအကြောင်းကြောင့်-ဟူလို၊ တုယှံပိ ဝစနံ ကရေယျာသိ - ၌စပ်။)

ပါဒေသု ဂဟေတွာတိ- ကား၊ ပါဒေ- တို့ကို၊ ဂဟေတွာ- ကိုင်၍၊ (ဧတံ-ဤပါဒေသုဟူသောသဒ္ဒါသည်၊) ဥပယောဂတ္ထေ-ဒုတိယာဝိဘတ်၏အနက်၌၊ ဘုမ္မဝစနံ-တည်း၊ ဝါ-တနည်း၊ ပါဒေသု- တို့၌၊ တံ-ထိုသုဒိန်ကို၊ ဂဟေတွာ-၍၊ ကီဒိသာနာမ တာ အယျပုတ္တ အဇ္ဈရာယောတိ- ကား၊ ကဿာ- ကြောင့်၊ ဧဝံ-သို့၊ အာဟ-ပြောသနည်း၊ ကိရ-ချဲ့၊ (တနည်း) ကိရ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ တဒါ - ၌၊ သမ္ဗဟုလေ - များစွာကုန်သော၊ ခတ္တိယကုမာရေပိ - ခတ္တိယသတို့သားတို့ကိုငင်း၊ ဗြာဟ္မဏကုမာရေပိ- ဗြာဟ္မဏ သတို့သားတို့ကိုငင်း၊ သေဋ္ဌိ

ထိုသူကား—စည်းစိမ်ခံစားဘက် မယားပင်တည်း၊ ထို့ကြောင့် “ သုခုပဘောဂသဟာယိကံ ဘူတပုဗ္ဗဘရိယံတိအတ္ထော”ဟု သဘာဝတ္ထ ဖွင့်သည်၊“ဘူတပုဗ္ဗ”ကားပုရာဏ၏ အဖွင့်တည်း။[ဂေဟဿိတသုခဿ—ကို+ဥပဘောဂေါ-သုံးဆောင် ခံစားခြင်းတည်း၊ ဂေဟဿိတသုခုပဘောဂေ — ၌+ သဟာယိကာ ဂေဟဿိတသုခုပဘောဂသဟာယိကာ၊ (ယောဇနာ။) ]

**ပါဒေသု ဂဟေတွာ။** ။ပါဒေသုကို “ပါဒေ” ဟု ကံအနက်မှတ်၊ ထို့ကြောင့် “ဥပယောဂတ္ထေ ဘုမ္မံ”ဟု မိန့်သည်၊ ဤကို ရည်ရွယ်၍–“ဂဟဓာတ်မှ, အာဓာရကို, ကံဆိုလိုမူ,ထိုရှေ့ပုဒ်မှာ, ဒုတိယာကို,ဆဋ္ဌီမှာသက်, ဤအချက်လည်း, မိန့်မြွက်ဆရာတဦး အလိုတည်း ” ဟု နိယာမ် ဆိုကြသည်၊ ဤနေရာ၌ကား ထို ရှေ့ပုဒ်မှာ ဒုတိယာ မရှိ၊ “သုဒိန္နဿ”ဟု ဆဋ္ဌီပင် တိုက်ရိုက်ရှိသည်။

**ပါဒေသု ဝါ တံ ဂဟေတွာ။** ။“ပါဒေသု”ဟု အာဓာရအတိုင်း (ဘုမ္မတ္ထဟုပင်) ဆိုချင်ပြန်မူ “ ထို ရှေ့က သုဒိန္နဿ ကဲ့သို့သော ဆဋ္ဌီကို ကံအနက်၌သက် ” ဟု လည်း နိယာမ်ဆိုကြသည်၊ “ဂဟဓာတ်မှ, အာဓာရကို, ဘုမ္မတ္ထပင်, ဆိုလိုချင်မူ, ထို့ပြင် ရှေ့မှာ, ဆဋ္ဌီပါက, ကံမှာသက် ဟု, မိန့်မြွက် ဆရာတဦးအလိုတည်း ”၊ [ဤနိယာမ်၌ ဆဋ္ဌီကို ကံမှာသက် ဟု ဆိုစေကာမူ ပါဒေသု၏ သမ္ဗန်လည်း လိုသေးရကား သမ္ဗန်အနက်၌သာ ဆဋ္ဌီသက်သင့်၏၊“သုဒိန်၏ ခြေတို့၌” ဟူလို၊ ထိုအခါ ဂဟေတွာ၏ကံ လိုနေပြန်၏၊ ထို့ကြောင့်“တံ”ဟု အဇ္ဈာဟာရ၌ အပိုထည့်သည်-ဟုသာ ကြံသင့်သည်။]

ပုဗ္ဗေပိ-တို့ကိုငင်း၊ မဟာသမ္ဘုတ္တိယော - ကြီးစွာသော စည်းစိမ်တို့ကို၊ ပဟာယ-ပယ်စွန့်၍၊ ပဗ္ဗဇန္တေ - ရဟန်းပြုသည်တို့ကို၊ ဒိသွာ-၍၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာဂုဏံ-ရဟန်းအဖြစ်၏ ဂုဏ်ကို၊ အဇာနန္တာ—မသိကြကုန်သည်(ဟုတ္ဝာ)၊ ကထံ·စကားကို၊ သမုဋ္ဌာပေန္တိ-ဖြစ်စေကြကုန်၏၊(ကိံ)၊ကသ္မာ-ကြောင့်၊ တေ-ဤအမျိုးသားတို့သည်၊ ပဗ္ဗဇန္တိ-ရဟန်းပြုကြကုန်သနည်း၊ ဣတ်-သို့၊(သမုဋ္ဌာပေန္တိ-နှ်၏၊) အထ-၌ အညေ-အခြားသူတို့သည်၊ ဇဝံ-သို့၊ ဝဒန္တိ-ပြောဆိုကြကုန်၏ (ကိံ၊) ဒေဝဏ္ဏရာနံ-နတ်သမီးတို့၏ငင်း၊ ဒေဝနာငိကာနံ -နတ်ကချေသည်မတို့၏ငင်း၊ ကာရဏာ- အကြောင်းကြောင့် (တေ-တို့သည်၊ ပဗ္ဗဇန္တိ –နှ်၏၊) ဣတိ- သို့၊ (ဝဒန္တိ-နှ်၏၊) သာကထာ-ထိုစကားသည်၊ ဝိတ္ထာရိတာ- ဖြစ်သော ကျယ်ပြန့်ခြင်းရှိသည်၊ အဟောသိ - ပြီ၊ တံ- ထိုစကားကို၊ ဂဟေတွာ- ယူ၍၊ အယံ-ဤဇနီးဟောင်းသည်၊ ဇဝံ—သို့၊ အာဟ-ပြောပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့ မှတ်အပ်၏။ [ဣတိ-မပါလျှင် ကောင်းသည်၊ ] ထေရော- သည်၊ တံ-ထိုစကားကို၊ ပဋိက္ခိပန္တော-ပယ်မြစ်လိုသည် (ဟုတ္ဝာ-၍)၊ န ခေါ အဟံ ဘဂိနီတိ-ဟူ၍၊ အာဟ-ပြောပြီ၊ သမုဒါစရတီတိ-ကား၊ ဝေါဟရတိ-ခေါ်ဝေါ်၏၊ ဝဒေတိ—ပြော၏၊

တတ္ထေဝ မုဋ္ဌိတာ ပပတာတိ- ကား၊ နံ–ထိုရှင်သုဒိန်ကို၊ ဘဂိနိဝါဒေန-ဘဂိနီ အသုံးအနှုန်းဖြင့်၊ သမုဒါစရန္တံ – ပြောဆိုသည်ကို၊ ဒိသွာ - မြင်၍၊ ယော -အကြင်အရှင့်သားသည်၊ မံ-ကို၊ ပဇာပတိံ-မယားဖြစ်၍၊ သမာနံ-ဖြစ်ပါလျက်၊ အတ္တနာ-နှင့်၊ သဒ္ဓိံ–တကွ၊ ဧကမာတုကုစ္ဆိယာ-တခုသော အမိ၏ဝမ်း၌၊သယိတဒါရိကံ ဝိယ-ကိန်းသော သူငယ်မကိုကဲ့သို့၊ ဝါ-နှမရင်းကိုကဲ့သို့၊ မညတိ-မှတ်ထင်၏၊ ဒါနိ-၌၊ အယံ- ဤအရှင့်သားသည်၊ မယိ-ငါ့အပေါ်၌၊ အနတ္ထိကော-အလိုမရှိတော့၊ ဣတိ-ဤသို့တွေး၍၊ သမုပ္ပန္နဗလဝသောကာ-

**အစ္ဆရာ, နာဋိကာ။** ။ဒေဝစ္ဆရာနန္တိ အနစ္စန္တိယော အာဟ-ကချေသည်မဟုတ်သော နတ်သမီးများကို ဒေဝစ္ဆရာ— ဟု ဆို၏၊ ဒေဝနာဋိကာနန္တိ နစ္စန္တိယော – ကချေသည် နတ်သမီးများကို ဒေဝနာဋကဟု ဆို၏၊ ပရိယာယဝစနံဝါ တော် ဒေဝကညာန်၊ ဤ ၂ ပုဒ်လုံးသည် နတ်သမီးဟောပရိယာယ်ဟု တနည်းမှတ်။

**သမုပ္ပန္နဗလဝသောကာ။** ။"ဘဂိနီ"ဟု ခေါ်ရုံမျှဖြင့် အဘယ့်ကြောင့် အပြင်းအပြ သောကဖြစ်ရသနည်း — ဟု မေးဘွယ်ရှိ၏၊ အဖြေကား— အယံ လောကောနာမ အတ္တနော ဝ စိန္တေတိ — ဤလူတွေဟာ ကိုယ်ရေးကိုယ့်တာကိုသာ ငြိုးစားလေ့ရှိ၏၊ တသ္မာ သာပိ "ဣဒါနိ အဟံ အနာထာ ဇာတာ (ကိုးကွယ်ရာမဲ့ ဖြစ်ပေါ့)" ဣတိ အတ္တနော ဝ စိန္တယမာနာ (စဥ်းစားမိလျက်) အဟံ "အဋ္ဌ အာဂမိဿတိ အဋ္ဌ အာဂမိဿတီတိ— (တနေဝင် မြင်ရနိုးနိုး, တမိုးသောက် ရောက်လာနိုးနိုးနှင့်) အဋ္ဌဝဿာနိ ဗဟိ

လွန်စွာဖြစ်သော အားကြီးသော သောကရှိသည်၊ (ဟုတွာ)၊ တသ္မိံ ယေဝ ပဒေသေ—ထိုအရပ်၌ပင်၊ မုစ္ဆိတာ - လွန်စွာဖြစ်သော မိန်း မောခြင်းရှိသည်၊ ဝါ-မိုက်ကန်ဖြစ်သွားသည်၊(ဟုတွာ)၊ ပပတာ ပတိတာ-လဲကျလေပြီ၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်။[သဥ္စာတာ+မုစ္ဆာ ယဿာတိ- မုစ္ဆိတာ၊ ဣတပစ္စည်း။]

မာ နော ဝိဟေဌယိတ္ထာတိ - ကား၊ အမေ့-တို့ကို၊ ခန်-ကို၊ ဒဿေတွာ—ပြ၍ငင်း၊မာတုဂါမံ-ကို၊ ဥယျောဇေတွာစ-စေလွှတ်၍ငင်း၊ မာ ဝိဟေဌယိတ္ထ-မညှဉ်းဆဲကြပါကုန်လင့်၊ ဟိ-မှန်၊(တနည်း)ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ သော-၍ ဥစ္စာကိုပြ, မာတုဂါမကို စေလွှတ်ခြင်းသည်၊ ပဗ္ဗဇိတာနံ-ရဟန်းတို့ အတွက်၊ ဝါ-တို့ကို၊ ဝိဟေသာ-ညှဉ်းဆဲခြင်းတည်း၊ ဣတိ(တသ္မာ)-ကြောင့်၊(မာနော ဝိဟေဌယိတ္ထာတိ-ဟူ၍၊ အာဟ-ပြောပြီ၊) [ဣတိပါ၍ ထည့်သည်၊ မပါလျှင် ရှင်း၏၊] တေနဟိ၊ ပေ၊ ဒေဟီတိ တ္တော-၌၊ တေနဟီတိ- တေနဟိပါဌ်ဖြင့်၊ အဘိ ရတိယံ - အလွန် မွေ့လျော်ခြင်း၌၊ ဥယျောဇေတိ - တိုက်တွန်း၏၊ တွံ - သင် ချစ်သားသည်၊ အဘိရတော-အလွန်မွေ့လျော်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ဖြဟ္မစရိယံ-မြတ်သောအကျင့်ကို၊ သစေ စရသိ-အကယ်၍ကျင့်အံ့၊(ဧဝံသတိ၊) စရိတွာ—ကျင့်ပြီး၍၊ အာကာသေ-၌၊ နိသီဒိတွာ-၍၊ ပရိနိဗ္ဗာယိတာ—ပရိနိဗ္ဗာန် ပြုနိုင် သူသည်၊ (တု ပစ္စည်း၊)ဟောဟိ ဖြစ်ပါတော့၊ အမှာကံပန- ငါတို့အားကား၊ ကုလဝံသဗီဇကံ - အမျိုးအနွယ်၏ မျိုးစေ့သဘွယ်ဖြစ်သော၊ ဧကံ ပုတ္တံ- သား တယောက်ကို၊ ဒေဟိ-ပေးပါလော။

မာနော အပုတ္တကံ၊ပေ၊လိစ္ဆဝယော အတိဟရာပေသုံတိ (တ္တော) - ပေသုံ ဟူသော ၌ပါဌ်၌၊ (ဂုဇ္ဈတ္တံ - လျှို့ဝှက်အပ်သော အနက်ကို၊ ) ဟိ ( ဥဒ္ဓရိတွာ ဒဿေမိ)-ထုတ်၍ပြဦးအံ့၊(တနည်း) ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ မယံ-တို့သည်၊ လိစ္ဆဝိနံ-လိစ္ဆဝီခည်ကုန်သော၊ ဂဏရာဇူနံ - အပေါင်းဖြစ်သော မင်းတို့၏၊

နနိက္ခန္တာ၊ ဧတံ နိဿာယ မယာ ဒါရကောပိ နလဒ္ဓေါ (ယဿ အာနုဘာဝေန ဇီဝေ ယျာမိ=သားကိုမှီ၍ အသက်မွေးဘို့ရာ သားလဲမရတော့)၊ ဣတော စာမှိ ပရိဟီနာ-၍ အိမ်မှာရှိသော စည်းစိမ်မှလည်း အမွေခံမရှိသဖြင့် ဆုံးရှုံးရပေါ့၊) အညတောစ (သူ၏ မယား ဖြစ်နေသည့် အတွက် အခြားအိမ်ရှိ စည်းစိမ်မှလည်း ဆုံးရှုံးရပေါ့၊ ) ဣတိ သမု ပ္ပန္နဗလဝသောကာ ဟုတွာ=၍သို့ တွေးမိခြင်းကြောင့် အပြင်းအပြ သောကဖြစ်၍။

**ကုလဝံသဗီဇကံ ။** ။ ကုလရက္ခပတိဋ္ဌာပနေ — အမျိုးသစ်ပင်ကို တည်စေခြင်း၌၊ ဗီဇသဒိသတ္တာ ကုလဝံသပတိဋ္ဌာပကော ပုတ္တော ဣဓ ဗီဇကောတိ အဓိပ္ပေတောတိ အာဟ—ကုလဝံသဗီဇကံ ဧကံ ပုတ္တံတိ။ [“ဗီဇံဝိယ—သစ်ပင်၏မျိုးစေ့နှင့်တူ၏၊ ဣတိ ဗီဇကော”ဟု ဥပမာအနက်၌ က ပစ္စည်းသက်။]

[ လိစ္ဆဝီမင်းတို့သည် ညီတော် နောင်တော်များဖြစ်၍ တယောက်ပြီးတယောက် မင်းပြုကြသောကြောင့် "ဂဏရာဇုနံ" ဟု ဆိုသည်၊] ရဋ္ဌေ- နိုင်ငံ၌၊ ဝသာမ- နေကြရကုန်၏၊ တေ-ထို လိစ္ဆဝီမင်းအပေါင်းတို့သည်၊ တေ-သင်၏၊ ပိတုနော- ၏၊ အစ္စယေန- ကွယ်လွန်ရာအခါ၌၊ ဣမံ သာပတေယျံ- ဤ ဥစ္စာနှစ်ကို၊ ဧဝံ မဟန္တံ – ဤသို့ များသော၊ ဝါ - သို့ကလောက်များသော၊ အမှာကံ - တို့၏၊ ဝိဘဝံ - စည်းစိမ်ကို၊ အပုတ္တကံ - သားမရှိသော၊ ကုလဓနရက္ခကေန-အမျိုး တို့၏ဥစ္စာကို စောင့်ရှောက်တတ်သော၊ ပုတ္တေန – မှ၊ ဝိရဟိတံ–ကင်းသော စည်းစိမ်ကို၊(ထပ်ဖွင့်)၊ အတ္တနော-၏၊ ရာဇန္တေပုရံ-နန်းတော်တွင်းသို့၊ အတိ ဟရာပေယျုံ - လွှမ်းမိုး၍ ဆောင်စေကုန်ရာ၏၊ ဣတိ - ထို့ကြောင့်၊ တေ - ထို လစ္ဆဝီ မင်းအပေါင်းတို့သည်၊ တံ - ထိုဥစ္စာတွေကို၊ မာ အတိဟရာပေသုံ- လွှမ်းမိုး၍မဆောင်ပါစေကုန်လင့်၊ မာ အတိဟရာပေန္တု-နလင့်၊ [ အတိတ် ဟောဟု ယူမည်စိုး၍ န္တု၊ဝိဘတ်ဖြင့် ထပ်ဖွင့်သည်၊] ဣတိ-ဤသို့ မှတ်အပ်၏။

တံခေါ၊ပေ၊ကာတုန္တိ - ကား၊ ကသ္မာ–ကြောင့်၊ ဧဝံ-သို့၊ အာဟ-နည်း၊ ကိရ–ချဲ့၊ (တနည်း) ကိရ (ယသ္မာ) -ကြောင့်၊ သော- ထိုသုဒိန်သည်၊ စိန္တေ သိ-ပြီ၊ (ကိံ)၊ ဧတေသံ- ဤ မိဘတို့၏၊ သာပတေယျသ - ဥစ္စာနှစ်၏၊ အဟ မေဝ-သည်သာ၊ သာမိ–အရှင်တည်း၊ အညော - ငါမှတပါး အခြားသူသည်၊ နတ္ထိ -မရှိတော့၊ [ညီ,အကို မရှိတော့- ဟူလို၊] တေ–ထို မိဘတို့သည်၊ မံ-ကို၊ သာပတေယျရက္ခဏတ္ထာယ- ဥစ္စာကိုစောင့်ရှောက်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ နိစ္စံ- အမြဲ၊ အနုဗန္ဓိဿန္တိ - အစဉ် လိုက်ကြကုန်လတ့်၊ [ နောက်က တကောက်ကောက် လိုက်၍ လူထွက်ဘို့ရန် ပူစာကြလိမ့်မည်-ဟူလို။] တေန-ကြောင့်၊ အဟံ-သည်၊ အပ္ပေါဿုက္ကော- ကြောင့်ကြမဲ့သည်၊ (ဟုတွာ) သမဏဓမ္မံ- ကို၊ ကာတုံ- ငှါ၊

သာပတေယျံ။ ။"သံ+ ပတိ" ဟု ပုဒ်ခွဲ၊ သံသည် ဥစ္စာအနက်ဟော၊ သဿ– ဥစ္စာ၏+ ပတိ-အရှင်တည်း၊ သံပတိ-ရှင်၊ နိဂ္ဂဟိတ်ချေ၊ သပတိဟု ဖြစ်၏၊ သပတိဿ- ဥစ္စာရှင်၏+ ဟိတံ–စီးပွားတည်း၊ သာပတေယျံ–ဥစ္စာရှင်၏ စီးပွားဖြစ်သော ရွှေငွေ စသောဥစ္စာ၊ မှန်၏–ရွှေငွေစသော ဥစ္စာသည် ဥစ္စာရှင်၏ ပစ္စုပ္ပန်ကျိုး သံသရာကျိုးကို ဆောင်နိုင်သောကြောင့်"သာပတေယျံ" အမည်ရသည်၊ ထိုဥစ္စာကိုပင်"စည်းစိမ်"ဟု လည်း ခေါ်ရကား "သာပတေယျံ"ကို"ဝိဘဝံ"ဟု ဖွင့်၏၊ "အပုတ္တကံ"ကို "ပုတ္တေန ဝိရဟိတံ " ဟု ဖွင့်သည်၊ [ဝိဘဝတိ ဝိဝနုတိ ဧတေနာတိ ဝိဘဝေါ=အထူး ကြီးပွား ကြောင်း စည်းစိမ်။]

ကသ္မာ ဧဝမာဟ။ ။အလွန်မွေ့လျော်စွာ ရဟန်းအဖြစ်၌ ကျင့်နေသော ရဟန်း တပါးက သားမျိုးစေ့ပေးဘို့ရန် ( မေထုန်မှုကို ပြုဘို့ရန် ) ခွင့်ပြုခြင်းသည် မသင့်လျော် သောကြောင့်"ကသ္မာ"စသော ပုစ္ဆာကို ထုတ်သည်။

န လစ္ဆာမိ - ရလိမ့်မည်မဟုတ်၊ ပုတ္တကံ – သားငယ်ကို၊ လဘိတွာပန-ရပြီး၍ကား၊ ဩရမိဿန္တိ-နောက်ကလိုက်ခြင်းမှ ရှောင်ကြဉ်ကြကုန်လတ့်၊တတော-ထိုသို့ရှောင်ကြဉ်ခြင်းကြောင့်၊ အဟံ–သည်၊ ယထာသုခံ–ချမ်းသာသည်အားလျော်စွာ၊ ဝါ - ချမ်းသာသည့်အတိုင်း၊ သမဏဓမ္မံ - ကို၊ ကရိဿာမိ-ပြုနိုင်တော့အံ့၊ဣတိ-သို့(စိန္တေသိ-ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊)ဣမံနယံ-ဤနည်းကို၊ပဿန္တော-မြင်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဧဝံ-သို့၊ အာဟ–ပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့ မှတ်အပ်၏။

ပုပ္ဖန္တိ- ပုပ္ဖံဟူသောအမည်သည်၊ ဥတုကာလေ- ဥတုလာရာအခါ၌၊ ဥပ္ပန္နလောဟိတဿ- ဖြစ်သောသွေး၏၊ နာမံ- တည်း၊ ဟိ- ချဲ့၊ မာတုဂါမဿ-၏၊ ဥတုကာလေ-၌၊ ဂဗ္ဘပတိဋ္ဌာနဋ္ဌာနေ - ကိုယ်ဝန်တည်ရာအရပ်၌၊ လောဟိတဝဏ္ဏာ - နီသောအဆင်းရှိကုန်သော၊ ပီဠကာ - သွေးအဖုတို့သည်၊ သဏ္ဌဟိတွာ-ကောင်းစွာတည်၍၊ သတ္တဒိဝသာနိ- လုံး၊ ဝနိတွာ -ကြီးပွား၍၊ ဘိဇ္ဇန္တိ- ပေါက်ကွဲကုန်၏၊ တတော- ထိုသို့ ပေါက်ကွဲခြင်းကြောင့်၊ လောဟိတံ-သည်၊ ပဂ္ဃရတိ-ယိုစီး၏၊ ပုပ္ဖန္တိ – ဟူသော၊ ဇေတံနာမံ – သည်၊ တဿ – ထိုသွေး၏၊ (နာမံ- တည်း၊) ပန - ဆက်၊ တံ - ထိုသွေးသည်၊ ယာဝ – လောက်၊ ဗလဝံ- အားရှိသည်၊ ဟောတိ - ၏၊ ဗဟု - စွာ၊ ပဂ္ဃရတိ – ယိုစီးသေး၏၊ တာဝ- ထိုများစွာယိုစီးသေးသမျှ ကာလပတ်လုံး၊ ဒိန္နာ-ပေ အပ်သည်၊(သမာနာ)ပိ–သော်လည်း၊ ပဋိသန္ဓိ- ပဋိသန္ဓေသည်၊ နတိဋ္ဌတိ- မတည်နိုင်၊ ဒေါသေနေဝ-သွေးဟူသော အပြစ်နှင့်သာလျှင်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊[ဒေါသေနာတိ လောဟိတမလေန၊]ပဂ္ဃရတိ-ယိုကျ၏၊ ပန-အန္တယကား၊ ဒေါသေ-သွေးဟူသောအပြစ်သည်၊ ပဂ္ဃရိတေ-ယိုစီးပြီးလသော်၊ [တပစ္စည်းကြောင့် အတိတ်အနက်ပေး၊ ]ဝတ္ထု

ပုပ္ဖန္တိ၊ပေ၊နာမံ။ ။ဥတ္တိနံ ကုမာရိဘာဝပ္ပတ္တိတော (အပျိုအဖြစ်သို့ ရောက်ရာ-အပျိုဘော်ဝင်ရာ အခါမှ) ပဋ္ဌာယ ပစ္ဆိမဝယတော ဩရံ (သားသွီးရနိုင်လောက်သော နောက်ဆုံး အရွယ်၏ ဤဘက်၌) အသတိ ဝိနိဗန္ဓေ (ဘေးရန် မရှိလျှင်-ကျန်းမာလျှင်) အဍ္ဍမေ အဍ္ဍမေ သတ္တာဟေ–၌၊ ဂဗ္ဘာသယသညိတေ–(သူငယ်အိမ် ဟု အသိအမှတ်ပြုအပ်သော) တတိယေ အာဝတ္တေ (၃ခုမြောက် ဗွေ၌) ကတ်ပယာ လောဟိတပီဠကာ သဏ္ဌဟိတွာ အဂ္ဂဟိတပုဗ္ဗာဝေ ဘိဇ္ဇန္တိ (ပြည်အဖြစ်သို့မရောက်ဘဲ ပေါက်ကွဲကုန်၏)၊ တတော လောဟိတံ ပဂ္ဃရတိ၊ တတ္ထ ဥတုသမညာ, ပုပ္ဖသမညာစ။

မှတ်ချက်။ ။ "အဍ္ဍမေ အဍ္ဍမေ သတ္တာဟေ– ရှစ်သတ္တာဟမှ တကြိမ်" ဟူသော စကားကို ယခုခေတ် အဆိုနှင့် စဉ်းစားသင့်၏၊ ယခုခေတ်၌ "တလလျှင် တကြိမ်" ဟု ပြောကြ၏၊ သတပဒိကပုစ္ဆာ၌လည်း " ပွင့်မြင်ယ်မှီ, တလလျှင် ကြိမ်အညီပ, ချိန်ရာသီ ပေါ်တဲ့ပန်းငယ်" ဟု ဖြေဆိုလေသည်။

မိ-သားအိမ်သည်၊ သုဒ္ဒေ- စင်ကြယ်လသော်၊ ဒိန္နာ– သော၊ ပဋိသန္ဓိ- သည်၊ ခိပ္ပံ-လျင်မြန်စွာ၊ ပတိဋ္ဌာတိ-၏၊ ပုပ္ဖံသာ ဥပ္ပဇ္ဇိဿတိ- ကား၊ အသော- ထို ဇနီး ဟောင်း၏၊ ပုပ္ဖံ-ဥတုပန်းသည်၊ ဥပ္ပဇ္ဇိ-ပြီ၊ အကာရလောပေန- အ အက္ခရာ၏ ကြေခြင်းဖြင့်၊ သန္ဓိ-သန္ဓိသည်၊ (ဟောတိ- ၏၊) [အသော၌ အ ချေ, သောကို ဝိသံယောဂ (သာ)ပြု-ဟူလို ] ပုရာဏာ၊ပေ၊ဂဟေတွာတိ- ကား၊ ပုရာဏ ဒုတိ ယိကာယ-ရှေး၌ဖြစ်သော အဖေါ်မ၏၊ ဝါ - ဇနီးဟောင်း၏၊ ယာ ဗာဟာ– အကြင်လက်မောင်းသည်၊ (အတ္ထိ-၏၊) တတြ - ထိုလက်မောင်း၌၊ နံ-ထို ဇနီး ဟောင်းကို၊ ဂဟေတွာ-ကိုင်၍၊ ဣတိအတ္ထော–နက်၊

အပညတ္တေ သိက္ခာပဒေတိ - ကား၊ ပဌမပါရာဇိက သိက္ခာပဒေ - ပဌမ ပါရာဇိကသိက္ခာပုဒ်ကို၊ အဋ္ဌပိတေ - ထားတော်မမူအပ်သေးမီ၊ ( တနည်း ) ပဌမပါရာဇိက သိက္ခာပဒေ- ၏၊ အဋ္ဌပိတေ - ထားတော်မမူအပ်သေးသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် (အနာဒိနဝဒဿော၌စပ်၊) ကိရ–ချဲ၊ ဘဂဝတော–၏၊ ပဌမ ဗောဓိယံ - ပဌမဗောဓိ၌၊ ဝီသတိဝဿာနိ - အနှစ် ၂၀ တို့ပတ်လုံး၊ ဘိက္ခူ-

သုဒ္ဓေဝဿုမ္ဟိ ။ ။ ပဌ္ဌိတလောဟိတတ္တာ ( သွန်အပ်ပြီးသော သွေးရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် ) အနာမယတ္တာစ (ရောဂါမရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊)နဟာနတော ပရံ(စင်ကြယ်ပြီးနောက်၌) စတုတ္ထဒိဝသတော ပဋ္ဌာယ သုဒ္ဓေ ဂဗ္ဘာသယေ ( သူငယ် အိမ် စင်ကြယ်လသော် ) ( သုဒ္ဓေ ဝဿုမှိ အဖွင့်၊ ) သုဒ္ဓေပနဝဿုမှိ မာတာပိတူသု ကေဝါရံ သန္နိပတိတေသု (ပေါင်းဖေါ်ကုန်လသော်)ယာဝ သတ္တဒိဝသာနိ ခေတ္တမေဝ ဟောတိ– ၇ ရက်ပတ်လုံး သန္ဓေတည်ဘို့ရန် ခေတ်ကာလဖြစ်သည်သာ၊ (ဘာ့ကြောင့် နည်း၊) ဂဗ္ဘသဏ္ဍာဟနသ ပရိတ္တဿ လောဟိတလေပဿ ဝိဇ္ဇမာနတ္တာ=(ထို၇ ရက် အတွင်းဝယ် ကိုယ်ဝန်တည်ကြောင်း ဖြစ်သော အနည်းငယ် လိမ်းကျံကပ်ငြိနေသော သုက်သွေးရှိနေခြင်းကြောင့်တည်း၊)ကေစိ ပန အနုမာသမတ္တမ္ပိ ခေတ္တမေဝါတိ ဝဒန္တိ။

တတြ နံ ဂဟေတွာ ။ ။ တတြဖွင့်ပုံကိုကြည့်၍ " ဗာဟာယံ "ဝယ် အဓိကရဏာ အနက်၌ သက်သော သတ္တမီ ဟု သိပါ၊"နံ"ကား ဂဟေတွာ၏ ကံအတွက် ထည့်ပါ၌ တည်း။ [ "ဗာဟာယ န္တိ–အဓိကရဏတ္ထေ ဘုမ္မံတိ အာဟ-၊ပေ၊တတြ နံ ဂဟေတွာတိ၊ ''သုဒ္ဓိန္နဿ ပါဒေသု"ကဲ့သို့"ဥပယောဂတ္ထေ သတ္တမီလည်း သင့်၏"ဟု ဋီကာဆို၏။

အပညတ္တေ သိက္ခာပဒေ။ ။ပါဠိတော်၌ "သိက္ခာပဒ"ဟု သာမညဆိုသော်လည်း ပါရာဇိက သိက္ခာပုဒ်ကို ရည်ရွယ်အပ်သော " သန္နိဓာနသိတ " စကားတည်း၊ ထို့ကြောင့်"ပဌမပါရာဇိကေ အဋ္ဌပိတေ"မိန့်သည်၊ ပါရာဇိက, ပါရာဇိကနှင့်အလားတူ သံဃာဒိသေသ်ကိုသာ မပညတ်ရသေး၊ များစွာသော ထုလ္လစ္စည်း စသည်တို့မှာ ထို အခါ၌ ပညတ်ပတော်မူပြီးဖြစ်သည်–ဟူလို၊ အပညတ္တေကို " အဋ္ဌပိတေ " ဟု ဖွင့်ရာ၌ ပပုဒ် ဥ ပဓာတ်သည် ထပန အနက်ဟော ဟု မှတ်။ [ အပညတ္တေ ဟူသော လက္ခဏာကို ဟိတ်အနက်လည်းပေးနိုင်၏။ ]

တို့သည်၊ စိတ္တံ-ဘုရားရှင်၏ စိတ်တော်ကို၊ အာရာဓယိံသု- နှစ်သက်စေကြကုန်ပြီ၊ ဝါ-ကျေနပ်စေကြကုန်ပြီ၊ ဝေရုပ်-ဤသို့ ကြမ်းတန်းသော သဘောရှိသော၊ အဇ္ဈာစာရံ-လွန်ကျူးမှုကို၊ နအကံသု-မပြုကြကုန်၊ တံ-ထိုနှစ်သက်စေခြင်းကို၊ သန္ဓာယေဝ- ရည်ရွယ်တော်မူ၍သာလျှင်၊ အာရာဓယိံသု၊ ပေ၊ စိတ္တန္တိ- စိတ္တံ ဟူသော၊ ဣဒံသုတ္တံ - ဤပါဠိကို၊ အာဟ - ဟောတော်မူပြီ၊ [ ဘိက္ခဝေ-တို့၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ ဧကံ သမယံ—တချိန်၌၊ ဝါ—တချိန်တုန်းက၊ မေ-ငါဘုရား၏၊ စိတ္တံ-ကို၊ ဝတ-စင်စစ်၊ အာရာဓယိံသု-နှ်ပြီ၊ ဝါ-နှ်ပြီ၊ ····မူလပဏ္ဏာသ, ဩပမ္မဝဂ်, ကကစူပမသုတ်၊] အထ - ထို ပဌမဗောဓိဝယ် ဝါတော် ၂၀ အတွင်း၌၊ ဘဂဝါ - သည်၊ အဇ္ဈာစာရံ - ကို၊ အပဿန္တော - မြင်တော်မမူရသည်၊ (ဟုတ္ဘာ) ပါရာဇိကံဝါ – ပါရာဇိကသိက္ခာပုဒ်ကိုရင်း၊ သံဃာဒိသေသံဝါ– သံဃာဒိသေသ် သိက္ခာပုဒ်ကိုရင်း၊ န ပညပေသိ-ပညတ်တော်မမူ၊ တသ္မိံ တသ္မိံ ဝတ္ထုသ္မိံပန — ထိုထို အကြောင်းကြောင့်ကား၊ အဝသေသေ – ပါရာဇိက သံဃာဒိသေသ်မှ ကြွင်းကုန်သော၊ ပဥ္စ – နှ်သော၊ ခုဒ္ဒကာပတ္တိက္ခန္ဓေဝေ– သေးငယ်သော အာပတ်အစုတို့ကိုသာ၊ ပညပေသိ- ပြီ၊ တေန- ကြောင့်၊ အပညတ္တေ သိက္ခာပဒေတိ-ပဒေဟူ၍၊ (သံဂီတ်ကာရေဟိ၊) ဝုတ္တံ-ပြီ။

အနာဒီနဝဒဿောတိ- ကား၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဣဒါနိ-၌၊ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ ပညပေန္တော-လျက်၊ ယံအာဒီနဝံ-အကြင်အပြစ်ကို၊ ဒဿေတိ-ပြတော်မူလတ္တံ့၊ တံ-ထိုပြတော်မူအပ်လတ္တံ့သော အပြစ်ကို၊ အပဿန္တော-မမြင်သည်၊ အနဝဇ္ဇသညီ- အပြစ်မရှိဟု အမှတ်ရှိသည်၊ ဟုတွာ- ၍၊ ဝါ- ကြောင့်၊ (အဘိဝိညာပေသိ- ၌စပ်၊) ဟိ- မှန်၊ အယံ - ဤအရှင်သုဒိန်သည်၊ ဣဒံ- ဤမေထုန်အမှုကို၊ နကရဏီယံ- မပြုထိုက်၊ ဣတိဝါ- ဤသို့ဒသော်ငင်း၊ ( ဣဒံ- သည်၊ ) မူလစ္ဆေဇ္ဇာယ – အမြစ်အရင်း၏ ပြတ်ခြင်းငှါ၊ သံဝတ္တတိ – ၏၊ ဣတိဝါ-သော်ငင်း၊ သစေ ဇာနေယျ- အံ့၊ (ဝေံသတိ၊)သဒ္ဓါပဗ္ဗဇိတော-သဒ္ဓါကြောင့် ရှင်ရဟန်းပြုခဲ့သော၊ ကုလပုတ္တော-သည်၊ (ဟုတ္ဘာ)၊ တတောနိဒါနံ-ထိုသား

**အာရာဓယိံသု။** ။ "အာပုဗ္ဗ+ရာဓ—တောသနေ" ဟူသော ဓာတ်, ကာရိတ်ဏယတည်း၊ ထို့ကြောင့် "စိတ္တံ ဂဏှိံသု၊ ပူရယိံသု—ဘုရားအလိုတော်ကို+ ပြည့်ဝစေကြကုန်ပြီ၊ ဟဒယဂါဟိနိံ ပတိပတ္တိံ ( ဘုရားရှင်၏ စိတ်နှလုံးကို ယူစေနိုင်သော အကျင့်ကို) ပတိပဇ္ဇိံသု"—ဟူသော ဋီကာ၌ အဓိပ္ပါယတ္ထ ဟု မှတ်။

**မူလစ္ဆေဇ္ဇာယ။** ။ဆိဇ္ဇနံ ဆေဇ္ဇံ၊ ဆိဒိ+ ဏျ၊ မူလဿ—၏+ဆေဇ္ဇံ မူလစ္ဆေဇ္ဇံ—သာသနာတော်၏ အခြေအမြစ်ဖြစ်သော ပါရာဇိကသိက္ခာသီလ၏ ပြတ်ခြင်း၊ [ သကိုအာယပြု။ ]

မျိုးစေ့မပေးခြင်းဟူသောအကြောင်းကြောင့်၊ဝါ-ထိုမေထုန်မပြုခြင်းဟူသော အကြောင်းကြောင့်၊ ဇီဝိတက္ခယံ – အသက်ကုန်ခြင်းသို့၊ ပါပုဏေယျာဒိ- ရောက်ရသော်လည်း၊ န ကရေယျ – မပြုတန်ရာ၊ ပန – အနွယကား၊ တွေ- ဤမေထုန်မှု၌၊ အာဒီနဝံ-ကို၊ အပဿန္တော-သည်၊ နိဒ္ဒေါသသညီ-အပြစ်မရှိ ဟု အမှတ်ရှိသည်၊ အဟောသိ- ပြီ၊ တေန–ကြောင့်၊ အနာဒီနဝဒဿာဝီ- ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ- ပြီ။ ["အာဒီနဝံ+န ပဿတီတိ အနာဒီနဝ ဒဿော " ဟု အယုတ္တသမာသ် ပြု၊ ဝရံ တေ မောဃပုရိသ - စသည်ဖြင့် မိန့်တော်မူအပ်လတ့်သော အပြစ်ကို မမြင်သည်။]

ပုရာဏ ဒုတိယိကာယာတိ - ယ ဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ ဘုမ္မဝစနံ - တည်း၊ အဘိဝိညာပေသီတိ – ကား၊ ပဝတ္တေသိ- ဖြစ်စေပြီ၊ ဟိ - မှန်၊ ပဝတ္တနာဝိ- ဖြစ်စေခြင်းကိုလည်း၊ ကာယဝိညတ္တိ စောပနတော – ကာယဝိညတ်ကြောင့် ဖြစ်သော လှုပ်ရှားခြင်းကြောင့်၊ ဝိညာပနာတိ- ဝိညာပနာဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ - ၏၊ တိက္ခတ္တုံ-ကြိမ်၊ အဘိဝိညာပနဥ္စ-ဖြစ်စေမှုကိုလည်း၊ (အကာသိဉ္စပ်)၊ သော-

ပဝတ္တနာဝိ ဟိ။ ။ပါဠိတော်၌ "မေထုနံဓမ္မံ အဘိဝိညာပေသိ"ဟု ရှိ၏၊ ထိုပါဠိ အတွက် "မေထုန်အကျင့်ကို+သိစေပြီ"ဟု မဖွင့်ဘဲ "မေထုန်အကျင့်ကို + ဖြစ်စေပြီ"ဟု အနက်ကိုဖွင့်ရာ၌ သဒ္ဒါအနေအားဖြင့်အလွန်အလွန်ဝေးကွာရကား အဘိဝိညာပေသိ ပုဒ်၏ " ပဝတ္တေသိ " အနက်ကို အဘယ်ပုံ ဆက်သွယ်၍ ရအပ်ပါသနည်း – ဟု မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် " ပဝတ္တနာဝိ ဟိ၊ပေ၊ဝိညာပနာတိ ဝုစ္စတိ"ဟု မိန့်၊ [ပဝတ္တ နာဝိ၌ ဝိဖြင့် "ဝိညတ္တိ" ကိုပေါင်း၊] ဝိညတ္တိ (သိစေမှု) ကိုသာ ဝိညာပနာဟု ဆိုအပ် သည် မဟုတ်သေး၊ ဖြစ်စေမှုကိုလည်း ဝိညာပနာဟု ဆိုအပ်သည်–ဟူလို။

ကာယဝိညတ္တိ စောပနတော။ ။ဖြစ်စေခြင်းကို အဘယ့်ကြောင့် "ဝိညာပနာ" ဟု ဆိုအပ်ပါသနည်း – ဟု ထပ်၍ မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် "ကာယဝိညတ္တိ စောပန တော"ဟု မိန့်၊ကာယဝိညတ်ကြောင့်ဖြစ်ရသော လှုပ်ရှားခြင်း၏အဖြစ်ကြောင့်"ဖြစ်စေ ခြင်းကို ဝိညာပနာ"ဟု ဆိုအပ်သည်-ဟူလို။ [ကာယဝိညတ္တိစောပနတောတိ–ကာယ ဝိညတ္တိဝသေန ပဝတ္တစလနတော (သာရတ္ထ)၊ ကာယဝိညတ္တိယာ – ကြောင့်၊ နိဗ္ဗတ္တ စလနတော၊ (ဝိမတိ)၊ စောပနဉ္စ စုပဓာတ်သည် စလနအနက်ဟော၊ ပဝတ္တဟူသော အလယ်ပုဒ်အကြေ၊ ဝိညတ္တိယာ+ပဝတ္တံ+စောပနံ ဝိညတ္တိစောပနံ။]

အချုပ်မှာ–"မေထုန်မှီဝဲမှု"ဟူသည် ကာယဝိညတ်ကြောင့် ရုပ်ကလာပ်များ လှုပ် ရှားမှုဖြစ်၍ "အဘိဝိညာပေသိ"ဟု ဝိညတ်နှင့်စပ်ဆိုင်သော ဝိညာပနကြိယာကို ဆိုပါ သော်လည်း အနက်အားဖြင့် ပဝတ္တနအနက်ကိုသာ ယူရသည်–ဟု မှတ်၊ ထိုသို့"အဘိ ဝိညာပေသိ" ဟု ဆိုခြင်းမှာလည်း"မေထုနံ ပဋိသေဝိ" ဟု ဆိုလျှင် ကြမ်းတမ်းသော စကား ဖြစ်ရကား ဝိနည်းဝိဋ္ဌကတ်၌ ပဌမဆုံး သုံးစွဲအပ်သော စကားဖြစ်၍ ယဉ်ကျေး သော စကားလုံးကို သုံးစွဲခြင်းဖြစ်သည်။

၍ အရှင်သုဒိန်သည်၊ ဝဇ္ဇသညာနသန္နိဋ္ဌာနတ္တံ-ကိုယ်ဝန်တည်ခြင်း၌ ဆုံးဖြတ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ အကာသိ-ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-၏။ [ရှေးစာအုပ်များ၌ "သန္နိဋ္ဌာနံ"ဟု ရှိ၏၊ သံဂါယနာမူအတိုင်း"သန္နိဋ္ဌာနတ္တံ"ဟု ပေးလိုက်သည်၊ ၎င်းဝါကျတခုလုံး စာသွားမကောင်းလှ။]

သာ တေန ဂဗ္ဘံ ဂဏှိတိ - ကား၊ သာ စ - ထို ဇနီးဟောင်းသည်လည်း၊ တေနေဝအဇ္ဈာစာရေန - ထိုလွန်ကျူးမှုကြောင့်သာလျှင်၊ ဂဗ္ဘံ-ကို၊ ဂဏှိ-ပြီ၊ အညထာ-တပါးသောအကြောင်းကြောင့်၊(ဂဗ္ဘံ-ကို၊)နဂဏှိ-ယူသည်မဟုတ်၊ ပန- ပရိဟာရပက္ခမှတပါး စောဒကပက္ခကို ဆိုဦးအံ့၊ အညထာပိ - ကြောင့်လည်း၊ ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ- ကိုယ်ဝန်ကိုယူခြင်းသည်၊ ဟောတိကိံ -ဖြစ်နိုင်သလော၊ ဣတိ–၍ကားအမေးတည်း၊ ဟောတိ-ဖြစ်နိုင်၏၊(ဣတိ–ဖြေတည်း၊)ကထံ–အဘယ်အကြောင်းကြောင့်၊ (ဟောတိ- နည်း၊ ) ကာယသံသဂ္ဂေန - ကိုယ်၏ ရောနှောခြင်းကြောင့်၎င်း၊ ဝါ - ကိုယ်လက်နှီးနှောခြင်းကြောင့်၎င်း၊ စောဠဂ္ဂဟဏေန- အဝတ်ကိုယူခြင်းကြောင့်၎င်း၊ အသုစိပါနေန-သုက်ကိုသောက်ခြင်းကြောင့်၎င်း၊ နာဘိ ပရာမသနေန- ချက်ကို သုံးသပ်ခြင်းကြောင့်၎င်း၊ရူပဒဿ

**တိက္ခတ္တုံ အဘိဝိညာပန်** ။ ။ ရှင်သုဒိန်သည် မေထုန်ကို အလိုမရှိပါဘဲ အဘယ်အကျိုးငှါ ၃ ကြိမ် ၃ ဖန် ဖြစ်စေရသနည်း – ဟု မေးဖွယ်ရှိ၍ " တိက္ခတ္တုံ အဘိဝိညာပနံ" စသည်မိန့်၊ ကိုယ်ဝန်တည်စေမှု၌ စိတ်ချရအောင် (နောက်တဖန် မပြုရအောင်) ၃ ကြိမ်ဖြစ်စေပါသည်–ဟူလို။ [တိက္ခတ္တုံ အဘိဝိညာပနန္တိ-မုတ္တိပါပန ဝသေန(သုက်လွှတ်ခြင်းသို့ ရောက်စေခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်) တီသုဝါရေသု မေထုနမဒ္ဓသ ပဝတ္တန်။ ]

**တေနေဝ**။ ။"သဗ္ဗပဒံ သာဝဓာရဏံ" နှင့်အညီ တေနကို အဝဓာရဏ (ဧဝ) ထည့်၍ " တေနေဝ " ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုဧဝဖြင့် တားမြစ်အပ်သောအနက်ကို ပြလို၍ "န အညထာ"ဟု ထည့်ပြန်သည်။ [သဗ္ဗပဒါနံ–တို့၏၊အဝဓာရဏဖလတ္တာ–အဝဓာရဏအကျိုးရှိ (ဧဝ၏အနက်ရှိ) သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝိနာ ဧဝကာရံ (ဧဝမပါဘဲ) အဝဓာရဏတ္ထော ဝိညာယတီတိ အာဟ—တေနေဝ အဇ္ဈာစာရေနာတိ။ ]

**ကိံ ပန**။ ။ဣဒါနိ အဝဓာရဏေန (ဧဝသဒ္ဒါသည်) နိဝတ္တိတံ အတ္ထံ ဒဿေတုံ (တားမြစ်အပ်သောအနက်ကို အကျယ်ပြခြင်းငှါ) အာဟ – ကိံ ပန အညထာပိ ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ ဟောတီတိ အာဒိ။

**နာဘိပရာမသန**။ ။ချက်ကိုသုံးသပ်ခြင်းသည် ကာယသံသဂ္ဂတွင် ပါဝင်ပြီးမဟုတ်ပါလော၊ အဘယ့်ကြောင့် သီးခြားဆိုရသနည်း– ဟု မေးဖွယ်ရှိ၏၊ ၂ ယောက်လုံး၏ ဆန္ဒရာဂအတွက် ကာယသံသဂ္ဂကို ဆိုအပ်၏၊ မိန်းမ၏သာ ဆန္ဒရာဂအတွက် နာဘိပရာမသနကို ဆိုအပ်၏။ [ တနည်း– နာဘိပရာမသနကြောင့် ကိုယ်ဝန်ရသော ဝတ္ထုအများ ထင်ရှားရှိဘူးသောကြောင့်လည်း နာဘိပရာမသနကို သီးခြားဆိုရသည်။ ]

နေန- အဆင်းကို ကြည်ခြင်းကြောင့်၎င်း၊ သဒ္ဒေန-အသံကြောင့်၎င်း၊ ဂန္ဓေန-အနံ့ကြောင့်၎င်း (ဂဏှဂ္ဂဟဏံ ဟောတိ၊) ဟိ-ချဲ့၊ ကေစ္စာ- အချို့ကုန်သော၊ ဇဗ္ဗိယော - တို့သည်၊ ဥတုသမယေ - ဥတုပန်းပွင့်ရာအခါ၌၊ ဆန္ဒရာဂရတ္တာ-ဆန္ဒရာဂဖြင့် တပ်မက်ကုန်သည်၊ (ဟုတ္ဝာ၊) ပုရိသာနံ - တို့၏၊ ဟတ္ထဂ္ဂါဟ ဝေဏိဂ္ဂါဟ အင်္ဂပစ္စင်္ဂပရာမသနံ - လက်ကိုင်ခြင်း, ဆံအစု (ဆံစည်း) ကိုကိုင်ခြင်း, ဒေင်္ဂကြီးငယ်ကို သုံးသပ်ခြင်းကို၊ သာဒယန္တိယောပိ - သာယာကုန်လျက်လည်း၊ ဂဗ္ဘံ-ကို၊ ဂဏှန္တိ-ယူတတ်ကုန်၏၊ ဧဝံ- ဤသို့လျှင်၊ ကာယသံသဂ္ဂေန – ကြောင့်၊ ဝါ–ကြောင့်၊ ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ ဟောတိ။

ပန - ကား၊ (ကာယသံသဂ္ဂမှတပါး စောဠဂ္ဂဟဏ ကား၊) ဥဒါယိဿ-ဥဒါယိ၏၊ ပုရာဏဒုတိယိကာ-မယားဟောင်း ဖြစ်သော၊ ဘိက္ခုနီ-သည်၊ တံ အသုစိံ-ထိုသုက်ကို၊[ သင်းပိုင်ဟောင်း၌ ပါလာသော သုက်ကို၊]ဧကဒေသံ-တစိတ်တဘို့ကို၊မုခေန-ခံတွင်းဖြင့်၊အဂ္ဂဟေသိ-ယူပြီ၊ဧကဒေသံ-ကို၊စောဠကေ နေဝ-အဝတ်နှင့် သာလျှင်၊ သဒ္ဓိံ–ကွ၊ အင်္ဂဇာတေ– အင်္ဂါဇာတ်၌၊ ပက္ခိပိ- ထည့်ပြီ၊ သာ-ထိုဘိက္ခုနီသည်၊ တေန-ထိုအဝတ်ကို ယူခြင်းကြောင့်၊ ဂဗ္ဘံ-ကို၊ ဂဏှိ-ပြီ၊(အကျယ်ကို ပုရာဏဒုတိယိကာဝတ္ထုပုဒ်မှာကြည့်၊)ဧဝံ-လျှင်၊ စောဠဂ္ဂဟဏေန ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ ဟောတိ၊မိဂသိင်္ဂတာပသဿ-မိဂသိင်္ဂရသေ့၏၊ မာတာ-အမိဖြစ်သော၊ မိဂီ-သမင်မသည်၊ ဥတုသမယေ-၌၊ တာပသဿ-ရသေ့၏၊ ပဿာဝဋ္ဌာနံ-ကျင်ငယ်စွန့်ရာအရပ်သို့၊ အာဂန္တွာ-၍၊ သ သမ္ဘဝံ-သုက်နှင့် တကွဖြစ်သော၊ ပဿာဝံ- ကျင်ငယ်ကို၊ ပိဝိ-သောက်ပြီ၊ သာ - ထိုသမင်မသည်၊ တေန – ထို သုက်ကို သောက်ခြင်းကြောင့်၊ ဂဗ္ဘံဂဏှိတွာ၊ မိဂသိင်္ဂံ- မိဂသိင် သတို့သားကို၊ ဝိဇာယိ - ဖွားပြီ၊ ဧဝံ–လျှင်၊ အသုစိပါနေန- ကြောင့်၊ ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ-သည်၊ ဟောတိ–၏။

ပန-ကား၊ သာမဿ - သာမမည်သော၊ ဗောဓိသတ္တဿ - ၏၊ မာတာ ပိတူနံ - တို့၏၊ စက္ခု ပရိဟာနိံ - မျက်စိ၏ ဆုတ်ယုတ်မည့်အရေးကို၊ ဉတွာ-ကြိုတင်ကာသိ၍၊ သက္ကော - သကြားသည်၊ ပုတ္တံ - ကို၊ ဒါတုကာမော–သည်၊

ဇဗ္ဗိယောတိ ။ ။ ကထံ ကာယသံသဂ္ဂေန ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ ဟောတိ၊ ကထဥ္စ တတ္ထ သုက္ကသောဏိတာဿ သမ္ဘဝေါတိ (ဘယ်နည်းဖြင့် ထို ကာယသံသဂ္ဂပြုရာ၌ သုက်သွေး ဖြစ်နိုင်သနည်း )ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ "ဇဗ္ဗိယောတိ " စသည်မိန့်၊ ဆန္ဒရာဂုပ္ပတ္တိဝသေန ဇဗ္ဗိယာ သုက္ကဌောဋ္ဌာသော စလိတော ဟောတိ (ကာယသံသဂ္ဂပြုသောအခါ ဆန္ဒရာဂဖြစ်ခြင်းကြောင့် မိန်းမ၏သုက် အစုအဝေးသည် လှုပ်ရှား၏ )၊ သောပိ ( ထိုလှုပ်ရှားခြင်းသည်လည်း) ဂဗ္ဘသဏ္ဌာနဿ ပစ္စယော ဟောတီတိ အဓိပ္ပါယော။

(ဟုတွာ)၊ ဒုက္ကူလပဏ္ဍိတံ - ဒုက္ကူလသုခမိန်ကို၊ အာဟ-ပြီ၊ (ကိံ)၊ တုမှာကံ-တို့အား၊ မေထုနဓမ္မော-သည်၊ ဝဋ္ဋတိ-အပ်သလော၊ ဣတိ-သို့၊ (အာဟ၊) မယံ - တို့သည်၊ တေန - ဤအကျင့်ဖြင့်၊ အနတ္ထိကာ - အလိုမရှိကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)ဣသိပဗ္ဗဇ္ဇံ-ရသေ့ ရဟန်းအဖြစ်သို့၊ ပဗ္ဗဇိတာ-ကပ်ရောက်ကုန်သည်၊ အမှ-ဖြစ်ကုန်၏၊ ဣတိ-ဤသို့ပြောပြီ၊[မေထုန်ပြုအပ်-မပြုအပ်ကို စဉ်းစားဘွယ် မလို၊ ထိုအမှုကို အလိုမရှိ၍ ရဟန်းပြုခဲ့ကြသည်-ဟူလို။] တေနဟိ-ထိုသို့ အလိုမရှိလျှင်၊ ဣမိဿာ—ဤ ပါရိကာ၏၊ ဥတုသမယေ-၌၊ အင်္ဂုဋ္ဌေန - လက်မဖြင့်၊ နာဘိံ-ချက်ကို၊ ပရာမသေယျာထ-သုံးသပ်ပါကုန်လော၊ ဣတိ-ဤသို့ပြောပြီ၊ သော-ထို ဒုက္ကူလသုခမိန်သည်၊ တထာ- ထို ပြောသည့်အတိုင်း၊ အကာသိ-ပြီ၊ သာ - ထို ပါရိကာသည်၊ တေန - ထိုချက်ကို သုံးသပ်ခြင်းကြောင့်၊ ဂဗ္ဘံ- ကို၊ ဂဏှိတွာ-ယူ၍၊ သာမတာပသဒါရကံ - သာမ ရသေ့ကလေးကို၊ ဝိဇာယိ-ပြီ၊ [ ချက်ကို သုံးသပ်သောအခါ သွေးသားလှုပ်ရှားသဖြင့် ကိုယ်ဝန်ရသည်။] ဧဝံ - လျှင်၊ နာဘိပရာမသနေန- ကြောင့်၊ ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ-သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ တေနေဝ နယေန—ဤနည်းဖြင့်ပင်၊ မဏ္ဍဗျဿစ-မဏ္ဍဗျ သတိုးသား၏ငင်း၊ စဏ္ဍပဇ္ဇောတဿစ- စဏ္ဍပဇ္ဇောတမင်း၏ငင်း၊ ဝတ္ထု-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏။

ကထံ—လျှင်၊ ရူပဒဿနေန – အဆင်းကို ကြည့်ခြင်းကြောင့်၊ ( ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ-သည်၊)ဟောတိ-နည်း၊ ဣဓ-ဤလောက၌၊ ကေစ္စာ-သော၊ ဣတ္ထီ-သည်၊ ဥတုသမယေ – ၌၊ ပုရိသသံသဂ္ဂံ - ယောက်ျား၏ ရောနှောခြင်းကို၊ အလဘမာနာ-သည် (ဟုတွာ)၊ ဆန္ဒရာဂဝသေန-ဖြင့်၊ ရာဇောရောဓာဝိယ—မင်း၏ မောင်းမ ကဲ့သို့၊ အန္တောဂေဟဂတာဝ—အိမ်တွင်းသို့ ရောက်လျက်သာလျှင်၊ ဝါ - အိမ်တွင်း၌ တည်လျက်သာလျှင်၊ ပုရိသံ—ကို၊ ဥပနိဇ္ဈာယတိ - တစိမ့်စိမ့် ကြည့်၏၊ ဝါ-တစိမ့်စိမ့်ကြံစည်၏၊ သာ-ထိုမိန်းမသည်၊ တေန - ထို ကြည့်ခြင်း ကြံခြင်းကြောင့်၊ ဂဗ္ဘံ-ကို၊ ဂဏှာတိ-၏၊ ဧဝံ-လျှင်၊ ရူပဒဿနေန—ကြောင့်၊ ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ-သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပန-ကား၊ ဗလာကာသု-ဗျိုင်းအောက်တို့၌၊ ပုရိသော နာမ-အဖိုမည်သည်၊ နတ္ထိ-မရှိ၊ တာ-ထိုဗျိုင်းအောက်မတို့သည်၊

**တေနေဝ နယေန**။ ။မဏ္ဍဗျ၏ အမိဖြစ်သော ဒိဋ္ဌမင်္ဂလိကာ၏ ချက်ကို မာတင် ရသေ့သည် သုံးသပ်၏၊ စဏ္ဍပဇ္ဇောတမင်းလောင်း၏ မယ်တော်မိဖုရားသည် ချက်ပေါ်၌ ကင်းသတ္တာဖြတ်သွားသည်ကို သာယာ၏၊ ထို့ကြောင့် ကိုယ်ဝန်ရကြသည်။

**ဥပနိဇ္ဈာယတိ**။ ။ဝါတပါနာဒိနာ ဒိသွာဝါ ( ပြူတင်းပေါက်က လှမ်းကြည့်၍ ဖြစ်စေ) ဒိဋ္ဌပုဗ္ဗံဝါ ပုရိသံ (မြင်ဘူးသော ယောက်ျားကို မှန်း၍ ဖြစ်စေ) ဥပနိဇ္ဈာယတိ၊ [သီဟိုဠ်ကျွန်း၌ မောင်းမ တယောက်သည် ထိုအတိုင်းကြည့်၍ ကိုယ်ဝန်ရဘူးသတတ်။]

ဥတုသမယေ-၌၊ မေဃသဒ္ဒံ-မိုယ်းသံကို၊ သုတွာ-၍၊ ဂဗ္ဘံ- ကို၊ ဂဏှန္တိ- န်၏၊ ကုက္ကုဋိယောပိ- ကြက်မတို့သည်လည်း၊ ကဒါစိ- ၌၊ ဧကဿ - သော၊ ကုက္ကုဋဿ-ကြက်ဖ၏၊ သဒ္ဒံ - တွန်သံကို၊ သုတွာ - ၍၊ ဗဟုကာပိ-ကြက်မ အများတို့သည်လည်း၊ ဂဗ္ဘံ ဂဏှန္တိ၊ တထာ-တူ၊ ဂါဝီ - နွားမတို့သည်၊ ဥသဘဿ-နွားလား ဥသဘ၏၊ သဒ္ဒံ သုတွာ, ဗဟုကာပိ - နွားမ အများတို့သည်လည်း၊ ဂဗ္ဘံ ဂဏှန္တိ-န်၏၊ ဧဝံ သဒ္ဒေန ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ ဟောတိ၊ စ - ဆက်၊ ဂါဝီ ဧဝ-တို့သည်ပင်၊ ကဒါစိ-၌၊ ဥသဘဂန္ဓေန-နွားလား ဥသဘ၏ အနံ့ကြောင့်၊ ဂဗ္ဘံ-ကို၊ ဂဏှန္တိ-န်၏၊ ဧဝံ ဂန္ဓေန ဂဗ္ဘဂ္ဂဟဏံ ဟောတိ။

ပန-အတ္ထုဒ္ဓါရ သာမညမှတပါး အထူးဒွေသ ဝိသေသကို ဆိုဦးအံ့၊ ဣဓ-၌ ရှင်သုဒိန်နှင့်ဇနီးဟောင်း၏ ကိုယ်ဝန်ယူရာ၌၊ အယံ - ဤဇနီးဟောင်းသည်၊ အဇ္ဈာစာရေန-လွန်ကျူးမှုကြောင့်၊ ဂဗ္ဘံ- ကို၊ ဂဏှိ-ယူပြီ၊ ယံ-ယင်း အဇ္ဈာစာရကြောင့် ကိုယ်ဝန်ယူခြင်းကို၊ သန္ဓာယ - ရည်ရွယ်တော်မူ၍၊ မာတာပိတ ရောစ၊ပေ၊ဟောတီတိ-ဟောတိဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ၊) ဝုတ္တံ- ဟောတော်မူအပ် ပြီ၊ [မာတာပိတရောစ- မိဘတို့သည်လည်း၊ သန္နိပတိတာ- ပေါင်းဖေါ်သော အားဖြင့် စုဝေးကုန်သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ မာတာစ-အမိသည်လည်း၊ ဥတုနီ-ဥတုပန်းရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ဂန္ဓဗ္ဗောစ - အမိဝမ်းတိုက်သို့ ရောက်ထိုက်သော သူငယ်လောင်းသည်လည်း၊ ဝါ-ဘဝဂါမိကံဖြင့် ဖြစ်နေသောသူငယ်လောင်း သည်လည်း၊ ပစ္စုပဋ္ဌိတော-ဘဝဟောင်း၌ ရှေးရှုတည်နေသည်၊ ဟောတိ-၏၊

သန္နိပတိတာ။ ။အသဒ္ဓမ္မဝသေန ( မသူတော်အကျင့်၏ အစွမ်းဖြင့် ) ဧကတော ဘာဝေ သမာဂတာ သင်္ဂတာ ( ပေါင်းဆုံကြကုန်သည် ) ဟောန္တိ၊ ဤအဖွင့်ဖြင့် "ယခု ကာလ စည်းဝေးခြင်းမျိုးကို "သန္နိပတိတာ ဟု မယူပါနှင့်" ဟု ပြသည်။

ဂန္ဓဗ္ဗော ။ ။ တတြုပဂသတ္တော – ထိုအမိဝမ်း၌ရောက်သော သတ္တဝါသည်၊ ဂန္ဓဗ္ဗောတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ တကာရဿ ဓကာရော ကတောတိ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ၊ "ဂန္တဗ္ဗ+ဘဗ္ဗောတိ ဂန္ဓဗ္ဗော– အမိဝမ်း၌ ရောက်သင့်သူ"ဟု ပြု၍ ဂမုဓာတ် တနွပစ္စည်းဟု ဆိုလျှင် တကို ဓပြု၍ "ဂန္ဓဗ္ဗော"ဟု ဖြစ်သည် – ဟူလို၊ တနည်း – "ဂန္ဓ-သူစနေ (ထင်ရှားပြုခြင်း)" ဟူသော ဓာတ်ကျမ်းနှင့်အညီ "ဂန္ဓတိ – ဖြစ်လတ့်သော ဂတိနိမိတ်ကို ထင်စေသော အားဖြင့် ထင်ရှားပြတတ်၏၊ ဣတိ ဂန္ဓော"ဟု ဝစနတ္ထပြု၍ ဘဝဂါမိ (ဘဝတပါးသို့ ရောက်စေတတ်သော) ကံကို ဂန္ဓ ဟု ယူ၊ "ဂန္ဓေန+အဗ္ဗတိ ပဝတ္တတီတိ ဂန္ဓဗ္ဗော- ဘဝ ဂါမိကံဖြင့် ဖြစ်နေသော (ဇုတေခါနီး နိမိတ်ထင်နေသော) သတ္တဝါ။

ပစ္စုပဋ္ဌိတော။ ။ဧတ္ထ န မာတာပိတူနံ သန္နိပါတံ ဩလောကယမာနော သမီပေ ဌိတော နာမ ဟောတိ၊ ကမ္မယန္တေန ယန္တိတော ပန (ကံ ယန္တယားစက်သည် လှည့်အပ်သော ) ဧကော သတ္တော တသ္မိံ ဩကာသေ နိဗ္ဗတ္တနကော ( ဖြစ်လတ့်သော ) ပုရိမ

ဧဝံ-လျှင်၊ တိဏ္ဏံ—သုံးပါးသောအကြောင်းတို့၏၊ သန္နိပါတာ- ပေါင်းဆုံခြင်းကြောင့်၊ ဂဗ္ဘဿ - သူငယ်ကိုယ်ဝန်၏၊ အဝက္ကန္တိ ( ဩက္ကန္တိ) - သက်ရောက်ခြင်းသည်၊ ဟောတိ-၏။]

ဘုမ္မာ ဒေဝါ သဒ္ဒမနုဿာဝေသုန္တိ-ကား၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ လောကေ-၌၊ ပါပကမ္မံ-ကို၊ ပဋိစ္ဆန္နတော-ပြုသူ၏၊ ရဟောနာမ-ဆိတ်ကွယ်သော အရပ်မည်သည်၊ နတ္ထိ—မရှိ၊ ဟိ- မှန်၊ သဗ္ဗပဌမံ-အလုံးစုံတို့၏ ရှေးဦးစွာ၊ အဿ-ထို မကောင်းမှု ပြုသူ၏၊ တံပါပံ-ကို၊ အတ္တနာ- ကိုယ်တိုင်၊ ဇာနာတိ - သိ၏၊ တတော-ထိုမှ နောက်၌၊ အာရက္ခဒေဝတာ - ထိုသူ၏ ကိုယ်စောင့် နတ်သည်၊ ( ဇာနာတိ—၏၊ ) အထ - ထိုမှ နောက်၌၊ အညာပိ- အခြားလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ပရစိတ္တဝိဒူနိယော – သူတပါးစိတ်ကို သိနိုင်ကုန်သော၊ ဒေဝတာ-တို့သည်၊ (ဇာနန္တိ- န်၏၊) [ သဗ္ဗပဌမံဟိ- ၌ “ ဟိ (ယသ္မာ) - ကြောင့်”ဟု ပေးပြီးလျှင်“တသ္မာ နတ္ထိ” ဟု ပြန်လှည့်၍လည်း ပေး၊ ] တသ္မာ - ကြောင့်၊

ဇာတိယံ ဋ္ဌိတော ဂတိနိမိတ္တာဒိ အာရမဏကရဏဝသေန ဥပပတ္တာဘိမုခေါ ( ပဋိသန္ဓေနေဘို့ရန် ရှေးရှုသည်) ဟောတီတိ အဓိပ္ပါယော။

**ဂဗ္ဘဿ။** ။ [ဂဗ္ဘေ နိဗ္ဗတ္တနက သတ္တဿ — ဝမ်းတိုက်၌ ဖြစ်လတ္တံ့သူငယ်၏။] တချို့နေရာ၌ အမိဝမ်းကို “ဂဗ္ဘ” ဟု ယူရသော်လည်း ဤနေရာ၌ ကိုယ်ဝန်သူငယ်ကို “ ဂဗ္ဘ ” ဟု ယူစေလို၍ ဤသို့ ဖွင့်သည်၊ “ ဂဗ္ဘတိ အတ္တဘာဝဘာဝေန ပဝတ္တတိ—အတ္တဘောအဖြစ်ဖြင့် ဖြစ်၏၊ဣတိ ဂဗ္ဘော”ဟုပြု၍ ကလလာဒိအဝတ္ထာဓမ္မပဗန္ဓ (ကလလ ရေကြည်စသော အခိုက်အတန့်ရှိသော ရုပ်ကလာပ်အစဉ်) ကို အရကောက်ပါ။

**ဥပစာအဆက်ဆက်။** ။တံနိဿိတတ္တာ ပန သတ္တသန္တာနော ဂဗ္ဘောတိ ဝုစ္စတိ၊ ယထာ မဉ္စာ ဥက္ကုဋ္ဌိံ ကရောန္တီတိ၊ ထိုရုပ်ကလာပ်အစဉ်ကိုမှီ၍ သတ္တာဟု ခေါ်ရသော ခန္ဓာအစဉ်ကိုကား (ဌာနကလာပ် အစဉ်၏ ဂဗ္ဘအမည်ကို ဌာနီသတ္တာပေါ်တင်စား၍) ဌာနူပစာရအားဖြင့်“ဂဗ္ဘ”ဟု ခေါ်ရ၏၊တံနိဿယဘာဝတော မာတုကုစ္ဆိ ဂဗ္ဘောတိ ဝေဒိတဗ္ဗော = ထို ကိုယ်ဝန်၏ တည်ရာ ဖြစ်သောကြောင့် ကိုယ်ဝန်သူငယ် ဟူသော ဌာနီ၏ ဂဗ္ဘအမည်ကို ဌာနဖြစ်သော ဝမ်းတိုက်၌ တင်စား၍ ဌာနျူပစာရအားဖြင့် အမိဝမ်းကိုလည်း “ ဂဗ္ဘ ” ဟု ခေါ်ရသည်။

**တနည်း ။** ။ ပကတိတိုက်ခန်းသည် နေသူတို့၏ တည်ရာဖြစ်သကဲ့သို့ ကိုယ်ဝန်သူငယ်၏ ဖြစ်ရာနေရာဖြစ်သောကြောင့် “ဂဗ္ဘောဝိယာတိ ဂဗ္ဘော”ဟု ဥပမာတဒ္ဓိတ်ဆင့်၍ (တနည်း) သဒိသူပစာရအားဖြင့် အမိဝမ်းတိုက်ကို ဂဗ္ဘ ဟု ခေါ်၏၊ ဥပမာတဒ္ဓိတ်ဆိုလျှင် ဥပစာမဟုတ်, မုချတည်း၊ ဥပစာတင်လျှင်လည်း ဥပမာတဒ္ဓိတ် မဆင့်ရဟု မှတ်။ [ ဂဗ္ဘောဝိယာတိ ဝါ , ယထာ ဟိ နိဝါသဋ္ဌာနတာယ သတ္တာနံ ဩဝရကော ဂဗ္ဘောတိ ဝုစ္စတိ၊ ဧဝံ ဂဗ္ဘသေယျကာနံ သတ္တာနံ ယာဝ အဘိဇာတိ (ဖွားသည်အထိ) နိဝါသဋ္ဌာနတာယ မာတုကုစ္ဆိ ဂဗ္ဘောတိ ဝုတ္တော၊—သာရတ္ထ။]

( မကောင်းမှု ပြုသူမှာ ဆိတ်ကွယ်သော အရပ် မရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) အသ-ထိုသုဒိန်၏၊ ပရိစ္စဝိဒူ-န်သော၊ သကလဝနသဏ္ဍာနိယိတာ- အလုံး စုံသော တောအုပ်၌ မှီကုန်သော၊ ဘုမ္မာ-မြေ၌ဖြစ်ကုန်သော၊ဒေဝါ-တို့သည်၊ (တနည်း) ဘုမ္မာဒေဝါ- ဘုမ္မဇိုဝ်းတို့သည်၊ တံအဇ္ဈာစာရံ - ကို၊ ဒိသွာ - ၍၊ သဒ္ဒံ-ကို၊ အနုဿာဝေသုံ-တဆင့်ကြားသိစေကြကုန်ပြီ၊ [သဒ္ဒမနုဿာဝေသုံ-ကို '' ယထာ '' စသည်ဖြင့် ထပ်၍ဖွင့်သည်။ ] ယထာ - အကြင် အခြင်းအရာ အားဖြင့်( ကြွက်ဆိုလသော်)၊အညေပိ-န်သော၊ဒေဝါ-တို့သည်သုဏန္တိ-န်၏၊ တထာ-ထို အခြားနတ်တို့ ကြားနိုင်လေ ံအောင်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ နိစ္ဆာရေသုံ-ကြွက်ဆိုကြကုန်ပြီ၊ ကိန္တိ-အဘယ်သို့လျှင်၊ ( အနုဿာဝေသုံ-တဆင့်ကြားသိစေကြကုန်သနည်း၊) နိရဗ္ဗုဒေါဝတ ဘော၊ပေ၊အာဒီနဝေါ ဥပ္ပါဒိတောတိ-ဘောဟူ၍(အနုဿာဝေသုံ-ပြီ၊)တဿ-ထို နိရဗ္ဗုဒေါ အစ ရှိသောပါဠိ၏၊အတ္ထော-ကို၊ ဝေရဉ္ဇကဏ္ဍေ-၌၊ဝုတ္တနယေနေဝ ဝေဒိတဗ္ဗော။

ပန-ကား၊[အတိဒေသ သံဝဏ္ဏနာမှတပါး ပစ္စက္ခသံဝဏ္ဏနာကား၊]ဘုမ္မာနံ ၊ပေ၊ စာတုမဟာရာဇိကာတိ ဧတ္ထ - ရာဇိကာဟူသော ဤ ပါဌ်၌၊ ဘုမ္မာနံ ဒေဝါနံ - ဘုမ္မဇိုင်းတို့၏၊ သဒ္ဒံ - ကို၊ အာကာသဋ္ဌဒေဝတာ - ကောင်းကင်၌ တည်သောနတ်တို့သည်၊ ဝါ-အာကာသဇိုဝ်းတို့သည်၊ အဿောသုံ-ကြားသိ ကြကုန်ပြီ၊ အာကာသဋ္ဌာနံ - တို့၏၊ (သဒ္ဒံ-ကို၊) စာတုမဟာ ရာဇိကာ- မြင့်မိုရ် တောင်အပြင်၌နေကုန်သော စာတုမဟာရာဇ်နတ်တို့သည်၊ (အဿောသုံ-ပြီ၊) ဣတိ - သို့၊ အယံ အနုက္ကမော - ဤအစဉ်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော - ၏၊ ဗြဟ္မကာယိကာတိ- ကား၊ အသညသတ္တေစ - အသညသတ် ဗြဟ္မာတို့ကိုင်း၊ အရူပါဝစရေစ - အရူပါဝစရ ဗြဟ္မာတို့ကိုင်း၊ ထပေတွာ—၍၊ သဗ္ဗေပိ- အလုံးစုံလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ဗြဟ္မာနော-တို့သည်၊ အဿောသုံ-ပြီ၊စ- ဆက်၊ သုတွာ-မိမိတို့ ကြားပြီး၍၊ သဒ္ဒံ-ကို၊ အနုဿာဝေသုံ - တဆင့်ကြားစေကြကုန်ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊

**ဖြေပြန ။** ။ ပါဠိတော်၌ အာကာသဋ္ဌနတ်များ မပါသော်လည်း ''စာတုမဟာ ရာဇိကာ''အရ အာကာသဋ္ဌက, ပဗ္ဗတဋ္ဌကဟု ၂ မျိုးခွဲ၍ အာကာသဋ္ဌ(ကောင်းကင်၌ တည်သော ) နတ်တို့ကိုလည်း စာတုမဟာရာဇိကာ၌ သွင်းထားသည်၊ အဋ္ဌကထာ၌ ပါသော စာတုမဟာရာဇိက နတ်တို့ကား '' ပရိဘဏ္ဍ '' ဟု ခေါ်သော မြင့်မိုရ်တောင် အပြင်၌နေသော ပဗ္ဗတဋ္ဌကနတ်တို့တည်း။

**မှတ်ချက်။** ။ ဘူမိယံ+ ဘဝါ ဘုမ္မာ၊ ဘဝအနက်၌ ဏျသက်၊ မြေနှင့်စပ်သော တော တောင် သစ်ပင်တို့၌နေသော နတ်အားလုံးကို''ဘုမ္မဒေဝ-ဘုမ္မဇိုဝ်း''ဟု ခေါ်၏၊ ကောင်းကင်၌ ဘုံဗိမာန်ဖြင့် နေသော နတ်တို့ကို အာကာသဋ္ဌနတ်ဟု ခေါ်သည်။

ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ ဇုတိဟ တေန ခဏေနာတိ- ကား၊ ဇံ-ဤသို့လျှင်၊ သုဒိန္န
သ -ံ၏၊ တေန အဋ္ဌာစရက္ခဏေန - ထို လွန်ကျူးရာ ခဏခြင်းဖြင့်၊ တေန
မုဟုတ္တေနာတိ-ကား၊ အဋ္ဌာစရမုဟုတ္တေနေဝ- လွန်ကျူးရာ တမုဟုတ်ခြင်း
ဖြင့်ပင်၊ [ အဋ္ဌာစရကာလချင်း တူသောကြောင့် "နေဝ" ဟု ဧဝဖြင့်
ဆိုသည်။] ယာဝ မြဟ္မလောကာတိ-ကား၊ ယာဝ အကနိဋ္ဌမြဟ္မလောကာ-
အကနိဋ္ဌမြဟ္မာပြည်တိုင်အောင်၊ အဗ္ဘုဂ္ဂစ္ဆိတိ- ကား၊ အဘိဥဂ္ဂစ္ဆိ-လွှမ်းမိုး၍
တက်ပြီ၊ အဗ္ဘုဋ္ဌာသိ-လွှမ်းမိုး၍ တက်ပြီ၊ ကောလာဟလံ-တပြိုင်နက်
အုတ်အုတ်ကျက်ကျက် အသံသည်၊ အဟောသိ-ပြီ၊ ဇုတိ-ဤသို့ မှတ်အပ်၏။
[ကောလာဟလံ-ဟု ဆိုသော်လည်း ထိုအသံသည် နတ် မြဟ္မာလောက၌
သာ ပြန့်နှံ့၍ လူ့လောက၌ မပြန့်နှံ့၊ နတ်မြဟ္မာတို့၏အဆင်းကို လူတို့က မမြင်
နိုင်သကဲ့သို့ အသံကိုလည်း မကြားနိုင်။]

ပုတ္တံ ဝိဇာယီတိ - ကား၊ သုဝဏ္ဏဗိမ္ဗသဒိသံ- ရွှေရုပ်နှင့် တူသော၊ ပစ္ဆိမ
ဘဝိက သတ္တံ- နောက်ဆုံး ဘဝ၌ ဖြစ်သော သတ္တဝါကို၊ ဇနေသိ - ဖြစ်စေပြီ၊
[ဇနေသိ ဟု ဖွင့်သဖြင့် ဝိဇာယိ၌ ဝိပုဗ္ဗ ဇန , ဏာယ , ဤဝိဘတ် ဟု သိစေ၏၊
နကို အာပြု။ ] ဗီဇကောတိနာမ မကံသူတိ - ကား၊ အညံ- သော၊ နာမံ-ကို၊
ကာတုံ - ပြုခြင်းငှါ၊ ဝါ - ပြုခွင့်ကို၊ န အဒံသု - န်၊ ဗီဇကမ္ပိ ဒေဟီတိ- ဟူ၍၊
မာတာမဟိယာ- အမေကြီးသည်၊ ဝါ-အဖွားသည်၊ ဝုတ္တဘာဝဿ-ပြောဆို
အပ်သည်၏ အဖြစ်၏၊ ပါကဋတ္တာ- ထင်ရှားသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ အဿ-
ထိုကလေး၏၊ ဗီဇကောတ္တေဝ- ဗီဇကဟူ၍သာ၊ နာမံ-သည်၊ ဟောတု-ဖြစ်ပါ
စေ၊ ဇုတိ- ဤသို့ပြော၍၊ ဗီဇကောတိနာမံ- ကို၊ အကံသု- န်ပြီ၊ ပန- ဆက်၊
ပုတ္တဿ-၏၊ နာမဝသေနေဝ-နာမည်၏ အစွမ်းဖြင့်သာလျှင်၊ ဝါ-နာမည်နှင့်
စပ်သဖြင့် သာလျှင်၊ အဿ - ထိုကလေး၏၊ မာတာပိတူနမ္ပိ -တို့၏လည်း၊
နာမံ-ကို၊ အကံသု-န်ပြီ၊ တေ အပရေန သမယေနာတိ-န ဟူသောစကားကို၊
ဗီဇကဋ္ဌ-ကိုဂှင်း၊ ဗီဇကမာတရဥ္စ-ကိုဂှင်း၊ သန္ဓာယ-၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ)
ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ကိရ- ချဲ့၊ ဗီဇကဿ - ၏၊ သတ္တဋ္ဌဝဿကာလေ-၇ နှစ် ၈ နှစ် ရှိရာ
အခါ၌၊ တဿ-ထို ဗီဇက၏၊ မာတာ-သည်၊ ဘိက္ခုနီသု- တို့၌ဂှင်း၊ သောစ-
ထိုဗီဇကသည်လည်း၊ဘိက္ခူသု-တို့၌ဂှင်း၊ ပဗ္ဗဇိတွာ-ရှင်ရဟန်းပြု၍၊ကလျာဏ

**ဇုတိဟ တေနခဏေန**။ ။ ဇုတိဟ နိပါတ် ၂ ခုကို ဇံဟု ဖွင့်၏၊ [ဇုတိဟာတိ
နိပါတသမုဒါယော (ဇုတိ+ဟ နိပါတ်အပေါင်းကို ) ဇံသဒ္ဒဿ အတ္ထော ဒဋ္ဌဗ္ဗောတိ
အာဟ - ဝေန္တိ။] ခဏနှင့် မုဟုတ္တ ၂ ပုဒ်ကား အနက်တူသော ပရိယာယ် (စကား
အလဲအလှယ်) ပုဒ်များတည်း။

မိတ္တေ - ကောင်းသော မိတ်ဆွေတို့ကို၊ ဥပနိဿာယ - မှီ၍၊ အရဟတ္တေ- ၌၊ ပတိဋ္ဌဟိံသု-နပြီ၊ တေန- ကြောင့်၊ ဥဘော အဂါရသ္မာ၊ပေ၊သဇ္ဈာကံသုတိ- ဟူ၍၊ (သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ဇဝံ-လျှင်၊ မာတာပုတ္တာနံ-အမိသားတို့၏၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာ-သည်၊သဖလာ-အကျိုးရှိသည်၊ အဟောသိ-ပြီ၊ ဝိတာပန-သည်ကား၊ ဝိပ္ပဋိသာရာဘိဘူတော - ဝိပ္ပဋိသာရ လွှမ်းမိုးအပ်သည်၊ (ဟုတွာ) ဝိဟာသိ- ပြီ၊ [''ဝိပ္ပဋိသာရာဘိဘူတော'' ဟု ဆိုသောကြောင့် '' ရှင်သုဒိန်မှာ ထိုဘဝ၌ အရဟတ္တဖိုလ် မရတော့ '' ဟု သိနိုင်သတတ်၊ ] တေန - ကြောင့်၊ အထခေါ၊ ပေ၊ကုက္ကုစ္စဉ္စ်အာဒိ-စွံ အစရှိသောစကားကို၊(သံဂီတိကာရေဟိ)ဝုတ္တံ-ပြီ။

တတ္ထ - ထို အထခေါ အာယသ္မာ သုဒိန္နော အစရှိသောပ'ဌ်၌၊ အဟုဒေဝါတိ - ကား၊ အဟုဝေ - ဖြစ်သည်သာ၊ ဒကာရော - သည်၊ ပဒသန္ဓိကရော- ရှေပုဒ် နောက်ပုဒ်တို့၏ စေ့စပ်ခြင်းကို ပြုတတ်၏၊ အဟောသိယေဝ-ဖြစ်သည် သာ၊ ဇုတိအတ္ထော – နက်၊ ကုက္ကုစ္စန္တိ - ကား၊ အဋ္ဌာစရ ဟေတုကော- လွန်ကျူးခြင်းဟူသော အကြောင်းရှိသော၊ ပစ္ဆာနုတာပေါ – နောင်၌ အဘန် ဘန် ပူပန်ခြင်းသည်၊ ဝါ - နောင်တတဘန် ပူပန်ခြင်းသည်၊ (အဟုဒေဝ- ဖြစ် သည်သာ၊) ဝိပ္ပဋိသာရောတိပိ- ရောဟူသော အမည်သည်လည်း၊ တဿေဝ- ထို ပစ္ဆာနုတာပ၏ပင်၊ နာမံ - တည်း၊ ဟိ–မှန်၊ သော - ထို ပစ္ဆာနုတာပကို၊ (ဝိစ္ဆတိ-၌စပ်၊) ဝိညူဟိ-တို့သည်၊ အကတ္တဗ္ဗတာယ- မပြုထိုက်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ ဝါ - မပြုထိုက်သည့်အတွက်၊ (ကုစ္ဆိတကြိယ၌စပ်၊) ကုစ္ဆိတကြိယ ဘာဝတော-စက်ဆုပ်အပ်သော အမှုအရာ၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ကုက္ကုစ္စံ (တိ)- ဟူ၍၊ (ဝုစ္စတိ၊)ကတံ-ပြုအပ်ပြီးသော၊အဋ္ဌာစာရံ-ကို၊ နိဝတ္တေတုံ-ပြန်နှစ်စေ ခြင်းငှါ၊ အသမတ္ထတာယ-မစွမ်းနိုင်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ-မစွမ်းနိုင်သည့် အတွက်၊ တံ - ထို လွန်ကျူးမှုကို၊ ပဋိစ္စ - စွဲ၍၊ ဝိရူပံ - ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန်၊

ဝိညူဟိ အကတ္တဗ္ဗတာယ ။ ။ ဉာဏ်ရှိသူတို့သည် ပြုအပ်မိသော မကောင်းမှုကို တွေး၍ ပူဆွေး မနေတော့ဘဲ နောင်တဘန် ထိုအမှုကို မပြုတော့အံ့ဟု ဆုံးဖြတ်၍ ကောင်းမှုကိုသာ များစွာပြုသင့်၏၊ ပူဆွေးခြင်းကိုကား မပြုသင့်၊ ထိုသို့ မပြုသင့်သော ပူဆွေးမှုဖြစ်၍ ''ကုက္ကုစ္စ''ဟု ခေါ်၏၊ ''ကုစ္ဆိတကြိယ ဘာဝတော'' သည် ကုက္ကုစ္စ၏ ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြတည်း၊ ကရိယတေ–ပြုအပ်၏၊ ဣဘ် ကတံ၊ ကုစ္ဆိတံ–ပညာရှိတို့ စက်ဆုပ်အပ် သော+ကတံ-အမှုအရာတည်း၊ ကုကတံ-ရာ၊ကုကတမေဝ ကုက္ကုစ္စံ၊သွဋ္ဌ၌ ဏျသက်။

ဝိပ္ပဋိသာရော ။ ။ ဝိကို ဝိရူပံ, ပတိကို ပဋိစ္စ , သာရောကို သရဏဘာဝတောဟု ဖွင့်၏၊ [ သရဏံ သာရော၊ ပဋိစ္စ + သာရော ပဋိသာရော၊ ဝိရူပံ + ပဋိသာရော ဝိပ္ပဋိ သာရော။ ] ပဋိစ္စ – လွန်ကျူးအပ်သောအမှုကို စွဲ၍ ( အကြောင်းပြု၍ ) + ဝိရူပံ–

သရဏာဘာ၀တော - ကြီစည် အောက်မေ့တတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝိပ္ပဋိ သာရောတိ-ဟူ၍၊ ၀ုစ္စတိ-၏၊ [သောဟိ-စသော ၀ါကျမျိုး၌ "ဟိ (ကသ္မာ)-အဘယ့်ကြောင့်၊ သော-ကို၊ ကုက္ကုစ္စန္တိ-ဟူ၍ဎင်း၊ ဝိပ္ပဋိသာရောတိ-ဟူ၍ဎင်း၊ ၀ုစ္စတိ-နည်း"ဟု ပုစ္ဆာ၀ါကျထုတ်၍လည်း ပေးကြသေးသည်။]

အလာဘာ ၀တ မေတိ-ကား၊ မယှံ - ၏၊ အလာဘာ- ရှာန်အစရှိသော ဂုဏ်တို့ကို မရခြင်းတို့သည်၊ (ဟောန္တိ) ၀တ-ဖြစ်ကုန်လေစွတကား၊ ဈာနာ ဒိနံ - န်သော၊ ဂုဏာနံ - တို့ကို၊ ယေ အလာဘာနာမ - အကြင်မရခြင်းတို့ မည်သည်၊ (သန္တိ-န်၏၊) တေ-ထိုမရခြင်းတို့သည်၊ မယှံ-၏၊ ၀ါ-ငါ့အတွက်၊ (ဟောန္တိ၊)အညဿ-ငါမှတပါး အခြားသူ၏အတွက်၊ န(ဟောန္တိ)-ဖြစ်ကုန် သည် မဟုတ်၊ ဣတိ-ဤကား၊အဓိပ္ပါယော—ရှင်သုဒိန်၏ အလိုတည်း၊ န ၀တ မေ လာဘာတိ-ကား၊ မေ—၏၊ [ဤ "မေ" သည် ပါဠိတော်မှာပါသော မေ မဟုတ်၊ ထို့ကြောင့် ဂုဏာ၌ဎင်း ပဋိလဒ္ဓါ၌ဎင်း စပ်ရမည်။] ၀ါ - ငါသည်၊ ပဋိလဒ္ဓါ - ရအပ်ကုန်ပြီးသော၊ ယေပိ ပဗ္ဗဇ္ဇာ သရဏာဂမန သိက္ခာသမာဒါန ဂုဏာ-အကြင် ရှင့်အဖြစ်, သရဏဂုမ်, ရဟန်းသိက္ခာကို ဆောက်တည်ခြင်း ဟူသော ဂုဏ်တို့သည်လည်း၊ (သန္တိ၊) တေပိ-ထိုဂုဏ်တို့သည်လည်း၊ မယှံ-၏၊

ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန် (ဝမ်းနဲ ပမ်းနဲ) +သရဏံ—ကြံစည်အောက်မေ့ခြင်း၊ ၀ါ-တွေး၍ ဆွေးနေခြင်း၊ ဝိပ္ပဋိသာရော—ခြင်း၊ "ပဋိဝိသာရော"ဟု ဖြစ်သင့်လျက် ဝိနှင့် ပဋိကို ရှေ့ နောက်ပြန်၊ နောင်တတတဘန် ပူပန်နေသော်လည်း ထိုအမှုကို ဆုတ်နစ်အောင် မတတ်နိုင် ရကား ထို ပစ္ဆာနုတာပကို ဝိပ္ပဋိသာရ ဟု လည်း ဆိုအပ်၏၊ တရားကိုယ်မှာ ကုက္ကုစ္စ စေတသိက်ပင်တည်း။

**အလာဘာ၀တမေ**။ ။"ယေ၊ပေ၊န အညဿ — အကြင်ဈာန် အစရှိသောဂုဏ် တို့ကို မရခြင်းတို့မည်သည် ( လောက၌ ) ရှိကုန်၏၊ ထို မရခြင်းတို့သည် ငါ့အတွက် မရခြင်းတို့တည်း၊ အခြားသူ့အတွက် မရခြင်းတို့မဟုတ်" ဟူသော ဤ အဓိပ္ပါယ်ထွက်ကို ကြည့်၍ "မေ—ငါ၏၊ ၀ါ— ငါ့မှာ၊ အလာဘာ—ဈာန် အစရှိသောဂုဏ်တို့ကို မရခြင်း တို့သည်၊ (ဟောန္တိ) ၀တ—ဖြစ်ကုန်လေစွ့တကား"ဟု ပါဠိတော်၌ ပေးပါ။

**န၀တ မေ လာဘာ**။ ။ယေပိမေ၊ပေ၊လာဘာ—(ဈာန် မဂ်ဖိုလ်သာ မရတာဘဲ၊ "ပဗ္ဗဇ္ဇာဂုဏ်, သရဏာဂမနဂုဏ်,ရဟန်းသိက္ခာကို ဆောက်တည်ခြင်းဟူသော ဂုဏ်များ ကိုတော့ ရသေးတာဘဲ" ဟု တချို့က အားရှိအောင် ပြောစေကာမူ ) အဲဒီဂုဏ်များ ကိုလဲ ရတယ်လို့မဆိုနိုင်ပါ၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း — အဇ္ဈာစာရ မလိနတ္တာ (ထိုဂုဏ်များ ဟာလဲ သန့်သန့်ရှင်းရှင်း မဟုတ်ဘဲ မေထုန် လွန်ကျူးမှုဖြင့် ညစ်ပေနေသောကြောင့် တည်း)၊ ဤအဖွင့်ကြည့်၍ " မေ—၏၊ ပဋိလဒ္ဓါပိ— ရအပ်ပြီးသော ပဗ္ဗဇ္ဇာ သရဏာဂမန သိက္ခာသမာဒါန ဂုဏ်တို့သည်လည်း၊ န လာဘာ ၀တ — လာဘ် မဟုတ်ကုန်လေစွ့ တကား၊ ၀ါ—ရအပ်သည် မမည်ကုန်လေစွ့ဘကား"ဟု ပါဠိတော်၌ ပေးပါ။

[မေ၏အဖွင့်၊ ]နေ၀လာဘာ-လာဘ် မမည်ကုန်၊ ၀ါ-ရအပ်သည် မမည်ကုန်၊ (ကသ္မာ-နည်း၊) အဇ္ဈာစာရမလိနတ္တာ-လွန်ကျူးမှုဟူသော အညစ်အကြေး ရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဒုလ္လဒ္ဓ၀တမေတိ-ကား၊ ဧဒံ သာသနံ-ကို၊ လဒ္ဓံ-ရအပ်သည်၊ (သမာနံ)ပိ-သော်လည်း၊ မေ-သည်၊ ဒုလ္လဒ္ဓံ-မကောင်း သဖြင့် ရအပ်ပြီ၊ ၀ါ- အရမတော်၊ န ၀တ မေ သုလဒ္ဓံတိ-ကား၊ အညေသံ-ငါမှ တပါးကုန်သော၊ ကုလပုတ္တာနံ-တို့သည်၊ (သုလဒ္ဓံ)ယထာ-ကောင်းစွာ ရအပ်သကဲ့သို့၊ ၀ါ- အရတော်သကဲ့သို့၊ ဧဝံ-ဤအတူ၊ မေ- သည်၊ န သုလဒ္ဓံ ၀တ- ကောင်းစွာ မရအပ်ငလေစွတကား၊ ၀ါ – အရ မတော်လေစွတကား၊ ကသ္မာ – နည်း၊ ယံ–အကြင့်ကြောင့်၊ အဟံ–သည်၊ ဧဝံ– သို့၊ သွာက္ခာတေ- ကောင်းစွာ ဟောတော်မူအပ်သော၊ ဓမ္မဝိနယေ – တရားသဖြင့် ဆုံးမရာ သာသနာတော်၌၊ ပဗ္ဗဇိတွာ-၍၊ ယာ၀ဇီ၀ံ-အသက်ထက်ဆုံး၊ ပရိပုဏ္ဏံ-ထက် ၀န်းကျင်ပြည့်စုံစွာ၊ ပရိသုဒ္ဓံ-ထက်၀န်းကျင်စင်ကြယ်စွာ၊ ဗြဟ္မစရိယံ-မဂ္ဂ ဗြဟ္မ စရိယကို၊ စရိတုံ - ငှါ၊ နာသက္ခိံ - မစွမ်းနိုင်ခဲ့၊ ဣတိ - ထို့ကြောင့်တည်း၊ [ ကသ္မာ - အမေးကို ဣတိဟု ပြန်အုပ်သောအဖြေ ထောက်၍ " ယံ - အကြင့် ကြောင့် " ဟု ပေးဘို့ရာ " ယ - မဟံ " ဟု ရှိခြင်းသည် ကောင်း၏၊ တချို့ စာ၌ "ယောဟံ" ရှိသည်ကား မကောင်း။] ဗြဟ္မစရိယန္တိ- ကား၊ သိက္ခတ္တယ သင်္ဂဟိတံ - သိက္ခာ ၃ ပါးအပေါင်းဖြင့် သိမ်းယူအပ်သော၊ မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယံ- မဂ်တည်းဟူသော မြတ်သောအကျင့်ကို၊ (စရိတုံ နာသက္ခိံ-၌စပ်)။

ဒုလ္လဒ္ဓံ ၀တ မေ။ ။"မေ–သည်၊ ဧဒံ သာသနံ–ကို၊ ဒုလ္လဒ္ဓံ၀တ-မကောင်းသဖြင့် ရအပ်လေစွ့တကား၊ ၀ါ – အရမတော်လေစွ့တကား" ဟု ပေး၊ နေဝံ္ဌလည်း " န သုလဒ္ဓံ၀တ–(အခြားသူတို့ကဲ့သို့) ကောင်းစွာ မရအပ်လေစွ့တကား" ဟု ပေးပါ။

မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယံ။ ။မဂ္ဂင်ရှစ်ပါး တည်းဟူသော မဂ်တရားကို"မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယ"ဟု ဆို၏၊ ထိုမဂ်ရအောင်မကျင့်နိုင်သောကြောင့်"နာသက္ခိံ ဗြဟ္မစရိယံ စရိတုံ"ဟု ဆိုသည်၊ (သမ္မာဒိဋ္ဌိနှင့်သင်္ကပ္ပသည် အဓိပညာ, ၀ါစာ ကမ္မန္တ အာဇီ၀သည် အဓိသီလ, ၀ါယာမ သတိ သမာဓိသည် အဓိစိတ္တသမာဓိ, ဖြစ်ရကား ) "သိက္ခတ္တယသင်္ဂဟိတ – သိက္ခာ ၃ ပါးဖြင့် သိမ်းယူလိုက်လျှင် အားလုံးပါ၀င်သော မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယ" ဟူလို။

ဝိမတိ ။ ။ မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယန္တိ မဂ္ဂပဒဋ္ဌာနံ သိက္ခတ္တယမေ၀ ဥပစာရတော ဝုတ္တံ– အကျိုးမဂ္ဂ၏ ဗြဟ္မစရိယအမည်ကို မဂ်ရဘို့ရန် နီးသောအကြောင်း ဖြစ်သော ဝိပဿနာ အားထုတ်ခိုက် ကာမာ၀စရ သိက္ခာ ၃ ပါး၌ တင်စား၍ (ဖလူပစာရအားဖြင့်) ကာမာ ၀စရသိက္ခာ ၃ ပါးကိုပင် မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယဟု ဆိုသည်၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း–"တဿေ၀ ယာ၀ဇီဝံ စရိတဗ္ဗတော – ကာမာ၀စရ သိက္ခာ ၃ ပါးကိုသာ တသက်လုံး ကျင့်ထိုက်၍ (မဂ်က- တခဏမျှသာ ကျင့်ရသောကြောင့်) တည်း တဲ့၊ အကြံ လွန်ဟန်တူသည်။

**ကိသော** အဟောသိတိ - ကား၊ ခါဒိတုံဝါ - ခဲခြင်းငှါငှင်း၊ ဘုဉ္ဇိတုံဝါ– စားခြင်းငှါငှင်း၊ အသက္ကောန္တော- သည်၊ (ဟုတ္ဝာ - ၍၊) တနုကော- ကြုံလှီ ပိန်ချုံးသည်၊ အပ္ပမံသ လောဟိတော - နည်းသော အသား အသွေးရှိသည်၊ အဟောသိ - ပြီ၊ ဥပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍုကဇာတောတိ - ကား၊ သဉ္ဇာတုပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍုက ဘာဝေါ - လွန်စွာဖြစ်သော အလွန် ဖြော့တော့သော အဆင်းရှိသူ၏ အဖြစ် ရှိသည်၊ပဏ္ဍုပလာသပ္ပဋိဘာဂေါ-ဖက်ရွက်ရော်အဆင်းနှင့် တူသောအဆင်း ရှိသည်၊ (အဟောသိ၌စပ်၊) ဓမနိသန္ထတဂတ္တောတိ - ကား၊ ပရိယာဒိန္နမံသ လောဟိတတ္တာ-ထက်ဝန်းကျင် ယူအပ်သော အသားအသွေးရှိသည်၏အဖြစ် ကြောင့်၊ ဝါ– ကုန်ခန်းသော အသား အသွေးရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သိရာ ဇာလေနေဝ - အကြောတည်းဟူသော ကွန်ယက်သည်သာလျှင်၊ [ ဧဝဖြင့် မံသလောဟိတကို ကန့်။ ]သန္ထရိတဂတ္တော-ဖြန့်ခင်းအပ်သော ကိုယ် ရှိသည်၊

**ကိသော**။ ။ "ကြိသ—တနုကရဏေ (သေးငယ်အောင်ပြုခြင်း) "ဟု ထောမနိဓိ ရှိ၏၊ "ကိသ—ခိယနေ (ကုန်ခန်းလျော့ပါးခြင်း"ဟု သဘောတူပင် ဓာတွတ္ထသင်္ဂဟ၌ ဆို၏၊ ထို့ကြောင့်"တနုကော"ဟု သဒ္ဒတ္ထ "အပ္ပမံသလောဟိတော"ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထ ဖွင့်သည်၊ ကိဿတိ— အသွေး အသား နည်းပါးအောင် ပြုတတ်၏၊ ဣတိ ကိသော။

**ဥပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍုကဇာတော**။ ။သိတပီတေ တု ပဏ္ဍုဝဏ္ဏော-အဖြူအဝါရောသော အဆင်းကို"ပဏ္ဍု"ဟု ဆိုအပ်၏၊ (အဘိဓာန်-၈၆)၊ ဥသဒ္ဒါသည် ဥဒ္ဓကမ္မ (တိုးတက်) အနက်ကိုဟော၏၊ "အလွန်"ဟု အနက်ထွက်၏၊ "ဥပ္ပဏ္ဍု" ၂ ချက်ဆင့်သောကြောင့် " အလွန့်အလွန် ဝါဖြော့ဖြော့အဆင်း " ကို ဟော၏၊ " ဥပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍု + ယဿာတိ ဥပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍုကော " ဟု ပြု၍ ပုဂ္ဂိုလ်ရသော်လည်း ဘာဝပ္ပဓာနကြံ၍ အလွန့်အလွန် ဝါဖြော့ဖြော့ ဖြစ်နေခြင်းရ၏၊ ထို့နောက် "ဇာတော+ဥပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍုကော ယဿာတိ ဥပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍုက ဇာတော"ဟု ပြု၍ ဇာတဟူသော ဝိသေသနကို နောက်ချထားသည်ဟု ပြလိုသောကြောင့် "သဉ္ဇာတုပ္ပဏ္ဍုပ္ပဏ္ဍုကဘာဝေါ"ဟု ဖွင့်သည်၊ "ပဏ္ဍုပလာသပ္ပဋိ ဘာဂေါကား" အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း။

**ဓမနိ၊ ပေ၊ ဂတ္တော**။ ။ နှာရု, သိရာ, ဓမနိသဒ္ဒါတို့သည် ပရိယာယ်တည်း၊ ထို့ကြောင့် ဓမနိကို"သိရာ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ထိုအကြောတွေ ထနေပုံသည် ဇာကွန်ယှက် ကြက်ထားပုံနှင့် တူသောကြောင့်"သိရာဇာလ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ဓမနိယာ+ သန္ထတံ ဓမနိ သန္ထတံ၊ ဓမနိသန္ထတံ+ ဂတ္တံ ယဿာတိ ဓမနိသန္ထတဂတ္တော၊ ထိုသို့ အကြောပြိုင်း ရရိုင်းထနေလောက်အောင် ပိန်ချုံးရခြင်း၏ အကြောင်းကို ပြလို၍ " ပရိယာဒိန္နမံသ လောဟိတတ္တာ"ဟု အပိုဟိတ်ပါဌ်ကို ထည့်သည်။ ["ပရိ– ထက်ဝန်းကျင်+ အာဒိန္န– ယူအပ်"ဟူသည်"အသွေးအသား ကုန်ခန်းသွားခြင်း"တည်း၊ ထို့ကြောင့်"ပရိက္ခီဏ မံသလောဟိတတ္တာ"ဟု ဋီကာ၌ အဓိပ္ပါယတ္ထ ဖွင့်သည်။]

[ ရှေးက " အကြောပြိုင်းရရိုင်းထသော ကိုယ်ရှိသည် " ဟု ပေးကြသည်၊ ] အနေ္တာမနောတိ- ကား၊ အနုသောစနဝသေန- လွန်ကျူးမှုကို အစဉ်လိုက်၍ ဝမ်းနည်းခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဝါ-အတွင်းဆွေး ဆွေးခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ အန္တေ္တရေယေဝ-ကိုယ်တွင်း၌သာ၊ ဌိတစိတ္တော-တည်သော စိတ်ရှိသည်၊ ဟဒယဝတ္ထုံ-ကို၊နိဿာယ-၍၊ ပဝတ္တနဝသေန ပန-စိတ်ဖြစ်ခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်ကား၊ သဗ္ဗေပိ-အလုံးစုံသော သတ္တာတို့သည်လည်း၊ အနေ္တာမနာယေဝ- အတွင်း၌ တည်သော စိတ်ရှိကုန်သည်သာ၊ လီနမနောတိ-ကား၊ ဥဒ္ဒေသေ- ပါဠိတော်ကို ရွတ်ဆိုခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ – ပါဠိတော်ကို သင်ယူခြင်း၌၎င်း၊ ပရိပုစ္ဆာယ– အနက်ကို အဖန်ဖန်မေးခြင်း၌၎င်း၊ ဝါ – အဋ္ဌကထာကို သင်ယူခြင်း၌၎င်း၊ ကမ္မဋ္ဌာနေ - ကမ္မဋ္ဌာန်းစီးဖြန်းခြင်း၌၎င်း၊ အဓိသီလေ - လွန်ကဲသော ပါတိမောက္ခသံဝရသီလ၌၎င်း၊ အဓိစိတ္တေ - လွန်ကဲသော သမာဓိစိတ်၌၎င်း၊ အဓိပညာယ - လွန်ကဲသော ဝိပဿနာပညာ၌၎င်း၊ ဝတ္တ ပဋိပတ္တိ ပူရဏေ စ- ဝတ်အကျင့်ကို ဖြည့်ကျင့်ခြင်း၌၎င်း၊ နိက္ခိတ္တဓုရော-ချထားအပ်သော တာဝန်ရှိ၏၊ အဝိပ္ဖါရိကော - ပျံ့ပျံ့ပျူးပျူးမရှိ၊ အညဒတ္ထု - စင်စစ်၊ အဿ - ထိုအရှင်သုဒိန်၏၊ ကောသဇ္ဇဝသေန – ပျင်းရိခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်သာလျှင်၊ လီနော သင်္ကုစိတော - တွန့်ဆုတ်သော၊ မနော- သည်၊ (အတ္ထိ၊) ဣတိ လီနမနော၊[လီနသဒ္ဒါ၏ တခုခု၌ ငြိကပ်သကဲ့သို့ ဖြစ်ခြင်း,ပုန်းအောင်းနေသကဲ့သို့ ဖြစ်ခြင်းအနက်ကိုပင် "သင်္ကုစိတော" ဟု အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်သည်၊ ဝိလီန- ကြေမွခြင်း အနက်ကိုမယူရ-ဟုလို၊] ဒုက္ခီတိ-ကား၊ စေတောဒုက္ခေန-စိတ်၏ဆင်းရဲခြင်းဖြင့်၊ ဝါ- ဒေါမနဿဖြင့်၊ ဒုက္ခီ- ဆင်းရဲခြင်းရှိသည်၊ ဒုမ္မနောတိ - ကား၊ ဒေါသေန - ဒေါသဖြင့်၊ ( ဝိသေသန၊ ) ဒုဋ္ဌုမနော - မကောင်းသောစိတ်ရှိသည်၊ ပါ-တနည်း၊ ဒေါမနဿာဘိဘူတတာယ-ဒေါမနဿသည် လွှမ်းမိုးအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝိရူပမနော-ဖေါက်ပြန်သောစိတ်ရှိသည်၊ (ဟုတ္ဂာ-

အန္တေ္တာမနော။ ။ဌိတစိတ္တောကို ကြည့်၍"အန္တော+ ဌိတံ+မနော ယဿာတိ အန္တော္တာမနော" ဟု မဏ္ဍူလောပဗဟုဗ္ဗိဟိပြု။ [ ဟဒယဝတ္ထုမှီ၍ အတွင်း၌ စိတ်တည်ခြင်းမှာ အများသုံးစံတည်း၊ ထိုတည်ခြင်းကို မဆိုလို၊ အတွင်းဆွေး–ဆွေးနေခြင်းကို ဆိုလိုသည်၊ ထို့ကြောင့်"အနုသောစနဝသေန"ဟု ထည့်သည်။]

ဒုမ္မနော။ ။ဒုသဒ္ဒါသည် ဒုဋ္ဌအနက်ကိုမဟော၊ (သုသဒ္ဒါ၏ ဟောနက်ဖြစ်သော သုဋ္ဌု၏ပြောင်းပြန်)ဒုဋ္ဌုအနက်ကိုဟော၏၊ ထို့ကြောင့်"ဒုဋ္ဌုမနော"ဟု ရှိစေ၊ " ဒုဋ္ဌု+ မနော ယဿာတိ ဒုမ္မနော " ဟု ပြု၊ ဒုတိယနည်း၌ကား ဒုသဒ္ဒါသည် ဝိရူပအနက်ကို ဟော၏၊ "ဝိရူပံ+ မနော ယဿ"ဟု ပြု။

၍၊ ပဏ္ဍာယိဒ္ဓစပ်၊ ) ပဏ္ဍာယိတိ- ကား၊ ဝိပ္ပဋိသာရဝသေန - နှလုံးမသာယာခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဝဟန္တိ န္တော - ပြတ်သော ပခုံးရှိသော၊ ဝါ - ပခုံးပေါက်သော၊ ဂဒြဘောဝိယ - မြည်းသတ္တဝါကဲ့သို့၊ တံတံ - ထိုထိုအကြောင်းအရာကို၊ စိန္တယိ-ပြီ။[ဆိန္နော+ဝဟော ယဿာတိ(ဝိသေသနနေ၁ံချ၍)ဝဟန္တိန္နော။]

သဟာယကာ ဘိက္ခူတိ–ကား၊ တံ- ထိုရှင်သုဒိန်ကို၊ စေဝဘူတံ-ဤသို့ကိသလူခ အစရှိသည်တို့၏ အဖြစ်သို့ ရောက်သည်ကို၊ [ စေဝဘူတန္တိ - ကိသလူခါဒိဘာဝပ္ပတ္တံ + ဧတ္ထမ္ဘူတဥ်ကဲ့သို့ စေဝဘူတံသည် သမာသ်ပုဒ် , ဘူဓာတ်လည်း ပတ္တိအနက်ဟော- ဟုဖွင့်၊] ဂဏသင်္ဂဏိကာ ပပဉ္စေန- လူအပေါင်း၌ ပေါင်းဆုံခြင်းဟူသော ချဲ့ခြင်းဖြင့်၊ ဝါ - အပေါင်းအဖေါ်၌ မွေ့လျော်ခြင်းဟူသော ချဲ့ခြင်းဖြင့်၊ ဝီတိနာမေန္တံ - လွန်စေသည်ကို၊ ဒိသွာ - မြင်ရ၍၊ အဿ- ထိုရှင်သုဒိန်၏၊ ဝါ- နှင့်၊ [ယဿာတိ ယေ+ အဿ၊ ] ဝိဿာသိကာ- အကျွမ်းဝင်ခြင်းရှိကုန်သော၊ ကထာဖာသုကာ-စကားပြောခြင်း၌ ချမ်းသာကုန်သော၊ ယေဘိက္ခူ-တို့သည်၊ (သန္တိ–နှ်၏၊) တေ-တို့သည်၊ တံ-ထိုသုဒိန်ကို၊ တေ-ဤစကားကို၊ အဝေါစုံ-ပြောကြကုန်ပြီ၊ ပိဏိန္ဒြိယောတိ- ကား၊ ပသာဒပတိဋ္ဌာနောကာသဿ - ပသာဒ၏ တည်ရာအရပ်၏၊ သမ္ပုဏ္ဏတ္တာ - ပြည့်ဖြိုးသည်၏

**တံတံ စိန္တယိ။** ။[ ချေဓာတ်၏ စိန္တနအနက်ကိုဖွင့်သည်၊ ] ယဒိ အဟံ တံပါပံ နကရိဿံ၊ ဣမေ ဘိက္ခူဝိယ ပရိပုဏ္ဏသီလော အဿန္တိအာဒိနာ တံတံ စိန္တယိ (တောင်တောင် ဤဤ ကြံစည်တွေး၍ ဆွေးနေလေသည်။)

**ဂဏ၊ပေ၊ ပပဉ္စေန ။** ။ ဂဏဓာတ်သည် သင်္ချာန (ရေတွက်ခြင်း) အနက်ကိုဟော၏၊ " ဂဏီယတေ – တပေါင်းထည်း ရေတွက်အပ်၏၊ ဣတိ ဂဏော" ဟု ပြု၍ လူအပေါင်းကို ( လူအများ အစုအဝေးကို) "ဂဏ" ဟု ခေါ်၏၊ သင်္ဂဏနံ-ပေါင်း၍ ရေတွက်ရခြင်း၊ ဝါ - ပေါင်းဆုံခြင်း၊ သင်္ဂဏာ - ခြင်း၊ သင်္ဂဏာယေဝ – သင်္ဂဏိကာ၊ ဂဏေ+သင်္ဂဏိကာ ဂဏသင်္ဂဏိကာ- လူအများတွင် ပါဝင်ပေါင်းစုခြင်း၊ [ ဂဏေ-ဇနသမာဂမေ+ သန္နိပတန် ဂဏသင်္ဂဏိကာ၊-သာရတ္ထ။] ထိုသို့ စု၍နေခြင်းသည် ကိစ္စလုပ်ငန်းကို မပြီးစီးစေဘဲ ကိစ္စကိုချဲ့ရာရောက်၏၊ ပပဉ္စနံ-ကိစ္စကိုချဲ့ခြင်း၊ ပပဉ္စော-ခြင်း၊ [ပစိ- ဝိတ္ထာရေ] ဂဏသင်္ဂဏိကာယေဝ+ပပဉ္စော ဂဏသင်္ဂဏိကာပပဉ္စော။

**ကထာဖာသုကာ။** ။[ကထာယ+ဖာသုကာ ကထာဖါသုကာ။] ဝိဿာသိကဘာဝေနေဝ ကထာကရဏေ (စကားပြောခြင်း၌) ဖါသုကာ၊ သုခေန ဝတ္တုံ သက္ကုဏေယျာ၊ သုခသမ္ဘာသာ (ချမ်းသာစွာပြောရခြင်းရှိသူတို့) ဣတိ အတ္ထော။

**ပိဏိန္ဒြိယော။** ။စက္ခုပသာဒ, သောတပသာဒ စသည်တို့သည် ပမာဏအားဖြင့် ဘယ်အခါမဆို နဂိုရှိပြီးအနေမှ အတိုးအဆုတ်မရှိကြ၊ ထိုပသာဒတို့၏တည်ရာအရပ်၌ ရှိသော (အခြားသော ဥတုဇ စိတ္တဇ အာဟာရဇ) ရုပ်ကလာပ်တို့ အတွက်သာ ပိဏ

အဖြစ်ကြောင့်၊ ပရိပုဏ္ဏ စက္ခုအာဒိ ဣန္ဒြိယော- ပြည့်ဖြိုးသော စက္ခုစသော ဣန္ဒြေရှိသည်၊ (အဟောသိ- ပြီ၊ ) သော ဒါနိ တွန္တိ တွေ့ -၌၊ ဒါနိတိ - ဒါနိ သဒ္ဒါသည်၊ နိပါတော-နိပါတ်တည်း၊ [ပါဠိတော်၌ "ဒါနိ + တေရဟိ"ဟု အနက်တူ ၂ ပုဒ် ရှိသောကြောင့် ဒါနိကို အနက်မရ - နိပါတ်မျှဟု ဆိုသည်။] သောပနတွံ-ထိုသင်သည်၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ကစ္စိနော တွံတိ-ကား၊ ကစ္စိ- အသျှင်နည်း၊ တွံ-သည်၊ (စရသိ)နှ-ကျင့်သလော၊[နောသဒ္ဒေါပိ နုသဒ္ဒေါဝိယ ပုစ္ဆနတ္ထော၊] အနဘိရတောတိ-ကား၊ ဥက္ကဏ္ဌိတော-ပျင်းရိသည်၊ဂိဟိဘာဝံ-လူ့အဖြစ်ကို၊ ပတ္ထယမာနော - တောင်းတသည်၊ (ဟုတ္ဝာ)၊ (စရသိနော-၌ စပ်၊) ဣတိအတ္ထော-နက်၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ထိုသို့ အနဘိရတအတွက် ဂိဟိဘာဝ ပတ္ထနအနက်ကို ဆိုလိုသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ) တမေဝ အနဘိရတိံ-ထို မမွေ့မလျော်ခြင်းကိုပင်၊ ပဋိက္ခိပန္တော-ပယ်မြစ်လိုသည်၊ (ဟုတွာ) နခေါ အဟံ အာဝုသော အနဘိရတောတိ-ဟူ၍၊ အာဟ-ပြောပြီ၊ ပန- စင်စစ်ကား၊ အယံ-ဤ ရှင်သုဒိန်သည်၊ [တချို့စာ၌ "အဟံ"ဟု ပါ၌ပျက်၏၊ မေးသူတို့ကို ဖြေခြင်းမဟုတ်၊ ရှင်သုဒိန်၏ဖြစ်ပုံကို အဋ္ဌကထာက ပြခြင်းဖြစ်သောကြောင့် "အယံ"ဟု သာ ရှိသင့်၏၊ ] အဓိကုသလာနံ - လွန်ကဲသော ကုသိုလ်ဖြစ်ကုန်သော၊ ဓမ္မာနံ – သမထဝိပဿနာစသော တရားတို့ကို၊ [အဓိကုသလာ ဓမ္မာ သမထ ဝိပဿနာဒယော၊] ဘာဝနာယ - ပွားစေခြင်း၌၊ အနဘိရတော၀– မမွေ့မလျော်သည်သာ၊ ဣတိ-ဤသို့မှတ်အပ်၏။ [အဘိရတော-ဟု မပြင်နှင့်။]

အတ္ထိ မေ ပါပကမ္မံ ကတန္တိ– ကား၊ မယာ - တပည့်တော်သည်၊ ကတံ-ပြုအပ်ပြီးသော၊ ဧကံ - တမျိုးသော၊ ပါပကမ္မံ – မကောင်းမှုသည်၊ ဝါ-ကို၊ အတ္ထိ–ရှိပါ၏၊ ဥပလဗ္ဘတိ-ရအပ်ပါ၏၊ သံဝိဇ္ဇတိ- ထင်ရှားရအပ်ပါ၏၊ နိစ္စ ကာလံ-မြဲသောကာလပတ်လုံး၊ မေ- ၏၊ အဘိမုခံဝိယ- ရှေးရှုကဲ့သို့၊ တိဋ္ဌတိ-

ဖြစ်နိုင်သည်၊ ထို့ကြောင့် "ပသာဒပတိဋ္ဌာနောကာသဿ သမ္ပုဏ္ဏတ္တာ" ဟုမိန့်သည်၊ ဤစကားကိုထောက်၍" ဣန္ဒြိယ " အရ စက္ခုစသော ဣန္ဒြေများကို တိုက်ရိုက်မယူဘဲ, ဌာနူပစာရအားဖြင့် ပသာဒ၏ တည်ရာဌာနကို ယူရသည်၊ " ပိဏာန္တိတိ ပိဏာနိ " "ပိဏ-တပ္ပနေ"ဓာတ်, အပစ္စည်း၊ ပိဏာနိ+ဣန္ဒြိယာနိ ယဿာတိ ပိဏိန္ဒြိယော။

ဥပလဗ္ဘတိ သံဝိဇ္ဇတိ။ ။"အတ္ထိ-ရှိ၏"ဟူရာ၌"ပစ္စုပ္ပန်သဘောအားဖြင့် ရှိခြင်း" ကို ယူမှားမည်စိုး၍ "ဥပလဗ္ဘတိ – စိတ်ထည်း၌ ရအပ်၏, စိတ်ဖြင့် ပြန်၍တွေးသော အခါ ထိုမကောင်းမှုကို ရနေ၏" ဟု ၎င်း "သံဝိဇ္ဇတိ– ပညတ်သဘောကဲ့သို့ အပြော အားဖြင့်သာ ရှိသည် မဟုတ်,ပရမတ်သဘောအားဖြင့် အထင်အရှား ရအပ်၏"ဟု၎င်း ဖွင့်၏၊ "သန္တော သံဝိဇ္ဇမာနာ" ကဲ့သို့ သံဝိဇ္ဇတိ၌ ဝိဒဓာတ်လည်း ရခြင်းအနက်

တည်ပါ၏၊ အထ - ထိုမှနောက်၌၊ နံ- ထိုမကောင်းမှုကို၊ ပကာသေန္တော- ထင်ရှားပြုလိုသည်၊ ( ဟုတွာ၊ ) ပုရာဏ ဒုတိယိကာယာတိ အာဒိံ - ယ အစ ရှိသောစကားကို၊ အာဟ-လျှောက်ပြီ၊ အလံဟိ တေ၊ပေ၊ ကုက္ကုစ္စာယာတိ- ကား၊ အာဝုသောသုဒိန္န-ဒိန်၊ တုယှံ-၏၊ တေံ ပါပကမ္မံ-သည်၊ ကုက္ကုစ္စာယ- ငှါ၊ အလံ သမတ္တံ - စွမ်းနိုင်၏၊ ကုက္ကုစ္စံ- ကို၊ ဥပ္ပါဒေတုံ -ဖြစ်စေခြင်းငှါ၊ ပဋိ ဗလံ - စွမ်းနိုင်၏၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ယံ တွန္တိ အာဒိမှိ- ယံတွံ အစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ ယေန ပါပေန - ကြောင့်၊ [ ယန္တိ ဟေတုအတ္ထေ နိပါတော၊ ကရ ဏတ္ထေ ဝါ (ကရိုဏ်းဝိဘတ်၏ ဟိတ်အနက်၌) ပစ္စတ္တဝစနန္တိ အာဟ- ယေန ပါပေနာတိ၊ ] တွံ-သည်၊ ဗြဟ္မစရိယံ-ကို၊ စရိတုံ-ငှါ၊ န သက္ခိဿသိ-မစွမ်းနိုင် လတံ့၊တေ—၏၊ တံ ပါပံ-သည်၊ ကုက္ကုစ္စာယ-ငှါ၊ အလံ-စွမ်းနိုင်၏၊ ဣတိ ဧဝံ- သို့၊ သမ္ဗန္ဓော—ပုဒ်အနက်တို့၏ စပ်ခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

အထ-ထိုမှနောက်၌၊ နံ-ထိုရှင်သုဒိန်ကို၊ အနုသာသန္တော-သွန်သင်လိုကုန် သည်၊ (ဟုတွာ )၊ နနု အာဝုသော ဘဂဝတာတိ အာဒိံ - ကို၊ အာဟံသု- ပြောကြကုန်ပြီ၊ တတ္ထ-ထိုနနု အာဝုသော ဘဂဝတာ အစရှိသော စကားရပ် ၌၊ နနူတိ-နနုဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ အနုမတိဂ္ဂဟဏတ္ထေ-သူ့အလိုကို ယူခြင်း အနက်၌၊(ပဝတ္တော)နိပါတော၊ အနေကပရိယာယေနာတိ-ကား၊အနေက ကာရဏေန - တပါးမက များသော အကြောင်းဖြင့်၊ [ ဒေသိတော၌ စပ်၊ ပရိယာယသဒ္ဒေါ ကာရဏဝစနော၊] ဝိရာဂါယာတိ- ကား၊ ဝိရာဂတ္ထာယ- မတပ်မက်သော မဂ်အကျိုးငှါ၊ ဝါ - စက်ဆုပ်တတ်သော မဂ်အကျိုးငှါ၊ နော

ဟော, ကမ္မရုပ်တည်း၊ ထို သံဝိဇ္ဇတိကိုပင် "နိစ္စ၊ပေ၊တိဋ္ဌတိ-အမြဲ ရှေးရှု ထင်နေသကဲ့ သို့ တည်ရှိ၏"ဟု ထပ်ဖွင့်သည်။ [အတ္ထီတိ ဝိသယဘာဝေန စိတ္တေ ပရိဝတ္တနံ (အဘန် ဘန် ဖြစ်ခြင်းကို ) သန္ဓာယ ဝုတ္တံ၊ န ပါပဿ ဝတ္တမာနတံ သန္ဓာယ။]

မှတ်ချက် ။ ။ အတ္ထိပစ္စည်း၌ အတ္ထိသည် ပစ္စုပ္ပန်ဓာတ်၌ ထင်ရှားရှိသော အတ္ထိ တည်း၊"အတ္ထိ ပုဂ္ဂလော" စသည်၌ အတ္ထိသည် (ပရမတ္ထသဘောအားဖြင့် အရှိမဟုတ်, ပညတ်သဘောအားဖြင့် ရအပ်သော အရှိ ဖြစ်ရကား ) ဥပလဗ္ဘမာန အတ္ထိတည်း၊ "အတ္ထိ မေ ကတံ " ဟူသော ဤအတ္ထိကား ( ဖြစ်စေအပ်ပြီးဖြစ်၍ အတိတ်ဖြစ်သော် လည်း အကျိုးမပေးရသေးသောကြောင့် )အခွင့်ရှိနေသေးသော နိဗ္ဗတ္တိတအတ္ထိ- ဖြစ်စေ အပ်ပြီးသောအတ္ထိတည်း၊ဤသို့ အတ္ထိ၃မျိုး အသုံးအနှုန်းကိုမှတ်ပါ။ [ပစ္စုပ္ပန္နလက္ခဏေ နာတိ ပစ္စုပ္ပန္နသဘာဝေန၊ တေန " အတ္ထိ မေ ပါပကမ္မံ ကတန္တိ ...., အတ္ထိ ပုဂ္ဂလော အတ္တဟိတာယ ပဋိပန္နောတိစ"ဧဝမာဒိသု ဝုတ္တံ နိဗ္ဗတ္တနုပလဗ္ဘမာနဘာလက္ခဏံ အတ္ထိ ဘာဝံ နိဝါရေတိ၊-ပဋ္ဌာန်း မူလဋီကာ, အတ္ထိပစ္စည်းအဖွင့်။]

သရာဂါယာတိ–ကား၊ ရာဂေန–ရာဂဖြင့်၊ နော ရဇ္ဇနတ္ထာယ- တပ်မက်တတ်
သော မေထုန်မဖြစ်ခြင်း အကျိုးငှါ၊ (ဒေသိတော နနု) – ဟောတော်မူအပ်
သည် မဟုတ်ပါလော၊) ဟိ-မှန်၊ ဘဂဝတာ–သည်၊ မေ-၏၊ ဧဝံ ဓမ္မံ–ကို၊
သုတွာ– ၍၊ သတ္တာ - သတ္တဝါတို့သည်၊ သမ္ဘာဝဘောဂေသု – အလုံးစုံသော
ဘဝစည်းစိမ်တို့၌၊ ဝိရဇ္ဇိဿန္တိ-စက်ဆုပ်ကုန်လတ့်၊ [ရှေးက "တပ်မက်ခြင်းမှ
ကင်းကုန်လတ့်"ဟု ပေးကြ၏၊] နောရဇ္ဇိဿန္တိ - မတပ်မက်ကုန်လတ့်၊ ဣတိ–
သို့၊ တေဒတ္ထာယ-၅အကျိုးငှါ၊ ဓမ္မော-ကို၊ ဒေသိတော-ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊
ဣတိ-၌ကား၊ အဓိပ္ပါယော- ရဟန်းတို့၏ အလိုတည်း၊[ရှင်သုဒိန်ကို မေးကြ
သော ရဟန်းတို့၏ အလို-ဟူလို၊]သဗ္ဗပဒေသု-တို့၌၊ သေ(သေသော)-၌ဆိုအပ်
ပြီးသော အစီအရင်သည်၊ နယော-သိကြောင်း အစီအရင်တည်း။

ပန-ဆက်၊ ဣဒံ - ၌ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ဧတ္ထ - ၌ ဝိသံယောဂါယ အစ
ရှိသော ပုဒ်တို့၌၊ ပရိယာယဝစနမတ္တံ-ပရိယာယ်အနက်မျှကို ပြဆိုခြင်းတည်း၊
ဝါ–ကို ပြကြောင်းစကားတည်း၊ဝိသံယောဂါယာတိ-ကား၊ ကိလေသေဟိ-
တို့နှင့်၊ ဝိသံယုဇ္ဇနတ္ထာယ – မယှဉ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဝါ - မယှဉ်သော လောကီ
လောကုတ္တရာမဂ်အကျိုးငှါ၊ နော သံယောဂါယာတိ-ကား၊ (ကိလေသေဟိ-

ရာဂေန ရဇ္ဇနတ္ထာယ။ ။သရာဂါယ၌ "သဟ+ရာဂေန ဝတ္တတီတိ သရာဂေါ"
(မေထုနဓမ္မော)၊"ရာဂနှင့်တကွဖြစ်"ဟူရာ၌ သမ္ပယုတ္တအားဖြင့် တကွဖြစ်ခြင်းမဟုတ်၊
မေထုန်မှုကို ရာဂသည် အာရုံပြုလျက် တပ်မက်သောကြောင့် အာရုံ + အာရမဏိက
အားဖြင့် တကွဖြစ်ခြင်း-ဟု သိစေလို၍"ရာဂေန ရဇ္ဇနတ္ထာယ"ဟုအဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်။

သေ၊ပေ၊ပဒေသု။ ။၅စကားဖြင့် " ဘဂဝတာဟိ " စသည်ဖြင့် ဆိုအပ်သော
ရဟန်းတို့၏ အလိုကိုသာ ညွှန်ပြသည်၊ အနက်ဖွင့်ကို ညွှန်ပြသည် မဟုတ်၊[သေနယော
သဗ္ဗပဒေသူတိ–အဓိပ္ပါယမတ္တံ (အလိုမျှကို) အတိဒိဿတိ။]ဘဂဝတာ ဟိ ဧဝံ မေ ဓမ္မံ
သုတွာ သတ္တာ ကိလေသေဟိ ဝိယုဇ္ဇိဿန္တိ,နောသံယုဇ္ဇိဿန္တိ၊ပေ၊န ဥပါဒိယိဿန္တိ,
နော ဥပါဒိယိဿန္တီတိ တေဒတ္ထာယ ဓမ္မော ဒေသိတော – ဟု အဓိပ္ပါယ်ဖေါ်ပါ။

ဣဒံ၊ပေ၊မတ္တံ။ ။ဝိသံယောဂါယာတိ အာဒီသု သဗ္ဗပဒေသု ( ဧတ္ထ၏ အဖွင့်)
ကိလေသေဟိ ဝိသံယုဇ္ဇနတ္ထာယာတိအာဒိနာ ပဒတ္ထဝိဘာဝနဝသေန (ပုဒ်၏အနက်ကို
ထင်စွာပြခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊)ဝုတ္တပရိယာယဝစနံ (ဆိုအပ်သော ပရိယာယ်အနက်ကို
ဖွင့်ဆိုခြင်းကို) သန္ဓာယ ဝဒတိ, "ပရိယာယ်" ဟူရာ၌ "အနက် ပရိယာယ်"ဟု မှတ်၊
"ဗုဒ္ဓေါ ဒသဗလော သတ္ထာ"တို့ ကဲ့သို့ သဒ္ဒါပရိယာယ် ဟု မမှတ်လင့်၊ " ပရိယာယိ
တဗ္ဗော-အဘန်ဘန် သိထိုက်၏၊ ဣတိ ပရိယာယော"ဟု ပြု၊ ထို့ကြောင့် ဝိမတိ၌"ပရိ
ယာယဝစနမတ္တံတိ – သဒ္ဒတ္ထကထနမတ္တံ" ဟု ဖွင့်သည်၊ မတ္တဖြင့် "ဝိသံယောဂါယ–
စသည်၌ ရဟန်းတို့၏အလိုကို ဖေါ်ပြတော့မည် မဟုတ်"ဟု ကန့်သည်။

တို့နှင့်၊) န **သံယုဇ္ဇနတ္ထာယ**-ယှဉ်သောမေထုန်မဖြစ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ အနုပါဒါ နာယာတိ - ကား၊ အဂ္ဂဟဏတ္ထာယ - ကိလေသာတို့ကို မယူခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဝါ - ကိလေသာတို့ကို မယူတတ်သော လောကီ လောကုတ္တရာ မဂ်အကျိုးငှါ၊ နော သဥပါဒါနာယာတိ - ကား၊ န သဂ္ဂဟဏတ္ထာယ - ကိလေသာတို့ကို ယူခြင်းနှင့် တကွ ဖြစ်သော မေထုန် မဖြစ်ခြင်း အကျိုးငှါ၊ ( ဒေသိတောနနု- ဟောတော်မူအပ်သည် မဟုတ်ပါလော၊ ) တတ္ထ နာမ တွန္တိ - ကား၊ တသ္မိံ (မမ္မ - တော်ကို၊ ဒေသိတေ-ဟောတော်မူအပ်ပါလျက်၊)တွံ-သည်၊ (စေတေ သသိ) နာမ-စွဲဆော်ပြုလုပ်, အားထုတ်ဘိသနည်း၊ သရာဂါယ စေတေသ သီတိ-ကား၊ ရာဂေန-နှင့်၊ သဟ-ကွ၊ ဝတ္တမာနာယ-သော၊ မေထုနဓမ္မာယ- မေထုန်အကျင့်အကျိုးငှါ၊ စေတေဿသိ(နာမ)-နည်း၊ ကပ္ပေဿသိ ပကပ္ပေ ဿသိ (နာမ) - ပြုလုပ်ဘိသနည်း၊ တေဒတ္ထံ - ဤ မေထုန်အကျိုးငှါ၊ ဝါယမိ

**န သံယုဇ္ဇနတ္ထာယ**။ ။ပါဠိတော်ဝယ် နော သံယောဂါယ၌ နောကို ဒေသိတော နှင့်တွဲ၍ အနက်ပေးလေ့ ရှိကြသော်လည်း " န သံယုဇ္ဇနတ္ထာယ" ဟု ဖွင့်သောကြောင့် ၎င်း,နော သရာဂါယတုန်းကလည်း"နော ရဇ္ဇနတ္ထာယ"ဟု အဖြောင့် ဖွင့်ခဲ့သောကြောင့် ၎င်း,ဒေသိတောနှင့်မတွဲရ, တိုက်ရိုက်ရှိသည့်အတိုင်း"နော သရာဂါယ,နော သံယော ဂါယ " ဟု တွဲရမည်၊ နော သဥပါဒါနာယ၌လည်း နည်းတူ။ [ န သံယောဂါယ၏ သဟာဒိယောဂကို "ကိလေသေဟိ"ဟု ရှေ့ဝါကျမှယူ။ ]

**အဂ္ဂဟဏတ္ထာယ** ။ ။ "အဘယ်တို့ကို မယူသနည်း" ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ ဋီကာ၌ "ကိလေသေ အဂ္ဂဟဏတ္ထာယ"ဟု ၎င်း"ဘဝဘောဂေဝါ တဏှာဒိဋ္ဌိဝသေန အဂ္ဂဟ ဏတ္ထာယ " ဟု ၎င်း ၂ နည်းဖွင့်သည်။

**နသဂ္ဂဟဏတ္ထာယ**။ ။ ယခုစာအုပ်များ၌ " န သင်္ဂဟဏတ္ထာယ" ဟု တွေ့ရ၏၊ အနုပါဒါနကို "အဂ္ဂဟဏ"ဟု ဖွင့်သကဲ့သို့ သဥပါဒါနကိုလည်း"သဂ္ဂဟဏ"ဟု သာ ဖွင့်သင့်သည်။

**မှတ်ချက်**။ ။"ဝိရာဂါယ,ဝိသံယောဂါယ, အနုပါဒါနာယတို့၏ အရကို လောကီ လောကုတ္တရာ ၂ မျိုးလုံးပါသော မိဿကမဂ်ကောက်ရမည် " ဟု နောက်၌ ဖွင့်လတ္တံ့၊ [ သဗ္ဗပဌမေသု ပန တီသု ဌာနေသု လောကိယလောကုတ္တရမိဿကော မဂ္ဂေါ ကထိ တောတိ ဝေဒိတဗ္ဗော။ ] ဤအဖွင့်ထောက်၍ "ဝိရာဂါယ – မတပ်မက်သော လောကီ လောကုတ္တရာ မိဿကမဂ်အကျိုးငှါ"ဟု ကျနစွာပေးလိုလျှင် ပေးပါ။

**စေတေဿသိ** ။ ။ " စိတ်ဓာတ်သည် ဥဿာဟ (အားထုတ်ခြင်း) အနက်ကို ဟော၏"ဟု သိစေလို၍ "ကပ္ပေဿသိ ပကပ္ပေဿသိ" ဟု ဖွင့်၍,ကပ္ပဓာတ်၏ကြံစည် ခြင်းအနက်ကို ယူမည်စိုးသောကြောင့်"တေဒတ္ထံ ဝါယမိဿသိ"ဟု ဥဇုကတ္တဖွင့်သည်၊ "စေတေဿသိ" အရ စေတနာမယူနှင့်, ဝိရိယယူပါ–ဟူလို။

ဿသိ(နာမ)- အားထုတ်ဘိသနည်း၊ ဣတိအတ္တော -နက်၊ [နာမပုဒ်ကို ပါဠိတော်မှ ယူပေးသည်၊ နာမာတိ ဂရဟာယံ(ဝိမတ်)၊ထိုနာမသဒ္ဒါနှင့်ယှဉ်သောကြောင့်ပင် အတိတ်အနက်၌"စေတေဿသိ"ဟု အနာဂတ်ဝိဘတ်သက်ထားသည်၊ ] သဗ္ဗတ္ထ – အလုံးစုံသော ဝိသံယောဂါယ အစရှိသောပုဒ်တို့၌၊ သေ (သော)-၌ ဆိုအပ်ပြီးသောအစီအရင်သည်၊ နယော-တည်း၊

ပုန- ဖန်၊ ရာဂဝိရာဂါဒိနိ – န်သော၊ နဝပဒါနိ – ကိုးပုဒ်တို့ကို၊ နိဗ္ဗတ္တိတလောကုတ္တရနိဗ္ဗာနမေဝ - သင်္ခါရတို့မှနစ်စေအပ်သော လောကုတ္တရာနိဗ္ဗာန်ကိုသာ၊သန္ဓာယ–၍၊(ဘိက္ခု၊ဟိ-တို့သည်၊)[ရှင်သုဒိန်ကို အပြစ်တင်ကုန်သောရဟန်းတို့သည်–ဟူလို၊]ဝုတ္တာနိ-ဆိုအပ်ကုန်ပြီ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ရာဂဝိရာဂါယာတိဝါ - ရာဂဝိရာဂါယ ဟူ၍သော်ငြင်း၊ မဒနိမ္မဒနာယာတိဝါ - ယ ဟူ၍သော်ငြင်း၊ ဝုတ္တေပိ- ဆိုအပ်ပါသော်လည်း၊ နိဗ္ဗာနတ္ထာယ- နိဗ္ဗာန်အကျိုးငှါ၊ ဣတိ ဧဝမေဝ- ဤသို့သာ၊ အတ္ထော- ကို၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော– ၏၊ ဟိ-မှန်၊ ( တနည်း ) ဟိ- ချဲ့၊ နိဗ္ဗာနံ- ကို၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ တံ- ထိုနိဗ္ဗာန်သို့၊ အာဂမ္မ- ရောက်၍၊

နိဗ္ဗတ္တိတ ၊ပေ၊ နိဗ္ဗာနမေဝ ॥ ။ နိဝတ္တိတဥ္စ နိပုဗ္ဗဝတ္တဓာတ် ကာရိတ်ကြေ, တပစ္စည်း, ဝကို ဗပြု၍ "နိဗ္ဗတ္တိတ" ဟု ဖြစ်၏၊ "သင်္ခါရတို့မှ နစ်စေအပ်" ဟု သဒ္ဒါနက်ပေး၊ " သင်္ခါရတို့မှ နစ်စေအပ် " ဟူသည်လည်း " သင်္ခါရတခြား , နိဗ္ဗာန်တခြား ဖြစ်အောင် ခွဲခြားအပ်"ဟု အဓိပ္ပါယ်ရ၏၊ ထို့ကြောင့်"နိဗ္ဗတ္တိတ–သင်္ခါရတို့မှ သီးခြားထုတ်အပ်သော"ဟု ရှေးက ပေးကြသည်၊သို့သော် ပညတ်မှ ပရမတ်ကိုသီးခြားထုတ်၍ ရနိုင်သကဲ့သို့ သင်္ခါရတို့မှ နိဗ္ဗာန်ကို သီးခြားထုတ်၍ မရနိုင်သောကြောင့် ထိုအနက်ကို ဆင်ခြင်၊ ဋီကာ၌ " သင်္ခါရေဟိ နိက္ခန္တံ ဝိဝိတ္တံ-သင်္ခါရတို့မှ ထွက်မြောက်, ကင်းဆိတ်သော"ဟု ဖွင့်သည်ကား သဘာဝတ္ထ(နိဗ္ဗာန်၏သဘော) ကို ဖွင့်ခြင်းတည်း၊ လောကတော+ဥတ္တိဏ္ဏံ (ထွက်မြောက်ပြီ) ဣတိ လောကုတ္တရံ။

ဣတိဝါ ။ ။ ဝါသဒ္ဒါသည် အဝုတ္တသမုစ္စည်း အနက်ရှိ၏၊ ထိုဝါသဒ္ဒါဖြင့် ပိပါသဝိနယာယစသော ပါဠိတော်လာပုဒ်များကို ဆည်းပါ၊ တနည်း– ဝါသည် ရို့ရာဝိကပ်အနက်သာ၊ဣတိသဒ္ဒါသည် အာဒိအနက်ဟောတည်း၊ ထိုဣတိဖြင့်"ပိပါသဝိနယာယ" စသည်ကို ယူပါ။ [ အဝုတ္တသမုစ္စယတ္ထေန ဝါသဒ္ဒေန အာဒိအတ္ထေန ဣတိသဒ္ဒေန ဝါ ပိပါသဝိနယာယာတိအာဒိ သင်္ဂဟိတန္တိ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ။]

နိဗ္ဗာနံ ဟိ။ ။ ဤ နိဗ္ဗာနံပုဒ်ကို "ရာဂဝိရာဂေါတိ ဝုစ္စတိ"မှ စ၍ "နိဗ္ဗာနန္တိ ဝုစ္စတိ" တိုင်အောင်သော ဝုစ္စတိပုဒ်များ၌ စပ်၊ ဤ နိဗ္ဗာနံဟိ စသောဝါကျသည် ရာဂဝိရာဂစသော နာမည်များရခြင်း၏ မှန်ကြောင်းကို ပြသောကြောင့် ဒဠှီကရဏဝါကျ, တနည်း– ဝိတ္ထာရဝါကျတည်း၊ ယသ္မာ – တသ္မာပါသော အတွင်းဝါကျများကိုကား ဟေတုဝါကျ, ဖလဝါကျဟု ခွဲ၍, ရှေးရှေးသော ဟေတုဖလတစုံကို ပဓာန, နောက်နောက် ဟေတုဖလတစုံကို ပဓာနနှင့်ရဟု ချည်း ခွဲပါ။

( အာရဗ္ဘ- အာရုံပြု၍ ) ပဋိစ္စ- စွဲမှီ၍၊ ရာဂေါ- သည်၊ ဝိရဇ္ဇတိ- မတပ်မက်၊ န ဟောတိ- မဖြစ်တော့၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဝါ- ထိုသို့ ရာဂ၏ မတပ်မက်ရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ရာဂဝိရာဂေါတိ- ဂေါဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- ၏၊ ပန- ကား၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ တံ- ထိုနိဗ္ဗာန်သို့၊ အာဂမ္မ- အာရုံပြုသောအားဖြင့် ရောက်၍၊ မာန မဒပုရိသမဒါဒယော - ငါမြတ်၏ အစရှိသည်ဖြင့် ထောင်လွှားတက်ကြွတတ် သော မာန်, ငါယောကျ်ားဟု ထောင်လွှား တက်ကြွတတ်သော မာန် အစရှိ

**အနက်ပေးကြပုံ** ။ ။ ဤသို့ အကြောင်းပြသော ဝါကျများ၌ " ဟိ (ကသ္မာ) – ကြောင့်၊ နိဗ္ဗာန်-ကို၊ ရာဂဝိရာဂေါတိ-ဟူ၍ငင်း၊ပေ၊နိဗ္ဗာနံတိ-ဟူ၍ငင်း၊ ဝုစ္စတိ-နည်း" ဟု ပုစ္ဆာဝါကျ သီးခြားထုတ်၍လည်း ဆရာများ အနက်ပေးလေ့ ရှိကြ၏၊ " ဟိ– အကြောင်းကို ထင်ရှားပြညွှန်းအံ့"ဟု လည်း ပေးကြသေး၏၊ မည်သို့ပင် ပေးသော်လည်း ဝါကျရင်းမှာ ဒဋ္ဌီကရဏ ဝိတ္ထာရတ္ထိသာတည်း။

**တံ အာဂမ္မ ပဋိစ္စ** ။ ။ "အာဂမ္မ– ရောက်၍" ဟူရာ၌ ကိုယ်ဖြင့်ရောက်ခြင်းကို ယူမည်စိုး၍ "ပဋိစ္စ"ဟု ဖွင့်သည်၊ အာရုံပြုသောအားဖြင့် ရောက်ခြင်းကို ယူပါ-ဟူလို၊ [ တံ အာဂမ္မာတိ-နိဗ္ဗာနံ အာဂမ္မ ပဋိစ္စ ( အရိယမဂ္ဂဿ အာရမဏပစ္စယဘာဝဟေတု- နိဗ္ဗာန်က အရိယာမဂ်၏ အာရမဏပစ္စည်း အဖြစ်ဟူသော အကြောင်းကြောင့်၊ဤကား ပဋိစ္စအဖွင့်တည်း )၊ [ ဤသို့ အာဂမ္မ ပဋိစ္စ ၂ ပုဒ် အတွက်သာ ဋီကာဖွင့်သောကြောင့် ယခုစာအုပ်များ၌ ပါသော အာရဗ္ဘ သည် ရှေးပါဌ် မဟုတ် ဟု ထင်၏၊ ] "ဝိရဇ္ဇတိ– မတပ်မက်"ဟူရာ၌ ဖြစ်လျက်နှင့် မတပ်မက်သလောဟု စောကြောဘွယ်ရှိသောကြောင့် "န ဟောတိ"ဟု ဖွင့်သည်၊"ဖြစ်ကိုယ် မဖြစ်တော့"ဟူလို။

**ရာဂဝိရာဂေါ** ။ ။ " အာရမဏပစ္စယဘာဝဟေတု " ၌ ဟေတုကို ထောက်၍ "ဝိရဇ္ဇတိ ဧတေနာတိ ဝိရာဂေါ"ဟု ကရဏသာဓ်ပြုပါ၊ ထို့နောင် "ရာဂဿ+ဝိရာဂေါ ရာဂဝိရာဂေါ–ဘာဝဘောဂတို့၌ ရာဂ၏ မတပ်မက်ကြောင်း နိဗ္ဗာန်၊ [ နိဗ္ဗာန်ကို အာရုံ ပြုလိုက်ရလျှင် ရာဂလည်း (တဖြေးဖြေးနည်းပါး၍ ကုန်ခန်းသွားသောကြောင့် နိဗ္ဗာန်ကို "ရာဂ၏ မတပ်မက်ကြောင်းတရား" ဟု ဆိုသည်၊) "ဝိရဇ္ဇတိ ဧတ္ထာတိ ဝိရာဂေါ" ဟု အဓိကရဏသာဓ်လည်း ပြုကြ၏၊ထိုဝိဂ္ဂဟလည်း အသင့်ပင်၊ နောက်၌ နိမ္မဒနကို ဋီကာ၌ အဓိကရဏသာဓ် ပြုလတ္တံ့။ ]

**မာနမဒ** ။ ။ "ငါမြတ်၏" ဟူသော သေယျမာန် "ငါ–သူနှင့်တန်းတူ၏, ဘာ ထူးသေးသလဲ"ဟူသော သဒိသမာန်၊ "ငါက–သူ အောက်ကျနေတော့ကော ဘာဖြစ် သေးသလဲ" ဟူသော ဟီနမာန်တို့ကို ( ထောင်လွှား တက်ကြွတတ်သောကြောင့် ) "မဒ"ဟု ခေါ်၏၊ မဒတိ ဧတေနာတိ မဒေါ၊ "မဒ– ဂဗ္ဗေ=မာန်မူခြင်း, ထောင်လွှား ခြင်း" ဟူသော ဓာတ်တည်း၊ ယစ်ခြင်းအနက်ဟော ဒိဝါဒိမဒဓာတ် မဟုတ်၊ မာနော ယေဝ + မဒေါ မာနမဒေါ။ [ ဇာတိအာဒိံ နိဿာယ သေယျဿ " သေယျောဟ မသ္မိ " တိ အာဒိနာ ဥပ္ပဇ္ဇနကမာနောယေဝ+မဇ္ဇနနဋ္ဌေန မဒေါတိ မာနမဒေါ။ ]

ကုန်သော၊ မဒါ-ထောင်လွှားခြင်းတို့သည်၊ နိမ္မဒါ အမဒါ-ထောင်လွှားခြင်း မရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ- န်၏၊ ဝိနဿန္တိ - ပျက်စီးကုန်၏၊ တဿာ - ကြောင့်၊ (မဒဟူသမျှတို့ မတက်ကြွရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ )မဒနိမ္မဒနန္တိ- နံဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ စ-ဆက်၊ ယဿာ - ကြောင့်၊ တံ-ကို၊ အာဂမ္မ - ၍၊ သဗ္ဗာပိ- သော၊ ကာမ ပိပါသာ-ကိလေသာကာမတို့၏ သုံးဆောင်ခံစားလိုခြင်းသည်၊ဝိနယံ-ပျက်စီး ခြင်းသို့၊ အဗ္ဘတ္ထံ- ချုပ်ပျောက်ခြင်းသို့၊ ယာတိ- ရောက်ရ၏၊ တဿာ-ကြောင့်၊ (ကာမတို့ သုံးဆောင် ခံစားလိုခြင်း၏ ပျက်စီးရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) ပိပါသ

**ပုရိသမဒ။** ။"ငါကွယောကျ်ား" ဟု တက်ကြွခြင်းကို "ပုရိသမဒ"ဟု ခေါ်၏၊ [အဟံ ပုရိသောတိ ဥပ္ပဇ္ဇနကမာနော၊] ပုရိသောတိ + ဥပ္ပဇ္ဇမာနော+ မဒေါ–ပုရိသ မဒေါ၊ အချို့က မေထုန်မှီဝဲ စွမ်းနိုင်သည်ကိုလည်း " ပုရိသမဒ"ဟု ခေါ်ကြသတတ်၊ မဒါဒယော၌ အာဒိဖြင့် ဗလမဒ (အားကောင်းမှုကိုစွဲ၍ ဖြစ်သောမာန်) ယောဗ္ဗနမဒ (အရွယ်နုပျိုမှုမာန်) စသည်ကိုယူ။ [ဘဂဝါဂုဏ်တော်ဖွင့်၌ များစွာပါခဲ့ပြီ။]

**နိမ္မဒါ အမဒါ။** ။နိမ္မဒါကို "ဝိဂတမဒဘာဝါ– ကင်းသောမဒ၏ ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာ (ထောင်လွှားခြင်း) ရှိကုန်၏"ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုသို့ ဖွင့်သဖြင့် နိမ္မဒါ၌"မဒ"အရကို "ထောင်လွှားတက်ကြွခြင်း"ယူ၍ "နတ္ထိ မဒေါ ဧတေသံတိ နိမ္မဒါ"ဟု ပြုစေလိုသည်၊ "အမဒါ" သည် နိမ္မဒါ၏ အနက်ဖွင့်၊ ထိုသို့ ဖွင့်သဖြင့် နိသည် "ပဋိသေဓဝါစက"ဟု သိစေ၏၊ ဝိနဿန္တိကား အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း၊ မဒ ဟူသမျှတို့ နိဗ္ဗာန်ရောက်က ပျက်စီး ကြရကုန်သည်–ဟူလို။

**မဒနိမ္မဒန။** ။ နိမ္မဒန္တိ ဧတ္ထာတိ နိမ္မဒနံ၊ ဧတ္ထ–၍နိဗ္ဗာန်၌၊ မဒါ–မာနမဒစသော မာန်တို့သည်၊ နိမ္မဒန္တိ – မထောင်လွှားကြကုန်၊ ဣတိ နိမ္မဒနံ၊ မဒါနံ– တို့၏၊ နိမ္မဒနံ– မထောင်လွှားရာနိဗ္ဗာန်တည်း၊ မဒနိမ္မဒနံ – ဗ္ဗာန်၊ နိဗ္ဗာန်ကို အာရုံပြုရသောအခါ မာန် ထောင်မှုအားလုံး ကုန်ဆုံးသောကြောင့် နိဗ္ဗာန်ကို မဒတို့၏ မထောင်လွှားရာ ( မဒ အားလုံး ကုန်ဆုံးရာ) ဟု ဆိုသည်။ [ဋီကာ၌"နိမ္မဒိယန္တိ ဧတ္ထ"ဟု ရှိ၏၊ "အမဒဘာဝံ ဝိနာသံ ဂစ္ဆန္တိ" ဟု လည်း ဖွင့်၏၊ ထိုသို့ဖွင့်သဖြင့် နိမ္မဒိယန္တိ၌ ဣယသည် ဂမုဓာတ်၏ အနက်ဟော ဓာတုပစ္စယဟု သိစေ၏၊ ဝိဂ္ဂြိုဟ်မှာ"နိမ္မဒန္တိ ဧတ္ထာတိ နိမ္မဒနံ"တည်း။]

**ကာမပိပါသာ။** ။ပါတုံ+ ဣစ္ဆာ ပိပါသာ-သုံးဆောင် ခံစားလိုခြင်း၊ ဘူတဂါမ ပါတဗျဉ္ဇကဲ့သို့ ပါဓာတ်သည် ပရိဘောဂအနက်ကိုဟော၏၊ ကာမာနံ+ပိပါသာ ကာမ ပိပါသာ ( ကာမတဏှာတည်း )၊ [ ကာမာနံ + ပါတုကမျတာ၊ ကာမတဏှာတိ အတ္ထော၊–(ဋီကာ)၊ "ကာမာနံ"အရ၌ ကိလေသာကာမဖြစ် ရ၏၊"ပိပါသာ" အရ၌ ကား ထိုကာမတို့၏ ခံစားလိုခြင်းသတ္တိ ရ၏၊ တရားကိုယ်မှာ ကာမတဏှာပင်တည်း။]

**ဝိနယံ အဗ္ဘတ္ထံ။** ။ဝိပုဗ္ဗနီဓာတ်သည် ချုပ်ပျောက်ခြင်းအနက်ဟောဟု သိစေလို၍ ဝိနယံကို အဗ္ဘတ္ထံဟု ဖွင့်၏၊ [ "ဝိနေတိ ဧတ္ထာတိ ဝိနယော၊ ပိပါသာယ + ဝိနယော ပိပါသဝိနယော"ဟု ပြု၊ "ဝိနေတိ–ကင်းပျောက် ချုပ်ငြိမ်း၏"ဟု ပေး။]

ဝိနယောတိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ပန-ကား၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ တံ- ကို၊ အာဂမ္မ- ၍၊ ပဉ္စကာမဂုဏာလယာ- ၅ ပါးသော ကာမဂုဏ်အာရုံဟူသော အာလယ တို့သည်၊ ဝါ-၅ ပါးသော ကာမဂုဏ်အာရုံတို့၌ ဖြစ်သော တဏှာအာလယ တို့သည်၊ သမုဃ္ဃါတံ-အကြွင်းမဲ့ သတ်ဖြတ်အပ်ကုန်သည်၏အဖြစ်သို့၊ [ဘာဝ ပ္ပဓာန၊] ဂစ္ဆန္တိ – နိ၏၊ တသ္မာ – ကြောင့်၊ (အာလယတို့ကို သတ်ဖြတ်အပ် ရာ၏အဖြစ်ကြောင့်၊) အာလယသမုဃ္ဃါတောတိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ– ၏၊ စ–ဆက်၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊တံ အာဂမ္မ,တေဘူမကဝဋ္ဋံ-ဘုံသုံးပါး၌ဖြစ်သောဝဋ်သည်၊ ဥပစ္ဆိဇ္ဇတိ- ပြတ်စဲ၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ (တေဘူမကဝဋ်၏ပြတ်စဲရာ၏အဖြစ် ကြောင့်၊) ဝဋ္ဋုပစ္ဆေဒေါတိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ [ဥပစ္ဆိဇ္ဇတိ ဧတ္ထာတိ ဥပစ္ဆေ ဒေါ၊ ဝဋ္ဋဿ+ ဥပစ္ဆေဒေါ ဝဋ္ဋုပစ္ဆေဒေါ။] ပန- ကား၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊

**ပဉ္စကာမဂုဏာလယာ။** ။အာလီယန္တိ အဘိရမိတဗ္ဗဋ္ဌေန သေဝိယန္တီတိ အာလ ယာ = မွေ့လျော်အပ်ရာ၏အဖြစ်ဖြင့် မှီဝဲအပ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့် ကာမဂုဏ် ငါးပါး အာရုံများသည်“အာလယ”တို့ မည်၏၊ [အာပုဗ္ဗ လီဓာတ်သည် သိလေသန- ကပ်ငြိခြင်းအနက်ကို ဟောရိုးဖြစ်သော်လည်း ဓာတူနံ အနေကတ္ထတ္တာနှင့်အညီ သေဝန အနက်ဟော—ဟု ကြံ။] ပဉ္စကာမဂုဏာဧဝ+အာလယာ ပဉ္စ ကာမဂုဏာလယာ။

**မှတ်ချက်။** ။ပဉ္စကာမဂုဏာလယာကို သမုဃ္ဃါတံဂစ္ဆန္တိ၌ စပ်သောအခါ“ကာမ ဂုဏ် ငါးပါးဟူသော အာလယတို့သည် အကြွင်းမဲ့ သတ်အပ်ကုန်”ဟု အနက်ဖြစ်၏၊ အမှန်အားဖြင့် ကာမဂုဏ်အာရုံများကို သတ်၍မဖြစ် , ကာမဂုဏ်၌ဖြစ်သော ဆန္ဒရာဂ ကိုသာ သတ်၍ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် ကာမဂုဏ် အာရုံငါးပါး၏ ပဉ္စကာမဂုဏာလယ အမည်ကို ဆန္ဒရာဂအပေါ် တင်စား၍ ဌာနူပစာရအားဖြင့် ဆန္ဒရာဂကို ပဉ္စကာမဂုဏာ လယ ခေါ်ထားသည်ဟု မှတ်။ [ပဉ္စသု ဟိ ကာမဂုဏေသု ဆန္ဒရာဂပ္ပဟာနေနေဝ ပဉ္စ ကာမဂုဏာပိ ပဟီနာနာမ ဟောန္တိ။]

**တနည်း။** ။“အာလီယန္တိ အဘိရမဏဝသေန သေဝန္တိ – မွေ့လျော် ပျော်ပါး သောအားဖြင့် မှီဝဲတတ်ကုန်၏၊ ဣတိ အာလယာ”ဟု ကတ္တုသာဓ်ပြု၍ တရားရှစ်ပါး သော တဏှာဝိစရိတကို အာလယ ဟု ယူပါ။ [တဏှာဝိစရိတ-အထူးထူး အဖုံဖုံ ဖြစ် တတ်သော တဏှာတည်း။] ပဉ္စကာမဂုဏေသု-တို့၌+အာလယာ-မွေ့လျော် ပျော်ပါး သော အားဖြင့် မှီဝဲတတ်သော တဏှာတို့တည်း၊ ပဉ္စကာမဂုဏာလယာ – တို့၊ ဤသို့ ပြုလျှင် ဆန္ဒရာဂခေါ်သော တဏှာကို တိုက်ရိုက်ရသောကြောင့် ဥပစာကြံဘွယ်မလို။

**အာလယသမုဃ္ဃါတော။** ။သမ္မာ+ဥဂ္ဃဟညန္တိ ဧတ္ထာတိ သမုဃ္ဃါတော၊ [သံ+ ဥ + ဟနဓာတ်၊ ဃာတပြု။] အာလယာနံ + သမုဃ္ဃါတော အာလယသမုဃ္ဃါတော။ [မဟာဝါ–ပါစိတျာဒိ ယောဇနာ၌ အာလယပုဒ်၏ ဝိဂ္ဂဟဝယ်“အလ္လီယန္တိ”ဟူသော ပါဌ်ကို တည်၍“လဂ္ဂန္တိ-ကပ်ငြိတတ်ကုန်၏”ဟု သိလိသနအနက်ကိုပင် ဖွင့်၏၊ထိုအလို “ သေဝိယန္တိ ”ကို အမိပ္ပါယ်နက် ဟု ယူပါ။]

တံ အာဂမ္မ,သဗ္ဗသော- ဖြင့်၊ တဏှာ-သည်၊ ခယံ- ကုန်ခြင်းသို့၊ ဂစ္ဆတိ- ၏၊ ဝိရဇ္ဇတိ (စ)– ပျက်လည်းပျက်စီး၏၊ ဝါ - ကင်းလည်းကင်း၏၊ နိရုဇ္ဈတိစ– ချုပ်လည်းချုပ်၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ( တဏှာ၏ ကုန်ရာ ကင်းရာ ချုပ်ရာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) တဏှာက္ခယောတိ – ယောဟူ၍၎င်း၊ ဝိရာဂေါတိ – ၎င်း၊ နိရောဓောတိ-၎င်း၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ပန - ကား၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ တံ-ဤနိဗ္ဗာန်သည်၊ [နိက္ခန္တံ- စသည်၌စပ်၊ ] စတဿော - န်သော၊ ယောနိယော- ယောနိတို့ကို၎င်း၊ သတ္တ - န်သော၊ ဝိညာဏဋ္ဌိတိယော - တို့ကို၎င်း၊ နဝ - န်သော၊ သတ္တာဝါသေစ-တို့ကို၎င်း၊ အပရာပရဘာဝါယ-နောက်တဖန် နောက်တဖန် ဖြစ်ခြင်း၄ါ၊ ဝါ- အဆက်ဆက် ဖြစ်ခြင်း၄ါ၊ ဝိနနတော အာဗန္ဓနတော– ဖွဲ့စပ်တတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သံသိဗ္ဗနတော - ချုပ်စပ်တတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါနန္တိ – ဟူ၍၊ လဒ္ဓဝေါဟာရာယ- ရအပ်သော အခေါ် အဝေါ် ရှိသော၊ ဝါ - အခေါ်ခံရသော၊ တဏှာယ - မှ၊ နိက္ခန္တံ - ထွက်မြောက်ပြီ၊ နိဿဋံ – လွတ်မြောက်ပြီ၊ ဝိသံယုတ္တံ – မယှဉ်တော့၊ တသ္မာ– ထို့ကြောင့်၊ (တဏှာမှ ထွက်မြောက်တတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊)နိဗ္ဗာနန္တိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ဣတိ-သို့၊ (ဒဋ္ဌဗ္ဗော-၏၊ ) [အဓ္ဓော ဒဋ္ဌဗ္ဗော-သို့ပြန်လှည့်စပ်။]

**တဏှာက္ခယောစသည်** ။ ။ ခိယတိ ဧတ္ထာတိ ခယော၊ တဏှာယ + ခယော တဏှာက္ခယော၊ [“တဏှာ + ခယံ ဂစ္ဆတိ”ဟု ပါဌ်မှန်ရှိစေ၊ ဂစ္ဆတိ၏ကတ္တားသည် “တဏှာ” ပုဒ်တည်း။] ဝိရဇ္ဇတိ ဧတ္ထာတိ ဝိရာဂေါ= တဏှာ၏ မတပ်မက်ရာနိဗ္ဗာန်၊ ဝိရဇ္ဇတီတိ ပလုဇ္ဇတိ (ပျက်စီး၏) သာရတ္ထ၊ ဝိဂစ္ဆတိ (ကင်း၏) ဝိမတိ၊ နိရုဇ္ဈတိ ဧတ္ထာ တိ နိရောဓော=တဏှာ၏ ချုပ်ရာနိဗ္ဗာန်။

**ဝိနနတော၊ပေ၊နိဗ္ဗာနံ**။ ။“ဝိနန”သည် ဝါန၏ပရိယာယ်တည်း၊“ဝါ-ဂတိဗန္ဓနေသု”ဟု ဓာတ်ကျမ်းရှိသောကြောင့် “ အာဗန္ဓနတော ” ဟု ဓာတ်နက်ဖွင့်၏၊ ထို ဓာတ်နက်အလိုအားဖြင့် “ ယောနိ ၄ ပါးစသည်ကို ဖွဲ့တုပ်ထားတတ် ”ဟု အဓိပ္ပါယ် မှတ်မည် စိုးသောကြောင့် “သံသိဗ္ဗနတော” ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်၊ ပေါင်း၍ ဖွဲ့တုပ်သည်မဟုတ်၊ အပ်ချုပ်သွားသည် အဝတ်တစနှင့် တစကို ဆက်စပ်၍ချုပ်သကဲ့သို့ ဘဝဟောင်းနှင့် ဘဝသစ်ကို အဆက်မပြတ်အောင် ဖွဲ့စပ်သည်ဟု အဓိပ္ပါယ်မှတ်ပါ–ဟူလို။

**မှတ်ချက်**။ ။[ ဝါတိ အာဗန္ဓတိ သံသိဗ္ဗတိ- ဖွဲ့စပ်တတ်၏၊ ဣတိ ဝါနံ၊ ] ဤ နိဗ္ဗာန အဖွင့်၌“တံ အာဂမ္မ”မပါသောကြောင့် အဓိကရဏသာဓ်မလုပ်ရ၊ “ဝါနတော + နိက္ခန္တံ နိဗ္ဗာနံ”ဟု ပဉ္စမီတပ္ပုရိသ်ပြုစေလို၍“ယသ္မာ ပနေတံ၊ပေ၊ တဏှာယ နိက္ခန္တံ”ဟု ဖွင့်သည်၊ နိက္ခန္တံကို နိဿဋံ ဟု သဒ္ဒါနက် ဖွင့်ပြီးလျှင် “ တဏှာမှထွက် ” ဟူသည် “တောထွက်သလို ထွက်ခွါခြင်းမဟုတ်၊ တဏှာနှင့် မစပ်ယှဉ်ခြင်းတည်း ” ဟု သိစေ လို၍“ဝိသံယုတ္တံ” ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်။

ကာမာနံ ပဟာနံ အက္ခာတန္တိ-ကား၊ ဝတ္ထုကာမာနံ- ဝတ္ထုကာမတို့ကို ၎င်း၊ ကိလေသကာမာနဉ္စ - တို့ကို၎င်း၊ ပဟာနံ - ပယ်ကြောင်းအရဟတ္တမဂ်ကို၊ ဝုတ္တံ (နနု)-ဟောတော်မူအပ်သည် မဟုတ်ပါလော၊ [ပါဠိတော် "နနု" နှင့်တွဲပေး၊ ] ကာမသညာနံ ပရိညာတိ - ကား၊ သဗ္ဗာသမ္ပိ – န်သော၊ ကာမ သညာနံ-ဝတ္ထုကာမတို့၌ဖြစ်သော သညာတို့ကို၊ ဝါ-ကိလေသာကာမတို့နှင့် တကွဖြစ်သောသညာတို့ကို၊ ဉာတတီရဏပဟာနဝသေန - သိခြင်း,ဆုံးဖြတ် ခြင်း, ပယ်ခြင်း တို့၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ တိဝိဓာ - သော၊ ပရိညာ - ပိုင်းခြား၍ သိဘတ်သော အရဟတ္တမဂ်ကို၊ အက္ခာတာ (နနု) - လော၊ ကာမပိပါသာန န္တိ-ကား၊ ကာမေသု – ဝတ္ထုကာမ, ကိလေသာကာမ တို့၌၊ ပါတဗျတာနံ-

**ကာမာနံ ပဟာနံ ။** ။ ကာမီယတီတိ ကာမော ( ဝတ္ထုကာမ)၊ ကာမေတီတိ ကာမော ( ကိလေသကာမ )၊ ကေသေသ်ပြ၍ ထို ကာမ ၂ မျိုးရသည်ဟု ပြလိုသော ကြောင့် "ဝတ္ထု၊ပေ၊ကာမာနဉ္စ"ဟု မိန့်၊ ပဟာနံအရကို လောကုတ္တရာမဂ်ကိုသာ ယူရ မည်ဖြစ်သောကြောင့် "ပဟီယန္တိ ဧတေနာတိ ပဟာနံ – ပယ်ကြောင်း၊ ဝါ–(အဝုတ္တ ကတ္တု သာဓနကြံ၍) ပယ်တတ်သော အရဟတ္တမဂ် "ဟု ပြ၊ ဝတ္ထုကာမ၌ ဆန္ဒရာဂကို ပယ်ခြင်းသည် ဝတ္ထုကာမကို ပယ်ခြင်းတည်း။

**ကာမသညာနံ ။** ။ ကာမေသု – ဝတ္ထုကာမတို့၌ + ပဝတ္တာ–(အာရုံပြုသော အားဖြင့်)ဖြစ်ကုန်သော+သညာ-ကာမသညာ၊ (ပဝတ္တ အလယ်ပုဒ်ကြေ)၊ တနည်း- ကာမသဟဂတာ–ကိလေသာကာမနှင့် တကွဖြစ်ကုန်သော+ သညာ – ကာမသညာ၊ (သဟဂတအလယ်ပုဒ်ကြေသော) မဇ္ဈေလောပီကမ္မဓာရဲ။

**တိဝိဓာ ပရိညာ။** ။ကာမသညာကို"နာမ်တရား"ဟု ၎င်း,"မည်သည့် သဘော လက္ခဏာရှိ၏ , မည်သည့်ကိစ္စရသရှိ၏, မည်သည့် ပစ္စုပဋ္ဌာန်– ပဒဋ္ဌာန်ရှိ၏"ဟု ၎င်း, ပိုင်းခြား၍ သိမှုသည် ဉာတပရိညာတည်း၊ ထို ကာမ သညာတို့ကို အနိစ္စ စသည်ဖြင့် ဆုံးဖြတ်ခြင်းသည် တီရဏပရိညာတည်း၊ ထိုကာမသညာတို့ကို အရဟတ္တမဂ်ဖြင့် ပယ် ခြင်းသည် ပဟာနပရိညာတည်း။

**အရဟတ္တမဂ်ကို ပရိညာ ဟု ဆို။** ။အရဟတ္တမဂ်ခဏ၌ ပရိညာကိစ္စ ၃ ပါးလုံး၏ တပြိုင်နက်ပြီးစီးရသောကြောင့် အရဟတ္တမဂ်ကိုပင် " တိဝိဓာ ပရိညာ "ဟု ဆိုသည်။ [ဣမပနေ ကာမသညာနံ သဘာဝလက္ခဏပဋိဝေဓဝသေန အနိစ္စာဒိသာမညလက္ခဏေ နစ ပဝတ္တမာနာနံ ဉာတတီရဏပရိညာနံပိ (ပိဖြင့် ပဟာနပေါင်း) ကိစ္စနိပ္ဖတ္တိယာ မဂ္ဂေ နေဝ ဣစ္ဆိတဗ္ဗတော မဂ္ဂက္ခဏံ ယေဝ သန္ဓာယ တိဝိဓာပိ ပရိညာ ဝုတ္တာ။ ]

**ကာမပိပါသာနံပါတဗျတာ။** ။ [ပါဓာတ်၏ပရိဘောဂ အနက်ကို ရှေ့အတိုင်း မှတ်၊ ] " ကာမေသု ပါတဗျတာနံ "ဖြင့် " ကာမေသု + ပိပါသာ ကာမပိပါသာ" ဟု ပြ၏၊ ကာမေဝါ စသည်ဖြင့် " ကာမေ + ပိပါသာ ကာမပိပါသာ " ဟု ပြသည်၊ ပါတဗျတာနံ၌ တဗျပစ္စည်းကို ကတ္တားဟော ကြံ၊ သို့မှ " ပါတဗျာနံ – သုံးဆောင်

သုံးဆောင် ခံစားတတ်သော ပုဂ္ဂိုလ်၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ တဏှာတို့ကို၊ ဝါ-တနည်း၊ ကာမေ- ဝတ္ထုကာမ၌၊ ပါတုံ- သုံးဆောင် ခံစားခြင်းငှါ၊ ဍုဠ္ဍာနံ-ဖြစ်သော အလိုတို့ကို၊ (ပဋိဝိနယော-ပယ်ကြောင်း အရဟတ္တမဂ်ကို၊ အက္ခာတောနန-လော၊)ကာမဝိတက္ကာနန္တိ-ကား၊ ကာမုပသဥ္ဟိတာနံ- ကိလေသာကာမနှင့် စပ်ယှဉ်ကုန်သော၊ ဝိတက္ကာနံ- တို့ကို၊ [ "ကာမသဟဂတာ+ဝိတက္ကာ"ဟု ပြု၊] (သမုဿါတော - အကြွင်းမဲ့သတ်ဖြတ်ကြောင်း အရဟတ္တမဂ်ကို၊ အက္ခာတော့နနုံ-လော၊) ကာမပရိဠာဟာနန္တိ- ကား၊ ပဉ္စကာမဂုဏိကရာဂဝသေန- ငါးပါးသော ကာမဂုဏ်အာရုံ၌ ဖြစ်သော ရာဂ၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဥပ္ပန္န ပရိဠာဟာနံ-ဖြစ်သော ပူလောင်ခြင်းတို့၏၊ [ကာမေသု+ပရိဠာဟော-ဖြစ်သော ပူလောင်ခြင်း၊ တရားကိုယ်မှာ ရာဂတည်း၊ ] အန္တောဒါဟာနံ-အတွင်း၌ ပူလောင်ခြင်းတို့၏၊ (ဝူပသမော - ငြိမ်းစေကြောင်း အရဟတ္တမဂ်ကို၊ အက္ခာတော နန - လော၊ )ပဉ္စသု-န်သော၊ ဣမေသု ဌာနေသု - ဤကာမာနံ ပဟာနံစသော ဌာနတို့၌၊ ကိလေသက္ခယကရော- ကိလေသာတို့၏ ကုန်ခြင်းကို ပြုတတ်သော၊ လောကုတ္တရမဂ္ဂေါဝ - ကိုသာ၊ [ ဝေဖြင့် လောကီမဂ်ကို ကန့်သည်၊ ] ကထိတော - ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊ ပန-ဆက်၊ သဗ္ဗ ပဋ္ဌမေသု-အလုံးစုံတို့၏ ပဋ္ဌမဖြစ်ကုန်သော၊ တီသု-န်သော၊ ဌာနေသု-တို့၌၊ [ဝိရာဂါယ, နော သရာဂါယစသော ၃ ဌာနတို့၌-ဟူလို၊] လောကိယလောကုတ္တရ မိဿကော- လောကီ လောကုတ္တရာရောသော၊ မဂ္ဂေါ-ကို၊ ကထိတော-ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊

ခံစားတတ်သူတို့၏ + ဘာဝေါ–ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာ " ဟု ပြု၍ ခံစားလိုခြင်း ကာမတဏှာကို အရကောက်နိုင်မည်၊ ပါတုမိစ္ဆာနံသည် ပိပါသာနံ၏ အနက်ဖွင့်တည်း၊ ["ပါတုံ+ဣစ္ဆာ ပိပါသာ" ဟု အနက်မှတ်။]

ဋီကာ။ ။ "ပါတဗျတာသင်္ခါတာနံ သုဘာဒိအာကာရာနံ"ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုအလိုတဗျပစ္စည်း ကံဟောတည်း၊ ပါတဗျာနံ – ခံစားအပ်သော ကာမဂုဏ် အာရုံတို့၏+ဘာဝေါ-ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ သုဘစသော အခြင်းအရာတည်း၊ ထိုအခြင်းအရာကို ယူတတ် အာရုံပြုတတ်သော တဏှာကို ကာရဏူပစာရအားဖြင့် " ပါတဗျတာ" ခေါ်သည် ဟု ပြလို၍"တဒါကာရဂါဟိကာနံ တဏှာနံတိ အတ္ထော၊ ဝိသယမုခေန ဟေတ္ထ ( မှန်၏ – ဤနေရာ၌ အာရုံကို အကြောင်းပြုသဖြင့် ) ဝိသယိနော ( အာရုံရှိသော တရားတို့ကို) ဂဟိတာ"ဟု ဖွင့်သည်။

မှတ်ချက်။ ။ဝိရာဂါယ,နောသရာဂါယ–စသော ၃ ဌာနတို့၌ လောကီ လောကုတ္တရာ မိဿကမဂ်ကို, ရာဂဝိရာဂါယ စသော ၉ ဌာနတို့၌ နိဗ္ဗာန်ကို, ကာမာနံ ပဟာနံ စသော ၅ ဌာနတို့၌ အရဟတ္တမဂ်ကို အရကောက်ရမည် ဟု မှတ်။

**နေတံ အာဝုသော**တိ- ကား၊ အာဝုသော- ရှင်၊ တဝ- ၏၊ တေံပါပကမ္မံ- သည်၊ အပ္ပသန္နာနံ - မကြည်ညိုသေးသူတို့၏၊ ပသာဒါယစ- ကြည်ညိုခြင်းငှါ ၎င်း၊ ဝေရူပါနံ-ဤသို့မကြည်ညိုသေးသော သဘောရှိသူတို့၏၊ ပသာဒတ္တာယ- ကြည်ညိုခြင်းငှါ၎င်း၊ န ဟောတိ - မဖြစ်၊ [ပသာဒါယ၌ တဒတ္ထသမ္ပဒါန်သ၏ အာယအပြုဟု သိစေလို၍ "ပသာဒတ္တာယ"ဟု ဖွင့်၊ ပသာဒနတ္ထာယဟု (န) ပါသည်ကား မကောင်း၊ ပါဠိတော်၌ ဝါကို(စ)ဟု ဖွင့်သည်။] **အထခွေတန္တိ- ကား**၊ အထခေါ- စင်စစ်ကား၊ တေံ-ဤ မကောင်းမှုသည်၊ (ဟောတိ ၌ စပ်၊) အထခေါ တန္တိပိ - လည်း၊ ပါဠော- သည်၊ အတ္ထိ- ရှိသေး၏၊ အညထတ္တာ ယာတိ-ကား၊ ပသာဒညထာဘာဝါယ-ကြည်ညိုခြင်းမှတပါးသောအပြား၏ အဖြစ်ဟူသော၊ ဝိပ္ပဋိသာရာယ - နှလုံးမသာမယာခြင်းငှါ၊ ဟောတိ - ၏၊ ယေ - အကြင်သူတို့သည်၊ မဂ္ဂေန – မဂ်ဖြင့်၊ အနာဂတသဒ္ဓါ - မလာသော သဒ္ဓါရှိကုန်၏၊ တေသံ–ထိုသူတို့၏၊ (ပုထုဇဉ်သဒ္ဓါလောက်သာ ရှိသူတို့၏၊) ဝိပ္ပဋိသာရံ - ကို၊ ကရောတိ - ပြုတတ်၏၊ (ကိံ)၊ ယတ္ထ - အကြင် သာသနာ ၌၊ ဘိက္ခူ – ရဟန်း ဆိုသူတို့သည်၊ ဧဝံ - ဤသို့၊ ဝါ - သို့ကလောက်၊ ဒုပ္ပဋိ ပန္နာ–မကောင်းသဖြင့် ကျင့်ကြကုန်၏၊ ဤဒိသေပိ-ဤကဲ့သို့ ရှုအပ်သည်လည်း ဖြစ်သော၊ ဝါ-သို့ကလောက် ယုတ်မာသူတို့၏ နေရာလည်းဖြစ်သော၊ (တတ္ထ) ဓမ္မဝိနယေ– ထို သာသနာ၌၊ မယံ - တို့သည်၊ ပသန္နာနာမ- ကြည်ညိုမိလေ ကုန်ခြင်း၊ ဣတိ - သို့၊ (ဝိပ္ပဋိသာရံ ကရောတိ၊)[ဤဒိသေပိ၌ ပိသည် ဓမ္မဝိနယ ကို ကဲ့ရဲ့သော ဂရဟာဇောတက၊ နာမကား မိမိ ကြည်ညိုမှားသည့်အတွက် ခေဒ (ဝမ်းနည်းကြောင်း) ကို ပြသောနိပါတ်။ ] ပန–ကား၊ ယေ-တို့သည်၊ မဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ အာဂတသဒ္ဓါ-န်၏၊ တေသံ-ထိုမဂ်ဖြင့်လာသော သဒ္ဓါရှိသူတို့၏၊ သိနေရု- မြင့်မိုရ်တောင်သည်၊ ဝါတေဟိ- မုန်တိုင်းလေတို့ကြောင့်၊ အစလော ဝိယ - မလှုပ်ရှားသကဲ့သို့၊ (တထာ-တူ၊) ဤဒိသေဟိ-န်သော၊ ဝတ္ထုဟိဝါ- ဝတ္ထုတို့ကြောင့်၎င်း၊ ဣတော- ဤဝတ္ထုထက်၊ ဒါရုဏတရေဟိ-သာ၍ ကြမ်း ကုန်သော၊ (ဝတ္ထုဟိဝါ- ၎င်း၊) ပသာဒေါ- ကြည်ညိုခြင်းသည်၊ အစလော- မလှုပ်ရှား၊ တေန-ကြောင့်၊ **ကေစ္စာနံ အညထတ္တာယာတိ-ဟူ၍၊** (ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ [ကေစ္စထည့်၍ ဟောတော်မူသည် - ဟူလို။]

**အညထတ္တာယ။** ။အသော-ကြည်ညိုခြင်းမှ အခြားသော+ ပကာရော-မကြည်ညို ခြင်း အပြားတည်း၊ အညထာ-ပြား၊ အညထာ-၏+ ဘာဝါ-ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ (ဝိပ္ပဋိ သာရ) တည်း၊ ဤအနက်ကိုပြလို၍ "ပသာဒညထာဘာဝါယ"ဟု အည၏အပဒါန်နှင့် တွ ပစ္စည်းအနက်ကို ပြပြီးလျှင်"ဝိပ္ပဋိသာရာယ"ဟု အဘိဓေယျကိုပြသည်။

ဘဂဝတော၊ပေ၊အာရောစေသုန္တိ-ကား၊ ဘဂဝတော-အား၊ တံ အတ္ထံ-(ရှင်သုဒိန်၏ ဇနီးဟောင်း၌ မေထုန်မှီဝဲခြင်း ဟူသော) ဤအကြောင်းကို၊ အာစိက္ခိံသု- လျှောက်ကြကုန်ပြီ၊ ပဋိဝေဒယိံသု- သိစေကြကုန်ပြီ၊ စ- ဆက်၊ အာရောစယမာနာ - လျှောက်ကုန်လသော်၊ ပိယကမျတာယ - ချစ်အပ်သူ၏ အဖြစ်ကို အလိုရှိသူ၏အဖြစ်ကြောင့်လည်း၊ နေဝ (အာရောစေသုံ)-လျှောက်ကြကုန်သည် မဟုတ်၊ ဘေဒပုရေက္ခာရတာယ- ကွဲပြားခြင်း၌ဖြစ်သော အလိုကို ရှေးရှုပြုသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်လည်း၊ န (အာရောစေသုံ) - မဟုတ်၊ တဿ အာယသ္မတော - ၏၊ အဝဏ္ဏ ပကာသနတ္ထာယ - အပြစ်ကို ထင်ရှားပြုခြင်း အကျိုးငှါလည်း၊ န အာရောစေသုံ - မဟုတ်၊ ကလိသာသနာရောပနတ္ထာယ- ကောဓကြောင့် ပြောဆိုအပ်သော အပြစ်တင်ခြင်း အကျိုးငှါလည်း၊ န အာရောစေသုံ-မဟုတ်၊ ဣဒံ-ဤအကြောင်းကို၊ သုတွာ-ကြားတော်မူ၍၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဣမဿ-ဤသုဒိန်အား၊ သာသနေ-၌၊ ပတိဋ္ဌံ-ထောက်တည်ရာကို၊ န ဒဿတိ- ပေးတော်မမူလတံ့၊ နံ-ထိုသုဒိန်ကို၊ နိက္ကဍ္ဎာပေဿတိ-နှင်ထုတ်စေတော်မမူလတံ့၊ ဣတိ-သို့၊ မညမာနာ-မှတ်ထင်ကုန်သည်၊ (ဟုတ္တွာ)ပိ- လည်း၊

**နေဝ ပိယကမျတာယ။** ။အတ္တနိ (လျှောက်သော မိမိတို့အပေါ်၌) သတ္တု-၏၊ နေဝ ပိယဘာဝကာမတာယ၊ (ဋီကာ)၊ပိယဘာဝ-ဟုဖွင့်သောကြောင့် ပိယ၌ ဘာဝပုဒ် ခြေနကြံစေလို၏၊ "ကာမတာယ" ဟုဖွင့်သောကြောင့် "ကျ" ပစ္စည်းအနက် မရှိ (သွတ္ထ) ဟု သိစေလို၏၊ ပိယကာမော ယေဝ + ပိယကမျော၊ ပိယကမျဿ + ဘာဝေါ ပိယကမျတာ၊ နေဝနှင့်တွဲဘို့ရာ စပ်ပုဒ်ကြိယာကို မပြသောကြောင့် နေဝကို ပိယကမျ တာယနှင့်တွဲ၍ အနက်ပေးစေလိုဟန်တူ၏၊ သို့သော် (အထခေါ်-စသော အန္ဝယဝါကျ ရှိသောကြောင့်) ရိုးရာအတိုင်း ကြိယာနှင့်တွဲ၍ အနက်ပေးလိုက်သည်။

**န ဘေဒပုရေက္ခာရတာယ။** ။သတ္တု -၏၊ တေနဘိက္ခုနာ - နှင့်၊ န ဘေဒနာ မိပ္ပါယပုရေက္ခာရတာယ (ဋီကာ)၊ ဤ အဖွင့်အလိုအားဖြင့် "ပုရေ + ကရောတီတိ ပုရေက္ခာရော"၊ ဘေဒံ- ကွဲပြားခြင်း၌ ဖြစ်သော အလိုဆန္ဒကို၊ (အဓိပ္ပါယ ပုဒ်ကြေ)+ ပုရေက္ခာရော- ရှေးရှုပြုသူတည်း၊ ဘေဒပုရေက္ခာရော-သူ၊ ဝါ- ကွဲပြားစေလိုသူ၊ ဘေဒ ပုရေက္ခာရဿ+ ဘာဝေါ ဘေဒပုရေက္ခာရတာ။

**န ကလိသာသနာရောပနတ္ထာယ။** ။န ဒေါသာရောပနတ္ထာယ၊ [ဤ အဖွင့်သည် သဒ္ဒတ္ထ မဟုတ်၊ လိုရင်းအနက်ကိုသာပြသော အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း၊] ကလီတိ ကောဓ သောတံ့ အဓိဝစနံ = ကလိသဒ္ဒါသည် (ဤနေရာ၌) ကောဓကိုဟောသော ရှုဋ္ဌိပုဒ် တည်း၊ တဿ-ထိုကောဓ၏၊ ဝါ-ထို ကောဓအတွက်+ သာသနံ-နှိပ်ကွပ်ဆုံးမကြောင်း အပြစ်သည်၊ ကလိသာသနံ - မည်၏၊ ကောဓဝသေန ဝုစ္စမာနော ဂရဟာဒေါသော- စိတ်ဆိုးဆိုးနှင့် ပြောဆိုအပ်သော ကဲ့ရဲ့ရှုတ်ချကြောင်းအပြစ်၊ ဤအဖွင့်နှင့် အညီ, စိတ်ဆိုးဆိုးနှင့် ပြောဆိုအပ်သော အပြစ်တင်မှုကို "ကလိသာသနာရောပန"ဟု မှတ်။

န **အာ**ရောစေသုံ-မဟုတ်၊ အထခေါ်-စင်စစ်ကား၊ သာသနေ-၌၊ ဥပ္ပန္န-သော၊ ဣမံ အဗ္ဗုဒံ-ဤခိုးမှုကို၊(ဤ ခိုးကြောင်ခိုးဖှက် ပြုမှုကို၊)ဥ တွာ – မူ၍၊ ဘဂဝါ– **သည်၊** သိက္ခာပဒံ-ကို၊ ပညပေဿတိ - မူလတံ့၊ ဝေလံ – သိက္ခာပုဒ် တည်းဟူ သော ကမ်းကို၊ မရိယာဒံ – သိက္ခာပုဒ်တည်းဟူသော စည်းကို၊ အာဏံ– သိက္ခာပုဒ်တည်းဟူသော အမိန့်ကို၊ ထပေဿတိ-ထားတော်မူလတံ့၊ ဣတိ- ဤသို့ကြံ၍၊ အာရောစေသုံ-နပြီ။

တေသ္မိံ နိဒါနေ တေသ္မိံ ပကရဏေတိ တွေ-၌၊ သုဒိန္နဿ- ၏၊ အဇ္ဈာစာရ ဝီတိက္ကမော- လွှမ်းမိုး၍ ကျင့်ခြင်းဟူသော လွန်ကျူးခြင်းကို၊ သိက္ခာပဒ ပည တ္တိယာ-သိက္ခာပုဒ်ပညတ်ခြင်း၏၊ ကာရဏဘူတာ-အကြောင်း၏အဖြစ်ကြောင့်၊ နိဒါနဉ္စေဝါတိ - နိဒါနဟူ၍၎င်း၊ ပကရဏဉ္စာတိ - ဏ ဟူ၍၎င်း၊ ဝုစ္စော- ဆိုအပ်ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ ဟိ- ချဲ့၊ [ (တနည်း) ဟိ (ကဿ္မာ)– ကြောင့်၊ ကာရဏံ- အကြောင်းအရာကို၊ နိဒါနဉ္စေဝါတိ–န ဟူ၍၎င်း၊ ပကရ ဏဉ္စာတိ-ဏဟူ၍၎င်း၊ဝုစ္စတိ–နည်း၊]ကာရဏံ-ကို၊[ဝုစ္စတိ-၌စပ်၊]ဝါ-သည်၊ [နိဒေတိ, အပ္ပေတိ၊ ပကရောတိ, အာရဘတိ, ကရောတိ- တို့၌စပ်၊] ယသ္မာ- ကြောင့်၊ အတ္တနော-၏၊ ဖလံ–အကျိုးကို၊ နိဒေတိ – ညွှန်ပြသကဲ့သို့ အပ်နှင်း တတ်၏၊ နံ–ထိုအကျိုးကို၊ဂဏှထ-ယူကြကုန်၊ ဣတိ-သို့၊ ဒဿေန္တံ ဝိယ-ညွှန်ပြ သကဲ့သို့၊ အပ္ပေတိ-အပ်နှင်းတတ်၏၊ ဝါ-ပေးတတ်၏၊(တသ္မာ-ကြောင့်၊ ဝါ- ထိုသို့ မိမိအကျိုးကို ညွှန်ပြသကဲ့သို့ အပ်နှင်းတတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ နိဒါ

**ဝေလံ၊ပေ၊အာဏံ** ။ ။ သမုဒ္ဒရာစသည်တို့၏ ကမ်းသည် ရေကို ( မကျော်လွန် အောင်) တားဆီးသကဲ့သို့ သိက္ခာပုဒ်တော်လည်း မလွန်ကျူးအောင် တားဆီးတတ် သောကြောင့် ကမ်းနှင့်တူ၏၊ မရိယာဒါသည် ဝေလာ၏ ပရိယာယ်တည်း၊ သိက္ခာပုဒ် သည် ဘုရားရှင်၏ အာဏာတော် ဖြစ်သောကြောင့် အာဏာလည်း မည်၏။

**အဇ္ဈာစာရဝီတိက္ကမော** ။ ။ အမိ – ရဟန်းတို့ စောင့်စည်းအပ်သော အပိုင်း အခြား (စည်းကမ်း) ကို လွှမ်းမိုးကျော်လွန်၍+အာစာရော-ပြုကျင့်ခြင်း၊အဇ္ဈာစာရော- ခြင်း၊ အဇ္ဈာစာရောယေဝ+ ဝီတိက္ကမော အဇ္ဈာစာရဝီတိက္ကမော၊ ဤနေရာ၌ မေထုန် မှုကို အရကောက်။ [မေထုနဝသေန ပဝတ္တအဇ္ဈာစာရသင်္ခါတော+ဝီတိက္ကမော။]

**ကာရဏံဟိ၊ပေ၊ဝုစ္စတိ** ။ ။ ကာရဏံကို ဝုစ္စတိ၌ ပဓာနစပ်၍, နိဒေတိစသော ကြိယာများ၌ အပ္ပဓာနစပ်ပါ၊“ကာရဏံ ဟိ ယသ္မာ နိဒေတိ အတ္တနော ဖလံ၊ တသ္မာ နိဒါနန္တိ ဝုစ္စတိ”ဟု ၎င်း,“ယသ္မာ ပကရောတိ နံ၊ တသ္မာ ပကရဏန္တိ ဝုစ္စတိ” ဟု၎င်း, လိုရင်းဝါကျကို ကြည့်၍“နိဒေတီတိ နိဒါနံ၊ ပကရောတီတိ ပကရဏံ”ဟု ကတ္တုသာဓ် ဝစနတ်ပြုပါ။ [ဟိကို ပုဏ္ဏ–ကာရဏဇောတကကြံ၍ တနည်းပေးထားသည်။]

နန္ဒိစေဝ-နဟု၍လည်း၊ ဝုစ္စတိ-၏၊)ပန-ကား၊(နိဒါန်းပုဒ်၏ ဝစနတ္ထမှတပါး, ပကရဏ်ပုဒ်၏ ဝစနတ္ထကား၊) နံ-ထိုအကျိုးကို၊ ပကရောတိ-အားပါးထုတ်၍ ပြုလုပ်တတ်၏၊ ကတ္တုံ-၄ါ၊ အာရဘတိ-အားထုတ်တတ်၏၊ (တသ္မာ-ကြောင့်၊ ဝါ-ထိုသို့ အကျိုးကို အားပါးထုတ်၍ ပြုလုပ်တတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ပကရဏန္တိ-ဟူ၍လည်း၊ ဝုစ္စတိ-၏ ) ဝါ- တနည်း၊ ကရောတိယေဝ-ပြုတတ်သည်သာ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (အကျိုးကို ပြုတတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊) ပကရဏန္တိ- ဟူ၍လည်း၊ ဝုစ္စတိ-၏၊

ဝိဂရဟိ ဗုဒ္ဓေါ ဘဂဝါတိ-ကား၊ ဝဏ္ဏာဝဏ္ဏာရဟာနံ- ဂုဏ်ကိုပြောဆိုထိုက်, အပြစ်ကို ပြောဆိုထိုက်သူတို့၏၊ ဝါ-ချီးမွမ်းထိုက် ကဲ့ရဲ့ထိုက်သူတို့၏၊ ဝဏ္ဏဉ္စ-ဂုဏ်ကိုငှင်း၊ အဝဏ္ဏဉ္စ- အပြစ်ကိုငှင်း၊ ဘဏနသီလော-ပြောတတ်သော ပုဂ္ဂိုလ်တို့ဘွင်၊ အဂ္ဂပုဂ္ဂလော-အမြတ်ဆုံးပုဂ္ဂိုလ် ဖြစ်တော်မူသော၊ (အညော ပိ - မြတ်စွာဘုရားမှတပါး အခြားပုဂ္ဂိုလ်သည်လည်း၊)ဝိဂရဟတိယထာ-ကဲ့ရဲ့သကဲ့သို့၊(တထာ-တူ၊) [ယသာတံစသောဝါကျ၌ အနက်ပေးပုံကို ဝေရဉ္ဇကဏ္ဍ"ယထာ တံ အပ္ပမတ္တဿ"စသော ပါဠိတော်၏ အဋ္ဌကထာ ဋီကာကို ကြည့်ပါ။] ဗုဒ္ဓေါ- အလုံးစုံသောတရားကို သိတော်မူသော၊ဘဂဝါ- သည်၊

ဂဏ္ဍထ၊ပေ၊အဓေပ္ပတိ ॥ ॥ ဤဝါကျကား "နိဒေတိ အတ္တနော ဖလံ"ကို ထပ်၍ ဖွင့်သောဝါကျတည်း၊ နိပုဗ္ဗ ဒါဓာတ်, ယုပစ္စည်းဖြင့်ပြီးသော နိဒါနသဒ္ဒါတွင် နိသည် ညွှန်ပြခြင်း, ဒါနသည် ပေးခြင်း ( အပ်နှင်းသောပေးခြင်း) အနက်ကို ဟော၏– ဟု သိစေလို၍ "ဂဏ္ဍထ" စသည်မိန့်၊ ထိုတွင် ဒသဒ္ဒေါ နိဒါနံသည် နိ၏အနက်ပြ၊ (နိဒသဒ္ဒေါ နံ့ ရှိလျှင်သာ၍ကောင်း၏)၊ "ဂဏ္ဍထ နံ တံ"ကား ညွှန်ပြပုံကို ပြသော အာကာရတည်း၊ "ထိုအကျိုးကို ယူကြကုန်"ဟု အကျိုးကိုညွှန်ပြသည်- ဟူလို၊ အဓပ္ပတိသည် ဒါဓာတ်၏ အဖွင့်တည်း၊ အပ်နှံသောပေးခြင်း—ဟူလို။

ကတ္တုံအာရဘတိ॥ ॥ ပကရောတိ၏ အဖွင့်တည်း၊ ပကရဏေ၌ ပဥပသာရသည် အာရမ္ဘ ( အားထုတ်ခြင်း ) အနက်ဟော – ဟု သိစေလို၍ " ကတ္တုံ အာရဘတိ " ဟု ဖွင့်သည်၊ "ကရောတိယေဝ ဝါ" ဟူသော ဒုတိယနည်းဖြင့်"ပသဒ္ဒါ အနက်ထူးမရှိ, ကရဓာတ်နက်သို့လိုက်သော ဓာတွတ္ထာနုဝတ္တက ဥပသာရတည်း"ဟု သိစေ၏၊ ဝေဖြင့် အနက်ရှိကို ကန့်သည်။ [ ပကရဏေတိ ဧတ္ထ ပသဒ္ဒေါ အာရမ္ဘ ဝစနောတိ အာဟ – ကတ္တုံ အာရဘတီတိ၊ ကတ္တုမိ ဥပသဂ္ဂေါ ဓာတုအတ္ထမေဝ ဝဒတိ၊ န ဝိသေသတ္ထဇောတ ကောတိ အာဟ- ကရောတိယေဝ ဝါတိ။ ]

ဗုဒ္ဓေါ၊ပေ၊နိန္ဒိ॥ ၊ဗုဒ္ဓေါသည် ဂုဏ်ကိုပြသော ဝိသေသန၊ ဘဂဝါကား အမည်တော်ကိုပြသော ဝိသေသျတည်း၊ ဇုတိပိ သောဘဂဝါ ၊ပေ၊ ဗုဒ္ဓေါဘဂဝါ၌ ဘဂဝါ နာမည်တော်ကို ပဓာနထား၍ ဗုဒ္ဓေါကို ဂုဏ်တော်အဖြစ်ဖြင့်ပြပုံကိုထော်ပါ၊"ဂရဟ– နိန္ဒာယံ"ဟူသော ဓာတ်နက်နှင့်အညီ ဝိဂရဟိကို "နိန္ဒိ" ဟု ဖွင့်သည်။

ဝိဂရဟိ နိန္ဒိ—ကဲ့ရဲ့တော်မူပြီ၊ ဟိ—မှန်၊ (တနည်း) ဟိ (ယသ္မာ) - ကြောင့်၊ ဘဂဝတော - ၏၊ **သီလ**ဝိတိက္ကမကရံ – သီလအပိုင်းအခြားကို လွန်ကျူးမှုကို ပြုတတ်သော၊ ပုဂ္ဂလံ - ကို၊ ဒိသွာ—မူ၍၊ အယံ - ဤ ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ဇာတိယာဝါ - ဇာတ်အားဖြင့်သော်၎င်း၊ ဂေါတ္တေနဝါ – သော်၎င်း၊ ကောလပုတ္တိယေနဝါ – အမျိုးကောင်းသား၏ အဖြစ်အားဖြင့်သော်၎င်း၊ ဂန္ထေနဝါ– ကျမ်းဂန်အားဖြင့်သော်၎င်း၊ ဓုတင်္ဂေနဝါ - သော်၎င်း၊ ဉာတော - ထင်ရှားသော ပုဂ္ဂိုလ်တည်း၊ ယသဿီ – များသော အခြံအရံရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်တည်း၊ ဤဒိသံ - သော၊ ပုဂ္ဂလံ - ကို၊ ရက္ခိတုံ - စောင့်ရှောက်ခြင်းငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ - ၏၊ ဣတိ—သို့၊ စိတ္တံ - သည်၊ န ဥပ္ပဇ္ဇတိ - ဖြစ်တော်မမူ၊ [ဤဝါကျဖြင့် ကဲ့ရဲ့ထိုက်သူကို မကဲ့ရဲ့ဘဲ ထိမ်ချန်မထားကြောင်းကို ပြ၏၊] ပေသလံ-ချစ်ခင်အပ်သည်၏ အဖြစ်သို့ ရောက်သော၊ ဝါ - ချစ်အပ်သောသီလ ရှိသော၊ ဂုဝဏ္ဏနံ - ဂုဏ်ရှိသူကို၊ ဒိသွာ-မူ၍၊တဿ-၏၊ ဂုဏံ-ကို၊ ပဋိစ္ဆာဒေတုမ္ပိ-ဖုံးကွယ်ခြင်းငှါလည်း၊ စိတ္တံ– သည်၊ န ဥပ္ပဇ္ဇတိ - မမူ၊ [ဤဝါကျဖြင့် ချီးမွမ်းထိုက်သူကို မချီးမွမ်းဘဲ မနေကြောင်းကို ပြ၏၊] အထခေါ-စင်စစ်ကား၊ ဂရဟိတဗ္ဗံ-ကဲ့ရဲ့ထိုက်သူကို၊ ဂရဟတိဧဝ-မူသည်သာ၊ ပသံသိတဗ္ဗဥ္စ- ချီးမွမ်းထိုက်သူကိုလည်း၊ ပသံသတိဧဝ – သည်သာ၊ အယဥ္စ- ဤ ရှင်သုဒိန်ကိုလည်း၊ ဂရဟိတဗ္ဗော-၏၊ တသ္မာ–

**ဇာတိယာဒီ**။ ။ခတ္တိယာဒိဇာတိယာ,ဂေါတမ ကဿပါဒိဂေါတ္တေန, ခတ္တိယာဒိဇာတိသုယေဝ သက္ကကုလ (သာကီမင်းမျိုး) , သောတ္တိယကုလာဒိ (ဝေဒကျမ်းဂန်ကို တတ်သိသော ဗြာဟ္မဏမျိုး အစရှိသော) ဝိသိဋ္ဌကုလာနံ-ထူးခြားသောအမျိုးတို့၏၊ ပုတ္တဘာဝေန၊ ဤအဖွင့်ကြည့်၍ " ကုလာနံ + ပုတ္တာ ကုလပုတ္တာ၊ ကုလပုတ္တာနံ+ ဘာဝေါ ကောလပုတ္တိယံ"ဟု ပြု၊ ဏျပစ္စည်း,တ္တဋ္ဌ အကို ဣပြု။ [ဉာတောပါဌ်ဖြင့် ကိတ္တိယသကို ပြပြီးဖြစ်သောကြောင့် ယသဿီကို"မဟာပရိဝါရော"ဟု ဋီကာဖွင့်သည်။]

**မှတ်ချက်**။ ။"ဇာဘိယာဝါ" စသည်၌ ဝါကို "အယံ ဇာတိယာ ဉာတော၊ပေ၊ ရက္ခိတုံ ဝဋ္ဋတိ ဣတိစိတ္တံဝါ—ဤသို့သော စိတ်သည်သော်၎င်း" ဟု အသီးသီးလိုက်၍ ပေးမှ သဘာဝကျ၏၊ အဋ္ဌကထာ၌ကား စကားကျဉ်းအောင် "ဇာတိယာဝါ ဂေါတ္တေနဝါ" စသည်ဖြင့် ထားသည်။

**ပေသလံ**။ ။"ပိယသီလံ"ဟူသော အဖွင့်သည် ပေသလ၏သဘာဝကို ဖွင့်သော သဘာဝတ္ထအဖွင့်တည်း၊ ဝစနတ္ထကိုကား"ပိယဘာဝံ-(သီလရှိသည့် အတွက်)လူနတ်အများ လေးစားချစ်ခင်အပ်သူ၏ အဖြစ်သို့၊ ဝိသတိ – ရောက်၏၊ ဣတိ ပေသလော" ဟု ဏွာဒိမောဂ္ဂလ္လာန်၌ပြုသည်၊"ပိသ-ဂမနေ"ဟူသောဓာတ်နောင် အလပစ္စည်းသက်။ [ခုဒ္ဒသိက္ခာဋီကာ၌ကား"ပိယံ+ သီလံ အဿာတိ ပေသလော"ဟု ပြု၍,ပိ၌ ဣကို ဧဝုဒ္ဓိပြု,ယချေ၊ သီ၌ ဤကို (အ) ပြု၍"ပေသလ"ဟု ဖြစ်ရသတတ်။]

ကြောင့်၊ တံ - ထို ရှင်သုဒိန်ကို၊ တာဒိလက္ခဏေ - တာဒိလက္ခဏာ၌၊ ဝါ- ဣဋ္ဌာရုံ အနိဋ္ဌာရုံတို့၌ တုန်လှုပ်ခြင်း မရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်၏ အမှတ် အသား၌၊ ဌိတတာ - မှုသည်၊ (ဟုတ္ဂာ)၊ အဝိကမ္ပမာနေန- မလှုပ်ရှားသော၊ စိတ္တေန- ဖြင့်၊ ဗုဒ္ဓေါ-သော၊ ဘဂဝါ-သည်၊ အနနုစ္ဆဝိယန္တိ အာဒိဟိ- အနနုစ္ဆဝိယံ အစရှိကုန်သော၊ ဝစနေဟိ-စကားတော်တို့ဖြင့်၊ ဝိဂရဟိ-မူပြီ၊

တတ္ထ- ထို အနနုစ္ဆဝိယံ အစရှိသောစကားတို့၌၊ အယံ- ဤ ဆိုအပ်လတ့ံ ကား၊အတ္ထဝဏ္ဏနာ-အနက်အဖွင့်တည်း၊မောဃပုရိသ-မဂ်ဖိုလ်မမှီး,အချီးနှီး ယောကျ်ား၊တုစ္ဆမနုဿ-မဂ်ဖိုလ်မမှီး,အချီးနှီးလူ၊ဝါ-အလကားအကောင်၊ တယာ-သည်၊ ယဒိဒံ ကမ္မံ-အကြင်မေထုန်အမှုကို၊ ကတံ-အပ်ပြီ၊ တံ-ထိုအမှု သည်၊ [န အနွေတိ နာနုဂစ္ဆတိ-၌စပ်၊] သမဏကရဏာနံ -ရဟန်းအဖြစ်ကို ပြုတတ်ကုန်သော၊ [ သမဏဘာဝ ဆိုလိုလျက် ဘာဝကြေ၊ ] ဓမ္မာနံ – ဟိရီ သြတ္တပ္ပ အစရှိသော တရားတို့၏၊ ဝါ- တနည်း၊ မဂ္ဂဖလနိဗ္ဗာနာနံ- မဂ် ဖိုလ် နိဗ္ဗာန်တို့၏၊ ဝါ- နည်း၊ သာသနာနံ- ပရိယတ် ပဋိပတ်သာသနာတော်တို့၏၊

**တာဒိလက္ခဏေဌိတတာ။** ။ဣဋ္ဌာရုံနှင့် တွေ့ခြင်းကြောင့်လည်း စိတ်မလှုပ်ရှား, အနိဋ္ဌာရုံနှင့် တွေ့ခြင်းကြောင့်လည်း စိတ်မလှုပ်ရှားသူကို "တာဒိလက္ခဏာ၌ တည်သူ"ဟု ခေါ်ရသည်၊ ထို့ကြောင့်"အဝိကမ္ပမာနေန စိတ္တေန"သည် တာဒိလက္ခဏာ၏ သရုပ်ပြတည်း၊ "လှုပ်"ဟူ သည်မှာလည်း ဒေါသ ဒေါမနဿ,လောဘ သောမနဿ ဖြစ်ခြင်းတည်း။ [အဝိကမ္ပမာနေနာတိ ပဋိဃာနုနယေဟိ (မုန်းခြင်း ,ချစ်ခြင်းတို့ဖြင့်) အကမ္ပမာနေန။ ]

**မောဃပုရိသ။** ။မောဃော - (မဂ်ဖိုလ်မရှိသောကြောင့်) အချီးနှီးသော+ပုရိ သော-ယောကျ်ားတည်း၊ မောဃပုရိသော၊မောဃကို တုစ္ဆ,ပုရိသကို မနုဿ ဟု ဆင့်၍ ဖွင့်သည်၊ မြန်မာလို "အနှစ်မရှိသော အလကားအကောင်" ဟု ဆိုလိုသည်။

**မှတ်ချက်။** ။ယဿ တသ္မိံ အတ္တဘာဝေ ဥပ္ပဇ္ဇနာရဟာနံ မဂ္ဂဖလာနံ ဥပနိဿ ယော နတ္ထိ၊ တံ ဗုဒ္ဓါ မောဃပုရိသာတိ ဝဒန္တိ၊ အရိဋ္ဌလာဠုဒါယိကေဝိယ – အရိဋ္ဌ ရဟန်းနှင့် လာဠုဒါယိတို့ကဲ့သို့ ပုဂ္ဂိုလ်တို့ကို ခေါ်ပုံမျိုးတည်း၊ ဥပနိဿယေ သတိပိ တသ္မိံ ခဏေ (ထိုခေါ်ရာ ခဏ၌) မဂ္ဂေဝါ ဖလေဝါ အသတိ မောဃပုရိသာတိ ဝဒန္တိ ယေဝ၊ ဓနိယဥပသေနတ္ထေရာဒိကေဝိယ – ထို ပုဂ္ဂိုလ်များကား နောက်၌ မဂ်ဖိုလ်ရကြ လိမ့်မည်၊ သုဒိန္နဿ ပန တသ္မိံ အတ္တဘာဝေ မဂ္ဂဖလာနံ ဥပနိဿယော သမုစ္ဆိန္နော ယေဝ၊တေန နံ မောဃပုရိသာတိ အာဟ။

**သမဏ၊ဓပ၊သာသနံဝါ။** ။သမဏကရဏာနံ ဓမ္မာနံတိ ဟိရောတ္တပ္ပါဒိနံ၊တနည်း- မဂ္ဂဖလနိဗ္ဗာနာနံ၊ တနည်း- သာသနာနံ (ပရိယတ် ပဋိပတ်သာသနာတို့၏ )၊ ဤသို့ ၃ မျိုးပြသည်၊ မဂ္ဂဖလနိဗ္ဗာန-ဟူသော ပဋိဝေဓသာသနာကို ယူပြီးဖြစ်၍ သာသနာနံ အရ၌ (ပါရိသေသနည်းအားဖြင့်၊)ပရိယတ္တိ-ပဋိပတ္တိသာသနာကိုသာယူရတော့သည်။

န အနနုစ္ဆဝိကံ – အရောင် အရိပ်ဖြစ်သော သုန္ဒရဘောဂဏ်သို့ အစဉ်မလိုက်၊ ဝါ– မလျော်ကပ်ပတ်၊ တေသံ-ထို ရဟန်းအဖြစ်ကို ပြုတတ်သော ဟိရီသြတ္တပ္ပ အစရှိသောတရား, မဂ်ဖိုလ် နိဗ္ဗာန်, သာသနာတော်တို့၏၊ ဆဝိံ - အရိပ်ဖြစ်သော၊ ဆာယံ - အရိပ်ဖြစ်သော၊ သုန္ဒရဘာဝံ - ကောင်းသည်၏အဖြစ်သို့၊ န အနွေတိ နာနုဂစ္ဆတိ - အစဉ်မလိုက်၊ အထခေါ - စင်စစ်ကား၊ တေဟိ ဓမ္မေဟိ – တို့မှ၊ ( ရဟန်းအဖြစ်ကို ပြုတတ်သော ဟိရီသြတ္တပ္ပ အစရှိသောတရား, မဂ်ဖိုလ်နိဗ္ဗာန်,သာသနာတော်တို့မှ၊ ) အာရကာဝ – ဝေးသည်သာ၊ [သင့်အလုပ်ဟာ ထိုတရားတို့မှ အဝေးကြီးဖြစ်သည် – ဟူလို၊] စ-ကား၊ အနနုစ္ဆဝိကတ္တာဝေ - မလျော်ကပ်ပတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ပင်၊ အနနုလောမိကံ– မလျော်၊ တေသံ - ထို တရားတို့အား၊ န အနုလောမေတိ - လျော်စွာ မဖြစ်၊ အထခေါ - စင်စစ်ကား၊ ဝိလောမံ - ဆန့်ကျင်ဘက်ဖြစ်၍၊ ပစ္စနီကဘာဝေ-

**နအနနုစ္ဆဝိကံ**॥ ॥ပါဠိတော်၌ အနနုစ္ဆဝိယံကို“န + အနနုစ္ဆဝိကံ”ဟု ဝိဂ္ဂဟပြုစေလိုသည်၊ ကကို ယပြု၊ ထိုသို့ ဝိဂ္ဂဟပြုပြီးနောက် “အနနုစ္ဆဝိကံ” ၌ “ဆဝိံ + အနုဂတံ” ဟု ဝစနတ္ထ ပြုစေလို၍ “ဆဝိံ+အနွေတိ အနုဂစ္ဆတိ” ဟု ဝိဂြိုဟ်ပြပြန်သည်၊ သမာသန္တကပစ္စည်းသက်၍ “အနနုစ္ဆဝိကံ”ဟု ဖြစ်၏။

**ဆဝိံဆာယံ သုန္ဒရဘာဝံ**॥ ॥ ဆဝိ၌ “ အရေ ” ဟူသောအနက် ယူမည်စိုး၍ “ဆာယံ”ဟု ဖွင့်သည်၊ [ “ကန္တိ သောဘာ ဇုတိ စ္ဆဝိ” အဘိဓာန် (၅၄) နှင့် အညီ ဆဝိသဒ္ဒါလည်း “အရောင်” အနက်ကိုဟော၏၊ ထို့ကြောင့် “တေသံ ( ထို သမဏဓမ္မ စသည်တို့၏ ) ပဘာဿရကရဏံ ဆဝိံ”ဟု၎င်း “ဆာယန္တိ တေသံ ပကာသကံ သြဘာသံ”ဟု၎င်း ဋီကာဖွင့်သည်၊ ထိုအရောင် ဟူသည်လည်း “သုန္ဒရဘာဝ-ရဟန်းကောင်း၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ သီလသိက္ခာ စောင့်စည်းခြင်းဂုဏ်တည်း” ဟု ဆဝိ၏ အဘိဓေယျကို ဖွင့်ပြသည်။]

**အနနုစ္ဆဝိကတ္တာဝေ**॥ ॥ အနနုစ္ဆဝိယံ စသော ရှေးရှေးပုဒ်တို့သည် အတွင်း၌ ဟိတ် အနက်ရှိသောကြောင့် “ဟေတုမန္တ” အမည်ရသော ဝိသေသနပုဒ်တို့တည်း-ဟု သိစေလို၍ “အနနုစ္ဆဝိကတ္တာဝေ”ဟု ဟိတ်အနက်ထပ်၍ ဖွင့်သည်၊ ထိုဟိတ်ကို အနနုလောမိကံဟူသော နောက်ပုဒ်၌စပ်၊ ဧဝဖြင့် အနနုလောမိကဖြစ်ဘို့ရန် အခြားအကြောင်း မရှိဟု ကန့်။

**အနနုလောမိကံ**॥ ॥ အနုလောမံယေဝ အနုလောမိကံ၊ [သွတ္ထ၌ ဇကပစ္စည်း၊] တေသံဖြင့် ရှေးဝါကျက “ သမဏကရာနံ ဓမ္မာနံ” စသည်ကိုစွဲ၊ အနုလောမေတိကား အနုလောမိကံ၏ဥဇုကတ္တုပြတည်း၊“အနုလောမ”ပုဒ်သည် ဓာတ်မဟုတ်,အဗျယီဘော သမာသ်ဖြစ်ရကား “အနုလောမံ” ဟူသော သမာသ်နာမ်ႏနာင် ဖြစ်ခြင်းအနက်၌ ဏ– ဟူသော ဓာတုပစ္စည်း သက်ထားသည် ဟု ကြံသင့်၏။

ဆန္ဒကျင်ဘက်၏ အဖြစ်ဖြင့်၊ ဋ္ဌိတံ - တည်၏၊ [ ဝိလောမံကို " ပစ္စနိကဘာဝေ ဋ္ဌိတံ" ဟု ဖွင့်၊ ] စ - ကား၊ အနနုလောမိကတ္တာ ဧဝ - မလျော်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်ပင်၊ အပ္ပဋိရူပံ - တူသောသဘော မရှိ၊ ပဋိရူပံ - တူသော သဘော ရှိသည်၊ သဒိသံ-တူသည်၊ ပဋိဘာဂံ-တူသောအဘို့ရှိသည်၊ န ဟောတိ-မဖြစ်၊ အထခေါ - စင်စစ်ကား၊ အသဒိသမေဝ- မတူသည်သာ၊ အပ္ပဋိဘာဂမေဝ- တူသောအဘို့ မရှိသည်သာ၊ ( ဟောတိ - ၏၊) စ - ကား၊ အပ္ပဋိရူပတ္တာဧဝ- တူသောသဘော မရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်ပင်၊ အဿာမဏကံ-ရဟန်းတို့၏ အလုပ်မဟုတ်၊ သမဏာနံ - တို့၏၊ ကမ္မံ - အလုပ်သည်၊ န ဟောတိ- မဟုတ်၊ အဿာမဏကတ္တာ - ရဟန်းတို့၏အလုပ် မဟုတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အ ကပ္ပိယံ-ရဟန်းတို့အား မအပ်၊ဟိ-မှန်၊ယံ-အကြင်အလုပ်သည်၊သမဏကမ္မံ-ရဟန်းအလုပ်သည်၊ န ဟောတိ - မဟုတ်၊ တံ - ထိုအလုပ်သည်၊ တေသံ - ထို ရဟန်းတို့အား၊ န ကပ္ပတိ – မအပ်၊ အကပ္ပိယတ္တာ – မအပ်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ အကရဏီယံ-မပြုသင့် မပြုထိုက်၊ ဟိ-မှန်၊ သမဏာ-ရဟန်းကောင်း တို့သည်၊ ယံ-အကြင်အမှုသည်၊ န ကပ္ပတိ-မအပ်၊ တံ-ကို၊ န ကရောန္တိ–မပြု ကြကုန်၊ စ- ဆက်၊ တံ တေ - ထိုကဲ့သို့သော ဤမေထုန်မှုကို၊ တယာ- သည်၊ ကတံ–ပြီ၊ တသ္မာ –ကြောင့်၊ မောဃပုရိသ-မဂ်ဖိုလ်မမှီး အချီးနှီးယောကျ်ား၊ တေ-သင်သည်၊ အနနုစ္ဆဝိယံ- ရဟန်းတို့အား မလျောက်ပတ်သောအမှုကို၊ အနနုလောမိကံ – ရဟန်းတို့အား လျော်စွာမဖြစ်သော အမှုကို၊ အပ္ပဋိရူပံ– တူသောသဘော မရှိသောအမှုကို၊ အဿာမဏကံ-ရဟန်းတို့အလုပ်မဟုတ် သော အမှုကို၊ အကပ္ပိယံ-ရဟန်းတို့အား မအပ်သောအမှုကို၊အကရဏီယံ- ရဟန်းတို့မပြုသင့် မပြုထိုက်သောအမှုကို၊ ကတံ-ပြီ၊ ဣတိ (အယံ-ဤဆိုအပ် ပြီးကား၊ အတ္ထဝဏ္ဏနာ- တည်း။)

ပဋိရူပံ ။ ။ ပတိ (သဒိသံ) + ရူပံ ယဿာတိ ပဋိရူပံ၊ သဒိသံ ပဋိဘာဂံတို့ကား ပတိရူပံ၏ ဥဇုကတ္ထပြတည်း၊ ပတိ (သဒိသော) + ဘာဂေါ ယဿာတိ ပဋိဘာဂံ၊ ဤ ပဋိရူပံစသည်၌လည်း ရှေ့ဝါကျမှ တေသံကိုယူ၍စပ်။ [ ပ ရူပန္တိ အာဒီသုပိ တေသန္တိ အာနေတွာ သမ္ဗန္ဓိတဗ္ဗံ။ ]

**အဿာမဏကံ**။ ။ "သမဏာနံ + ကမ္မံ" အဖွင့်ကြည့်၍ "သမဏာနံ + ကမ္မံ သာ မဏကံ" ဟု ပြု၊ သမဏ၌ "သရ်မ" ဓာတ် ဖြစ်၍ ရှေ့ပုဒ်နှင့်တွဲသောအခါ ပျောက်သော (ရ်) အစား (သ်) လာရသည်။ [ "နဟိ သမဏာနံ" ဟု တချို့စာ၌ ပါဌ်ပျက်၏၊ "န ဟိ သမဏာ" ဟု ပါဌ်မှန်ရှိစေ၊ ယံတံရှေ့ကနေသော သမဏာပုဒ်ကိုလည်း ယံတံအပြင် ၌ ရှိသော ကရောန္တိမှာ စပ်စေရသည်။ ]

ကထဉ္စိနာမာတိ-ကား၊ ကေန ကာရဏေန-အဘယ် အကြောင်းကြောင့်၊ (န သက္ကုဏိဿတိ) နာမ- မစွမ်းနိုင်ရတုံဘိသနည်း၊ ကိံ ကာရဏံ- ကို၊ ပဿန္တော – မြင်သည်၊ (ဟုတ္ဝာ – ၍၊ န သက္ကုဏိဿတိ) နာမ – နည်း၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ [ နာမပုဒ်ကို ပါဠိတော် "န သက္ကုဏိဿတိ "နှင့် တွဲပေး ။] တတော- ထိုမှနောက်၌၊ ကာရဏာဘာဝံ-အကြောင်း၏ မရှိခြင်းကို၊ ဒဿေန္တော-မူလိုသည်၊ (ဟုတ္ဝာ-၍၊) ပရတော-နောင်၌၊ နနု မယာ ဓောဃပုရိသာတိ အာဒိံ- ကို၊ အာဟ-မူပြီ၊ တံ သဗ္ဗံ- ထို အလုံးစုံသောစကားရပ်သည်၊ ဝုတ္တတ္ထမေဝ- ဖွင့်ဆိုအပ်ပြီးသောအနက် ရှိသည်သာ၊ ဣဒါနိ-၌၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ တေန- ထို ရှင်သုဒိန်သည်၊ ယံ ပါပကမ္မံ-ကို၊ ကတံ-ပြီ၊ တံ-ထိုမကောင်းမှုသည်၊ ဝိပစ္စမာနံ- အကျိုးပေးလသော်၊ အတိဝိယ – အလွန် အကဲသာလျှင်၊ ဒုက္ခဝိပါကံ- မကောင်းသောအကျိုး ရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ [ဒုက္ခဝေဒနာအကျိုးသာမက, အနိဋ္ဌာရုံ အကျိုးအားလုံးကို ဒုက္ခဝိပါကဟု ဆိုသည်။ ] တသ္မာ – ကြောင့်၊ အဿ- ထို ရှင်သုဒိန်၏၊ တံ ဝိပါကံ - ထိုအကျိုးကို၊ ဒဿေတုံ - ငှါ၊ ကတာပရာဓံ-ပြုအပ်ပြီးသော အပြစ်ရှိသော၊ ဝါ- အပြစ်ပြုပြီးသော၊ ပုတ္တံ-ကို၊ အနုကမ္ပကာ - သနားစောင့်ရှောက်ကုန်သော၊ မာတာပိတရော -တို့သည်၊ (ပရိဘာသန္တိ) ဝိယ-ဘေးကိုပြ၍ ခြိမ်းချောက်ကုန်သကဲ့သို့၊(တထာ-တူ၊) ဒယာလုကေန - သနားခြင်းရှိသော၊ စိတ္တေန - ဖြင့်၊ သုဒိန္နံ-ကို၊ ပရိဘာသန္တော- တော်မူလိုသည်၊ (ဟုတ္ဝာ၊) ဝရံ၊ပေ၊ အာဒိံ-ကို၊ အာဟ- ပြီ။

တတ္ထ- ထို စကားရပ်၌၊ (အတ္ထော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော) ဘေဿ-၍ မြွေ၏၊ အာသု(သီဃံ)-လျင်မြန်စွာ၊ ဝိသံ - အဆိပ်သည်၊ အာဂစ္ဆတိ - တက်လာ၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ (လျင်မြန်စွာတက်လာသော အဆိပ်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သော - ထိုမြွေသည်၊) အာသီဝိသော—သ မည်၏၊ အဿ—ထိုမြွေ၏၊ ဃောရံ

ဒယာလုကေန။ ။ဒယာ သဒ္ဒါသည် မေတ္တာကိုရင်း ကရုဏာကိုရင်း ဟော၏၊ ဤနေရာ၌ ကရုဏာဟောဟု သိစေလို၍"အနုကမ္ပာယ သဟိတေန"ဟု ဋီကာဖွင့်သည်၊ သဟိတေနကိုကြည့်၍ "ဒယာ+ ယဿ အတ္ထီတိ ဒယာလု" ဟု ပြု၊ ထို့နောက် သွတ္ထ၌ က ပစ္စည်းသက်။ [အာလုတဗ္ဗဟုလေ-သုတ်ကြည့်။]

အာသု၊ပေ၊အာသီဝိသော ။ ။ အာသုနိပါတ်သည် သီဃအနက်ကို ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် အာသုကို "သီဃံ"ဟု ဖွင့်သည်၊ အာဂစ္ဆတိကြိယာကို ကြည့်၍ "အာသု+ အာဂတံ+ဝိသံ ယဿာတိ အာသီဝိသော"ဟု ပြုပါ။ [နိရုတ္တိနယေန–ဥကို ဤပြုခြင်း ဟူသော ဝဏ္ဏဝိကာရနိရုတ္တိ, အာဂတပုဒ် ချေခြင်းဟူသော ဝဏ္ဏနာသနိရုတ္တိနည်းဖြင့်၊ အာသီဝိသသဒ္ဒါသည အတ္ထံ ဒဿေန္တော အာဟ–အာသု သီဃန္တိ အာဒိ၊ ထောမနိဓိ အဘိဓာန်၌ "အာသု"သာ ရှိ၏ "အာသုံ" ဟု မရှိ။]

(စဏ္ဍုံ)-ကြမ်းသော၊ ဝိသံ-သည်၊ (အတ္တ-၏၊) ဇာတိ-ကြောင့်၊ (ကြမ်းသော အဆိပ်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သော-သည်၊) ဃောရဝိသော- သ မည်၏၊ အာသီဝိသဿ-လျင်မြန်စွာတက်လာသော အဆိပ်ရှိသော၊ ဃောရဝိသဿ-ကြမ်းသော အဆိပ်ရှိသော၊ တဿ - ထိုမြွေ၏၊ [ မုခေ - ၌စပ်၊ ] ပက္ခိတ္တန္တိ တေဿ - ပက္ခိတ္တံဟူသော ဤနောက်ပုဒ်၏၊ ဝရန္တိ ဣမိနာ - ဝရံဟူသော ဤ ရှေ့ပုဒ်နှင့်၊ သမ္ဗန္ဓော- ရှေ့နောက်လဲ၍ စပ်ခြင်းသည်၊ (ဟောတိ-၏၊) အာသီ ဝိသဿ-သော၊ ဃောရဝိသဿ- သော၊ ဤဒိသဿ- ဤကဲ့သို့ ရှိအပ်သော မြွေ၏၊ မုခေ- ခံတွင်း၌၊ အင်္ဂဇာတံ- သည်၊ ဝါ- ကို၊ ပက္ခိတ္တံ-ထည့်သွင်းအပ် သည်၊ (သမာနံ- သော်၊) ဝရံ- ကောင်းမြတ်သေး၏၊ ပက္ခိတ္တံ- သည်၊ သစေ ဘဝေယျ-အံ့၊ (ဝေံသတိ၊) ဝရံ-သည်၊ သိယာ-ဖြစ်ရာသေး၏၊ သုန္ဒရံ, သာဓု, သုဋ္ဌု- ကောင်းသေးသည်၊ သိယာ- ၏၊ ဣတိအတ္ထော- နက်၊ န တွေဝါတိ- ကား၊ နတွေဝ ဝရံ - မကောင်းမြတ်သည်သာ၊ န သုန္ဒရမေဝ, န သာဓုမေဝ, န သုဋ္ဌုမေဝ - သည်သာ၊ သဗ္ဗတ္ထ - အလုံးစုံသော နောက်ဝါကျတို့၌၊ သေ (ဧသော)-ဤ ဆိုအပ်ပြီးသော အစီအရင်သည်၊ နယော-တည်း၊

ကဏှသပ္ပဿာတိ-ကား၊ ကာဠသပ္ပဿ-မည်းနက်သောအဆင်း ရှိသော မြွေ၏၊[ရှေးက "မြွေဟောက်"ဟု ပေး၏၊....သေသသပ္ပေဟိ-တို့ထက်၊ ကဏှ သပ္ပဿ မဟာဝိသတ္တာ အာသီဝိသဿ အနန္တရံ ကဏှသပ္ပေါ ဝုတ္တော၊ ] အင်္ဂါရကာသုယာတိ - ကား၊ အင်္ဂါရပုဏ္ဏကူပေ - မီးကျီးတို့ဖြင့် ပြည့်သော တွင်း၌၊ ဝါ-တနည်း၊ အင်္ဂါရရာသိမှိ- မီးကျီးအစု၌၊ အာဒိတ္တာယာတိ-ကား၊

ဝရံ ပက္ခိတ္တံ။ ။"သစေ ပက္ခိတ္တံ၊ပေ၊အတ္ထော"ကား အမိပ္ပါယတ္ထတည်း၊ ထိုအမိပ္ပါ ယတ္ထပြဝါကျ၌"သစေ ဘဝေယျ (ဝေံ သတိ)"ကိုကြည့်၍ "ပက္ခိတ္တံ (သမာနံ) ဝရံ" ဟု သမာန်ထည့်၍ အနက်ပေးသည်၊ "ပက္ခိတ္တံ – ထည့်အပ်သည်ကား၊ ဝရံ – ၏" ဟု ပါဠိတော် အနက်ပေးပါ၊ သီလပျက်ဘဲ သေရခြင်းသည် မေထုန်မှုဖြင့် သီလပျက်၍ မသေဘဲနေရခြင်းထက် မြတ်ပါသေးသည်–ဟုလို။

အင်္ဂါရကာသု။ ။ကာသုသဒ္ဒါသည်"ကသတိ ခနီယတိ–တူးအပ်၏"ဟု ဝိဂ္ဂဟ ပြုလျှင် " တွင်း " ဟူသော အနက်ကိုဟော၏၊ ကသဓာတ်, ဏပစ္စည်း၊ "ကာသီယတိ စီယတိ–စီအပ်စုအပ်၏"ဟု ပြုလျှင်"အစု" အနက်ကိုဟော၏, ကာသဓာတ်, ဥပစ္စည်း ဟုကြံ၊ ထို့ကြောင့် "အင်္ဂါရပုဏ္ဏကူပေ, အင်္ဂါရရာသိမှိဝါ "ဟု ၂ မျိုးဖွင့်သည်၊ အင်္ဂါရ ပုဏ္ဏကူပေဖြင့်"အင်္ဂါရေဟိ+ပုဏ္ဏာ+ကာသု" ဟု မဇ္ဈေလောပီတပ္ပုရိသ်ပြ၏၊ အင်္ဂါရ ရာသိမှိဖြင့် " အင်္ဂါရာနံ+ ကာသု အင်္ဂါရကာသု " ဟု ပြ၏။.... [ ဓာတွတ္ထသင်္ဂဟ၌ "တုဋ္ဌဘာဝေနေ, ပုဋ္ဌဘာဝေနဝါ ကာသတိ ပကာသတီတိ ကာသု"ဟု ပြ၏။]

ပဒိတ္တာယ- လွန်စွာထွန်းပသော၊ ဂဟိတအဂ္ဂိဝဏ္ဏာယ – ယူအပ်သော မီးအဆင်းရှိသော၊ သမ္ပဇ္ဇလိတာယာတိ-ကား၊ သမန္တတော- ထက်ဝန်းကျင်၌၊ ပဇ္ဇလိတာယ-အလျှံတောက်သော၊ အစ္စိယော-မီးလျှံတို့ကို၊ မုဉ္စန္တိယာ-လွှတ်သော၊သဇောတိဘူတာယာတိ-ကား၊သပ္ပဘာယ-အရောင်နှင့်တကွဖြစ်သော၊ သမန္တတော–၌၊ ဥဋ္ဌိတာဟိ - ထကုန်သော၊ ဇာလာဟိ - အလျှံတို့ဖြင့်၊ ဧကပ္ပဘာ သမုဒယဘူတာယ-တခဲနက် အရောင်အပေါင်းရှိသည် ဖြစ်၍ဖြစ်သော၊ [အင်္ဂါရကာသုယာ-၌စပ်၊] ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ တံ ကိဿဟေတူတိ-ကား၊ ဝရန္တိ - ဝရံဟူသော၊ ယံ - အကြင်စကားကို၊ မယာ-သည်၊ ဝုတ္တံ - မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ တံ – ထိုစကားကို၊ ကိဿဟေတု - အဘယ် အကြောင်းကြောင့်၊ ကတရေန ကာရဏေန–ကြောင့်၊(ဝုတ္တံ–သနည်း၊)ဣတိစေ - ဤသို့ မေးအံ့၊ မရဏံဝါ နိဂစ္ဆေယျာတိ - ကား၊ ယော – အကြင် ရဟန်းသည်၊ တတ္ထ – ထို

**အာဒိတ္တာယ**။ ။အာဒိပ္ပတိ– လွန်စွာထွန်းပ၏၊ ဣတိ အာဒိတ္တာ၊ အာဒိတ္တာယကို "ပဒိတ္တာယ" ဟု ပရိယာယ် ဖွင့်သည်၊ ၂ ပုဒ်လုံး"အာပုဗ္ဗ, ပပုဗ္ဗ–ဒိပဓာတ် (ဒီပဓာတ်လည်း သင့်၏၊) တပစ္စည်းချည်းတည်း၊ "ဂဟိတအဂ္ဂိဝဏ္ဏာယ" ကား ပဒိတ္တာယ၏ အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်တည်း၊ "လွန်စွာ ထွန်းပ" ဟူသည် "ထိုအင်္ဂါရကာသု၏ မီးရောင်အဆင်းကဲ့သို့ နီရဲနေခြင်းတည်း"ဟူလို။

**သမ္ပဇ္ဇလိတာယ**။ ။"သံသည် သမန္တအနက်ဟော"ဟု ပြလို၍ "သမန္တတော" ဟု ဖွင့်သည်၊ ပဇ္ဇလိတာယဖြင့် ထိုအင်္ဂါရာသု၏ အလျှံတောက်နေပုံကို ပြ၏၊ "အစ္စိယော မုဉ္စန္တိယာ"ကား သမ္ပဇ္ဇလိတာယ၏အဓိပ္ပါယတ္ထပြတည်း၊ "ပဇ္ဇလတိ (လွန်စွာ+တောက်၏) ဣတိ ပဇ္ဇလိတာ၊ သမန္တဘော+ပဇ္ဇလိတာ သမ္ပဇ္ဇလိတာ။

**သဇောတိဘူတာယ**။ ။ဇောတိသဒ္ဒါသည် ဤနေရာ၌ "အရောင်" ဟူသော အနက်ကို ဟော၏၊ [ပဏ္ဍကေ ဇောတိ နက္ခတ္တ–ရံသိ သွိဂ္ဂိမှိ ဇောတိ သော–(အဘိဓာန်, ၈၈၄)။] ထို့ကြောင့် "သ+ပဘာယ"ဟု ဖွင့်သည်။ [သဟ+ဇောတိနာ ယာ ဝတ္တတီတိ သဇောတိ၊ သဇောတိ+ဟုတွာ+ဘူတာ သဇောတိဘူတာ။]

**သမန္တတော၊ပေ၊ဟောတိ**။ ။သဇောတိဘူတာယ၏ အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း၊ ထို၌ "သမန္တတော ဥဋ္ဌိတာဟိ ဇာလာဟိ"ကား "သမ္ပဇ္ဇလိတာယ"ဟု ပြခဲ့သော မီးတောံများတည်း၊ ထို ပြခဲ့သော မီးတောက်များဖြင့် "ဧကပ္ပဘာသမုဒယဘူတာ–တခဲနက် အကြားမလပ်အောင် မီးရောင်အပေါင်း ဖြစ်သည်"။

**မှတ်ချက်**။ ။ထိုအင်္ဂါရကာသုသည် အာဒိတ္တ–နီနီရဲရဲ မီးရောင်ရှိ၏၊ (ဤစကားဖြင့် မီးလျှံထွက်ပုံကို မပြသေး၊) သမ္ပဇ္ဇလိတ–မီးတောက် မီးလျှံထွက်နေသည်၊ (တချို့ မီးတောက်သည် အရောင်မရှိ, ရောင်သေဖြစ်၏၊ ဤအင်္ဂါရကာသုကား အရောင်သေ မဟုတ်၊) သဇောတိဘူတာ–(ဓာတ်မီးများကဲ့သို့) အရောင်ထိန်နေသည်-ဟူလို၊ဤသို့ ပုဒ် ၃ ခု၏ အနက်အဓိပ္ပါယ် မတူပုံကို မှတ်ပါ။

မြွေ၏ခံတွင်း မီးကျီးတွင်း မီးကျီးစုံ၌၊ အင်္ဂဇာတံ- ကို၊ ပက္ခိပေယျ-ထည့်ရာ၏၊ သော – ထို ရဟန်းသည်၊ မရဏံဝါ – သေခြင်းသို့သော်ငါး၊ မရဏမတ္တံ– သေခြင်း အတိုင်းအရှည်ရှိသော၊ ဝါ - သေလုမတ္တဖြစ်သော၊ ဒုက္ခံဝါ- ဆင်းရဲခြင်းသို့သော်ငါး၊ နိဂစ္ဆေယျ-ရောက်ရာ၏၊ ဇာတော နိဒါနဉ္စ ခေါ၊ ပေ၊ ဥပပဇ္ဇေယျာတိ-ကား၊ မာတုဂါမဿ– ၏၊ အင်္ဂဇာတေ–၌၊ ယံ ဇာဒံ အင်္ဂဇာတပက္ခိပနံ- အကြင် မိမိအင်္ဂါဇာတ်ကို ထည့်သွင်းခြင်းသည်၊ (အတ္ထိ)၊ ဇာတော နိဒါနံ-၌ မာတုဂါမ၏ အင်္ဂါဇာတ်၌ မိမိအင်္ဂါဇာတ်ကို ထည့်သွင်းခြင်း ဟူသော အကြောင်းရှိသည်ဖြစ်၍၊ တဿ–ထို ထည့်သွင်းမှုကို၊ ကာရကော- ပြုသော၊ ပုဂ္ဂလော–သည်၊ နိရယံ–ငရဲ၌၊ ဥပပဇ္ဇေယျ–ဖြစ်ရာ၏၊ ဝေံ–ဤသို့လျှင်၊ ဝါ- သို့ကလောက်၊ ကမ္မဿ - ၏၊ မဟာသာဝဇ္ဇတံ - ကြီးသောအပြစ် ရှိသည်၏ အဖြစ်ကို၊ ပဿန္တော–မှုသည်၊ (ဟုတွာ)၊ တံ-ထို ရှင်သုဒိန်ကို၊ ဂရဟိ-မှုပြီ၊ တဿ- ဒိန်၏၊ ဒုက္ခာဂမံ- ဒုက္ခရောက်ခြင်းကို၊ ဇာ ဿမာနော– အလိုရှိတော်မူသည်၊ (ဟုတွာ)၊ န ဂရဟိ-ကဲ့ရဲ့တော်မူသည်မဟုတ်။

တတ္ထနာမ တွန္တိ-ကား၊ ဝေရူပေ-ဤသို့ သဘောရှိသော၊ တသ္မိံ ကမ္မေ–ထို မေထုန်အမှုသည်၊ ဝေံ- သို့၊ ဝါ- သို့ကလောက်၊ မဟာသာဝဇ္ဇေ- ကြီးသော အပြစ်ရှိသည်၊ သမာနေပိ- ဖြစ်ပါလျက်လည်း၊ တွံ- သည်၊ [သမာပဇ္ဇိဿသိ နာမဌစပ်၊] ယံ တွန္တိဧတ္တ -၌၊ ယန္တိ - ယံ သဒ္ဒါသည်၊ ဟီဠနတ္ထေ- ရှုတ်ချခြင်း အနက်၌၊ (ပဝတ္တော)နိပါတော၊ တွန္တိ-တွံသဒ္ဒါသည်၊ တံသဒ္ဒဿ-တံ သဒ္ဒါ၏၊ ဝေဝစနံ-ဝေဝုစ်ပရိယာယ်တည်း၊ ဥဘိယပိ- ယံ+တွံ ၂ ပုဒ်တို့ဖြင့်လည်း၊ ယံဝါ တံဝါ - ဟုတ်ဟုတ်ငြားငြားသော၊ ဟီဠိတံ - ရှုတ်ချအပ်သော၊ အဝညာတံ-

ဇာတော နိဒါနံ။ ။ ဇာဒံ မာတုဂါမဿ အင်္ဂဇာတေ အင်္ဂဇာတပက္ခိပနံ + နိဒါနံ (ကာရဏံ) အဿ နိရယုပပဇ္ဇနဿာတိ ဇာတောနိဒါနံ၊ ဘာဝနပုံသကံ စေတံ၊ ပစ္စတ္တ ဝစနဿ တောအာဒေသော ကတော၊ တဿစ သမာသေပိ အလောပေါ၊ – ဋီကာ။ [ ဇာတော၌ တောသည် သိကို ပြုထားသော တောတည်း၊ ထိုတောလည်း မကြေ၊ ထို့ကြောင့် "ဇာတောနိဒါနံ" ဟု ရှိရသည်–ဟူလို၊ ထိုစကားအရ " ဇာတော + နိဒါနံ ယဿာတိ ဇာတောနိဒါနံ"ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၍ ကြိယာဝိသေသနအနက်ပေး။]

မဟာသာဝဇ္ဇတံ။ ။လူများ၏ မေထုန်မှုသည် အပြစ်မကြီးလှသော်လည်း ရဟန်းတို့၏ မေထုန်မှုကား ဘုရားအာဏာတော်ကို ကျူးကျော်မှု, အမိသီလသင်္ကာကို ဖေါက်ဖျက်မှုကြောင့် ကြီးလေးသောအပြစ်ရှိသည်။

တွန္တိ၊ပေ၊ဝေဝစနံ။ ။ တတ္ထ နာမ တွံ၌ တွံသည် သမာပဇ္ဇိဿသိနှင့်စပ်ရသော ( တုမှ၏ကာရိယ ပဌမန္တ ) ပုဒ်တည်း၊ ယံတွံ၌ တွံကား (ထိုတွံမျိုး မဟုတ်) တံ၏ ပရိယာယ်ပုဒ်တည်း၊ ယံသဒ္ဒါ၏ ဟီဠနအနက်ကို ကူစွက်၍ဟောသော နိပါတ်ပုဒ်တမျိုး-

အောက်တန်းစားအမှုဟု အသိအမှတ်ပြုအပ်သော၊ [ဋ္ဌယံဌယသမာပတ္တိံ–၌ စပ်၊ ] ဇာတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ အသဒ္ဓမ္မန္တိ - ကား၊ အသတံ - မသူတော်ဖြစ်ကုန် သော၊ နီစဇနာနံ-ယုတ်ညံ့သူတို့၏၊ ဓမ္မံ-အကျင့်ဖြစ်သော၊ တေဟိ-ထို ယုတ်ညံ့ သူတို့သည်၊ သေဝိတဗ္ဗံ - မှီဝဲထိုက်သော၊ ဇာတိအတ္ထော - နက်၊ ဂါမဓမ္မန္တိ– ကား၊ ဂါမာနံ - ရွာသူရွာသားတို့၏၊ ဓမ္မံ - သော၊ ဂါမဝါသိက မနုဿာနံ- ရွာ၌နေသူ လူတို့၏၊ ဓမ္မံ-သော၊ ဇာတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဝသလဓမ္မန္တိ-ကား၊ ပါပ ဓမ္မေ - ယုတ်မာသော အကျင့်တို့ကို၊ ဝသန္တိ ပဃရန္တိ - သွန်ချတတ်ကုန်၏၊ ဇာတိ-ကြောင့်၊ ဝသလာ-လတို့မည်၏၊ ဝသလာနံ-ယုတ်မာသောအကျင့်တို့ကို သွန်ချတတ်ကုန်သော၊ တေသံ ဟီနပုရိသာနံ – ထို ယုတ်ညံ့သောယောကျ်ား တို့၏၊ ဓမ္မံ - အကျင့်ဖြစ်သော၊ ဝါ - နည်း၊ ဝသလံ, ကိလေသပဃရဏကံ- ကိလေသာကို သွန်ချတတ်သော၊ ဓမ္မံ – သော၊ ဒုဋ္ဌုလ္လန္တိ - ကား၊ ကိလေသ

ဟူလို။ [ယံတံတိ– နာယံ ဥဒ္ဒေသနိဒ္ဒေသော၊ (ယံသည် ဥဒ္ဒေသ, တံသည် နိဒ္ဒေသ, ခွဲရိုးရှိ၏၊ ဤသို့ဥဒ္ဒေသနိဒ္ဒေသမဟုတ်)၊ယထာလောကေ“ယံဝါတံဝါ”တိ အဝညာတ ဝစနံ၊ဧဝံ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ=လောက၌ ယံဝါတံဝါ (ဟုတ်ဟုတ် ငြားငြား၊ ဝါ–တော်သလို လျော် သလို၊ဝါ-တော်စွာ လျော်စွာ) ဟူသော ရှုတ်ချအပ်သော အနက်ဟောသဒ္ဒါရှိသကဲ့သို့, ထို့အတူ ယံတံကိုလည်း“အဝညာတဝစန”ဟု မှတ်သိုက်သည်။]

**အသဒ္ဓမ္မံ။** ။အသတံသည် အသန္တာနံကဲ့သို့ နံ ဝိဘတ် ဆုံးသောပုဒ်၊ အသတံ+ ဓမ္မော (အသန္တဓမ္မော - ဟု ဖြစ်သင့်သော်လည်း သန္တသဒ္ဒါသုတ်၌ စဖြင့် သန္တကို သပြု,ဒွေဘော်လာ၍) အသဒ္ဓမ္မောဟု ဖြစ်၏၊အသန္တအရ နီစဇန ( အကျင့်ယုတ်ညံ့သူ) ကို အရကောက်ပါဟု အဘိဓေယျကို ပြလို၍“နီစဇနာနံ”ဟု ဖွင့်သည်။ [“န+သန္တော အသန္တော၊– (သူတော်ကောင်း၏ ဆန့်ကျင်ဘက်) မသူတော်၊ ဝါ–ယုတ်ညံ့သူ။] “တေဟိ သေဝိတဗ္ဗံ”ကား “အသဒ္ဓမ္မ” အမည်ရပုံကို ထင်ရှားပြသော စကားတည်း၊ ထို နီစဇနတို့ မှီဝဲအပ်သောအကျင့် ဖြစ်သောကြောင့် “အသဒ္ဓမ္မ” ခေါ်ရသည်–ဟူလို။

**ဂါမဓမ္မံ။** ။“ဂါမာနံ+ဓမ္မော ဂါမဓမ္မော”ဟု ပြု၊ “ဂါမ” အရလည်း (ရွာနှင့် ရွာသူရွာသားကို မခွဲခြားဘဲဆိုအပ်သော အဘေဒေါပစာရအားဖြင့်) ရွာသူရွာသားကို ယူပါ။ [ ဂါမသဒ္ဒေန ဂါမဝါသိနော ဝုတ္တာ အဘေဒေါပစာရေန။ ] ထို့ကြောင့် ဂါမ ဝါသိကမနုဿာနံ–စသည်ဖြင့် ဥဇုကတ္တဖွင့်သည်။

**ဝသလဓမ္မံ။** ။“ဝသ–သူဒနေ (သွန်ချခြင်း)”ဟု ဓာတ်ကျမ်းရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် “ပါပဓမ္မေ ဝသန္တိ” စသည်ဖြင့်“ဝသလ”အရ ပုဂ္ဂိုလ်ကိုရအောင်ရင်း, “ဝသလံဝါ” စသည်ဖြင့် “ ဝသလ ” အရ အကျင့်ရအောင်ရင်း, ၂ နည်းဖွင့်ပြသည်။ [ဝသဓာတ်+ အလပစ္စည်း၊] ပဌမနည်း၌“ဝသလာနံ+ဓမ္မော ဝသလဓမ္မော” ဟု ပြု၊ ဒုတိယနည်း၌ “ဝသတီတိ ဝသလော၊ ဝသလောစ+သော+ဓမ္မောစာတိ ဝသလဓမ္မော”ဟု ပြု။

ဒူသိတံ-ကိလေသာတို့ ဖျက်ဆီးအပ်သည်၊ (ဟုတ္ဝာ)၊ ဒုဋ္ဌုစ-မကောင်းသည် လည်းဟုတ်၏၊ အသုခုမံ-မသိမ်မွေ့သည်၊(ဟုတ္ဝာ)၊ထူလဋ္ဌ-ရုန့်ရင်းကြမ်းတန်းသည်လည်းဟုတ်၏၊ အနိပုဏံ - မသိမ်မွေ့သည်လည်း ဟုတ်၏၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဩဒကန္တိကန္တိ- ကား၊ အဿ-ထို မေထုနဓမ္မ၏၊ ဥဒကကိစ္စံ - ရေ၌ ဖြစ်သော ကိစ္စဟူသော၊ (ရေဆေးခြင်းကိစ္စ ဟူသော)၊ အန္တိကံ အဝသာနံ- အဆုံးသည်၊ (အတ္ထိ- ၏၊ ) ဣတိ-ထို့ကြောင့်၊ (သော -ထိုမေထုနဓမ္မသည်၊) ဩဒကန္တိကော- ကမည်၏၊ ဩဒကန္တိကံ- ရေ၌ဖြစ်သောကိစ္စ အဆုံးရှိသော၊ တံ - ထိုမေထုန်အကျင့်သို့၊ ရဟဿန္တိ- ကား၊ ရဟော- ဆိတ်ကွယ်ရာအရပ်၌၊ ဘဝံ - ဖြစ်သော အကျင့်သို့၊ ပဋိစ္ဆန္နေ - ဖုံးကွယ်အပ်သော၊ ဩကာသေ - ၌၊ ဥပ္ပဇ္ဇနကံ- ဖြစ်သောအကျင့်သို့၊ [သမာပဇ္ဇိဿသိနာမ- ၌စပ်၊] ဟိ- မှန်၊ အယံ ဓမ္မော - ဤ မေထုန်အကျင့်သည်၊ ဝါ - ကို၊ ဗိဂ္စ္ဆနီယတ္တာ - စက်ဆုပ်အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ - ရွံစရာကောင်းသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အာဝိ- ထင်ရှားစွာ၊ [သက္ကတ၌ "အာဝိသ်"ဟု ရှိ၏၊ သ်ကျေ၍ ဒီဃပြု၊ ] အညေသံ- အခြားသူတို့၏၊ ဒဿန ဝိသယေ - မြင်လောက်ရာအရပ်၌၊ ဝါ - မြင်ကွင်း၌၊ ကာတုံ - ငှါ၊ နယုတ္တာ - မတတ်ကောင်း၊ ဝါ - မတော်၊ တေန - ကြောင့်၊ ရဟဿန္တိ- ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ- သည်၊) ဝုတ္တံ-မူအပ်ပြီ၊

ဒုဋ္ဌုလ္လံ။ ။"ဒု+ထုလ" ဟု ၂ ပုဒ်ခွဲ၊ ဒုသည် ဒုဋ္ဌုအနက်ဟောတည်း၊"ကိလေသ ဒူသိတံ"သည် ဒုဋ္ဌုအနက်၏ အကြောင်းပြတည်း၊ အသုခုမံသည် ထူလ၏အဖွင့်တည်း၊ "အနိပုဏံ" ကား အသုခုမံ၏ ဥဇုကတ္ထ၊ "ရုန့်ရင်းကြမ်းတန်း" ဟု အနက်ပေးစေလိုသည်၊ ထကို ဋ္ဌပြု, ဒုနောက်ဖြစ်၍ ဒွေဘော်လာ။ ["ဒုဋ္ဌုစ+သော+ ထူလောစာတိ ဒုဋ္ဌုလ္လော"ဟု ပြု၍ မေထုနဓမ္မောကို အရကောက်။ ]

ဩဒကန္တိကံ ။ ။ "ဥဒကေ + ဘဝံ – ဖြစ်သောကိစ္စတည်း"၊ ဩဒကံ – ကိစ္စ" ရေဆေးခြင်းကိစ္စကို အရကောက်စေလိုသောကြောင့် "ဥဒကကိစ္စံ"ဟု ဖွင့်သည်၊ မေထုန် ကိစ္စ ပြီးဆုံးသောအခါ ရေဆေးရသောကြောင့် " ဩဒကံ + အန္တိကံ ယဿာတိ ဩဒကန္တိကော"ဟု ပြု၊ အဝသာန်သည် အန္တိကံ၏အဖွင့်တည်း။ [နောက်"မေထုနဓမ္မော နာမ"၏ အဖွင့်၌ကား "ဥဒကံ+အန္တေ ယဿာတိ ဥဒကန္တံ" ဟု ဘိန္နာဓိကရဏ ဗဟုဗ္ဗီဟိပြု၍ " ဥဒကန္တမေဝ ဩဒကန္တိကံ"ဟု ဏိကပစ္စည်း သွတ္ထဟု ပြုလတ့်၊ ထိုနည်းကို ဤနည်းမှ တမျိုးပြခြင်းဟု သာ မှတ်။]

ရဟဿံ ။ ။ "ရဟော + ဘဝံ" ဟူသော အဋ္ဌကထာကိုကြည့်၍ "ရဟသိ – လူ အများ၏ ကွယ်ရာ၌+ဘဝေါ ရဟဿော"ဟု ပြု၊ဘဝအနက်၌ ယပစ္စည်း၊ [ထောမနိဓိ၌ " ယတ် " ပစ္စည်းဟု ဆို၏၊] မနောဂိုဏ်းဖြစ်၍ (သ်) လာ၊ သကို ယကပ်၍ သျကို သပြု, ဒွေဘော်လည်းလာ။

ဒွယံဒွယသမာပတ္တိနိ - ကား၊ ဒွိဟိ ဒွိဟိ - ခိန်းမယောက်ျား ၂ ဦးသား ၂ ဦးသား တို့သည်၊ သမာပဇ္ဇိတဗ္ဗံ - ကောင်းစွာ ရောက်ထိုက်သော မေထုန် အကျင့်သို့၊ ဒွယံဒွယံသမာပတ္တိနိ့ပိ-ပတ္တိံ ဟူ၍လည်း၊ ပါဌော-ပါဌ်ရှိသေး၏၊ ဒယံဒယံ သမာပတ္တိနိ့ပိ- တ္တိံ ဟူ၍လည်း၊ ပဌန္တိ- ရွတ်ဆိုကြကုန်၏၊ တံ-ထိုသို့ ရွတ်ဆို ခြင်းသည်၊ န သုန္ဒရံ - မကောင်း၊ သမာပဇ္ဇိသ္သသိတိ ဧတံ – သဿသိ ဟူသော ဤပုဒ်ကို၊ တတ္ထနာမ တွန္တိဧတ္တ - တတ္ထနာမ တွံ ဟူသော ဤပါဌ်၌၊ ဝုတ္တနာမသဒ္ဒေန – ဆိုအပ်ပြီးသော နာမသဒ္ဒါနှင့်၊ သမာပဇ္ဇိဿသိနာမ - ရောက်ရဘိသနည်း၊ ဣတိ-သို့၊ ယောဇေတဗ္ဗံ-ယှဉ်စေထိုက်၏၊ဗဟူနံ ခေါ၊ပေ၊ အာဒိကတ္တာ ပုဗ္ဗင်္ဂမောတိ – မောဟူသော စကားကို၊ သာသနံ - သာသနာ တော်ကို၊ သန္ဓာယ- ရည်ရွယ်တော်မူ၍၊ ဝဒတိ- မိန့်တော်မူ၏၊ ဣမသ္မိံ သာသ နေ-၌၊ တွံ-သည်၊ ဗဟူနံ- န်သော၊ ပုဂ္ဂလာနံ- တို့၏၊ အကုသလာနံ- န်သော၊ ဓမ္မာနံ- တို့ကို၊ အာဒိကတ္တာ- အစစွာပြုတတ်သူတည်း၊ [ ပုဂ္ဂလာနံကို အာဒိ နှင့် ပုဗ္ဗင်္ဂမော တို့၌, ဓမ္မာနံကို ကတ္တာ၌စပ်၊ ကတ္တာ၌ ကရဓာတ် တုပစ္စည်း၊ ]

**ဒွယံဒွယသမာပတ္တိံ**။ ။ဒွိန္နံ +သမူဟော ဒွယံ၊ သမာပတ္တိနှင့်တွဲဘို့ရန် "ဒွယေန" ဟု ရှိစေ၊ "ဝိဿာဘိက္ခုဉ္စေသု ဒွေ" ဟူသော မောဂ္ဂလ္လာန်—၁ ကဏ္ဍ (၅၄) သုတ်ဖြင့် "ဒွယေန ဒွယေန " ဟု ပြု၊ " သျာဒိလောပေါ ပုဗ္ဗဿေကဿ " ဟူသော ( ၅၅ ) သုတ်ဖြင့် ရှေ့ပုဒ်၏နာကိုချေ၊ ထို့နောက် ဝါစာသိလိဋ္ဌအကျိုးငှါ နိဂ္ဂဟိတ်လာ၍"ဒွယံ ဒွယေန"ဟု ဖြစ်၏၊ သမာပဇ္ဇိတဗ္ဗာတိ သမာပတ္တိ၊ ဒွယံဒွယေန + သမာပတ္တိ ဒွယံဒွယ သမာပတ္တိ၊ ဤသို့ ပြုစေလို၍"ဒွိဟိဒွိဟိ သမာပဇ္ဇိတဗ္ဗံ"ဟု ဖွင့်သည်၊ "ဒွိဟိ"ဟု ဗဟုဝုစ် ဖွင့်သော်လည်း "၂ ယောက်အပေါင်း—၂ ယောက်တတွဲ" ဖြစ်၍ "ဒွယေန"ဟု သာ ဧကဝုစ်ပြုရသည်၊ တိပစ္စည်းက နိယတဋ္ဌတ္တိလိန် ဖြစ်၍ "မေထုနဓမ္မော"ဟူသော အဘိ ဓေယျပုဒ်၏ပုလ္လိန်သို့မလိုက်ဘဲ သမာပတ္တိကို ဣတ္ထိလိန်သာမှတ်၊ [" ဒွယံဒွယံသမာပတ္တိ" ဟု ရှိသောပါဌ်၌ သမာသ်ပြီးမှ နောက်ဒွယ၌ နိဂ္ဂဟိတ်လာ၊ "ဒယံဒယံ" ဟု သဒ္ဒါမဖြစ် နိုင်သောကြောင့် ဒယံဒယံသမာပတ္တိံပုဒ်ကို "မကောင်း"ဟု ဆိုသည်။]

**သမာပဇ္ဇိဿသိ**။ ။ရှင်သုဒိန်၏ မေထုန်မှုသည် ပြုပြီး (အတိတ်) ဖြစ်သော်လည်း ဂရဟာဇောတကနာမသဒ္ဒါနှင့် ယှဉ်သောကြောင့် သဒ္ဒထုံးစံအတိုင်း " သမာပဇ္ဇိဿ သိ"ဟု အနာဂတ်ကြိယာကို သုံးစွဲထားသည်၊ ထို့ကြောင့် " သမာပဇ္ဇိဿသီတိ ဧတံ နာမသဒ္ဒေန ယောဇေတဗ္ဗံ"ဟု မိန့်သည်။ [နာမေ ဂရဟာဝိမှယေသု၊—(မောဂ္ဂလ္လာန်, ၆ ကဏ္ဍ, ၃ သုတ်၊) အကျယ်ကို ထိုနိဿယမှာရှု။]

**သာသနံ သန္ဓာယ**။ ။"အာဒိကတ္တာ-မေသုန်ကို အစဆုံးပြုသူ" စသောစကားကို သာသနာတော်ကို ရည်ရွယ်၍မိန့်သည်၊ လူ့ဝတ်ကြောင်လောက၌ကား ထို မေထုန်မှုကို ကမ္ဘာဦးလူတို့က စတင်ခဲ့ကြသည်—ဟူလို။

(ကသ္မာ-နည်း၊ ) သဗ္ဗပဌမံ-အလုံးစုံသော ပုဂ္ဂိုလ်တို့၏ ရှေးဦးစွာ၊ ကင်ဏော တော-ပြုခြင်းကြောင့်တည်း၊ သဗ္ဗပဌမံ-စွာ၊ တော်မဂ္ဂ-၌လမ်းကို၊ ပဋိပန္နတ္တာ-သွားသူ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ပုဗ္ဗင်္ဂမော - ရှေ့သွားတည်း၊ ဒွါရံဒဒေါ– လမ်းပေါက်ကို ပေးတတ်သူတည်း၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဟိ - မှန်၊ ဣမံလေသံ-၌အမြွက်ကို၊ (၌အနည်းငယ်သော အကြောင်းကို၊ ) လဒ္ဓါ - ရ၍၊ တဝ - ၏ (အမှုကို)၊ အနုသိက္ခမာနာ - အတုလိုက်၍ ကျင့်ကုန်သော၊ ဗဟူ - နံသော၊ ပုဂ္ဂလာ - တို့သည်၊ [ တောကျောင်းဘုန်းကြီး, ဝဋ္ဋိတိုင်းသား ရဟန်းများကို ရည်ရွယ်တော်မူသည်။ ] နာနပ္ပကာရကေ - အထူးထူးသော အပြားရှိကုန်သော၊ မဏ္ဍင်္ဂယာ- မျောက်မ၌၊ မေထုန ပဋိသေဝနာဒိကေ- မေထုန်မှီဝဲခြင်း အစရှိကုန်သော၊ အကုသလဓမ္မေ-အကုသိုလ်တရားတို့ကို၊ ကရိဿန္တိ-ပြုကုန်လတ္တံ၊ ဣတိအယံ - ကား၊ ဧတ္ထ - ၌ ဗဟူနံ ခေါ၊ပေ၊ အာဒိကတ္တာ ပုဗ္ဗင်္ဂမော ဟူသော စကားရပ်၌၊ အဓိပ္ပါယော - ဘုရားရှင်၏ အလိုတော်တည်း၊ အနေက ပရိယာယေနာတိ-ကား၊ [၌ပရိယာယ ပုဒ်နက်ကို အတ္တိ ခွေသ ပရိယာယော တုန်းကဖွင့်ခဲ့ပြီ၊] အနေကေဟိ ကာရဏေဟိ-၌ အနနုစ္ဆဝိယန္တိအာဒိနာ - သော၊ နယေန - ဖြင့်၊ ဝုတ္တေဟိ-ဟောတော်မူအပ်ကုန်သော၊ ဗဟူဟိ- နံသော၊ ဣမေဟိ ကာရဏေဟိ-၌ အကြောင်းတို့ဖြင့်၊ [ဝိဂရဟိတွာ၌စပ်၊ ဝုတ္တေဟိပိ၌ (ပိ)ပိုဟန်တူသည်။]

ဒုဗ္ဘရတာယ၊ပေ၊ ဘာသိတွာတိ-ကား၊ ဒုဗ္ဘရတာဒီနံ-ဒုဗ္ဘရတာ အစရှိသော အကျိုးတို့၏၊ ဝတ္ထုဘူတဿ-တည်ရာအကြောင်းဖြစ်၍ ဖြစ်သော၊ အသံ

ဒွါရံ၊ပေ၊ဒါယကော။ ။ပုဗ္ဗင်္ဂမောကို"ဒွါရံဒဒေါ"ဟု ဖွင့်သည်၊ တကယ်ရှေ့က သွားသူမဟုတ်,လမ်းပေါက်ကိုပေးသူ–ဟူလို၊ " ဒွါရကို ဥပါယ,ဒဒေါကိုဒါယကော" ဟု သမာသ်ပုဒ်ဖြင့် အဖြောင့်ဖွင့်သောကြောင့် " ဒွါရံဒဒေါ " ၌လည်း (အမတန္ဒဒေါ–ကဲ့သို့) သမာသ်ပုဒ် ဟုမှတ်။

ဒုဗ္ဘရတာဒီနံ ဝတ္ထုဘူတဿ။ ။ဒုက္ခေန-ခဲယဉ်းသဖြင့် + ဘရီယတေ-ဆောင်ရွက်အပ်၏ ၊ ဣတိ ဒုဗ္ဘရော-(သူ၏ စားသော်နေထိုင်ရေး တာဝန်ကို ဆောင်နေရသည်မှာ လွန်စွာ ကြီးလေးသောကြောင့် တာဝန်ကြီးလေးသောခန္ဓာကိုယ်နှင့် စိတ်ကို "ဒုဗ္ဘရ" ဟု ဆိုသည်၊ " ဒုဗ္ဘရဿ + ဘာဝေါ ဒုဗ္ဘရတာ " ဟူသည် အစားအသောက် နေရာထိုင်ခင်း စသည်၌ ဇီဇာကြောင်ခြင်း (ကျီးများခြင်း) တည်း၊ ထိုသို့ ဇီဇာကြောင်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းမှာ (မိမိကိုယ် မိမိစိတ်ကို မစောင့်စည်း မထိန်းသိမ်းနိုင်သော) အသံဝရ တည်း၊ ထို့ကြောင့်"ဒုဗ္ဘရတာဒီနံ ဝတ္ထုဘူတဿ အသံဝရဿ"ဟု ဖွင့်သည်။

ဖလူပစာ။ ။၌ပြခဲ့သောအရကောက်ကို ကြည့်လျှင် "ဒုဗ္ဘရတာ" အရ အသံဝရကို တိုက်ရိုက်မရသေး၊ အသံဝရသည် ဒုဗ္ဘရတာ၏ အကြောင်းရင်းသာ ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် အသံဝရ ရအောင် ဖလူပစာရ ကြံပါ၊ အကျိုး ( ဇီဇာကြောင်ခြင်း ) ၏

ဝရဿ-မစောင့်စည်းခြင်း၏၊အဝဏ္ဏံ-ချီးမွမ်းခြင်း၏ ဆန့်ကျင်ဘက်ဖြစ်သော၊ နိန္ဒံဂရဟံ-ကဲ့ရဲ့ကြောင်းစကားကို၊ဘာသိတွာ-မိန့်တော်မူပြီး၍၊ဣတိအတ္တော-နက်၊ ဟိ-ချဲ့၊ ယသ္မာ—ကြောင့်၊ အသံဝရေ-၌၊ ဋ္ဌိတဿ-သော၊ ပုဂ္ဂလဿ-၏၊ အတ္တာ-စိတ်သည်၊ ဝါ-ကိုယ်သည်၊ ဒုဗ္ဘရတဉ္စေဝ-ခဲယဉ်းသဖြင့် ဆောင်ရွက်အပ်သူ၏ အဖြစ်သို့ငှင်း၊ ဒုပ္ပေါသတဉ္စ—ခဲယဉ်းသဖြင့် မွေးမြူအပ်သူ၏ အဖြစ်သို့ငှင်း၊ အာပဇ္ဇတိ- ရောက်၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ အသံဝရော- မစောင့်စည်း

ဒုဗ္ဘရတာအမည်ကို အကြောင်းရင်း အသံဝရပေါ်၌ တင်စား၍ အသံဝရကို ဒုဗ္ဘရတာဟု ခေါ်ရသည် — ဟူလို၊ [ယံ အသံဝရံ ပဋိစ္စ (အကြင် အသံဝရကြောင့်) ဒုဗ္ဘရတာ ဒုပ္ပေါသတာဒိ ဟောတိ၊ သော အသံဝရော ဒုဗ္ဘရတာဒိသဒ္ဒေန ဝုတ္တော ကာရဏော ဖလူပစာရေနာတိ အာဟ—ဒုဗ္ဘရတာဒီနံ ဝတ္ထုဘူတဿ အသံဝရဿာတိ။]

**ဝတ္ထုဘူတဿ။** ။"ကာရဏဿ"ဟု ဖွင့်၏၊ "ဝသတိ ဧတ္ထ ဖလံ တဒါယတ္တဝုတ္တိတာယ" ဟူသော ဝစနတ္ထနှင့်အညီ ထိုအကြောင်းနှင့်စပ်ခြင်း ရှိသော အကျိုးတရား၏ တည်ရာဖြစ်သောကြောင့် အကြောင်းကို ဝတ္ထု ဟု ခေါ်သည်။ " ဒုပ္ပေါသသဿ + ဘာဝေါ ဒုပ္ပေါသတာ" ၌လည်း နည်းတူ။

**အဝဏ္ဏံနိန္ဒံ ဂရဟံ ။** ။ ဝဏ္ဏသဒ္ဒါသည် ပသံသာ ( ချီးမွမ်းခြင်း ) အနက်ကို ဟော၏၊ ထို၏ပြောင်းပြန်ဖြစ်သော အဝဏ္ဏသဒ္ဒါကား နိန္ဒာ (ကဲ့ရဲ့ခြင်း) အနက်ကို ဟောရသည်၊ ထို့ကြောင့် အဝဏ္ဏံကို နိန္ဒံဟု ဖွင့်၍, နိန္ဒံကို ဂရဟံဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ လောကဓံရှစ်ပါးတွင်"နိန္ဒာ-ပသံသာ"ဟု မကောင်း အကောင်းတွဲပုံကိုငှင်း, "ဂရဟာ-နိန္ဒနေ"ဟုဓာတ်ကျမ်းဆိုပုံကိုငှင်းထောက်၍ နိန္ဒာသည် ပသံသာ၏ပြောင်းပြန် (ဂရဟာ) အနက်ကိုဟောကြောင်းသိပါ၊ ရှေ့၌လည်း ဝိဂရဟတိကို "နိန္ဒတိ"ဟု ပင် ဖွင့်ခဲ့သည်။

**ယသ္မာဟိ ၊ပေ၊ ဝုစ္စတိ ။** ။ " ဒုဗ္ဘရတာဒီနံ ဝတ္ထုဘူတဿ အသံဝရဿ "ကို အကျယ်ချဲ့လို၍ တက်သောစကားတည်း၊ ထိုစကား၌ " အသံဝရ" ဟူသည် သံဝရ၏ ပြောင်းပြန် ဆန့်ကျင်ဘက်တည်း၊ ထို သံဝရကား သီလစောင့်ခြင်း , သတိထားခြင်း, အအေပူ အကောင်း မကောင်းကို သည်းခံခြင်း ( ခန္တီ ), ကြိုးစားခြင်း ( ဝီရိယ ), စဉ်းစားခြင်း (ဉာဏ်) ဟု ၅ မျိုးရှိ၏၊ ထို ၅ မျိုးမရှိခြင်း ကို "အသံဝရ- " ဟု ခေါ်၏၊ ဤ အသံဝရကြောင့်ပင် ယခုအခါ ဘုရားသာသနာတော်ကြီး ဆုတ်ယုတ်နေလေသည်။

**အတ္တာ ၊ပေ၊ အာပဇ္ဇတိ ။** ။ အတ္တာတိ စိတ္တံ သရီရဉ္စ၊ စိတ်ကိုငှင်း ခန္ဓာကိုယ် တခုလုံးကိုငှင်း "အတ္တာ" ဟု ခေါ်၏၊ စိတ္တမေဝဝါ — တနည်း, စိတ်ကိုသာ အတ္တဟု ခေါ်၏၊ ဝေဖြင့် သရီရကို ကန့်သည်၊ ဤအတ္တာပုဒ်သည် အာပဇ္ဇတိ၏ ကတ္တားတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ဒုက္ခေန+ဘရိတဗ္ဗော, ဒုက္ခေန+ပေါသိတဗ္ဗော"ဟု ဝစနတ္ထပြု၍ ဒုဗ္ဘရ-ဒုပ္ပေါသတို့အရ အတ္တကိုသာ ကောက်ရမည်၊ ( ပုဂ္ဂိုလ်ကို မကောက်ရ )၊ နောင်၌လည်း "ဋ္ဌိတဿ အတ္တာ သုဘရော ဟောတိ သုပေါသော "ဟု အတ္တာနှင့် သုဘရ သုပေါသ တို့ကို အရတူပြလိမ့်မည်၊ သို့သော် အတ္တ — သရီရနှင့် ပုဂ္ဂလတို့မှာ သဘောတူပင်ဖြစ်၍

ခြင်းကို၊ ဥဇ္ဈရတာတိစ-ဥဇ္ဈရတာဟူ၍၎င်း၊ ဥပ္ပေါသတာတိစ-တာဟူ၍၎င်း၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ပန-ကား၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အသံဝရေ-၌၊ ဌိတဿ-သော၊ (ပုဂ္ဂလဿ-၏၊) အတ္တာ-စိတ်သည်၊ ဝါ-ကိုယ်သည်၊ စတူသု-န်သော၊ ပစ္စယေသု-တို့၌၊ မဟိစ္ဆတံ (စ)- များသောပစ္စည်းတို့ကို အလိုရှိသူ၏အဖြစ်သို့၎င်း၊ ဝါ—

“ အသံဝရေ ဌိတဿ ပုဂ္ဂလဿ အတ္တာ ” ဟု ပုဂ္ဂလနှင့် အတ္တကို သမ္ဗန် သမ္ဗန္ဓီ တွဲ၍ ဆိုရာ၌ “အဘေဒဘေဒူပစာ ” ဟု ၎င်း, အတ္တအရ စိတ်ကိုကောက်ရာ၌ “ အပေါင်း သမ္ဗန်+အစိတ်သမ္ဗန္ဓီ”ဟု ၎င်း မှတ်ပါ။

ဘရနှင့်ပေါသ ။ ။ ကလေးတယောက် မွေးစားခြင်းကို “ပေါသ”ဟု ခေါ်၍, မွေးစားပြီးနောက် ထိုကလေး၏တာဝန်ကို ဆောင်နေရခြင်းကို “ ဘရ ”ဟု ခေါ်ရ သကဲ့သို့ , ရဟန်း သာမဏေများကို ကိုးကွယ်ခြင်း ရှင့်ဒကာ ရဟန်းဒကာလုပ်ခြင်းကို “ပေါသ”ဟု ခေါ်၍,သူ့တာဝန်ကို ဆောင်နေရခြင်းကို“ဘရ”ဟု ခွဲပါ၊ ထိုသို့ တာဝန် ဆောင်ဘို့ ကိုးကွယ်ဘို့ခက်သောစိတ် (ကိုယ်)ကို ဒုဗ္ဘရ-ဒုပ္ပေါသ ခေါ်သည်ဟု မှတ်။

ဒုဗ္ဘရတာ ဒုပ္ပေါသတာဖြစ်ပုံ ။ ။ မိမိကိုယ် မိမိစိတ်ကို တရားဖြင့် ထိန်းသိမ်း စောင့်စည်းမှု သည်းခံမှု ( သံဝရ ) မရှိသူသည် မိမိကိုယ်တိုင်လည်း မိမိကိုယ်ကို မွေးမြူ ဆောင်ရွက်ဘို့ရန် ခဲယဉ်း၏၊ ပစ္စည်း ၄ ပါး ဒကာ ဒကာမတို့ကလည်း ကိုးကွယ် ဆောင်ရွက်ဘို့ဝန်လေး၏၊ [အတ္တနာ ပစ္စယဒါယကေဟိစ ဒုက္ခေန ဘရိတဗ္ဗတံ ပေါသေ တဗ္ဗတံ အာပဇ္ဇတိ၊] အချဉ်ရလျှင် အချိုရှာတတ်၏၊ အိမ်တအိမ်မှရအပ်သော ဆွမ်းနှင့် ဟင်းကို အခြားတနေရာရောခဲ့လျှင် သွန်ပစ်တတ်၏၊ ဤနည်းအားဖြင့် သူ၏စိတ်တိုင်းကျ မရနိုင်သောကြောင့် သူ့ကိုယ်တိုင် မကျေမနပ်နှင့် အငတ်ခံရတတ်၏၊ ဤကား မိမိစိတ် မိမိကိုယ်ကို မိမိမွေးမြူဆောင်ရွက်ဘို့ ခဲယဉ်းပုံတည်း။

တချို့ကိုယ်တော်ကား ဒကာဒကာမတို့က ဆွမ်းကောင်း ဟင်းကောင်း လောင်းလှူ သော်လည်း မျက်နှာ ရှင်ရှင်ပျပျမရှိ မျက်မှောင်ကုပ်လျက် မကျေနပ်သော အမူအရာကို ပြတတ်၏၊ ထိုအလှူရှင်တို့၏ မျက်မှောက်မှာပင် (သဒ္ဓါပျက်ချင် ပျက်ပေစေ—ဟူသော စိတ်ထားဖြင့်) လူသာမဏေတို့အား ပေးလိုက်တတ်၏၊ ထိုကိုယ်တော်သည် ဒါယကာ ဒါယိကာမတို့ အကိုးကွယ်ခက် , တာဝန်ဆောင်ဘို့ ခက်သော ဒုပ္ပေါသ – ဒုဗ္ဘရ ကိုယ်တော်တည်း၊ တေ ဒိသွာ မနုဿာ ဒူရတောဝ ပရိဝဇ္ဇန္တိ၊ “ဒုဗ္ဘရော ဘိက္ခု၊ န သက္ကာ ပေါသိတုံ”တိ-ဒိုလိုကိုယ်တော်မျိုးကို မြင်လျှင် လူဘို့သည် “ဒုဗ္ဘရပုဂ္ဂိုလ်ဖြစ် တယ်၊ သူ့ကို မွေးလို့ ကိုးကွယ်လို့မတော်ဘူး”ဟု ဆိုကာ အဝေးမှ ရှောင်ကြသည်။

မဟိစ္ဆတံ။ ။ မဟန္တာန် – များစွာသောပစ္စည်းတို့ကို + ဣစ္ဆတီတိ မဟိစ္ဆော၊ (တနည်း)မဟာဘီ-ကြီးသော+ဣစ္ဆာ ယဿာတိ မဟိစ္ဆော (အတ္တာ)၊ မဟိစ္ဆဿ+ ဘာဝေါ မဟိစ္ဆတာ – များစွာသောပစ္စည်းတို့ကို လိုလားသော, ( ကြီးသော အလို ရှိသော ) အတ္တ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရတည်း၊ ထို မဟိစ္ဆတာသည် တရားကိုယ်အားဖြင့် “အတိလောဘ”ရ၏၊ ဤနေရာ၌ကား ထို လောဘဖြစ်ရခြင်း၏ အကြောင်းဖြစ်သော

ကြီးသောအလိုရှိသူ၏ အဖြစ်သို့ဂုဏ်း၊ သိနေရုပ္ပမာဏောပိ - မြင့်မိုရ်တောင်မျှ ပမာဏရှိသည်လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ပစ္စယေ - တို့ကို၊ လဒ္ဓါ-ရ၍၊ ဝါ-ရပါ လျက်၊ အသန္တုဋ္ဌိတံစ-တင်းတိမ် ရောင့်ရဲခြင်းမရှိသူ၏အဖြစ်သို့ဂုဏ်း၊ အာပဇ္ဇ တိ-၏၊ တသ္မာ - ထို့ကြောင့်၊ အသံဝရော - ကို၊ မဟိစ္ဆတာတိစ- ဟူ၍ဂုဏ်း၊ အသန္တုဋ္ဌိတာတိစ-ဂုဏ်း၊ ဝုစ္စတိ၊ စ - သည်သာမကသေး၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အသံဝရေ - ၌၊ ဋ္ဌိတဿ-သော၊ (ပုဂ္ဂလဿ-၏၊) အတ္တာ-သည်၊ ဝါ-သည်၊ ဂဏသင်္ဂဏိကာယစေဝ – အပေါင်း အဘော်တို့နှင့် ပေါင်းသင်းနေထိုင်ခြင်း ငှါဂုဏ်း၊ ကိလေသသင်္ဂဏိကာယစ-ကိလေသာတို့နှင့် ပေါင်းသင်း နေထိုင်ခြင်း ငှါဂုဏ်း၊ သံဝတ္တတိ - ၏၊ ကောသဇ္ဇာနုဂတောစ – ပျင်းရိခြင်းသည် အစဉ် လိုက်အပ်သည်လည်း၊ ဟောတိ-၏၊ [ကောသဇ္ဇေန+အနုဂတော ကောသဇ္ဇာ နုဂတော၊ ] အဋ္ဌကုသိတဝတ္ထုပါရိပူရိယာ - ရှစ်ပါးသော ကုသိတဝတ္ထု၏ ပြည့်ခြင်းငှါ၊ သံဝတ္တတိ- ၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ အသံဝရော-ကို၊ သင်္ဂဏိကာ ရာမတာတိ-သင်္ဂဏိကာဟူ၍ဂုဏ်း၊ ကောသဇ္ဇန္တိ-ဂုဏ်း၊ ဝုစ္စတိ- ၏။

အသံဝရကို ဖလူပစာရအားဖြင့်ယူပါ၊ အသံဝရဟူသည်လည်း လောဘကို မထိန်းသိမ်း နိုင်အောင် သီလပျက်မှု, ခန္တီကင်းမှု, ဉာဏ်မရှိမှု, ပျင်းရိမှု, သတိမထားမှုများတည်း။

**အသန္တုဋ္ဌိတံ။** ။တောသနံ တုဋ္ဌိ၊သကေန+တုဋ္ဌိ သန္တုဋ္ဌိ-မိမိမှာရှိသော ဥစ္စာဖြင့် ကျေနပ်ခြင်း , ရသမျှဖြင့် မျှတရောင့်ရဲခြင်း၊ နတ္ထိ + သန္တုဋ္ဌိ ယဿာတိ အသန္တုဋ္ဌိ (အတ္တာ)၊ အသန္တုဋ္ဌိနော+ဘာဝေါ အသန္တုဋ္ဌိတာ၊ တရားကိုယ်မှာ – မတင်းတိမ် နိုင်သော ရှေ့ဆိုအပ်သော လောဘပင်တည်း၊ထိုလောဘကြောင့် မဟိစ္ဆတာဟူသော အတိလောဘဖြစ်ရသည်၊ ထို လောဘ၏ အကြောင်းရင်းဖြစ်သော အသံဝရကိုလည်း ဖလူပစာရအားဖြင့် အသန္တုဋ္ဌိတာဟု ခေါ်၏။

**သင်္ဂဏိကာ။** ။ဤပုဒ်၏အနက်ကို “ ဂဏသင်္ဂဏိကာ ပပဉ္စေန ” ဟူသောပုဒ်၌ ဖွင့်ခဲ့ပြီ၊ ဂဏေဟိ–အပေါင်းအဘော်တို့နှင့် +သင်္ဂဏိကာ–ပေါင်းခြင်းသည်၊ ဂဏသင်္ ဂဏိကာ–မည်၏၊ အပေါင်းအဘော်တို့နှင့် ရောရောနှောနှော ပျော်ပျော်ပါးပါး နေခြင်း တည်း၊ ကိလေသေဟိ+ သင်္ဂဏိကာ ကိလေသသင်္ဂဏိကာ– တယောက်ထည်း နေစေ ကာမူ ကာမ ဗျာပါဒ ဝိဟိံသာဝိတက်တို့ကိုကြံစည်နေခြင်း၊ဂဏသင်္ဂဏိကာဖြင့် ကာယ ဝိဝေက မရှိခြင်းကိုဂုဏ်း, ကိလေသသင်္ဂဏိကာဖြင့် စိတ္တဝိဝေကမရှိခြင်းကိုဂုဏ်း ပြသည်၊ ဤ၌လည်း အသံဝရကို ဖလူပစာရအားဖြင့် ယူပါ၊ ကောသဇ္ဇ၌လည်း နည်းတူ။

**အဋ္ဌကုသိတဝတ္ထု။** ။ယဿ ဓမ္မဿ – အကြင် ဝီရိယကင်း၍ ညှိုးဖျင်းပေါ့လျော့ သောပမာဒတရား၏၊ ဝသေန ပုဂ္ဂလော ကုသီတောတိ ဝုစ္စတိ၊ သော ကုသီတဘာဝေါ ဓမ္မ ကုသီတသဒ္ဒေန ဝုတ္တော၊ ( ကုသီတ၌ ဘာဝပ္ပဓာန ကြံပါ– ဟူလို၊ ) ဝိနာပိ ဟိ ဘာဝဇောတနသဒ္ဒံ ( ဘာဝပစ္စည်းသဒ္ဒါမပါဘဲ ) ဘာဝတ္ထော ဝိညာယတိ၊ ယထာ–

သုဘရတာယ ၊ ပေ၊ ဝီရိယာရမ္ဘဿ ဝဏ္ဏံ ဘာသိတွာတိ - ကား၊ သုဘရတာဒီနံ – သုဘရတာ အစရှိသော အကျိုးတို့၏၊ ဝတ္ထုဘူတဿ – တည်ရာ အကြောင်းဖြစ်၍ ဖြစ်သော၊ သံဝရဿ-၏၊ ဝဏ္ဏံ-ချီးမွမ်းကြောင်း စကားကို၊ ဘာသိတွာ-မူပြီး၍၊ ဣတိ အတ္ထော- နက်၊ [ သုဘရ သုပေါသဖြစ်ပုံကို ဒုဗ္ဘရ ဒုပ္ပေါသ၏ ပြောင်းပြန် ပြန်၍ သိပါ။] ဟိ–ချဲ့၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အသံဝရံ-ကို၊ ပဟာယ- ၍၊ သံဝရေ - သံဝရ၌၊ ဝါ - စောင့်စည်းကြောင်း သီလစသည်၌၊ ဌိတဿ(ပုဂ္ဂလဿ)အတ္တာ, သုဘရော - လွယ်ကူစွာ ဆောင်ရွက်အပ်သည်၊ သုပေါသော-လွယ်ကူစွာ မွေးမြူအပ်သည်၊ဟောတိ-၏၊[အတ္တာနှင့် သုဘရော သုပေါသောတို့ အရတူပုံကို သတိပြု၍ သုဘရ စသည်တို့ အရကို " ပုဂ္ဂိုလ် မကောက်ဘဲ အတ္တ ဟု ခေါ်အပ်သော စိတ္တနှင့် သရီရကို ကောက်ရသည်၊ ] စ·ဆက်၊စတူသု-န်သော၊ ပစ္စယေသု-တို့၌၊ အပ္ပိစ္ဆတံ-အလိုမရှိသူ၏အဖြစ်သို့၊ နိတ္တဏှာဘာဝံ တဏှာမရှိသူ၏ အဖြစ်သို့၊ အာပဇ္ဇတိ- ၏၊ စ - သည်သာ မကသေး၊ ဧကမေကဿ - တပါးတပါးသော၊ ပစ္စယေ - ၌၊ ယထာလာဘ ၊ ပေ ၊ သာရုပ္ပဝသေန–ယထာလာဘ သန္တောသ, ယထာဗလသန္တောသ, ယထာသာရုပ္ပသန္တောသတို့၏ အပြားအားဖြင့်၊ တိပ္ပဘေဒါယ - ၃ ပါး အပြားရှိသော၊ သန္တုဋ္ဌိယာ-တင်းတိမ်ရောင့်ရဲခြင်း၌။[တချို့စာ၌"သန္တုဋ္ဌိတာယ" ဟု ရှိ၏"တင်းတိမ်ရောင့်ရဲ ရှိသူ၏ အဖြစ်အကျိုး၌"ဟု ပေး။] သံဝတ္တတိ- ၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ သံဝရော - ကို၊ သုဘရတာစေဝါတိ - တာဟူ၍ဒင်း၊ ဝါ-

ပဋ္ဌသ သုတ္တံ (ဖြူသည်၏အဖြစ်) ဣတိ-၌ပုံစံမျိုးတည်း၊ တသ္မာ ကုသီတဘာဝဝဇ္ဇနီတိအတ္ထော။ [ကုသီတဝတ္ထု ၈ ပါးကို ဋီကာမှာကြည့်၊ သင်္ဂြိုဟ်ဘာသာဋီကာ၌လည်း ဝီရိယစေတသိက်ခဏ်း၌ ပြထားပြီ။]

အပ္ပိစ္ဆတံ။ ။"အပ္ပ+ ဣစ္ဆာ ယဿာတိ အပ္ပိစ္ဆော " ဟု ပြုလျှင် " အနည်းငယ် အလိုရှိသူ " ဟု အနက်ထွက်သောကြောင့် " နဲနဲပါးပါးတော့ လိုချင်သေး၏ " ဟု အဓိပ္ပါယ်ရသဖြင့် "ဗျဉ္ဇနံ သာဝသေသံဝိယ– သဒ္ဒါနေပုံက ကြွင်းကျန်သကဲ့သို့ ဖြစ်နေ၏"ဟု ဋီကာဆိုပြီးလျှင် ထိုသို့မကျန်ရအောင် အပ္ပ၏ အဘာဝအနက်ကိုဖွင့်လေသည်၊ ထိုအလို "နတ္ထိ + ဣစ္ဆာ ယဿာတိ အပ္ပိစ္ဆော– အလိုမရှိသောအတ္တ၊ အပ္ပိစ္ဆဿ+ ဘာဝေါ အပ္ပိစ္ဆတာ"ဟု ပြု၊ "နိတ္တဏှာဘာဝံ"ကား အပ္ပိစ္ဆတံ၏အဖွင့်။

သန္တုဋ္ဌိယာ။ ။သန္တောသနံ–တင်းတိမ်ရောင့်ရဲခြင်း၊ သန္တုဋ္ဌိ–ခြင်း၊ ထို သန္တုဋ္ဌိသည် ယထာလာဘ–ရသမျှဖြင့် တင်းတိမ်ခြင်း, ယထာဗလ–မိမိ၏ ခွန်အားဗလအား လျော်သောပစ္စည်းဖြင့် တင်းတိမ်ခြင်း,ယထာသာရုပ္ပ–မိမိနှင့်လျောက်ပတ်သောပစ္စည်းဖြင့် တင်းတိမ်ခြင်း, ဟု ၃ မျိုး ရှိ၏၊ ထို ၃ မျိုးကို ပစ္စည်း ၄ ပါးဖြင့် မြှောက်လျှင် ၁၂ ပါး ပြား၏၊ အကျယ်ကို ဋီကာမှာ ရှု။

လွယ်ကူစွာ ဆောင်ရွက်အပ်သော စိတ်,ကိုယ်၏ ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာဟူ၍၎င်း၊ သုပေါ်သတာစာတိ- ၎င်း၊ ဝါ- လွယ်ကူစွာ မွေးမြူအပ်သော စိတ်,ကိုယ်၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ ဟူ၍၎င်း၊ အပ္ပိစ္ဆောစာတိ - ၎င်း၊ ဝါ – အလိုမရှိသူ၏ ဖြစ်ကြောင်း ဟူ၍၎င်း၊ သန္တုဋ္ဌောစာတိ - ၎င်း၊ ဝါ – တင်းတိမ်ရောင့်ရဲခြင်း ရှိသူ၏ ဖြစ်ကြောင်းဟူ၍၎င်း၊ ဝုတ္တတိ - ၏၊ ပန - ကား၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ အသံဝရံ ပဟာယ သံဝရေ ဌိတဿ ( ပုဂ္ဂလဿ ) အတ္တာ , ကိလေသသလ္လေခတာယစေဝ - ကိလေသာတို့ကို နည်းပါးအောင် ခြစ်ပစ်တတ်သည်၏ အဖြစ်ဟူသော အကျိုးငှါ၎င်း၊ နိဒ္ဓုနတာယစ-ကိလေသာတို့ကို အကြွင်းမဲ့ ခါချတတ်သည်၏အဖြစ်ဟူသောအကျိုးငှါ၎င်း၊သံဝတ္တတိ-၏၊တသ္မာ-ကြောင့်၊သံဝရော- ကို၊ သံလေခေါ်စာတိ - ၎င်း၊ ဝါ- ကိလေသာတို့ကို နည်းပါးအောင်ခြစ်ပစ်တတ်သူ၏ ဖြစ်ကြောင်းဟူ၍၎င်း၊ ဓုတောစာတိ-၎င်း၊ ဝါ - ကိလေသာတို့ကို အကြွင်းမဲ့ ခါချတတ်သူ၏ဖြစ်ကြောင်း ဟူ၍၎င်း၊ ဝုတ္တတိ- ၏။

စ-သက်၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ခပ၊ကာယဝါစာနံ-ကိုယ်နှုတ်တို့၏၊ အပ္ပါသာဒိကံ - ကြည်ညိုခြင်းကို မဖြစ်စေတတ်သော၊ အပ္ပသာဒနီယံ-မကြည်ညိုသင့်မကြည်ညိုထိုက်သော၊ ဝါ - ကြည်ညိုဘွယ် မကောင်းသော၊ အသန္တံ - မငြိမ်သက်သော၊ အသာရုပ္ပံ- ရဟန်းတို့အား မလျော်ပတ်သော၊ ကာယဝစီဒုစ္စရိတံ–ကာယဒုစရိုက် ဝစီဒုစရိုက်သို့၎င်း၊ [အနုပဂမ္မ- ၌စပ်၊] စိတ္တဿ- စိတ်၏၊

**တသ္မာ၊ပေ၊ဝုတ္တတိ**။ ။ပါဠိတော်၌“သုဘရတာယ, သုပေါ်သတာယ, အပ္ပိစ္ဆဿ သန္တုဋ္ဌဿ”ဟု ရှိသောကြောင့် ထိုအတိုင်းဆိုထားသည်၊ ထို သုဘရတာ စသည်တို့၏ အရကို သံဝရတရား ကော်ရာ၌ အသံဝရတုန်းကကဲ့သို့ ဖလူပစာရဟုကြံထားသည်။

**ကိလေသသလ္လေခတာယ**။ ။သလ္လိခတိ–ခေါင်းပါးအောင် (နည်းပါးအောင်) ခြစ်ပစ်တတ်၏၊ ဣတိ သလ္လေခေါ၊ ကိလေသေ + သလ္လေခေါ ကိလေသသလ္လေခေါ၊ တဿ+ ဘာဝေါ ကိလေသသလ္လေခတာ။ [“သလ္လေခ” အရ ပုဂ္ဂိုလ်ရသောကြောင့် သလ္လေခနတာ-ဟု (န ) မပါသင့်။]

**နိဒ္ဓုနတာယ**။ ။နိဿေသံ – အကြွင်းမရှိအောင်+ ဓုနာတိ – လှုပ်ခါချတတ်၏၊ ဣတိ နိဒ္ဓုနော ( အတ္တာ )၊ သလ္လေခတုန်းက ကိလေသာတို့ကို နည်းပါးအောင်သာ ခြစ်ပစ်၏၊ ဤနိဒ္ဓုန၌ကား အကြွင်းအကျန်မရှိအောင် လှုပ်ခါချလိုက်သည်–ဟူလို။

**ကာယဝါစာနံ အပ္ပါသာဒိကံ**။ ။အပ္ပါသာဒိကံကိုပင်“အပ္ပသာဒနီယံ အသန္တံ အသာရုပ္ပံ”ဟု ဖွင့်၍ “ ကာယဝစီဒုစ္စရိတံ” ဟု အဘိဓေယျကိုဖွင့်သည်။ [ ပသာဒံ+ ဇနေတီတိ ပါသာဒိကံ၊ ပသာဒီယတေတိ ပသာဒနီယံ၊ ( သုစရိတံ )၊ “ န+ပါသာဒိကံ ” စသည်ပြု၍ ဒုစရိုက်ကိုကောက်ပါ၊ ပါသာဒိကဿ + ဝဏ္ဏံ၌ကား အတ္တကို၎င်း, ထို အတ္တ၏အကြောင်းဖြစ်သော ဖလူပစာရတ္တ သံဝရကို၎င်း ကောက်ပါ။]

အပ္ပါသာဒိကံ - သော၊ပေ၊ အသာရုပ္ပံ - သော၊ အကုသလ၀ိတက္ကတ္တယဥ္စ- အကုသလ၀ိတက်၃ပါး အပေါင်းသို့ငှင်း၊ အနုပဂမ္မ - မကပ်ရောက်မူ၍၊ တဗ္ဗိပရီတဿ - ထိုဒုစရိုက်, ၀ိတက်တို့၏ ပြောင်းပြန်ဖြစ်သော၊ ပါသာဒိကဿ- သော၊ ပသာဒနီယဿ-သော၊ သန္တဿ-သော၊ သာရုပ္ပဿ-သော၊ ကာယ၀စီသုစရိတဿစေ၀ - ၏ငှင်း၊ ကုသလ၀ိတက္ကတ္တယဿစ - ၏ငှင်း၊ ပါရိပူရိယာ-ပြည့်စုံခြင်းငှါ၊ သံ၀တ္တတိ- ၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ သံ၀ရော- ကို၊ ပါသာဒိကောတိ - ဟူ၍၊ ၀ါ - ကြည်ညိုခြင်းကိုဖြစ်စေတတ်သော အတ္တ၏ဖြစ်ကြောင်း ဟူ၍၊ ၀ုတ္တတိ - ၏၊ ပန - ကား၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ပေ၊ သဗ္ဗကိလေသာပစယဘူတာယ-အလုံးစုံသော ကိလေသာတို့ကို ဖျက်ဆီးတတ်သည်ဖြစ်၍ဖြစ်သော၊ ၀ိ၀ဋ္ဋာယ - ၀ဋ်မှကင်းသော နိဗ္ဗာန် အကျိုးငှါငှင်း၊ အဋ္ဌ၀ီရိယာရမ္ဘ၀တ္ထု ပါရိပူရိယာ-ရှစ်ပါးသော ၀ီရိယာရမ္ဘ၀တ္ထု၏ ပြည့်စုံခြင်းငှါငှင်း၊ သံ၀တ္တတိ- ၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊သံ၀ရော-ကို၊ အပစယောစေ၀ါတိ-ငှင်း၊ ၀ါ-ကိလေသာတို့ကို ဖျက်ဆီးတတ်သော အတ္တ၏ ဖြစ်ကြောင်း ဟူ၍ငှင်း၊ ၀ီရိယာရမ္ဘောစာတိ-ငှင်း၊ ၀ါ-၀ီရိယကို အားထုတ်တတ်သော အတ္တ၏ဖြစ်ကြောင်း ဟူ၍ငှင်း၊ ၀ုတ္တတိ- ၏၊ ဣတိ - ဒုဋ္ဌာရတာစသည်တို့၏ အဖွင့်အပြီးတည်း။

**စိတ္တဿ ။** ။ ကိုယ်နှင့် နှုတ်၏ အပါသာဒိကကို ပြပြီး၍ စိတ်၏ အပါသာဒိကကို ပြလိုသောကြောင့် "စိတ္တဿ" စသည်မိန့်၊ "အကုသလ၀ိတက္ကတ္တယံ"ကား စိတ္တ အပါသာဒိက၏ အဘိဓေယျတည်း၊ ကာမ၀ိတက် , ဗျာပါဒ၀ိတက်, ၀ိဟိံသာ၀ိတက်ကို အကုသလ ၀ိတက္ကတ္တယဟု ဆိုသည်၊သုတ္တပက္ခ၌ ကုသလ၀ိတက် ၃ပါးဟူသည် နေက္ခမ္မ, အဗျာပါဒ, အ၀ိဟိံသာ၀ိတက်တို့တည်း။

**သဗ္ဗ၊ပေ၊၀ိ၀ဋ္ဋာယ။** ။ ရာဂါဒိသဗ္ဗကိလေသာနံ- တို့ကို၊ အပစယဟေတုဘူတာယ (ဖျက်ဆီးခြင်း၏အကြောင်း ဖြစ်၍ဖြစ်သော) နိဗ္ဗာနဓာတုယာ။ [ နိဗ္ဗာန်တရားသည် မဖျက်ဆီးတတ် , နိဗ္ဗာန်ကို အာရုံပြု၍ အရိယာပုဂ္ဂိုလ်က ဖျက်ဆီးတတ်သောကြောင့် "အပစယဟေတု—ဖျက်ဆီးခြင်း၏အကြောင်း" ဟု ဋီကာဖွင့်သည်။ ]

**အဋ္ဌ၊ပေ၊ပါရိပူရိယာ။** ။ရှေးရှေး၀ီရိယသည် နောက်နောက်၀ီရိယ၏ အကြောင်း ဖြစ်သောကြောင့် ၀ီရိယာရမ္ဘ၀တ္ထုမည်၏၊ ကိစ္စကြီးလျှင် သင့်တော်အောင် ဆင်ခြင်တတ်နှလုံးသွင်းတတ်သောဉာဏ်လည်း ၀ီရိယတိုးပွားခြင်း၏အကြောင်း(၀ီရိယာရမ္ဘ၀တ္ထု) ပင်တည်း၊ ထို၀ီရိယာရမ္ဘ၀တ္ထုလည်း ကုသီတ၀တ္ထုရှစ်ပါးမှ ပြောင်းပြန်ဖြစ်၍ ရှစ်ပါး ပင်ရှိသည်။[အနုရူပပစ္စဝေက္ခဏာသဟိတာနိ ဟိ အဋ္ဌ ကုသီတဝတ္ထုဝိပရီတာနိ ဟိ အဋ္ဌ၊ဿဟနာနိ—သင့်လျော်အောင် ဆင်ခြင်တတ်သော ဉာဏ်နှင့် တကွ ဖြစ်ကုန်သော ရှေးရှေးသော အားထုတ်မှုတို့ကို၊ တမ္ဗုလကာနိ၀ါပစ္စဝေက္ခဏာနိ—ထို အားထုတ်မှု၏ အရင်းခံဖြစ်ကုန်သော သင့်လျော် အောင် ဆင်ခြင်မှုဉာဏ်တို့ကို၊ ၀ီရိယာရမ္ဘ၀တ္ထူနီတိ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ။ ]

ဘိက္ခုနံ၊ပေ၊လောမိကန္တိ-ကား၊ တတ္ထ-ထိုစည်းဝေးရာအရပ်၌၊ သန္နိပတိ တာနံ-အတူတကွ ကြွရောက်လာကြကုန်သော၊ ဝါ- စည်းဝေးရောက်လာကြ ကုန်သော၊ ဘိက္ခုနံ - တို့အား၊ [ ဓမ္မဒေသနံ ကတွာ – ၌စပ်၊ ] ဝါ - တို့ဘို၊ ဇုဒါနိ- ၌၊ ယံ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ ပညပေဿတိ- ပညတ်တော်မူလတ့်၊ တဿ- ထိုပညတ်တော် မူအပ်လတ့်သော သိက္ခာပုဒ်အား၊ အနုစ္ဆဝိကဉ္စေဝ - အရိပ် အရောင်သို့ အစဉ်လိုက်သည်လည်း ဖြစ်သော၊ ဝါ- လျောက်ပတ်သည်လည်း ဖြစ်သော၊ အနုလောမိကဥ္စ - လျော်သည်လည်း ဖြစ်သော၊ [ ဓမ္မဒေသနံ ကတွာ၌စပ်၊] ဝါ - နည်း၊ သုဘရတာဒိဟိ - သုဘရတာ အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ ယော အယံ သံဝရော - အကြင် သံဝရတရားကို၊ ဝုတ္တော - မူအပ်ပြီ၊ တဿ- ထို ဟောတော်မူအပ်ပြီးသော သံဝရတရားအား၊ အနုစ္ဆဝိကဉ္စေဝ - သော၊ အနုလောမိကဉ္စ - သော၊ သံဝရပ္ပဟာနပဋိသံယုတ္တံ- သံဝရ ၅ ပါး, ပဟာန ၅ ပါးတို့နှင့်စပ်ယှဉ်သော၊ အသုတ္တန္တနိဗဒ္ဓံ-ပါဠိတော်တို့၌ မစပ်ဖွဲ့အပ်သော၊ ( ပါဠိတော်တို့၌ မပါသော၊ ) ပါဠိဝိနိမုတ္တံ - ပါဠိတော်တို့မှ လွတ်သော၊ (တနည်း)အသုတ္တန္တနိဗဒ္ဓံ-သုတ္တန်အဘိဓမ္မာပါဠိတော်တို့၌ မစပ်ဖွဲ့အပ်သော၊

**ယံ၊ပေ၊တဿ အနုစ္ဆဝိကံ။** ။တဒနုစ္ဆဝိကံ၌ “တ” သဒ္ဒါသည် ဝုစ္စမာနာပေက္ခ-ဆိုအပ်လတ့်ကို ငဲ့သည်လည်းရှိ၏၊ ဝုတ္တာပေက္ခ – ဆိုအပ်ပြီးအတိတ်ကို ငဲ့သည်လည်း ရှိ၏၊ ထိုတွင် “ ယံ ဇုဒါနိ သိက္ခာပဒံ ပညပေဿတိ ” ဖြင့် ဆိုအပ်လတ့် ငဲ့ပုံကိုပြ၏၊ “ထိုပညတ်တော်မူအပ်လတ့်သော သိက္ခာပုဒ်အား + လျော်သော”ဟု ပေး။

**ယောဝါ၊ပေ၊တဿ။** ။ဤနည်းဖြင့်“တ သဒ္ဒါသည် ဟောတော်မူအပ်ပြီးသော သံဝရတရားများကိုငဲ့သော ဝုတ္တာပေက္ခ”ဟု ပြ၏၊ပက္ကန္တဝိသယစသော တ သဒ္ဒါ ၃ မျိုး တွင်“ပက္ကန္တဝိသယ–တ”ဟု ပြသည်၊ [အတိတ်ဒြပ်ကို ဖွဲ့ရသော (တ) သည် ပက္ကန္တ ဝိသယမည်၏။] “တဒနုစ္ဆဝိကံ – ထို ဟောတော်မူအပ်ပြီးသော သံဝရတရားအား+ လျော်သော”ဟု ပေးပါ၊ တဒနုလောမိကံ၌လည်း နည်းတူ။ [ တသဒ္ဒေါ ဝက္ခမာနာ ပေက္ခောစ အတီတာပေက္ခောစ ဟောတိ၊ (ဝုစ္စမာနာပေက္ခ, ဝုတ္တာပေက္ခနှင့် သဘော တူ၊) ဇုတိ အာဟ – ယံ ဇုဒါနိ သိက္ခာပဒံ ပညပေဿတီတိ အာဒိ၊ သဗ္ဗနာမာနိ ဟိ ဝက္ခမာနဝစနာနိပိ ဟောန္တိ ပက္ကန္တဝစနာနိပိ။ ]

**သံဝရပ္ပဟာန ပဋိသံယုတ္တံ။** ။ပဉ္စသံဝရေဟိစေဝ ပဉ္စပဟာနေဟိစ ပဋိသံယုတ္တံ၊ ပဉ္စဝိဓော ဟိ သံဝရော- သီလ, သတိ, ဉာဏ, ခန္တိ, ဝီရိယသံဝရောတိ၊ [ပါတိမောက္ခ သံဝရသီလ ဣန္ဒြိယသံဝရသတိ , တဏှာ ဒိဋ္ဌိ ဒုစ္စရိတ အဝိဇ္ဇာတို့ကို ဖြတ်တတ်သော မဂ်ဉာဏ်, အအေပူ စသည်ကို သည်းခံနိုင်သော ခန္တိ, ကာမဝိတက် စသည်ကို ပယ်လှန် နိုင်သောဝီရိယတို့တည်း။] ပဟာနမ္ပိ ပဉ္စဝိဓံ [တဒင်္ဂပဟာန်-ဝိပဿနာဉာဏ်၊ ဝိက္ခမ္ဘန ပဟာန်–ဥပစာရသမာဓိ (အပ္ပနာသမာဓိ ချာန်)၊ သမုစ္ဆေဒပဟာန်–မဂ် ၄ ပါး၊ ပဋိ ပဿဒ္ဓိပဟာန်-ဖိုလ် ၄ ပါး၊ နိဿရဏပဟာန်–နိဗ္ဗာန်။]

ပါဠိဝိနိမုတ္တံ–ဝိနည်းပါဠိတော်မှလည်း လွတ်သော၊ ဩက္ကန္တိကဓမ္မဒေသနံ–ဉာဏ်ဖြင့် သက်ရောက်အပ်သော တရားဒေသနာတော်ကို၊ ကတ္ဝာ-မူ၍၊ ဣတိ အတ္ထော - နက်၊ ကိရ-ချဲ့၊ ဘဂဝါ - သည်၊ ဤဒိသေသု - နှ်သော၊ ဌာနေသု-သိက္ခာပုဒ်ပညတ်ရမည့်အရာတို့၌၊ ပဉ္စဝဏ္ဏကုသုမမာလံ-ငါးပါးသောအဆင်းရှိသော ပန်းကုံးကို၊ [ တရားအမျိုးမျိုးစုံသည် - ဟူလို၊ ] ကရောန္တော ဝိယ-ပြုသူကဲ့သို့ငှင်း၊ ရတနဒါမံ - ရတနာပန်းဆိုင်းကို၊ [ အဘိုးတန်တရားရတနာတော်ချည်းဖြစ်သည် - ဟူလို၊ ] သဇ္ဇေန္တော ဝိယစ - စီရင်သူကဲ့သို့ငှင်း၊ ယေ-အကြင်ရဟန်းတို့သည်၊ ပဋိက္ခိပနာဓိပ္ပါယာ–ပယ်မြစ်ခြင်း၌ ဖြစ်သော အလိုရှိကုန်၏၊ ဝါ– ပယ်မြစ်လိုကုန်၏၊ [ ပဋိက္ခိပနာဓိပ္ပါယာ ဘဒ္ဒါလိတ္ထေရသဒိသာ-ဝိကာလဘောဇနသိက္ခာပုဒ်ပညတ်ချိန်၌ ပယ်ရှားသော ဘဒ္ဒါလိထေရ်၊ ] အသံဝရာဘိရတာ-အသံဝရ၌လွန်စွာမွေ့လျော်ကြကုန်၏၊ တေ-ထို ရဟန်းတို့ကို၊ သမ္မုရာယိကေန-တမလွန်ဘဝ၌ ဖြစ်သော၊ ဝဋ္ဋဘယေန – ဝဋ်ဆင်းရဲဘေးဖြင့်၊ တဇ္ဇေန္တော–ခြိမ်းချောက်တော်မူလျက်၊ အနေကပ္ပကာရံ-တပါးမက များသော အပြားရှိသော၊ အာဒီနဝံ-အပြစ်ကို၊ ဒဿေန္တော–ပြတော်မူလျက်ငှင်း၊ ယေ-အကြင် ရဟန်းတို့သည်၊ သိက္ခာကာမာ–သိက္ခာကို လိုလားကြကုန်၏၊ သံဝရေ - ၌၊ ဌိတာ - တည်ကြကုန်၏၊ တေ – တို့ကို၊ အပ္ပေကစ္စေ-

အသုတ္တန္တ နိဗဒ္ဓံ။ ။ သုတ္တေသု (ပါဠိတော်တို့၌) အနိဗဒ္ဓံ–မစပ်မဖွဲ့အပ်သော၊ ပါဠိအနာရုဠှံ-ပါဠိတော်၌ မတက်ရောက်သော (မပါသော)၊ ဣတိ အတ္ထော၊ ပကိဏ္ဏကဓမ္မဒေသနာ ဟိ သင်္ဂဟံ န အာရောဟတိ = သီးသန့်မဟုတ်ဘဲ ရောရောနှောနှော ဟောအပ်သောဒေသနာသည် သင်္ဂါယနာတင်ရာတွင် ( ပါဠိတော်မှာ ) မပါဝင်၊ ဝုတ္တမေဝ အတ္ထံ ပကာသေန္တော အာဟ-ပါဠိဝိနိမုတ္တံတိ၊ (တနည်း) "အသုတ္တန္တနိဗန္ဓံ"ဟူသော စကားကို သုတ္တန်အဘိဓမ္မာပါဠိတော်သို့ မတက်ရောက်သော ဒေသနာကို ရည်ရွယ်၍ ဆို၏၊ ပါဠိဝိနိမုတ္တံကိုကား ဝိနည်းပါဠိတော်သို့ မတက်ရေ်သည်ကိုရည်ရွယ်၍ဆိုသည်, ဟု ဋီကာ၌ တနည်းဖွင့်သည်။

ဩက္ကန္တိက ဓမ္မဒေသနာ။ ။ဉာဏေန အနုပဝိသိတ္ဝာ–ဉာဏ်ဖြင့် အစဉ်သက်ဝင်၍၊ အန္တရာ– သိက္ခာပုဒ်မပညတ်မီအကြား၌၊ ကထိယမာနာ ဓမ္မဒေသနာ။ [ဩက္ကမီယတေ-ဉာဏ်ဖြင့် သက်ရောက်အပ်၏၊ ဣတိ ဩက္ကန္တာ၊ ဩက္ကန္တာယေဝ ဩက္ကန္တိကာ။]

သမ္ပရာယိကံ။ ။ သမ္ပရေတဗ္ဗတော ပစ္စဂန္တဗ္ဗတော သမ္ပရာယော၊ ["သံ+ ပရ+ ဧတဗ္ဗ"၌ သံအနက်မရှိ၊ ပရကို ပစ္စ , ဧတဗ္ဗကို ဂန္တဗ္ဗ ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုသို့ ဖွင့်သဖြင့် သံ+ ပရသဒ္ဒူပပဒ ဣဓာတ်, ဏပစ္စည်းဖြင့်"သမ္ပရာယော"ပြီး၏–ဟု ပြ၏၊ သမ္ပရေတဗ္ဗော (ကံကိလေသာတို့၏ အစွမ်းဖြင့် တမလွန်၌ ရောက်ထိုက်၏) ဣတိ သမ္ပရာယော၊ သမ္ပရာယေ+ ဘဝံ သမ္ပရာယိကံ (ဝဋ္ဋဘယံ)။

အချို့တို့ကို၊ အရဟာတ္တေ – ၌၊ ပတိဋ္ဌာပေန္တော - တည်စေတော်မူလျက်ငင်း၊ အပ္ပေကစ္စေ–တို့ကို၊ အနာဂါမိ၊ပေ၊ဖလေသု-အနာဂါမိ ဖိုလ်, သကဒါဂါမိ ဖိုလ်, သောတာပတ္တိဖိုလ်တို့၌၊ (ပတိဋ္ဌာပေန္တော - လျက်ငင်း၊) ဥပနိဿာယ ဝိရဟိတေပိ – မဂ်ဖိုလ်ရခြင်း၏ အားကြီးသော အကြောင်းမှ ကင်းသူတို့ကို လည်း၊ သဂ္ဂမဂ္ဂေ - နတ်ပြည်လမ်းကြောင်း၌၊ ပတိဋ္ဌာပေန္တော – လျက်ငင်း၊ ဒီဃနိကာယပ္ပမာဏမ္ပိ- ဒီဃနိကာယ်ပမာဏရှိသည်လည်း ဖြစ်သော၊ မဇ္ဈိမ နိကာယပ္ပမာဏမ္ပိ–သော၊ ဓမ္မ ဒေသနံ–ကို၊ ကရောတိ - မူ၏၊ တံ-ထို တရားဒေသနာတော်ကို၊ သန္ဓာယ-၍၊ဘိက္ခုနံ၊ပေ၊ကတ္ဗာတိ-ဟူသော၊ ဧတံ(ဝစနံ)-ကို၊(သံဂီတိကာရေဟိ)ဝုတ္တံ။

တေနဟီတိ – ကား၊ သုဒိန္နဿ - ၏၊ ကာရဏဘူတေန- အကြောင်းဖြစ်၍ ဖြစ်သော၊ တေန အဇ္ဈာစာရေန- ထို လွန်ကျူးမှုကြောင့်၊ သိက္ခာပဒဉ္ဇတ္တေ- ပါဋ္ဌ်၌၊ (ဝစနတ္ထော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊)ယာ ဓမ္မဇာတိ-အကြင်တရားသဘော ကို၊ သိက္ခိတဗ္ဗာ-ကျင့်ကြံကြိုးကုတ် အားထုတ်ထိုက်၏၊ ဣတိ- ကြောင့်၊ (ထိုသို့ ကျင့်ကြံကြိုးကုတ် အားထုတ်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) သာ ဓမ္မဇာတိ- သည်၊ သိက္ခာ- သိက္ခာမည်၏၊ ဣမိနာ - ဤတရားဖြင့်၊ ပဇ္ဇတေ - ရောက်အပ် ရအပ်၏၊ ဣတိ - ထိုသို့ ရောက်ကြောင်း ရကြောင်း၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ (တံ-ထို တရားသည်၊ ) ပဒံ - မည်၏၊ သိက္ခာယ - အဓိသီလ, မိစိတ္တနှင့် , မိကပညာ, ၃ သိက္ခာ၏၊ ပဒံ-ရောက်ကြောင်း ရကြောင်းတရားတည်း၊ သိက္ခာပဒံ - သိက္ခာ ၃ ပါး၏ ရောက်ကြောင်း ရကြောင်းတရား၊ သိက္ခာယ-၏၊ အဓိဂမုပါယော-

**ဒီဃနိကာယပ္ပမာဏမ္ပိ။** ။လောကီလူတို့ တပုဒ်ကို ရွတ်ချိန်၌ အရှင်အာနန္ဒာသည် ရှစ်ပုဒ်ပြီးအောင် ရွတ်နိုင်၏၊ အရှင်အာနန္ဒာ တပုဒ်ရွတ်ချိန်၌ ဘုရားရှင်သည် ၁၆ ပုဒ် ပြီးအောင် ရွတ်တော်မူနိုင်၏၊ ထို့ကြောင့် ထိုခဏ၌ ဟောအပ်သော တရားတော်သည် ဒီဃနိကာယ်–မဇ္ဈိမနိကာယ် တမျိုးမျိုးလောက် များပေသည်။

**တေနဟိ ။** ။ "ကာရဏဘူတေန "ဖြင့် တေန၌ နာဝိဘတ်သည် အကြောင်း ( ဟိတ် ) အနက်ဟောဟု သိစေ၏၊ ဟိအတွက် အထူးမဖွင့်သောကြောင့် အနက်မရ နိပါတ်မျှဟု သိစေ၏၊ "တေန" ဟု နိယမရှိသောကြောင့် အနိယမဝါကျထည့်၍ ပါဠိ တော်အနက် ပေးရမည့်အကြောင်းကို ဝေရဉ္စကဏ္ဍအစ၌ ဖွင့်ပြခဲ့ပြီ။

**ပဇ္ဇတေ၊ပေ၊အတ္ထော ။** ။ " အဓိဂမုပါယော့တိ အတ္ထော" ဟူသော အနက် အဖွင့်၌ အဓိဂမသည် ပဇ္ဇတေ၏ ပဇ္ဇနကြိယာ (ဓာတ်နက် )ကို ဖွင့်သောသဒ္ဒါတည်း၊ ထို့ကြောင့်"ပဇ္ဇတေ–သိအပ် ရအပ်၏" ဟု ပေး၊ ဥပါယသည် ဣမိနာပုဒ်၏ ကရိဏ်း အနက်ဖွင့်တည်း၊ "သိက္ခိတဗ္ဗာ–ကျင့်ထိုက်၏၊ ဣတိ သိက္ခာ"ဟု ပြု၍ ကျင့်ထိုက်သော

ရခြင်း၏အကြောင်းတည်း၊ ဣတိအတ္တော-နက်၊ အထဝါ-ထို့ပြင်တနည်းကား၊ (သိက္ခာယ-၏၊) မူလံ-အခြေအမြစ်တည်း၊ နိဿယော-မှီရာတည်း၊ ပတိဋ္ဌာ-တည်ရာတည်း၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ တေ-၌ သိက္ခာပဒံဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ မေထုနဝိရတိယာ-မေထုန်မှ ရှောင်ကြဉ်ခြင်းကို၊ မေထုနသံဝရဿ-မေထုန်မှ စောင့်စည်းခြင်းကို၊ အဓိဝစနံ- ဟောသောသဒ္ဒါတည်း၊ [နောက်ပုဒ်သည် ရှေ့ပုဒ်၏ အဖွင့်တည်း၊]ဟိ-ချဲ့၊ မေထုနသံဝရော-ကို၊[အဓိပ္ပေတော-၌စပ်၊] တဒ ညေသံ- ထို မေထုနဝိရတိမှ တပါးကုန်သော၊ သိက္ခာသင်္ခါတာနံ - သိက္ခာ ဟု ဆိုအပ်ကုန်သော၊ သီလဝိပဿနာဈာနမဂ္ဂဓမ္မာနံ-တို့၏၊[သီလဖြင့် အဓိသီလ သိက္ခာကို,ဈာနဖြင့် အဓိစိတ္တသိက္ခာကို,ဝိပဿနာမဂ်ဖြင့် အဓိပညာသိက္ခာကို ပြ၏၊] ဝုတ္တတ္ထဝသေန-ဆိုအပ်ပြီးသောအနက် ၂ မျိုး၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ပဒ တ္တာ - ပဒမည်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဣဓ - ၌ သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမိ

အဓိသီလ, အဓိစိတ္တ , အဓိပညာ, ၌ သိက္ခာ ၃ ပါးကို အရကောက်ပါ၊ “သိက္ခာယ— သိက္ခာ ၃ ပါး၏+ပဒံ—သိကြောင်း ရကြောင်း တရားတည်း၊ သိက္ခာပဒံ—တရား”ဟု ပြ၍ ဤပဌမပါရာဇိကအတွက် “မေထုနဝိရတိ”ကို အရကောက်ရသည်။

အထဝါ ။ ။ ဤနည်း၌ ပဒံကို ပဌမနည်းအတိုင်း ဝိဂ္ဂဟပြု၍ သိက္ခာ ၃ ပါး၏ အခြေအမြစ်ဖြစ်သောကြောင့် မေထုနဝိရတိကိုပင် “ မူလံ ” ဟုငင်း, အခြားသီလနှင့် သမာဓိပညာတို့၏ မှီရာဖြစ်သောကြောင့်“နိဿယော”ဟုငင်း, အခြားသီလနှင့်သမာဓိ ပညာတို့၏တည်ရာဖြစ်သောကြောင့် “ပတိဋ္ဌာ”ဟု ငင်း, ရှေးရှေးပုဒ်ကို နောက်နောက် ပုဒ်ဖြင့် ဖွင့်ပြ၍ ဤ ၃ ပုဒ်လုံးပင် ပဒံ၏ သဒ္ဒတ္ထမဟုတ် , အဓိပ္ပါယတ္ထဖြစ်သည် ဟု သိစေ လို၍“ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ”ဟု မိန့်သည်။[ပဋ္ဌိမံပဋ္ဌိမံ (“နိဿယော ပတိဋ္ဌာ”ဟူသော နေဲနေဲပုဒ်သည်၊ ) ပဌမဿ ပဌမဿ ( မူလံ နိဿယောဟူသော ရှေးရှေးပုဒ်၏ ) ဝေဝစနံ၊ ပတိဋ္ဌာတိ — သမ္မယောဂဝသေန ဥပနိဿယ ဝသေနစ ဩကာသဘာဝေါ (တည်ရာ၏အဖြစ်) ။ ] မူလတိ ပတိဋ္ဌာတိ ဗ္ဗောတိ မူလံ၊ နိဿယတိ ဗ္ဗောတိ နိဿ ယော၊ “နိဿီယတေတိ နိဿယော”လည်း သင့်၏၊ ပတိဋ္ဌဟတိ ဗ္ဗောတိ ပတိဋ္ဌာ။

မေထုနသံဝရောဟိ။ ။မေထုန်မှရှောင်မှု သီလဟူသည် ဝိရတိစေတသိက်တည်း၊ ထို ဝိရတိသည် မိမိနှင့်ယှဉ်ဘက် စေတသိက်တို့အား သဟဇာတသတ္တိဖြင့် ကျေးဇူး ပြု၏၊ ထို့ကြောင့် ယှဉ်ဘက်စေတသိက်ကို“သိက္ခာ”ဟု ခေါ်၍ ထိုသိက္ခာ၏အကြောင်း ဖြစ်သောဝိရတိကို သိက္ခာပဒဟု ခေါ်သည်၊ ထိုဝိရတိသည်ပင် အဒိန္နာဒါန ဝိရတိစသော အခြားသီလများနှင့် အထက်အထက် ဝိပဿနာဈာန်မဂ်ဖိုလ်တို့အား ပကတူပနိဿယ သတ္တိဖြင့် ကျေးဇူးပြု၏၊ ထို့ကြောင့် အခြားသီလနှင့် ဝိပဿနာစသည်ကို သိက္ခာဟု ခေါ်၍ ထို ဝိရတိကို သိက္ခာပဒဟု ခေါ်သည်။ [ ဝုတ္တတ္ထဝသေနာတိ- ပတိဋ္ဌာ အဓိဂမ ပါယ ဝသေန (ရှေး ၂ နည်း၌ ပြခဲ့သောပတိဋ္ဌာ, အဓိဂမုပါယ၏ အစွမ်းဖြင့်။) ]

ဟူသောပါဠိ၌၊ သိက္ခာပဒန္တိ – ဟူ၍၊ အဓိပ္ပေတော- အလိုရှိအပ်၏၊ စ- ဆက်၊ အယံ အတ္ထော-ဤ အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊ သိက္ခာပဒဝိဘင်္ဂေ-သိက္ခာပဒဝိဘင်း ပါဠိတော်၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ-သာလျှင်၊ ဝေဒိတဗ္ဗော–၏။

အပိစ-သည်သာမကသေး၊ [အနက်သာ သိက္ခာပဒမည်သည်မဟုတ်သေး၊ ပါဠိတော်သဒ္ဒါလည်း သိက္ခာပဒမည်သေးသည် - ဟူလို၊] တဿ အတ္ထဿ– ထို မေထုနဝိရတိဟူသော အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊ ဒီပကံ - ပြတတ်သော၊ ဝစန မ္ပိ- ယောပနဘိက္ခုစသော သိက္ခာပုဒ်ပါဠိတော် စကားကိုလည်း၊ သိက္ခာပဒ န္တိ– ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ - သေး၏၊ စ - သာမကကား၊ သိက္ခာပဒန္တိ ၊ပေ၊ ဗျဥ္ဇန ကာယောတိ-ဟူသော၊ ဧတံ (ဝစနံ)-ကို၊ (မဟာ အဋ္ဌကထာယံ)ပိ-၌လည်း၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ [တတ္ထ–ထို သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမိဟူသော ပါဠိ၌၊ ယော နာမ ကာယော– အကြင် နာမ်အပေါင်းသည်၊ ယော ပဒကာယော – အကြင် ပုဒ် အပေါင်းသည်၊ ယော နိရုတ္တိကာယော- အကြင် ထုတ်ဖေါ်ရွတ်ဆိုအပ်သော သဒ္ဒါအပေါင်းသည်၊ ယော ဗျဉ္ဇနကာယော-အကြင်အနက်ကိုထင်ရှားပြတတ် သော သဒ္ဒါအပေါင်းသည်၊ (အတ္ထိ၊) တံ- ထို ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ သိက္ခာပဒ န္တိ-ဒံမည်၏၊] အထဝါ-ထို့ပြင်တနည်းကား၊ အနဘိဇ္ဈာ ဓမ္မပဒန္တိ-ခံ ဟူ၍၊ ဝုတ္တေ-ဟောတော်မူအပ်သော်၊ ဝါ-ဟောတော်မူအပ်ရာ၌၊ အနဘိဇ္ဈာ-အန ဘိဇ္ဈာသည်၊ ဧကော- တပါးသော၊ ဓမ္မကောဋ္ဌာသော – တရားအစုတည်း၊ ဧတိအတ္ထော-သည်၊ ဟောတိယထာ-ကဲ့သို့၊ ဧဝံ–တူ၊ ဧဝမေပိ-၌ သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမိဟူသော ပါဠိ၌လည်း၊ သိက္ခာပဒန္တိ(ပဒဿ)-၏၊ (အတ္ထော-

**အယဥ္စ၊ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗော။** ။"သိက္ခာပဒ" အရ ဝိရတိစေတသိက်ကို အရကောက် ရပုံကို အဘိဓမ္မာ-သိက္ခာပဒ ဝိဘင်းပါဠိတော်ဖြင့် သိပါ—ဟူလို၊ ထို ဝိဘင်းပါဠိတော်၌ "ဝိရတိကိုရင်း, စေတနာကိုရင်း, ဖဿစသော သမ္ပယုတ်တရားများကိုရင်း သိက္ခာပဒ မည်၏"ဟု ၃ နည်းပြထား၏၊ ရှုပါလေ၊ ထို ၃နည်းတွင် ဝိရတိကိုကောက်သောနည်းသာ မုချနည်းဖြစ်၍ ထိုနည်းကိုသာ "မေထုနဝိရတိယာ ၊ပေ၊ အဓိဝစနံ"ဟု ပြထားသည်၊ မေထုနသံဝရ-ဟူသည်လည်း မေထုနဝိရတိ၏ ပရိယာယ်တည်း။

**အပိစ။** ။ ဝိရတိသာ "သိက္ခာပဒ" အမည်ရလျှင် "သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမိ" ဟူသော ဤနေရာ၌ သိက္ခာပုဒ်ပါဠိတော် မပါဝင်သောကြောင့် " အပိစ " စသည်ကို မိန့်ရပြန်သည်၊ ဝိရတိစသည်သာ သိက္ခာပဒအမည် ရသည် မဟုတ်သေး၊ ထို ဝိရတိကို ပြသော " ယော ပန ဘိက္ခု ဘိက္ခူနံ သိက္ခာသာဇီဝ သမာပန္နော"စသော သိက္ခာပုဒ် ပါဠိတော်လည်း အနက်ကိုအကြောင်းပြု၍ကာရဏူပစာရအားဖြင့်"သိက္ခာပဒ"အမည် ရသေးသည်—ဟူလို၊ နာမကာယော—စသည်၌"ယောပနဘိက္ခု"စသော ပုဒ်အပေါင်း ကိုပင်"နာမကာယ" ဟု ဆိုသည်၊ပဒ-နိရုတ္တိ-ဗျဉ္ဇနတို့ကား နာမ၏ပရိယာယ်တည်း။

၌စပ်၊) သိက္ခာကောဋ္ဌာသော—သိက္ခာ၏ တဘို့တစုတည်း၊ သိက္ခာယ- ၃ ပါး သောသိက္ခာ၏၊ ဧကော-တပါးသော၊ ပဒေသော—ညွှန်ပြအပ်သော အစိတ် အပိုင်းတည်း၊ ဣတိပိ အတ္ထော—ကိုလည်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။ [ပိဖြင့် ရှေ့၌ပြခဲ့ သော အဓိဂမပုပါယ, ပတိဋ္ဌာအနက်များကိုပေါင်း။]

ဒသ အတ္ထဝသေ ပဋိစ္စာတိ — ကား၊ ဒသ - န်သော၊ ကာရဏဝသေ— အကြောင်းအထူးတို့ကို၊ သိက္ခာပဒပညတ္တိဟေတု - သိက္ခာပုဒ်ကို ပညတ်ခြင်း ဟူသောအကြောင်းကြောင့်၊ အဓိဂမနီယေ - ရထိုက်ကုန်သော၊ ဟိတဝိသေ သေ-စီးပွားအထူးတို့ကို၊ ပဋိစ္စ- စွဲမှီ၍၊ အာဂမ္မ - ရှေးရှုရောက်၍၊ အာရဗ္ဘ—

**သိက္ခာကောဋ္ဌာသော**။ ။ ဝိရတိအာဒယော ဝုတ္တာ၊ [ ဝိရတိ , စေတနာ, ဖဿာဒိသမ္ပယုတ္တ ဓမ္မတို့ကို " ဝိရတိအာဒယော" ဟု ဆိုသည်၊] အဓိသီလ အဓိစိတ္တ အဓိပညာ သိက္ခာတို့တွင်၎င်း အဓိသီလသိက္ခာများစွာတွင်၎င်း မေထုနဝိရတိသီလသည် တဘို့တစု ဖြစ်သည်-ဟူလို။ ] ဤနည်း၌ ပဒေသဒ္ဒါသည် ကောဋ္ဌာသ အနက်ဟောတည်း။ အထဝါ, ယထာ—ဟု တက်သော ဤ နည်း၌လည်း ထို အနက်ကို ပြသော သိက္ခာပုဒ် ပါဠိတော်ပါရအောင် ကာရဏူပစာကြံပါ။ [ တဒတ္ထဇောတကံ ဝစနမ္ပိ သိက္ခာပဒန္တိ ဣဒမ္ပိ ဧတ္တ (ဤနည်း၌) လဗ္ဘတေဝ။ ] "သိက္ခာပဒံ—သိက္ခာပုဒ်အခေါ်ပါင်း၏ တဘို့တစု ဖြစ်သော မေထုနဝိရတိ သီလ, ထိုသီလကို ပြသော သိက္ခာပုဒ်ပါဠိတော်ကို" ဟု ပေး။

**အတ္ထဝသေ**။ ။ဤပုဒ်နှင့်စပ်၍ အဘိဓာန်လာ အတ္ထသဒ္ဒါ ဝသသဒ္ဒါတို့၏အနက်ကို ရှေးဦးစွာ သိထားရာ၏၊ အတ္ထ၏ အနက်ကို အဘိဓာန် (၇၈၅) ၌၎င်း ဝသ၏ အနက် ကို (၈၀၈) ၌ ၎င်း ကြည့်ပါ၊ ဝသသဒ္ဒါကား ထိုအနက်များအပြင် ဘေဒ (အပြား) နှင့် ဝိသေသ အနက်ကိုလည်း ဟောသေး၏၊ " အတ္ထဝသေတိ ဝုဍ္ဎိဝိသေသေ အာနိသံသ ဝိသေသေ"—သာရတ္ထ၊ ဤအလို "အတ္ထဝသေ-ကြီးပွားခြင်းဟူသော အကျိုးအာနိသင် အထူးတို့ကို" ဟု ပါဠိတော်၌ ပေးခဲ့လို၏၊ အတ္ထသဒ္ဒါလည်း ဝုဍ္ဎိအနက်ဟော ဟု ယူစေ လို၏၊ ဝသသဒ္ဒါကား အဘိဓာန်လာအနက်တို့တွင် တနက်မျှမဟော, ဝိသေသအနက် ဟော - ဟု သိစေလိုသည်။

[ဆောင်] ဝသမှုကား , စွမ်း-ပြား-ထူး-စပ် , စပ်ဖြစ်-အလို, အနက်ကို , ဟောဆို ခြောက်မျိုးလာ။

**မေးဘွယ်**။ ။ ဝုဍ္ဎိအနက်ဟောဖြစ်လျှင် အဋ္ဌကထာ၌ " ကာရဏဝသေ , ဟိတ ဝိသေသေ"ဟူသော အဖွင့်နှင့် မဆန့်ကျင်ပါလော—ဟု မေးဘွယ်ရှိ၏၊ ထိုကြီးပွားခြင်း အာနိသံသသည် သိက္ခာပုဒ်ပညတ်တော်မူခြင်း၏ အကြောင်းဖြစ်သောကြောင့်"ကာရ ဏဝသေ"ဟုဖွင့်ခြင်းဖြစ်သည်၊အတ္ထသဒ္ဒါ၏ ကာရဏအနက်ကို ယူစေလိုသောကြောင့် ဖွင့်ခြင်းမဟုတ်၊ ထို့ကြောင့် မဆန့်ကျင်ပါ၊ ထို အာနိသင် ၁၀ ပါး ရမည်ကို မြင်တော် မူသောကြောင့် သိက္ခာပုဒ်ပညတ်တော်မူရကား အာနိသင် ၁၀ ပါးသည်ပင် သိက္ခာပုဒ် ပညတ်ရခြင်း၏အကြောင်းလည်းဖြစ်သည်—ဟူလို။[ တေသံ ပန သိက္ခာပဒပညတ္တိကာရ ဏတ္တာ အာဟ—ဒသ ကာရဏဝသေတိ၊ ဒသ ကာရဏဝိသေသေတိ အတ္ထော။ ]

အာရုံပြု၍၊ ဒသန္နံ - န်သော၊ ဟိတဝိသေသာနံ - စီးပွားအထူးတို့၏၊ နိပ္ဖတ္တိံ - ပြီးစီးခြင်းကို၊ သမ္မသမာနေ—ကောင်းစွာ မြော်မြင်တော်မူသည်၊(ဟုတွာ-၍၊ ပညပေဿာမိ-အံ့၊) ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

**ကာရဏနှင့်ဟိတ**။ ။ ကာရဏဝသေကို “ ဟိတဝိသေသေ ” ဟု အဋ္ဌကထာ၌ ထပ်ဆင့်ဖွင့်ပြ၏၊ ဟိတသဒ္ဒါလည်း “ဟိနောတိ ပဝတ္တတိ ဖလံ ဧတေနာတိ ဟိတံ”နှင့် အညီ မိမိအကျိုး၏ ဖြစ်ကြောင်းကို“ဟိတ”ဟု ခေါ်ရကား ကာရဏနှင့် သဘောတူပင် ဖြစ်၏၊ “ဟိတ-စီးပွား”ဟု အနက်ပေးရာ၌ “ စီးပွား” ဟူသည် ချမ်းသာသုခ တည်း ဟူသောအကျိုး၏ အကြောင်းပင်တည်း၊ ထို့ကြောင့် ကာရဏနှင့်ဟိတကို ဤနေရာ၌ ပရိယာယ်ဟုသာမှတ်ပါ၊ ပရိယာယ်ဖြစ်သောကြောင့်ပင် အခြားအနက်ကိုဆည်းသော စသဒ္ဒါ မထည့်ဘဲ “ ဟိတဝိသေသေ ” ဟု ဖွင့်လေသည်။ [ဝိမတိ၌ “ အတ္ထဝသေတိ ဟိတဝိသေသေ အာနိသံသဝိသေသေ”ဟု ဟိတနှင့် အာနိသံသကို သဘောတူဖွင့်၏၊ အတ္ထကို ဝုမိဖွင့်သော သာရတ္ထနှင့် မတူသော်လည်း သူ့နည်းနှင့်သူ အဓိပ္ပါယ်ရနိုင်သည်သာ၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း—လောက၌ စီးပွား တိုးတက်နေခြင်းကို “ကြီးပွားခြင်း” ဟု ခေါ်လေ့ရှိသောကြောင့်တည်း။]

**သာရတ္ထ** ။ ။ အတ္ထောယေဝ ဝါ အတ္ထဝသော၊ ဒသအတ္ထေ ဒသကာရဏာနီတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဤအဖွင့်အလို အတ္ထသဒ္ဒါသည် ကာရဏအနက်ဟောဟု မှတ်၊ “ ဝသ သဒ္ဒါအတွက် အနက်သီးခြားမရှိ, သွတ္ထဟု ပြ၏၊ “အကြောင်းတို့ကို”ဟု သာ အနက် ပေး၊ သို့ဖြစ်လျှင် အဋ္ဌကထာ၌ “ ဟိတဝိသေသေ ”ကို အဘယ်သို့ မှတ်ရမည်နည်းဟု မေးဘွယ်ရှိ၏၊ အဋ္ဌကထာကို ဖွင့်ခြင်းမဟုတ်,သူ့သဘောကျဖွင့်ခြင်း ဖြစ်သောကြောင့် အဋ္ဌကထာမှ တမျိုးဟု မှတ်ပါ။

**သာရတ္ထတနည်း**။ ။ အထဝါ-အတ္ထော (ဖလံ) တဒါယတ္တဝုတ္တိတာယ ဝသော ဧတဿာတိ အတ္ထဝသော, ဟေတူတိ ဧဝမ္မေတ္ထ အတ္ထော ဒဋ္ဌဗ္ဗော၊ ဤနည်းလည်း အဋ္ဌကထာနည်းသို့ မလိုက်ဘဲ သူ့သဘောကျဖွင့်အပ်သော နည်းပင်တည်း၊ “ တဒါယတ္တ ဝုတ္တိတာယ — ထိုအကြောင်းနှင့်စပ်သော ဖြစ်ခြင်းရှိသည် အဖြစ်ကြောင့် ” ဟူသော ဟိတ်ကိုထောက်၍ ဝသသဒ္ဒါလည်း အာယတ္တအနက်ဟောဟု ဆိုလို၏၊ထိုအလို“အတ္ထဝသေ—မိမိနှင့်စပ်သော အကျိုးရှိသောအကြောင်းတို့ကို ”ဟု ပေးပါ။ [အတ္ထဝသန္တိ ဟေတုံ၊ အတ္ထော ဟိ ဖလံ၊ သော ယဿ ဝသေန ပဝတ္တတိ , သော အတ္ထဝသောတိ” ဟူသော တတိယပါရာဇိက သာရတ္ထလည်း ဤသဘောပင်တည်း။]

**ပဋိစ္စ, အာဂမ္မ, အာရဗ္ဘ**။ ။ပါဠိတော်လာ ပဋိစ္စဝယ် “ ပဋိ — ရှေးရှု+ ဣစ္စ— ရောက်၍”ဟု သဒ္ဒတ္ထဖြစ်သောကြောင့် အာဂမ္မသည် ပဋိစ္စ၏သဒ္ဒတ္ထ၊ “အာရဗ္ဘ” ကား (ထိုအတ္ထဝသတို့ကို အာရုံပြု၍ မြော်မြင်တော်မူ၍ ပညတ်တော်မူသောကြောင့်)ပဋိစ္စ၏ အဓိပ္ပါယတ္ထ၊ ထို့ကြောင့်ပင် “နိပ္ဖတ္တိံ သမ္မဿမာနော (ပြီးစီးခြင်းကို မြော်မြင်တော် မူသည်) ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ”ဟု အာရုံပြုပုံမြော်မြင်ပုံဥဇုကတ္ထကို ဖွင့်ပြသည်။

ဧဒ္ဒါနိ-၌၊ ဒသ-န်သော၊ တေ အတ္ထဝသေ-ထို စီးပွားအထူးတို့ကို၊ ဒဿေန္တော-မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ-၍၊) သံဃသုဋ္ဌုတာယာတိ အာဒိံ-ကို၊ အာဟ-မူပြီ၊ တတ္ထ - ထို သံဃသုဋ္ဌုတာယ အစရှိသောစကားရပ်၌၊ သံဃသုဋ္ဌုတာ နာမ-မည်သည်၊ သံဃဿ-၏၊ သုဋ္ဌုဘာဝေါ- ကောင်းပါပြီဘုရားဟု စကားတော်ကို လက်ခံနိုင်သည်၏အဖြစ်တည်း၊ သုဋ္ဌုဒေဝါတိ-ဟူ၍၊ အာဂတဋ္ဌာနေဝိယ- လာသော ရာဇန္တေပုရပဝေသနသိက္ခာပုဒ်၌ာန၌ ကဲ့သို့၊ သုဋ္ဌုဘန္တေတိ ဟူ၍၊ ဝါ-ကောင်းပါပြီဘုရားဟူ၍၊ ဝစန သမ္ပဋိစ္ဆနဘာဝေါ-စကားတော်ကို လက်ခံနိုင်သည်၏အဖြစ်တည်း၊ စ-ဆက်၊ ယော-အကြင်ရဟန်းသည်၊ တထာဂတဿ-၏၊ ဝစနံ-တော်ကို၊ သမ္ပဋိစ္ဆတိ- လက်ခံ၏၊ ဝါ-လက်ခံ၍ ကျင့်၏၊ တဿ- ထိုရဟန်း၏၊ တံ-ထို လက်ခံခြင်းသည်၊ ဒီဃရတ္တံ- ရှည်စွာသော ညဥ့်ပတ်လုံး၊ ဟိတာယ-သုခဖြစ်ကြောင်း ကောင်းသောစီးပွားအလို့ငှါ၊ သုခါယ-လောကီ လောကုတ္တရာချမ်းသာအလို့ငှါ၊ ဟောတိ-ဖြစ်၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (စကားတော်ကို လက်ခံ၍ကျင့်ခြင်း၏ ဟိတသုခအလို့ငှါ ဖြစ်နိုင်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊) သံဃဿ-၏၊ သုဋ္ဌုဘန္တေတိ-ဟူ၍၊ ဝါ-ကောင်းပါပြီဘုရား ဟူ၍၊ မမ-ငါဘုရား၏၊ ဝစနသမ္ပဋိစ္ဆနတ္ထံ-စကားတော်ကို လက်ခံခြင်းအကျိုးငှါ၊ ပညပေဿာမိ-မူအံ့၊ အသမ္ပဋိစ္ဆနေ-လက်မခံခြင်း၌၊ အာဒီနဝံ-အပြစ်ကိုရင်း၊ သမ္ပဋိစ္ဆနေ-၌၊ အာနိသံသံ စ-အကျိုးကိုရင်း၊ ဒဿေတွာ-မူ၍၊ ဗလက္ကာရေန-

သံဃသုဋ္ဌုတာ။ ။"သုဋ္ဌု+ဘာဝေါ သုဋ္ဌုတာ၊ သံဃဿ+သုဋ္ဌုတာ သံဃသုဋ္ဌုတာ"ဟု ပြုစေလို၍ "သံဃဿ သုဋ္ဌုဘာဝေါ"ဟု ဖွင့်သည်၊ "သုဋ္ဌုဒေဝ" ဟူသော စကားသည် ရတနဝဂ် ရာဇန္တေပုရသိက္ခာပုဒ်၌ လာ၏၊ ထိုစကားရပ်၌ "သုဋ္ဌု"သည် ကောသလမင်း၏စကားကို ဆတ္တပါဏိ ဥပါသကာက လက်ခံပုံကိုပြသောစကားတည်း၊ ထို့ကြောင့် သုဋ္ဌုကို "ဝစနသမ္ပဋိစ္ဆန" ဟု ဖွင့်သည်၊ ဤအဖွင့်အစဥ်ကိုကြည့်၍ သုဋ္ဌု၌ "ကောင်းပါပြီ"ဟု သာ မပေးဘဲ"ကောင်းပါပြီဟု စကားတော်ကို လက်ခံနိုင်ခြင်း" တိုင်အောင် ပေးရမည်ဟု သိပါ။

ယော စ၊ ပေ၊ ဟောတိ ။ ။ "သံဃသုဋ္ဌုတာ" သည် သိက္ခာပုဒ်ကို ပညတ်ခြင်းကြောင့် ရနိုင်သော"ဟိတဝိသေသ"တွင် ပါဝင်၏၊ထို့ကြောင့် စကားတော်ကိုလက်ခံမှုသည် အဘယ်နည်းဖြင့် ဟိတဝိသေသဖြစ်ပါသနည်း – ဟု မေးဘွယ်ရှိသောကြောင့် "ယော စ" စသည်မိန့်၊ ဘုရားစကားတော်ကို လက်ခံလိုက်နာသူမှာ အရှည်သဖြင့် ဟိတသုခကို ရနိုင်သောကြောင့် စကားလက်ခံမှုကိုပင် "ဟိတဝိသေသ"ဟု ဆိုသည်–ဟူလို၊ ဤ စကားစဥ်အရ – အဆက်ဆက် ဖြစ်လတ့်သော စီးပွား၏ ဟိတ အမည်ကို အကြောင်းဖြစ်သော စကားတော် နာခံမှုအပေါ်၌ တင်စားထားသောကြောင့် သံဃသုဋ္ဌုတာကို "ဖလူပစာရစကား" ဟု မှတ်။

အားကို အသုံးပြုသဖြင့်၊ ဝါ-အနိုင်အထက်၊ န အဘိဘဝိတွာ-မလွှမ်းမိုးမူ၍၊ (ပညပေဿာမိ-အံ့၊) ဣတိ ဧဝမတ္ထံ-ဤ အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊ အာဝိကရောန္တော-ထင်စွာ ပြုတော်မူလျက်၊ သံဃသုဋ္ဌုတာယာတိ-ဟူ၍၊ အာဟ-မူပြီ။

သံဃဖါသုတာယာတိ-ကား၊ သံဃဿ-၏၊ ဖါသုဘာဝါယ-ဇုရိယာပုထ် ၄ ဖြာ ချမ်းသာစွာ နေနိုင်သည်၏ အဖြစ်အကျိုးငှါ၊ သဟဇီဝိကာယ- အတူ တကွ အသက်မွေးကြောင်းဖြစ်သော၊ သုခဝိဟာရတ္ထာယ-ချမ်းသာစွာ နေနိုင်ခြင်း အကျိုးငှါ၊ (ပညပေဿာမိ၊) ဣတိ အတ္ထော-နက်၊ ဒုမ္မင်္ကူနံပုဂ္ဂလာနံ နိဂ္ဂဟာယာတိ-ကား၊ ဒုမ္မင်္ကူနာမ-ဒုမ္မင်္ကုတို့မည်သည်၊ ဒုဿီလပုဂ္ဂလာ-သီလ မရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်တို့တည်း၊ ယေ – အကြင် ဒုဿီလပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ မင်္ကုတံ-အရှိန်အဝါ မရှိသူတို့၏ အဖြစ်သို့၊ အာပါဒိယမာနာပိ– ရောက်စေအပ်ပါ ကုန်သော်လည်း၊ ဝါ - ရောက်အောင် ပြုအပ်ပါကုန်သော်လည်း၊ ဒုက္ခေန-

**အာဝိကရောန္တော**။ ။ "ဤသို့ သိက္ခာပုဒ်ကိုပညတ်ခြင်းသည် ကောင်းပါသည် ဘုရား"ဟု သံဃာအားလုံးက စကားတော်ကို နာခံကြခြင်းဟူသော သံဃသုဋ္ဌုတာကို မိန့်တော်မူသဖြင့်"သိက္ခာပုဒ်ကိုလက်မခံလျှင် ယခုပစ္စုပ္ပန်နှင့် နောင်သံသရာ၌ မည်ကဲ့သို့ အပြစ်ကို ရကြလိမ့်မည်၊ လက်ခံလျှင် မည်ကဲ့သို့ ဟိတသုခရနိုင်သည်" ဟု အကျိုးအပြစ် များကို ( သိက္ခာပုဒ် ပညတ်တော်မမူမီ ) ပြတော်မူသေးကြောင်းကိုရင်း, တန်ခိုးအား အခြိအရံအားကို အသုံးပြု၍"ငါ့စကားကို နာခံရမည်"ဟု အတင်းအကြပ် အမိန့်တော် မရှိကြောင်းကိုရင်း, ထင်ရှားပြပြီးဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့်"တဿာ၊ပေ၊အာဝိကရောန္တော" ဟု အဋ္ဌကထာမိန့်သည်။ ["အာဝိကရောန္တော" ဟု ဆိုသဖြင့် "ထိုသို့ ဟောပြတော် မူသေးကြောင်းကို တိုက်ရိုက်မပြ,သွယ်ဝိုက်၍ ပြသည်"ဟု ဆိုလိုသည်။]

**သဟဇီဝိ၊ပေ၊အတ္ထော**။ ။သံဃဖါသုတာ– ဟူသည် ဣရိယာပုထ် ၄ ပါးလုံး၌ ချမ်းသာစွာနေရခြင်းတည်း၊ ထိုသို့ ချမ်းသာစွာနေရလျှင် သံဃာအချင်းချင်း အတူ တကွ အသက်မွေးရခြင်း (သွားအတူ နေအတူ) ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် သုခဝိဟာရတ္ထာယ ကို "သဟဇီဝိကာယ " ဟု ဝိသေသနပြုသည်၊ [ " ဇီဝတိ ဧတာယာတိ ဇီဝိကာ= အသက်မွေးကြောင်း၊"သဟ+ ဇီဝိကာ သဟဇီဝိကာ၊ " သဟဇီဝိတာယ "ဟု လည်း ရှိ၏၊ ဇီဝေါယဿ အတ္ထီတိ ဇီဝီ၊ သဟ+ဇီဝီ သဟဇီဝီ၊ "တဿ+ဘာဝေါ သဟဇီဝိ တာ" ဟု ပြု၊ အဓိပ္ပါယ်မှာ သဘောတူပင်ဖြစ်သည်။] သုခဝိဟာရာဘာဝေ သဟဇီဝ နဿ အဘာဝတော သဟဇီဝိကာပိ (တာပိ ) သုခဝိဟာရောဝ ဝုတ္တော၊ သုခဝိဟာ ရောနာမ စတုန္နံ ဣရိယာပထဝိဟာရာနံ ဖါသုတာ။ [ ဖါသုနော+ဘာဝေါ ဖါသုတာ၊ သံဃဿ+ဖါသုတာ သံဃဖါသုတာ။]

**ဒုမ္မင်္ကူနာမ** ။ ။ " ဒုဿီလပုဂ္ဂလာ " သည် ဒုမ္မင်္ကူ၏ဟောနက် (အဘိဓေယျ) တည်း၊ မင်္ကုတံကို "နိတ္တေဇတံ"ဟု ဋီကာဖွင့်သောကြောင့်"မင်္ကု–အရှိန်အဝါမရှိသူ" ဟု သဒ္ဒတ္ထဖြစ်သည်၊ ဝိမတိ၌ နိတ္တေဇတံကို "အဓောမုခတံ"ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သေး

ခဲယဉ်းသဖြင့်၊ ဝါ-ခဲခဲယဉ်းယဉ်းပြုမှ(မက္ကိုတံ-သို့)အာပဇ္ဇန္တိ-န်၏၊ ဝီတိက္ကမံ-ကို၊ ကရောန္တာ-ပြုနေကုန်သည်၊(ဟုတ္တာ)ဝါ-ဖြစ်၍ငင်း၊ ကတ္တာဝါ- ပြုပြီး၍ငင်း၊ န လဇ္ဇန္တိ-မရှက်တတ်ကုန်၊ [မျက်နှာပြောင်တိုက်သည်-ဟူလို၊]တေသံ-ထိုဒုဿီလ ရဟန်းတို့ကို၊ နိဂ္ဂဟတ္ထာယ- နှိပ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ (ပညပေဿာမိ-အံ့၊) ဟိ-မှန်၊ တေ-ထိုဒုဿီလ ပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ သိက္ခာပဒေ-သည်၊ အသတိ-မရှိလသော်၊ တုမှေဟိ-အရှင်ဘုရားတို့သည်၊ ကိံ-ကို၊ ဒိဋ္ဌံ - မြင်အပ်သနည်း၊ ကိံ-ကို၊ သုတံ-ကြားအပ်သနည်း၊ အမှေဟိ- တပည့်တော်တို့သည်၊ ကိံ - ကို၊ ကတံ-ပြုအပ်သနည်း၊ ကတရသ္မိံ ဝတ္ထုသ္မိံ - ကြောင့်၊ ကတမံ အာပတ္တိံ-သို့၊ ရောပေတွာ-တင်၍၊ အမှေ-တို့ကို၊ နိဂ္ဂဏှထ- န်သနည်း၊ ဣတိ-ဤသို့ ပြော၍၊ သံဃံ-ကို၊ ဝိဟေဌေဿန္တိ-ညှဉ်းဆဲကုန်လတ့ံ၊ပန-အနွယကား၊ သိက္ခာပဒေ-သည်၊ သတိ-သော်၊ တေ-ထို ဒုဿီလရဟန်းတို့ကို၊ သံဃော-သည်၊ သိက္ခာပဒံ - ကို၊ ဒဿေတွာ - ပြ၍၊ ဓမ္မေန - ဟုတ်မှန်သော သဘောဝတ္ထုဖြင့်၊ ဝိနယေန-စောဒနာ သာရဏာဝိနည်းဖြင့်၊ သတ္ထုသာသနေန-မြတ်စွာဘုရား၏ အဆုံးအမတော်ဖြစ်သော ပြည့်စုံသော ဉတ်ကမ္မဝါစာဖြင့်၊ နိဂ္ဂဟေဿတိ-နှိပ်နိုင်လတ့ံ၊ တေန-ကြောင့်၊ ဒုမ္မင်္ကူနံ၊ပေ၊နိဂ္ဂဟာယာတိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-ပြီ။

၏၊ ရှက်သောကြောင့် မျက်နှာ အောက်ချထားသူကို"မင်္ကု"ခေါ်သည်-ဟူလို၊ မင်္ကု၏ ဓာတ်ပစ္စည်းကို မတွေ့ရ၊ မကိဓာတ်,ဂတိအနက် ဥပစ္စည်းကြံ၍"မင်္ကုဳယန္တိ နိတ္တေဇတံ အာပါဒိယန္တိ—အရှိန်အဝါမရှိသူတို့၏အဖြစ်သို့ ရောက်စေအပ်ကုန်၏၊ ဣတိ မင်္ကူ" ဟု ပြုပြီးလျှင် "ဒုက္ခေန+မင်္ကူ"ဟု ဆက်၍ ဒုဿီလပုဂ္ဂိုလ်ကို အရကောက်ပါ။

**ဒုဿီလ။** ။ ဒုဿီလဟူရာ၌ ပါရာဇိကသိက္ခာပုဒ် အရာဝယ် "ဒု"သဒ္ဒါသည် အဘာဝအနက်ကို ဟော၏၊"နတ္ထိ+ သီလံ ယေသံတိ ဒုဿီလာ—သီလမရှိသူတို့"ဟု ပြု၊ သံဃာဒိသေသ်စသော သိက္ခာပုဒ်များအတွက်လည်း "ဒုမ္မင်္ကူနံ နိဂ္ဂဟာယ" ဟူသော အကျိုးရသောကြောင့် သံဃာဒိသေသ်စသော သီလပျက်သော ဒုမ္မင်္ကုဒုဿီလ အတွက် "ဒူသိတံ+သီလံ ယေသံတိ ဒုဿီလာ-ဖျက်အပ်သော သီလရှိသူတို့" ဟု ဝိမတိပြုသည်၊ ထို ၂ မျိုးသောဒုဿီလပုဂ္ဂိုလ်တို့သည် အရှက်မရှိရကား အရှိန်အဝါမရှိအောင် နှိပ်အပ်သော်လည်း မျက်နှာမပျက်ဘဲ , မျက်နှာပြောင်တိုက်၍ သံဃာထဲ၌ နေရဲသောကြောင့် "ဒုမ္မင်္ကူ—ခဲယဉ်းစွာ အရှိန်အဝါမရှိသူ့အဖြစ်သို့ရောက်စေအပ်သူများ"ဖြစ်ကြသည်။

**ဓမ္မေနစသည်။** ။ဓမ္မေနာတိအာဒီသု ဓမ္မောတိ ဘူတံဝတ္ထု၊ဝိနယောတိ-စောဒနာ စေဝ သာရဏာစ(အပြစ်တင်ခြင်း, အပြစ်ကို အမှတ်ရအောင် သတိပေးခြင်း)၊သတ္ထုသာသနံတိ — ဉတ္တိ သမ္ပဒါစေဝ အနုဿာဝနသမ္ပဒါစ ( အပြစ်ကင်း၍ သန့်ရှင်းစွာ ရွတ်အပ်သော ဉတ်ကမ္မဝါစာသည် သတ္ထုသာသန ( ဘုရားအဆုံးအမ) မည်၏။

ပေသလာနံ ၊ပေ၊ ယာတိ- ကား၊ ပေသလာနံ - လူနတ်အများ လေးစား ချစ်ခင်အပ်သည်၏အဖြစ်သို့ ရောက်ကုန်သော၊ [ပေသလ ပုဒ်ပြီးပုံကို"ဝိဂရဟိ" အဖွင့်၌ ပြခဲ့ပြီ၊ ] ပိယသီလာနံ - ချစ်အပ်သော သီလရှိကုန်သော၊ ဘိက္ခူနံ- တို့၏၊ဖါသုဝိဟာရတ္ထာယ-ချမ်းသာစွာနေနိုင်ခြင်းအကျိုးငှါ၊(ပညပေဿာမိ- အံ့၊) ဟိ-ခ္ဈါ၊ ပိယသီလာ-န်သော၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ ကတ္တမ္ဗာကတ္တဗ္ဗံ-ပြုထိုက် မပြုထိုက်သော၊သာဝဇ္ဇာနဝဇ္ဇံ-အပြစ်ရှိ အပြစ်မရှိသော၊ဝေလံ-စည်းကမ်း ကို၊ မရိယာဒံ - အပိုင်း အခြားကို၊ အဇာနန္တာ - မသိကုန်သည်၊ (ဟုတွာ) သိက္ခတ္တယပါရိပူရိယာ-သိက္ခာ ၃ ပါးအပေါင်း၏ ပြည့်စုံခြင်းငှါ၊ ဃဋမာနာ- စေ့ဆော် ကြိုးကုတ် အားထုတ်ကုန်လသော်၊ ကိလမန္တိ - ပင်ပန်းကြရကုန်၏၊ သန္ဒိဟမာနာ - တွေးတော ယုံမှားကြကုန်သည်၊ (ဟုတွာ) ဥဗ္ဗိဇ္ဇာ - နှိပ်စက် အပ်ကုန်သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ [ဥဗ္ဗိဇ္ဇာ- ပီဠိတာ၊ ဥ+ဝဟ ( ကာရိတ်ကြေ ) တ ပစ္စည်းဖြစ်၍ " သံဃာမှ ထွက်သွားစေအပ်ကုန် " ဟု သဒ္ဒတ္ထဖြစ်၏၊ ] ပန- အန္ဒယကား၊ ကတ္တဗ္ဗာကတ္တဗ္ဗံ - သော၊ သာဝဇ္ဇာနဝဇ္ဇံ - သော၊ ဝေလံ- ကို၊ မရိယာဒံ - ကို၊ ဥ တွာ - ၍၊ သိက္ခတ္တယပါရိပူရိယာ - ငှါ၊ ဃဋမာနာ- န် လသော်၊ န ကိလမန္တိ-န်၊ (အ) သန္ဒိဟမာနာ-မတွေးတော မယုံမှားကြကုန် သည်၊ (ဟုတွာ) ဥဗ္ဗိဇ္ဇာ- န်သည်၊ န ဟောန္တိ - မဖြစ်ကုန်၊ တေန - ကြောင့်၊ နေသံ-ထိုပေသလရဟန်းတို့၏၊ သိက္ခာပဒပညာပနာ-သိက္ခာပုဒ် ပညတ်တော် မူခြင်းသည်၊ ဖါသုဝိဟာရာယ-ငှါ၊ သံဝတ္တတိ-၏။

ဝါ - တနည်း၊ ဒုမ္မင်္ကူနံ - ခဲယဉ်းသဖြင့် အရှိန်အဝါမဲ့သူတို့၏ အဖြစ်သို့ ရောက်စေအပ်ကုန်သော၊ ဝါ-ဒုသီလဖြစ်ကုန်သော၊ပုဂ္ဂလာနံ-တို့ကို၊ ယော နိဂ္ဂဟော - အကြင် နှိပ်ခြင်းသည်၊ (အတ္ထိ၊ ) သွေဝ – ထို နှိပ်ခြင်းသည်ပင်၊ ဧတေသံ-၍ ပေသလရဟန်းတို့၏၊ ဖါသုဝိဟာရော-ချမ်းသာစွာ နေရကြောင်း

သန္ဒိဟမာနာ ॥ ॥ "သန္ဒေဟ" သဒ္ဒါသည် ယုံမှားသံသယအနက်ကို ဟော၏၊ သံပုဗ္ဗ+ဒိဟဓာတ်, ဏပစ္စည်းတည်း၊ ဤနေရာ၌လည်း ဘူဝါဒိ အပစ္စည်း, မာနပစ္စည်း ဖြင့် "သန္ဒိဟမာနာ"ဟု ဖြစ်စေ, ဇကို ဧဝုဒ္ဓိပြု၍"သန္ဒေဟမာနာ"ဟု ဖြစ်စေ, ဤ ၂ မျိုး သာရှိသင့်၏၊ "သန္ဒိဋ္ဌမာနာ"ကား ပါဌ်ပျက်သာ။ ["အပ္ပက္ခရ မသန္ဒိဋ္ဌံ" ဟူရာ၌ကား တ-ပစ္စည်းဖြစ်၍ သန္ဒေဒ္ဓါပုဒ်ကဲ့သို့"အသန္ဒိဋ္ဌံ"ဟု ရှိရသည်၊ မာနပစ္စည်း၏ရှေ့က တ- ပစ္စည်းလည်း မနေရသောကြောင့် "သန္ဒိဋ္ဌမာနာ"ဟု လည်း မရှိသင့်။]

ဖါသုဝိဟာရာယ ॥ ॥ ရှေ့၌ သုခဝိဟာရတ္ထာယသည် ဣရိယာပုထ် ၄ ပါး၌ သွားလာနေထိုင်ရာဝယ် ကိုယ်စိတ်ချမ်းသာခြင်းတည်း၊ ဤ " ဖါသုဝိဟာရ " ကား သိက္ခာပုဒ်ကို ကျင့်ဘို့ရန်အားထုတ်ရာ၌ ကိုယ်စိတ် ၂ ပါး၏ ချမ်းသာခြင်းတည်း။

သည်၊ (ဟောတိ-၏၊) ဟိ ချဲ၊ ဒုဿီလပုဂ္ဂလေ-တို့ကို၊ နိဿာယ-မှီ၍၊ ဥပေါသထော-ဥပုသ်ကံသည်၊ နတိဋ္ဌတိ-မတည်၊ ပဝါရဏာ-ပဝါရဏာကံသည်၊ နတိဋ္ဌတိ-မတည်၊ သံဃကမ္မာနိ - ကြွင်းသောသံဃကံတို့သည်၊ [ပါဠိသေသနည်းအားဖြင့် ဥပုသ်ပဝါရဏာမှ ကြွင်းသောကံကိုသာယူ။ ] နပဝတ္တန္တိ- နိ၊ သာမဂ္ဂီ - ညီညွတ်သောပုဂ္ဂိုလ်တို့၏ အဖြစ်သည်၊ ဝါ- သံဃာ၏ညီညွတ်ခြင်းသည်၊ [သမဂ္ဂါနံ+ဘာဝေါ သာမဂ္ဂီ ( ဤပစ္စည်း ထပ်သက်)၊ ] န ဟောတိ- မဖြစ်၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ အနေကဂ္ဂါ-တခုထည်းသော အာရုံရှိသောစိတ် မရှိကုန်သည်၊ ဝါ-မတည်ကြည်ကုန်သည်၊ (ဟုတ္ဝာ)ဥဒ္ဒေသပရိပုစ္ဆာ ကမ္မဋ္ဌာနာဒိနိ-ပါဠိကိုသင်ယူခြင်း, အဋ္ဌကထာကို အဖန်ဖန်မေးခြင်း,ကမ္မဋ္ဌာန်း စီးဖြန်းခြင်း အစရှိသည်တို့ကို၊ အနုယုဉ္ဇိတုံ-အားထုတ်ခြင်းငှါ၊ န သက္ကောန္တိ -မစွမ်းနိုင်ကုန်၊ ပန-အန္ဓယကား၊ ဒုဿီလေသု- တို့ကို၊ နိဂ္ဂဟိတေသု- နှိပ်အပ်ကုန်ပြီးသော်၊ သဗ္ဗောပိ-သော၊ အယံ ဥပဒ္ဒဝေါ-ဤ ဘေးရန်သည်၊ န ဟောတိ- မဖြစ်တော့၊ တတော- ထိုသို့ ဘေးရန် မဖြစ်ခြင်းကြောင့်၊ ပေသလာ-နိသော၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ ဖာသု-စွာ၊ ဝိဟရန္တိ-နေကြရကုန်၏၊ ဧဝံ-လျှင်၊ ပေသလာနံ ဘိက္ခူနံ ဖာသုဝိဟာရာယာတိ ဧတ္ထ-၌၊ ဒွိဓာ- ၂ ပါးအပြားအားဖြင့်၊ [ပိယသီလာဟိဘိက္ခူ-စသည်ဖြင့် ပြအပ်သောနည်း,ယောဝါ ဒုမ္မင်္ကူနံ- စသည်ဖြင့် ပြအပ်သောနည်းအားဖြင့်၊] အတ္တော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

ဒိဋ္ဌဓမ္မိကာနံ အာသဝါနံ သံဝရာယာတိ(ဧတ္တ)-၌၊ ဒိဋ္ဌဓမ္မိကာ-မျက်မှောံဘဝ၌ ဖြစ်ကုန်သော၊ အာသဝါနာမ- အကြောင်းအားလျော်စွာ ဖြစ်ပေါ်လာသောဘေးရန်တို့ မည်သည်၊ အသံဝရေ - မစောင့်စည်းခြင်း၌၊ ဌိတေန- တည်သောရဟန်းသည်၊ တသ္မိံယေဝ အတ္တဘာဝေ-ထို အတ္တဘော၌ပင်၊ ပတ္တဗ္ဗာ-ရောက်ထိုက်ကုန်သော၊ ပါဏိပ္ပဟာရ၊ပေ၊ဝိပ္ပဋိသာရာဒယော-လက်ဖြင့် ပုတ်ခတ်ခြင်း,ဒုတ်ဖြင့်ရိုက်ခြင်း, လက်ကိုဖြတ်ခြင်း, ခြေကိုဖြတ်ခြင်း,အကျော်အစောမရှိခြင်း , အခြွေအရံမရှိခြင်း , နှလုံးမသာယာခြင်း အစရှိကုန်သော၊

**အာသဝါနံ။** ။အာသဝပုဒ်၏ အနက်ကို ဝိနယပညတ္တိယာစနခဏ်း "အာသဝဋ္ဌာနီယာ ဓမ္မာ " ပုဒ်၌ ဖွင့်ခဲ့ပြီ၊ ဝိနည်းပညတ်တော်မရှိလျှင် မေထုန်မှ အဒိန္နာဒါနမှု စသည်ကိုပြုကြလိမ့်မည်၊ ထိုသို့ ပြုမှုကြောင့် ယခုဘဝ၌ လက်-ဒုတ်စသည်ဖြင့် အနှိပ်စက်ခံရခြင်း, လက်ခြေ အဖြတ်ခံရခြင်းစသော ဘေးများဖြစ်နိုင်၏၊ နောင်သံသရာ၌လည်း အပါယ်ဘေးနှင့် အဆက်ဆက်ဝဋ်ပါခြင်း ဘေးများဖြစ်နိုင်သည်။ [ သမ္မုခါဂရဟဏံ (မျက်မှောက်အကဲ့ရဲ့ခံရခြင်းသည်) အကိတ္တိ၊ ပရမ္မုခါဂရဟဏံ အယသော၊ အထဝါ သမ္မုခါ ပရမ္မုခါ ဂရဟဏံ အကိတ္တိ၊ ပရိဝါရဟာနိ (အခြွေအရံဆုတ်ယုတ်ခြင်းသည်) အယသောတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ။]

ဒုက္ခဝိသေသာ-ဒုက္ခအထူးတို့တည်း၊ ဇာတိ-သို့၊ ဒိဋ္ဌဓမ္မိကာနံ-န်သော၊ ဇာမေ သံ အာသဝါနံ-၏ အကြောင်းအားလျော်စွာ ဖြစ်ပေါ်လာသော ဘေးရန်တို့ကို၊ သံဝရာယ-စောင့်စည်းခြင်းငှါ၊ ပိဓာနာယ-ပိတ်ခြင်းငှါ၊ အာဂမန မဂ္ဂ ထကနာယ-လာကြောင်းလမ်းကို ပိတ်ခြင်းငှါ၊ (သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမိ၊) ဇာတိအတ္ထော-နက်။

သမ္ပရာယိ၊ပေ၊ပဋိဃာတာယာတိ (ဧတ္ထ) -၌၊ သမ္ပရာယိကာ - တမလွန်ဘဝ၌ဖြစ်ကုန်သော၊ အာသဝါနာမ- တို့မည်သည်၊ အသံဝရေ-၌၊ ဌိတေန-တည်သူသည်၊ကတပါပကမ္မမူလကာ-ပြုအပ်သောမကောင်းမှုကံလျှင် အရင်းခံရှိကုန်သော၊ သမ္ပရာယေ - ၌၊ နရကာဒီသု- ငရဲ အစရှိသည်တို့၌၊ ပတ္တဗ္ဗာ-ရောက်ထိုက်ကုန်သော၊ ဒုက္ခဝိသေသာ - တို့တည်း၊ တေသံ - ထို တမလွန်ဘဝ၌ ဖြစ်သော ဒုက္ခအထူးတို့၏၊ ဝါ-တို့ကို၊ ပဋိဃာတတ္ထာယ-ပယ်ဖျောက်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ ပဋိပဿမ္ဘနတ္ထာယ – ငြိမ်းခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဝူပသမတ္ထာယ – နောက်ထပ်မပေါ်လာအောင် ငြိမ်းခြင်းအကျိုးငှါ၊(သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမိ၊) ဇာတိဝုတ္တံ ဟောတိ။

အပ္ပသန္နာနံ ပသာဒါယာတိ(ဧတ္ထ)-၌၊ (ဂူဠတ္ထံ-လျှို့ဝှက်အပ်သောအနက်ကို၊ ဟိ,ဥဒ္ဓရိတွာဒဿေမိ-ထုတ်၍ပြဦးအံ့၊) သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ-သိက္ခာပုဒ်ပညတ်ခြင်းသည်၊ သတိ-သော်၊ သိက္ခာပဒပညတ္တိံ - ပညတ်အပ်သော သိက္ခာပုဒ်တော်ကို၊ ဉတ္တွာဝါ-သော်ငှင်း၊ ယထာပညတ္တံ-အကြင်အကြင် ပညတ်အပ်သည့်အတိုင်း၊ ပဋိပဇ္ဇမာနေ–ကျင့်နေကုန်သော၊ ဘိက္ခူ-တို့ကို၊ ဒိသွာဝါ–သော်ငှင်း၊ အပ္ပသန္နာ – မကြည်ညိုသေးကုန်သော၊ ယေ ပဏ္ဍိတမနုဿာ–အကြင် ပညာရှိလူတို့သည်၊ (သန္တိ)၊ တေပိ - ထို ပညာရှိလူတို့သည်လည်း၊ [ ပသာဒံအာပဇ္ဇန္တိ - ၌စပ်၊] လောကေ-၌၊ မဟာဇနဿ- ၏၊ ယာနိ ရဇ္ဇန ဒုဿန မုယှနဋ္ဌာနာနိ- အကြင် နှစ်သက်ခြင်း၏တည်ရာ, အမျက်ထွက်ခြင်း၏ တည်ရာ, တွေဝေခြင်း၏တည်ရာအာရုံတို့သည်၊ (သန္တိ)၊ [မေထုနာဒီနိ ရဇ္ဇနဋ္ဌာနာနိ၊ ပါဏာတိပါတာဒီနိ ဒုဿနဋ္ဌာနာနိ၊ - ဋီကာ၌ မုယှနဋ္ဌာနမပါ၊ "သုရာပါနာဒီနိ မုယှနဋ္ဌာနာနိ" ဟု ထည့်သင့်၏။] တေဟိ - ထို အာရုံတို့မှ၊

**ပဋိဃာတတ္ထာယ**။ ။ဤပဋိဃာတကိုပင်"ပဋိပဿမ္ဘန,ဝူပသမ"ဟုထပ်ဖွင့်သည်၊ "သမ္ပရာယိကဒုက္ခကို ယခုဘဝက ပယ်သတ်ခြင်း" ဟူသည် ထို ဒုက္ခများ မပေါ်လာအောင် အကုသိုလ်ကို ငြိမ်းစေခြင်းပင်တည်း – ဟူလို၊ ပဋိပဿမ္ဘနဖြင့် ယခုဖြစ်ဘွယ်အကုသိုလ်ကို ငြိမ်းစေပုံကိုပြ၏၊ ဝူပသမဖြင့် နောက်ထပ်မပေါ်အောင် ငြိမ်းစေပုံကိုပြ၏-ဟု ကြံပါ။

သကျပုတ္တိယာ - သာကီဝင်မင်းသား ဘုရားသားတော်ဖြစ်ကုန်သော၊ ဥမေ သမဏာ – တို့သည်၊ အာရကာ – ဝေးစွာ၊ ဝိရတာ– ရှောင်ကြဉ်ကုန်သည်၊ (ဟုတ္ဂ)၊ ဝိဟာချန္တိ ဝတ-နေနိုင်ကြပါပေကုန်စွ့တကား၊ ဒုက္ကရံ-ခဲယဉ်းသဖြင့် ပြုအပ်သောအမှုကို၊ ကရောန္တိ ဝတ- ပြုနိုင်ကြပါပေကုန်စွ့တကား၊ ဘာရိယံ- ဝန်လေးသောအမှုကို၊ ကရောန္တိ ဝတ-တကား၊ ဣတိ-ဤသို့တွေး၍၊ ပသာဒံ- သို့၊ အာပဇ္ဇန္တိ-နိ၏၊ (ကောဝိယ- အဘယ်သူကဲ့သို့နည်း၊) ဝိနယပိဋကေ-၌၊ ပေါတ္ထကံ- ပေစာကို၊ ဒိသွာ- ၍၊ မိစ္ဆာဒိဋ္ဌိကော- မိစ္ဆာအယူရှိသော၊ ကတ ဝေဒီ-ပြုအပ်သောကျေးဇူးကို သိလေ့ရှိသော၊ မြာဟ္မဏော–သည်၊ (ပသာဒံ- သို့၊ အာပဇ္ဇတိ)ဝိယ-ကဲ့သို့တည်း၊ တေန-ကြောင့်၊ အပ္ပသန္နာနံ ပသာဒါယာ တိ-ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ-သည်၊) ဝုတ္တံ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ။

ပသန္နာနံ ဘိယျောဘာဝါယာတိ- ကား၊ သာသနေ- တော်၌၊ ပသန္နာ– ကြည်ညိုပြီးကုန်သော၊ ယေ ကုလပုတ္တာ-တို့သည်၊ (သန္တိ)၊ တေပိ-ထို အမျိုး ကောင်းသားတို့သည်လည်း၊ [''ယေပိ အပ္ပသန္နာ, တေ'' တုန်းကကဲ့သို့''တေ သိက္ခာပဒပညတ္တိံ''ဟု ဝိမပါဘဲ ရှိသင့်၏ ]သိက္ခာပဒပညတ္တိံ-ကို၊ ဉ တွာဝါ- သော်၎င်း၊ ယထာပညတ္တံ - အတိုင်း၊ ပဋိပဇ္ဇမာနေ - နိသော၊ ဘိက္ခူ-တို့ကို၊ ဒိသွာဝါ-သော်၎င်း၊ ယေ-အကြင် အရှင်တို့သည်၊ ယာဝဇီဝံ-အသက်အပိုင်း အခြားအတိုင်း၊ ဝါ- အသက်ရှည်သမျှ၊ ကေသေယံ - တယောက်ထည်းသာ အိပ်ရခြင်းရှိသော၊ [ တချို့စာ၌ '' ကေသေယံ '' ကျသည်၊ ] ကေဘတ္တံ- တထပ်ထည်းသောနံနက်စာရှိသော၊ မြဟ္မစရိယံ-မြတ်သောအကျင့်ကို၊ ဝိနယ သံဝရံ- စောင့်စည်းအပ်သောဝိနည်းကို၊ အနုပါလေန္တိ-အစဉ် စောင့်ရှောက်ကြ ကုန်၏၊ (တေ) အယျာ - တို့သည်၊ အဟော ဒုက္ကရကာရိနော- ဩော် ခဲယဉ်း သဖြင့် ပြုအပ်သောအမှုကို ပြုနိုင်ကြပါပေကုန်စွ၊ ဣတိ- ဤသို့တွေး၍၊ ဘိယျော ဘိယျော-လွန်စွာ့လွန်စွာ၊ ဝါ–တိုး၍တိုး၍၊ ပသီဒန္တိ- နိ၏၊ တေန-ကြောင့်၊ ပသန္နာနံ ဘိယျောဘာဝါယာတိ-ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ- ပြီ။

သဒ္ဓမ္မဋ္ဌိတိယာတိ (ဧတ္ထ)-၌၊ သဒ္ဓမ္မော–သည်၊ ပရိယတ္တိသဒ္ဓမ္မော- မွ၎င်း၊ ပတိပတ္တိသဒ္ဓမ္မော– ၎င်း၊ အဓိဂမသဒ္ဓမ္မော– ၎င်း၊ ဝါ- ပတိဝေဓသဒ္ဓမ္မ၎င်း၊ ဣတိ-သို့၊ တိဝိဓော-၃ ပါးအပြားရှိ၏၊ တတ္ထ-တို့တွင်၊ ပိဋကတ္တယ သင်္ဂဟိတံ- ပိဋကတ် ၃ ပုံဖြင့် သိမ်းယူအပ်သော၊ သဗ္ဗမ္ပိ-သော၊ ဗုဒ္ဓဝစနံ-သည်၊ ပရိယတ္တိ သဒ္ဓမ္မောနာမ-မည်၏၊ တေရသ-နိသော၊ ဓုတဂုဏာ-ကိလေသာတို့ကိုလှုပ်ခါ တတ်သောပုဂ္ဂိုလ်၏ ဂုဏ်တို့၎င်း၊ ဝါ - ဓုတင်တို့၎င်း၊ စုဒ္ဒသ - နိသော၊ ခန္ဓက ဝတ္တာနိ - ဝတ်တို့၎င်း၊ [ စူဠဝါ - ဝဂ္ဂက္ခန္ဓကာ၌လာသော ဝတ် ၁၄ ပါး] ဒွေ

အသီတိ-၈၂ ပါးသော၊ မဟာဝတ္တာနိ-ဝတ်ကြီးတို့ငှး၊ [တဇ္ဇနီယကံစသည်
ပြုခိုက်၌ ကျင့်ရသောဝတ်ကြီးများ။]သီလ သမာဓိ ဝိပဿနာ-ဈာနာတို့ငှး၊
ဥတိအယံ - ဤ အလုံးစုံသည်၊ ပတိပတ္တိသဒ္ဓမ္မောနာမ- မည်၏၊ စတ္တာရော-
န်သော၊ အရိယမဂ္ဂါ- တို့ငှး၊ စတ္တာရိ- န်သော၊ သာမညဖလာနိစ- တို့ငှး၊
ဝါ- ရဟန်းအစစ်၏ဖြစ်ကြောင်း ဖိုလ် ၄ ပါးတို့ငှး၊ [ သမဏဿ-သမဏ
အစစ်၏+ဘာဝေါ သာမညံ၊ ] နိဗ္ဗာနဥ္စ- ငှး၊ ဥတိအယံ - သည်၊ အဓိဂမ
သဒ္ဓမ္မောနာမ - မည်၏၊ ဝါ - ထိုးထွင်း၍သိအပ်သော ပတိဝေဓသဒ္ဓမ္မမည်၏၊
သော သဗ္ဗောပိ-ထို အလုံးစုံသောသဒ္ဓမ္မသည်လည်း၊ [တသ္မာပြင်ဘက်က စိရ
ဋ္ဌိတိကော ဟောတိ-၌စပ်၊] ယသ္မာ - ကြောင့်၊ သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ-သည်၊
သတိ-သော်၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ သိက္ခာပဒဥ္စ-ကိုငှး၊ တဿ-ထို သိက္ခာပုဒ်၏၊
ဝိဘင်္ဂဥ္စ-အကျယ်ဝေဘန်ကြောင်း ပဒဘာဇနီကိုငှး၊ တဒတ္တဇောတနတ္ထံ-ထို
သိက္ခာပုဒ် , ဝိဘင်း၏ အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို ထွန်းပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ အညံ-
သော၊ ဗုဒ္ဓဝစနံစ-ကိုငှး၊ ပရိယာပုဏန္တိ-သင်ယူကြကုန်၏၊ (ဤစကားဖြင့်
ပရိယတ္တိသဒ္ဓမ္မကိုပြ၏၊)ယထာပညတ္တဥ္စ-အကြင်အကြင် ပညတ်တော်အတိုင်း
လည်း၊ ပဋိပဇ္ဇမာနာ - ကျင့်ကုန်လျက်၊ ပတိပတ္တိံ - ကို၊ ပူရေတွာ- ၍၊ (ဤ
စကားဖြင့် ပတိပတ္တိသဒ္ဓမ္မကိုပြ၏၊) ပတိပတ္တိယာ-ဖြင့်၊ အဓိဂန္တဗ္ဗံ- ရထိုက်
သော၊ လောကုတ္တရဓမ္မံ - ကို၊ ဝါ - လောကုတ္တရာတရားဟူသော ပတိဝေဓ
သဒ္ဓမ္မကို၊ အဓိဂစ္ဆန္တိ - ရကြကုန်၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ( သိက္ခာပဒပညတ္တိ
ရှိလျှင် ၃ ပါးသောသဒ္ဓမ္မကို ရနိုင်သောကြောင့်၊ ) သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ-
သိက္ခာပုဒ်ကိုပညတ်ခြင်းကြောင့်၊ စိရဋ္ဌိတိကော-ကြာမြင့်စွာ တည်ခြင်းရှိသည်၊
ဟောတိ-၏၊ တေန-ကြောင့်၊ သဒ္ဓမ္မဋ္ဌိတိယာတိ- ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ၊) ဝုတ္တံ-
ပြီ။ [ တသ္မာကို အကျယ်အနက်ပေးလျှင် သိက္ခာပဒပညတ္တိ ပါဝင်သွားသော
ကြောင့် တသ္မာနေရာ၌ " သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ " ရှိနေခြင်းသည် ပိုဟန်တူ၏၊
အင်္ဂုတ္တရ, ဒသက-ဥပါလိဝဂ် အဋ္ဌကထာ၌လည်း ပိုသည်။]

ဝိနယာနုဂ္ဂဟာယာတိ (စသော)-၌၊ (ဂူဠှတ္ထံ,ဟိ ဥဒ္ဓရိတွာ ဒဿေမိ)သိက္ခာ
ပဒပညတ္တိယာ - သည်၊ သတိ- သော်၊ သံဝရဝိနယောစ - သံဝရဝိနည်းငှး၊

**သံဝရဝိနယော**။ ။သီလ,သတိ, ဉာဏ,ခန္တိ, ဝီရိယဟူသော သံဝရ ၅ ပါးကိုပင်
" ယထာသကံ သံဝရိတဗ္ဗာနံ ဝိနေတဗ္ဗာနဥ္စ ကာယဒုစ္စရိတာဒီနံ သံဝရဏတော သံဝ
ရော, ဝိနယနတော ဝိနယောတိစ ဝုစ္စတိ=မိမိဆိုင်ရာ စောင့်ရှောက်ထိုက် ပယ်ရှားထိုက်
သော ကာယဒုစရိတ်စသည်တို့ကို စောင့်ရှောက်တတ် ပယ်ရှားတတ်သောကြောင့် သံဝရ
ဟု ငှး ဝိနယဟု ငှး ဆိုအပ်၏ "၊ဤအဖွင့်ကြည့်၍ သံဝရနှင့်ဝိနယကို အရတူဟု မှတ်။

ပဟာန ဝိနယောစ - ၎င်း၊ သမထဝိနယောစ–၎င်း၊ ပညတ္တိဝိနယောစ-၎င်း၊ ဣတိ-သို့၊ စတုဗ္ဗိဓောပိ–သော၊ ဝိနယော - သည်၊ ဝါ-ကို၊ အနုဂ္ဂဟိတော-ချီးမြှောက်အပ်သည်၊ ဥပတ္ထမ္ဘိတော - ထောက်ပံ့အပ်သည်၊ သုပတ္ထမ္ဘိတော-ကောင်းစွာထောက်ပံ့အပ်သည်၊ဟောတိ-၏၊ တေန-ကြောင့်၊ ဝိနယာနုဂ္ဂဟာယာတိ-ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ-ပြီ။

စ-ဆက်၊ သဗ္ဗာနေဝ- အလုံးစုံသာလျှင်ဖြစ်ကုန်သော၊ ဧတာနိ ပဒါနိ-၌ သံယသုဋ္ဌုတာယအစရှိသော ပုဒ်တို့ကို၊ သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမီတိ ဣမိနာ ဝစနေန- ဿာမိဟူသော၍စကားနှင့်၊ သဒ္ဓိံ -ကွ၊ ယောဇေတဗ္ဗာနိ- ယှဉ်စေထိုက်ကုန်၏၊တတြ-ထိုသို့ယှဉ်စေရာ၌၊အယံ-၌ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ပဌမပဒ္ဓိမပဒယောဇနာ- ပဌမပုဒ်နောက်ဆုံးပုဒ်တို့ကိုယှဉ်စေခြင်းတည်း၊ ဝါ- ယှဉ်စပ်၍ပြခြင်းတည်း၊[အာဒိအန္တဒီပကနည်း,မိဂပဒဝလဥ္ဇန နည်းအားဖြင့် အစနှင့်အဆုံးကို ယှဉ်စပ်၍ ပြမည် - ဟူလို၊ ] သံယသုဋ္ဌုတာယ - သံဃာအများ၏ကောင်းပါပြီဘုရား ဟု စကားတော်ကို လက်ခံနိုင်သည်၏ အဖြစ် အကျိုးငှါ၊ သိက္ခာပဒံ - ကို၊ ပညပေဿာမိ - အံ့၊ ဝိနယာနုဂ္ဂဟာယ - သံဝရပဟာန, သမထပညတ်, ၄ ရပ်သော ဝိနည်းကို ချီးမြှောက်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ သိက္ခာပဒံ ပညပေဿာမိ၊ ဣတိအယံ-ကား၊ ( ပဌမ ပဒ္ဓိမ ပဒယောဇနာ-တည်း။)

အပိစ–သည်သာမကသေး၊ ဧတ္ထ–၌သံယသုဋ္ဌုတာယ အစရှိသောပုဒ်တို့၌၊ ယံ သံယသုဋ္ဌု – အကြင် သံဃာအများ၏ ကောင်းပါပြီဘုရား ဟု စကားတော်ကိုလက်ခံနိုင်ခြင်းသည်၊ (အတ္ထိ)၊ တံ- ထို သံဃာအများ၏ ကောင်းပါပြီဘုရားဟု စကားတော်ကို လက်ခံနိုင်ခြင်းသည်၊ သံဃဖါသု– သံဃာအများ၏ ဣရိယာပုထ် ၄ ဖြာ ချမ်းသာစွာနေနိုင်ကြောင်းသည်၊ (ဟောတိ)၊ ယံ သံဃဖါသု-ခြင်းသည်၊ (အတ္ထိ)၊ တံ– သည်၊ ဒုမ္မင်္ကူနံ - ခဲယဉ်းသဖြင့် အရှိန်အဝါမဲ့သူတို့၏အဖြစ်သို့ ရောက်စေအပ်ကုန်သော၊ ပုဂ္ဂလာနံ-ဒုဿီလပုဂ္ဂိုလ်တို့ကို၊

ပဟာနဝိနယော ။ ။ တဒင်္ဂစသော ပဟာန် ၅ ပါးကိုပင် “ ယသ္မာ စာဂင္ဂေန ပဟာနံ,ဝိနယနင္ဂေန ဝိနယော-အကြင့်ကြောင့် စွန့်ခြင်းအနက်ကြောင့် ပဟာန,ပယ်ရှားခြင်းအနက်ကြောင့် ဝိနယမည်၏၊ တသ္မာ” ပဟာနဝိနယောတိ ဝုစ္စတိ။ [ပဇဟတီတိ ပဟာနံ၊ ပဟာနဉ္စ+တံ+ဝိနယောစာတိ ပဟာနဝိနယော။]

သမထ, ပညတ္တိ ။ ။ သမထဝိနယော – သတ္တ အဓိကရဏသမထာ၊ ပညတ္တိဝိနယော-သိက္ခာပဒမေဝ၊ သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ ဟိ ဝိဇ္ဇမာနာယဧဝ (သိက္ခာပုဒ်ပညတ်မှုရှိမှသာ ) သိက္ခာပဒ သမ္ဘဝတော( သိက္ခာပုဒ်ပါဠိတော်၏ ရှိသင့်သောကြောင့် )ပညတ္တိဝိနယောပိ သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ အနုဂ္ဂဟိတော ဟောတိ=ပညတ်အပ်သောသိက္ခာပုဒ်ခေါ် ဝိနည်းတော်ကိုလည်း သိက္ခာပုဒ်ပညတ်ခြင်းဖြင့် ချီးမြှောက်အပ်ရာရောက်သည်။

နိဂ္ဂဟာယ-နှိပ်ခြင်းငှါ၊ (ဟောတိ)၊ ဣတိဧဝံ-သို့၊ သန်လိကနယံ-သံကွင်းဆက်နည်းကို၊ (ကတ္တာစ - ပြု၍ရင်း၊) ယံ သံဃသုဋ္ဌု - သည်၊ (အတ္ထိ)၊ တံ-သည်၊ သံဃဖါသု-သည်၊ (ဟောတိ၊)ယံ သံဃသုဋ္ဌု (အတ္ထိ)၊ တံ ဒုမ္မင်္ကူနံ ပုဂ္ဂလာနံ နိဂ္ဂဟာယ (ဟောတိ)၊ ဣတိဧဝံ- သို့၊ ဧကေကပဒမူလိကံ - တပုဒ်တပုဒ်လျှင် အရင်းခံရှိသော၊ ဒသကခ္ခတ္တုံ-ဆယ်ကြိမ်၊ ယောဇနံ- ယှဉ်စေခြင်းကို၊ ကတ္တာစ-၍ရင်း၊ ပရိဝါရေ-ပရိဝါပါဠိတော်၌၊ အတ္ထသတံပေယျပကရဏောတိ-ဟူသော၊ ယံ -အကြောင်စကားကို၊ (သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တံသဗ္ဗံ-ထို အလုံးစုံသော

**သန်လိကနယံ ။** ။ သံဃသုဋ္ဌုနှင့် သံဃဖါသုကိုတွဲ, သံဃဖါသုနှင့် ဒုမ္မင်္ကုပုဂ္ဂလနိဂ္ဂဟကိုတွဲ၊ ဤသို့ စသည်ဖြင့် ရှေ့ရှေ့ပုဒ်ကို နောက်နောက်ပုဒ်နှင့်တွဲ၍ ပြခြင်းကို သံကြိုးကွင်းချင်းဆက်ပုံနှင့် တူသောကြောင့် "သန်လိကနယ"ဟု ဆိုသည်၊ ဤ သန်လိကနယံ ကတ္တာကို ဝေဒိတဗ္ဗ၌စပ်။

**မှတ်ချက်။** ။ ဤ သန်လိကနည်း၌ " ယံ သံဃသုဋ္ဌုသည် အကြောင်း, တံ သံဃဖါသုသည် အကျိုး" ဤသို့ ခွဲသောအခါ အကြောင်း ၁၀ ပါး, အကျိုး ၁၀ ပါးရအောင် "ယံ ဝိနယာနုဂ္ဂဟာယသည် အကြောင်း, တံ သံဃသုဋ္ဌုသည် အကျိုး"ဟု နောက်ဆုံးပုဒ်မှ ရှေ့ဆုံးအစကို ပြန်၍လှည့်နည်းတိုင်အောင် ဆက်သွယ်ပါစေ၊ သံကြိုးကွင်းချင်းဆက်ရာ၌ အဆုံးကွင်းမှပြန်၍ အစကွင်းကို ဆက်ပုံမျိုးတည်း။

**ဝိမတိ ။** ။ ယော ဟိ သော ပရိဝါရေ ယံသံဃသုဋ္ဌု , တံ သံဃဖါသူတိ အာဒိံ ကတွာ, ယံ သဒ္ဓမ္မဋ္ဌိတိယာ, တံ ဝိနယာနုဂ္ဂဟာယာတိ ပရိယောသာနံ ခဏ္ဍစက္ကဝသေန ဝ သန်လိကနယော ဝုတ္တော၊ တသ္မိံ ( ထိုနည်း၌ ) ဧကမူလကနယေ အာဂတဗဒ္ဓစက္ကနယေန "ယံ ဝိနယာနုဂ္ဂဟာယ, တံ သံဃသုဋ္ဌု"တိ ဣဒမ္ပိ ယောဇေတွာ ဗဒ္ဓစက္ကေ ကတေ ပုရိမပုရိမာနိ ဒသ ဓမ္မပဒါနိ,ပစ္ဆိမပစ္ဆိမာနိ ဒသ အတ္ထပဒါနိစ ဟောန္တိ။

**ဧကေကမူလိကံ ။** ။ သံဃသုဋ္ဌုကိုမူတည်၍, သံဃဖါသုစသော ၉ ပါးကို မူလီသွတ်လျက် ၉ ဝါရ၊ ထိုအတူ သံဃဖါသုစသည်ကို မူတည်၍ ဒုမ္မင်္ကူနံ ပုဂ္ဂလာနံစသည်ကို မူလီသွတ်သောအားဖြင့် ၉ ဝါရစီရသောကြောင့် , အားလုံး ဝါရပေါင်း ၉၀ ဖြစ်၏၊ တဝါရလျှင် ရှေးရှေးအကြောင်း ၉ ပါး နောံနောံအကျိုး ၉ ပါးစီ ရှိရကား အကြောင်း ၉၀, အကျိုး ၉၀ ဖြစ်၏၊ သန်လိကနည်း၌ ပြခဲ့သော အကြောင်း ၁၀ ပါး အကျိုး ၁၀ ပါးနှင့် ပေါင်းသော် .... အတ္ထသတံ , ဓမ္မသတံ , ဒွေနိရုတ္တိသတာနိ , စတ္တာရိ ဉာဏသတာနိ, ဖြစ်၏။

**ဝိမတိ ။** ။ ဧကမူလကနယေ ပန ဧကသ္မိံဝါရေ နဝဝ အတ္ထပဒါနိ ဓမ္မပဒါနိစ လဗ္ဘန္တိ၊ ဧဝံ ဒသဟိ ဝါရေဟိ နဝုတိ အတ္ထပဒါနိ နဝုတိ ဓမ္မပဒါနိစ ဟောန္တိ၊ တာနိ သန်လိကနယေ ဝုတ္တေဟိ ဒသဟိ အတ္ထပဒေဟိ ဒသဟိ ဓမ္မပဒေဟိစ သဒ္ဓိံ ယောဇိတာနိ ယထာဝုတ္တံ အတ္ထသတံ ဓမ္မသတဉ္စ ဟောန္တီတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊ [ သာရတ္ထ၌ကား တမျိုးတွက်ပြသေး၏၊ ထို သာရတ္ထနည်းကို ဝိမတိပယ်လေသည်။ ]

စကားကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ [အတ္တဝသေ ပကရဏေ-အတ္တဝသအရာ၌၊ အတ္တ သတံ-အကျိုးတရာသည်ဖြင်း၊ ဓမ္မသတံ-အကြောင်းတရာသည်ဖြင်း၊ ဒွေ နိရုတ္တိ သတာနိစ-သဒ္ဒါ နှစ်ရာတို့သည်ဖြင်း၊ စတ္တာရိ ဉာဏသတာနိစ- ဉာဏ် ၄ ရာတို့ သည်ဖြင်း၊ (ဟောန္တိ- နိ၏၊ )] ပန - ဆက်၊ တံ ဇတံ-ထို အလုံးစုံသောစကား ရပ်ကို၊ [ဝဏ္ဏိတံ - ဖွင့်စပ်၊] ဝါ - သည်၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ ပရိဝါရေဃေဝ- တော်၌ပင်၊ အာဂတံ- ထင်ရှားစွာ၊ ဘဝိဿတိ- တံ့၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဣဓ-ဤ နေရာ၌၊ (မယာ) နဝဏ္ဏိတံ-မဖွင့်အပ်တော့ပြီ၊ ဣတိ-အပြီးတည်း။

ဇဝံ-ဤသို့၊ သိက္ခာပဒပညတ္တိယာ- သိက္ခာပုဒ် ပညတ်တော်မူခြင်း၏၊ အာနိ သံသံ – အကျိုးအဆက်ဆက်ကို၊ ဒဿေတွာ - မူပြီး၍၊ တသ္မိံ သိက္ခာပဒေ- ၌၊ ဘိက္ခူ[ဟိ-တို့သည်၊ ကတ္တဗ္ဗကိစ္စံ-ပြုထိုက်သောကိစ္စကို၊ဒီပေန္တော-မူလိုသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ ဝေဠုပန ဘိက္ခဝေ ဣမံသိက္ခာပဒံ ဥဒ္ဒိသေယျာထာတိ - ထဟူ၍၊ အာဟ- မူပြီ၊ ကိံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဘိက္ခဝေ- တို့၊ မယာ-သည်၊ ဣတိ - ဤဆို အပ်ပြီးသော သံဃသုဋ္ဌုတာယ အစရှိသော အစဉ်ဖြင့်၊ သန္ဓဿိတာနိသံသ= ကောင်းစွာပြအပ်ပြီးသော အကျိုးအာနိသင်ရှိသော၊ ဣမံ သိက္ခာပဒံ – ကို၊ ဇဝံ-ဤသို့၊ ပါတိမောက္ခုဒ္ဒေသေ-ပါတိမောက်ကို ရွတ်ပြရာအခါ၌၊ [ ဥပုသ် ပြုသောအခါ ပါတိမောက်ရွတ်ပြရာ၌၊]ဥဒ္ဒိသေယျာထစ-ရွတ်လည်းရွတ်ပြကြ ကုန်လော၊ ပရိယာပုဏေယျာထစ- ဆရာ့အထံ, နည်းနာခံ၍,သင်အံလည်း သင်အံကြကုန်လော၊ ဓာရေယျာထစ – အာဂုံ နှုတ်တက် ဆောင်ရွက်လည်း ဆောင်ရွက်ကြကုန်လော၊ အညေသံ-မိမိမှတပါး အခြားသူတို့အား၊[အာရော စနတ္ထသမ္ပဒါန်၊] ဝါ - တို့ကို၊ ဝါစေယျာထစ - ဆိုလည်းဆိုစေကြကုန်လော၊ ဝါ-ပို့ချလည်းပို့ချကြကုန်လော၊ ဣတိ (ဝုတ္တံ ဟောတိ၊)ဟိ-မှန်၏၊ [ပရိယာ ပုဏန စသော အနက်များကို ဖွင့်နိုင်ခြင်းသည် မှန်၏၊ ] ဧတ္ထ-ဤ ဥဒ္ဒိသေယျာ ထစ ဟူသော ပါဌ်၌၊ စသဒ္ဒေါ - သည်၊ အတိရေကာနယနတ္ထော - တိုက်ရိုက်

ဥဒ္ဒိသေယျာထစ။ ။ပါဠိတော်၌ "ဝေဠုပန"မှ စသဒ္ဒါကို ပုဒ်အစဉ်ရှိတိုင်း "ဝေဠု"ဟု မယှဉ်စေဘဲ အစဉ်ဖျက်၍ "ဥဒ္ဒိသေယျာထ"၌ ယှဉ်ပါစေ– ဟု ပြလို၍ "ဥဒ္ဒိသေယျာထစ"ဟု မိန့်။ [ဝေဠုပန ဘိက္ခဝေတိ ဧတ္ထ စသဒ္ဒေါ ဘိန္နက္ကမေန ယောဇေတဗ္ဗော တိ အာဟ–ဥဒ္ဒိသေယျာထစာတိ။] ဤနေရာ၌"ဘိန္နက္ကမ"ဟု သုံးစွဲထားသော်လည်း တချို့နေရာ၌ " အဋ္ဌာနပယောဂ – ယှဉ်သင့်ရာမဟုတ်သော နေရာ၌ သုံးစွဲခြင်း "ဟု ဆိုလေ့ရှိသည်။

**အတိရေကာနယနတ္ထောဟိ။** ။ပါဠိတော်၌ "ဥဒ္ဒိသေယျာထ"ဟု ကြိယာတပုဒ် ထည်းသာ ရှိပါလျက်"ပရိယာပုဏေယျာထ"စသောကြိယာ၏"သင်ယူခြင်း"စသော အနက်များကို အဘယ့်ကြောင့် ဆောင်ယူထားနိုင်ပါသနည်း– ဟု မေးဘွယ်ရှိရကား

ဆိုအပ်သော အနက်မှ အပိုအလွန်အနက်ကို ဆောင်ခြင်းအနက်ရှိ၏၊ တေန-ကြောင့်၊ အယံအတ္ထော - ဤပရိယာပုဏန စသောအနက်သည်၊ ဝါ - ကို၊ အာနီတော- ဆောင်အပ်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ဣတိ - ဤသို့မှတ်အပ်၏။

ဣဒါနိ-၌၊ ယံ-အကြင် သိက္ခာပုဒ်ကို၊ ဣမံ သိက္ခာပဒန္တိ - ဣမံ သိက္ခာပဒံ ဟူ၍၊ ( ဘဂဝတာ၊ ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တံ - ထို သိက္ခာပုဒ်ကို၊ ဒဿေန္တော - သည်၊ (ဟုတ္វာ)၊ ယောပန ဘိက္ခု ၊ပေ၊ အသံဝါသောတိ-ဟူ၍၊ အာဟ-မူပြီ၊ ဧဝံ-လျှင်၊ မူလစ္ဆေဇ္ဇဝသေန-သာသနာတော်ဝယ် အမြစ်အရင်းပြတ်ခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဒဠှံ-ခိုင်မြဲသည်ကို၊ ကတွာ-၍၊ ပဌမပါရာဇိကေ- ပဌမပါရာဇိက သိက္ခာပုဒ်ကို၊ ပညတ္တေ-ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးသော်၊အပရမ္ပိ-အခြားလည်းဖြစ်သော၊ အနုပညတ္တတ္ထာယ - နောက်ထပ် ပညတ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ မက္ကဋီဝတ္ထု - မက္ကဋီဝတ္ထုသည်၊ ဥဒပါဒိ-ထင်ရှားဖြစ်ပြီ၊ တဿ - မက္ကဋီဝတ္ထု၏၊ ဥပ္ပတ္တိဒီပနတ္ထံ-ဖြစ်ပုံကို ပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဧဝဉ္စိဒံ ဘဂဝတာ၊ပေ၊ဟောတီတိ-ဟူသော၊ ဧတံ-ဤစကားကို၊ ( သံဂီတိကာရေဟိ၊ ) ဝုတ္တံ - ပြီ၊ [ ဧဝဉ္စိဒံ - စသော စကားကို နောက်ထပ် အနုပညတ်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်တို့၌ အမြဲသုံးသည်။ ] တဿ - ထို ဧဝဉ္စိဒံ ဘဂဝတာ အစရှိသော စကားရပ်၏၊ အတ္ထော-ကို၊ (ဧဝံ-ဤဆိုအပ်လတ္တံ့သော နည်းဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊) ဘဂဝတာ-သည်၊ ဘိက္ခူနံ-တို့အို၊ ဣဒံ သိက္ခာပဒံ- သည်၊ ဝါ-ကို၊ ဧဝံ-သို့၊ ပညတ္တံစ ဟောတိ - ပညတ်အပ်ပြီးသည်လည်း ဖြစ်၏၊ ဝါ-ပညတ်အပ်ပြီးလည်း ဖြစ်ကရော၊ အညံ- မူလဝတ္ထုမှ တပါးသော၊ ဣဒံ ဝတ္ထု - ဤ မက္ကဝဋီတ္ထုသည်၊ ဥဒပါဒိစ - ထင်ရှားလည်း ဖြစ်ပေါ်လာပြီ၊ ဝါ-ထင်ရှားလည်း ဖြစ်ပေါ်လာရော၊ ဣတိ (အတ္ထော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။) [ ဣဒဉ္စာတိ စသဒ္ဒေါ ဥဒပါဒိစာတိ ယောဇေတဗ္ဗော၊— ယောဇနာ။ ] ပဌမပညတ္တိကထာ - ပဌမပညတ်ကို ဖွင့်ဆိုရာ ဖွင့်ဆိုကြောင်း အဋ္ဌကထာသည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီးပြီ။

" အတိရေကာနယနတ္ထော ဟိ " စသည်ကိုမိန့်၊ စသဒ္ဒါက အပိုအလွန် အနက်များကို ဆောင်ယူနိုင်သောကြောင့် သင်ယူခြင်းစသော အနက်များကို ဆောင်ယူနိုင်သည်— ဟူလို။ [အတိရေကဿ-အပိုအလွန်ကို + အာနယနံ — ဆောင်ယူခြင်း၊ အတိရေကာနယနံ+အတ္ထော ယဿာတိ အတိရေကာနယနတ္ထော၊ ဤအတိရေကာနယနတ္ထဟူသည် အခြားနေရာ၌ သုံးရိုးဖြစ်သော အဝုတ္တသမုစ္စယတ္ထပင်တည်း။

**ဒဠှံကတွာ**။ ။"အသံဝါသော — ပေါင်းသင်းခွင့်မရတော့"ဟု မိန့်တော်မူသည့်အတွက် "ဒဠှံကတွာ— တင်းတင်းကြပ်ကြပ်ပြု၍"ဟု ဆိုသည်၊ [အသံဝါသောဥတိ ဝုတ္တတ္တာ ဒဠှံကတွာတိ ဝုတ္တံ။]

# မက္ကဋိဝတ္ထုအဖွင့်

ဣဒါနိ-၌၊ အညံ-မူလဝတ္ထုမှ တပါးသော၊ ယံတံဝတ္ထု-သည်၊ ဥပ္ပန္နံ-ပြီ၊ တံ-ထိုဝတ္ထုကို၊ ဒဿေတုံ- ၄၊ တေန ခေါ ပန သမယေနာတိအာဒိံ-ကို၊ (သံဂီတိကာရော-ထေရ်အပေါင်းသည်၊) အာဟ-ပြီ၊ တတြ-ထိုစကားရပ်၌၊ အယံ-ကား၊ အနုတ္တာနပဒဝဏ္ဏနာ- တည်း၊ မက္ကဋီ အာမိသေနာတိ-ကား၊ မဟာဝနေ-မဟာဝုန်၌ (တောကြီး၌၊) ဘိက္ခူနံ-တို့၏၊ ခန္တိမေတ္တာဒိ ဂုဏာနုဘာဝေန-ခန္တိမေတ္တာ အစရှိသောဂုဏ်တို့၏ အာနုဘော်ကြောင့်၊ နိရာသင်္ကစိတ္တာ– ယုံမှားသံသယနှင့် ယှဉ်သောစိတ် မရှိကြကုန်သည်၊ ဝါ–ရွံ့ရှားခြင်းကင်း, ရဲတင်းကြကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ [နတ္ထိ+အာသင်္ကာစိတ္တံ (ယုံမှားသံသယနှင့် ယှဉ်သောစိတ်) ယေသံတိ နိရာသင်္ကစိတ္တာ၊] ဗဟူ - န်သော၊ မိဂမောရကုက္ကုဋမက္ကဋာဒယော - သမင်, ဥဒေါင်း, ကြက်, မျောက် အစရှိကုန်သော၊ တိရစ္ဆာနာ- တို့သည်၊ ပဓာနာဂါရဋ္ဌာနေသု- ကမ္မဋ္ဌာန်းကျောင်း၏ တည်ရာအရပ်တို့၌၊ ဝိစရန္တိ-လှည့်လည်ကြကုန်၏၊ တတြ- ထို တိရစ္ဆာန်တို့တွင်၊ ဧကံ–သော၊ မက္ကဋိံ-မျောက်မကို၊ ယာဂုဘတ္တ ခဇ္ဇကာဒိနာ-ယာဂု, ထမင်း, ခဲဖွယ်အစရှိသော၊ အာမိသေန-ဖြင့်၊ ဥပလာပေတွာ-ချော့မြူ၍၊ ဝါ-ဖြားယောင်း၍၊ သင်္ဂဏှိတွာ-သိမ်းသွင်း၍၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ တဿာတိ-တဿာဟူသောသဒ္ဒါသည်၊ ဘုမ္မဝစနံ-သတ္တမီဝိဘတ် ရှိသောသဒ္ဒါတည်း၊ [သုတ်ကြီးဖြင့် သိမ့်ဝိဘတ်ကို သာပြု၊]ပဋိသေဝတီတိ-ကား၊ ပစုရပဋိသေဝနော-ကြိမ်ဖန်များစွာမှီဝဲခြင်းရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊[ဘူရိ ပဟူတံ ပစုရံ၊-အဘိဓာန်၊ ပစုရံ+ပဋိသေဝနံယဿာတိ ပစုရပဋိသေဝနော၊] ဟိ-မှန်၊ ပစုရတ္ထေ-ကြိမ်ဖန်များစွာဟူသောအနက်၌၊ ဝတ္တမာနဝစနံ – ဝတ္တမာန်ဝိဘတ်သည်၊ (ဟောတိ)၊ သော ဘိက္ခု။

**အနုတ္တာနပဒဝဏ္ဏနာ ။** ။ [ ဥတ္တာနပုဒ်နက်ကို သုဒိန္နကဏ္ဍအစဉ်၌ ပြခဲ့ပြီ။ ] ဥတ္တာနံဝုစ္စတိ ပါကဋံ၊ တပ္ပဋိပက္ခေန (ထို ဥတ္တာန၏ဆန့်ကျင်ဘက်အားဖြင့်) အနုတ္တာနံ အပါကဋံ၊ အပစုရဉ္စ – ထိုပုဒ်မျိုး အများအပြား ပါရှိသည်လည်း မဟုတ်သော၊ ဒုဗ္ဗိညေယျံစ–အသိလည်းခက်သောပုဒ်တည်း၊ အနုတ္တာနာနိစ+တာနိ+ပဒါနိစာတိ အနုတ္တာနပဒါနိ၊ တေသံ+ဝဏ္ဏနာ အနုတ္တာနပဒဝဏ္ဏနာ။

**ပစုရတ္ထေ။** ။ထိုအချိန်၌ မှီဝဲဆဲမဟုတ်သော်လည်း မှီဝဲခြင်းကိစ္စ၏ အကြိမ်များစွာဖြစ်နေသောကြောင့် ပစုရအနက်၌ “ပဋိသေဝတိ” ဟု ဝတ္တမာန်ဝိဘတ်ဖြင့် သုံးစွဲနိုင်သည်၊ ထို့ကြောင့် “ ပစုရတ္ထေ ဟိ ဝတ္တမာနဝစနံ ” ဟု မိန့်သည်၊ ဥပမာ – လက်ဝှေ့သမားတို့ မကြာမကြာ လက်ဝှေ့ထိုးရာအရပ်ကို “ ဣဓ မလ္လာ ယုဇ္ဈန္တိ ” ဟု ဝတ္တမာန်သုံးသကဲ့သို့တည်း။ [ဤအဖွင့်အရ “ပစုရတ္ထဝတ္တမာန်တမျိုး”ဟု မှတ်၊ သဒ္ဒါကျမ်းတို့၌လာသော ဝတ္တမာန် ၄ မျိုးတွင်ကား ပဝတ္တာဝိရတ (ဖြစ်ပြီးသည်မှစ၍ မရှောင်ခြင်း) ဝတ္တမာန်မျိုးတွင် ပါဝင်သင့်သည်။]

တိ- ကား၊ မေထုနဓမ္မ ပဋိသေဝကော – မေထုန်အကျင့်ကို မှီဝဲသော၊ သော ဘိက္ခု-သည်၊ (ပိဏ္ဍာယ ပါဝိသိ–၌စပ်၊) သေနာသနစာရိကံ အာဟိဏ္ဍန္တာ တိ- ကား၊ တေဘိက္ခူ- တို့သည်၊ ဗုဒ္ဓဒဿနာယ – ၄၊ အာဂတာ- န်သော၊ အာဂန္တုကာ-အာဂန္တုကရဟန်းတို့တည်း၊ပါတော၀-နံနက်စောစော၌ပင်၊ ဝါ-ကပင်၊ အာဂန္တုကဘတ္တာနိ-တို့ကို၊လဘိတွာ-၍၊ ကတဘတ္တကိစ္စာ-ပြုအပ် ပြီးသောဆွမ်းကိစ္စရှိကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဘိက္ခူနံ-တို့၏၊ နိဝါသနဋ္ဌာနာနိ- နေရာအရပ်တို့ကို၊ ပဿိဿာမ– ကြည့်ကြကုန်အံ့၊ ဣတိ–၍သို့ ကြံ၍၊ ဝိစရိံ သု-န်ပြီ၊ တေန-ကြောင့်၊သေနာသနစာရိကံ အာဟိဏ္ဍန္တာတိ-ဟူ၍၊ (သံဂီတိ ကာရေဟိ) ဝုတ္တံ။

ယေန၊ပေ၊သက်မီတိ-ကား၊တိရစ္ဆာနဂတာနာမ-တို့မည်သည်၊ကေဘိက္ခု နာ-နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ ဝိဿာသံ-အကျွမ်းဝင်ခြင်းကို၊ ကတွာ-ပြု၍၊ ဝါ-ပြုရလျှင်၊ အညေသုပိ- အခြားရဟန်းတို့၌လည်း၊ တာဒိသဧဝ - ထိုကဲ့သို့ ရှုအပ်သည် သာလျှင်ဖြစ်သော၊ ( ထိုရဟန်း၌ ဖြစ်သော စိတ်ကဲ့သို့ ရှုအပ်သည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊) စိတ္တံ- ကို၊ ဥပ္ပါဒေန္တိ- န်၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ သာ မက္ကဋီ - သည်၊ ယေန တေဘိက္ခူ(သန္တိ)၊ တေန-ထိုအရပ်သို့၊ ဥပသင်္ကမိ- သွားပြီ၊ စ- ဆက်၊ ဥပသင်္ကမိတွာ-၍၊ အတ္တနော- ၏၊ ဝိဿာသိကဘိက္ခုဿ-အား၊ (ဒဿေတိ) ဧဝ – ပြသကဲ့သို့၊ ( တထာ- တူ၊ ) တေသမ္ပိ - တို့အားလည်း၊ တံ ဝိကာရံ- ထို ဖေါက်ပြန်သော အမူအရာကို၊ ဒဿေသိ– ပြီ၊ ဆေပ္ပန္တိ – ကား၊ နင်္ဂုဋ္ဌ– အမြီးကို၊ (စာလေသိ-လှုပ်ပြပြီ၊ )ဩဍ္ဍိတိ- ကား၊ အဘိမုခံ- ရှေးရှု၊ ထပေသိ- ထားပြပြီ၊ နိမိတ္တမ္ပိ အကာသီတိ - ကား၊ ယေန နိယာမေန - အကြင်အမှတ် အသားဖြင့်၊ ယာယ ကြိယာယ - အကြင် အမူအရာဖြင့်၊ မေထုနာ မိပ္ပါယံ– မေထုန်၌ဖြစ်သောအလိုကို၊ ဝါ- မေထုန်မှီဝဲလိုခြင်းကို၊ တေ- ထို အာဂန္တုက ရဟန်းတို့သည်၊ ဇာနန္တိ - သိနိုင်ကုန်၏၊ တံ-ထိုသိကြောင်း အမှတ်အသားကို၊ အကာသိ-ပြုပြပြီ၊ဣတိအတ္ထော-နက် [နိမိနန္တိ သဥ္ဇာနန္တိ ဧတေနာတိ နိမိတ္တံ= မေထုန်မှီဝဲလိုခြင်းကို သိကြောင်း အမှတ်အသား (အမူအရာ)။ ]

သောဘိက္ခူတိ-ကား၊ အယံ- ဤကျောင်းသည်၊ ယဿ–အကြင်ရဟန်း ၏၊ ဝိဟာရော- တည်း၊ (သောဘိက္ခု- ထို ကျောင်းရှင်ရဟန်းသည်၊ ပဋိသေ ဝတိ–၌စပ်၊) ကေမန္တံ နိလီယိံသူတိ– ကား၊ ကေသ္မိံဩကာသေ-တခုသော

ဩဍ္ဍိ။ ။အဝပုဗ္ဗ ဍီဓာတ် , ဤဝိဘတ်၊ ပါသဏ္ဍပုဒ်၌“ဧဍ္ဍန္တိ ဩဍ္ဍေန္တိ–ထောင်၍ ထားတတ်ကုန်၏”ဟု အနက်ပေးရသကဲ့သို့ ဩဍ္ဍိကိုလည်း “ရှေးရှုထား၏”ဟု အနက် ဖွင့်သည်၊ ဍီဓာတ်၏အနက်ရင်းမှာ ဂတိအနက်သာတည်း။

အချပ်၌၊ ပဋိစ္ဆန္နာ-ဖုံးကွယ်အပ်ကုန်သည်၊ (ဟုတ္ဝာ)၊ အန္တို သု-နေကြကုန်ပြီး၊ သစ္စံ အာဝုသောတိ-ကား၊ သဟောဒ္ဓဂ္ဂဟိတော- ဘဏ္ဍာနှင့်တကွ ဖမ်းအပ်သော၊ ဝါ-ခိုးထုပ်ခိုးထည်နှင့်တကွ မိသော၊ စောရောဝိယ- ခိုးသူသည်ကဲ့သို့၊ ပဇ္ဈက္ခံ-မျက်မှောက်၊ ဝါ - တိုက်ရိုက်၊ ဒိသွာ - ၍၊ စောဒိတဗ္ဗာ – စောဒနာအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ မယာ-သည်၊ ကိံ ဝါ-အဘယ်ကိုမူလည်း၊ ကတံ-နည်း၊ ဍုတိအာဒီနိ- တို့ကို၊ ဝတ္တုံ-ငှါ၊ အသက္ကောန္တော–သည်၊ (ဟုတ္ဝာ)၊ သစ္စံ အာဝုသောတိ - ဟူ၍၊ အာဟ- ပြောရပြီ၊ နနုပေ၊ ဟောတိတိ - ကား၊ အာဝုသော-ရှင်၊မနုဿိတ္ထိယာ-လူမိန်းမ၏၊ ဝါ-လူမိန်းမအတွက် တံသိက္ခာပဒံ-သည်၊ ဟောတိယထာ-ကဲ့သို့၊ တထေဝ- ထို့အတူသာလျှင်၊ တိရစ္ဆာနဂတိတ္ထိယာပိ–တိရစ္ဆာန်မ အတွက်လည်း၊ တံ သိက္ခာပဒံ – သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ဟိ - ထင်ရှားအောင် ပြဉုးအံ့၊ မနုဿိတ္ထိယာပိ - လူမကိုလည်း၊ ဒဿနမ္ပိ-ရာဂဖြင့် ကြည့်ခြင်းသည်ရင်း၊ ဂဟဏမ္ပိ-ကိုင်ခြင်းသည်ရင်း၊ အာမသနမ္ပိ-သုံးသပ်ခြင်းသည်ရင်း၊ ဖုသနမ္ပိ-ထိခြင်းသည်ရင်း၊ ဃဋ္ဋနမ္ပိ-တင်းတင်းကြပ်ကြပ်ထိခိုက်ခြင်းသည်ရင်း၊ ဒုက္ကဋမေဝ - ရှန့်ရင်းသည်သာ၊ (ဟောတိ–၏၊) တိရစ္ဆာန ဂတိတ္ထိယာပိ– ကိုလည်း၊ တံသဗ္ဗံ- ထို ကိုင်ခြင်းစသော အလုံးစုံသည်၊ ဒုက္ကဋမေဝ - သည်သာ၊ ( ဟောတိ၊ ) ဧတ္ထ- ဤ၌ လူမ မျောက်မကို မှိဝဲရာ၌၊

**သဟောဒ္ဓဂ္ဂဟိတော။** ။“သဟဘဏ္ဍောနဂဟိတော”ဟု ဋီကာဖွင့်သောကြောင့် “သဟ+ဩဍ္ဍ + ဂဟိတော”ဟု ၃ ပုဒ်ခွဲ၊ ထိုတွင် “ဩဍ္ဍ” သဒ္ဒါ၏ ဘဏ္ဍာအနက်ဟောကြောင်းကို အဘိဓာန်တို့၌ မတွေ့ရ၊ “အဝ + ဍီယတေ – အိမ်အတွင်း၌ ထားအပ်၏၊ ဣတိ ဩဍ္ဍော”ဟု ကြံ၊ ဝိမတိ၌ရင်း သီဟိုဠ်မူ၌ရင်း “သဘဏ္ဍဂဟိတော”ဟု မူကွဲရှိ၏၊ ယိုးဒယားမူ၌ “သဟောစဂ္ဂဟိတော” ဟု ရင်း, ဋီကာ၌ “ သဟောဍ္ဍဂ္ဂဟိတော”ဟု ရင်း, မူအမျိုးမျိုးကွဲလေသည်၊ ထိုသို့ ကွဲရာ၌ အဍ္ဍသဒ္ဒါ မနအနက်ဟောဟု ကြံကြ၏၊ သို့သော် “သဟ+အဍ္ဍ”မှ ရှေ့အကိုချေ, ထုံကြေရာ၌ ဩလာ၍ “သဟောဍ္ဍ”ဖြစ်နိုင်သော်လည်း ရိုးရာမကျချေ၊ “ သဟောဍ ” ဟု ကြံကြသေး၏၊ အနုသဒ္ဒါသည် ဥဋ္ဌာ အနက်ကိုမဟော၊ “မနီ–ဥစ္စာရှိသူ” အနက်သာဟောသည်၊ ဆိုလိုရင်းမှာ– “ခိုးထုပ်ခိုးထည်နှင့်တကွ ဖမ်းမိသောခိုးသူသည် မကွယ်နိုင်တော့သကဲ့သို့ ထို ရဟန်းလည်း မျောက်မ၌ မှိဝဲနေသည်ကို တိုက်ရိုက် မိနေသောကြောင့် မကွယ်နိုင်တော့”ဟူလို။

**ဒဿနံစသည်။** ။သာနုရာဂဒဿနံ – ရာဂနှင့်တကွကြည့်ခြင်း၊ ဂဟဏန္တိ–အနုရာဂဝသေနေဝ ဟတ္ထေန ဂဟဏံ၊ အာမသနံ–အတ္တနော သရီရေန တဿာ သရီရဿ ဥပရိ အာမသနမတ္တံ ( သုံးသပ်ခြင်းမျှ )၊ ဖုသနံ– တတော ဒဠှတရံ ကတ္ဝာ သံဖုသနံ (နာနာထိခြင်း)၊ဃဋ္ဋနံ–တတောပိ ဒဠှတရံကတ္ဝာ သရီရေန သရီရဿ (ကိုယ်ချင်း) ဃဋ္ဋနံ (ပွတ်တိုက် ပွေ့ဖက်ခြင်း)။

ဝိသေသော-သည်၊ ကော-အဘယ်နည်း၊ တံ့-သည်၊ အလေသဋ္ဌာနေ-အမြွက်မထောင်သင့်ရာအရပ်၌၊ လေသံ - ကို၊ ဩဓ္ဒေသိ - ထောင်ဘိ၏၊ ဣတိ - ဤသို့ပြောကုန်ပြီ။[ယောဇနာ၌"ဌွောတိ-မနုဿတိရစ္ဆာနဂတိတ္တိသု"ဟုဖွင့်၏။]

အနုမသော ၊ ပေ ၊ အသံဝါသောတိ— ကား၊ တိရစ္ဆာနဂတာယာပိ–၌လည်း၊မေထုနံဓမ္မံ-ကို၊ပဋိသေဝိတွာ-မှီဝဲ၍၊ဝါ-ကြောင့်၊ပါရာဇိကောယေဝ-သာသနာတော်မှ ဆုံးရှုံးစေအပ်သူသည်သာ၊ ဟောတိ - ၏၊ ဣတိ - ဤသို့၊ ဒဠှတရံ- သာ၍တင်းကျပ်သော၊ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ အကာသိ-ပြီ၊ ဟိ-ချဲ့၊ သိက္ခာပဒံ - သည်၊ လောကဝဇ္ဇံ - လောက၌ အပြစ်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်ဇင်း၊ ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံ–ပညတ်တော်ကြောင့် အပြစ်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်ဇင်း၊(ဣတိ-သို့၊) ဒုဝိဓံ-၏၊ တတ္ထ - ထို ၂ ပါးသော သိက္ခာပုဒ်တို့တွင်၊ ယဿ - အကြင်သိက္ခာပုဒ်၏၊ သစိတ္တကပက္ခေ-စိတ်နှင့်ဟက္ခဖြစ်သော အဘို့၌၊ စိတ္တံ-သည်၊ အကုသလမေဝ-အကုသိုလ်ချည်းသာ၊ ဟောတိ-၏၊ [ဧဝ- ဖြင့်၊ ကုသိုလ် အဗျာကတကို ကန့်] တံ – ထို သိက္ခာပုဒ်သည်၊ လောကဝဇ္ဇံနာမ – လောကဝဇ္ဇသိက္ခာပုဒ်မည်၏၊

**လောကဝဇ္ဇံ**။ ။လောကေ+ဝဇ္ဇံ ယဿာတိ လောကဝဇ္ဇံ၊ ပဏ္ဏတ္တိယာ-ပညတ်တော်ကြောင့် + ဝဇ္ဇံ ယဿာတိ ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံ၊ အကုသိုလ် စိတ်ဖြင့်သာ သင့်အပ်သော သိက္ခာပုဒ်ဟူသမျှကို"လောကဝဇ္ဇ"ဟု ခေါ်၏၊စိတ်ရှိသော်လည်း ကုသိုလ် အကုသိုလ် အဗျာကတ စိတ်အမျိုးမျိုးဖြင့် သင့်အပ်သော သိက္ခာပုဒ် , စိတ်မပါဘဲ သင့်အပ်သော သိက္ခာပုဒ်များကို ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇသိက္ခာပုဒ်ဟု ခေါ်သည်။

**သစိတ္တကပက္ခေ**။ ။သိက္ခာပုဒ်သည် သစိတ္တကသိက္ခာပုဒ်,အစိတ္တကသိက္ခာပုဒ် ဟု ၂ မျိုးရှိ၏၊ ထိုတွင် သစိတ္တကသိက္ခာပုဒ် သက်သက်ကိုဇင်း, သစိတ္တက အစိတ္တက ၂ မျိုးရသောသိက္ခာပုဒ်နှင့် အစိတ္တကသိက္ခာပုဒ်တို့တွင်လည်း စိတ်ပါ၍သင့်ရသော အဘို့ကိုဇင်း,ထို၂မျိုးလုံးရအောင်"သစိတ္တကပက္ခေ"ဟု သာရတ္ထဆိုသည်။[တတ္ထ သစိတ္တကဿ သိက္ခာပဒဿ စိတ္တံ အကုသလမေဝ ဟောတိ၊ တံ လောကဝဇ္ဇံ၊ ယဿ သစိတ္တကာစိတ္တကပက္ခသဟိတဿ အစိတ္တကဿစ သစိတ္တပက္ခေ စိတ္တံ အကုသလမေဝ ဟောတိ၊ တံပိ သုရာပါနာဒိ လောကဝဇ္ဇံတိ ဣမမတ္ထံ သင်္ဂဟေတွာ ဒဿေတုံ ယဿ သစိတ္တကပက္ခေ စိတ္တံ အကုသလမေဝ ဟောတိ၊ တံ လောကဝဇ္ဇံနာမာတိ ဝုတ္တံ။ ]

**ဝိမတိ**။ ။သစိတ္တကသိက္ခာပဒါနံပိ အသဉ္စိစ္စ စက်မနာဒီသု လောကေ ပါဏာဃာတဝေါဟာရသမ္ဘဝေန အစိတ္တကပက္ခံ ပရိကပ္ပေတွာ(သစိတ္တကသိက္ခာပုဒ်မှာလည်း အစိတ္တကပက္ခရှိပုံကို ကြံဘန်၍) ဥဘိန္နံပိ သစိတ္တကာစိတ္တကသိက္ခာပဒါနံ သာဓာရဏဝသေန သစိတ္တကပက္ခေတိ ဝုတ္တံ၊ = သစိတ္တက သိက္ခာပုဒ်မှာလည်း အစိတ္တကပက္ခ ရှိသေးသောကြောင့် "သစိတ္တကပက္ခေ"ဟု ဝိသေသန (မ) ရသည်– ဟူလို။] သစိတ္တကာစိတ္တက, အစိတ္တကတို့၌ သစိတ္တကပက္ခရှိပုံမှာ အထူးဆိုဘွယ်မလိုဟု ဆိုလိုသည်၊လိုရင်းအချုပ်မှာ သာရတ္ထနှင့် သဘောတူပင်တည်း။

သေသံ - ကြွင်းသောသိက္ခာပုဒ်သည်၊ ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံ - ပုဒ်မည်၏၊ [ သေသန္တိ-ယဿ ဝတ္တုဝိဇာနနစိတ္တေန သစိတ္တကပက္ခေပိ အကုသလမေဝါတိ နိယမော နတ္ထိ၊ တံသမ္ဗန္ဓိအတ္ထော - အကုသိုလ်စိတ်ဖြင့်သာ သင့်၏ ဟု သတ်မှတ်၍ မရ၊ အကုသိုလ်မဟုတ်သော စိတ်နှင့်လည်း သင့်နိုင်သော ကျန်သမျှအားလုံး။ ]

တတ္ထ-ထိုသိက္ခာပုဒ် ၂ ပါးတို့တွင်၊ လောကဝဇ္ဇေ-၌၊ အနုပညတ္တိ-သည်၊ ဥပ္ပဇ္ဇမာနာ- ဖြစ်ပေါ်လသော်၊ ရုန္ဓန္တီ- ကျူးလွန်မှုကို ပိတ်ဆို့လျက်၊ ဒွါရံ-လွန်းကျူးကြောင်း အရိပ်အမြွက်၏ တံခါးကို၊ ပိဒဟန္တီ -ပိတ်လျက်၊သောတံ-အဆက်ဆက် ကျူးလွန်မှုဟူသော အလျင်ကို၊ ပစ္ဆိန္ဒမာနာ-ဖြတ်လျက်၊ ဂါဠ္ဍတရံ- သာ၍ တင်းကြပ်သည်ကို၊ ကရောန္တီ-ပြုလျက်၊ ဥပ္ပဇ္ဇတိ-၏၊ ပန-ဆက်၊ အညတြ အဓိမာနာ , အညတြ သုပိနန္တာတိ - နန္တာဟူသော၊ အယံ - ဤ အာပတ်မသင့်ခြင်း ဟူသော အနုပညတ်ကို၊ ဝီတိက္ကမာဘာဝါ(စ)-ကျူးလွန်မှု၏ မရှိခြင်းကြောင့်၎င်း၊ အဗ္ဗောဟာရိကတ္တာစ- အာပတ်၏ အင်္ဂါ ဟု ခေါ်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်သို့ မရောက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ဝါ-အာပတ်၏ အင်္ဂါ ဟု မခေါ်လောက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ဝုတ္တာ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇေ- ၌၊ ဝီတိက္ကမေ - ကျူးလွန်မှုကို၊ အကတေ - မပြုအပ်သေးမီ၊ ဥပ္ပဇ္ဇမာနာ-သော်၊ ဝါ-သော၊ (အနုပညတ္တိ-သည်၊)သိထိလံ-လျော့သည်ကို၊ ကရောန္တီ-လျက်၊မောစေန္တီ-ဖွဲ့အပ်ပြီးကို ဖြေလျက်၊ ဒွါရံ-လွန်ကျူးကြောင်း အရိပ်အမြွက်၏ တံခါးကို၊ ဒဒမာနာ - လျက်၊ အပရာပရမ္ပိ - အဆက်ဆက်လည်း၊ အနာပတ္တိံ - ကို၊ ကုရုမာနာ - ပြုလျက်၊ ဥပ္ပဇ္ဇတိ - ၏၊ ( ကာဝိယ-

**ရုန္ဓန္တီ**ကျာ၁ဒိ။ ။ရုန္ဓန္တီတိ—ဝီတိက္ကမံ ရုန္ဓန္တီ၊ ဒွါရံ ပိဒဟန္တီတိ—ဝီတိက္ကမလေသဿ (ကျူးလွန်ကြောင်းအရိပ်အမြွက်၏) ဒွါရံ ပိဒဟန္တီ၊ သောတံ ပစ္ဆိန္ဒမာနာတိ—ဥပရူပရိ (အဆက်ဆက်) ဝီတိက္ကမသောတံ ပစ္ဆိန္ဒမာနာ၊ အထဝါ—ရုန္ဓန္တီတိ—အနာပတ္တိလေသံ (အာပတ်မသင့်ခြင်း၏ အရိပ်အမြွက်ကို) ရုန္ဓန္တီ၊ ဒွါရံ ပိဒဟန္တီတိ— အနာပတ္တိလေသ ဒွါရံ ပိဒဟန္တီ၊ သောတံ ပစ္ဆိန္ဒမာနာတိ — အနာပတ္တိသောတံ ပစ္ဆိန္ဒမာနာ၊ အာပတ္တိမေဝ ကုရုမာနာတိဝုတ္တံ ဟောတိ။

**အညတြ၊မေ၊ဝုတ္တာ**။ ။လောကဝဇ္ဇသိက္ခာပုဒ်များ၏ ပညတ်တိုင်းပင် ခိုင်မြဲအောင် ပြုပါသလော-ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ “အညတြ၊ပေ၊ဝုတ္တာ”ဟု မိန့်၊ “အညတြ အဓိမာနာ” ဟူသော စတုတ္ထပါရာဇိက၏ အနုပညတ်သည် ဝီတိက္ကမာဘာဝါ — ထို ရဟန်းတို့မှာ ယုတ်မာသောအလိုဆိုးဖြင့် သိက္ခာပုဒ်ကို ကျူးလွန်လိုသော စေတနာ မရှိခြင်းကြောင့်, သုတ္တဝိသင်္ဂ သိက္ခာပုဒ်၏ “ အညတြသုပိနန္တာ ” အနုပညတ်လည်း ( လွတ်စေသော စေတနာ ရှိစေကာမူ)ထိုစေတနာက အာပတ်၏ အင်္ဂါဟု ဆိုရလောက်အောင် မကြမ်းတန်းသောကြောင့် အာပတ်မသင့်အောင်-ပြုသည်။

အဘယ် အနုပညတ်တို့ကဲ့သို့နည်း၊) ဂဏာဘောဇန, ပရမ္ပရဘောဇနာ ဒီသုတို့၌၊ အနုပညတ္တိယောဝိယ-တို့ကဲ့သို့တည်း၊ ပန-ဆက်၊ အန္တိမသော တခ်ဏိကာယပီတိ- ပိဟူသော၊ ဝေရူပါ - ဤသို့ သဘောရှိသော အနုပညတ်သည်၊ ဝိတိက္ကမေ—ကို၊ ကတေ-ပြုအပ်ပြီးသော်၊ ဝါ-ပြုအပ်ပြီးမှ၊ ဥပ္ပန္နတ္တာ-ကြောင့်၊ ပညတ္တိဂတိကာဝ - မူလပညတ်နှင့်အလားတူသည်သာ၊ ဟောတိ - ၏၊ ပန-ဆက်၊ ဣဒံ ပဉ္စမသိက္ခာပဒံ-သည်၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ လောကဝဇ္ဇံ-ပုဒ်တည်း၊ နပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံ - ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇသိက္ခာပုဒ် မဟုတ်၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ အယံ အနုပညတ္တိ-သည်၊ ရုန္ဓန္တိ-လျက်၊ ဒွါရံ-ကို၊ ပိဒဟန္တိ -လျက်၊ သောတံ-ကို၊ ပစ္ဆိန္ဒမာနာ - လျက်၊ ဝါဠ္ဓတရံ- ကို၊ ကရောန္တီ-လျက်၊ ဥပ္ပန္နာ-ပြီ။

ဧဝံ- ဤသို့၊ ဒွေပိ - ကုန်သော၊ ဝဏ္ဏနိ - သုဒ္ဓိန္နဝဏ္ဏ , မက္ကဋီဝဏ္ဏတို့ကို၊ သမ္ပိဏ္ဍေတွာ - ပေါင်းတော်မူ၍၊ မူလစ္ဆေဇ္ဇဝသေန - သာသနာတော်ဝယ် အမြစ် အရင်း ပြတ်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဒဠှတရံ – သာ၍ တင်းကြပ်သည်ကို၊ ကတွာ- ၍၊ ပဉ္စမပါရာဇိကေ - ကို၊ ပညတ္တေ - မူအပ်ပြီးသော်၊ အပရမ္ပိ-ထိုနှစ် ဝဏ္ဏမှ အခြားလည်းဖြစ်သော၊ အနုပညတ္တတ္တာယ - နောက်ထပ်တဖန် ပညတ်ရန်အကျိုးငှါ၊ ဝဏ္ဏုပ္ပတ္တိကဝဏ္ဏ-သည်၊ ဥဒပါဒိ-ပြီ၊ တဿ-ထိုဝဏ္ဏုပ္ပတ္တိကဝဏ္ဏ၏၊ ဥပ္ပတ္တိဒဿနတ္ထံ - ငှါ၊ ဝေဠ္ဌဒံ၊ပေ၊ဟောတိ - ဟူသော၊ ဣဒံ- ကို၊ (သံဂီတိကာရေဟိ ) ဝုတ္တံ – ပြီ၊ တဿ - ထို ဝေဠ္ဌဒံ ဘဂဝတာ အစရှိသော စကားရပ်၏၊ အတ္ထော-ကို၊(ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊)ဘဂဝတာ-သည်၊ ဘိက္ခူနံ-တို့အို၊ ဣဒံ သိက္ခာပဒံ- သည်၊ ဝါ- ကို၊ ဧဝံ- သို့၊ ပညတ္တံစဟောတိ - ၏၊ ဝါ-ရော၊ အညမ္ပိ-မက္ကဋိဝဏ္ဏမှ အခြားလည်းဖြစ်သော၊ ဣဒံဝဏ္ဏ-ဤဝဏ္ဏုပ္ပတ္တိကဝဏ္ဏသည်၊ ဥဒပါဒိစ-ပြီ၊ ဝါ-ရော၊ ဣတိ(အတ္ထော ဝေဒိတဗ္ဗော၊)....မက္ကဋိဝဏ္ဏကထာ–သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။

**သိထိလံ၊ပေ၊ဒဒမာနာ ။** ။ ပဉ္စမံ သာမညတော ဗန္ဓသိက္ခာပဒံ ( အစတုန်းက အများနှင့်ဆက်ဆံသော အသုံးအနှုန်းဖြင့် ဖွဲ့ထားအပ်သောသိက္ခာပုဒ်ကို) မောစေတွာ (ဖြေ၍) အတ္တနော အတ္တနော ဝိသယေ အနာပတ္တိကရဏဝသေန သိထိလံ ကရောန္တီ၊ အနာပတ္တိယာ ဒွါရံ ဒဒမာနာ၊ တေနေဝါဟ — အပရာပရမ္ပိ အနာပတ္တိံ ကုရုမာနာတိ၊ [ဒွါရံ ဒဒမာနာကိုပင်“အပရာပရံပိ အနာပတ္တိံ ကုရုမာနာ”ဟု ထပ်ဖွင့်သည်-ဟူလို။]

**အန္တိမသော၊ပေ၊ဂတိကာဝ ။** ။ ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇသိက္ခာပုဒ်၌ မူလပညတ်ကို မလွန်ကျူးခင် နောက်ထပ် ပညတ်ရာ၌သာ အနုပညတ်က လျော့အောင်ပြုသည်၊ လွန်ကျူးပြီးမှ ပညတ်ရသော အနုပညတ်ကား မူလပညတ်နှင့် အလားတူ ( မူလပညတ် အမျိုးအစား) ပင်ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇဖြစ်သော်လည်း သဥ္စရိတ္တသိက္ခာပုဒ်၏ အနုပညတ်က လျော့အောင်မပြုနိုင်—ဟူလို။

## ဝဇ္ဇိပုတ္တကဝတ္ထုအဖွင့်

ဣဒါနိ - ၌၊ အညမ္ပိ- မက္ကဋီဝတ္ထုမှ အခြားလည်းဖြစ်သော၊ ယံတံဝတ္ထု- အကြင် ဝဇ္ဇီပုတ္တကဝတ္ထုသည်၊ ဥပ္ပန္နံ-ပြီ တံ-ကို၊ ဒဿေတုံ-ငှါ၊ တေန ခေါပန သမယေနာတိအာဒိံ-ကို၊ (သံဂီတိကာရော-သည်၊) အာဟ- ပြီ၊ တတြာပိ- ထို တေန ခေါပန သမယေန အစရှိသော စကားရပ်၌လည်း၊ အယံ - ကား၊ အနုတ္တာနပဒ ဝဏ္ဏနာ - တည်း၊ ဝေသာလိကာတိ - ကား၊ ဝေသာလိဝါသိ နော – ဝေသာလီမြို့၌နေကုန်သော၊ [ "ဝေသာလီ + နိဝါသော ဧတေသံတိ ဝေသာလိကာ"ဟု နိဝါသတဒ္ဓိတ်ပြု၊] ဝဇ္ဇီပုတ္တကာတိ-ကား၊ ဝဇ္ဇီရဋ္ဌေ-ဝဇ္ဇီ တိုင်း၌၊ ဝေသာလိယံ- ၌၊ ကုလာနံ- အမျိုးတို့၏၊ ပုတ္တာ– သားဖြစ်ကုန်သော၊ (ဘိက္ခူ-၌စပ်၊)ကိရ-ချဲ့၊ သာသနေ-၌၊ ယောယော ဥပဒ္ဒဝေါ-အကြင်အကြင် ဘေးဥပါဒ်သည်၊ ယောယော အာဒီနဝေါ- အကြင်အကြင် အပြစ်သည်၊ ယံ ယံ အဗ္ဗုဒံ–အကြင်အကြင် ခိုးကြောင် ခိုးဝှက်အမှုသည်၊ ဥပ္ပဇ္ဇိ-ပြီ၊ တံ သဗ္ဗံ-ထို အလုံးစုံသောအမှုသည်၊ဝဇ္ဇီပုတ္တကေ-ဝဇ္ဇီတိုင်းသူ တိုင်းသားတို့၏ သားတို့ကို၊ နိဿာယ–မှီ၍၊ (ဥပ္ပဇ္ဇိ– ပြီ၊) တထာဟိ - ထိုစကားမှန်၏၊ ဒေဝဒတ္တောပိ- သည်လည်း၊ ဝဇ္ဇီပုတ္တကေ-တို့ကို၊ ပက္ခေ- အသင်းအပင်းတို့ကို၊ လဘိတွာ-၍၊ သံဃံ-ကို၊ ဘိန္ဒိ- ခွဲပြီ၊ စ- သည်သာမကသေး၊ ဝဇ္ဇီပုတ္တကာဧဝ- တို့သည်ပင်၊ ဘဂဝတိ-သည်၊ ဝဿသတ ပရိနိဗ္ဗုတေ-ပရိနိဗ္ဗာန်စံတော်မူပြီးသော မြတ်စွာ ဘုရား၏ အနှစ်တရာရှိလသော်၊ သတ္ထု-၏၊သာသနံ-တော်ကို၊ ဥဒ္ဓမ္မံ-ထွက်သွား သော ဓမ္မရှိ သည်ကို၊ ဝါ - တရားမဟုတ်သည်ကို၊ ဥဗ္ဗိနယံ–ထွက်သွားသော ဝိနည်းရှိသည်ကို၊ ဝါ–ဝိနည်းမဟုတ်သည်ကို၊ ဒီပေသုံ-ပြီ၊ တေသံယေဝ-ထို ဝဇ္ဇီပုတ္တက ရဟန်းတို့တွင်ပင်၊ ဧကစ္စေ - န်သော၊ ဣမေပိ - ဤရဟန်းတို့သည် လည်း၊ ဧဝံ-သို့၊ သိက္ခာပဒေ-ကို၊ ပညတ္တေပိ- ပညတ်အပ်ပြီးပါသော်လည်း၊ ယာဝဒတ္ထံ-အကြင်အကြင် အလိုအတိုင်း၊ ဝါ-စားချင်တိုင်း၊ ဘုဉ္ဇိံသု-န်ပြီ၊ယာဝ ဒတ္ထံ-တိုင်း၊ ဝါ–အိပ်ချင်တိုင်း၊ သုပိံသု-န်ပြီ၊ ယာဝဒတ္ထံ-တိုင်း၊ ဝါ–ရေချိုးချင် တိုင်း၊ နှာယိံသု-န်ပြီ၊ ယာဝဒတ္ထံ– တိုင်း၊ဘုဥ္ဇိတွာ- ၍၊ ယာဝဒတ္ထံ သုပိတွာ, ယာဝဒတ္ထံနှာယိတွာ၊ အယောနိသော - မသင့်သော အကြောင်းအားဖြင့်၊

ဝဇ္ဇီရဋ္ဌေ၊ဧပ၊ပုတ္တာ ။ ။ ဝဇ္ဇီဟူသောဌာနဖြင့် ဌာနီလူတို့ကို ( ဌာနူပစာရ အားဖြင့်) တနည်း– အဘေဒေါပစာရအားဖြင့် ယူစေလို၍ "ဝဇ္ဇီရဋ္ဌေ ဝေသာလိယံ ကုလာနံ" ဟု ဖွင့်သည်၊ တိုင်းအားဖြင့် ဝဇ္ဇီ , မြို့အားဖြင့် ဝေသာလီ၌ နေကြသူများ– ဟူလို၊ "ဝဇ္ဇီနံ+ပုတ္တာ ဝဇ္ဇီပုတ္တာ"ဟု ပြု၊ သမာသန္တက ပစ္စည်းသက်။

မနသိကရိတွာ – နှလုံးသွင်း၍၊ သိက္ခံ – ကို၊ အပစ္စက္ခာယ – မပယ်စွန့်မူ၍၊ ဒုဗ္ဗလျံ - သိက္ခာပုဒ်ကို ဖြည့်ကျင့်မှု၌ အားမရှိသူ၏ အဖြစ်ကို၊ အနာဝိကတွာ-၍၊ မေထုနံ ဓမ္မံ–ကို၊ ပဋိသေဝိ သု-နပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့ မှတ်အပ်၏။

ဉာတိဗျသနေန ဖိတိတ္တေ-၌၊ အသနံ-အသနသဒ္ဒါငင်း၊ ဗျသနံ-ငင်း၊ ဝိက္ခေပေါ-ငင်း၊ဝိဒ္ဓံသနံ-ငင်း၊ ဝိနာသော-ငင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဧတံသဗ္ဗံ-ဤအလုံးစုံသော သဒ္ဒါသည်၊ ကေတ္တံ – တူသောအနက်ရှိ၏၊ ဉာတီနံ – ဆွေမျိုးတို့၏၊ ဗျသနံ-ပျက်စီးခြင်းတည်း၊ ဉာတိဗျသနံ-ခြင်း၊ တေနဉာတိဗျသနေန- ထိုဆွေမျိုးတို့၏ ပျက်စီးခြင်းသည်၊ ရာဇဒဏ္ဍ ဗျာဓိ မရဏ,ဝိပ္ပဝါသ နိမိတ္တေန-မင်းဒဏ်,အနာရောဂါ, သေခြင်း, ကွေကွင်း၍ နေရခြင်းဟူသော အကြောင်းရှိသော၊ ဉာတိဝိနာသေန- ဆွေမျိုးတို့၏ပျက်စီးခြင်းသည်၊ ( ဖုဋ္ဌာ- ၌စပ်၊ ) ဣတိအတ္ထော-အနက်၊ ဒုတိယပဒေပိ - ဘောဂဗျသနေန ဟူသော ဒုတိယပုဒ်၌လည်း၊ သေ (သော)-ဤဆိုအပ်ပြီးအစီအရင်သည်၊ နယော-သိကြောင်းအစီအရင်တည်း၊ ပန-ကား၊ (တနည်း) ပန- အထူးကား၊ တတိယ ပဒေ-၌၊ အာရောဂျဝိနာသကော-အာရောဂျဂုဏ်ကို ဖျက်ဆီးတတ်သော၊ရောဂေါဝေ-ရောဂါသည်ပင်၊ ရောဂဗျသနံ - နမည်၏၊ ဟိ - မှန်၊ ( တနည်း ) ဟိ ( ယသ္မာ ) – ကြောင့်၊ သော - ထိုရောဂါသည်၊ အာရောဂျံ - ရောဂါမရှိသူသည်၏ အဖြစ်ကို၊ ဝါ- အာရောဂျဂုဏ်ကို၊ ဗျသတိ ဝိက္ခိပတိ-ပစ်လွှတ်တတ်၏၊ ဝိနာသေတိ-ဖျက်ဆီး တတ်၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ (ထိုသို့အာရောဂျဂုဏ်ကို ဖျက်ဆီးတတ်သည်၏အဖြစ် ကြောင့်၊) ဗျသနံ- မည်၏၊ ရောဂေါဝ - ရောဂါသည်ပင်၊ ဗျသနံ - အာရောဂျဂုဏ်ကို ဖျက်ဆီးတတ်သည်တည်း၊ ရောဂဗျသနံ-အာရောဂျဂုဏ်ကို ဖျက်ဆီး တတ်သော ရောဂါ၊ [ ဝိသေသန ပရနိပါတ၊ ] တေန ရောဂဗျသနေန - ထို အာရောဂျဂုဏ်ကို ဖျက်ဆီးတတ်သောရောဂါသည်၊ ဖုဋ္ဌာတိ – ကား၊ အဘိ ပန္နာ-လွှမ်းမိုး၍ ရောက်အပ်ကုန်သည်၊ အဘိဘူတာ - လွှမ်းမိုးအပ်ကုန်သည်၊ သမန္နာဂတာ (သံ+ အနု+အာ+ဂတာ) - လွန်စွာ အစဉ်ရောက်ကုန်သည်၊ (ဟုတွာ) ဣတိ အတ္ထော - နက်၊ [ ဖုဋ္ဌာ၌ ဖုသဓာတ်၏ တွေ့ထိခြင်းဟူသော သဒ္ဒတ္ထကို“အဘိပန္န,အဘိဘူတ” ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထ ဖွင့်သည်။ ]

**အသနံ၊ ပေ၊ ကေတ္တံ။** ။“အသ (အသု) -ခေပေ”ဟု ဓာတ်ကျမ်း ရှိသောကြောင့် “အသနံ”စသော ၅ ပုဒ်ကို အနက်တူ ဟု ဆိုသည်၊ ဝိဒ္ဓံသနံ ဝိနာသောတို့သည် သဒ္ဒတ္ထ မတူသော်လည်း“ပစ်ပယ်ခြင်းနှင့် ပျက်ပြားခြင်း”အားဖြင့် အဓိပ္ပါယတ္ထတူကြသည်။

**သေ နယော။** ။“ဘောဂါနံ+ဗျသနံ” ဟုပြု၍ “ ဟိရညသုဝဏ္ဏဒါသိဒါသာဒီနံ ဥပဘောဂ ပရိဘောဂဝတ္ထူနံ ရာဇဒဏ္ဍာဒိနာ ဝိနာသော ” ဟု အဓိပ္ပါယ်တူ မှတ်ပါ။

န မယံ ဘဂ္ဂေအာနန္ဒ ဗုဒ္ဓဂရဟိနောတိ - ကား၊ ဘဂ္ဂေအာနန္ဒ - နှာ၊ မယံ-တို့သည်၊ ဗုဒ္ဓံ-ကို၊ န ဂရဟာမ-မကဲ့ရဲ့ပါကုန်၊ ဗုဒ္ဓဿ-အား၊ ဒေါသံ-အပြစ်ကို၊ နဒေမ - မပေးပါကုန်၊ န ဓမ္မဂရဟိနော - တရားကိုလည်း မကဲ့ရဲ့ပါကုန်၊ န သံဃဂရဟိနော-သံဃာကိုလည်း မကဲ့ရဲ့ပါကုန်၊ အတ္တဂရဟိနော မယံဘိ-ကား၊ အတ္တာနမေဝ-မိမိကိုသာ၊ မယံ-တို့သည်၊ ဂရဟာမ-နှ်၏၊ အတ္တနော-အား၊ ဒေါသံ- ကို၊ ဒေမ- နှ်၏၊ အလက္ခိကာတိ- ကား၊ နိဿိရိကာ-ကြက်သရေမရှိကုန်သည်၊ [လက္ခီ=သိရီ ပရိယာယ်၊ (အထလက္ခီ သိရိတ္ထိယံ) အဘိဓာန်-၈၂။]အပ္ပပုညာတိ-ကား၊ပရိတ္တပုညာ-နည်းသောပုဉ်းရှိကုန်သည်၊ (အမှ-ဖြစ်ကြကုန်၏၊) ဝိပဿကာ ကုသလာနံ ဓမ္မာနန္တိ-ကား၊ အဋ္ဌတိံသာ ရမဏာသု-၃၈ ပါးသော အာရုံတို့၌၊ ဝိဘတ္တာ-ဝေဘန်အပ်ကုန်သော၊ ယေ ကုသလာဓမ္မာ-အကြင် (ဥပစာရဈာန် အပ္ပနာဈာန်ဟူသော)ကုသိုလ်တရားတို့သည်၊ (သန္တိ)၊ တေသံ-ထိုကုသိုလ် တရားတို့ကို၊ ဝိပဿကာ - အထူးထူး အပြားပြား ရှုတတ်ကုန်သည်၊ တတောတတော အာရမဏတော - ထိုထို ဈာန်၏ အာရုံမှ၊ ဝုဋ္ဌာယ - ထ၍၊ တေဝဓမ္မေ - ထို ကုသိုလ်တရားတို့ကိုပင်၊ ဝိပဿမာနာ - အနိစ္စ ဒုက္ခ အနတ္တ ဟု အထူးထူး အပြားပြား ရှုကုန်သည်၊ (ဟုတ္တာ၊ ဝိဟရေယျာမ—နေလိုပါကုန်၏၊)ဣတိ အတ္တော-နက်။

ပုဗ္ဗရတ္တာပရရတ္တန္တိ-ကား၊ ရတ္တိယာ- ၏၊ ပုဗ္ဗံ - ရှေ့အဘို့တည်း၊ ပုဗ္ဗရတ္တံ-ညဉ့်၏ရှေ့အဘို့၊ ရတ္တိယာ-၏၊ အပရံ-နောက်အဘို့တည်း၊ အပရရတ္တံ- ဘို့၊ ပဌမယာမဥ္စ-ပဌမယာမ်ပတ်လုံးငှင်း၊ပစ္ဆိမယာမဥ္စ-လုံးငှင်း၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ [ မဇ္ဈိမယာမ်ကိုကား ရဟန်းများ၏ အိပ်ချင်ဖြေရာ အခါ ဖြစ်၍ မယူဘဲထားသည်။]ဗောဓိပက္ခိကာနန္တိ–ကား၊ ဗောဓိဿ-အရဟတ္တမဂ်ဉာဏ်၏၊ ပက္ခေ-အသင်းအပင်း၌၊ ဘဝါ-ဘက်၌၊ဘဝါနံ -ဖြစ်ကုန်သော၊အရဟတ္တမဂ္ဂဉာဏဿ-

ဗုဒ္ဓံ နဂရဟာမ။ ။“အသဗ္ဗညူ ဗုဒ္ဓေါ-ဘုရားသည် အလုံးစုံကိုမသိ”ဤသို့စသည် ဖြင့် ဘုရားကိုမကဲ့ရဲ့ပါကုန်၊ [“အနိယျာနိကော ဓမ္မော,ဒုပ္ပဋိပန္နော သံဃော“စသည် ဖြင့် ဓမ္မ-သံဃာကို မကဲ့ရဲ့ပုံကိုလည်း သိပါ။]

အဋ္ဌတိံသာ၊ပေ၊ဝိဘတ္တာ။ ။ပါဠိယံ အနာဂတတ္တာ (ပါဠိတော်၌ တိုက်ရိုက်မပါသည့်အတွက်) အာလောကကာသကသိဏဒွယံ ထပေတွာ အဝသေသာနိ ဂဟေတွာ ဝုတ္တံ (၃၈ ပါး ဟု ဆိုအပ်၏)၊ ဣမသ္မိံ အာရမ္မဏေ ဣဒံ ဟောတိ=( သဂြိုဟ်အာရမဏဘေဒ အတိုင်း ) ဤအာရုံကြောင့် ဥပစာရဈာန်နှင့် ဤမည်သော အပ္ပနာဈာန်ကုသိုလ် တရားများဖြစ်နိုင်ကြသည် ဟု ခွဲခြားဝေဘန် အပ်သော ကုသိုလ်များ။ [“ ကုသလာနံ ဓမ္မာနံ ဝိပဿကာ ” ဟူရာ၌ ဝိပဿနာရှုဘို့ရန် အခြေခံမှာ သမ္မသိတဈာန် ဟူသော ဈာန်ကုသိုလ်များဖြစ်သောကြောင့် ဈာန်တရားတို့ကို အဋ္ဌကထာဖွင့်ပြသည်။]

အား၊ဥပကာရကာနံ-ကျေးဇူးပြုတတ်ကုန်သော၊(ဓမ္မာနံ-သတိပဋ္ဌာန်စသော တရားတို့ကို၊ ) ဣတိ အတ္ထော - နက်၊ ဘာဝနာနုယောဂန္တိ - ကား၊ ဝဍ္ဎနာ နုယောဂံ-တိုးပွားစေခြင်းကို အဖန်ဖန် အားထုတ်မှုကို၊ ဝါ- တိုးပွားအောင် အဖန်ဖန် အားထုတ်မှုကို၊ အနုယုတ္တာ ဝိဟရေယျာမာတိ - ကား၊ ဂိဟိပလိဗောဓံ-လူတို့၏ အနှောက်အရှက်ကိုင်း၊ အာဝါသပလိဗောဓဉ္စ-ကျောင်း၏ အနှောက်အရှက်ကိုင်း၊ ပဟာယ-၍၊ဝိဝိတ္တေသု-ဆိတ်ငြိမ်ကုန်သော၊ သေနာ သနေသု-ကျောင်း အိပ်ရာ နေရာတို့၌၊ ယုတ္တာ ပယုတ္တာ-အားထုတ်ကုန်,လွန်စွာ အားထုတ်ကုန်သည်၊ [ "သမ္မဒေဝယုတ္တာ - ကောင်းစွာသာလျှင် အားထုတ် ကုန်သည် "ဟု အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်သည်၊ ] အနညကိစ္စာ - ဘာဝနာအားထုတ်မှုမှ တပါးသောကိစ္စမရှိကုန်သည်၊ (ဟုတ္វာ) ဝိဟရေယျာမ - နေ၏၊ ဝေမာဝုသော တိ-ကား၊ ထေရော-သည်၊ ဧတေသံ-အဲဒီရဟန်းတို့၏၊ အာသယံ-အဇ္ဈာသယ ကို၊ ဝါ-အလိုကို၊[အာသယန္တိ အဇ္ဈာသယံ။]အဇာနန္တော-သည်၊ (ဟုတွာ)၊ နေသံ- ထိုရဟန်းတို့၏၊ ဣမံ မဟာဂဇ္ဇိတံ၊-ဤ ကြီးစွာသော ကြုံးဝါးခြင်းကို၊ သုတွာ-၍၊ ဣမေ-တို့သည်၊ ဤဒိသာ- ဤကဲ့သို့ ရှုအပ်ကုန်သည်၊ (ပြောသည့် အတိုင်း နေမည့်သူတို့သည် - ဟူလို။) သစေ ဘဝိဿန္တိ- နိအံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ သာဓု-ကောင်း၏၊ ဣတိ-သို့၊ မညမာနော-မှတ်ထင်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဝေမာဝု သောတိ-ဟူ၍၊ သမ္ပဋိစ္ဆိ-ဝန်ခံပြီ။

အဋ္ဌာနမေတံ အနဝကာသောတိ-ဟူသော၊ ဧတံ ဥဘယမ္ပိ-ဤသဒ္ဒါ၂ပါး သည်လည်း၊ ကာရဏပ္ပဋိက္ခေပဝစနံ-အကြောင်းကို ပယ်ခြင်းကိုဟောသော သဒ္ဒါတည်း၊ ဟိ-ချဲ့၊ [ (တနည်း) ဟိ (ကသ္မာ)-အဘယ့်ကြောင့်၊ ကာရဏံ-

**အရဟတ္တ ၊ပေ၊ ဥပကာရကာနံ ။** ။ ဗောဓိအရ အရဟတ္တမဂ်ဉာဏ်ကို ယူ၍, ထို ဉာဏ်အား ကျေးဇူးများသော သတိပဋ္ဌာန်စသော တရားများကို ထိုဉာဏ်၏ဘက်သား "ဗောဓိပက္ခိယတရား"ဟု ဆိုသည်၊ ["ဗောဓိဿ+ပက္ခေ၊ တဿိံ+ဘဝါ"ဟု ပြု။]

**ဂိဟိပလိဗောဓံ။** ။ ပရိဗုန္ဓတိ – (ကိစ္စလုပ်ငန်းကို) နှောက်ရှက်တတ်၏၊ ဣတိ ပလိဗောဓော၊ ရကို လပြု၊ ဂိဟိနံ+ပလိဗောဓော ဂိဟိပလိဗောဓော၊ အာဝါသဿ+ ပလိဗောဓော အာဝါသပလိဗောဓော၊[ဣမေသံယေဝ ဒွိန္နံပလိဗောဓာနံ ဥပလ္ခေဒဿ သုဒုက္ကရဘာဝတော ဝုတ္တံ—ကုလ, လာဘ, ဂဏ- စသော အခြားပလိဗောဓများကား ဤ၂ ပါးလောက် အဖြတ်မခက်သောကြောင့် ဤ၂ ပါးကို နာမည်တပ်၍ ဆိုသည်၊ ဥပလက္ခဏာ—နိဒဿနည်း ဟု ကြံ။]

**ကာရဏံဟိ ယသ္မာ ။** ။ ဤဝါကျမျိုး၌ ဟိကို ဒဠှီဇောတက , ဝိတ္ထာရဇောတက လည်းကြံနိုင်၏၊ ပုဗ္ဗာဝါကျသီးခြားထုတ်၍လည်း (နိဿယအတိုင်း) ဆရာတို့ ပေးကြ ၏၊"နိဗ္ဗာနံဟိ ၊ပေ၊ ရာဂဝိရာဂေါတိ ဝုစ္စတိ" ဝါကျတုန်းကလည်း ဤနည်းပေးခဲ့ပြီ။

အကြောင်းကို၊ ဌာနန္တိစ - ဌာနဟူ၍၎င်း၊ အဝကာသောတိစ - ၎င်း၊ ဝုစ္စတိ-ဆိုအပ်သနည်း၊ ] ကာရဏံ- ကို၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ တတ္ထ - ထိုအကြောင်း၌၊ တဒါယတ္တဝုတ္တိဘာဝေန-ထိုအကြောင်းနှင့် စပ်သော ဖြစ်ခြင်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဖလံ-အကျိုးသည်၊ တိဋ္ဌတိ-၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊(အကျိုး၏တည်ရာ၏အဖြစ်ကြောင့် ) ဌာနန္တိစ-ဟူ၍၎င်း၊ စ-ကား၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ တဒါယတ္တဝုတ္တိဘာဝေန-ကြောင့်၊ အဿ-ထိုအကျိုး၏၊ တံ-ထိုအကြောင်းသည်၊ဩကာသော-အခွင့်အလမ်းသည်၊ ဝါ-တည်ရာသည်၊ ဟောတိ-၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (အကျိုး၏ အခွင့်အလမ်း၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) အဝကာသောတိစ - ဟူ၍၎င်း၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ တံ– ထိုဌာန အဝကာသကို၊ ပဋိက္ခိပန္တော- မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ-၍၊) အဋ္ဌာနမေတံ အာနန္ဒ အနဝကာသောတိ-ဟူ၍၊ အာဟ-မူပြီ၊ တေံ ဌာနံ ဝါ-၌အကြောင်းသည်၎င်း၊ (သော) ဩကာသောဝါ - ၌ အခွင့်အလမ်းသည်၎င်း၊ နတ္ထိ-မရှိ။

ယံ တထာဂတောတိ - ကား၊ ယေန- အကြင်အကြောင်းကြောင့်၊ တထာဂတော-သည်၊ ဝဇ္ဇီနံဝါ-ဝဇ္ဇီတိုင်းသူတိုင်းသားတို့၏၎င်း၊ ဝဇ္ဇီပုတ္တကာနံဝါ-ဝဇ္ဇီ တိုင်းသူ တိုင်းသားတို့၏ သားတို့၏၎င်း၊ ကာရဏာ- ကြောင့်၊ ပညတ္တံ–မူအပ်ပြီးသော၊ ပါရာဇိကံ သိက္ခာပဒံ - ကို၊ သမူဟနေယျ- ပယ်နုတ်ရာ၏၊ တံ ကာရဏံ - သည်၊ နတ္ထိ - မရှိ၊ ဣတိ အတ္ထော - နက်၊ ဟိ - ထင်ရှားအောင် ပြဦးအံ့၊ [အဋ္ဌာနဖြစ်ပုံကို ထင်ရှားအောင်ပြဦးအံ့- ဟူလို၊ ၌နေရာ၌ လဒ္ဓေါသမသင့်။]ဘဂဝါ-သည်၊ လဘေယျာမ ဥပသမ္ပဒန္တိ-ဟူ၍၊ ယာစန္တာနံ-ခွင့်တောင်းကုန်သော၊ တေသံ-၌ရဟန်းတို့အား၊ ဥပသမ္ပဒံ- အထက်တန်းဖြစ်သောပြည့်စုံခြင်းကို၊ ဝါ-ရဟန်းပြုခွင့်ကို၊ယဒိဒဒေယျ-အကယ်၍ ပေးတော်မူအံ့၊ ဧဝံသန္တေ - ၌သို့ဖြစ်လသော်၊ ဝါ- ၌သို့ပေးလသော်၊ ပါရာဇိကောဟောတိ အသံဝါသောတိ-ဟူ၍၊ ပညတ္တံ-ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးသော သိက္ခာပုဒ်ကို၊ သမူဟနေယျ–ပယ်နုတ်ရာ၏၊ ဝါ- ပယ်နုတ်ရာရောက်၏၊ ပန-စင်စစ်ကား၊ ယသ္မာ–ကြောင့်၊ တေံ- ၌ ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးသော သိက္ခာပုဒ်ကို၊ နသမူဟနတိ-မမူ၊တသ္မာ-ကြောင့်၊အဋ္ဌာနမေတန္တိ အာဒိံ-ကို၊အာဟ-မူပြီ၊

**တဒါယတ္တ ဝုတ္တိဘာဝေန**။ ။တဿ–ထိုအကြောင်း၏၊ ဝါ–နှင့်၊ အာယတ္တာ-စပ်သည်တည်း၊ တဒါယတ္တာ– သည်၊ တဒါယတ္တာ+ ဝုတ္တိ ယဿာတိ တဒါယတ္တဝုတ္တိ (ဖလံ)၊ တဒါယတ္တဝုတ္တိနော + ဘာဝေါ တဒါယတ္တဝုတ္တိဘာဝေါ၊ [ ၌ အဖွင့်ကို ကြည့်၍"တိဋ္ဌတိ ဖလံ ဧတ္ထာတိ ဌာနံ " ဟု ၎င်း, " အဝကာသတိ ပတိဋ္ဌာတိ ဧတ္ထာတဲ အဝကာသော"ဟု ၎င်း ဝိဂ္ဂဟ ပြု။

သော အာဂတော န ဥပသမ္ပာဒေ တဗ္ဗောတိ (ဧတ္ထ- ၌၊ ဂုဠဝတ္တံ- လျှို့ဝှက် အပ်သောအနက်ကို၊ ဟိ ဥဒ္ဒရိတွာ ဒဿေမိ-အံ့၊)ဧဝံ-သို့၊ဝါ-ဤသိက္ခာမချဘဲ မေထုန်မှီဝဲပြီး၍၊ အာဂတော – ပြန်လာသူသည်၊ ဥပသမ္ပဒံ - မြင့်မြတ်သော ပြည့်စုံခြင်းကို၊ဝါ-ရဟန်းပြုခွင့်ကို၊ ယဒိလဘေယျ-အံ့၊(ဧဝံသတိ၊)သာသနေ- ၌၊ အဂါရဝေါ – လေးစားခြင်းမရှိသည်၊ ဘဝေယျ–၏၊ ပန- အန္တယကား၊ သာမဏေရဘူမိယံ - သာမဏေဖြစ်ရာ အခိုက်အတန့်၌၊ ဌိတော-တည်သည်၊ (သမာနော- သော်၊ သာသနေ – ၌၊) သဂါရဝေါစ - လေးစားခြင်းရှိသည် လည်း၊ ဘဝိဿတိ- တံ့၊ အတ္တတ္ထဉ္စ- မိမိ အစီးအပွားကိုလည်း၊ ကရိဿတိ- တံ့၊ဣတိ-သို့၊ဉတွာ-မှု၍၊ အနုကမ္ပမာနော-သနားစောင့်ရှောက် ချီးမြှောက် တော်မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ - ၍၊ ဘဂဝတာ- သည်၊) သော အာဂတော န ဥပ သမ္ပာဒေတဗ္ဗောတိ - ဟူ၍၊ အာဟ - မူပြီ၊ သော အာဂတော ဥပသမ္ပဒေ တဗ္ဗောတိ-ကား၊ဧဝံ-သို့၊ဝါ-ဤသိက္ခာချ၍ပြီးမှ မေထုန်မှီဝဲပြီး၍၊အာဂတော- သည်၊ ဘိက္ခုဘာဝေ- ၌၊ ဌတွာ–၍၊ အဝိပန္နသီလတာယ-မပျက်သော သီလ ရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊သာသနေ–၌၊ သဂါရဝေါ-သည်၊ ဘဝိဿတိ–တံ့၊ သော-ထို ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ဥပနိဿယေ - မဂ်ဖိုလ်ရခြင်း၏ အားကြီးသော မှီရာ အကြောင်းသည်၊ သတိ- ရှိလသော်၊ ဝါ-ပါလာခဲ့သော်၊ နစိရဿေဝ-မကြာ မြင့်မီပင်၊ ဥတ္တမတ္ထံ - မြတ်သော အရဟတ္တဖိုလ်အကျိုးသို့၊ ဝါ - မြတ်သော နိဗ္ဗာန်အကျိုးသို့၊ ပါပုဏိဿတိ – တံ့၊ ဣတိ- သို့၊ ဉတွာ- ၍၊ ဥပသမ္ပာဒေ တဗ္ဗောတိ-ဟူ၍၊ အာဟ-မူပြီ၊ ဧဝံ– လျှင်၊ မေထုနံဓမ္မံ– ကို၊ ပဋိသေဝိတွာ–

**သာသနေ အဂါရဝေါ**။ ။သိက္ခာမချဘဲ ဘိက္ခုအဖြစ်ဖြင့် မေထုန်မှီဝဲ၍ ပါရာဇိက ကျသူကို နောက်ထပ် ရဟန်းပြုခွင့်ပေးလျှင် (နောက်နောင်လည်း ထိုအတိုင်းမှီဝဲကာ) သာသနာ၌ မလေးစားသူ ဖြစ်စရာရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် ထိုသူ့ကို ရဟန်းပြုခွင့် ပေးတော် မမူ၊ သာမဏေ အဖြစ်၌သာ နေခွင့်ပေးတော်မူသည်။

**ဧဝံ အာဂတော၊ပေ၊အာဟ**။ ။သိက္ခာချ၍ ရဟန်းဘဝကို စွန့်ပြီးမှ မေထုန်မှီဝဲ သူကား "ယောပန ဘိက္ခု" အရ ဘိက္ခု မဟုတ်တော့၊ ထိုသူကား သာသနာတော်ကို လေးစား၍ သိက္ခာချသူ ဖြစ်သောကြောင့် နောင်အခါလည်း သာသနာတော်ကို လေး စားလိမ့်မည်၊ ထို့ကြောင့် ရဟန်းပြုခွင့် ပေးတော်မူသည်။

**ဥတ္တမတ္ထံ**။ ။ဋီကာတို့၌ "ဥတ္တမတ္ထံတိ–အရဟတ္တံ၊ နိဗ္ဗာနမေဝဝါ" ဟု ရှိကြ၏၊ နိဗ္ဗာန်သည်"ဥတ္တမဘာဝ–မြတ်သူ၏ ဖြစ်ကြောင်း "မဟုတ်သောကြောင့်"ဥတ္တမတ္ထံ" ဟု ဘာဝပစ္စည်းဖြင့် မရှိသင့်၊ ဥတ္တမော+အတ္ထော ဥတ္တမတ္ထော"ဟု ပြု၍ "ဥတ္တမတ္ထံ" ဟုသာ ဋီကာတို့၌ မူရင်း ဖြစ်လိမ့်မည်။

ပြီး၍၊ အာဂတေသု–တို့တွင်၊ အနုပသမ္ပာဒေတဗ္ဗ - ရဟန်းမဖြစ်စေထိုက်သူကိုငှင်း၊ ဝါ- ရဟန်းပြု၍ မပေးထိုက်သူကိုငှင်း၊ ဥပသမ္ပာဒေတဗ္ဗ - ကိုငှင်း၊ ဝါ- ကိုငှင်း၊ ဒဿေတွာ – ၍၊ တီဏိပိ – နှ်သော၊ ဝတ္ထုနိ - တို့ကို၊ [ သုဒ္ဓိန္န, မက္ကဋီ , ဝဇ္ဇိပုတ္တကဝတ္ထုတို့ကို၊ ] သမောဓာနေတွာ – ၍၊ ပရိပုဏ္ဏံ – ပြည့်စုံသည်ကို၊ ကတွာ-၍၊ သိက္ခာပဒံ- ကို၊ ပညပေတုကာမော- သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဝေဠုပန၊ပေ၊ ဥဒ္ဒိသေယျာထာတိ-ဟူ၍၊ ဝတွာ-၍၊ ယောပနဘိက္ခု၊ပေ၊အသံဝါသောတိ-ဟူ၍၊ ပရိပုဏ္ဏံ-သော၊ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ ပညပေသိ–မူပြီ။

ဣဒါနိ-၌၊ အဿ–ထိုသိက္ခာပုဒ်၏၊ အတ္ထံ-ကို၊ ဝိဘဇန္တော-ဝေဘန်တော်မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ- ၍၊) ယောပနာတိ ယောယာဒိသောတိ အာဒိံ – ကို၊ အာဟ–မူပြီ၊ ပန–ဆက်၊ တသ္မိံ သိက္ခာပဒေစ- ၌ငှင်း၊ သိက္ခာပဒဝိဘင်္ဂေစ–သိက္ခာပုဒ်၏ ဝိဘင်း၌ငှင်း၊ သကလေ-သော၊ ဝိနယဝိနိစ္ဆယေစ-ဝိနည်း အဆုံးအဖြတ်၌ငှင်း၊ ကောသလ္လံ-ကျွမ်းကျင်သူ၏ဖြစ်ကြောင်းဉာဏ်ကို၊ ပတ္ထယန္တေန-တောင့်တသော အမျိုးသားသည်၊ စတုဗ္ဗိဓော – သော၊ ဝိနယော– ကို၊ ဇာနိတဗ္ဗော-၏၊ဟိ-ချဲ့၊ ပုရာ-ရှေးအခါ၌၊ ဓမ္မသင်္ဂါဟကာ–သုတ် အဘိဓမ္မာဝိနည်းကို သဘောတူရာပေါင်း၍ ယူကြကုန်သော၊ (သံ-ပေါင်း၍+ဂဟ–ယူ၊) ဝါ–သံဂါယနာတင်ကြကုန်သော၊မဟိဒ္ဓိကာ-ကြီးသောတန်ခိုး ရှိကုန်သော၊ မဟာထေရာ - အရှင်မဟာကဿပ အစရှိသော မဟာထေရ်တို့သည်၊ စတုဗ္ဗိဓံ–သော၊ ဝိနယံ-ဝိနည်းကို၊ နီဟရိတွာ–ပရိယတ္တိသာသနာတော်မှ ထုတ်ဖေါ်၍၊ ဝါ–ပါဠိတော်မှထုတ်ဖေါ်၍၊ ပကာသေသုံ-ထင်ရှားပြကြကုန်ပြီ။

**နီဟရိတွာ**။ ။ သာသနတော နီဟရိတွာ၊ တထာဟိ–ပဠဟုပါလိ၊ပေ၊ သုတ္တံ န ဇာနာတိ သုတ္တာနုလောမံ န ဇာနာတီတိဝေမာဒိ ပရိယတ္တိသာသနတော သုတ္တံ သုတ္တာနုလောမဥ္စ နီဟရိတွာ ပကာသေသုံ။ [ ဤပါဠိ၌ သုတ္တ - သုတ္တာနုလောမပါသောကြောင့် သုတ္တ သုတ္တာနုလောမကို ဤပါဠိတော်မှထုတ်ပြနိုင်သည်–ဟူလို။ ]

အနာပတ္တိ–ဝံ အမှာကံ အာစရိယာနံ ဥဂ္ဂဟော ပရိပုစ္ဆာတိ ဂဏ္ဍာတီတိဝေမာဒိ ပရိယတ္တိသာသနတော အာစရိယဝါဒံ နီဟရိတွာ ပကာသေသုံ။ [ ဤ ပါဠိတော်၌ “ အာစရိယာနံ ဥဂ္ဂဟော ” စသည်ဖြင့် အာစရိယဝါဒ ပါရှိသောကြောင့် အာစရိယဝါဒကို (ဤပါဠိတော်မှ) ထုတ်ပြနိုင်သည် – ဟူလို။ ]

ဘာရုကစ္ဆကဝတ္ထုသ္မိံ အာယသ္မာဥပါလိ ဝေမာဟ-အနာပတ္တိ အာဝုသော သုပိနန္တေနာတိဝေမာဒိပရိယတ္တိသာသနတောဝေ အတ္တနောမတိံ နီဟရိတွာ ပကာသေသုံ။ [ ဤပါဠိတော်၌ အရှင် ဥပါလိ၏ အတ္တနောမတိ ပါသည်၊ ထိုသို့ ပါသောကြောင့် အတ္တနောမတိကိုလည်း ဤပါဠိတော်မှ ထုတ်နိုင်သည်–ဟူလို၊ ဘာရုကစ္ဆကဝတ္ထုကား ပဌမပါရာဇိကဆုံးခါနီး၌ လာလတ့်။ ]

ကတမံ စတုဗ္ဗိဓံ - အဘယ် လေးပါးအပြားရှိသော ဝိနည်းကို၊ ( ပကာသေသုံ - သနည်း၊ ) သုတ္တံ - သုတ်ကိုဟုဆိုင်း၊ ဝါ - ပါဠိတော်ကိုဟုဆိုင်း၊ သုတ္တာနုလောမံ - သုတ်အားလျော်သော မဟာပဒေသ လေးပါးကိုဟုဆိုင်း၊ အာစရိယဝါဒံ-ဆရာတို့၏ ဝါဒကိုဟုဆိုင်း၊ ဝါ-အဋ္ဌကထာကိုဟုဆိုင်း၊ အတ္တနောမတိံ - အတ္တနောမတိကိုဟုဆိုင်း၊ ဝါ- မိမိ၏အလိုကိုဟုဆိုင်း၊ ဣတိ (ဣမံ ဝိနယံ ) - ဤလေးပါးအပြားရှိသော ဝိနည်းကို၊ (ပကာသေသုံ - နံပြီ၊) ယံ - ယင်းလေးပါးအပြားရှိသော ဝိနည်းကို၊ သန္ဓာယ-၍၊ အာဟစ္စပဒေန, ရသေန, အာစရိယဝံသေန, အဓိပ္ပါယာ၊ဣတ္ထေ ဟိ၊ပေ၊ အဓိပ္ပါယောတိ အတ္တနောမတိတိ-အာဟစ္စပဒေန၊ပေ၊မတိ ဟူ၍၊ ( အာယသ္မတာ နာဂသေနတ္ထေရေန – သည်၊ ) ဝုတ္တံ – ပြီ၊ [ အာဟစ္စပဒေန – ဘုရားရှင်ကိုယ်တော်တိုင် ဌာန်ကရိုဏ်းတို့ကို ထိခိုက်၍

**အာဟစ္စပဒံ**॥ ॥[ဘဂဝတာ ကဏ္ဍာဒိ ဝဏ္ဏုပ္ပဝတ္တိဋ္ဌာနံ အာဟစ္စ ဝိသေသေတွာ (ဤဟာ အပ်၏ , ဤဟာကား မအပ်, စသည်ဖြင့် အထူးပြု၍ ) ဘာသိတံ ပဒံ အာဟစ္စပဒံ။] "အာဟစ္စ+ဘာသိတံ+ပဒံ"ဟု ပြု၊ ဘုရားရှင်သည် အက္ခရာဖြစ်ရာဌာန်ကရိုဏ်းအရပ်ကို ထိခိုက်စေ၍ (အထူးပြု၍) ဟောအပ်သောပုဒ်သည် အာဟစ္စပဒမည်၏။

**ရသော** ॥ ॥ ဣဒံ ကပ္ပတိ ဣဒံ န ကပ္ပတီတိ အဝိသေသေတွာ – ဤအရာသည် အပ်၏, ဤအရာကား မအပ်"ဟု အထူးခွဲခြား၍ မိန့်တော်မမူဘဲ၊ ယံ ဘဂ္ဂဝေ မယာ ဣဒံ န ကပ္ပတီတိ အပ္ပဋိက္ခိတ္တံ ၊ပေ၊ အာဒိနာ ဝုတ္တံ သာမညလက္ခဏံ (သာမည အမှတ်အသားကို) ဣဓ ရသောတိ အဓိပ္ပေတံတိ အာဟ–ရသောတိ သုတ္တာနုလောမံတိ။

**အာစရိယဝံသော**॥ ॥ဓမ္မသံဂါဟကပ္ပဘုတိ အာစရိယ ပရံပရတော အာနီတာ အဋ္ဌကထာတန္တိ ဣဓ အာစရိယဝံသောတိ အဓိပ္ပေတောတိအာဟ-အာစရိယဝံသောတိ အာစရိယဝါဒေါတိ။

**မှတ်ချက်** ॥ ॥ " ပဉ္စဝိဓေဟိ မဟာရာဇ ကာရဏေဟိ အဈောသမ္မဋ္ဌိ နိဋ္ဌိတဗ္ဗော၊ အာဟစ္စပဒေန , ရသေန , အာစရိယဝံသေန , အဓိပ္ပါယာ , ကာရဏုတ္တရိယတာယ၊ ဣတ္ထေ ဟိ အာဟစ္စပဒန္တိ သုတ္တံ အဓိပ္ပေတံ၊ ရသောတိ သုတ္တာနုလောမံ၊အာစရိယဝံသောတိ အာစရိယဝါဒေါ၊ အဓိပ္ပါယောတိ အတ္တနောမတိ"ဟု မိလိန္ဒပဉှာပါဠိတော် – မေဏ္ဍကပဉှာ ဘာယနာဘာယနပဉှာ၌ ပါဠ်ရှိ၏၊ ထို ပါဠ်အတိုင်းသာ စားသွားလည်း ကောင်း၏၊ ထိုပါဠိမှ (ကာရဏုတ္တရိယတာ – ဟူသော) နောက်ဆုံး ၁ ပါးကိုချန်၍ ရှေ့ ၄ ပါးကို သာဓကပြုထားသည်၊ ထို့ကြောင့် အဓိပ္ပါယာ၏နောင်၌ ဣတိမရှိစေဘဲ "အဓိပ္ပါယောတိ အတ္တနောမတိတိ"ဟူသောနေရာကျမှ ဣတိသဒ္ဒါနှင့်တကွ သာဓကပြီးဆုံးစေသင့်သည်၊ ထိုသို့ သာဓကဆုံးစေပြီးမှ ထိုသာဓကကို ရှင်းပြလို၍ " တတ္ထ သုတ္တံနာမ " စသည်ဖြင့် အဋ္ဌကထာဆရာ ချဲ့ပြလေသည်၊ [ " ယခုစာအုပ်များ၌ အာစရိယဝံသတာ , အဓိပ္ပါယော " ဟု ရှိသည်ကား ပါဠိရင်းနှင့် မညီသည့်အပြင် , တတိယန္တဖြင့် ရှေ့ ၂ ပုဒ်ကို ထားပြီးမှ ပဌမန္တဖြင့် နောင် ၂ ပုဒ်ကို ထားသောကြောင့် စာသွားလည်းမကောင်း။]

ဟောတော်မူအပ်သော ပုဒ်ဖြင့်၎င်း၊ ဝါ-ပါဠိတော်ဖြင့်၎င်း၊ ရသေန-သာမည လက္ခဏာဖြစ်သော မဟာပဒေသ လေးပါးဖြင့်၎င်း၊ အာစရိယ ဝံသေန- ဆရာတို့၏ အနွယ်ဖြစ်သော အာစရိယဝါဒဖြင့်၎င်း၊ ဝါ-အဋ္ဌကထာဖြင့်၎င်း၊ အဓိပ္ပါယာ-မိမိ၏အလိုဖြင့်၎င်း၊ဝါ-အတ္တနောမတိဖြင့်၎င်း (အတ္ထော-အနက် အဓိပ္ပါယ်ကို၊ သမ္ပဋိန္နိတဗ္ဗော-လက်ခံထိုက်၏၊) ဟိ- ဆက်၊ ဧတ္ထ-ဤအာဟစ္စ ပဒ အစရှိသည်တို့တွင်၊ သုတ္တံ - သုတ်ကို၊ ဝါ- ပါဠိတော်ကို၊ အာဟစ္စပဒန္တိ- ဟူ၍၊ အဓိပ္ပေတံ – အပ်၏၊ သုတ္တာနုလောမံ – သုတ်အားလျော်သော မဟာ ပဒေသလေးပါးကို၊ ရသောတိ-ဟူ၍၊ (အဓိပ္ပေတံ၊) အာစရိယဝါဒေါ-ဆရာ တို့၏ဝါဒကို၊ ဝါ-အဋ္ဌကထာကို၊ အာစရိယဝံသောတိ-ဟူ၍၊ (အဓိပ္ပေတော၊) အတ္တနောမတိ-မိမိ၏အလိုကို၊ အဓိပ္ပါယောတိ-ဟူ၍၊ (အဓိပ္ပေတာ။)]

တတ္ထ– ထို သုတ္တစသည်တို့တွင်၊ သုတ္တံနာမ– သုတ္တမည်သည်၊ သကလေ- အလုံးစုံသော၊ ဝိနယပိဋကေ– ၌၊ ပါဠိ- ပါဠိတော်တည်း၊ သုတ္တာနုလောမံ နာမ-မည်သည်၊ စတ္တာရော-န်သော၊ မဟာပဒေသာ-မဟာပဒေသတို့တည်း၊ ဝါ-ဝိနည်းကိုတည်စေတတ်သော ကျယ်ဝန်းသော အရာဌာနတို့တည်း၊ ဝါ- ဝိနည်းကို ဆုံးဖြတ်ခြင်း၏ ကျယ်ဝန်းစွာသောအကြောင်းတို့တည်း၊ယေ-ယင်း

သုတ္တံနာမ၊ပေ၊ပါဠိ။ ။ "သုတ္တ" အရ ပိဋက ၃ ပုံပါဠိအားလုံး ရသော်လည်း ဝိနည်းဆုံးဖြတ်သောအရာဖြစ်၍ အရာအားလျော်စွာ ဝိနည်းပါဠိတော်ကိုသာ "သုတ္တ" ဟု ဖွင့်ပြသည်။ [ဇုဓ ဝိနယဝိနိစ္ဆယဿ အဓိကတတ္တာ (အရာ၏အဖြစ်ကြောင့်) တဒ နုရူပိကမေဝ သုတ္တံ ဒဿေန္တော အာဟ—သုတ္တံနာမ ၊ပေ၊ ပါဠိတိ။]

မဟာပဒေသာ၊ ။ [မဟာဩကာသာ, မဟန္တာနိ (ဝိနယဿ ပတိဋ္ဌာပနာနိ) ဌာနာနိ။] ပဒေသကို ဩကာသဟု ဖွင့်၍ ဩကာသကို ဌာနဟု ဖွင့်သည်၊ ဌာနဟူသည် ဝိနည်း အဆုံးအဖြတ်ကို တည်တန့်စေတတ်သော အရာတို့တည်း၊ ယေသု ပတိဋ္ဌာပိ တော ဝိနယော ဝိနိစ္ဆိယတိ အသန္ဒေဟတော – ယင်း ဌာနတို့၌ တည်စေအပ်သော ဝိနည်းကို ယုံမှားမရှိသောအားဖြင့် ဆုံးဖြတ်အပ်၏၊ မဟန္တာနိ ဝါ ကာရဏာနိ မဟာ ပဒေသာ၊ မဟန္တာနိ ဝိနယဝိနိစ္ဆယကာရဏာနီတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

အရကောက်။ ။ မဟာပဒေသ၏အရကိုကား "တေ အတ္ထတော ယံ ဘိက္ခဝေတိ အာဒိ ပါဠိဝသေန–ဖြင့်၊ အကပ္ပိယာနုလောမတော ကပ္ပိယာနုလောမတောစ ပုဂ္ဂလေ ဟိ နယတော တထာတထာ ဝယှမာနာ အတ္ထနယာဧဝ" ဟူသော ဝိမတိ ဋီကာနှင့် အညီ "အကပ္ပိယနှင့်လျော်စွာ၎င်း ကပ္ပိယနှင့်လျော်စွာ၎င်း ဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်တို့ နည်းယူ အပ်သော အနက် အဓိပ္ပါယ်တို့ပင်တည်း" ဟု မှတ်၊ သာရတ္ထဋီကား "မဟာပဒေသ ပါဠိတော်ကိုပင် မဟာပဒေသ"ဟု ဝဒန္တိဝါဒပြ၏၊ ထိုပါဠိမှာ သုတ္တအရတွင် ပါဝင်ပြီ ဟု ဆို၍ ဝိမတိပယ်လေသည်။

မဟာပဒေသ လေးပါးတို့ကို၊ ဘဂဝတာ-သည်၊ ဧဝံ-သို့၊ ဝုတ္တာ-နိပြီ၊ (ကိံ)၊ ဘိက္ခဝေ-တို့၊ ယံ-အကြင် အရာဝတ္ထုကို၊ မယာ- သည်၊ ဣဒံ-ဤ အရာဝတ္ထု သည်၊ နကပ္ပတိ-မအပ်၊ ဣတိ-ဤသို့၊ အပ္ပဋိက္ခိတ္တံ-ပယ်တော်မမူအပ်၊ တံ-ထို အရာဝတ္ထုသည်၊ အကပ္ပိယံ-မအပ်သော အရာဝတ္ထုကို၊ စေ အနုလောမေတိ-အကယ်၍ လျော်စွာပြုအံ့၊ (နာမဓာတ်ကြိသည်၊ ) ကပ္ပိယံ - အပ်သော အရာဝတ္ထုကို၊ (စေ)ပဋိဗာဟတိ-အကယ်၍ တားမြစ်အံ့၊ (ဧဝံသတိ)တံ-ထို အရာဝတ္ထုသည်၊ ဝေါ- တို့အား၊ နကပ္ပတိ- မအပ်၊ ဘိက္ခဝေ-တို့၊ ယံ-ကို၊ မယာ-သည်၊ ဣဒံ-သည်၊ န ကပ္ပတိ၊ ဣတိ-သို့၊ အပ္ပဋိက္ခိတ္တံ-မမူအပ်၊ တံ- ထို အရာဝတ္ထုသည်၊ကပ္ပိယံ-အပ်သောအရာဝတ္ထုကို၊ စေ အနုလောမေတိ-အံ့၊ အကပ္ပိယံ-မအပ်သောအရာဝတ္ထုကို၊ (စေ) ပဋိဗာဟတိ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ) တံ ဝေါ ကပ္ပတိ၊ ယံ ဘိက္ခဝေ မယာ ဣဒံ ကပ္ပတိ၊ ဣတိ-သို့၊ အနနုညာတံ-ခွင့်ပြုတော်မမူအပ်၊ တံ-ထို အရာဝတ္ထုသည်၊ အကပ္ပိယံ-ကို၊ စေ အနုလောမေတိ၊ ကပ္ပိယံ(စေ) ပဋိဗာဟတိ၊ တံ ဝေါ န ကပ္ပတိ၊ပေ၊တံ-သည်၊ ဝေါ- တို့အား၊ ကပ္ပတိ-၏၊ ဣတိ-သို့၊ (ဝုတ္တာ-နိပြီ။)

အာစရိယ ဝါဒေါနာမ-မည်သည်၊ ဓမ္မသင်္ဂါဟကေဟိ-သုတ် အဘိဓမ္မာ ဝိနည်းကို သင်္ဂါယနာတင်တော်မူကြကုန်သော၊ ဝါ-ကုန်သော၊ပဉ္စဟိ အရဟန္တသတေဟိ-တို့သည်၊ ထပိတာ-ထားအပ်သော၊ ပါဠိဝိနိမုတ္တာ-ပါဠိတော်မှ အလွတ်ဖြစ်သော၊ သြက္ကန္တဝိနိစ္ဆယပ္ပဝတ္တာ - ဉာဏ်ဖြင့် သက်ရောက်အပ်သော အဆုံးအဖြတ်ဖြစ်သော၊ အဋ္ဌကထာတန္တိ-အဋ္ဌကထာအစဉ်တည်း၊ အတ္တနောမတိနာမ-မည်သည်၊သုတ္တသုတ္တာနုလောမ အာစရိယဝါဒေ-သုတ္တ,

**မှတ်ချက်။** ။ဤ မဟာပဒေသပါဠိတော်သည် မဟာဝါဘေသဇ္ဇခန္ဓကဉ် လာလတံ့ ဖြစ်သောကြောင့် ထို ခန္ဓက၏ အဖွင့်များမှ အဓိပ္ပါယ်ယူပါ၊ အပ် — မအပ်ဟူရာဝယ် တချို့နေရာ၌ ကိုယ် နှုတ် အပြုအမူ ဖြစ်၍ တချို့နေရာ၌ ပစ္စည်းဝတ္ထု ဖြစ်သောကြောင့် "ယံ—အကြင်အရာဝတ္ထု" ဟု ပေးသည်။

**အာစရိယဝါဒေါ ၊ပေ၊ တန္တိ ။** ။ ယဒိပိ တတ္ထတတ္ထ ဘဂဝတာ ပဝတ္တိတာ ပကိဏ္ဏကဒေသနာဝ အဋ္ဌကထာ= အဋ္ဌကထာဟူသည် (သီးခြားမဟုတ်) ဟိုမြို့ဒီရွာ၌ ဘုရားရှင်ဟောတော်မူအပ်ပြီးသော ရောရောနှောနှော ဒေသနာပင်ဖြစ်သည်၊ သာ ပန ဓမ္မသင်္ဂါဟကေဟိ ပဌမံ တီဏိ ပိဋကာနိ သင်္ဂါယိတွာ တဿ အတ္ထဝဏ္ဏနာနုရူပေနေဝ ဝါစနာမဂ္ဂံ အာရောပိတတ္တာ အာစရိယဝါဒေါတိ ဝုစ္စတိ - သို့သော်'သံဂါယနာတင် ထေရ်တို့သည် ပိဋက ပါဠိတော်များကို ပဌမသံဂါယနာတင်ကြပြီးနောက် ထို ပိဋက၏ အနက်အဖွင့် အနေအားဖြင့် ပို့ချစဉ်သို့ တင်ထားအပ်သည့်အတွက် ထိုအဋ္ဌကထာကို အာစရိယဝါဒ ဟု ခေါ်ထားသည်။

သုတ္တာနုလောမ,အာစရိယဝါဒတို့ကို၊ မုဥ္စိတွာ-လွှတ်၍၊အနုမာနေန-မှန်းဆတတ်သော ဉာဏ်ဖြင့်၊ အတ္တနော – ၏၊ အနု ဗုဒ္ဓိယာ - သုတ္တစသည်သို့ အစဉ်လိုက်သောဉာဏ်ဖြင့်၊ နယဂ္ဂါဟေန-သုတ္တစသည်မှရအပ်သောနည်းကို ယူခြင်းဖြင့်၊ [ သုတ္တာဒိနိ အနုဂတဗုဒ္ဓိယာ၊ သုတ္တာဒိတော လဒ္ဓမာနနယဂ္ဂါဟေန။ ] ဥပဋ္ဌိတာကာရ ကထနံ - ထင်လာသော အခြင်းအရာကို ပြောဆိုခြင်းတည်း၊ အပိစ-စင်စစ်ကား၊သုတ္တန္တာဘိဓမ္မဝိနယဋ္ဌကထာသု- သုတ္တန်အဘိဓမ္မာဝိနည်းအဋ္ဌကထာတို့၌၊အာဂတော-သော၊သဗ္ဗောပိ-လည်းဖြစ်သော၊ထေရဝါဒေါ-ထေရဝါဒသည်၊ ဝါ - ဆရာတို့၏ ပြောဆိုကြောင်း စကားသည်၊ အတ္တနော မတိနာမ - မည်၏။

ပန-ဆက်၊ တံ အတ္တနောမတိံ–ထို အတ္တနောမတိကို၊ ဂဟေတွာ-ယူ၍၊ ဝါ-လက်ကိုင်ပြု၍၊ ကထေန္တေန–ပြောသောပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ [ တပါးနှင့်တပါး အပြိုင်အဆိုင်ပြောရာ၌ အတ္တနောမတိကို လက်ကိုင်ပြု၍ ပြောသောပုဂ္ဂိုလ်သည်၊] ဒဠှဂ္ဂါဟံ-ခိုင်မြဲစွာယူအပ်သည် မည်လောက်အောင်၊ ဂဟေတွာ-ယူ၍၊ န ဝေါဟရိတဗ္ဗံ-မပြောဆိုရာ၊ ဝါ-မပြောဆိုရ၊ကာရဏံ-အကြောင်းကို၊ သလ္လက္ခေတွာ-မှတ်သား၍၊ အတ္ထေန-မိမိယူအပ်သော အနက်အဓိပ္ပါယ်နှင့်၊ ပါဠိံ-ပါဠိတော်ကိုရင်း၊ ပါဠိယာ-နှင့်၊ အတ္ထံစ-မိမိယူအပ်သော အနက်အဓိပ္ပါယ်ကိုရင်း၊ သံသန္ဒိတွာ-နှီးနှောတိုက်ဆိုင်၍၊ [အပြန်အလှန် နှီးနှောတိုက်ဆိုင်၍-ဟူလို၊]ကထေတဗ္ဗံ-ပြောရာ၏၊ ဝါ-ပြောရမည်၊ အတ္တနောမတိ-ကို၊အာစရိယဝါဒေ – အာစရိယဝါဒ၌၊ ဩတာရေတဗ္ဗာ–ဉာဏ်ဖြင့် သက်ဝင်စေထိုက်၏၊ (သွင်း၍ကြည့်ထိုက်၏၊) တတ္ထ- ထို အာစရိယဝါဒ၌၊ သစေ ဩတရတိစေဝ-

အချုပ်မှာ–"အာစရိယာ ဝဒန္တိ သံဝဏ္ဏေန္တိ ပါဠိံ ဧတေနာတိ အာစရိယဝါဒေါ" ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၍ ပါဠိတော်ကိုဖွင့်ဆိုကြောင်းဖြစ်သော သံဂါယနာတင် ထေရ်တို့၏စကားကို "အာစရိယဝါဒ"ဟု ခေါ်ရကား " အာစရိယဝါဒ " ဟူသည်မှာ အဋ္ဌကထာပင်ဖြစ်၏၊ ထို အဋ္ဌကထာဟူသည်လည်း (နောက်မှထည့်အပ်သော တချို့စကားမှတပါး များသောအားဖြင့်) ဘုရားဟောတော်မူအပ်သောစကားများသာ ဖြစ်သည်-ဟူလို။

**အပိစ**။ ။အတ္တနောမတိံ သာမညတော ပဌမံ ဒဿေတွာ (သုတ္တသုတ္တာနုလောမ အာစရိယဝါဒေ မုဥ္စိတွာ–စသည်ဖြင့် သာမညပြပြီး၍) ဣဒါနိ တမေဝ ဝိသေသေတွာ ဒဿေန္တော အပိစာတိ အာဒိမာဟ၊ ဤ ကျမ်းတက်ပုံကိုကြည့်၍ " အပိစ – တနည်းကား"ဟု မပေးဘဲ "စင်စစ်ကား"ဟု ပေးသည်။

**တံပန**။ ။အတ္တနောမတိကို အကိုးအကားပြု၍ ပြောသူတို့ ကျင့်ထိုက် (စိတ်ထားထိုက်)သော အခြင်းအရာကိုပြလို၍ တံပန – စသည်မိန့်။ [ အတ္ထေနာတိ – အတ္တနာ သလ္လက္ခိတေန အတ္ထေန၊ ဩတာရေတဗ္ဗာတိ– ဉာဏေန အနုပ္ပဝေသေတဗ္ဗာ။

အကယ်၍မူလည်း သက်ဝင်အံ့၊(သစေ)သမေတိစ-အကယ်၍မူလည်း ညီညွတ်အံ့၊ (ဧဝံသတိ) ဂဟေတဗ္ဗာ – အတည်ယူထိုက်၏၊ သစေ နေဝဩတရတိ– အကယ်၍မူလည်း မသက်ဝင်အံ့၊ ( သစေ) န သမေတိ – အံ့၊ (ဧဝံသတိ) န ဂဟေတဗ္ဗာ၊ ဟိ-မှန်၊(တနည်း)(ကသ္မာ-ကြောင့်နည်း၊)ဟိယသ္မာ-ကြောင့်၊ **အယံ** အတ္တနောမတိနာမ-မည်သည်၊ သဗ္ဗဒုဗ္ဗလာ- အလုံးစုံတို့အောက်အားနည်း၏၊(တသ္မာ-ထို့ကြောင့်တည်း၊)[မိမိ၏ဉာဏ်အထင်မျှဖြစ်သောကြောင့် သုတ္တစသည်တို့အောက် အားနည်း၏၊ ထို့ကြောင့် အာစရိယဝါဒနှင့် ညီညွတ်မှ အတည်ယူပါ, မညီညွတ်လျှင် အတည် မယူပါနှင့် - ဟူလို။ ] အတ္တနောမတိတော - ထက်၊ **အာစရိယဝါဒေါ-သည်၊** ဗလဝတရော–သာ၍ အားရှိ၏။

အာစရိယဝါဒေါပိ- ကိုလည်း၊ သုတ္တာနုလောမေ- ၌၊ ဝါ-မဟာပဒေသ ၄ ပါး၌၊ ဩတာရေတဗ္ဗော- ဉာဏ်ဖြင့် သက်ဝင်စေထိုက်၏၊ ဝါ-သွင်းချထိုက်၏၊ တတ္ထ–ထို သုတ္တာနုလောမ၌၊ ဩတရန္တောယေဝ-သက်ဝင်သည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊ သမန္တောယေဝ - ညီညွတ်သည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊ ( အာစရိယဝါဒေါ – အာစရိယဝါဒကို၊) ဂဟေတဗ္ဗော- အတည်ယူထိုက်၏၊ ဣတရော- အခြားသော သုတ္တာနုလောမ၌ မသက်ဝင်မညီညွတ်သော အာစရိယဝါဒကို၊ နဂဟေတဗ္ဗော-ထိုက်၊ဟိ-မှန်၊(တနည်း)(ကသ္မာ-နည်း၊)ဟိယသ္မာ-ကြောင့်၊ အာစရိယဝါဒတော-ထက်၊ သုတ္တာနုလောမံ-သည်၊ ဗလဝတရံ-၏၊(တသ္မာ-တည်း၊)သုတ္တာနုလောမံပိ-ကိုလည်း၊သုတ္တေ-ပါဠိတော်၌၊ဩတာရေတဗ္ဗံ-၏၊ ဝါ - ၏၊ တတ္ထ - ထို သုတ်၌၊ ဩတရန္တံ မေဝ - သာလျှင်ဖြစ်သော၊ သမေန္တံ မေဝ-သော၊ (သုတ္တာနုလောမံ-ကို၊) ဂဟေတဗ္ဗံ–၏၊ ဣတရံ–အခြားသော ( သုတ်၌ မသက်ဝင် မညီညွတ်သော ) သုတ္တာနုလောမကို၊ နဂဟေတဗ္ဗံ– ထိုက်၊ ဟိ- မှန်၊ (တနည်း) (ကသ္မာ - နည်း၊) ဟိ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ သုတ္တာနုလောမတော-ထက်၊ သုတ္တမေဝ-သာ၊ ဗလဝတရံ–၏၊ (တသ္မာ-တည်း။)

**အာစရိယဝါဒေါပိ ။** ။ ပမာဒပါဌဝသေန ( အမှတ်တမဲ့ ရေးသားအပ်သော ပါဌ်၏ အစွမ်းဖြင့် ) အာစရိယဝါဒဿ. ကဒါစိ သုတ္တာနုလောမေန အသံသန္ဒနာပိ သိယာ၊သော (ပမာဒပါဌ်ဖြစ်နေ၍ သုတ္တာနုလောမ–မဟာပဒေသနှင့်မနှီးနှောမိသော အဋ္ဌကထာကို ) န ဂဟေတဗ္ဗောတိ ဒဿေန္တော အာဟ — အာစရိယဝါဒေါပိ၊ပေ၊ သမေန္တောဝ ဂဟေတဗ္ဗောတိ။

**သမန္တံမေဝဂဟေတဗ္ဗံ ။** ။ ပါဠိတော် သုတ္တနှင့် လျော်မှသာ မဟာပဒေသကို အတည်ယူပါ၊ မဟာပဒေသ၌ ဘုရားရှင် တိုက်ရိုက်ဟောတော်မူအပ်သော ပါဠိ မပါရှိသောကြောင့် သုတ္တ (ပါဠိတော်) နှင့် မညီလျှင် အတည်မယူပါနှင့်–ဟူလို။

ဟိ - မှန်၏၊ သုတ္တံ - ပါဠိတော်သည်၊ ဝါ - ကို၊ အပ္ပဋိဝတ္တိယံ - တစုံတယောက်မျှ မတားမြစ်အပ် မတားမြစ်နိုင်၊ ကာရကသံဃသဒိသံ-သံဂါယနာတင်မှုကိုပြုသော သံဃာတော်နှင့်အလားတူ၏၊ ဗုဒ္ဓါနံ – တို့၏၊ ဌိတကာလသဒိသံ- တည်ရာကာလနှင့် အလားတူ၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ (အတ္တနောမတိထက် အာစရိယဝါဒ၏ အားရှိသည်၏အဖြစ် , အာစရိယဝါဒထက် သုတ္တာနုလောမ၏ အားရှိသည်၏အဖြစ် , သုတ္တာနုလောမထက် သုတ္တ၏ အားရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊) ယဒါ-၌၊ ဒွေ-န်သော၊ ဘိက္ခူ- တို့သည်၊ သာကစ္ဆန္တိ - အတူတကွ ပြောဆိုကြကုန်၏၊ ဝါ - ဆွေးနွေးကြကုန်၏၊ ( တဒါ) သကဝါဒီ -မိမိဂိုဏ်း၏ အယူဝါဒရှိသူသည်၊ သုတ္တံ-ကို၊ဂဟေတွာ-၍၊ ဝါ-လက်ကိုင်ပြု၍၊ ကထေတိ - ပြောအံ့၊ ပရဝါဒီ - အခြားဂိုဏ်း၏ အယူဝါဒရှိသူသည်၊ သုတ္တာနုလောမံ - ကို၊ (ဂဟေတွာ ကထေတိ၊) တေဟိ- ထို ဆွေးနွေးသော ရဟန်းတို့သည်၊ အညမညံ- အချင်းချင်း၊ ခေပံဝါ– အယူဝါဒကို ပစ်ပယ်ခြင်းကိုဖြစ်စေ၊ ဂရဟံဝါ– ပုဂ္ဂိုလ်ကိုကဲ့ရဲ့ခြင်းကိုဖြစ်စေ၊ အကတွာ-၍၊ သုတ္တာနုလောမံ-ကို၊ သုတ္တေ-၌၊ ဩတာရေတဗ္ဗံ-၏၊ (သုတ္တေ - ၌၊) သစေ ဩတရတိ,သစေ သမေတိ (ဧဝံသတိ)ဂဟေတဗ္ဗံ၊ နောစေ ဩတရတိ,နောစေ သမေတိ, ( ဧဝံ သတိ)န ဂဟေတဗ္ဗံ၊ သုတ္တသ္မိံယေဝ-မိမိတို့၏ပါဠိ၌သာ၊ ဌာတဗ္ဗံ-တည်ရာ၏။

[ တဘက်ကသုတ္တ တဘက်က အာစရိယဝါဒကို လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကို ပြလိုသောကြောင့် " အထာယံ " စသည်မိန့်၊ ] အထ – သို့မဟုတ်၊ အယံ-ဤ သကဝါဒီပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သုတ္တံ ဂဟေတွာ ကထေတိ၊ ပရော–ပရဝါဒီပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ အာစရိယဝါဒံ - ကို ၊ပေ၊ အနောတရန္တော - မသက်ဝင်သည်လည်း ဖြစ်သော၊ အသမေန္တော-စ-သော၊ ဂါရယှာစရိယဝါဒေါ-ကဲ့ရဲ့ထိုက်သော အာစရိယဝါဒကို၊ န ဂဟေတဗ္ဗော - ထိုက်၊ သုတ္တသ္မိံယေဝ,ဌာတဗ္ဗံ - ရာ၏။

**အပ္ပတိဝတ္တိယံစသည်** ။ ။ အပ္ပတိဝတ္တိယန္တိ အပ္ပတိဗာဟိယံ၊ ကာရကသံဃသဒိသန္တိ – ပမာဏတ္တာ (လိုရင်းပမာဏ၏ အဖြစ်ကြောင့်) သံဂီတိကာရက သံဃသဒိသံ၊ ဗုဒ္ဓါနံ ဌိတကာလသဒိသန္တိ ဓရမာနာ ဗုဒ္ဓေဟေဝ ကထိတတ္တာ ဓရမာနဗုဒ္ဓသဒိသန္တိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

**သကဝါဒီ၊ပေ၊အကတွာ**။ ။သကဝါဒီ အတ္တနော သုတ္တံ ဂဟေတွာ ဝေါဟရတိ၊ ပရဝါဒီ သုတ္တာနုလောမံတိ–အညနိကာယဝါဒီ ( မဟာဝိဟာရနိကာယမှ တပါးသော အခြားဂိုဏ်း၏ အယူဝါဒရှိသူသည်) အတ္တနော နိကာယေ သုတ္တာနုလောမံ ဂဟေတွာ ကထေတိ၊ပေ၊ ကိံ ဗုဒ္ဓမိနာတိ ခေပံဝါ–ဤအယူဖြင့် ဘာအကျိုးရှိအံ့နည်းဟု အယူဝါဒ ပစ်ပယ်မှုကိုဖြစ်စေ“ကိံ သော ဗာလော ဝဒတီတိ ဂရဟံဝါ (ဤအမိုက်ကောင်က ဘာပြောရတာလဲ” ဟု ပုဂ္ဂိုလ်ကိုကဲ့ရဲ့မှုကိုဖြစ်စေ) အကတွာ။

[ တဘက်ကသုတ္တ တဘက်က အဏ္ဏနောမတိကို လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကို ပြလို
သောကြောင့် "အထာယံ" စသည်မိန့်]၊ပေ၊ သုတ္တသ္မိံ ယေဝ ဌာတဗ္ဗံ။

ပန - ကား၊ အယံ - ဤ သကဝါဒီပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သုတ္တာနုလောမံ - ကို၊
ဂဟေတွာ - ၍၊ အထကထေတိ - အကယ်၍ပြောအံ့၊ ပရော- ပရဝါဒီပုဂ္ဂိုလ်
သည်၊ သုတ္တံ- ပါဠိတော်ကို၊ (ဂဟေတွာ အထကထေတိ)၊ သုတ္တံ - ပရဝါဒီ၏
သုတ်ကို၊ သုတ္တာနုလောမေ- သကဝါဒီ၏ သုတ္တာနုလောမ၌၊ ဩတာရေတဗ္ဗံ-
၏၊(သုတ္တာနုလောမေ-၌၊)သစေ ဩတရတိ သစေသမေတိ၊တိသော သံဂီတိ
ယော – သံဂါယနာ ၃ တန်တို့သို့၊ အာရုဠှံ - တင်အပ်သော၊ ပါဠိအာဂတံ–
ပါဠိတော်၌လာသောသုတ်သည်၊(ဟုတွာ-၍၊) သစေ ပညာယတိ–အကယ်၍
ထင်ရှားအံ့၊ ( ဧဝံသတိ၊ ) ဂဟေတဗ္ဗံ - ၏၊ တထာ-ထိုအခြင်းအရာအားဖြင့်၊
(သံဂါယနာ ၃ တန်တို့သို့ တင်အပ်သော ပါဠိတော်တွင် ပါဝင်သောသုတ်၏
အခြင်းအရာအားဖြင့်၊)နောစေ ပညာယတိ၊စေန ဩတရတိ,စေန သမေတိ၊
ဗာဟိရကသုတ္တံဝါ – သာသနာတော်မှအပဖြစ်သော သုတ်သည်သော်၎င်း၊
သိလောကောဝါ - သာသနာတော်မှအပဖြစ်သော ဂါထာသည်သော်၎င်း၊
အညံ-သော၊ဂုဠှဝေဿန္တရဂုဠှဝိနယ ဝေဒလ္လာဒီနံ-ဂုဠှဝေဿန္တရကျမ်း,ဂုဠှ
ဝိနယကျမ်း,ဝေဒလ္လကျမ်းအစရှိသည်တို့တွင်၊အညတရတော-တပါးပါးသော
ကျမ်းမှ၊ အာဂတံ-လာသော၊ ဂါရယှသုတ္တံဝါ-ကဲ့ရဲ့ထိုက်သော သုတ်သည်
သော်၎င်း၊ (သစေ) ဟောတိ၊ (ဧဝံသတိ) န ဂဟေတဗ္ဗံ၊ သုတ္တာနုလောမသ္မိံ
ယေဝ ဌာတဗ္ဗံ၊ [ ပရဝါဒီက အာစရိယဝါဒကို လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကို ပြလို
သောကြောင့်"အထာယံ"စသည်မိန့်၊]၊ပေ၊သုတ္တာနုလောမေယေဝဌာတဗ္ဗံ၊
[ ပရဝါဒီက အတ္တနောမတိကို လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကို ပြလိုသောကြောင့်
"အထာယံ"စသည်မိန့်၊] ၊ပေ၊သုတ္တာနုလောမေယေဝ ဌာတဗ္ဗံ။

**အထပနာယံ** ။ ။ [အယံတိ သကဝါဒီ၊ ပရောတိ အညနိကာယဝါဒီ၊] သက
ဝါဒီက သုတ္တာနုလောမကိုချည်းကိုင်ပုံပြ၍ ပရဝါဒီက သုတ္တစသည် ကိုင်ပုံကိုပြလိုသော
ကြောင့်"အထပန"ဟု ပနဖြင့် တက်သည်၊ ပရဝါဒီသည် အားရှိသော သုတ္တကို ကိုင်၍
ပြောသော်လည်း သူ၏ သုတ္တသည် ပါဠိတော်ရင်း ဟုတ်ချင်မှ ဟုတ်မည် ဖြစ်သော
ကြောင့် သကဝါဒီ၏သုတ္တာနုလောမ၌သွင်းချ၍ ညီညွတ်မှ အတည်ယူပါ-ဟု ဆိုသည်။

**ဗာဟိရကသုတ္တစသည်**။ ။တိဿော သံဂီတိယော အနာရုဠှဂုဠှဝေဿန္တရာဒီနိ
( သံဂါယနာ ၃ တန်သို့ မတင်အပ်သော " ဂုဠှဝေဿန္တရသုတ် " အစရှိကုန်သော )
မဟာသံဃိကနိကာယဝါသီနံ သုတ္တာနိ (မဟာသံဃိကဂိုဏ်းဝင် ပုဂ္ဂိုလ်များ၏ သုတ်
တို့သည်)၊ ဝေဒလ္လာဒီနံတိ အာဒိသဒ္ဒေန ဂုဠှဥမ္မဂ္ဂါဒိဂ္ဂဟဏံ ဝေဒိတဗ္ဗံ။

[သကဝါဒိက အာစရိယဝါဒကိုချည်းကိုင်ပုံကိုပြ၍ ပရဝါဒီကသုတ္တစသည် ကိုင်ပုံကိုပြလိုသောကြောင့် "အထပနာယံ" စသည်မိန့်၊] ပန–ကား၊ အယံ-သည်၊ အာစရိယဝါဒံ-ကို၊ ဂဟေတွာ-၍၊ အထကထေတိ- အံ့၊ ပရော-သည်၊ သုတ္တံ (ဂဟေတွာ အထကထေတိ )၊ပေ၊ ဇာတရံ – အခြားသော အာစရိယ ဝါဒ၌ မသက်ဝင် မညီညွတ်သော၊ ဂါရယှသုတ္တံ-ကို၊ န ဂဟေတဗ္ဗံ၊ အာစရိယ ဝါဒေယော ဌာတဗ္ဗံ၊ [ သကဝါဒိက အာစရိယဝါဒ , ပရဝါဒိက သုတ္တာနု လောမကို လက်ကိုင်ပြု၍ငြင်းပုံကိုပြလိုသောကြောင့်"အထာယံ"စသည်မိန့်၊] အထ- သို့မဟုတ်၊ အယံ– သည်၊ပေ၊ဇာတရံ- အခြားသော အာစရိယဝါဒ၌ မသက်ဝင်မညီညွတ်သော သုတ္တာနုလောမကို၊န ဂဟေတဗ္ဗံ၊အာစရိယဝါဒေ ယေဝ ဌာတဗ္ဗံ၊ [သကဝါဒိက အာစရိယဝါဒ, ပရဝါဒိက အတ္တနောမတိကို လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကို ပြလိုသောကြောင့် " အထာယံ " စသည်မိန့်၊] အထ- သို့မဟုတ်၊ အယံ-သည်၊ပေ၊အာစရိယဝါဒေယေဝ ဌာတဗ္ဗံ။

[သကဝါဒိက အတ္တနောမတိကိုချည်း ကိုင်ပုံကိုပြ၍ ပရဝါဒီကသုတ္တစသည် ကိုင်ပုံကိုပြလိုသောကြောင့် "အထပနာယံ" စသည်မိန့်၊] ပန–ကား၊ အယံ– သည်၊ အတ္တနောမတိံ ဂဟေတွာ အထကထေတိ၊ ပရော-သည်၊ သုတ္တံ(ဂဟေ တွာ အထကထေတိ၊ ဝေံသတိ၊) သုတ္တံ–ပရဝါဒီသုတ်ကို၊ အတ္တနောမတိယံ- သကဝါဒီ၏ အတ္တနောမတိ၌၊ ဩတာရေတဗ္ဗံ ၊ ပေ ၊ အတ္တနောမတိယမေဝ ဌာတဗ္ဗံ၊ [ သကဝါဒိက အတ္တနောမတိ , ပရဝါဒိက သုတ္တာနုလောမကို လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကိုပြလိုသောကြောင့် "အထာယံ" စသည်မိန့်၊] အထ- သို့မဟုတ်၊ပေ၊ ဌာတဗ္ဗံ၊ [သကဝါဒိက အတ္တနောမတိ , ပရဝါဒိက အာစရိယ ဝါဒကို လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကိုပြလိုသောကြောင့် " အထာယံ " စသည်မိန့်၊] အထ- သို့မဟုတ်၊ပေ၊ ဌာတဗ္ဗံ၊ အတ္တနော- ၏၊ ဂဟဏမေဝ- အယူကိုသာ၊ ဗလိယံ-အားရှိသည်ကို- ကာတဗ္ဗံ-၏၊ စ-ဆက်၊ သဗ္ဗဋ္ဌာနေသု-အလုံးစုံသော ဌာနတို့၌၊ ခေပေါဝါ–အယူဝါဒကို ပစ်ပယ်ခြင်းကိုရင်း၊ ဂရဟာဝါ–ပုဂ္ဂိုလ် ကို ကဲ့ရဲ့ခြင်းကိုရင်း၊ န ကာတဗ္ဗော–မပြုထိုက်၊ ဇာတိ– သုတ္တစသည်ကို လက်ကိုင် ပြု၍ ငြင်းပုံအပြီးတည်း။

မှတ်ချက်။ ။ သကဝါဒီနှင့် ပရဝါဒီတို့ သုတ္တချင်း , သုတ္တာနုလောမ စသည်ချင်း လက်ကိုင်ပြု၍ ငြင်းပုံကို မပြချေ၊ ထိုသို့မပြခြင်းမှာ သုတ်ကို သုတ်၌ သွင်းချခြင်းသည် ထူးခြားသကဲ့သို့လည်း မထင်ရ, ဆိုအပ်ခဲ့ပြီးကိုနည်းမှီ၍လည်း သိလောက်သောကြောင့် ဖြစ်သည်–ဟုဋီကာဆိုသည်။

[ သကဝါဒီနှင့် ပရဝါဒီတို့၏ ကပ္ပိယ အကပ္ပိယငြင်းရာ၌ ကျင့်ထိုက်သော အစီအစဉ်ကိုပြလို၍ "အထပနာယံ" စသည်မိန့်၊] ပန- ကား၊ အယံ-သည်၊ ကပ္ပိယန္တိ-အပ်၏ဟူ၍၊ ဂဟေတွာ အထကထေတိ၊ ပရော-သည်၊အကပ္ပိယန္တိ-မအပ်ဟူ၍၊ ( ဂဟေတွာ အထကထေတိ၊ ဧဝံသတိ၊ ) သုတ္တေစ- သကဝါဒီ၏ သုတ်၌၎င်း၊သုတ္တာနုလောမေစ-သကဝါဒီ၏သုတ္တာနုလောမ၌၎င်း၊ သြတာရေတဗ္ဗံ -၏၊ (သြတာရိယမာနံ- သက်ဝင်စေအပ်သည် ရှိသော်၊) ကပ္ပိယံ- သည်၊ သစေဟောတိ၊ (ဧဝံသတိ) ကပ္ပိယေ-အပ်သောအရာ၌၊ ဌာတဗ္ဗံ-၏၊ အကပ္ပိယံ-သည်၊ သစေ ဟောတိ၊ (ဧဝံသတိ) အကပ္ပိယေ ဌာတဗ္ဗံ၊ အထ- သို့မဟုတ်၊ အယံ-သည်၊ တဿ-ထိုဝတ္ထု၏၊ ကပ္ပိယဘာဝသာဓကံ-အပ်သည်၏အဖြစ်ကို ပြီးစေတတ်သော၊ သုတ္တတော-သုတ်မှ၊ ဗဟုံ-သော၊ ကာရဏစ္ဆ- အကြောင်း ယုတ္တိကို၎င်း၊ ဝိနိစ္ဆယဉ္စ - အဆုံးအဖြတ်ကို၎င်း၊ ဒဿေတိ - ပြနိုင်အံ့၊ ပရော-သည်၊ ကာရဏံ-ကို၊ နဝိန္ဒတိ-မရအံ့၊ (ဧဝံသတိ)ကပ္ပိယေဝ-၌သာ၊ ဌာတဗ္ဗံ-၏၊ အထ-သို့မဟုတ်၊ပေ၊ဒဿေတိ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ၊) အနေန- ဤ သကဝါဒီ ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ အတ္တနော- ၏၊ ဂဟဏန္တိ - အယူဟူ၍၊ ကတွာ – ၍၊ ဒဠှံ - စွာ၊ အာဒါယ-၍၊ န ဌာတဗ္ဗံ–မတည်ရာ၊ သာဓုတိ-ကောင်း၏ဟူ၍၊ သမ္ပဋိစ္ဆိတွာ- လက်ခံ၍၊ အကပ္ပိယေဝ—၌သာ၊ ဌာတဗ္ဗံ၊ အထ- သို့မဟုတ်၊ ဒွိန္နမ္ပိ- သကဝါဒီ ပရဝါဒီ ၂ဦးလုံးတို့၏လည်း၊ကာရဏစ္ဆာယာ-အကြောင်းတုအကြောင်းရောင် သည်၊ ဒိဿတိ-ထင်ရှားအံ့၊(ဧဝံသတိ)ပဋိက္ခိတ္တဘာဝေါယေဝ-ပယ်မြစ်အပ် သည်၏အဖြစ်သည်သာ၊ သာဓု-၏၊ အကပ္ပိယေ-မအပ်သောအရာ၌၊ ဌာတဗ္ဗံ- ၏၊ ဟိ-မှန်၊ ဝိနယံ- ဝိနည်းအဆုံးအဖြတ်သို့၊ ပတွာ-ရောက်၍၊ ကပ္ပိယာကပ္ပိယ ဝိစာရဏံ - အပ် မအပ်ကို စိစစ်ခြင်းသို့၊ အာဂမ္မ- ရောက်၍၊ [ဝိနယံပတွာကို ထပ်ဖွင့်သည်၊] ရုန္ဓိတဗ္ဗံ–အပ်၏ဟူသော အယူကို ပိတ်ဆို့ရာ၏၊ ဂါဠှံ–မအပ် ဟူသောအယူ၌ ခိုင်မြဲသည်ကို၊ ကတ္တဗ္ဗံ-ရာ၏၊ သော တံ–အဆက်ဆက်ဖြစ်မည့် အပ်၏ဟူသော အယူဝါဒ အလျဉ်ကို၊ ပစ္ဆိန္ဒိတဗ္ဗံ - ဖြတ်တောက်ရာ၏၊ ဂရုက ဘာဝေယေဝ-လေးသည်၏အဖြစ်ဟူသော အကပ္ပိယ၌သာ၊ ဌာတဗ္ဗံ–၏။

**ကာရဏစ္ဆာယာ**။ ။ ကာရဏပဋိရူပံ ( အတုအရောင်ဖြစ်သော အကြောင်း )၊ "၂ ဘက်လုံးကပင် အကြောင်းမှန်ကို မပြနိုင်ကြလျှင် အကပ္ပိယဟုသာ ယူပါ"ဟူလို။

**ရုန္ဓိတဗ္ဗံ သည်**။ ။ကပ္ပိယန္တိဂဟဏံ ရုန္ဓိတဗ္ဗံ၊ အကပ္ပိယန္တိဂဟဏံ ဂါဠှံ ကာတဗ္ဗံ၊ အပရာပရံ ပဝတ္တကပ္ပိယဂဟဏသောတံ ပစ္ဆိန္ဒိတဗ္ဗံ၊ ဂရုကဘာဝသင်္ခါတေ အကပ္ပိယ ဘာဝေ ယေဝ ဌာတဗ္ဗံ၊ "မအပ်သည်ကို အပ်သည် ဟု ယူ၍ ပြုမိလျှင် အာပတ်သင့်ပါ လိမ့်မည်၊ မအပ်ဟု ယူ၍ မပြုဘဲနေခြင်းသာလျှင် အပြစ်ကင်းပါသည်"ဟူလို။

ပန - ကား၊ အယံ - သည်၊ အကပ္ပိယန္တိ - မအပ်ဟူ၍၊ ဂဟေတွာ အထ ကထေတိ၊ပေ၊ဌာတဗ္ဗံ-တည်ရာ၏၊ အထ-သို့မဟုတ်၊ အယံ - သည်၊ ဗဟုဟိ-န်သော၊ သုတ္တဝိနိစ္ဆယကာရဏေဟိ- ပါဠိတော်, ထိုပါဠိတော်မှ ဆောင်အပ်သော ဆုံးဖြတ်ခြင်း၏အကြောင်းတို့ဖြင့်၊ [သုတ္တေဟိစေဝ. တတော အာနီတ ဝိနိစ္ဆယကာရဏေဟိစ၊ ] အကပ္ပိယဘာဝံ-ကို၊ ဒဿေတိ-ပြနိုင်အံ့၊ ပရော-သည်၊ ကာရဏံ—ကို၊ နဝိန္ဒတိ- မရအံ့၊ (ဝေံသတိ) အကပ္ပိယေ - မအပ်သော အရာ၌' ဌာတဗ္ဗံ-၏၊ အထ - သို့မဟုတ် ၊ပေ၊ဒီဿတိ–အံ့၊ (ဝေံသတိ) အတ္တနော-သကဝါဒီဟူသော မိမိ၏၊ ဂဟဏံ – မအပ်ဟူသော အယူကို၊ နဝိသဇ္ဇေ တဗ္ဗံ- မစွန့်လိုက်ရာ၊ စ- ဆက်၊ ကပ္ပိယာကပ္ပိယေ - သကဝါဒီ၏ ကပ္ပိယ, ပရ ဝါဒီ၏ အကပ္ပိယ၌၎င်း၊ အကပ္ပိယ ကပ္ပိယေစ - သကဝါဒီ၏ အကပ္ပိယ, ပရ ဝါဒီ၏ ကပ္ပိယ၌၎င်း၊ အယံ ဝိနိစ္ဆယော- ကို၊ ဝုတ္တောယထာ- ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ အနာပတ္တိ အာပတ္တိဝါဒေစ-သကဝါဒီ၏ အနာပတ္တိဝါဒ,ပရဝါဒီ၏ အာပတ္တိ ဝါဒ၌၎င်း၊ပေ၊ ဂရုကလဟုကာပတ္တိဝါဒေစ- သကဝါဒီ၏ ဂရုကာပတ္တိဝါဒ, ပရဝါဒီ၏ လဟုကာပတ္တိဝါဒ၌၎င်း၊ အယံ ဝိနိစ္ဆယော-ကို၊ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊

ဟိ- မှန်၊ ဧတ္တ- ၌ ကပ္ပိယာ ကပ္ပိယဝါဒ, အနာပတ္တိ အာပတ္တိဝါဒ အစ ရှိသော ကွဲပြားခြင်းတို့၌၊ နာမမတ္တံယေဝ- နာမည်မျှသည်သာ၊ နာနံ- ထူး၏၊ ယောဇနာနယေ-ယှဉ်စေပုံနည်း၌၊ နာနံ-အထူးသည်၊ နတ္ထိ၊ [“အထပနာယံ အာပတ္တီတိဂဟေတွာ ကထေတိ ” စသည်ဖြင့် ပါဠိကို ယှဉ်စေပုံနည်းမှာ မထူးပါ၊ အကပ္ပိယန္တိ - ဟူရာ၌ ‘‘အနာပတ္တီတိ’’ စသည်ဖြင့် လဲလှယ်ရုံသာ ထူးသည်-ဟူလို၊] ဘသ္မာ- ကြောင့်၊ (မယာ) န ဝိတ္ထာရိတံ - မချဲ့အပ်တော့၊ ဧဝံ - လျှင်၊ ကပ္ပိယာကပ္ပိယာဒိဝိနိစ္ဆယေ - သည်၊ ဥပ္ပန္နေ - သော်၊ ယော- အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သုတ္တသုတ္တာနုလောမ အာစရိယဝါဒ အတ္တနောမတိသု-တို့၌၊ အတိရေကကာရဏံ-ပိုလွန်သောအကြောင်းကို၊ လဘတိ - ၏၊ တဿ-ထိုပုဂ္ဂိုလ်၏၊ ဝါဒေ- ၌၊ ဌာတဗ္ဗံ - ၏၊ ပန - ဆက်၊ သဗ္ဗသော - ကြွင်းမဲ့ဥဿုံ အလုံးစုံအားဖြင့်၊ ကာရဏာဝိနိစ္ဆယံ - ကို၊ အလဘန္တေန - မရသောပုဂ္ဂိုလ် သည်၊ သုတ္တံ- ပါဠိတော်ကို၊ န ဝိဇဟိတဗ္ဗံ–. မစွန့်ရာ၊ သုတ္တသ္မိံယေဝ–၌သာ၊ ဌာတဗ္ဗံ - တည်ရာ၏၊ ဣတိ - ကပ္ပိယာကပ္ပိယ စ သည်တို့ကို ဆုံးဖြတ်နည်းနှင့် စပ်သော စကားရပ် အပြီးတည်း၊ .... ဧဝံ - လျှင်၊ တသ္မိံ သိက္ခာပဒေစ-၌၎င်း၊ သိက္ခာပဒဝိဘင်္ဂေစ -၌၎င်း၊ သကလေ - သော၊ ဝိနယဝိနိစ္ဆယေစ - ၌၎င်း၊ ကောသလ္လံ - ကို၊ ပတ္တယန္တေန - တောင့်တသော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ စတုဗ္ဗိဓော-သော၊အယံဝိနယော-ကို၊ ဇာနိတဗ္ဗော-သိထိုက်၏၊ ဝါ-သိအောင်ပြုပါလေ၊

စပန - ထပ်၍ဆက်ဦးအံ့၊ စတုဗ္ဗိဓံ — သော၊ ဣမံ ဝိနယံ - ကို၊ ဥတွာပိ- သိပြီး၍လည်း၊ ဝါ- သိပြီးပါသော်လည်း၊ ဝိနယဓရေန- ဝိနည်းမိုရ်ဖြစ်သော၊ ပုဂ္ဂလေန-သည်၊ တိလက္ခဏသမန္နာဂတေန-၃ပါးသောလက္ခဏာနှင့်ပြည့်စုံ သူသည်၊ ဘဝိတဗ္ဗံ-ဖြစ်ရာ၏၊ ဟိ- ချဲ့၊ ဝိနယဓရဿ- ၏၊ တီဏိ- နံသော၊ လက္ခ ဏာနိ- တို့ကို၊ ဣစ္ဆိတဗ္ဗာနိ - အလိုရှိထိုက်ကုန်၏၊ ကတမာနိ တီဏိ - တို့ကို၊ (ဣစ္ဆိတဗ္ဗာနိ၊) [ '' သုတ္တမဿ '' ဟု စမပါဘဲ ဋီကာဖွင့်လတံ့၊ ထို့ကြောင့် "သုတ္တဉ္စဿ" ဟု မရှိစေသင့်။] အဿ - ထိုဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ ဝါ - သည်၊ သုတ္တံ - ဝိနည်းပါဠိတော်သည်၊ သွာဂတံ - ကောင်းစွာနှုတ်၌လာသည်၊ သုပ္ပ ဝတ္တိ-ကောင်းစွာဖြစ်ခြင်းရှိသည်၊ဝါ-ကောင်းစွာဖြစ်လေ့ရှိသည်၊သုတ္တသော- ပါဠိတော်အားဖြင့်၎င်း၊အနုဗျဉ္ဇနသော-ပရိပုစ္ဆာ အဋ္ဌကထာအားဖြင့်၎င်း၊ သုဝိနိစ္ဆိတံ- ကောင်းစွာဆုံးဖြတ်အပ်ပြီးသည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ဣတိ ဣဒံ- ဤ လက္ခဏာသည်၊ ဧကံ- တပါးသော၊ လက္ခဏံ-တည်း၊ ပန- ကား၊ ဝိနယေ- ဝိနည်းအကျင့်၌၊ ဌိတော-လဇ္ဇီအဖြစ်ဖြင့်တည်သည်၊ အသံဟိရော- ပရဝါဒီတို့ မဆွဲဆောင်အပ် မဆွဲဆောင်နိုင်သည်၊ ဟောတိ - ၏၊ ဣတိ ဣဒံ - သည်၊ ဒုတိ ယံ- သော၊ (လက္ခဏံ- တည်း၊) ပန- ကား၊ အဿ- ထိုဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ ဝါ-သည်၊အာစရိယပရမ္ပရာ-ဆရာအဆက်ဆက် အဆုံးအဖြတ်သည်၊ ဝါ-ကို၊ သုဂ္ဂဟိတာ-ကောင်းစွာ သင်ယူအပ်သည်၊သုမနသိကတာ- ကောင်းစွာ စိတ်၌ ပြုအပ်သည်၊ ဝါ-ကောင်းစွာနှလုံးသွင်းအပ်သည်၊ သူပဓာရိတာ-ကောင်းစွာ ဆောင်ရွက် မှတ်သားအပ်သည်၊ ဟောတိ - ၏၊ ဣတိ ဣဒံ - သည်၊ တတိယံ- သော၊ (လက္ခဏံ- တည်း)။

တတ္ထ- ထိုလက္ခဏာ၃ပါးတို့၌၊ (အဖွော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊) သုတ္တံနာမ- သုတ္တမည်သည်၊ သကလံ- သော၊ ဝိနယပိဋကံ- တည်း၊ တဉ္စ- ထိုဝိနည်းပိဋက သည်လည်း၊ အဿ - ထို ဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ သွာဂတံ ဟောတိတိ - ကား၊ သုဋ္ဌု-ကောင်းစွာ၊ အာဂတံ- နှုတ်၌လာသည်၊ သုပ္ပဝတ္တီတိ-ကား၊ သုဋ္ဌု-စွာ၊

တတ္ထသုတ္တံနာမ။ ။ထို လက္ခဏာ ၃ ပါးကို အကျဉ်ပြလို၍ "တတ္ထသုတ္တံနာမ" စသည်မိန့်၊ ဝိနည်းမိုရ်၏လက္ခဏာကို ပြရာဌာန ဖြစ်၍ အရောအားလျော်စွာ " သုတ္တ " အရကို "သကလံ ဝိနယပိဋကံ"ဟု ဖွင့်သည်။

သုပ္ပဝတ္တိ။ ။သုဋ္ဌု + ပဝတ္တိ တေသာတိ သုပ္ပဝတ္တိ၊ [ ပဝတ္တိ၌ ပ + ဝတု+တိ ပစ္စည်း၊] သုဋ္ဌု+ပဝတ္တတိ သီလေနာတိဝါ သုပ္ပဝတ္တိ၊ [သုပ္ပဝတ္တနောင် တသီလ ဏီ ပစ္စည်း၊ ထို့ကြောင့် " သုဋ္ဌု + ပဝတ္တံ "ဟု ကတ္တားဟောဖွင့်သည်။]

ပသတ္တံ – ဖြစ်သည်၊ ပဂုဏံ- အဝါးဝစွာ လေ့လာအပ်ပြီးသည်၊ ဝါစုဂ္ဂတံ- နှုတ်အားဖြင့် တက်ရောက်သည်၊ ဝါ - နှုတ်တက်ဆောင်ထားအပ်သည်၊ သုဝိနိစ္ဆိတံ သုတ္တသော အနုဗျဉ္စနသောတိ- ကား၊ ပါဠိတောစ-မူလပါဠိတော်ကို ဖွင့်ပြသောပါဠိတော်အားဖြင့်၎င်း၊ ပရိပုစ္ဆတော^စ-အဖန်ဖန်မေးအပ်သော ထေရဝါဒအားဖြင့်၎င်း၊အဋ္ဌကထာတောစ-ပါဠိတော်၏ အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို ဖွင့်ပြသောအဋ္ဌကထာ အားဖြင့်၎င်း၊ သုဝိနိစ္ဆိတံ - ကောင်းစွာ ဆုံးဖြတ်အပ်ပြီးသည်၊ ကင်္ခစ္ဆေဒံ- ယုံမှားသံသယ ဖြတ်တောက်ခြင်းကို၊ ကတွာ-၍၊ ဥဂ္ဂဟိတံ-သင်ယူအပ်ပြီးသည်၊ ဟောတိ-၏။

ဝိနယေခေါပန ဌိတော ဟောတီတိ-ကား၊ ဝိနယေ-ဝိနည်းအကျင့်၌၊ လဇ္ဇိဘာဝေန- လဇ္ဇီပုဂ္ဂိုလ်၏ အဖြစ်ဖြင့်၊ ပတိဋ္ဌိတော- တည်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ [လဇ္ဇိဘာဝေန ပတိဋ္ဌိတောဖြင့် "ဗဟုဿုတအဖြစ်ဖြင့်" တည်ခြင်းကိုကန့်၊]

ဝါစုဂ္ဂတံ။ ။ဝါစာယ—နှုတ်အားဖြင့်+ ဥဂ္ဂတံ—ဝါစုဂ္ဂတံ၊ ဝစသာ သုဂ္ဂဟိတံတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ—နှုတ်အားဖြင့် ကောင်းစွာသင်ယူအပ်ပြီးသည်-ဟူလို၊ (ဋီကာ)၊ ရှေးက စာအုပ်မရှိသောကြောင့် နှုတ်တက်ဘို့ အရေးကြီး၏၊ ယခုခေတ်မှာ အရေးမကြီးလှ။

သုတ္တသော။ ။သုတ္တသောကို "ပါဠိတော"ဟု ဖွင့်၏၊ ရှေ့၌ သုတ္တံကို "သကလံ ဝိနယပိဋကံ"ဟု ဖွင့်ခဲ့ပြီ၊ [" သုတ္တမဿ၊ပေ၊ သုဝိနိစ္ဆိတံ သုတ္တသော " ဟု တဝါကျ ထည်း၌ သုတ္တ ၂ ထပ်ပါနေရကား ဤ သုတ္တသောအရ"ပါဠိ" ဟူသည်မှာ မူလ ဝိနည်း ပါဠိတော်၏ အနက် အဓိပ္ပါယ်ကို ဖေါ်ပြသော အဖွင့်ပါဠိတော်တည်း – ဟု မှတ်ပါ၊ "ယောပနဘိက္ခု"သည် မူလသုတ္တ၊ ယောယာဒိသော—စသောအဖွင့်သည် သုတ္တသော အရ သုတ္တတည်း၊ ဇွေ သုတ္တံနာမ သကလံဝိနယပိဋကန္တိ ဝုတ္တတ္တာ ပါဠိတောတိ တဒတ္ထ ဒီပိကာ အညာယေဝ ပါဠိ ဝေဒိတဗ္ဗာ။]

အနုဗျဉ္စနသော။ ။"ပရိပုစ္ဆတောစ အဋ္ဌကထာတောစ" ၂ ပုဒ်သည် အနုဗျဉ္စနသော၏ အဖွင့်တည်း၊ ဆရာ့အထံ၌ အဘန်ဘန် မေးမြန်းအပ်သော ထေရဝါဒ(ဆရာ ဆရာကြီးများ၏ အယူဝါဒ)ကို ပရိပုစ္ဆာဟု၎င်း, ဝိနည်းပါဠိတော်၏ တိုက်ရိုက်အနက် ဖွင့်ကို အဋ္ဌကထာဟု ၎င်း ဆိုသည်၊ ထို ၂ မျိုးလုံးပင် ပါဠိတော်ကိုအစဉ်လိုက်၍ အနက် အဓိပ္ပါယ်ကို ပြတတ်သောကြောင့်"အနုဗျဉ္စန"ဟု ခေါ်သည်။ [ အနုဂန္တွာ+ အတ္ထံ ဗျဉ္စ ယတိ ပကာသေတီတိ အနုဗျဉ္စနံ။]

ဋီကာ။ ။ပါဠိံ အနုဂန္တွာ အတ္ထဿ ဗျဉ္စနတော ပကာသနတော အနုဗျဉ္စနန္တိ ပရိပုစ္ဆာ အဋ္ဌကထာစ ဝုစ္စတိ၊ ဇွေစ အဋ္ဌကထာယ ဝိသုံ ဂဟိတတ္တာ ပရိပုစ္ဆာတိ ထေရ ဝါဒေါ ဝုတ္တော။ [ပါဠိတော်နှင့်စပ်၍ ရှေးထေရ်၏အယူဝါဒကို ပရိပုစ္ဆာဟု ဤနေရာ၌ အဋ္ဌကထာမှ ခွဲခြားလို၏၊ အခြားနေရာ၌ကား ပရိပုစ္ဆာနှင့် အဋ္ဌကထာသည် သဘော တူပင်ဖြစ်၏—ဟူလို။] ဤ၌ကား သ-ရတ္တအဖွင့်အတိုင်းတည်း၊ ဝိမတ်၌ကား ပရိပုစ္ဆာနှင့် အဋ္ဌကထာတို့အရ တမျိုးကောက်ယူလေသေး၏။

ဟိ-၍၊ အလဇ္ဇီ-သည်၊ ဗဟုဿုတော—များသောသုတရှိသည်၊ သမာနောပိ-ဖြစ်ပါသော်လည်း၊ လာဘဂရုတာယ-လာဘ်၌ အလေးပြုသူ၏အဖြစ်ကြောင့်၊ တန္တိံ-ဝိနည်းပါဠိတော်အစဉ်ကို၊ ဝိသံဝါဒေတွာ-ချွတ်ယွင်းစေ၍၊ သတ္ထု-၏၊ သာသနံ-ကို၊ ဥဒ္ဒမ္မံ- ထွက်သွားသော ဓမ္မရှိသည်ကို၊ ဝါ- ဓမ္မမဟုတ်အောင်၊ ဥဗ္ဗိနယံ-ထွက်သွားသောဝိနည်း ရှိသည်ကို၊ ဝါ-ဝိနည်းမဟုတ် အောင်၊ ဒီပေတွာ-ပြပြီး၍၊ သာသနေ-၌၊ မဟန္တံ- သော၊ ဥပဒ္ဒဝံ-ဘေးရန်ကို၊ ကရောတိ-ပြုတတ်၏၊ သံဃဘေဒမ္ပိ - သံဃာ၏ကွဲပြားခြင်းကို သော်၎င်း၊ သံဃာရာဇိမ္ပိ-သံဃာ၏ အရေးအကြောင်းကိုသော်၎င်း၊ ဥပ္ပါဒေတိ-ဖြစ်စေ၏၊ [သံဃဘေဒဿ ပုဗ္ဗဘာဂေ ပဝတ္တကလဟဿေတံ အဓိဝစနံ သံဃရာဇီတိ= ကွဲဘို့ရန် အက်နေသော အရေးအကြောင်းကလေးကို သံဃရာဇီဟုခေါ်၏။ ] ပန - အန္ဓယကား၊ လဇ္ဇီ - လဇ္ဇီပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ကုက္ကုစ္စကော - ကုက္ကုစ္စရှိသည်၊ သိက္ခာကာမော- သိက္ခာ ၃ ပါးကိုလိုလားသည်၊(ဟုတ္ဂာ၊) ဇီဝိတဟေတုပိ- အသက်ဟူသော အကြောင်းကြောင့်လည်း၊ တန္တိံ - ကို၊ အဝိသံဝါဒေတွာ - မချွတ်ယွင်းစေမူ၍၊ [ တန္တိံအဝိသံဝါဒေတွာတိ - ပါဠိံ အညထာ ( တမျိုးတဖုံအားဖြင့်)အကတွာ၊] ဓမ္မမေဝ-ဓမ္မကိုသာ၊ ဝိနယမေဝ- ကိုသာ၊ ဒီပေတိ- ၏၊ သတ္ထု-၏၊သာသနံ-ကို၊ ဂရုံကတွာ-အလေးပြု၍၊ထပေတိ-ထား၏၊ တထာဟိ-ထိုစကားမှန်၏၊ ပုဗ္ဗေ-၌၊ မဟာထေရာ- တို့သည်၊ အနာဂတေ လဇ္ဇီရက္ခိဿတိ,လဇ္ဇီ ရက္ခိဿတိ,လဇ္ဇီ ရက္ခိဿတီတိ-ဟူ၍၊ တိက္ခတ္တုံ- ၃ကြိမ်၊ ဝါစံ-ကို၊ နိစ္ဆာရေသုံ - မြွက်ဆိုတော်မူကြကုန်ပြီ၊ [အနာဂတေ - နောင်အခါ၌၊ လဇ္ဇီ-လဇ္ဇီပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ရက္ခိဿတိ-သာသနာတော်ကို စောင့်ရှောက်ရစ်လိမ့်မည်၊] ဧဝံ - လျှင်၊ ယော - အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ လဇ္ဇီ - မကောင်းမှုမှ ရှက်ခြင်းရှိ၏၊ သော-သည်၊ ဝိနယံ- ကို၊ အဝိဟေဌေန္တော- မစွန့်ဘဲ၊ အဝေါက္ကမန္တော- မလွန်ကျူးဘဲ၊ [ အဝေါက္ကမန္တောတိ အနတိက္ကမန္တော၊ ] လဇ္ဇိဘာဝေန - ဖြင့်၊ ဝိနယေ- ဝိနည်းအကျင့်၌၊ ဌိတော- သည်၊ သုပ္ပတိဋ္ဌိတော - ကောင်းစွာတည်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ဣတိ—ဤကားအနက်။

အသံဟီရောတိ (ဧတ္ထ)—၌၊ ယော—အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ပါဠိယံဝါ-ပါဠိတော်၌သော်၎င်း၊ အဋ္ဌကထာယံဝါ-၌သော်၎င်း၊ ဟေဋ္ဌတောဝါ-အောက်အဘို့အားဖြင့်သော်၎င်း၊ ဥပရိတောဝါ-၎င်း၊ပဒပဋိပါဋိယာဝါ- ပုဒ်အစဉ်အားဖြင့်

**ကုက္ကုစ္စကော ။** ။ ကုက္ကုစ္စံ ယဿ အတ္ထီတိ ကုက္ကုစ္စကော၊ " အဏုမတ္တေသု ဝဇ္ဇေသု ဘယဒဿနဝသေန ကုက္ကုစ္စံ ဥပ္ပါဒေန္တော " ဟု ဋီကာဖွင့်သည်ကား အဓိပ္ပါယတ္ထ သာတည်း။

သော်၎င်း၊ ပုစ္ဆိယမာနော-မေးအပ်သော်၊ ဝိတ္ထုနတိ-စမ်းတဝါးဝါးဖြစ်နေ၏၊ ဝိပ္ဖန္ဒတိ-တုန်လှုပ်၏၊ သန္တိဋ္ဌတိ-ကောင်းစွာတည်ခြင်းငှါ၊ န သက္ကောတိ-နိုင်၊ ယံယံ-အကြင်အကြင် အယူဝါဒကို၊ ပရေန-ပရဝါဒီပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ဝုစ္စတိ-ဆိုအပ်၏၊ တံတံ- ထိုထို အယူဝါဒကို၊ အနုဇာနာတိ - ခွင့်ပြု၏၊ သကဝါဒံ-မိမိအယူဝါဒကို၊ ဆဍ္ဍေတွာ-စွန့်၍၊ ပရဝါဒံ- သူတပါး၏ဝါဒကို၊ ဂဏှာတိ-၏၊ (ဧသော-ထိုပုဂ္ဂိုလ်သည်၊) သံဟိရောနာမ-မည်၏၊ ပန- အနွယကား၊ ယော-သည်၊ ပါဠိယံဝါ-၎င်း၊ အဋ္ဌကထာယံဝါ- ၎င်း၊ ဟေဋ္ဌုပရိယေနဝါ-အောက်အထက်အားဖြင့်သော်၎င်း၊ ပဒပဋိပါဋိယာဝါ-၎င်း၊ ပုစ္ဆိယမာနော-သော်၊ န ဝိတ္ထုနတိ-စမ်းတဝါးဝါးမဖြစ်၊ နဝိပ္ဖန္ဒတိ-မတုန်လှုပ်၊ ဧကေကလောမံ-ဆံမွှေး တချောင်းတချောင်းကို၊ [ ဧကေကလောမံ ပလိတံ ( ဆံဖြူ) သန္ဓာယ ဝုတ္တံ၊] သဏ္ဍာသေန-မွေး ညှပ်ဖြင့်၊ ဂဏှန္တော ဝိယ-နှုတ်ယူသူကဲ့သို့၊ (တထာ-တူ၊)ဧဝံ-ဤသို့၊ မယံ-တို့သည်၊ ဝဒါမ- ဆိုကုန်၏၊ဧဝံ-သို့၊ နော အာစရိယာ-ငါတို့၏ဆရာတို့သည်၊ ဝဒန္တိ - အင်နှုရှိတော်မူကြကုန်၏၊ ဣတိ- သို့၊ ဝိသဇ္ဇေတိ-ဖြေဆိုနိုင်၏၊ ယမှိ-အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်၌၊ ပါဠိစ-ပါဠိတော်သည်၎င်း၊ ပါဠိဝိနိ

ဝိတ္ထုနတိ။ ။ကိယာဒိ ဓာတ်သည် "ညည်းတွားခြင်း" အနက်ကို ဟော၏၊ ဤနေရာ၌ကား အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို မသိ၍ ညည်းတွားသကဲ့သို (တအည်းအည်း တအဲအဲနှင့်) စမ်းတဝါးဝါးဖြစ်နေခြင်းကိုဆိုလိုသည်၊ထို့ကြောင့်"ဝိပ္ဖန္ဒတိ-ဟိုအနက်လိုလို, ဒီအနက်သိုလိုနှင့် တုန်လှုပ်၏၊သန္တိဋ္ဌတုံ (တနက်ထည်း၌ ဆုံးဖြတ်ချက် ချသောအားဖြင့် တည်တံ့ခြင်းငှါ) နသက္ကောတိ" ဟု ဝိတ္ထုနတိကို ထပ်၍ဖွင့်သည်၊ ထိုသို့ မတည်တံ့နိုင်ပုံကိုပင် ထင်ရှားအောင်"ယံယံ၊ပေ၊ပရဝါဒံ ဂဏှာတိ" ဟု ဆင့်၍ ဖွင့်ပြသည်။

ပရဝါဒံ ဂဏှာတိ။ ။ကြံချောင်းသည် ယာဝကာလိကဝတ္ထုပင်တည်း၊ သို့သော် ပရဝါဒီက " ကြံအဖတ်သည် – ယာဝဇီဝိက , ကြံအရည်သည် သတ္တာဟကာလိက, အဖတ်နှင့်အရည်ကို ဖယ်ထား၍ ကြံချောင်းမရှိ၊ ထို့ကြောင့် ကြံချောင်းကို ဝိကာလ၌ စုတ်ကောင်း၏"ဟု ပြောလျှင် ထိုဝါဒကိုလည်း ( အင်း....ဟုတ်ႏလာက်သားဘဲ-ဟု) အတည်ယူလိုက်တော့သည်။

မှတ်ချက်။ ။ "သံဟိရောနာမ – ယော ပါဠိယံဝါ" စသော အဖွင့်ကိုထောက်၍ အတည်တကျ မယူဆနိုင်ဘဲ ပရဝါဒီတို့ ဆွဲဆောင်ရာသို့ လိုက်ပါနေရသူကို"သံဟိရ"ဟု ယူ၍ ထို သံဟိရမဟုတ်သူကို "အသံဟိရ " ခေါ်သည် ဟု မှတ်ပါ၊ [ သံဟိရိယတေ-ပရဝါဒီက ဆွဲဆောင်အပ် ဆွဲႏဆာင်နိုင်၏၊' ဣတိ သံဟိရော၊ န + သံဟိရော အသံဟိရော၊ ဟရဓာတ်မှ အကို ဣပြု – ဟု ကြံ၊ ဥပရိပဏ္ဏာသ ဘဒ္ဒေကရတ္တသုတ် အဋ္ဌကထာ၌ "သံဟီရတီတိ– ဝိပဿနာယ အဘာဝတော တဏှာဒိဋ္ဌီဟိ အာကဍ္ဎိယတိ" ဟူသော အဖွင့်ကိုကြည့်၍ ကြံသည်။]

ဋ္ဌယောစ–ပါဠိတော်၏ အဆုံးအဖြတ်သည်၎င်း၊ သုဝဏ္ဏဘာဇနေ-ရွှေခွက်၌၊ ပက္ခိတ္တသီဟဝသာဝိယ – ထည့်အပ်သော ခြင်္သေ့ဆီကဲ့သို့၊ ပရိက္ခယံ - ကုန်ခန်းခြင်းသို့၊ ပရိယာဒါနံ- ထက်ဝန်းကျင် ယူအပ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ အဂစ္ဆန္တော-မရောက်ဘဲ၊ တိဋ္ဌတိ-၏၊ အယံ-ဤပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ အသံဟီရောတိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- ၏။ [''ပရိက္ခယံ ပရိယာဒါနံတိ အတ္ထတော(အဓိပ္ပါယ်နက်အားဖြင့်) ဧကံ'' ဟု ဆို၊ သဒ္ဒါနက်မှာ-ပရိ+အာပုဗ္ဗ,ဒါဓာတ်ဖြစ်၍''ထက်ဝန်းကျင်+ယူအပ်''တည်း။]

အာစရိယပရမ္ပရာ ခေါ ပနဿ သုဂ္ဂဟိတာ ဟောတီတိ - ကား၊ အဿ-ထိုဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ ဝါ-သည်၊ ထေရပရမ္ပရာ- ထေရ်တို့၏ အဆုံးအဖြတ် အဆက်ဆက်သည်၎င်း၊ ဝံသပရမ္ပရာစ- အနွယ်၏အဆုံးအဖြတ်အဆက်ဆက်သည်၎င်း၊ သုဋ္ဌု–ကောင်းစွာ၊ ဂဟိတာ-ယူအပ်ပြီးသည်၊ ဟောတိ-၏၊ သုမနသိကတာတိ- ကား၊ သုဋ္ဌု-စွာ၊ မနသိ- ၌၊ ကတာ - ပြုအပ်ပြီးသည်၊ အာဝဇ္ဇိတမတ္တေ-ဆင်ခြင်အပ်ကာမျှ၌၊ ဥဇ္ဇလိတပဒီပေါဝိယ - တော်ပသော ဆီမီးကဲ့သို့၊ ဟောတိ-၏၊ ဝါ- ထင်ရှား၏၊ သုပဓာရိတာတိ- ကား၊ သုဋ္ဌု - စွာ၊ ဥပဓာရိတာ - ဆောင်ရွက်မှတ်သားအပ်ပြီးသည်၊ ပုဗ္ဗာပရာနုသန္ဓိတော - ရှေ့စကားနောက်စကား အနုသန္ဓေဟူသော အပိုင်းအခြားအားဖြင့်၎င်း၊ ဝါ-ရှေ့စကား၏နောက်စကားနှင့် အနက်အဓိပ္ပါယ်ဆက်သွယ်ခြင်းအားဖြင့်၎င်း၊ အတ္ထတော-အနက်အားဖြင့်၎င်း၊ [အတ္ထတောတိ- ပဒတ္ထ ပိဏ္ဍတ္ထ အဓိပ္ပေတတ္ထာဒိတော၊ (ဝိမတိ)၊]ကာရဏတောစ-အကြောင်းဖြင့်အား၎င်း၊ [ တဒတ္ထုပပတ္တိတော-ထို အနက်၏ အသင့်ယုတ္တိ အကြောင်းအားဖြင့်၎င်း၊ ] ဥပဓာရိတာ - သည်၊ (ဟောတိ၊)အတ္တနောမတိံ-မိမိ၏အလိုကို၊ပဟာယ-၍၊ အာစရိယ သုဒ္ဓိယာ-

**အာစရိယ ပရမ္ပရာ ။** ။ အာစရိယာနံ ဝိနိစ္ဆယပရမ္ပရာ၊ တေနေဝ ဝက္ခတိ– ယထာ အာစရိယောစ အာစရိယာစရိယောစ ပါဠိံ စ ပရိပုစ္ဆဉ္စ ဝဒန္တိ၊ တထာ ဉတ္ဝံ ဝေနတီတိ။ [ န ဟိ အာစရိယာနံ နာမမတ္တတော ပရမ္ပရဇာနနေ ပယောဇနံ အတ္ထိ-ဆရာတို့၏ နာမည်အဆက်ဆက်မျှကို သိခြင်းဖြင့် အကျိုးမရှိ၊–ဝိမတိ။]

**ပုဗ္ဗာပရာနုသန္ဓိတော ။** ။ ဣဒံ ပုဗ္ဗဝစနံ, ဣဒံ ပရဝစနံ , အယံ အနုသန္ဓီတိ ဧဝံ ပုဗ္ဗာပရာနုသန္ဓိတော (သာရတ္ထ)၊ [ဝိမတိ၌ကား ''ပုဗ္ဗဝစနဿ အပရဝစနေန သဟ အတ္ထသမ္ဗန္ဓဇာနနတော''ဟု ဖွင့်၏၊ ကောင်းသကဲ့သို့ ထင်သည်။]

**အာစရိယသုဒ္ဓိယာ ဝတ္တာ။** ။ယောဇနာ၌ '' အာစရိယလဒ္ဒိယာ ဝတ္တာ- ဆရာတို့၏ အယူအားဖြင့် ပြောတတ်သည် '' ဟု ရှိ၏၊ သို့သော် '' မယံ အာစရိယော၊ပေ၊ အသုကဿ''ဟု ပြောပုံအခြင်းအရာကို ပြသော ဝါကျကို ထောက်လျှင်''မိမိ၏ ဆရာ အဆက်ဆက်တို့ စာချဓမ္မာစရိယချည်း ဖြစ်ကြောင်းကို ပြောပြသည် ဟု သိသာသော

ဆရာတို့၏ စင်ကြယ်ခြင်းအားဖြင့်၊ ဝတ္တာ - ပြောဆိုတတ်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ (ကိံ-အဘယ်သို့ပြောဆိုတတ်သနည်း၊)မယှံ- တပည့်တော်၏၊ အာစရိယော-သည်၊ အသုကာစရိယဿ-ထိုမည်သောဆရာ၏၊ သန္တိကေ-၌၊ ဥဂ္ဂဏှိ-သင်ယူခဲ့ပြီ၊ သော-ထို ဆရာ့ဆရာသည်၊ အသုကဿ-၏၊ (သန္တိကေ ဥဂ္ဂဏှိ၊) ဣတိ-သို့၊ (ဝတ္တာ ဟောတိ၊) ဧဝံ-သို့၊ သဗ္ဗံ—သော၊ အာစရိယပရမ္ပရံ—ဆရာတို့၏ အဆုံးအဖြတ် အဆက်ဆက်ကို၊ ထေရဝါဒင်ံ- အဆုံးအဖြတ်ကို သိစေတတ်သော ထေရ်တို့၏ဝါဒကို၊ အာဟရိတွာ – ဆောင်၍၊ ယာဝ ဥပါလိတ္ထေရော သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓဿ သန္တိကေ ဥဂ္ဂဏှီတိ-ဥပါလိတ္ထေရော သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓဿ သန္တိကေ ဥဂ္ဂဏှိတိုင်အောင်၊ ပါပေတွာ-ရောက်စေ၍၊ ဝါ-ရောက်စေပြီးမှ၊ ထပေတိ—ရပ်တန့်ထား၏၊ [ မိမိဆရာမှစ၍ ရေတွက်လျှင် ဥပါလိထေရ်ကျမှ အဆုံးသတ်သည်- ဟူလို၊]

တတောပိ-ထို ဥပါလိထေရ်မှလည်း၊ အာဟရိတွာ-ပြန်ဆောင်၍၊ ဥပါလိတ္ထေရော- သည်၊ သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓဿ- ၏၊ သန္တိကေ- အထံတော်၌၊ ဥဂ္ဂဏှိ–ပြီ၊ ဒါသကတ္ထေရော-သည်၊ အတ္တနော- ၏၊ ဥပဇ္ဈာယဿ– သော၊ ဥပါလိတ္ထေရဿ-၏၊ (သန္တိကေ ဥဂ္ဂဏှိ၊) သောဏကတ္ထေရော- သည်၊ အတ္တနော ဥပဇ္ဈာယဿ ဒါသကတ္ထေရဿ ( သန္တိကေ ဥဂ္ဂဏှိ၊ ) သိဂ္ဂဝတ္ထေရော - သည်၊ ပေ၊ မောဂ္ဂလိပုတ္တတိဿတ္ထေရော - သည်၊ အတ္တနော- ၏၊ ဥပဇ္ဈာယဿ–သော၊ သိဂ္ဂဝတ္ထေရဿ - ၏ရင်း၊ စဏ္ဍဝဇ္ဇိတ္ထေရဿစ- ၏ရင်း၊ (သန္တိကေ ဥဂ္ဂဏှိ၊) ဣတိဧဝံ-သို့၊ သဗ္ဗံ–သော၊ အာစရိယပရမ္ပရံ-ကို၊ ထေရဝါဒင်ံ-ကို၊ အာဟရိတွာ - ၍၊ အတ္တနော - ၏၊ အာစရိယံ - သို့၊ ပါပေတွာ - ရောက်စေ၍၊ ဝါ-ရောက်စေပြီးမှ၊ ထပေတိ-တန့်ရပ်ထား၏၊ ဟိ-မှန်၊ ဧဝံ-သို့၊ ဥဂ္ဂဟိတာ-သင်ယူအပ်သည်၊ (သမာနာ-ဖြစ်လသော်၊ ဝါ-ဖြစ်ပါမှ၊) အာစရိယပရမ္ပရာ-သည်၊ သုဂ္ဂဟိတာ-ကောင်းစွာ သင်ယူအပ်သည် မည်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပန-ဆက်၊

ကြောင့် "အာစရိယသုဒ္ဓိယာ- ဆရာအဆက်ဆက်၏ အယူဝါဒ စင်ကြယ်ခြင်းဖြင့်" ဟု ရှိသောပါဠိသာ သင့်မြတ်သကဲ့သို့ ထင်၏၊ မိမိ ဆရာ အဆက်ဆက်၏ စင်ကြယ်ပုံကို ပြောပြ၍လည်း မိမိအယူအဆ မှန်ကန်ကြောင်း သိသာစေနိုင်သည်-ဟူလို။

ထေရဝါဒင်ံ။ ။အာစရိယပရမ္ပရံတိ ဣမဿေဝ ဝေဝစနံ ထေရဝါဒင်ံတိ၊ထေရပဋိပါဋိံတိ အတ္ထော=ထေရဝါဒင်နှင့် အာစရိယပရမ္ပရသည် ပရိယာယ်တည်း၊ "ထေရ်တို့၏ ဝိနိစ္ဆယအစဉ်အဆက်" ဟု အနက်မှတ်။ [ "ထေရာနံ + ဝါဒေါ ထေရဝါဒေါ၊ အင်္ဂေတိ ဂမေတိ ဗောဓေတီတိ အင်္ဂံ၊ထေရဝါဒေါယေဝ အင်္ဂံ"ဟု ကြံပါ၊ ယောဇနာ၌ "ထေရဝါရင်္ဂံ"ဟု ရှိ၍ ဝါရသဒ္ဒါလည်း ပဋိပါဋိ အနက်ဟော-ဟု ဆိုလေသည်။ ]

ဝေ–ဤသို့၊ ဝါ-သို့ကလောက် ဆရာအဆက်ဆက်၏ အဆုံးအဖြတ်ကို သင်ယူခြင်း၄ါ၊ အသဏ္ဍောဋ္ဌေန– မစွမ်းနိုင်သူသည်၊ အဝသံ – မချွတ်ကေန်၊ ဒွေ တယော (တနည်း)ဒွိတ္တယော - ၂ ဆက်သော်လည်းဖြစ်ကုန်, ၃ ဆက်သော်လည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ပရိဝတ္တာ - အဆုံးအဖြတ် အဆက်ဆက်တို့ကို၊ ဥဂ္ဂဟေတဗ္ဗာ-န်၏၊ ဟိ-မှန်၊ သဗ္ဗပစ္ဆိမေန – အလုံးစုံတို့၏ နောက်၌ဖြစ်သော၊ နယေန-နည်းဖြင့်၊ ယထာ – အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ အာစရိယောစ- မိမိဆရာသည်၎င်း၊ အာစရိယာစရိယောစ - ဆရာ့ဆရာသည်၎င်း၊ ပါဠိဥ္စ- ပါဠိတော်ကို၎င်း၊ ပရိပုစ္ဆဥ္စ-အဋ္ဌကထာကို၎င်း၊ ဝဒန္တိ-ပြောဆို ပို့ချကြကုန်၏၊ တထာ-ဖြင့်၊ ဉာတုံ–သိခြင်း၄ါ၊ ဝဋ္ဋတိ-သင့်၏။

စပန-ထပ်၍ဆက်ဦးအံ့၊ တီဟိ– န်သော၊ ဣမေဟိ လက္ခဏေဟိ- တို့နှင့်၊ သမန္နာဂတေန - သော၊ ဝိနယဓရေန– သည်၊ ဝတ္ထုဝိနိစ္ဆယတ္ထံ-အကြောင်းဝတ္ထုကို ဆုံးဖြတ်ခြင်းအကျိုး၄ါ၊ သံဃေ- သံဃာတော်သည်၊ သန္နိပတိတေ– စည်းဝေးပြီးလသော်၊ ဝတ္ထုသ္မိံ – စောဒနာခြင်းဟူသော ဝတ္ထုသည်၊ ဝါ– ကျူးလွန်မှုဟူသော အကြောင်းဝတ္ထုသည်၊ ဩတိဏ္ဏေ-သက်ရောက်လသော်၊ စောဒကေန-စောဒနာတတ်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၎င်း၊ စုဒိတကေနစ-စောဒနာအပ်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၎င်း၊ ဝတ္တဗ္ဗေ–ပြောဆိုထိုက်သော စကားကို၊ ဝုတ္တေ-ပြောဆိုလျှော်အပ်ပြီးသော်၊သဟသာ-အဆောတလျင်၊အဝိနိစ္ဆိနိတွာဝ-မဆုံး

**တီဟိ လက္ခဏေဟိ ॥** ॥ ဟေဋ္ဌာဝုတ္တေဟိ တီဟိလက္ခဏေဟိ၊ ဧတ္ထစ ပဌမေန လက္ခဏေန (သုတ္တမဿ ဿာဂတံ ဟောတိ– စသော ပဌမလက္ခဏာဖြင့်) ဝိနယဿ သုဋ္ဌု ဥဂ္ဂဟိတဘာဝေါ ဝုတ္တော၊ ဒုတိယေန (ဝိနယေ ခေါပန ဋ္ဌိတော ဟောတိ အသံဟီရော–ဟူသော ဒုတိယလက္ခဏာဖြင့်) ဥဂ္ဂဟိတေ ( သင်ယူအပ်ပြီးသော ဝိနည်း၌) အစလတာ (မတုန်လှုပ်သည်၏ အဖြစ်ကို) သုပ္ပတိဋ္ဌိတတာ (ကောင်းစွာ တည်သည်၏ အဖြစ်ကို) ဝုတ္တာ။ [ဝိမတ်၌ "လဇ္ဇီဘာဝေနစေဝ အစလတာယစ ပတိဋ္ဌိတတာ"ဟု ဖွင့်၏။ ]တတိယေန (ဖြင့်) ယံ ပါဠိယံစ အဋ္ဌကထာယံစ နတ္ထိ၊ တံပိ အာစရိယဝစနေန (အာစရိယဝါဒဖြင့်) ဝိနိစ္ဆိတုံ သမတ္ထတာ ဝုတ္တာ။

**ဩတိဏ္ဏေ ဝတ္ထုသ္မိံ॥** ॥စောဒနာသင်္ခါတေ ဝီတိက္ကမသင်္ခါတေဝါ ဝတ္ထုသ္မိံ သံဃမဇ္ဈေ ဩတိဏ္ဏေ – ဩသဋ္ဌေ (သက်ရောက်) တိ အတ္ထော၊ ဝုတ္တမေဝ ဝိဘာဝေန္တော (ဆိုအပ်ပြီးသော အဓိပ္ပါယ်ကို ထင်ရှားစေလို၍ )စောဒကေနစ စုဒိတကေနစ ဝုတ္တေ ဝတ္တဗ္ဗေတိအာဟ။ [ ဝတ္ထုံ ( အမှုကို ) နိဿာယ စောဒကေန ဒိဋ္ဌံ သုတံတိ အာဒိနာ (စောဒကက မည်သည့်ကျူးလွန်မှုကို မြင်အပ်ပါသည်-ကြားအပ်ပါသည်,ဤသို့စသည်ဖြင့်၎င်း) စုဒိတကေန အတ္ထိနတ္ထီတိအာဒိနာစ (စုဒိတက ကလည်း ဟုတ်ပါသည်-မဟုတ်ပါ,စသည်ဖြင့်၎င်း) ယံ ဝတ္တဗ္ဗံ၊ တသ္မိံ ဝတ္တဗ္ဗေ ဝုတ္တေတိ အတ္ထော။ (ဝိမတိ။) ]

ဖြစ်သေးမူ၍သာ၊ ဆ ဌာနာနိ-၆ ဌာနတို့ကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗာနိ-ဉာဏ်ဖြင့် ကြည့်ရှုထိုက်ကုန်၏၊ ကတမာနိ ဆ- တို့ကို၊ (ဩလောကေတဗ္ဗာနိ၊) ဝတ္ထု- ထိုထို သိက္ခာပုဒ်၏အကြောင်းဝတ္ထုကို၊ [တဿတဿ သိက္ခာပဒဿ ဝတ္ထု၊] ဩလောကေတဗ္ဗံ-ဉာဏ်ဖြင့် ကြည့်ရှုထိုက်၏၊ မာတိကာ-သိက္ခာပုဒ် တည်းဟူသော မာတိကာကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗာ၊ ပဒဘာဇနီယံ - သိက္ခာပုဒ် ပါဠိတော်၏ အဖွင့်ဖြစ်သော ပဒဘာဇနီကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗံ၊ တိကပရိစ္ဆေဒေါ- တိက်အပိုင်းအခြားကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗော၊ အန္တရာပတ္တိ - အန္တရာပတ်ကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗာ၊ အနာပတ္တိ-အနာပတ်ကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗာ၊ ဣတိ-၍ ၆ ဌာနတို့ကို၊ (ဩလောကေတဗ္ဗာနိ-နှ်၏။)

ဟိ-ချဲ့၊ ဝတ္ထုံ-ကို၊ ဩလောကေန္တော ပိ- ဉာဏ်ဖြင့်ကြည့်သော ဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်သည်လည်း၊ [ပဿတိ- ၌စပ်၊] တိဏေန ဝါ ပဏ္ဏေန ဝါ ပဋိစ္ဆာဒေတွာ - ဖုံးအုပ်၍၊ အာဂန္တဗ္ဗံ-လာရာ၏၊ ဝါ- လာရမည်၊ နဂ္ဂေန-အဝတ်မဆည်း အချည်းနှီးသည်၊ (ဟုတွာ) နတွေဝ အာဂန္တဗ္ဗံ-သည် သာ၊ ယော-အကြင်ရဟန်းသည်၊(နဂ္ဂေါ-သည်၊ ဟုတွာ) အာဂစ္ဆေယျ-အံ့၊ (တဿ- ၏၊) ဒုက္ကဋဿ- သို့၊ အာပတ္တိ- ရောက်ခြင်းသည်၊ (ဟောတိ- ၏၊) နိသဂ္ဂ- အညာတကသိက္ခာပုဒ်၏ ဝတ္ထုကြောင်း၌ ပညတ်အပ်သော အာပတ် တည်း။] သော - ထို ဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ တံ သုတ္တံ - ထို ပါဠိတော်ကို၊ အာနေတွာ-ဆောင်၍၊ တံ အဓိကရဏံ-ကို၊ ဝူပသမေဿတိ- ငြိမ်းစေလတ့်၊ မာတိကံ-ကို၊ဩလောကေန္တော ပိ-သည်လည်း၊ သမ္ပဇာနမုသာဝါဒေ ပါစိတ္တိ ယန္တိအာဒိနာ-သော၊ နယေန-ဖြင့်၊ ပဉ္စန္နံ-နှ်သော၊ အာပတ္တီနံ-တို့တွင်၊ အညတရံ-သော၊ အာပတ္တိံ-ကို၊ ပဿတိ-၏၊ သော-သည်၊ တံသုတ္တံ-ကို၊ အာနေတွာ-၍၊ တံ အဓိကရဏံ-ကို၊ ဝူပသမေဿတိ-တံ့၊ [ထုလ္လစ္စဉ်းနှင့် ဒုဗ္ဘာသိတ ၂ မျိုးက ဒွေမာတိကာ၌ မပါသောကြောင့်"ပဉ္စန္နံ"ဟု ဆိုသည်၊ ဒုက္ကဋ်ကား သေခိယပါဠိတော်၌ တိုက်ရိုက်ပါသည်။]

ပဒဘာဇနီယံ- ကို၊ ဩလောကေန္တော ပိ- သည်လည်း၊ အက္ခယိတေ သရီ ရေ ပါရာပတ္တိ ထုလ္လစ္စယဿာတိ အာဒိနာ-သော၊ နယေန - ဖြင့်၊ သတ္တန္နံ- နှ်သော၊ အာပတ္တီနံ- တို့တွင်၊ အညတရံ- သော၊ အာပတ္တိံ - ကို၊ ပဿတိ-၏၊ [ အက္ခယိတေ - ခွေး မြေခွေးစသည်တို့ မခဲစားအပ်သေးသော၊ သရီရေ- အလောင်းကောင်၌၊ မေထုနံဓမ္မံ- ကို၊ ပဋိသေဝတိ- အံ့၊ ပါရာဇိကဿ- သို့၊

အာပတ္တိ- သည်၊ (ဟောတိ- ၏၊) ယေဘုယျေန - အားဖြင့်၊ ခယိတေ- ခွေး မြေခွေးစသည်တို့ ခဲစားအပ်ပြီးသော၊ သရီရေ- ၌၊ မေထုန်မမှီ ပဋိသေဝတိ၊ အာပတ္တိ ထုလ္လစ္စယဿ။] သော- သည်၊ ပဒဘာဇနီယတော- မှ၊ သုတ္တံ- ကို၊ အာနေတွာ-၍၊ တံ အမိကရဏံ-ကို၊ ဝူပသမေဿတိ-တံ့၊ တိကပရိစ္ဆေဒံ-ကို၊ ဩလောကေန္တော ပိ-သည်လည်း၊ တိကသံဃာဒိသေသံဝါ-၃ ချက် အတိုင်း အရှည်ရှိသော သံဃာဒိသေသ်အာပတ်ကိုသော်၎င်း၊ တိကပါစိတ္တိယံဝါ- ကို သော်၎င်း၊ တိကဒုက္ကဋံဝါ-၎င်း၊ အညတရံ-သော၊ အာပတ္တိံဝါ-အာပတ်ကို သော်၎င်း၊ တိကပရိစ္ဆေဒ-တိက် အပိုင်းအခြား၌၊ ပဿတိ-၏၊ သော-သည်၊ တတော-ထို တိက်အပိုင်းအခြားမှ၊ သုတ္တံ-ကို၊ အာနေတွာ-၍၊ တံ အမိကရ ဏံ-ကို၊ ဝူပသမေဿတိ-တံ့။

အန္တရာပတ္တိံ- ကို၊ ဩလောကေန္တော ပိ- လည်း၊ ပဋိလာတံ- အောက်သို့ လျှောကျသောမီးစကို၊ ဥက္ခိပတိ-မြှောက်တင်အံ့၊ ဝါ-ထိုးပေးအံ့၊ ဒုက္ကဋဿ- သို့၊ အာပတ္တိ-သည်၊ (ဟောတိ -၏၊) ဣတိဧဝံ- ဤသို့သော၊ သိက္ခာပဒန္တရေ သု-သိက္ခာပုဒ်အကြားတို့၌၊ [ဝိနီတဝတ္ထုနှင့်တကွ ထိုထိုသိက္ခာပုဒ်တို့၏အကြား အကြားတို့၌] ယာ အန္တရာပတ္တိ- သည်၊ ဟောတိ- ရှိ၏၊ တံ- ထို အန္တရာပတ် ကို၊ ပဿတိ-၏၊ သော- သည်၊ တံ သုတ္တံ- ကို၊ အာနေတွာ-၍၊ တံ အမိကရ ဏံ-ကို၊ဝူပသမေဿတိ- တံ့၊အနာပတ္တိံ-အနာပတ်ကို၊ ဩလောကေန္တော ပိ- လည်း၊ အနာပတ္တိ ဘိက္ခု၊ အသာဒယန္တဿ ၊ပေ၊ အဇာနန္တဿာတိ- ဟူ၍၊ ဧဝံ-သို့၊ တသ္မိံ တသ္မိံ သိက္ခာပဒေ-၌၊ နိဒ္ဒိဋ္ဌံ-ညွှန်ပြအပ်သော၊ အနာပတ္တိံ-ကို၊ ပဿတိ-၏၊ [ဘိက္ခု- ရဟန်း၊ အသာဒယန္တဿ-မသာယာသော ရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ-အနာပတ်သည်၊ (ဟောတိ-၏၊) အထေယျစိတ္တဿ-ထေယျစိတ် မရှိသောရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ - သည်၊ (ဟောတိ၊) န မရဏာဓိပ္ပါယဿ- သေခြင်း၌ဖြစ်သော အလိုမရှိသောရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ - သည်၊ ဟောတိ၊ အနုလ္လပနာဓိပ္ပါယဿ - ဝါကြွားခြင်း၌ ဖြစ်သော အလိုမရှိသောရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ-သည်၊ ဟောတိ၊ န မောစနာဓိပ္ပါယဿ-လွှတ်စေခြင်း၌ဖြစ်သော အလိုမရှိသောရဟန်း၏၊အနာပတ္တိ ဟောတိ၊ အသဥ္စိစ္စ-သညာနှင့်တကွ မစေ့ ဆော်မူ၍ (ကရောန္တဿ-၏၊ အနာပတ္တိ ဟောတိ။)အသတိယာ- သတိကင်း သဖြင့်၊ (ကရောန္တဿ- ပြုသောရဟန်း၏၊ ) အနာပတ္တိ ဟောတိ၊ အဇာနန္တ

**အညတရံဝါ အာပတ္တိံ**။ ။ဝိကာလဘောဇန သိက္ခာပုဒ်၏ တိကစ္ဆေဒ၌“ကာလေ ဝိကာလသညီ အာပတ္တိဒုက္ကဋဿ , ကာလေ ဝေမတိကော အာပတ္တိဒုက္ကဋဿာတိ ဧဝ မာဒိနာ အာဂတံ ဒုက္ကဋံ သန္ဓာယ ဝုတ္တံ”။

ဿ-မသိသည်ဖြစ်၍၊ ( ကရောန္တဿ-၏၊ ) အနာပတ္တိ-သည်၊ (ဟောတိ၊)] သော-သည်၊ တံသုတ္တံ- ကို၊ အာနေတွာ - ၍၊ တံ အမိကရဏံ - ကို၊ ဝူပသမေဿတိ - တံ့၊ ဟိ - လဒ္ဓဂုဏ်ကိုပြဉ်းအံ့၊ [ ဖ ဌာနကို ကြည့်ရခြင်း၏ အကျိုးကျေးဇူးကို ပြဉ်းအံ့–ဟူလို၊] ယောဘိက္ခု-သည်၊ စတုဗ္ဗိဓ ဝိနယကောဝိဒေါ-၄ ပါးအပြားရှိသော ဝိနည်း၌ကျွမ်းကျင်သည်၊ တိလက္ခဏာသမ္ပန္နော-၃ ပါးသောလက္ခဏာနှင့်ပြည့်စုံသည်၊(ဟုတွာ)ဌာမာနိ ဆဌာနာနိ-တို့ကို၊ဩလောကေတွာ- ၍၊ အမိကရဏံ- ကို၊ ဝူပသမေတိ- ငြိမ်းစေ၏၊("ဝူပသမေဿတိ–လတ္တံ့"ဟု စာရှိ၏၊)တဿ-ထိုရဟန်း၏၊ဝိနိစ္ဆယော-သည်၊အပ္ပဋိဝတ္တိယော-တစုံတယောက်မျှ မတားမြစ်အပ် မတားမြစ်နိုင်သည်၊ ဗုဒ္ဓေန- သည်၊ သယံ-ကိုယ်တော်တိုင်၊ နိသီဒိတ္တွာ-၍၊ ဝိနိစ္ဆိတသဒိသော-ဆုံးဖြတ်တော်မူအပ်သောအဆုံးအဖြတ်နှင့်တူသည်၊ ဟောတိ-၏။

စ–ဆက်၊ ဧဝံ-သို့၊ ဝိနိစ္ဆယကုသလံ-ဝိနိစ္ဆယ၌ကျွမ်းကျင်သော၊ တံဘိက္ခုံ-ကို၊ကောစိ-တစုံတယော်သော၊ ကတသိက္ခာပဒ ဝီတိက္ကမော-ပြုအပ်ပြီးသော သိက္ခာပုဒ် လွန်ကျူးခြင်းရှိသော၊ ဝါ-သိက္ခာပုဒ်လွန်ကျူးခြင်းကို ပြုပြီးသော၊ ဘိက္ခု- သည်၊ ဥပသင်္ကမိတွာ - ၍၊ အတ္တနော - ၏၊ ကုက္ကုစ္စံ - ကို၊ ပုစ္ဆေယျ-မေးအံ့၊ တေန- ထို ဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သာဓုကံ- ကောင်းစွာ၊ သလ္လက္ခေတွာ-မှတ်သားပြီး၍၊အနာပတ္တိ-သည်၊ သစေ ဟောတိ-အံ့၊(ဧဝံသတိ)၊ အနာပတ္တီတိ-ဟူ၍၊ ဝတ္တဗ္ဗံ-ပြောဆိုရာ၏၊ပန-ကား၊ အာပတ္တိ-သည်၊သစေဟောတိ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ) အာပတ္တီတိ ဝတ္တဗ္ဗံ၊ သာ-ထိုအာပတ်သည်၊ ဒေသနာဂါမိနီ-ဒေသနာဂါမိအာပတ်သည်၊ ဝါ- ဒေသနာပြောခြင်းသို့ ရောက်စေတတ်သော အာပတ်သည်၊ စေဟောတိ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ-သော်၊) ဒေသနာဂါမိနီတိ-ဟူ၍၊ ဝတ္တဗ္ဗံ - ၏၊ ဝုဋ္ဌာနဂါမိနီ- သည်၊ ဝါ–အာပတ်မှ ထမြောက်ကြောင်း ဖြစ်သော ပရိဝါသ်မာနတ်သို့ ရောက်စေတတ်သော အာပတ်သည်၊ စေ ဟောတိ- အံ့၊ (ဧဝံသတိ၊) ဝုဋ္ဌာနဂါမိနီတိ ဝတ္တဗ္ဗံ၊ အထ-သို့မဟုတ်၊ အဿ-ထိုဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်၏ (စိတ်၌၊) ပါရာဇိကစ္ဆာယာ-ပါရာဇိကအရိပ်အရောင်သည်၊ (စေ) ဒိဿတိ–အကယ်၍ထင်အံ့၊ ဧဝံသတိ- သော်၊ (ပါရာဇိက ဟု ထင်လသော်၊)

ဒေသနာ , ဝုဋ္ဌာနဂါမိနီ ။ ။ ဒေသနံ - ( ၁ ပါး ၂ ပါး စသည်၏ အထံ၌) ဒေသနာပြောခြင်းသို့ + ဂါမေတိ–ရောက်စေတတ်၏၊ ဣတိ ဒေသနာဂါမိနီ၊ ထိုအာပတ်သင့်သူကို ဒေသနာပြောခြင်းသို့ရောက်စေတတ် ( ဒေသနာပြောမှ လွတ်စေတတ်သော) အာပတ်– ဟူလို၊ ဝုဋ္ဌာနံ - အာပတ်မှ ထမြောက်ကြောင်းဖြစ်သော ပရိဝါသ်မာနတ် ကျင့်မှုသို့ + ဂါမေတိ – ၏၊ ဣတိ ဝုဋ္ဌာနဂါမိနီ။

ပါရာဇိကာပတ္တိတိ-ဟူ၍၊ နတာဝဝတ္တဗ္ဗံ-မပြောဆိုထိုက်သေး၊ ဝါ-မဆုံးဖြတ်ထိုက်သေး၊ ကသ္မာ-ကြောင့်နည်း၊ ဟိ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ မေထုနဓမ္မ ဝီတိက္ကမော-မေထုနဓမ္မကို လွန်ကျူးခြင်းသည်၎င်း၊ ဥတ္တရိမနုဿဓမ္မ ဝီတိက္ကမောစ-သည်၎င်း၊ ဩဠာရိကော - ထင်ရှား၏၊ [ သိလွယ်၏ - ဟူလို၊ ] အဒိန္နာဒါနမနုဿဝိဂ္ဂဟဝီတိက္ကမာ ပန-အဒိန္နာဒါနလွန်ကျူးမှု,မနုဿဝိဂ္ဂဟလွန်ကျူးမှုတို့သည်ကား၊ သုခုမာ-သိမ်မွေ့ကုန်၏၊ စိတ္တလဟုကာ - လျင်မြန်သောစိတ်ရှိကုန်၏၊ တေ- ထို အဒိန္နာဒါနလွန်ကျူးမှု, မနုဿဝိဂ္ဂဟ လွန်ကျူးမှုတို့သို့၊ [တေတိ - တေဝီတိက္ကမေ၊ ] သုခုမေနေဝ – သိမ်မွေ့သောစိတ်ဖြင့်သာလျှင်၊ အာပဇ္ဇတိ-ရောက်တတ်၏၊ သုခုမေနဝေ-လျှင်၊ ရက္ခတိ- စောင့်ရှောက်နိုင်၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (နတာဝဝတ္တဗ္ဗံ- သေး၊)တသ္မာ- ထိုသို့ မပြောဆိုထိုက်သေးသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊(ဤသို့ တသ္မာတပုဒ် အပိုထည့်၍ ပြန်လှည့်ပြီးမှရှိရင်း တသ္မာကို အနက်ပေးပါ၊ ) ဝိသေသေန - ဖြင့်၊ တံဝတ္ထုကံ - ထို အဒိန္နာဒါနလွန်ကျူးမှု,မနုဿဝိဂ္ဂဟလွန်ကျူးမှုဟူသော အကြောင်းဝတ္ထုရှိသော၊[တေ အဒိန္နာဒါနမနုဿဝိဂ္ဂဟဝီတိက္ကမာ+ဝတ္ထု အဓိဋ္ဌာနံ ကာရဏံ တေသာတိ တံဝတ္ထုကံ၊ ] ကုက္ကုစ္စံ- ကို၊ ပုစ္ဆိယမာနေန - မေးအပ်သည်ရှိသော်၊ [ပုစ္ဆိယမာနော၏ စပ်ပုဒ်မရှိ၊ နောက်၌ တေနနှင့် အရတူဖြစ်၍ "မာနေန" ဟု ရှိရမည်၊] အာပတ္တီတိ-ဟူ၍၊ အဝတွာ-မပြောသေးမူ၍၊ ဝါ- မဆုံးဖြတ်သေးမူ၍၊ အဿ-ထို ဝိနည်းဓိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ အာစရိယော-သည်၊ သစေ ဓရတိ-အကယ်၍ ထင်ရှားရှိသေးအံ့၊ တတော-ထိုသို့ ထင်ရှားရှိခြင်းကြောင့်၊ တေန-ထို ဝိနည်းဓိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သောဘိက္ခု-ထို ကုက္ကုစ္စရှိသောရဟန်းကို၊ အမှာကံ-တို့၏၊ အာစရိယံ - ကို၊ ပုစ္ဆ - မေးပါချေဦးလော၊ ဣတိ - ဤသို့ပြော၍၊ ပေသေတဗ္ဗော-စေလွှတ်ထိုက်၏။

သော-ထိုကုက္ကုစ္စရှိသောရဟန်းသည်၊ ပုန-ဖန်၊ အာဂန္တွာ-၍၊ တုမှာကံ-တို့၏၊ အာစရိယော-သည်၊ သုတ္တတော- ပါဠိတော်အားဖြင့်၎င်း၊ နယတော-မဟာပဒေသနည်းအားဖြင့်၎င်း၊ ဩလောကေတွာ - ၍၊ သတောကိစ္ဆောဒတိ-ကုစားခြင်းနှင့်တကွဖြစ်၏ဟူ၍၊ ဝါ-ကုစားကောင်းသေး၏ဟူ၍၊မံ-ကို၊အာဟ-ပြောလိုက်ပါပြီ၊ ဣတိ- သို့၊ သစေဝဒတိ- အံ့၊ တတော – ထိုသို့လျှောက်ခြင်း

**သုခုမာ**။ ။အတ္တနောပိ (မိမိ၏စိတ်ပင်ဖြစ်သော်လည်း) ဒုဗ္ဗိညေယျသဘာဝဿ-အသိခက်သော သဘောရှိသော၊ စိတ္တဿ-၏၊ သီဃပရိဝတ္တိတာယ – လျင်မြန်သောပြောင်းလဲခြင်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝုတ္တံ-သုခုမာ ဟု ဆိုအပ်ပြီ၊ တေနာဟ- စိတ္တလဟုကာတိ၊ စိတ္တံ+လဟု (သီဃပရိဝတ္တိ) ဧတေသံတိ စိတ္တလဟုကာ။

ကြောင့်၊ အနေန-ဤဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သော-ထိုကုက္ကုစ္စရှိသောရဟန်းကို၊ သာရေ-ပြီ၊ ယံ-အကြင်စကားကို၊ အာစရိယော- သည်၊ ဘဏတိ-အံ့၊ တံ-ကို၊ သုတွာ-ကောင်းစွာ၊ ကရောဟိ- ပြုပေတော့၊ ဝါ- လိုက်နာပေတော့၊ဣတိ-သို၊ ဝတ္တဗ္ဗော-၏၊ ပန-ကား၊ အဿ- ထိုဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ အာစရိယော-သည်၊ အထ နတ္ထိ- အကယ်၍ မရှိတော့အံ့၊ သဒ္ဓိံ ဥဂ္ဂဟိတတ္ထေရော ပန- အတူတကွ စာသင်ဘက် ထေရ်သည်ကား၊ အတ္ထိ-အကယ်၍ရှိသေးအံ၊ (ဝေံသတိ)၊ တဿ-ထိုစာသင်ဘက် ထေရ်၏၊ သန္တိကံ-သို့၊ ပေသေတဗ္ဗော-.စေလွှတ်ထိုက်၏:(ကိံ-အဘယ်သို့မှာ၍ စေလွှတ်ထိုက်သနည်း၊) အမှေဟိ-တို့နှင့်၊ သဟ-ကွ၊ ဥဂ္ဂဟိတတ္ထေရော – စာသင်ဘက်ထေရ်သည်၊ ဂဏပါမောက္ခော – ဂိုဏ်း၏ အကြီးအမှူးတည်း၊ တံ- ထိုထေရ်ကို၊ (ပုစ္ဆ-၌စပ်၊ )ဂတွာ-၍၊ ပုစ္ဆ-လော၊ ဣတိ-ဤသို့ ပြော၍၊(ပေသေတဗ္ဗော–၏၊) တေနာပိ-ထိုစာသင်ဘက် ထေရ်သည်လည်း ၊ပေ၊ ပဏ္ဍိတော - ပညာရှိသော၊ အန္တေဝါသိကော - အနီးနေတပည့်သည်၊ အထ အတ္ထိ –အံ့၊(ဝေံသတိ)၊ပေ၊တေနာပိ-ထိုပညာရှိ အနီးနေတပည့် သည်လည်း၊ပေ၊ဝတ္တဗ္ဗော-၏။

ဒဟရဿာပိ-ပညာရှိ ရဟန်းငယ်၏(ဤဏ်၌)လည်း၊ ပါရာဇိကဋ္ဌာယာဝ-ပါရာဇိကအရိပ်အရောင်သည်ပင်၊ အထဥပဋ္ဌာတိ-အကယ်၍ ထင်အံ့၊(ဝေံသတိ)တေနာပိ-ထိုပညာရှိ ရဟန်းငယ်သည်လည်း၊ ပါရာဇိကော-သာသနာတော်မှ ဆုံးရှုံးစေအပ်သူသည်၊ ဝါ - ပါရာဇိကကျသူသည်၊ အသိ - ဖြစ်၏၊ ဣတိ - သို့၊ န ဝတ္တဗ္ဗော - မပြောဆိုထိုက်၊ (ကသ္မာ–နည်း၊) ဟိ (ယသ္မာ) - ကြောင့်၊ ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒေါ-ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒ နဝမ ခဏကို၊ ဝါ-မြတ်စွာဘုရား ပွင့်ရာအခါကို၊ [ "ဘုရားပွင့်တော်မူခြင်းကို" ဟု မပေးနှင့်၊ ] ဒုလ္လဘော - ခဲယဉ်းသဖြင့် ရအပ်၏၊ ဝါ - ရနိုင်ခဲ၏၊ တဘော - ထို ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒနဝမခဏထက်၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာစရှင့်အဖြစ်ကိုရင်း၊ ဥပသမ္ပဒါစ – အထက်တန်းဖြစ်သော ပြည့်စုံခြင်းကိုရင်း၊ ဝါ - ရဟန်းအဖြစ်ကိုရင်း၊ ဒုလ္လဘတရာ - သာ၍ခဲယဉ်းသဖြင့် ရအပ်၏၊ ဝါ-သာ၍ ရနိုင်၏၊ ( တသ္မာ - ကြောင့်၊ ပါရာဇိကောသိတ် - ပါရာဇိကော အသိ ဟူ၍၊ နဝတ္တဗ္ဗော၊ ) ပန - အနွယ ဘား၊ ဧဝံ - သို့၊ ဝတ္တဗ္ဗော - ၏၊ ( ကိံ )၊ ဝိဝိတ္တံ- ဆိတ်ငြိမ်သော၊ ဩကာသံ - အရပ်ကို၊ သမ္မဇ္ဇိတွာ - တံမြက်လှည်း၍၊ ဒိဝါဝိဟာရံ- နေ့နေရာ၌၊ နိသီဒိတွာ - ၍၊ သီလာနိ - ကြွင်းသောသီလတို့ကို၊

**သီလာနိ သောဓေတွာ။** ။ယံ ဝတ္ထုံ ( အကြင် သီလလျှင် အကြောင်းဝတ္ထု ရှိသော ) ကုက္ကုစ္စံ ဥပ္ပန္နံ၊ တံ ( ထိုသီလကို ) အမနသိ ကရိတွာ အဝသေသသီလာနိ သောဓေတွာ။

သောခေတွာ - သုမ်သင်၍၊ ဒွတ္တိံသာကာရံ - ဒွတ္တိံသာကာရ ကမ္မဋ္ဌာန်းကို၊ တာဝ မနသိ ကရောဟိ- နှလုံးသွင်းပါဦးလော၊ ဣတိ-သို့၊ (ဝတွာဗွော- ၏၊) [ဤစကားကို ထောက်၍ ယခုကာလ၌ သုဒ္ဓ ဟု မဆုံးဖြတ်နိုင်သော အမှုသည်များကို တောကျောင်းဘုန်းတော်ကြီးထံ သွားနေရန် ညွှန်ပြလေ့ရှိကြသည်။] တဿ – ထိုရဟန်း၏၊ အဘောဒ် – ပျက်စီးခြင်းမရှိသော၊ [အရောဂံ-ရောဂါမရှိသော ( မှုကွဲ )။ ] သီလံ - သည်၊ သစေ ( ဟောတိ ) - အံ့၊ ( ဧဝံသတိ၊ ) ကမ္မဋ္ဌာနံ - ကမ္မဋ္ဌာန်း အာရုံသည်၊ ဃဋယတိ - စိတ်အစဉ်နှင့် ဆက်စပ်၏၊ သင်္ခါရာ - တို့သည်၊ ပါကဋာ - ထင်ရှားကုန်သည်၊ ဟုတွာ – ၍၊ဥပဋ္ဌဟန္တိ– ထင်လာကုန်၏၊ ဥပစာရပ္ပနာပ္ပတ္တံဝိယ–ဥပစာရဈာန်အပ္ပနာဈာန်သို့ ရောက်နေသကဲ့သို့၊ စိတ္တမ္ပိ- သည်လည်း၊ ဧကဂ္ဂံ- တခုဘည်းသော အာရုံရှိသည်၊ ဝါ- တည်ကြည်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ဒိဝသံ- နေ့အဘို့ကို၊ အတိက္ကန္တမ္ပိ- ကုန်လွန်သွားသည်ကိုလည်း၊ န ဇာနာတိ-မသိလိုက်၊ သော-ထိုရဟန်းသည်၊ ဝါ-ကို၊ ဒိဝသာတိက္ကမေ - နေ့ကိုလွန်ရာအခါ၌၊ (ညချမ်းအခါ၌ - ဟူလို၊) ဥပဋ္ဌာနံ- ဆည်းကပ်ခြင်းငှါ၊ ဝါ-ဆည်းကပ်ရာအရပ်သို့၊ အာဂတော- သည်၊ (သမာနော-သော်၊ ) ဧဝံ ဝတ္တဗ္ဗော-မေးမြန်းထိုက်၏၊ (ကိံ)၊ တေ -၏၊ စိတ္တပ္ပဝတ္တိ- စိတ်၏ဖြစ်ခြင်းကို၊ ကီဒိသာ - အဘယ်ကဲ့သို့ ရှုအပ်သနည်း၊ ဝါ - ဘယ်လိုနေသနည်း၊ဣတိ(ဝတ္တဗ္ဗော)၊စိတ္တပ္ပဝတ္တိယာ-စိတ်၏ဖြစ်ပုံကို၊ အာရောစိတာယ- လျှောက်အပ်သော်၊ ဝတ္တဗ္ဗော- ဆက်၍ပြောဆိုထိုက်၏၊ (ကိံ)၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာနာမ- ရှင်ရဟန်းအဖြစ်မည်သည်၊ စိတ္တဝိသုဒ္ဓတ္ထာယ-စိတ်၏စင်ကြယ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ (ဟောတိ)၊ အပ္ပမတ္တော - မမေ့မလျော့သည်၊ ( ဟုတွာ- ၍၊ ) သမဏဓမ္မံ- ကို၊ ကရောဟိ- ပြုပေတော့၊ ဣတိ (ဝတ္တဗ္ဗော - ၏။)

**ဒွတ္တိံသာကာရံ** ။ ။ ပါကဋဘာဝတော (ဒွတ္တိံသာကာရကမ္မဋ္ဌာန်းက အခြားကမ္မဋ္ဌာန်းထက် ပေါ်လွင် ထင်ရှားသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ရင်း ) သုခဝလဉ္ဇနတာယ (လွယ်ကူသော သုံးစွဲရခြင်းရှိ=ကိုယ်ခန္ဓာမှာရှိသဖြင့် အသုံးပြု၍ လွယ်ကူခြင်းကြောင့်ရင်း ) ဒွတ္တိံသာကာရံ တာဝ မနသိကရောဟီတိ ဝုတ္တံ၊ အညသ္မိံပန ကမ္မဋ္ဌာနေ ကတပရိစယေန တဒေဝ (ထို အလေ့အကျက်ရှိရာ ကမ္မဋ္ဌာန်းကိုသာ) မနသိ ကာတဗ္ဗံ။

**ဃဋယတိ** ။ ။ အန္တရန္တရာ ခဏ္ဍံ အဒဿေတွာ ( အကြားအကြား၌ ကမ္မဋ္ဌာန်းပြတ်၍ စိတ်ပျံ့လွင့်မှုကိုမပြဘဲ )စိတ္တေန သဒ္ဓိံ အာလမ္ဗနဘာဝေန စိရကာလံ ဃဋယတိ။

**သင်္ခါရာ၊ ပေ၊ ဥပဋ္ဌဟန္တိ** ။ ။ ဝိပဿနာကမ္မဋ္ဌာန်း အားထုတ်သူကို ရည်ရွယ်၍ " သင်္ခါရာ ပါကဋာ ဥပဋ္ဌဟန္တိ " ဟု ဆိုသည်၊ သမထကမ္မဋ္ဌာန်း အားထုတ်သူဖြစ်မူ ဆိုင်ရာကမ္မဋ္ဌာန်းအာရုံများ ထင်ရှားလာပေလိမ့်မည်။

ပန-ဗျတိရိက်ကား၊ ယဿ-၏၊ သီလံ-သည်၊ ဘိန္နံ-ပျက်ပြီးသည်ဟောတိ၊ တဿ-၏၊ ကမ္မဋ္ဌာနံ-သည်၊ နဃဋယတိ-စိတ်အစဉ်နှင့် မဆက်စပ်၊ ပတောဒါဘိတုန္နံဝိယ- နှင်တံဖြင့် ထိုးဆွအပ်သကဲ့သို့၊ စိတ္တံ-သည်၊ ဝိကမ္ပတိ- တုန်လှုပ်၏၊ ဝိပ္ပဋိသာရဂ္ဂိနာ-နောင်တတဖန် ပူပန်ခြင်းမီးသည်၊ ဍယှတိ - လောင်အပ်၏၊ တတ္တပါသာဏေ- လောလောပူသော ကျောက်ဖျာ၌၊ နိသိန္နောဝိယ- ထိုင်ရသကဲ့သို့၊ တခ်ဏညေဝ-ထိုခဏ၌ပင်၊ ဝုဋ္ဌာတိ-ထရ၏၊ သော- ထိုရဟန်းကို၊ (ဥပဋ္ဌာနံ-သို့၊) အာဂတော- သည်၊ (သမာနော- သော်၊) တေ-၏၊ စိတ္တပ္ပဝတ္တိ- သည်၊ ကာ - အဘယ်နည်း၊ ဣတိ ပုစ္ဆိတဗ္ဗော၊ စ- ဆက်၊ စိတ္တပ္ပဝတ္တိယာ-ကို၊ အာရောစိတာယ-သော်၊ လောကေ-၌၊ ပါပကမ္မံ-ကို၊ ပကြဲမ္မတော-ပြုသူ၏၊ရဟောနာမ-ဆိတ်ကွယ်သောအရပ်မည်သည်၊နတ္ထိ-မရှိ၊ဟိ-မှန်၊သဗ္ဗပဌမံ- အလုံးစုံတို့၏ ရှေးဦးစွာ၊ ပါပံ- ကို၊ ကရောန္တော-သည်၊ အတ္တနာ- ကိုယ်တိုင်၊ ဇာနာတိ-သိ၏၊ [ပစ္စွေတ္တစေတံ ကရဏဝစနံ၊ အတ္တာ ဇာနာတီတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊] အထ-ထိုမှနောင်၌၊ အဿ-ထို မကောင်းမှုပြုသူ၏၊ အာရက္ခဒေဝတာ – ကိုယ်စောင့်နတ်သည်၎င်း၊ ပရစိတ္တဝိဒူ- သူတပါးစိတ်ကို သိကုန်သော၊ သမဏဗြာဟ္မဏာ-တို့သည်၎င်း၊ အညာ-အခြားကုန်သော၊ ဒေဝတာစ-နတ်တို့သည်၎င်း၊ ဇာနန္တိ-န်၏၊ [ဋီကာ၌"အညာစ ဒေဝတာ"ဟု ရှိ၏၊] တွံယေဝ-သင်သည်သာ၊ ဝါ-သင့်ကိုယ်တိုင်သာ၊ ဒါနိ-၌၊ တဝ-၏၊ သောတ္ထိံ-ချမ်းသာကြောင်းကို၊ ပရိယေသာဟိ-ရှာမှီးပေတော့၊ ဣတိ- သို့၊ ဝတ္တဗ္ဗော-ပြောဆိုထိုက်၏။

စ - နိဂုံးကို ဆိုဦးအံ့၊ (တချို့စာ၌မပါ၊) စတုဗ္ဗိဓာ-သော၊ ဝိနယကထာ(စ)-သည်၎င်း၊ ဝိနယဓရဿ-၏၊ လက္ခဏာဒိကထာစ- လက္ခဏာ အစရှိသည်ကို ဖွင့်ဆိုရာစကားသည်၎င်း၊ နိဋ္ဌိတာ – ပြီ။ [ လက္ခဏာဒိန္န အာဒိဖြင့်ဆုံးဖြတ်ပုံနည်းကို ယူပါ။]

နဃဋယတိ။ ။သစေ ကတပါရာဇိကဝီတိက္ကမော ဘဝေယျ၊ တဿ (ထိုပုဂ္ဂိုလ်မှာ)အသတိပိ အဿရိတုကာမဘာဝ (ထိုအမှုကိုသတိမရလိုသော်လည်း) ဝိပ္ပဋိသာရဝတ္ထုဝသေန (ဝိပ္ပဋိသာရဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းဝတ္ထု၏ အစွမ်းဖြင့်) ပုနပ္ပုနံ တံ ဥပဋ္ဌဟတီဘိ(ထို့ကြောင့်)စိတ္တေကဂ္ဂတံ နဝိန္ဒတိ၊ တေနဝုတ္တံ—ကမ္မဋ္ဌာနံ န ဃဋယတီတိ။

# သိက္ခာပဒ ဝိဘင်္ဂအဖွင့်

ဧဒါနိ-စတုတ္ထိမ ဝိနယကထာစသည်ကို ဖွင့်ပြပြီးရာ ယခုအခါ၌၊ သိက္ခာပဒ ဝိဘင်္ဂဿ-သိက္ခာပုဒ်ဝိဘင်း၏၊(သိက္ခာပုဒ်တွင် ပါဝင်သောပုဒ်တို့ကို အကျယ် ဝေဘန်ကြောင်းပဒဘာဇနီ၏၊)အတ္ထံ-ကို၊ ဝဏ္ဏယိဿာမ-နှအံ့၊ယောပနာတိ ယော ယာဒိသောတိ အာဒိ-အစရှိသော၊ ယံ-အကြင်စကားတော်ကို၊(ဘဂဝတာ)ဝုတ္တံ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ တ္ထေ-၌စကားရပ်၌၊ ယောပနာတိ-ပုဒ်သည်၊ ဝိဘဇိတဗ္ဗပဒံ - အကျယ် ဝေဘန်ထိုက်သောပုဒ်တည်း၊ [အဋ္ဌကထာ၌ ဤပုဒ် မျိုးကို "သံဝ ဏ္ဏေတဗ္ဗ"ဟု ခေါ်သည်။] ယောယာဒိသောတိ အာဒီနိ-ပုဒ်တို့ သည်၊ တဿ-ထို ယောပနပုဒ်၏၊ ဝါ-ကို၊ ဝိဘဇနပဒါနိ- အကျယ် ဝေဘန် ကြောင်း ပုဒ်တို့တည်း၊ [ အဋ္ဌကထာ၌ ဤပုဒ်မျိုးကို အကျယ်ဖွင့်ပြကြောင်း "သံဝဏ္ဏနာ" ဟု ခေါ်သည်၊ ] ဝိဘဇိယန္တိ ဧတေဟီတိ ဝိဘဇနာနိ ( ပဒါ နိ)။ ] စ - ဆက်၊ တ္ထေ - ၌ ယောယာဒိသော အစရှိသော ဝိဘဇနပုဒ်တို့၌၊ [ယသ္မာ၏ပြင်ဘက်က နေသောကြောင့် တသ္မာ၏ပြင်ဘက်က ယောသဒ္ဒမေဝ ၌စပ်၊ယောဇနာ၌ "တ္ထောတိ ယောပနာဒီသု ပဒေသု"ဟု စွဲ၏၊ စဉ်းစားပါ။]

ယသ္မာ - ကြောင့်၊ ပနာတိ - ပုဒ်သည်၊ နိပါတမတ္တံ- အနက်မရ နိပါတ်မျှ သာတည်း၊ [မတ္တသဒ္ဒါကြောင့် အနက်လုံးဝမရှိ-ဟု မှတ်။] ယောတိ-သည်၊ အတ္ထပဒံ – အနက်ကိုဟောသောပုဒ်တည်း၊ ဝါ – အနက်ရှိသောပုဒ်တည်း၊ [အတ္ထဝါစကံ+ပဒံ အတ္ထပဒံ။] တဉ္စ- ထို ယောဟူသော ပုဒ်သည်လည်း၊ အနိ ယမေန-မည်သည့်ပုဂ္ဂိုလ်ဟု သတ်မှတ်ခြင်းမရှိသောအားဖြင့်၊ ပုဂ္ဂလံ-ပုဂ္ဂိုလ် သာမညကို၊ ဒီပေတိ-ပြ၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ယော ဟူသောပုဒ်၏ အနိယမ အားဖြင့် ပုဂ္ဂိုလ်သာမညကို ပြသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) တဿ - ထို ယော ဟူသောပုဒ်၏၊ အတ္ထံ- အနက်ကို၊ ဒဿေန္တော- သည်၊ (ဟုတ္វာ -၍၊) အနိ ယမေန-ဖြင့်၊ပုဂ္ဂလဒီပကံ-သော၊ ယောသဒ္ဒမေဝ-ယောသဒ္ဒါကိုသာ၊ အာဟ- မူပြီ၊ တသ္မာ – ကြောင့်၊ ( အနက်မရှိသော ပနသဒ္ဒါကိုဖယ်ရှား၍ အနိယမ အားဖြင့် ပုဂ္ဂလဒီပက ယောသဒ္ဒါကိုသာ မိန့်တော်မူသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊) တ္ထေ-၌ ယောဟူသောသဒ္ဒါ၌၊ ဝံ-သို့၊ အတ္ထော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊(ကံ)၊ ယောပနာတိ-ကား၊ ယော-အမှတ်မထား တပါးပါးသောပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ယော

တသ္မာ ဧတ္ထ။ ။ဤတသ္မာ၏စွဲနက်သည် ရှေ့ ယသ္မာ ဝါကျရှိ အနက်များပင်တည်း၊ "တသ္မာတိ – ယသ္မာ ပနသဒ္ဒံ အပနေတွာ အနိယမေန ပုဂ္ဂလဒီပကံ ယောသဒ္ဒမေဝ အာဟ၊ တသ္မာ" ဟူသော ဋီကာ၌လည်း ရှေ့ဝါကျ၏အနက်ကိုပင် ချုံး၍ဖွင့်သည်၊ [တ္ထောတိ ဣမသ္မိံ ယောသဒ္ဒေ။]

ကောဇိ - အမှတ်မထား တပါးပါးသော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ဇာတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ပန - ဆက်၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ ယောကောစိနာမ- ယောကောစိမည်သော၊ ယော-အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊(အတ္ထိ) သော-ထို ယောကောစိမည်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ အဝသံ - မချွတ်ကေန်၊ လိင်္ဂယုတ္တ ၊ပေ၊ ဝယေသု – အသွင်သဏ္ဌာန်ဟူသော အခြင်းအရာ, ယှဉ်ခြင်းဟူသောအခြင်းအရာ, ဇာတ်ဟူသောအခြင်းအရာ , အမည်ဟူသောအခြင်းအရာ , အနွယ်ဟူသောအခြင်းအရာ , အလေ့အကျင့်ဟူသောအခြင်းအရာ, နေကြောင်းဟူသောအခြင်းအရာ, ကျက်စားရာဟူသောအခြင်းအရာ,အရွယ်ဟူသောအခြင်းအရာတို့တွင်၊ ကေနေ-တပါးပါးသော၊ အာကာရေန-အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ပညာယတိ-ထင်ရှား၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ( တပါးပါးသော အခြင်းအရာအားဖြင့် ထင်ရှားသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) တံ-ထို ယောကောစိမည်သော ပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ တထာ-ထို အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ဉာပေတုံ-သိစေခြင်းငှါ၊ တံ ပဘေဒံ-ထို လိင်္ဂစသော အထူးအပြားကို၊ ပကာသေန္တော - မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ )၊ ယာဒိ သောတိအာဒိ အာဟ၊ တတ္ထ- ထို ယာဒိသော အစရှိသောစကားရပ်၌၊ ယာဒိသောတိ- ကား၊ လိင်္ဂဝသေန-အသွင်သဏ္ဌာန်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ယာဒိသော၀ါ- အကြင်သူကဲ့သို့ ရှုအပ်သည်မူလည်း၊ ဟောတု - စေ၊ တာဒိသော၀ါ - ထိုသူကဲ့သို့ ရှုအပ်သည်မူလည်း၊ ဟောတု–စေ၊ ဒီဃော၀ါ-အရပ်ရှည်သူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ ရဿော၀ါ-အရပ်ပုသူမူလည်း၊ ဟောတု၊ကာဠော၀ါ-အရေအဆင်း မဲသူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ ဩဒါတော၀ါ- အရေအဆင်းဖြူသူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ မင်္ဂုရစ္ဆဝိ၀ါ-မမဲမဖြူ ငါးခူအရေအဆင်းနှင့်တူသော အဆေအဆင်းရှိသူမူလည်း၊ ဟောတု- စေ၊ [“အသားမဲသူ” စသည်ဖြင့် ခေါ်လေ့ရှိသော်လည်း

ယောကောစိ ။ ။ယ—ပါလျှင် “အကြင်” ဟု ပေးရိုးရှိသော်လည်း ထိုအကြင်ဟူသောအနက်ကား လိုရင်းမဟုတ်ပါ၊ “အမှတ်မထား တပါးပါး” ဟူသော အနိယမအနက်သာလိုရင်းဖြစ်ပါသည်၊ ထို့ကြောင့် ယောကို“ယောကောစီတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ” ဟု ဥဇုကတ္ထဖွင့်ပြသည်။

မင်္ဂုရစ္ဆဝိ။ ။စာအုပ်များ၌“မင်္ဂုရ”ဟု တွေ့ရ၏၊ “ကြမ်းပိုး”ဟု လည်း နိဿယပေးကြ၏၊ ကြမ်းပိုး၌ အရေမထင်ရှားပါ၊ “ ဆဝိ – အရောင် ” ဟု ဆိုပြန်လျှင်လည်း အချို့ကြမ်းပိုးသည် ဖြူဖတ်ဖြူရော် အရောင်ရှိ၍ သွေးဝနေသောကြမ်းပိုးကား နီရောင် အဆင်း ရှိရကား မသေချာပါ၊ “ ငါးခူ ” ဟူသောအနက်ကို ဟောသော မင်္ဂုရသဒ္ဒါရှိ၏၊ ထိုငါးခူ၌သာ အရေထင်ရှားရှိ၏၊ ထို့ကြောင့်“မင်္ဂုရစ္ဆဝိ”ဟု ပါဠ်မှန်ထင်သည်၊ မင်္ဂုရဿ+ဆဝိဝိယ ဆဝိ ယဿာတိ မင်္ဂုရစ္ဆဝိ။

အသားသည် အမြိန်နိ၏၊ အရေသာ"အမဲ"စသည်ဖြင့် ကွဲပြားသည်။]ကိသော ဝါ-ကြံလိုသူမူလည်း၊ ဝါ-ဖိန့်သူမူလည်း၊ ဟောတု- စေ၊ ထုလောဝါ-ဆူဖြိုး သူမူလည်း၊ ဝါ-ဝသူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ ဣတိအတ္တော-နက်။

ယထာယုတ္တောတိ-ကား၊ ယောဂဝသေန- အားထုတ်အပ်သော အလုပ်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ယေနဝါ တေနဝါ - အမှတ်မထား တပါးပါးသော အလုပ်နှင့်မူလည်း၊ ယုတ္တော ယှဉ်သူသည်၊ ဟောတု-ဖြစ်စေ၊ နဝကမ္မယုတ္တော ဝါ– အသစ်အသစ် ပြုအပ်သော အလုပ်နှင့် ယှဉ်သူမူလည်း၊ ဟောတု– စေ၊ ဥဒ္ဒေသယုတ္တောဝါ-စာပေသင်ပြပို့ချခြင်းအလုပ်နှင့်ယှဉ်သူမူလည်း၊ဟောတု၊ [ ဤ စကားဖြင့် ဂန္ထဓုရအားထုတ်နေသူကို ပြ၏၊ ] ဝါသဓုရယုတ္တောဝါ- မိမိစိတ်ကို ထုံမွှမ်းကြောင်း ဝိပဿနာဓုရနှင့် ယှဉ်သူမူလည်း၊ ဟောတု၊ [ ဤ စကားဖြင့် ဝိပဿနာဓုရ အားထုတ်နေသူကို ပြသည်၊ ] ဣတိအတ္တော-နက်၊ ယထာဇစ္စောတိ - က း ဇာတိဝသေန – ဇာတ်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ယံဇစ္စောဝါ-အကြင်ဇာတ်ရှိသူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ တံဇစ္စောဝါ-မူလည်း၊

**ယထာယုတ္တော**။ ။ယထာသဒ္ဒါသည် ဝိစ္ဆာအနက်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ယေနယေန+ယုတ္တော ယထာယုတ္တော" ဟု ပြု၊ ယထာဇစ္စော- စသည်၌ကား "ယံ ယံ+ဇစ္စ (ယာယာ+ဇာတိ) ယဿာတိ ယထာဇစ္စော"စသည်ပြု။

**နဝကမ္မယုတ္တော**။ ။တခုပြီးတခု အသစ်အသစ်ပြုအပ်သောအလုပ်ကို"နဝကမ္မ" ဟု ခေါ်၏၊ ထိုသို့ အလုပ်များနေသူကို "နဝကမ္မယုတ္တ" ဟု ခေါ်၊ ဂန္ထဓုရဝိပဿနာ ဓုရတွင် မပါဝင်သောအလုပ်ဟူသမျှကို နဝကမ္မတွင်သွင်း၍ ရဟန်းဟူသမျှကို ဂန္ထဓုရ, ဝိပဿနာဓုရ, နဝကမ္မ,ဟု အလုပ် ၃ မျိုးဖြင့် သိမ်းယူသည်။

**ဝါသဓုရယုတ္တော**။ ။"ဝိပဿနာဓုရယုတ္တော"ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ " ဝတ္ထေ ဂန္ဓေ ဃရေ ဝါသော"ဟူသော(၁၁၁၉) အဘိဓာန်၌ ဂန္ဓအနက်ပါ၏၊"ဘာဝိတံ ဝါသိတံ-ထုံအပ်" ဟု လည်း (၃၀၇) အဘိဓာန်၌ ရှိ၏၊ ဓုရသဒ္ဒါသည် လုလ္လဟူသော အနက်ကို ဟော၏၊ဤနေရာ၌ ကြိုးကြိုးစားစားပြုလုပ်အပ်သောအလုပ်ကို ဓုရဟု ခေါ်ပါ၊ဝါသော ယေဝ+ဓုရော ဝါသဓုရော၊ တေန+ယုတ္တော ဝါသဓုရယုတ္တော၊ " မိမိစိတ်ကို ထုံမွှမ်း ကြောင်းဖြစ်သော ကြိုးကြိုးပမ်းပမ်းအားထုတ်အပ်သော ဝိပဿနာအလုပ်နှင့်ယှဉ်သူ" ဟူလို။ [ရှေးနိဿယများ၌ "ဝိပဿနာဖြင့် နေခြင်း ဟု ဆိုအပ်သော ဓုရနှင့်ယှဉ်သည် မူလည်း" ဟု ပေးကြ၏။]

**ယံဇစ္စော**။ ။"ယာ+ဇာတိ အဿာတိ ယံဇာတိ၊ (ပုဂ္ဂလော)၊ ယံဇာတိဧဝ ယံ ဇစ္စော၊ သကတ္ထေ ယပစ္စယော"ဟု ယောဇနာဆို၏၊ သို့သော် သမာသ်ပြီးသော ဇာတိ ပုဒ် နောင် ကပစ္စည်းသက်လေ့ရှိသောကြောင့်၎င်း, "ဇစ္စဗဓိရော"စသည်ဖြင့် ဇစ္စပုဒ်ကို တွေ့ရသောကြောင့်၎င်း၊"ဇာတိယေဝ+ဇစ္စံ"ဟု ပဌမပြုပြီးမှ"ယံ+ဇစ္စံ ယဿာတိ ယံ ဇစ္စော" ဟု ပြုရလျှင် သာ၍ သဘာဝကျမည် ထင်သည်၊ တံဇစ္စော၌လည်း နည်းတူ။

ဟောတု - စေ၊ ခတ္တိယဿ ဝါ - ဇာတ်အားဖြင့် မင်းသည်မူလည်း၊ ဟောတု - စေ၊ ဗြာဟ္မဏော ဝါ- ဇာတ်အားဖြင့် ပုဏ္ဏားသည်မူလည်း၊ ဟောတု - စေ၊ ဝေဿော ဝါ-ဇာတ်အားဖြင့် လယ်ထွန်ကုန်ရောင်း နွားကျောင်းသူမူလည်း၊ ဟောတု၊ သုဒ္ဒေါ ဝါ-ဇာတ်အားဖြင့် သုဒ္ဒသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ [ဤစကားဖြင့် ဇာတ် ၄ မျိုးကို ပြသည်၊] ဣတိ အတ္ထော-နက်။

ယထာနာမောတိ-ကား၊ နာမဝသေန-နာမည်၏အစွမ်းအားဖြင့်၊ ယထာနာမော ဝါ-အကြင် နာမည်ရှိသူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ တထာနာမော ဝါ-မူလည်း၊ ဟောတု၊ [ " ယံနာမော ဝါ တံနာမော ဝါ " ဟု ရှိလျှင် သာ၍ ကောင်းသည်၊] ဗုဒ္ဓရက္ခိတော ဝါ-ဗုဒ္ဓရက္ခိတမည်သူမူလည်း၊ ဟောတု - စေ၊ ဓမ္မရက္ခိတော ဝါ-မူလည်း၊ ဟောတု၊ သံဃရက္ခိတော ဝါ-မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဣတိအတ္ထော–နက်၊ ယထာဂေါတ္တောတိ–ကား၊ ဂေါတ္တဝသေန- အနွယ်၏အစွမ်း အားဖြင့်၊ ယထာဂေါတ္တော ဝါ- အကြင် အနွယ်ရှိသူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ တထာဂေါတ္တော ဝါ-မူလည်း၊ ဟောတု၊ [ဤမှ နောက်၌ရှိသောပုဒ်သည် အပိုသာ၊ ရှေ့၌လည်း ဤပုဒ်မျိုးမပါခဲ့၊] ကစ္စာယနော ဝါ – အနွယ်အားဖြင့် ကစ္စာယနမည်သူမူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ ဝါသိဋ္ဌော ဝါ– မူလည်း၊ ဟောတု၊ ကောသိယော ဝါ – မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဣတိအတ္ထော - နက်။ [" ကစ္စာယန အမည်ရှိသူ"စသည်ဖြင့် မပေးနှင့်၊ အဿတ္ထိတခွိတ်မဟုတ်၊ ဂေါတ္တတခွိတ်။]

ယထာသီလောတိ-ကား၊ သီလေသု-ပင်ကိုယ်အလေ့တို့တွင်၊[သီလေသုတိ-ပကတီသု၊]ယထာသီလော ဝါ-အကြင် အလေ့ရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု–စေ၊ တထာသီလော ဝါ-မူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊နဝကမ္မသီလော ဝါ-အသစ်အသစ်ပြုအပ်သောအလုပ်ကို ပြုခြင်းအလေ့ရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု- စေ၊ ဥဒ္ဒေသသီလော ဝါ - စာပေသင်ပြ ပို့ချခြင်းအလေ့ရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု - စေ၊ ဝါသဓုရသီလော ဝါ- မိမိစိတ်ကို ထုံမွှမ်းကြောင်းဖြစ်သော ဝိပဿနာဓုရကို အားထုတ်ခြင်း အလေ့ရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု- စေ၊ ဣတိအတ္ထော - နက်၊ ယထာဝိဟာရီတိ–ကား၊ ဝိဟာရေသုပိ – နေကြောင်း အလုပ်တို့တွင်လည်း၊ ယထာဝိဟာရီ ဝါ-အကြင်အလုပ်ဖြင့် နေခြင်းရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု- စေ၊ တထာဝိဟာရီ ဝါ-မူလည်း၊ ဟောတု၊ နဝကမ္မဝိဟာရီ ဝါ-နဝကမ္မဖြင့်နေခြင်းရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဥဒ္ဒေသဝိဟာရီ ဝါ – စာပေသင်ပြ ပို့ချခြင်းဖြင့် နေခြင်းရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဝါသဓုရဝိဟာရီ ဝါ - မိမိစိတ်ကို ထုံမွှမ်းကြောင်းဖြစ်သော ဝိပဿနာဓုရဖြင့် နေခြင်းရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဣတိ အတ္ထော–နက်။

ယထာဂေါစရေတိ - ကား၊ ဂေါစရေသုပိ - ကျက်စားရာတို့တွင်လည်း၊ ယထာဂေါစရောဝါ - အကြင် ကျက်စားရာ ရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု - စေ၊ တထာဂေါစရောဝါ-မူလည်း၊ ဟောတု- စေ၊ နဝကမ္မဂေါစရောဝါ-အသစ် အသစ် ပြုအပ်သောအလုပ် ဟူသော ကျက်စားရာရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဥဒ္ဒေသဂေါစရောဝါ - စာပေသင်ပြု ပို့ချခြင်းဟူသော ကျက်စားရာရှိသည် မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဝါသဓုရ ဂေါစရောဝါ – မိမိစိတ်ကို ထုံမွှမ်းကြောင်း ဖြစ်သော ဝိပဿနာဓုရဟူသော ကျက်စားရာရှိသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်၊ ထေရောဝါတိ အာဒိသု-ထေရောဝါအစရှိသောပါဠိရပ်တို့၌၊ ( အတ္ထော ဧဝံဝေဒိတဗ္ဗော၊ ) ဝယောဝုဍ္ဎာဒိသု-အရွယ်အာဖြင့် ကြီးရင့်သူ အစရှိသောပုဂ္ဂိုလ်တို့တွင်၊ ယောဝါ သောဝါ-အမှတ်မထားတပါးပါးသော ပုဂ္ဂိုလ်သည်မူလည်း၊ ဟောတု - စေ၊ ပရိပုဏ္ဏ ဒသဝဿတာယ - ပြည့်သော ဆယ်ဝါရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ထေရောဝါ – ဆယ်ဝါရပြီ , ထေရ်သည် မူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ [ဆယ်ဝါရလျှင် ထေရ်, ဝါ ၂၀ ရလျှင် မဟာထေရ်– ဟု ခေါ်သည်၊] ဥနပဉ္စဝဿတာယ-ယုတ်လျော့သော ၅ ဝါရှိသည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ နဝေါဝါ- ၅ ဝါမကြွယ်သီတင်းငယ်သည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ အတိ ရေက ပဉ္စဝဿတာယ- လွန်သော ၅ ဝါရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ-၅ ဝါ ထက် လွန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ မဇ္ဈိမောဝါ- ၅ ဝါပြည့်မြောက်, ဆယ်ဝါ အောက်ငယ်,အလယ်အလတ်သည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ ဣတိ အတ္ထော၊ အထ ခေါ–စင်စစ်ကား၊ သဗ္ဗောဝ-အလုံးစုံသာလျှင်ဖြစ်သော၊ သော- ဤရဟန်း ကို၊ ဣမသ္မိံ အတ္ထေ-ဤသိက္ခာပုဒ်၏အနက်၌၊ ယောပနာတိ-ဟူ၍၊ဝုစ္စတိ-၏။

ဘိက္ခုနိဒ္ဒေသေ-ဘိက္ခုနိဒ္ဒေသ၌၊ (အတ္ထော-ကို၊ ဧဝံ-ဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊) ဘိက္ခတိ- တောင်းတတ်၏၊ ဣတိ –ကြောင့်၊ ဘိက္ခကော-ကမည်၏၊ လဘာ န္တောဝါ-ရသည်မူလည်း ဖြစ်စေ၊ အလဘန္တောဝါ-စေ၊ အာရိယာယ-အရိ ယာတို့၏ ထုံးစံဖြစ်သော၊ ယာစနာယ–တောင်းခြင်းဖြင့်၊ ယာစတိ-၏၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်၊ [''ဘိက္ခ+ယာစနေ''ဓာတ်နက်ကိုဖွင့်သည်၊] ဗုဒ္ဓါဒိဟိ-ဘုရား အစရှိသော သူတော်ကောင်းတို့သည်၊ အဇ္ဈုပဂတံ- ကပ်ရောက်အပ်သော၊

**အာရိယာယ ယာစနာယ**॥ ॥''ဥဒ္ဒိဿ အရိယာ တိဋ္ဌန္တိ,သော အရိယာန ယာစ နာ=အရိယာတို့သည် ဆွမ်းကိုရည်မှန်း၍ ရပ်ကြကုန်၏၊ဤ ဆွမ်းရပ်ခြင်းသည် အရိယာ တို့၏ တောင်းခြင်းပင် '' ဟု ဟောတော်မူအပ်သည့်အတိုင်း ဆွမ်းကိုမှန်း၍ ရပ်ခြင်းကို ''အာရိယ+ယာစနာ'' ဟု ဆိုသည်၊ သူတောင်းစားတို့ကဲ့သို့ '' ပေးပါ ပေးပါ '' ဟု တောင်းခြင်းမဟုတ်-ဟူလို၊ [''အရိယာနံ+ သော အာရိယာ''ဟု အာဠ ဒီဃရှိသင့်၏။]

ဘိက္ခာစရိယံ-ဆွမ်းအလို့ငှါ လှည့်လည်အပ်သော အရပ်သို့၊ ဝါ-ဆွမ်းခံရွာသို့၊ အဇ္ဈုပဂတတ္တာ - ကပ်ရောက်တတ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတောနာမ- ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတမည်၏၊ ဟိ- ချဲ့၊ ယောကောစိ- အမှတ်မရှိ တစုံတယောက်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည် အပ္ပံဝါ- တထောင်အောင်နည်းသည်မူလည်းဖြစ်သော၊ မဟန္တံဝါ - တထောင်ထက်များသည်မူလည်းဖြစ်သော၊ ဘောဂက္ခန္ဓံ-စည်းစိမ်အစုကို၊ ပဟာယ - ၍၊ အဂါရသ္မာ- မှ၊ (နိက္ခမိတွာ)အနဂါရိယံ-ရဟန်းဘောင်သို့၊ ပဗ္ဗဇိတော-ကပ်ရောက်၏၊ သော-ထိုပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ကသိဂေါရက္ခာဒိဟိ- လယ်ထွန်ခြင်း နွားကျောင်းခြင်း အစရှိသောအလုပ်တို့ဖြင့်၊ ဇီဝိတကပ္ပနံ -အသက်ကို ပြုမှုကို၊ ဝါ-အသက်မွေးမှုကို၊ ဟိတွာ-၍၊ လိင်္ဂသမ္ပဋိစ္ဆနေနေဝ - ရဟန်းအသွင်ကို ဝန်ခံခြင်းဖြင့်သာလျှင်၊ ဘိက္ခာစရိယံ- သို့၊ အဇ္ဈုပဂတော-၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ဘိက္ခု– မည်၏။

ဝါ-တနည်း၊ ပရပ္ပဋိဗဒ္ဓဇီဝိကတ္တာ-သူတပါးတို့၌စပ်သော အသက်မွေးရခြင်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ [ ပရေသု + ပဋိဗဒ္ဓါ အာယတ္တာ၊ -ဒသင်္ဂုတ္တရ, အင်္ဂုတ္တရဝဂ္ဂဋ္ဌကထာ၊ " ပရေန + ပဋိဗဒ္ဓါ " ဟု ယောဇနာ ပြုသည်ကို စဉ်းစားပါ၊] ဝိဟာရမဇ္ဈေ- ကျောင်းတိုက်အလယ်၌၊ ကာဇဘတ္တံ - ထမ်းပိုးတို့ဖြင့် ဆောင်ပို့အပ်သောဆွမ်းကို၊ ဘုဉ္ဇမာနောပိ – စားနေရသော်လည်း၊ ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတော-ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတမည်၏၊ဣတိ ကြောင့်၊ ဘိက္ခု - မည်၏၊ ဝါ- တနည်း၊ ပိဏ္ဍိယာလောပဘောဇနံ - သလုံးမြင်းခေါင်း

ဘိက္ခာစရိယံ။ ။ "ဥဉ္ဆာစရိယံ"ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ ဘိက္ခာဓာတ်သည် ယာစနအနက်ကိုဟော၏၊ ဥဆိဓာတ်လည်း အသက်မွေးဘို့ရန် ရှာဖွေခြင်းအနက်ကိုလည်း ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် အဓိပ္ပါယ်တူပင်တည်း၊ စရိတဗ္ဗန္တိ စရိယံ – လှည့်လည်အပ်သောအရပ်၊ ဘိက္ခာယ+ စရိယံ ဘိက္ခာစရိယံ။

အဇ္ဈုပဂတတ္တာ။ ။ "အနုဋ္ဌိတတ္တာ" ဟု ဖွင့်၏၊ အနု + ဥဋ္ဌိတတ္တာ – အမိန်စဉ်အတိုင်း ရပ်ရသည်၏အဖြစ်ကြောင့်"ဟု အနက်ပေး၊ ထိုအဖွင့်လည်း အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်သာဖြစ်၍ "ကပ်ရောက်တတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်"ဟု သာ သဒ္ဒတ္ထမှတ်။

ပိဏ္ဍိယာလောပဘောဇနံ ။ ။ ဇဃ် ပိဏ္ဍိယဗလေန စရိတွာ အာလောပမတ္တံ လဒ္ဓဘောဇနံ၊ (မဟာဝါ, မဟာဝဂ္ဂ – တေရသကဏ် )။ အာလောပမတ္တံ + လဒ္ဓံ+ ဘောဇနံ အာလောပဘောဇနံ–တလုပ်စာမျှ+ ရအပ်သော+ ဘောဇဉ်၊ ပိဏ္ဍိယေန– သလုံးမြင်းခေါင်းဖြင့် + စရိတွာ–၍၊ အာလောပဘောဇနံ ပိဏ္ဍိယာလောပဘောဇနံ။
[ " ပိဏ္ဍိယာလောပဘောဇနံ နိဿာယ ပဗ္ဗဇ္ဇာ, တတ္ထ တေ ဥဿာဟော ကရဏီယော"ဟု ရဟန်းဖြစ်စ ဩဝါဒအတိုင်း ဆွမ်းခံရသောကြောင့် "ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတော"ဟု ဆိုသည်–ဟူလို။]

ဖြင့်လှည့်လည်၍ တလုပ်စာမျှ ရအပ်သော ဆွမ်းကို၊ နိဿာယ - မှီ၍၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာ ယ-ရဟန်းအဖြစ်၌၊ ဥဿာဟဇာတဿ-ဖြစ်သောအားထုတ်ရခြင်း ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတော – ဂတမည်၏၊ ဣတိ- ကြောင့်၊ ဘိက္ခု-မည်၏။

အဍ္ဎဖဿဝဏ္ဏဘေဒေန-အဖိုး၏ပျက်ခြင်း, အတွေ၏ပျက်ခြင်း, အဆင်း၏ ပျက်ခြင်းအားဖြင့်၊ ဘိန္နံ- ပျက်သော၊ ပဋံ-အဝတ်ကို၊ ဓာရေတိ-ဆောင်တတ် ၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ဘိန္နပဋဓရော—ရမည်၏၊ တတ္ထ—ထိုအဍ္ဎဖဿ ဝဏ္ဏဘေဒ တို့တွင်၊ သတ္ထကစ္ဆေဒနေန-ထားငယ်ဖြင့် ဖြတ်ခြင်းအားဖြင့်၊ အဍ္ဎဘေဒေါ- အဖိုး၏ပျက်ခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ဟိ- ချဲ့၊ သဟဿဂ္ဃနကောပိ- အဖိုး တထောင် ထိုက် ညည်လည်းဖြစ်သော၊ ပဋော - အဝတ်သည်၊ သတ္ထကေန- ဖြင့်၊ ခဏ္ဍာခဏ္ဍိကံ-အပိုင်းငယ် အပိုင်းကြီးဖြစ်အောင်၊ ဆိန္နော-ဖြတ်အပ်သည်၊ (သမာနော- သော်၊) ဘိန္နဍ္ဎော- ပျက်သောအဖိုးရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပုရိ မဍ္ဎတော- ရှေ့အဖိုးမှ၊ ဥပဍ္ဎမ္ပိ- ထက်ဝက်ကိုလည်း၊ န အဍ္ဎတိ- မထိုက်တန် တော့၊ သုတ္တသံသိဗ္ဗနေန- ချည်ဖြင့် ဆက်စပ်၍ချုပ်ခြင်းအားဖြင့်၊ [သံအတွက် " ဆက်စပ် " ဟု ပေးသည်။] ဖဿဘေဒေါ - အတွေ၏ပျက်ခြင်းကို၊ ဝေဒိ တဗ္ဗော-၏၊ ဟိ–ချဲ့၊ အတိသုခုမ သမ္ဖဿောပိ-အလွန် နုသောအတွေ ရှိသည် လည်းဖြစ်သော၊ [ " သုသမ္ဖဿောပိ – ကောင်းသောအတွေ ရှိသည်လည်း ဖြစ်သော" ဟု မူကွဲ၊ ]ပဋော-သည်၊ သုတ္တေဟိ-တို့ဖြင့်၊ သံသိဗ္ဗိတော-ဆက်စပ်၍ ချုပ်အပ်သည်၊ ( သမာနော၊ ) ဘိန္နဖဿော - ပျက်သောအတွေ ရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ခရသမ္ဖဿတံ-ကြမ်းသောအတွေ ရှိသည်၏အဖြစ်သို့၊ ပါပုဏာ တိ-ရောက်တော့၏၊ သူစိမလာဒီဟိ-အပ်၏အညစ်အကြေး အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ ဝဏ္ဏဘေဒေါ-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ဟိ-ချဲ့၊ သုပရိသုဒ္ဓေါပိ-အလွန် ဖြူစင်သည် လည်းဖြစ်သော၊ ပဋော– သည်၊ သူစိကမ္မတော - အပ်ချုပ်မှုမှ၊ ပဋ္ဌာယ-၍၊ သူစိမလေန – ဖြင့်၎င်း၊ ဟတ္ထသေဒမလဇလ္လိကာဟိ - လက်၏ချွေး , ဖွပ်၍မရ

အဍ္ဎဖဿ ဝဏ္ဏဘေဒေန။ ။ အဍ္ဎဒိုဒိနံ ပုရိမပကတိ ဝိဇဟနေန– အဖိုးအတွေ အဆင်းတို့၏ မူလသဘောကို စွန့်ခြင်းအားဖြင့်၊ (နဂိုရ်တန်ဘိုး, နဂိုရ်အတွေ, နဂိုရ် အဆင်းကို စွန့်လိုက်ခြင်းအားဖြင့်၊) တန်ဘိုးပျက်, အတွေပျက်, အဆင်းပျက်တော့၏။ [ " ဒါးဖြင့် ဖြတ်လိုက်သည့်အတွက် တန်ဘိုးပျက် " ဟူရာ၌ ရှေးခေတ်က သင်္ကန်း ဖြစ်အောင်ချုပ်မှု ဆိုးမှုကို ရဟန်းများကိုယ်တိုင် ပြုရသောကြောင့် ချုပ်မှု ဆိုးမှုအတွက် တန်ဘိုးမတက်တော့၊ ဖြတ်အပ်ပြီးအဝတ်ပိုင်းနှင့် မဖြတ်အပ်သောအဝတ်တို့ တန်ဘိုး ကွာပုံကို နှိုင်းယှဉ်ကြည့်ပါ။]

လောက်သော အညစ်အကြေး, ဖွပ်၍ရလောက်သော အညစ်အကြေးတို့ဖြင့် ၎င်း၊ အ၀သာနေ-အဆုံး၌၊ ရဇန ကပ္ပကရဏောဟိစ - ဆိုးရည်ဆိုးခြင်း, ကပ္ပဗိန္ဒုကို ပြုခြင်းတို့ဖြင့်၎င်း၊ ဘိန္န၀ဏ္ဏော-ပျက်သောအဆင်းရှိသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပကတိ၀ဏ္ဏံ-ပင်ကိုယ်အဆင်းကို၊ ဝိဇဟတိ- စွန့်တော့၏၊ ဧဝံ-လျှင်၊ တီဟိ-န်သော၊ အာကာရေဟိ-တို့ဖြင့်၊ ဘိန္နပဋ္ဋမရော-ပျက်သောအ၀တ်ကိုဆောင်၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ဘိက္ခု - မည်၏၊ ၀ါ – နည်း၊ ဂိဟိ၀တ္ထ ဝိသဘာဂါနံ - လူတို့ အ၀တ်နှင့် သဘောမတူကုန်သော၊ ကာသာ၀ါနံ-ဖန်ရည်ဖြင့် ဆိုးအပ်သော အ၀တ်တို့ကို၊ ဓာရဏာမတ္တေနေ၀-ဆောင်ခြင်းမျှဖြင့်သာလျှင်၊ ဘိန္နပဋ္ဋမရော-၀တ်ကြောင်များမှ ကွဲပြားထူးလီဖန်ရည်ဆိုးအပ်သော အ၀တ်ကိုဆောင်တတ်၏၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ဘိက္ခု - ဘိက္ခုမည်၏။ [ ဤနည်း၌ ဘိန္နသဒ္ဒါသည် မတူကွဲပြားခြင်းအနက်ကို ဟော၏။]

သမညာယာတိ-ကား၊ ပညတ္တိယာ-ဘိက္ခုဟူသော အမည်ပညတ်အားဖြင့်၊ ၀ောဟာရေန – ဘိက္ခုဟူသော အခေါ်အဝေါ်အားဖြင့်၊ (ဘိက္ခု - ဘိက္ခုမည်၏၊) ဣတိအတ္ထော-နက်၊ ဟိ-ချဲ့၊ သမညာယဝေ–ဘိက္ခုဟူသော အမည်အားဖြင့်သာလျှင်၊ ဧကစ္စော-အချို့ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ဘိက္ခုတိ-ဟူ၍၊ ပညာယတိ-ထင်ရှား၏၊ တထာဟိ- ထို စကားမှန်၏၊ နိမန္တနာဒိမှိ- ပင့်ဖိတ်ခြင်း အစရှိသော ကိစ္စ၌၊ ဘိက္ခုသု- တို့ကို၊ ဂဏိယမာနေသု-ရေတွက်အပ်ကုန်လသော်၊ သာမဏေရေပိ - တို့ကိုလည်း၊ ဂဟေတွာ- ဘိက္ခု၌ သွင်းယူ၍၊ သတံဘိက္ခု-ရဟန်းတရာတို့၊ သဟဿံဘိက္ခု-တို့၊ ဣတိ-သို့၊ ၀ဒန္တိ-ပြောဆိုကြကုန်၏၊ ပဋိညာယာတိ-ကား၊ အတ္တနော-၏၊ ပဋိဇာနနေန-ဘိက္ခုဟု ဝန်ခံခြင်းအားဖြင့်၊ (ဘိက္ခု – ဘိက္ခုမည်၏၊) ဟိ - ချဲ့၊ ပဋိညာယပိ-ဘိက္ခုဟု ဝန်ခံခြင်းအားဖြင့် လည်း၊ [ပိ-ဖြင့် သမညာယကိုပေါင်း၊ ] ဧကစ္စော - သည်၊ ဘိက္ခုတိ – ဟူ၍၊ ပညာယတိ-၏၊ တဿ-ထို ပဋိညာယဘိက္ခု၏၊ [သမ္မာဝေါ- ၌စပ်၊] ထွေ-ဤ

မလဇလ္လိကာ။ ။ ဓောဝိတွာ အပနေတုံ အသက္ကုဏေယျသဘာဝံ မလံ = ဖွပ်၍ မရနိုင်လောက်အောင် စွဲသောအညစ်အကြေးကို မလဟု ခေါ်၊ တထာ အပနေတုံ သက္ကုဏေယျသဘာဝါ ဇလ္လိကာ—ဖွပ်၍ရလောက်သော ကြေး (ချေး) ကို ဇလ္လိကာဟု ခေါ်၊ ဇလဿ—ရေအား + အနုရူပံ—လျော်သောကြေးတည်း၊ ဇလ္လံ၊ ဇလ္လံယေ၀ ဇလ္လိကာ။

သမညာယဝေ။ ။ "သမံ—အညီအညွတ် + ဉာယတိ—သိအပ်၏၊ ဣတိ သမညာ" နှင့်အညီ အများသဘောတူ အသိအမှတ်ပြုအပ် ခေါ်ဝေါ်အပ်သောအမည်သည် "သမညာ" မည်၏၊ ထို့ကြောင့် " ပညတ္တိယာ " ဟု ဖွင့်သည်၊ ဤ ပညတ္တိဟူသည် နာမည်ပညတ်ပင်တည်း။ [ ဧဝဖြင့် ဘိက္ခုမည်ဘို့ရန် ကောင်းသောအကြောင်းမှန်ကို ကန့်။]

အရပ်၌၊ ကော-အဘယ်သူနည်း၊ ဣတိ - ဤသို့ မေးအပ်သော်၊ အာဝုသော-ငါ့ရှင်၊ အဟံ-သည်၊ဘိက္ခု-ဘိက္ခုတည်း၊ ဣတိ ဝေမာဒိသု-ဤသို့အစရှိသော ပ ဋိရပ်တို့၌၊ သန္တဝေါ - ဖြစ်သင့်ခြင်းကို၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော-၏၊ ပန-ဆက်၊ အယံ-ဤ အဟံဘိက္ခု ဟု ဝန်ခံခြင်းသည်၊ အာနန္ဒတ္ထေရေန-သည်၊ ဝုတ္တတ္တာ - ပြောဆို အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဓမ္မိကာ—တရားအားလျော်သော၊ (အစစ်အမှန်ဖြစ်သော၊) ပဋိညာ- ဝန်ခံခြင်းတည်း၊ ပန- ဗျတိရိက်ကား၊ ရတ္တိဘာဂေ-၌၊ ဒုဿီလာပိ-တို့သည်လည်း၊ ပဋိပထံ-ရှေးရှုဖြစ်သောခရီးကို၊ ဝါ-ခရီးရင်ဆိုင်၊ အာဂစ္ဆန္တေန-လာသူသည်၊ ဝါ-က၊ကောဧတ္ထာတိ-ဟူ၍၊ ဝါ-ဒီမှာ ဘယ်သူလဲဟူ၍၊ ဝုတ္တေ - ပြောဆို မေးမြန်းအပ်သော်၊ အဓမ္မိကာယ - တရား အား မလျော်သော၊ အဘူတာယ—မဟုတ်မမှန်သော၊ ပဋိညာယ-ဖြင့်၊ မယံ ဘိက္ခူ တိ-ငါတို့ ရဟန်းများ ဖြစ်ကြ၏ ဟူ၍၊ ဝဒန္တိ- ပြောဆို ဝန်ခံကြကုန်၏။

ဟေဘိက္ခူတိ (ဧတ္ထ)-၌၊ ဟေဘိက္ခုနာမ-မည်သည်၊ ဘဂဝတော-၏၊ ဟေဘိက္ခူတိ ဝစနမတ္တေန – ဟေဘိက္ခုဟူသော စကားတော်မျှဖြင့်၊ [မဇ္ဈသဒ္ဒါဖြင့် သရဏဂုမ်, ကမ္မဝါစာကိုကန့်သည်။ ] ဘိက္ခုဘာဝံ - ဘိက္ခုအဖြစ်သို့၊ ဟေဘိက္ခူပသမ္ပဒံ-ဟေဘိက္ခု ပဉ္စင်းအဖြစ်သို့၊[ဘိက္ခုဘာဝံကို ထပ်ဖွင့်သည်၊] ပတ္တော – ရောက်သော ပုဂ္ဂိုလ်တည်း၊ ဟိ - ချဲ့၊ ဘဂဝါ – သည်၊ ဟေဘိက္ခု ဘာဝါယ- ဟေဘိက္ခုအဖြစ် အကျိုးငှါ၊ ဥပနိဿယသမ္ပန္နံ - အားကြီးသော

ဝုတ္တတ္တာ။ ။ " အဟံ အာဝုသော ဘိက္ခု" ဟု ပြခဲ့သောစကားသည် အင်္ဂုတ္တရ, ဒသကနိပါတ,ဥပါလိဝဂ္ဂ, ကောကနုဒသုတ်၌ လာသောစကားတည်း၊ ထိုစကားသည် အရှင်အာနန္ဒာ၏ ပဋိညာဉ်စကား ဖြစ်သောကြောင့် "ဓမ္မိကာ-တရားအားလျော်သော (ပြောသည့်အတိုင်း ဟုတ်မှန်သော) +ပဋိညာဉ်ဖြစ်သည်"ဟူလို။

ပဋိပထံ အာဂစ္ဆန္တေန ။ ။ ယခုစာအုပ်များ၌ ဒုဿီလာပိနှင့် အရတူအောင် "အာဂစ္ဆန္တာ"ဟု ရှိ၏၊ ဝုတ္တေ၌ စပ်ရမည်ဖြစ်သောကြောင့်"အာဂစ္ဆန္တေန"ဟုရှိသင့်သည်၊ မှန်၏— အရှင်အာနန္ဒာ၏ ပဋိညာဉ်စကား၌ ခရီးရင်ဆိုင်လာသူသည် ကောကနုဒ ပရိဗ္ဗိုဇ်တည်း၊ ထို ပရိဗ္ဗိုဇ်ကမေးပုံကို အတုလိုက်၍ ဤ၌လည်း " ပဋိပထံ အာဂစ္ဆန္တေန"ဟု စကားသုံးထားသည်။

ဥပနိဿယ သမ္ပန္နံ။ ။ဟေဘိက္ခုခေါ်ဘို့ရာ "ဥပ-အာကြီးသော + နိဿယ-မှီရာ အကြောင်း " ဟူသည် တခုသောရှေးဘဝ၌ ပရိက္ခရာရှစ်ပ းကို , သို့မဟုတ် သပိတ် သင်္ကန်းမျှကို အရိယာပုဂ္ဂိုလ်အား,သို့မဟုတ် သီလရှိသော ပုထုဇဉ်ပုဂ္ဂိုလ်အား လှူဒါန်း၍"ဣမံ ပရိက္ခာရဒါနံ အနာဂတေ ဟေဘိက္ခုဘာဝါယ ပစ္စယော ဟောတု—ဤပရိက္ခရာ အလှူသည် နောင်အခါ၌ ဟေဘိက္ခု ရဟန်းဖြစ်ရခြင်း၏ အကြောင်းဖြစ်ပါစေ " ဟု ဆုတောင်း ရှိခဲ့ဘူးခြင်းတည်း၊ (သာရတ္ထ ဋီကာ။)

မှီရာအကြောင်းနှင့် ပြည့်စုံသော၊ ပုဂ္ဂလံ- ကို၊ ဒိသွာ-မြင်၍၊ ရတ္တပံသုကူလန္တရ တော-နီမြန်းသော ပံသုကူသင်္ကန်းတော်အကြားမှ၊ သုဝဏ္ဏဝဏ္ဏံ-ရွှေအဆင်း နှင့်တူသော အဆင်းရှိသော၊ ဒက္ခိဏဟတ္ထံ-လက်ျာလက်တော်ကို၊ နီဟရိတွာ- ထုတ်ဖေါ်တော်မူ၍၊ ဗြဟ္မဃောသံ - မြတ်သော အသံတော်ကို၊ [ ဗြဟ္မ ဃောသန္တိ-ဥတ္တမဃောသံ၊ ]ဝါ-ဗြဟ္မာမင်း၏ အသံနှင့်တူသော အသံတော် ကို၊ [ဗြဟ္မုနော ဃောသသဒိသံဝါ ဃောသံ။ ]နိစ္ဆာရေန္တော-မိန့်မြွက်တော် မူလျက်၊ ဧဟိဘိက္ခု , စရဗြဟ္မစရိယံ သမ္မာ ဒုက္ခဿ အန္တကိရိယာယာတိ- ဟူ၍၊ ဝဒတိ-မိန့်တော်မူ၏၊ [ ဘိက္ခု - ဘိက္ခု၊ ဧဟိ - လာလော၊ ဝါ - သင် အလိုရှိသော ရှင်, ရဟန်းအဖြစ်ကို လက်ခံလော၊ ဒုက္ခဿ - တေဘူမက ဝဋ် ဒုက္ခ၏၊ သမ္မာ - ကောင်းစွာ၊ အန္တကိရိယာယ - အဆုံးကို ပြုခြင်းငှါ၊ ဗြဟ္မ စရိယံ- သာသနဗြဟ္မစရိယ, မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယကို၊ စရ-ကျင့်လှည့်လော၊ ]တ ဿ- ထိုပုဂ္ဂိုလ်၏၊ ဘဂဝတော-၏၊ ဝစနေန- တော်နှင့်၊ သဟေဝ- တပြိုင်နက်သာ လျှင်၊ ဂိဟိလိင်္ဂံ - လူ့အသွင်သည်၊ အန္တရဓာယတိ - ကွယ်ပျောက်တော့၏၊ [လူ့အဝတ်နှင့် ဆံ မုတ်ဆိတ်ရှည်များကွယ်ပျော်သွားသည်-ဟူလို၊ ]ပဗ္ဗဇ္ဇာစ- ရှင့်အဖြစ်သည်၎င်း၊ ဥပသမ္ပဒါစ-ရဟန်းအဖြစ်သည်၎င်း၊ ရုဟတိ-တက်ရောက် ၏၊ ဝါ-အထမြောက်၏၊ ဘဏ္ဍု-ဦးပြည်းသည်၊ ဝါ-ခေါင်းတုန်းရိတ်ပြီးသည်၊ ကာသာယဝသနော-ဖန်ရည် ဆိုအပ်သောအင်္ကျီကို ဝတ်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ဧကံ-တထည်သော သင်းပိုင်ကို၊ နိဝါသေတွာ - ၍၊ ဧကံ - တထည်သော ကေသီကို၊ ပါရုပိတွာ - ခြုံ၍၊ ဝါ - ရမ်း၍၊ ဧကံ - တထည်သော သင်္ကန်းကြီး ကို၊ အံသေ-ပခုံးပေါ်၌၊ ထပေတွာ-တင်ထား၍၊ ဝါမံသကူသေ-လက်ဝဲပခုံး စွန်း၌၊ အာသတ္တ နီလုပ္ပလဝဏ္ဏ မတ္တိကာပတ္တော-ပြာကပ်စေအပ် (လွယ်အပ်) သော ကြာညိုအဆင်းရှိသော ၆ မြေသပိတ်ရှိသည်၊(ဟုတွာ-၍၊ တိဋ္ဌတိ-၌စပ်၊)

ရတ္တပံသုကူလန္တရတော။ ။ဤစကားကို ထောက်၍ ဘုရားရှင်သည် ယခုကာလ သင်္ကန်းရမ်းသကဲ့သို့ လက်ကတော့မတင်ဘဲ ခြုံတော်မူထားကြောင်း သိသာ၏၊ မှန်၏- လက်ကတော့ တင်ထားလျှင် သင်္ကန်းတော်အတွင်းမှ လက်တော်ကို ထုတ်ဘွယ်မလို။

ဧဟိဘိက္ခု။ ။"ဧဟိ-လာလော"ဟု ခေါ်တော်မူသဖြင့် "သင်အလိုရှိအပ်သော ရှင်- ရဟန်းအဖြစ်ကို လက်ခံလော" ဟု ခွင့်ပြုရာရောက်သည်၊ ထို့ကြောင့် " ဧဟီတိ အာယာစိတာနံ (လဘေယျာဟံ ဘန္တေ ဘဂဝတော သန္တိကေ ပဗ္ဗဇ္ဇံ, လဘေယျံ ဥပ သမ္ပဒံ-ဟု တောင်းအပ်ကုန်သော ) ပဗ္ဗဇ္ဇုပသမ္ပဒါနံ အနုမတဘာဝပ္ပကာသနဝစနံ၊ တသ္မာ ဧဟိ သမ္ပဋိစ္ဆာဟိ ယထာယာစိတံ ပဗ္ဗဇ္ဇုပသမ္ပဒဝိသေသံတိ အတ္ထော " ဟု မဟာဝဂ္ဂတေရသကဏ် ဖွင့်သည်။ [ဗြဟ္မစရိယန္တိ- သာသနဗြဟ္မစရိယံ မဂ္ဂဗြဟ္မစရိယဉ္စ၊ ဒုက္ခဿ သမ္မာ အန္တကိရိယာယာတိ ယောဇေတဗ္ဗံ။]

တိစီဝရဋ္ဌ-သက်န်း ၃ ထည်သည်ငှင်း၊ ပတ္တောစ-သပိတ်သည်ငှင်း၊ ဂါသိ-ပဲခွပ်သည်ငှင်း၊ ဝါ-ဒန်ပူဖြတ်ကြောင်း ထားငယ်သည်ငှင်း၊ သူစိစ-အပ်သည်ငှင်း၊ ဗန္ဓနံ-ခါးဗန်းကြိုးသည်ငှင်း၊ ပရိဿာဝနေန-ပုဝါရေစစ်နှင့်တကွ၊အဋ္ဌ-န်သော၊ ဧတေ-ဤပရိက္ခရာတို့သည်၊ ယုတ္တယောဂဿ-အားထုတ်အပ်သော ဘာဝနာနုယောဂ ရှိသော၊ ( အားထုတ်အပ်သောဘာဝနာ အားထုတ်မှုရှိသော ) [ ယုတ္တော + ဘာဝနာနုယောဂေါ အဿာတိ ယုတ္တယောဂေါ၊] ဘိက္ခုနော-၏၊ (ပရိက္ခာရာ-တို့တည်း၊) ဇာတိဝေ - သို့၊ ဝုတ္တောဟိ-မိန့်တော်မူအပ်ကုန်သော၊ သရီရေ - ၌၊ ပဋိမုက္ကော်ဟိယေဝ - စွပ်အပ်သည်သာလျှင် ဖြစ်ကုန်သော၊ အဋ္ဌဟိ - န်သော၊ ပရိက္ခာရေဟိ – တို့ဖြင့်၊ [ ဇာတ္တမှုတ လက္ခဏာပုဒ်တည်း၊ တချို့က "ဥပလက္ခိတော" ဟု ထည့်ပေးသည်၊]ဝဿသဋ္ဌိ ကတ္ထေရောဝိယ-ဝါခြောက်ဆယ် ရပြီးသောထေရ်ကဲ့သို့၊ [ဝါခြောက်ဆယ်ရပြီးသော ထေရ်ကြီးသည် ငြိမ်သက်ရကား သဋ္ဌိဝဿိကတ္ထေရောဝိယဖြင့် ငြိမ်သက်သော အမူအရာရှိကြောင်းကို ပုံစံပြသည်၊ ] ဣရိယာပထသမ္ပန္နော-ဣရိယာပုထ်နှင့်ပြည့်စုံသည်၊ ဗုဒ္ဓါစရိယကော-ဘုရားဟူသော ဆရာရှိသည်၊ ဗုဒ္ဓုပဇ္ဈာယကော-ဘုရားဟူသော ဥပဇ္ဈာယ်ရှိသည်၊ (ဟုတ္တာ)၊ [ဘုရားရှင်က သရဏဂုံ ဆရာ ကမ္မဝါစာဆရာ အရာ၌ငှင်း ဥပဇ္ဈာယ်အရာ၌ငှင်း တည်သည်-ဟူလို။] ဝန္ဒမာနောယေဝ-ရှိခိုးလျက်သာလျှင်၊ တိဋ္ဌတိ-တည်၏၊

ဟိ-ချဲ့၊ ဘဂဝါ – သည်၊ ပဌမဗောဓိယံ-ပဌမဗောဓိ၌၊ ဝါ-ဝါတော် ၂၀ အတွင်း၌၊ ကေသ္မိံကာလေ- တခုသော ပဌမကာလ၌၊ ဟေဘိက္ခုပသမ္ပဒါယ ဝေ - ဟေဘိက္ခု ပဉ္စင်းအဖြစ်ဖြင့်သာ၊ ဥပသမ္ပာဒေသိ- မြင့်မြတ်သော ပဉ္စင်း အဖြစ်သို့ ရောက်စေတော်မူပြီ၊ ဧဝံ - သို့၊ ဥပသမ္ပန္နာစ—မြင့်မြတ်သောရဟန်း အဖြစ်သို့ရောက်သော ပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်လည်း၊ သဟဿပရိ-တထောင်၏အထက်၌၊ ကေစတ္တာလီသုတ္တရာနိ – ၄ ကျိပ်တပါး အလွန်ရှိကုန်သော၊ တီဏိဘိက္ခု သတာနိ- ၃ ရာသောရဟန်းတို့သည်၊ အဟေသုံ - နံပြီ၊ သေယျထိဒံ- အဘယ် တို့နည်း၊ ပဥ္စ - န်သော၊ ပဥ္စဝဂ္ဂိယတ္ထေရာ—ပဥ္စဝဂ္ဂိယထေရ်တို့ငှင်း၊ ယသော-မည်သော၊ ကုလပုတ္တော-ငှင်း၊ တဿ-ထို ယသ အမျိုးသား၏၊ ပရိဝါရာ-အခြံအရံဖြစ်ကုန်သော၊ စတုပဏ္ဏာသံ-၅ ကျိပ် ၄ ယောက်သော၊ သဟာယကာ-အဖေါ်တို့ငှင်း၊တိံသ-၃ကျိပ်သော၊ ဘဒ္ဒဝဂ္ဂိယာ-ဘဒ္ဒဝဂ္ဂိယမင်းသားတို့ငှင်း၊ သဟဿံ - သော၊ ပုရာဏဇဋိလာ - ရှေးရသေ့တို့ငှင်း၊ ဒွီဟိ – န်သော၊ အဂ္ဂ သာဝကေဟိ- တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ -တကွ၊ အဍ္ဍတေယျသတာ - အခွဲအားဖြင့် ၃ ရာ အတိုင်းအရှည်ရှိကုန်သော၊ ဝါ–နှစ်ရာ့ငါးဆယ် အတိုင် အရှည်ရှိကုန်သော၊

ပရိဗ္ဗာဇကာ - တို့ငှင်း၊ ကောဟေ-သော၊ အင်္ဂုလိမာလတွေ့ရော- ငှင်း၊ ဣတိ-ဤ ပုဂ္ဂိုလ်တို့တည်း၊ ဟိ-သာစကကား၊ အဋ္ဌကထာယံ-ရှေးအဋ္ဌကထာ၌၊ တိတ္ထိ သတာ၊ပေ၊ဟေိဘိက္ခု ကာတိ-ဟူသော၊တေ-ဤဂါထာစကားကို၊ဝုတ္တံ-ပြီ၊[တိတ္ထိ သတံ - ၃ ရာတို့ငှင်း၊ တိတ္ထိသတန္တိ တိတ္ထိသတာနိ၊ ဂါထာဗန္ဓသုခတ္တံ ဝစန ဝိပလ္လာသော ကတော။ ] သဟဿဥ္စ - ငှင်း၊ စတ္တာလီသံ- ငှင်း၊ ပုန - ဖန်၊ အပရော-အခြားသော၊ ဧကော - တပါးသော၊ သပ္ပညော - ပညာရှိသော၊ ထေရောစ- အင်္ဂုလိမာလထေရ်ငှင်း၊ (ဣတိ-သို့၊) သဗ္ဗေ-န်သော၊ တေ- ဤ ရဟန်းတို့သည်၊ ဟေိဘိက္ခုကာ- ဟေိဘိက္ခုရဟန်းတို့တည်း။

စ-ဆက်၊ ကေဝလံ- သက်သက်၊ တေဝေ- ဤရဟန်းတို့ချည်းသာ၊ (ဟေိ ဘိက္ခုကာ-တို့သည်၊) န- မဟုတ်ကုန်သေး၊ အညေပိ- န်သော၊ ဗဟူ-န်သော၊ (ဟေိဘိက္ခုကာ-တို့သည်၊) သန္တိ-ရှိကုန်သေး၏၊ သေယျထိဒံ-အဘယ်ရဟန်း တို့နည်း၊ တိသတပရိဝါရော - ၃ရာအခြံအရံရှိသော၊ သေလော- မည်သော၊ ဗြာဟ္မဏော- ငှင်း၊ သဟဿပရိဝါရော-သော၊ မဟာကပ္ပိနော- မဟာကပ္ပိန မင်းငှင်း၊ ဒသသဟဿံ- တသောင်းသော၊ ကပိလဝတ္ထုဝါသိနော - ကပိလ ဝတ်၌နေကုန်သော၊ ကုလပုတ္တာ - တို့ငှင်း၊ သောဠသသဟဿာ-တသောင်း ခြောက်ထောင်အတိုင်းအရှည်ရှိကုန်သော၊ ပါရာယနိကဗြာဟ္မဏာ-ပါရာယ နိကပုဏ္ဏားတို့ငှင်း၊ ဣတိဧဝမာဒယော - ဤသို့အစရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်တို့တည်း၊ ပန-ထိုသို့ပင် အခြား ဟေိဘိက္ခုတို့ရှိပါကုန်သော်လည်း၊ တေ- ထိုဟေိဘိက္ခု တို့ကို၊ ဝိနယပိဋကေ- ၌၊ ပါဠိယံ - ၌၊ န နိဒ္ဒိဋ္ဌတ္တာ - မညွှန်ပြအပ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့် (အာစရိယေဟိ-ရှေးအဋ္ဌကထာ ဆရာတို့သည်၊) နဝုတ္တာ-မဆို အပ်ကုန်၊ ဣမေ-ဤ (တထောင့် သုံးရာ လေးကျိပ်တပါးသော) ရဟန်းတို့ကို၊ တတ္ထ-ထိုဝိနည်း ပါဠိတော်၌၊ နိဒ္ဒိဋ္ဌတ္တာ - တိုက်ရိုက်ညွှန်ပြ အပ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ [ ဝိနည်းမဟာဝါ ပါဠိတော်၌ တိုက်ရိုက်လာသည်၏အဖြစ် ကြောင့်၊](အာစရိယေဟိ-တို့သည်၊) ဝုတ္တာ-န်ပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့မှတ်အပ်၏။

သတ္တဝီသသဟဿာနိ- ၂ သောင်း ၇ ထောင်တို့သည်ငှင်း၊ တီဏိယေဝ သတာနိစ-၃ရာသာလျှင်တို့သည်ငှင်း၊ သဗ္ဗေ- ကုန်သော၊ တေပိ- ဤရဟန်း တို့ကိုလည်း၊ [ တေဟိ - ရှိသည်ကား မကောင်း၊ ] သင်္ဂါတာ - ဟေိဘိက္ခု၌ သွင်းယူရေတွက်အပ်ကုန်၏၊ သဗ္ဗေ-န်သော၊ ေ တ-တို့သည်၊ [ ၂ ရပ်ပေါင်း နှစ်သောင်း ရှစ်ထောင် ခြောက်ရာ့ လေးဆယ့် တပါးတို့သည်၊]ဟေိဘိက္ခုကာ- ဟေိဘိ က္ခုရဟန်းတို့တည်း၊ ဣတိ-အပြီးတည်း။[“သဗ္ဗေတေ ဟေိဘိက္ခုကာ” သည် ဟေိဘိက္ခုအားလုံး၏ နိဂုံးတည်း၊]

တီဟိ၊ပေ၊ဥပသမ္ပန္နောတိ-ကား၊ ဗုဒ္ဓံ သရဏံ ဂစ္ဆာမိတိ အာဒိနာ-သော၊ နယေန - ဖြင့်၊ တိက္ခတ္တုံ – ကြိမ်၊ ဝါစံ - စကားလုံးကို၊ ဘိန္ဒိတွာ - ခွဲခြား၍၊ [ စကားလုံး ကွဲကွဲပြားပြား ရွတ်ဆိုခြင်းကို " ဝါစံဘိန္ဒိတွာ " ဟု ဆိုသည်။] ဝုတ္တေဟိ-ဆိုအပ်ကုန်သော၊ တီဟိ-န်သော၊ သရဏဂမနေဟိ-တို့ဖြင့်၊ ဥပသမ္ပန္နော-မြင့်မြတ်သောပဉ္စင်းအဖြစ်သို့ ရောက်သူတည်း၊ ဟိ-ချဲ့၊ အယံ ဥပသမ္ပဒါ နာမ-ဒါမည်သည်၊ ဟေဋ္ဌိဘိက္ခုပသမ္ပဒါ- ဒါငှင်း၊ သရဏဂမနုပသမ္ပဒါ-ငှင်း၊ ပေ၊ ဥ တ္တိစတုတ္ထ ကမ္မုပသမ္ပဒါ-ငှင်း၊ ဣတိ - သို့၊ အဋ္ဌဝိဓာ - ရှိ၏၊ တတ္ထ-ထို ရှစ်ပါးတို့တွင်၊ ဟေဋ္ဌိဘိက္ခုပသမ္ပဒါ-ကိုငှင်း၊ သရဏဂမနုပသမ္ပဒါစ- ကိုငှင်း၊ ဝုတ္တာဝေ-ဆိုအပ်ပြီးသည်သာ။ [ရှေ့၌ ဆိုအပ်ခဲ့သော ၂ မျိုးပင်-ဟူလို။]

ဩဝါဒပ္ပဋိဂ္ဂဟဏုပသမ္ပဒါနာမ-ဒါမည်သည်၊ [မဟာကဿပ ထေရဿ အနုညာတ ဥပသမ္ပဒါ-၌စပ်၊] ကဿပ-ကဿပ၊ (ယသ္မာ-ကြောင့်၊ အဟံ-သည်၊ ဇာနန္တော ဝေ-ကောင်းသိသည်သာလျှင်၊ဟုတွာ-၍၊ ဇာနာမိ-သိ၏၊ ဣတိ စ-ဤသို့ငှင်း၊ ပဿန္တော ဧဝ-ကောင်း မြင်သည်သာလျှင်၊ ဟုတွာ-၍၊ ပဿာမိ-၏၊ ဣတိစ-ငှင်း၊ ဝဒါမိ-မိန့်တော်မူ၏၊) တသ္မာ-ကြောင့်၊ [တိနှင့်ဟ အနက်မရှိ၊] (တနည်း) ဣဟ-ဤ သာသနာတော်၌၊ [တ-အာဂုံ၊] တေ-သည်၊ ဧဝံ-ဤ ဆိုအပ်လတံ့သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ သိက္ခိတဗ္ဗံ – ကျင့်ကြံကြိုးကုတ်

**အယံဟိ ဥပသမ္ပဒါနာမ ။** ။ သရဏဂမနေဟိ ဥပသမ္ပန္နောနှင့်စပ်၍ ဥပသမ္ပဒါ ရှစ်ပါးကို ပြလိုသောကြောင့် " အယံ ဟိ " စသည်မိန့်၊ ထို၏အကျယ်ကား"ဣမာသု အဋ္ဌသု ဥပသမ္ပဒါသု ၊ပေ၊ဥပသမ္ပန္နောတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ " ဟူသော တမျက်နှာကျော် တိုင်အောင်တည်း။

**ဩဝါဒပ္ပဋိဂ္ဂဟဏုပသမ္ပဒါ ။** ။ ဘုရားရှင်ပေးတော် မူအပ်သော ဩဝါဒကို အရှင်မဟာကဿပသည် ခံယူ၏၊ ထိုဩဝါဒ ခံယူခြင်းကြောင့် ခွင့်ပြုတော်မူအပ်သော ဥပသမ္ပဒါသည် ဩဝါဒပ္ပဋိဂ္ဂဟဏုပသမ္ပဒါမည်၏။

**ဩဝါဒ ၃ မျိုး။** ။"တသ္မာတိဟ"စချီသော ဩဝါဒတော်သည် ၃ ချက်ပါ၏၊ ထိုတွင် ပဌမသည် ဟိရိဩတ္တပ္ပကို ကြီးစွာဖြစ်စေဘို့ရန် ဩဝါဒတည်း၊ ဒုတိယမှာ တရား နာရာ၌ စိတ်အားလုံး စိုက်ထားဘို့ရန် ဩဝါဒတည်း၊ တတိယကား သာတသဟဂတ ကာယဂတာသတိ မစွန့်ဘို့ရန် ဩဝါဒဖြစ်သည်။

**တသ္မာတိဟ။** ။ထိုဩဝါဒ ၃ မျိုးတွင် တမျိုးတမျိုး၌ " တသ္မာတိဟ" ဟု စချီ၍ "ဧဝံဟိ တေ ကဿပ သိက္ခိတဗ္ဗံ" ဟူသော နိဂုံးဖြင့် အဆုံးသတ်ထားသည်ကို သတိပြု ပါ၊ တသ္မာတိဟ၌ တိနှင့်ဟကို အနက်မရှိဟု ငှင်း, တ အက္ခရာလာ၍ "ဣဟ – ဣမသ္မိံ သာသနေ"ဟု ငှင်း ၂ နည်းဖွင့်၏၊ တသ္မာ၏ အနိယမကိုလည်း " ယသ္မာ အဟံ ဇာန န္တောဝ ဇာနာမီတိ, ပဿန္တောဝေဝ ပဿာမီတိ ဝဒါမိ"ဟု ထည့်သည်။

အားထုဘ်ရာ၏၊ ဝါ - ရမည်၊ (ကိံ)၊ ထေရေသု— ထေရ်တို့၌ဍင်း၊ နဝေသု-သိတင်းငယ်တို့၌ဍင်း၊ မဇ္ဈိမေသုစ-သိတင်းလတ်တို့၌ဍင်း၊ မေ-၏၊ တိမ္ပံ-ကြီးစွာသော၊ ဟိရောတ္တပ္ပံ-ဟိရီဩတ္တပ္ပသည်၊ ပစ္စုပဋ္ဌိတံ-မချဉ်းကာင်မိကပင် တည်နေသည်၊ ဘဝိဿတိ-တုံ၊ ဣတိ-သို့၊ (သိက္ခိတဗ္ဗံ-ရာ၏၊ ဝါ- ရမည်၊)ကဿပ-ပ၊ ဧဝံဟိ-ဤဆိုအပ်ပြီးသော အခြင်းအရာအားဖြင့်သာ၊ တေ- သည်၊ သိက္ခိတဗ္ဗံ-ရာ၏၊ ဝါ- ရမည်၊ [ ဧဝံဟိ– စသည်ကား ဩဝါဒတပါး၏ နိဂုံးတည်း၊ ]

ကဿပ-ပ၊ (ယသ္မာ- ကြောင့်၊ အဟံ- သည်၊ ဇာနန္တောဝေ- သာလျှင်၊ ဟုတွာ-၍၊ ဇာနာမိ—၏၊ ဣတိစ- ဍင်း၊ ပဿန္တောဝေ-သာလျှင်၊ ဟုတွာ-၍၊ ပဿာမိ-၏၊ဣတိစ-သို့ဍင်း၊ ဝဒါမိ- ၏၊) တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဣဟ- ၌၊ တေ- သည်၊ ဧဝံ-ဖြင့်၊ သိက္ခိတဗ္ဗံ-ရာ၏၊ ဝါ-ရမည်၊ (ကိံ)၊ ယံကိဉ္စိ-အမှတ်မရှိ တစုံတခုသော၊ ကုသလူပသံဟိတံ- အပြစ်ကင်းသော အရာနှင့် ယှဉ်သော၊ ဓမ္မံ–ကို၊ သောဿာမိ—နာအံ့၊ သဗ္ဗံ-သေ . ၊ တံဓမ္မံ-ကို၊ အဋ္ဌိံကတွာ-အလိုရှိသည်ကိုပြု၍၊ ဝါ-လိုလိုချင်ချင်ပြု၍၊ (တနည်း)အဋ္ဌိံကတွာ-မိမိစီးပွားကိုပြု၍၊ ဝါ-

ဧဝံ သိက္ခိတဗ္ဗံစသည်။ ။ ဣဒါနိ ဝုစ္စမာနာကာရေန သိက္ခိတဗ္ဗံ၊ တိဗ္ဗန္တိ ဗဟလံ မဟန္တံ၊ ဟိရောတ္တပ္ပန္တိ ဟိရိစ ဩတ္တပ္ပံစ၊ ပစ္စုပဋ္ဌိတံတိ ဥပဿက်မနတော ပဌမတရမေဝ (ပတိအနက်) ဥပဋ္ဌိတံ၊ ထေရနဝမဇ္ဈိမပုဂ္ဂိုလ်များထံ သွားလိုသောအခါ မသွားမီကပင် ကြီးစွာသော ဟိရီဩတ္တပ္ပထား၍သွားပါ—ဟူလို၊ မိမိက ထိုသို့သွားလျှင် မိမိထံလာသော ထေရစသည်ကလည်း ကြီးစွာ ဟိရီဩတ္တပ္ပထား၍ လာကြမည်ပင်ဖြစ်၏။

မှတ်ချက်။ ။ ဘုရားရှင် ပရိနိဗ္ဗာန် စံတော်မူပြီးသောအခါ ဤ သာသနာတော်ကို ခေါင်းဆောင်ရမည့် အရှင်မဟာကဿပအား ပေးတော်မူအပ်သော ဤ ပဌမဩဝါဒကို စဉ်းစားသင့်၏၊ သေရနဝမဇ္ဈိမတို့ အပေါ်၌ မိမိက လေးစားမှသာ,ထေရနဝမဇ္ဈိမတို့က မိမိကို ပြန်၍ လေးစားပေလိမ့်မည်၊ ဤသို့ လေးစားမှသာ သာသနာတော်ကိုလည်း အစွန့်ရှည်စွာ စောင့်ရှောက်နိုင်ပေလိမ့်မည်၊ ထို့ကြောင့် ဟိရီဩတ္တပ္ပ ကင်း၍ အချင်းချင်း ဂရုမစိုက်မှုသည် သာသနာတော် ပျက်ခြင်း၏ အကြောင်းတရပ် ဟု မှတ်ပါ။

အဋ္ဌိံကတွာ။ ။တေန မမွေန အတ္ထိကံကတွာ၊ အဋ္ဌိံကို "အတ္ထိကံ"ဟု ဖွင့်သဖြင့် " အတ္တော ယဿ အတ္ထီတိ အတ္ထိ"ဟု အဿတ္ထျဗိဂ္ဂဟကို ပြ၏၊ ထွကို ဋ္ဌပြု၊ "ထိုတရားဖြင့် အလိုရှိသူကိုပြု၍"ဟု ေ း၊ "လိုလိုချင်ချင်နှင့် တရားနာပါ" ဟူလို။

တနည်း။ ။တံဝါ မမ္မံ "သေ မယှံ မမ္မော"တိ အတ္ထံကတွာ၊ အဋ္ဌိံကို "အတ္ထံ"ဟု ဖွင့်သဖြင့် "အဋ္ဌိံ"၌ ဓိပစ္စည်း, တနည်း (ဤ) ပစ္စည်းသည် သွတ္ထတည်း ဟု သိစေ၏၊ ဤအဖွင့်ကို ပဋ္ဋိစ္စသမုပ္ပါဒဝိဘင်း မူလဋီကာလည်း ဖွင့်၏၊ " အတ္ထံ ကတွာတိ – ဟိတံ ကတွာ"ဟု အနုဋီကာဖွင့်၏၊ တရားနာသောအခါ ထိုတရားကို "ငါ၏ စီးပွားဘဲ"ဟု သဘောထား၍ လေးလေး စားစားနာပါ—ဟူလို။

မိမိစီးပွားလိုသဘောထား၍၊ မနသိကတွာ – စိတ်၌ထား၍၊ သဗ္ဗစေတသာ–အလုံးစုံ နှလုံးသွင်းကြောင်းစိတ်ဖြင့်၊ ဝါ – အစွမ်းကုန် နှလုံးသွင်းကြောင်း စိတ်ဖြင့်၊ သမန္နာဟရိတွာ-နှလုံးသွင်း၍၊ ဩဟိတသောတော-ထားအပ်သော ပသာဒသောတ, ဉာဏသောတရှိသည်၊ (ဟုတွာ) ဓမ္မံ- ကို၊ သောဿာမိ–နာအံ့၊ ဣတိ-သို့၊ (သိက္ခိတမ္ပိ-၏၊) ကဿပ-ပ၊ ဝေဟိ-သာလျှင်၊ တေ-သည်၊ သိက္ခိတမ္ပိ-၏။ [ဤစကားဖြင့် ဒုတိယဩဝါဒကို ပြတော်မူသည်။]

ကဿပ- ပ၊ ( ယသ္မာ - ကြောင့်၊ အဟံ ဇာနန္တောဝေ ဇာနာမိ ဣတိစ, ပဿန္တောဝေ ပဿာမိ ဣတိစ ဝဒါမိ၊) တသ္မာ– ကြောင့်၊ ဣဟ-၌၊ တေ–သည်၊ သိက္ခိတမ္ပံ၊ (ကိံ)၊ မေ-ငါ၏ (စိတ်ကို)၊ သာတသဟဂတာ - သာယာတတ်သော သုခဝေဒနာနှင့်တကွဖြစ်သော၊ ကာယဂတာသတိစ-ဥဒ္ဓုမာတက ကာယ, အာနာပါနကာယ၌ ဖြစ်သော ပဌမဈာန်သတိသည်လည်း၊ န ဝိဇဟိဿတိ-မစွန့်လတ့ံ၊ [အမြဲသတိထားသည်-ဟူလို၊] ဣတိ(သိက္ခိတမ္ပိ၊)ကဿပ ဧဝံ ဟိ တေ သိက္ခိတမ္ပိ၊ [ ဤစကားဖြင့် တတိယဩဝါဒကို ပြတော်မူသည်၊] ဣတိ- သို့၊ ဣမေဟိ ဩဝါဒေဟိ–ဤဩဝါဒတော် ၃ ရပ်ကို၊ ပဋိဂ္ဂဟဏေန–ခံယူခြင်းကြောင့်၊ မဟာကဿပတ္ထေရဿ-အား၊ အနုညာတဥပသမ္ပဒါ-ခွင့်ပြုတော်မူအပ်သော ပဉ္စင်းအဖြစ်တည်း။ [ ပြခဲ့သော စကားသည် ဩဝါဒပဋိဂ္ဂဟဏ မဟုတ်သေး၊ဩဝါဒသာဖြစ်သေး၏၊ ထို့ကြောင့် ဣမိနာ ဩဝါဒပ္ပဋိဂ္ဂဟဏေန-ဟုမရှိသင့်၊ "ဣမဿ ဩဝါဒဿ ပဋိဂ္ဂဟဏေန" ဟု ရှိမှသင့်သည်၊ နောက်၌လည်း " အင်္ဂဂရုဓမ္မဿ ပဋိဂ္ဂဟဏေန " ဟု လာလတ့ံ၊ ]

**သဗ္ဗစေတသာ။** ။စိတ္တဿ ထောကံပိ ဗဟိဂန္တုံ အဒေန္တော သဗ္ဗေန သမန္နာဟရိတွာ = တရားနာစဉ် စိတ်ကို အပြင်အာရုံသို့ အနည်းငယ်မျှ မထွက်သွားစေဘဲ အစွမ်းကုန်တရားနှလုံးသွင်းကြောင်း စိတ်ဖြင့် နှလုံးသွင်း၍။ [ ဤအဖွင့်ကို ထောက်၍ "သဗ္ဗ" မရှိသင့် ဟုမှတ်။]

**ဩဟိတသောတော။** ။ထပိတသောတော ၊ အဝပုဗ္ဗ ဓာဓာတ် တပစ္စည်းကို "ထပိတ"ဟုဖွင့်သည်၊ ဓမ္မေ နိဟိတသောတော ( ထားအပ်သော သောတရှိသည်၊) ဧဝံ ဟိ တေ သိက္ခိတဗ္ဗံတိ - ဉာဏသောတဉ္စ ပသာဒသောတဉ္စ ဩဒဟိတွာ မယာ ဒေသိတံ ဓမ္မံ သက္ကစ္စမေဝ သုဏိဿာမီတိ ဧဝံ ဟိ တေ သိက္ခိတဗ္ဗံ။

**သာတ၊ ပေ၊ ကာယဂတာသတိ။** ။ အသုဘေသုစေဝ အာနာပါနေစ ပဌမဇ္ဈာနဝသေန သုခသမ္ပယုတ္တာ ကာယဂတာသတိ၊ သာတကို သုခ ဟု ဖွင့်၏၊ ကာယဂတာ၌ ကာယကိုလည်း အသုဘကာယနှင့် အာနာပါနကာယကို ယူစေလိုသည်၊ ထိုကာယကို အာရုံပြု၍ ပဌမဈာန်သုခနှင့် ယှဉ်သောသတိ-ဟူလို။

ပဥ္စာဗျာကရဏုပသမ္ပဒါနာမ– မည်သည်၊ သောပါကဿ– သောပါက သာမဏေအား၊ အနုညာတ ဥပသမ္ပါ-တည်း၊ ကိရ-ချဲ့၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ပုဗ္ဗာရာမေ-ပုဗ္ဗာရုံကျောင်းတိုက်၌၊ အနုစင်္ကမန္တံ- အတုလိုက်၍ စင်္ကြံသွားသော၊ သောပါကသာမဏေရံ -ကို၊ [ပုစ္ဆိ - ၌စပ်၊] သောပါက-က၊ ဥဒ္ဓုမာတက သညာတိဝါ-ဥဒ္ဓုမာတကသညာ ဟူသည်လည်းဖြစ်သော၊ ရူပသညာတိဝါ-သော၊ ဣမေဓမ္မာ - ဤတရားတို့သည်၊ နာနတ္ထာ - အထူးထူးသော အနက်အဓိပ္ပါယ်ရှိကုန်သလော၊နာနာဗျဉ္ဇနာ-အထူးထူးသောသဒ္ဒါရှိကုန်သလော၊ ဥဒါဟု – သို့မဟုတ်၊ ဧကတ္ထာ – တမျိုးတည်းသော အနက်အဓိပ္ပါယ် ရှိကုန်သလော၊ ဗျဉ္ဇနမေဝ-သဒ္ဒါသည်သာ၊ နာနံ - ထူးသလော၊ ဣတိ - သို့၊ ဒသ–န်သော၊ အသုဘနိဿိတေ- အသုဘာ၌မှီကုန်သော၊ ပဉှေ- တို့ကို၊ ပုစ္ဆိ- မူပြီ၊ သော-ထို သောပါကသာမဏေသည်၊ တေ- ထိုပြဿနာတို့ကို၊ ဗျာကာသိ-ဖြေပြီ၊ ဘဂဝါ-သည်၊ တဿ-အား၊ သာဓုကာရံ-သာဓုဟု ပြုအပ်သောအသံကို၊ဝါ-ကောင်းချီးကို၊ ဒတွာ-မူ၍၊ သောပါက-က၊ တွံ-သည်၊ ကတိဝဿော-ဘယ်နှစ်နှစ်ရှိသည်၊ အသိ-နည်း၊ ဣတိ–ဤသို့၊ ပုစ္ဆိ-မေးတော်မူပြီ၊ ဘဂဝါ-မြတ်စွာဘုရား၊ အဟံ-သည်၊ သတ္တဝဿော-၇ နှစ်ရှိသည်၊ (အမှိ-၏၊)ဣတိ-ဤသို့ လျှောက်ပြီ၊ သောပါက-က၊ တွံ-သည်၊ မမ-၏၊ သဗ္ဗညုတညာဏေန-တော်နှင့်၊ သဒ္ဓိံ - ကွ၊ သံသန္ဒိတွာ- နှီးနှောတိုက်ဆိုင်၍၊ ပဉှေ- တို့ကို၊ ဗျာကာသိ-ပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့ မိန့်တော်မူ၍၊ အာရဒ္ဓစိတ္တော-နှစ်သက်စေအပ်သောစိတ်ရှိတော်မူသည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဥပသမ္ပဒံ - ကို၊ အနုဇာနိ - မူပြီ၊ အယံ-ဤ ပဉ္စမံ အဖြစ်သည်၊ ပဥ္စာဗျာကရဏုပ သမ္ပဒါ - မည်၏၊ ဂရုဓမ္မပ္ပဋိဂ္ဂဟဏုပသမ္ပဒါ နာမ- မည်သည်၊ မဟာပဇာပတိယာ - မဟာပဇာပတိ ဂေါတမီအား၊ အဋ္ဌ ဂရုဓမ္မဿ-ရှစ်ပါးသောဂရုဓမ်ကို၊ ပဋိဂ္ဂဟဏေန- လက်ခံခြင်းကြောင့်၊ အနုညာတဥပသမ္ပဒါ- တည်း၊[ဘိက္ခုနောဝါဒဝဂ်နှင့် ဘိက္ခုနီခန္ဓကာ၌လာသည်၊]

ဥဒ္ဓုမာတကသညာ။ ။ဥဒ္ဓုမာတကအလောင်းကို ပဋိဘာဂနိမိတ် ထင်အောင် ရှု၍ ရအပ်သောပဌမဈာန်သည် ဥဒ္ဓုမာတကသညာ မည်၏၊ သညာကို ခေါင်းတပ်၍ ဈာန်တခုလုံးကို ယူစေသည်။

ရူပသညာ။ ။ကသိုဏ်းရုပ်ကို အာရုံပြု၍ ရအပ်သောဈာန်သည် ရူပသညာမည်၏၊ ထို ၂ မျိုးလုံးပင် ရူပဈာန်အဖြစ်ဖြင့် အနက်တူသောကြောင့် ဧကတ္ထဖြစ်ပါ၏၊ သဒ္ဒါအားဖြင့်ကား မတူသောကြောင့် နာနာဗျဉ္ဇန ဖြစ်ပါသည်– ဟု သာမဏေကဖြေသည်၊ [အာရဒ္ဓစိတ္တောတိ အာရာဓိတစိတ္တော – သောပါကသာမဏေသည် နှစ်သက်စေအပ် (ကျေနပ်စေအပ်သော) စိတ်ရှိတော်မူသည်၊ အဘုံးရ ကျေနပ်တော်မူသည်–ဟူလို။]

ဒူတေနုပသမ္ပဒါနာမ - မည်သည်၊ အနုကာသိယာ - အနုကာသိ မည်သော၊ ဂဏိကာယ - ပြည့်တန်ဆာမအား၊ အနုညာတ ဥပသမ္ပဒါ- တည်း။ [စူဠဝါ ဘိက္ခုနီခန္ဓကဌလာသည်။]

အဋ္ဌဝါစိကုပသမ္ပဒါနာမ- မည်သည်၊ ဘိက္ခုနိယာ- ရဟန်းမ၏၊ ဘိက္ခုနိ သံဃတော-မှ၊ ဉတ္တိစတုတ္ထေန-ကံဖြင့်၊ ဘိက္ခုသံဃတော-မှ၊ ဉတ္တိစတုတ္ထေန- ဖြင့်၊ဣတိ-သို့၊ ဒွိဟိ-နှစ်သော၊ဣမေဟိ ကမ္မေဟိ- တို့ဖြင့်၊ ဥပသမ္ပဒါ-ခြင်းတည်း၊ ဉတ္တိစတုတ္ထကမ္မုပသမ္ပဒါနာမ - မည်သည်၊ ဘိက္ခူနံ- တို့၏၊ ဧတရဟိ - ယခု အခါ၌၊ ဥပသမ္ပဒါ- တည်း၊ အဋ္ဌသု-န်သော၊ ဣမာသု ဥပသမ္ပဒါသု- တို့တွင်၊ ယာ အယံ- အကြင်သို့သော ဤဥပသမ္ပဒါကို၊ [အနိယမဖြစ်၍"ယာ"ဟုဖွင့်၊ သရဏဂမနုပသမ္ပဒါခဏ်းဖြစ်၍ နီးသောကြောင့်"အယံ"ဟုဖွင့်ထားသည်၊] အနုဇာနာမိ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ဥပသမ္ပဒန္တိ-ဟူ၍၊ဧဝံ-သို့၊အနုညာတာ-ခွင့်ပြုတော် မူအပ်ပြီ၊ [ ဝိနည်းမဟာဝါ၊ မဟာခန္ဓကဌ သာသနာတည်စတွင် ပဌမ ခွင့်ပြု တော်မူသည်၊ နောက်၌ကား ဤသရဏဂမနုပသမ္ပဒါကို ပယ်တော်မူသည်။] ဣမာယဥပသမ္ပဒါယ-ဖြင့်၊ ဥပသမ္ပန္နော-တည်း၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ။

ဘဒြောတိ-ကား၊ အပါပကော- မကောင်းမှု မရှိသူသည်၊ ဝါ-မယုတ်မာ သူသည်၊ ( ဘိက္ခု—ဘိက္ခုမည်၏၊ ) ဟိ – ချဲ့၊ ကလျာဏပုထုဇ္ဇနာဒယော- ကလျာဏပုထုဇဉ် အစရှိသော ပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ ယာဝ- လောက်၊ အရဟာ- သည်၊ ( အတ္ထိ )၊ တာဝ - ထိုရဟန္တာတိုင်အောင်၊ ဘဒြေန - ကောင်းသော၊ သီလေန-စတုပါရိသုဒ္ဓိသီလနှင့်ဖြင့်၊ သမာဓိနာ-ဝိပဿနာ၏အခြေခံဖြစ်သော သမာဓိနှင့်ဖြင့်၊ ပညာယ-လောကီ လောကုတ္တရာပညာနှင့်ဖြင့်၊[သီလန္တိ-စတု ပါရိသုဒ္ဓိသီလံ၊ သမာဓိတိ – ဝိပဿနာပါဒကာ အဋ္ဌသမာပတ္တိယော၊ ပညာ တိ - လောကိယလောကုတ္တရညာဏံ၊ ] ဝိမုတ္တိယာ - အရဟတ္တဖိုလ်နှင့်ဖြင့်၊

**ဣမာသု၊ပေ၊ဝုတ္တံ ဟောတိ။** ။"တီဟိ သရဏဂမနေဟိ ဥပသမ္ပန္နောတိ"ဟူသော ပါဠိတော်နှင့်စပ်၍ ဥပသမ္ပဒါရှစ်ပါးကို အတ္ထုဒ္ဓါရအဖြစ်ဖြင့် ပြပြီး၍ အလိုရှိအပ်သော ဥပသမ္ပဒါကို (အတ္ထုဒ္ဓေသသဘောအားဖြင့်) ပြလိုသောကြောင့် "ဣမာသု၊ပေ၊ဝုတ္တံ ဟောတိ"ဟု မိန့်သည်၊ ဤကျမ်း"တီဟိသရဏဂမနေဟိ ဥပသမ္ပန္နော"အဖွင့်ပြီးသည်။

**အပါပကော။** ။"ဘဒြော-ကောင်းသူ"ဟူသည်"ယုတ်မာသူ၏ ဆန့်ကျင်ဘက် သူတော်ကောင်း"ဟု သိစေလို၍ "အပါပကော" ဟု မိန့်သည်၊ နတ္ထိ ပါပံ ယဿာတိ အပါပကော၊ ( သမာသန္တ-က ပစ္စည်း၊ ) "ဘဒြေန သီလေန၊ပေ၊သမန္နာဂတတ္တာ" ကား ဘဒြအမည်ရခြင်း၏ အကြောင်းပြတည်း၊ ထို သမန္နာဂတတ္တာကိုကြည့်၍ " ဘဒြံ ယဿာတိ ဘဒြော" ဟု အဿတ္ထိပြုဘွယ်မလို၊ " ဘဒ္ဒတိ သောဘတီတိ ဘဒြော" ဟု သာပြု၊ ဘဒိဓာတ်, ရက်ပစ္စည်း။

ဝိမုတ္တိညာဏဒဿနေနစ-အရဟတ္တဖိုလ်ကို သိမြင်တတ်သော ပစ္စဝေက္ခဏာဉာဏ်နှင့်ရှင်း၊ သမန္နာဂတတ္တာ – ကြောင့်၊ ဘဒြောဘိက္ခုတိ – ဟူ၍၊ သဉ္ဇံ – ခေါ်ဝေါ်အပ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ဂစ္ဆန္တိ-န်၏၊

သာရောတိ- ကား၊ တေဟိယေဝ သီလသာရာဒီဟိ - ထို သီလအနှစ် အစရှိသည်တို့နှင့်ပင်၊ သမန္နာဂတတ္တာ–ကြောင့်၊ နီလသမန္နာဂမေန- အညိုဂုဏ်နှင့် ပြည့်စုံခြင်းကြောင့်၊ နီလောပဋော (တိ) -ဋောဟူ၍၊ ဝါ-အညိုပုဆိုးဟူ၍၊ (ဝေဒိတဗ္ဗော) ဝိယ- ကဲ့သို့၊ (တထာ- တူ၊) သာရောဘိက္ခုတိ- ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော– ၏၊ ဝါ– တနည်း၊ ဝိဂတကိလေသဖေဂ္ဂုဘာဝတော–ကင်းသော ကိလေသာအကာ ရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ (ကိလေသာအကာမှ ကင်းသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊)ခီဏာသဝေါဝ-ရဟန္တာပုဂ္ဂိုလ်ကိုသာ၊ သာရောတိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ သေက္ခောတိ- ကား၊ ပုထုဇ္ဇနကလျာဏကေန- ကလျာဏပုထုဇဉ်ပုဂ္ဂိုလ်နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ သတ္တ, အရိယာ- တို့သည်၊ တိသော, သိက္ခာ- တို့ကို၊ သိက္ခန္တိ-ကျင့်ကုန်ဆဲ၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ သေက္ခာ–ကွတို့မည်၏၊ တေသု- ထို ကလျာဏပုထုဇဉ်နှင့်တကွ ၇ ပါးသော အရိယာပုဂ္ဂိုလ်တို့တွင်၊ ယော ကောစိ-အမှတ်မထား တပါးပါးသောပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ သေက္ခောဘိက္ခုတိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ န သိက္ခတိ–ကျင့်ဆဲမဟုတ်၊ ဣတိ– ကြောင့်၊ အသေက္ခော–

**နီလသမန္နာဂမေန**။ ။ အညိုဂုဏ်နှင့် ပြည့်စုံသောကြောင့် အဝတ်ကိုလည်း ဂုဏပစာရအားဖြင့် "နီလော" ဟု ဆိုရသကဲ့သို့ သီလစသော အနှစ်ဂုဏ်နှင့် ပြည့်စုံသောကြောင့် ဘိက္ခုကိုလည်း "သာရ"ဟု ခေါ်ရသည်– ဟူလို၊ ဤစကားဖြင့် ဂုဏူပစာဟု ပြ၍ "သာရော ယဿ အတ္ထီတိ သာရော"ဟု အဿတ္ထိပြုဘွယ်မလို-ဟု ပြသည်။

**ပုထုဇ္ဇနကလျာဏကေန**။ ။ယောပိ ကလျာဏပုထုဇ္ဇနော အနုလောမပဋိပဒါယ (လောကုတ္တရာအားလျော်သော ဝိပဿနာအကျင့်၌) ပရိပူရကာရီ သီလသမ္ပန္နော ဣန္ဒြိယေသု ဂုတ္တဒွါရော ဘောဇနေ မတ္တညူ ဇာဂရိယာနုယောဂမနုယုတ္တော ပုဗ္ဗရတ္တာပရရတ္တံ ဗောဓိပက္ခိယဓမ္မာနံ ဘာဝနာနုယောဂ မနုယုတ္တော ဝိဟရတိ၊ အဇ္ဇဝါ သွေဝါ အညတရံ သာမညဖလံ အဓိဂမိဿာမီတိ၊ သောပိ ဝုစ္စတိ သိက္ခတီတိ သေက္ခောတိ အာဟ–ပုထုဇ္ဇနကလျာဏကေန သဒ္ဓိံတိ။ [ဝိပဿနာအားထုတ်မှုစသောအကျင့်နှင့်ပြည့်စုံသော ကလျာဏပုထုဇဉ်လည်း သေက္ခပုဂ္ဂိုလ်တွင် ပါဝင်နိုင်သည်-ဟူလို။]

**န သိက္ခတီတိ**။ ။ကျင့်ခြင်းကိစ္စ မပြီးသေးသော မဂ္ဂဋ္ဌ– ဖလဋ္ဌ ပုဂ္ဂိုလ်များကိုသာ "သိက္ခန္တီတိ" ဟူသော ဝစနတ္ထကြောင့် "သေက္ခ"ဟု ဆိုရသည်၊ အထက်၌ ကျင့်ဘွယ်ကိစ္စမရှိ,ကျင့်ခြင်းကိစ္စပြီးစီးပြီးသောကြောင့် ရဟန္တာကို"န သိက္ခတိ-သေက္ခပုဂ္ဂိုလ်များကဲ့သို ကျင့်ဆဲမဟုတ်"ဟု ဆိုရသည်၊"ယတ္ထ အာသက်ာ, တတ္ထ ပဋိသေဓော ကာတဗ္ဗော" ဟူသော ပရိဘာသာနှင့်အညီ "ကျင့်ဆဲလေလား "ဟု ယုံမှားဘွယ်

မည်၏၊ သေက္ခဓမ္မေ—ကျင့်ထိုက်သောတရားတို့ကို၊ အတိက္ကမ္မ-လွန်မြောက်၍၊ အဂ္ဂဖလေ- အရဟတ္တဖိုလ်၌၊ ဌိတော – တည်သော၊ တတော- ထို အရဟတ္တဖိုလ်ထက်၊ ဥတ္တရိ- အလွန်၊ သိက္ခိတဗ္ဗာဘာဝတော-ကျင့်ထိုက်သော တရား၏ မရှိတော့ခြင်းကြောင့်၊ ခီဏာသဝေါ- ကို၊ အသေက္ခောတိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏။

သမဂ္ဂေန သံဃေနာတိ-ကား၊ သဗ္ဗန္တိမေန- အလုံးစုံသော အပိုင်းအခြားတို့၏ အဆုံး၌ဖြစ်သော၊ပရိယာယေန-အပိုင်းအခြားဖြင့်၊ ပဉ္စဝဂ္ဂ ကရဏီယေ- ပဉ္စဝဂ္ဂသံဃာသည် ပြုထိုက်သော၊ ကမ္မေ-၌၊ ယာဝတိကာ-အကြင်မျှလောက် အနည်းဆုံး ၅ ပါး အတိုင်းအရှည်ရှိကုန်သော၊ ဘိက္ခူ – ပကတတ်ရဟန်းတို့သည်၊ ကမ္မပ္ပတ္တာ-ကံသို့ရောက်ကုန်၏၊ ဝါ-ကံအားလျော်ပတ်ကုန်၏၊ တေသံ-ထို အနည်းဆုံး ၅ ပါးသော ရဟန်းတို့၏၊ အာဂတတ္တာ-လာကုန်ပြီး၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ဆန္ဒာရဟာနံ – ဆန္ဒထိုက်သော အခြားရဟန်းတို့၏၊ [ ၅ပါးမှ အခြားရဟန်း-ဟူလို၊] ဆန္ဒဿ-၏၊ ဝါ-ကို၊ အာဟဋတ္တာ-ဆောင်အပ်ပြီး၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ သမ္မုခီဘူတာနံ-မျက်မှောက်ဖြစ်၍ဖြစ်သော ရဟန်းတို့၏၊ အပ္ပဋိက္ကောသနတော စ – မတားမြစ်ခြင်းကြောင့်၎င်း၊ တေသံ ကမ္မေ- ၌ပဉ္စဝဂ္ဂကရဏီယကံ၌၊ သမဂ္ဂဘာဝံ – ညီညွတ်သည်၏ အဖြစ်သို့၊ ဥပဂတေန—

ရှိသောရဟန္တာ၌သာ“န သိက္ခတိ”ဟု ပဋိသေဓပြုရသောကြောင့် ထိုကဲ့သို့ ယုံမှားဘွယ် မရှိသော လောကီတရား နိဗ္ဗာန်တရားတို့သည်“အသေက္ခ” အမည်မရထိုက်တော့ချေ။

**ဋီကာတနည်း**။ ။“ဝုဒ္ဓိပတ္တသိက္ခောဝါ အသေက္ခော”ဟု ဋီကာ၌ အဋ္ဌကထာမှ တနည်းဖွင့်သေး၏၊ ဤအလို (အ) သည် ဝုဒ္ဓိအနက်ဟော—ဟု မှတ်၊ “အသေက္ခော— အကြီးဆုံး သိက္ခာရှိသူ ” ဟူလို၊ သို့ဖြစ်လျှင် သေက္ခတို့တွင် အကြီးဆုံး အရဟတ္တမဂ္ဂဋ္ဌပုဂ္ဂိုလ်ကို“အသေက္ခ”ဟု ခေါ်သင့်ရာရောက်၏၊သို့သော်—တံသဒိသေသု တဗ္ဗောဟာရတော—ထိုအရဟတ္တမဂ်နှင့် တူသော ဖိုလ်တရား၌“အသေက္ခ”အမည်ကို (သဒိသူပစာရအားဖြင့် ) တင်စားခြင်းကြောင့် အရဟတ္တဖိုလ်သည် အသေက္ခ ( အကြီးဆုံး သေက္ခ) ဟု နာမည်ရ၍ ထိုဖိုလ်၌တည်သော ရဟန္တာလည်း ထိုအသေက္ခတရားရှိသောကြောင့် အသေက္ခပုဂ္ဂိုလ် အမည်ရသည်။

**သဗ္ဗန္တိမေန ပရိယာယေန**။ ။ပရိယာယေနကို “ ပရိစ္ဆေဒေန ” ဟု ဖွင့်၏၊ ဥပသမ္ပဒါကံကို မဇ္ဈိမဒေသ၌ ၁၀ ပါးမှအထက်ဖြစ်သောသံဃာ,ပစ္စန္တရာဇ်ဝယ် ၅ ပါးမှ အထက်ဖြစ်သောသံဃာသည် ပြုထိုက်၏၊ ထို့ကြောင့် ဥပသမ္ပဒါကံကို “ အနည်းဆုံး ပဉ္စဝဂ္ဂကရဏီယကံ ”ဟု ဆိုသည်။

**တေသံ ကမ္မေ**။ ။“ကေသံ”ဟု မရှိရ၊ ပြခဲ့သော “ပဉ္စဝဂ္ဂကရဏီယေကမ္မေ” ကို ပြန်၍ ညွှန်းသောကြောင့်“တေသံ” ဟု ရှိသင့်သည်။ [“သမဂ္ဂဘာဝံ ဥပဂတေန” သည် သမဂ္ဂေနသံဃေန၏ လိုရင်းအဖွင့်၊ ထို သံဃေနကို ကာတဗ္ဗေန ၌ စပ်။]

ကပ်ရောက်သော၊(သံဃေန-သည်၊)ဥတ္တိစတုတ္ထေနာတိ-ကား၊ တီဟိ-၃ကြိမ် ကုန်သော၊ အနုဿာဝနာဟိ- ကမ္မဝါစာတို့ဖြင့်၎င်း၊ ကောပ- သော၊ ဥတ္တိ ယာစ- ဖြင့်၎င်း၊ ကာတဗ္ဗေန- ပြုထိုက်သော၊ ကမ္မေနာတိ - ကား၊ ဓမ္မိကေန- တရားအားလျော်သော၊ ဝိနယကမ္မေန- ဝိနည်းကံဖြင့်၊ အကုပ္ပေနာတိ- ကား၊

ဉတ္တိ စတုတ္ထေန။ ။"ဉတ်လျှင် ၄ ကြိမ်မြောက်ရှိ" ဟူသောစကားကို စဉ်းစား လျှင် ကမ္မဝါစာ ၃ ကြိမ်က အလျှင်ကျ၍, ဉတ်က နောက်ကျသည်– ဟု ထင်စရာရှိ၏၊ တကယ်ရွတ်ဖတ်သောအခါ ကမ္မဝါစာ ၃ ကြိမ်ကနောက်,ဉတ်ကအလျှင် ရွတ်ရသည်၊ သို့သော် ကမ္မဝါစာ ၃ ကြိမ်က သဘောတူဖြစ်၍ , သဘောကွဲသောဉတ်ကို ၄ ကြိမ် မြောက်ဟု မိန့်တော်မူသည်၊ အဋ္ဌကထာ၌လည်း ရွတ်စဉ်ကိုမလိုက်ဘဲ "ဉတ္တိစတုတ္ထ" ဟူသော သဒ္ဒါနေကိုလိုက်၍"တီဟိ အနုဿာဝနာဟိ ကောပဉတ္တိယာ" ဟု ဉတ်ကို နောက်ထား၍ဖွင့်သည်။ [ " ဉတ္တိ + စတုတ္ထာ ယဿာတိ ဉတ္တိစတုတ္ထံ (အနုဿာ ဝနံ)၊ ထို့နောင် "ကာတဗ္ဗေန"ကိုကြည့်၍ "ဉတ္တိစတုတ္ထေန+ကာတဗ္ဗံ ဉတ္တိစတုတ္ထံ" ဟု ကာတဗ္ဗ (ကတ) တဒ္ဓိတ်ဆင့်ပါ။]

ဓမ္မိကေန ဝိနယကမ္မေန။ ။ ဓမ္မဿ + အနုရူပံ ဓမ္မိကံ၊ "ဓမ္မ" ဟူသည် ဝိနည်း ပါဠိတော် ဓမ္မတည်း၊ ဝိနည်းမဟာဝါ ပါဠိတော်၌ ဥပသမ္ပဒါကံပြုသောအခါ "ပဌမံ ဥပဇ္ဈံ ဂါဟာပေတဗ္ဗော " စချီ၍ ပဌမဉပဇ္ဈာယ် ယူစေရခြင်း, သပိတ် သင်္ကန်း ပြောပြ ရခြင်း, ရဟန်းလောင်းကို သံဃာဟတ္ထပါသ်မှ အပြင်ထုတ်၍ အနုသာသကသမ္မုတိ ပြုရ ခြင်း , ထို သမ္မုတိရသူက အနုသာသနပြုရခြင်း , အနုသာသနပြုပြီးနောက် ရှေးဉုးစွာ ပြန်လာ၍ သံဃာကို အနုသာသန ပြုပြီးကြောင်း အသိပေးပြီးမှ ရဟန်းလောင်းကို သံဃာဟတ္ထပါသ်သို့ ခေါ်ရခြင်း,ရဟန်းပြုပေးဘို့ရန် ရဟန်းလောင်းကို ခွင့်တောင်းစေရ ခြင်း , အန္တရာယိကသမ္မုတိ ပြုရခြင်း , သမ္မုတိရသူက စစ်ဆေးမေးမြန်းရခြင်း , ဉတ် ကမ္မဝါစာရွတ်ဘတ်ရခြင်း, ဩဝါဒပေးရခြင်းဟူသော အလုပ်အစီအစဉ်များကို ပြထား တော်မူ၏၊ ထိုအတိုင်း ပြုလုပ်အပ်သောကံကို "ဓမ္မိက ဝိနယကံ" ဟု ခေါ်သည်။

မှတ်ချက်။ ။ဤအဖွင့်ကိုထောက်၍ ဉတ္တိစတုတ္ထ ကမ္မဝါစာကိုသာ "ဥပသမ္ပဒါကံ" ခေါ်သည်မဟုတ်၊ ပြုအပ်ပြီးသော ကိစ္စအားလုံးကိုမှ " ဥပသမ္ပဒါကံ" ဟု ခေါ်သည်၊ ထို့ကြောင့်"ဉတ္တိစတုတ္ထေန–ဉတ္တိစတုတ္ထ ကမ္မဝါစာဖြင့်ပြုအပ်သော၊ကမ္မေန - တရား အားလျော်သော ဝိနည်းကံဖြင့်"ဟု အနက်ပေးရမည်–ဟု မှတ်။

အကုပ္ပေန။ ။"အကောပေတဗ္ဗတံ" ဟုကာရိတ်နှင့်တကွ တဗ္ဗပစ္စည်းကိုကြည့်၍ " ကောပိယတေတိ – ပျက်စီးစေအပ် ( ဖျက်ဆီးအပ် ) ၏၊ ဣတိ ကုပ္ပံ၊ န + ကုပ္ပံ အကုပ္ပံ" ဟု ပြု၊ "ဖျက်ဆီး" ဟူရာ၌ " တစုံတခုဖြင့် ဖျက်ဆီးခြင်း မဟုတ် , တားမြစ် ကန့်ကွက်ခြင်းတည်း"ဟု သိစေလို၍"အပ္ပဋိက္ကောသိတဗ္ဗတံ"ဟု အဓိပ္ပါယ်ထုတ်ဖွင့်သည်၊ ထို့ကြောင့် "တဗ္ဗတံစ"ဟု (စ) ပါဘွယ်မလို၊ ဋီကာ (နောက်နာ) ၌လည်း (စ) မပါ၊ ထို အကုပ္ပဖြစ်ခြင်း၏ အင်္ဂါကိုပြလို၍ "ဝတ္ထု၊ပေ၊သမ္ပန္နတ္တာ"ဟု ထည့်၍ဖွင့်သည်။

ဝတ္ထု ဥတ္တိ၊ပေ၊သမ္မုတ္တိသမ္ပန္နတ္တာ-ဝတ္ထုသမ္မုတ္တိ,ဥတ္တိသမ္ပတ္တိ, အနုဿာဝန သမ္မုတ္တိ , သီမာသမ္မုတ္တိ , ပရိသာသမ္မုတ္တိတို့နှင့် ပြည့်စုံသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အကောပေတဗ္ဗတံ- မပျက်စီးစေထိုက်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ဝါ- မဖျက်ဆီ ထိုက်သည်၏အဖြစ်သို့၊ အပ္ပဋိက္ကောသိတဗ္ဗတံ - မတားမြစ်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်သို့၊ ဥပဂစ္ဆေတေန- ကပ်ရောက်သော၊ [ကမ္မေန-၌စပ်၊] ဌာနာရဟေနာတိ- က^း၊ ကာရဏာရဟေန – ဥပသမ္ပဒါကံ၏ အကြောင်းဖြစ်သော ဥတ္တိစတုတ္ထကမ္မ

**ဝတ္ထုသမ္မုတ္တိ**။ ။ရဟန်းလောင်းကို (ဥပသမ္ပဒါကံ၏ တည်ရာဖြစ်သောကြောင့်) ဝတ္ထုဟု ခေါ်၏၊ ထိုဝတ္ထုသည် အသက် ၂၀ မပြည့်လျှင်၎င်း , ပါရာဇိကကျဘူးလျှင်၎င်း, ပဏ္ဍုက်စသော အဘဗ္ဗပုဂ္ဂိုလ် တယောက်ယောက် ဖြစ်လျှင်၎င်း သမ္မုတ္တိမဖြစ်၊ ပါရာဇိကကျသူ စသည်မဟုတ်ဘဲ အသက် ၂၀ ပြည့်သူဖြစ်မှ ဝတ္ထုသမ္မုတ္တိဖြစ်သည်။

**ဉတ္တိ, အနုဿာဝန** ။ ။ ဉတ်ကမ္မဝါစာကို ပါဠိတော်မှာ လာသည့်အတိုင်း အပြည့်အစုံ မရွတ်လျှင် သမ္မုတ္တိမဖြစ်၊ ပါဠိတော်လာသည့်အတိုင်း ရွတ်မှ ဉတ္တိသမ္မုတ္တိ, အနုဿာဝနသမ္မုတ္တိဖြစ်သည်။

**သီမာ, ပရိသာ**။ ။ရဟန်းခံရာသိမ်သည် ဝိပတ္တိသိမ်ပျက်တွင် ပါဝင်နေလျှင် သမ္မုတ္တိမဖြစ်၊ သိမ်အစစ်ဖြစ်မှ သီမာသမ္မုတ္တိဖြစ်သည်၊ ရဟန်းပရိသတ်လည်း ပါရာဇိကမကျဘူးသော ရဟန်းစစ်စစ် ငါးပါး (မဇ္ဈိမဒေသ၌ ၁၀ ပါး) ရှိ၍ ဆန္ဒဆောင်ထိုက်သူတို့၏ ဆန္ဒကို ဆောင်ယူပြီးလျှင် မကန့်ကွက် မတားမြစ်မှ ပရိသာသမ္မုတ္တိဖြစ်သည်။

**ကာရဏာရဟေန**။ ။ဌာနကို"ကာရဏ"ဟု ဖွင့်သဖြင့်"ဌာနသဒ္ဒါသည်(ဣဿရိယစသော အနက်တို့တွင်) ကာရဏအနက်ဟောတည်း " ဟု သိစေ၏၊ ထို ဌာန (ကာရဏ) ဟူသည် ဉတ္တိစတုတ္ထကမ္မဝါစာတည်း၊ မှန်၏ – ထို ကမ္မဝါစာသည် ဥပသမ္ပဒါကံဟူသော အကျိုး၏တည်ရာအကြောင်းတရပ် ဖြစ်၏၊ ထို ကမ္မဝါစာ မပါလျှင် မည်သည့် နည်းနှင့်မျှ ဥပသမ္ပဒါကံ အထမမြောက်နိုင်။ [ တိဋ္ဌတိ ဖလံ ဧတ္ထာတိ ဌာနံ၊ ဧတ္ထ-၌ ဉတ္တိစတုတ္ထ ကမ္မဝါစာ၌၊ ဖလံ-ဥပသမ္ပဒါကံ ဟူသောအကျိုးသည်၊ တိဋ္ဌတိ-တည်၏၊ ဣတိ, တံ-ထို ဉတ္တိစတုတ္ထ ကမ္မဝါစာသည်၊ ဌာနံ—မည်၏။]

**ဌာနာရဟ**။ ။"ဌာနာရဟ"ဟူသည် ဝတ္ထု၏ မပြည့်စုံခြင်းစသော အပြစ်တို့မှ လွတ်သော ဥပသမ္ပဒါကံတည်း၊ ထင်ရှားစေအံ့—ဌာနာရဟေနသည် ကမ္မေန၏ ဝိသေသနတည်း၊ ဥပစ္စာယ်ယူမှုမှစ၍ ကမ္မဝါစာဆုံးသည့်တိုင်အောင် ကိစ္စကို ကမ္မ (ဥပသမ္ပဒါကံ = ရဟန်းခံကိစ္စ )ဟု ခေါ်၏၊ ထိုကံသည် ရဟန်းလောင်းဟူသော ပြည့်စုံသော ဝတ္ထု, ပြည့်စုံသောသံဃာ , မပျက်သောသိမ် ဟူသောအပြစ်တို့မှ ကင်းလွတ်မှသာ ထို ဉတ်ကမ္မဝါစာကိုရွတ်ဆိုခြင်းငှါ ထိုက်၏၊ဝတ္ထုစသည်တို့က အပြစ်မလွတ်လျှင် ရွတ်ဆိုခြင်းငှါမထိုက်၊ ထို့ကြောင့် ဝတ္ထုဒေါသ စသည်တို့မှ ကင်းလွတ်သော ဥပသမ္ပဒါကံကို ဌာနာရဟခေါ်သည်ဟု မှတ်။ [ဌာနသ—ဉတ္တိစတုတ္ထကမ္မဝါစာဟူသော အကြောင်းအား+ အရဟံ-ထိုက်တန်သော ဥပသမ္ပဒါကံတည်း၊ ဌာနာရဟံ—ကံ။]

ဝါစာအားထိုက်တန်သော၊ သတ္ထုသာသနာရဟေန- ဘုရားအဆုံးအမတော်ဖြစ်သော ဉတ္တိစတုတ္ထကမ္မဝါစာအားထိုက်တန်သော၊ (ကမ္မေန- တရားအားလျော်သော ဝိနည်းကံဖြင့်၊ ) ဥပသမ္ပန္နော နာမ – ဥပသမ္ပန္န မည်သည်ကား၊

**ဝိမတိ။** ။ ဉတ္တိစတုတ္ထာ ကမ္မဝါစာ ဥပသမ္ပဒါကမ္မဿ ကာရဏတ္တာ ဌာနံ၊ တဿ ဌာနဿ အရဟံ အနုစ္ဆဝိကန္တိ ဝတ္ထုဒေါသာဒိဝိနိမုတ္တကမ္မံ ဌာနာရဟန္တိ ဝုတ္တံ၊ ဝတ္ထာဒိဒေါသယုတ္တဿ ကမ္မဿ သဘာဝတော ကမ္မဝါစာရဟတ္တာဘာဝါ = ဝတ္ထုဒေါသစသည်နှင့် ယှဉ်သော ဥပသမ္ပဒါကံ၏ သဘောအားဖြင့်(ဝိနည်းထုံးစံအားဖြင့်) ကမ္မဝါစာကို ထိုက်တန်သောသဘော၏ မရှိခြင်းကြောင့်တည်း။

**သတ္ထုသာသနာရဟေန။** ။ကာရဏကို "သတ္ထုသာသန "ဟု ဖွင့်သည်၊ ဌာနအတွက် ပြခဲ့သောဉတ္တိစတုတ္ထဥပသမ္ပဒါကမ္မဝါစာကိုပင် ဘုရားရှင်၏ အဆုံးအမတော်အတိုင်း ရွတ်ရသောကြောင့် "သတ္ထုသာသန"ဟု ဆိုသည်၊ ထို ကမ္မဝါစာကို ရွတ်ရာ၌ ဉတ်ကိုအလျင် , ကမ္မဝါစာ ၃ ကြိမ်ကို နောက်မှ ရွတ်ရမည်ဟု ၎င်း , ရဟန်းလောင်းဟူသောဝတ္ထု , ကာရကသံဃာဟူသော ပရိသတ် , ဥပဇ္ဈာယ်ဟူသော ပုဂ္ဂိုလ်များကို ("သံဃော, နာဂံ, အာယသ္မတာ တိဿေန ဥပဇ္ဈာယေန" စသည်ဖြင့်) ပါစေရမည်ဟု ၎င်း, ဌာန် ကရိုဏ်း ပီသစေရမည်ဟု ၎င်း (ပရိဝါကမ္မဝဂ် စသည်၌) ဘုရား ဆုံးမတော်မူထား၏၊ ထို ဆုံးမအပ်တိုင်းသောဉတ် ကမ္မဝါစာအား ထိုက်တန်သော ကံကို "သတ္ထုသာသနာရဟ"ဟု ဆိုသည်။ [ယထာ ကာတဗ္ဗန္တိ ဟိ ဘဂဝတာ ဝုတ္တံ၊ တထာ အကတံ ( ထို အမိန့်တော်အတိုင်း မပြုအပ်သော ဉတ် ကမ္မဝါစာသည် ) ဥပသမ္ပဒါကမ္မဿ ကာရဏံ န ဟောတီတိ န တံ (ထိုဥပသမ္ပဒါကံသည်) ဌာနာရဟံ၊ တေနာဟ- ကာရဏာရဟေန သတ္ထုသာသနာရဟေနာတိ၊– သာရတ္ထ။]

**မှတ်ချက် ။** ။ သာရတ္ထ အလိုအားဖြင့် ဌာနာရဟ၌ ဌာနအရ ဘုရား အဆုံးအမတော်အတိုင်း ရွတ်ရသော ဉတ် ကမ္မဝါစာကို အရကောက်သောကြောင့် ပါဠိတော်ဝယ် "ဌာနာရဟေန"ဟူသောပါဌ်ဖြင့် ဉတ္တိသမ္ပတ္တိနှင့် အနုဿာဝနသမ္ပတ္တိ ၂ မျိုးကို ပြ၏–ဟု သိစေ၏၊ "သမဂ္ဂေန သံဃေန"ဖြင့် ညီညွတ်သောသံဃာဟု ဆိုသောကြောင့် ပရိသာသမ္ပတ္တိကို ပြ၏၊ အကုပ္ပေန ပါဌ်ဖြင့်ကား (ကျန်သမျှကို သိမ်းယူရသော ပါရိသေသနည်းဖြင့်) ဝတ္ထုသမ္ပတ္တိ, သီမာသမ္ပတ္တိကို ပြ၏၊ ဤသို့ အသီးသီး ပြသော်လည်း အဋ္ဌကထာ၌မူ အကုပ္ပလက္ခဏာ ( မဖျက်အပ်သော ကံ၏ အထိမ်းအမှတ်အင်္ဂါ ) ကို တခနရာထည်း၌ပေါင်း၍ ပြလိုသောကြောင့် "အကုပ္ပေန" အရ၌ သမ္ပတ္တိ ၅ မျိုးလုံးကို ပြထားလေသည်-ဟု သာရတ္ထ၌ မှတ်ချက် ပြထားသည်။

**တနည်း ။** ။ဝိမတိ၌ ဌာန- သတ္ထုသာသနတို့အရ နိဗ္ဗာန်ရောက်ခြင်း၏ တည်ရာအကြောင်းဖြစ်သော သိက္ခာ၃ဖြာ သာသနာတော်ကို ကောက်ယူ၍ ထိုသာသနာတော်အား လျောက်ပတ်အောင် အစီအစဉ် ကျကျနန ပြုအပ်သော ဥပသမ္ပဒါကံကို " ဌာနာရဟ " ဟု တနည်းကြံသေး၏။ [ အထဝါ– ဌာနန္တိ နိဗ္ဗာနပတ္တိဟေတုတော သိက္ခာတ္တယသင်္ဂဟံ သာသနံ ဝုစ္စတိ၊ တဿ အနုစ္ဆဝိကံ ကမ္မံ ဌာနာရဟံ။]

ဥပရိဘာဝံ – အထက်တန်း၏ အဖြစ်သို့၊ သမာပန္နော ပတ္တော – ရောက်သူတည်း၊ ဇုတိ အစ္စော- နက်၊ ဟိ- မှန်၊ ဘိက္ခုဘာဝေါ - ရဟန်းအဖြစ်သည်၊ ဥပရိဘာဝေါ- အထက်တန်း၏အဖြစ်တည်း၊ ဝါ- မြင့်မြတ်သူ၏အဖြစ်တည်း၊ တဥ္စ -ထို မြင့်မြတ်သူ၏အဖြစ်သို့လည်း၊ သေ - ဤပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ ယထာဝုတ္တေန-အကြောင်း အကြောင်း ဆိုအပ်ပြီးသော၊ ကမ္မေန – ဝိနည်းကံဖြင့်၊ သမာပန္နတ္တာ–ရောက်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဥပသမ္ပန္နောတိ - ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ–၏။

စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ-ဤ ပဌမပါရာဇိက သိက္ခာပုဒ်၏ ပဒဘာဇနီ၌၊ ဉတ္တိစတုတ္ထကမ္မံ – ဉတ္တိစတုတ္ထကံဟူသော၊ ကေမဝ – ကံတမျိုးတည်းသာ၊ အာဂတံ–လာ၏၊ ပန – ထိုသို့ပင် ဉတ္တိစတုတ္ထကံ တမျိုးတည်းသာ လာပါသော်လည်း၊ ဇုမသ္မိံ ဌာနေ ဌတ္ဝာ စတ္တာရိ သံဃကမ္မာနိ နီဟရိတ္ဝာ ဝိတ္ထာရတော ကထေတဗ္ဗာနီတိ = ဤနေရာ၌ တန့်ရပ်၍ ၄ ပါးသော သံဃကံတို့ကို ထုတ်ဆောင်၍ အကျယ် ဆိုထိုက်ကုန်၏ဟူ၍၊ သဗ္ဗ အဋ္ဌကထာသု – အလုံးစုံသော ရှေး အဋ္ဌကထာတို့၌၊ (အာစရိယေဟိ - ရှေး အဋ္ဌကထာဆရာတို့သည်၊) ဝုတ္တံ– ပြီ၊ စ–ဆက်၊ တာနိ- ထိုကံတို့ကို၊ အပလောကနကမ္မံ–အပလောကနကံငှင်း၊ ဉတ္တိကမ္မံ-ငှင်း၊ ဉတ္တိဒုတိယကမ္မံ- ငှင်း၊ ဉတ္တိစတုတ္ထကမ္မံ- ငှင်း၊ ဇုတိ-သို့၊ ပဋိပါဋိယာ-အစဉ်အားဖြင့်၊ ထပေတွာ- ၍၊ (မာတိကာစဉ်၍- ဟူလို၊) ဝိတ္ထာရေန-အားဖြင့်၊ ခန္ဓကတော - မဟာဝါ , စူဠဝါခန္ဓကမှငှင်း၊ ပရိဝါရာဝသာနေ-ပရိဝါ၏အဆုံး၌၊ ကမ္မဝိဘင်တော စ- ကမ္မဝိဘင်းမှငှင်း၊ ပါဠိံ-ပါဠိတော်ကို၊ အာဟရိတွာ-၍၊(အာစရိယေဟိ-တို့သည်၊)ကထိတာနိ-ဆိုအပ်ကုန်ပြီ၊ တာနိ-

**ဥပရိဘာဝံ၊ပေ၊ပတ္တော။** ။ဥပသမ္ပန္နော၌ ဥပကို“ဥပရိဘာဝံ”ဟုငှင်း,သမ္ပန္နောကို“သမာပန္နော”ဟုငှင်းဖွင့်သည်၊ “ပတ္တော”ကား သမာပန္နော၌ သံ+အာဥပသာရတို့ အနက်ထူးမရှိ ဟု ပြသော ဥဇုကတ္ထတည်း၊ “ဥပရိဘာဝံ–မြင့်မြတ်သူ၏ အဖြစ် ” ဟူသည် ကုဋေ ၉ ထောင်ကျော်သီလတို့ကို ဆောက်တည်၍ ကျင့်ခြင်းကြောင့်“ သီလသိက္ခာအားဖြင့် လူတို့ထက် မြင့်မြတ်သူ၏အဖြစ်”တည်း။ [နဝကောဋိသဟဿာနိတ်အာဒိနာ ဝုတ္တပ္ပဘေဒါနံ အနေကသဟဿာနံ သံဝရဝိနယာနံ သမာဒိယိတ္ဝာ ဝတ္တနေန “ဥပရိဘူတာ အဂ္ဂဘူတာ+ သမ္ပဒါတိ ဥပသမ္ပဒါ=မြင့်မြတ်သောပြည့်စုံခြင်း၊ ဝါ–ရဟန်းအဖြစ်”။–မဟာဝါ, ဓမ္မစက္ကပဝတ္တနသုတ်အဖွင့် တေရသကဏ်ဋီကာ။ ]

**ဧတ္ထ စ။** ။ “ဉတ္တိစတုတ္ထေန ကမ္မေန”နှင့် စပ်၍ ရှေး အဋ္ဌကထာများ၌ ဤနေရာဝယ်“ကမ္မလက္ခဏ”မည်သော ကံအမျိုးမျိုးကို ချဲ့ထားကြသော်လည်း ဤ အဋ္ဌကထာ၌ ဤနေရာဝယ် မချဲ့တော့ဘဲ ပရိဝါ – ကမ္မဝဂ္ဂကျမှ ချဲ့မည့်အကြောင်းကိုငှင်း, ထိုသို့ ဤ၌ မချဲ့ဘဲ ကမ္မဝဂ်ကျမှ ချဲ့၍ပြသဖြင့် ရသင့်သော အကျိုးကိုငှင်း ပြလို၍ “ ဧတ္ထ စ ” စသော အမှာ စကားချပ်ကို မိန့်ဆိုအပ်လေသည်။

ထို ကံတို့ကို၊ မယံ - (ဗုဒ္ဓဃောသဆရာ) ငါတို့သည်၊ ပရိဝါရာဝသာနေ - ၌၊ ကမ္မဝိဘင်္ဂေယေဝ- ၌သာ၊ ဝါ- ကျမ်းသာ၊ ဝဏ္ဏယိဿာမ- ဖွင့်ကုန်တော့အံ့၊ ဟိ-လဒ္ဓဂုဏ်ကိုဆိုဦးအံ့၊ ဧဝံသတိ— ဤသို့ ဖြစ်လသော်၊ [ပရိဝါအဆုံး ကမ္မဝိဘင်းကျမ်းသာ ဖွင့်လသော်၊ ] ပဌမပါရာဇိက ဝဏ္ဏနာစ - ဇိကအဖွင့်သည် လည်း၊ ဘာရိယာ-ထမ်းဆောင်ထိုက်သော တာဝန်သည်၊ ဝါ-ဝန်လေးသည်၊ န ဘဝိဿတိ- လတ့်၊ ယထာဋ္ဌိတာယ- အကြွင်းအကြွင် တည်ရှိသော၊ ပါဠိယာစ - ပါဠိတော်ကိုလည်း၊ ဝဏ္ဏနာ-ဖွင့်ခြင်းသည်၊ သုဝိညေယျာ - လွယ်ကူစွာ သိအပ်သည်၊ ဝါ- သိလွယ်သည်၊ ဘဝိဿတိ- တံ့၊ တာနိစဌာနာနိ- ထို ကမ္မဝိဘင်းဟူသော ပါဠိရပ်တို့သည်လည်း၊ အသုညာနိ - အဖွင့်မှ မကင်းဆိတ်ကုန်သည်၊ ဘဝိဿန္တိ-န်လတ့်၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ အနုပဒဝဏ္ဏနမေဝ-ပုဒ်စဉ်အတိုင်း ဖွင့်ခြင်းကိုသာ၊ ကရောမ - ပြုကုန်တော့အံ့၊ [ ထိုကံတို့ကို ဤနေရာ၌ မဖွင့်ဘဲ ဤပါရာဇိကပါဠိ၌ပါရှိသော မထင်ရှားသောပုဒ်များကိုသာ အစဉ်အတိုင်း ဖွင့်သွားတော့မည်-ဟူလို၊ ]

တတြာတိ-ကား၊ဘိက္ခုကောတိအာဒိနာ-သော၊ နယေန-ဖြင့်၊ ဝုတ္တေသု-ဆိုအပ်ပြီးကုန်သော၊ တေသုဘိက္ခုသု – ထိုဘိက္ခုတို့တွင်၊ ယွာယံ ဘိက္ခုတိ-ကား၊ ယော အယံဘိက္ခု - သည်၊ [ ဥပသမ္ပန္နော-၌ စပ်၊ ] သမဂ္ဂေန သံဃေန ၊ပေ၊ ဥပသမ္ပန္နောတိ - ကား၊ အဋ္ဌသု - န်သော၊ ဥပသမ္ပဒါသု - တို့တွင်၊ ဉတ္တိစတုတ္ထေနေဝကမ္မေန-ဉတ္တိစတုတ္ထကံဖြင့်သာလျှင်၊ဥပသမ္ပန္နော-မြင့်မြတ်သော ပဉ္စင်းအဖြစ်သို့ရောက်၏၊အယံ ဣမသ္မိံ အတ္ထေ အဓိပ္ပေတော ဘိက္ခုတိ-ကား၊ အယံ- (ဉတ္တိစတုတ္ထကံဖြင့် မြင့်မြတ်သော ပဉ္စင်းအဖြစ်သို့ ရောက်သော) ဤရဟန်းကို၊ မေထုနံ ဓမ္မံ ပဋိသေဝိတွာ ပါရာဇိကော ဟောတီတိ-မေထုနံ၊ပေ၊

ဧဝဥ္စသတိ။ ။ဤဝါကျမျိုးသည် အကျိုးရကိုပြသော လဒ္ဓဂုဏ်ဝါကျချည်းတည်း၊ “ပဌမ၊ပေ၊ န ဘာရိယာ ဘဝိဿတိ”ဖြင့် ဤနေရာ၌ ထိုကံများကို မဆိုခြင်း၏ အကျိုးရပုံကို ပြ၏၊ “ယထာဋ္ဌိတာယ၊ပေ၊ဘဝိဿန္တိ” ဖြင့် ထိုကမ္မဝဂ်ကျမ်း ဆိုခြင်း၏ အကျိုးရပုံကို ပြ၏၊ တသ္မာစသည်ကား ထို လဒ္ဓဂုဏ်၏နိဂုံးတည်း။

အယံ၊ပေ၊အဓိပ္ပေတော။ ။ဥပသမ္ပဒါ ရှစ်ပါးတို့တွင် ဉတ္တိစတုတ္ထကမ္မုပသမ္ပဒါဖြင့် ရဟန်းဖြစ်သူတို့သာ ပါရာဇိကနှင့်တကွ အခြား သိက္ခာပုဒ်များကို ကျူးလွန်ထိုက်သောကြောင့်ရင်း, ဘုရားရှင်ရှိသည် ဖြစ်စေ— ပရိနိဗ္ဗာန်စံတော်မူပြီးသည်ဖြစ်စေ အခါခပ်သိမ်း(ယခုတိုင်အောင်) ရှိနိုင်သောကြောင့်ရင်း, သိက္ခာပုဒ်တိုင်း၌ “ဉတ္တိစတုတ္ထကံဖြင့် ရဟန်းဖြစ်သူတို့ကိုသာ အလိုရှိအပ်၏”ဟု မိန့်တော်မူသည်၊ ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇသိက္ခာပုဒ်များ၌ကား ဧဟိဘိက္ခုစသော ရဟန်းများလည်း ( သိက္ခာပုဒ်ကို မသိ၍ ) ကျူးလွန်မိတတ်သေး၏။

ဟောတိ ဟူသော၊ ဠမည်သို့ အတွေ-ဤသိက္ခာပုဒ်၏ အနက်၌၊ ဘိက္ခုတိ-ဟူ၍၊ အဓိပ္ပေတော-အလိုရှိအပ်၏၊ ပန-ကား၊ ဠ တရေ-ဥ တ္တိစတုတ္ထကံဖြင့် ရဟန်းအဖြစ်သို့ ရောက်သူမှ အခြားကုန်သော၊ ဘိက္ခကောတိ အာဒယော - ဘိက္ခကော အစရှိသော ဘိက္ခုတို့ကို၊ အတ္ထုဒ္ဓါရဝသေန-ရထိုက်သောအနက်တို့ကို ထုတ်ပြခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ (ဘဂဝတာ-သည်၊) ဝုတ္တာ - နပြီ။

စ-ဆက်၊ တေသု-ထိုဘိက္ခကော အစရှိသောဘိက္ခုတို့တွင်၊ ဘိက္ခကောတိ အာဒယော- ဘိက္ခကောအစရှိသော ဘိက္ခုတို့ကို၊ နိရုတ္တိဝသေန – အနက်ကို ထုတ်ဆိုခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဝါ-သဒ္ဒါနည်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊(ဘဂဝတာ၊)ဝုတ္တာ-ပြီ၊ သမညာယဘိက္ခု ပဋိညာယ ဘိက္ခုတိ-ဘိက္ခုဟူကုန်သော၊ ဠွေ- ၂ ပါးကုန်သော၊ ဠမေ - ဤဘိက္ခုတို့ကို၊ အဘိလာပဝသေန - ခေါ်ဝေါ်ခြင်း၏

**အတ္ထုဒ္ဓါရဝသေန**။ ။"ဘိက္ခု"ဟူသော ပုဒ်၏ ရသင့်သမျှအနက်တို့ကို ထုတ်ပြခြင်းကို အတ္ထုဒ္ဓါရ ဟု ဆိုသည်။ [အတ္ထာနံ—ရသင့်သမျှအနက်တို့ကို+ဥဒ္ဓါရော—ထုတ်ပြခြင်းတည်း၊ အတ္ထုဒ္ဓါရော—ခြင်း။]

**နိရုတ္တိဝသေန**။ ။"နိဗ္ဗစနဝသေန"ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ နိ ( နီဟရိတွာ ) အနက်ကို ထုတ်ဖော်၍+ဥတ္တိ (ဝစနံ)-ဆိုခြင်း၊ ဝါ—ဆိုကြောင်းစကား၊"ဘိက္ခကောတိ ဘိက္ခု" သည် ဘိက္ခု၏ သဒ္ဒါနက်ကို"ဘိက္ခကော"ဟု ထုတ်ပြသော ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြတည်း၊ " ဘိက္ခတီတိ ဘိက္ခု"ဟု ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြပါ—ဟူလို၊ အာဒယော၌ အာဒိဖြင့် "ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတောတိ ဘိက္ခု၊ ဘိန္နပဋဓရောတိ ဘိက္ခု" တို့ကိုယူ၊ ထိုတွင် " ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂတော—ဘိန္နပဋဓရော"တို့သည် ဝိဂ္ဂြိုဟ်စစ်, ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြ မဟုတ်၊"ဘိက္ခု" သဒ္ဒါသည် ထိုအနက်များ၌လည်း ( ဝိဂ္ဂြိုဟ်နက်မဟုတ်ဘဲ ) " အထင်ရှုဋ္ဌီအားဖြင့် ဟောနိုင်၏ " ဟု သိစေတော်မူလိုသော အဖွင့်တည်း၊ မှန်၏-ဘိက္ခုဟု အခေါ်ခံရသူသည် ဆွမ်းခံအိမ်သို့ ကပ်ရသူဖြစ်ကြောင်း,အစုတ်စုတ် အပြတ်ပြတ်အဝတ်ကို ဝတ်ရသူဖြစ်ကြောင်း ထင်ရှား၏။ [ဘိန္နပဋဓရောတိ နိဗ္ဗစနံ ဘိန္နပဋမဓရေ ဘိက္ခုသဒ္ဒဿ နိရုဠ္ဋတ္တာ ကတံ။]

**မှတ်ချက်** ။ ။ ရှေး နိဿယ၌ကား " ဘိက္ခတိ ဘိက္ခာစရိယံ အဇ္ဈုပဂစ္ဆတီတိ ဘိက္ခု"ဟု၎င်း,"ဘိက္ခတိ ဘိန္နပဋမာရဏေန ဝိသေသော ဘဝတီတိ ဘိက္ခု"ဟု၎င်း, ဝိဂ္ဂြိုဟ်ပြသေး၏၊ သို့သော် နိရုတ္တိပုဒ် နိဗ္ဗစနပုဒ်တို့သည် " ဝိဂ္ဂြိုဟ် " ဟူသောအနက်ကို သာ ဟောသည်မဟုတ်, သဒ္ဒါသာမည ဟူသောအနက်ကိုလည်း ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် ဋီကာ၌ ဝိဂ္ဂြိုဟ်လုပ်ရမည် ဟု မဆိုလိုဘဲ "နိရုဠ္ဋတ္တာ ကတံ= ဝိဂ္ဂြိုဟ်မလုပ်ရသော အထင်ရှုဋ္ဌီပုဒ်"ဟု ဖွင့်သည်။

**အဘိလာပဝသေန**။ ။[ဝေါဟာရဝသေန— ခေါ်ဝေါ်ခြင်း (ခေါ်ဝေါ်ရိုး)၏ အစွမ်းဖြင့်၊—ဋီကာ။] ဆွမ်းစားပင့်ရာ၌ ရဟန်းဟုတ်ဟုတ်—မဟုတ်ဟုတ် (သာမဏေများပါ) ဘိက္ခုဟု ခေါ်ဝေါ်ရိုးရှိသည်၊ ရဟန်းတု ရဟန်းယောင်များကိုလည်း သူတို့ကိုယ်တိုင်က ဘိက္ခုဟု ဝန်ခံလျှင် ဘိက္ခုဟုပင် ခေါ်ဝေါ်ရိုးရှိသည်။

အစွမ်းဖြင့်၊ ဝါ–ခေါ်ဝေါ်ရိုး၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဝုတ္တော–နိပြီ၊ ဧဟိဘိက္ခုတိ-ဧဟိဘိက္ခုဟူသော ဘိက္ခုကို၊ ဗုဒ္ဓေန - ဟူသော၊ ဥပဉ္ဉာယေန - ဖြင့်၊ ငိလဒ္ဓဥပသမ္ပဒါဝသေန- ရအပ်သော ဥပသမ္ပဒါ၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဝုတ္တော–ပြီး၊ သရဏဂမနဘိက္ခု–သရဏဂမနဘိက္ခုကို၊ ကမ္မဝါစာယ - ဉတ္တိစတုတ္ထ ကမ္မဝါစာသည်၊ အနုပ္ပန္နာယ-မဖြစ်ပေါ်သေးမီ၊ ဥပသမ္ပဒါဝသေန- ဖြင့်၊ ဝုတ္တော–ပြီ၊ ဘဒြောတိအာဒယော–ဘဒြော အစရှိသော ဘိက္ခုတို့ကို၊ ဂုဏဝသေန–သီလစသော ဂုဏ်တို့၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ( ဘဂဝတာ၊ ) ဝုတ္တော - နိပြီ၊ ဣတိ – သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ - နိ၏။

ဣဓါနိ- ၌၊ ဘိက္ခုနန္တိ ဣဒံ ပဒံ - နံ ဟူသော ဤပုဒ်ကို၊ ဝိသေသတ္တာဘာဝတော-ထူးသောအနက်၏ မရှိခြင်းကြောင့်၊ [ယောပနဘိက္ခုတုန်းက ဘိက္ခုနှင့် အနက်မထူးသောကြောင့်-ဟူလို။]အဝိဘဇိတွာဝ-မဝေဘန်မူ၍သာလျှင်၊[ပဒဘာဇနီ မဖွင့်မူ၍သာလျှင်-ဟူလို၊]ယံ သိက္ခဥ္စ-အကြင်သိက္ခာသို့ရင်း၊ ယံ သာဇီဝဥ္စ-သို့ရင်း၊ သမာပန္နတ္တာ - ရောက်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဘိက္ခုနံ – တို့၏၊ သိက္ခာသာဇီဝသမာပန္နော - သိက္ခာသာဇီဝသို့ ရောက်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ တံ(သိက္ခဥ္စ) – ကိုရင်း၊ တံ ( သာဇီဝဥ္စ ) - ကိုရင်း၊ ဒဿေန္တော - မူလိုသည်၊ ( ဟုတ္ဝာ )၊ သိက္ခာတိအာဒိ - ကို၊ အာဟ - မူပြီ၊ တတ္ထ – ထို သိက္ခာ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ သိက္ခိတဗ္ဗာ - ကျင့်ကြံကြိုးကုတ် အားထုတ်ထိုက်ကုန်၏၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ သိက္ခာ - သိက္ခာတို့မည်၏၊ တိဿောတိ - တိဿောဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ ဂဏနပရိစ္ဆေဒေါ - ဂဏန်းဖြင့် ပိုင်းခြားကြောင်းသဒ္ဒါတည်း၊

ဂုဏဝသေန။ ။"ဘဒြော၊ပေ၊ သာရော၊ပေ၊ သေက္ခော ၊ပေ၊ အသေက္ခောတိ ဘိက္ခု"တို့ကား သီလစသော ဂုဏ်အားဖြင့် ဘိက္ခုအမည် ရကြသည်–ဟူလို၊ ဤဂုဏနာမည်၌ "ဘိန္နတ္တ ပါပကေ အကုသလေဓမ္မေတိ ဘိက္ခု = ယုတ်မာသောအကုသိုလ် တရားတို့ကို ဖျက်ခွဲတတ်သောကြောင့် ဘိက္ခု " ဟု ဋီကာဝိဂ္ဂဟပြု၏၊ ဘိဒဓာတ်မှ ဒကို နိရုတ္တိနည်းဖြင့် ကွပြုဟု ကြံ။

သိက္ခိတဗ္ဗာ။ ။"အာသေဝိတဗ္ဗာ " ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ "သိက္ခ– ဝိဇ္ဇောပါဒါနေ (အတတ်သင်ယူခြင်း၌ ) " ဟု ဓာတ်ကျမ်းများ၌ရှိသောကြောင့် ထို ဓာတ်ကျမ်းအလိုအားဖြင့် " သီလ–သမာဓိ–ပညာကို နားလည်အောင်သင်ယူထိုက်၏ "ဟု အဓိပ္ပါယ်ယူဘွယ်ရှိ၏၊ အမှန်မှာ – နားလည်အောင်သင်ယူခြင်းကို မဆိုလို၊ " မိမိသန္တာန်၌ ဖြစ်ပေါ်လာအောင် မှီဝဲထိုက်သောတရားများ ဖြစ်သည်" ဟု ဆိုလိုသည်။ [ ဗုဒ္ဓန်သော ဝိတံ၌ ဖွင့်ပြခဲ့သော သေဝန ၂ မျိုးတွင် မိမိသန္တာန်၌ ဖြစ်စေခြင်းဟူသော ဘာဝနာ သေဝနပင်တည်း၊ ထို့ကြောင့် အာသေဝိတဗ္ဗာဖြင့် " သိက္ခ " အရ မိမိသန္တာန်၌ ဖြစ်အောင် ကျင့်ခြင်းအနက်ကို ယူပါ–ဟု သိစေလိုသည်။]

အဓိသီလသိက္ခာတိ - ကား၊ အဓိကံ-သာလွန်သော၊ ဥတ္တမံ - ထူးမြတ်သော၊ သီလံ-သီလတည်း၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ အဓိသီလံ-လမည်၏၊ အဓိသီလဥ္စ-သာလွန်သောသီလလည်းဟုတ်၏၊တံ-ထိုသာလွန်သောသီလဟူသည်၊သိက္ခိတဗ္ဗတော-ကျင့်ထိုက်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ (ဘာဝပ္ပဓာနကြံ)၊ သိက္ခာစ- သိက္ခာလည်းဟုတ်၏၊ ဣတိ- ကြောင့်၊ အဓိသီလသိက္ခာ- အဓိသီလသိက္ခာမည်၏၊ အဓိစိတ္တအဓိပညာသိက္ခာသု-အဓိစိတ္တသိက္ခာ, အဓိပညာသိက္ခာတို့၌၊ သေ-၌ ဆိုအပ်ပြီးသောအစီအရင်သည်၊ နယော—သိကြောင်းအစီအရင်တည်း။

ပန-ပရိဟာရပက္ခမှတပါး စောဒကပက္ခကို ဆိုဦးအံ့၊ ဧတ္ထ-၌အဓိသီလသိက္ခာအစရှိသည်တို့တွင်၊ သီလံ - သီလဟူသည်၊ ကတမံ- အဘယ်နည်း၊ အဓိသီလံ-ဟူသည်၊ ကတမံ- နည်း၊ပေ၊ အဓိပညာ-သည်၊ ကတမာ- နည်း၊ ဣတိ-၍ကားအမေးတည်း၊ (ပရိဟာရော မယာ)ဝုစ္စတေ၊ တာဝ-အဓိသီလစသည်တို့မှ ရှေးဦးစွာ၊ ပဉ္စင် ဒသင်္ဂသီလံ-အင်္ဂါ၅ပါးရှိသောသီလ,အင်္ဂါဆယ်ပါးရှိသော သီလသည်၊ သီလမေဝ-သီလသာမန်သာတည်း၊ [ အဋ္ဌင်္ဂသီလသည် ဒသင်္ဂသီလ၌ ပါဝင်၏၊ ထို့ကြောင့်သီးခြားမဆိုတော့၊] ဟိ- မှန်၊ တံ-ထို၅ပါးသီလ, ဆယ်ပါးသီလကို၊ [ သမာဒါပေန္တိ- ၌စပ်၊ ] ဝါ - သည်၊ [ပဝတ္တတိ-၌စပ်၊ ] ဗုဒ္ဓေ-သည်၊ ဥပ္ပန္နေပိ- ပွင့်တော်မူသော်ငင်း၊ အနုပ္ပန္နေပိ-ပွင့်တော်မမူသော်ငင်း၊ လောကေ-၌၊ ပဝတ္တတိ- ဖြစ်တည်၏၊ ဗုဒ္ဓေ-သည်၊ ဥပ္ပန္နေ-သော်၊ တသ္မိံသီလေ- ထို၅ပါးသီလ, ဆယ်ပါးသီလ၌၊ ဗုဒ္ဓါပိ– တို့သည်ငင်း၊ သာဝကာပိ-တို့သည်ငင်း၊ မဟာဇနံ-ကို၊သမာဒါပေန္တိ-ဆောက်တည်စေကြကုန်၏၊ ဗုဒ္ဓေ-သည်၊ အနုပ္ပန္နေ– သော်၊ ပစ္စေကဗုဒ္ဓါစ- တို့သည်ငင်း၊ ကမ္မဝါဒိနော-ကံရှိ၏ ဟု ပြောလေ့ရှိကုန်သော၊ ဓမ္မိကာ-တရားရှိကုန်သော၊ သမဏဗြာဟ္မဏာစ - တို့သည်ငင်း၊ စက္ကဝတ္တိ - စကြာရတနာကို လည်စေနိုင်ကုန်သော၊ မဟာရာဇာနောစ-မဟာရာဇာတို့သည်ငင်း၊မဟာဗောဓိသတ္တာစ-မြတ်သောဘုရားအလောင်းတို့သည်ငင်း၊ သမာဒါပေန္တိ- န်၏၊ သာမဗ္ဗိ-ကိုယ်တိုင်လည်း၊ ပဏ္ဍိတာ - ပညာရှိကုန်သော၊ သမဏဗြာဟ္မဏာ - တို့သည်၊ သမာဒိယန္တိ-

**ကတမံ ပနေတ္ထသီလံ။** ။“ အတိဆတ္တံ–သာလွန်သောထီး ” ဟု ဆိုလျှင် “ထိုထီးလောက် မကြီးကျယ်သော သာမန်ထီးလည်းရှိသေး၏”ဟုသိသာသကဲ့သို့, ထို့အတူ “အဓိသီလ – သာလွန်မွန်မြတ်သောသီလ ” ဟု ဆိုလျှင် ထိုမျှလောက်မကြီးကျယ်သော သာမန်သီလလည်း ရှိသေး၏ – ဟု သိသာ၏၊ “အဓိစိတ္တ, အဓိပညာ” ဟူရာ၌လည်း ဤနည်းပင်၊ ထို့ကြောင့် သီလ–အဓိသီလ, စိတ္တ-အဓိစိတ္တ, ပညာ-အဓိပညာကိုခွဲခြား၍ အဖြေပြလိုသောကြောင့်“ကတမံပန” စသည်ဖြင့် ကိုယ်တိုင် ပုစ္ဆာထုတ်သည်။

ဆောက်တည်ကြကုန်၏၊ တေ- ထိုပညာရှိ ရဟန်းပုဏ္ဏားတို့သည်၊ တံကုသလံ ဓမ္မံ – ထိုကုသိုလ်တရားကို၊ ပရိပူရေတွာ – ပြည့်စေ၍၊ ဒေဝေသုစ–တို့၌၎င်း၊ မနုဿေသုစ-တို့၌၎င်း၊ သမ္ပတ္တိ-စည်းစိမ်ကို၊ အနုဘောန္တိ-ခံစားကြကုန်၏။

ပန-ကား၊ ပါတိမောက္ခ သံဝရသီလံ-ကို၊ အဓိသီလန္တိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ဟိ-မှန်၊ တံ- ထို ပါတိမောက္ခ သံဝရသီလသည်၊ ပဒွေါတာနံ- အလင်းရောင်တို့တွင်၊ [အာလောကာနံ၊] သူရိယော– နေရောင်သည်၊ (အဓိကော)ဝိယ– သာလွန်သကဲ့သို့၎င်း၊ ( ဥတ္တမော ) ဝိယ - ထူးမြတ်သကဲ့သို့၎င်း၊ ပဗ္ဗတာနံ– တို့တွင်၊ သိနေရု-မြင့်မိုရ်တောင်သည်၊ အဓိကော ဝိယ ဥတ္တမော ဝိယ၊ ( တထာ- တူ၊ ) သဗ္ဗလောကိယသီလာနံ - အလုံးစုံသောလောကီသီလတို့တွင်၊ အဓိက ဉ္စေဝ- သာလွန်သည်၎င်း၊ ဥတ္တမဉ္စ–ထူးမြတ်သည်၎င်း၊ (ဟောတိ)၊ စ-ဆက်၊ ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒေယေဝ–ဘုရားပွင့်တော်မူရာ အခါ၌သာ၊ ပဝတ္တတိ- ၏၊ ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒါ– ကို၊ ဝိနာ-ကြဉ်၍၊ န (ပဝတ္တတိ)-မဖြစ်၊ ဟိ-မှန်၊ တံပညတ္တိ-ထို ဝိနည်းပညတ်တော်ကို၊ ဥဒ္ဓရိတွာ- ထုတ်ဖေါ်၍၊ အညော- မြတ်စွာဘုရားမှ အခြားသော၊ သတ္တော-သတ္တဝါသည်၊ ထပေတုံ-ထားခြင်းငှါ၊ န သက္ကောတိ-မစွမ်းနိုင်၊ ပန- အနွယကား၊ ဗုဒ္ဓါယေဝ-တို့သည်သာ၊သဗ္ဗသော-အလုံးစုံသော အခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ ကာယဝစီဒွါရ အဇ္ဈာစာရသောတံ - ကာယဒွါရ ဝစီဒွါရ၌ဖြစ်သော လွန်ကျူးခြင်းဟူသော အလျင်ကို၊ဆိန္ဒိတွာ-ဖြတ်တော်မူ၍၊ တဿတဿ ဝီတိက္ကမဿ - ထိုထို လွန်ကျူးခြင်းအား၊ အနုစ္ဆဝိကံ – လျောက်ပတ်သော၊ တံ သီလသံဝရံ- ထို စောင့်စည်းကြောင်း သီလကို၊ ပညပေန္တိ - ပညတ်တော် မူကုန်၏၊ စ - ဆက်၊ ပါတိမောက္ခသံဝရတောပိ – ထက်လည်း၊ မဂ္ဂဖလ သမ္ပယုတ္တမေဝ သီလံ-မဂ်ဖိုလ်နှင့်ယှဉ်သော သီလသည်သာ၊ အဓိသီလံ-မည်၏၊ ပန - ထိုသို့ပင် မဂ်ဖိုလ်နှင့်ယှဉ်သောသီလသည်သာ အဓိသီလ မည်ပါသော်

ပါတိမောက္ခ သံဝရသီလံ။ ။ဒွေမာတိကာ၌သာမက, ဝိနည်းပိဋကနှ၌လာသော သီလအားလုံးကို " ပါတိမောက္ခ သံဝရသီလ " ဟု ခေါ်သည်။ [ပါတိမောက္ခ သံဝရ သီလန္တိ–စာရိတ္တ ဝါရိတ္တဝသေန (ခန္ဓက၌လာသော စာရိတ္တသီလ, ပါရာဇိကအာပတ် စသော ဝါရိတ္တသီလတို့၏ အပြားအားဖြင့်၊) ဒုဝိဓံ ဝိနယပိဋကပရိယာပန္နံ သိက္ခာပဒ သီလံ၊–ဋီကာ၌ "ပါတိ+မောက္ခ+သံဝရ+သီလပုဒ်တို့ကို အကျယ်ဖွင့်ထားသည်။]

မဂ္ဂဖလ သမ္ပယုတ္တမေဝ။ ။မဂ္ဂဖလသမ္ပယုတ္တဖြစ်သော သမ္မာဝါစာ သမ္မာကမ္မန္တ သမ္မာအာဇီဝတို့သာ မုချအားဖြင့် အဓိသီလမည်ကြသည်၊ ပါတိမောက္ခသီလကို အဓိ သီလဟု ခေါ်ခြင်းမှာ ငါးပါးသီလ ဆယ်ပါးသီလကို ထောက်၍ ပရိယာယ်အားဖြင့် ခေါ်ခြင်းသာ ဖြစ်သည်– ဟူလို။

လည်း၊ တံ-ထိုမဂ်ဖိုလ်နှင့်ယှဉ်သောသီလကို၊ ဣဓ-ဤ သိက္ခာပုဒ်အရာ၌၊ အနမိပ္ပေတံ-အလိုမရှိအပ်၊ ဟိ-မှန်၊(တနည်း)ဟိယသ္မာ-ကြောင့်၊ တံ-ထို မဂ်ဖိုလ်နှင့်ယှဉ်သောသီလသို့၊ သမာပန္နော – ရောက်သော၊ ဘိက္ခု- သည်၊ မေထုနံ ဓမ္မံ-ကို၊ န ပဋိသေဝတိ-မမှီဝဲ၊ (တသ္မာ–ကြောင့်၊ အနမိပ္ပေတံ-အပ်။)

ပန – ကား၊ ကာမာဝစရာနိ – ကာမာဝစရဖြစ်ကုန်သော၊ အဋ္ဌကုသလစိတ္တာနိ-၈ ပါးသောကုသိုလ်စိတ်တို့ကိုငင်း၊ လောကိယအဋ္ဌသမာပတ္တိ စိတ္တာနိစ-၈ ပါးသော လောကီသမာပတ်စိတ်တို့ကိုငင်း၊ ဧကဇ္ဈံ-တပေါင်းတည်း၊ ကတွာ-၍၊ စိတ္တမေဝါတိ-စိတ်ဟူ၍သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ– နိ၏၊ [ဇာတျာပေက္ခနည်းအားဖြင့် ''စိတ္တ''ဟု ဧကဝုစ်ထားသည် - ဟူလို။] စ– ဆက်၊ ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒါနုပ္ပါဒေ–ဘုရားပွင့်တော်မူရာအခါ, ပွင့်တော်မမူရာအခါ၌၊ အဿ-ထိုစိတ်၏၊ ပဝတ္တိ–ဖြစ်ခြင်းကိုငင်း၊ သမာဒါပနံ - လူအများကို ဆောက်တည်စေခြင်းကိုငင်း၊ သမာဒါနဉ္စ–ပညာရှိတို့ကိုယ်တိုင် ဆောက်တည်ခြင်းကိုငင်း၊ သီလေ-၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ-ဖြင့်သာလျှင်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ- ၏၊ ပန-ကား၊ ဝိပဿနာပါဒကံ– ဝိပဿနာ၏ အခြေခံဖြစ်သော၊ အဋ္ဌသမာပတ္တိစိတ္တံ- ကို၊ အဓိစိတ္တန္တိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ဟိ-မှန်၊ တံ-ထို ဝိပဿနာပါဒက အဋ္ဌသမာပတ္တိစိတ်သည်၊ သီလာနံ–တို့တွင်၊ အဓိသီလံ-သည်၊ အဓိကံဝိယစ, ဥတ္တမံဝိယစ-ငင်း၊ (တထာ) သဗ္ဗလောကိယစိတ္တာနံ-အလုံးစုံသော လောကီစိတ်တို့တွင်၊ အဓိကဉ္စေဝ ဥတ္တမဉ္စ (ဟောတိ၊) စ-ဆက်၊ ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒေယေဝ–၌သာ၊ ဟောတိ-၏၊ ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒါ-ကို၊ ဝိနာ - ၍၊ န (ဟောတိ၊) စ - ဆက်၊ တတောပိ- ထိုဝိပဿနာပါဒက အဋ္ဌသမာပတ္တိစိတ်ထက်လည်း၊ မဂ္ဂဖလစိတ္တမေဝ-မဂ်ဖိုလ်နှင့်ယှဉ်သောစိတ်သည်သာ၊ အဓိစိတ္တံ-မည်၏၊ ပန- ထိုသို့ပင် မဂ္ဂဖလစိတ်သည်သာ အဓိစိတ္တမည်ပါသော်လည်း၊ တံ-ထို မဂ်ဖိုလ်နှင့်ယှဉ်သောစိတ်ကို၊ ဣဓ-ဤ သိက္ခာပုဒ်အရာ၌၊ အနမိပ္ပေတံ-အပ်၊ ဟိ–မှန်၊ (တနည်း) ဟိယသ္မာ-ကြောင့်၊ တံ - သို့၊ သမာပန္နော ဘိက္ခု မေထုနံဓမ္မံ န ပဋိသေဝတိ၊ (တသ္မာ အနမိပ္ပေတံ-အပ်။)

ပန-ကား၊ ဒိန္နံ-ပေးလှူအပ်သောပစ္စည်းဝတ္ထုကို ပေးလှူကြောင်းစေတနာသည်၊ အတ္ထိ-၏၊ ယိဋ္ဌံ-ပူဇော်အပ်သော ယဇ်ကြီးကို ပူဇော်ကြောင်းစေတနာ

ယိဋ္ဌံတိ အာဒိ။ ။အာဒိဖြင့် ''အတ္ထိဟုတံ'' စသည်ကိုယူ၊ ဋီကာ၌ အကျယ်ပြထား၏၊ ထိုတွင် လှူဘွယ်ဝတ္ထုကို '' ဒိန္နံ '' ဟု ခေါ်၏၊ ထို လှူဘွယ်ဝတ္ထုကို ခေါင်းတပ်၍ထားသော်လည်း ''လှူကြောင်းဒါနစေတနာရှိ၏ '' ဟူသောအယူကို ''အတ္ထိ ဒိန္နံ''ဟု ဆိုလိုသည်၊ ယိဋ္ဌ၌လည်းနည်းတူ၊ အများနှင့်ဆိုင်အောင် အလှူကြီး ပေးလှူမှုကို''ယိဋ္ဌ'' ဟု ဆိုသည်၊ ဧည့်ဝတ်ပြုခြင်းစသော အနည်းငယ်အလှူကို ''ဟုတ''ဟု ခေါ်သည်။

သည်၊အတ္တိ ဇာတိအာဒိနယပ္ပဝတ္တံ-ဤသို့အစရှိသောနည်းဖြင့် ဖြစ်သော၊ကမ္မ ဿကတာဉာဏံ- ကမ္မဿကတာ ဉာဏ်သည်၊ ပညာ-မည်၏၊ ဟိ- မှန်၊ သာ- ထိုပညာသည်၊ပေ၊ဗုဒ္ဓသာဝကာဝိ- တို့သည်ငှင်း၊ [ ရှေ၌"ဗုဒ္ဓ" ပုဒ်မပါခဲ့၊] မဟာဇနံ-ကို၊ သမာဒါပေန္တိ- န်၏၊ပေ၊သာမဇ္ဈိ- လည်း၊ ပဏ္ဍိတာ- န်သော၊ သတ္တာ - သတ္တဝါတို့သည်၊ [ နောက်ဝတ္ထုများက လူသတ္တဝါ ဖြစ်သောကြောင့် "သတ္တာ" ဟု ဆိုသည်၊ ရှေ၌ "သမဏဗြာဟ္မဏာ" ဟု ပါခဲ့၏၊ ] သမာဒိ ယန္တိ - န်၍၊ တထာဟိ - ထိုစကားမှန်၏၊ အင်္ကုရော - အင်္ကုရမင်းသားသည်၊ ဒသဝဿသဟဿာနိ-အနှစ်တသောင်းတို့ပတ်လုံး၊ မဟာဒါနံ-ကြီးစွာသော အလှူကို၊ အဒါသိ-ပေးလှူပြီ၊ [ဓမ္မပဒအဋ္ဌကထာ, ဗုဒ္ဓဝဂ်, ဒုတိယဝတ္ထု၌ ပါသည်၊] ဝေလာမော- ဝေလာမပုဏ္ဏားသည်ငှင်း၊ [အင်္ဂုတ္တိုရ်အဋ္ဌကထာ, နဝက- ဒုတိယဝဂ် ဒသမသုတ်၌ပါသည်၊ ]ဝေဿန္တရော- သည်ငှင်း၊ [ဇာတ် အဋ္ဌကထာ။]အညေ-န်သော၊ ဗဟူ-န်သော၊ပဏ္ဍိတမနုဿာစ- တို့သည်ငှင်း၊ မဟာဒါနာနိ- တို့ကို၊ အဒံသု-န်ပြီ၊ တေ- ထိုပညာရှိလူတို့သည်၊ပေ၊အနုဘဝိံ သု-န်ပြီ၊ ပန-ကား၊ တိလက္ခဏာကာရပရိစ္ဆေဒကံ-၃ပါးသောလက္ခဏာ၏ အခြင်းအရာကို ပိုင်းခြားတတ်သော၊ ဝိပဿနာဉာဏံ - ကို၊ အဓိပညာတိ-

ကမ္မဿကတာဉာဏံ ။ ။ "ကမ္မမေဝ + သကံ ယဿာတိ ကမ္မဿကော= ကံသာလျှင် ကိုယ်ပိုင်ဥစ္စာရှိသူ၊ ကမ္မဿကဿ + ဘာဝေါ ကမ္မဿကတာ၊ ကမ္မဿက တာယံ—ကံသာလျှင်ကိုယ်ပိုင်ဥစ္စာရှိသူ၏အဖြစ်၌ + ဥပ္ပန္နံ=နကံ-ဖြစ်သော+ ဉာဏံ-သည်၊ ကမ္မဿကတာဉာဏံ — မည်၏။ ["ကမ္မဿကောမှိ ကမ္မဒါယာဒေါ" စသော ပါဠိ တော်နှင့်အညီ ရေးသည်။] ဋီကာ ဤနေရာနှင့် အခြား အဋ္ဌကထာတို့၌ သုစရိုက်သည် ကိုယ်ကျိုးကို ဖြစ်စေတတ်သောကြောင့် "သကကမ္မ—ကိုယ့်ဥစ္စာဖြစ်သော ကံ"တည်း၊ ဒုစရိုက်ကား အကျိုးမဲ့ကို ဖြစ်စေတတ်သောကြောင့်"နသကကမ္မ—ကိုယ့်ဥစ္စာ ဖြစ်သော ကံမဟုတ် " ဤသို့ ခွဲခြား၍ သိသောဉာဏ်ကို ကမ္မဿကတာဉာဏ်ဟု ဖွင့်သေး၏။

ဉာဏ် ၄ မျိုး ။ ။ ကမ္မဿကတာဉာဏ် , သစ္စာနုလောမိကဉာဏ် , မဂ်ဉာဏ်, ဖိုလ်ဉာဏ်၊ ထိုတွင် ကံရှိ၏, ကံ၏အကျိုးရှိ၏ဟု သိသောဉာဏ်သည် ကမ္မဿကတာ ဉာဏ်မည်၏၊ ဝိပဿနာဉာဏ်သည် ( မဂ္ဂသစ္စာအားရင်း , ပရမတ္ထတရားကို ရှုသော ကြောင့် ပရမတ္ထသစ္စာအားရင်း လျော်သောကြောင့်) သစ္စာနုလောမိက ဉာဏ်မည်၏။ [ ဝိမတိ၌ကား ဝိဝဋ္ဋဂါမိ ( နိဗ္ဗာန်ရောက်ကြောင်း ) ကမ္မဿကတာ ဉာဏ်ကိုလည်း သစ္စာနုလောမိက ဉာဏ်၌ သွင်း၏၊] မဂ်ဉာဏ်, ဖိုလ်ဉာဏ်တို့ကား ထင်ရှားပြီ။

တိလက္ခဏာ၊ပေ၊ပရိစ္ဆေဒကံ။ ။အနိစ္စတာဒိလက္ခဏတ္တယဿ- အနိစ္စတာ အစ ရှိသော လက္ခဏာယာဉ် ၃ ပါး၏၊ ဟုတ္ဝာ အဘာဝါဒိ အာကာရပရိစ္ဆေဒကံ-ဖြစ်ပြီး၍ ပျက်စီးခြင်း အစရှိသော အခြင်းအရာကို ပိုင်းခြားတတ်သော ဉာဏ်။

ဟူ၍၊ ဝုတ္တတိ-၏၊ဟိ-မှန်၊ သာ-ထိုပညာသည်၊အဓိသီလ အဓိစိတ္တာနိ-တို့သည်၊ သီလစိတ္တာနံ- တို့တွင်၊ အဓိကာနိ ဝိယစ, ဥတ္တမာနိ ဝိယစ– ၎င်း၊ (တထာ) သဗ္ဗလောကိယပညာနံ- အလုံးစုံသော လောကီပညာတို့တွင်၊ အဓိကာစေဝ- ၎င်း၊ ဥတ္တမာစ– ၎င်း ( ဟောတိ )၊ စ – ဆက်၊ ဗုဒ္ဓုပ္ပါဒေ- ကို၊ ဝိနာ – ၍၊ လောကေ - ၌၊ နပဝတ္တတိ၊ စ - ဆက်၊ တတောပိ – ထိုဝိပဿနာပညာထက် လည်း၊ မဂ္ဂဖလ ပညာဝ - မဂ်ပညာ ဖိုလ်ပညာသည်သာ၊ အဓိပညာ-မည်၏၊ ပန- ထိုသို့ပင် မဂ္ဂဖလ ပညာသည်သာ အဓိပညာမည်ပါသော်လည်း၊ သာ- ထို မဂ်ပညာ ဖိုလ်ပညာကို၊ ဣဓ-၌၊ အနဓိပ္ပေတာ-အပ်၊ ဟိ-မှန်၊ (တနည်း) ဟိ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ တံ - ထိုမဂ္ဂဖလ ပညာသို့၊ သမာပန္နော၊ပေ၊ န ပဋိသေ ဝေတိ- တော့၊ ဣတိ- ကြောင့်၊ (အနဓိပ္ပေတာ- အပ်။)

တတြာတိ - ကား၊ တီသု, တာသုသိက္ခာသု – တို့တွင်၊ ယာယံ အဓိသီလ သိက္ခာတိ-ကား၊ ပါတိမောက္ခသီလသင်္ခါတာ-လဟု ဆိုအပ်သော၊ ယာအယံ အဓိသီလသိက္ခာ-သည်၊ (အတ္ထိ) ["အယံ ဣမသ္မိံ အတ္ထေ အဓိပ္ပေတာ သိက္ခာ တိ" ဟူသော ပါဠိတော်ကိုထည့်စပ်၊] တံ သာဇီဝံနာမာတိ- ကား၊ သဗ္ဗမ္ပိ- လည်းဖြစ်သော၊ ဘဂဝတာ-သည်၊ ဝိနယေ-၌၊ ထပိတံ– သော၊ တံ သိက္ခာ ပဒံ-ကို၊ [ဝုစ္စတိ-၌စပ်၊] ယသ္မာ- ကြောင့်၊ တတ္ထ- ၌သိက္ခာပုဒ်၌၊ နာနာဒေသ ဇာတိဂေါတ္တာဒိ ဘေဒဘိန္နာ- အမျိုးမျိုးသောအရပ်, အမျိုးမျိုးသောဇာတ်, အမျိုးမျိုးသောအနွယ် အစရှိသော အပြားတို့ဖြင့် ပြားကုန်သော၊ ဘိက္ခူ– တို့သည်၊ သဟ-တကွ၊ အာဇီဝန္တိ - အသက်မွေးကြရကုန်၏၊ [ဋီကာ၌ အာဇီ ဝန္တိ-ဟု ရှိသည်၊]ကေဇီဝိကာ-တူသောအသက်မွေးခြင်းရှိကုန်သည်၊သဘာဂ

မှတ်ချက်။ ။အဓိစိတ္တအခဏ်း အဓိပညာအခဏ်းတို့၌ "လောကုတ္တရာ ဖြစ်သော အဓိစိတ္တ အဓိပညာကို အလိုမရှိအပ်"ဟု ဆိုသဖြင့်"လောကီ အဓိစိတ္တ (ဈာန်) ကိုရင်း, လောကီဝိပဿနာ ပညာကိုရင်း,ဤသိက္ခာပုဒ်၌ အလိုရှိအပ်၏"ဟု ခွင့်ပြုရာရောက်၏၊ ထိုစကားကို လောကီဈာန်သမာပတ်ရပုဂ္ဂိုလ်နှင့်လောကီဝိပဿနာဉာဏ်ရပုဂ္ဂိုလ်သည် တရံတခါ မှိဝဲလိုစိတ် ဖြစ်နိုင်သေးသောကြောင့် ဆိုသည် ဟု မှတ်၊လောကုတ္တရာဈာန်ရ, မဂ်ဖိုလ်ရ ရဟန်းမှာ မေထုန်မှီဝဲလိုစိတ်ပင် မဖြစ်တော့။

**တံသဗ္ဗမ္ပိ၊ပေ၊ဝုစ္စတိ။** ။"သာဇီဝံ နာမ ယံ ဘဂဝတာ ပညတ္တံ သိက္ခာပဒံ"ဟု ပါဠိတော်ရှိ၏၊ ထိုပါဠိတော်အတိုင်း " တံ သဗ္ဗမ္ပိ ဘဂဝတာ ဝိနယေ ထပိတံ သိက္ခာ ပဒံ"ဟု တံ၏ စွဲနက်ကို ဖွင့်ပြသည်၊ "တံ သိက္ခာပဒံ သာဇီဝန္တိ ဝုစ္စတိ"ကို ကြည့်၍ " ယောပန ဘိက္ခု ဘိက္ခူနံ ၊ ပေ ၊ ပါရာဇိကော ဟောတိ အသံဝါသော " စသော သိက္ခာပုဒ်ပါဠိတော်များကို"သာဇီဝ"ခေါ်သည် ဟု မှတ်။

ဇီဝိကာ- သဘောတူသော အသက်မွေးခြင်းရှိကုန်သည်၊ သဘာဂဝုတ္တိနော- သဘောတူသော ဖြစ်ခြင်းရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ( အတူ တကွ အသက်မွေးရာ၏အဖြစ်ကြောင့်၊) သာဇီဝန္တိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- ၏၊ တသ္မိံ သိက္ခတီတိ—ကား၊ တံ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ စိတ္တဿ-၏၊ အဓိကရဏံ—တည်ရာကို၊ ကတွာ- ပြု၍၊ ယထာသိက္ခာပဒံ- သိက္ခာပုဒ်အားလျော်စွာ၊ ဝါ- သိက္ခာပုဒ် အတိုင်း၊ သိက္ခာမိနခေါ-ကျင့်ရအံ့လော၊ န သိက္ခာမိနခေါ-မကျင့်ရအံ့လော၊ ဣတိ-သို့၊ စိတ္တေန-ဖြင့်၊ ဩလောကေန္တော—လျက်၊ သိက္ခတိ-၏။

စ-ဆက်၊ ကေဝလံ - (သိက္ခာမဘက်) သက်သက်၊ အယံ- ဤ ရဟန်းသည်၊ သာဇီဝသင်္ခါတေ-သာဇီဝဟု ဆိုအပ်သော၊ တေသ္မိံ သိက္ခာပဒေယေဝ-၌သာ၊ သိက္ခတိ – ကျင့်သည်ကား၊ န- မဟုတ်သေး၊ သိက္ခာယပိ- ၌လည်း၊ သိက္ခတိ- သေး၏၊ ပန - ထိုသို့ပင် ( သိက္ခာပုဒ်သာမက သိက္ခာ၌လည်း ) ကျင့်ပါသော်

**သဟ၊ပေ၊သာဇီဝန္တိ။** ။သာဇီဝပုဒ်၏ ဝစနတ္ထအဖွင့်တည်း၊ သာဇီဝကို“သဟ+ အာဇီဝ”ဟု ခွဲ၍ “အာဇီဝန္တိ ဧတ္ထာတိ အာဇီဝံ”ဟု အဓိကရဏသာဓနပြု၊ “သဟ+ အာဇီဝံ သာဇီဝံ ” ဟု သမာသ်တွဲ၊ သဟအာဇီဝန္တိကို “ ဧကဇီဝိကာ , သဘာဂဇီဝိ ကာ”ဟု ဖွင့်သည်၊ သဘာဂဇီဝိကာကို တဘန် “သဘာဂဝုတ္တိနော”ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ [သဘာဂဝုတ္တိနောတိ— သမာနဝုတ္တိကာ, သဒိသပဝတ္တိကာတိ အတ္ထော၊ — ဋီကာ၊] “အာဇီဝ—အသက်မွေးခြင်း”ဟူသည် ထို သိက္ခာပုဒ်အပေါ်၌ အတူတူဖြစ်ကြ ကျင့်ကြ ခြင်းတည်း၊ ဆိုလိုရင်းကား—ဒေသချင်းမတူသော မြန်မာရဟန်းဖြစ်ဖြစ်, သီဟိုဠ်ရဟန်း ဖြစ်ဖြစ် , ဇာတ်ချင်းမတူသော ခတ္တိယရဟန်းဖြစ်ဖြစ်,ဗြာဟ္မဏစသော ရဟန်းဖြစ်ဖြစ်, အနွယ်ချင်းမတူသော ကဿပရဟန်းဖြစ်ဖြစ် , ကစ္စာယနရဟန်းဖြစ်ဖြစ် , ( အာဒိဖြင့် နာမည်ချင်း မတူသော ဗုဒ္ဓရက္ခိတ ဓမ္မရက္ခိတ စသည်ကိုယူ ) ထို ရဟန်းအားလုံးပင် ပဌမပါရာဇိကစသော သိက္ခာပုဒ်၌ သဘောတူကျင့်ကြရသည်—ဟူလို။

**တံ သိက္ခာပဒံ၊ပေ၊သိက္ခတိ။** ။ “တသ္မိံ သိက္ခတိ”ဟူသော ပါဠိတော်၌ တသ္မိံ ဟူသော အာဓာရအတွက် “ စိတ္တဿ” ဟု အာဓေယျထည့်၍ဖွင့်၏၊ သိက္ခာပုဒ်သည် အာဓာရ, စိတ်သည် သိက္ခာပုဒ်အပေါ်၌ “ သိက္ခာပုဒ်အတိုင်း ကျင့်ရမလား , မကျင့်ရ ဘူးလား”ဟု အာရုံပြု၍ဖြစ်သော အာဓေယျတည်း၊ စိတ်က သိက္ခာပုဒ်အပေါ်၌ အာရုံ ပြုသောအားဖြင့် တည်ပုံအခြင်းအရာကိုပင် ထင်ရှားပြလို၍ “ယထာသိက္ခာပဒံ န ခေါ ၊ပေ၊ဩလောကေန္တော”ဟု ထပ်၍ဖွင့်သည်။

**န ကေဝလဉ္စာယံ ။** ။ ပါဠိတော်ကိုကြည့်ပါ၊ “သိက္ခာတိ တိသော သိက္ခာ” စသည်ဖြင့်ရင်း, “သာဇီဝံနာမ၊ပေ၊တေံ သာဇီဝံနာမ”ဟု ရင်း, သိက္ခာသာဇီဝ ၂ မျိုး လုံးကို ဖွင့်ပြီးဖြစ်ရကား ထို ၂ မျိုးလုံးကို ရည်ရွယ်၍ “ တေသု သိက္ခတိ၊ တေန ဝုစ္စတိ သိက္ခာသာဇီဝသမာပန္နောတိ ” ဟု ဟောတော်မူသင့်သည် မဟုတ်ပါလော၊ ထိုသို့ ဟောတော်မမူဘဲ အဘယ့်ကြောင့်“တသ္မိံ သိက္ခတိ၊ တေန ဝုစ္စတိ သာဇီဝသမာပန္နော

လည်း၊ အနန္တရဿ- အခြားမဲ့လွန်ပြီးသော၊ တေံ သာဝဇ္ဇံနာမာတိ ဣမဿ ပဒဿ-တေံ၊ပေ၊နာမဟူသော ဤပုဒ်၏၊ ဝါ-နှင့်၊ ဝသေန- အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဝါ-စပ်သဖြင့်၊ တသ္မိံ သိက္ခတီတိ-ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တံ-ထို တသ္မိံ သိက္ခတိဟူသောပုဒ်ကို၊ ဧဝံ - ဤသို့ အခြားမဲ့လွန်ပြီးသော ပုဒ်၏အစွမ်းဖြင့်၊ ကိဥ္စာပိဝုတ္တံ-ပြီ၊ အထခေါ-ထိုသို့ပင် မိန့်တော်မူအပ်ပါသော်လည်း၊ ဧတ္ထ-ဤ တသ္မိံသိက္ခတိဟူသောပုဒ်၌၊ အယံအတ္ထော-ကို၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော-၏၊ (ကိံ)၊တဿာစ သိက္ခာယ-၌လည်း၊ သိက္ခံ-ကို၊ ပရိပူရေန္တော-ဖြည့်ကျင့်လျက်၊ ဝါ-ဖြည့်ကျင့်သောအားဖြင့်၊ သိက္ခတိ-၏၊တသ္မိံစ သိက္ခာပဒေ-၌လည်း၊ အဝီတိက္ကမန္တော-မလွန်ကျူးဘဲ၊ ဝါ-အားဖြင့်၊ သိက္ခတိ-၏၊ ဣတိ-သို့၊ (အတ္ထော ဒဋ္ဌဗ္ဗော။)

တေန ဝုစ္စတိ သာဇီဝသမာပန္နောတိဣဒမ္ပိ - ပန္နောဟူသော ဤစကားကိုလည်း၊ အနန္တရဿ-သော၊ သာဇီဝပဒဿေဝ- ၏ပင်၊ ဝသေန- ဖြင့်၊ ဝါ-ဖြင့်၊ ( ဘဂဝတာ ) ဝုတ္တံ - ပြီ၊ ပန - ထိုသို့ပင် အခြားမဲ့လွန်ပြီးသော ပုဒ်၏ အစွမ်းဖြင့်ပင် မိန့်တော်မူပါသော်လည်း၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ သော- ထိုရဟန်းသည်၊ သိက္ခမ္ပိ- သို့လည်း၊ သမာပန္နော-ပြီ၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ (သာဇီဝသာ

တိ''ဟု ဟောတော်မူပါသနည်းဟု စောဒနာဘွယ်ရှိသောကြောင့်''န ကေဝလဥ္စာယံ'' စသောပါဠိကိုမိန့်သည်၊ ထိုဝါကျ၏ ဆိုလိုရင်းကား–''တေံ သာဇီဝံနာမ''ဟု သာဇီဝ အဖွင့်က နီးကပ်နေသောကြောင့် ထို သာဇီဝနှင့်ဆက်သွယ်၍ ''တသ္မိံ သိက္ခတိ'' ဟု ထို သာဇီဝတခုကိုသာညွှန်ပြသော ဧကဝုစ်ဖြင့် မိန့်တော်မူသည်-ဟူလို၊ ထိုသို့''တသ္မိံ'' ဟု သာဇီဝတခုကိုသာ ညွှန်ပြသော်လည်း အဓိပ္ပါယ်အသားကျမှာ '' သိက္ခာ၌လည်း ဖြည့်ကျင့်သောအားဖြင့် ကျင့်၏၊ သိက္ခာပုဒ်ပါဋ္ဌိတော်ဥပဒေကိုလည်း မကျူးလွန်သော အားဖြင့် ကျင့်၏''ဟု မှတ်ပါ – ဟူလို။

သိက္ခံ ပရိပူရေန္တော ။ ။'' သိက္ခာကိုဖြည့်ကျင့် '' ဟူသည် စာရိတ္တ – ဝါရိတ္တ အားဖြင့် ၂ ပါးပြားသောသီလကို မိမိသန္တာန်၌ဖြစ်စေခြင်းတည်း။ [''ပြုကျင့်ရမည်'' ဟု ပညတ်တော်မူအပ်သော ဥပဇ္ဈာယဝတ် စသော သိက္ခာများကို ပြုကျင့်ကြောင်း ဖြစ်သော (ဝိရတီနှင့်မယှဉ်သော ) စေတနာသည် စာရိတ္တသီလ မည်၏၊ ''ရှောင်ကြဉ် ရမည် '' ဟု တားမြစ်တော်မူအပ်သော ပါရာဇိကစသော သိက္ခာများကို ရှောင်ကြဉ် ကြောင်းဖြစ်သော ဝိရတိသမ္ပယုတ္တစေတနာသည် ဝါရိတ္တသီလမည်၏။]

ဣဒမ္ပိ။ ။ ပိဖြင့် ''တသ္မိံသိက္ခတိ'' ဟူသောစကားကိုပေါင်း၊ သာဇီဝံနာမ ပုဒ်၏ အခြားမဲ့၌ ဆက်၍ မိန့်တော်မူရသောကြောင့် ''တသ္မိံ'' ဟု ဟောတော်မူခဲ့ရုံသာမက, ဤ ပုဒ်ကိုလည်း ( '' သိက္ခာသာဇီဝသမာပန္နော '' ဟု မဟောဘဲ ) '' သာဇီဝသမာ ပန္နော''ဟုသာ ဟောတော်မူရသည်–ဟူလို။

မက , သိက္ခာသို့လည်း ကောင်းစွာရောက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) သိက္ခာသမာပန္နောတိပိ – န္နောဟူ၍လည်း၊ အတ္ထတော - သာမတ္ထိယတ္ထအားဖြင့်၊ ( သာဇီဝသမာပန္နော ပုဒ်က သိက္ခာသမာပန္နောဟူသော အနက်ကိုလည်း ဟောစွမ်းနိုင်သောအားဖြင့်) ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ဟိ-လဒ္ဓဂုဏ်ကို ပြဉုးအံ့၊ ဧဝံ သတိ- သော်၊ (ဤသို့သာဇီဝသမာပန္နောပုဒ်ဖြင့် သိက္ခာသမာပန္နောဟူသော အနက်ကိုလည်း သိအပ်သည်ရှိသော်၊)သိက္ခာသာဇီဝသမာပန္နောတိ ဧတဿ ပဒဿ-၏၊ [သိက္ခာပုဒ် မာတိကာ၌ပါသော ပုဒ်၏] ပဒဘာဇနမ္ပိ-သည်လည်း၊ ပရိပုဏ္ဏံ– ပြည့်စုံတော့သည်၊ဟောတိ - ၏။....သိက္ခာသာဇီဝပဒဘာဇနီယံ– သည်၊ နိဋ္ဌိတံ- ပြီ၊

သိက္ခံ၊ပေ၊အနာဝိကတွာတိ- ကား၊ သိက္ခဥ္စ- သိက္ခာကိုလည်း၊ အပ္ပစ္စက္ခိတွာ-မပယ်စွန့်မူ၍၊ ဝါ-မချမူ၍၊ ဒုဗ္ဗလဘာဝဥ္စ-အားမရှိသူ၏အဖြစ်ကိုလည်း၊ အပ္ပကာသေတွာ - ထင်ရှားမပြမူ၍၊ (မေထုနံ ဓမ္မံ ပဋိသေဝေယျ၌စပ်၊) စ- ဆက်၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ ဒုဗ္ဗလျေ– အားမရှိသူ၏ အဖြစ်ကို၊ အာဝိကတေပိ– ထင်စွာ ပြုအပ်ပြီးပါသော်လည်း၊ [ ''ယံနူနာဟံ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျံ''စသည်ဖြင့် ထင်စွာပြုပြီးပါသော်လည်း၊]သိက္ခာ-သိက္ခာသည်၊ ဝါ-ကို၊ အပ္ပစ္စက္ခာတာဝ- မပယ်စွန့်အပ်သေးသည်သာ၊ ဝါ - မချအပ်သေးသည်သာ၊ ဟောတိ၊ သိက္ခာယ-ကို၊ ပစ္စက္ခာတာယပန- ပယ်စွန့်အပ်ပြီးသော်ကား၊ ဒုဗ္ဗလျံ-သည်၊ ဝါ-ကို၊

**သမာပန္န ၂ မျိုး။** ။ထို စာရိတ္တ ဝါရိတ္တ သီလ ၂ မျိုးကို မိမိသန္တာန်၌ဖြစ်အောင် ဖြည့်နေသောရဟန်းသည် သိက္ခာသမာပန္နမည်၏၊သိက္ခာပုဒ်ဥပဒေတော်များကို မလွန်ကျူးဘဲ စောင့်စည်းသောရဟန်းသည် သာဇီဝသမာပန္နမည်၏၊ ထိုသို့ သိက္ခာပုဒ်ကို ဖြည့်ခြင်း, သာဇီဝကို မလွန်ကျူးခြင်းကိုပင် ''သိက္ခတိ''အရ''ကျင့်ခြင်း''ဟု ခေါ်၏။ [ သီလသံဝရပူရဏံ သာဇီဝါနတိက္ကမနဥ္စာတိ ဧဒမေဝစ ဒွယံ ဣဓ သိက္ခနံနာမာတိ အဓိပ္ပါယော။ ]

**မှတ်ချက်။** ။ဆိုင်ရာသီလကို ဖြည့်ကျင့်သောအားဖြင့် ဝိရတိဖြစ်ခိုက်၌သာ သိက္ခာသမာပန္နဖြစ်၏၊ သာဇီဝသမာပန္နကား ဝိရတိစေတနာ ဖြစ်ခိုက်၌ရင်း , တစ်စုံတခုကို ပြုလုပ်ခိုက်–အိပ်ပျော်နေခိုက်၌ရင်း ဖြစ်သည် ဟု မှတ်။ [ဥပမာနှင့်တကွ ဆောင်ပုဒ်ကို ပါတိမောက်ဘာသာဋီကာ၌ ပြထားသည်။]

**အပ္ပစ္စက္ခာယ ။** ။ '' အပ္ပစ္စက္ခိတွာ '' ဟု ဖွင့်သောကြောင့် ပစ္စက္ခာယ၌ ပတိ+ အာပုဗ္ဗ ခါဓာတ်သည် ပယ်စွန့်ခြင်းအနက်ဟောဟု သိစေ၏၊ တွာကို ယပြု၍ ''ပစ္စက္ခာယ''ဟု ဖြစ်၏၊ သီဟိုဠ်ဂဏ္ဌိပုဒ် ၃ စောင်လုံး၌ကား ''ပစ္စက္ခာယ=ပစ္စက္ခာတာယ'' ဟု ပါ၍ ၂ မျိုးပြသတတ်၊ ထိုတွင် ''ပစ္စက္ခာတာယ''သည် ရုပ်နေမကောင်း။ [ရဟန်းခံကို ''သိက္ခာတင်ခြင်း''ဟု ယူဆ၍ သိက္ခာစွန့်ခြင်းကို''သိက္ခာချ''ဟု ခေါ်ကြသည်။]

အာဝိကတမေ၀-ထင်စွာပြုအပ်ပြီးတော့သည်သာ၊ ဟောတိ၊ တသ္မာ,ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတ္တာတိ ဣမိနာ ပဒေန – ဖြင့်၊ ကောစိ – တစုံတခုသော၊ ဝိသေသတ္ထော-ထူးသောအနက်ကို၊ နလဗ္ဘတိ-မရအပ်၊ ပန-ထိုသို့ထူးသောအနက်ကို မရအပ်ပါသော်လည်း၊ ဒိရတ္တ၊ပေ၊ကပ္ပေယျာတိ- ဟူ၍၊ ဝုတ္တေ - မိန့်တော်မူအပ်သော်၊ ဝါ – မိန့်တော်မူအပ်ရာ၌၊ ဒိရတ္တ၀စနေန – ဒိရတ္တသဒ္ဒါဖြင့်၊ ကောစိ ဝိသေသတ္ထော နလဗ္ဘတိ၊ ကေ၀လံ- ဘက်သက်၊ လောကဝေါဟာရ ၀သေန – လောက၌ ပြောရိုး၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဗျဥ္ဇနသိလိဋ္ဌတာယ – သဒ္ဒါတို့၏ ပြေပြစ်ညက်ညောကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ငင်း၊ မုခါရူဠှတာယ – နှုတ်သို့ တက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ငင်း၊ ဧတံ – ဤ ဒိရတ္တံဟူသော သဒ္ဒါကို၊ ဝုတ္တံ ယထာ - ဟောတော်မူအပ်သကဲ့သို့၊ ဧ၀ံ–ဤအတူ၊ ဣဒမ္ပိ-ဤ ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိ ကတ္တာဟူသောပုဒ်ကိုလည်း၊ပေ၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ။

ဝါ-တနည်း၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ ဘဂဝါ-သည်၊ သာတ္ထံ- သော၊ သဗျဥ္ဇနံ–သော၊ဓမ္မံ-ကို၊ ဒေသေတိ-၏၊တသ္မာ၊ သိက္ခံ အပ္ပစ္စက္ခာယာတိ ဣမိနာ-ပုဒ်ဖြင့်၊ အတ္ထံ-အနက်ကို၊သမ္ပာဒေတွာ-ပြည့်စုံစေ၍၊ ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတ္ဝာတိ ဣမိနာ-ဖြင့်၊ ဗျဥ္ဇနံ– သဒ္ဒါကို၊ သမ္ပာဒေတ် - ပြည့်စုံစေတော်မူ၏၊ ဟိ – အကျိုးကား၊

**ဒုဗ္ဗလျံ**။ ။ဒုဗ္ဗလဘာဝ၌ကိုကြည့်၍ "ဒုဗ္ဗလဿ + ဘာဝေါ ဒုဗ္ဗလျံ"ဟု ပြု၊ ဏျ ပစ္စည်းသက်၊ (ဥက္ကဋ္ဌီတောစသည်ကို ကြည့်၍)သိက္ခာကို ဖြည့်ကျင့်ဘို့ရန်ငင်း, သိက္ခာ ပုဒ်ကို မလွန်ကျူးဘဲ စောင့်ထိန်းဘို့ရန်ငင်း , သဒ္ဓါအား – ဝီရိယအား နည်းပါးလျက် ရဟန်းဘဝ၌ ငြီးငွေ့ခြင်း မပျော်ခြင်း လူထွက်လိုခြင်းကို " ဒုဗ္ဗလျ "ဟု ဆိုသည်။

**ဒိရတ္တ တိရတ္တံ**။ ။၃ ညဥ့်တိုင်အောင် အိပ်နိုင်လျှင် ၂ ညဥ့်အိပ်မှာ အထူးဆိုဘွယ် မလို၊ သို့သော် လောက၌"၂ ခု ၃ ခု, ၂ ယောက် ၃ ယောက်, ၄ ခု ၅ခု"စသည်ဖြင့် အောက်အောက် သင်္ချာနှင့် တွဲ၍ စကား သုံးစွဲလေ့ရှိ၏၊ ဘာ့ကြောင့် တွဲ၍ သုံးစွဲလေ့ ရှိသနည်း – ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ " ဗျဥ္ဇနသိလိဋ္ဌတာယ မုခါရူဠှတာယ " ဟု မိန့်၊ ဤသို့ တွဲ၍သုံးစွဲသဖြင့် ဒိရတ္တနှင့် တိရတ္တသဒ္ဒါတို့ ရွတ်ဆိုရာ၌ ချောမောသွားကြသည်၊ ဤသို့ တွဲ၍သုံးစွဲဘို့ရန်လည်း လူတို့မှာ နှုတ်တက်နေသည်၊ ထို့ကြောင့်"လောကဝေါဟာရ– လောက၌ သုံးစွဲရိုးဖြစ်နေသည်" ဟူလို၊ သိလိဋ္ဌာနံ+ဘာဝေါ သိလိဋ္ဌတာ၊ ဗျဥ္ဇနာနံ+ သိလိဋ္ဌတာ ဗျဥ္ဇနသိလိဋ္ဌတာ၊ မုခံ+အာရူဠှံ မုခါရူဠှံ၊ မုခါရူဠှဿ+ ဘာဝေါ မုခါရူဠှ တာ။ [ယသ္မာ ဝေရုပံ ဝစနံ လောကဿ မုခံ အာရူဠှံ , တသ္မာတိအတ္တော။]

**ဗျဥ္ဇနံ သမ္ပာဒေတိ**။ ။ "သိက္ခံ အပ္ပစ္စက္ခာယ"၏ အနက်ကိုပင် အနက်အထူး မရှိသော "ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတွာ" ဟူသော ပရိယာယ်သဒ္ဒါတမျိုးဖြင့် လဲလှယ်၍ သုံးစွဲ ခြင်းကို " ဗျဥ္ဇနံ သမ္ပာဒေတိ " ဟု ဆိုသည်။ [ တဿ ဝိသုံ အတ္ထာဘာ၀တော ဝုတ္တ မေ၀ အတ္ထံ အညဒဒေန ဒီပေန္တော (ပြသောအားဖြင့်) ဗျဥ္ဇနံ သမ္ပာဒေတိ။]

(တနည်း) ဟိ ယသ္မာ၊ ပရိဂ္ဂါရကပဒ ဝိရဟိတံ- အခြံအရံပုဒ်မှ ကင်းသော၊ ကေမေဝ - တခုတည်းသာလျှင်ဖြစ်သော၊ အတ္ထပဒံ - အနက်ကို ပြတတ်သော ပုဒ်သည်၊ ဝါ - ကို၊ ဝုစ္စမာနံ - မိန့်တော်မူအပ်သော်၊ ပရိဝါရ ဝိရဟိတော- အခြံအရံမှကင်းသော၊ ရာဇာဝိယစ - သည်ကဲ့သို့ငှင်း၊ ဝတ္တာလင်္ကာရ ဝိရဟိတော-အဝတ်တန်ဆာမှကင်းသော၊ ပုရိသောဝိယစ-သို့ငှင်း၊ န သောဘတိ-မတင့်တယ်၊ ပန-အနွယကား၊ ပရိဝါရကေန - အခြံအရံဖြစ်သော၊ အတ္ထာနု လောမေန - မူလပုဒ်နက် အားလျော်သော၊ သဟာယပဒေန - အဖေါ်ဖြစ်သော ပုဒ်နှင့်၊ သဒ္ဓိံ၊ (ဝုစ္စမာနံ- ဆိုအပ်သော်၊ ဝါ-သော၊) တံ- ထိုပုဒ်သည်၊ သောဘတိ၊ ဇုတိ - ၌ ကားအကျိုးတည်း၊ ( တနည်း ) ဇုတိ - ထို့ကြောင့်၊ (ဒုဗ္ဗလျံအနာဝိကတွာတိ ဇုမိနာ ဗျဥ္ဇနံ သမ္ဗာဒေတိ။)

ဝါ- တနည်း၊ ယသ္မာ , သိက္ခာပစ္စက္ခာနဿ - သိက္ခာပစ္စက္ခာနသဒ္ဒါ၏၊ ကေစ္စိ- အချို့သော၊ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မံ- ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မသည်၊ အတ္ထော - အနက် သည်၊ ဟောတိ၊တသ္မာ၊ နံ- ထိုအနက်ဖြစ်သော ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မကို၊ [နံ- အတ္ထ ဘူတံ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မံ၊] သန္ဓာယ-၍၊ သိက္ခံအပ္ပစ္စက္ခာယာတိပဒဿ-၏၊ အတ္ထံ- အနက်ကို၊ ဝိဘရန္တော - ဖွင့်ပြတော်မူလိုသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိ

ပရိဝါရကပဒဝိရဟိတံ ဟိ။ ။၌ဝါကျ၊ကား ဗျဥ္ဇနကို ပြည့်စုံစေရခြင်း၏ အကျိုးပြ ဝါကျတည်း၊ ထို တင့်တယ်ခြင်းအကျိုးကို ရစေလိုသောကြောင့် ဗျဥ္ဇနကို ပြည့်စုံစေရ သည် – ဟူလို၊ ထိုသို့ အကျိုးပြဝါကျကိုပင် ဗျဥ္ဇနကို ပြည့်စုံစေရခြင်း၏ အကြောင်းပြ (ကာရိယဉာပကဟိတ်) လည်း ဖြစ်နိုင်သောကြောင့် ဋီကာ၌ "ဝုတ္တမေဝ အတ္ထံ ကာရ ဏေန ဝိဘာဝေန္တော အာဟ—ပရိဝါရက ပဒဝိရဟိတံ ဟီတိ အာဒိ"ဟု အကြောင်းပြ အဖြစ်ဖြင့် ကျမ်းတက်ပြသည်။ [အတ္ထဒီပကံ+ပဒံ အတ္ထပဒံ။]

ကေစ္စံ၊ပေ၊ အတ္ထော။ ။ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မသည် သိက္ခာကျကြောင်း တမျိုး , မကျ ကြောင်း တမျိုး ဟု ၂ မျိုး ရှိ၏၊ ( ပါဠိတော်ကြည့်ပါ၊ ) ထိုတွင် သိက္ခာကျကြောင်း ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မကို ရည်ရွယ်၍"ကေစ္စံ၊ပေ၊အတ္ထော ဟောတိ"ဟု မိန့်သည်၊ အချို့ဒုဗ္ဗလျာ ဝိကမ္မသည် သိက္ခာပစ္စက္ခာနသဒ္ဒါ၏ အနက်ဖြစ်၏၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနသဒ္ဒါနှင့် အနက် အမိပ္ပါယ်တူ၏— ဟူလို၊ မှန်၏— "ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိ" ဟု သိက္ခာချလိုက်လျှင် သိက္ခာကို ဖြည့်ကျင့်ဘို့ရန် အားမရှိတော့ကြောင်း (ဒုဗ္ဗလျဖြစ်နေကြောင်း) ကိုလည်း ထင်စွာပြပြီး ဖြစ်တော့သည်။

ဋီကာ။ ။ ကိဥ္စာပိ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိအာဒိသိက္ခာပစ္စက္ခာနဝစနဿ (အစရှိသော သိက္ခာချကြောင်းသဒ္ဒါ၏) ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မံ (သည်) ပဒတ္ထော န ဟောတိ=ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မ သည် သိက္ခာပစ္စက္ခာနသဒ္ဒါ၏ ပုဒ်နက် မဟုတ်သည်ကား မှန်ပါပေ၏၊ တထာပိ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ ဝုတ္တေ သိက္ခာပရိပူရဏေ ဒုဗ္ဗလျာဝိဘာဝဿာပိ ဂမျမာနတ္တာ သိက္ခာ ပစ္စက္ခာနဿ ကေစ္စံ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မံ အတ္ထော ဟောတီတိ ဝုတ္တံ။

ကတ္တာတိ အာဟ၊ တတ္ထ-ထိုဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတ္ဝာဟူသော ပါဌ်၌၊ (ဌတ္ဝာ-၍၊ ကဿစိ-တစုံတယောက်၏၊ စောဒနာ-စေဒနာခြင်းသည်၊)သိယာ၊(ကိံ)၊ ယသ္မာ, သမ္ဘံ- သော၊ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မံ - ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မသည်၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ-သိက္ခာချကြောင်းစကားသည်၊ န- မဟုတ်၊ တသ္မာ, ဒုဗ္ဗလျံအနာဝိကတ္ဝာတိ-ဟူ၍၊ ပဌမံ,ဝတ္ဝာ-မိန့်တော်မူပြီး၍၊ဝါ-မိန့်တော်မူပြီးမှ၊ တဿ-ထိုဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မ၏၊အတ္ထနိယမနတ္ထံ-အနက်ကိုမှတ်သားခြင်းအကျိုးငှါ၊သိက္ခံအပစ္စက္ခာယာတိ-ဟူ၍၊ ဝတ္တဗ္ဗံ-မိန့်တော်မူထိုက်သည်မဟုတ်ပါလော၊ ဣတိ-သို့၊ (စောဒနာသိယာ၊ ) တဒ္ဓ - ထို စကားကိုလည်း၊ န ( ဝတ္တဗ္ဗံ )၊ ကသ္မာ၊ အတ္ထာနုက္ကမာဘာဝတော-အနက်အစဉ်၏ မဖြစ်ခြင်းကြောင့်တည်း၊ ဟိ-ချဲ့၊ သိက္ခာသာဇီဝသမာပန္နောတိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တတ္တာ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီး၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ယံသိက္ခံ-အကြင်သိက္ခာသို့၊ သမာပန္နော-ပြီ၊ တံ-ထိုသိက္ခာကို၊ အပစ္စက္ခာယ- ၍၊ ဣတိ-သို့၊ ဝုစ္စမာနေ-မိန့်တော်မူအပ်သော်၊ ဝါ-မှ၊ အနုက္ကမေန- အစဉ်အားဖြင့်၊ အတ္ထော-အနက်သည်၊ ဝါ-ကို၊ ဝုတ္တော- မိန့်တော်မူအပ်သည်မည်သည်၊ ဝါ-မိန့်တော်မူအပ်ရာ ရောက်သည်၊ ဟောတိ၊ အညထာ – တပါးသောအခြင်းအရာအားဖြင့်၊ န ( ဟောတိ )၊ [ အနက်အစဉ် မတဲ့သောအားဖြင့် မိန့်တော်မူအပ်ရာ မရောက်-ဟူလို။] တသ္မာ၊ ဣဒမေဝ- ဤသိက္ခံအပစ္စက္ခာယဟူသောပုဒ်ကိုသာ၊ ပဌမံ ဝုတ္တံ၊ ဣတိ- ဤသို့ မှတ်အပ်၏။အပိစ- သည်သာမကသေး၊

**တဿ အတ္ထနိယမနတ္ထံ ။** ။ ပါဠိတော်၌ "သိက္ခံ အပစ္စက္ခာယ, ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတ္ဝာ"ဟု ရှိ၏၊ ထိုသို့ မဟောဘဲ"ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတ္ဝာ"ဟု ရှေးဦးစွာ ဟောပြီးမှ ထို ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မကို"သိက္ခာကျကြောင်း ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မ" ဟု မှတ်သားဖို့ရာ "သံ ကံ့အပစ္စက္ခာယ"ဟု နောက်မှ ဟောတော်မူသင့်သည် မဟုတ်လော- ဟု စောဒနာသည်၊ ထိုစောဒနာကို"တံ + န"စသည်ဖြင့် အကျဉ်းဖြေပြီးလျှင်"သိက္ခာသာဇီဝသမာပန္နော" ဟု သိက္ခာကို ရှေ့ထား၍ ဟောတော်မူခဲ့သည်အား လျော်စွာ"သိက္ခံ အပစ္စက္ခာယ"ကို ရှေ့ထား၍ ဟောတော်မူမှ ရှေ့နောက် အစဉ်ကျသောကြောင့် "သိက္ခံအပစ္စက္ခာယ"ကို ရှေ့ထားလျက် ဟောတော်မူသည်-ဟု အကျယ်ဖြေသည်။

**အပိစ ။** ။ ဤ အပိစတက်သော ဝါကျ၌ သိက္ခာပစ္စက္ခာနနှင့် ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မတို့ လုံးလုံး အဓိပ္ပါယ် မတူကြ၊ ထို့ကြောင့် "တတ္ထ ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတ္ဝာ" ကို ထောက်၍ "ဒုဗ္ဗလျံ– သိက္ခာပုဒ်ဟူသော သာဇီဝ၌ မလွန်ကျူးမိအောင် စောင့်စည်းဖို့ရန် သဒ္ဓါအား, ဝီရိယအား မရှိသူ၏ အဖြစ်ကို " ဟု အနက် အဓိပ္ပါယ် မှတ်ပါ၊ ရှေးအဖွင့်များ အလိုအားဖြင့်ကား သိက္ခာပစ္စက္ခာနနှင့် ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မတို့ အနက်အဓိပ္ပါယ် တူကြ၏၊ ထို့ကြောင့် ရှေးနည်းများ၌ "ဒုဗ္ဗလျံ–သိက္ခာ ( သီလ ) ကို ဖြည့်ကျင့်ခြင်း၌ သဒ္ဓါအား, ဝီရိယအား မရှိသူ၏ အဖြစ်ကို"ဟု အနက် အဓိပ္ပါယ်မှတ်ပါ။

အနုပဋိပါဋိယာပိ-အစဉ်အတိုင်းအားဖြင့်လည်း၊ ဧတ္တ-၌ သိက္ခံ အပ္ပစ္စက္ခာယ ဒုဗ္ဗလျံ အနာဝိကတွာဟူသောပုဒ်၌၊ အတ္ထော ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ကထံ-အဘယ်သို့ သိထိုက်သနည်း၊ သိက္ခာ ၊ပေ၊ သမာပန္နောတိ ဧတ္ထ – ၌၊ပေ၊ ယဥ္စသာဇီဝံ– သို့လည်း၊ သမာပန္နော၊ တတ္ထ – ထိုသာဇီဝ၌၊ ဒုဗ္ဗလျံ – ကို၊ အနာဝိကတွာ၊ (မေထုနံ ဓမ္မံ ပဋိသေဝေယျ၌စပ်၊) ဣတိ-သို့၊ (ဝေဒိတဗ္ဗော၊)

ဣဒါနိ – ၌၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာန ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မာနံ – ကမ္မတို့၏၊ ဝိသေသာ ဝိသေသံ – ထူးကုန်သည်၏အဖြစ်, မထူးကုန်သည်၏အဖြစ်ကိုင်း၊ [ဘာဝပ္ပ ဓာန၊]သိက္ခာပစ္စက္ခာန လက္ခဏဉ္စ-သိက္ခာချခြင်း၏ လက္ခဏာကိုင်း၊ ဒဿေ န္တော-လိုသည်၊(ဟုတွာ၊)အတ္ထိ ဘိက္ခဝေတိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ-ပြီ၊တတ္ထ-ထို အတ္ထိဘိက္ခဝေ အစရှိသောစကားရပ်၌၊ အတ္ထိဘိက္ခဝေတိ ဒ္ေါဒိနိ- နှ်သော၊ ဒွေ - ၂ ပုဒ်တို့သည်၊ မာတိကာပဒါနိ – မာတိကာပုဒ်တို့တည်း၊ [ အကျယ်ချဲ့ ပြလို၍ မာတိကာခေါင်းစဉ်ထားသည်-ဟူလို၊] တာနိ-ထို မာတိကာပုဒ်တို့ကို၊ ဝိဘဇန္တော-အကျယ်ဝေဘန်တော်မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ)၊ ကထဉ္စ ဘိက္ခဝေတိ အာဒိမာဟ၊ တတြ-ထို ကထဉ္စဘိက္ခဝေ အစရှိသောစကားရပ်၌၊ ဒ္ေယံ-၌ ကား၊ အနုတ္တာနပဒ ဝဏ္ဏနာ–တည်း၊ ကထံတိ–ကား၊ ကေနအာကာရေန- အဘယ်အကြောင်းကြောင့်၊ (ဟောတိ- နည်း၊) ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မဉ္စာတိ - ကား၊ ဒုဗ္ဗလျဿ-အားမရှိသူ၏အဖြစ်ကို၊ အာဝိကမ္မဉ္စ- ထင်စွာ ပြုခြင်းသည်လည်း၊ (ဟောတိ - နည်း၊) [ပါဠိတော် ပဋ္ဌမပုဒ်၌ ကမ္မဉ္စေဝဟု "ဧဝ"ဖြင့်ရှိသည်၊]

**ဝိသေသာဝိသေသံ**။ ။ [ပါဠိတော်ကြည့်ပါ၊] " ယံနူနာဟံ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျံ– ဘုရားစွန့်ရလျှင် ကောင်းမှာဘဲ" ဟု ကြံရုံသာ ရှိသေးလျှင် ထိုစကားသည် သိက္ခာပစ္စက္ခာန မဟုတ်သေး၊ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မသာဖြစ်သေး၏၊ ၎င်းစကားမျိုးကိုရည်ရွယ်၍"သိက္ခာ ပစ္စက္ခာနနှင့် ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မတို့ ဝိသေသဖြစ်ကြသည် – ဟု ဆိုသည်၊ " ဗုဒ္ဓံပစ္စက္ခာမိ– ဘုရားကိုစွန့်၏ " ဟု ဆိုလျှင် ထိုစကားမျိုးသည် သိက္ခာပစ္စက္ခာနလည်းဖြစ်, ဒုဗ္ဗလျာဝိ ကမ္မလည်းဖြစ်၏၊ ၎င်းစကားမျိုးကိုရည်ရွယ်၍ "အဝိသေသ"ဟု ဆိုသည်။

**သိက္ခာ၊ပေ၊လက္ခဏံစ**။ ။ [ ပါဠိတော်ကိုကြည့်ပါ၊ ] "ဥက္ကဏ္ဌိတော၊ပေ၊ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ ဝဒတိဝိညာပေတိ"ဟု ရှိ၏၊ "ဥက္ကဏ္ဌိတော"စသည်ဖြင့် သိက္ခာချလိုသော စိတ်ကိုင်း , " ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိ " စသည်ဖြင့် သိက္ခာချကြောင်း စကားအသုံးအနှုန်း ဟူသောခေတ်နှင့် ပစ္စုပ္ပန်ကာလစသည်ကိုင်း, ဝဒတိဖြင့် ဝစီပယောဂကိုင်း, ဝိညာ ပေတိဖြင့် သိက္ခာချရာ ( သိက္ခာချမှုကို နားထောင်သော ) ပုဂ္ဂိုလ်က သိခြင်းကိုင်း, " အရိယော အရိယဿ သန္တိကေ ပစ္စက္ခာတိ " စသည်ဖြင့် သိက္ခာချရာပုဂ္ဂိုလ်ကိုင်း, ၎င်းသို့ သိက္ခာချခြင်း၏ လက္ခဏာ (အင်္ဂါ) ကို ပြတော်မူသည်။ [စိတ်-ခေတ်-ကာလ, ပယောဂနှင့်, ပုဂ္ဂလဝိဇာနန်, ၎င်းခြောက်တန်, မှတ်ရန် သိက္ခာကျကြောင်းတည်း။]

ဍရခါတိ-ကား၊ ဍရမသ္မိံ သာသနေ-၌၊ ဥက္ကဏ္ဌိတောတိ-ကား၊ အနဘိရတိယာ - မမွေ့လျော်ခြင်းကြောင့်၊ ဍရမသ္မိံ သာသနေ - ၌၊ ကိစ္ဆဇီဝိကပ္ပတ္တော-ဆင်းရဲငြိုငြင်စွာ အသက်ရှင်ရခြင်းသို့ရောက်သည်၊ အထဝါ- ထို့ပြင် တနည်းကား၊ အဇ္ဇ-ယနေ့၊ ယာမိ-သွားတော့အံ့၊ သွေ-၌၊ ယာမိ- အံ့၊ ဍရတော-၍ အရပ်မှ၊ ဝါ-၍ကျောင်းတိုက်မှ၊ ယာမိ-အံ့၊ [ဍရတော ဌာနတော၊ ဍရတော ဝိဟာရတောဝါ၊] ဍေ- ၍ မည်သောအရပ်သို့၊ ဝါ- ၍ မည်သောကျောင်းတိုက်သို့၊ [ဍေ္တာတိ ဂန္တုံ၊ ဍရန္တိတပဒေသံ ဝဒတိ၊] ယာမိ- အံ့၊ ဍရတိ-၍သို့ ကြံ၍၊ ဥဒ္ဓံ-အထက်၌၊ ကဏ္ဍုံ- လည်ပင်းကို၊ ကတွာ- ၍၊ (တနည်း) ဥဒ္ဓံ ကဏ္ဍုံ ကတွာ-လည်တမော့မော့လုပ်၍၊ ဝိဟာရမာနော-နေသည်၊ ဝိက္ခိတ္တော-အထူးထူး ပစ်လွှင့်အပ်သောစိတ် ရှိသည်၊ ဝါ - ပြန့်လွင့်သောစိတ်ရှိသည်၊ အနေကဂ္ဂေါ-တခုတည်းသော အာရုံမရှိသည်၊ ဝါ-မတည်ကြည်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ [ဝဒတိ ဝိညာပေတိ - ၌စပ်၊] ဍရတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ အနဘိရတောတိ- ကား၊ သာသနေ-၌၊ အဘိရတိဝိရဟိတော - မွေ့လျော်ခြင်းမှကင်းသည်၊ သာမညာ စဝိတုကာမောတိ- ကား၊ သမဏဘာဝတော- မှ၊ အပဂန္တုကာမော- ဖဲခွါလိုသည်၊ (ဟုတွာ)၊ [ဝဒတိ ဝိညာပေတိ-၌စပ်။]

ဘိက္ခုဘာဝန္တိ-ကား၊ ဘိက္ခုဘာဝေန-ရဟန်းအဖြစ်ဖြင့်၊ (ဧတံ-၍ ဘိက္ခုဘာဝံသဒ္ဒါသည်၊) ကရဏတ္ထေ-၌၊ ဥပယောဂဝစနံ-ဒုတိယာဝိဘတ်ရှိသော သဒ္ဒါတည်း၊ ပန - ဆက်၊ ကဏ္ဍေ အာသတ္တေန အန္ဓိယေယျာတိ အာဒီသု-

**ကိစ္ဆဇီဝိကပ္ပတ္တော။** ။ ခါတ်ကျမ်းတို့၌ “ ကဌ – ကိစ္ဆဇီဝနေ ” ဟု ဆိုသောကြောင့်“ကိစ္ဆဇီဝိကပ္ပတ္တော”ဟု ခါတ်နက်ဖွင့်သည်၊ ဥ – အနက်ထူးမရှိ၊ ဥက္ကဏ္ဌနံ-ဆင်းရဲစွာ အသက်ရှင်ရခြင်း၊ ဥက္ကဏ္ဌာ– ခြင်း၊ ဥက္ကဏ္ဌံ– သို့+ဣတော (ပတ္တော)– ရောက်သူတည်း၊ ဥက္ကဏ္ဌိတော—သူ၊ (ဋီကာ)။

**ဥဒ္ဓံ ကဏ္ဍုံ ကတွာ။** ။ဥသည် ဥဒ္ဓံအနက်ဟောတည်း၊ ဥဒ္ဓံ+ကဏ္ဍော ဥက္ကဏ္ဍော၊ ဥက္ကဏ္ဍော သဉ္ဇာတော အဿာတိ ဥက္ကဏ္ဍိတော= ဖျင်းရိသည်ဖြစ်၍ လည်တမော့မော့ဖြစ်နေသူ၊ သဉ္ဇာတအဿ အနက်၌ ဣတပစ္စည်း။ [ သဉ္ဇာတာ တာရကာဒိတ္တိတော၊ မောဂ္ဂလ္လာန်,ဏာဒိ-၄၅ သုတ်။ ]

**ကရဏ ေ္ထ။** ။“ဒုံဝိဘတ်သည် ကရိုဏ်းအနက်၌သက်”ဟူရာ၌ ပဋ္ဌမနည်းဝယ် “ဖြင့်” ဟု ပေးရသော ကရိုဏ်းအနက်မှာပင် သက်ရမည်။ [ ဘိက္ခုဘာဝေန ကရဏဘူတေန အတ္တာနံ,အန္ဓိယမာနော-နှိပ်စက်အပ်သူကိုကဲ့သို့ ပြုကျင့်သည်၊ဍရတိအတ္တော၊ ] ဤနည်း၌ ဘိက္ခုဘာဝံကို အဋ္ဌ၌မစပ်ဘဲ ဤယမာနော၌စပ်၊ “ ရဟန်းအဖြစ်ဖြင့် + မိမိကိုယ်ကို (နှိပ်စက်အပ်သူ=အနှိပ်စက်ခံရသူကဲ့သို့) ပြုကျင့်သည်”—ဟူလို။

တို့၌၊ ယထာလက္ခဏံ- သုတ်အားလျော်စွာ၊ [ " ကရဏော တတိယာ " ကဲ့သို့သော သုတ်အားလျော်စွာ- ဟူလို၊] ကရဏဝစနေနေဝ- ကရိုဏ်းဝိဘတ်ဖြင့်သာလျှင်၊ ဝုတ္တံ - မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ [ ကဥ္စေ - လည်ပင်း၌၊ အာသဇ္ဇေနပြီကပ်စေအပ်, (ဆွဲချိတ်အပ်)သော အကောင်ပုတ်ဖြင့်၊အဋ္ဋီယေယျ-နှိပ်စက်အပ်သူကို ပြုရာ၏၊] အဋ္ဋီယမာနောတိ-ကား၊ အဋ္ဋံ ပီဠိတံ(ဝိယ)-နှိပ်စက်အပ်သူကိုကဲ့သို့၊ ဒုက္ခိတံဝိယ - ဒုက္ခရောက်သူကိုကဲ့သို့၊ အတ္တာနံ - မိမိကို၊ အာစရမာနော - ပြုကျင့်သည်၊ ဝါ - နည်း၊ တေန ဘိက္ခုဘာဝေန-သည်၊ အဋ္ဋော-နှိပ်စက်အပ်သူကို၊ ကရိယမာနော-ပြုအပ်သည်၊ ပီဠိယမာနော - နှိပ်စက်အပ်သည်၊ ဧတိအတ္ထော-နက်၊ ဟရာယမာနောတိ-ကား၊လဇ္ဇမာနော-ရှက်သည်၊ ဇိဂုစ္ဆမာနောတိ-ကား၊ အသုစိံ ဝိယ-မစင်ကိုကဲ့သို့၊ တံ-ထိုရဟန်းအဖြစ်ကို၊ ဇိဂုစ္ဆန္တော - စက်ဆုပ်သည်၊ [တံကိုကြည့်၍ ပါဠိတော်၌ " ဘိက္ခုဘာဝံ"ကို ဇိဂုစ္ဆန္တောစပ်ခိုက် ကံအနက်ပေးရကြောင်း သိပါ။ ] ဂိဟိဘာဝံ ပတ္ထယမာနောတိ အာဒိနိ-ပုဒ်တို့သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထာနိယေဝ၊

ယန္နူနာဟံဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျန္တိ ဧတ္ထ- ၌၊ ယန္နူနာတိ- သဒ္ဒါသည်၊ ပရိဝိတက္က ဒဿနေ- အကြံကိုပြခြင်း၌၊ ( ပဝတ္တော ) နိပါတော၊ ဣဒံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊

**အဋ္ဋံ၊ ပေ၊ အာစရမာနော။** ။အဋ္ဋဓာတ်သည် ဝဓ—ညှဉ်းဆဲနှိပ်စက်ခြင်းအနက်ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့်"အဋ္ဋီယတေတိ အဋ္ဋော"ဟု ပြု၊ တစုံတရာသည် နှိပ်စက်အပ်( အနှိပ်စက်ခံရသော ) အခြားတစုံတယောက် ရှ၏၊ ထို့နောက် လူထွက်လိုသောရဟန်းရအောင်"အတ္တာနံ (အဋ္ဋံဝိယ) အာစရတီတိ အဋ္ဋီယမာနော"ဟု ပြု၊ အဋ္ဋသည်ကမ္မူပမာန, အတ္တာနံကား ဥပမေယျ၊ ကမ္မူပမာန အဋ္ဋသဒ္ဒါနောင် အာစာရအနက်၌ဤယပစ္စည်းသက်၍"အဋ္ဋီယ"ဟု ဖြစ်ပြီးမှ ကတ္တားဟော မာနပစ္စည်းသက်လျှင်"အဋ္ဋီယမာနော " ဟု ဖြစ်၏၊ ဤသို့ ကမ္မူပမာနနောင် ဤယပစ္စည်းသက်ရကြောင်းကို ပြလို၍"အဋ္ဋံ ပီဠိတံ ဒုက္ခိတံဝိယ"ဟု ဖွင့်၏။ [ပီဠိတံသည် သဒ္ဒတ္ထ, ဒုက္ခိတံသည် အဓိပ္ပါယတ္ထ, ဝိယကား ကမ္မူပမာနဇောတက။]

**တေန ဝါ၊ ပေ၊ အတ္ထော။** ။ ဤနည်း၌ကား ဘိက္ခုဘာဝ၌ အံဝိဘတ်သည် တတိယာဝိဘတ်၏ ကတ္တားအနက်၌သက်၊ ထို့ကြောင့် " တေန ဘိက္ခုဘာဝေန + အဋ္ဋော ကရိယမာနော"ဟု ဖွင့်သည်၊"အဋ္ဋော ကရိယမာနော"ဖြင့်"အဋ္ဋ"ဟူသော ဒုတိယန္တ (ဥပမာနလည်း မဟုတ်သော ) ရိုးရိုးနာမ်ပုဒ်နောင် ပြုကျင့်ခြင်းအနက်၌ ဤယ ပစ္စည်းသက်ထားကြောင်းကိုရင်း, ကံဟောမာနပစ္စည်း သက်ထားကြောင်းကိုရင်း သိစေ၏၊ " ပီဠိယမာနော " ကား ဆိုလိုရင်းကိုပြသော ဥဇုကတ္ထအဖွင့်တည်း။ [ တေန ကတ္တုဘူတေန ဘိက္ခုဘာဝေနာတိ အတ္ထော၊ ဧဝမဿိံ ပက္ခေ " အဋ္ဋံ ကရောတီတိ " — ဟူသောအနက်၌ "အဋ္ဋီယသဒ္ဒ နိပ္ဖါဒေတွာ တတော ကမ္မနိ မာနသဒ္ဒေ ကတေ အဋ္ဋီယမာနောတိ ပဒသိဒ္ဓိ ဝေဒိတဗ္ဗာ။]

(ကိ)၊ အဟံ-သည်၊ ဗုဒ္ဓံ- ကို၊ သစေ ပစ္စက္ခေယျံ - အကယ်၍ စွန့်ရငြားအံ့၊ (ဝေဝံသတိ)၊ မေ-၏ (ငါ့အတွက်)၊ သာဓု - ကောင်းသည်၊ သိယာဝတ-ဖြစ်ရ လေစွတကား၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ [၍အဖွင့်ကိုကြည့်၍ ပါဠိတော်၌"ယန္နူန ပစ္စက္ခေယျံ-အကယ်၍စွန့်ရမူကား ကောင်းလေစွ"ဟုပေး၊]ဝဒတိ ဝိညာပေ တီတိ-ကား၊ ဣမံအတ္ထံ-၍ဘုရားကိုစွန့်ရလျှင် ကောင်းလေစွဟူသော အနက် ကို၊ စေတေဟိ ဗျဥ္ဇနေဟိဝါ-၍ ယန္နူနာဟံဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျံဟူသော သဒ္ဒါတို့ဖြင့် သော်၎င်း၊ အညေဟိ ဗျဥ္ဇနေဟိ ဝါ - အခြားသော ပရိယာယ်သဒ္ဒါတို့ဖြင့် သော်၎င်း၊ ဝစီဘေဒံ-စကားလုံး၏ ကွဲပြားမှုကို၊ ဝါ- နှုတ်မြွက်မှုကို၊ ကတွာ- ၍၊ ဝဒတိစ-ပြောလည်းပြော၏၊ ယဿ - အကြင်သူအား၊ ဝဒတိ-၏၊ တံ-ထို သူ့ကို၊ ဝိညာပေတိ ဇာနာပေတိစ-သိလည်းသိစေ၏၊[နားလည်း လည်စေ၏- ဟူလို၊] ဝေဒိတိ (ဧတ္ထ) - ၌၊ ဝိကာရော- ဝိအက္ခရာသည်၊ ဥပရိမတ္တ သမ္ပိဏ္ဍာ နတ္တော-အထက် ဆိုအပ်လတ္တံ့သောအနက်ကို ပေါင်းခြင်းအနက်ရှိ၏၊ [ဝုတ္တာ ပေက္ခ(ဆိုပြီးငဲ့သော)သမ္ပိဏ္ဍာနမဟုတ်,ဝုစ္စမာနာပေက္ခ(ဆိုအပ်လတ္တံ့ငဲ့သော) သမ္ပိဏ္ဍာန-ဟူလို၊]ဝေဓိ-၍အခြင်းအရာအားဖြင့်လည်း၊ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မဉ္စေဝ- သည်၎င်း၊ သိက္ခာ - သည်၊ ဝါ- ကို၊ အပစ္စက္ခာတာစ-မပယ်စွန့်အပ်သည်၎င်း၊ ဝါ-မချအပ်သည်၎င်း၊'ဟောတိ-၏၊ အညထာပိ - တပါးသော အခြင်းအရာ အားဖြင့်လည်း၊(ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မဉ္စေဝ ဟောတိ, သိက္ခာစ အပ္ပစ္စက္ခာတာ၊)

ဣဒါနိ-၌၊ အညထာပိ- ဖြင့်လည်း၊ တံ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မံ(စ)- ကို၎င်း၊ သိက္ခာ ယ-၏၊ ဝါ-ကို၊ တံ အပ္ပစ္စက္ခာနံစ- ထိုမပယ်စွန့်ခြင်းကို၎င်း၊ (ဝါ- ပယ်စွန့်ရာ မရောက်ပုံကို၎င်း၊) ဒဿေန္တော ( ဟုတွာ ) အထဝါ ပနာတိ အာဒိ - ကို၊ အာဟ၊ တံသဗ္ဗံ- ထိုအလုံးစုံသောစကားရပ်သည်၊ အတ္ထတော - ဖြင့်၊ ဥတ္တာန မေဝ- သည်သာ၊ ပန- ကား၊ ဧတ္ထ- ၌အထဝါ ပနအစရှိသော စကားရပ်၌၊ ပဒတော- ပုဒ်အားဖြင့်၊ [ စုဒ္ဒသပဒါနိ,အဋ္ဌပဒါနိ တို့၌စပ်၊] အာဒိတော- မှ၊ ပဋ္ဌာယ-၍၊ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျံ-ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျံပုဒ်၎င်း၊ဓမ္မံပစ္စက္ခေယျံ-၎င်း၊[နေ၌ ပစ္စက္ခေယျံ ထည့်၍ပေး၊] သံဃံ, သိက္ခံ, ဝိနယံ၊ပေ၊ သဗြဟ္မစာရိံ ပစ္စက္ခေယျံ- ၎င်း၊ ဣတိ - သို့၊ ဣမာနိ စုဒ္ဒသ ပဒါနိ - ၍ တဆဲ့လေးပုဒ်တို့ကို၊ ပစ္စက္ခာနာ ကာရေန-သိက္ခာစွန့်ပုံအခြင်းအရာအားဖြင့်၊ဝုတ္တာနိ- မိန့်တော်မူအပ်ကုန်ပြီ၊

**ပစ္စက္ခာနာကာရေန ။** ။ ပါဠိတော်၌ "ပစ္စက္ခေယျံ–ပစ္စက္ခေယျံ" ဟု ပစ္စက္ခာန ကြိယာပါသောကြောင့် "ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျံ" မှစ၍ "သဗြဟ္မစာရိံ ပစ္စက္ခေယျံ" အထိ ၁၄ ပုဒ်ကို သိက္ခာစွန့်ပုံ အခြင်းအရာပြသော ပုဒ်များ ဟု မှတ်ပါ – ဟု ဆိုလိုသည်။ [ပစ္စက္ခေယျံ ပစ္စက္ခေယျန္တိ ဝုတ္တတ္တာ ပစ္စက္ခာနာကာရသမ္ဗန္ဓေန ဝုတ္တာနိ။]

ဂိဟီအသဿန္တိအာဒီနိ-န်သော၊ ဂိဟီအသံ-ဂိဟီအသံပုဒ်ရင်း၊[နေ၁ံ၌ အသံ ထည့်၍ပေး၊] ဥပါသကော, အာရာမိကော၊ပေ၊ အသကျပုတ္တိယော အသံ– ပုဒ်ရင်း၊ ဇုတိ - သို့၊ ဇုမာနိအဋ္ဌပဒါနိ - တို့ကို၊ အသဿန္တိ - အသံဟူသော၊ ဇုမိနာဘာ၀ဝိကပ္ပါကာရေန-၍အလိုရှိအပ်သောအဖြစ်ကို အမျိုးမျိုးအဖုံဖုံ ကြံစည်ပုံ အခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ ဝုတ္တာနိ၊ ဧဝံ - ၍သို့လျှင်၊ ယန္နူနာဟံတိ ဇုမိနာ-ယန္နူနာဟံဟူသော ၍ပုဒ်နှင့်၊ ပဋိသံယုတ္တာနိ-စပ်ယှဉ်ကုန်သောပုဒ် တို့သည်၊ ဒွါဝီသတိ ပဒါနိ-၂၂ပုဒ်တို့သည်(ဟောန္တိ၊) [ပြခဲ့သော ၁၄ ပုဒ်နှင့် ၈ ပုဒ်ပေါင်းလျှင် ၂၂ ပုဒ် - ဟူလို၊ ] စ - ဆက်၊ တောနိ - ၍ယန္နူနာဟံနှင့် ယှဉ်သောပုဒ်တို့သည်၊ ဒွါဝီသတိပဒါနိ-၂၂ ပုဒ်တို့သည်၊ (ဟောန္တိ) ယထာ- ကဲ့သို့၊ဧဝံ-တူ၊ ယဒိပနာဟံ-ယဒိပနာဟံ ပုဒ်ရင်း၊ အပါဟံ-ပုဒ်ရင်း၊ ဟန္ဒာဟံ– ရင်း၊ ဟောတိမေ- ရင်း၊ ဇုတိ–သို့၊ ဇုမေသု- ၍၄ပုဒ်တို့တွင်၊ ကေမေကေန- နှင့်၊ ပဋိသံယုတ္တာနိ-စပ်ယှဉ်သောပုဒ်တို့သည်၊ဒွါဝီသတိ ဒွါဝီသတိ(ပဒါနိ)- ၂၂ပုဒ် ၂၂ပုဒ်တို့သည်၊(ဟောန္တိ၊)[ယဒိပနပစ္စက္ခေယျံ,အပိပစ္စက္ခေယျံ-စွန့်ရ မူကားကောင်းလေစွ၊ ဟန္ဒ - ယခု၊ ပစ္စက္ခေယျံ- စွန့်တော့အံ့၊ ဗုဒ္ဓံ- ကို၊ ပစ္စ က္ခေယျံ-စွန့်ရာ၏၊ဇုတိ-၍အကြံသည်၊ မေ-ငါ၏၊ ဝါ-ငါ့မှာ၊ ဟောတိ-ဖြစ်၏၊ ၍သို့ ပါဠိတော်၌ပေး။] ဇုတိ- သို့၊ သဗ္ဗာနေဝ - အလုံးစုံသာလျှင်ဖြစ်သော ပုဒ်တို့သည်၊ သတ္တ - တရာလည်းဖြစ်သော၊ ဒသစ - ၁၀ ပါးလည်းဖြစ်ကုန် သော၊ ပဒါနိ-တို့သည်၊(တနည်း)သတ္တ ဒသစ ပဒါနိ-တရာ့ တဆယ်သော ပုဒ်တို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ တတော - ထိုပုဒ်တို့မှ၊ ပရံ - ၌၊ သရိတဗ္ဗဝတ္ထုဒဿန နယေန - အောက်မေ့ထိုက်သောဝတ္ထုကို ပြကြောင်းနည်းဖြင့်၊ ပဝတ္တာနိ- ဖြစ်ကုန်သော၊ မာတရံ သရာမီတိ အာဒီနိ-န်သော၊ သတ္တရသပဒါနိ-၁၇ပုဒ် တို့သည်၊(ဟောန္တိ)၊ [ မာတရံ- ကို၊ သရာမိ - အောက်မေ့၏ , အမှတ်ရ၏, လွမ်း၏၊] တတ္ထ-ထို ပုဒ်တို့တွင်၊ ခေတ္တန္တိ-ကား၊ သာလိခေတ္တာဒိ*-သလေးခင်း

ဂိဟီ။ ။သက္ကတ၌ "ဂြိဟိန်" ဟု ရှိ၏၊ (န်) ပျောက်၍ ဒီဃရောက်လျက် ပါဠိ၌ "ဂိဟီ" ဟု ရှိရသည်၊ "ဂေဟံ ယဿ အတ္ထီတိ ဂိဟီ"ဟု ပြု။

**ဘာ၀ဝိကပ္ပါကာရေန။** ။"ယန္နူနာဟံ ဂိဟီ အသံ=လူဖြစ်ရလျှင်ကောင်းလေစွ" ဟူသည် သူလိုလားအပ်သောအဖြစ်ကို ကြံစည်ခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့်"ဂိဟီအသံ"မှ စ၍ "အသကျပုတ္တိယော အသံ" တိုင်အောင် ရှစ်ပုဒ်ကို မိမိလိုလားသောအဖြစ်ကို ကြံစည်ပုံအခြင်းအရာပြသော ပုဒ်များဟု မှတ်။ [အသံ အသံတိ အာဂတတ္တာ ယံယံ (အကြင် အကြင်အဖြစ်ကို) ဘဝိတုကာမော၊ တဿ တဿ ဘာ၀ဿ ဝိကပ္ပါကာရေ န , ဘိက္ခုဘာ၀တော အညဘာ၀ဝိကပ္ပါကာရေနာတိ အမိပ္ပါယော၊ ယောဇနာ၌ ဘာ၀ကို"အမိပ္ပါယ–အလို"ဟု ဖွင့်သည်ကို စဉ်းစားပါ။]

အစရှိသောလယ်ကို၊ ဝတ္ထုန္တိ–ကား၊ ပဏ္ဏသာကဖလာဖလသမုဋ္ဌာနဋ္ဌာနံ–သစ်ရွက် , ဟင်းရွက် , သစ်သီးငယ် သစ်သီးကြီးများ ထွက်ပေါ်ရာ အရပ်ကို၊ [ ယာခင်းကိုဆိုလိုသည်၊ အိမ်စသည်ကို မိုးဘို့ရာ ဓနိစသည်ကို " ပဏ္ဏ " ဟု ဆိုသည်၊] သိပ္ပန္တိ–ကား၊ ကုမ္ဘကာရ ပေသကာရ သိပ္ပါဒိကံ- အိုးထိန်းသည် အတတ်, ယက်ကန်းသည်အတတ် အစရှိသောအတတ်ကို၊ [သရာမိ - ၌စပ်]၊

တတော-ထိုပုဒ်တို့မှ၊ ပရံ-၌၊သကိဉ္စန သပလိဗောဓ ဘာဝဒဿနဝသေန-ကြောင့်ကျဘွယ်နှင့်တကွ ဖြစ်သူ၏အဖြစ် , အနှောင်အယှက်နှင့်တကွ ဖြစ်သူ၏ အဖြစ်ကို ပြခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ပဝတ္တာနိ - နှ်သော၊ မာတာ မေ အတ္ထိ၊ သာ မယာ ပေါသေတဗ္ဗာတိ အာဒိနိ - နှ်သော၊ နဝပဒါနိ-တို့သည်၊ (ဟောန္တိ၊) [မေ-၏၊ ဝါ-မှာ၊ မာတာ-သည်၊ အတ္ထိ-၏၊သာ-ကို၊ မယာ-သည်၊ ပေါသေ တဗ္ဗာ-လုပ်ကျွေး မွေးမြူထိုက်၏၊] တတော- ထိုပုဒ်တို့မှ၊ ပရံ–၌၊ သနိဿယ သပ္ပတိဋ္ဌဘာဝ ဒဿနဝသေန - မှီရာရှိသူ၏အဖြစ် , တည်ရာရှိသူ၏ အဖြစ်ကို ပြခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ ပဝတ္တာနိ- နှ်သော၊ မာတာ မေ အတ္ထိ၊ သာ မံ ပေါသေ ဿတီတိအာဒီနိ-နှ်သော၊သောဠသပဒါနိ-တို့သည်၊(ဟောန္တိ၊)[သာ-ထိုအမိ သည်၊ မံ-ကို၊ ပေါသေဿတိ-တံ့၊] တတောပရံ, ကေဘတ္တ ကေသေယျ မြဟ္မ စရိယာနံ - တထပ်ထည်းသော ဆွမ်း , တယောက်ထည်းသာ အိပ်ရခြင်း,

သကိဉ္စန သ ပလိဗောဓဘာဝ။ ။[ကိစိ–မဒ္ဒနေ,ခတ်ကျမ်း၊] ကိဉ္စေတိ မဒ္ဒေ တီတိ – ဆိုင်ရာပုဂ္ဂိုလ်ကို နှိပ်နယ်တတ်သောကြောင့် "ကိဉ္စန" မည်၏၊ ပလိဗောဓနှင့် အရတူပင်တည်း၊ ["ပရိပုဗ္ဗ+ဗုဓိ–ဟိံသနေ" ခတ်ကျမ်း။] ပရိဗုန္ဓယတီတိ–ဆိုင်ရာ အလုပ်ကို မလုပ်နိုင်အောင် နှောင့်ရှက် (ညှဉ်းဆဲ) တတ်သောကြောင့် "ပလိဗောဓ" မည်၏၊ ရကို လပြု၊ ဤနေရာ၌ အမိစသည်ကိုပင် " ကိဉ္စန, ပလိဗောဓ " ဟု ဆိုသည်၊ သဟ + ပလိဗောဓေန ယော ဝတ္တတီတိ သကိဉ္စနော = ( မိစီး နှိပ်နယ်တတ်သော) ကြောင့်ကျဘွယ်နှင့် တကွ ဖြစ်သူ၊ သပလိဗောဓော – အနှောင့်အရှက်နှင့်တကွဖြစ်သူ၊ သကိဉ္စနောစ+သော + သပလိဗောဓောစာတိ သကိဉ္စန သပလိဗောဓော။

သနိဿယ သပ္ပတိဋ္ဌဘာဝ။ ။သဟ+နိဿယေန,သဟ+ပတိဋ္ဌာယ ယော ဝတ္တ တီတိ သနိဿယော, သပ္ပတိဋ္ဌော၊ အမိစသော အားကိုးစရာ ရှိသူ၊ သနိဿယောစ+ သော + သပ္ပတိဋ္ဌောစာတိ သနိဿယသပ္ပတိဋ္ဌော၊ တဿ + ဘာဝေါ သနိဿယ သပ္ပတိဋ္ဌဘာဝေါ။ [ပစ္စည်း လုံးဝမရှိသေး၍ အခြေတည်ထောင်ပေးသူကို "မှီရာ" ဟု ရင်း, အခြေခိုင်အောင် ထောက်ပံ့သူကို"တည်ရာ"ဟု ရင်း ခွဲပါ။]

ကေ၊ပေ၊မြဟ္မစရိယာနံ။ ။ကေ + ဘတ္တံ ကေဘတ္တံ၊ ကေ (တယောက်ထည်း) သေယျံ ကေသေယျံ၊ မြဟ္မ+ စရိယံ မြဟ္မစရိယံ၊ " ကေဘတ္တံစ + ကေသေယျံစ+ မြဟ္မ စရိယံစာတိ ကေဘတ္တကေသေယျမြဟ္မစရိယာနိ " ဟု တွဲ။

မြတ်သောအကျင့်တို့၏၊ ဒုက္ကရဘာဝဒဿနဝသေန-ခဲယဉ်းသဖြင့် ပြုအပ်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကို ပြခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ ပဋ္ဌာနိ,ဒုက္ကရနိ အာဒိနိ အဋ္ဌပဒါနိ (ဟောန္တိ)၊ တတ္ထ- ထို ရှစ်ပုဒ်တို့တွင်၊ ဒုက္ကရန္တိ-ဟူသောပုဒ်ဖြင့်၊ ကောဘတ္တာဒိနံ-ကောဘဿအစရှိသည်တို့၏၊ ဝါ-တို့ကို၊ ကရဏေ - ပြုရခြင်း၌၊ ဒုက္ကရတံ-ခဲယဉ်းသဖြင့် ပြုအပ်ကုန်သည်တို့၏ အဖြစ်ကို၊ ဒသ္သေတိ - ပြ၏၊ [ "ဒုက္ကရံ-ခဲယဉ်းသဖြင့် ပြုအပ်၏၊ ဝါ - ပြုနိုင်ခဲ၏" ဟု ပါဠိတော်၌ပေး၊] န သုကရန္တိ-ပုဒ်ဖြင့်၊ သုကရဘာဝံ- လွယ်ကူစွာ ပြုအပ်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကို၊ ပဋိက္ခိပတိ-ပယ်မြစ်၏၊ ["န သုကရံ- လွယ်ကူစွာမပြုအပ်၊ ဝါ- ပြု၍မလွယ်ကူ"ဟု ပေး၊] ဒုစ္စရံ န သုစရန္တိ ဧတ္ထ-ပုဒ်တို့၌၊ ဧဝံ- ဤအတူတည်း၊ [ " ဒုစ္စရံ- ခဲယဉ်းသဖြင့် ကျင့်အပ်၏၊ ဝါ - ကျင့်နိုင်ခဲ၏၊ န သုစရံ- လွယ်ကူစွာမကျင့်အပ်၊ ဝါ-ကျင့်၍မလွယ်ကူ"ဟု ပေး၊] န ဥဿဟာမိတိ - ပုဒ်ဖြင့်၊ တတ္ထ- ထို ကောဘတ္တစသည်တို့၌၊ ဥဿာဟဘာဝံ-စွမ်းနိုင်ခြင်း၏ မရှိခြင်းကို၊ ဝါ-အားတက်သရော မရှိခြင်းကို၊ အသက္ကုဏေယျတံ-မစွမ်းနိုင်အပ်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကို၊ ဒသ္သေတိ-၏၊ န ဝိသဟာမိတိ - ဖြင့်၊ အသယှတံ - သည်းမခံ အပ်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကို၊ ဒသ္သေတိ-၏၊ ["န ဥဿဟာမိ-မစွမ်းနိုင်ပါ၊ ဝါ-အားတက်သရောမရှိပါ၊ န ဝိသဟာမိ-သည်းမခံနိုင်ပါ"ဟု ပေး၊] န ရမာမိတိ-ဖြင့်၊ ရတိယာ-မွေ့လျော်ခြင်း၏၊ အဘာဝံ-မရှိခြင်းကို၊ ဒသ္သေတိ- ၏၊ နာဘိရမာမိတိ-ဖြင့်၊ အဘိရတိယာ-အလွန်မွေ့လျော်ခြင်း၏၊ အဘာဝံ ဒသ္သေတိ၊ ["န ရမာမိ-မမွေ့မလျော်ပါ၊ နာဘိရမာမိ- အလွန် မမွေ့မလျော်ပါ"ဟု ပေး၊] ဧဝံ—လျှင်၊ ပဉ္စာသ-၅၀ သော၊ ဣမာနိစ-ဤပုဒ်တို့ရင်း၊ ပုရိမာနိ—ရှေး၌ဖြစ်ကုန်သော၊ ဒသုတ္တရ သတံစ-ဆယ်ပုဒ်အလွန်ရှိသော တရာသောပုဒ်ရင်း၊ ဣတိ- သို့၊ သဋ္ဌိသတပဒါနိ— ၁၆၀ သောပုဒ်တို့ကို၊ ဒုဋ္ဌလျာဝိကမ္မဝါရေ – ဝါရ၌၊ ဝုတ္တာနိ-မိန့်တော်မူအပ်ကုန်ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ-နိ၏။

သိက္ခာ ပစ္စက္ခာနဝါရေပိ – ဝါရ၌လည်း၊ ကထဉ္စ ဘိက္ခဝေတိ အာဒိ-သော၊ သဗ္ဗံ-အလုံးစုံသောပုဒ်အပေါင်းသည်၊ အတ္ထတော- အားဖြင့်၊ ဥတ္တာန

**ဥဿဟ—ဝိသဟ။** ။န ဥဿဟာမိတိ—အတ္ထနော တတ္ထ ဥဿာဟဘာဝံ (မိမိ၏ ထိုအကျင့်ဘို့၌ အားတက်သရော မရှိသည်၏အဖြစ်ကို) ဒသ္သေတိ၊ န ဝိသဟာမိတိ-ကောဘတ္တာဒိနံ—တို့၏၊ အသယှဘာဝံ—မခံအပ်, မခံနိုင်ကုန်သည်၏အဖြစ်ကို၊ ဒသ္သေတိ။

**ရမ—အဘိရမ။** ။န ရမာမိတိ-ပဗ္ဗဇ္ဇာမူလကံ နတ္ထိ မေ သုခံတိ ဒသ္သေတိ—ရဟန်းပြုခြင်းကြောင့် ငါ့မှာ ဘာချမ်းသာမျှ မရှိ,ဟု ပြ၏၊ နာဘိရမာမိတိ— ပဗ္ဗဇ္ဇာယ (၌) အတ္တနော သန္တောသဘာဝံ (နှစ်သက်အားရခြင်း မရှိသည်၏အဖြစ်ကို) ဒသ္သေတိ။

မေဝ - သည်သာ၊ ပန - ကား၊ ဧတ္ထာပိ- ဤသိက္ခာပစ္စက္ခာနဝါရ၌လည်း၊ ပဒ တော – အားဖြင့်၊ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိ – က္ခာမိပုဒ်ငင်း၊ ဓမ္မံပစ္စက္ခာမိ – ပုဒ်ငင်း၊ [နောက်၌ ပစ္စက္ခာမိ ပုဒ်ထည့်၍ပေး၊]သံဃံ,သိက္ခံ၊ပေ၊ သမြဟ္မစာရိံ ပစ္စက္ခာမိ–ပုဒ်ငင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဣမာနိ စုဒ္ဒသပဒါနိ- တို့သည်၊ သိက္ခာ ပစ္စက္ခာန ဝစန သမ္ဗန္ဓေန-သိက္ခာချကြောင်းသဒ္ဒါနှင့်စပ်သဖြင့်၊ [ပစ္စက္ခာမိသဒ္ဒါနှင့်စပ်သဖြင့်-ဟူလို၊] ပဝတ္တာနိ-ဖြစ်ကုန်၏၊ စ- ဆက်၊ သဗ္ဗပဒေသု- တို့၌၊ ဝဒတိ,ဝိညာပေတီတိ ဝစနဿ - ပေတိဟူသော သဒ္ဒါ၏၊ အယံ - ကား၊ အတ္ထော - တည်း၊ ဝစီဘေဒံ – စကားလုံး၏ ကွဲပြားမှုကို၊ ဝါ – နှုတ်မြွက်မှုကို၊ ကတွာ – ၍၊ ဝဒတိ-ပြောဆို၏၊ ယဿစ- အကြင်သူ့ အားလည်း၊ ဝဒတိ-၏၊ တံ-ထိုသူ့ကို၊ [ဝိညာပေတိ-စသည်၌စပ်၊]တေနေဝ ဝစီဘေဒေန-ဖြင့်ပင်၊ အယံ-ဤရဟန်းသည်၊ သာသနံ-ကို၊ ဇဟိတုကာမော-စွန့်လိုသည်၊ သာသနတော-မှ၊ မုစ္စိတုကာမော – လွတ်မြောက်လိုသည်၊ ဘိက္ခုဘာဝံ - ကို၊ စဇိတုကာမော- သည်၊ (ဟုတ္ဝာ)၊ ဣမံ ဝါကျဘေဒံ- ဤဝါကျအထူးကို၊ ကရောတိ- ၏၊ ဣတိ - သို့၊ ဝိညာပေတိ-၏၊ သာဝေတိ- ကြားစေ၏၊ ဇာနာပေတိ-၏၊ ဣတိ(အတ္ထော)။

ပန- ဆက်၊ အယံ-ဤရဟန်းသည်၊ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ-ဟူ၍၊ ဝတ္တုကာမော-ပြောဆိုလိုသည်၊ (သမာနော-လျက်၊)ပဒပစ္စာဘဋ္ဌံ-ပုဒ်ကို ပြောင်းပြန်ရွတ်ဆိုခြင်းကို၊ကတွာ-ပြု၍၊ ပစ္စက္ခာမိ ဗုဒ္ဓန္တိ ဝါ- ဟူ၍သော်လည်း၊ သစေ ဝဒေယျ-အကယ်၍ပြောဆိုအံ့၊[ပဒဝိပရာဝုတ္တိံ – ပုဒ်ကို ပြောင်းပြန်ဆိုခြင်းကို၊ ကတွာ–(ဋီကာ)၊ အာဘာသိယတေ-ခြင်း၊ အာဘဋ္ဌံ- ခြင်း၊ ဝိပရိဝတ္တိတွာ+ အာဘဋ္ဌံ ပစ္စာဘဋ္ဌံ၊ ပဒဿ-ကို၊ ပစ္စာဘဋ္ဌံ ပဒပစ္စာဘဋ္ဌံ။ ] မိလက္ခဘာသာသု - မာဂဓ ဘာသာမှတပါးသော လူရိုင်းတို့၏ဘာသာတို့တွင်၊ အညတရဘာသာယဝါ-

**သစေပနာယံ။** ။ "ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိ" သဒ္ဒါသည် အတ္တဲပဓာန= အနက်ကိုသာ ပဓာနထား၍ ညွှန်ပြအပ်သော သဒ္ဒါတည်း၊ "အနက်သာ လိုရင်း, သဒ္ဒါက လိုရင်း မဟုတ် — ဟူလို၊ ထို့ကြောင့် "ပစ္စက္ခာမိ ဗုဒ္ဓံ"ဟု ပြောင်းပြန်ဆိုဆို, မြန်မာဘာသာ စသည်ဖြင့်ဆိုဆို "ဘုရားစွန့်၏" ဟူသော အနက်အဓိပ္ပါယ်ရလျှင် သိက္ခာကျ၏ဟု ပြလို သောကြောင့် "သစေ ပန" စသည်မိန့်။

**မိလက္ခဘာသာသု ။** ။ "မာဂဓဘာသတော အဝသိဋ္ဌာ သဗ္ဗာပိ အန္ဓဒမိဠာဒိ ဘာသာ မိလက္ခဘာသာတိ ဝေဒိတဗ္ဗာ" ဟု ဋီကာဆိုသောကြောင့် မာဂဓဘာသာ မဟုတ်လျှင် "လူရိုင်းစကား"ဟု ချည်း ဆိုလိုသည်။ ["တမ္ဗေဒါ မိလက္ခဇာတိ ကိရာတော သဝရာဒယော" ဟူသော အဘိဓာန် (၅၁၇)၌ကား တကယ့်ကိုယ် ရိုင်းစိုင်းသူမှ မိလက္ခ ဟု ဆိုသည်၊ "မိလက္ခု"ဟု စာအများရှိ၏။]

တပါးပါးသောဘာသာဖြင့်မူလည်း၊ တမတ္တံ – " ဘုရားစွန့်၏ " ဟူသော ထို အနက်ကို၊ (သစေ)ဝဒေယျ၊ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိတိ-ဟူ၍၊ ဝတ္တုကာမော - သည်၊ (သမာနော - လျက်၊) ဥပ္ပဋိပါဋိယာ - အစဉ်မဟုတ်သောအားဖြင့်၊ ဓမ္မံ ပစ္စက္ခာမိတိဝါ-ဟူ၍သော်၎င်း၊သံဃံပစ္စက္ခာမိတိဝါ-၎င်း၊(သစေ)ဝဒေယျ - အံ့၊ ဥတ္တရိမနုဿဓမ္မဝိဘင်္ဂေ - ဥတ္တရိမနုဿ ဓမ္မ သိက္ခာပုဒ်၏ ဝိဘင်း၌၊ (ပဒဘာဇနီ၌)၊ပဌမံ ဈာနံ သမာပဇ္ဇာမိတိ-ဟူ၍၊ဝတ္တုကာမော(သမာနော) ဒုတိယံ ဈာနန္တိ ဝဒတိသေယျထာပိ-ကဲ့သို့၊(တထာ-တူ၊) ယဿ ဝဒတိ၊ပေ၊ ခွေကမတ္တမ္ပိ-ဤမျှလောက်ကိုလည်း၊ သစေ ဇာနာတိ- အံ့၊ (ဝေဒေတိ၊)ဝိရုဒ္ဓံ နာမ - ချွတ်ယွင်းခြင်း မည်သည်၊ နတ္ထိ - တော့၊ ခေတ္တမေဝ - ခေတ်သို့သာ၊ ဩတိဏ္ဏံ - သက်ရောက်တော့၏၊ သိက္ခာ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ပစ္စက္ခာတာဝ-ပယ်စွန့် အပ်ပြီးသည်သာ၊ ဟောတိ၊ သက္ကတ္တာဝါ- သကြားအဖြစ်မှသော်၎င်း၊ ဗြဟ္မတ္တာဝါ-မှသော်၎င်း၊ စုတသတ္တောဝိယ - ရွေ့လျောသော သတ္တဝါသည်ကဲ့သို့၊ သာသနာ-မှ၊စုတောဝ-ရွေ့တော့သည်သာ၊ဟောတိ-၏။

ပန-ကား၊ ဗုဒ္ဓံ-ကို၊ ပစ္စက္ခိံ-စွန့်ပြီ၊ ဣတိဝါ- ဤသို့သော်၎င်း၊ ဗုဒ္ဓံ,ပစ္စက္ခိဿာမိ-အံ့၊ ဣတိဝါ- ၎င်း၊ ဗုဒ္ဓံ,ပစ္စက္ခေယျံ- စွန့်ရာ၏၊ ဣတိဝါ- ၎င်း၊ ဣတိ-သို့၊ အတီတာနာဂတ ပရိကပ္ပဝစနေဟိ- အတိတ်သဒ္ဒါ, အနာဂတ်သဒ္ဒါ,ပရိကပ္ပသဒ္ဒါတို့ဖြင့်၊ သစေဝဒတိ-အံ့၊ ဒူတံဝါ- တမန်ကိုမူလည်း၊ သစေ ပဟိဏာတိ– အကယ်၍နှုတ်ဖြင့်မှာ၍ စေလွှတ်အံ့၊ သာသနံဝါ – သတင်းစာလွှာကိုမူလည်း၊ သစေပေသေတိ – အကယ်၍ရေး၍ပေးပို့အံ့၊ အက္ခရံဝါ- စာလုံးကိုမူလည်း၊ သစေ ဆိန္ဒတိ- အကယ်၍ဖြတ်တောက် (ထွင်းထား) အံ့၊ [သစ်ပင်၌ ဖြစ်စေ နံရံစသည်၌ဖြစ်စေ " ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိ " စသော စာလုံးကို ထွင်းခြင်း ရေးခြင်းကို ဆိုသည်၊ ] ဟတ္ထမုဒ္ဒါယဝါ - လက်ချောင်းကို တွန့်စေခြင်းဖြင့်

ခေတ္တမေဝ ဩတိဏ္ဏံ။ ။ယထာဟိ လောကေ,သဿာနံ ဝိရုဟနဋ္ဌာနံ–ကောက်ပါးတို့၏ ပေါက်ရာအရပ်ကို၊ ခေတ္တန္တိ ဝုစ္စတိ၊ ဧဝံ ဣဒမ္ပိ သိက္ခာပစ္စက္ခာနဿ ရုဟနဋ္ဌာနတ္တာ (သိက္ခာချမှု၏ အထမြောက်ရာဌာန၏ အဖြစ်ကြောင့်) ခေတ္တန္တိ ဝုစ္စတိ၊ သဒ္ဒိသူပစာ-ဟူလို။

ဒူတံ,သာသနံ။ ။မိမိသိက္ခာချကြောင်းကို သိစေလိုသူ၏ အထံသို့ နှုတ်ဖြင့်မှာ၍ တမန်စေလွှတ်၏၊ စာဖြင့်ရေး၍ သတင်းကို ပေးပို့၏၊ ဤသို့စေလွှတ်ခြင်း, ပေးပို့ခြင်းသည် သိက္ခာကျကြောင်း မဟုတ်၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း-"ဝဒတိ-နှုတ်ဖြင့် ပြောဆို၏" ဟု ကိုယ်တိုင်ပြောမှု ဝစီပယောဂကိုသာ မိန့်တော်မူခြင်း, တမန်လွှတ်မှု, စာပေးမှု တို့က နှုတ်ပြောမဟုတ်ခြင်းကြောင့်တည်း။

မှုလည်း၊ဝါ-လက်ချောင်းချိုးခြင်း လက်ပြခြင်းဖြင့်မှုလည်း၊ တမတ္ထံ-ဘုရားစွန့်ပါ၏ ဟူသော ထို အနက်ကို၊ သစေ အာရောစေတိ - အံ့၊ (ဧဝံသတိ) သိက္ခာ-သည်၊ ဝါ-ကို၊အပစ္စက္ခာတာ- သည်၊ဟောတိ၊ပန- ဆက်၊ ဥတ္တရိမနုဿဓမ္မာရောစနံ-ဥတ္တရိမနုဿဓမ္မကို ပြောခြင်းသည်၊ဟတ္ထမုဒ္ဒါယပိ-ဖြင့်လည်း၊ သီသံ-အထွင့်အထိပ်သို့၊ ဧတိ - ရောက်၏၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ- သည်၊ မနုဿဇာတိကသတ္တဿ-၏၊ သန္တိကေ-၌၊ စိတ္တသမ္ပယုတ္တံ- စိတ်နှင့်ယှဉ်သော၊ ဝစီဘေဒံ- ကို၊ ကရောန္တဿေဝ-၏သာ၊ သီသံ ဧတိ၊ စ - ဆက်၊ ဝစီဘေဒံ ကတွာ, ဝိညာပေန္တော ပိ-သိစေပြန်သော်လည်း၊ အယမေဝ- ဤသူသည်သာ၊ ဇာနာတု-တည်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဧကံ-တယောက်ကို၊ နိယမေတွာ-မှတ်သား၍၊ ယဒိအာရောစေတိ-အံ့၊ တဥ္စ - ထိုစကားကိုလည်း၊ သောယေဝ - ထိုမှတ်သားအပ်သူသည်သာ၊ ယဒိဇာနာတိ-အံ့၊(ဧဝံသတိ၊)သိက္ခာ ပစ္စက္ခာတာ ဟောတိ။

အထ–သို့မဟုတ်၊ သော-ထိုမှတ်သားအပ်သူသည်၊ (ယဒိ) နဇာနာတိ-အံ့၊ အညော–သော၊ သမီပေ–၌၊ ဌိတော-တည်သူသည်၊ (ယဒိ) ဇာနာတိ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ၊) သိက္ခာ အပစ္စက္ခာတာ ဟောတိ၊ အထ – ဟုတ်၊ ဒွိန္နံ- တို့၏၊ ဌိတဋ္ဌာနေ–၌၊ ဒွိန္နမ္ပိ- တို့အားလည်း၊ [ဝဒတိ– ၌စပ်, ယောဇနာဝယ် နိယမေတွာ၌ အစပ်ပြ၏၊] ဧတေသံ - တို့အား၊ အာရောစေဿာမိ– အံ့၊ ဣတိ-သို့၊ နိယမေတွာ-၍၊ (ယဒိ)ဝဒတိ-အံ့၊ တေသု- တို့တွင်၊ ဧကသ္မိံ- သည်၊ ဇာနန္တေပိ - သိသော်ငြား၊ ဒွိသု - တို့သည်၊ ဇာနန္တေသုပိ - နှ်သော်ငြား၊ သိက္ခာ ပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ၊ ဧဝံ - တူ၊ သမ္ဗဟုလေသုပိ – များစွာသော လူတို့၌လည်း၊ (သိက္ခာပစ္စက္ခာနာပစ္စက္ခာနံ - သိက္ခာကျခြင်း , မကျခြင်းကို၊ ) ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ ["ဝေဒိတဗ္ဗ"ဟု ယောဇနာ၌ ရှိသည်။]

ပန-ကား၊ အနဘိရတိယာ-သည်၊ ပီဠိတော-နှိပ်စက်အပ်သည်၊(ဟုတွာ)၊ သဘာဂေ- သဘောတူကုန်သော၊ ဘိက္ခူ - တို့ကို၊ ပရိသက်မာနော - ယုံမှားသည်၊ ဝါ-ရှုံရှားသည်၊ [သူတို့သိလျှင် သိက္ခာမချအောင်တားကြလိမ့်မည်-ဟု ရှုံသည်၊] (ဟုတွာ)၊ ယောကောစိ - သည်၊ ဇာနာတု- သိပစေ၊ ဣတိ- ဤသို့ ကြံ၍၊ ဥစ္စာသဒ္ဒံ-ကို၊ ကရောန္တော- လျက်၊ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ- ဟူ၍၊ သစေ ဝဒ

**ဟတ္ထမုဒ္ဒါယ။** ။ဟတ္ထအရ လက်တခုလုံးရသော်လည်း ကေဒေသျူပစာရအားဖြင့် လက်ချောင်းကို ယူ၊ မုဒ္ဒါသဒ္ဒါ၏ အနက်များတွင် သင်္ကေတစန အနက်လည်း ထောမနိဓိ၌ပါ၏။ [ ဟတ္ထသဒ္ဒေါစေတ္ထ တဒေကဒေသေသု အင်္ဂုလီသု ဒဋ္ဌဗ္ဗော၊ န သဗ္ဗံ ဟတ္ထံ မုခေ ပက္ခိပိဿာမီတိအာဒီသု ဝိယ၊ တသ္မာ အမိပ္ပါယဝိညာပကေန အင်္ဂုလိသင်္ကေတနာဒိနာ ဟတ္ထဝိကာရေန တမတ္ထံ အာရောစေတီတိ ဧဝမေတ္ထ အတ္ထော ဒဋ္ဌဗ္ဗော။]

တိ-အံ့၊ တဉ္စ-ထိုစကားကိုလည်း၊ အဝိဒူရေ-၌၊ ဌိတော-သော၊ နဝကမ္မိကော ဝါ- အမှုသစ်၌ ယှဉ်သူသည်သော်၎င်း၊ ဝါ-အလုပ်လုပ်နေသူသည်သော်၎င်း၊ ("ဝနကမ္မိကောဝါ- တော၌အလုပ်လုပ်နေသူသည်သော်၎င်း"ဟု လည်းမူကွဲရှိ၏၊) အညော-သော၊ သမယညူ- သာသနာ့အယူကိုသိသော၊ ပုရိသောဝါ-၎င်း၊ သုတွာ-၍၊ ဥက္ကဏ္ဍိတော - ပျင်းရိသော၊ အယံ သမဏော - သည်၊ ဂိဟိဘာဝံ-ကို၊ပတ္ထေတိ-၏၊သာသနတော-မှ၊ စုတော-ပြီ၊ဣတိ-သို့၊ သစေ ဇာနာတိ-အံ့၊ (ဝေဲသတိ၊) သိက္ခာ ပစ္စက္ခာတာ ဝ ဟောတိ။

ပန – ဆက်၊ တဉ္စေဝ – သိက္ခာချရာ ထိုခဏ၌ပင်လျှင်၊ အပုဗ္ဗံ–ရှေ့လည်းမကျ၊ အစရိမံ-နောက်လည်းမကျ၊ (တနည်း)အပုဗ္ဗံ အစရိမံ-မရှေးမနှောင်း၊ ဒုဇ္ဇာနံ-မသိအပ်မသိနိုင်၊ ပကတိယာ-ပင်ကိုယ်အားဖြင့်၊လောကေ-၌၊မနုဿာ ဝစနံ သုတွာ ဇာနန္တိ ယထာ၊(တထာ)အာဝဇ္ဇနသမယေ-ဆင်ခြင်ရာအခါ၌၊ [ ဋီကာ၌ "အာဝဇ္ဇနသမယေန" ဟု ရှိ၏၊ အနက်တူပင်၊] သစေ ဇာနာတိ၊ (ဝေဲသတိ)၊ပေ၊ အထ-သို့မဟုတ်၊ အပရဘာဂေ- နောက်အဘို့၌၊ ဣမိနာ – ဤရဟန်းသည်၊ ကိံ - အဘယ်ကို၊ ဝုတ္တံ – ဆိုအပ်ပါလိမ့်မည်နည်း၊ ဣတိ-သို့၊ ကင်္ခန္တော-ယုံမှားလျက်၊ စိရေန-ကြာမြင့်မှ၊(သစေ)ဇာနာတိ၊ပေ၊ ဟိ–မှန်၊ ဣဒံ သိက္ခာပစ္စက္ခာနဉ္စ–ဤ သိက္ခာချခြင်းသည်၎င်း၊ ဥပရိ-အထက်၌၊ အဘူတာရောစန ၊ပေ၊ သိက္ခာပဒါနိစ - အဘူတာရောစနသိက္ခာပုဒ်, ဒုဋ္ဌုလ္လဝါစာသိက္ခာပုဒ်, အတ္တကာမသိက္ခာပုဒ်, ဒုဋ္ဌဒေါသသိက္ခာပုဒ်, ဘူတာရောစနသိက္ခာပုဒ်တို့သည်၎င်း၊ ကေပရိစ္ဆေဒါနိ- တူသော အပိုင်းအခြားရှိကုန်၏၊ အာဝဇ္ဇနသမယေ – ၌၊ ဉာတေဝေ - သိအပ်သော်သာ၊ သီသံ ဧန္တိ၊ အယံ–ဤရဟန်းသည်၊ ကိံ– ကို၊ ဘဏတိ - ပြောပါလိမ့်မည်နည်း၊ ဣတိ - ဤသို့၊ ကင်္ခတာ ( ကင်္ခန္တေန ) - ယုံမှားလျက်၊ စိရေန- မှ၊ ဉာတေ – သိအပ်သော်၊ သီသံ နဧန္တိ၊ စ- ဆက်၊ ဗုဒ္ဓံပစ္စက္ခာမီတိပဒေ- ပုဒ်၌၊ အယံ ဝိနိစ္ဆယော- ကို၊

**သမယညူ။** ။ သာသနာစာရကုသလော–သာသနာတော်၏အကျင့်(ထုံးစံ)ကို နားလည်သူ၊ သာသနာတော်၌ လူထွက်လိုလျှင် ( "ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိ" စသည်ဆို၍ ) သိက္ခာချရသည်ဟု နားလည်သူ၊ ဤနေရာ၌ကား ထိုမျှလောက် နားမလည်စေကာမူ "ဒီကိုယ်တော်ဟာ လူထွက်လို၍ သိက္ခာချ၏"ဟု နားလည်လျှင်"သမယညူ"ဖြစ်တော့၏၊ ထို့ကြောင့်"ဥက္ကဏ္ဍိတော၊ပေ၊ဇာနာတိ"ဟု မိန့်သည်။

**ဒုဇ္ဇာနံ။** ။သိက္ခာချကြောင်း စကားသံကို သောတဒွါရိက – တဒနုဝတ္တိက ဝီထိတို့ဖြင့် ကြားပြီးသိပြီးမှ သုဒ္ဓမနောဒွါရဝီထိဖြင့် "သိက္ခာချပေ၊" ဟု သိရသောကြောင့် ထိုသိက္ခာချကြောင်းစကားကို ဆိုခိုက်၌ "သိက္ခာချပေ၊"ဟု မသိနိုင်–ဟူလို။

ဝုတ္တော့ယထာ၊ ဧဝံ–တူ၊ သမ္ဗုပဒေသု–တို့၌၊ (ဝိနိစ္ဆယော) ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ဧ- ဆက်၊ ယသ္မာ၊ပေ၊ယန္နူနာဟံ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခေယျန္တိ အာဒိနိ – တို့ကို၊ (ဒုဗ္ဗလျာ ဝိကမ္မတို့ကိုပြသောစကားတို့ကို) အဝဒတာ(အဝဒန္တေန)ပိ-မပြောဆိုသော် လည်း၊ ဒုဗ္ဗလျံ– သည်၊ ဝါ - ကို၊ အာဝိကတမေဝ–ထင်စွာပြုအပ်သည်သာ၊ ဟောတိ–၏၊ တသ္မာ ၊ပေ၊ အဝသာနေ-အဆုံး၌၊ ဧဝမ္ပိ၊ပေ၊ ပစ္စက္ခာတာတိ- ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ။

တတော-မှ၊ ပရံ၊ ဂိဟီတိ မံ ဓာရေဟီတိဧတ္ထ – ၌၊ ဂိဟီ-သည်၊ ဘဝိဿာ မိ-အံ့၊ ဣတိဝါ – ဤသို့သော်ငှါး ၊ပေ၊ ဟောမိ- ဖြစ်၏၊ ဣတိဝါ - ငှါး၊ပေ၊ ဇာတော–ဖြစ်ပြီးသည်၊ အမှိ-၏၊ ဣတိဝါ၊ ဂိဟီ-သည်၊ အာသိံ-ဖြစ်ပြီ၊ ဣတိ ဝါ,သစေဝဒတိ၊ပေ၊ပန- ကား၊ အဇ္ဇပဋ္ဌာယ– ယနေ့မှစ၍၊ မံ-ကို၊ ဂိဟီတိ– ဟူ၍၊ ဓာရေဟိ - မှတ်လော၊ ဣတိဝါ - ဤသို့သော်ငှါး၊ (မံ ဂိဟီတိ) ဇာနာ ဟိ-သိပါလော၊ ဣတိဝါ-ငှါး၊ (မံ ဂိဟီတိ) သဉ္ဇာနာဟိ- အမှတ်ပြု၍ သိပါ လော၊ ဣတိဝါ - ငှါး၊ (မံ ဂိဟီတိ) မနသိကရောဟိ - နှလုံးသွင်းပါလော၊ ဣတိဝါ-ငှါး၊ သစေဝဒတိ၊ အာရိယကေနဝါ- အရိယာတို့၏ ဥစ္စာဖြစ်သော မာဂဓဘာသာဖြင့်သော်ငှါး၊[အာရိယကေန၏နောက်၌ ဝဒတိရှိသည်ကား ပိုဟန်တူ၏၊ ဝုတ္တေ၌ စပ်စရာရှိသည်၊] မိလက္ခကေနဝါ–လူရိုင်းတို့၏ဘာသာ ဖြင့် သော်ငှါး၊ ဧဝမေဝ-ဤအတိုင်းသာလျှင်၊ တဒတ္ထံ အဇ္ဇေ-("ငါ့ကို လူမှတ် လော"စသော)ထိုအနက်ကို၊ ဝုတ္တေ-ပြောဆိုအပ်သော်၊ပေ၊သေသေသု-ဂိဟီ တိ မံ ဓာရေဟိမှ ကြွင်းကုန်သော၊ ဥပါသကောတိ အာဒိသု-န်သော၊ သတ္တသု

**ဘဝိဿာမိတျာဒိ။** ။"ဘဝိဿာမိ"သည် အနာဂတ်ကာလဖြစ်၍ "ဓာရေဟိ" ၏ အနက်ကိုမပြနိုင်၊ " ဂိဟီ ဟောမိ " ဟူရာ၌ " ဓာရေဟိ " နှင့် ပစ္စုပ္ပန်ကာလချင်း တူသော်လည်း " လူဖြစ်၏ " ဟု ဆိုသောကြောင့် အနက်ကွဲ၏၊ " ဂိဟီ ဇာတောမှိ– ဖြစ်ပြီး ဖြစ်၏" ဟူရာ၌ အနက်ကာလ ၂ မျိုးလုံး ကွဲ၏၊ [" ဇာတော–ဖြစ်ပြီးသည်" ဟု အတိတ်ဟော တပစ္စည်းကြောင့် ကာလကွဲသည်-ဟူလို။] " ဂိဟီမှိတိ ဧတ္ထာပိ အတ္ထ ဿဧဝ ကာလဿစ ဘိန္နတ္တာ" ဟု ဋီကာရှိ၏၊ "အမှိ" ကား ဝတ္တမာန်ကာလ ဖြစ်၍ "ဟောမိ"နှင့် သဘောတူပင်ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် "ဂိဟီမှိ=ဂိဟီ+အမှိ"သည် ပါဌ်ပျက် ဖြစ်ဟန်တူ၏၊"ဂိဟီ အာသိံ"ဟုရှိမှ အနက်ကာလ ၂ မျိုးလုံး"ဓာရေဟိ"နှင့် ကွဲမည်။

**ဇာနာဟိစသည်။** ။ မံ ဓာရေဟိ၌ ဓာရေဟိသည် အတ္ထုပ္ပမာန နိဒ္ဒေသဖြစ်၍ ထို ဓာရေဟိအနက်ကို ပြနိုင်သော "ဇာနာဟိ" စသော ပုဒ်တို့ဖြင့် ဆိုလျှင်လည်း "သိက္ခာ ကျ၏" ဟု ပြလို၍ " ဇာနာဟီတိ ဝါ၊ပေ၊ ဝဒတိ" ဟု မိန့်သည်။ ["အနက်သာလျှင် လိုရင်းပမာန ဖြစ်၏, သဒ္ဒါကား ဘာသဒ္ဒါဖြင့်ဆိုဆို လိုရင်းမဟုတ်"ဟု ညွှန်ပြခြင်းကို " အတ္ထုပ္ပမာနနိဒ္ဒေသ " ဟုဆိုသည်။]

ပဒေသုပိ - တို့၌လည်း၊ သေ - ဤ ဆိုအပ်ပြီးသောအစီအရင်သည်၊ နယော- တည်း၊ ဧဝံ-လျှင်၊ ဣမာနိစအဋ္ဌ- တိုင်း၊ ပုရိမာနိ- နသော၊ စုဒ္ဒသစ-တိုင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဒွါဝီသတိပဒါနိ-တို့သည်၊ ဟောန္တိ-န၏။

တတော- ထိုပုဒ်တို့မှ၊ ပရံ-၌၊ ပုရိမာနိ- နသော၊ စုဒ္ဒသဝေ- တို့သည်ပင်၊ အလံမေ-အလံမေပုဒ်ငင်း၊ ကိံ နုမေ-ပုဒ်ငင်း၊ န မမတ္ထော-ငင်း၊ သုမုတ္တာဟံ- ငင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဣမေဟိစတူဟိ-ပုဒ်တို့နှင့်၊ ယောဇေတွာ-ယှဉ်စေ၍၊ဝုတ္တာနိ- နသည်၊ (သမာနာနိ- နလသော်၊) ဆပ္ပညာသ-၅၆ ပုဒ်သည်၊ ဟောန္တိ-န၏၊ တတ္ထ-ထို အလံမေအစရှိသော လေးပုဒ်တို့၌၊ အလန္တိ- ကား၊ ဟောတု-ရှိပါ စေတော့၊ ပရိယတ္တံ - စွမ်းနိုင်ခြင်းဖြစ်၏၊ ဣတိအတ္ထော - နက်၊ ကိံ နုမေတိ- ကား၊ မယှံ-အား၊ ကိံ ကိစ္စံ-အဘယ်ကိစ္စရှိအံ့နည်း၊ ကိံ ကရဏီယံ - အဘယ် ပြုဘွယ်ရှိအံ့နည်း၊ ကိံ သာဓေတဗ္ဗံ - အဘယ်မှာ ပြီးစေဘွယ်ရှိအံ့နည်း၊ ဣတိ အတ္ထော၊ [ဤအဖွင့်ကိုကြည့်၍ ပါဠိတော်၌ "ကိံ နု-အဘယ်ပြုဘွယ်ကိစ္စ ရှိအံ့ နည်း"ဟု ပေး။] န မမတ္ထောတိ- ကား၊ မမ- ၏၊ ဝါ- မှာ၊ အတ္ထော— အကျိုး သည်၊ နတ္ထိ- မရှိ၊ သုမုတ္တာဟန္တိ- ကား၊ အဟံ- သည်၊ သုမုတ္တော-ကောင်းစွာ လွတ်ပြီ၊ ဧတ္ထ- ဤ ၅၆ ပုဒ်တို့၌၊ သေသံ- ကြွင်းသောပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဝုတ္တ နယမေဝ၊ ဧဝံ- လျှင်၊ ဆပ္ပညာသ- သော၊ ဣမာနိစ— ပုဒ်တို့ငင်း၊ ပုရိမာနိ— နသော၊ ဒွါဝီသတိစ-ပုဒ်ငင်း၊ ဣတိ-သို့၊ အဋ္ဌသတ္တတိ-၇၈ ပါးသော၊ ပဒါနိ- တို့ကို၊ သရူပေနေဝ - သရုပ်အားဖြင့်သာလျှင်၊ ဝုတ္တာနိ - ကုန်ပြီ။ [ ဝေဝစန မဟုတ်ဘဲ နာမည်တိုက်ရိုက်ဖြင့် ဟောတော်မူသည်–ဟူလို။]

ပန-ကား၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ တေသံ- ထို ၇၈ ပုဒ်တို့၏၊ ဝေဝစနေဟိပိ– ဝေဝုစ်ပရိယာယ် စကားလှယ်တို့ဖြင့်လည်း၊သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ-သည်၊ ဟောတိ- ဖြစ်နိုင်၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ယာနိဝါ ပနညာနိ ဗိတိအာဒိံ -ကို၊ အာဟ-မူပြီ၊

**အလံတိ ဟောတု**။ ။ဟောတု ဘဝတုတိ (ဟောတုကို "ဘဝတု— ရှိပါစေ"ဟု အနက်မှတ်၊ (ဣဒမ္ပိ-ဤဟောတုသဒ္ဒါသည်လည်း၊ ပဋိက္ခေပမတ္တမေဝ—ပယ်ခြင်းအနက် မျှသာရှိ၏၊ (ပယ်ခြင်းအနက်မှတပါး, အာဏတ္တိအာသိဋ္ဌစသော အခြား ပဉ္စမီဝိဘာတ် နက်များမရှိ-ဟူလို။) ဣတိ— ထို့ကြောင့်၊ အာဟ—ဟောတု ပရိယတ္တံတိ အတ္ထောတိ၊ ဟောတု-ရှိပါစေတော့၊ ပရိယတ္တံ-ငါ့ဘာသာစွမ်းနိုင်၏။ ["မေ—ငါ့အား၊ဗုဒ္ဓေန-ဖြင့်၊ အလံ—တော်ပါပြီ"ဟု ပါဠိတော်ပေး။]

**ဝေဝစနာနိ**။ ။ကေသွိံ့ပိ အတ္ထေ—အနက်တခုတည်း၌လည်း၊ ဝိဝိဓံ— အထူးထူး အဖုံဖုံ + ဝစနံ— ဟောတတ်သောသဒ္ဒါတည်း၊ ဝိဝစနံ — ဒ္ဓါ၊ ဝိဝစနမေဝ (သွတ္တဉ္စ ဏ သက်၍) ဝေဝစနံ၊ အနက်တမျိုးထည်းကို အထူးထူးဟောနိုင်သော ပရိယာယ်သဒ္ဒါကို "ဝေဝစန"ဟု ခေါ်သည်။

တတ္ထ–ထို ယာနိဝါ ပနညာနိပိ အစရှိသောစကားရပ်၌၊ ယာနိဝါ ပနညာနိ ပိတိ- ကား၊ ပါဠိယံ- ၌၊ ဗုဒ္ဓန္တိအာဒိနာ- ဖြင့်၊ [ "အာဒိနိ"ဟု ရှိသည်ကား မကောင်း။] အာဂတပဒါနိ- လာသောပုဒ်တို့ကို၊ ထပေတွာ-၍၊ အညာနိပိ- အခြားလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ယာနိ - အကြင်ပုဒ်တို့သည်၊ အတ္ထိ -န်၏၊ ဗုဒ္ဓဝေဝစနာနိဝါတိ- ကား၊ ဗုဒ္ဓဿဝါ- ဘုရား၏မူလည်း၊ ပရိယာယနာမာနိ- ပရိယာယ်နာမည်လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ပေ၊ အသကျပုတ္တိယဿဝါ-အသကျပုတ္တိယ၏မူလည်း၊ ပရိယာယနာမာနိ–န်သော၊ (ယာနိ–အကြင်ပုဒ်တို့သည်၊ အတ္ထိ၊) တတ္ထ- ထိုပုဒ်တို့တွင်၊ ဝဏ္ဏပဋ္ဌာနေ - ဝဏ္ဏပဋ္ဌာန်းသုတ်၌၊ အာဂတံ- သော၊ နာမသဟဿံ - နာမည်တော် တထောင်ကိုငင်း၊ ဥပါလိဂါထာသု- ဥပါလိဂါထာတို့၌၊(အာဂတံ-သော၊)နာမသတံ-ကိုငင်း၊ အညာနိ-န်သော၊ ဂုဏာတော-အားဖြင့်၊ လဒ္ဓမာနာနိ-ရအပ်ကုန်သော၊ နာမာနိစ-တော်တို့ကို ငင်း၊ ဗုဒ္ဓဝေဝစနာနီတိ – ဗုဒ္ဓဝေဝစနတို့ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ၊ သဗ္ဗာနိပိ- န်သော၊ ဓမ္မဿ - တရား၏၊ နာမာနိ- တို့ကို၊ ဓမ္မဝေဝစနာနီတိ- ဟူ၍၊ ဝေဒိ တဗ္ဗာနိ- န်၏၊ သဗ္ဗတ္ထ- အလုံးစုံသော သံဃဝေဝစနာနိ အစရှိသောပုဒ်တို့၌၊ သေ-သည်၊ နယော-တည်း။

ပန - ဆက်၊ အယံ - ဤ ဆိုအပ်လတ့ံကား၊ ဧတ္ထ - ဤ ဗုဒ္ဓဝေဝစန အစ ရှိသောပုဒ်တို့၌၊ ယောဇနာ-အနက်ကို ယှဉ်စေခြင်းတည်း၊ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ- ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိဟူသော သိက္ခာချခြင်းသည်၊ ဝေဝစနေန – ဝေဝုစ်ပရိယာယ် စကားလှယ်ဖြင့်၊ ပစ္စက္ခာနံ-သိက္ခာချခြင်းသည်၊ န-မဟုတ်၊ ယထာရုတမေဝ- အကြင်အကြင် ဟောတော်မူအပ်သည့် အတိုင်းသာတည်း၊ ဝါ – တိုက်ရိုက် ဟောတော်မူအပ်သောပုဒ်ဖြင့် သိက္ခာချခြင်းသာတည်း၊သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓံ-မဖေါက် မပြန် ကိုယ်တော်တိုင် သိတော်မူသော မြတ်စွာဘုရားကို၊ ပစ္စက္ခာမိ – ပါ၏၊ အနန္တဗုဒ္ဓိံ - အဆုံးမရှိသော သဗ္ဗညုတဉာဏ် ရှိတော်မူသော မြတ်စွာဘုရား

**ဝဏ္ဏပဋ္ဌာနေ**။ ။မဟာသံဃိကဂိုဏ်း(မြောက်ပိုင်း ဗုဒ္ဓဘာသာဝင်)ရဟန်းတို့၏ ဘုရားဂုဏ်တော်ကို ပြသောသုတ်ကို " ဝဏ္ဏပဋ္ဌာန " ဟု ခေါ်သတတ်၊ " ပကာရေန တိဋ္ဌတိ ဧတ္ထာတိ ပဋ္ဌာနံ၊ ဝဏ္ဏာနံ– ဘုရားဂုဏ်တော်တို့၏၊ ပဋ္ဌာနံ – အပြားအားဖြင့် တည်ရာသုတ်တည်း၊ ဝဏ္ဏပဋ္ဌာနံ – သုတ်။ [ဥပါလိဂါထာတို့ကား မဇ္ဈိမပံ – ဥပါလိ သုတ်၌ပါ၏။]

**ယထာရုတမေဝ**။ ။"ရု-သဒ္ဒေ"ဟု ဓာတ်ကျမ်းရှိ၏၊"အသံပြု"ဟူသည် ဟောပြော ခြင်းတည်း၊"ပါဠိတော်၌ တိုက်ရိုက် ဟောပြောအပ်သောပုဒ် ဖြစ်သည်, ပရိယာယ်ပုဒ် မဟုတ်"ဟူလို။ [ယံယံ+ရုတံ ယထာရုတံ။]

ကို၊[နောက်၌ ပစ္စက္ခာမိထည့်၍ချည်းပေး၊]အနောမဗုဒ္ဓိံ-မယုတ်ညံ့သော သဗ္ဗညုတဉာဏ် ရှိတော်မူသောမြတ်စွာဘုရားကို၊ ဝါ-မြင့်မြတ်သောသဗ္ဗညုတဉာဏ် ရှိတော်မူသော မြတ်စွာဘုရားကို၊ပေ၊ဗောဓိပညာဏံ-သဗ္ဗညုတဉာဏ်ဟူသော အမှတ်အသား ရှိတော်မူသော မြတ်စွာဘုရားကို၊ပေ၊ဓီရံ - ပညာဖြင့် ၂ ပါး သောအကျိုးကို ယူတော်မူတတ်သော မြတ်စွာဘုရားကို၊ပေ၊ဝိဂတမောဟံ-ကင်းသောမောဟ ရှိတော်မူသော မြတ်စွာဘုရားကို၊ပေ၊ ပဘိန္နခိလံ - စိတ်၏ ငြောင့်တံသင်းဖြစ်သော ဝိစိကိစ္ဆာစသည်ကို အပြားအားဖြင့် ဖျက်ဆီးတော်မူပြီးသောမြတ်စွာဘုရားကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဝိဇိတဝိဇယံ-ပုထုဇဉ်တို့ကိုအောင်နိုင်သောမာရ်တို့ကို အောင်တော်မူသော မြတ်စွာဘုရားကို၊ ပစ္စက္ခာမိ- ၏၊ ဣတိ ဧဝမာဒိ-ဤသို့ အစရှိသော သိက္ခာချခြင်းသည်၊ ဗုဒ္ဓဝေဝစနေန-ဗုဒ္ဓ၏ဝေဝုစ် ပရိယာယ် စကားလှယ်ဖြင့်၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ-သိက္ခာချခြင်းတည်း။

ဓမ္မံပစ္စက္ခာမီတိ-မိဟူသောသိက္ခာချခြင်းသည်၊ ဝေဝစနေန-ဖြင့်၊ ပစ္စက္ခာနံ- သည်၊ န- မဟုတ်၊ ယထာရုတမေဝ-သာတည်း၊ ဝါ- တည်း၊ သွာက္ခာတံ-

**အနောမဗုဒ္ဓိံ။** ။အယုတ်အညံ့-အောက်တန်းကိုဟောသော "အဓမ" ပုဒ်သည် "အဝ+အမ"မှ ဝကို ဓပြု၍ပြီးသည်– ဟု ထောမနိမိဆို၏၊ သို့ဖြစ်လျှင် အဝကို ဩပြု၍ နောက်အကိုချေလျှင် "ဩမ"-ကလာလျှင်"ဩမက"ဖြစ်၏-ဟု ကြံခွင့်ရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် "အနောမာ (န+ဩမာ)–မယုတ်ညံ့သော+ဗုဒ္ဓိ ယဿာတိ အနောမဗုဒ္ဓိ"ဟု ပြု။

**ဗောဓိပညာဏံ ။** ။ ဗောဓိ ဝုစ္စတိ သဗ္ဗညုတဉာဏံ၊ တံ( ထိုးသဗ္ဗညုတဉာဏ် ဟူသော) +သဥာနနပေတုဘူတာ ပညာဏံ ဧတဿာတိ ဗောဓိပညာဏော၊ဤ၌ ပညာ ဏာသဒ္ဒါသည် " ဓဇော ရထဿ ပညာဏံ " စသော ဒေဝပုတ္တသံယုတ် ပါဠိ၌ကဲ့သို့, "အမှတ်အသား" အနက်ဟောတည်း။ [အနန္တဗုဒ္ဓိံစသော ၃ ပုဒ်သည် ဝဏ္ဏပဋ္ဌာန သုတ်၌လာသော ပုဒ်များတည်း။]

**ဓီရံစသည် ။** ။ ဓိယာ – ပညာဖြင့်+ရာတိ – ပစ္စုပ္ပန်သံသရာ အကျိုး ၂ ပါးကို ယူတတ်၏၊ဣတိ ဓီရော၊ ပဘိန္န+ခိလံ (စိတ်၏ ဆူးငြောင့်ဖြစ်သော ဝိစိကိစ္ဆာစသည်) ယေနာတိ ပဘိန္နခိလော၊ ပုထုဇ္ဇနေ ဝိဇိနိံသု ဝိဇယန္တိ ဝိဇယိဿန္တီတိ ဝိဇယာ=မစ္စု, ကိလေသ, ဒေဝပုတ္တမာရ်တို့၊ ဝိဇိတာ+ဝိဇယာ ယေနာတိ ဝိဇိတဝိဇယော၊ ကိလေသ မာရမစ္စုမာရဝိဇယေနေဝ အဘိသင်္ခါရခန္ဓမာရာပိ ဝိဇိတာဝ ဟောန္တီတိ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ။ [ဤ ဓီရံစ သောပုဒ်တို့ကား ဥပါလိသုတ်လာ ပုဒ်များတည်း။]

**သွာက္ခာတံ ဓမ္မံ။** ။သာတ္ထ သဗျဉ္ဇနစသောဂုဏ်နှင့် ပြည့်စုံသောကြောင့် ပရိယတ် တရားတော်သည် သွာက္ခာတဖြစ်၏၊ နိဗ္ဗာန်နှင့်လျော်သော အကျင့်ပဋိပဒါ, အကျင့် ပဋိပဒါနှင့်လျော်သော နိဗ္ဗာန်တရားဖြစ်၍ ဟောတိုင်းမှန်သောကြောင့် လောကုတ္တရာ တရားလည်း သွာက္ခာတဖြစ်၏။ ["သု+အာ+ခါ+တ"ဟု ခွဲ၊ သဒ္ဒတွင် ခါဓာတ်မရှိ,

ကောင်းစွာ ဟောတော်မူအပ်သော၊ ဓမ္မံ - ကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ သန္ဒိဋ္ဌိကံ - မိမိကိုယ်တိုင်သိမြင်အပ်သော၊ ဓမ္မံ- ကို၊ပေ၊ အကာလိကံ - အကျိုးပေးရာ ဆိုင်းငံ့အပ်သော အခါမရှိသော၊ပေ၊ ဧဟိ ပဿိကံ-လာလော့ ကြည့်လှည့်လော ဟုခေါ်၍ပြခြင်းကို ထိုက်သော၊ပေ၊ ဩပနေယျိကံ- မိမိစိတ်သို့ ကပ်ဆောင်ထိုက်သော၊ပေ၊ဝိညူဟိ-ဥဃဋိတညူစသော ပညာရှိပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ ပစ္စတ္တံ-မိမိ မိမိ

ချာခတ်သာရှိ၏၊ ပါဠိ၌ ယပင့်ပျောက်၍ ဒွေဘော်ရောက်လျက် "သွာက္ခာတ" ဟုဖြစ်ရသည်၊ သုဋ္ဌု—ကောင်းစွာ (ဟောသည့်အတိုင်း မှန်ကန်အောင်) + အက္ခာတော-ဟောအပ်သောတရားတည်း၊ သွာက္ခာတော—ရား။]

**ဓမ္မံထည့်ရပုံ။** ။"သွာက္ခာတံ ဓမ္မံ ပစ္စက္ခာမိ" ဟု ဓမ္မသဒ္ဒါပါနေလျှင် ဓမ္မ၏ပရိယာယ်ဖြင့် သိက္ခာချရာမရောက်၊ ဓမ္မသဒ္ဒါရင်းအတိုင်း သိက္ခာချရာရောက်၏၊ ထို့ကြောင့် ဓမ္မ၏ပရိယာယ်ဖြင့် သိက္ခာချသောအခါ"ဓမ္မံ"ဟု ထည့်ဘွယ် မလို၊ "သွာက္ခာတံ ပစ္စက္ခာမိ"ဟု ဆိုရမည်၊ အဋ္ဌကထာ၌ ဓမ္မံ—ဟု ထည့်ထားခြင်းမှာ "သွာက္ခာတံ"ပုဒ်သည် တခြားအနက်ကို ဟောသော "သွာက္ခာတ" မဟုတ်၊ ဓမ္မ၏ ဝိသေသန ဖြစ်သော သွာက္ခာတပုဒ်တည်း" ဟု သိစေလိုသောကြောင့်တည်း၊ [တထာပိ ဓမ္မသဒ္ဒေန ယောဇေတွာ ဝုတ္တေ ဝေဝစနေန ပစ္စက္ခာနံနာမ န ဟောတီတိ သွာက္ခာတံ ပစ္စက္ခာမီတိ အာဒိနာ ဝုတ္တေပိ သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတီတိ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ၊ သွာက္ခာတံ ဓမ္မံတိ အာဒိနာ ပန ဓမ္မသဒ္ဒပ္ပယောဂေါ သွာက္ခာတာဒိသဒ္ဒါနံ ဓမ္မဝိသေသနဘာဝ ဒဿနတ္ထံ ကတော၊—ဋီကာ။] "သုပ္ပဋိပန္နံ သံဃံ"စသည်ဖြင့်"သံဃံ"ပုဒ်ကို ထည့်ရာ၌လည်း နည်းတူ။

**သန္ဒိဋ္ဌိကံ။** ။ပဿိတဗ္ဗာတိ ဒိဋ္ဌိ၊ သယံ+ဒိဋ္ဌိ သန္ဒိဋ္ဌိ၊ သံဒိဋ္ဌိဧဝ သန္ဒိဋ္ဌိကော၊ (ကပစ္စည်း သွတ္ထ)၊ မိမိကိုယ်တိုင် သိမြင်နိုင်သော အရိယာမဂ်။ [ အခြားနည်းများကို ဋီကာမှာရှု၊ ဤ သန္ဒိဋ္ဌိကံစသော ပုဒ်များ၏နောက်၌လည်း"ဓမ္မံ"ကို လိုက်စေ။]

**အကာလိကံ။** ။နတ္ထိ ကာလော ယဿာတိ အကာလော၊ အကာလောဧဝ အကာလိကော၊ လောကီကုသိုလ်များကဲ့သို့ ၅ ရက် ၇ ရက်စသောအခါကို လွန်စေပြီးမှ အကျိုးပေးသည်မဟုတ်,မိမိ၏ အခြားမဲ့၌ပင် ဖိုလ်တည်းဟူသောအကျိုးကို ပေးရကား "ဆိုင်းငံ့အပ်သောအခါမရှိသော မဂ်တရား"။

**ဧဟိပဿိကံ။** ။ ဧဟိပဿ ဣတိ အရဟတီတိ ဧဟိပဿိကော၊ "ဧဟိ, ပဿ" ဟူသော အာချာတ်ပုဒ်နောင် အရဟတိအနက်၌ ဏိကပစ္စည်းသက်သည်—ဟု ရူပသိဒ္ဓိဆို၏၊ ထင်ရှားလည်းရှိ, မြင်ရလျှင် ဝမ်းမြောက်ဘွယ်လည်း ကောင်းသောကြောင့် "လာစမ်းပါ,ကြည့်လှည့်စမ်းပါ"ဟု ခေါ်ပြခြင်းကို ထိုက်သော လောကုတ္တရာတရား။

**ဩပနေယျိကံ။** ။ဥပနေတဗ္ဗော—မိမိစိတ်သို့ကပ်၍ ဆောင်ထိုက်၏၊ ဣတိ ဥပနေယျော၊ [ဥပ+နီ+ ဏျ။] ဥပနေယျောဧဝ ဩပနေယျိကော၊ သွတ္ထ၌ ဏိကပစ္စည်း၊ မိမိစိတ်တွင် တကြိမ်ထင်က အပါယ်မီးများ မလောင်နိုင်သောကြောင့် (ကိုယ်ဝယ်ဝတ်ထားသောအဝတ်နှင့်, ဦးခေါင်းကို မီးလောင်နေသော်လည်း ထိုမီးကို မငြိမ်းသေးဘဲ) အပါယ်မီးငြိမ်းအောင် မိမိစိတ်၌ ကပ်၍ဆောင်ထိုက်သည်—ဟူလို။

၏ (စိတ်၌၊) ဝေဒိတဗ္ဗံ-သိအပ်သိနိုင် ခံစားနိုင်သော၊ပေ၊အသင်္ခတံ-အကြောင်းတရားတို့သည် အကျိုးတရားနှင့်ပေါင်းစပ်၍ နီးနီးကပ်ကပ် ပြုအပ်သည်မဟုတ်သော၊ ဓမ္မံ - နိဗ္ဗာန်တရားကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဝိရာဂံ - မတပ်နှစ်သက်ရာဖြစ်သော၊ (ဓမ္မံ- နိဗ္ဗာန်တရားကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊) နိရောဓံ- တဏှာ၏ ချုပ်ရာဖြစ်သော၊ပေ၊ အမတံ - သေခြင်းမရှိရာဖြစ်သော၊ပေ၊ ဓမ္မံ - နိဗ္ဗာန်တရားကို၊ ဒီဃနိကာယံ-ကာယမည်သော၊ (ဓမ္မံ - တရားကို၊) ပစ္စက္ခာမိ၊ ဗြဟ္မဇာလံ - လမည်သော၊ (ဓမ္မံ ပစ္စက္ခာမိ၊ ) [ နောက်၌ ဓမ္မံ ပစ္စက္ခာမိ ထည့်၍ပေး၊ ] မဇ္ဈိမနိကာယံ-မည်သော၊ပေ၊ကုသလံ ဓမ္မံ-ကုသိုလ်တရားဖြစ်သော၊ (ဓမ္မံ-တရားကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊) သတိပဋ္ဌာနံ- သတိပဋ္ဌာန်မည်သော၊ ဓမ္မံ၊ပေ၊ နိဗ္ဗာနံ- နိဗ္ဗာန်မည်သော၊ (ဓမ္မံ – ကို၊) ပစ္စက္ခာမိ – ၏၊ ဣတိ – သို့၊ စတုရာသီတိဓမ္မက္ခန္ဓသဟဿေသု-ရှစ်သောင်း ၄ထောင်သော ဓမ္မက္ခန္ဓာတို့တွင်၊ ဧကဓမ္မက္ခန္ဓဿာပိ- ၏လည်း၊ နာမံ- အမည်သည်၊ ဓမ္မဝေဝစနမေဝ - ဓမ္မသဒ္ဒါ၏ ဝေဝုစ်ပရိယာယ်စကားလှယ်ချည်းတည်း၊ဧဝံ·လျှင်၊ ဓမ္မဝေဝစနေန-ဖြင့်၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

သံဃံပစ္စက္ခာမိတိ- သည်၊ ဝေဝစနေန-ဖြင့်၊ ပစ္စက္ခာနံ- သည်၊ န- မဟုတ်၊ သုပ္ပဋိပန္န- ကောင်းစွာကျင့်တတ်သော၊ သံဃံ-အရိယာသံဃာကို၊ ပစ္စက္ခာမိ-၏၊ [ဘုရားဆုံးမတော်မူသည့်အတိုင်း ကျင့်သောကြောင့်"သုဋ္ဌု+ပဋိပန္နောတိ

ပစ္စတ္တံ၊ပေ၊ဝိညူဟိ။ ။ဥဃဋိတညူစသော ပညာရှိတို့သည် "ငါသည် မဂ်ကို ငါ့သန္တာန်၌ဖြစ်စေအပ်ပြီ၊ ဖိုလ်ကိုရအပ်ပြီ, နိဗ္ဗာန်ကို မျက်မှောက်ပြုအပ်ပြီ"ဟု မိမိ-မိမိ၏စိတ်၌ သိနိုင် ခံစားနိုင်သောတရား။ [ အတ္တနိ အတ္တနိ ဝေဒိတဗ္ဗောတိ ပစ္စတ္တံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ – ("အတ္တနိ အတ္တနိ ပစ္စတ္တံ"ဟု အဗျယီဘောပြု၊ ) အတ္တနောပန စိတ္တေယေဝ ဒဋ္ဌဗ္ဗော, ဒ္ဓနုဘဝိတဗ္ဗော ဝိညူဟီတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။]

အသင်္ခတံ ။ ။ သင်္ဂမ္မ သမာဂမ္မ (ပေါင်းဆုံ၍) ပစ္စယသမောဓာန လက္ခဏေန (အကြောင်းတရား၏ အကျိုးတရားနှင့် ပေါင်းဆုံခြင်းလက္ခဏာရှိသော) သမာဂမေန (ပေါင်းဆုံခြင်းအားဖြင့်) သန္နိပတိတွာ (ပေါင်းဆုံ၍) အနုရူပေဟိ ပစ္စယေဟိ အကတံ အနိပ္ဖန္နံတန္တိ အသင်္ခတံ။ [ သံကို သင်္ဂမ္မစသည်ဖွင့်၊ ထို ပေါင်းဆုံခြင်း ဟူသည်လည်း အကြောင်းတရားချင်း ပေါင်းဆုံမှုမဟုတ် , အကြောင်း အကျိုး ပေါင်းဆုံခြင်းတည်း၊ " အကြောင်းတရားတို့သည် နီးနီးကပ်ကပ် ပေါင်းစပ်၍ ပြုအပ်သော တရား မဟုတ်" ဟူလို၊ ဆိုလိုရင်းကား–"နိဗ္ဗာန်မှာ နီးကပ်သော တိုက်ရိုက်အကြောင်း မရှိ,ဝေးသော အကြောင်းတွေကား ပါရမီဖြည့်မှုမှစ၍ ရှိသည်"ဟု ဆိုလိုသည်။]

အမတံ။ ။နတ္ထိ ဧတ္ထ မတံတိ အမတံ– သေခြင်းမရှိရာ (မသေရာ)၊ ဧတဿ ဝါ အဓိဂတေ နတ္ထိ ပုဂ္ဂလဿ မတံ ( မရဏံ) တိ အမတံ = ထို တရားကိုရသောပုဂ္ဂိုလ်မှာ သေရခြင်းမရှိတော့၊ "နတ္ထိ မတံ ဧတသ္မိံ (ဤတရားကြောင့်) ဣတိ အမတံ"ဟု ပြု။

သုပ္ပဋိပန္နော''ဟု ပြု၊] ဥဇုပ္ပဋိပန္နံ – ဖြောင့်မတ်စွာ ကျင့်တတ်သော၊ပေ၊ဉာယပ္ပဋိပန္နံ – သိသင့်သိထိုက်သော နိဗ္ဗာန်အကျိုးငှါ ကျင့်တတ်သော၊ပေ၊သာမိစိပ္ပဋိပန္နံ–လူတို့ရိုသေမှုအားလျော်စွာ ကျင့်တတ်သော၊ပေ၊ စတ္တာရိပုရိသယုဂံ-ယောကျ်ားလေးစုံဖြစ်သော ၊ပေ၊အဋ္ဌပုရိသပုဂ္ဂလံ - ၈ပါးသော ယောကျ်ားမြတ် ပုဂ္ဂိုလ်ဖြစ်သော ၊ပေ၊ အာဟုနေယျံ-အဝေးမှသော်လည်းယူဆောင်၍ပေးလှူအပ်သောပစ္စည်းကို ခံယူတော်မူထိုက်သော၊ပေ ပါဟုနေယျံ-အရပ်တပါးမှလာသော ဧည့်သည်တို့အား ပေးထိုက်သောပစ္စည်းကို ခံယူတော်မူ

**ဥဇုပ္ပဋိပန္နော စသည်။** ။ကာမသုခလ္လိက အတ္တကိလမထ ၂ ပါးသို့ မကပ်ဘဲ ကာယဝစီမနောတို့၏ ကောက်ကျစ်သောအပြစ်ကို ပယ်ရှားဘို့ရာ မဇ္ဈိမပဋိပတ် အကျင့်မြတ်ဖြင့် ဖြောင့်မတ်စွာကျင့်သောကြောင့်"ဥဇု+ပဋိပန္နောတိ ဥဇုပ္ပဋိပန္နော"၊ အရိယာမဂ် စသည်တို့ဖြင့် သိအပ် ထိုးထွင်းအပ်, မျက်မှောက်ပြုအပ်သောနိဗ္ဗာန်ကို "ဉာယ"ဟုခေါ်၏၊ ဉာယတိ (ပဋိဝိဇ္ဈတိ သစ္ဆိကရိယတိ) တိ ဉာယော၊ ဉာယာယ– နိဗ္ဗာန်အကျိုးငှါ+ပဋိပန္နော ဉာယပ္ပဋိပန္နော၊ သာမိစိကမ္မသ–အဘိဝါဒန,ပစ္စုဋ္ဌာနစသော ရိုသေမှုအား+အနုရူပံ–စွာ၊ ပဋိပန္နော သာမိစိပ္ပဋိပန္နော။

**စတ္တာရိ ပုရိသယုဂံ။** ။ပုရိသာနံ+ယုဂါနိ ပုရိသယုဂါနိ၊ စတ္တာရိ+ပုရိသယုဂါနိ စတ္တာရိပုရိသယုဂံ၊ (စတ္တာရိ၌ ဝိဘတ်မကြေသော အလုတ္တ သမာဟာရဒိဂု)။ [စတုပုရိသယုဂံ သံဃန္တိ ဝတ္တဗ္ဗေ စတ္တာရိတိ ဝိဘတ္တိလောပံ အကတွာ နိဒ္ဒေသော ကတော။]

**အဋ္ဌ၊ပေ၊ပုဂ္ဂလံ။** ။ပုရိသနှင့် ပုဂ္ဂလသည် ပရိယာယ်တည်း၊ ဝေနေယျတို့၏အဇ္ဈာသယအားလျော်စွာ ၂ ပုဒ်လုံး ဟောတော်မူသည်။ [ဧတ္ထ ပုရိသောတိဝါ ပုဂ္ဂလောတိဝါ ဧကတ္ထာနိ ဧတာနိ ပဒါနိ၊ ဝေနေယျဝသေန ပနေတံ ဝုတ္တံ။]

**အာဟုနေယျံ။** ။အာဘုဗ္ဗ,ဟု (ဒါနာဒန ဟဗျပ္ပဒါနေသု) ယုပစ္စည်း၊ အာနေတွာ-အဝေးမှသော်လည်းဆောင်ယူ၍+ (သီလဝန္တပုဂ္ဂိုလ်တို့အား) ဟုနိတဗ္ဗံ–ပူဇော်ထိုက်သော ပစ္စည်း ၄ ပါးသည်၊ အာဟုနံ – မည်၏၊ အာဟုနံ – ကို၊ အရဟတီတိ အာဟုနေယျော၊ အရဟတိအနက်၌ ဏေယျပစ္စည်း၊ အရိယာဖြစ်ပြီးသော သံဃာသည် (အနီးအပါးရှိသော ပစ္စည်းကိုမဆိုထားဘိ) အဝေးမှသော်လည်း ဆောင်ယူ၍ ပူဇော်အပ်သော ပစ္စည်းကို ခံယူထိုက်သည်၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း– ထိုအလှူကို အကျိုးများစေနိုင်သော သီလသိက္ခာ စသည်တို့က ဖြူစင်သောကြောင့်တည်း။

**ပါဟုနေယျံ။** ။ပ+အာ+ဟုန၊ ပ (ဒိသာဝိဒိသတော)–ရှေးရှုအရပ်, အထောင့်အရပ်ဟူသော အရပ်တပါးမှ+အာ (အာဂတာနံ) – လာသော ဧည့်သည် မိတ်ဆွေတို့အား+ဟုနိတဗ္ဗံ– ပေးထိုက်သော ပစ္စည်းသည်၊ ပါဟုနံ– မည်၏၊ ပါဟုနံ+အရဟတီတိ ပါဟုနေယျော–အရိယာသံဃာတော်သည် ဘုရားတဆူ ပွင့်တော်မူမှ ပေါ်လာကြသော ဧည့်သည်တော်များဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် အရိယာသံဃာတော်များသည် (ရိုးရာဧည့်သည်များထက်) သာလွန်၍ ဧည့်သည်ဘို့ ပစ္စည်းများကို ခံယူထိုက်သည်။

ထိုက်သော၊ပေ၊ ဒက္ခိဏေယျံ- တမလွန်ဘဝကို ရည်မှန်း၍ လှူဒါန်းအပ်သော ပစ္စည်းကို ခံယူတော်မူထိုက်သော၊ ပေ၊ အဉ္ဇလိကရဏီယံ - လက်အုပ် ချီမိုး ရှိခိုးမှုပြုခြင်းကို ထိုက်တော်မူသော၊ ပေ၊ အနုတ္တရံ- အတူမရှိ မြတ်သော၊ ပုည ကွေတ္တံ – ကောင်းမှု မျိုးစေ့တို့၏ စိုက်ပျိုးကြဲချရာ လယ်ယာမြေကောင်းဖြစ် တော်မူသော၊ သံဃံ - အရိယာ သံဃာတော်ကို၊ ပစ္စက္ခာမိ - ၏၊ ဣတိ ဝေံ- ဤသို့ သိက္ခာချခြင်းသည်၊ သံဃဝေဝစနေန - ဖြင့်၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ - သည်၊ ဟောတိ-၏။

သိက္ခံ ပစ္စက္ခာမိတိ-သည်၊ ဝေဝစနေနပစ္စက္ခာနံ,န-မဟုတ်၊ ဘိက္ခုသိလ်- ဘိက္ခုသိလကို၊ ပစ္စက္ခာမိ - ၏၊ [ နောက်၌ ဤအတိုင်းပေး၊ ] ပေ၊ ဣတိဝေံ- ဤသို့ သိက္ခာချခြင်းသည်၊ သိက္ခာဝေဝစနေန-ဖြင့်၊သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊ ဝိနယံ ပစ္စက္ခာမိတိ-သည်၊ ဝေဝစနေန ပစ္စက္ခာနံ န(ဟောတိ၊)ဘိက္ခုဝိနယံ- ကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ ပေ၊ဒုက္ကဋသိတံ-ကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဣတိဝေမာဒိ-ဤသို့အစရှိသော သိက္ခာချခြင်းသည်၊ဝိနယဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊ပါတိမောက္ခံ ပစ္စက္ခာမိတိ- သည်၊ပေ၊ဘိက္ခုပါတိမောက္ခံ–ကို၊ (ပစ္စက္ခာမိ၊)၊ပေ၊ဣတိဝေံ- ဤသို့သိက္ခာချခြင်းသည်၊ ပါတိမောက္ခဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊

ဒက္ခိဏေယျံ ။ ။ ဒက္ခန္တိ ဝဍ္ဎန္တိ ဧတာယာတိ ဒက္ခိဏာ – သတ္တဝါတို့၏ သမ္ပတ္တိ အမျိုးမျိုးဖြင့် တိုးပွားကြောင်း ဖြစ်သော ( တမလွန်အတွက် ရည်မှန်း၍ လှူဒါန်းအပ် သော ) အလှူ၊ ဒက္ခိဏံ+အရဟတီတိ ဒက္ခိဏေယျော–ရည်မှန်းသည့်အတိုင်း အကျိုးရ စေတတ်သောကြောင့် ဒက္ခိဏာကို ခံယူထိုက်သည်။

အဉ္ဇလိကရဏီယံ၊ ။အဉ္ဇလိဿ – လက်အုပ်ချီမိုး ရှိခိုးမှုကို+ကရဏံ – ပြုခြင်း တည်း၊ အဉ္ဇလိကရဏံ – ခြင်း၊ အဉ္ဇလိကရဏံ + အရဟတီတိ အဉ္ဇလိကရဏီယော၊ အရဟတိအနက်၌ ဏီယပစ္စည်း၊ ကကို ယပြု။

အနုတ္တရံ ပုညက္ခေတ္တံ ။ ။ ရှင်ဘုရင်၏ သလေးစပါးစိုက်ပျိုးရာ သလေးခင်းကို " ရညော သာလိခေတ္တံ "ဟု ဆိုအပ်သကဲ့သို့ တလောကလုံး၏ ကောင်းမှုမျိုးစေ့ကို စိုက်ပျိုးရာ ( စိုက်ပျိုးသည့်အတိုင်း အသီးအပွင့်အကျိုးများ၏ ဖြစ်ထွန်းရာ ) အရိယာ သံဃာတော်ကိုလည်း"လောကဿ ပုညခေတ္တ"ဟု ဆိုအပ်သည်။

မှတ်ချက်။ ။"အနုတ္တရံ ပုညက္ခေတ္တံ လောကဿ"ဟူသော သံဃာ့ဂုဏ်တော်၌ "သံဃော"ဟု ပုလ္လိင်အနက်ကိုအရကောက်ရပါလျက်"ပုညခေတ္တံ"ဟု နပုလ္လိင်ရှိသော ကြောင့် ပုညခေတ္တံ၌ ခေတ္တံကို သဒိသူပစာရပုဒ် ဟု ကြံပါ၊ ဥပစာသဒ္ဒါဟူသမျှ၌ မူလ လိင်ဝုစ် မပျက်စေရ၊ ဥပစာမကြံဘဲ ဥပမာတဒ္ဓိတ် ကြံလျှင်ကား " ပုညခေတ္တော " ဟု သံဃောနှင့် အရတူရလိမ့်မည်၊ သတ္တတ၌ "ခေတ္တ"ဟု ရှိသောကြောင့် ပါဠိ၌ရှေ့ပုဒ်နှင့် တွဲသောအခါ ကကို ခပြု၍ (က်) လာစေရသည်။

ဥဒ္ဒေသံ ပစ္စက္ခာမိတိ- သည်၊ ဝေဝစနေန ပစ္စက္ခာနံ န(ဟောတိ)၊ ဘိက္ခုပါတိ မောက္ခုဒ္ဒေသံ-ကို၊(ပစ္စက္ခာမိ၊)ပေ၊ ပဌမံ ပါတိမောက္ခုဒ္ဒေသံ-ကို၊ (ပစ္စက္ခာမိ၊) [နိဒါနုဒ္ဒေသကို ဆိုလိုသည်၊]ဒုတိယံ ပါတိမောက္ခုဒ္ဒေသံ-ကို၊ပေ၊[ပါရာဇိကုဒ္ဒေသကို ဆိုလိုသည်၊]တတိယံ ပါတိမောက္ခုဒ္ဒေသံ- ကို၊ ပေ၊ [သံဃာဒိသေသုဒ္ဒေသကိုဆိုလိုသည်၊] စတုတ္ထံ ပါတိမောက္ခုဒ္ဒေသံ- ကို၊ပေ၊[အနိယတုဒ္ဒေသကို ဆိုလိုသည်၊] ပဉ္စမံ ပါတိမောက္ခုဒ္ဒေသံ- ကို၊ ပေ၊ [ ဝိတ္ထာရုဒ္ဒေသကို ဆိုလိုသည်၊ ] သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဒေသံ – သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓ၏ဥဒ္ဒေသကို၊ပေ၊ ဝိဇိတ ဝိဇယုဒ္ဒေသံ-ဝိဇိတ ဝိဇယ၏ ဥဒ္ဒေသကို၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဣတိဝေမာဒိ- ဤသို့အစရှိသော သိက္ခာချခြင်းသည်၊ ဥဒ္ဒေသဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

ဥပဇ္ဈာယံ ပစ္စက္ခာမိတိ-သည်၊ပေ၊ယော-အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ မံ-ကို၊ပဗ္ဗာဇေသိ – ရှင်ဖြစ်စေပြီ၊ ဝါ – ရှင်ပြုပေးပြီ၊ [ရှင်သာမဏေပြုစဉ်က ဥပဇ္ဈာယ်ပေးသောပုဂ္ဂိုလ်-ဖြစ်သည်။] (တံ-ထိုပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ အဟံ-သည်၊ ပစ္စက္ခာမိ-၏၊) [ တာဟံ ပစ္စက္ခာမိ – ၌ လှမ်းစပ်၊ ] ယော – သည်၊ မံကို၊ ဥပသမ္ပာဒေသိ–မြင့်မြတ်သော ပဉ္စင်းအဖြစ်သို့ရောက်စေပြီ၊ [ ရဟန်းခံစဉ်က ဥပဇ္ဈာယ်ပေးသည်၊] (တံ-ကို၊ အဟံပစ္စက္ခာမိ၊)ယဿ-၏၊ မူလေန–အရင်းမူလ ပဌာန၏အဖြစ်ဖြင့်၊ ဝါ– အကြောင်း၏အဖြစ်ဖြင့်၊ (ဘာဝပ္ပဓာန၊) [ယဿ မူလေနာတိ-ယဿ ပဌာနဘာဝေန၊ ကာရဏဘာဝေနဝါ၊] အဟံ-သည်၊ ပဗ္ဗဇိတော-ရှင်အဖြစ်သို့ ရောက်ခဲ့ပြီ၊ (တံ အဟံပစ္စက္ခာမိ၊) ယဿ-၏၊ မူလေန-ဖြင့်၊ ဝါ-ဖြင့်၊ အဟံ-သည်၊ ဥပသမ္ပန္နော-ပြီ၊ (တံ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊) မယှံ- ၏၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာ-ရှင်အဖြစ်သည်၊ ယဿ-၏၊ မူလိကာ-မူလပဌာနရှိ၏၊ (တံ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊) မယှံ-၏၊ ဥပသမ္ပဒါ- သည်၊ ယဿ- ၏၊ မူလိကာ- ရှိ၏၊ တံ- ကို၊ အဟံ-သည်၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဣတိဝံ-သည်၊ ဥပဇ္ဈာယဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

**ယဿမူလိကံ**။ ။ " မူလံ (ပဌာနဘာဝေါ, ကာရဏဘာဝေါဝါ ) ဧတိဿာတိ မူလိကာ၊ မူလသဒ္ဒါသည် "အဘယ်၏ မူလနည်း " ဟု မေးဘွိရာ ရှေ့ကပုဒ်ကိုငဲ့ခြင်းရှိပါသော်လည်း ဂမကသတ္တိ (ရှေ့ပုဒ်က မိမိဟူသော မူလဒ္ဒသာ စပ်ရသည်၏ အဖြစ်ကို သိစေစွမ်းနိုင်သောသတ္တိ) ရှိသောကြောင့် "မူလိကာ"ဟု တဒ္ဓိတ်ဖြစ်နိုင်သည်။

**မှတ်ချက်**။ ။ဤစကားကို ထောက်၍ ပုဒ်တပါးကို ငဲ့သောပုဒ်သည် ဂမကသတ္တိရှိမှ နောက်ပုဒ်နှင့် သမာသ်ဖြစ်သကဲ့သို့, တဒ္ဓိတ်လည်း ထိုကဲ့သို့ ဂမကသတ္တိရှိမှ ဖြစ်နိုင်သည်၊ ထို့ကြောင့် "ဂမကတ္တာ သမာသော"ကဲ့သို့"ဂမကတ္တာ တဒ္ဓိတော"ဟု လည်း ပရိဘာသာ ပြုရမည် ဟု မှတ်။ [မူလသဒ္ဒဿ သာပေက္ခဘာဝေပိ နိစ္စသာပေက္ခတာယ ဂမကတ္တာ တဒ္ဓိတဝုတ္တိ ဒဋ္ဌဗ္ဗာ၊–ဋီကာ။]

အာစရိယံ ပစ္စက္ခာမိတိ- သည်၊ပေ၊ယော-အကြင်ဆရာသည်၊ မံ-ကို၊ ပဗ္ဗာဇေသိ- ရှင်ဖြစ်စေပြီ၊ ဝါ- ရှင်ပြုပေးပြီ၊ (တံ- ထို သရဏဂုမ်ဆရာကို၊ အဟံ-သည်၊ပစ္စက္ခာမိ)၊ယော-သည်၊ မံ-ကို၊ အနုဿာဝေသိ-ကမ္မဝါစာကိုကြားသိစေပြီ၊ (တံ-ထို ကမ္မဝါစာဆရာကို၊ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊) ယံ,အဟံ, နိဿာယ-မှီ၍၊ ဝသာမိ - နေ၏၊ (တံ- ထို နိဿယည်းဆရာကို၊ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊ ) ယံ, အဟံ ဥဒ္ဒိသာပေမိ-ပါဠိကိုရွတ်ပြစေ၏၊(တံ- ထိုပါဠိရွတ်ပြစေအပ်သောဆရာကို၊ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊) ယံ,အဟံ,ပရိပုစ္ဆာမိ-အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို အဘန်ဘန်မေးမြန်း၏၊ တံ-ထို အနက်အဓိပ္ပါယ် ပြောပေးသောဆရာကို၊ပေ၊ယော,မံ-ကို၊ ဥဒ္ဒိသတိ- ပါဠိကို ရွတ်ပြ၏၊ တံ-ထိုပါဠိကို ရွတ်ပြပေးသောဆရာကို၊ ပေ၊ ယော မံ,ပရိပုစ္ဆာပေတိ- အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို အဘန်ဘန်မေးမြန်းစေ၏၊ တံ-ထို အနက်အဓိပ္ပါယ် မေးစေသောဆရာကို၊ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဣတိ ဧဝံ-သည်၊ အာစရိယဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊

သဒ္ဓိဝိဟာရိကံ ပစ္စက္ခာမီတိ – သည်၊ပေ၊ ယံ – အကြင် တပည့်ကို၊ အဟံ, ပဗ္ဗာဇေသိံ-ဥပဇ္ဈာယ်ပေး၍ ရှင်ဖြစ်စေပြီ၊ ( တံ–ထို တပည့်ကို၊ အဟံ–သည်၊ ပစ္စက္ခာမိ၊)ယံ – အကြင်တပည့်ကို၊ အဟံ, ဥပသမ္ပာဒေသိံ – ဥပဇ္ဈာယ်ပေး၍ ရဟန်းအဖြစ်သို့ ရောက်စေပြီ၊ ( တံ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊ပေ၊တံ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဣတိ ဧဝံ–သည်၊ သဒ္ဓိဝိဟာရိကဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

အန္တေဝါသိကံ ပစ္စက္ခာမီတိ-သည်၊ပေ၊ ယံ-အကြင်တပည့်ကို၊ အဟံ ပဗ္ဗာဇေသိံ –သရဏဂုမ်ပေး၍ ရှင်ဖြစ်စေပြီ၊ (တံ- ထို တပည့်ကို၊ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ)

**ပဗ္ဗာဇေသိ–စသည်။** ။ပဗ္ဗာဇေသိဖြင့် သရဏဂုံပေးသော ဆရာကို, အနုဿာဝေသိဖြင့် ကမ္မဝါစာဆရာကို, နိဿာယဝသာမိဖြင့် နိဿယည်းဆရာကို, ဥဒ္ဒိသာပေမိ စသော ၄ မျိုးဖြင့် စာချဆရာကို ပြ၏၊ ဥဒ္ဒိသာပေမိဖြင့် မိမိက ပါဠိကို ရွတ်ဆိုပြဘို့ရန် တောင်းပန်အပ်သောဆရာကိုပြ၏၊ပရိပုစ္ဆာမိဖြင့် မိမိကအနက်အဓိပ္ပါယ် မေးအပ်သော ဆရာကိုပြ၏၊ ဥဒ္ဒိသတိဖြင့် မိမိကမတောင်းပန်ရဘဲ ပါဠိရွတ်ဆိုပြပေးသော(ပါဠိစာချ) ဆရာကိုပြ၏၊ ပရိပုစ္ဆာပေတိဖြင့် မိမိကို အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို မေးစေသော ( အနက်အဓိပ္ပါယ် အမေးခိုင်းသော)ဆရာကိုပြသည်။

**မှတ်ချက်။** ။စာအုပ်ပေစာ မရှိသောရှေးခေတ်၌(၁) ဆရာကို ပါဠိသက်သက်ရွတ်ပြဘို့တောင်းပန်ရ၏၊ ( ၂ ) ထိုသို့တောင်းပန်သဖြင့် ဆရာက ရွတ်ပြရ၏၊ ( ၃ ) ထို ပါဠိ၏အနက် အဓိပ္ပါယ်ကို မေးရ၏၊ ( ၄ ) အဓိပ္ပါယ်ပြောပြသော ဆရာကလည်း မေးစေရ(အမေးခိုင်းရ) ၏၊ ထို့ကြောင့် ဓမ္မာစရိယနှင့်စပ်၍ ဥဒ္ဒိသတိစသော ကြိယာ ၄ ရပ်ရှိရသည်၊"ယာဟံပဗ္ဗာဇေသိံ"စသော သဒ္ဓိဝိဟာရိကဝေဝစနတို့၏အဓိပ္ပါယ်ကို ဥပဇ္ဈာယ်မှ ပြောင်းပြန်– ပြန်၍သိနိုင်လောက်ပြီ။

၊ပေ၊ယော–အကြင် တပည့်သည်၊ မံ – ငါ့ကို၊ ဥဋ္ဌိသာပေတိ – ပါဠိကို ရွတ်ပြစေ၏၊ (တံ– ကို၊ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ )၊ ပေ၊ ပရိပုစ္ဆတိ – အနက် အဓိပ္ပါယ်ကို အဘန်ဘန်မေးမြန်း၏၊ပေ၊တံ–ကို၊ အဟံ–သည်၊ ပစ္စက္ခာမိ၊ ဣတိ ဧဝံ–သည်၊ အန္တေဝါသိကဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။ [ယာဟံ ပဗ္ဗာဇေသိ – စသည်တို့၏ အဓိပ္ပါယ်ကိုလည်း အာစရိယ ၄ မျိုးမှ ပြောင်းပြန်-ပြန်၍ သိနိုင်လောက်ပြီ။]

သမာနုပဇ္ဈာယကံ ပစ္စက္ခာမီတိ – သည်၊ပေ၊ မယ့်– ၏၊ ဥပဇ္ဈာယော–ဥပဇ္ဈာယ်သည်၊ ယံ – ကို၊ ပဗ္ဗာဇေသိ – ဥပဇ္ဈာယ်ပေး၍ ရှင်ဖြစ်စေပြီ၊ (တံ– ထိုတပည့်ကို၊ အဟံ ပစ္စက္ခာမိ၊) ပေ၊ ဥပသမ္ပာဒေသိ – ဥပဇ္ဈာယ်ပေး၍ မြင့်မြတ်သော ပဉ္စင်းအဖြစ်သို့ရောက်စေပြီ၊ပေ၊ယော – အကြင်တပည့်သည်၊ တဿ–ထို ငါ့ဥပဇ္ဈာယ်၏၊ မူလေန ပဗ္ဗဇိတော၊ (တံ – ထိုတပည့်ကို၊ပေ၊) ယဿ, ပဗ္ဗဇ္ဇာ–သည်၊ တံမူလိကာ–ထို ငါ့ဥပဇ္ဈာယ်ဟူသော အရင်းမူလ ပဓာနရှိ၏၊ [ သောဝေ+ မူလံ တံမူလံ ( ထိုဥပဇ္ဈာယ်ဟူသော အကြောင်းရင်း )၊ တံမူလံ +ယဿ အတ္ထီတိ တံမူလိကာ၊] ပေ၊ သမာနုပဇ္ဈာယကဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခနံ ဟောတိ၊ သမာနာစရိယကံ ပစ္စက္ခာမီတိ – သည်၊ ပေ ၊ မယှံ – ၏၊ အာစရိယော, ယံ – ကို၊ ပဗ္ဗာဇေသိ – သရဏဂုမ်ပေး၍ ရှင်ဖြစ်စေပြီ၊ ( တံ– ထိုတပည့်ကို၊ပေ၊)သမာနာစရိယကဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

သဗြဟ္မစာရိံ ပစ္စက္ခာမီတိ-သည်၊ပေ၊ ယေန-အကြင်သီတင်းသုံးဘော်နှင့်၊ သဒ္ဓိံ–တကွ၊ အဟံ၊ အဓိသီလံ–အဓိသီလသိက္ခာကို၊ သိက္ခာမိ-ကျင့်၏၊(တံ– ထို သီတင်းသုံးဘော်ကို၊ပေ၊ ) ယေန သဒ္ဓိံ အဟံ, အဓိစိတ္တံ – ကို၊ သိက္ခာမိ၊ တံ– ထို၊ ပေ၊ သဗြဟ္မစာရိဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊ ဂိဟီတိ မံ ဓာရေဟီတိ–သည်၊ပေ၊ မံ–တပည့်တော်ကို၊ အဂါရိကောတိ – အိမ်၌တည်သူ ဟူ၍၊ ဓာရေဟိ–မှတ်ပါလော၊ (ဣတိ–ဤသို့ဂုင်း၊) မံ–ကို၊ ကဿကောတိ – လယ်သွားဟူ၍၊ ဓာရေဟိ – လော၊ပေ၊ဝါဏိဇောတိ – ကုန်သည်ဟူ၍ ၊ပေ၊ ဂေါရက္ခောတိ – နွားကျောင်းသားဟူ၍၊ပေ၊ ဩကလ္လကောတိ–အထီးကျံမွဲ လူဆင်းရဲဟူ၍၊ပေ၊မောဠိဗဒ္ဓေါ– ဖွဲ့အပ်သော ရောင်ထုံးရှိသူဟူ၍၊ ဝါ–ဖွဲ့အပ်

ဩကလ္လကော ॥ ॥ ခုပ္ပိပါသာဒိဒုက္ခပရေတာနံ – ဆာလောင်မွတ်သိပ်ခြင်းအစရှိသော ဒုက္ခသည်နှိပ်စက်အပ်ကုန်သော၊ ဒီဏာသုခါနံ-ကုန်ခန်းသော သုခရှိကုန်သော၊ နဟာနာဒိသရီရပဋိဇဂ္ဂနဝိရဟိတာနံ–ရေချိုးခြင်းစသည်ဖြင့် ကိုယ်ကို သုတ်သင်ခြင်းမှ ကင်းကုန်သော၊ ကပဏမနုဿာနံ–အထီးကျံမွဲလူဆင်းရဲတို့၏၊ ဧတံ အဓိဝစနံ။

သော မကိုင်ရှိသူဟူ၍၊ [သိခါဗဒ္ဓေါ၊ ဩမုဏ္ဍမကုဋ္ဌောဝါ-စွပ်အပ်သောမကိုင် ရှိသူ။]ဝါ-မကိုင်ဆောင်းသူဟူ၍၊ပေ၊မံ-ကို၊ ကာမဂုဏိကောတိ-ကာမဂုဏ် ခံစားသူဟူ၍၊ ခါရေဟိ- လော၊ ဉာတိ- ငင်း၊ ဉာတိဝေံ- ဤသို့ သိက္ခာချခြင်း သည်၊ [ဉာတိတလုံး အကြေကြီ၊] ဂိဟိဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊

ဥပါသကောတိ မံ ခါရေဟီတိ – သည် ၊ ပေ ၊ မံ – ကို၊ ဒွေဝါစိကော- ၂ ခွန်းသောစကားရှိသော၊ ဥပါသကောတိ-ဟူ၍၊ ခါရေဟိ-လော၊ ဉာတိ၊ ငင်း၊ [ ဒွေ+ဝါစာ-ဒွိဝါစံ၊ ဒွိဝါစံ+ယဿ အတ္ထိတိ ဒွေဝါစိကော၊ ဘုရား ပွင့်တော်မူစဉ် သံဃာ မရှိသေးသည်ကို မှန်း၍ " ဒွေဝါစိက " ဟု ဆိုသည်၊ ထို ဥပါသကာမျိုး အနေဖြင့် သိက္ခာချနိုင်၏-ဟု ပြ၏။] ပေ၊ တေဝါစိကော- ၃ ခွန်းသော စကား ရှိသော၊ပေ၊ဗုဒ္ဓံ – ကို၊ သရဏဂမနိကာ – ကိုးကွယ်ရာ ဟူ၍ ဆည်းကပ်တတ်သော၊(ဥပါသကောတိ-ဟူ၍၊ ခါရေဟိ-လော၊ ဉာတိ- ငင်း၊ပေ၊) [ ဥပါသကော ပုဒ်ကို အားလုံး၌ထည့်ပေး၊] ပဉ္စသိက္ခာပဒိကော- ငါးပါးသော သိက္ခာပုဒ်ရှိသော၊ ( ဥပါသကောတိ-ဟူ၍) ၊ ပေ ၊ ဥပါသက ဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊ အာရာမိကောတိ မံ ခါရေဟီတိ- သည်၊ပေ၊ မံ– ကို၊ ကပ္ပိယကာရကောတိ - အပ်အောင် ပြုတတ်သူ ဟူ၍၊ပေ၊ ဝေယျာဝစ္စကရောတိ–ဝေယျာဝစ္စကို ပြုသူဟူ၍၊ပေ အပ္ပဟရိတ ကာရကော တိ–စိမ်းစိုသော မြက်သစ်ပင် မရှိအောင် ပြုသူဟူ၍၊ (မြက်သစ်ပင်ကို သုတ်သင် ရှင်းလင်းတတ်သူ ဟူ၍)၊ ပေ၊ ယာဂုဘာဇကောတိ–ယာဂုကိုဝေဘန်သူဟူ၍၊ ပေ၊ဖလဘာဇကောတိ-သစ်သီးကို ဝေဘန်သူဟူ၍၊ပေ၊ခဇ္ဇကဘာဇကောတိ- ခဲဘွယ်ကို ဝေဘန်သူဟူ၍၊ ( မုန့်ပဲ သရေစာကို ဝေဘန်သူဟူ၍ )၊ ပေ ၊ အာရာ မိကဝေဝစနေန သိက္ခာ ပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

သာမဏေရောတိ မံ ခါရေဟီတိ-သည်၊ ပေ၊ မံ–ကို၊ ကုမာရကောတိ– အငယ်ဆုံးသာမဏေဟူ၍၊ ခါရေဟိ–လော၊ (ဉာတိ–ငင်း၊)ပေ၊ စေလ္လကော တိ– သာမဏေငယ် ဟူ၍၊ ပေ၊ စေဋကောတိ– သာမဏေလတ် ဟူ၍၊ မောဠိ

ကုမာရကောစသည်။ ။ကုမာရာဝတ္ထော-သတ္တိသားငယ် အခိုက်အတန့်(အရွယ်) ရှိသော၊ အတိဝိယ ဒဟရသာမဏေရော–အလွန်ငယ်သော ( ၅ နှစ်– ၇ နှစ်အရွယ်) သာမဏေ၊ စေလ္လကောတိ တတောမဟန္တတရော ခုဒ္ဒကသာမဏေရော၊ စေဋကောတိ မဇ္ဈိမော၊ မောဠိကတ္ထောတိ မဟာသာမဏေရော၊ သမဏုဒ္ဒေသောတိ ပန အဝိသေ သတော သာမဏေရဝိဝစနံ=( သမဏတို့ကို ရေတွက်ရာ၌ သာမဏေအားလုံးကိုပါ ထည့်သွင်း ရေတွက်ရသောကြောင့်) သမဏုဒ္ဒေသနာမည်သည် သာမဏေအားလုံးနှင့် ဆိုင်သောနာမည်တည်း။ [သမဏောတိ–ဟူ၍+ဥဒ္ဒေသော– ညွှန်ပြအပ်သူ။]

ကတ္တောတိ– သာမဏေကြီးဟူ၍၊ ပေ၊သမဏာဒ္ဓေသောတိ–သမဏာဟု ညွှန်ပြ အပ်သော သာမညသာမဏေဟူ၍၊ ခာရေဟိ – လော၊ (ဇာတိ–ဂုဏ်း၊)ဇာတိ ဧဝံ-သည်၊ ပေ၊ ဟောတိ၊ တိတ္ထိယောတိ မံခာရေဟီတိ–သည်၊ ပေ၊နိဂဏ္ဌော တိ – နိဂဏ္ဌဟူ၍၊ပေ၊အာဇီဝကောတိ – ဟူ၍ ၊ပေ၊ တာပသောတိ – ရသေ့ ဟူ၍ ၊ပေ၊ ပရိဗ္ဗာဇကောတိ – ပရိဗ္ဗိုဇ်ဟူ၍ ၊ပေ၊ ပဏ္ဍုရင်္ဂေါတိ – ဖြူသော အဝတ်ဖြင့် ဖုံးအပ်သော ကိုယ်အင်္ဂါရှိသူ ဟူ၍၊ [ ပဏ္ဍုရေန - ဖြူသောအဝတ် ဖြင့်+ပဋိစ္ဆန္နံ+ အင်္ဂံ ယဿာတိ ပဏ္ဍုရင်္ဂေါ၊ သာသနာပဦ ဖိုးသူတော်မျိုး တည်း၊ ]ပေ၊တိတ္ထိယသာဝကောတိ မံ ခာရေဟီတိ–သည်၊ပေ၊ နိဂဏ္ဌသာဝ ကောတိ–ဟူ၍၊ပေ၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

အဿမဏောတိ မံ ခာရေဟီတိ– သည်၊ပေ၊ဒုဿီလောတိ – သီလမရှိသူ ဟူ၍၊ ["နိဿီလော" ဋီကာ၊ ဒုသဒ္ဒါ အဘာဝအနက်ဟော]၊ပေ၊ပါပဓမ္မော တိ–ယုတ်မာသော အကျင့်သဘောရှိသူဟူ၍၊ [ဒုဿီလတ္တာဝေ ဟီနဇ္ဈာသယ တာယ လာမကသဘာဝေါ၊ ] အသုစိသင်္ကဿရသမာစာရောတိ– မစင်ကြယ် သည်ဖြစ်၍ ယုံမှားခြင်းဖြင့် တွေးထင်အပ်သော အကျင့်ရှိသူဟူ၍ ၊ပေ၊ ပဋိစ္ဆန္န ကမ္မန္တောတိ – ဖုံးကွယ်အပ်သော မကောင်းမှုရှိသူဟူ၍၊ [ ရှက်စရာကောင်း သဖြင့် ဖုံးထားအပ်သော မကောင်းသောအကျင့် ရှိသူ ] ၊ပေ၊ အဿမဏော သမဏပဋိညောတိ- ရဟန်းမဟုတ်ဘဲ ရဟန်းဟု ဝန်ခံခြင်းရှိသူဟူ၍၊ [စာရေး တံယူရာ စသည်၌ ရဟန်းဟုညာ၍ပြောဆိုဝန်ခံသူ၊ သမဏော ဣတိ+ပဋိညာ ယဿာတိ သမဏပဋိညော၊] အဗြဟ္မစာရီ ဗြဟ္မစာရိပဋိညောတိ–ဗြဟ္မစာရီ မဟုတ်ဘဲ ဗြဟ္မစာရီဟု ဝန်ခံခြင်းရှိသူဟူ၍၊ [ ဥပုသ်ကံ စသည်၌ ဗြဟ္မစာရီ ဟု ညာ၍ ဝန်ခံသူ]၊ ပေ၊ အန္တောပူတီတိ- အတွင်း၌ ပုတ်သူဟူ၍၊ [ သီလဝိပတ္တိ ဟူသော အတွင်းပုတ်-ပုတ်သူ]၊ပေ၊အဝဿုတောတိ-ကိလေသာ စိုစွတ်အပ်သူ ဟူ၍၊ [၆ ဒွါရတို့မှ ရာဂစသော ကိလေသာယိုသဖြင့် စိုနေသူ] ၊ပေ၊ ကသမ္ဗု

**အသုစိ၊ပေ၊သမာစာရော။** ။သရိတဗ္ဗောတိ သရော၊ သင်္ကာယ+သရော သင်္ကဿရော၊ သင်္ကဿရောစ + သော + သမာစာရောတိ သင်္ကဿရသမာစာရော၊ [သံ အနက်မရှိ၊] အသုစိ ( ဟုတွာ ) + သင်္ကဿရသမာစာရော အသုစိသင်္ကဿရသမာ စာရော၊ တစုံတခု မလျော်ကပ်သော အမှုကို ( သူတပါး ပြုထားစေကာမူ ) သူ ပြုသည်ဟု ယုံမှားစရာဖြစ်လောက်အောင် အမြဲအားဖြင့် ကိုယ်နှုတ် စိတ်အမူအရာ မစင် ကြယ်နေသူ၊ (တနည်း) ရဟန်းအများ စုဝေး၍ ကိစ္စ တစုံတရာအတွက် တိုင်ပင်နေကြ သည်ကို မြင်လျှင် "ငါပြုထားတဲ့အမှုကို သိ၍ ပြောနေကြရော့သလား"ဟု မိမိကိုယ်တိုင် သူများအပေါ်၌ ယုံမှားခြင်းဖြင့် တွေးထင်ရအောင် မစင်ကြယ်သောအကျင့် ရှိသူ။

ဇာတောတိ-အမျိုးကဲ့သို့ ဖြစ်သောသူဟူ၍၊ပေ၊ကောဉ္ဈောတိ-အညွန့်တုံးသူဟူ၍၊ [ ကောဉ္ဈောတိ ဒုဿီလာဓိဝစနံ၊ ဒုဿီလဖြစ်၍ အညွန့်တုံးနေသူ-ဟူလို ]၊ပေ၊ အဿမဏာဝေဝေစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ၊ အသကျပုတ္တိယောတိ မံ ဓာရေဟီတိ- သည် ၊ပေ၊ မံ- ကို၊ န သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓပုတ္တောတိ-သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓ၏ သားမဟုတ်ဟူ၍၊ ဓာရေဟိ- လော၊ပေ၊ဣတိ ဝေမာဒိ-ဤသို့ အစရှိသော သိက္ခာချခြင်းသည်၊ [ အလားတူ ပရိယာယ်ပုဒ် မရှိလျှင် ''ဣတိဝေ'' ဟု ထား၍ , အလားတူပရိယာယ် ကျန်သေးလျှင် '' ဣတိ ဝေမာဒိ''ဟု ထားသည်၊] အသကျပုတ္တိယ ဝေဝစနေန သိက္ခာပစ္စက္ခာနံ ဟောတိ။

တေဟိ အာကာရေဟိ ၊ပေ၊ နိမိတ္တေဟီတိ – ကား၊ ဗုဒ္ဓဝေဝစနာနိဝါတိ အာဒိနာ-ဝါအစရှိသော၊ နယေန-ဖြင့်၊ ဝုတ္တေဟိ - ဟောတော်မူအပ်ပြီးကုန်သော၊ ဗုဒ္ဓါဒီနံ – ဗုဒ္ဓအစရှိသည်တို့၏၊ တေဟိ ဝေဝစနေဟိ - တို့ဖြင့်၊ [ပါဠိတော်ဝယ် ''ဝဒတိ, ဝိညာပေတိ'' ၌စပ်၊]ဟိ–မှန်၊ ဝေဝစနာနိ–တို့ကို၊ [ဝုတ္တန္တိ-၌စပ်၊]သိက္ခာပစ္စက္ခာနဿ-သိက္ခာချခြင်း၏၊ ကာရဏတ္တာ-အကြောင်း၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အာကာရာနိ – အာကာရတို့ဟူ၍၎င်း၊ ဗုဒ္ဓါဒီနံ – ဘုရားအစရှိသည်တို့၏၊ သဏ္ဌာနဒီပနတ္တာ – ပုံသဏ္ဌာန်ကို ပြတတ်ကုန်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ – တနည်း၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာန သဏ္ဌာနတ္တာဝေ – သိက္ခာချခြင်းဟူသော ပုံသဏ္ဌာန်၏ အဖြစ်ကြောင့်ပင်၊ လိင်္ဂါနိ – လိင်္ဂါတို့ဟူ၍၎င်း၊ သိက္ခာ

ကသမ္ဗုဇာတော။ ။သဥ္ဇာတ ရာဂါဒိကစဝရတ္တာ-လွန်စွာဖြစ်သော ရာဂစသော အမိုက်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ သီလဝန္တေဟိ ဆန္ဒေတဗ္ဗတ္တာစ ကသမ္ဗုဇာတော၊ [''အထော ကစဝရော၊ပေ၊ကသမ္ဗုပိ'' — အဘိဓာန် (၂၂၄)။]

အာကာရ, လိင်္ဂ ။ ။ အာကရောန္တိ – သိက္ခာချခြင်းအကျိုးကို လွန်စွာပြတတ်ပြီးစေတတ်ကုန်၏၊ ဣတိ အာကာရာ၊ လီနံ-လျှို့ဝှက်အပ်သောအနက်ကို+ဂမယန္တိတိ-သိစေတတ်ကုန်သောကြောင့်၊ လိင်္ဂါနိ၊ ထို လိင်္ဂသည်''လိင်္ဂ-ဟတ္ထာဒိသဏ္ဌာနံ''နှင့်အညီ ပုံသဏ္ဌာန်ဟူသော အနက်ကိုဟော၏၊ ထို ပုံသဏ္ဌာန်ကိုပြသော ဗုဒ္ဓါဒိဝေဝစန သဒ္ဒါကိုကား အနက်ကို အကြောင်းပြု၍ ကာရဏူပစာရ အားဖြင့် လိင်္ဂ ဟု ခေါ်၊ ထို့ကြောင့်''ဗုဒ္ဓါဒိသဏ္ဌာနဒီပနတ္တာ လိင်္ဂါနိ''ဟု ဖွင့်သည်။

သိက္ခာ၊ပေ၊သဏ္ဌာနတ္တာဝေ။ ။ဗုဒ္ဓ-သံဃ စသည်တို့မှာ ပုံသဏ္ဌာန်ရကောင်းသောကြောင့် ထိုဝေဝစနပုဒ်တို့က ဗုဒ္ဓါဒိသဏ္ဌာနကို ပြခြင်းသည် သင့်ပါစေတော့၊ ဓမ္မ– သိက္ခာ စသည်တို့ကား ပုံသဏ္ဌာန် မဟုတ်ကြသောကြောင့် ထိုဝေဝစနတို့သည် သဏ္ဌာနဒီပန မဖြစ်နိုင်၊ ထိုသို့ မဖြစ်နိုင်လျှင် အဘယ်မှာ လိင်္ဂမည်နိုင်အံ့နည်း – ဟု စောဒနာဘွယ်ရှိ၍ '' သိက္ခာ၊ ပေ ၊ သဏ္ဌာနတ္တာဝေ ဝါ '' ဟု မိန့်၊ ဝေဝုစ်ပရိယာယ် သဒ္ဒါအစဉ်သည်ပင် သိက္ခာချခြင်း၏ သရုပ်သကောင် ပုံသဏ္ဌာန် ( သဒ္ဒရုပ်အစဉ် )

ပစ္စက္ခာနသာ–၏၊ သဠ္ဌာနနပဟောတုတော–မှတ်သိခြင်း၏ အကြောင်း၏အဖြစ်ကြောင့်၊ မနသာကာနံ - တို့၏၊ တိလကာဒိနိ ဝိယ–မှဲ့ပြဲ့အစရှိသောအမှတ်အသားတို့ကဲ့သို့၊ နိမိတ္တာနိတိ–နိမိတ္တာနိဟူ၍၄င်း၊ ဝုစ္စန္တိ-နန်၏၊ ဧဝံ ခေါ်ဘိက္ခုဝေတိ - ဝေအစရှိသောစကားကို၊ ဍတော-၍ ဗုဒ္ဓ, ဗုဒ္ဓါဒိဝေဝစနပုဒ်တို့မှ၊ ပရံ -၌၊ [ယောဇနာ၌ ''ဍတော - တို့ထက်၊ ပရံတိ – အဓိကသာ (အလွန်ဖြစ်သော)ဟု ဖွင့်၏၊ (သ) ဝိဘတ်ကြေသည်''ဟု ဆို၏၊ ပရံကို နိပါတ်ကြံဟန်တူသည်၊ အဘိဓာန်၌ ပရံနိပါတ်မရှိ၊ ] အညသာ – သော၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနကာရဏသာ–၏၊ အဘာဝတော- မရှိခြင်းကြောင့်၊ နိယမေန္တော–သတ်မှတ်လျက်၊ [သန္နိဋ္ဌာနာဝဓာရဏ အနက်ရှိသော ခေါ် သဒ္ဒါဖြင့် ဆုံးဖြတ်လျက်၊] အာဟ-ပြီ၊ ဟိ-ဆက်၊ ဧတ္တ -၍ ဧဝံ ခေါ်ဘိက္ခုဝေအစရှိသောဝါကျ၌၊ အယံ-ကား၊ အတ္ထော - တည်း၊ ဧဝမေဝ - ၍ အခြင်းအရာအားဖြင့်သာ၊ ဒုဗ္ဗလျာဝိကမ္မဥ္စေဝ-ကမ္မသည်၄င်း၊သိက္ခာပစ္စက္ခာနဥ္စ-သိက္ခာချခြင်းသည်၄င်း၊ဟောတိ၊ ဍတော–၍ပုဒ်တို့မှ၊ ပရံ–၌၊ ကာရဏံ – သိက္ခာချခြင်း၏ အကြောင်းသည်၊ န အတ္ထိ-မရှိတော့၊ ဍတိ–၍ကား၊ (အတ္တော–တည်း။)

ဧဝံ – လျှင်၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနလက္ခဏံ – သိက္ခာချခြင်း၏ လက္ခဏာကို၊ ဒဿေတွာ- ပြီး၍၊ အပ္ပစ္စက္ခာနေ – သိက္ခာမချခြင်း၌၊ [သိက္ခာချသော်လည်း ချရာမရောက်ခြင်း၌–ဟူလို၊ ] အသမ္ဗောဟတ္တံ- မတွေဝေခြင်း အကျိုးငှါ၄င်း၊ တဿေဝ သိက္ခာပစ္စက္ခာနလက္ခဏဿ – ၏ပင်၊ ပုဂ္ဂလာဒိဝသေန – ဖြင့်၊ ဝိပတ္တိဒဿနတ္ထံစ-မပြည့်စုံပုံကို ပြခြင်းအကျိုးငှါ၄င်း၊ [ယောဇနာ၌ ''ဝိပတ္တိကို အသမ္ဘဝန'' ဟု ဖွင့်။] ကထဉ္စ ဘိက္ခုဝေ အပ္ပစ္စက္ခာတာတိအာဒိ-ကို၊ အာဟ-ပြီ၊ တတ္ထ-ထို ကထဉ္စ ဘိက္ခုဝေ အပ္ပစ္စက္ခာတာအစရှိသောစကားရပ်၌၊ ယေဟိ အာကာရေဟီတိ အာဒိ – အစရှိသော ပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဝုတ္တနယမေဝ-သည်သာ၊ ဥမ္မတ္တကောတိ- ကား၊ ယက္ခုမ္မတ္တကော ဝါ– ဘီလူး ဖမ်းစားခြင်းကြောင့် ရူးသူမူလည်း ဖြစ်သော၊ ပိတ္တုမ္မတ္တကော ဝါ – သည်းခြေပျက်ခြင်း

ဖြစ်သောကြောင့် ထို ဗုဒ္ဓဝေဝစန ဓမ္မဝေဝစန စသည်တို့ကို ( သဏ္ဍာနဒီပန မဟုတ်သော်လည်း) လိင်ဟု ဆိုအပ်သည်-ဟူလို၊ ဤနည်း၌ လိင်အရ သဏ္ဍာနဒီပနအနက်ကို မယူဘဲ, သဏ္ဍာနအနက်ကိုသာ ယူရသည်။ [ သိက္ခာပစ္စက္ခာနရူပါနိ ဟိ ဝေဝစနာနိ သိက္ခာပစ္စက္ခာနသဏ္ဍာနာနီတိ ဝုစ္စန္တိ။]

**နိမိတ္တ ။** ။ နိမိနာတိ သဉ္ဇာနာတိ ဧတေဟီတိ နိမိတ္တာနိ၊ လူ၌ မှဲ့သည် ထိုလူကို သိမှတ်ကြောင်း အမှတ်အသား ဖြစ်သကဲ့သို့ ဗုဒ္ဓါဒိဝေဝစနသဒ္ဒါ တို့လည်း '' သိက္ခာချသူ''ဟု သိကြောင်း အထိမ်းအမှတ်ပင် ဖြစ်ကြသည်။

ကြောင့် ရှုံးသူမှုလည်းဖြစ်သော၊ ယောကောစိ-အမှတ်မရှိ တစုံတယောက်သော၊ ဝိပရိတသညော-ဖေါက်ပြန်သောသညာ ရှိသူတည်း၊ သော-ထို ရှုံးသူသည်၊ သစေ ပစ္စက္ခာတိ-အကယ်၍ ပယ်စွန့်အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ သိက္ခာ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ အပ္ပစ္စက္ခာတာ-မပယ်စွန့်အပ်သည်၊ ဝါ-ပယ်စွန့်ရာမရောက်သည်၊ ဟောတိ၊ ဥမ္မတ္တကဿာတိ- ကား၊ တာဒိသဿေဝ- သော၊ [ယက္ခုမ္မတ္တက, သို့မဟုတ် ပိတ္တုမ္မတ္တကဖြစ်သော၊]ဥမ္မတ္တကဿ-ရှုံးသူ၏၊ ဟိ-မှန်၊ တာဒိသဿ-ထိုကဲ့သို့ ရှုအပ်သော သူရှုံး၏၊ သန္တိကေ - ၌၊ ပကတတ္တော – ပင်ကိုယ်သဘောရှိသော ရဟန်းသည်၊ သိက္ခံ-ကို၊ သစေ ပစ္စက္ခာတိ–အံ့၊ ဥမ္မတ္တကော–သည်၊ (သစေ) န ဇာနာတိ–အံ့၊ (ဧဝံသတိ) သိက္ခာ အပ္ပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ။

ယက္ခုမ္မတ္တကော – ဘီလူးဖမ်းစားခြင်းကြောင့် ရှုံးသူကို၊ ခိတ္တစိတ္တောတိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ပန – ဆက်၊ ပုရိမပဒေ – ၌ ဥမ္မတ္တကောပုဒ်၌၊ ဥမ္မတ္တက သာမညေန - ဥမ္မတ္တကသာမညကြောင့်၊ ဝါ - အရှုံးချင်း တူသည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ [ ဥမ္မတ္တကဘာဝသာမညေန – ဟု ဆိုလိုလျက် ဘာဝပုဒ် ကြေ၊ ] ယက္ခုမ္မတ္တကောဝါ ပိတ္တုမ္မတ္တကောဝါတိ - ဟူ၍၊ (မယာ) ဝုတ္တံ၊ ဥဘိန္နမ္ပိ- ၂ ဦးလုံးတို့၏ လည်း၊ ဝိသေသော-သည်၊အနာပတ္တိဝါရေ–၌၊ အာဝိ-စ္စာ၊ ဘဝိဿတိ–တံ့၊ ဧဝံ–လျှင်၊ ခိတ္တစိတ္တော-ဘီလူး ပစ်လွှင့်အပ်သောစိတ် ရှိသူ သည်၊ (သဒ္ဒတ္တ)၊ဝါ-ပြန့်လွင့်သောစိတ်ရှိသူသည်၊ (သဏ္ဍေတတ္တ)၊ သိက္ခံ-ကို၊ ( သစေ ) ပစ္စက္ခာတိ၊ ( ဧဝံသတိ ) အပ္ပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ၊ တဿ– ထို ပြန့်လွင့်သောစိတ်ရှိသူ၏၊ သန္တိကေ–၌၊ ပစ္စက္ခာတာ- သည်၊ (သမာနာ)ပိ- သော်လည်း၊ တမ္ပိ - ထိုပြန့်လွင့်သော စိတ်ရှိသူသည်၊ အဇာနန္တေ – မသိလ သော်၊ အပ္ပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ၊ ဝေဒနာဋ္ဋောတိ – ကား၊ ဗလဝတိယာ– အားရှိသော၊ ဝါ- အားကြီးသော၊ ဒုက္ခဝေဒနာယ - သည်၊ ဖုဋ္ဌော- တွေ့ထိ အပ်သော၊ မုစ္ဆာပရေတော – မိန်းမော တွေဝေခြင်းသည် လွှမ်းမိုး အပ်သူ တည်း၊ [ဤစကားအရ “ ဝေဒနာယ+ အဋ္ဋော ဝေဒနဋ္ဋော” ဟု ပြု၊ ပရံ+ ဣတော ပရေတော = လွှန်စွာ + ရောက်အပ်သူ။ ] တေန - ထို ဒုက္ခဝေဒနာ လွှန်စွာနှိပ်စက်အပ်သူသည်၊ ဝိလပန္တေန- ကယောင်ကတမ်း ပြောဆိုလျက်၊ ပစ္စက္ခာတာ(သမာနာ)ပိ အပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ၊တဿ-ထိုဒုက္ခဝေဒနာ လွှန်စွာနှိပ်စက်အပ်သူ၏၊ သန္တိကေ- ၌၊ ပစ္စက္ခာတာ (သမာနာ)ပိ၊ တမ္ပိ-ထို ဒုက္ခဝေဒနာ လွှန်စွာနှိပ်စက်အပ်သူသည်၊ အဇာနန္တေ - သော်၊ အပစ္စက္ခတာ ဟောတိ။

ဒေဝတာယ သန္တိကေတိ–ကား၊ ဘုမ္မဒေဝတံ–ဘုမ္မဇိုဝ်းနတ်ကို၊ အာဒိံ ကတွာ–၍၊ ယာဝ အကနိဋ္ဌ ဒေဝတာယပိ–အကနိဋ္ဌမြဟ္မာတိုင်အောင်သော နတ်မြဟ္မာ၏လည်း၊ သန္တိကေ–၌၊ ပစ္စက္ခာတာ(သမာနာ)ပိ အပ္ပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ၊ တိရစ္ဆာန ဂတဿာတိ – ကား၊ နာဂမာဏဝကဿဝါ– နဂါး လုလင်၏ သော်ငှင်း၊ သုပဏ္ဏမာဏဝကဿဝါ– ဂဠုန် လုလင်၏ သော်ငှင်း၊ ကိန္နရဟတ္ထိမက္ကဋာဒီနံ – ကိန္နရာ , ဆင် , မျောက် အစရှိသည်တို့တွင်၊ ယဿ ကဿစိဝါ – အမှတ် မရှိ တကောင်ကောင်၏ သော်ငှင်း၊ သန္တိကေ –၌၊ [ပြောအပ်သောစကား၏အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို နားလည်လေ့ံသောတိရစ္ဆာန် များကိုသာ ပြလိုသောကြောင့်''နာဂမာဏဝ''စသည်ကို ဆိုသည်။] ပစ္စက္ခာတာပိ အပ္ပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ၊ တတြ - ထို ဥမ္မတ္တကော သိက္ခံ ပစ္စက္ခာတိ အစရှိသောပါဠိ၌၊[အာဟ- ၌စပ်၊] ဥမ္မတ္တကာဒီနံ-တို့၏၊ သန္တိကေ- ၌၊ အဇာနနဘာဝေန–သိခြင်းမရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊[သိက္ခာချမှန်း နားမလည် ခြင်းကြောင့် – ဟူလို၊ ]အပစ္စက္ခာတာတိ – ဟူ၍၊ အာဟ-မူပြီ၊ ဒေဝတာယ- နတ်မြဟ္မာ၏၊ သန္တိကေ–၌၊ အတိခိပ္ပံ– အလွန်လျင်မြန်စွာ၊ ဇာနနဘာဝေန- ကြောင့်၊ (အပ္ပစ္စက္ခာတာတိ အာဟ။)

ဒေဝတာနာမ– တို့မည်သည်၊ မဟာပညာ–ကြီးသော ပညာရှိကုန်သည်၊ တိဟေတုကပဋိသန္ဓိကာ – တိဟိတ် ပဋိသန္ဓေ ရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတွာ – ၍၊ ) [ယေဘုယျနည်း၊ အောက်နတ်များ၌ ဒွိဟိတ်လည်းရှိသည်၊]အတိခိပ္ပံ ဇာနန္တိ၊ စ–ဆက်၊ တေံ စိတ္တံ နာမ-မည်သည်၊ လဟုပရိဝတ္တံ(လဟုပရိဝတ္တိ)-လျင်မြန် သော ပြောင်းလွဲခြင်း ရှိ၏၊ [ ယောဇနာ၌ ''လဟုပရိဝတ္တိ " ဟု ရှိသည်၊ ] တသ္မာ-ကြောင့်၊ စိတ္တလဟုကဿ – လျင်မြန်သော စိတ်ရှိသော၊ ပုဂ္ဂလဿ– ၏၊ စိတ္တဝသေနေဝ – ဖြင့်သာလျှင်၊ အတိခိပ္ပံ- စွာ၊ ဝိနာသော– ပျက်စီးခြင်း သည်၊ မာ အဟောသိ- မဖြစ်ပါစေလင့်၊ ဣတိ - ဤသို့ ညာတာတော်မူ၍၊ပေ၊ ပဋိက္ခိပိ-ပယ်မြစ်တော်မူပြီ၊ ပန-ကား၊ မနုဿသု-တို့၌၊ နိယမော-သတ်မှတ် ချက်သည်၊ နတ္ထိ၊ ယဿကဿစိ–အမှတ်မရှိ တစုံတယောက်သော၊ သဘာဂ ဿဝါ-သဘောတူသောယောကျ်ား၏သော်ငှင်း၊ဝိသဘာဂဿဝါ-သဘော မတူသော မိန်းမ၏သော်ငှင်း၊ ဂဟဋ္ဌဿဝါ- အိမ်၌တည်သူ လူ၏ သော်ငှင်း၊ ပဗ္ဗဇိတဿဝါ–ရသေ့ ရဟန်း၏သော်ငှင်း၊ ဝိညုဿ-နားလည်သူ၏၊[သိက္ခာ ချမှန်း နားလည်သူ၏] ၊ပေ၊ ပန- ဆက်၊ သော– ထို သိက္ခာချရာပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သစေ န ဇာနာတိ-အံ့၊(ဧဝံ သတိ)အပ္ပစ္စက္ခာတာဝ ဟောတိ၊ ဣတိ ဧတမတ္ထံ- ကို၊ ဒဿေန္တော ( ဟုတွာ ) အရိယကေနာတိအာဒိံ အာဟ။

တတ္ထ-ထို အရိယကေနအစရှိသောစကားရပ်၌၊ အရိယကံနာမ-မည်သည်၊ အရိယဝေါဟာရော- အရိယာလူမျိုးတို့၏ အခေါ်အဝေါ်ဖြစ်သော၊ မာဂဓ ဘာသာ - မဂဓတိုင်းသုံး ဘာသာတည်း၊ မိလက္ခတံနာမ – က မည်သည်၊ ယောကောစိ-အမှတ်မရှိ တစုံတခုသော၊ အနရိယကော-အရိယာလူမျိုးတို့၏ အခေါ်အဝေါ်မဟုတ်သော၊ အန္ဓက ဒမိဠာဒိ-အန္ဓကဘာသာ, ဒမိဠဘာသာ အစရှိသည့်တည်း၊ [ " ဒင်ကျည်းလူမျိုးတို့၏ဘာသာ , ကျေးကုလားတို့၏ ဘာသာ " ဟု လည်း ပေးကြသည်၊ ] သောစ န ပဋိဝိဇာနာတီတိ - ကား၊ ဘာသန္တရေ - မိမိဘာသာမှ အခြားသောဘာသာ၌၊ အနဘိညတာယဝါ- မသိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်သော်၎င်း၊ ဗုဒ္ဓသမယေ – ဘုရား၏အယူ၌၊ ဝါ— သာသနာတော်၏အသုံးအနှုန်း၌၊ အကောဝိဒတာယဝါ-မကျွမ်းကျင်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်သော်၎င်း၊ ဣဒံ နာမအတ္ထံ- ဤမည်သော အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊ ဧသ- ဤရဟန်းသည်၊ ဘဏတိ- ပြောဆို၏၊ ဣတိ- ဤသို့၊ န ပဋိဝိဇာနာတိ- နားမလည်အံ့။

ဒဝါတိ - ကား၊ သဟသာ-အဆောတလျင်၊ အညံ့-ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိမှတပါး အခြားသော စကားကို၊ ဘဏိတုကာမော – သည်၊ ( သမာနော – လျက်၊) သဟသာ-လျင်၊ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ-ဟူ၍၊ ဘဏတိ–ပြောဆိုမိအံ့၊ [သဟသာ ပုဒ်သာ ဒဝါတိ၏ မူလသံဝဏ္ဏနာတည်း၊ အညံ ဘဏိဿာမိ စသည်ကား သဟသာကိုထပ်ဖွင့်ခြင်းတည်း၊ "ရဝါတိ-ရဝါဘညေန"၌လည်း နည်းတူ၊] ရဝါတိ–ကား၊ ရဝါဘညေန-ချွတ်ချော်၍ ပြောဆိုသဖြင့်၊ အညံ-ကို၊ ဘဏိ ဿာမိ-အံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ အညံ-အခြားစကားကို၊ ဘဏန္တော-လျက်၊ (ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ - ဟူ၍၊ ဘဏတိ - အံ့၊) ( ဣမသ္မိ - ဤ ရဝါဘဏန၏၊) ပုရိမေန - ရှေ့ဖြစ်သော ဒဝါဘဏနနှင့်၊ ဝိသေသော - အထူးသည်၊ ကော-

ဒဝါ, ရဝါ။ ။ "ဒဝါယ – ရဝါယ " ဟု စာအုပ်များ၌ ရှိသည်ကား ပါဠိပျက်၊ အဘိဓာန်၌ "ဒဝေါ – ရဝေါ"ဟု ပုလ္လိန်ရှိ၏၊ နာကို အာပြု၍ "ဒဝါ, ရဝါ"ဟု သာ ရှိရမည်၊ မဟာဝါဒသိက္ခာပုဒ် ပါဠိတော်၌လည်း "ဒဝါ ဘဏတိ, ရဝါ ဘဏတိ"ဟု ရှိ၏၊ ဋီကာ၌လည်း "ဒဝါတိ သဟသာ၊ ရဝါတိ ဝိရဇ္ဈိတွာ"ဟု ဖွင့်၏၊ "နေဝဒဝါယ" စသည်၌ကား တဒတ္ထသမ္ပဒါန်သ၏ အာယအပြုတည်း၊ ထိုတွင်"ဒဝ"သဒ္ဒတ၌"ဒြဝ" သဒ္ဒါသည် ဝေဂ (အလျင်အမြန်) ပရိဟာသ(ပြောင်လှောင်ခြင်း) စသောအနက်ကို ဟော၏၊ သိက္ခာချမှုကိစ္စဖြစ်၍ ပရိဟာသအနက်ကို မဟော, ဝေဂအနက် ဟောတည်း၊ ထို့ကြောင့် "သဟသာ"ဟု ဖွင့်သည်၊ ရဝသဒ္ဒါကား အသံဟူသောအနက်ကိုဟော၏၊ ဤနေရာ၌ ချွတ်ချော်မှားယွင်း၍ ဆိုမိခြင်း အသံတည်း။

နည်း၊ ဍတိစေ–ဤသို့မေးအံ့၊ [အညံ့ ဘဏိဿာမီတိ အညံ့ဘဏနချင်းတူနေသောကြောင့် အထူးကို မေးသည်၊ ] ပုရိမံ – ရှေ့ဖြစ်သော ဒဝါဘဏနသည်၊ ပဏ္ဍိတဿာပိ-ပညာရှိ၏သော်မှလည်း၊သဟသာဝသေန-အဆောတလျင်၏အစွမ်း အားဖြင့်၊ အညဘဏနံ – အခြား စကားကို ပြောဆိုမိခြင်းသည်၊ (ဟောတိ၊) ဍှာံ ပန–ဤ ရဝါဘဏနသည်ကား၊ မန္ဒတ္တာ– နုံသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ မောမူဟတ္တာ– ကြောင့်၊ အပကတညုတ္တာ- သဘောကို မသိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ပက္ခလန္တဿ– ချွတ်ချော်သော လူပြိန်း၏၊ အညံ့– ကို၊ ဘဏိဿာမိ၊ ဍတိ– ဤသို့ကြံ၍၊ အညဘဏနံ-သည်၊ (ဟောတိ။)

အသာဝေတုကာမော သာဝေတီတိ-ကား၊ ဍမဿ သိက္ခာပဒဿ-၏၊ ပါဠိံ–တော်ကို၊ ဝါစေတိ- ပို့ချ၏၊ ပရိပုစ္ဆတိ- အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို အဖန်ဖန်မေးမြန်း၏၊ ဥဂ္ဂဏှာတိ–သင်ယူ၏၊ သဇ္ဈာယံ-သရဇ္ဈာယ်ခြင်းကို၊ ကရောတိ-၏၊ ဝဏ္ဏေတိ - ဖွင့်ပြ၏၊ [ အဋ္ဌကထာဖွင့်သလို ဖွင့်ပြ၏ - ဟူလို၊ ] အယံ - ဤပုဂ္ဂိုလ်ကို၊ အသာဝေတုကာမော သာဝေတီတိ-ဟူ၍၊ (ဝါ-သိက္ခာချကြောင်းစကားကို မကြားစေလိုဘဲ ကြားစေသူဟူ၍၊) ဝုစ္စတိ–၏၊ သာဝေတုကာမော နသာဝေတီတိ–ကား၊ ဒုဗ္ဗလဘာဝံ–အားမရှိသူ၏ အဖြစ်ကို၊ အ ဝိကတွာ–၍၊ သိက္ခံ–ကို၊ ပစ္စက္ခန္တော– ပယ်စွန့်လသော်၊ ဝစီဘေဒံ – နှုတ်မြွက်မှုကို၊ န ကရောတိ၊ အယံ-ကို၊ သာဝေတုကာမော နသာဝေတီတိ-ဟူ၍၊ (ဝါ–သိက္ခာချကြောင်း စကားကို ကြားသိစေလိုပါလျက် မကြားသိစေသူဟူ၍၊ ) ဝုစ္စတိ။

အဝိညူဿ သာဝေတီတိ–ကား၊ ပေါတ္ထကရူပသဒိသဿ - ယမင်းရုပ်နှင့်တူသော၊ မဟလ္လကဿဝါ – အဘိုးအိုကြီး၏သော်ငင်း၊ သမယေ – မြတ်စွာဘုရား၏ အယူ၌၊ အကောဝိဒဿ – မကျွမ်းကျင်သော၊ ဂရုမေဓဿဝါ –

**သဟသာဝသေန**။ ။အားတိုက်အင်တိုက် (ကဗျာကယာ) ပြုခြင်း,ရည်ရွယ်ချက်မရှိဘဲ ပြောဆိုပြုလုပ်ခြင်း အနက်ကိုဟောသော“သဟသာ”ပုဒ်ကို အဗျယ (နိပါတ်)ဟု ထောမနိမိဆို၏၊ နိပါတ်ဖြစ်သောကြောင့် “သဟသာ”ဟု အာကာရန္တရှိနိုင်သည်။

**ပေါတ္ထကရူပ**။ ။မဟလ္လကဿကိုပင် “ ပေါတ္ထကရူပသဒိသဿ ” ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ အလွန်ထိုင်းမှိုင်းလေံအောင် အရွယ်ကြီးနေသဖြင့် ဘာကိုမျှ မသိတော့ရကား, သို့မဟုတ် – စက္ခုသောတ စသော ဣန္ဒြေများ ထင်ထင် ရှားရှား မမြင် မကြား မသိရကား အရုပ်ကြီးလို ဖြစ်နေသူ–ဟူလို၊ [ ပေါတ္ထက ရူပသဒိသကို “ မတ္တိကာယ ကတရူပသဒိသဿ”ဟု သာရတ္ထဖွင့်၏၊ ထောမနိမိ၌ကား“မြေညက်ဖြင့် ဖြစ်စေ, သစ်သား-ဆင်စွယ်–ကြေး–သံတို့ဖြင့် ဖြစ်စေ ထုလုပ်အပ်သော အရုပ်, ပန်ချီဆေးရေးရုပ်” ဟု ဖွင့်၏၊“ရစ်မင်းရုပ် ညမင်းရုပ်, ယဥ်မင်းရုပ်”ဟု ရှေးနိဿယများ အနက်ပေးကြ၏။

လေးလံထိုင်းမှိုင်းသော ဉာဏ်ရှိသူ၏သော်၎င်း၊ ဝါ- ဉာဏ်ထိုင်းသူ၏သော် ၎င်း၊ ဝိညုတံ – တတ်သိနားလည်သူ၏ အဖြစ်သို့၊ အပတ္တာနံ – မရောက်ကုန် သေးသော၊ ဂါမဒါရကာနံဝါ–ရွာသူသားငယ်တို့၏သော်၎င်း၊ (သန္တိကေ– ၌၊) သာဝေတိ – အံ့၊ [ဤစကားဖြင့် မဟလ္လက, ဂရုမေဓ, ဂါမဒါရက–ဟု အဝိညုပုဂ္ဂိုလ် ၃ မျိုးကို မှတ်။ ]ဝိညုဿ နသာဝေတီတိ-ကား၊ ဉာတုံ-အနက် အဓိပ္ပါယ်ကို နားလည်ခြင်းငှါ၊ သမတ္ထဿ- စွမ်းနိုင်သော၊ ပဏ္ဍိတဿ– ၏၊ (သန္တိကေ) နသာဝေတိ–အံ့။

သမ္ဗသော ဝါပနာတိ–ကား၊ ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမီတိ အာဒိသု - တို့တွင်၊ ယေန ယေန ပရိယာယေန–အကြင်အကြင်ပရိယာယ်ဖြင့်၊ သိက္ခာ – သည်၊ ပစ္စက္ခာ တာ ဟောတိ၊ တတော–ထိုထိုပရိယာယ်မှ၊ ဧကမ္ပိ – တခုသောပရိယာယ်ကို လည်း၊ ဝစီဘေဒံ–ကို၊ ကတွာ–၍၊ နသာဝေတိ – မကြားသိစေ၊ ဧဝံခေါတိ – ဧဝံ ခေါ ဟူသော ပါဠိဖြင့်၊ အပ္ပစ္စက္ခာနလက္ခဏံ-ကို၊ နိယာမေတိ–သတ်မှတ် ၏၊[ခေါသဒ္ဒါဖြင့်သတ်မှတ်သည်ဟူလို၊] ဟိ-ထင်ရှားအောင်ပြဥုးအံ့၊ အယံ- ဤဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ဧတ္ထ-၌ ဧဝံခေါအစရှိသောဝါကျ၌၊ အတ္ထော- တည်း၊ ဝေမေဝ-၍အကြောင်းကြောင့်သာ၊ သိက္ခာ-သည်၊ အပ္ပစ္စက္ခာတာ ဟောတိ၊ အညေန–သော၊ ကာရဏေန – အကြောင်းကြောင့်၊ (အပ္ပစ္စက္ခာတာ-သည်၊ နဟောတိ–မဟုတ်၊ ဣတိအတ္ထော–နက်၊ ဣတိ – အပြီးတည်း၊) [ဣတိတလုံး အကျေကြီ။]........ပစ္စက္ခာနဝိဘင်္ဂ–သည်၊ နိဋ္ဌိတံ–ပြီ။

ဣဒါနိ–၌၊ မေထုနံ ဓမ္မံ ပဋိသေဝေယျာတိအာဒိနံ-ယျ အစရှိသောပုဒ်တို့ ၏၊ [သိက္ခာပုဒ်၌ လာသောပုဒ်တို့၏၊]အတ္ထဒဿနတ္ထံ-အနက်ကိုပြခြင်းအကျိုး ငှါ၊ မေထုနဓမ္မောနာမာတိအာဒိံ - နာမအစရှိသော ပဒဘာဇနီ စကား တော်ကို၊ (ဘဂဝါ)အာဟ၊ တတ္ထ-ထိုမေထုနဓမ္မောနာမအစရှိသောစကား ရပ်၌၊ မေထုနဓမ္မောနာမတိ ဣဒံ-နာမဟူသော ဤပုဒ်သည်၊ နိဒ္ဒိသိတဗ္ဗဿ- အကျယ်ဖွင့်ပြထိုက်သော၊ [ဝိဝရိတဗ္ဗဿ, ပကာသိတဗ္ဗဿ၊ ] မေထုနဓမ္မ

ဂရုမေဓဿ။ ။ဂရု–လေးလံ ထိုင်းမှိုင်းသော+ မေဓာ ယဿာတိ ဂရုမေဓော၊ ဂရုမေဓဿကိုပင် "သမယေ အကောဝိဒဿ"ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ " ဗုဒ္ဓံ ပစ္စက္ခာမိ " စသည်ကိုဆိုလျှင် " သိက္ခာချခြင်းဖြစ်၏ " ဟု သာသနာ၏ထုံးစံကို နားမလည်သူကို "ဂရုမေဓ"ဟု ဆိုလိုသည်။

ဂါမဒါရကာနံ။ ။အဝိညုတံ ပတ္တာနံဖြင့် ဂါမဒါရကာနံ့ကို ဝိသေသန ပြုသည်၊ ပြောစကား၏ အဓိပ္ပါယ်ကို နားမလည်လောက်အောင် အရွယ် မရောက်သေးသော ကလေး–ဟူလို၊ [အကို ပတ္တာနံနှင့် တွဲ၊ အဝိညုတံကို အယုတ္တသမာသ် ဟု ကြံ။]

သ - ၏၊ ဥဒ္ဒေသပဒံ - အကျဉ်းညွှန်ပြကြောင်းပုဒ်တည်း၊ အသဒ္ဓမ္မောတိ- ကား၊ အသတံ-မသူတော်ဖြစ်ကုန်သော၊ နီစဇနာနံ - ယုတ်ညံ့သောလူတို့၏၊ ဓမ္မော - အကျင့်တည်း၊ [ ဤ " အသဒ္ဓမ္မော " မှ စ၍ ဒွယံဒွယသမာပတ္တိ တိုင်အောင် သုဒ္ဓိန္နကဏ္ဍ၌ အဓိပ္ပါယ် ပြခဲ့ပြီ၊ ] ဂါမဓမ္မောတိ - ကား၊ ဂါမ ဝါသီနံ- ရွာ၌နေသူ လူဝတ်ကြောင်တို့၏၊ သေဝနဓမ္မော - မှီဝဲ အပ်သော အကျင့်တည်း၊ ဝသလဓမ္မောတိ-ကား၊ ဝသလာနံ-ယုတ်ညံ့သူတို့၏၊ ဓမ္မော- တည်း၊ ဝါ-နည်း၊ ကိလေသဝဿနတော-ကိလေသာတို့ကို သွန်ချတတ်သည် ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ [သူ့ဒနအနက်ဟော ဝသဓာတ်သည် ဘူဝါဒိဖြစ်၍ "ဝဿ နတော" ဟု ပါဌ်မှန်ရှိစေ၊] သယမေဝ - မိမိသည်ပင်၊ [အကျင့်ဟူသော မိမိ သည်ပင် - ဟူလို၊] ဝသလော = ဝသလမည်သော၊ ဝါ - ကိလေသာတို့ကို သွန်ချတတ်သော၊ ဓမ္မော-တည်း၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ဝသလဓမ္မော-မည်၏။

ဒုဋ္ဌုလ္လန္တိ-ကား၊ ကိလေသေဟိ - တို့သည်၊ ဒုဋ္ဌတ္တာ-ဖျက်ဆီးအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒုဋ္ဌုစ-မကောင်းသည်လည်း ဟုတ်၏၊ အနိပုဏဘာဝတော- မသိမ်မွေ့သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ထူလဉ္စ - ရုန့်ရင်းကြမ်းတန်း သည်လည်း ဟုတ်၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ဒုဋ္ဌုလ္လံ-မည်၏၊ စ - ဆက်၊ ဣတော - ဤဒုဋ္ဌုလ္လ ပုဒ်မှ၊ ပဋ္ဌာယ-၍၊ တီသု ပဒေသု-တို့၌၊ ယောသောတိ-ယောသောဟူသော၊ ဣဒံ-ဤ ပါဠိတော်ပုဒ်ကို၊ ပရိဝတ္တေတွာ-ပြောင်းလဲ၍၊ ယံတန္တိ - ယံတံဟူ၍၊ ကတွာ-၍၊ ယံတံဒုဋ္ဌုလ္လံ၊ပေ၊ယံတံ ရဟဿန္တိ-ဟူ၍၊ ယောဇေတဗ္ဗံ-ယှဉ်စေ ရာ၏၊ စ-ဆက်၊ တတ္ထ - ဤဒုဋ္ဌုလ္လံအစရှိသော ပုဒ်တို့တွင်၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ တဿကမ္မဿ - ထိုမေထုန်မှု၏၊ ပရိဝါရဘူတံ - အခြံအရံဖြစ်၍ ဖြစ်သော၊ ဒဿနမ္ပိ-ကြည့်ခြင်းသည်ငှင်း၊ ဂဟဏမ္ပိ- ကိုင်ခြင်းသည်ငှင်း၊ အာမသနမ္ပိ - သုံးသပ်ခြင်းသည်ငှင်း၊ ဖုသနမ္ပိ- တို့ခြင်းသည်ငှင်း၊ ဃဋ္ဋနမ္ပိ - ဆိတ်ခြင်းသည် ငှင်း၊ ဒုဋ္ဌုလ္လံ - မကောင်းရုန့်ကြမ်း၏၊ တသ္မာပိ - ကြောင့်လည်း၊ တံကမ္မံ - ထို မေထုန်အမှုသည်၊ ဒုဋ္ဌုလ္လံ-မည်၏။

ယံတံ ဒုဋ္ဌုလ္လံ- အကြင် ဒုဋ္ဌုလ္လအကျင့်သည်၊ (အတ္ထိ၊) သော- ထို ဒုဋ္ဌုလ္လ အကျင့်သည်၊ မေထုနဓမ္မော - မည်၏၊ အဿ- ထို မေထုန်အမှု၏၊ အန္တေ- အဆုံး၌၊ သုဒ္ဓတ္တံ- စင်ကြယ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဥဒကံ-ရေကို၊ အာဒိယတိ-ယူအပ် ၏၊ ဣတိ – ကြောင့်၊ ဥဒကန္တံ – မည်၏၊ ဥဒကန္တမေဝ– ရေဟူသော အဆုံး ရှိသောအကျင့်သည်ပင်၊ ဩဒကန္တိကံ-န္တိကမည်၏၊ [ဏိကအနက်မရှိ-ဟူလို။] ယံတံ ဩဒကန္တိကံ- အကြင် ဩဒကန္တိက အကျင့်သည်၊ (အတ္ထိ)၊ သော-ထို

ဩဒကန္တိကအကျင့်သည်၊ မေထုနဓမ္မော-မည်၏၊ ရဟော – ဖုံးကွယ်အပ်သော အရပ်၌၊ ပဋိစ္ဆန္နေ - ဖုံးကွယ်အပ်သော၊ ဩကာသေ – အရပ်၌၊ [ ရဟောကို ထပ်ဖွင့်သည်။ ] ကတ္တဗ္ဗတ္တာယ – ပြုထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ရဟဿံ– မည်၏၊ ယံတံ ရဟဿံ - အကြင် ရဟဿအကျင့်သည်၊ ( အတ္ထိ )၊ သော– ထို ရဟဿအကျင့်သည်၊ မေထုနဓမ္မော–၏၊ ဣတိ ဧဝံ–ဤသို့၊ ယောဇနာ–ပုဒ် အနက်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ၊ ဒွယေန ဒွယေန-မိန်းမ ယောကျ်ား ၂ ဦးသား အပေါင်း ၂ ဦးသား အပေါင်းသည်၊ သမာပဇ္ဇိတဗ္ဗတော – ကောင်းစွာ ရောက်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒွယံ ဒွယသမာပတ္တိ-မည်၏၊ တတ္ထ- ထို ဒွယံဒွယ သမာပတ္တိပုဒ်၌၊ ယောဇနာ - ပုဒ်အနက်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်း ကား၊(ဣတိ၌စပ်၊)ယာသာ ဒွယံဒွယသမာပတ္တိ–အကြင် ဒွယံဒွယသမာပတ္တိ အကျင့်သည်၊ (အတ္ထိ)၊ သော-ထို ဒွယံဒွယ သမာပတ္တိအကျင့်သည်၊ မေထုန ဓမ္မောနာမ-မည်၏၊ ဣတိ-ဤသည်တည်း။

ပန - ဆက်၊ ဣဓ – ဤ မေထုနဓမ္မောပုဒ်၏ ပဒဘာဇနီ၌၊ တံ သဗ္ဗံ – ထို အလုံးစုံသောပုဒ်ကို၊ ဧကဇ္ဈံ- တပေါင်းတည်း၊ နိဂမေန္တော- နိဂုံးအုပ်တော် မူလိုသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ ဧသော မေထုနဓမ္မော နာမာတိ - ဟူ၍၊ ( ဘဂဝါ) အာဟ၊ ကိံကာရဏာ - ကြောင့်၊ မေထုနဓမ္မောတိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- သနည်း၊ ရတ္တာနံ- မေထုနရာဂဖြင့် တပ်မက်ကုန်သော၊ သာရတ္တာနံ- မေထုနရာဂဖြင့် လွန်စွာ တပ်မက်ကုန်သော၊ အဝဿုတာနံ - မေထုနရာဂသည် စိုစွပ်အပ်ကုန် သော၊ ပရိယုဋ္ဌိတာနံ - မေထုနရာဂဖြင့် ထက်ဝန်းကျင် ထကြွကုန်သော၊ သဒိ သာနံ - ရတ္တ ဧသည်၏အဖြစ်ဖြင့် တူကုန်သော၊ ဉဘိန္နံ – မိန်းမ ယောကျ်ား ၂ ဦးသားတို့၏၊ ဓမ္မော- အကျင့်တည်း၊ ဣတိ (တသ္မာ) တံ ကာရဏာ-ထို အကြောင်းကြောင့်၊ မေထုနဓမ္မောတိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ။

**မေထုနဓမ္မော။** ။[ ရာဂ ပရိယုဋ္ဌာနေန သဒိသဘာဝပ္ပတ္တိယာ မိထုနာနံ + ဣဒံ မေထုနံ၊ မေထုနမေဝ + ဓမ္မော မေထုနဓမ္မော။— သာရတ္ထ။ ] အဋ္ဌကထာ၌ “ သဒိ သာနံ ဓမ္မော”ကို ကြည့်၍ “မိထုနသဒ္ဒါသည် သဒိသအနက်ဟော” ဟု သာရတ္ထကြံဟန် တူသည်၊ ထောမနိဓိ၌ကား နပုလ္လိန် မိထုနသဒ္ဒါသည် အထီး + အမ အစုံကိုဟော၏၊ “မိထုနေန–အထီး အမ ၂ ဦးသည်+နိဗ္ဗတ္တံ–ဖြစ်စေအပ် (ပြုအပ်) သော အမှုတည်း၊ မေထုနံ–မှု”ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၏။

**ရတ္တာနံ စသည်။** ။“သဒိသ” အရ တူပုံကိုပြလို၍ “ရတ္တာနံ၊ပေ၊ပရိယုဋ္ဌိတာနံ” ဟု ဝိသေသနပြုသည်၊ “ရတ္တအဖြစ် စသည်ဖြင့် တူကြသည်”ဟူလို၊ သာရတ္တကို “သံ+ ရတ္တ” ဟု ခွဲ၊ သံသည် အလွန်အနက်ဟော၊ ထို့ကြောင့် “ အတိဝိယ + ရတ္တာနံ” ဟု သာရတ္ထဖွင့်သည်၊ လောက၌ သာယာအပ်သော ချစ်မိတ်ဆွေဖွဲ့မှုကို အကြောင်းပြု၍

ပဋိသေဝတိနာမာတိ ဇူဒံ–နာမဟူသော ဤပုဒ်သည်၊ ပဋိသေဝေယျာတိ ဧတ္ထ– ဤပုဒ်၌၊ ယေန အာကာရေန – အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ပဋိသေဝေယျာတိ–ယျဟူ၍၊ ဝုတ္တတိ-၏၊ တဿ အာကာရဿ- ကို၊ ဒဿနတ္ထံ – ငှါ၊ မာတိကာပဒံ–မာတိကာပုဒ်တည်း၊ ယော နိမိတ္တေန နိမိတ္တန္တိအာဒိသု–တို့၌၊ (အတ္ထော – ကို၊ ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ) ယော ဘိက္ခု – သည်၊ ဇူတ္တိယာ–၏၊ နိမိတ္တေန–နိမိတ်ဖြင့်၊ ဝါ–နိမိတ်၌၊ အတ္တနော– ၏၊ နိမိတ္တံ-ကို၊ ဇူတ္တိယာ-၏၊ အင်္ဂဇာတေန – ဖြင့်၊ ဝါ – ၌၊ အတ္တနော–၏၊ အင်္ဂဇာတံ– ကို၊ သဗ္ဗန္တိမေန-အလုံးစုံသောပမာဏတို့၏အဆုံး၌ဖြစ်သော၊ ပမာဏေန–ပမာဏအားဖြင့်၊ ဧကတိလဗီဇမတ္တမ္ပိ– နှမ်းတစေ့မျှလောက်ကိုလည်း၊ ဝါတေန– ပကတိလေသည်၊ အသမ္ဖုဋ္ဌေ – ကောင်းစွာ မတွေ့ထိအပ်သော၊ အလ္လောကာသေ– စိုစို ဖတ်ဖတ် အရပ်၌၊ [ " ပဝေသေတိ " ဟူသည် တို့ကာမျှ မဟုတ်သောကြောင့် " အလ္လောကာသေ "ဟု အတွင်းအရပ်ကို ပြသည်၊ တိန္တပဒေသေ – စိုသော အရပ်၌၊ ( ဝိမတိ )။ ] ပဝေသေတိ–သွင်းအံ့၊ ဧသော – ဤရဟန်းသည်၊ ပဋိသေဝတိနာမ - မည်၏၊ ဧတ္တကေန - ဤမျှလောက် မှီဝဲခြင်းဖြင့်၊ သီလဘေဒံ– သီလပျက်ခြင်းသို့၊ ပါပုဏာတိ - ၏၊ ပါရာဇိကော ဟောတိ။

စ–ဆက်၊ ဧတ္ထ–ဤသို့ မှီဝဲရာ၌၊ ဇူတ္တိနိမိတ္တေ–၌၊ စတ္တာရိပဿာနိ–ဘေး ၄ဘက်တို့ငှါး၊ ဝေမဇ္ဈဉ္စ–အလယ်ခေါင်ငှါး၊ ဇူတိ–သို့၊ ပဉ္စဋ္ဌာနာနိ၊ လဗ္ဘန္တိ-

မေထုနရာဂဖြင့် စိုစွပ်နေကြသူကို "အဝဿုတ" ဟု ဆိုသည်၊ ပရိယုဋ္ဌိတာနံ၌ "ပရိ+ ဥဋ္ဌိတ–ထက်ဝန်းကျင် (တကိုယ်လုံး) ရာဂ ထကြွနေသူကို "ပရိယုဋ္ဌိတ"ဟုဆိုသည်။ ["ပရိယောနဒ္ဓစိတ္တ–မြှေးယှက်အပ်သောစိတ် ရှိသူ"ဟု သာရတ္ထဖွင့်သည်ကား အဓိပ္ပါယတ္ထ၊ ပရိယုဋ္ဌိတာနံ နောက်၌ "ဥဘိန္နံ"ဟု ထပ်လာသည်မှာ ပိုဟန်တူသည်။]

**ပဋိသေဝတိနာမာတိ။** ။သိက္ခာပုဒ်(မာတိကာ)၌ " ပဋိသေဝေယျ " ဟုသာ ပါ၍ "ပဋိသေဝတိ " မပါပါတကား၊ အဘယ့်ကြောင့် ဤ ပုဒ်ကို ထုတ်ပြပါသနည်း– ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍"ပဋိသေဝတိနာမာတိ ဇူဒံ၊ပေ၊ မာတိကာပဒံ" ဟု မိန့်၊ သိက္ခာပုဒ်၌ ပါသော ပဋိသေဝေယျ၏ ပဋိသေဝနာကာရ ပြလိုသောကြောင့် သာမည ဖြစ်သော ဝတ္တမာန် ဝိဘတ်ဖြင့် " ပဋိသေဝတိနာမ " ဟု ထုတ်ပြရသည်– ဟူလို။ [ ဝတ္တမာန် ဝိဘတ်သည် လိင်္ဂတ္ထသိဝိဘတ်ကဲ့သို့ သာမညကြိယာ၌ သုံးစွဲရသော ဝိဘတ်တည်း။]

**နိမိတ္တေန။** ။ဤ နိမိတ္တေနကို ပဋိသေဝတိ၌စပ်၍ " မဂ္ဂေန ဂစ္ဆတိ – လမ်းဖြင့် သွား၏"ကဲ့သို့ မှတ်၊ ရှေးဦးအံ့– "လမ်းဖြင့် သွား၏" ဟူရာ၌ " လမ်းကို သွား၏, လမ်း၌ သွား၏ " ဟု အဓိပ္ပါယ် ရသကဲ့သို့, ထို့အတူ " ဇူတ္တိနိမိတ်ဖြင့် မိမိအင်္ဂါကို သွင်း၏" ဟူရာ၌လည်း " ဇူတ္တိနိမိတ်၌ မိမိအင်္ဂါကို သွင်း၏ " ဟု အဓိပ္ပါယ်ရသည်၊ (သာရတ္ထ)၊ ဝိမတိ၌ကား"ဘုမ္မတ္ထေ ကရဏဝစနံ"ဟု ဆို၏၊"နိမိတ္တေန-၌"ဟု ပေး။

ရအာပ်ကုန်၏၊ ပုရိသနိမိတ္တေ-၌၊ စတ္တာရိပဿာနိ- တို့ဖုင်း၊ မဇ္ဈ-အလယ်ထိပ် ဖုင်း၊ ဥပရိစ-ကွေးအပ်သော အင်္ဂါဇာတ်၏ အထက်အဘို့ဖုင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဆ ( ဌာနာနိ- တို့ကို၊ လဗ္ဘန္တိ၊ ) တဿာ-ကြောင့်၊ ဣတ္ထိနိမိတ္တေ-၌၊ ဟေဋ္ဌာ-အောက်မှ၊ ပဝေသေန္တော ပဝိသနာ-သွင်းသောရဟန်းသည်လည်း၊ ပါရာဇိကော- ဟောတိ၊ ဥပရိတော-မှ၊ ပဝေသေန္တော ပဝိ-လည်း၊ (ပါရာဇိကော ဟောတိ၊) ဥဘောဟိ ပဿေဟိ – ဘေး ၂ ဘက်တို့မှ၊ ပဝေသေန္တော ပဝိ ( ပါရာဇိကော ဟောတိ၊)စတ္တာရိဌာနာနိ-တို့ကို၊ မုဉ္စိတွာ-လွှတ်၍၊ မဇ္ဈေန-အလယ်ခေါင်ဖြင့်၊ ဝါ-၌၊ ပဝေသေန္တော ပဝိ ပါရာဇိကော ဟောတိ။

ပန- ကား၊ ပုရိသနိမိတ္တံ- ကို (သာမညကံ၊) ဟေဋ္ဌာဘာဂေန-အောက် အဘို့ဖြင့်၊ ဆုပန္တံ -ထိသောနိမိတ်ကို(ဝိသေသကံ၊)ပဝေသေန္တော ပဝိ ပါရာဇိ ကော ဟောတိ၊ ဥပရိဘာဂေန- ဖြင့်၊ ဆုပန္တံ- ကို၊ ပဝေသေန္တော ပဝိ ၊ ပေ၊ ဥဘောဟိ ပဿေဟိ – တို့ဖြင့်၊ ဆုပန္တံ-ကို၊ ပေ၊ မဇ္ဈေနဝ-အလယ်ထိပ်ဖြင့် သာလျှင်၊ ဆုပန္တံ၊ပေ၊သမဉ္ဆိတင်္ဂုလိ -ကွေးအပ်သောလက်ချောင်းကို၊ မဉ္ဈိမ ပဗ္ဗပိဋ္ဌိယာ-အလယ်ဆစ်၏ ကျောက်ကုန်းဖြင့်၊ (ပဝေသေန္တော)ဝိယ-ကဲ့သို့၊ သင်္ကောစေတွာ- တွန့်စေ၍၊ ဝါ - ကွေး၍၊ ဥပရိဘာဂေန -ဖြင့်၊ [သင်္ကောစိ တဿ ဥပရိဘာဂကောဋိယာ၊] ဆုပန္တံ- ကို၊ပေ၊ တတ္ထ-ထို သွင်းနည်း ၂မျိုး တို့တွင်၊ တုလာဒဏ္ဍသဒိသံ – ချိန်ခွင်ရိုးတံနှင့် တူစွာ၊ ပဝေသေန္တဿာပိ- သွင်းသောရဟန်း၏လည်း၊[ဥဇုကံ ပဝေသေန္တဿ-မကွေးဘဲ ဖြောင့်ဖြောင့် သွင်းသူ၊]စတ္တာရိ ပဿာနိ-ဘေး ၄ ဘက်တို့ဖုင်း၊ မဇ္ဈဉ္စ-ဖုင်း၊ ဣတိ-သို့၊ပဉ္စ ဌာနာနိ-တို့သည်၊ ( ဟောန္တိ- န်၏၊ ) သင်္ကောစေတွာ-၍၊ပေ၊ ဥပရိဘာဂ မဇ္ဈဥ္စ – အထက်အဘို့ဟူသော အလယ်ဖုင်း၊ ဣတိ ပဉ္စဌာနာနိ ( ဟောန္တိ၊ ) ဧဝံ-လျှင်၊ ပုရိသနိမိတ္တေ-၌၊ သမ္ဘာနိပိ-န်သော၊ ဒသ ဌာနာနိ ဟောန္တိ။

ဝေမဇ္ဈံ။ ။ယထာ စတ္တာရိ ပဿာနိ အသမ္ဖုသန္တော ပဝေသေတိ၊ ဧဝံ ကတ ဝိဝရဿ ဣတ္ထိနိမိတ္တဿ ဟေဋ္ဌိမတလံ ဝုစ္စတိ – ဘေး ၄ ဘက်ကို မထိလောက်အောင် အပေါက် ပြုထားသော ဣတ္ထိနိမိတ်၏ အောက်အပြင်ကို ဝေမဇ္ဈ ဟု ဆိုသည်၊ ပုရိသ နိမိတ္တေ ပန မဇ္ဈန္တိ အဂ္ဂကောဋိံ ( ထိပ်ဖျား ) သန္ဓာယ ဝဒတိ၊ ဥပရိ၏ အကျယ်ကို နောက်၌ "သင်္ကောစေတွာ ပဝေသေန္တဿပိ၊ပေ၊ ဥပရိဘာဂမဇ္ဈဥ္စ" ဟု လာလတ့်။

သမဉ္ဆိတင်္ဂုလိံဝိယ ။ ။ မဉ္ဈိမပဗ္ဗပိဋ္ဌိယာ သမဉ္ဆိတင်္ဂုလိံတိ သမ္ဗန္ဓော=အလယ် ဆစ်ကျောဖြင့် ကွေးအပ်သော လက်ချောင်း-ဟု ဆက်စပ်၊ အထဝါ-"သမဉ္ဆိတင်္ဂုလိံ- ကို၊ မဉ္ဈိမပဗ္ဗပိဋ္ဌိယာ-ဖြင့်၊ ပဝေသေန္တော ဝိယ" ဟု ယောဇနာ၊ [နိဿယ၌ နေ့ာနည်း အတိုင်း ပေးသည်။]

နိမိတ္တေ- ယောက်ျားနိမိတ်၌၊ ဇာတံ-ပေါက်သော၊ အနဌကာယပသာဒံ- မပျက်သေးသော ကာယပသာဒရှိသော၊ စမ္မခိလံဝါ-အရေဝုတ်ကိုသော်ငင်း၊ ဝါ- ကြွက်နို့ကိုသော်ငင်း၊ ပီဠကံဝါ - အဖုကိုသော်ငင်း၊ ပဝေသေတိ- အံ့၊ ပါရာဇိကဿ-ပါရာဇိကအာပတ်သို့၊ အာပတ္တိ-ရောက်ခြင်းသည်၊ (ဟောတိ)၊ နဌကာယပ္ပသာဒံ-သော၊မတစမ္မံဝါ-သေသောအရေကိုသော်ငင်း၊ သုက္ခပီဠ ကံဝါ-ခြောက်သောအဖုကို သော်ငင်း၊ ပဝေသေတိ၊ ဒုက္ကဋဿ -သို့၊ အာပတ္တိ- သည်၊(ဟောတိ)၊ မေထုနဿာဒေန-မေထုန်၌သာယာခြင်းဖြင့်၊ လောမံဝါ- အမွေးကို သော်ငင်း၊ အင်္ဂုလိ အင်္ဂုဋ္ဌဗီဇာဒီနိဝါ - လက်ချောင်း ခြေချောင်း, လက်မ ခြေမ , ဝှေးစေ့ အစရှိသည်တို့ကို သော်ငင်း၊ ပဝေသေန္တဿာပိ- လည်း၊ ဒုက္ကဋမေဝ-သည်သာ၊ (ဟောတိ)။

စ - ဆက်၊ အယံ မေထုနကထာနာမ - ဤ မေထုနကထာ မည်သည်ကို၊ [ယသ္မာ, တသ္မာ ပြင်ဘက်က ကထေတဗ္ဗာ၌စပ်၊] ယသ္မာ - ကြောင့်၊ ဒုဋ္ဌုလ္လ ကထာ - မကောင်းရုန့်ကြမ်းသောစကားတည်း၊ အသဗ္ဘိကထာ - မသူတော် တို့၏ စကားတည်း၊ ( တနည်း ) အသဗ္ဘကထာ - အစည်းအဝေးသဘင်၌ ပြောကောင်းသော စကားမဟုတ်၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ (ဤ မေထုနကထာ၏ ဒုဋ္ဌုလ္လကထာ, အသဗ္ဘကထာ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) ဝတံဝါ - ဤအရာကိုသော် ငင်း၊ အညံ-အခြားသော၊ ဝိနယေ-၌၊ ဤဒိသံ-ဤကဲ့သို့ရှုအပ်သော၊ ဌာနံဝါ- အရာကိုသော်ငင်း၊ ["သိခရဏီသိ, သမ္ဘိန္နာသိ" စသော အရာကိုသော်ငင်း- ဟူလို၊ ] ကထေန္တေန - ပြောဟောပို့ချသော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ပဋိကူလမနသိ ကာရဋ္ဌ - စက်ဆုပ်ဘွယ်ဟု နှလုံးသွင်းခြင်းကိုငင်း၊ သမဏသညဋ္ဌ - ငါရဟန်း ဟူသောအမှတ်သညာကိုငင်း၊ ဟိရောတ္တပ္ပဉ္စ-ကိုငင်း၊ ပစ္စုပဋ္ဌာပေတွာ-ရှေးရှု တည်စေ၍ငင်း၊ သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓေ-၌၊ ဂါရဝံ - ရိုသေလေးစားခြင်းကို၊ ဥပ္ပါဒေ

**အသဗ္ဘကထာ။** ။စာအုပ်များ၌"အသဗ္ဘိကထာ"ဟုချည်းရှိ၏၊ ဝိဘတ် ၇ သွယ် ကြောင့် သန္တကို သဗ္ဘိပြု၍လည်း သဒ္ဒနီတိ ရုပ်စီရင်၏၊ ထိုအလို "အသဗ္ဘိန်+ကထာ အသဗ္ဘိကထာ"ဟု ပြုရလိမ့်မည်၊ သို့သော်"ဣမိဿာ မေထုနကထာယ-၏၊ အသဗ္ဘိ ရူပတ္တာ"ဟု သာရတ္ထအဖွင့်စာအုပ်များ၌"အသဗ္ဘရူပတ္တာ- ပညာရှိအစည်းအဝေး၌ မသုံးစွဲထိုက်သော သဘောရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် " ဟု ဆရာတို့ ဆုံးဖြတ်ကြသည်၊ ထို့ပြင် သတ္တသံယုတ်– ၁ ဝဂ် ၅သုတ်၌"အသဗ္ဘာဟိ ဝါစာဟိ"ဟု ရှိသောကြောင့် လည်း "အသဗ္ဘကထာ"ဟု ပါဠ်မှန်ရှိသင့်၏၊ သဘာယံ+သာဓု သဗ္ဘံ (ဏျပစ္စည်း ဖြစ်၍ နပုလ္လိန်)၊ သဗ္ဘံစ+တံ+ကထာ စာတိ သဗ္ဘကထာ=ပညာရှိအစည်းအဝေး၌ ကောင်းသော(ပြောသင့်သော)စကား၊ န+သဗ္ဘကထာ အသဗ္ဘကထာ။ [ဒုဋ္ဌုလ္လ ကထာလည်း သမာသ်ပုဒ်သာ။]

တွာ-၍၎င်း၊ အသမကာရုဏိကဿ- အတူမဲ့ ကရုဏာရှင် ဖြစ်တော်မူသော၊ လောကနာထဿ- သတ္တလောက၏ ကိုးကွယ်ရာ မြတ်စွာဘုရား၏၊ ကရုဏာဂုဏံ-ကရုဏာဂုဏ်တော်ကို၊ အာဝဇ္ဇေတွာ-၍၎င်း၊ ကထေတဗ္ဗာ-ပြောဟောပို့ချထိုက်၏၊ [မေထုနကထာ ၌ "ကထေဘဗ္ဗာ"ဟု ရှိစေ။]

ဟိ- ချဲ့! (ကရုဏာဂုဏံ အာဝဇ္ဇေတွာကိုချဲ့၊) သောဘဂဝါ- သည်၊ သဗ္ဗသော-အလုံးစုံအားဖြင့်၊ ကာမေဟိ-ကာမတို့မှ၊ ဝိနိဝတ္တမာနသော-ဆုတ်နစ်သောစိတ် ရှိတော်မူသည်၊ (သမာနော)ဝိ-လည်း၊ သတ္တာနုဒ္ဒယာယ- သတ္တာတို့ကို အပါယ်ဒုက္ခ အစရှိသည်တို့မှ စောင့်ရှောက်ခြင်းငှါ၊ [သတ္တာနံ အပါယဒုက္ခာဒီဟိ အနုရက္ခဏတ္ထံ၊]လောကာနုကမ္ပါယ- သတ္တလောကကိုချီးမြှောက်ခြင်းငှါ၊ သတ္တေသု-တို့၌၊ ကာရုညတံ- သနားခြင်း ရှိတော်မူသည်၏အဖြစ်ကို၊ ပဋိစ္စ- ၍၊ သိက္ခာပဒပညပနတ္ထာယ- ငှါ၊ ဤဒိသံ- သော၊ ဝါ- ဤသို့ မကြားကောင်း မနာသာဖြစ်သော၊ ကထံ-ကို၊ ကထေသိနာမ-ဟောတော်မူပါပေပြီ၊ သတ္ထု-၏၊ ကရုဏာဂုဏော-သည်၊ အဟော-ဩော်....အံ့ဩဘွယ် ရှိပါပေစွ၊ ဣတိ ဧဝံ-သို့၊ လောကနာထဿ ကရုဏာဂုဏံ အာဝဇ္ဇေတွာ ကထေတဗ္ဗာ။

အပိစ- သည်သာမကသေး၊ ဘဂဝါ-သည်၊ သမ္ဗာကာရေန-ဖြင့်၊ ဤဒိသံ-သော၊ ကထံ- ကို၊ ယဒိ နကထေယျ- အကယ်၍ ဟောတော်မမူအံ့၊ (ဧဝံ သတိ)၊ ဧတ္တကေသု-န်သော၊ ဌာနေသု-တို့၌၊ ပါရာဇိကံ-ကသည်၊ (ဟောတိ၊) [သိက္ခာပဒံကိုငဲ့၍ ပါရာဇိကံဟု ထားသည်၊] ဧတ္တကေသု (ဌာနေသု)၊ ထုလ္လစ္စယံ-သည်၊ (ဟောတိ)၊ ဧတ္တကေသု (ဌာနေသု) ဒုက္ကဋံ ဟောတိ၊ ဣတိ-သို့၊ ကော-အဘယ်သူသည်၊ ဇာနေယျ-သိနိုင်အံ့နည်း၊ (န ဇာနေယျဝေ-မသိနိုင်ရာသည်သာ၊) တသ္မာ - ကြောင့်၊ ( ဘုရားရှင်မဟောလျှင် ပါရာဇိက ထုလ္လစ္စဉ်း ဒုက္ကဋ်အရာကို မသိနိုင်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) သုဏန္တေနပိ – သည်၎င်း၊ ကထေန္တေနပိ-၎င်း၊ ဗီဇကေန–ယပ်ငယ်ဖြင့်၊ မုခံ–ကို၊ အပိဓာယ-မပိတ်မူ၍၊ ဒန္တဝိဒံသကံ-သွားတို့ကို ထင်ရှားပြ၍၊ ဟသမာနေန-ပြုံးရယ်လျက်၊ န နိသီဒိတဗ္ဗံ-မထိုင်ရာ၊(တနည်း) မုခံ–ကို၊ အပိဓာယ-ပိတ်၍၊ ဒန္တဝိဒံသကံ–၍၊ ဟသ

**ပဋိကူလ၊ ပေ၊ ကထေတဗ္ဗ ။** ။ မေထုနကထာသည် ရာဂ၏ တိုးပွားကြောင်းလည်းဖြစ်,ရယ်စရာလည်းဖြစ်သောကြောင့် ရာဂတားမြစ်ဘို့ရန် ပဋိကူလမနသိကာရကို တိုက်တွန်း၍ ဟာသကိုတားမြစ်ဘို့ရန် သမဏသညာစသည်ဖြစ်စေဘို့ တိုက်တွန်းသည်။

**အပိဓာယ။** ။"အပိဒဟိတွာ"ဟု သာရတ္ထ ပဌမနည်းဖွင့်၏၊ န နိသီဒိတဗ္ဗံ၌စပ်၊ အမှတ်တမဲ့ ပြုံးရယ်မိလျှင် တရားတော်၌ လေးစားမှု ပြယ်သွားမည်စိုးရကား "မျက်နှာကို ယပ်ဖြင့်မကွယ်ဘဲ ( ဒန္တဝိဒံသကံ ဟသမာနေန – သွားတွေကိုဖော်ပြီး စပ်ဖြီးဖြီး

မာနေန-လျက်၊ န နိသီဒိတဗ္ဗံ- ရာ၊ သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓေနာပိ– သော်မှလည်း၊ ဤဒိသံ–ဤကဲ့သို့ရှုအပ်သောစကားကို၊ကထိတံ–မိန့်တော်မူအပ်တုံသေး၏၊ ဣတိ-သို့၊ ပစ္စဝေက္ခိတွာ– ၍၊ ဥဿာဟေန– အားတက်သရောရှိသည်၊ ဂဗ္ဗိတေန–ဖြစ်သော တက်ကြွခြင်းရှိသည်၊ ဟိရောတ္တပ္ပ သမ္ပန္နေန – ဟိရိဩတ္တပ္ပနှင့် ပြည့်စုံသည်၊ သတ္ထုပဋိဘာဂေန ~ မြတ်စွာဘုရားနှင့် အလားတူသည်၊ ဟုတွာ – ၍၊ ကထေတဗ္ဗံ-ပြောဟောပို့ချရာ၏၊ ဝါ-ပြောဟော ပို့ချပါလေ၊ ဣတိ-ဤကားတိုက်တွန်းချက်တည်း။........မူလပညတ္တံ-မူလပညတ်တော်သည်၊ နိဋ္ဌိတံ–ပြီ။

လုပ်လျက်)မနေလိုက်ပါနှင့်–" (ဓမ္မကထိက ထုံးစံအတိုင်း ယပ်ကိုကိုင်ကာ) မျက်နှာကို ယပ်ဖြင့်ကာ၍ ဣန္ဒြေရရ နေလိုက်ပါ"–ဟူလို၊ ထို့ကြောင့် "ဗီဇကေန မုခံ ပဋိစ္ဆာဒေတွာ နိသီဒိတဗ္ဗံတိ အဓိပ္ပါယော"ဟု ဥဇုကတ္တကို သာရတ္ထ ဖွင့်ပြသည်။

**မှတ်ချက်။** ။ဤ "ပဋိစ္ဆာဒေတွာ+နိသီဒိတဗ္ဗံ"ကို ကြည့်၍ အဋ္ဌကထာ၌ "အဝိ ဓာယ – ပိတ်၍၊ နိသီဒိတဗ္ဗံ – နေရာ၏"ဟု အနက်မပေးမိပါစေလင့်၊ သာရတ္ထသည် သဒ္ဒတ္ထကို ဖွင့်သည် မဟုတ်၊ "အဝိဓာယ+န နိသီဒိတဗ္ဗံ"ဝယ် "အနှင့်+န" ပဋိသေဓ ၂ ခု၏ ပကတိအနက်ကိုပြသော အဓိပ္ပါယတ္ထကို ဖွင့်သည်–ဟု မှတ်။

**တနည်း။** ။အထဝါ–မုခံ အဝိဓာယာတိ မုခံ ပိဒဟိတွာတိ အတ္ထော၊ ပဌမနည်း၌ကဲ့သို့ "မပိတ်မူ၍"ဟု မပေးဘဲ " ပိတ်၍ "ဟု ပေးပါ – ဟူလို၊ "ဗီဇကေန မုခံ ပိဒဟိတွာ ဟသမာနေန န နိသီဒိတဗ္ဗံတိ အဓိပ္ပါယော=ယပ်ဖြင့်ပိတ်၍ ပြုံးပြုံးကြီးလုပ်မနေပါနှင့်၊ ထိုသို့ နေလျှင် တရားကို မလေးစားရာ ရောက်ပါလိမ့်မည်"–ဟူလို၊ ဤနည်း၌လည်း ယပ်ဖြင့် မျက်နှာကွယ်ကာမှုကို မတားမြစ်ပါ၊ ပြုံးဖြီးဖြီး လုပ်ခြင်းကိုသာ တားမြစ်ပါသည်၊ ထို့ကြောင့် ၂ နည်းလုံးပင် အဓိပ္ပါယ်မှာ သဘောတူဟု မှတ်ပါ။

**မှတ်ချက်။** ။အဝိဓာယကို သာရတ္ထ ၂ နည်းဖွင့်ရာဝယ် ဝိဓာယ၌ အဝိပုဗ္ဗ ဓာဓာတ်, တွာပစ္စည်း၏ ကာရိယ ( ယ ) တည်း၊ အဝိ၌ ( အ )ကို ချေလေ့ရှိသည်၊ ထိုအလေ့အတိုင်း ချေ၍ လက်ရှိ အဝိ၌(အ) ကို ပဋိသေဓ ဟု ကြံပြီးလျှင် " အဝိဓာယ– မပိတ်မူ၍ " ဟု ပဌမနည်း ဖွင့်၏၊ တရံတခါ အဝိမှ(အ) ကို မချေဘဲလည်း ရှိတတ်ရကား "အဝိဓာယ-ပိတ်၍"ဟု ဒုတိယနည်း ဖွင့်သည်၊ ထို့ပြင်-စာအုပ်များ၌"န နိသီဒိတဗ္ဗံ" ဟု ရှိရမည် ဖြစ်လျက် (န) မပါဘဲ ရှိသည်ကို ပါဠိပျက် ဟု မှတ်။

**ဒဏ္ဍဝိဒံသကံ ။** ။ ဒဏ္ဍေ + ဝိဒံသေတိ– ဖေါ်ပြတတ်၏၊ ဣတိ ဒဏ္ဍဝိဒံသကော၊ ကြိယာဝိသေသန အနက်၌ အံသက်၍ " ဒဏ္ဍဝိဒံသကံ" ဟု ဖြစ်သည်။ [ဒဏ္ဍေ ဒဿေတွာ–ဋီကာ။]

**ဂဗ္ဗိတေန။** ။မာန်မူခြင်းအနက်ဟော ဂဗ္ဗနောင် သဉ္ဇာတအဿ အနက်၌ ဣတပစ္စည်း၊ (မောဂ္ဂလ္လာန်)။ [မာန်တက်ကြွသူကဲ့သို့ တက်တက်ကြွကြွ ရှိပါစေ၊ ဟောပြောပို့ချရာ၌ တွန့်ဆုတ် တွန့်ဆုတ် လုပ်နေလျှင် အနက်အဓိပ္ပါယ် ထင်ရှားအောင် မပြောနိုင်ဘဲ ရှိပါလိမ့်မည်၊–ဟူလို၊ ဂဗ္ဗိတေန-ဟု မူကွဲရှိ၏၊ မကောင်းလှ။]

အနုပညတ္တိဝဏ္ဏနာ-၌၊အန္တိမဝတ္ထုံ-ကား၊ သဗ္ဗန္တိမေန-အလုံးစုံသော အပိုင်းအခြားတို့၏ အဆုံး၌ဖြစ်သော၊ ပရိစ္ဆေဒေန- အပိုင်းအခြားအားဖြင့်၊ တိရစ္ဆာန ဂတာယပိတိ-ကား၊ ပဋိသန္ဓိဝသေန- ဖြင့်၊ တိရစ္ဆာနေသု-ဆ္တာန် တို့၌၊ဂတာယပိ-ဖြစ်သော အမ၌သော်လည်း၊(မေထုနံ ဓမ္မံ-ကို၊ပဋိသေဝိတွာ-၍၊ ဝါ-ကြောင့်၊ အဿမဏော-သည်၊ အသကျပုတ္တိယော-သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ဤသို့ ပါဠိတော်၌ စပ်၊ ) ပဂေဝ မနုဿိတ္ထိယာတိ- ကား၊ မနုဿဇာတိ ကာယ-လူဇာတ်ရှိသော၊ ဣတ္ထိယာ-၌၊ ( မေထုန ဓမ္မံ ပဋိသေဝိတွာ ) ပဌမ တရံ-ရှေးဦးမဆွ အစကပင်၊(အဿမဏော အသကျပုတ္တိယော ဟောတ်)၊ စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ-၌ အန္တိမသော တိရစ္ဆာနဂတာယပိ ဟူသော ပါဌ်၌၊ ပါရာဇိက ဝတ္ထုံ ဘူတာဝေ – ပါရာဇိကဝတ္ထု ဖြစ်၍သာလျှင် ဖြစ်သော၊ တိရစ္ဆာန ဂတိတ္ထိ-တိရစ္ဆာန်မကို၊ တိရစ္ဆာန ဂတာတိ- ဂတာဟူ၍၊ ဂဟေတဗ္ဗာ-၏၊ သဗ္ဗာ-သော၊ တိရစ္ဆာနဂတိတ္ထိ – ကို၊ တိရစ္ဆာနဂတာတိ – ဟူ၍၊ န ဂဟေ တဗ္ဗာ–ထိုက်။

**အန္တိမသော**။ ။"အန္တေ+နိယုတ္တော အန္တိမော"ဟု ပြီးသော ပုဒ်နောင် နာကို သောပြု၍"အန္တိမသော"ဖြစ်သင့်လျက် ဣကို(အ) ပြု၍ "အန္တမသော"ဟု ပြီးရကား "သဗ္ဗန္တိမေန ပရိစ္ဆေဒေန " ဟု ဖွင့်သည်၊ " အန္တမသော – အလုံးစုံတို့၏ အဆုံး၌ ယှဉ်သော အပိုင်းအခြားအားဖြင့်"ဟု သဒ္ဒတ္ထ,"အယုတ်သဖြင့်"ဟု ဝေါဟာရတ္ထပေး။

**တိရစ္ဆာန ဂတာယပိ**။ ။တိရစ္ဆာနေသု–တို့၌၊ ဂတာ-ဖြစ်သော(ပါဝင်သော) အမတည်း၊ တိရစ္ဆာနဂတာ၊ ဗိသည် ဂရဟာဇောတက၊ မေထုန် မှီဝဲကောင်းသော ပရနိမ္မိတဝသဝတ္တိနတ်မ, နိမ္မာနရတိနတ်မ-စသည်ဖြင့် အဆင့်ဆင့် အောက်သို့ရေတွက် လာလျှင် တိရစ္ဆာန်မသည် အောက်တန်း အကျဆုံးတည်း၊ ထိုတိရစ္ဆာန်မ၌ မှီဝဲသော်မှ ပါရာဇိကကျသေး၏ ( ဂရဟာ )၊ အထက်တန်း ကျသော လူမ စသည်၌ မှီဝဲရာဝယ် ဆိုဘွယ်မရှိ–ဟု သမ္ဘာဝနာကိုဆည်းသည်။

**ပဂေဝ မနုဿိတ္ထိယာ**။ ။ဤစကားသည် ပိသဒ္ဒါအတွက်ရအပ်သော သမ္ဘာဝနာ အနက်တည်း၊ ပဂေသည် ပါတော အနက်ဟော နိပါတ်ပုဒ် ဖြစ်သောကြောင့် "ပဌမ တရံ"ဟု ဖွင့်သည်၊ "ပါတော–စောစော" ဟူသည် "ပဌမတရံ" နှင့် သဘောတူပင် တည်း၊ တိရစ္ဆာန်မကို မှီဝဲသူသော်မှ ပါရာဇိကကျသေးလျှင် လူမကို မှီဝဲသူမှာ အစော ကြီးက ကျမှာပေါ့ – ဟူလို၊ ဤစကားလည်း လောက ပြောရိုးအတိုင်း ဟောတော်မူ အပ်သောစကားသာတည်း၊ လူမကိုမှီဝဲရာ၌ တိရစ္ဆာန်မကိုမှီဝဲခြင်းကြောင့်ထက် အထူး စော၍ ပါရာဇိက မကျပါ၊ ထို့ကြောင့် "ပဂေဝ– လူမကို မှီဝဲရာ၌ ပါရာဇိကကျ၏ ဟု အဘယ်မှာ ဆိုဘွယ်ရှိတော့ အံ့နည်း, အထူးဆိုစရာပင် မလိုတော့" ဟု အဓိပ္ပါယ်ဆိုလို သည် ဟုမှတ်။

တတြ - ထို ပါရာဇိကဝတ္ထုဘူတာဝေ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ အယံ-ဤ ဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ ပရိစ္ဆေဒေါ - အောက်ထစ်ဆုံး အပိုင်းအခြားတည်း၊ အပဒါနံ- အခြေမရှိသော သတ္တဝါတို့၏၊ [သတ္တဝါ သာမညကိုငဲ့၍" အပဒါနံ" ကို ပုလ္လိင်ဟု မှတ်၊ နောက်၌လည်း " တေသံ " ဟု ဆိုလတ္တံ့။] အဟိ-မြွေမသည်ငှင်း၊ မဏ္ဍု-ငါးမသည်ငှင်း၊ [ဇာတ်ကိုငဲ့၍ "အဟိ- မဏ္ဍု" ဟု ကေဝုစ်ထားသည်၊] ဒွိပဒါနံ- တို့၏၊ ကုက္ကုဋိစ-ကြက်မသည်ငှင်း၊ စတုပ္ပဒါနံ-တို့၏၊ မဇ္ဇာရီ-ကြောင်မသည်ငှင်း၊ ဧတမာ-ဤ တိရစ္ဆာန်မတို့သည်၊ ပါရာဇိကဿ-၏၊ ဝတ္ထု-ဝတ္ထုတည်း၊ ဣတိ အယံ-ကား၊ ပရိစ္ဆေဒေါ-တည်း။

တတ္ထ-ထိုဂါထာ၌၊ အဟိဂ္ဂဟဏေန-အဟိသဒ္ဒါဖြင့်၊ သမ္ဗာပိ-သော၊ အဇဂရ ဂေါနသာဒိဘေဒါ - စပါးကြီးမြွေ, ငန်းမြွေအစရှိသောအပြားရှိသော၊ ဒီဃဇာတိ - ရှည်လျားသောသတ္တဝါတို့၏ဇာတ်ကို၊ သင်္ဂဟိတာ-သိမ်းယူအပ်ပြီ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ဒီဃဇာတီသု- ရှည်သောအမျိုးဇာတ်တို့တွင်၊ ယတ္ထ- အကြင်ဇာတ်၌၊ တိဏ္ဏံ - န်သော၊ မဂ္ဂါနံ-မဂ်တို့တွင်၊ အညတရသ္မိံ - အမှတ်မထားတပါးပါးသောမဂ်၌၊ တိလဖလမတ္တမ္ပိ-နှမ်းတစေ့ခန့်ကိုလည်း၊ ပဝေသေတုံ-သွင်းခြင်းငှါ၊ သက္ကာ-တတ်ကောင်း၏၊ သာ-ထိုဇာတ်သည်၊ ပါရာဇိကဝတ္ထု-တည်း၊ အဝသေသာ-ကြွင်းသောဒီဃဇာတိ တိရစ္ဆာန်မကို၊ ဒုက္ကဋဝတ္ထုတိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ - ၏၊ မဏ္ဍူဂ္ဂဟဏေန-ဖြင့်၊ သမ္ဗာပိ - သော၊ မဏ္ဍူကစ္ဆပ မဏ္ဍူကာဒိဘေဒါ-ငါး,လိပ်,ဖါးအစရှိသောအပြားရှိသော၊ ဩဒကဇာတိ-ရေ၌ဖြစ်သော သတ္တဝါတို့၏ဇာတ်ကို၊ သင်္ဂဟိတာ - ပြီ၊ တတြာပိ - ထို ဩဒကဇာတ်၌လည်း၊ ဒီဃဇာတိယံ-၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ-ဖြင့်သာ၊ ပါရာဇိကဝတ္ထုစ-ကိုငှင်း၊ ဒုက္ကဋဝတ္ထုစ - ကိုငှင်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ - ၏၊ ပန - ဆက်၊ အယံ - ကား၊ ဝိသေသော-တည်း၊ ပတင်္ဂမုခမဏ္ဍူကာနာမ-နံကောင်၏ ပါးစပ်ကဲ့သို့သော ပါးစပ်ရှိသော ဖါးတို့မည်သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ တေသံ-ထိုပတင်္ဂမုခဖါးတို့၏၊ မုခသဏ္ဌာနံ-နှုတ်ခမ်းရေသဏ္ဌာန်သည်၊[မုခသဏ္ဌာနန္တိ-ဩဋ္ဌစမ္မသဏ္ဌာနံ၊] မဟန္တံ-ကျယ်၏၊ ဆိဒ္ဒံ - ပါးစပ်ပေါက်သည်၊ အပ္ပကံ - ငယ်း၏၊ တတ္ထ - ထို ပါးစပ်ပေါက်၌၊ ပဝေသနံ - သွင်းခြင်းသည်၊ နပ္ပဟောတိ – မလောက်၊ မုခသဏ္ဌာနံ ပန– သည်ကား၊ ဝဏသင်္ခေပမေဝ – အမာ၌ သွင်းယူအပ်သည်၏

**ဥပလက္ခဏနည်း။** ။မဏ္ဍူသဒ္ဒါသည် ရေသတ္တဝါအားလုံး၏ ဥပလက္ခဏ,ကုက္ကုဋိ သဒ္ဒါလည်းအတောင်ရှိသော သတ္တဝါအားလုံး၏ ဥပလက္ခဏ,မဇ္ဇာရီသဒ္ဒါလည်း အခြေ ၄ ချောင်းရှိသော သတ္တဝါအားလုံး၏ ဥပလက္ခဏတည်း၊ ထို့ကြောင့် နောက်၌"မဏ္ဍူဂ္ဂဟဏေန သဗ္ဗာပိ၊ပေ၊ဩဒကဇာတိ သင်္ဂဟိတာ"စသည်ကို မိန့်လတ္တံ့။

အပြစ်သို့သာ၊ ဂစ္ဆတိ- ၏၊ [ဝဏ္ဏာသင်္ဂဟံ ဂစ္ဆတိ၊ နဝသု ဝဏ္ဏမုခေသု သင်္ဂဟိ တတ္တာတိအဓိပ္ပါယော၊]တသ္မာ-ကြောင့်၊ တံ - ထိုမုခသဏ္ဌာန်ကို၊ ထုလ္လစ္စယ ဝတ္ထုတိ - ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ - ၏၊ ကုက္ကုဋိဂဏ္ဍဟာဏောန - ဖြင့်၊ သမ္ပာပိ - သော၊ ကာက ကပေါ်တာဒိဘေဒါ- ကျီး,ခို အစရှိသောအပြားရှိသော၊ ပက္ခိဇာတိ- အတောင်ရှိသောငှက်တို့၏ဇာတ်ကို၊ သင်္ဂဟိတာ-ပြီ၊ တတြာပိ-ထိုပက္ခိဇာတ် ၌လည်း၊ပေ၊မင်္ဂုဒိဂဏ္ဍဟာဏောန-ဖြင့်၊ သမ္ပာပိ-သော၊ နကုလသုနခ မင်္ဂုသဂေါဓာ ဒိဘေဒါ - ရှဉ့် , မြွေပါ , ဖွတ် အစရှိသော အပြားရှိသော၊ စတုပ္ပဒဇာတိ - အခြေလေးချောင်းရှိသော သတ္တဝါတို့၏ဇာတ်ကို၊ သင်္ဂဟိတာ - ပြီ၊ တတြာပိ-ထို စတုပ္ပဒဇာတ်၌လည်း ၊ပေ၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏။

ပါရာဇိကောတိ-ကား၊ပရာဇိတော-ဆုံးရှုံးစေအပ်သည်၊ ပရာဇယံ-ဆုံးရှုံး ခြင်းသို့၊ အာပန္နော-ရောက်သည်၊ (ဟောတိ)၊ဟိ-ချဲ့၊ အယံပါရာဇိကသဒ္ဒေါ- ၌ ပါရာဇိက သဒ္ဒါသည်၊ သိက္ခာပဒါပတ္တိပုဂ္ဂလေသု – သိက္ခာပုဒ် , အာပတ်, ပုဂ္ဂိုလ်တို့၌၊ ဝတ္တတိ–၏၊ တတ္ထ–ထိုသိက္ခာပုဒ်,အာပတ်,ပုဂ္ဂိုလ်တို့တွင်၊ အဋ္ဌာန မေတံ အာနန္ဒ ၊ပေ၊ သမူဟနေယျာတိ – ယျ ဟူ၍၊ ဧဝံ – သို့၊ သိက္ခာပဒေ- သိက္ခာပုဒ်ဟူသော အနက်၌၊ ဝတ္တမာနော – ဖြစ်သော ပါရာဇိက သဒ္ဒါကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ [အာနန္ဒ-နှာ၊ ယံ-အကြင် အကြောင်းကြောင့်၊ ဝါ-အကြင် အခွင့်ကြောင့်၊ တထာဂတော – သည်၊ ဝဇ္ဇီနံဝါ– ဝဇ္ဇီတိုင်းသားတို့၏သော် ၎င်း၊ ဝဇ္ဇိပုတ္တကာနံဝါ–ဝဇ္ဇီတိုင်းသားတို့၏သားတို့၏သော်၎င်း၊ကာရဏာ- အကြောင်းကြောင့်၊ သာဝကာနံ-တို့ဘို့၊ ပညတ္တံ-ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးသော၊ ပါရာဇိကံ သိက္ခာပဒံ – သိက္ခာပုဒ်ကို၊ သမူဟနေယျ– ပယ်နုတ်ရာ၏၊ ဧတံ– ၌ အကြောင်းသည်၊ အဋ္ဌာနံ – သင့်သောအကြောင်း မဟုတ်၊ ( ဧသော – ၌အခွင့်သည်၊ ) အနဝကာသော-သင့်သော အခွင့်မဟုတ်၊.... ၌သိက္ခာပုဒ်၏ ဒုတိယ အနုပညတ်ပါဠိတော်။]

ပါရာဇိကော။ ။သိက္ခာပုဒ်နှင့် အာပတ်ကို ဟောရာ၌"ပရာဇေတီတိ ပါရာဇိကံ (သိက္ခာပဒံ), ပါရာဇိကာ ( အာပတ္တိ )"ဟု ဟောတုကတ္တုသာဓ်ပြု၊ [ပရာ+ဇိ+ဏျ၊ ကာရိတ်ကြေ၊] ထို့ကြောင့်"ပရာဇေတိ တသ္မာ ပါရာဇိကံတိ (ပါရာဇိကာတိ) ဝုစ္စတိ" ဟု မိန့်သည်၊ ပုဂ္ဂိုလ်ကို ဟောရာ၌ " ပရာဇီယတေတိ ပါရာဇိကော " ဟု ဟောတု ကမ္မသာဓ်ပြု၊ ထို့ကြောင့်"ပါရာဇိကောတိ–ပရာဇိတော"ဟုဖွင့်သည်၊"ပရာဇိတော" ဟု ပြီးပြီးမှ ပ၏ အကို အာဝုဒ္ဓိ, တကို ကပြု၍"ပါရာဇိကော"ဟု ပြီးသည်၊ "ပရာဇယံ အာပန္နော"ကား အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း။ [ပရာဇိတသဒ္ဒေါ (ကို) ဥပသဂ္ဂဿ ဝုဒ္ဓိံ ကတွာ တကာရဿစ ကကာရံကတွာ ပါရာဇိကောတိ နိဒ္ဒိဋ္ဌောတိ အာဟ – ပါရာဇိကောတိ ပရာဇိတောတိ၊ — သာရတ္ထ။]

အာပတ္တိံ တွံ၊ပေ၊ပါရာဇိကန္တိ – ဟူ၍၊ ဧဝံ - သို့၊ အာပတ္တိယံ – အာပတ် ဟူသော အနက်၌၊ ( ဝတ္တမာနေ–ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ) [ ဘိက္ခု-ရဟန်း၊ တွံ-သည်၊ ပါရာဇိကံ-ပါရာဇိကာ မည်သော၊ အာပတ္တိံ-သို့၊ အာပန္နော-ပြီ၊] နမယံ၊ပေ၊ပါရာဇိကောတိ-ဟူ၍၊ ဧဝံ-သို့၊ ပုဂ္ဂလေ-ပုဂ္ဂိုလ်ဟူသော အနက်၌၊ ဝတ္တမာနော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ [မယံ-တို့သည်၊ န ပါရာဇိကာ-ပါရာဇိက မကျကုန်၊ ယော–အကြင် ရဟန်းသည်၊ အဝဟရော–ခိုးယူပြီ၊ သော–သည်၊ ပါရာဇိကော – ပါရာဇိကကျ၏၊] ပန – ဝါဒန္တရကား၊ ပါရာဇိကေန ဓမ္မေန အနုဒ္ဓံသေယျာတိ အာဒီသု-တို့၌၊ ဓမ္မေ–ဓမ္မဟူသော အနက်၌၊ ( ပါရာဇိက သဒ္ဒေါ-သည်၊ ) ပဝတ္တတိ–၏၊ ဣတိ–သို့၊ ဝဒန္တိ–ဆိုကြကုန်သေး၏၊ ပန–ထိုသို့ပင် ဆိုကြပါကုန်သော်လည်း၊ ယသ္မာ–ကြောင့်၊ တတ္ထ–ထို ပါရာဇိကေန ဓမ္မေန အနုဒ္ဓံသေယျ အစရှိသော ပါဠိရပ်တို့တွင်၊ ကတ္ထစိ –အချို့ ပါဠိရပ်၌၊ အာပတ္တိ-ကို၊ ဓမ္မောတိ–ဟူ၍၊(အဓိပ္ပေတာ-၏၊)ကတ္ထစိ-၌၊ သိက္ခာပဒမေဝ–ကိုသာ၊ ဓမ္မောတိ–ဟူ၍၊ အဓိပ္ပေတံ- ၏၊ တသ္မာ – ကြောင့်၊ သော–ထို ဓမ္မ အနက်ကို၊ ဝိသုံ–သီးခြား၊ နဝတ္တဗ္ဗော–ထိုက်၊

တတ္ထ–ထို သိက္ခာပုဒ်, အာပတ်, ပုဂ္ဂိုလ်တို့တွင်၊ သိက္ခာပဒံ- ကို၊ (ဝုစ္စတိ၌ စပ်၊ ) ယော - အကြင် ရဟန်းသည်၊ တံ – ထို သိက္ခာပုဒ်ကို၊ အတိက္ကမတိ– လွန်ကျူး၏၊ တံ- ထိုလွန်ကျူးသော ရဟန်းကို၊ ပရာဇေတိ- ဆုံးရှုံးစေတတ်၏၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ ( လွန်ကျူးသော ရဟန်းကို ဆုံးရှုံးစေတတ်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊)ပါရာဇိကန္တိ–ကံဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ပန–ကား၊ အာပတ္တိ- ကို၊ ယော– သည်၊ နံ–ထိုအာပတ်သို့၊ အဇ္ဈာပဇ္ဇတိ- လွှမ်းမိုး၍ရောက်၏၊ တံ-ထိုရဟန်းကို၊ (ထိုအာပတ်ကို လွှမ်းမိုး၍ ရောက်သော ရဟန်းကို)၊ ပရာဇေတိ–၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ (အာပတ်သို့ လွှမ်းမိုး၍ရောက်သော ရဟန်းကို ဆုံးရှုံးစေတတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) ပါရာဇိကာတိ– ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ ပုဂ္ဂလော-ကို၊ ယသ္မာ– ကြောင့်၊ ပရာဇိတော – ဆုံးရှုံးစေအပ်ပြီ၊ ပရာဇယံ – ဆုံးရှုံးခြင်းသို့၊ အာပ န္နော–ပြီ၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ (ဆုံးရှုံးစေအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) ပါရာဇိ ကောတိ–ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏။

ဟိ - မှန်၊ ဧတမေဝအတ္ထံ - ဤအနက်ကိုပင်၊ ( " ဤ အာပတ်သင့်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည် ပရာဇိတ ပရာဇယမာပန္နဖြစ်၏ " ဟူသော ဤ အနက်ကိုပင်၊ ) သန္ဓာယ-၍၊ ပရိဝါရေပိ-ပရိဝါပါဠိတော်၌လည်း၊ ပါရာဇိကန္တိ ယံ ဝုတ္တံ၊ပေ၊ တေနေတံ ဣတိ ဝုစ္စတီတိ - ဟူ၍၊ ( သံဂီတိကာရေဟိ ) ဝုတ္တံ၊ [ယံ - အကြင် အာပတ်ဟူသော ပါရာဇိကကို၊ ပါရာဇိကန္တိ – ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ – ဟောတော်မူ

အပ်ပြီ၊ တံ–ထိုအာပတ်ဟူသော ပါရာဇိကကို၊ ယထာတထံ· မဖေါက်မပြန် ဟုတ်တိုင်းမှန်စွာ၊ သုဏောဟိ–နားထောင်လော၊ ဟိ–အကြင့်ကြောင့်၊ (တံ သိက္ခာပဒံ–ကို၊ ဝီတိက္ကမန္တော–သော၊ (တံ) အာပတ္တိံ စ– သို့လည်း၊ အာပ န္နော–သော၊ ပုဂ္ဂလော– သည်၊) သဒ္ဓမ္မာ – သူတော်ကောင်းတရား ဟူသော သာသနာတော်မှ၊ စုတော–ရွေ့ရှားသည်ဖြင်း၊ ပရဒ္ဓေါ–ချွတ်ချော်သည်ဖြင်း၊ ဘဋ္ဌောစ – လျှောကျသည်ဖြင်း၊ နိရာကတော– ကင်းကွာအောင် ပြုအပ်သည် ဖြင်း၊ (ဟောတိ)၊ ["နိ+ အာ+ကတော"ဟု သက္ကတ၌ရှိ၏၊ "နိရက်တော" ကား ပါဠိပျက်။] တဟိံ – ထို ပါရာဇိကကျသော ပုဂ္ဂိုလ်၌၊ သံဝါသောဝိ– သံဝါသသည်လည်း၊ နတ္ထိ၊ တေန–ကြောင့်၊ တံ·၌ အာပတ်ဟူသော ပါရာ ဇိကကို၊ ဣတိ– ၌ ပါရာဇိကဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ။]

ဟိ–ဆက်၊ အယံ–၌ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ဧတ္ထ– ၌ဂါထာ၌၊ အတ္ထော၊ တံ သိက္ခာပဒံ–ကို၊ ဝီတိက္ကမန္တော–ကျူးလွန်သော၊ (တံ) အာပတ္တိံ စ၊ ပေါ့ ဣတိ– ၌သို့ အစရှိသော၊ သဗ္ဗံ – အလုံးစုံသောပုဒ်ကို၊ ယောဇေတဗ္ဗံ– ရာ၏၊ တေန ဝုစ္စတီတိ - ကား၊ [ ပါဠိတော်၌ " တေန ဝုစ္စတိ ပါရာဇိကော ဟောတိ "မှ တေနဝုစ္စတိကိုဆိုသည်၊] ယေန ကာရဏေန–ကြောင့်၊ အဿမဏော -သည်၊ အသကျပုတ္တိယော–သည်၊ သာသနတော– မှ၊ ပရိဘဋ္ဌော– လျှောကျသည်၊

**တေ မေ ဝ ဟိ အတ္ထံ သန္ဓာယ။** ။တံ အာပတ္တိံ အာပန္နော ပုဂ္ဂလော ပရာဇိတော ဟောတိ ပရာဇယံ အာပန္နောတိ တေမတ္ထံ သန္ဓာယ – အာပတ်သင့်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည် ပရာဇိတ ပရာဇယမာပန္န ဖြစ်၏ဟူသော ၌အနက်ကို ရည်ရွယ်၍ ပရိဝါ ပါဠိတော်ဝယ် "ပါရာဇိကန္တိ ယံ ဝုတ္တံ" စသောဂါထာကို မိန့်တော်မူသည်၊ ထိုဂါထာသည် အာပတ်၏ ပါရာဇိကအမည်ရပုံကို တိုက်ရိုက်ပြသောဂါထာ ဖြစ်သော်လည်း သန္ဓာယ ဘာသိတ အနက်မှာ ပုဂ္ဂိုလ်၏ ပါရာဇိကအဖြစ်တည်း၊ မှန်၏–"စုတော ပရဒ္ဓေါ"စသော ပုဒ်တို့ သည် ပါရာဇိကကျသောပုဂ္ဂိုလ်ကို ပြသောပုဒ်များတည်း၊ ထိုပုဒ်များတွင် "သာသနာ တော်မှ ရွေ့လျောရပြီ" စသည်ကိုဆိုသဖြင့်"သာသနာတော်မှ ဆုံးရှုံးစေအပ်ပြီ, ဆုံးရှုံး ခြင်းသို့ ရောက်ပြီ " ဟူသော ပရာဇိတော ပရာဇယံ အာပန္နောအနက်ကို သိရသည် – ဟူလို။

**ဂါထာဖွင့်။** ။အယံ ဟိ ပရိဝါရ ဂါထာယအတ္ထော– ယဒိဒံ ပုဂ္ဂလာပတ္တိ သိက္ခာ ပဒ ပါရာဇိကေသု (တို့တွင်) အာပတ္တိပါရာဇိကံနာမ ဝုတ္တံ၊.... ၌အဖွင့်ကြည့်၍ "ယံ– အကြင်အာပတ်ဟူသောပါရာဇိကကို"ဟု ပေးသည်၊ ဝိမတိ၌"အာပတ္တိရူပံ ပါရာဇိကံ" ဟု ဖွင့်၏၊ အာပတ္တိပုဒ်က ဣတ္ထိလိန်ဖြစ်သောကြောင့် "ပါရာဇိကံ"ဟူသော နပုလ္လိန်နှင့် လိုက်လျောအောင် "ရူပံ" ထည့်ခြင်းတည်း၊ ကြွင်းပုဒ်များကို နိဿယအတိုင်း သိနိုင် လောက်ပြီ၊ [ယသ္မာ ပရာဇိတော ဟောတိ၊ တေန တသ္မာ ပါရာဇိကန္တိ ဝုစ္စတီတိ။ — ပရိဝါအဋ္ဌကထာမှ ယူထားသော သာရတ္ထဋီကာ။]

ဆိန္နော-အကြား၌ပြတ်သည်၊ [အန္တရာခဏ္ဍိတော- အသက်မကုန်မီအကြား၌ သာသနာနှင့်အဆက်ပြတ်သည်။]ပရာဇိတော-ဆုံးရှုံးစေအပ်သည်၊ဟောတိ-၏၊ တေန-ကြောင့်၊ ဝုစ္စတိ-ဆိုအပ်၏၊ ကိန္တိ-အဘယ်သို့လျှင်၊ (ဝုစ္စတိ-နည်း၊) ပါရာဇိကော ဟောတီတိ-ဟူ၍၊ (ဝုစ္စတိ-၏၊)

ဧတ္ထ – ဤ ကေကမ္မအစရှိသည်၌၊ (ဘိက္ခူ - တို့သည်၊) သဟ-အတူတကွ၊ ဝသန္တိ-နေကြရကုန်၏၊ ဝါ - ဖြစ်ကြကုန်၏၊ [သဟ ဝသန္တိ– သဟ ပဝတ္တန္တိ (ယောဇနာ)၊]ဣတိ- ကြောင့်၊ (ရဟန်းတို့ အတူတကွနေရာဖြစ်ရာ၏ အဖြစ် ကြောင့်၊) (သော – ထိုကေကမ္မအစရှိသည်သည်၊) သံဝါသော – သံဝါသ မည်၏၊ တံ–ထိုသံဝါသကို၊ ဒဿေတုံ–ငှါ၊ သံဝါသော နာမာတိ-နာမဟူ၍၊ ဝတွာ–၍၊ ကေကမ္မန္တိအာဒိံ - ကို၊ အာဟ – မူပြီ၊ တတြ - ထိုကေကမ္မံအစ ရှိသောစကားရပ်၌၊ အယံ - ကား၊ ယောဇနာယ - ပုဒ်တို့ကိုယှဉ်ခစေခြင်းနှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ ဝဏ္ဏနာ- အနက်အဖွင့်တည်း၊ စတုဗ္ဗိဓမ္ပိ- သော၊ သံဃကမ္မံ–သံဃ ကံသည်၊ သီမာပရိစ္ဆိန္နေဟိ-တသိမ်တည်းဖြင့် ပိုင်းခြားအပ်ကုန်သော၊ ပကတ တ္တေဟိ-ပကတတ်ဖြစ်ကုန်သော၊ဝါ-ပင်ကိုယ်သဘောရှိကုန်သော၊ဘိက္ခူဟိ-တို့သည်၊ ကေတော – တပေါင်းတည်း၊ ကတ္တဗ္ဗတ္တာ – ပြုထိုက်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ ကေကမ္မံနာမ - မည်၏၊ တထာ – တူ၊ ပဉ္စဝိဓောပိ - သော၊ ပါတိ မောက္ခုဒ္ဒေသော- သည်၊ ကေတော- တည်း၊ ဥဒ္ဒိသိတဗ္ဗတ္တာ- ရွတ်ပြထိုက်

ပကတတ္တေဟိ။ ။ ပကတော+ အတ္တာ ယေသံတိ ပကတတ္တာ၊ ယေသံ–တို့၏၊ ပကတော–အစဉ်ပြုအပ်သော+အတ္တာ–သဘောသည်၊ အတ္ထိ, ဣတိ တေ ပကတတ္တာ၊ ပါရာဇိကကျသူနှင့် ဥက္ခိတ္တကပုဂ္ဂိုလ် ၃ ယောက်သည် အစပဌမ၌ ပြုအပ်သောသဘော ( နဂိုရှိသဘော ) မရှိကြတော့၊ ထို့ကြောင့် " ပကတတ္တ " အရ ပါရာဇိကကျသူနှင့် ဥက္ခိတ္တက ၃ ယောက် မဟုတ်သော ရဟန်းများကို ယူ။ [ ပကတတ္တာနာမ ပါရာဇိကံ အနာပန္နာ အနုက္ခိတ္တကာစ။]

ကေတော ကတ္တဗ္ဗတ္တာ။ ။ဤ ဟိတ်မျိုးကို ကေကမ္မနာမည်ရခြင်း၏အကြောင်းကို ပြသောကြောင့် " နာမလာဘဟိတ် " ဟု ရှေးဆရာတို့ ခေါ်ကြသည်၊ ကေကမ္မသဒ္ဒါ ဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းကိုပြသော " သဒ္ဒပဝတ္တိ နိမိတ် "လည်း ဟုတ်၏၊"ကေတော+ ကတ္တဗ္ဗံတိ ကေကမ္မံ"ဟု ပြု၊ အပလောကန, ဉတ္တိ, ဉတ္တိ ဒုတိယ, ဉတ္တိစတုတ္ထဟူသော သံဃကံ ၄ မျိုးတည်း။ [ကေကမ္မံပုဒ်သည် နိစ္စသမာသ် ဖြစ်၍ "ကေတော+ကတ္တဗ္ဗံ"ဟု ပရိယာယ်ပုဒ်ဖြင့် ဝိဂ္ဂြိုဟ်လုပ်ရသတဲ့။] " ကေကမ္မံ–တပေါင်းတည်း ပြုအပ်သည် "ဟု ကိရိယာပဓာန ထင်မှတ်မည်စိုး၍ " ကေကမ္မံနာမ " ဟု နာမသဒ္ဒါထည့်၍ မိန့်သည်၊ ကိရိယာပဓာန မဟုတ်, နာမည်ဒြဗ်ကို ဟောသော ဒဗ္ဗဝါစက သဒ္ဒါဖြစ်သည်– ဟူလို။ [ကေဒ္ဒေသောနာမ၌လည်း နည်းတူ။]

သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ကေ့ဒွေသောနာမ-မည်၏၊ ပန-ကား၊ ပညတ္တံ-ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးသော၊ သိက္ခာပဒံ- သည်၊ သဇ္ဇေဟိပိ– နှင့်သော၊ လဇ္ဇီပုဂ္ဂလေဟိ - တို့သည်၊ သမံ - အညီအမျှ၊ ဝါ - တခုသော အဘို့အားဖြင့်၊ သိက္ခိတဗ္ဗဘာဝတော–ကောင်းစွာကျင့်ကြံသင်အံမေးမြန်းထိုက်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ သမသိက္ခာနာမ(သမသိက္ခတာနာမ)-မည်၏။

**တထာ၊ပေ၊ကေ့ဒွေသောနာမ။** ။တထာဖြင့်"သီမာပရိစ္ဆိန္နေဟိ ပကတတ္တေဟိ ဘိက္ခူဟိ"ကို ညွှန်ပြသည်၊ "တထာ–ထို့အတူ"ဟု ပေးသော်လည်း ဥပမာဇောတက မဟုတ်, အတိဒေသတည်း၊ "ကေတော+ဥဒ္ဒိသိတဗ္ဗောတိ ကေ့ဒွေသော"ဟုပြု။

**သမံသိက္ခိတဗ္ဗဘာဝတော ။** ။ ဤ ဟိတ်လည်း သမသိက္ခာ၏ နာမလာဘဟိတ် (သဒ္ဒပ္ပဝတ္တိနိမိတ်)ပင်တည်း၊ ဤဟိတ်မျိုး၌ သဒ္ဒပ္ပဝတ္တိနိမိတ်ကိုဟောသော တ္တ—တာ—တ္တန ပစ္စည်းဖြစ်စေ ဘာဝဖြစ်စေ ပါရှိးဖြစ်၏၊ ရှေ ၂ ဝါကျ၌ တ္တ ပစ္စည်းပါ၍ ဤ၌ ဘာဝပုဒ် တိုက်ရိုက်ပါသည်၊ ထိုဟိတ်ဖြင့် "သိက္ခိတဗ္ဗာတိ သိက္ခာ၊ သမံ+ သိက္ခာ သမသိက္ခာ " ဟု ပြုစေလိုသည်၊ ယခုပါဠိအဋ္ဌကထာစာအုပ်များ၌ "သမသိက္ခတာ" ဟု ရှိသည်မှာ မကောင်းလှ၊ ဋီကာတို့လည်း မဖွင့်ကြ၊ ရှေးဆရာတို့ကမူ တာပစ္စည်းကို သွဋ္ဌ ဟု ကြံ၍"သမသိက္ခာယေဝ+သမသိက္ခတာ"ဟု ပြုကြသည်။

**သမံသိက္ခိတဗ္ဗ ။** ။ " သမံတိ သဒ္ဓိံ၊ ကေပ္ပကာရေနဝါ " ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ လဇ္ဇီဟူသမျှတို့ အတူတကွ, တနည်း–သူကတမျိုး ငါကတဖုံ မဟုတ်ဘဲ"ကေပ္ပကာရ–တခုတည်းသော အဘို့အားဖြင့်"ဟူလို၊"သဒ္ဓိံ–အတူတကွ"ဟူရာ၌ ကျင့်မှုသင်မှုအားဖြင့် တူမျှသည်ကို ဆိုလိုသည်၊ သိက္ခိတဗ္ဗဘာဝကိုလည်း "အနတိက္ကမနဝသေန ဥဂ္ဂဟပရိပုစ္ဆာဒိနာစ"ဟု ဝိသေသန ၂ ခုထည့်၍ ဋီကာဖွင့်၏၊ အနတိက္ကမနဝသေနဖြင့် သိက္ခာပုဒ်ပညတ်တော်ကို မကျူးလွန်သောအားဖြင့် " ကျင့်ခြင်း " ဟူသော သိက္ခဓာတ်၏ အာစရဏအနက်ကိုပြ၏၊ ဥဂ္ဂဟပရိပုစ္ဆာဒိနာဖြင့် "သိက္ခ–ဝိဇ္ဇောပါဒါနေ" ဟူသော ဓာတ်နက်နှင့်အညီ "သင်ခြင်း"ဟူသောအနက်ကိုပြ၏၊"သမသိက္ခာ—လဇ္ဇီဟူသမျှတို့ အတူတကွ ( တမျိုးထည်းအားဖြင့် ) ကျင့်ထိုက် သင်ယူ ပို့ချထိုက်သော သိက္ခာပုဒ် ပညတ်တော်များ"ဟု ဆိုလိုသည်။

**မှတ်ချက်။** ။"ကေတော ကတ္တဗ္ဗတ္တာ,ဥဒ္ဒိသိတဗ္ဗတ္တာ"တို့၌ တဗ္ဗပစ္စည်း၏ ကတ္တားကို " ပကတတ္တေဟိ " ဟု ပါရာဇိက မကျသော, ဥက္ခိတ္တကလည်း မဟုတ်သော ဘိက္ခုတို့ကို ပြခဲ့၏၊ ထိုသို့ ပြခြင်းမှာ ဥပုသ်ကံစသော ကံနှင့်ဆိုင်ရာဖြစ်၍ ထိုကံများ၌ ဝဇ္ဇနီယပုဂ္ဂိုလ်ဖြစ်သော ပါရာဇိက – ဥက္ခိတ္တကတို့ မပါရသောကြောင့်တည်း၊ ထို ကံများ၌ အလဇ္ဇီပါနေသော်လည်း ကံမပျက်ပေ၊သိက္ခိတဗ္ဗ၏ ကတ္တားကိုကား"လဇ္ဇီပုဂ္ဂလေဟိ" ဟုပြ၏၊ ထိုသို့ပြခြင်းကား ထို သိက္ခာပုဒ်တော်များကို အလဇ္ဇီတို့ မကျင့်ကြ,သင်လည်း မသင်လိုကြ,တချို့သိက္ခာပုဒ်များကို ဖျက်ပင် ဖျက်လိုကြသောကြောင့်ရင်း, လဇ္ဇီတို့သာ ကျင့်ကြ,သင်ယူပို့ချလိုကြသောကြောင့်တည်း။[ အလဇ္ဇီ၏လက္ခဏာကို"သဉ္စိစ္စအပတ္တိံ အာပဇ္ဇတိ"စသည်ဖြင့် သိပါ၊ ]

ဧတ္တ—၌ ပဒဘာဇနီ ပါဠိတော်၌၊ [ ဧတ္တာတိ ပါဠိယံ၊ ( ၌ သိက္ခာပုဒ်၏ ပဒဘာဇနီပါဠိ၌ ) အာဟာတိပဒေ အာဓာရော၊ ( ယောဇနာ)။] ယသ္မာ—ကြောင့်၊ သဗ္ဗေပိ – န်သော၊ လဇ္ဇိနော - တို့သည်၊ ဧတေသု ကမ္မာဒိသု-တို့၌၊ သဟ – ကွ၊ ဝသန္တိ - န်၏၊ ဧကောပိ - တပါးသော လဇ္ဇီကိုလည်း၊ ဗဟိဒ္ဓါ—ပြင်ပ၌၊ နသန္ဒိဿတိ—မတွေ့မြင်အပ်၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ တာနိ သဗ္ဗာနိပိ—ထိုတံအစရှိသော အလုံးစုံတို့ကိုလည်း၊ ဂဟေတွာ-တပေါင်းတည်းယူ၍၊ ဧသော သံဝါသော နာမာတိ—နာမဟူ၍၊ အာဟ-မူပြီ၊ [ လဇ္ဇီတို့၏ အတူဖြစ်ရာချင်းဇာတ်တူသောကြောင့် "ဧသော သံဝါသော နာမ"ဟု ဧကဝုစ် ဟောတော်မူသည်—ဟူလို၊] စ—ဆက်၊ ဝုတ္တပ္ပကာရော—ဆိုအပ်ပြီးသော အပြားရှိသော၊ သော သံဝါသော—သည်၊ တေနပုဂ္ဂလေန—ထို ပါရာဇိကကျပြီးသော ပုဂ္ဂိုလ်နှင့်၊ သဒ္ဓိံ – ကွ၊ နတ္ထိ – မရှိ၊ တေန ကာရဏေန – ကြောင့်၊ ပါရာဇိကော—သာသနာတော်မှ ဆုံးရှုံးစေအပ်ပြီးသော၊ ဝါ-ပါရာဇိက ကျပြီးသော၊ သော ပုဂ္ဂလော - ကို၊ အသံဝါသောတိ - ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ - ၏၊ ["နတ္ထိ သံဝါသော တေနာတိ အသံဝါသော" ဟုပြု၊ "တေန—နှင့်တကွ" ဟုပေး၊] ဣတိအယံ—ကား၊ ယောဇနာယ—နှင့်၊ သဒ္ဓိံ—ကွ၊ ဝဏ္ဏနာ—ဘည်း၊ [ရှေ့သို့ ပြန်စပ်။]

ဧဝံ – သို့၊ ဥဒ္ဒိဋ္ဌသိက္ခာပဒံ – အကျဉ်း ရွတ်ပြအပ်သော သိက္ခာပုဒ်ကို၊ [ယောပနဘိက္ခု-စသော သိက္ခာပုဒ်ကို၊] ပဒါနုက္ကမေန-ပုဒ်စဉ်အားဖြင့်၊ ဝိဘဇိတွာ - အကျယ် ဝေဘန်တော်မူပြီး၍၊ ["ယောပနာတိ ယောယာဒိသော"မှစ၍ အသံဝါသောတိုင်အောင် အကျယ်ဝေဘန်တော်မူပြီး၍၊ ] ဣဒါနိ – ၌၊ ပဋိသေဝေယျာတိ ဧတ္တ-၌ပါဠိ၌၊ ယေန အာကာရေန—အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ (ပဋိသေဝန္တော- မှီဝဲသော ရဟန်းကို၊) ပဋိသေဝေယျာတိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ—၏၊ တဿအာကာရဿ—ကို၊ ဒဿနတ္ထံ-၄ါ၊ ပဋိသေဝတိ နာမာတိ—ဟူ၍၊ ဣဒံ မာတိကာပဒံ – ကို၊ ထပေတွာ – မူပြီး၍၊ နိမိတ္တေန နိမိတ္တံ အင်္ဂဇာတေန အင်္ဂဇာတန္တိ- ဟူသော၊ ယံတံ-အကြင်စကားတော်ကို၊(ဘဂဝတာ-

နဧကောပိ။ ။သာမညသိက္ခာပဒေသု—အများနှင့် ဆက်ဆံ၍ သာမန်ဖြစ်သော သိက္ခာပုဒ်တို့၌၊ ဝါ – တို့တွင်၊ ဣဒံ – ၌သိက္ခာပုဒ်ကို၊ တယာ – သည်၊ နသိက္ခိတဗ္ဗံ—မကျင့်ထိုက်၊ ဣတိဧဝံ-သို့၊ အဗဟိကာတဗ္ဗတော-အပ၌ မပြုထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ နဧကောပိ တတော ဗဟိ သန္ဒိဿတီတိ ဝုတ္တံ၊ (သာရတ္ထ)၊ ဧကောပိ၌ ပိသည် ဂရဟာဇောတက, သမ္ဘာဝနာ သမုစ္စည်း၊ အများကို မဆိုထားဘိ, တပါးတလေမျှ အပြင်၌ မတွေ့ရ—ဟူလို၊ ယောဇနာ၌ "သမ္ဘာဝနာ"ဟု ဆို၏၊ တပါးတလေမျှ အပြင်၌ မတွေ့ရအောင် သိက္ခိတဗ္ဗဖြစ်သည်—ဟု သိက္ခာပုဒ်ကို မြှင့်တင်စေလိုဟန် တူသည်။

သည်၊)ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တတ္ထ-ထို နိမိတ္တေနနိမိတ္တံ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ [အာဟ-၌စပ်၊]ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ကေဝလံ-သက်သက်၊ ဉတ္တိယာဝေ-အမ၏သာလျှင်၊ နိမိတ္တံ-သည်၊ ပါရာဇိကဝတ္ထု- သည်၊ န- မဟုတ်သေး၊ မနုဿိတ္ထိယာ ဝေစ-လူမ၏သာလျှင်လည်း၊(နိမိတ္တံ ပါရာဇိကဝတ္ထု) န- သေး၊ စ-ဆက်၊ သုဝဏ္ဏရဇတာဒိမယာနံ - ရွှေငွေ အစရှိသည်တို့ဖြင့် ပြုလုပ်အပ်ကုန်သော၊ ဉတ္ထိနမ္ပိ-အမတို့၏လည်း၊ နိမိတ္တံ , ဝတ္ထုမေဝ - ပါရာဇိကဝတ္ထုသည်ပင်၊ န ဟောတိ-မဟုတ်၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ယံယံ-အကြင်အကြင်နိမိတ်သည်၊ ဝတ္ထု-ပါရာဇိကဝတ္ထုသည်၊ ဟောတိ–၏၊ တံတံ-ကို၊ ဒဿေတုံ-၄ါ၊ တိဿော ဉတ္တိယောတိ အာဒိနာ - သော၊ နယေန - ဖြင့်၊ ယေသံ - အကြင် သတ္တာတို့၏၊ နိမိတ္တာနိ-တို့သည်၊ ဝတ္ထုနိ-ပါရာဇိကဝတ္ထုတို့သည်၊ ဟောန္တိ–န်၏၊ တေသတ္တေ–တို့ကို၊ ဝတွာ -၍၊ မနုဿိတ္ထိယာ တယော မဂ္ဂေတိအာဒိနာ - သော၊ နယေန - ဖြင့်၊ တာနိဝတ္ထုနိ- ထို ပါရာဇိကဝတ္ထုတို့ကို၊ အာဟ- မူပြီ၊

တတ္ထ — ထို မနုဿိတ္ထိယာ တယော မဂ္ဂေ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ တိဿော–၃ ယောက်ကုန်သော၊ ဉတ္ထိယော–အမတို့ရင်း၊ တယော-န်သော၊ ပဏ္ဍကာ- ပဏ္ဍုက်တို့ရင်း၊ တယော- န်သော၊ ပုရိသာ- အထီးတို့ရင်း၊ ဉတိ-သို့၊ ပါရာဇိကဝတ္ထုနံ-ဖြစ်ကုန်သော၊ နိမိတ္တာနံ-တို့၏၊ နိဿယာ-မှီရာဖြစ်ကုန်သော၊ ဒွါဒသ-နသော၊ သတ္တာ-တို့သည်၊ ဟောန္တိ- န်၏၊ တေသု-ထို သတ္တာတို့တွင်၊ ဉတ္ထိပုရိသာ- အမ အထီးတို့သည်၊ ပါကဋာဝေ- ထင်ရှားကုန်သည်သာ၊ ပဏ္ဍကေ ဥဘတောဗျဥ္ဇနကဘေဒေါ- ပဏ္ဍုက်အထူးအပြား, ဥဘတောဗျည်းအထူးအပြားသည်၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာခန္ဓက ဝဏ္ဏနာယံ-ပဗ္ဗဇ္ဇာခန္ဓကအဖွင့်၌၊ [ဝိနည်းမဟာဝါ,ပဗ္ဗဇ္ဇာခန္ဓကအဖွင့်၌၊] ပါကဋော-ထင်ရှားသည်၊ ဘဝိဿတိ-တံ့၊ စ-ဆက်၊ မနုဿိတ္ထိယာ ၊ပေ၊ ပဝိသေဝ န္တဿာတိဧတ္ထ - ၌၊ မနုဿိတ္ထိယာ- ၏၊ တီသုမဂ္ဂေသု - တို့၌၊ ဉတိအတ္ထော - ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ [တယောမဂ္ဂေ၌

န ကေဝလံ၊ပေ၊မနုဿိတ္ထိယာဝေ။ ။"န ကေဝလံ ဉတ္တိယာဝေ နိမိတ္တံ ပါရာဇိကဝတ္ထု" ပါဌ်ဖြင့် "ဥဘတောဗျည်း , ပဏ္ဍုက်, ပုရိသတို့၏နိမိတ်လည်း ပါရာဇိကဝတ္ထုဖြစ်၏"ဟု ပြ၏၊ နစ မနုဿိတ္ထိယာဝေပါဌ်ဖြင့်"အမနုဿိတ္ထိ, တိရစ္ဆာနဂတိတ္ထိ, အမနုဿဥဘတောဗျဉ္ဇနကတို့၏ နိမိတ်လည်း ပါရာဇိကဝတ္ထုဖြစ်၏ "ဟု ပြ၏။

ဝတ္ထုမေဝ န ဟောတိ ။ ။ ရွှေမိန်းမရုပ် ငွေမိန်းမရုပ်တို့၏ နိမိတ်အရုပ်လည်း "နိမိတ္တ"ဟု အမည်ရသောကြောင့် ပါရာဇိကဝတ္ထုလားဟု ယုံမှားဘွယ်ရှိရကား"ဝတ္ထုမေဝ န ဟောတိ"ဟု ဧဝနှင့်တကွ မိန့်သည်၊ ထို မိန်းမရုပ်တို့၏ နိမိတ်ကား"ပါရာဇိကဝတ္ထုလေလား"ဟု လျှဉ်းပါးဘွယ်မရှိ–ဟူလို။

ဒုတိယာဝိဘတ်ကို ဘုမ္မတ္တ၌သက်ပါ- ဟူလို၊] သဗ္ဗတ္ထ- အလုံးစုံသော ဒွေမဂ္ဂေ ပုဒ်တို့၌၊ ဧဝံ-ဤအတူတည်း။

စ–ဆက်၊ သဗ္ဗေဝေ–န်သော၊ တေ(မဂ္ဂါ)–ဤမဂ်တို့သည်၊ [ သမတ္တိံသ မဂ္ဂါ ဟောန္တိ၌ သာမညကတ္တားစပ်၊ ] မနသိတ္တိယာ – ၏၊ တယော မဂ္ဂါ– ၃ မဂ်တို့ရင်း၊ အမနုသိတ္တိယာ– လူနှင့်တူသော ဘီလူးမ, နတ်မ၏၊ တယော မဂ္ဂါ–တို့ရင်း၊ တိရစ္ဆာနဂတိတ္တိယာ– ၏၊ တယော မဂ္ဂါ– တို့ရင်း၊ ဣတိ–သို့၊ နဝ– ၉ မဂ်တို့ရင်း၊ မနုဿ ဥဘတောဗျဥ္ဇနကာဒီနံ – လူဥဘတောဗျည်း အစ ရှိသူတို့၏၊ နဝ - တို့ရင်း၊ မနုဿပဏ္ဍကာဒီနံ - တို့၏၊ ဒွေဒွေ - တို့ကို၊ ကတွာ- ၍၊ ဆ-တို့ရင်း၊ မနုဿပုရိသာဒီနံ–တို့၏၊ တထာ – ထို့အတူ ၆ မဂ် တို့ရင်း၊ ဣတိ-သို့၊ သမတ္တိံသ-အမျှသုံးဆယ်သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ နိမိတ္တသဒ္ဒါတေသု- နိမိတ် ဟု ဆိုအပ်ကုန်သော၊ တေသု-ဤမဂ်တို့တွင်၊ ယတ္ထကတ္ထစိ - အမှတ် မထား တပါးပါးသော မဂ်၌၊ အတ္တနော - ၏၊ အင်္ဂဇာတံ – ကို၊ တိလဖလ မတ္တမ္ပိ – နှမ်းတစေ့ခန့်ကိုလည်း၊ ပဝေသေတွာ – သွင်း၍၊ မေထုနံ ဓမ္မံ– ကို၊ ပဋိသေဝန္တော–မှီဝဲသော ရဟန်းသည်၊ပါရာဇိကံ–သို့၊ အာပဇ္ဇတိ-ရောက်၏။

ပန–ဆက်၊ အာပဇ္ဇန္တော- သော်၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ သေဝနစိတ္တေနေဝ– မှီဝဲကြောင်း စိတ်ဖြင့်သာလျှင်၊ (မှီဝဲလိုသော စိတ်ဖြင့်သာလျှင်)၊ အာပဇ္ဇတိ- ၏၊ တေန-ထိုမှီဝဲကြောင်း စိတ်နှင့်၊ ဝိနာ-ကင်း၍၊ န (အာပဇ္ဇတိ)–မရောက်၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ တံလက္ခဏံ – ထို အမှတ်အသားကို၊ ဒဿေန္တော–သော၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဘိက္ခုဿ သေဝနစိတ္တံ ဥပဋ္ဌိတေတိ အာဒိံ – ကို၊ အာဟ– ပြီ၊ တတ္ထ - ထို ဘိက္ခုဿ သေဝနစိတ္တံ ဥပဋ္ဌိတေ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ ဘိက္ခုဿာတိ–ကား၊ မေထုန သေဝနကဿ–မေထုန်မှီဝဲသော၊ ဘိက္ခုဿ- ၏၊ သေဝနစိတ္တံ ဥပဋ္ဌိတေတိ (တ္တေ)–ဤပါဠိ၌၊ ( သေဝနစိတ္တန္တိ – ဟူသော သဒ္ဒါသည်၊) ဘုမ္မတ္ထေ- သတ္တမီဝိဘတ် အနက်၌၊ ပစ္စတ္တဝစနံ–ပဌမာ ဝိဘတ် ရှိသော သဒ္ဒါတည်း၊ သေဝနစိတ္တေ – မှီဝဲကြောင်း စိတ်သည်၊ ပစ္စုပဋ္ဌိတေ- ရှေးရှုတည်လသော်၊ ဣတိ အတ္ထော-နက်၊[အနက်တူ ပုဒ်တို့သည် ဝိဘတ်တူမြဲ ဖြစ်၏၊ သေဝနစိတ္တံ၌ကား ပဌမာဝိဘတ် ဖြစ်နေ၍ ဝိဘတ်မတူသောကြောင့် "ဘုမ္မတ္ထေ ပစ္စတ္တဝစနံ"ဟု မိန့်သည်။]

ဝစ္စမဂ္ဂံ အင်္ဂဇာတံ ပဝေသေန္တဿာတိ – ကား၊ ယေနမဂ္ဂေန – အကြင် လမ်းပေါက်ဖြင့်၊ ဝစ္စံ – ကျင်ကြီးသည်၊ နိက္ခမတိ – ထွက်၏၊ တံ မဂ္ဂံ - ထို လမ်းပေါက်သို့၊ အတ္တနော–၏၊ အင်္ဂဇာတံ- သော၊ ပုရိသနိမိတ္တံ – ကို၊ တိလ ဖလမတ္တမ္ပိ – ခန့်လည်း၊ ပဝေသေန္တဿ – သွင်းသော ရဟန်း၏၊ အာပတ္တိ

ပါရာ ဇိကဿာတိ– ကား၊ ပါရာဇိကာ – ကာမည်သော၊ အာပတ္တိ - သည်၊ အဿ-ဖြစ်၏၊ ဟောတိ–၏၊ ဣတိ အတ္ထော– နက်၊ အထဝါ-ထို့ပြင် တနည်းကား၊ အာပတ္တိတိ – ကား၊ အာပဇ္ဇနံ - ရောက်ခြင်းသည်၊ ဟောတိ – ၏၊ ("အာပဇ္ဇနံ အာပတ္တိ"ဟုပြုပါ–ဟူလို၊)ပါရာဇိကဿာတိ–ကား၊ ပါရာဇိက ဓမ္မဿ–ပါရာဇိက အာပတ်သို့၊(အာပတ္တိ–ရောက်ခြင်းသည်၊ ဟောတိ– ၏၊) သမ္ဗတ္တ - အလုံးစုံသော ပုဒ်တို့၌၊ သေနယော - ၅ နည်းတည်း၊ [ အာပတ္တိ သံယာဒိသေသဿ အစရှိသော ပုဒ်တို့၌လည်း ၂ နည်းပေးပါ-ဟူလို၊]

ဧဝံ-သို့၊ သေဝနစိတ္တေနေဝ - ဖြင့်သာလျှင်၊ ပဝေသေန္တဿ-သွင်းသော ရဟန်း၏၊ အာပတ္တိ-ကို၊ ဒဿေတွာ-ပြီး၍၊ ဣဒါနိ-၌၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ တံ ပဝေသနံနာမ- ထိုသွင်းခြင်းမည်သည်၊ ကေဝလံ- သက်သက်၊ အတ္တုပက္ကမေနေဝ - မိမိလုလ္လဖြင့်သာလျှင်၊ နဟောတိ - ဖြစ်သည် မဟုတ်သေး၊ ပရူပက္ကမေနာပိ-သူတပါး လုလ္လဖြင့်လည်း၊ ဟောတိ-ဖြစ်သေး၏၊ စ-ဆက်၊ တတြာပိ- ထိုသူတပါးလုလ္လဖြင့်ဖြစ်ရာ၌လည်း၊ သာဒယန္တဿေဝ-သာယာသည်သာလျှင်ဖြစ်သော၊ ပဋိသေဝနစိတ္တသမင်္ဂိဿ ( ဧဝ ) – မှီဝဲကြောင်းစိတ်နှင့် ပြည့်စုံသောရဟန်း၏သာလျှင်၊ [သာဒယန္တဿကိုပင် "ပဋိသေဝနစိတ္တသမင်္ဂိဿ" ဟု ထပ်ဖွင့်၊] အာပတ္တိ- သည်၊ (ဟောတိ-၏၊) ဣတရဿ- အခြားရဟန်း၏၊ [မသာယာသော ရဟန်း၏-ဟူလို၊] (အာပတ္တိ–သည်၊ နဟောတိ–ဖြစ်သည် မဟုတ်၊)တသ္မာ - ကြောင့်၊ သဒ္ဓါပဗ္ဗဇိတာ – သဒ္ဓါဖြင့် ရဟန်းပြုခဲ့ကုန်သော၊ ယေကုလပုတ္တာ – အကြင်အမျိုးကောင်းသား တို့သည်၊ သမ္မာပဋိပန္နကာ – ကောင်းစွာ ကျင့်ကြကုန်သည်၊ (ဟုတ္တွာ)၊ ပရူပက္ကမေန - ဖြင့်၊ ပဝေသနေ - သွင်းခြင်းသည်၊ သတိပိ - ရှိပါသော်လည်း၊ နသာဒယန္တိ - မသာယာကုန်၊ တေသံ-ထိုအမျိုးကောင်းသားတို့ကို၊ ရက္ခဏတ္ထံ – ငှါ၊ ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ မနုဿိတ္ထိန္တိအာဒိ-ကို၊ အာဟ-ပြီ၊ တတ္ထ-ထိုဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ မနုဿိတ္ထိ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ ပဋိပက္ခံ–ဆန့်ကျင်ဘက်ကို၊[သီလပျက်ခြင်းကို–ဟူလို၊] (တနည်း) ပဋိပက္ခံ - ဆန့်ကျင်ဘက်ရန်သူအပေါင်းကို၊ အတ္ထယန္တိ ဣစ္ဆန္တိ - အလိုရှိကုန်၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ပစ္စတ္ထိကာ–ကတို့မည်၏၊ ဘိက္ခူဧဝ-ရဟန်းတို့သည်ပင်၊ ပစ္စတ္ထိကာ - ဆန့်ကျင်ဘက်ကိုအလိုရှိသော ရန်သူတို့တည်း၊ ဘိက္ခု

ဟောတီတိ အတ္ထော။ ။ပါရာဇိကဿကို "ပါရာဇိကာ+အဿ"ဟု ပုဒ်ဖြတ်၍ အဿကို "ဟောတိ" ဟု ဖွင့်သည်၊ ထိုသို့ ဖွင့်သဖြင့် အဿဓာတ်နောင် တိဝိဘတ်ကို ဓာတွန်နှင့်တကွ သုတ်ကြီးဖြင့် "ဿ"ပြု ဟု ကြံသင့်၏၊ ရူပသိဒ္ဓိ၌ကား ယျနှင့်တကွ ဓာတွန် (သ်) ကို ဿပြုသည်၊

ပစ္စတ္ထိကာ - ဆန့်ကျင်ဘက်ကို အလိုရှိသောရန်သူရဟန်းတို့၊ ဧတံ - ဤဘိက္ခု ပစ္စတ္ထိကာဟူသော အမည်သည်၊ ဝိသဘာဂါနံ - သဘောမတူကုန်သော၊ ဝေရိဘိက္ခူနံ-ရန်သူရဟန်းတို့၏၊ အဓိဝစနံ-အမည်တည်း။

မနုဿိတ္ထိံ ဘိက္ခုသံ သန္တိကေ အာနေတွာတိ-ကား၊ ဓုဿာပကတာ-ဓုဿာသည် ပင်ကိုယ်သဘောမှ ကင်းအောင်ပြုအပ်ကုန်သည်၊ ဝါ- ဓုဿာသည် လွှမ်းမိုး နှိပ်စက်အပ်ကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ တံ ဘိက္ခုံ – ကို၊ နာသေတုကာမာ-ဖျက်ဆီးလိုကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ အာမိသေန-ဆွမ်း စသော အာမိသဖြင့်၊ ဥပလာပေတွာ ဝါ-ဖြားယောင်း၍သော်ငြား၊ မိတ္တသန္ထဝဝသေန ဝါ-မိတ်ဆွေဖွဲ့ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်သော်ငြား၊ အမှာကံ-တို့၏၊ ဓုဝံ ကိစ္စံ-ကို၊ ကရောဟိ-ပြုပေးပါလော၊ ဣတိ - သို့၊ ဝတွာ—၍၊ ကိဉ္စိ- တစုံတယောက်သော၊ မနုဿိတ္ထိံ - ကို၊ ရတ္တိဘာဂေ – ညဉ့်အဘို့၌၊ တဿ ဘိက္ခုဿ - ၏၊ ဝသနောကာသံ-နေရာအရပ်သို့၊ အာနေတွာ – ဆောင်၍၊ ဝစ္စမဂ္ဂေန အင်္ဂဇာတံ အဘိနိသီဒေန္တိတိ - ကား၊ တံ ဘိက္ခုံ - ကို၊ ဟတ္ထ ပါဒ သီသာဒီသု – လက်, ခြေ, ဦးခေါင်း အစရှိသည်တို့၌၊ သုဂ္ဂဟိတံ-ကောင်းစွာကိုင်အပ်သည် မည်လောက်အောင်၊ နိပ္ပရိပ္ဖန္ဒံ-လှုပ်ရှားခြင်းမရှိအောင်၊ (မလှုပ်နိုင်အောင်၊) ဂဟေတွာ-

**ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ ။** ။ "ပတိ + အတ္ထိကာ" ဟုခွဲ၊ အတ္ထမှတ်သည်၊ ယာစ– တောင်းရမ်းခြင်း အနက်ကိုဟော၏၊ တောင်းရမ်းဟူသည် အလိုရှိခြင်းတည်း၊ "ပတိ" ကား အဘိမုခ်လာ အနက်တို့တွင် ဝါမာဒါန – ဆန့်ကျင်ဘက်ကို ယူခြင်း အနက်ကို ဟော၏၊ "ဆန့်ကျင်ဘက်" ဟူရာ၌ "သီလဖျက်ခြင်းဟူသော ဆန့်ကျင်ဘက်, မိမိ ဖျက်ဆီးလိုသောရဟန်း၏ဆန့်ကျင်ဘက် (မိမိကို ကူညီမည့်အဖော်)"ဟု ၂ မျိုးဖွင့်၏၊ ထို ၂ မျိုးလုံး အလိုရှိသောရဟန်းကို"ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိက"ဟု ခေါ်သည်၊ အတ္ထိကာ၌ အတ္ထ မှတ်, ဏ္ဍုကို အကပြု၍ အကို ဣပြုဟု ကြံ၊ ရာဇ စောရစသည်ဖြင့် ပစ္စတ္ထိကများစွာရှိ၍ "ဘိက္ခု"ဟု ဝိသေသနပြုသောကြောင့် "ဘိက္ခူဧဝ + ပစ္စတ္ထိကာ"ဟု ကမ္မဓာရဲ ပြုရသည်၊ "ဘိက္ခုသ +ပစ္စတ္ထိကာ"ဟု ပြုလျှင်ကား ရာဇစသည်တို့လည်း ရဟန်း၏ရန်သူ ဖြစ်သောကြောင့် ထိုသူတို့ပါ ယူရမည်ဖြစ်၍ ထိုသို့ ဆဋ္ဌီတပ္ပုရိသ်မပြုရ၊ [ပဋိပက္ခံ အတ္ထယန္တီတိ သိက္ခာကာမာနံ ဘိက္ခူနံ ပဋိပက္ခံ (ဒုဿီလဘာဝံ) အတ္ထယန္တီတိ ဂဏ္ဌိပဒေသု ဝုတ္တံ၊ အတ္ထနော ဝေရိပုဂ္ဂလဿ ပန ပဋိပက္ခဘူတံ ကဉ္စိ အမိတ္တံ (အတ္တနော သဟာယဘာဝံ မုပဂစ္ဆန္တံ) အတ္ထယန္တိ ဂဝေသန္တီတိ ဧဝမေတ္ထ အတ္ထော ဒဋ္ဌဗ္ဗော။–သာရတ္ထ။]

**ဓုဿာပကတာ။** ။"ဓုဿာယ-သည် + အပ-ပင်ကိုယ်သဘောမှကင်းအောင်+ ကတာ – ပြုအပ်သူတို့"ဟု သဒ္ဒတ္ထဖြစ်၏၊ အပကတာကို "အဘိဘူတာ" ဟု ဖွင့်ခြင်း ကား အဓိပ္ပါယတ္ထတည်း၊ သူတပါးတို့၏ လာဘသက္ကာရ ပေါများသည်ကို သည်းမခံ နိုင်လောက်အောင် ဓုဿာ၏ အလွှမ်းမိုးခံနေရသူတို့–ဟူလို။

ကိုင်၍၊ ဉတ္တိယာ-၏၊ ဝစ္စမဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ တဿဘိက္ခုနော-၏၊ အင်္ဂဇာတံ-ကို၊ အဘိနိသီဒေန္တိ – ဖိ၍ ထိုင်စေကြကုန်၏၊ သမ္ပယောဇေန္တိ -တကွ ယှဉ်စေကြကုန်၏၊ ဉတိအတ္တော - နက်၊ [ဝစ္စမဂ္ဂေန သမ္ပယောဇေန္တိ။] ယောစေတိ အာဒိသု – ယောစေ အစရှိသော ပါဠိရပ်တို့၌၊ ယောဘိက္ခု - သည်၊ ဝစ္စမဂ္ဂ ဗ္ဘန္တရံ - ငစ္စမဂ်အတွင်းသို့၊ အတ္တနော– ၏၊ အင်္ဂဇာတဿ- ကို၊ ပဝေသနံ- သွင်းခြင်းကို၊ စေ သာဒိယတိ – အကယ်၍ သာယာအံ့၊ စေ အဓိဝါသေတိ- အကယ်၍ သည်းခံနေအံ့၊ တသ္မိံ ခဏေ – ထို သွင်းဆဲခဏ၌၊ သေဝနစိတ္တံ– မှီဝဲကြောင်းစိတ်ကို၊ စေ ဥပဋ္ဌာပေတိ – အကယ်၍ ဖြစ်စေအံ့၊ ပဝိဋ္ဌ– သွင်းပြီး ခြင်းကို၊ စေ သာဒိယတိ-အံ့၊ စေ အဓိဝါသေတိ-အံ့၊ ပဝိဋ္ဌကာလေ-သွင်းပြီးရာ အခါ၌၊ သေဝနစိတ္တံ- ကို၊ စေ ဥပဋ္ဌာပေတိ- အံ့၊ ဌိတံ- တန့်ရပ်ခြင်းကို၊ပေ၊ ဌာနပ္ပတ္တကာလေ – တန့်ရပ်ခြင်းသို့ ရောက်ရာအခါ၌၊ သုက္ကဝိသဋ္ဌိသမယေ- သုက်လွှတ်ရာအခါ၌၊ပေ၊ဥဒ္ဓရဏံ- နှုတ်ခြင်းကို၊ပေ၊နီဟရဏကာလေ-နှုတ်ရာ အခါ၌၊ပေ၊ ဇဝံ - သို့၊ စတူသု ဌာနေသု – လေးဌာနတို့၌၊ သာဒိယန္တော- သာယာသောရဟန်းသည်၊ မမ–၏၊ ဝေရိ သမဏောဟိ-ရန်သူရဟန်းတို့သည်၊ ဂဟိတံ–၍အမှုကို၊ ကတံ-ပြုအပ်ပြီ၊ ဉတိ– သို့၊ ဝတ္တုံ-ပြောဆိုခြင်းငှါ၊ န လဗ္ဘတိ–မရ၊ ပါရာဇိကာပတ္တိမေဝ–ဇိကအာပတ်သို့သာ၊ အာပဇ္ဇတိ-၏။

စ–ဆက်၊ ဣမာနိ စတ္တာရိ–၍ ၄ ဌာနတို့ကို၊ သာဒိယန္တော–သာယာ သောရဟန်းသည်၊ အာပဇ္ဇတိ ယထာ–အာပတ်သို့ ရောက်သကဲ့သို့၊ ဇဝံ–တူ၊ ပုန်မံ-ရှေ့ဖြစ်သော၊ ဇကံ–တစ်ဌာနကို၊ အသာဒိယိတွာ-၍၊ တီဏိ-၃ ဌာန တို့ကို၊ သာဒိယန္တောပိ – သာယာသော ရဟန်းသည်ရင်း၊ ဒွေ – ၂ ဌာန တို့ကို၊ သာဒိယန္တောပိ-ရင်း၊ တီဏိ - ၃ ဌာနာတို့ကို၊ အသာဒိယိတွာ - ၍၊ ဇကံ–ကို၊ သာဒိယန္တောပိ-ရင်း၊ အာပဇ္ဇတိယေဝ–အပတ်သို့ရောက်သည်သာ၊ ပန- ကား၊ သဗ္ဗသော -အားဖြင့်၊ အသာဒိယန္တော- သော၊ အာသီဝိသမုခံ- လျင်မြန်သော အဆိပ်ရှိသောမြွေ၏ ခံတွင်းသို့၊ ပဝိဋ္ဌဝိယ- သွင်းအပ်သကဲ့သို့ ရင်း၊ အင်္ဂါရကာသုံ–မီးကျီးတွင်း မီးကျီးစုသို့၊ ပဝိဋ္ဌံဝိယစ-ရင်း၊ ( တထာ– တူ၊ ) ပဝိဋ္ဌ - သွင်းအပ်သော၊ အင်္ဂဇာတံ - ကို၊ မညမာနော–မှတ်ထင်သော

**ပဝေသနစသည်။** ။ပပုဗ္ဗဝိသ, ကာရိတ်ဏော, ယုပစ္စည်းဖြင့် “ပဝေသန–ဝင်စေ ခြင်း”သဒ္ဒတ္ထ“သွင်းခြင်း”ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖြစ်၏၊ အဖျားမှအရင်းထိအောင် သွင်းခြင်း ကို “ပဝေသန” ဟုရင်း, ထိုသို့သွင်း၍ အစွမ်းကုန်ဝင်ခြင်းကို “ပဝိဋ္ဌ”ဟုရင်း [ပဝိဋ္ဌ၌ တပစ္စည်းသည် အတိတ်ဟော။ ] ထိုသို့သွင်းပြီး၍ မနှုတ်သေးဘဲ တန့်ရပ်ခြင်းကို“ဌိတ” ဟုရင်း, အဖျားထိအောင် နှုတ်ခြင်းကို “ဥဒ္ဓရဏ”ဟုရင်း ခွဲခြားပါ။

ရဟန်းသည်၊ နာပဇ္ဇတိ-အာပတ်သို့မရောက်၊ တေန-ကြောင့်၊ ပဝေသနံ နသာဒယတိ ၊ပေ၊ ဥဒ္ဓရဏံ နသာဒယတိ အနာပတ္တိတိ-ဟူ၍၊ (ဘဂဝတာ-သည်၊) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ဟိ-မှန်၊ ဝေရှပ်-သော၊ အာရဒ္ဓဝိပဿက်-အားထုတ်အပ်သောဝိပဿနာရှိသော၊ ကာယေစ-၌၎င်း၊ ဇီဝိတေစ-၎င်း၊ အနပေက္ခံ-ငဲ့ကွက်ခြင်းလည်းမရှိသော၊(ဣမံပုဂ္ဂလံ၌စပ်၊) သဗ္ဗာယတနာနိ-စက္ခုစသော အလုံးစုံသော အာယတနတို့ကို၊ ကေဒသဟိ - နိသော၊ အဂ္ဂိဟိ - ရာဂအစ ရှိသောမီးတို့သည်၊ သမ္ပဇ္ဇလိတာနိစ-ထက်ဝန်းကျင်တောက်လောင်အပ်သည်တို့ကိုရင်း၊ [ ပဿန္တံ၌စပ်၊ ဥပဋ္ဌဟန္တံ ပါသည်ကား မကောင်း၊ ] ပဉ္စကာမဂုဏေ - တို့ကို၊ ဥက္ခိတ္တာသိကေ - မြှောက်အပ်သော သန်လျက်ရှိကုန်သော၊ ဝဓကေဝိယ-သူသတ်သွားတို့ကိုကဲ့သို့ရင်း၊ ပဿန္တံ-ရှုတတ်သော၊ ဣမံ ပုဂ္ဂလံ-ကို၊ ရက္ခန္တော- လိုသော၊ ဘဂဝါ-သည်၊ အဿ-ထိုရဟန်း၏၊ ပစ္စတ္ထိကာနံ-ရန်သူရဟန်းတို့၏၊ မနောရထ ဝိဃာတံစ-စိတ်အလို၏ ပျက်စီးခြင်းကိုလည်း၊ ဝါ - စိတ်တိုင်းကျ မဖြစ်ခြင်းကိုလည်း၊ ကရောန္တော - ပြုတော်မူ လိုသည်၊ (ဟုတ္စာ)၊ ပဝေသနံ န သာဒယတိတိအာဒိကံ — သော၊ ဣမံ စတုက္ကံ— ၌ စတုက္ကကို၊ နိဟရိတွာ - ထုတ်ဆောင်တော်မူ၍၊ ထပေသိ၊ ထားတော်မူပြီ၊ ဣတိ—အပြီးတည်း။[ပဌမ စတုက္က ကထာ—သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။]

ဧဝံ-သို့၊ ပဌမစတုက္ကံ-ကို၊ ဒဿေတွာ-ပြီး၍၊ ဣဒါနိ-၌၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ - ဆန့်ကျင်ဘက်ကို အလိုရှိသော ရန်သူ ရဟန်းတို့သည်၊ ဣတ္ထိံ-ကို၊ အာနေတွာ-၍၊ ကေဝလံ-သက်သက်၊ ဝစ္စမဂ္ဂေနေဝ-ဖြင့်သာလျှင်၊ န အဘိနိသီဒေန္တိ-ဖိ၍ ထိုင်စေကုန်သည်မဟုတ်သေး၊ အထခေါ-စင်စစ်ကား၊ ပဿာဝမဂ္ဂေနပိ—ဖြင့်ရင်း၊ မုခေနပိ- ၎င်း၊ (အဘိနိသီဒေန္တိ—နိသေး၏၊) စ-ဆက်၊ ဣတ္ထိံ—ကို၊ အာနေန္တာပိ-ဆောင်ကုန်ပြန်သော်လည်း၊ [ အာနေတွာပိ-ရှိသည်ကား မကောင်း၊ ]ကေစိ—အချို့ ရဟန်းတို့သည်၊ ဇာဂရန္တိံ-နိုးနေသော မိန်းမကို၊ အာနေန္တိ - နိ၏၊ ကေစိ - တို့သည်၊ သုတ္တံ - အိပ်ပျော်နေသော မိန်းမကို၊ ( အာနေန္တိ-နိ၏၊ ) ကေစိ-တို့သည်၊ မတ္တံ-ယစ်မူးသော မိန်းမကို၊ [ သေရည် အစရှိသည်တို့ဖြင့် ယစ်မူးသော မိန်းမကို၊ ] အာနေန္တိ၊

**မီးတဆဲ့တစ်။** ။ရာဂ, ဒေါသ, မောဟ, ဇာတိ, ဇရာ, မရဏ, သောက, ပရိဒေဝ, ဒုက္ခ, ဒေါမနဿ, ဥပါယာသ၊ ဤ ၁၁ ပါးကို မိမိကိန်းရာ သတ္တဝါကို လောင်တတ်, လွန်စွာ ပူစေတတ်, အငြိမ်းလည်း ခက်သောကြောင့် "မီး"ဟု ခေါ်သည်။ [" ရာဂါ ဒယော ဟိ အနုဒဟနဋ္ဌေန အဂ္ဂိတိ ဝုစ္စန္တိ၊ တေ(ဟိ)ယဿ သန္တိ၊ တံ နိဉှဟန္တိ, မဟာ ပရိဠာဟာစ ဟောန္တိ ဒုန္နိဗ္ဗာပယာစ။]

ကေစိ-တို့သည်၊ ဥမ္မတ္တံ-ရူးသွပ်သော မိန်းမကို၊ အာနေန္တိ၊ ကေစိ- တို့သည်၊ ပမတ္တံ-မေ့လျော့သော မိန်းမကို၊ အာနေန္တိ၊ အညဝိဟိတံ-အခြားအာရုံ၌ ထားအပ်သော စိတ်ရှိသော၊ ဝိက္ခိတ္တစိတ္တံ-ပြန့်လွင့်သော စိတ်ရှိသောမိန်းမကို၊ (အာနေန္တိ၊) ဣတိအတ္ထော-နက်၊

ကေစိ-တို့သည်၊ မတံ-သေပြီးသော၊ အက္ခယိတံ-မခဲစားအပ်သေးသော နိမိတ် ရှိသော မိန်းမကို၊ အာနေန္တိ၊ သောဏသိင်္ဂါလာဒီဟိ- အိမ်ခွေး , တောခွေး အစရှိသည်တို့သည်၊ အက္ခယိတနိမိတ္တံ – မခဲစားအပ်သောနိမိတ် ရှိသောမိန်းမကို၊ (အာနေန္တိ၊)ဣတိအတ္ထော၊ ကေစိ-တို့သည်၊ ယေဘုယျေန-များသောအားဖြင့်၊ အက္ခယိတံ - မခဲစားအပ်သော နိမိတ်ရှိသောမိန်းမကို၊ အာနေန္တိ၊ ယဿာ -အကြင်အသေကောင်မ၏၊ နိမိတ္တေ – နိမိတ်ဖြစ်သော၊ ဝစ္စမဂ္ဂေ - ၌သော်၎င်း၊ ပဿာဝမဂ္ဂေ - ၌သော်၎င်း၊ မုခေ ါ– ၌သော်၎င်း၊ ဗဟုတရော-များစွာသော၊ ဩကာသော-အရပ်သည်၊ ဝါ-ကို၊ အက္ခယိတော-ခွေး မြေခွေးစသည်တို့ မခဲစားအပ်သည်၊ ဟောတိ၊(သာ-ထိုအသေကောင်မ သည်၊ ) ယေဘုယျေန အက္ခယိတာနာမ - ယိတာမည်၏၊ ကေစိ - တို့သည်၊ မတံ–သော၊ ယေဘုယျေန-ဖြင့်၊ ခယိတံ - ခဲစားအပ်ပြီးသော နိမိတ်ရှိသော မိန်းမကို၊ အာနေန္တိ၊ ယဿာ–၏၊ ဝစ္စမဂ္ဂါဒိကေ - အစရှိသော၊ နိမိတ္တေ–၌၊ ဗဟု– များစွာသော အရပ်သည်၊ ခယိတံ - ခဲစားအပ်သည်၊ ဟောတိ၊ အပ္ပ-

အညဝိဟိတံ။ ။ပမတ္တံကို အညဝိဟိတံ ဟု ဖွင့်၊ ထို အညဝိဟိတံကို“ဝိက္ခိတ္တစိတ္တံ” ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထ ဖွင့်သည်၊ အညသ္မိံ – အခြားအာရုံ၌ + ဝိဟိတံ – ထားအပ်သော စိတ်သည်၊ ယဿ အတ္တီတိ အညဝိဟိတော။

အက္ခယိတံ။ ။စာအုပ်များ၌ “ခယိတ–ခါယိတ”ဟု ပါဌ် ၂ မျိုးတွေ့ရ၏၊ ခယ ဓာတ် ဟုမရှိ၊ ခိ (သက္ကတ၌ “က္ဘိ”) ဓာတ်သည် ဟိံသာအနက်ကို ဟော၏၊ ထိုသို့ သက္ကတ၌၂ လုံးဆင့်ဓာတ်ဖြစ်၍ ဒွေဘော်လာရသည် ဟု ကြံလျှင်“ခိ”ဓာတ်ဖြစ်သင့်၏၊ ခိဓာတ်ဖြစ်လျှင်“န+ခယိတံ အက္ခယိတံ”ဟုသာ ပါဌ်ရှိသင့်၏၊ နောက်၌“ခါဒိတံ”ဟု ဋီကာတို့ဖွင့်သောကြောင့် ခါဒဓာတ်မှ ဒကိုယပြုသည်ဟု ကြံလျှင် “ခါယိတံ”ဟု ရှိသင့် မည်ကဲ့သို့ထင်၏၊ သို့သော် “ အက္ခာ ” ဟု ဒွေဘော်ရောက်ဘို့ အကြောင်း ရှာရလိမ့် ဦးမည်၊ အသုဘခဏ်း“ဝိက္ခယိတကံ–ဝိက္ခာယိတကံ”၌လည်း ဤသို့ပင် စိစစ်ရာ၏။

အက္ခယိတနိမိတ္တံ။ ။အက္ခယိတံကို “အက္ခယိတနိမိတ္တံ”ဟု ဖွင့်သဖြင့် “နိမိတ္တံ” ဟူသော နောက်ပုဒ်ကြေသော ဥတ္တရပဒလောပသမာသ် ဟု ပြသည်။ “အက္ခယိတံ+ နိမိတ္တံ ယဿာတိ အက္ခယိတာ”ဟု ပြု။ [အက္ခယိတနိမိတ္တာ အက္ခယိတသဒ္ဒေန ဝုတ္တာ, ဥတ္တရပဒလောပေန။]

အနည်းငယ်သော အရပ်သည်၊ အက္ခယိတံ - မခဲစားအပ်သည်၊ ( ဟောတိ၊ သာ-သည်၊) ယေဘုယျေနခယိတာနာမ-တာမည်၏။

စ - ဆက်၊ ကေဝလံ - အမနုဿိတ္ထိစသည်မဘက် သက်သက်၊ မနုဿိတ္ထိ မေဝ-ကိုသာ၊ အာနေန္တိ - ဆောင်ကုန်သည်ကား၊ န - မဟုတ်သေး၊ အထ ခေါ-ကား၊ အမနုဿိတ္ထိမ္ပိ-လူနှင့်တူသောဘီလူးမ,နတ်မကိုင်း၊ တိရစ္ဆာန ဂတိတ္ထိမ္ပိ-ကိုင်း၊ (အာနေန္တိ - န်သေး၏၊)စ - ဆက်၊ ကေဝလံ - ဥဘတော ဗျည်းစသည်မဘက်သက်သက်၊ ဝုတ္တပ္ပကာရံ-ဆိုအပ်ပြီးသောအပြားရှိသော၊ ဣတ္ထိမေဝ- အမကိုသာ၊ န(အာနေန္တိ)-သေး၊ ဥဘတောဗျဉ္ဇနကမ္ပိ-ကိုင်း၊ ပဏ္ဍကမ္ပိ - ကိုင်း၊ ပုရိသမ္ပိ - အထီးကိုင်း၊ အာနေန္တိ - န်သေး၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ တေသံ- ထိုဇာဂရန္တိစသောပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊(ယောဇနာ၌ တမျိုးခွဲ၏၊) ဝသေန-ဖြင့်၊ အညာနိပိ- န်သော၊ စတုက္ကာနိ- တို့ကို၊ ဒဿေန္တော(ဟုတ္វာ) ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ မနုဿိတ္ထိံ ဇာဂရန္တိံ အာဒိံ အာဟ၊ တတ္ထ - ထို ဘိက္ခု ပစ္စတ္ထိကာစသော စကားရပ်၌၊ ပါဠိယာ-၌၊ အသမ္ဘောဟတ္ထံ- မတွေဝေခြင်း အကျိုးငှါ၊ ဝုတ္တစတုက္ကာနိ - ဟောတော်မူအပ်သော စတုက္ကတို့ကို၊ ဧဝံ- သို့၊ သင်္ချာတော- အရေအတွက်အားဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ- န်၏၊ မနုဿိတ္ထိယာ-၏၊ တိဏ္ဏံ-န်သော၊ မဂ္ဂါနံ-တို့၏၊ ဝသေန-ဖြင့်၊ တီဏိ-န်သော၊ သုဒ္ဓိကစတုက္ကာနိ- သုဒ္ဓိကစတုက္ကတို့ငှင်း၊ [ဇာဂရန္တိံ-စသည်နှင့်မရောသောကြောင့်"သုဒ္ဓိက"ဟု ဆိုသည်၊]တီဏိ-န်သော၊ ဇာဂရန္တိစတုက္ကာနိ - တို့ငှင်း၊ တီဏိ,သုတ္တစတုက္ကာ နိ - တို့ငှင်း ၊ပေ၊ တီဏိ - န်သော၊ ယေဘုယျေန ခယိတစတုက္ကာနိ - တို့ငှင်း၊ ဣတိ-သို့၊ သတ္တဝီသတိ- ၂၇ပါးသော၊ စတုက္ကာနိ-တို့ငှင်း၊ အမနုဿိတ္ထိယာ- ၌၊ တထာ - ထို ၂၇ ပါးသော စတုက္ကတို့ငှင်း၊ တိရစ္ဆာန ဂတိတ္ထိယာ - ၌၊ တထာ-တို့ငှင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဣတ္ထိဝါရေ- ဣတ္ထိဝါရ၌၊ ကောသီတိ- ၈၁ ပါး သော၊ စတုက္ကာနိ - တို့သည်၊ (ဟောန္တိ)၊ စ- ဆက်၊ ဣတ္ထိဝါရေ-၌၊ (ကော သီတိ-သော၊စတုက္ကာနိ-တို့သည်၊ ဟောန္တိ)ယထာ-ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ဥဘတော ဗျဉ္ဇနကဝါရေ(ပိ) -၌လည်း၊ ( ကောသီတိ-သော၊ စတုက္ကာနိ - တို့သည်၊ ဟောန္တိ)၊ပန-ကား၊ ပဏ္ဍကပုရိသဝါရေသု - ပဏ္ဍကဝါရ,ပုရိသဝါရတို့၌၊ ဒွိန္နံဒွိန္နံ-၂ခုစီ, ၂ခုစီကုန်သော၊ မဂ္ဂါနံ - တို့၏၊ ဝသေန - ဖြင့်၊ စတုပဏ္ဏာသ စတုပဏ္ဏာသ-၅၄ပါး, ၅၄ပါးသော၊ (စတုက္ကာနိ-တို့သည်၊)ဟောန္တိ၊ ဧဝံ- လျှင်၊ သဗ္ဗာနိပိ-အလုံးစုံတို့သည်လည်း၊ ဒွေသတာနိ - နှစ်ရာလည်းဖြစ်ကုန် သော၊ သတ္တတိစ- ခုနစ်ဆယ်လည်းဖြစ်သော၊ စတုက္ကာနိ- တို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ တာနိ-ထိုအလုံးစုံသော စတုက္ကတို့သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထာနိယေဝ။

ပန-ဆက်၊ သမ္ဗဝါရေသု–တို့၌၊ ထွေ–၍ ဇာဂရန္တိံ အစရှိသော ဌာနတို့တွင်၊ မတံ၊ပေ၊ခယိတန္တိ တေသွိံ ဌာနေ - ၌၊ အယံ – ဤ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ဝိနိစ္ဆယော– တည်း၊ [ " သမ္ဗဝါရေသုတိပဒံ တေသွိံ ဌာနေတိ ပဒေ အာဓာရော"ဟု ယောဇနာရှိသော်လည်း မကောင်း၊ဝိနိစ္ဆယော၌ သာမညအာဓာရ စပ်သင့်သည်၊တေသွိံ ဌာနေကားဝိသေသအာဓာရ။]ကိရ–ချဲ၊တမ္ဗပဏ္ဏိဒီပေ-သီဟိုဠ်ကျွန်း၌၊ ဒွေ– ၂ ပါးကုန်သော၊ ဝိနယဓရာ– ဝိနည်းမိုရ် ဖြစ်ကုန်သော၊ သမာနာစရိယကာ-တူသော ဓမ္မာစရိယ ရှိကုန်သော၊ [ကောစရိယဿ ပါဠ ကန္တေဝါသိကာ-စာရွတ်ဆိုသော (စာတက်သော) အနီးနေတပည့် ဖြစ်ကုန်သော၊] ထေရာ အပေါသံ၊ ဥပတိဿတ္ထေရော စ-ငှင်း၊ ဖုဿဒေဝတ္ထေရော စ–ငှင်းတည်း၊ တေ–ထို ထေရ်တို့သည်၊ မဟာဘယေ – မြဟ္မဏာတိဿဘေးကြီး ဖြစ်ရာ အခါ၌၊ ဝိနယပိဋကံ - ကို၊ ပရိဟရန္တာ – ဆောင်ရွက်ကုန်လျက်၊ ရက္ခိံသု – စောင့်ရှောက်ကြကုန်ပြီ၊ တေသု – ထို ၂ ပါးတို့တွင်၊ ဥပတိဿတ္ထေရော–သည်၊ ဗျတ္တတရော- သာ၍ ထက်မြက်၏၊ တဿာပိ – ထို ဥပတိဿ ထေရ်၏လည်း၊ပေ၊တေသု -ထို ၂ပါးတို့တွင်၊ မဟာသုမတ္ထေရော၊ နဝက္ခတ္တုံ– ၉ ကြိမ်၊ ဝါ – ၉ ခေါက်၊ ဝိနယပိဋကံ - ကို၊ အသောသိ – နာယူပြီ၊ ဝါ-သင်ယူပြီ၊ မဟာပဒုမတ္ထေရော တေန သဒ္ဓိံ၊ နဝက္ခတ္တုံ–ငှင်း၊ ဝိသုံ–သီးခြား၊ ဧကကော၀-တပါးထည်းသာလျှင်၊ နဝက္ခတ္တုံစ–ငှင်း၊ ဣတိ–သို့၊ပေ၊တေသု-ထို ၂ ပါးတို့တွင်၊ အယမေဝ - ဤ မဟာပဒုမ ထေရ်သည်သာ၊ ဗျတ္တတရော၊ တေသု ထို ၂ ပါးတို့တွင်၊ မဟာသုမတ္ထေရော နဝက္ခတ္တုံ ဝိနယပိဋကံ၊သုတွာ-နာယူပြီး၍၊ အာစရိယံ၊ မုဥ္စိတွာ - လွှတ်၍၊ အပရဂင်္ဂ – ဂင်္ဂါမြစ်၏ တဘက်ကမ်းသို့၊ အဂမာသိ၊ တတော- ထိုသို့သွားခြင်းကြောင့်၊ မဟာပဒုမတ္ထေရော, အာဟ–ပြောပြီ၊ (ကိံ)၊ ယော–အကြင် ဝိနည်းမိုရ်သည်၊ ဓရမာနကံယေဝ–သက်တော်ထင်ရှား ရှိသည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊ အာစရိယံ - ကို၊ မုဥ္စိတွာ–လက်လွှတ်၍၊ အညတ္ထ–အခြားအရပ်၌၊ ဝသိတဗ္ဗံ–နေထိုက်၏ဟူ၍၊ မညတိ–မှတ်ထင်၏၊ သေ (သော) ဝိနယဓရော-သည်၊ သူရောဝတရေ - ဟေ....ရဲပါပေစွ၊[ဝတရေတိ–ဂရဟတ္ထေ နိပါတော၊]အာစရိယေ-သည်၊ ဓရမာနေ-စဉ်၊ ဝိနယပိဋကဥ္စ- ကိုငှင်း၊ အဋ္ဌကထာစ - တို့ကိုငှင်း၊ အနေကက္ခတ္တုံ – အကြိမ်များစွာ၊ ဝါ– အခေါက်ပေါင်းများစွာ၊ ဂဟေတွာပိ– သင်ယူပြီး၍လည်း၊ နဝိသဇ္ဇေတဗ္ဗံနနု-မလွှတ်ထိုက်သည်မဟုတ်ပါလော၊နိစ္စကာလံ-မြဲသောကာလပတ်လုံး၊ သောတဗ္ဗံနနု – နာယူထိုက်သည် မဟုတ်ပါလော၊ အနုသံဝစ္ဆရံ-နှစ်စဉ်၊ သဇ္ဈာယိတဗ္ဗံနနု–ရွတ်အံထိုက်သည် မဟုတ်ပါလော၊ ဣတိ (အာဟ)။

ဝေဝံ-သို့၊ ဝါ-သို့ကလော၊ ဝိနယဂရုကာနံ-ဝိနည်း၌ အလေးပြုကုန်သော၊ [ ဤစကားဖြင့် နောက်၌ ဤ ဆရာများ၏ အဆုံးအဖြတ်ကို အလေးပြုထိုက်ကြောင်းပြ၏။] ဘိက္ခုနံ-တို့၏၊ ကာလေ – အခါ၌၊ ဝါ – လက်ထက်၌၊ ဧကဒိဝသံ-တနေ့သ၌၊ ဥပတိဿတ္ထေရော၊ မဟာပဒုမတ္ထေရပ္ပမုခါနံ- မဟာပဒုမထေရ်အမှူးရှိကုန်သော၊ ပဉ္စန္နံ အန္တေဝါသိကသတာနံ- ငါးရာသော အနီးနေတပည့်တို့အား၊ ပဌမပါရာဇိကသိက္ခာပဒေ-၌၊ ဣမံ ပဒေသံ- ဤ မတံ ယေဘုယျေန အက္ခယိတံ အစရှိသော ပါဠိရပ်ကို၊ သံဝဏ္ဏေန္တော-ဖွင့်ပြလျက်၊ [အဋ္ဌကထာဖွင့်ပုံ သဘောအားဖြင့် အနက်အဓိပ္ပါယ် ပြောပြလျက်။ ] နိသိန္နော - နေသည်၊ ဟောတိ–၏၊ တံ-ထို ဥပတိဿထေရ်ကို၊ အန္တေဝါသိကာ ပုစ္ဆိံသု၊ (ကိံ)ဘန္တေ၊ယေဘုယျေန အက္ခယိတေ-ယေဘုယျေန အက္ခယိတအလောင်းကောင်၌၊ ပါရာဇိကံ- ပါရာဇိက အာပတ်သည်၊ (ဟောတိ- ဖြစ်၏၊) ယေဘုယျေနခယိတေ-ယေဘုယျေနခယိတအလောင်းကောင်၌၊ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ) ဥပဍ္ဎက္ခယိတေ-ထက်ဝက်ခဲစားအပ်သော နိမိတ်ရှိသော အလောင်းကောင်၌၊ ကေန – အဘယ်သည်၊ ဘဝိတဗ္ဗံ – ဖြစ်ထိုက်ပါသနည်း၊ ဣတိ ( ပုစ္ဆိံသု )၊ ထေရော အာဟ၊(ကိံ)၊ အာဝုသော–တို့၊ ဗုဒ္ဓါနာမ- မည်သည်၊ ပါရာဇိကံ–ကို၊ ပညပေန္တာ-ပညတ်တော်မူကုန်လသော်၊ သာဝသေသံ–အကြွင်း အကျန်ရှိသည်ကို၊ ကတွာ-၍၊ န ပညပေန္တိ – ပညတ်တော် မမူကြကုန်၊ အနဝသေသံ ယေဝ–အကြွင်း အကျန်မရှိသည်ကိုသာ၊ ကတွာ – ၍၊ သဗ္ဗံ – အလုံးစုံသော ပါရာဇိကခေတ်ကို၊ ပရိယာဒိယိတွာ–ကုန်အောင်ယူ၍၊[သဗ္ဗံ ပါရာဇိကခေတ္တံ အနဝသေသတော ဂဟေတွာ။] သောတံ – ပါရာဇိကခေတ်၌ လွန်ကျူးခြင်းဟူသော အယဉ်ကို၊ ဆိန္ဒိတွာ၊[ပါရာဇိကခေတ္တေ ဝီတိက္ကမသောတံ ဆိန္ဒိတွာ။] ပေ၊ ဟိ-မှန်၊ ဣဒံ သိက္ခာပဒံ–သည်၊ လောကဝဇ္ဇံ- လောက၌ အပြစ်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်တည်း၊ ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံ- ပညတ်တော်ကြောင့် အပြစ်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်သည်၊ န–မဟုတ်၊ တသ္မာ၊ ဥပဍ္ဎက္ခယိတေ-၌၊ ပါရာဇိကံ ယဒိဘဝေယျ၊(ဧဝံ သတိ).သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓေါ–သည်၊ ပညပေယျ - ပညတ်တော်မူရာ၏၊ ပန–ဆက်၊ ဧတ္ထ– ဤ ဥပဍ္ဎက္ခယိတ အလောင်းကောင်၌၊ ပါရာဇိကစ္ဆာယာ – ပါရာဇိက အရိပ် အရောင်ကို၊ န ဒိဿတိ - မတွေ့မြင်အပ်၊ ထုလ္လစ္စယမေဝ- ထုလ္လစ္စဉ်း အာပတ် ကိုသာ၊ ဒိဿတိ - တွေ့မြင်အပ်၏၊ ဣတိ ( အာဟ )။ [ ဘုရားရှင်ကိုယ်တော်တိုင်က ပါရာဇိက ဟု မပညတ်အပ်သောကြောင့်၎င်း, ပါရာဇိကဖြစ်ဘို့ရာယုတ္တိလည်း မရှိသောကြောင့်၎င်း''ပါရာဇိကစ္ဆာယာ နဒိဿတိ'' ဟု မိန့်သည်။]

အပိစ- သည်သာ မကသေး၊ မတသရိရေ–အသေကောင်၌၊ ပါရာဇိကံ–ကို၊ ပညပေန္တော-သော၊ ဘဂဝါ-သည်၊ တတော-ထို ယေဘုယျေန အက္ခယိတမှ၊ ပရံ–နောက်၌၊ ပါရာဇိကံ–သည်၊ နတ္ထိ-မရှိ၊ ဣတိ- ဤအနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊ ဒဿေတုံ – ငှါ၊ ယေဘုယျေန အက္ခယိတေ - ယေဘုယျေန အက္ခယိတ အလောင်းကောင်၌၊ ထပေသိ- တန့်ထားတော်မူပြီ၊ ဝါ–ရပ်ထားတော်မူပြီ၊ ထုလ္လစ္စယံ ·ကို၊ ပညပေန္တော (ဘဂဝါ)၊ တတော-ထို ယေဘုယျေနခယိတမှ၊ ပရံ–၌၊ ထုလ္လစ္စယံ နတ္ထိ၊ ဣတိ ဒဿေတုံ, ယေဘုယျေန ခယိတေ–၌၊ ထပေသိ- ပြီ၊ ဝါ– ပြီ၊ ဣတိပိ– သို့လည်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗ– ၏၊ စ- ဆက်၊ တော် ခယိတာက္ခယိတံနာမ – ဤ ခယိတ အက္ခယိတ မည်သည်ကို၊ မတသရီရသ္မိံ ယေဝ - အသေကောင်၌သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ - ၏၊ [မတံ ယေဘုယျေန ခယိတံ–စသည်ဖြင့် ဟောတော်မူသောကြောင့် မတသရီရ၌သာ သိရမည် – ဟူလို၊ ] ဇီဝမာနေ–အသက်ရှင်ဆဲ ကိုယ်၌၊ န ဝေဒိတဗ္ဗံ - ထိုက်၊ ဟိ- မှန်၊ ဇီဝမာနေ - ၌၊ နခပိဋ္ဌိပ္ပမာဏေပိ-လက်သည်းခွံပမာဏရှိသော အရပ်၌လည်း၊ ဆဝိမံသေဝါ-အရေ, အသားသည်ငှင်း၊ နှာရုမ္ဟိဝါ- ငှင်း၊ သတိ – သော်၊ ပါရာဇိကမေဝ–သည်သာ၊ ဟောတိ–၏၊ နိမိတ္တံ–သည်၊ သဗ္ဗသော-ဖြင့်၊ ခယိတံ–ခွေး မြေခွေး စသည်တို့ ခဲစားအပ်သည်နှင့်တူသည်၊ ယဒိပိ ( ဟောတိ)- အကယ်၍မူလည်း ဖြစ်စေဦးတော့၊ ဆဝိစမ္မံ-အရေထူအရေပါးသည်၊ ယဒိပိ နတ္ထိ-တော့၊ နိမိတ္တသဏ္ဌာနံ-သည်၊ ပညာယတိ–ထင်ရှားသေးအံ့၊ ပဝေသနံ–သည်၊ ဇာယတိ–ဖြစ်နိုင်သေးအံ့၊ (ဝေံသတိ-သော်၊) ပါရာဇိကမေဝ-သည်သာ၊ (ဟောတိ)။

ပန–ကား၊ နိမိတ္တသဏ္ဌာနံ-ကို၊ အနဝသေသေတွာ–မကြွင်းကျန်စေမူ၍၊ [ နိမိတ္တာကာရေန ( နိမိတ် သဏ္ဌာန်ဖြင့် ) ဌိတံ ဆဝိစမ္မ မံသာဒိ အနဝသေသေတွာ၊] သဗ္ဗသ္မိံ- သော၊ နိမိတ္တေ- ကို၊ ဆိန္ဒိတွာ– ၍၊ သမန္တတော–၌၊

**အပိစ** ။ ။ ဤ အပိစတက်သော စကားဖြင့် ဥပတိဿထေရ်၏ အဆုံးအဖြတ်ကို ထော်ခံရင်း အခြားအကြောင်းတမျိုးကိုလည်း အဋ္ဌကထာဆရာပြသည်။ [ “တတော ပရံ ပါရာဇိကံ နတ္ထီတိ ဒဿေတုံ ၊ပေ၊ ထုလ္လစ္စယံ နတ္ထီတိ ဒဿေတုံ ” တို့ကို “ အခြားအကြောင်းတမျိုး”ဟု ဆိုလိုသည်။ ]

**သဗ္ဗသော ခယိတံ** ။ ။ နိမိတ္တပ္ပဒေသေ ဗဟိဋ္ဌိတံ ဆဝိစမ္မံ သဗ္ဗသော ဆိန္ဒိတွာ သောဏသိင်္ဂါလာဒီဟိ ခယိတသဒိသံ ကတံ = အသက်ရှင်ဆဲ ဖြစ်သောကြောင့် ခွေး စသည်တို့ တကယ် ခဲစားအပ်သည်ကို မဆိုလို၊ ခွေး စသည်တို့ ခဲစားထားသည်နှင့် တူအောင် နိမိတ်အရပ်၏ အပြင်ပဋ္ဌိတည်သော အရေအသားကို ရန်သူတို့က ခွါထားသည်–ဟု ဆိုလိုသည်၊ ထို့ကြောင့် “ဆဝိစမ္မံ နတ္ထိ”ဟု ဆက်၍မိန့်သည်။

တစ္ဆေတွာ- ရွေ၍၊ ဥပ္ပါဋိတေ- ခွါထုတ်အပ်ပြီးသော်၊ ဝဏ္ဏသဏ္ဍာနသေန- အနာ၌သွင်းယူခြင်း၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ [အနာသဘော ဖြစ်နေသောကြောင့် အနာအဖြစ်ဖြင့် ရေတွက်ရခြင်းအားဖြင့် - ဟူလို၊] (ဥပက္ကမန္တဿ - လုံးလ ပြုသော ရဟန်း၏၊ ) ထုလ္လစ္စယံ ( ဟောတိ )၊ နိမိတ္တတော-မှ၊ ပတိတာယ- ကျသော၊ မံသပေသိယာ-အသားတစ်၌၊ ဥပက္ကမန္တဿ-၏၊ ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ၊) ပန-ကား၊ [ ဇီဝမာနကသရီရမှ တပါး, မတသရီရကား၊] မတသရီရေ-၌၊ သမ္ဘံ- သော၊ သရီရံ-သည်၊ ခယိတံ - သည်၊ ယဒိပိ ဟောတိ - အကယ်၍ပင် ဖြစ်စေဦးတော့၊ အက္ခယိတံ- သည်၊ ယဒိပိ ဟောတိ-တော့၊ တယော မဂ္ဂါ ပန - မဂ် ၃ ခုတို့ သည်ကား၊ အက္ခယိတာ - မခဲစားအပ်ကုန် သေးသည်၊ (ဟောန္တိ-ဖြစ်ကုန်အံ့၊) တေသု- ထိုမဂ်တို့၌၊ ဥပက္ကမန္တဿ- ၏၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ၊ ) ယေဘုယျေန အက္ခယိတေ - ယိတ မဂ်၌၊ ပါရာဇိကမေဝ- သည်ပင်၊ (ဟောတိ၊) ဥပခုက္ခယိတေစ-ဥပခုက္ခယိတမဂ်၌၎င်း၊ ယေဘုယျေန ခယိတေစ-မဂ်၌၎င်း၊ ( ဥပက္ကမန္တဿ) ထုလ္လစ္စယံ ဟောတိ။

မနုဿာနံ-တို့၏၊ ဇီဝမာနကသရီရေ-၌၊ အက္ခိ၊ပေ၊ကောသေသု-မျက်လုံး ပေါက် , နှာခေါင်းပေါက် , နားပေါက် , သိုအိမ်တို့၌၎င်း၊[ ဝတ္ထိ ပုဋေသု- သိုအိမ်ဟူကုန်သော၊ ပုရိသာနံ အင်္ဂဇာတ ကောသေသု-အင်္ဂါဇာတ်၏အရေ အိပ်တို့၌၊ ( ဋီကာ )၊ ] သတ္ထကာဒီဟိ - ဒါးငယ် အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ ကတ ဝဏောဝါ-ပြုအပ်သောအနာ၌၎င်း၊ မေထုနရာဂေန-ဖြင့်၊ တိလဖလ မတ္တမ္ပိ- ကိုလည်း၊ အင်္ဂဇာတံ-ကို၊ ပဝေသေန္တဿ-၏၊ ထုလ္လစ္စယ မေဝ-သည်ပင်၊ ဟောတိ၊ အဝသေသ သရီရေ-၌၊ ဥပကစ္ဆကာဒီသု-လက်ကတီးကြား အစ ရှိသည်တို့၌၊ (ပဝေသေန္တဿ) ဒုက္ကဋံ၊ မတေ-သေပြီးသော၊ အလ္လသရီရေ- စိုစိုဖတ်ဖတ် ဖြစ်သော ကိုယ်၌၊ [ မတသရီရံ ယာဝဥဒ္ဓုမာတကာဒိ ဘာဝေန ကုထိတံ နဟောတိ၊ တာဝ အလ္လသရီရန္တိ ဝေဒိတဗ္ဗံ။ ] ပါရာဇိက ခေတ္တေ- ပါရာဇိကခေတ်၌၊ ပါရာဇိကံ-ပါရာဇိက အာပတ်သည်၊ ( ဟောတိ ) ၊ပေ၊ ယဒါပန-အကြင်အခါ၌ကား၊ သရီရံ-ကိုယ်သည်၊ ဥဒ္ဓုမာတကံ-သေသည်မှ အထက်ဖြစ်သော နောက်ကာလ၌ ဖူးဖူးရောင်သည်၊ ကုထိတံ - ကျိုက်ကျိုက် ဆူသည်၊ နီလမက္ခိက သမာကိဏ္ဏံ - ယင်မဲရိုင်းတို့ ထက်ဝန်းကျင် ရောပြွမ်း အပ်သည်၊ ကိမိကုလသမာကုလံ-ပိုးမျိုးတို့ဖြင့် ရှုပ်ထွေးနေသည်၊ နဝဟိဝဏ မုခေဟိ-ကိုးပေါက်ဒွါရ အမာဝတို့မှ၊ ဂဋိတပုဗ္ဗ-လျှောကျသော ပြည်ရှိသည်၊ ကုဏပဘာဝေန - အကောင်ပုတ်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဥပဂန္တုံပိ - အနီးသို့ ကပ်ခြင်းငှါလည်း၊ အသက္ကုဏေယျံ-မတတ်ကောင်းသည်၊ ဟောတိ၊ တဒါ-

၌၊ ပါရာဇိကဝတ္ထုံ စ-ပါရာဇိက ဝတ္ထုကိုဒင်း၊ ထုလ္လစ္စယဝတ္ထုံ စ- ထုလ္လစ္စယ ဝတ္ထုကိုဒင်း၊ ဝိဇာနာတိ၊ပေ၊ ဒုက္ကဋမေဝ။

တိရစ္ဆာနဂတာနံ - တို့တွင်၊ ဟတ္ထိ ၊ပေ၊မဟိံသာဒီနံ- ဆင်, မြင်း, နွား, မြည်း, ကုလားအုပ်, ကျွဲ အစရှိသည်တို့၏၊ နာသာယ- နှာခေါင်း၌၊ (ပဝေသေန္တဿ-၏၊) ထုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)၊ ဝတ္ထိကောသေ-၌၊ (ပဝေသေန္တဿ-၏၊) ထုလ္လစ္စယမေဝ - ပင်တည်း၊ သဗ္ဗေသမ္ပိ – နှင့်သော၊ တိရစ္ဆာနဂတာနံ- တို့၏၊ အက္ခိ ကဏ္ဏဝဏေသု-တို့၌၊ပေ၊အဝသေသ သရီရေပိ-ကြွင်းသောကိုယ်၌ လည်း၊ပေ၊မတာနံ –သေပြီးသော တိရစ္ဆာန်တို့၏၊ အလ္လသရီရေ– ၌၊ (ပဝေသေန္တဿ–၏၊)ပါရာဇိကခေတ္တေ–၌၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ပေ၊ ပန-ဆက်၊ ကုထိတကုဏပေ- ကျိုက်ကျိုက်ဆူသော အကောင်ပုတ်၌၊ ပုဗ္ဗေ– ရှေ့ လူသေ ကောင်၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ-ဖြင့်သာ၊ သဗ္ဗတ္ထ- အလုံးစုံသောအရပ်တို့၌၊ ဒုက္ကဋံ ဟောတိ၊ ကာယသံသဂ္ဂရာဂေနဝါ- ဖြင့်သော်ငြား၊ မေထုနရာဂေနဝါ-ဖြင့် သော်ငြား၊ ဇီဝမာနက ပုရိသဿ-၏၊ ဝတ္ထိကောသံ- သိုအိမ်ကို၊ အပ္ပဝေသေ န္တော-မသွင်းဘဲ၊ နိမိတ္တေန-ဖြင့်၊ နိမိတ္တံ-ကို၊ ဆုပတိ-တို့အံ့၊ ဒုက္ကဋံ၊ မေထုန ရာဂေန–ဖြင့်၊ ဣတ္ထိယာ- ၏၊(နိမိတ္တံ၌စပ်)အပ္ပဝေသေန္တော-မသွင်းဘဲ၊ပေ၊ ထုလ္လစ္စယံ။

ပန-ဝါဒန္တရကား၊ မဟာ အဋ္ဌကထာယံ–၌၊ ဣတ္ထိနိမိတ္တံ မေထုနရာဂေန မုခေနဆုပတိ, ထုလ္လစ္စယန္တိ–ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ– ဆိုအပ်ပြီ၊ စမ္ပက္ခန္ဓကေ–၌၊ ဆဗ္ဗဂ္ဂိ ယာ– ဆဗ္ဗဂ္ဂီယမည်ကုန်သော၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ အစိရဝတိယာ,နဒိယာ–၌၊ တရန္တီနံ-ကူးကုန်သော၊ ဂါဝီနံ-နွားမတို့၏၊ ဝိသာဏေသုပိ-ဦးချိုတို့၌လည်း၊ ဂဏှန္တိ-ကိုင်ကြကုန်၏၊ ကဏ္ဏေသုပိ-နားတို့၌လည်း၊ပေ၊ဂီဝါယပိ-လည်ပင်း ၌လည်း၊ ပေ၊ဆေပ္ပါယပိ-မြီးထုံး၌လည်း၊ ဂဏှန္တိ-နှံ၏၊ ပိဋ္ဌိမ္ပိ-ကျောက်ကုန်း ကိုလည်း၊ အဘိရူဟန္တိ - တက်စီးကြကုန်၏၊ ရတ္တစိတ္တာ - တပ်မက်သောစိတ် ရှိကြကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)ဝိ- လည်း၊ အင်္ဂဇာတံ- ကို၊ ဆုပန္တိ - တို့ကြကုန်၏၊ ဣတိ-သို့၊ ဣမိဿာ အဋ္ဌုပ္ပတ္တိယာ- ၌ဖြစ်ပေါ်လာသော အကြောင်းဝတ္ထု ကြောင့်၊ နစ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ထုလ္လစ္စယဿာတိ - ဟူ၍၊ အဝိသေသေန- အထူး မမှတ် သာမညအားဖြင့်၊ [ ပါးစပ်ဖြင့် ဟုဒင်း , အင်္ဂါဇာတ်ထိပ်ဖြင့် ဟုဒင်း

နိမိတ္တေန၊ပေ၊ထုလ္လစ္စယံ။ ။ဤစကားကို"နစ ဘိက္ခဝေ ရတ္တစိတ္တေန အင်္ဂဇာတံ ဆုပိတဗ္ဗံ" စသော စမ္ပက္ခန္ဓကပါဠိတော်ကို မှီ၍ အရှင် မဟာဗုဒ္ဓဃောသမိန့်သည်၊ ထို ပါဠိတော်၌ အနက်အဓိပ္ပါယ်တမျိုး ရှိသေး၏–ဟု ပြလို၍ "မဟာ အဋ္ဌကထာယံပန" ဟု မိန့်ပြန်သည်။

အထူးမပြုဘဲ။] ( ဘာဝဝတာ ) ဝုတ္တံ၊ တံ သဗ္ဗမ္ပိ– ထို အလုံးစုံသော ပါဠိတော် အဋ္ဌကထာကိုလည်း၊ သံသန္ဒိတွာ – နှိုးနှော၍၊ ယထာ - အကြင် အခြင်းအရာ အားဖြင့် ယူအပ်သော်၊ န ဝိရုဇ္ဈတိ- မဆန့်ကျင်၊ တထာ-ထို မဆန့်ကျင်လေသံ အောင်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ဂဟေတဗ္ဗံ–ယူရာ၏။

စ-ဆက်၊ ကထံ-အဘယ်နည်းဖြင့်ယူအပ်သော်၊ န ဝိရုဇ္ဈတိ-နည်း၊ တာဝ-ကေစိဝါဒမှ ရှေးဦးစွာ၊ မဟာ အဋ္ဌကထာယံ – ၌၊ မေထုနရာဂေန မုခေန ဆုပတိတိ–ဟူသော၊ ယံ–အကြင်စကားကို၊ ဝုတ္တံ–ပြီ၊ တတြ–ထိုစကားရပ်၌၊ နိမိတ္တမုခံ-နိမိတ်ထိပ်ကို၊ မုခန္တိ -ဟူ၍၊ အဓိပ္ပေတံကိရ – အလိုရှိအပ်သတတ်၊ စ-ဆက်၊ မေထုနရာဂေနာတိ- ဂေနဟူ၍၊ ဝုတ္တတ္တာပိ–ကြောင့်လည်း၊ တတ္ထ–ထိုမဟာအဋ္ဌကထာ၌၊ အယမေဝ- ဤ နိမိတ္တမုခအနက်ကိုသာ၊ အဓိပ္ပါယော တိ-အလိုရှိအပ်သောအနက်ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော–၏၊ ဟိ–မှန်၊ဇာတ္တိနိမိတ္တေ–၌၊ ပကတိမုခေန- ပကတိပါးစပ်ဖြင့်၊ မေထုနပတ္တမော- မေထုန်ကို လုံးလပြုခြင်းသည်၊ န ဟောတိ-မဖြစ်နိုင်၊ ခန္ဓကေပိ-၌လည်း၊ ယေ-အကြင် ရဟန်းတို့သည်၊ ဗိဠာ °-နွားမတို့၏ကျောံကုန်းကို၊ အဘိရုဟန္တာ-တက်စီးကုန်လသော်၊ မေထုနရာဂေန- ဖြင့်၊ အင်္ဂဇာတေန- ဖြင့်၊ ဆုပိ °သု- နုပြီ၊ တေ- တို့ကို၊ သန္ဓာယ- ၍၊ ထုလ္လစ္စယံ-ကို၊ ဝုတ္တံ- ပြီ၊ ဣတိ- သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ ဟိ-လဒ္ဓဒေါသ ထင်ရှားပြအံ့၊ ဣတရထာ - ဤသို့မဟုတ်လျှင်၊ [ မေထုနရာဂဖြင့် အင်္ဂါဇာတ်ထိပ်ဖြင့် တို့ခြင်းမဟုတ်ဘဲ, ပကတိပါးစပ်ဖြင့် တို့ခြင်းဖြစ်လျှင်- ဟူလို၊ ] ဒုက္ကဋံ - သည်၊ သိယာ-၏။

ပန–ဝါဒန္တရကား၊ ကေစိ - အချို့ဆရာတို့သည်၊ အာဟု – ဆိုကြကုန်ပြီ၊ (ကိံ)၊ ခန္ဓကေပိ-စမ္မက္ခန္ဓကဥလည်း၊ မုခေနေဝ - ပါးစပ်ဖြင့်သာ၊ ဆုပနံ - တို့ခြင်းကို၊ သန္ဓာယ- မှု၍၊ ကမ္ဘသာ–အင်္ဂါဇာတ်ကို ပါးစပ်ဖြင့်တို့မှု၏၊ ဩဠာ ရိကတ္တာ-ရုန့်ကြမ်းသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ထုလ္လစ္စယံ-ကို၊ ဝုတ္တံ-ဟောတော်မူ အပ်ပြီ၊ အဋ္ဌကထာယမ္ပိ – ၌လည်း၊ သန္ဓာယဘာသိတံ – သန္ဓာယဘာသိဘ ဟူသော၊ ဝါ- ရည်ရွယ်၍ဟောတော်မူအပ်သော၊ တံ- ထိုပါးစပ်ဖြင့်တို့မှုကို၊ ဂဟေတွာဝ - ၍သာ၊ မေထုနရာဂေန မုခေန ဆုပတိ၊ ထုလ္လစ္စယန္တိ - ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-ဆိုအပ်ပြီ၊ ဣတိ- သို့၊ (အာဟု-နုပြီ၊) တသ္မာ - ကြောင့်၊ (ပကတိမုခဖြင့် ဟုရင်း, နိမိတ်ဖျားဖြင့်ဟုရင်း ဝါဒကွဲနေသောကြောင့်- ဟူလို၊ ) သုဋ္ဌု - စွာ၊

ကေစိပန။ ။ မဟာအဋ္ဌကထာစကား မိမိအလိုကျပါဠိတော်နှင့် နှိုးနှောပြပြီး၍ ယခုအခါ ကေစိဆရာတို့၏ တမျိုးကြံဆပုံကို ပြလိုသောကြောင့် "ကေစိ ပန" စသည် မိန့်၊ ကေစိတို့က "မုခေန" အရ ပကတိပါးစပ်ကို ယူကြသည်။

သလ္လက္ခေတွာ-မှတ်သား၍၊ ဉဘောသု- ၂မျိုးကုန်သော၊ ဝိနိစ္ဆယေသု-တို့တွင်၊ ယော- အကြင်အဆုံးအဖြတ်သည်၊ ယုတ္တတရော - သာ၍သင့်မြတ်၏၊ သော-ကို၊ ဂဟေတဗ္ဗော - ၏၊ ဝိနယညူပန - ဝိနည်းတတ်သိ ပညာရှိတို့သည်ကား၊ ပုရိမံ-ရှေ့အဆုံးအဖြတ်ကို၊[အင်္ဂါဇာတ်ဖြင့်တို့ခြင်းဟူသော အဆုံးအဖြတ်ကို၊] ပသံသန္တိ-ချီးမွမ်းကြကုန်၏၊ ပန-ဆက်၊ ကာယသံသဂ္ဂရာဂေန - ဖြင့်၊ ပကတိမုခေန၀ါ-ပကတိပါးစပ်ဖြင့်သော်၎င်း၊ နိမိတ္တမုခေန၀ါ - နိမိတ်ဖျားဖြင့်သော်၎င်း၊ ဧတ္ထိနိမိတ္တံ - ကို၊ ဆုပန္တဿ - တို့သောရဟန်း၏၊ သံဃာဒိသေသော - သည်၊(ဟောတိ)၊ တိရစ္ဆာနဂတိတ္ထိယာ-၏၊ ပဿာ၀မဂ္ဂံ-ကို၊ နိမိတ္တမုခေန-ဖြင့်၊ ဆုပန္တဿ- ၏၊ ဝုတ္တနယေနေ၀ - ဖြင့်သာ၊ [မိမိဆိုအပ်ခဲ့သော ပဌမနည်းဖြင့်သာ-ဟူလို၊] ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ ကာယသံသဂ္ဂရာဂေန-ဖြင့်၊ (ဆုပန္တဿ) ဒုက္ကဋံ ( ဟောတိ )၊ ဣတိ-အပြီးတည်း။ ။အ၀သေသကေနသတ္တတိဒွိသတစတုက္ကကထာ- ပဌမစတုက္ကမှ ကြွင်းသော နှစ်ရာ့ခြောက်ဆယ့်ကိုးစတုက္ကကထာသည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။

ဇဝံ-သို့၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ပဋိပန္နကဿ-ဝိပဿနာကမ္မဋ္ဌာန်းကိုကျင့်သော၊ [အာရဒ္ဓဝိပဿကဿ၊] ဘိက္ခုနော – ကို၊ ရက္ခဏတ္ထံ - ၄ါ၊ သတ္တတိဒွိသတစတုက္ကာနိ- ၂၇၀ သော စတုက္ကတို့ကို၊ နီဟရိတွာ- ထုတ်ဆောင်တော်မူပြီး၍၊ ဣဒါနိ-၌၊ အနာဂတေ-၌၊ ယေပါပဘိက္ခူ-တို့သည်၊ ဣမံ - ဤဟာကို၊ သန္တတံ-ဖုံးလွှမ်းရစ်ပတ်, သွင်းထားအပ်ပြီ၊ ကိဋ္ဌိ-သော၊ ဉပါဒိန္နကံ - ဉပါဒိန္နကရုပ်ကို၊[ဉပါဒိန္နကန္တိ-ကာယိန္ဒြိယံ(ကာယိန္ဒြေဟူသောကမ္မဇရုပ်အသားကို)၊ သန္ဓာယဝုတ္တံ၊] ဉပါဒိန္နကေန– ဉပါဒိန္နကရုပ်သည်၊ နဖုသတိ– မထိခိုက်အပ်၊ (တနည်း) ကိဋ္ဌိ-သော၊ ဉပါဒိန္နကံ–ကို၊ ဉပါဒိန္နကေန - ဖြင့်၊ နဖုသတိ-မထိခိုက်မိ၊ ဧတ္ထ–ဤဉပါဒိန္နကချင်းမထိခိုက်ရာ၌၊ ဒေါသော-အပြစ်သည်၊ ကော-အဘယ်နည်း၊ ဣတိ-သို့၊ သဋ္ဌိစ္ဆ-လွန်ကျူးလိုသောသညာနှင့်တကွစေ့ဆော်၍၊ လေသံ - အမြွက်ကို၊ ဝါ - အနည်းငယ်သော အကြောင်းကို၊ ဩဍ္ဍေဿန္တိ - ထောင်ကြကုန်လတ့်၊ ဝါ – ကြံစည်ကြကုန်လတ့်၊ [လေသံ သမုဋ္ဌာပေဿန္တိ၊ ပရိကပ္ပေဿန္တီတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ "ဉပါဒိန္နကချင်းမထိ"ဟူသောအကြောင်း

ဉပါဒိန္နကေန ဖုသတီတိ ။ ။ ဉပါဒိန္နကေန ဖုသီယတိ , ဃဋ္ဋီယတီတိ ဇဝံ ကမ္မနိယကာရလောပေနအတ္ထော ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ဖုံးထားသည့် အတွက် ကာယပသာဒချင်း မထိခိုက်အပ်-ဟူလို၊ အထ၀ါ- ဇဝံ ကရောန္တော (ဤသို့ ဖုံးလွှမ်း ရစ်ပတ်၍ပြုလသော်) ကိဋ္ဌိဉပါဒိန္နကံ ဉပါဒိန္နကေန ( ဖြင့် ) န ဖုသတိ န ဃဋ္ဋေတီတိ ဝေမေတ္တ အတ္ထော (ကတ္တား အနက်) ဒဋ္ဌဗ္ဗော။

ကိုပင် ''လေသ'' ဟု ဆိုသည်။]တေသံ-ထိုရဟန်းတို့၏၊ သာသနေ-၌၊ ပတိဋ္ဌာဝေ-ထောက်တည်ရာသည်ပင်၊ နဘဝိဿတိ - မဖြစ်လတံ့၊ ဣတိ-သို့၊ ဒိသွာ - မြော်မြင်တော်မူ၍၊ တေသုသတ္တတိဋ္ဌသတစတုက္ကေသု - တို့တွင်၊ ကေမေကံ - သော၊ စတုက္ကံ - ကို၊ စတူဟိ - နှ်သော၊ သန္တတာဒိဘေဒေဟိ - သန္တတအစရှိသော အထူးအပြားတို့ဖြင့်၊ ဝါ - သန္တတ အစရှိသော ဝိသေသနတို့ဖြင့်၊ ဘိန္ဒိတွာ-ခွဲခြားတော်မူ၍၊ ဝါ-ဝိသေသနကူမတော်မူ၍။ [သန္တတာဒိ ဝိသေသနေဟိ ဝိသေသေတွာ၊ သန္တတာဒီဟိ စတူဟိ ယောဇေတွာ (ဝိသေသန ၄ ပုဒ်တို့ဖြင့်ယှဉ်စေ၍) ဣတိ ဝုတ္တံဟောတိ၊] ဒဿေန္တော (ဟုတွာ)၊ ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ၊ပေ၊အသန္တတဿာတိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ-ပြီ။

တတ္ထ-ထို ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ အစရှိသောစကားရပ်၌၊ သန္တတာယ အသန္တတဿာတိအာဒိသု-တို့၌၊ သန္တတာယ-ဖုံးလွှမ်းရစ်ပတ်သွင်းထားအပ်သော၊ ဣတ္ထိယာ-၏၊ ဝစ္စမဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ပေ၊ [ဤနေရာ၌ ပေယျာလရှိရမည်။]ပဿာဝမဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ပေ၊ မုခေန-ဖြင့်၊ အသန္တတဿ-မဖုံးလွှမ်း မရစ်ပတ်အပ်သော၊ ဘိက္ခုဿ-၏၊ အင်္ဂဇာတံ-ကို၊ အဘိနိသီဒေန္တိ-ဖိ၍ ထိုင်စေကြကုန်၏၊ ဣတိ ဣမိနာနယေန-ဖြင့်၊ ယောဇနာ-အနက်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-၏၊ တတ္ထ-ထိုသန္တတာယ အသန္တတဿ အစရှိသော စကားရပ်၌၊ ယဿာ-အကြင်မိန်းမ၏၊ တီသုမဂ္ဂေသု-၃ ပါးသောမဂ်တို့တွင်၊ ယောကောစိ-သော၊ မဂ္ဂေါ-ကို၊ ပလိဝေဌေတွာဝါ- ရစ်ပတ်၍ သော်၎င်း၊ အန္တော- အတွင်းသို့၊ ပဝေသေတွာဝါ – သွင်း၍ သော်၎င်း၊ ယေနကေနစိ – သော၊ ဝတ္ထေနဝါ-အဝတ်ဖြင့် သော်၎င်း၊ ပဏ္ဏေနဝါ-သစ်ရွက်ဖြင့်သော်၎င်း၊ ဝါကပဋ္ဋေန ဝါ-လျှော်တေပြားဖြင့်သော်၎င်း၊ စမ္မေန ဝါ-သားရေဖြင့် သော်၎င်း၊ တိပုသီသာဒိနံ-သလွဲဖြူ သလွဲမည်း အစရှိသည်တို့၏၊ ဝါ-ခဲဖြူ , ခဲပုတ် အစရှိသည်တို့၏၊

သန္တတာယာတိ ။ ။ကေဒေသေ သမုဒါယဝေါဟာရော၊ ပဋော ဒၶေါတိ အာဒိသုဝိယ၊ " အဝတ်ကို မီးလောင်အပ် " ဟူရာ၌ မီးလောင်အပ်သော နေရာသည် အဝတ်တထည်လုံး မဟုတ်, အဝတ်၏ တစိတ်တပိုင်းသာ ဖြစ်၏၊ ထို အစိတ် အပိုင်းကိုပင် အပေါင်းနာမည်ဖြင့် "ပဋော" ဟု ဆိုအပ်သကဲ့သို့, ထို့အတူ " သန္တတာ " ဟူသော အမည်သည် မိန်းမ တကိုယ်လုံး (တယောက်လုံး) ၏ အမည်တည်း၊ ဖုံးလွှမ်းအပ်သော (ရစ်ပတ်အပ်သော) အရပ်ကား မဂ်နေရာသာတည်း၊ ထို နေရာကလေးကို "သန္တတာ"ဟု မိန်းမတယောက်လုံး၏ နာမည်တပ်၍ ဆိုအပ်သောကြောင့် အပေါင်းဧကဒေသီ၏ အမည်ကို အစိတ် ဧကဒေသ၌ တင်စားသော"ဧကဒေသျူပစာ"ဖြစ်သည် ဟူလို။ [ နိမိတ်တည်းဟူသော တစိတ် တဒေသကို ရဟန်းတယောက်လုံး၏ နာမည်တပ်၍"သန္တတဿ"ဟူရာ၌လည်း ဤနည်းပင်။]

ပန္နေန ဝါ - အပြားဖြင့် သော်ရင်း၊ ပဋိစ္ဆန္နော - ဖုံးအုပ်အပ်၏၊ ( သာ-ထို မိန်းမသည်၊)သန္တတာနာမ-တာမည်၏၊ ယဿ-အကြင်ရဟန်း၏၊ အင်္ဂဇာတံ-ကို၊ တေသံယေဝ ဝတ္ထာဒီနံ-ထို အဝတ်အစရှိသည်တို့တွင်ပင်၊ယေနကေနစိ-ဖြင့်၊ ပဋိစ္ဆန္နံ-ဖုံးအုပ်အပ်၏၊ (သော-သည်၊) သန္တတော နာမ-မည်၏။

တတ္ထ-ထိုသို့ ဖုံးအုပ်ရာ၌၊ ဥပါဒိန္နကေန ဝါ-ဥပါဒိန္နကရုပ်ဖြင့် မူလည်း၊ အနုပါဒိန္နကံ - အနုပါဒိန္နကရုပ်ကို၊ ဃဋ္ဋယတု - ထိခတ်အပ်ပစေ၊ အနုပါဒိန္နကေန ဝါ-ဖြင့် မူလည်း၊ ဥပါဒိန္နကံ-ကို၊ (ဃဋ္ဋယတု-စေ၊) ပေ၊ ယတ္တကေ-အကြင်မျှ အတိုင်းအရှည် ရှိသော အင်္ဂဇာတ်ကို၊ ပဝိဋ္ဌေ - သွင်းအပ်သော်၊ [ တိလဖလမတ္တေ ပဝိဋ္ဌေ၊ ] ပါရာဇိကံ ဟောတီတိ – ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ – မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ တတ္တကံ-ထိုမျှလောက်အတိုင်းအရှည်ရှိသောအင်္ဂါဇာတ်သည်၊ သစေ ပဝေသတိ-အကယ်၍ဝင်အံ့၊(ဧဝံသတိ)၊ သမ္ဗတ္ထ-အလုံးစုံသော ထိခတ်ခြင်း၌၊ [ထိုမျှလေသံဝင်သွားရာ၌ ပဝိဋ္ဌ ဋ္ဌိတ ဥဒ္ဓရဏမဖြစ်နိုင်ရကား "အလုံးစုံသော ပဝေသန ပဝိဋ္ဌ ဋ္ဌိတ ဥဒ္ဓရဏတို့၌" ဟု မပေးသင့်။ ] သာဒယန္တဿ – ၏၊ ပါရာဇိကခေတ္တေ- ၌၊ ပါရာဇိကမေဝ - သည်ပင်ရင်း၊ ထုလ္လစ္စယခေတ္တေ– ၌၊ ထုလ္လစ္စယမေဝ-သည်ပင်ရင်း၊ဒုက္ကဋခေတ္တေ-၌၊ဒုက္ကဋမေဝ-ပင်ရင်း၊ ဟောတိ၊ ဇာတ္တိနိမိတ္တံ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ ခါဏုံ-ငုတ်ကို၊ ကတွာ–ပြု၍၊ ( တနည်း ) ခါဏုံ ကတွာ– ငုတ်စိုက်၍၊ သန္တတံ–ဖုံးလွှမ်းအပ်သည်၊ သစေ ( ဟောတိ- အံ့၊ ဧဝံ သတိ)၊ ခါဏုံ–ကို၊ ဃဋ္ဋေန္တဿ–ထိခတ်သောရဟန်း၏၊ ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)။

ပုရိသနိမိတ္တံ - သည်၊ ဝါ - ကို၊ ခါဏုံကတွာ သန္တတံ သစေ (ဟောတိ)၊ (ဧဝံသတိ)၊ ခါဏုံ-ကို၊ ပဝေသေန္တဿ ဒုက္ကဋံ၊ ဥဘယံ- ၂ ပါးစုံသော မိန်းမနိမိတ်, ယောက်ျားနိမိတ်သည်၊ ဝါ-ကို၊ပေ၊ခါဏုနာ-ဖြင့်၊ ခါဏုံ-ကို၊ ဃဋ္ဋေန္တဿ-ထိခတ်သောရဟန်း၏၊ ဒုက္ကဋံ၊ ဇာတ္တိနိမိတ္တေ-၌၊ ဝေဠုနဠ ပဗ္ဗာဒီနံ–ဝါးဆစ်,ကျူဆစ် အစရှိသည်တို့တွင်၊ ကိဉ္စိ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ ပက္ခိတ္တံ-ထည့်သွင်းအပ်သည်၊ သစေ ( ဟောတိ )၊ (ဧဝံသတိ)၊ တဿ - ထိုအဆစ်၏၊ ဟေဋ္ဌာဘာဂံ-အောက်ဘက်အဘို့ကို၊ဖုသန္တော-ထိခတ်လျက်၊ တိလဖလမတ္တံ-ကို၊ စေပိ ပဝေသေတိ-အကယ်၍မူလည်း သွင်းအံ့၊ (ဧဝံသတိ) ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဥပရိဘာဂံ – အထက်ဘက်အဘို့ကို၊ ( ဖုသန္တော တိလဖလမတ္တံ စေပိ ပဝေသေတိ၊ ဧဝံသတိ ပါရာဇိကံ ဟောတိ၊) ဥဘောသု ပဿေသု – ၂ ဘက်သော

ခါဏုံ ဃဋ္ဋေန္တဿ။ ။ဇာတ္တိ၏ နိမိတ်ထည်း၌ ငုတ်တိုတခုခု သွင်းထား၍ နိမိတ်အပြင်နှင့် ညီမျှနေသော – သို့မဟုတ် အပေါ် ပိုထွက်နေသော ထိုငုတ်၌ ထိခိုက်သော ရဟန်းမှာ ဒုက္ကဋ္ဌ်၊ ငုတ်က အတွင်းဝင်နေ၍ ထိုငုတ်ကို ထိခိုက်လျှင်ကား ပါရာဇိကပင်။

နံပါးတို့တွင်၊ ကေပဿံ-တဘက်သောနံပါးကို၊ပေ၊ပါရာဇိကံ,စတ္တာရိ ပဿာနိ-အထက် အောံ ဘေးဟူသော နံပါး ၄ ဘက်တို့ကို၊ပေ၊ တဿ-ထိုအဆစ်၏၊ တလံ– အတွင်းရေဝံနေသော အောံအပြင်ကို၊ [ဝေဠုနဠာဒိကဿ အန္တော တလံ၊] စေပိ ဖုသတိ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ) ပါရာဇိကံ၊ ပန–ဆက်၊ ပဿေသုဝါ-နံပါးတို့၌သော်၎င်း၊ တလေဝါ-အတွင်းရောက်သော အောံအပြင်၌သော်၎င်း၊ အဖုသန္တော-မထိခတ်ဘဲ၊ အာကာသဂတမေဝ-ဟင်းလင်းအပြင်၌ တည်သည်ကိုသာ၊ ကတွာ-၍၊ ပဝေသေတွာ – ပြီး၍၊ ယဒိ နီဟရတိ-အကယ်၍ နှုတ်အံ့၊ (ဧဝံသတိ) ဒုက္ကဋံ၊ ဗဟိဒ္ဓါ- နိမိတ်ပြင်ဘက်၌၊ ခါဏုကေ- ငုတ်၌၊ [အာနန္တာ ပဝေသိတဿ ဝေဠုပဗ္ဗာဒိကဿ ဗဟိနိက္ခန္တခါဏုကေ – အပေါ်ရှည်လျက် ထွက်နေသောငုတ်၌၊] ယဒိ ဖုသတိ ဒုက္ကဋမေဝ၊ စ – ဆက်၊ ဍုတ္ထိနိမိတ္တေ–၌၊ ဝုတ္တံယထာ-ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ သဗ္ဗတ္ထ- အလုံးစုံသောနိမိတ်၌၊ [ဥဘတောဗျည်းအစရှိသည်တို့၏နိမိတ်၌၊] လက္ခဏံ-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ ဍုတိ–အပြီးတည်း။.... သန္ထတ စတုက္ကဘေဒကထာ–သန္ထတ စတုက္ကဘေဒကထာသည်၊ နိဋ္ဌိတာ–ပြီ။

ဧဝံ–သို့၊ သန္ထတ စတုက္ကဘေဒံ–ကို၊ ဝတွာ- မိန့်တော်မူပြီး၍၊ ဍုဒါနိ–၌၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ကေဝလံ-သက်သက်၊ မနုဿိတ္ထိအာဒိကေ-တို့ကို၊ ဘိက္ခုဿ ဝေ-၏သာလျှင်၊ သန္တိကေ– ၌၊ ဝါ- သို့၊ အာနေန္တိ- ဆောင်ကုန်သည်ကား၊ န-မဟုတ်သေး၊ အထခေါ – စင်စစ်ကား၊ ဘိက္ခုမ္ပိ- ကိုလည်း၊ တေသံ (မနုဿိတ္ထိအာဒိကာနံ)-တို့၏၊ [တာသံ-ဟု ရှိသည်ကား မကောင်း။] သန္တိကေ-၌၊ ဝါ– သို့၊ အာနေန္တိ – န်သေး၏၊ တသ္မာ– ကြောင့်၊ တပ္ပဘေဒံ–ထိုအထူးအပြားကို၊ ဒဿေန္တော (ဟုတွာ) ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ ၊ပေ၊ သန္တိကေတိ အာဒိံ နာ-သော၊ နယေန၊ သမ္ဗာနိ– န်သော၊ တာနိ စတုက္ကာနိ - တို့ကို၊ ပုနပိ နီဟရိတွာ ဒဿေသိ၊ တေသု- ထို စတုက္ကတို့၌၊ပေ၊ဍုတိ– အပြီးတည်း။ ။ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကဝသေန-ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကနှင့် စပ်သဖြင့်၊ စတုက္ကဘေဒဝဏ္ဏနာ- စတုက္ကအပြား၏ အဖွင့်သည်၊ နိဋ္ဌိတာ–ပြီ။

ပန–ဆက်၊ ယသ္မာ – ကြောင့်၊ ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကာ ဧဝ – ဆန့်ကျင်ဘက်ကို အလိုရှိသော ရဟန်းတို့သည်သာ၊ ဧဝံ– သို့၊ ကရောန္တိ - ပြုကုန်သည်ကား၊ န-မဟုတ်သေး၊ရာဇစောရပစ္စတ္ထိကာဒယောပိ-ရာဇပစ္စတ္ထိက,စောရပစ္စတ္ထိက အစရှိသူတို့သည်လည်း၊ (ဧဝံ-သို့၊) ကရောန္တိ–ကုန်သေး၏၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ တမ္ပိပဘေဒံ – ကိုလည်း၊ ဒဿေန္တော ( ဟုတွာ ) ရာဇပစ္စတ္ထိကာတိ အာဒိံ အာဟ၊ တတ္ထ– ထို ရာဇပစ္စတ္ထိကာအစရှိသော စကားရပ်၌၊ ရာဇာနောဧဝ-တို့သည်ပင်၊ ပစ္စတ္ထိကာ–ဆန့်ကျင်ဘက်ကို အလိုရှိသော ရန်သူတို့တည်း၊ ရာဇ

ပစ္စတ္တိကာ – ရန်သူမင်းတို့၊ တေစ – ထို ရာဇပစ္စတ္တိက တို့ကိုလည်း၊ သယံ– ကိုယ်တိုင်၊ အာနေန္တာ၀ိ – ဆောင်ကုန်သော်ငြား၊ အဒ္ဓေဟိ – တို့သည်၊ ဝါ– တို့ကို၊ အာနာပေန္တာ၀ိ – ဆောင်စေ ကုန်သော်ငြား၊ အာနေန္တိယေဝါတိ- အာနေန္တိတို့ ဟူ၍သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ - နှ်၏၊ စောရာဝေ - ဒါးမြ တို့သည်ပင်၊ ပစ္စတ္တိကာ- တို့တည်း၊ စောရပစ္စတ္တိကာ- ရန်သူ ဒါးမြတို့။

ဓုတ္တာတိ - ကား၊ မေထုနုပသံဟိတ ခိဍ္ဍာပသုတာ - မေထုန်နှင့် စပ်သော မြူးတူးပျော်ပါးခြင်း၌ လေ့ကျက်ကုန်သော၊ နာဂရိက ကေရာဋိယ ပုရိသာ– မြို့၌နေသော စဉ်းလဲလှည့်ပတ်ခြင်းကိုပြုတတ်သော ယောကျ်ားတို့တည်း၊ ဝါ- နည်း၊ ဇုတ္တိဓုတ္တ သုရာဓုတ္တာဒယော-မိန်းမကျူးသူ, သေရည်ကျူးသူအစရှိသူ တို့တည်း၊ ဓုတ္တာ ဧဝ-ဓုတ္တတို့သည်ပင်၊ ပစ္စတ္တိကာ-တို့တည်း၊ ဓုတ္တပစ္စတ္တိကာ- ရန်သူဓုတ္တတို့၊ ဟဒယံ- နှလုံးသားကို၊ ဂန္ဓန္တိ- ဂန္ဓံဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ–၏၊ တံ - ထို နှလုံးသားကို၊ ဥပ္ပါဋေန္တိ (ဥပ္ပါလေန္တိ) – ဖြတ်တောက်ထုတ်ယူတတ်ကုန်၏၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ဥပ္ပလဂန္ဓာ – န္ဓတို့မည်၏၊ ဥပ္ပလဂန္ဓာဧဝ – နှလုံးသားကို ဖြတ်တောက်ထုတ်ယူ တတ်သူတို့သည်ပင်၊ ပစ္စတ္တိကာ - တို့တည်း၊ ဥပ္ပလဂန္ဓ

**အာနာပေန္တာ၀ိ ။** ။ အဒ္ဓေဟိပုဒ်သည် ဓာတ်ကတ္တား ကာရိတ်ကံ ၂ ဘက်ရ တည်း၊"အာဏာပေန္တာ၀ိ"ဟု အာဏဓာတ်ဖြင့်ရှိလျှင် အဒ္ဓေဟိ၏ စပ်ရာဓာတ် မပါ သောကြောင့် အာပုဗ္ဗ နီဓာတ်, ဏာပေပစ္စည်းဖြင့်"အာနာပေန္တာ၀ိ"ဟု ရှိသင့်သည်။

**ဓုတ္တာ။** ။ဓုဗ္ဗ (တနည်း–ဓုရ) ဓာတ်သည်"ဟိံသာ–ညှဉ်းဆဲ နှိပ်စက် ဖျက်ဆီး ခြင်း"အနက်ကို ဟော၏၊ တ္တပစ္စည်း၊ ဤ နေရာ၌ကား မေထုန်နှင့် စပ်လျက် အပျော် အပျက် ကစားကြသော မြို့ကြီးသားများကို အရာဌာနအားလျော်စွာ"ဓုတ္တ"ဟု ယူစေ လို၍ "မေထုနုပသံဟိတာ" စသည် မိန့်၊ ဤနည်းဖြင့် ဇုတ္တိဓုတ္တကိုသာ ယူစေလိုသည်၊ ထိုသူတို့ အပျော်အပျက် ကစားရာဝယ် ရဟန်းများကိုလည်း သီလပျက်အောင် ဖျက်ဆီး တတ်ကြလေသည်။ [ဓုဗ္ဗ ဣတိ ဓုတ္တာ။]

**တနည်း။** ။"ဓုတ္တ"ဟု သာမညဆိုသောကြောင့် ဇုတ္တိဓုတ္တ သုရာဓုတ္တ (အာဒိဖြင့်) အက္ခဓုတ္တ - ကြွေအန်ကစားသမားများကို ယူစေလိုသည်။ [ကိရာဋ္ဌ–စဉ်းလဲကောက်ကျစ် (ညစ်ပတ်) မှုကို + ကရောန္တီတိ ကေရာဋိကာ၊ က ကို ယပြု၊ နာဂရိကာစ + တေ+ ကေရာဋိကပုရိသာစာတိ နာဂရိကကေရာဋိယပုရိသာ၊ ဓုတ္တသဒ္ဒါသည် "ဝဉ္စက-စဉ်းလဲ ကောက်ကျစ် လှည့်ပတ်တတ်" အနက်ကိုလည်း ဟော၏၊ ထို့ကြောင့် " ကေရာဋိယ ပုရိသာ"ဟု ဆိုသည်။]

**ဥပ္ပလဂန္ဓာ။** ။ဓုရာဒိပလဓာတ်သည် ဆေဒနအနက်ကိုလည်းဟော၏၊ ဥအတွက် ကြောင့် ဖြတ်၍ထုတ်ခြင်းအနက်ကိုယူ၊ ယခုစာတို့၌ "ဥပ္ပါဋေန္တိ"ဟု တွေ့ရ၏၊ ဋီကာ ယောဇနာတို့ အထူးမဖွင့်သောကြောင့်"ဥပ္ပါလေန္တိ"ဟု မူရင်းဖြစ်မည်ထင်သည်၊"ဂန္ဓ ဥပ္ပလာ"ဟု ဖြစ်သင့်လျက် ရှေ့နောက်ပြန်ထားသည်။

ပစ္စတ္ထိကာ-ရန်သူဥပ္ပလဂန္ဓတို့၊ ကိရ-ချဲ၊ တေ – ၎င်းဥပ္ပလဂန္ဓတို့သည်၊ ကာသိဝါဏိဇ္ဇာဒိဟိ – လယ်ထွန်ခြင်း, ကုန်သွယ်ခြင်း အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ နဇီဝန္တိ - အသက်မွေးကြကုန်သည် မဟုတ်၊ ပန္ထဃာတ ဂါမဃာတာဒီနိ – လမ်းကိုလုယက်ဖျက်ဆီးခြင်း, ရွာကိုလုယက်ဖျက်ဆီးခြင်း အစရှိသည်တို့ကို၊ ကတွာ–၍၊ [လမ်း၌သွားသူ, ရွာ၌နေသူလူတို့ကို "အဘေဒေါပစာ"အားဖြင့် ပန္ထ–ဂါမ ဟု ဆိုသည်၊] ပုတ္တဒါရံ – ကို၊ ပေါသေန္တိ - မွေးမြူကြကုန်၏၊ တေ–ထိုဥပ္ပလဂန္ဓတို့သည်၊ ကမ္မသိဒ္ဓိံ-အလုပ်၏ပြီးစီးခြင်းကို၊ ပတ္ထယမာနာ-တောင်းတကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဒေဝတာနံ–တို့၏ (အထံ၌)၊ အာယာစေတွာ – ရှေးရှုတောင်းပန်၍၊ တာသံ-ထိုနတ်တို့အား၊ ဗလိကမ္မတ္ထံ-ပူဇော်မှုကိုပြုခြင်းအကျိုးငှါ၊ မနုဿာနံ–တို့၏၊ ဟဒယံ-ကို၊ ဥပ္ပါဋေန္တိ(ဥပ္ပါလေန္တိ)–နုတ်၏။

စ-ဆက်၊ သမ္ဗကာလေ - ၌၊ မနုဿာ - လူဝတ်ကြောင်တို့ကို၊ ဒုလ္လဘာ - ခဲယဉ်းသဖြင့်ရအပ်ကုန်၏၊ (ရနိုင်ခဲကုန်၏၊) ဘိက္ခုပန - တို့သည်ကား၊ အရညေ–၌၊ ဝိဟရန္တာ-နေကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ သုလဘာ - နုသည်၊ ဟောန္တိ - နု၏၊ တေ- ထို ဥပ္ပလဂန္ဓတို့သည်၊ သီလဝန္တံ- သော၊ ဘိက္ခုံ- ကို၊ ဂဟေတွာ- ၍၊ သီလဝတော- သီလရှိသောရဟန်းကို၊ ဝဓေနာမ - သတ်ရခြင်း မည်သည်၊ ဘာရိယော - ဝန်လေးသည်၊ ဟောတိ-၏၊ ဣတိ- သို့၊ မညမာနာ- မှတ်ထင်ကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ တဿ - ထို ရဟန်း၏၊ သီလဝိနာသနတ္ထံ- သီလကိုပျက်စီးစေခြင်းအကျိုးငှါ၊ မနုဿိတ္ထိအာဒိကေဝါ-လူမိန်းမအစရှိသည်တို့ကိုမူလည်း၊ အာနေန္တိ – ရှေးရှုဆောင်ကြကုန်၏၊ တံဝါ – ထိုရဟန်းကိုမူလည်း၊ တတ္ထ – ထိုမိန်းမတို့ရှိရာအရပ်သို့၊ နေန္တိ – ပို့ဆောင်ကြကုန်၏၊ အယံ – ၎င်းဆိုအပ်ပြီးကား၊ တေ္တ-၎င်းဥပ္ပလဂန္ဓပစ္စတ္ထိက၌၊ ဝိသေသော–တည်း၊ သေသံ-ကို၊ ဝုတ္တနယေနေဝ–ဖြင့်သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ စ-ဆက်၊ ဘိက္ခုပစ္စတ္ထိကဝါရေ-၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ–ဖြင့်သာလျှင်၊ စတုသု–နုသော၊ ဣမေသုဝါရေသုပိ–တို့၌လည်း၊ စတုက္ကာနိ–တို့ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ–နုအ်၏၊ ပါဠိယံပန-ပါဠိတော်၌ကား၊ သံခိတ္တေန – အကျဉ်းချုပ်အားဖြင့်၊ ( သံဂီတိကာရေဟိ ) ဝုတ္တာနိ - ဆိုအပ်ကုန်ပြီ။ .... ။သမ္ဗာကာရေန – အလုံးစုံသော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ စတုက္က ဘေဒကထာ–သည်၊ နိဋ္ဌိတာ–ပြီ။

ဣဒါနိ– ၌၊ မနုဿိတ္ထိယာ၊ပေ၊ ပဋိသေဝန္တ ဿာတိ အာဒိ– သော၊ယံ– အကြင်စကားကို၊(ဘဂဝတာ)ဝုတ္တံ၊ ဧတ္တ-၎င်းမနုဿိတ္ထိယာအစရှိသောစကားရပ်၌၊ အသမ္မောဟတ္ထံ- မတွေဝေခြင်း အကျိုးငှါ၊ မဂ္ဂေန မဂ္ဂံတိ အာဒိံ–ကို၊ အာဟ-ပြီ၊ တတ္ထ-ထိုမဂ္ဂေန မဂ္ဂံအစရှိသော စကားရပ်၌၊ မဂ္ဂေနမဂ္ဂန္တိ-ကား၊

ဍတ္တိယာ-၏၊ တီသု မဂ္ဂေသု-တို့တွင်၊ အညတရေန – အမှတ်မထား တပါး ပါးသော၊ မဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ အတ္တနော၊ အင်္ဂဇာတံ-ကို၊ ပဝေသေတိ-အံ့၊ အထ ဝါ - ထို့ပြင်တနည်းကား၊ သန္ထိန္နေသု - ရောစပ်ကုန်သော၊ ဒွီသု, မဂ္ဂေသု-တို့တွင်၊ ပဿာဝမဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ ဝစ္စမဂ္ဂံ-သို့သော်၎င်း၊ ဝစ္စမဂ္ဂေနဝါ-ဖြင့်သော် လည်း၊ ပဿာဝမဂ္ဂံ-သို့သော်၎င်း၊ ပဝေသေတိ-အံ့၊ မဂ္ဂေန အမဂ္ဂန္တိ-ကား၊ ပဿာဝါဒိမဂ္ဂေန-ဖြင့်၊ပဝေသေတွာ-ပြီး၍၊တဿ-ထိုပဿာဝအစရှိသော မဂ်၏၊ သာမန္တာ-အနီး၌၊ ဝဏေန-အနာဖြင့်၊ နီဟရတိ–နှုတ်အံ့၊ အမဂ္ဂေန မဂ္ဂန္တိ–ကား၊ မဂ္ဂသာမန္တေန- မဂ်၏အနီးဖြစ်သော၊ ဝဏေန၊ပေ၊ အမဂ္ဂေန အမဂ္ဂန္တိ- ကား၊ ဒွီသု - န်သော၊ သန္ထိန္နဝဏေသု - ဆက်စပ်နေသော အနာ တို့တွင်၊ ဧကေနဝဏေန – ဖြင့်၊ ပဝေသေတွာ – ပြီး၍၊ ဒုတိယေန - သော၊ (ဝဏေန )နီဟရတိ၊ ဍမဿ သုတ္တဿ–၌ ပါဠိတော်အား၊ အနုလောမ ဝသေန–လျော်သည်၏ အစွမ်းဖြင့်၊ သဗ္ဗတ္ထ– အလုံးစုံသော၊ ဝဏသင်္ခေပေ- အနာဝယ် သွင်းယူအပ်သော အရာ၌၊ [အနာအဖြစ်ဖြင့် ရေတွက် အပ်သော ''ပတင်္ဂမုခဖါး''အစရှိသောအရာ၌-ဟူလို။] ထုလ္လစ္စယံ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊

ဍဒါနိ-၌၊ ပရတော–နောက်၌၊ အနာပတ္တိ အဇာနန္တဿ အသာဒယန္တ ဿာတိ-ဟူသော၊ ယံ–အကြင်စကားကို၊ ဝက္ခတိ-မိန့်တော် မူလတ့်၊ တတ္တ– ထို အနာပတ္တိ အဇာနန္တဿ အစရှိသောစကားရပ်၌၊ အသမ္မောဟတ္ထံ - ၄ါ၊ ဘိက္ခု၊ သုတ္တဘိက္ခုမှိတိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ၊ တတြ-ထိုစကားရပ်၌၊ အယံ-၌ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊အမိပ္ပါယော-ဘုရားရှင်၏အလိုတော်တည်း၊ ယော-အကြင် ရဟန်းသည်၊ ပဋိဗုဒ္ဓေါ- နိုးသည်၊(သမာနော)သာဒိယတိ-၏၊ သော-သည်၊ သုတ္တမှိ–အိပ်ပျော်နေသော၊ မယိ-တပည့်တော်၌၊ သော- ၌ရဟန်းသည်၊ ဝိပ္ပဋိပဇ္ဇိ- ဖေါက်ဖေါက်ပြန်ပြန်ကျင့်ပါပြီ၊ အဟံ-တပည့်တော်သည်၊ နဇာနာ မိ-မသိလိုက်ပါ၊ ဍတိ–၌သို့ပြောသော်လည်း၊နမုစ္စတိ-အာပတ်မှမလွတ်၊ စ- ဆက်၊ ဥဘော နာသေတဗ္ဗာတိဧတ္ထ-၌ ပါဠိ၌၊ ဒွေပိ-၂ ယော်လုံးတို့ကိုလည်း၊ လိင်္ဂနာသနေန - အသွင်ကို ဖျက်ဆီးခြင်းဖြင့်၊ နာသေတဗ္ဗာ - ဖျက်ဆီးထိုက် ကုန်၏၊ တတြ-ထို ၂ ယော်တို့တွင်၊ ဒူသကဿ-ဖျက်ဆီးတတ်သော ရဟန်း၏၊ ပဋိညာဏကရဏံ-ဝန်ခံခြင်းဖြင့် ပြုဘွယ်သည်။[ဝန်ခံသည့်အတိုင်း ဆုံးဖြတ်ဘွယ်

**မဋိညာကရဏံ နတ္ထိ။** ။''ဝန်ခံတိုင်း ဆုံးဖြတ်မှု'' ဟူသည်မှာ ''မေးမှ– ဝန်ခံ, ထို ဝန်ခံသည့်အတိုင်း ဆုံးဖြတ် '' ဟု မေးခြင်း ကိစ္စနှင့် ဆိုင်ရကား ဖျက်ဆီးသူမှာ ''ဘယ်စိတ်ဖြင့်ပြုသလဲ,သိလျက်နှင့် ပြုသလား,မသိဘဲနှင့် ပြုမိသလား''ဟု မေးဘွယ်ပင် မလိုရကား ''ပဋိညာကရဏ မလိုတော့''ဟု ဆိုသည်။

သည်၊] နတ္ထိ၊ ဒူသိတော - ဖျက်ဆီးအပ်သော ရဟန်းကို၊ ပုစ္ဆိတွာ - သာယာသလော , မသာယာသလော ဟု စစ်ကြောမေးမြန်းပြီး၍၊ ပဋိညာယ- ဝန်ခံခြင်းဖြင့်၊ နာသေတဗ္ဗော၊ပေ၊ သာမဏေရဝါရေပိ-သာမဏေရဝါရ၌လည်း၊ ဧသ နယော–ဤနည်းတည်း။

ဧဝံ-သို့၊ တတ္ထ တတ္ထ-ထိုထိုဝါရ၌၊ တံတံ အာပတ္တိဥ္စ-ကိုဎင်း၊ အနာပတ္တိဥ္စ-အနာပတ်ကိုဎင်း၊ [အာပတ်က ပါရာဇိက သံဃာဒိသေသ် ထုလ္လစ္စည်းစသော အားဖြင့် များစွာရှိသောကြောင့် "တံတံ အာပတ္တိဥ္စ"ဟု ထား၍, အနာပတ်ကား တမျိုးသာရှိသောကြောင့် တံတံမပါဘဲ"အနာပတ္တိဥ္စ"ဟု ထားသည်။] ဒဿေတွာ၊ပေ၊တတ္ထ - ထို အနာပတ္တိ အဇာနန္တဿ အစရှိသောပါဠိရပ်၌၊ ယော–အကြင်ရဟန်းသည်၊ ဝေသာလိယံ–၌၊ မဟာဝနေ-မဟာဝုန်တော၌၊ ဒိဝါဝိဟာရဂတော-နေ့နေရာ၌ ရောက်သော၊ ဘိက္ခုဝိယ-သည်ကဲ့သို့၊ [ဝိနီတဝတ္ထုခဏ်း၌ ပါလိမ့်မည်။] မဟာနိဒ္ဒံ- ကြီးစွာသော အိပ်ပျော်ခြင်းသို့၊ ဩက္ကမန္တော– သက်ရောက်စဉ်၊ ပရေန– သူတပါးသည်၊ ကတံ-သော၊ ဥပက္ကမမ္ပိ-လုံးလကိုလည်း၊ န ဇာနာတိ- မသိလိုက်၊ (သော - ထိုရဟန်းသည်၊) အဇာနန္တောနာမ–အဇာနန္တမည်၏၊ ဝေရူပဿ-ဤသို့ သဘောရှိသော မသိသောရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ–အနာပတ်သည်၊ (ဟောတိ)၊ စ-သာမကကား၊ နာဟံ၊ပေ၊အဇာနန္တဿာတိ-ဟူသော၊ ဧတံ-ဤစကားကို၊ (သံဂီတိကာရေဟိ)ပိ–တို့သည်လည်း၊ ဝုတ္တံ။ [ဘဂဝါ–ရား၊ အဟံ– သည်၊ န ဇာနာမိ-မသိလိုက်ပါ၊ ဣတိ - ဤသို့လျှောက်ပြီ၊ ဘိက္ခု-ဟန်း၊ အဇာနန္တဿ - မသိသောရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ-အနာပတ်သည်၊ (ဟောတိ-၏၊) ဣတိ-ဤသို့ ဆုံးဖြတ်တော်မူပြီ။] ယော– အကြင်ရဟန်းသည်၊ တတ္ထေဝ– ထို မဟာဝုန်တော၌ပင်၊ သဟသာ–အဆောတလျင်၊ ဝုဋ္ဌိတ ဘိက္ခုဝိယ– ထသောရဟန်းသည်ကဲ့သို့၊ ဇာနိတွာပိ–သိ၍လည်း၊ ဝါ-သိပါသော်လည်း၊ န သာဒယတိ-မသာယာ၊ (သော-သည်၊) အသာဒယန္တောနာမ –မည်၏၊ စ– ကား၊ နာဟံ ဘဂဝါ၊ပေ၊အသာဒယန္တဿာတိ – ဟူသော၊ ဧတံ - ကို၊ (သံဂီတိကာရေဟိ)ပိ – လည်း၊ ဝုတ္တံ– ပြီ။ [ဘန္တေ–ရား၊ အဟံ-သည်၊ န သာဒယိံ-မသာယာပါ၊ ဣတိ-ဤသို့ လျှော်ပြီ၊ ဘိက္ခု–ဟန်း၊ အသာဒယန္တဿ-၏၊ အနာပတ္တိ– သည်၊ (ဟောတိ)၊ ဣတိ–ဤသို့ ဆုံးဖြတ်တော်မူပြီ၊]

ဥမ္မတ္တကောနာမ-က မည်သည်ကား၊ ပိတ္တုမ္မတ္တကော-သည်းခြေကြောင့် ရူးသူတည်း၊ ဟိ- ချဲ့၊ ပိတ္တံ– သည်၊ ဗဒ္ဓပိတ္တံ– ဗဒ္ဓသည်းခြေဎင်း၊ ဝါ– အိမ်ဖြင့် ဖွဲ့ထားအပ်သောသည်းခြေဎင်း၊ အဗဒ္ဓပိတ္တဉ္စ–ဎင်း၊ ဝါ-အိမ်ဖြင့်မဖွဲ့အပ်သော

သည်းခြေရင်း၊ ဉတိ- ဤသို့၊ ဒုဝိဓံ – ၏၊ တတ္ထ – တို့တွင်၊ အဗဒ္ဓပိတ္တံ- သည်၊ လောဟိတံဝိယ-ကဲ့သို့၊ သဗ္ဗင်္ဂဂတံ-အလုံးစုံသော ကိုယ်အင်္ဂါတို့၌ရောက်သည်၊ ဝါ – အလုံးစုံသောကိုယ်အင်္ဂါတို့၌ တည်သည်၊ (ဟောတိ – ၏၊) တမ္ပိ-ထို အဗဒ္ဓသည်းခြေသည်၊ ကုပိတေ-ပျက်လသော်၊ သတ္တာနံ-တို့၏၊ ကဏ္ဍု၊ ကစ္ဆု၊ သရီရကမ္ပာဒီနိ - ယားနာ, ဝဲနာ , ကိုယ် တုန်လှုပ်ခြင်း အစရှိသော ရောဂါတို့သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ [အာဒိသဒ္ဒေန အက္ခီနံ ပီတဝဏ္ဏာဒိံ (မျက်စိဝါခြင်း စသည်ကို ) သင်္ဂဏှာတိ၊] တာနိ – ထို ရောဂါတို့သည်၊ ဘေသဇ္ဇကြိယာယ-ဆေးကုခြင်းဖြင့်၊ ဝူပသမ္မန္တိ - ငြိမ်းနိုင်ကုန်၏၊ ဗဒ္ဓပိတ္တံပန- သည်ကား၊ ပိတ္တကောသကေ–သည်းခြေအိတ်၌၊ ဌိတံ– တည်၏၊ တမ္ပိ-ထို ဗဒ္ဓသည်းခြေသည်၊ ကုပိတေ- သော်၊ [ သည်းခြေအိတ်မှ အပြင်ထွက်လာသည်ကို "ကုပိတ" ဟု ခေါ်သည်၊] သတ္တာ-တို့သည်၊ ဝိပလ္လတ္ထသညာ-ဖေါက်ပြန်သောသညာ ရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ - န်၏၊ ဟိရောတ္တပ္ပံ - ကို၊ ဆဍ္ဍေတွာ– ၍၊ အသာရုပ္ပစရိယံ—မလျော်ပတ်သောအကျင့်ကို၊ စရန္တိ-န်၏၊ လဟုက ဂရုကာနိ–လဟုက ဂရုက ဖြစ်ကုန်သော၊ သိက္ခာပဒါနိ- တို့ကို၊ မဒ္ဒန္တာပိ - လွန်ကျူးမိကုန်သော်လည်း၊ န ဇာနန္တိ – န်၊ ဘေသဇ္ဇကြိယာယပိ – ဆေးကုခြင်းဖြင့်လည်း၊ အတေကိစ္ဆာ-မကုစားအပ် , မကုစားနိုင်ကုန်သည်၊ ဟောန္တိ – န်၏၊ ဝေရူပဿ – သော၊ ဥမ္မတ္တကဿ–သည်းခြေရူးသောရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ (ဟောတိ)။

ဝိသဋ္ဌစိတ္တော - စွန့်လွှတ်အပ်သောစိတ် ရှိသော၊ ယက္ခုမ္မတ္တကော–ဘီလူး ကြောင့် ရူးသူကို၊ ခိတ္တစိတ္တောနာမ – တ္တမည်၏ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ - ၏၊ ကိရ – ချဲ၊ ယက္ခာ-တို့သည်၊ ဘေရဝါနိ – ကြောက်မက်ဘွယ် ကောင်းကုန်သော၊ အာရမ္မဏာနိ - အာရုံတို့ကို၊ ဒဿေတွာဝါ–၍သော်လည်း၊ ( သတ္တေ ဝိက္ခိတ္တစိတ္တေ ဝိပလ္လတ္ထသညေ ကရောန္တိ၊) မုခေန-ပါးစပ်ဖြင့်၊ ဟတ္ထံ– ကို၊ ပဝေသေတွာ–၍၊ ဟဒယရူပံ-ဟဒယရုပ်ကို၊ မဒ္ဒန္တာဝါ- နှိပ်ချေကုန်လျက်သော်လည်း၊ သတ္တေ-တို့ကို၊ ဝိက္ခိတ္တစိတ္တေ- ပစ်လွှတ်အပ်သောစိတ် ရှိသည်တို့ကို၊ ဝိပလ္လတ္ထ

သဗ္ဗင်္ဂဂတံ။ ။သဗ္ဗအင်္ဂေသု+ဂတံ (ဌိတံ) သဗ္ဗင်္ဂဂတံ၊ အသားမှလွတ်နေသော ဆံပင်, မွေးညှင်း, သွား, လက်သည်းတို့ကိုရှင်း, ခြောက်သောအရေကိုရှင်း, ချန်လှပ်၍ ရေပေါ်ဝယ် ဆီပြန်သကဲ့သို့ ကိုယ်အင်္ဂါအားလုံး၌ ပြန့်နှံ့၍တည်၏။

ဝိပလ္လတ္ထသညာ။ ။ဝိ+ပရိပုဗ္ဗ အသဓာတ်နောင် ဏပစ္စည်းသက်လျှင် "ဝိပလ္လာသ" ဟုဖြစ်၍, တပစ္စည်းသက်လျှင် "အတ္ထော" ပုဒ်ကဲ့သို့ "ဝိပလ္လတ္ထ" ဟု ဖြစ်၏၊ ဝိပရိယ သတီတိ ဝိပလ္လတ္ထာ၊ ဝိပလ္လတ္ထာ+သညာ ဧတေသံတိ ဝိပလ္လတ္ထသညာ။ [ပရိနောက်၌ ယ လာ၍ "ပရိယသတိ" ဟု အာချာတ်ရုပ်ဖြစ်၏။]

သညေ- ဖေါက်ပြန်သောသညာ ရှိသည်တို့ကို၊ ကရောန္တိ-နိ၏၊ [ယောဇနာ၌ "ဒဿေတ္တာဝါ ပဝေသေတ္တာဝါ"ဟု ယောဇနာ၏လက်ကိုသွင်းရုံဖြင့် ဝိက္ခိတ္တ မဖြစ်သေး၊ ဟာဒယမဒ္ဒနပြုမှ ဝိက္ခိတ္တ ဖြစ်သောကြောင့် ထို ယောဇနာပုံကို စဉ်းစားပါ။] ဝေရူပယာ- သော၊ ခိတ္တစိတ္တာ-ပစ်လွှတ်အပ်သောစိတ်ရှိသော ရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ (ဟောတိ)၊ ပန- ဆက်၊ (တနည်း) ပန-အထူးကား၊ ဥဘိန္နံ-နှင့်သော၊ တေသံ- ထို ပိတ္တုမ္မတ္တက, ယက္ခုမ္မတ္တကတို့၏၊ အယံ-ကား၊ ဝိသေသော-တည်း၊ ပိတ္တုမ္မတ္တကော-သည်၊ နိစ္စမေဝ-အမြဲသာ၊ ဥမ္မတ္တကော-သည်၊ ဟောတိ၊ ပကတိသည့်-ပကတိသညာကို၊ န လဘတိ-မရတော့၊ ယက္ခုမ္မတ္တကော-သည်၊ အန္တရန္တရာ - အကြား အကြား၌၊ ပကတိသညံ-ကို၊ ပဋိလဘတိ-ရသေး၏၊ ဣတိ (အယံ)-ကား၊ (ဝိသေသော)။

ပန-ဆက်၊ ဣဓ- ဤအနာပတ္တိဝါရ၌၊ ပိတ္တုမ္မတ္တကောဝါ - သည်မူလည်း၊ ဟောတု-စေ၊ ယက္ခုမ္မတ္တကောဝါ-လည်း၊ (ဟောတု)၊ ယော-အကြင်ရဟန်း သည်၊ သဗ္ဗသော-ဖြင့်၊ မုဋ္ဌဿတိ-သည်၊ (ဟုတ္တာ)၊ ကိဉ္စိ-ဘာကိုမျှ၊ နဇာနာ တိ-မသိ၊ အဂ္ဂိမ္ပိ-ကိုဝင်း၊ပေ၊ ကေသဒိသံ-တထပ်တည်းတူစွာ၊ မဒ္ဒန္တော ဝ- နင်းချေလျက်သာ၊ ဝိစရတိ-၏၊ ဝေရူပယာ - ဤသို့သဘောရှိသောရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ၊ အန္တရန္တရာ-၌၊ သညံ - ကို၊ ပဋိလဘိတွာ - ၍၊ ဥတွာ-၍၊ ဝါ- လျက်၊ ကရောန္တဿပန - ၏ကား၊ အာပတ္တိယေဝ - သည်သာ၊ (ဟောတိ)။ ယော-သည်၊ အဓိမတ္တာယ-လွန်ကဲသောအတိုင်းအရှည်ရှိသော၊ ဒုက္ခဝေဒနာ ယ-ဖြင့်၊ အာတုရော-နာကျင်ကိုက်ခဲသည်၊ (ဟုတ္တာ)၊ကိဉ္စိ-ဘာကိုမျှ၊ နဇာနာ တိ၊ ( သော )ဝေဒနာဋ္ဋောနာမ၊ [ ဝေဒနာယ + အဋ္ဋော ( နှိပ်စက်အပ်သူ တည်း၊)ဝေဒနာဋ္ဋော၊]ဝေရူပယာ-၏၊ အနာပတ္တိ၊ ယော-သည်၊ တသ္မိံ တသ္မိံ ကမ္မေ - ထိုထိုအမှု၌၊[ထိုထိုကျူးလွန်မှု၌။]အာဒိဘူတော - အစဖြစ်၍ ဖြစ်၏၊ (သော) အာဒိကမ္မိကောနာမ၊[အာဒိကမ္မေ + နိယုတ္တော အာဒိကမ္မိကော၊] ဣဓပန - ဤ သိက္ခာပုဒ်၌ကား၊ သုဒိန္နတ္ထေရော - သည်၊ အာဒိကမ္မိကော- ကတည်း၊ တဿ - ထို အရှင်သုဒိန်၏၊ အနာပတ္တိ၊ အဝသေသာနံ - အရှင် သုဒိန်မှကြွင်းကုန်သော၊ မက္ကဋိသမဏဝဇ္ဇိပုတ္တကာဒီနံ-မျောက်မကို မှီဲသော ရဟန်း , ဝဇ္ဇီပုတ္တကရဟန်းများ အစရှိသူတို့၏၊ အာပတ္တိယေဝ - သည်သာ၊ (ဟောတိ)၊ ဣတိ-အပြီးတည်း။........ ပဒဘာဇနီယဝဏ္ဏနာ-ပဒဘာဇနီယ အဖွင့်သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။

ပန-ဆက်၊ ဣမသ္မိံ သိက္ခာပဒေ-၌၊ ကောသလ္လတ္ထံ-ကျွမ်းကျင်သောပုဂ္ဂိုလ် ၏ ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ ဉာဏ်အကျိုးငှါ၊ ဣဒံ ပကိဏ္ဏကံ - ဤ ရောပြွမ်းသော

နည်းကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗ - ၏။ .... သမုဋ္ဌာနဥ္စ – ဖြစ်ကြောင်းကိုင်း၊ ကိရိယာစ-ကိရိယာကိုင်း၊ အထော- ထိုမှတပါး၊ သညာ-ကိုင်း၊ သစိတ္တကံ – ကိုင်း၊ လောကဝဇ္ဇဉ္စ – ကိုင်း၊ ကမ္မဥ္စ– ကံကိုင်း၊ ဝေဒနာယ – ဝေဒနာနှင့်တကွ၊ ကုသလဉ္စ-ကိုင်း၊ ဣတိ (ဣဒံ ပကိဏ္ဏကံ–ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ–၏။)

တတ္ထ-ထိုသမုဋ္ဌာန်အစရှိသည်တို့တွင်၊ သမုဋ္ဌာနန္တိ- ကား၊ သဗ္ဗသင်္ဂါဟက ဝသေန-အလုံးစုံသော သိက္ခာပုဒ်တို့ကို သိမ်းယူခြင်း၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဆ-၆ ပါးကုန်သော၊ သိက္ခာပဒ သမုဋ္ဌာနာနိ-သိက္ခာပုဒ်၏ ဖြစ်ကြောင်းတို့သည်၊ (ဟောန္တိ - ရှိကုန်၏၊) တာနိ - ထို သိက္ခာပဒ သမုဋ္ဌာန်တို့သည်၊ ပရိဝါရေ-ပရိဝါ ပါဠိတော်၌၊ အာဝီ - စွာ၊ ဘဝိဿန္တိ – နိလတ္တံ၊ သမာသတော ပန-အကျဉ်းချုပ်အားဖြင့်ကား၊ သိက္ခာပဒံနာမ – မည်သည်၊ [ ဣတိ – ၌စပ်၊] ဆသမုဋ္ဌာနံ - ဆသမုဋ္ဌာန်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်သည်၊ အတ္ထိ- ရှိ၏၊ ပေ၊ ကထိန သမုဋ္ဌာနံ - ကထိနသမုဋ္ဌာန်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်သည်၊ အတ္ထိ – ရှိ၏၊ ဧက

**ဋီကာ။** ။ပကိဏ္ဏကန္တိ – ဝေါမိဿကနယံ၊ သမုဋ္ဌာနန္တိ – ဥပ္ပတ္တိကာရဏံ၊ ကိရိယာတိ အာဒိ နိဒဿနမတ္တံ၊ အကိရိယာဒိနံပိ သင်္ဂဟော ဒဋ္ဌဗ္ဗော၊ [ကြိယာ, သညာ , သစိတ္တကံ, လောကဝဇ္ဇ, ကုသလံတို့သည် (တခုစီကိုသာ ညွှန်ပြထားသဖြင့်) နိဒဿန နည်းတို့တည်း၊ ကိရိယံဖြင့် အကိရိယ , ကိရိယာကိရိယ တို့ကိုင်း , သစိတ္တကံဖြင့် အစိတ္တကံကိုင်း , လောကဝဇ္ဇံဖြင့် ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံကိုင်း, ကုသလံဖြင့် အကုသလံ အဗျာကတံတို့ကိုင်း ယူပါ-ဟူလို။] ဝေဒနာယာတိ သဟယောဂေ ကရဏဝစနံ၊ ဝေဒနာယ သဟ ကုသလဥ္စာတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

**ဆ သိက္ခာပဒ သမုဋ္ဌာနာနိ ။** ။ " ကိုယ်ရယ် – နှုတ်ရယ်, ကိုယ်နှုတ်ရယ်၊.... ကိုယ်စိတ်–နှုတ်စိတ်, ကိုယ်နှုတ်စိတ်" ဟူသော ၆ ပါးကို သမုဋ္ဌာန် ၆ ပါးဟု ခေါ်၏၊ ထို ၆ ပါးတွင် ကိုယ်ကြောင့်ဖြစ်သော သိက္ခာပုဒ် (အာပတ်) သည် ကာယ သမုဋ္ဌာန မည်၏၊ ဤနည်းအတိုင်း ဝါစာ သမုဋ္ဌာန စသည်ကိုလည်း သိပါ၊ ထို ကာယစသည် တို့သည် သိက္ခာပုဒ်၏ ဖြစ်ကြောင်းမဟုတ်, အာပတ်၏ဖြစ်ကြောင်းသာတည်း၊ သို့သော် သိက္ခာပုဒ်ကို နာမည်ခေါင်းတပ်၍ " သိက္ခာပဒ သမုဋ္ဌာနံ " ဟု ဆိုသည်။ [ သိက္ခာပုဒ် ပါဠိတော်၏ ဖြစ်ကြောင်းမှာ ဘုရားရှင်သာတည်း။]

**သိက္ခာပဒံ၊ပေ၊ ဆသမုဋ္ဌာနံ။** ။ ဆဟိ ( ကာယစသော ၆ ပါးတို့ကြောင့် ) သမုဋ္ဌာနံ (ဖြစ်ခြင်းသည်) ယဿ အတ္ထီတိ ဆသမုဋ္ဌာနံ၊ (တနည်း) –"ဆ—ကာယ စသောအားဖြင့် ၆ ပါးကုန်သော၊ သမုဋ္ဌာနာနိ–ဖြစ်ကြောင်းတို့သည်၊ ယဿ အတ္ထီတိ ဆသမုဋ္ဌာနံ၊ (သိက္ခာပဒံ)။

**ကထိနသမုဋ္ဌာနံ။** ။"အတ္ထိ တိ သမုဋ္ဌာနံ"ဟု ဆိုပြီးနောက် "ဒွိ သမုဋ္ဌာနံ"ဟု မဆိုဘဲ " အတ္ထိ ကထိနသမုဋ္ဌာနံ "ဟု စဉ်းပြောင်းခြင်းကား ဒွိ သမုဋ္ဌာန်က ကထိန

လောမသမုဋ္ဌာနံ- သည်၊ အတ္တိ၊ ဓုရနိက္ခေပါဒိ သမုဋ္ဌာနံ - ဓုရနိက္ခေပ အစ ရှိသော သမုဋ္ဌာန်ရှိသောသိက္ခာပုဒ်သည်၊ အတ္တိ၊ ဣတိ- ဤသည်တည်း။

[သမုဋ္ဌာနဘေဒကိုပြပြီး၍ ကိရိယဘေဒကိုပြလိုသောကြောင့်"တတြာပိ" စသည်မိန့်၊ ] တတြာပိ - ထို ၆ ပါးသော သမုဋ္ဌာန်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်တို့တွင် လည်း၊ ကိဉ္စိ-အချို့သိက္ခာပုဒ်သည်၊ ကြိယတော-မပြုထိုက်သော လွန်ကျူးမှုကို ပြုခြင်းကြောင့်၊ သမုဋ္ဌာတိ-ဖြစ်၏၊ ကိဉ္စိ-သည်၊ အကြိယတော-ပြုထိုက်သော ဖြည့်ကျင့်မှုကိုမပြုခြင်းကြောင့်၊ သမုဋ္ဌာတိ-၏၊ ကိဉ္စိ-သည်၊ ကြိယာကြိယတော- မပြုထိုက်သော လွန်ကျူးမှုကို ပြုခြင်း , ပြုထိုက်သော ဖြည့်ကျင့်မှုကို မပြုခြင်း ကြောင့်၊ သမုဋ္ဌာတိ-၏၊ ကိဉ္စိ-သည်၊ သိယာ-ရံခါ၊ ကြိယတော-ကြောင့်ငှင်း၊ သိယာ-ရံခါ၊ အကြိယတော-ကြောင့်ငှင်း၊ သမုဋ္ဌာတိ-၏၊ ကိဉ္စိ-သည်၊ သိယာ- ခါ၊ ကြိယတော-ကြောင့်ငှင်း၊ သိယာ-ခါ၊ ကြိယာကြိယတော၊ သမုဋ္ဌာတိ-၏။

တတြာပိ-ထိုကြိယာအားဖြင့် ပြားသော သိက္ခာပုဒ်တို့တွင်လည်း၊ သညာ ဝိမောက္ခံ-သညာဝိမောက္ခ သိက္ခာပုဒ်သည်၊(ဝီတိက္ကမသညာ မရှိခြင်းကြောင့် လွတ်မြောက်ခြင်းရှိသော သိက္ခာပုဒ်သည်၊) အတ္တိ-ရှိ၏၊ နောသညာဝိမောက္ခံ- နောသညာဝိမောက္ခ သိက္ခာပုဒ်သည်၊ ( ဝီတိက္ကမသညာ မရှိခြင်းကြောင့် လွတ်မြောက်ခြင်း မရှိသော သိက္ခာပုဒ်သည်၊)အတ္တိ၊တတ္ထ-ထို ၂ ပါးတို့တွင်၊ ယံ-အကြင် သိက္ခာပုဒ်သည်၊ စိတ္တင်္ဂံ-စိတ်ဟူသော အင်္ဂါကို၊ လဘတိယေဝ- အမြဲရသည်သာ၊ တံ - ထို သိက္ခာပုဒ်သည်၊ သညာဝိမောက္ခံ - က္ခ မည်၏၊

သမုဋ္ဌာန် – ဧကလောမသမုဋ္ဌာန် ဟု ၂ မျိုး ရှိခြင်း , ဓုရနိက္ခေပါဒိသမုဋ္ဌာန် ၌ကား ဧက သမုဋ္ဌာန်လည်းပါခြင်း,ဒွိ သမုဋ္ဌာန်လည်း ပါခြင်းကြောင့်တည်း၊ ထို အာဒိဖြင့် ပဌမ ပါရာဇိကသမုဋ္ဌာန်, ပဒသောဓမ္မ, ဓမ္မဒေသန, စောရီဝုဋ္ဌာပနသမုဋ္ဌာန် တို့ကိုလည်း ယူ၊ အားလုံး သမုဋ္ဌာန်နာမည်ပေါင်း ၁၃ ပါးရှိ၏၊ ပရိဝါမှာ ရှုပါလေ၊ ထို သမုဋ္ဌာန်တို့၏ သဘောကို ဆိုင်ရာသိက္ခာပုဒ်ကျမှ နားလည်နိုင်လတ့်။

**သညာဝိမောက္ခံ**။ ။ သညာယ (လွန်ကျူးလိုသော အမှတ်သညာ၏) +အဘာ ဝေန–မရှိခြင်းကြောင့် + ဝိမောက္ခော – အာပတ်မှ လွတ်ခြင်းသည်၊ ယဿ အတ္ထိတိ သညာဝိမောက္ခံ၊ အဘာဝဟူသော အလယ်ပုဒ် ကြေသော သမာသ်။ [ နောသညာ ဝိမောက္ခံ=သညာယ ( အဘာဝေနပိ– မရှိခြင်းကြောင့်လည်း၊ မရှိပေမယ်လို့ ) နတ္ထိ ဝိမောက္ခော ယဿာတိ နောသညာဝိမောက္ခံ။]

**စိတ္တင်္ဂံ လဘတိယေဝ**။ ။"ကိုယ်စိတ်, နှုတ်စိတ်, ကိုယ်နှုတ်စိတ်"ဟု စိတ်သည် အင်္ဂါအဖြစ်ဖြင့် ပါသော နောက် သမုဋ္ဌာန် ၃ ပါးတွင် တပါးပါးကြောင့် ဖြစ်သည်– ဟူလို။ [လဘတိယေဝ၌ ဧဝဖြင့် စိတ်အင်္ဂါအမြဲမရ, တရံတခါရ၍ တရံတခါ မရသော သိက္ခာပုဒ်သည် နောသညာဝိမောက္ခ မည်၏–ဟု သိစေ၏။]

ဋ္ဌတရံ – စိတ်အင်္ဂါကို အမြဲမရသော အခြားသိက္ခာပုဒ်သည်၊ နောသညာ ဝိမောက္ခံ-မည်၏၊ ပုန–ဖန်၊ သစိတ္တကံ–စိတ်နှင့် တကွဖြစ်သော သိက္ခာပုဒ်သည်၊ အတ္ထိ၊ အစိတ္တကံ–စိတ်မရှိသော သိက္ခာပုဒ်သည်၊ အတ္ထိ၊ ယံ–အကြင် သိက္ခာပုဒ် သို့၊ ( အာပတ်သို့ - ဟူလို )၊ စိတ္တေန–နှင့်၊ သဟေဝ-တကွသာ၊ အာပဇ္ဇတိ– ရောက်၏၊ တံ–ထို သိက္ခာပုဒ်သည်၊ သစိတ္တကံ-မည်၏၊ ယံ – သို့၊ စိတ္တေန–နှင့်၊ ဝိနာပိ–ကင်း၍လည်း၊ အာပဇ္ဇတိ၊ [ ဝိဖြင့် "မကင်းမူ၍လည်း" ဟု ဆည်း၊] တံ အစိတ္တကံ၊ တံသဗ္ဗမ္ပိ–ထို အလုံးစုံသော သိက္ခာပုဒ်သည်လည်း၊ [သမုဋ္ဌာန် စသည်အားဖြင့် ပြားပြီးသော ထို အလုံးစုံသော သိက္ခာပုဒ်သည်လည်း – ဟူလို။] လောကဝဇ္ဇံ–လောကဝဇ္ဇ သိက္ခာပုဒ်ငါး၊(လောက၌ အပြစ်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်ငါး၊)ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇံ–ပဏ္ဏတ္တိဝဇ္ဇသိက္ခာပုဒ်ငါး၊(ပညတ်တော်ကြောင့် အပြစ်ရှိသောသိက္ခာပုဒ်ငါး၊)ဣတိ–သို့၊ ဒုဝိဓံ-၏၊ တေသံ-ထိုသိက္ခာပုဒ်တို့၏၊ လက္ခဏံ–ကို၊(မယာ)ဝုတ္တမေဝ- သည်သာ၊ [မဏ္ဍိုဝတ္ထုအဖွင့်၌ဆိုခဲ့ပြီ။]

စ-ဆက်၊ ကမ္မကုသလ ဝေဒနာဝသေနာပိ - တံ, ကုသိုလ်, ဝေဒနာတို့၏ အပြားအားဖြင့်လည်း၊ [နောက်ဆုံး ဝေဒိတဗ္ဗံ၌ စပ်၊ ] တ္တေ – ၌ သိက္ခာပုဒ် တို့တွင်၊ ကာယကမ္မံ–ကာယကံ ရှိသော၊ သိက္ခာပဒံ–သည်၊ အတ္ထိ၊ ဝစီကမ္မံ– သော၊ ( သိက္ခာပဒံ )၊ အတ္ထိ၊ တတ္ထ-ထို ၂ ပါးတို့တွင်၊ ယံ–အကြင်သိက္ခာပုဒ် သည်၊ ကာယဒွါရိကံ-ကာယဒွါရ၌ဖြစ်၏၊ တံ–သည်၊ ကာယကမ္မံ-ကာယကမ္မ မည်၏၊ ယံ-သည်၊ ဝစီဒွါရိကံ–၏၊ တံ–သည်၊ ဝစီကမ္မံ–မည်၏၊ ဣတိ–သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ ပန-ကား၊ကုသလံ-ကုသိုလ်ဖြစ်သော၊ သိက္ခာပဒံ-သည်၊အတ္ထိ၊ အကုသလံ (သိက္ခာပဒံ) အတ္ထိ၊ အဗျာကတံ (သိက္ခာပဒံ) အတ္ထိ၊ ဟိ-မှန်၊ အာပတ္တိ သမုဋ္ဌာပကစိတ္တာနိ - အာပတ်ကို ဖြစ်စေတတ်သော စိတ်တို့သည်၊ (ဒွတ္တိံသေဝ၌ စပ်၊) အဋ္ဌ-န်သော၊ ကာမာဝစရ ကုသလာနိ–ကာမာဝစရ ကုသိုလ်စိတ်တို့ငါး၊ ဒွါဒသ-န်သော၊ အကုသလာနိ–တို့ငါး၊ ဒသ-န်သော၊

သညာ – သစိတ္တက ။ ၊ သညာဒုကကို အာပတ် မသင့်ဘို့ရာ ဘက်သို့ ရှေးရှု၍ မိန့်တော်မူ၏၊ သစိတ္တကဒုကကိုကား (စိတ်မပါဘဲလည်း သင့်ရကား ) အာပတ်သင့်ဘို့ ဘက်ကို ရှေးရှု၍ မိန့်တော်မူသည်၊ ဤသို့ ဒုက ၂ ပါး၏ ထူးခြားပုံကို မှတ်ပါ။ [သညာ ဒုကံ အနာပတ္တိမုခေန ဝုတ္တံ၊ သစိတ္တကဒုကံ အာပတ္တိမုခေန ဝုတ္တံတိ ဣဒ မေ တေသံ နာနာကရဏံ။]

ကမ္မတိက ။ ။ ရှေးအဋ္ဌကထာတို့၌ လာသည့်အတိုင်း ကံအားဖြင့် ကာယကမ္မ သိက္ခာပုဒ်, ဝစီကမ္မ သိက္ခာပုဒ်ဟု ဤအဋ္ဌကထာ၌ ၂ မျိုးသာပြသော်လည်း ကင်္ခါဝိတရဏီ မည်သော မာတိကာအဋ္ဌကထာ၌ကား ကာယကမ္မ ဝစီကမ္မ ၂ ပါးစုံသော သိက္ခာပုဒ်ကို ထည့်၍ "ကာယကမ္မ ဝစီကမ္မ တဒုဘယဝသေန တိဝိဓာ ဟောန္တိ"ဟု မိန့်သည်။

ကာမာဝစရ ကြိယစိတ္တာနိ- တို့ငင်း၊ ကုသလတော စ- မှငင်း၊ ကြိယတော စ- မှငင်း၊ ဋ္ဌေ-န်သော၊ အဘိညာစိတ္တာနိ-တို့ငင်း၊[ရူပကုသိုလ် ကြိယာပဉ္စမဈာန် ၂ ပါးကိုဆိုသည်၊ ] ဣတိ-သို့၊ ဒွတ္တိံသေဝ-၃၂ ပါးသာတည်း။ [သင်္ဂြိုဟ်ရူပ သမုဋ္ဌာန်ခဏ်း၌လာသော ဝိညတ်ကို ဖြစ်စေတတ်သော စိတ်များပင်တည်း၊ ပညတ်တော်ကို မသိ၍ တန်ခိုးဖန်ဆင်းပြရာ၌ အဘိညာဉ်စိတ်နှင့် ပြည့်စုံစဉ် အာပတ်သင့်သတဲ့။]

တေသု-ထိုစိတ်တို့တွင်၊ ယံ-အကြင် သိက္ခာပုဒ်သို့၊ ကုသလ စိတ္တေန-ဖြင့်၊ အာပဇ္ဇတိ – ၏၊ တံ – သည်၊ ကုသလံ – မည်၏၊ ဣတရေဟိ – အခြားသော အကုသိုလ် အဗျာကတတို့ကြောင့်၊ (အာပန္န-သင့်ရောက်အပ်သော သိက္ခာပုဒ် သည်၊ ) ဣတရံ – အခြားသော အကုသလ, အဗျာကတ မည်၏၊ စ - ဆက်၊ တိဝေဒနံ- ၃ ပါးသောဝေဒနာရှိသော၊ သိက္ခာပဒံ-သည်၊ အတ္ထိ၊ပေ၊တတ္ထ- ထို သိက္ခာပုဒ်တို့တွင်၊ ယံ-အကြင်သိက္ခာပုဒ်သို့၊ အာပဇ္ဇန္တော–ရောက်သော ရဟန်းသည်၊ တိသု-န်သော၊ ဝေဒနာသု– တို့တွင်၊ အညတရဝေဒနာသမင်္ဂီ– တပါးပါးသော ဝေဒနာနှင့် ပြည့်စုံသည်၊ ဟုတွာ-၍၊ အာပဇ္ဇတိ–၏၊ တံ–ထို သိက္ခာပုဒ်သည်၊ တိဝေဒနံ - တိဝေဒန မည်၏၊ ယံ–သို့၊ အာပဇ္ဇန္တော– သည်၊ သုခသမင်္ဂီ–သုခဝေဒနာနှင့် ပြည့်စုံသည်၊(ဟုတွာ)ဝါ-ငင်း၊ ဥပေက္ခာဝေဒနာ သမင်္ဂီ–သည်၊(ဟုတွာ)ဝါ–သော်ငင်း၊ အာပဇ္ဇတိ-၏၊ တံ–သည်၊ ဒွိဝေဒနံ– မည်၏၊ ယံ–သို့၊ အာပဇ္ဇန္တော–သည်၊ ဒုက္ခဝေဒနာသမင်္ဂီယေဝ- သည်သာ၊ ( ဟုတွာ ) အာပဇ္ဇတိ-၏၊ တံ ဧကဝေဒနံ၊ ဣတိ–သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ–၏။

ဧဝံ - သို့၊ သမုဋ္ဌာနဉ္စ - သမုဋ္ဌာန်ငင်း၊ [ ဣတိ၌စပ်၊ ] ကိရိယာ - ငင်း၊ အထော–ပါး၊ သညာ–ငင်း၊ သစိတ္တကံ - ငင်း၊ လောကဝဇ္ဇဉ္စ - ငင်း၊ ကမ္မဉ္စ- ငင်း၊ ဝေဒနာယ-နှင့်တကွ၊ ကုသလံစ - ငင်း၊ ဣတိ-သို့၊ (ဣဒံ ပကိဏ္ဏကံ–ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊) ဣမံ ပကိဏ္ဏကံ-ကို၊ ဝိဒိတွာ – သိပြီး၍၊ [နောက်"ဒွိဝေဒနန္တိ ဝေဒိတဗ္ဗံ"ဝယ် ဝေဒိတဗ္ဗံ၌စပ်၊]တေသုသမုဋ္ဌာနာဒီသု - တို့တွင်၊ ဣဒံသိက္ခာ ပဒံ-၍ပဌမပါရာဇိကသိက္ခာပုဒ်သည်၊ သမုဋ္ဌာနတော – သမုဋ္ဌာန်အားဖြင့်၊ ဧကသမုဋ္ဌာနံ – တခုသောသမုဋ္ဌာန်ရှိ၏၊ အင်္ဂဝသေန – ဖြင့်၊ ဒုကသမုဋ္ဌာနံ– ၂ ပါးသောသမုဋ္ဌာန်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်တည်း၊ ကာယစိတ္တတော - အားဖြင့်၊ သမုဋ္ဌာတိ-ဖြစ်၏၊ [ဒုကသမုဋ္ဌာနံကို ထပ်၍ဖွင့်သည်၊]ကြိယသမုဋ္ဌာနဉ္စ-ကြိယ သမုဋ္ဌာန်လည်းရှိ၏၊ [ကြိယသမုဋ္ဌာနံတိဣဒံ ယေဘုယျဝသေန ဝုတ္တံ၊ ပရူပက္က မေ သတိ ( သူတပါးက အတင်းပြုရာ၌ ) သာဒယန္တဿ အကိရိယသမုဋ္ဌာန ဘာဝတော၊]ဟိ – မှန်၊ ကရောန္တောယေဝ – မပြုထိုက်သော လွန်ကျူးမှုကို

ပြုသောရဟန်းသည်သာ၊ ကေ-၍သိက္ခာပုဒ်သို့၊ ဝါ-၍ အာပတ်သို့၊ အာပဇ္ဇတိ- ၏၊ [ကြိယသမုဋ္ဌာန်ကို ထပ်ဖွင့်သည်၊] မေထုနပဋိသံယုတ္တာယ - သော၊ ကာမသညာယ-၏၊ အဘာဝေန - မရှိခြင်းကြောင့်၊ ဝါ - မရှိခဲ့သော်၊ မုစ္စနတော-အာပတ်မှလွတ်ခြင်းကြောင့်၊ သညာဝိမောက္ခံ- ကွတည်း၊ (ဝိတိက္ကမသညာ၏ မရှိခြင်းကြောင့် အာပတ်မှ လွတ်မြောက်ခြင်းရှိသော သိက္ခာပုဒ်တည်း၊)ဟိ- သာဓကကား၊ အနာပတ္တိ အဇာနန္တဿ, အသာဒယန္တဿာတိ-ဟူ၍၊(ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ-ပြီ။

မေထုနစိတ္တေနေဝ- မေထုန်၌ဖြစ်သောစိတ်ဖြင့်သာလျှင်၊ နံ - ထိုသိက္ခာပုဒ်သို့၊ ဝါ - ထိုအာပတ်သို့၊ အာပဇ္ဇတိ၊ စိတ္တေန - မေထုန်စိတ်နှင့်၊ ဝိနာ-၍၊ န အာပဇ္ဇတိ-မရောက်၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ သစိတ္တကံ-ကတည်း၊ (စိတ်နှင့်တကွဖြစ်သော သိက္ခာပုဒ်တည်း၊ ) ရာဂဝသေနေဝ- ဖြင့်သာ၊ အာပဇ္ဇိတဗ္ဗတော-ရောက်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ လောကဝဇ္ဇံ-တည်း၊ (လောက၌ အပြစ်ရှိသောသိက္ခာပုဒ်တည်း၊)ကာယဒွါရေနေဝ- ကြောင့်သာ၊ သမုဋ္ဌာနတော-ကြောင့်၊ ကာယကမ္မံ - တည်း၊ (ကာယကံရှိသော သိက္ခာပုဒ်တည်း၊) ပန-ဆက်၊ ဧတ္ထ-၍သိက္ခာပုဒ်၌၊ စိတ္တံ-သည်၊ အင်္ဂမတ္တံ- အင်္ဂါမျှသည်၊ ဟောတိ-၏၊ တဿ-ထိုစိတ်၏၊ ဝသေန-အစွမ်းအားဖြင့်၊ ကမ္မဘာဝေါ-ကံ၏အဖြစ်ကို၊ ဝါ-ကံအမည်ကို၊ န လဗ္ဘတိ-အပ်၊ လောဘစိတ္တေန-ဖြင့်၊ အာပဇ္ဇိတဗ္ဗတော-ကြောင့်၊ အကုသလစိတ္တံ – အကုသိုလ်စိတ်ရှိသော သိက္ခာပုဒ်တည်း၊ သုခသမင်္ဂီ-သုခဝေဒနာနှင့်ပြည့်စုံသည် (ဟုတ္វာ )ဝါ-၍သော်၎င်း၊ ဥပေက္ခာသမင်္ဂီ (ဟုတွာ)ဝါ, တံ – သို့၊ ဝါ-သို့၊ အာပဇ္ဇတိ-၏၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ဒွိဝေဒနံ - န တည်း၊ ( ၂ ပါးသော ဝေဒနာရှိသော သိက္ခာပုဒ်တည်း၊) ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗံ။

စ-ဆက်၊ သဗ္ဗံ-သော၊ ဧတံ-၍ ဆ သမုဋ္ဌာန်အစ, ဒွိဝေဒနံ အဆုံးရှိသော စကားသည်၊ အာပတ္တိယံ – အာပတ်၌၊ ယုဇ္ဇတိ- ဖြစ်သင့်၏၊ ပန – ထိုသို့ပင် အာပတ်၌ဖြစ်သင့်ပါသော်လည်း၊ သိက္ခာပဒသီသေန -သိက္ခာပုဒ်ကို ခေါင်းတပ်သဖြင့်၊ သဗ္ဗအဋ္ဌကထာသု-အလုံးစုံသော ရှေးအဋ္ဌကထာတို့၌၊ ဒေသနာ-သည်၊ အာရူဠ္ဟာ–တက်ရောက်ပြီ၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ ဧဝံ -သို့၊ (၍ ဆ သမုဋ္ဌာန်အစရှိသည်ဖြင့်၊ ) (မယာ) ဝုတ္တံ- ဆိုအပ်ပြီ၊ ဝါ- ဆိုခဲ့ပြီ။ [ ဆ သမုဋ္ဌာန်မှစ၍ ဒွိဝေဒနံတိုင်အောင်သောသဒ္ဒါသည် အာပတ်ဟူသောအနက်၌သာဖြစ်သင့်၏၊ သို့သော် ရှေး အဋ္ဌကထာတို့၌ သိက္ခာပုဒ်ကိုခေါင်းတပ်လျက် "ဆ သမုဋ္ဌာန်" စသည်ဖြင့် နပုလ္လိန်ဖြင့်လာသောကြောင့် ထိုအတိုင်းပင် ဆ သမုဋ္ဌာန်စသည်ဖြင့် နပုလ္လိန်ပုဒ်ကို ဆိုရတော့သည်-ဟူလို။]

မက္ကဋိ ဝဇ္ဇိပုတ္တာစ၊ပေ၊ ဝုမ္ဘပမ္မဇ်တော မိဂေါတိ- မိဂေါဟူသော၊ ဍုဒံ- ဤစကားရပ်သည်၊ ကိံ - အဘယ်စကားနည်း၊ [ ဝိနည်းပညတ်တော်လည်း မဟုတ်, စပ်ပုဒ်လည်းမရှိသောကြောင့် ပိဏ္ဍတ္ထအဓိပ္ပါယ် ကောက်၍မရသဖြင့် "ဘာစကားလဲ"ဟု မေးသည်၊] ဍုမာ- ဤ ဂါထာတို့ကို၊ [ထပိတာ-၌စပ်၊] ဝါ-တို့သည်၊ [ဥဒ္ဒါန ဂါထာနာမ-၌စပ်၊] ဝိနီတဝတ္ထုနံ- ဝိနီတဝတ္ထုတို့၏၊ ဘဂဝတာ- သည်၊ သယံ- ကိုယ်တော်တိုင်၊ ဝိနိစ္ဆိတာနံ- ဆုံးဖြတ်တော်မူအပ်ကုန်သော၊ တေသံ တေသံ ဝတ္ထုနံ - ထိုထို ဝတ္ထုတို့၏၊ ဥဒ္ဒါနဂါထာနာမ- အကျဉ်းချုပ်ဂါထာတို့ မည်၏၊ **တာနိဝတ္ထုနိ**-ထို ဝတ္ထုတို့ကို၊ [ဥဂ္ဂဏှိုသန္တိ- ၌စပ်၊] သုခံ-လွယ်ကူစွာ၊ ဝိနယဓရာ-ဝိနည်းဓိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ ဥဂ္ဂဏှိုသန္တိ- သင်ယူနိုင်ကုန်လတ္တံ့၊ ဍုတိ-ဤသို့ နှလုံးသွင်း၍၊ ဓမ္မသင်္ဂါဟကတ္ထေရေဟိ-ဓမ္မ သံဂါယနာတင် ထေရ်တို့သည်၊ ထပိတာ-ထားအပ်ကုန်ပြီ၊ ဝတ္ထုဂါထာပန- ဝတ္ထုတို့ကို သိကုံး ထုံးဖွဲ့ကြောင်းပါဠိကိုကား၊ ("မက္ကဋိ ဝဇ္ဇိပုတ္တာစ"စသော

**ဍုမာ၊ပေ၊ ဥဒ္ဒါနဂါထာနာမ။** ။ဍုမာကို "ဥဒ္ဒါန ဂါထာနာမ"၌ စပ်ရမည် ဖြစ်သောကြောင့် "ဍုမာနိ"ဟု မရှိစေသင့်၊ ထို့ပြင် "ဝိနီတဝတ္ထုနိ"ဟု တချို့စာအုပ် များ၌ရှိ၏၊"ဘဂဝတာ သယံ ဝိနိစ္ဆိတာနံ တေသံ တေသံဝတ္ထုနံ"သည် ထိုပုဒ်၏အဖွင့် ဖြစ်သောကြောင့် "ဝိနီတဝတ္ထုနံ"ဟု ရှိသင့်သည်၊ "ဝိနီတာနိ — ဘုရားရှင်ကိုယ်တော် တိုင် (အာပတ္တိံ တွံ ဘိက္ခု၊ အာပန္နော ပါရာဇိကံ — စသည်ဖြင့်) ဆုံးဖြတ်တော်မူအပ် ကုန်သော+ဝတ္ထုနိ—ဝတ္ထုတို့တည်း၊ ဝိနီတဝတ္ထုနိ—တို့၊ " တေသံ ဝိနီတဝတ္ထုနံ"ဟု ဝိဘတ်ချွန်ခံ။

**ဥဒ္ဒါနဂါထာ။** ။"ဒါ—ရက္ခဏေ"ဟု ဓာတ်နက်ရှိ၏၊ "ဥဒ္ဓံ—အထက်ဖြစ်သော နောက်ကာလ၌+ဒါတိ ရက္ခတိ-(ဘုရားရှင် ဆုံးဖြတ်တော်မူအပ်သော ဝိနီတဝတ္ထုတို့ကို မပျောက်ပျက်အောင်) စောင့်ရှောက်တတ်၏၊ ဍုတိ ဥဒ္ဒါနံ၊ [ဥဒ္ဒါနဂါထာတ် ဥဒ္ဒေသ ဂါထာ ( အကျဉ်းချုပ်ဂါထာ )။] ဤ ခေါင်းစဉ်ဂါထာကိုကြည့်၍ "မည်သည့်ဝတ္ထု အခြားမှဲ့၌ မည်သည့်ဝတ္ထု ရှိ၏"ဟု သိနိုင်သောကြောင့် ဤ ဂါထာများသည် ထို ဝတ္ထု တို့ကို မပျောက်ပျက်အောင် စောင့်ရှောက်နိုင်၏၊ ထို့ကြောင့် ဥဒ္ဒါနဂါထာမည်သည်- ဟူလို၊ ဥနောက်၌ ဒွေဘော်ရောက်ရသောကြောင့် "ဥဒ္ဒါန"ဟု ရှိစေ။ [ဝိမတိ၌ကား— "တံတံ ဝတ္ထုံ ဥဒ္ဓရိတွာ ဒါနတော ဒဿနတော ဥဒ္ဒါနဘူတာ ( ထိုထိုဝတ္ထုကို ထုတ်ပြ တတ်သည်ဖြစ်၍ ဖြစ်သော ) ဂါထာ ဥဒ္ဒါနဂါထာ"ဟု ဆို၏။]

**တာနိ၊ပေ၊ထပိတာ။** ။တာနိဝတ္ထုနိသည် ဥဂ္ဂဏှိုသန္တိ၏ကံတည်း၊ ထပိတာ၏ ကံကား "ဍုမာ ဥဒ္ဒါနဂါထာ" တည်း၊ ထို့ကြောင့် "ထပိတာနိ"ဟု မရှိစေသင့်၊ ထို ဝိနီတဝတ္ထုတို့ကို ဓမ္မသင်္ဂါဟကထေရ်များ ထားသည်မဟုတ်၊ အရှင် ဥပါလိထားသည်၊ ဓမ္မသင်္ဂါဟကထေရ်တို့ကား (ထို ဝတ္ထုတို့ကို လွယ်ကူစွာ ဝိနည်းဓိုရ်များ ဆောင်ထား ဘို့ရာ) ဤဂါထာတို့ကိုထားသည်။

ဂါထာတို့၏ ဝတ္ထုကိုကား၊) ဘဂဝတိ– သည်၊ ဓရမာနေယေဝ–သက်တော် ထင်ရှား ရှိစဉ်ပင်လျှင်၊ ဥပါလိတ္ထေရေန-သည်၊ ထပိတာ- ထားအပ်ပြီ၊ (ကိံ- အဘယ်သို့ကြံ၍ထားအပ်ကုန်သနည်း၊) ဇုမိနာ လက္ခဏေန – ၍ လက္ခဏာ ဖြင့်၊ အာယတိံ-နောင်အခါ၌၊ ဝိနယဓရာ-တို့သည်၊ ဝိနယံ-ကို၊ ဝိနိစ္ဆိနိဿန္တိ- ဆုံးဖြတ်နိုင်ကုန်လတ္တံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ (ထပိတာ - ပြီ၊) တသ္မာ– ကြောင့်၊ ထေ္တ–၍ ဝိနီတဝတ္ထုတို့၌၊ ဝုတ္တလက္ခဏံ-ကို၊ သာဓုကံ–စွာ၊ သလ္လက္ခေတွာ– မှတ်သား၍၊ ပဌမသိက္ခာပဒံ-ကို၊ ဝိနိစ္ဆိတဗ္ဗံ-ဆုံးဖြတ်ထိုက်၏၊ ဒုတိယာဒီနဥ္စ- ဒုတိယသိက္ခာပုဒ် အစရှိသည်တို့၏လည်း၊ ဝိနီတဝတ္ထူသု – တို့၌၊ ဝုတ္တလက္ခ ဏေန-ဖြင့်၊ ဒုတိယာဒီနိ-ဒုတိယ အစရှိသောသိက္ခာပုဒ်တို့ကို၊ (ဝိနိစ္ဆိတဗ္ဗာ နိ–န်၏၊) ဟိ-မှန်၊ (တနည်း) ဟိ (ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ ဝိနီတဝတ္ထူနိ-တို့သည်၊ သိပ္ပိကာနံ- ပန်းချီ အတတ်သင်သူတို့၏၊ ပဋိစ္ဆန္နက ရူပါနိဝိယ – ဖုံးထားအပ် သော အရုပ်တို့ကဲ့သို့၊ [သင်သောအခါ ကြည့်၍သင်ဘို့ရန် ဖုံးကွယ် ဖှက်ထား အပ်သော အရုပ်တို့ကဲ့သို့ - ဟူလို၊] ဝိနယဓရာနံ – တို့၏၊ ပဋိစ္ဆန္နကဝတ္ထူနိ- ဖုံးထားအပ်သော ဝတ္ထုတို့သည်၊ ဟောန္တိ–န်၏၊ ဇုတိ–ကြောင့်၊ (ဝုတ္တလက္ခ ဏေန–ဖြင့်၊ ဝိနိစ္ဆိတဗ္ဗာနိ-န်၏၊) တတ္ထ–ထို ဝတ္ထုတို့တွင်၊ ပုရိမာနိ-န်သော၊ ဒွေ ဝတ္ထူနိ-တို့သည်၊ အနုပညတ္တိယံယေဝ-၌ပင်၊ ဝုတ္တတ္တာနိ-ဆိုအပ်ပြီးသော အနက်ရှိကုန်၏၊ တတိယေ–သော၊ ဝတ္ထုမှိ–၌၊ ဂိဟိလိင်္ဂေနာတိ – ကား၊ ဂိဟိ ဝေသေန – လူ့ အသွင်ဖြင့်၊ ဩဒါတဝတ္ထော-ဖြူသောအဝတ်ရှိသည်၊ ဟုတွာ၊ (ပဋိသေဝိ–မှီဝဲပြီ၊) စတုတ္ထေ–၌၊ ကိဉ္စိ–တစုံတခုသော၊ ဝတ္ထုမ္ဗံ–ဆိုဘွယ်သည်၊ နတ္ထိ–မရှိတော့။

တတော – ထို စတုတ္ထဝတ္ထုမှ၊ ပရေသု- နောက်ဖြစ်ကုန်သော၊ သတ္တသု– ကုန်သော၊ ဝတ္ထူသု – တို့၌၊ ကုသစီရန္တိ - ကား၊ ကုသေ– သမန်းမြက်တို့ကို၊ ဂန္ထေတွာ - သီကုံး၍၊ ကတစီရံ – ပြုအပ်သောအဝတ်တည်း၊ ဝါကစီရံနာမ–

ဝတ္ထု ဂါထာပန။ ။တေနခေါ ပန သမယေန အညတရော ဘိက္ခုတိ အာဒိကာ နိဒါနဝတ္ထုဒီပိကာ ဝိနီတဝတ္ထုပါဠိယေဝ (နိဒါန်းဝတ္ထုကိုပြတတ်သော ဝိနီတဝတ္ထုပါဠိ တော်ကိုပင် ) တေသံ တေသံ ဝတ္ထူနံ ဂန္ထနတော ဝတ္ထုဂါထာတိ ဝုတ္တာ၊ န ဆန္ဒော ဝိစိတိလက္ခဏေန – ဆန်းကျမ်းလက္ခဏာနှင့် အညီ စီအပ်သော ဂါထာများ မဟုတ်, ဝိနီတဝတ္ထုတို့ကို စုဏ္ဏိယ ဝါကျအနေအားဖြင့် သီကုံး ထုံးဖွဲ့ထားသောကြောင့် “ဝတ္ထု ဂါထာ”ဟု ခေါ်ထားသည်–ဟူလို။ [တနည်း-“ဂါထာနံ+ဝတ္ထု၊ ဝတ္ထုဂါထာ=မတ္တဥ္စ ဝဋ္ဋပုတ္တာဒ စသောဂါထာတို့၏ ဝတ္ထုကြောင်း”ဟုလည်းပြုပါ၊ ဤဋီကာဖွင့်ကို ထော်၍ “ထိုဝတ္ထုများကို ဓမ္မသံဂါဟကထေရ်တို့ ထားသည်မဟုတ်,အရှင်ဥပါလိ ထားသည်-” ဟုသိသာပြီ။]

မည်သည်၊ တာပသာနံ - ရသေ့တို့၏၊ ဝက္ကလံ - လျှော်တေတည်း၊ ဖလကစီရံ နာမ-မည်သည်၊ ဖလကသဏ္ဌာနာနိ-ပျဉ်ချပ်ငယ်သဏ္ဌာန် ရှိကုန်သော၊ ဖလကာနိ-အပြားငယ်တို့ကို၊ သိဗ္ဗိတွာ-ဆက်စပ်၍၊ ဝါ-သီကုံး၍၊ ကတစီရံ-တည်း၊ ကေသကမ္ဗလောတိ-ကား၊ ကေသေဟိ-လူဆံပင်တို့ဖြင့်၊ တန္တေ-ယက်ကန်း၌၊ ဝါယိတွာ-ယက်၍၊ ကတကမ္ဗလော-ပြုအပ်သောကမ္ဗလာတည်း၊ ဝါလကမ္ဗလောတိ-ကား၊ စမရဝါလေဟိ-စမရသားကောင်၏ အမြီးဆံတို့ဖြင့်၊ [ရှေးက "စာမရီသားကောင်၏ အမြီးတို့ဖြင့်"ဟု ပေးကြ၏၊] ဝါယိတွာ – ၍၊ ကတကမ္ဗလော–တည်း၊ ဥလူကပက္ခိကန္တိ-ကား၊ ဥလူက သကုဏဿ-ခင်ပုတ်ငှက်၏၊ ပက္ခေဟိ- အတောင်တို့ဖြင့်၊ ကတနိဝါသနံ – ပြုအပ်သောအဝတ်တည်း၊ အဇိနက္ခိပန္တိ-ကား၊ သလောမံ-အမွေးတို့နှင့်တကွ ဖြစ်သော၊ သခုရံ-ခွါတို့နှင့် တကွဖြစ်သော၊ (ရှေးက " ခြေသည်းမြွာနှင့်တကွ ဖြစ်သော " ဟု ပေး၏၊ ) အဇိနမိဂစမ္မံ-အဇိနမည်သော သမင်၏အရေတည်း၊ ဒွါဒသမေ-သော၊ ဝတ္ထုမှိ-၌၊ သာရတ္တောတိ-ကား၊ ကာယသံသဂ္ဂရာဂေန-ဖြင့်၊ သာရတ္တော-လွန်စွာ တပ်မက်သည်၊ (ဟုတွာ ပဝေသေသိ– သွင်းပြီ၊) တံ ရာဂံ- ထို ကာယသံသဂ္ဂရာဂကို၊ ဥတ္တွာ-မှု၍၊ ဘဂဝါ-သည်၊ အာပတ္တိ သံဃာဒိသေသဿာတိ-ဟူ၍၊ အာဟ–မူပြီ။

တေရသမေ-သော၊ ဝတ္ထုမှိ–၌၊ ဥပ္ပလဝဏ္ဏာတိ – ကား၊ သာထေရီ-ထို ထေရ်မသည်၊ သာဝတ္ထိယံ – ၌၊ သေဋ္ဌိဓီတာ-တည်း၊ သတသဟဿကပ္ပေ – ကမ္ဘာတသိန်းမြောက်၌၊ ဝါ- ကမ္ဘာတသိန်းထက်၌၊ အဘိနီဟာရသမ္ပန္နာ– ရှေးရှုဆောင်ကြောင်း ဆုတောင်းမှုနှင့်ပြည့်စုံသည်၊ (ဟုတွာ)၊ တဿာ – ထို

**စမရဝါလေဟိ။** ။စမရဿ–စာမရီခေါ်သော တိဘက်နွားဏ်၊ ဝါလာနိ–အမြီးဆံတို့တည်း၊ စမရဝါလာနိ–တို့၊ မြန်မာတို့က " စာမရီ " ဟုခေါ်သော်လည်း ပါဠိ၌ "စမရ"ဟုသာ ရှိ၏။ [ထိုသားကောင်၏အကြောင်း အဘိဓာန်နိဿယသစ် (၆၁၉) ဂါထာမှာရှု။]

**အဇိနက္ခိပံ။** ။အက္ခိပီယတေ– ကိုယ်၏ ဝဲ ယာ ရှေ့ နောက်၌ ပစ်ချအပ်၏၊ ဣတိ အက္ခိပေါ၊ (အာပုဗ္ဗ, ခိပဓာတ်၊) အဇိနဿ+အက္ခိပေါ အဇိနက္ခိပေါ၊ တံ အဇိနက္ခိပံ– ကိုယ်၏ ဝဲ ယာ ရှေ့နောက်၌ ပစ်ချအပ် (ခြုံအပ်) သော သမင်ရေကို။ ["အဇိန– သစ်နက်"ဟု ပေးကြ၏၊ အဘိဓာန်နိဿယသစ်၌ "သမင်"ဟု ပင် ပေး၏။]

**အဘိနီဟာရ သမ္ပန္နာ။** ။အဘိနီဟရတိ ဧတေနာတိ အဘိနီဟာရော=မိမိစိတ်ကို သာဝိကာပါရမီဉာဏ်သို့ ရှေးရှုဆောင်ကြောင်းဖြစ်သော ဆုတောင်းမှု (စိတ်ညွတ်မှု၊) တေန+သမ္ပန္နာ အဘိနီဟာရသမ္ပန္နာ။

ထေရ်မ၏၊ ပကတိယာပိ-ပင်ကိုယ်အားဖြင့်လည်း၊ အတိဒဿနီယာ- အလွန်ရှုချင်ဘွယ် ကောင်းသော၊ နီလုပ္ပလဝဏ္ဏာ – ကြာညိုအဆင်းနှင့် တူသော အဆင်းရှိသော၊ ကာယစ္ဆဝိ-ကိုယ်အရေသည်၊ (ဟောတိ)၊ ပန-ဆက်၊ အဗ္ဘန္တရေ-ကိုယ်တွင်း၌၊ ကိလေသသန္တာပဿ- ကိလေသာအပူ၏၊ အဘာဝေန– မရှိခြင်းကြောင့်၊ အတိဝိယ – သာ၊ ဝိရောစတိ-တင့်တယ်၏၊ သာ-ထိုထေရ်မသည်၊ တာယေဝ ဝဏ္ဏပေါက္ခရတာယ – ထို အဆင်း၏ လှသည်၏အဖြစ်ကြောင့်ပင်၊ ဝါ – ထို အဆင်းနှင့်ပြည့်စုံသော ကိုယ်ကြောင့်ပင်၊ ဥပ္ပလဝဏ္ဏာတိ-ဥပ္ပလဝဏ္ဏာဟူ၍၊ နာမံ– ကို၊ လဘိ–ပြီ၊ ပဋိဗဒ္ဓစိတ္တောတိ – ကား၊ ဂိဟိကာလတော– လူဖြစ်ရာအခါမှ၊ ပဋ္ဌာယ – ၍၊ ရတ္တစိတ္တော – တပ်မက်သော စိတ်ရှိသည်၊(ဟောတိ)၊သော-ထိုလုလင်သည်၊ တဿာ-၏၊ ဉာတိဒါရကော- ဆွေမျိုးတော်သောလုလင်ငယ်သည်၊ ဟောတိ ကိရ–တတ်။

အထခေါ်တိ - သဒ္ဒါသည်၊ အနန္တရတ္ထေ – အခြားမဲ့ဟူသော အနက်၌၊ (ပဝတ္တော-သော၊) နိပါတော – တည်း၊ [အထသဒ္ဒါ၏ အဓိကာရစသော အနက်တို့တွင် အနန္တရအနက်ဟော-ဟူလို၊] မဥ္စကေ - ညောင်စောင်းငယ်၌၊ နိသိန္နာနန္တရမေဝ-ထိုင်ပြီး၏အခြားမဲ့၌သာ၊ ဇုတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဟိ-ဆက်၊ ဝါ – ၌၊ ဗာဟိရတော– ပြင်ဘက်မှ၊ အာဂတ္တွာ–၍၊ ဒွါရံ – ကို၊ ပိဓာယ– ပိတ်၍၊ ပဌမနိသိန္နာနံ–ထိုင်နေခါစပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊ အန္ဓကာရော– အမိုက်မှောင်

အတိဒဿနီယာ။ ။ဒိဝသံပိ (တနေ့လုံးလည်း) ပဿန္တာနံ (ကြည့်သူတို့၏) အတိတ္တိကရဏတော ( အားမရအောင် ပြုနိုင်ခြင်းကြောင့်) အတိဝိယ ဒဿနယောဂ္ဂါ (အလွန်ကြည့်ခြင်း၌ လျောက်ပတ်၏, အလွန် ကြည့်ဘွယ်ကောင်း၏၊)။ [အတိဝိယ+ ပဿိတဗ္ဗာတိ အတိဒဿနီယာ။]

ဝဏ္ဏပေါက္ခရတာယ။ ။ပေါက္ခရတာ ဝုစ္စတိ သုန္ဒရဘာဝေါ=ကောင်းသည်၏ အဖြစ်ကို ပေါက္ခရတာ ဟု ဆိုအပ်၏၊ ဝဏ္ဏဿ + ပေါက္ခရတာ ဝဏ္ဏ ပေါက္ခရတာ= အဆင်း၏ကောင်းသည်၏အဖြစ်၊ ဝါ–အဆင်းလှခြင်း၊ တနည်း–ပေါက္ခရသဒ္ဒါသည် သရီရ အနက်ဟော၊ ဝဏ္ဏဉ္စ+ပေါက္ခရဉ္စ ဝဏ္ဏပေါက္ခရာနိ–အဆင်း, ကိုယ်တို့၊တေသံ+ ဘာဝေါ ဝဏ္ဏပေါက္ခရတာ = အဆင်းလည်းလှ , ကိုယ်လုံးကိုယ်ပေါက်လည်း အချိုးကျခြင်းတည်း၊ တနည်း–"ဝဏ္ဏသမ္ပန္နံ"ဟု ဆိုလိုလျက် သမ္ပန္နနောက်ပုဒ်ကိုချေ၍"ဝဏ္ဏ ပေါက္ခရံ = အဆင်းနှင့် ပြည့်စုံသောကိုယ်၏ အဖြစ်၊ အဆင်းလှသော ကိုယ်ရှိခြင်း။ [ "ပေါက္ခရံ ပဒုမေ ဒေဟေ" စသော အဘိဓာန်လာ ပေါက္ခရသဒ္ဒါ၏ အနက်တို့တွင် ပဌမနည်း၌ သုန္ဒရတ္တအနက်, ဒုတိယနည်း၌ ဒေဟ (သရီရ) အနက်ဟောတည်း။]

ဒွိဝါ၊ပေ၊ပဌမနိသိန္နာနံ ဟိ ။ ။ "ဒွိဝါ ဗာဟိရတော" စသော စကားသည် အများဖြစ်လေ့ ရှိသော ထုံးစံကိုပြသော စကားတည်း၊ ဥပ္ပလဝဏ်ထေရ်မ တပါးထည်း

သည်၊ ဟောတိ – ဖြစ်တတ်၏၊ သော - ထို လုလင်သည်၊ ယာဝ - လောက်၊ အသော–ထိုထေရ်မအတွက်၊ အန္ဓကာရော– သည်၊ န နဿတိ-မပျော်သေး၊ တာဝဒေဝ - ထို အမှောင်မပျောက်သေးမီသာ၊ ဧဝံ – ဤသို့ ဖျက်ဆီးမှုကို၊ အကာသိ-ပြီ၊ ဇူတိအတ္တော- နက်။

ဒူသေသီတိ– ကား၊ ပဓံသေသိ – ဖျက်ဆီးပြီ၊ ထေရီပန – သည်ကား၊ အန ဝဇ္ဇာ–အပြစ်မရှိ၊ အသဒ္ဓမ္မာဓိပ္ပါယေန– မသူတော်တို့၏ အကျင့်၌ဖြစ်သော အလိုဖြင့်၊ ပရာမဋ္ဌာ - သုံးသပ်အပ်ကုန်သော၊ အဂ္ဂိက္ခန္ဓ ၊ပေ၊ ခါဏုကာဝိယ– မီးကျီး အစု , ကျောက်တိုင်, ရှားနှစ်ငုတ် တို့ကဲ့သို့၊ အတ္တနော - ၏၊ ဿမဏ သည့်–ရဟန်းဟူသော အမှတ်သညာကို၊ (တနည်း) သမဏိသည့်– ရဟန်းမ ဟူသောအမှတ်သညာကို၊ ပစ္စုပဋ္ဌာပေတွာ-ရှေးရှုတည်စေ၍၊ အသာဒယန္တီ- မသာယာဘဲ၊ နိသီဒိ– နေပြီ၊ သောပိ- ထို လုလင်သည်လည်း၊ အတ္တနော-၏၊ မနောရထံ–စိတ်အလိုကို၊ ပူရေတွာ-၍၊ ဂတော–ပြီ၊ တဿ–ထို လုလင်အား၊ [ အဒါသိ - ၌စပ်၊] ဝါ– သည်၊ [ ဝိဇဟန္တဿေဝ –၌စပ်၊] ထေရိယာ - ၏၊ ဒဿနပထံ-မြင်ခြင်း၏လမ်းကို၊ ဝါ-မြင်လေခံရာဥပစာကို၊ ဝိဇဟန္တဿေဝ- စွန့်သော်သာ၊ အယံ မဟာပထဝီ- ၂ သိန်း ၄ သောင်းအထုရှိသော ဤကမ္ဘာ မြေကြီးသည်၊ သိနေရုပဗ္ဗတံ–တသိန်း ၆ သောင်းအမြင့်ရှိသော မြင့်မိုရ်တောင် ကို၊ ဓာရေတုံ– ဆောင်ထားခြင်းငှါ၊ သမတ္ထာ–စွမ်းနိုင်သည်၊ (သမာနာ)ပိ- သော်လည်း၊ တံပါပပုရိသံ-ထိုယုတ်မာသောယောကျ်ားဟူသော၊ ဗျာမမတ္တံ- တလံမျှလောက်သော၊ ကဠေဝရံ–အကောင်ကို၊ ဓာရေတုံ-ငှါ၊ အသက္ကောန္တီ ဝိယ-မစွမ်းနိုင်တော့သကဲ့သို့၊ ဘိဇ္ဇိတွာ - ကွဲ၍၊ ဝိဝရံ– အပေါက်အကြားကို၊ အဒါသိ-ပြီ၊ သော-သည်၊ တင်္ခဏညေဝ– ၌ပင်၊ အဝိစိဇာလာနံ- အဝိစိမီးလျှံ တို့၏၊ ဣန္ဓနဘာဝံ– လောင်စာ၏အဖြစ်သို့၊ အဂမာသိ - ပြီ၊ ဘဂဝါ–သည်၊ တံ- ထိုအကြောင်းကို၊ သုတွာ-ကြားတော်မူ၍၊ အနာပတ္တိ ဘိက္ခဝေ အသာဒ ယန္တိယာတိ- ဟူ၍၊ ဝတွာ– ဆိုး ဖြတ်တော်မူ၍၊ ထေရိံ - ကို၊ သန္ဓာယ – ၍၊ ဓမ္မပဒေ–၌၊ ဣမံဂါထံ-ကို၊ အဘာသိ–ဟောတော်မူပြီ၊ (ကိံ–နည်း။)

အတွက် ပြသောစကား မဟုတ်၊ ဥပ္ပလဝဏ်ထေရ်မ အတွက်ကား “ ပဏ္ဍဘတ္တံ ပိဏ္ဍာ ပါတပ္ပဋိက္ကန္တာ ပါဒေပက္ခာလေတွာ ကုဋိကံ ပဝိသိတွာ မဉ္စကေနိသီဒိ”ဟု ပါဠိတော်၌ တိုက်ရိုက် လာသည်၊ ထို့ကြောင့် ပဋ္ဌမနိသိန္နာနံ၏ ရှေ့၌ “ နိသီဒိ ” ဟု ဥပ္ပလဝဏ် ထေရ်မကို ရည်ရွယ်သော ပဓာနကြိယာ မပါသင့်၊ နေ့အခါ၌ အပြင်ဘက် နေရောင်မှ လာ၍ အတွင်း၌ တံခါးပိတ်ပြီး ထိုင်နေသူ အားလုံးမှာ တခန်းလုံး အမှောင် ဖြစ်နေ တတ်သည်–ဟူလို။

ပေါက္ခရပတ္တေ-ပဒုမ္မာကြာရွက်၌၊ ဝါရိ-ရေပေါက်သည်၊ နလိမ္ပတိဣဝ-မလိမ်းကျံမကပ်ငြိသကဲ့သို့ငှင်း၊ အာရဂ္ဂေ—အပ်ဖျား၌၊ သာသပေါ-မုန်ညင်းစေ့သည်၊ နလိမ္ပတိဣဝ-သို့ငှင်း၊ (ဝေမေဝ-သာလျှင်၊) ယော-အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ကာမေသု - ဝတ္ထုအာရုံ ကာမဂုဏ်တို့၌၊ နလိမ္ပတိ - ကိလေသာကာမတို့ဖြင့် မလိမ်းကျံမကပ်ငြိ၊ တံ- ကို၊ အဟံ—သည်၊ ဗြာဟ္မဏံ- ဗြာဟ္မဏဟူ၍၊ ဝါ - မကောင်းမှုကို မျှောပြီးသူဟူ၍၊ ဗြူမိ - ဟောတော်မူ၏၊ ဣတိ - ဤသို့၊ (အဘာသိ-ပြီ။)

စုဒ္ဒသမေ-သော၊ ဝတ္ထုမှိ-၌၊ ဣတ္ထိလိင်္ဂပါတုဘူတန္တိ-ကား၊ ရတ္တိဘာဂေ-ညဉ့်အဘို့၌၊ နိဒ္ဒံ - အိပ်ပျော်ခြင်းသို့၊ ဩက္ကန္တဿ – သက်ရောက်စဉ်၊ ပုရိသသဏ္ဌာနံ – ယောက်ျား၏ သဏ္ဌာန်ဖြစ်သော၊ မဿုဒါဌိကာဒိ– မုတ်ဆိတ်ကျင်စွယ်အစ ရှိသော၊ သဗ္ဗံ - အလုံးစုံသော အခြင်းအရာသည်၊ အန္တရဟိတံ-ကွယ်ပျောက်ပြီ၊ပေ၊တေနမေဝဥပဇ္ဈံ တမေဝဥပသမ္ပဒန္တိ–ကား၊ ပုဗ္ဗေ-လိန် မပြန်မီရှေး၌၊ ဂဟိတဥပဇ္ဈာယမေဝ - ယူအပ်သော ဥပဇ္ဈာယ်ကို သာလျှင်ငှင်း၊ ပုဗ္ဗေ-၌၊ ကတဥပသမ္ပဒမေဝ - ပြုအပ်ပြီးသော ရဟန်းအဖြစ်ကိုသာလျှင်ငှင်း၊ အနုဇာနာမိ၊ပ၊ပုန၊ဥပဇ္ဈာ-ဥပဇ္ဈာယ်ကို၊ နဂဟေတဗ္ဗာ - ယူဘွယ်မလို၊ ဥပသမ္ပဒါ-ကို၊ နကာတဗ္ဗာ - ပြုဘွယ်မလို၊ ဣတိအတ္ထော၊ တာနိဝဿာနီတိ-ကား၊ ဘိက္ခုဥပသမ္ပဒတော - ဘိက္ခု၏ ရဟန်းအဖြစ်မှ၊ ပဘုတိ-စ၍၊ ယာဝ-လော်၊ ဝဿဂဏနာ - ဝါအရေအတွက်သည်၊ (အတ္ထိ)၊ တံဃေဝ ဝဿဂဏနံ-ထိုဝါ အရေအတွက်ကို သာလျှင်၊ အနုဇာနာမိ – ၏၊ ဣတော – ဤ လိန်ပြန်ရာအခါမှ၊ ပဋ္ဌာယ၊ပေ၊ဣတိအတ္ထော—နက်။

ပုရိသသဏ္ဌာနံ။ ။" ပုရိသသဏ္ဌာနံ အန္တရဟိတံ, ဣတ္ထိသဏ္ဌာနံ ပါတုဘူတံ " ဟူသောစကားသည် အကျိုးဖြစ်သော ပုံသဏ္ဌာန်၏ ကွယ်ပုံဖြစ်ပေါ်လာပုံကို တိုက်ရိုက် ပြသောစကားတည်း၊ ထိုသို့ အကျိုးကိုပြသဖြင့် အကြောင်းဖြစ်သော ပုရိသဘာဝရုပ်, ဣတ္ထိဘာဝရုပ်တို့၏ ကွယ်ပုံ ဖြစ်ပေါ်လာပုံကိုလည်း ပြပြီးဖြစ်တော့၏၊ [" ဖလဿ ဝိနာသုပ္ပါဒဒဿနေန ကာရဏဿာပိ ဝိနာသုပ္ပါဒါ ဝုတ္တာတိ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ " — သာရတ္ထဋီကာ၊ ဝိမတိဋီကား နာနန္တရိကနည်း ဟု ဆို၏။]

မှတ်ချက် ။ ။ ဤသို့ အကျိုးကို တိုက်ရိုက်ပြ၍ အကြောင်းကိုလည်း သွယ်ဝိုက်၍ ပြထားရာ၌ " ဖလူပစာရ " ဟု မဆိုနိုင်၊ တိုက်ရိုက်ဆိုအပ်သော အနက်ကို မယူရဘဲ တင်စားအပ်သောအနက်ကို ယူရာ၌သာ ဥပစာစကား ဟု မှတ်၊ ပုရိသလိင်္ဂ စသည်၌ လိင်္ဂသဒ္ဒါလည်း လက် ခြေစသော ပုံသဏ္ဌာန်ဟောတည်း။

ဆက်ဦးအံ့ — ခန္ဓာအစဉ်၌ ရှေးကံအစွမ်းကြောင့် ပုရိသဘာဝရုပ် အစဉ်သည် ဆက်ကာဆက်ကာ ဖြစ်၍ချုပ်၍ လာခဲ့ရာ , ထိုကံ အစွမ်းကုန်သောအခါ နောက်ဆုံး

ဘိက္ခုနီဟိ သက်မိတုန္တိ-ကား၊ ဘိက္ခုနီဟိ-တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ သက်မိတုံ-ပြောင်းရွှေ့နေထိုင်ခြင်းငှါ၊ သင်န္တုံ – ပေါင်းဆုံခြင်းငှါ၊ သမင်္ဂီဘဝိတုံ–ပေါင်းဆုံသည်ဖြစ်၍ဖြစ်ခြင်းငှါ၊ အနုဇာနာမိ-ခွင့်ပြုတော်မူ၏၊ဣတိအတ္တော-နက်၊ ဣဒံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ (ကိံ၊)ဒါနိ-၌၊ အသာ-ထို ဘိက္ခုနီ၏၊ ဘိက္ခုနံ-တို့၏၊ မဇ္ဈေ-အလယ်၌၊ ဝသိတုံ-နေခြင်းငှါ၊အပ္ပတိရူပံ-မလျောက်ပတ်တော့၊ ဘိက္ခုနုပဿယံ – ဘိက္ခုနီတို့ ကျောင်းသို့၊ ဂန္တွာ – ၍၊ ဘိက္ခုနီဟိ – တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ - ကွ၊ ဝသတု – နေပစေ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ယာ အာပတ္တိယော ၊ပေ၊ သာဓာရဏာတိ- ကား၊ ဘိက္ခုနံ - တို့၏၊ ဘိက္ခုနီဟိ - တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ၊ သာဓာရဏာ–ဆက်ဆံကုန်သော၊ ဒေသနာ ဂါမိနိယော ဝါ–ဒေသနာဂါမိ မူလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ဝုဋ္ဌာနဂါမိနိယော ဝါ– ဝုဋ္ဌာနဂါမိမူလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ယာ အာပတ္တိယော-တို့သည်၊ (သန္တိ-နိ၏၊)တာ အာပတ္တိယော၊ပေ၊ ဝုဋ္ဌာတုန္တိ - ကား၊ သမ္ဘာဝိ – နိသော၊ တာ - ထို အာပတ်တို့ကို၊ ဘိက္ခုနီဟိ–တို့သည်၊ ကာတဗ္ဗံ – ပြုထိုက်သော၊ ဝိနယကမ္မံ – ဝိနည်းကံကို၊ ကတွာ – ၍၊ ဘိက္ခုနီနံ - တို့၏၊ သန္တိကေ - ၌၊ ဝုဋ္ဌာတုံ - ထစေခြင်းငှါ၊ အနုဇာနာမိ-၏၊ ဣတိ အတ္တော – နက်။ [ ဝုဋ္ဌာတုံတိ ဝုဋ္ဌာပေတုံ ( ဝိမတိ )၊ တာ၏ စပ်ပုဒ်မရှိသောကြောင့် စပ်ပုဒ်ရအောင် ဝုဋ္ဌာတုံ၌ ကာရိတ်အကြေကြီသည်။]

မချုပ်မီ စိတ္တက္ခဏ ၁၇ ချက်ခန့်၏ ဉပါဒ်ခဏမှစ၍ ပုရိသဘာဝ ကမ္မဇရုပ် မဖြစ်တော့၊ ထိုရုပ်မဖြစ်လျှင် ထိုရုပ်ကို အကြောင်းခံ၍ ဖြစ်နေသော မုတ်ဆိတ် ကျင်စွယ်နှင့်တကွ ယောကျ်ားပုံသဏ္ဍာန် အင်္ဂါဇာတ်တို့ကို ပေါ်စေနိုင်သော စိတ္တဇ ဉတုဇ အာဟာရဇ ရုပ်များလည်း အချိန်အနည်းငယ် ဆက်၍ဖြစ်ပြီးလျှင် ချုပ်ကြတော့၏၊ ထိုအခါ ဣတ္ထိ ဘာဝရုပ်ကို ဖြစ်စေနိုင်သော ရှေးကံအစွမ်းကြောင့် ဣတ္ထိဘာဝရုပ်သည် ဆက်၍ဖြစ်၏၊ ထို ဣတ္ထိဘာဝရုပ်လျှင် အခြေခံရှိသော တိဇရုပ်များလည်း ဖြစ်ပြန်ရကား မိန်းမ အင်္ဂါဇာတ်နှင့်တကွ မိန်းမပုံသဏ္ဍာန်ပေါ်ပြန်လေ၏၊ ဤသို့ ဘာဝရုပ် ၂ ခုတို့ အပြောင်းအလွဲဖြစ်မှုကိုပင် "လိင်ပြန်သည်"ဟု ခေါ်စမှတ်ပြုကြသည်။

**ဘိက္ခုနီဟိ သဒ္ဓိံ** ။ ။ ယခုစာအုပ်များ၌ ဤအတိုင်း တွေ့ရ၏၊ ယောဇနာ၌ကား "ဘိက္ခုနီဟိ စသာ သဒ္ဓိံ"ဟု ရှိ၍ စအနက်ကို သမုစ္စည်းတချက်, အဝဓာရဏတချက် ကြံလေသည်၊ ["အသာ–ထိုဘိက္ခုနီ၏"ဟု ပေး။]

**သက်မိတုံ** ။ ။ တချို့စာအုပ်၌ သက်မိတုံ နောက်ဝယ် "သင်န္တုံ"ဟု တွေ့ရ၏၊ ခါတ်ရင်းပေါ်နေသော သက်မိတုံပုဒ်ကို " သင်န္တုံ" ဟု ခါတ်ရင်းမြုပ်သော (မ် ကိုန် ပြုထားသော) ပုဒ်ဖြင့် မဖွင့်ကောင်း၊ ထို့ကြောင့် " သင်န္တုံ " ဟူသာ ရှိသင့်၏၊ ထို သင်န္တုံကိုမှ တဘန် " သမင်္ဂီဘဝိတုံ " ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထ ဖွင့်သည်၊ ထိုသို့ဖွင့်သဖြင့် ထို သင်န္တုံသည် " သင်မော"ပုဒ်ကဲ့သို့ ပေါင်းခြင်းအနက်ဟော ဟု သိစေ၏။

တာဟိ အာပတ္တီဟိ အနာပတ္တီတိ – ကား၊ ဘိက္ခုနံ - တို့၏၊ ဘိက္ခုနီဟိ- တို့နှင့်၊ အသာဓာရဏာ-န်သော၊ သုက္ကဝိဿဋ္ဌိအာဒိကာ–ဋ္ဌိအစရှိကုန်သော၊ ယာ အာပတ္တိယော-တို့သည်၊ (သန္တိ၊)တာဟိ-ထိုအာပတ်တို့ဖြင့်၊ အနာပတ္တိ- အနာပတ်သည်၊ ( ဟောတိ )၊ လိင်္ဂပရိဝတ္တနေန- လိန်ပြန်ခြင်းကြောင့်၊ တာ အာပတ္တိယော-တို့သည်၊ ဝုဋ္ဌိတာဝ-ထမြောက်ပြီးတို့သည်သာ၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ ပုန- ဖန်၊ ပကတိလိင်္ဂေ – ပကတိ လိန်သည်၊ ဥပ္ပန္နေပိ – ဖြစ်ပြန်သော်လည်း၊ တာဟိ အာပတ္တီဟိ- ထိုအသာဓာရဏ အာပတ်တို့ဖြင့်၊ တဿ-ထိုရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိယေဝ – ပင်တည်း၊ ဣတိ အယံ – ကား၊ တာဝ – ဒြိဋ္ဌဓမ္မိက အဆုံးအဖြတ် ဝိနိစ္ဆယမှရှေးဦးစွာ၊ ဧတ္ထ–၌လိန်ပြန်ရာ၌၊ ပါဠိဝိနိစ္ဆယော- ပါဠိတော်ကို ဆုံးဖြတ်ခြင်းတည်း။

ပန - ကား၊ အယံ - ၌ ဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ ပါဠိမုတ္တော - ပါဠိတော်မှ လွတ်သော၊ ဒြိဋ္ဌဓမ္မိကဝိနိစ္ဆယော-စကားစပ်သဖြင့် သက်ရောက်သောအဆုံး အဖြတ်တည်း၊ တာဝ–မဆုံးဖြတ်မီ ရှေးဦးစွာ၊ (ဟီနုတ္တမာဒိဘာဝေါ-ဟီန ဥတ္တမ အစရှိသည်၏အဖြစ်ကို၊ ဧဝံ – ၌ ဆိုအပ်လတ္တံ့သောနည်းဖြင့်၊ ဝေဒိ တဗ္ဗော - ၏၊) [တာဝ၏ စပ်စရာမရှိ၍ ထည့်သည်၊] ဒွိသု – န်သော၊ ဣမေသု လိင်္ဂေသု -တို့တွင်၊ ပုရိသလိင်္ဂံ-သည်၊ ဥတ္တမံ–မြတ်၏၊ ဣတ္ထိလိင်္ဂံ-သည်၊ ဟီနံ- ယုတ်ညံ့၏၊ တသ္မာ – ကြောင့်၊ ပုရိသလိင်္ဂံ – သည်၊ ဗလဝအကုသလေန – အားကြီးသော အကုသိုလ်ကြောင့်၊ အန္တရဓာယတိ – ကွယ်ပျောက်၏၊ [ ပရ ဒါရိကာဒိ (သူ့မယားကို သွားလာခြင်းစသော)အကုသလေန၊] ဣတ္ထိလိင်္ဂံ- သည်၊ ဒုဗ္ဗလကုသလေန – အားနည်းသော ကုသိုလ်ကြောင့်၊ ပတိဋ္ဌာတိ – တည်၏၊ ပန-ကား၊ ဣတ္ထိလိင်္ဂံ - သည်၊ အန္တရဓာယန္တံ – သော်၊ ဒုဗ္ဗလ အကု သလေန-ကြောင့်၊ အန္တရဓာယတိ-၏၊ ပုရိသလိင်္ဂံ-သည်၊ ဗလဝကုသလေန- ကြောင့်၊ ပတိဋ္ဌာတိ-၏၊ ဧဝံ-သို့၊ ဥဘယမ္ပိ- ၂ ပါးစုံသောလိန်ကိုလည်း၊ [ပဋိ လဗ္ဘတိ–၌စပ်၊] ဝါ-သည်လည်း၊ အကုသလေန-ကြောင့်၊ အန္တရဓာယတိ- ၏၊ ကုသလေန-ကြောင့်၊ ပဋိလဗ္ဘတိ-ရအပ်၏၊ [သုဂတိဘာဝဖြစ်၍ "ကုသိုလ် ကြောင့် ရအပ်သည်"ဟု ဆိုသည်။]

**ဒြိဋ္ဌဓမ္မိက ဝိနိစ္ဆယော။** ။ပသင်္ဂါနုဂတံ–လိန်ပြန်ခြင်းနှင့် စကားစပ်လျှဉ်းသည် အားလျော်စွာ၊ ဒြိတရဏဝိနိစ္ဆယော– သက်ရောက်လာသော အဆုံးအဖြတ်တည်း၊ (ဝိမတိ)၊ ဒြိဋ္ဌဓမ္မိကကို"ဒြိတရဏ"ဟု ဖွင့်သည်၊ လိန်ပြန်ခြင်းနှင့် စကားစပ်လျှဉ်း၍ ဆိုအပ်သောအဆုံးအဖြတ်–ဟူလို။ [ဒြိဋ္ဌမတိ-သက်ရေ၌၊ ဣတိ ဒြိဋ္ဌန္တိ၊ ဒြိဋ္ဌန္တိ ယေဝ ဒြိဋ္ဌန္တိကော၊ သော စ+သော+ဝိနိစ္ဆယော စာတိ ဒြိဋ္ဌန္တိက ဝိနိစ္ဆယော။]

တတ္ထ - ထိုသို့ လိန်ပြန်ရာ၌၊ ဒွိန္နံ - နှစ်ပါးကုန်သော၊ ဘိက္ခုနီနံ- တို့တွင်၊ [ ကေသာ-၌ စပ်၊] ဝါ-တို့သည်၊ [ဩက္ကန္တာနံ-၌စပ်၊ ] ကေတော-တပေါင်းတည်း၊ သဇ္ဈာယံဝါ- သရဇ္ဈာယ်ခြင်းကိုသော်ငြားလည်း၊(စာအံခြင်းကို သော်ငြားလည်း၊) ဓမ္မသာကစ္ဆံဝါ - တရားဆွေးနွေးခြင်းကိုသော်ငြားလည်း၊ ကတ္တာ - ၍၊ ကောဂါရေ - တခုသော ကျောင်း၌၊ နိပဇ္ဇိတွာ—လျောင်း၍၊ [ထိုင်၍ အိပ်ပျော်သူမှာ သဟသေယျမသင့်သောကြောင့် "နိပဇ္ဇိတွာ" ဟုဆိုသည်။] နိဒ္ဒံ-အိပ်ပျော်ခြင်းသို့၊ ဩက္ကန္တာနံ- သက်ရောက်ကုန်စဉ်၊ (တနည်း) ဩက္ကန္တာနံ- နှစ်ပါးကုန်သော၊ ဒွိန္နံ— နှစ်ပါးကုန်သော၊ ဘိက္ခုနီနံ—တို့တွင်၊ ကေသာ-ရဟန်းတပါး၏၊ ဣတ္ထိလိင်ံ-သည်၊ သစေ ပါတုဘဝတိ- အကယ်၍ ထင်ရှားဖြစ်အံ့၊ (ဝေံသတိ)၊ ဥဘိန္နမ္ပိ- ၂ ပါးလုံးတို့၏လည်း၊ သဟသေယျာပတ္တိ- သဟသေယျအာပတ်သည်၊ ဟောတိ— ၏၊ သော-ထို လိန်ပြန်သော ရဟန်းသည်၊ ပဋိဗုဇ္ဈိတွာ — နိုး၍၊ အတ္တနော - ၏၊ တံ ဝိပ္ပကာရံ – ထို ဖေါက်ပြန်ပုံကို၊ ဒိသွာ-၍၊ ဒုက္ခီ-စိတ်ဆင်းရဲခြင်းရှိသည်၊ ဒုမ္မနော-ဒေါသသည် ဖျက်ဆီးအပ်သောစိတ်ရှိသည်၊ ဝါ- ဖေါက်ပြန်သောစိတ်ရှိသည်၊ (ဟုတွာ)၊ [ဒုက္ခီတိ- စေတောဒုက္ခသမင်္ဂိတာယ ဒုက္ခီ၊ ဒုမ္မနောတိ-ဒေါသေန ဒုဋ္ဌမနော၊ ဝိရူပမနောဝါ ဒေါမနဿာဘိဘူတတာယ၊—ဋီကာ။] ရတ္တိဘာဂေယေဝ- ၌ပင်လျှင်၊ ဣတရဿ— အခြားရဟန်းအား၊ စေ အာရောစေယျ – အံ့၊ ( ဝေံသတိ )၊ တေန - ထိုရဟန်းသည်၊ ( သော – ထို လိန်ပြန်သော ရဟန်းကို၊ ) သမဿာသေတဗ္ဗော- သက်သာရာ ရစေထိုက်၏၊ (ကိံ)၊ ဟောတု-ရှိပါစေ၊ မာ စိန္တယိတ္ထ—တောင်တောင်ညှာညှာ မကြံစည်ပါကုန်လင့်၊ ဝဋ္ဋဿေဝ – သံသရာဝဋ်၏ သာလျှင်၊ ဒေါသော- တည်း၊ သမ္မာသမ္ဗုဒ္ဓေန-သည်၊ ဒွါရံ-လမ်းကြောင်းကို၊ ဒိန္နံ-ပေးအပ်ပြီ၊ ဘိက္ခုဝါ- သည်မူလည်း၊ ဟောတု—စေ၊ ဘိက္ခုနီဝါ-လည်း၊ ဟောတု—စေ၊ ဓမ္မော—ကို၊ ( တရားလမ်းကို – ဟူလို၊ ) အနာဝဋော – မပိတ်ဆို့ အပ်ပါ၊ သဂ္ဂမဂ္ဂေါ- နတ်ပြည်၏လမ်းကို၊ အဝါရိတော- မတားမြစ်အပ်ပါ၊ ဣတိ—သို့၊ (သမဿာသေတဗ္ဗော—၏။)

စ-ဆက်၊ သမဿာသေတွာ-ပြီး၍၊ ဝေံ-သို့၊ ဝတ္တဗ္ဗံ—ပြောဆိုရာ၏၊ (ကိံ)၊ တုမှေဟိ-တို့သည်၊ ဘိက္ခုနုပဿယံ- ဘိက္ခုနီကျောင်းသို့၊ ဂန္တုံ- ငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ- သင့်၏၊ တေ – ၏၊ ဝါ- မှာ၊ ကာစိ- အချို့ကုန်သော၊ သန္ဒိဋ္ဌာ— ထိုထိုအရပ် ပေါင်းဆုံလတ်၍ မြင်အပ်ဘူးကုန်သော၊ ဘိက္ခုနိယော - တို့သည်၊ အတ္ထိ – နှ သလော၊ ဣတိ (ဝတ္တဗ္ဗံ)၊ အဿာ – ထို ဘိက္ခုနီ၏၊ ဝါ – မှာ၊ တာဒိသာ - နှ်သော၊ ဘိက္ခုနိယော-တို့သည်၊ သစေ ဟောန္တိ-နှ်အံ့၊ (ဝေံသတိ)၊ အတ္ထီတိ-

ရှိပါကုန်၏ဟူ၍၊ နောစေဟောန္တိ- နံအံ့၊ (ဝံသတိ)၊ နတ္ထိတိ-ဟူ၍၊ ဝတွာ- လျှောက်ပြီး၍၊ သော ဘိက္ခု- ကို၊ ဝတ္တမ္ဗော-၏၊ (ကိံ)၊ မမ- တပည့်တော်၏ အပေါ်၌၊ ဝါ- ကို၊ သင်္ဂဟံ-ချီးမြှောက်မှုကို၊ ကရောထ- ပြုပါကုန်၊ ဣဒါနိ- ၌၊ မံ-ကို၊ ပဋ္ဌမံ-စွာ၊ ဘိက္ခုနုပဿယံ- သို့၊ နေထ – ပို့ဆောင်ပါကုန်၊ ဣတိ (ဝတ္တဗ္ဗော)၊ တေန ဘိက္ခုနာ- သည်၊ တံ-ထိုဘိက္ခုနီကို၊ ဂဟေတွာ-ခေါ်၍၊ တဿာ ဝါ - ထို ဘိက္ခုနီ၏သော်လည်း၊ သန္တိဋ္ဌာနံ - နံသော၊ အတ္တနော ဝါ- ၏သော်လည်း၊ သန္တိဋ္ဌာနံ- နံသော၊ ဘိက္ခုနီနံ, သန္တိကံ, ဂန္တဗ္ဗံ- ရာ၏။

စ-ဆက်၊ ဂစ္ဆန္တေန-သွားသောရဟန်းသည်၊ ကေကေန- တပါးတည်း သည်၊ (ဟုတွာ)၊ န ဂန္တဗ္ဗံ- ရာ၊ စတူဟိ – ၄ ပါးသော်လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ပဉ္စဟိ–နံသော၊ ဘိက္ခူဟိ–တို့နှင့်၊ (တနည်း) စတုပဉ္စဟိ-၄ ပါးသော်လည်း ဖြစ်ကုန်, ၅ ပါးသော်လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ [ သမ္ဗောဓယ ဗဟုဗ္ဗီဟိ] ဘိက္ခူ ဟိ-တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ-ကွ၊ ဇောတိကဥ္စ- မီးကိုင်း၊ ကတ္တရဒဏ္ဍဥ္စ-တောင်ဝှေးကို င်း၊ ဂဟေတွာ-၍၊ သံဝိဒဟနံ-စီမံခြင်းကို၊ ဝါ- ဘိက္ခုနီနှင့်အတူ တိုင်ပင်၍ သွားခြင်းကို၊ ပရိမောစေတွာ - လွတ်စေ၍၊ [ ဘိက္ခုနီတို့နှင့်အတူ တိုင်ပင်၍ အဓ္ဓါနသို့ သွားခြင်းကြောင့် သင့်အပ်သောအာပတ်မှ လွတ်စေခြင်း၄ါ “လာ သွားကြစို့”ဟု မပြောဘဲ – ဟူလို။] မယံ- တို့သည်၊ အသုကံနာမ ဌာနံ– ထို မည်သောအရပ်သို့၊ ဂစ္ဆာမ – သွားကြမလို့၊ ဣတိ- ဤသို့ပြော၍၊ ဂန္တဗ္ဗံ- ရာ၏၊ ဗဟိဂါမေ-ရွာ့ပြင်၌၊ ဒုရေ-အဝေး၌၊ ဝိဟာရော-သည်၊ သစေ ဟောတိ၊ [ရဟန်း၏ နေရာကျောင်းကိုဆိုသည်။]အန္တရာမဂ္ဂေ-ခရီးအကြား၌၊ ဂါမန္တရ ၊ပေ၊ဂဏာဩဟီယနာပတ္တိဟိ – ဂါမန္တရအာပတ် , နဒီပါရအာပတ် , ရတ္တိ ဝိပ္ပဝါသအာပတ်, ဂဏာဩဟီယနအာပတ်တို့ဖြင့်၊ အနာပတ္တိ ( ဟောတိ )၊ [ဒုတိယာဘိက္ခုနီ ပက္ကန္တာဝါ-စသည်ဖြင့် ဟောတော်မူအပ်သော အနာပတ္တိ အင်္ဂါနှင့် ညီနေသောကြောင့် (အဖော် ဘိက္ခုနီမရှိ၍) အာပတ်မသင့်-ဟူလို။] ဘိက္ခုနုပဿယံ-သို့၊ ဂန္တွာ-ရောက်၍၊ တာဘိက္ခုနီယော- တို့ကို၊ ဝတ္တဗ္ဗာ- ပြောဆိုထိုက်ကုန်၏၊ (ကိံ)၊ အသုကံနာမ ဘိက္ခု – ထို မည်သောရဟန်းကို၊ ဇာနာထ – သိကြကုန်၏လော၊ ဣတိ (ဝတ္တဗ္ဗာ )၊ အယျာ – အရှင်ဘုရားတို့၊ အာမ- မှန်ပါ သိပါကုန်၏၊ ဣတိ (သစေ ဝဒေယျုံ)၊ ( ဝံသတိ)၊ တဿ- ထိုရဟန်း၏၊ပေ၊ဒါနိ-၌၊ အဿ – ထိုရဟန်း၏အပေါ်၌၊ ဝါ- ကို၊ သင်္ဂဟံ- ချီးမြှောက်ခြင်းကို၊ ကရောထ၊ ဣတိ (ဝတ္တဗ္ဗာ)၊ တာ - ထို ဘိက္ခုနီတို့သည်၊ အယျာ – အရှင်ဘုရားတို့၊ သာဓု – ပြီ၊ ဣဒါနိ – ၌၊ မယံပိ၊ သဇ္ဈာယိဿာမ- သရဇ္ဈာယ်ပါကုန်အံ့၊ ဓမ္မံ– ကို၊ သောဿာမ- နာပါကုန်အံ့၊ [“သူ၏အထံ၌

စာအံကြ , တရားနာကြပါမည် ” ဟု ပြော၍ ဝမ်းမြောက်သည့် လက္ခဏာကို ပြကြသည်- ဟူလို။] တုမှေ၊ ဂစ္ဆထ- ပြန်ကြွကြပါတော့၊ ဣတိ ဝတွာ သင်္ဂဟံ စေ ကရောန္တိ၊ အာရာမိကာ စ-နှစ်သက်စေတတ်ကုန်သည်ငင်း၊ [အာရာမနေ-စိတ်ကိုနှစ်သက်စေခြင်း၌၊သမတ္ထာ။ ]သင်္ဂါဟိကာ စ-ချီးမြောက်တတ်ကုန်သည် ၎င်း၊ လဇ္ဇိနိယော စ-လဇ္ဇီဘိက္ခုနီတို့သည်၎င်း၊ စေ ဟောန္တိ၊(ဧဝံသတိ)၊ တာ-ထို ဘိက္ခုနီတို့ကို၊ ကောပေတွာ – ဖျက်ဆီး၍၊ [ "ပရိစ္စဇိတွာ" ဟု ဖွင့်၏၊ စွန့်သွားခြင်းကိုပင် "ကောပေတွာ" ဟု ဆိုသည်။] အညတ္ထ-အခြားအရပ်သို့၊ န ဂန္တုံ့၊ စေ ဂစ္ဆတိ၊ (ဧဝံသတိ၊) ဂါမန္တရ၊ပေ၊အာပတ္တိဟိ–တို့မှ၊ န မုစ္စတိ။

လဇ္ဇိနိယော–လဇ္ဇီဘိက္ခုနီတို့သည်၊ သစေပိ ဟောန္တိ-အကယ်၍ပင်ဖြစ်စေကုန်ဦးတော့၊ (ဧဝံသတိ ပိ)၊ သင်္ဂါဟိကာယော- ချီးမြောက်တတ်ကုန်သည်၊ သစေ န ဟောန္တိ-အကယ်၍မဖြစ်ကုန်အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ အညတ္ထ-အခြားအရပ် သို့၊ ဂန္တုံ-သွားခြင်းငှါ၊ ဝါ-သွားခွင့်ကို၊ လဗ္ဘတိ-ရအပ်၏၊ အလဇ္ဇိနိယော-တို့သည်၊ သစေပိ ဟောန္တိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ သင်္ဂဟံပန–ချီးမြောက်ခြင်းကိုကား၊ သစေပိ ကရောန္တိ – အကယ်၍ပင် ပြုတတ်စေကုန်ဦးတော့၊ ( ဧဝံသတိပိ )၊ တာပိ - ထိုဘိက္ခုနီတို့ကိုလည်း၊ ပရိစ္စဇိတွာ–စွန့်၍၊ အညတ္ထ-သို့၊ ဂန္တုံ-ငှါ၊ လဗ္ဘတိ– ၏၊ လဇ္ဇိနိယော စ – တို့သည်၎င်း၊ သင်္ဂါဟိကာ စ – ကုန်သည်၎င်း၊ (ဟုတွာ–၍၊) ဉာတိကာ- ဆွေမျိုးတို့သည်၊ သစေနဟောန္တိ – န်အံ့၊ အာသန္န ဂါမေ ပန–အနီးရွာ၌ကား၊ အညာ-န်သော၊ ဉာတိကာယော - ဆွေမျိုးဖြစ်ကုန်သော၊ ပဋိဇဂ္ဂနိကာ - စောင့်ရှောက်တတ်သူတို့သည်၊ သစေ ဟောန္တိ – အကယ်၍ ရှိကုန်အံ့၊ ( ဧဝံသတိ )၊ တာသမ္ပိ– ထို ဆွေမျိုးဘိက္ခုနီတို့၏လည်း၊ သန္တိကံ - သို့၊ ဂန္တုံ– ငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ- အပ်၏၊ ဣတိ- သို့၊ ဝဒန္တိ- န်၏၊ ဂတွာ-ရောက်ပြီး၍၊ ဘိက္ခုဘာဝေပိ – ရဟန်းအဖြစ်၌လည်း၊ ဝါ - ရဟန်းဘဝတုန်း ကလည်း၊ နိဿယပဋိပန္နော - နိဿယည်းကျင့်သူသည်၊ [ နိဿယည်း ယူနေ ရသူ–ဟူလို၊ ] သစေဟောတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ ပတိရူပါယ– လျောက်ပတ်သော၊ ဘိက္ခုနိယာ– ၏၊ သန္တိကေ–၌၊ နိဿယော–ကို၊ ဂဟေတဗ္ဗော–၏။

မာတိကာဝါ- ဒွေမာတိကာကိုသော်၎င်း၊ ဝိနယောဝါ- ဥဘတောဝိဘင်း ဟူသော ဝိနည်းကိုသော်၎င်း၊ ဥဂ္ဂဟိတော–သင်ယူအပ်ပြီးသည်၊(သမာနော-သော်၊) သုဂ္ဂဟိတော–ကောင်းစွာ သင်ယူအပ်ပြီးသည်၊(ဟောတိ)၊ ပုန–ဖန်၊ ဥဂ္ဂဏှနကာရဏံ - သင်ယူခြင်း၏ အကြောင်းသည်၊ နတ္ထိ၊ ဘိက္ခုဘာဝေ –၌၊ ပရိသာဝစရော–ပရိသတ်၌ ကျင်လည်သူသည်၊ သစေ(ဟောတိ၊) [ ဥပဇ္ဈာယ် လုပ်၍ ဖြစ်စေ , နိဿယည်း ဆရာလုပ်၍ ဖြစ်စေ တပည့် ပရိသတ်နှင့် နေသူ

ဖြစ်အံ့။] (ဇေ၀ံသတိ)၊ တဿ– ထို ရဟန်း၏၊ သန္တိကေယေ၀ – ၌သာ၊ ဥပသမ္ပန္နာ-ရဟန်းအဖြစ်သို့ ရောက်သူတို့သည်၊ သုပသမ္ပန္နာ–ကောင်းစွာ ရဟန်းအဖြစ်သို့ရောက်ကုန်သည်၊(ဟောန္တိ)၊ အညဿ-အခြားဆရာ၏၊သန္တိကေ-၌၊ နိဿယော–ကို၊ ဂဟေတဗ္ဗော–၏၊ ပုဗ္ဗေ–၌၊ တံ-ထိုရဟန်းကို၊ နိဿာယ–မှီ၍၊ ( ထိုရဟန်းထံ နိဿယည်းယူ၍၊ ) ၀သန္တေဟိပိ - နေသော ရဟန်းတို့သည်လည်း၊ အညဿ - ၏၊ပေ၊ပရိပုဏ္ဏ၀ဿ သာမဏေရေနာပိ- ပြည့်သော အသက် ၂၀ ရှိသော သာမဏေ သည်လည်း၊ [ ထို ရဟန်းကို ဥပဇ္ဈာယ်ယူထားသော သဒ္ဓိဝိဟာရိက သာမဏေ–ဟူလို၊]အညဿ–အခြား ဥပဇ္ဈာယ်၏၊ သန္တိကေယေ၀–၌သာ၊ ဥပဇ္ဈာ–ကို၊ ဂဟေတဗ္ဗာ – ၏။ [ ဥပဇ္ဈာပုဒ်ကို ရူပသိဒ္ဓိဘာသာဋီကာ ဣတ္ထိယမတိယဝေါ၀ါ သုတ်၌ စိစစ်ထား၏။]

ပန–ကား၊ အဿ-ထို ရဟန်း၏၊ ဘိက္ခုဘာဝေ- ၌၊ အမိဋ္ဌိတံ - အမိဋ္ဌာန်တင်အပ်ပြီးသော၊ ယံ တိစီ၀ရဋ္ဌ-အကြောင် တိစီ၀ရိတ်သည်ငှ်း၊ယောပတ္တောစ-သည်ငှ်း၊(အတ္ထိ)၊ တံ-ထိုသပိတ်သင်္ကန်းသည်၊ အမိဋ္ဌာနံ ဋ္ဌာန်ကို၊ ဝိဇဟတိ-စွန့်၏၊ ပုန-ဖန်၊ အမိဋ္ဌာတဗ္ဗံ - အမိဋ္ဌာန်တင်ရာ၏၊ သံကစ္ဆိကာစ – ရင်စည်းတဘက်ကိုငှ်း၊ ဥဒကသာဋိကာစ - ရေသနုပ်ကိုငှ်း၊ ဂဟေတဗ္ဗာ - ၏၊ ယံ အတိရေကစီ၀ရံ၀ါ-အကြောင် အမိဋ္ဌာန်တင်အပ်သော သင်္ကန်းမှ အပိုသင်္ကန်းကိုငှ်း၊ ယော အတိရေက ပတ္တော၀ါ– ကိုငှ်း၊ ဝိနယကမ္မံ – ဝိနည်းကံကို၊ (ဝိကပ္ပနာကို)၊ ကတွာ- ၍၊ ထပိတော–ထားအပ်သည်၊ ဟောတိ၊ တံ သဗ္ဗမ္ပိ– ထို အလုံးစုံသော သပိတ်သင်္ကန်းသည်လည်း၊ ဝိနယကမ္မံ-ကို၊ ဝိဇဟာတိ- ၏၊ ပုန–ဖန်၊ ကာတဗ္ဗံ–ပြုရာ၏၊ (ထပ်၍ ဝိကပ္ပနာပြုပါ-ဟူလို၊) ပဋိဂ္ဂဟိတ တေလ မဓုဖါဏိတာဒိနိပိ- အကပ်ခံအပ်ပြီးသော ဆီ, ပျားရည်,တင်လဲ အစရှိသော ဆေးတို့သည်လည်း၊ ပဋိဂ္ဂဟဏံ-အကပ်ခံခြင်းကို၊ ဝိဇဟန္တိ–န်၏၊ ပဋိဂ္ဂဟဏာ တော-အကပ်ခံရာနေ့မှ၊ သတ္တမေ ဒိ၀သေ-၌၊ လိင်္ဂ-သည်၊ သစေပရိ၀တ္တတိ- အကယ်၍ ပြန်အံ့၊ (ဇေ၀ံ သတိ)၊ ပုန-ဖန်၊ပေ၊၀ဋ္ဋတိ-အပ်၏၊ ပန-ဆက်၊ ဘိက္ခုကာလေ-၌၊ အညဿ–သော၊ ဘိက္ခုနော-၏၊ ယံသန္တကံ-ကို၊ ပဋိဂ္ဂဟိတံ- အကပ်ခံပေးအပ်ပြီ၊ တံ - ထို ဥဘာသည်၊ ပဋိဂ္ဂဟဏံ-ကို၊ နဝိဇဟတိ – မစွန့်၊ ဥဘိန္နံ-၂ ပါးသော ရဟန်းတို့၏၊(လိန်ပြန်သော ရဟန်း, မပြန်သော ရဟန်း တို့၏၊) သာဓာရဏံ-အတူဆောင်တတ်သော၊ ၀ါ-ဆက်ဆံသော၊ ယံ-အကြောင် ၀တ္ထုကို၊ အဝိဘဇိတွာ–မခွဲဝေဖန်မူ၍၊ ထပိတံ–ထားအပ်ပြီ၊ တံ - ထို ၀တ္ထုကို၊ ပကတတ္တော - ပင်ကိုယ် သဘောရှိသော ရဟန်းသည်၊ ( လိန်မပြန်သော ရဟန်းသည်၊) ရက္ခတိ-စောင့်ရှောက်၏၊[အပရိ၀တ္တလိင်္ဂေါ- လိန်မပြန်သော

ရဟန်းသည်၊ တံ–ကို၊ ပဋိဂ္ဂဟဏဝိဇဟနတော (အကပ်စွန့်ခြင်းမှ) ရက္ခတိ။]
ပန–ကား၊ ယံ–အကြင် ဝတ္ထုကို၊ ဝိဘတ္တံ–ခွဲခြား ဝေဘန်အပ်ပြီး ဧတသော၀–
၍ လိန်ပြန်သော ရဟန်း၏သာ၊ သန္တကံ–ဥစ္စာသည်၊(ဟောတိ–အံ့၊)တံ–ထို
ဝတ္ထုသည်၊ ပဋိဂ္ဂဟဏံ–ကို၊ ဝိဇဟတိ–၏၊ စ–သာစေကကား၊ ပရိဝါရေ–ပရိဝါ
ပါဠိတော်၌၊ တေလံ မဓုံပေ၊ စိန္တိတာတိ – တာဟူသော၊ ဧတံ – ၍ ဂါထာ
စကားကို၊ (သံဂီတိကာရေဟိပိ–တို့သည်လည်း၊) ဝုတ္တံ–မိန့်အပ်ပြီ။

[တေလံ- ဆီကိုဝင်း၊ မဓုံ-ကိုဝင်း၊ ဖါဏိတဥ္စာပိ–တင်းလဲကိုဝင်း၊ သပ္ပိံ–
ကိုဝင်း၊ သာမံ-ကိုယ်တိုင်၊ ဂဟေတွာန-အကပ်ခံပြီး၍၊ နိက္ခိပေယျ–သိမ်းထား
ရာ၏၊ သတ္တာဟော–၇ ရက်သည်၊ အဝီတိဝတ္တေ–မလွန်မီ၊ ပစ္စယေ- ဝေလည
အကြောင်းသည်၊ သတိ-ရှိလသော်၊ ပရိဘုဥ္ဇန္တဿ-သုံးဆောင်သော ရဟန်း
၏၊ အာပတ္တိ–သည်၊ (ဟောတိ–၏၊) သောပဥ္စာ - ကို၊ ကုသလေဟိ-ဝိနည်း
ကျွမ်းကျင် ပညာရှင်တို့သည်၊ စိန္တိတာ– အပ်ပြီ၊]ဟိ-ဆက်၊ ဣဒံ - ၍ ဂါထာ
စကားကို၊ လိင်ပရိဝတ္တနံ-လိန်ပြန်ခြင်းကို၊ သန္ဓာယ–၍၊ ဝုတ္တံ-ပြီ။

ပဋိဂ္ဂဟဏံနာမ-အကပ်ခံခြင်း မည်သည်ကို၊ [ ဝိဇဟတိ - ၌စပ်၊ ] လိင်ပရိ
ဝတ္တနေန-လိန်ပြန်ခြင်းကြောင့်သော်ငင်း၊ကာလံ ကိရိယာယ-သေခြင်းကြောင့်
သော်ဝင်း၊ သိက္ခာပစ္စက္ခာနေန – သိက္ခာချခြင်းကြောင့်သော်ဝင်း၊ ဟီနာယ–
ယုတ်ညံ့သော လူ့အဖြစ် အကျိုးငှါ၊ အာဝတ္တနေန- လည်ခြင်းကြောင့်သော်
ဝင်း၊(တနည်း) ဟီနာယာဝတ္တနေန – လူထွက်ခြင်းကြောင့်သော်ဝင်း၊ အနုပ
သမ္ပန္နဿ– လူသာမဏေအား၊ ဒါနေန – အပိုင် ပေးခြင်းကြောင့်သော်ဝင်း၊
အနပေက္ခဝိသဇ္ဇနေန-မငဲ့မကွက် စွန့်ပစ်ခြင်းကြောင့်သော်ဝင်း၊ အစ္ဆိန္ဒိတွာ-

**သာမံ ဂဟေတွာန နိက္ခိပေယျ။** ။ပဋိဂ္ဂဟေတွာ သယံ နိက္ခိပေယျ၊ ဂဟေတွာန
ကို“ပဋိဂ္ဂဟေတွာ”ဟု ဖွင့်သည်၊ ထိုသို့ အကပ်ခံထားသည်ကို ၇ ရက် မလွန်မီ စားသူ
အား အဘယ့်ကြောင့် အာပတ်သင့်ရသနည်း– ဟူမူ၊ လိန်ပြန်သည့် အတွက် အကပ်
ပျက်သွားသောကြောင့်–ဟု ဖြေ။

**ဟီနာယာဝတ္တနေန။** ။ ပါရာဇိကံ အာပန္နဿ ဂိဟိဘာဝူပဂမနေန–ပါရာဇိက
ကျ၍ လူအဖြစ်သို့ ရောက်ခြင်း (လူဝတ်လဲခြင်း) အားဖြင့်။ [“သိက္ခာပစ္စက္ခာန”ကား
ပါရာဇိက မကျဘဲ သိက္ခာချသူတည်း၊ သာမဏေဘ၀၌ နေလျှင် လူဝတ်မလဲဘဲလည်း
နေနိုင်သည်။]

**အနပေက္ခဝိသဇ္ဇနေန။** ။ဒါနအပြင် “ဝိသဇ္ဇန ” ဟု သီးခြားဆိုသောကြောင့်
မည်သူ့အားမျှ မပေးဘဲ“အကပ်ခံအပ်သော ဤဝတ္ထုကို မသုံး မစားတော့အံ့”ဟု မငဲ့
မကွက် စွန့်ပစ်လိုက်ခြင်းကို “ အနပေက္ခ ဝိသဇ္ဇန ” ဟု ဝိမတိ ဆို၏၊ ဤစွန့်နည်းကို

လှ၍၊ ဂဟဏေနစ–ယူခြင်း ကြောင့်ရင်း၊ ဝိဇဟတိ–စွန့်၏၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ ပဋိဂ္ဂဟေတွာ – အကပ်ခံပြီး၍၊ ထပိတံ – ထားအပ်သော၊ ဟရီဋက ခဏ္ဍာမ္ဗိ–ရှစ်ရှားသီးပိုင်း သည်လည်း၊ သစေပိ အတ္တိ–အံ့၊ ( ဝေံသတိ )၊ သဗ္ဗံ–အလုံးစုံသော ဝတ္ထုသည်၊ အဿ–ထို လိန်ပြန်သော ရဟန်း၏၊ ပဋိဂ္ဂဟဏံ–အကပ် ခံခြင်းကို၊ ဝိဇဟတိ–၏၊ ပန–ဆက်၊ ဘိက္ခုဝိဟာရေ–ရဟန်းတို့၏ ကျောင်း၌၊ ယံကိဉ္စိ–သော၊ အဿ–ထို လိန်ပြန်သော ရဟန်း၏၊ သန္တကံ–ဥစ္စာကို၊ ပဋိဂ္ဂဟေတွာ ဝါ - အကပ် ခံပြီး၍သော်ရင်း၊ အပ္ပဋိဂ္ဂဟေတွာ ဝါ - အကပ်မခံဘဲ သော်ရင်း၊ ထပိတံ–ထားအပ်ပြီ၊ သဗ္ဗဿ–အလုံးစုံသော ဥစ္စာ၏၊ ဝါ–ကို၊ သာဝ–ထိုလိန်ပြန်သော ဘိက္ခုနီသည်သာ၊ ဥဿရာ–အစိုးရသည်၊(ဟောတိ-၏၊) အာဟရာပေတွာ–ဆောင်စေ၍၊ ဂဟေတဗ္ဗံ–၏။

ပန–ကား၊ ဧတ္ထ–၌ ဘိက္ခုတို့၏ ကျောင်း၌၊ ထာဝရံ–ထာဝရဖြစ်သော၊ တဿ-ထိုလိန်ပြန်သောရဟန်း၏၊ သန္တကံ-သော၊ ယံ သေနာသနံဝါ–သည် သော်ရင်း၊ ယေ ဥပရောပကာဝါ - အကြင် စိုက်ပျိုးအပ်သော သစ်ပင်ငယ်တို့ သည်သော်ရင်း၊(သန္တိ)၊ တေ–ထိုကျောင်း,သစ်ပင်ငယ်တို့ကို၊ ယဿ–အကြင် ရဟန်းအား၊ (ဒါတုံ-၄၊) ဣစ္ဆတိ-၏၊ တဿ-အား၊ ဒါတဗ္ဗာ-န်၏၊ တေရသ သု-န်သော၊ သမ္မုတီသု-တို့တွင်၊[ဘတ္တုဒ္ဒေသ သမ္မုတိ,သေနာသန ပညာပက သမ္မုတိ – စသော ၁၃ ပါး၊]ယာ သမ္မုတိ - ကို၊ ဘိက္ခုကာလေ - ၌၊ လဒ္ဓါ–ရအပ်ပြီ၊ သဗ္ဗာ-အလုံးစုံသော၊ သာ-ထိုသမ္မုတိသည်၊ ပဋိပ္ပဿမ္ဘတိ-ငြိမ်း၏၊ ပုရိမိကာယ - ပုရိမဝါ၌၊ သေနာသနဂ္ဂါဟော - ကျောင်းကို ခံယူခြင်းသည်၊ [ပဌမဝါကပ်မည်ဟု ကျောင်းကို မှတ်သားယူထားခြင်း-ဟူလို၊] ပဋိပ္ပဿမ္ဘ တိ–ငြိမ်း၏၊ ပစ္ဆိမိကာယ–၌၊ သေနာသနေ–ကို၊ ဂဟိတေ–ယူအပ်ပြီးသော်၊ ( ယူအပ်ပြီးမှ၊ ) လိင်ႆ-သည်၊ သစေ ပရိဝတ္တတိ-အံ့၊ ( ဝေံသတိ )၊ ဘိက္ခုနီ သံဃောစ-သည်လည်း၊ အဿာ-အား၊ ဥပ္ပန္နံ-ထိုကျောင်း၌ဖြစ်သော၊ လာဘံ-ကို၊ ဒါတုကာမော-သည်၊ သစေ ဟောတိ၊(ဝေံသတိ)၊ အပလောကေတွာ–ပန်ပြော၍၊ ဒါတဗ္ဗော – ၏၊ [ မှတ်ယူထားသော ကျောင်းက လိန်ပြန်သော ဘိက္ခုနီနှင့်မထိုက်တော့၊ ထိုကျောင်းနှင့်စပ်သော ဒါယကာတို့အထံမှ လာဘ်

ဝတ္ထုစွန့် ဟု ခေါ်၏၊ သာရတ္ထဋီကား ဝတ္ထုစွန့် အပြင်– " အကပ်ခံအပ်ပြီးသော ဤအစာကို ယခု မစားတော့ပြီ၊ နောက်မှ ထပ်၍ အကပ်ခံပြီး စားမည်" ဟု အကပ် စွန့်ခြင်းကိုလည်း " အနပေက္ခဝိသဇ္ဇန" ဆိုသည်၊ နောက်ထပ်စားဦးမည် ဟု ငဲ့ကွက်မှု ရှိသေးရကား"အနပေက္ခ"ဟူသော ဝိသေသနနှင့် ဆန့်ကျင်သောကြောင့် ထို အကပ် စွန့်နည်းကို ဆရာတို့ မနှစ်သက်ကြပါ။

လည်းမရှိတော့၊ ထို့ကြောင့် ထိုသူ့အား သနား၍ပေးလိုလျှင် ဘိက္ခုသံဃာ့ အထံ ပန်ပြော၍ သင်္ကန်းလျှော အဝတ်စသည်ကို ပေးရသည်။ ] ဘိက္ခုနီဟိ-တို့နှင့်၊ သာဓာရဏာယ - သော၊ [အသာဓာရဏ အာပတ်တို့မှာ အလိုလို ငြိမ်းပြီးဖြစ်သောကြောင့် သာဓာရဏာယဟု ဆိုသည်။ ]ပဋိစ္ဆန္နာယ-ဖုံးထားအပ်သော၊ အာပတ္တိယာ- ကြောင့်၊ ပရိဝသန္တဿ- ပရိဝါသ်နေစဉ်၊ လိင်္ဂံ-သည်၊ သစေ ပရိဝတ္တတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ ပက္ခမာနတ္တမေဝ-ပက္ခမာနတ်ကိုသာ၊ ဒါတဗ္ဗံ - ၏၊ မာနတ္တံ - ကို၊ စရန္တဿ - စဉ်၊ ပေ၊ စိဏ္ဏမာနတ္တဿ - ကျင့်အပ်ပြီးသော မာနတ်ရှိစဉ်၊ သစေ ပရိဝတ္တတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ ဘိက္ခုနီဟိ-တို့သည်၊ အဗ္ဘာနကမ္မံ-အဗ္ဘာနကံကို၊ ကာတဗ္ဗံ-၏၊ အကုသလ ဝိပါကေ-အကုသိုလ်အကျိုးသည်၊ ပရိက္ခီဏေ-ကုန်လသော်၊ ပက္ခမာနတ္တကာလေ- ပက္ခမာနတ်ကျင့်ရာအခါ၌၊ ပုနဒေဝ - သာလျှင်၊ လိင်္ဂံ - ပုရိသလိင်သည် ၊ပေ၊ ဆာရတ္တံ-ဖြည့်ပတ်လုံး၊ မာနတ္တမေဝ-ကိုသာ၊ ဒါတဗ္ဗံ-၏၊ ပက္ခမာနတ္တေ-ကို၊ စိဏ္ဏေ-ကျင့်အပ်ပြီးသော်၊ပေ၊ကာတဗ္ဗံ-၏၊ ဣတိ-ဤကား၊(ဩြတ္တန္တိက ဝိနိစ္ဆယော-တည်း၊ ဟု ပြန်အုပ်ပါ။)

အနန္တရေ-အခြားမဲ့ဖြစ်သော၊ ဘိက္ခုနိယာ-၏၊ လိင်္ဂပရိဝတ္တန ဝတ္ထုမှိ-လိင်ပြန်ခြင်း၏ဝတ္ထု၌၊ ဣဓ—ဤဘိက္ခုလိင်ပြန်ခြင်း၏ဝတ္ထု၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ-ဖြင့်သာ၊ သဗ္ဗော—သော၊ ဝိနိစ္ဆယော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ပန-အထူးကား၊ အယံ-ကား၊ ဝိသေသော—တည်း၊ ဘိက္ခုနိကာလေ-၌၊ အာပန္နာ-သင့်ရောက်အပ်သော၊ သဉ္စရိတ္တာပတ္တိ-သည်၊ ဝါ-ကို၊ ပဋိစ္ဆန္နာ-ဖုံးထားအပ်သည်၊ သစေ ပိ ဟောတိ – အကယ်၍ပင် ဖြစ်စေဦးတော့၊ (ဧဝံသတိပိ)၊ ပရိဝါသဒါနံ – ပရိဝါသ်ပေးဘွယ်သည်၊ နတ္ထိ၊ ဆာရတ္တံ-လုံး၊ မာနတ္တမေဝ–ကိုသာ၊ ဒါတဗ္ဗံ-၏၊ ပက္ခမာနတ္တံ – ကို၊ စရန္တိယာ- ကျင့်စဉ်၊ လိင်္ဂံ - သည်၊ သစေ ပရိဝတ္တတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ တေန - ထိုပက္ခမာနတ်ဖြင့်၊ အတ္ထော-အကျိုးသည်၊ န-မရှိ၊ပေ၊ စိဏ္ဏမာနတ္တာယ – ကျင့်အပ်ပြီးသောမာနတ်ရှိစဉ် ၊ပေ၊ ဘိက္ခူဟိ – တို့သည်၊ အဗ္ဘေတဗ္ဗော– အဗ္ဘာန်သွင်းထိုက်၏၊ အထ–သို့မဟုတ်၊ ဘိက္ခူဟိ-တို့သည်၊ မာနတ္တေ-ကို၊ အဒိန္နေ-မပေးအပ်သေးမီ၊ပေ၊ဒါတဗ္ဗံ-၏၊ အထ-သို့မဟုတ်၊ပေ၊ ပက္ခမာနတ္တမေဝ ဒါတဗ္ဗံ၊ စိဏ္ဏမာနတ္တဿ - စဉ် ၊ ပေ ၊ အဗ္ဘာနကမ္မံ - ကို၊ ကာတဗ္ဗံ-၏၊ စ-ဆက်၊ ပုန- ဖန်၊ လိင်ေ-သည်၊ ပရိဝတ္တေ – ပြန်ပြန်လသော်၊ ဘိက္ခုနိဘာဝေ-၌၊ ဋ္ဌိတာယပိ-တည်စဉ်လည်း၊ ယာ အာပတ္တိယော-တို့သည်၊ ပုဗ္ဗေ-၌၊ ပဋိပဿဒ္ဓါ-ငြိမ်းခဲ့ကုန်ပြီ၊ တာ-ထို အာပတ်တို့သည်၊ သုပ္ပဋိပ္ပဿဒ္ဓါဝေ-ကောင်းစွာငြိမ်းခဲ့ကုန်သည်သာ၊ ဣတိ-ဤကား အထူးတည်း။

ဣတော–၌ လိင်္ဂပရိဝတ္တနဝတ္ထုမှ၊ ပရာနိ–နေ့ဖြစ်ကုန်သော၊ မာတုယာ မေထုနံ ဓမ္မန္တိ အာဒိနိ-န်သော၊ စတ္တာရိ-န်သော၊ ဝတ္ထူနိ-တို့သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထာနိယေဝ၊ မုဒုပိဋ္ဌိကဝတ္ထုမှိ-မုဒုပိဋ္ဌိကဝတ္ထု၌၊ သောဘိက္ခု-သည်၊ နဋပုဗ္ဗကော-ရှေး၌ ခွမ်းသမားဖြစ်ခဲ့သူသည်၊ ( ဟောတိ ) ကိရ-ဖြစ်သတတ်၊ တဿ–ထိုရဟန်း၏၊ သိပ္ပကောသလ္လတ္ထံ–အတတ်၌ ကျွမ်းကျင်သူ၏အဖြစ် အကျိုးငှါ၊ ပရိကမ္မကတာ- ပြုအပ်သော ပရိကမ်ရှိသော၊ ပိဋ္ဌိ – ကျောက်ကုန်းသည်၊ မုဒုကာ–သည်၊ အဟောသိ-ပြီ၊ [ကျောက်ကုန်းပြော့အောင် အလေ့အကျင့်ပြုမှုကိုပင်"ပရိကမ္မ"ဟု ဆိုသည်၊]တသ္မာ – ကြောင့်၊ ဧဝံ-သို့၊ (မိမိအင်္ဂါဇာတ်ကို ငုံ့၍စုတ်မှုကို၊)ကာတုံ-ငှါ၊ အသက္ခိ-စွမ်းနိုင်ပြီ၊ လမ္ဗိဝတ္ထုမှိ-၌၊ တဿဘိက္ခုဿ–၏၊ အင်္ဂဇာတံ-သည်၊ ဒီဃံ–သည်၊ ဟောတိ–၏၊ လမ္ဗတိ – တွဲလျားကျ၏၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ လမ္ဗီတိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တော–ဆိုအပ်ပြီ၊

ဣတော - ၌လမ္ဗိဝတ္ထုမှ၊ ပရာနိ - န်သော၊ ဒွေ-န်သော၊ ဝဏဝတ္ထူနိ - ဝဏဝတ္ထုတို့သည်၊ ဥတ္တာနာနိဝေ၊ လေပစိတ္တဝတ္ထုမှိ – ၌၊ စိတ္တကမ္မရူပံ - ဆန်းကြယ်စွာ ပြုလုပ်အပ်သော ပန်းချီဆေးရေးရုပ်သည်၊ လေပစိတ္တံနာမ-မည်၏၊ [လေပ- ဆေးဖြင့် သုတ်လိမ်း ရေးခြယ်အပ်သော+စိတ္တ–ဆန်းကြယ်သောအရုပ်။] ဒါရုမိတလိကဝတ္ထုမှိ- ၌၊ ကဋ္ဌရူပံ– သစ်သားဖြင့် ပြုလုပ်အပ်သောအရုပ်သည်၊ဒါရုမိတလိကာနာမ–ကာမည်၏၊ စ–ဆက်၊ ဣိသု–န်သော၊ ဣမေသု– ၌အရုပ်တို့၌၊ ( ဒုက္ကဋံ- သည်၊) ဟောတိ ယထာ–ကဲ့သို့၊ ဧဝံ- တူ၊ အညေသုပိ–န်သော၊ ဒန္တရူပ၊ပေ၊ ရူပါဒိသု-ဆင်စွယ်ရုပ်,ယမင်းရုပ်,ကြေးရုပ် အစရှိကုန်သော၊ အနုပါဒိန္နကေသု-ဥပါဒိန္နကကမ္မဇရုပ် မရှိကုန်သော၊ ဣတ္ထိရူပေသု - မိန်မရုပ်တို့၌၊ နိမိတ္တေ- ၌၊ မေထုနရာဂေန - ဖြင့်၊ ဥပက္ကမန္တဿ–လုလ္လပြုသော ရဟန်း၏၊ အသုစိ– သုက်သည်၊ မုစ္စတုဝါ - လွတ်မူလည်း လွတ်ပစေ၊ မာမုစ္စတုဝါ- စေ၊ ဒုက္ကဋမေဝ – သာတည်း၊ ကာယသံသဂ္ဂရာဂေန–ဖြင့်၊ ဥပက္ကမန္တဿာပိ - ၏လည်း၊ တထေဝ – လျှင်၊ [ မုစ္စတုဝါ မာဝါကို ညွှန်းသည်၊ ] ဒုက္ကဋံ- တည်း၊ ပန - ကား၊ မောစနရာဂေန – လွှတ်စေခြင်း၌ ဖြစ်သော ရာဂဖြင့်၊ ဥပက္ကမန္တဿ- ၏၊ မုတ္တေ - လွတ်လသော်၊ သံဃာဒိသေသော၊ အမုတ္တေ – သော်၊ ထုလ္လစ္စယံ၊ ဣတိ– ဤသို့မှတ်အပ်၏။

ဒါရုမိတလိကာ။ ။ဒါရုနာ–သစ်သားဖြင့်+ကတာ-ပြုလုပ်အပ်သော+မိတာ-(မိန်းမရုပ်တည်း)၊ ဒါရုမိတာ၊ [ယောဇနာ၌ "ဒါရုဧဝ + မိတာ" ဟု ပြုသည်ကို စဉ်းစားပါ။] ဒါရုမိတာဧဝ ဒါရုမိတလိကာ၊ ယဒနုပပန္နာသုတ်ကြီးဖြင့် လိကပစ္စည်းဟု ယောဇနာဆို၏၊ မိတာ၌ အာကို ရဿပြု။

သုန္ဒရဝတ္တုမှိ-သုန္ဒရဝတ္ထု၌၊ အယံသုန္ဒရောနာမ-မည်သည်၊ ရာဇဂဟေ-၌၊ ကုလဒါရကော - အမျိုးကောင်းသားတည်း၊ သဒ္ဓါယ - ဖြင့်၊ ပဗ္ဗဇိတော - ရှင်ရဟန်း အဖြစ်သို့ ရောက်ခဲ့သူတည်း၊ ( ရှင်ရဟန်း ပြုခဲ့သူတည်း၊ ) အတ္တဘာဝဿ - အတ္တဘော၏၊ အဘိရူပတာယ - လွန်ကဲသော အဆင်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ– အလွန်လှသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ သုန္ဒရောတိနာမံ - ကို၊ လဘိ–ပြီ၊ တံ-ထိုသုန္ဒရကို၊ ရထိကာယ – ရထားလမ်း၌၊ ဂစ္ဆန္တံ - သွားနေသည်ကို၊ ဒိသွာ - ၍၊ သမုပ္ပန္နဆန္ဒရာဂါ - လွန်စွာဖြစ်သော ဆန္ဒရာဂရှိသော၊ သာရတ္တိ-သည်၊ [ပါဠိတော်၌လာသော မိန်းမကို "သာ"ဟု ညွှန်ပြသည်။] ဂူမ်ံဝိပ္ပကာရံ - ၍ ဖေါက်ပြန်သော အမှုကို၊ အကာသိ - ပြီ၊ [ ပါဠိတော်၌ တိုက်ရိုက်လာသော အမှုဖြစ်၍ "ဂူမံ" ဟု ဆိုသည်၊ ထိုအမှုကားသင်းပိုင်မ၍ အင်္ဂါဇာတ်ကို စုတ်မှုတည်း၊]ထေရောပန-သည်ကား၊ အနာဂါမီ-ဂါမ်တည်း၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ သော- ထိုထေရ်သည်၊ န သာဒယိ-မသာယာ၊ ပန–ဆက်၊ သော-၍မသာယာခြင်းသည်၊ အညေသံ-အခြားရဟန်းတို့၏၊ အဝိသယော-အရာမဟုတ်။ [အနာဂါမ်မဟုတ်လျှင် မသာယာဘဲ မနေနိုင်–ဟူလို၊]

ဂူတော - ၍ သုန္ဒရဝတ္ထုမှ၊ ပရေသု – န်သော၊ စတူသု ဝတ္ထူသု-တို့၌၊ တေဘိက္ခူ–တို့သည်၊ ဇင္ဃာ-ထိုင်းမှိုင်း ဖျင်းအကုန်သည်၊ ဒုမ္မေဓာ–ပညာ မရှိကုန်သည်၊ ( ဟုတွာ-၍၊ ) မာတုဂါမဿ - ၏၊ ဝစနံ–ကို၊ ဂဟေတွာ–ယူ၍၊ ["အဟံ ဝါယမိဿာမိ, တွံ မာ ဝါယမိ "စသောစကားကို နားထောင်၍၊] တထာ–ထို မာတုဂါမ ပြောသည့်အတိုင်း၊ ကတွာ - ၍၊ ပစ္ဆာ–၌၊ ကုက္ကုစ္စာယိံသု – ကုက္ကုစ္စ ပြုကြကုန်ပြီ၊ အက္ခယိတာဒိနိ – တ အစရှိကုန်သော၊ တီဏိ ဝတ္ထူနိ ဥတ္တာနတ္တာနေဝ၊ ဣဒိသု - န်သော၊ ဆိန္နသီသဝတ္ထူသု–တို့၌၊ အယံ-ကား၊ ဝိနိစ္ဆယော- တည်း၊ ဝဏ္ဏကတေ - လုံးအောင် ပြုအပ်သော၊ ဝိဝဋေ-ဖွင့်အပ်သော၊ မုခေ–၌၊[ဝဏ္ဏ–လုံးအောင် ဝိုင်းအောင်+ကတ-ပြုအပ်သည်ကိုပင်"ဝိဝဋေ " ဟု ထပ်ဖွင့်၊ ပါးစပ်ကို ဝိုင်းထားလျှင် ပွင့်နေသည် – ဟူလို၊ ] အင်္ဂဇာတံ–ကို၊ ပဝေသေန္တော - သွင်းလသော်၊ ဟေဋ္ဌာဝါ - အောက်အာဏ္ဍ ဖြင့်သော်ငင်း၊ ဥပရိဝါ– ဖြင့်သော်ငင်း၊ ဥဘယပဿေဟိဝါ - ၂ ဘက်သော ဘေးတို့ဖြင့်သော်ငင်း၊ ဆုပန္တံ - ထိသော အင်္ဂါဇာတ်ကို၊ သစေ ပဝေသေတိ-အံ့၊ (ဝေံ သတိ)၊ ပါရာဇိကံ–သည်၊ (ဟောတိ)၊ စတူဟိပိ ပဿေဟိ-တို့ဖြင့်လည်း၊ အဆုပန္တံ - ကို၊ ပဝေသေတွာ - ၍၊ အဗ္ဘန္တရေ - ပါးစပ်အတွင်း၌၊ တာလုကံ-အာစောက်ကို၊ သစေ ဆုပတိ-အံ့၊ (ဝေံသတိ)၊ ပါရာဇိကမေဝ–ကပင်တည်း၊ စတ္တာရိ ပဿာနိ–တို့ကိုငင်း၊ တာလုကဉ္စ-ကိုငင်း၊အဆုပန္တော-

မထိစေဘဲ(ကာရိတ်ကြေ)၊ [(တနည်း)“ အဆုပန္နံ ”ဟု ရှိစေ၍ “မထိသော အင်္ဂါဇာတ်ကို”ဟု ပေး၊]အာကာသဂတမေဝ-ဟင်းလင်းအရပ်၌ တည်သည် ကိုသာ၊ ကတွာ- ၍၊ သစေ ပဝေသေတိစ- အကယ်၍မူလည်း သွင်းအံ့၊ သစေ နီဟရတိစ-အကယ်၍ မူလည်း နှုတ်အံ့၊ (ဧဝံ သတိ)၊ ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)။

ပန–ဆက်၊ ဒန္တာ - သွားတို့သည်၊ သုဖုသိတာ–ကောင်းစွာထိကုန်သည်၊ ဂါ-ကောင်းစွာ စေ့ကုန်သည်၊ ယဒိ( ဟောန္တိ)-အံ့၊ အန္တော မုခေ-ပါးစပ် တွင်း၌၊ ဩကာသော - သွင်းခွင့်သည်၊ ယဒိ နတ္ထိ-အံ့၊ ဒန္တာစ – တို့ကိုလည်း၊ ဗဟိ-၌ ဩဋ္ဌမံသေန–နှုတ်ခမ်းသားဖြင့်၊ ယဒိ ပဋိစ္ဆန္နာ- အကယ်၍ ဖုံးထား အပ်ကုန်အံ့၊(ဧဝံ သတိ)၊ တတ္ထ-ထို နှုတ်ခမ်းဖြင့် ဖုံးထားအပ်သော သွားတို့၌၊ ဝါတေန- လေသည်၊ အသမ္ဖုဋ္ဌံ - မတွေ့ထိအပ်သော၊ အလ္လောကာသံ - စိုစို ဖတ်ဖတ် အရပ်သို့၊ တိလဖလမတ္တမ္ပိ- ကိုလည်း၊ ပဝေသေန္တဿ- ၏၊ ပါရာ ဇိကမေဝ-ပင်တည်း၊ ပန-ဆက်၊ ဩဋ္ဌမံသေ- ကို၊ ဥပ္ပါဋိတေ - ခွါထုတ်အပ် ပြီးသော်၊ ဒန္တေသုယေဝ - တို့၌သာ၊ ဥပက္ကမန္တဿ ထုလ္လစ္စယံ ( ဟောတိ)၊ ယောပိ ဒန္တော- သည်လည်း၊ ဗဟိ - ၌၊ နိက္ခမိတွာ – ခေါထွက်၍၊ တိဋ္ဌတိ- ၏၊ ဩဋ္ဌေဟိ - တို့ဖြင့်၊ ပိဒဟိတုံ - ပိတ်ခြင်းငှါ၊ န သက္ကာ - မတတ်ကောင်း၊ တတ္ထ-ထို ခေါထွက်နေသော သွား၌၊ ဥပက္ကမန္တေပိ - သော်ငြင်း၊ ဗဟိ -၌၊ နိက္ခန္တဇိဝှါယ-ထွက်သောလျှာ၌၊ ဥပက္ကမန္တေပိ–သော်ငြင်း၊ ထုလ္လစ္စယမေဝ- ပင်တည်း၊ ဇီဝမာနက သရီရေပိ- အသက်ရှင်ဆဲ ကိုယ်၌လည်း၊ ( ပြီးခဲ့သော စကား၌ အသေကောင်ကို ဆိုခြင်းဖြစ်၍ ဇီဝမာနကသရီရေ- ဟု စချီသည်၊) (ဥပက္ကမန္တဿ-လုလ္လပြုသော ရဟန်း၏၊) ထုလ္လစ္စယမေဝ-ပင်တည်း။

ပန-ကား၊ ဗဟိ–၌၊ ဇိဝှါယ–ဖြင့်၊ ပလိဝေဌေတွာ-ရစ်ပတ်၍၊ အန္တောမုခံ- ပါးစပ်တွင်းသို့၊ ယဒိပဝေသေတိ–အကယ်၍ သွင်းလိုက်အံ့၊(ဧဝံသတိ၊)ပါရာ ဇိကမေဝ၊ ဂီဝါယ-လည်ပင်း၏၊ ဥပရိ-အထက်၌၊ ဆိန္နသီသဿပိ-ပြတ်သော ဦးခေါင်းရှိသော အလောင်းကောင်၏လည်း၊ အဓောဘာဂေန – အောက် အဘို့ဖြင့်၊ အင်္ဂဇာတံ ပဝေသေတွာ,တာလုကံ–အာစောက်ကို၊ ဆုပန္တဿ– တို့သောရဟန်း၏၊ ပါရာဇိကမေဝ–ပင်တည်း၊ အဋ္ဌိကဝဏ္ဏမ္ပိ–၌၊ သုသာနံ– သုသာန်သို့၊ ဂစ္ဆန္တဿာပိ - သွားသောရဟန်း၏လည်း၊ ဒုက္ကဋံ (ဟောတိ)၊ အဋ္ဌိကာနံ-အရိုးတို့ကို၊ သင်္ကမန္တဿာပိ-စုသောရဟန်း၏ငြင်း၊ နိမိတ္တေ- ၌၊ မေထုနရာဂေန, ဥပက္ကမန္တဿာပိ – ၏ငြင်း၊ ကာယသံသဂ္ဂရာဂေန , ဥပက္က မန္တဿာပိ - ၏ငြင်း၊ မုစ္စတုဝါ - လွတ်မူလည်း လွတ်ပစေ၊ မာမုစ္စတုဝါပိ– မလွတ်မူလည်း မလွတ်ပစေ၊ ဒုက္ကဋမေဝ–သာတည်း၊ပေ၊ နာဂိဝဏ္ဏမ္ပိ၊ နာဂ

မာဏဝိကာဝါ-နဂါး လုလင်မသည်မူလည်း၊ ဟောတု–စေ၊ ကိန္နရီအာဒိနံ-ကိန္နရီ အစရှိသော တိရစ္ဆာန်မတို့တွင်၊ အညတရာ ဝါ – တမျိုးမျိုးသော တိရစ္ဆာန်မသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ သဗ္ဗတ္ထ–အလုံးစုံသော တိရစ္ဆာန်မတို့၌၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ယက္ခိဝတ္ထုမှိ၊ သဗ္ဗာပိ – အလုံးစုံလည်း ဖြစ်သော၊ ဒေဝတာ-နတ်မသည်၊ ယက္ခီယေဝ–ယက္ခီမည်သည်သာ။

ပေတိဝတ္ထုမှိ – ၌၊ နိဇ္ဈာမတဏှိကာဒိပေတိယော – နိဇ္ဈာမတဏှိကာ အစရှိသော ပြိတ္တာမတို့သည်။ ဝါ–တို့သို့၊ အလ္လိယိတုံပိ-ငြိကပ် သုံးသပ်ခြင်း ငှါလည်း၊ နသက္ကာ- မတတ်ကောင်း၊ ပန- ဆက်၊ ဝိမာနပေတိယော-ဝိမာန မည်သော ပြိတ္တာမတို့သည်၊ အတ္ထိ-ရှိကုန်သေး၏၊ ယာသံ-ယင်းပြိတ္တာမတို့၏၊ ကာဠပက္ခေ–လဆုတ်ပက္ခ၌၊ အကုသလံ-သည်၊ ဝိပစ္စတိ-အကျိုးကို ဖြစ်စေ၏၊ ဝါ-အကျိုးပေး၏၊ ဇုဏှပက္ခေ-လဆန်းပက္ခ၌၊ ဒေဝတာ ဝိယ–နတ်တို့ကဲ့သို့၊ သမ္ပတ္တိံ - စည်းစိမ်ကို၊ အနုဘောန္တိ - ခံစားကြရကုန်၏၊ ဝေရူပါယ - ဤသို့သဘော ရှိသော၊ ပေတိယာဝါ - ၌သော်၎င်း၊ ယက္ခိယာဝါ - ၌သော်၎င်း၊ ဒဿန ဂဟဏ အာမသန ဖုသန ဃဋ္ဋနာနိ-မိမိကမြင်ခြင်း,ကိုင်ခြင်း,သူတို့က သုံးသပ်ခြင်း,ကောင်းစွာ ထိခြင်း,ပွတ်တိုက်ခြင်းတို့သည်၊ သစေ ပညာယန္တိ-အကယ်၍ ထင်ရှားကုန်အံ့၊(ဝေံသတိ)ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ဒဿနံ-သည်၊ အထာပိနတ္ထိ-အကယ်၍ပင်မရှိစေဦးတော့၊ဣတရာနိ-အခြားသောကိုင်ခြင်း အစရှိသည်တို့သည်၊ အထ ပညာယန္တိ၊ ( ဝေံသတိ) ပါရာဇိကမေဝ၊ ဒဿန ဂဟဏာနိ– တို့သည်၊ အထ န ပညာယန္တိ – ကုန်အံ့၊ ပညာယမာနေပိ–

**နိဇ္ဈာမတဏှိကာဒိ**။　။အာဒိဖြင့် ခုပ္ပိပါသ အစရှိသော ပြိတ္တာမတို့ကိုယူ၊ နိဇ္ဈာမ တဏှိက ပြိတ္တာမတို့သည် အမွေးတွင်းမှထ၍ တောက်သော မီးလျှံတို့ဖြင့် အမြဲမီးလောင် နေရကား (မေထုန်မှီဝဲဘို့ကို မဆိုထားဘိ) အနားကပ်ခြင်းငှါပင် မဖြစ်နိုင်၊ ခုပ္ပိပါသ စသော ပြိတ္တာမတို့ကား အမြဲဆာလောင် မွတ်သိပ်နေသည့်အတွက် အရိုးနှင့်အရေသာ ရှိသောကြောင့် အလွန်ရွံဘွယ်ကောင်းသဖြင့် ထိခြင်းငှါပင် မဖြစ်နိုင်။

**ဒဿန၊ပေ၊ဃဋ္ဋနာနိ**။　။ ဒဿနနှင့် ဂဟဏသည် ရဟန်းအတွက် ကိစ္စတည်း၊ မှန်၏-ရဟန်းသည် ထိုပြိတ္တာ မတို့ကို (သူတို့က ကိုယ်ထင် မပြလျှင်) မမြင်နိုင်၊ ကိုယ်ထင် ပြမှ မြင်နိုင်၏၊ ထို ကိုယ်ထင်ပြသောအခါ ရဟန်းအတွက် ဒဿန ဂဟဏ ဖြစ်နိုင်သည်၊ အာမသနစသည်တို့ကား ပြိတ္တာမတို့၏ကိစ္စတည်း၊ ထိုတွင် ရဟန်း၏ကိုယ်ပေါ်၌သုံးသပ် ခြင်း, ထိခြင်း (နာနာထိခြင်း) ပုတ်ခတ်ခြင်းတို့ကို “ အာမသန, ဖုသန (သမ္မုသန–ဋီကာ ပါသည်၊)ဃဋ္ဋနဟု ဆိုသည်။[ဒဿနာဒိသု ဒဿနံနာမ ဘိက္ခုနော (ရဟန်းသည်, ရဟန်းက ) တာသံ ဒဿနံ၊ ဂဟဏံပိ ဘိက္ခုနော တာသံ အင်္ဂပစ္စင်္ဂဂဟဏံ၊ အာမသနာ ဒိနိ ပန တာသံ ကိစ္စာနိ။]

ထင်ရှား ကုန်သော၊ အာမသန ဖုသန ဃဋ္ဋနေဟိ - တို့ဖြင့်၊ တံပုဂ္ဂလံ – ကို၊ ဝိသည့် - သညာ မရှိသည်ကို၊ ကတွာ၊ပေ၊ အထဂ စ္ဆတိ - အကယ်၍ သွားအံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊အယံ-ဤသို့သွားခြင်းသည်၊ အဝိသယောနာမ-အရာမဟုတ်သည် မည်၏၊ တသ္မာ , ဧတ္ထ–ဤသို့ သွားရာ၌၊ အဝိသယတ္တာ–အရာ မဟုတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အနာပတ္တိ၊ ပဏ္ဏာကဝတ္ထု-သည်၊ ပါကဋမေဝ–သည်သာ။

ဥပဟတိန္ဒြိယဝတ္ထုမှိ – ၌၊ ဥပဟတိန္ဒြိယောတိ - ကား၊ ဥပဟတကာယပ္ပ သာဒေါ–လေ သည်းခြေစသည်တို့ ဖျက်ဆီးအပ်သော ကာယပသာဒရှိသည်၊ (ဟုတွာ)၊ ခါဏုကဏ္ဋကမိဝ- သစ်ငုတ် ဆူးငြောင့်ကဲ့သို့၊ သုခံဝါ-သုခဝေဒနာ ကိုဎင်း၊ ဒုက္ခံဝါ-ကိုဎင်း၊ နဝေဒယိ-မခံစားနိုင်၊ အဝေဒယန္တဿာပိ-မခံစား နိုင်ပါသော်လည်း၊ သေဝနစိတ္တဝသေန – မှီဝဲကြောင်းစိတ်၏ အစွမ်းကြောင့်၊ အာပတ္တိ (ဟောတိ)၊ ဆုပိတမဇ္ဈ ဝတ္ထုသ္မိံ –၌၊ ယော- အကြင်ရဟန်းသည်၊ ပေ၊မေထုနေ–၌၊ ဝိချဇ္ဇိတွာ–မတပ်မက်မူ၍၊ ဝိပ္ပဋိသာရီ– နှလုံးမသာယာခြင်း ရှိသည်၊ ဟောတိ-အံ့၊ (ဧဝံသတိ) အဿ–ထိုရဟန်း၏၊ ဒုက္ကဋမေဝ ဟောတိ၊ ဟိ - မှန်၊ မေထုန ဓမ္မဿ– မေထုန်အကျင့်၏၊ ပုဗ္ဗပယောဂါ – ပုဗ္ဗပယောဂ ဖြစ်ကုန်သော၊ ဟတ္ထဂ္ဂါဟာဒယော– လက်ကို ကိုင်ခြင်း အစရှိသည်တို့သည်၊ ယာဝ- လောက်၊ သီသံ – မဂ်ချင်း သွင်းခြင်းဟူသော အထွဋ်အထိပ်သည်၊ န ပါပုဏာတိ–မရောက်သေး၊ ဝါ–မဖြစ်သေး၊ တာဝ- ထို မရောက်သေးသမျှ၊ ဒုက္ကဋေ–၌၊ တိဋ္ဌန္တိ၊ သီသေ–မဂ်ချင်း သွင်းခြင်းဟူသော အထွင်အထိပ်သည်၊ ပတ္တေ-ဖြစ်လသော်၊[သီသေ ပတ္တေတိ-မဂ္ဂေနမဂ္ဂပဋိပါဒနေဇာတေ၊-ဝိမတိ။] ပါရာဇိကံ ဟောတိ၊ ဟိ-မှန်၊ ပဌမ ပါရာဇိကဿ- ၏၊ ဒုက္ကဋမေဝ- သည်သာ၊ သာမန္တံ – အနီးတည်း၊ ဧတရေသံ - ပဌမပါရာဇိကမှ အခြားကုန်သော၊ တိဏ္ဏံ-သုံးပါးကုန်သောပါရာဇိကတို့၏၊ ထုလ္လစ္စယမေဝ-သည်သာ၊ သာမန္တံ၊ ပန-ဆက်၊ အယံဘိက္ခု- သည်၊ ဝါ - ကို၊ [ ပါဠိတော်၌လာသော ရဟန်း။ ] မေထုနဓမ္မေ, ဝိရဇ္ဇိတွာ – မတပ်မက်မူ၍၊ ကာယသံသဂ္ဂံ – ကိုယ်ဖြင့် နှီးနှော ခြင်းကို၊ သာဒယိ- သာယာပြီ၊ ဧတိ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ တေန–ကြောင့်၊ ဘဂဝါ အာပတ္တိ သံဃာဒိသေသဿာတိ အာဟ။

ဘဒ္ဒိယဝတ္ထုသ္မိံ-၌၊ တံ နဂရံ-သည်၊ ဘဒ္ဒိယံနာမ-ဘဒ္ဒိယမည်၏၊ ဇာတိယာ ဝနံနာမ - ဇာတိယာဝနမည်သည်၊ ဇာတိပုပ္ဖ ဂုမ္ဗာနံ - မြလေးပန်းရုံတို့၏၊

ဥပဟတကာယပ္ပသာဒေါ။ ။ကာယပသာဒ မပျက်သေးသော်လည်း ကာယ ဝိညာဉ်ဖြစ်ဘို့ရန် ကျေးဇူး မပြုနိုင်လောက်အောင် သည်းခြေ စသည်တို့ နှောင့်ရှက် ဖျက်ဆီးအပ်သော ကာယပသာဒရှိသူ။

ဥဿန္နတာယ- များကုန်သည်တို့၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဧဝံ- ဤသို့ ဇာတိယာဝန ဟူ၍၊ လဒ္ဓနာမံ-ရအပ်သောအမည်ရှိသော တောတည်း၊ တံ-ထိုတောသည်၊ တဿ နဂရဿ-၏၊ ဥပစာရေ-ဥပစာရ၌၊ ဝါ-အနီး၌၊ ဝနံ- တောတတော သည်၊ ဟောတိ - ၏၊ သော - ထိုရဟန်းသည်၊ တတ္ထ – ထိုတော၌၊ နိပန္နော- လျောင်းနေစဉ်၊ တေန ဝါတူပတ္ထမ္ဘေန – ထို လေ၏ထောက်ပံ့ခြင်းကြောင့်၊ မဟာနိဒ္ဒံ-ကြီးစွာသော အိပ်ပျော်ခြင်းသို့၊ ဩက္ကမိ- သက်ရောက်ပြီ၊ ကေရသံ- တခုတည်းသော ဟိစ္စရှိသော၊ ဘဝင်္ဂမေဝ- ဘဝင်စိတ်သည်သာ၊ ဝတ္တတိ-၏၊ ကိလိန္နံပဿိတ္ဘာတိ - ကား၊ အသုစိကိလိန္နံ- သုက်တို့ဖြင့် ညစ်ပေနေသည်ကို၊ ပဿိတွာ - ၍၊ ( တေမတ္တံ အာရောစေသုံ၌စပ်။ )ဇုတော-ဤ ဘဒ္ဒိယဝတ္ထုမှ၊ ပရာနိ- န်သော၊ သာဒယန ပဋိသံယုတ္တာနိ - သာယာခြင်းနှင့် စပ်ကုန်သော၊ စတ္တာရိဝတ္ထူနိ - တို့ရင်း၊ အဇာနနဝတ္ထုစ - အဇာနနဝတ္ထုရင်း၊ ဣတိ - သို့၊ ပဥ္စ - ၅ ဝတ္ထုတို့သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထာနေဝ၊ ဋ္ဌိသု- န်သော၊ အသာဒယနဝတ္ထူ သု - အသာဒယန ဝတ္ထုတို့၌၊ သဟသာ ဝုဋ္ဌာသိတိ - ကား၊ အာသိဝိသေန- လျင်သော အဆိပ်ရှိသောမြွေသည်၊ ဒဋ္ဌောဝိယ–ကိုက်အပ်သူကဲ့သို့ရင်း၊ အဂ္ဂိ နာ–သည်၊ ဒဍ္ဎောဝိယစ–လောင်အပ်သူကဲ့သို့ရင်း၊ တုရိတံ–အဆောတလျင်၊ ဝုဋ္ဌာသိ–ထပြီ၊ အက္ကမိတ္ဘာ ပဝတ္တေသိတိ–ကား၊ အပ္ပမတ္တော- မမေ့မလျော့ သော၊ အာရဒ္ဓဝိပဿကော-အားထုတ်အပ်သောဝိပဿနာရှိသော၊ ဥပဋ္ဌိတ ဿတိ-ကပ်၍တည်သောသတိရှိသော၊ ဘိက္ခု-သည်၊ ခိပ္ပံ–စွာ၊ ဝုဋ္ဌဟန္တော၀– ထလျက်သာ၊ အက္ကမိတ္ဘာ - ကန်ကြောက်၍၊ ဘူမိယံ- ၌၊ ဝဋ္ဋေန္တော- လိမ့်စေ လျက်၊ ပရိဝဋ္ဋေန္တော- အဖန်ဖန် လိမ့်စေလျက်၊ ဝါ- ၂ လိမ့် ၃ လိမ့် လိမ့်စေ လျက်၊ ဝိဟေဌေန္တော-ညှဥ်းဆဲလျက်၊ ပါတေသိ-ကျစေပြီ၊ ဟိ-ဆက်၊ ပုထုဇ္ဇန ကလျာဏကေန-ကလျာဏ ပုထုဇဉ်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ဧဝရူပေသု-ဤသို့ သဘော ရှိကုန်သော၊ ဌာနေသု- မေထုန်အရာတို့၌၊ ရက္ခိတဗ္ဗံ- စောင့်ရှောက်ထိုက်၏၊ အယဥ္စ- ဤရဟန်းသည်လည်း၊ တေသံ - ထို ကလျာဏပုထုဇဉ်တို့တွင်၊ အည တရော– တပါး အပါအဝင်ဖြစ်သော၊ သင်္ဂါမသီသယောဓော - ကိလေသာ စစ်မြေဦး၌ သူရဲကောင်းဖြစ်သော၊ ဘိက္ခု–ရဟန်းတော်တပါးပေတည်း။

ဒွါရံဝိဝရိတွာနိပန္နဝတ္ထုမှိ– ဒွါရံဝိဝရိတွာနိပန္နဝတ္ထု၌၊ ဒိဝါ ပဋိသလ္လိယ န္တေနာတိ– ကား၊ ဒိဝါ - နေ့အခါ၌၊ နိပဇ္ဇန္တေန - အိပ်သောရဟန်းသည်၊ ဒွါရံ သံဝရိတွာ ပဋိသလ္လိယိတုန္တိ–ကား၊ ဒွါရံ– ကို၊ ပိဒဟိတွာ- ပိတ်၍၊ နိပဇ္ဇိ တုံ–အိပ်ခြင်းငှါ၊ (အနုဇာနာမိ)၊ စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ - ဤသိက္ခာပုဒ်၌၊ ပါဠိယံ- ပါဠိတော်၌၊ အယံနာမအာပတ္တိတိ-ဤမည်သောအာပတ်ဟူ၍၊(ဘဂဝတာ)၊

ကိဉ္စာပိ နဝုတ္တာ – အကယ်၍ကား မိန့်တော်မမူအပ်ပါပေ၊ ပန - ထို သို့ပင် မိန့်တော်မမူအပ်ပါသော်လည်း၊ ဝိဝရိတွာ-ဖွင့်၍၊ နိပန္နဒေါသေန – အိပ်ခြင်း ဟူသောအပြစ်ကြောင့်၊ ဝတ္ထုသို့ - မေထုန်ဝတ္ထုသည်၊ ဥပ္ပန္နေ-သော်၊ [မေထု နသို့ ဥပ္ပန္နေ၊] အနုဇာနာမိဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ပဋိသလ္လိယိတုန္တိ–ဟူ၍၊ ဝုတ္တတ္တာ- ကြောင့်၊ အသံဝရိတွာ- မပိတ်မူ၍၊ ပဋိသလ္လိယန္တဿ – အိပ်သောရဟန်း၏၊ ဒုက္ကဋံ–ကို၊ (အာစရိယေဟိ- အဋ္ဌကထာဆရာတို့သည်၊)ဝုတ္တံ - မိန့်ဆိုအပ်ပြီ၊ ဟိ-မှန်၊ ဘဂဝတော-၏၊ အဓိပ္ပါယံ-အလိုတော်ကို၊ ဉတွာ-၍၊ ဥပ'ါလိတ္ထေရာ ဒီဟိ – ဥပါလိထေရ်အစရှိသော ထေရ်တို့သည်၊ အဋ္ဌကထာ–ကို၊ ထပိတာ- ထားအပ်ပြီ၊ စ – ဆက်ဦးအံ့။ အတ္တာပတ္တိ ဒိဝါ အာပဇ္ဇတိ, နောရတ္တိန္တိ– ဟူသော၊ ဣမိနာပိ – ဤ ပရိဝါ ပါဠိတော်ကြောင့်လည်း၊ တံ – ဤ ဒုက္ကဋ် အာပတ်သည်၊ သိဒ္ဓံ - ပြီး၏။[(ယံအာပတ္တိံ – သို့၊) ဒိဝါ-၌၊ အာပဇ္ဇတိ-၏၊ ရတ္တိံ–၌၊ နောအာပဇ္ဇတိ–မရောက်၊ သာအာပတ္တိ-သည်၊ အတ္ထိ-၏။]

ပန–ပရိဟာရပက္ခမှတပါး,စောဒကပက္ခကိုဆိုဦးအံ့၊ ကီဒိသံ–အဘယ်သို့ ရှုအပ်သော၊ ဒွါရံ-ကို၊ သံဝရိတဗ္ဗံ–ပိတ်ထိုက်သနည်း၊ ကီဒိသံ ဒွါရံ, နသံဝရိ တဗ္ဗံ - နည်း၊ (ဣတိ - ဤကား အမေးတည်း၊) ရုက္ခပဒရဝေဠုပဒရ ကိလဉ္ဇ ပဏ္ဏာဒီနံ – ပျဉ်ပြား , ဝါးပြား , ဖျာ , သစ်ရွက် အစရှိသည်တို့တွင်၊ ယေန ကေနစိ – အမှတ်မထားတပါးပါးသော ဝတ္ထုဖြင့်၊ ကဝါဋံ – တံခါးရွက်ကို၊ ကတွာ-၍၊ ဟေဋ္ဌာ – အောက်၌၊ ဥဒုက္ခလေ - ဆုံငယ်၌၎င်း၊ ဥပရိ-၌၊ ဥတ္တရ ပါသကေစ - အထက်ကွင်းငယ်၌၎င်း၊ ပဝေသေတွာ–၍၊ ကတံ – သော၊ ပရိ ဝတ္တကဒွါရမေဝ–လည်သောတံခါးကိုသာ၊ သံဝရိတဗ္ဗံ–ပိတ်ထိုက်၏၊ အညံ- အခြားသော၊ [ ဝေဠုပံဒွါရံ လှမ်းစပ်။ ] ဂေါရူပါနံ – နွားအပေါင်းတို့၏၊ ဝဇေသု–ခြံတို့၌၊ ရုက္ခသူစိကဏ္ဍကဒွါရံ-သစ်ကျည်လျှိုတံခါး, ဆူးတံခါး၎င်း၊ ဂါမထကနကံ - ရွာပေါက်ကိုပိတ်ကြောင်းဖြစ်သော၊ စက္ကလကယုတ္တဒွါရံ -

ပရိဝတ္တကဒွါရံ။ ။ရှေးခေတ်၌ တံခါးရွက်၏အတွင်း(အရင်း)ဘက်မှာ အဖျား ချွန်ထား၍ အောက်အဖျားဖြင့် ဆုံငယ် သဏ္ဌာန်ရှိသော အပေါက်၎င်း , အထက် အဖျားဖြင့် အပေါ်က သံကွင်း သို့မဟုတ် သစ်သားကွင်း၌၎င်း သွင်း၍ ( တပ်၍ ) ထားကြ၏၊ယခုခေတ်၌ လက်ယှက် ပတ္တာတပ်၍ အသုံးပြုခြင်းနှင့် သဘောတူပင်ဖြစ်၏၊ ထိုတံခါးရွက်သည် ဖွင့်-ပိတ်သော အခါ လည်၍(လယ်၍)နေသောကြောင့် ပရိဝတ္တက ဒွါရမည်၏။ [ ဒွါရသဒ္ဒါ၏ ဟောရင်း အနက်မှာ တံခါးပေါက်သာတည်း၊ ဤ၌ကား တံခါးရွက်များကို ဌာနူပစာရအားဖြင့် "ဒွါရ" ဟု ခေါ်ထားသည်၊ ထို ဒွါရ ဟူသည် အဝင်အထွက် ပြုရသော တံခါးမတည်း၊ ပြူတင်းပေါက်ကို "ဒွါရ"ဟု မခေါ်၊"ဝါတ ပါန"ဟု သာ ခေါ်သည်။]

စက်ဘီးတခုတပ်အပ်သောတံခါးငုင်း၊ ဖလကေသုဝါ- ပျဉ်ချပ်တို့၌သော်ငုင်း၊ ကိဋိကာသုဝါ - ဝါးခြမ်း, ဆူးခက်တံခါးရွက်တို့၌သော်ငုင်း၊ ဒွတ္တိဏိစက္ကလကာနိ-၂ ခု ၃ ခုကုန်သောစက်ဘီးတို့ကို၊ ယောဇေတွာ-တပ်၍၊ ကတံ-သော၊ (တံခါးရွက်ကကြီးသောကြောင့် ဘီး ၂ ခု ၃ ခုတပ်ရသော၊)သံသရဏကိဋိကဒွါရံ–ဝဲဘက်ယာဘက်သို့သွားသော ပျဉ်ချပ်စသောတံခါးငုင်း၊ အာပဏေသုဝိယ - ဈေးဆိုင်တို့၌ကဲ့သို့၊ ကတံ - သော၊ ဥဿ္ဂါဋ္ဋနကိဋိကဒွါရံ – ခွါလှပ်၍ရကောင်းသောပျဉ်ချပ်တံခါးငုင်း၊[ ပျဉ်ချပ်တို့ကို ခွါ၍ဖွင့်ရသောဈေးတံခါး။]

**ရုက္ခသူစိကဏ္ဋကဒွါရံ**။ ။ ရုက္ခသူစိဒွါရ, ကဏ္ဋကဒွါရ ဟု ခွဲ၊ [ ရုက္ခသူစိဒွါရံ, ကဏ္ဋကဒွါရံစ၊–ဋီကာ။ ] တံခါးပေါက်နေရာဝယ် ဝဲဘက် ယာဘက် အစွန်၌ ၂ ပေါက် ၃ ပေါက်စသည် ထွင်းထားသော တိုင် ၂ တိုင်ကိုစိုက်၍ ထို အပေါက်၌ သစ်ချောင်း ( ဝါးလုံးဖြစ်စေ ) လျှို၍ပိတ်ရသော တံခါးသည် ရုက္ခသူစိဒွါရမည်၏၊ တံခါးပေါက်ကျဉ်းလျှင် ဆူးတခက်, ကျယ်လျှင် ဆူးခက်အများကပ်၍ လုပ်ထားသော ( ဆူးခက်ပြားဖြင့် လုပ်ထားသော ) တံခါးသည် ကဏ္ဋကဒွါရ မည်၏။ [ သစ်သားချောင်းကို အလယ်တန်းလျက် အပေါက်များ ဖေါက်ပြီးလျှင် ထိုအပေါက်၌ ဝါးလုံးများစိုက်၍ ဆူးကပ်ထားသောဝင်းတံခါးမျိုးသည် အရင်း၌ကွင်းတပ်ဘို့ရာတိုင်ပါလျှင် ပရိဝတ္တကဒွါရ, မပါလျှင် ဤကဏ္ဋကဒွါရပင်တည်း။

**စက္ကလကယုတ္တဒွါရံ**။ ။အောက်ဆုံ– အထက်ကွင်း ( ပတ္တာ ) မပါသောကြောင့် တယောက်ထည်း မဖွင့် မပိတ်နိုင်ရကား အောက်အလယ်၌ ဘီးတခုသာ တပ်၍ ဖွင့်ရ ပိတ်ရသော တံခါးရွက်တည်း၊ အကယ်၍ ဆုံ-ကွင်းပါသဖြင့် လည်နိုင်သော တံခါးကြီး ဖြစ်မူ ပရိဝတ္တကဒွါရတွင် ပါဝင်လေပြီ။ [ ဂါမဒွါရဿ ပိဓာနတ္ထံ ပဒရေန ကဏ္ဋကသာခါဟိဝါ ကတဿ ကဝါဋဿ ဥဒုက္ခလပါသရဟိတဘာဝ ( ဆုံငယ်ကွင်း မပါသည့်အတွက် ) ေကေန သံဝရိတုံ ဝိဝရိတုံစ အသက္ကုဏေယျဿ ဟေဋ္ဌာ ဧကံ စက္ကံ ယောဇေန္တိ၊ ယေန ပရိဝတ္တမာနေန ( လည်သော ယင်းစက်ဘီးကြောင့် ) တံ ကဝါဋံ သုခထကန်( ပိတ်၍လွယ်သည် ) ဟောတိ၊ တံ သန္ဓာယ ဝုတ္တံ စက္ကလကယုတ္တဒွါရန္တိ၊ စက္ကမေဝ ဟိ လာတဗ္ဗဋ္ဌေန ( သံဝရဏဝိဝရဏတ္တာယ ဂဟေတဗ္ဗဋ္ဌေန ) စက္ကလကံ၊ စက္ကမေဝ လာတဗ္ဗံတိ စက္ကလံ–ဖွင့်ခြင်း ပိတ်ခြင်းအကျိုးငှါ တပ်အပ်သောစက်ဘီးကို၊ ''စက္ကလ''ဟု ခေါ်၊ စက္ကလမေဝ စက္ကလကံ-သွတ္ထ၌ ကပစ္စည်း၊ တေန ယုတ္တံတိ ကဝါဋံ စက္ကလကံနာမ– ထို စက်ဘီးပါသော တံခါးရွက်ကိုလည်း သဟစရဏ နည်းအားဖြင့် စက္ကလက ဟု ခေါ်၊ စက္ကလကေန+ယုတ္တံ စက္ကလကယုတ္တံ (ဒွါရံ) ။–ဝိမတိ။]

**သံသရဏ ကိဋိကဒွါရံ**။ ။ အောက်၌ ဘီးငယ်များ တပ်ထားသဖြင့် ဝဲဘက်သွားလိုက် ယာဘက်သွားလိုက်နှင့်လှည့်လည်သွားလာသော ပြားချပ်ချပ်တံခါးတည်း၊ ဤတံခါး၏အောက်၌ ဘီးကလေးများ သွားဘို့ရန် လမ်းကြောင်းလည်းရှိရမည်။ [ ကိဋိကာသူတိ–ဝေဠုပေသိကာဟိ, ကဏ္ဋက သာခါဟိစ ကတထကနကေသု (ပြုအပ်သော တံခါးရွက်တို့၌ ) –ဝိမတိ၊ ရှေးက ''ကဲလား''ဟု ပေးသည်ကို စဉ်းစားပါ။ ]

ဒွိသု– ၂ ခုသော်လည်းဖြစ်ကုန်သော၊ တီသု-ကုန်သော၊(တနည်း)ဒွတ္တိသု-၂ခု သော်လည်း ဖြစ်ကုန် ၃ ခုသော်လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ဌာနေသု- အရပ်တို့၌၊ ဝေဏုသလာကာ – ဝါးခြမ်းစိတ်တို့ကို၊ ဝေါပ္ပေတွာ– စိ၍၊ ဝါ– ကြိုးတို့ဖြင့် ယက်၍၊ ပဏ္ဏကုဋိသု–သစ်ရွက်ကျောင်းတို့၌၊ ကတံ–သော၊ သလာကဟတ္ထက ဒွါရံ– ဝါးခြမ်းစိတ်အပေါင်း တံခါးငှင်း၊ ဒုဿသာဏိဒွါရံ- အဝတ်ပြားဖြင့် ပြုအပ်သော တံခါးငှင်း၊ [သာဏိကို"ပန္နကာဝတ္ထ-အဝတ်ပြား(ဂျပ်ပြား)" ဟု ထောမနိဓိဖွင့်၏၊ ရှေးက"တင်းတိမ်"ဟု ပေးကြ၏။] ဣတိ-သို့၊ ဝေရူပံ- သော၊ ဒွါရံ-ကို၊ န သံဝရိတဗ္ဗံ–မပိတ်ရာ၊ ဝါ-ပိတ်ဘွယ်မလို။

ပန- ဆက်၊ ပတ္တဟတ္ထဿ– လက်၌ သပိတ်ရှိသောရဟန်း၏၊ ဝါ-သပိတ် လက်စွဲသောရဟန်း၏၊ ကဝါဋပ္ပဏာမနေ-တံခါးရွက်ကို တွန်းခြင်း၌၊ ဇာတံ– တခုသော၊ ဒုဿသာဏိဒွါရမေဝ - အဝတ်ပြားဖြင့်ပြုအပ်သော တံခါးသည် သာ၊ [ကိဥ္စသာဏိဒွါရမ္ပိ သင်္ဂဟံဂစ္ဆတိ–ဒုဿသာဏိတံခါးကဲ့သို့ ပေါ့ပါး သော ကိလဥ္စသာဏိဒွါရ (ဖျာအရွက် တံခါးကိုလည်း) ဒုဿသာဏိဒွါရ၌ သွင်းပါ။]အနာပတ္တိကရံ-အနာပတ်ကိုပြု၏၊ အဝသေသာနိ-ကြွင်းသောတံခါး တို့ကို၊ ပဏာမေန္တဿ – တွန်းသောရဟန်း၏၊ အာပတ္တိ ( ဟောတိ )၊ ပန- ဆက်၊ ဒိဝါ-၌၊ ပဋိသလ္လိယန္တဿ-အိပ်သောရဟန်း၏၊ ပရိဝတ္တက ဒွါရမေဝ- လည်သောတံခါးသည်သာ၊ အာပတ္တိကရံ-အာပတ်ကိုပြု၏၊ (အာပတ်သင့်စေ ၏-ဟူလို၊) သေသာနိ–ကြွင်းသောတံခါးတို့ကို၊ သံဝရိတွာဝါ- ပိတ်၍သော် ၄င်း၊ အသံဝရိတွာဝါ – မပိတ်ဘဲသော်၄င်း၊ နိပန္နဿ - အိပ်သောရဟန်း၏၊ အာပတ္တိ နတ္ထိ၊ ပန- ထိုသို့ပင် အာပတ်မရှိပါသော်လည်း၊ သံဝရိတွာ- ပိတ်၍၊ နိပဇ္ဇိတဗ္ဗံ-အိပ်ရာ၏၊ ဧတံ- ဤသို့ ပိတ်၍အိပ်ခြင်းသည်၊ ဝတ္တံ-ကျင့်ဝတ်တည်း။

ပန – ပရိဟာရပက္ခမှ ၊ ပေ ၊ ပက္ခကို ဆိုဦးအံ့၊ ပရိဝတ္တကဒွါရံ – သည်၊ ဝါ– ကို၊ ကိတ္တကေန– အဘယ်မျှလောက်သော အတိုင်းအရှည်ဖြင့်၊ သံဝုတံ– ပိတ်အပ်သည်၊ ဟောတိ-နည်း၊ (ဣတိ-ဤကား အမေးတည်း၊) သူစိဃဋိကာ ဒွိသု–ကျည်ငယ် ကျည်မ အစရှိသည်တို့ကို၊ ဝါ-မင်းတုတ် ကန့်လန့် ( ဂလန့်) အစရှိသည်တို့ကို၊ ဒိန္နာသု-ပေးအပ်ကုန်ပြီးသော်၊ သံဝုတမေဝ–သံဝုတအစစ် သည်သာ၊ ဟောတိ - ၏၊ အပိစ - ထိုသို့ပင် သံဝုတအစစ်ဖြစ်ပါသော်လည်း၊ သူစိမတ္တေပိ-ကျည်ငယ်မျှကိုလည်း၊ ဝါ-မင်းတုတ်မျှကိုလည်း၊ ဒိန္နေ- ပေးအပ်

**သလာကဟတ္ထကဒွါရံ**။ ။[ ဟတ္ထကသဒ္ဒါသည် အပေါင်းအနက်ဟော။] ဝါးခြမ်းစိတ်တို့ကိုစိ၍ဖြစ်စေ, ကြိုးတို့ဖြင့် သီ၍ဖြစ်စေ ပြုအပ်သောတံခါးရွက်။ [ဝေါပ္ပေ တွာတိ–အာဝုဏိတွာ ရဇ္ဇုဟိ ဂန္ထေတွာဝါ၊–ဓိမတိ။]

ပြီးသော်၊ ဝါ-ထိုးအပ်ပြီးသော်၊ ဝဋ္ဋတိ-၏၊ ဃဋိကမတ္တေပိ-ကျည်မျကိုလည်း၊ ဝါ- ကန့်လန့်မျကိုလည်း၊ ဒိန္နေ- ပေးအပ်ပြီးသော်၊ ဝါ- လျှိုအပ်ပြီးသော်၊ ဝဋ္ဋတိ- ၏၊ ဒွါရဗာဟံ - တံခါးဘောင်ကို၊ ဖုသိတွာ- ထိ၍၊ ပိဟိတမတ္တေပိ- ပိတ်အပ်ကာမျှ ဖြစ်သော်လည်း၊ ဝဋ္ဋတိ-၏၊ ဤသကံ-စဉ်းငယ်၊ အဖုသိတေပိ- မထိအပ်သော်လည်း၊ ဝါ-မစိအပ်သော်လည်း၊ ဝဋ္ဋတိ၊ သဗ္ဗန္တိမေန- အလုံးစုံသော အစီအရင်တို့၏ အဆုံး၌ဖြစ်သော၊ ဝိဓိနာ- အစီအရင်ဖြင့်၊ ယာဝတာ- အကြင်မျှ အတိုင်းအရှည်ဖြင့်၊ သီသံ- ဉ(ဦ)းခေါင်းသည်၊ န ပ္ပဝိသတိ - မဝင်နိုင်၊ တာဝတာ- ထို ဉ(ဦ)းခေါင်း မဝင်နိုင်လောက်အောင်သော အတိုင်းအရှည်ဖြင့်၊ အဖုသိတေပိ ဝဋ္ဋတိ၊ ဣတိ-ဤကား အဖြေတည်း။

ဗဟူနံ - များစွာသော ရဟန်းတို့၏၊ ဝဠဉ္ဇနဋ္ဌာနံ - သုံးစွဲအပ်သော အရပ်သည်၊ သစေ ဟောတိ၊ [ ရဟန်းအများ နေရာ ကျောင်းကြီး ဖြစ်အံ့- ဟူလို။] (ဧဝံသတိ)၊ ဘိက္ခုံ၊ဝါ-ကိုသော်၎င်း၊ သာမဏေရံဝါ-ကိုသော်၎င်း၊ အာဝုသော-ငါ့ရှင်၊ ဒွါရံ-ကို၊ ဇဂ္ဂါဟိ-စောင့်ရှောက် လိုက်ပါလော၊ ဣတိ- သို့၊ ဝတွာပိ- လည်း၊ နိပဇ္ဇိတုံ ဝဋ္ဋတိ၊ [ အများသုံးစွဲသော နေရာ မဟုတ်သော်လည်း တယောက်ယောက်ကို အစောင့်ခိုင်း၍ အိပ်နိုင်၏။ ] ဘိက္ခူ- တို့သည်၊ စီဝရကမ္မံဝါ-သင်္ကန်းချုပ်ဆိုးမှုကိုသော်၎င်း၊ အညံ-အခြားသော၊ ကိစ္စံဝါ-တစုံတခုသော အမှုကိုသော်၎င်း၊ ကရောန္တာ-ပြုကုန်လျက်၊ နိသိန္နာ- နေကုန်သည်၊ အထ ဟောန္တိ-အကယ်၍ ဖြစ်ကုန်အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ တေ-ဤ ရဟန်းတို့သည်၊ ဒွါရံ- ကို၊ ဇဂ္ဂိဿန္တိ- နလတံ့၊ ဣတိ-သို့၊ အာဘောဂံ-နှလုံး သွင်းမှုကို ၊ပေ၊ ပန-ဝါဒန္တရကား၊ ကုရုန္ဒဋ္ဌကထာယံ-ကုရုန္ဒီအဋ္ဌကထာ၌၊ ဥပါသကံပိ- ဥပါသကာကို သော်လည်း၊ အာပုစ္ဆိတွာဝါ- ပန်ပြော၍သော် ၎င်း၊ ဧသ- ဤ ဥပါသကာသည်၊ ဇဂ္ဂိဿတိ- တံ့၊ ဣတိ- ဤသို့၊ အာဘောဂံ, ကတွာဝါ- သော်၎င်း၊ နိပဇ္ဇိတုံ ဝဋ္ဋတိ၊ ကေဝလံ- သက်သက်၊ ဘိက္ခုနိံ ဝါ- ကိုသော်၎င်း၊ မာတုဂါမံဝါ - သော်၎င်း၊ အာပုစ္ဆိတုံ နဝဋ္ဋတိ၊ ဣတိ- ဤသို့၊

**အထဘိက္ခူ၊ပေ၊ဝဋ္ဋတိ**။ ။"အထဘိက္ခူ နိသိန္နာ ဟောန္တိ"ပါဌ်ဖြင့် မိမိအိပ်နေစဉ် အခြား ရဟန်းများ အနီး အပါး၌ ရှိကြောင်းကိုပြ၏၊ ထို့ကြောင့် နိသိန္န မဟုတ်ဘဲ လဲလျောင်းနေနေ သွားနေနေ ရပ်နေနေ အခြားရဟန်း တပါးပါး အနီးအပါး၌ရှိလျှင် "ထိုသူသည် မာတုဂါမတို့ နှောက်ရှက်မည်မှ စောင့်ရှောက်လိမ့်မည် "ဟု နှလုံးသွင်း၍ အိပ်ကောင်း၏၊ သို့သော် ထိုသူပါအိပ်ပျော်နေလျှင်ကား ထိုကဲ့သို့အာဘောဂ မပြုထိုက်။

**ဘိက္ခုနိံဝါ၊ပေ၊နဝဋ္ဋတိ** ။ ။ တံခါးပိတ်ရခြင်းကိုယ်က မိန်းမဝင်လာမည်စိုး၍ ပိတ်ရခြင်း ဖြစ်သောကြောင့် ဘိက္ခုနီနှင့် မာတုဂါမများကို " တံခါးကို စောင့်ရှောက်

ဝုတ္တံ- ပြီ၊ ဥါရဿ - ၏၊ ဥဒုက္ခလံဝါ - ဆုံငယ်သည် သော်ငင်း၊ ဥတ္တရပါသကောဝါ-အထက်ကွင်းငယ်သည်သော်ငင်း၊ ဘိန္နောဝါ - ပျက်နေသည်သော်ငင်း၊ အဋ္ဌပိတောဝါ - မတပ်အပ်သေးသည် သော်ငင်း၊ အထဟောတိ- အံ့၊ [ဤသို့ပျက်နေခြင်း, မတပ်ရသေးခြင်းကြောင့်၊] သံဝရိတုံ-ပိတ်ခြင်းငှါ၊ အထနသက္ကောတိ-အံ့၊ ပန–သည်သာမကသေး၊ နဝကမ္မတ္တံဝါ-နဝကမ္မအကျိုးငှါသော်လည်း၊ ဋငွကပုဠွောဝါ – အုငြ်ပုံသည် သော်ငင်း၊ ဝါ - ကိုသော်ငင်း၊ မတ္တိကာဒီနံ- မြေညက် အစရှိသည်တို့၏၊ ရာသိဝါ-အစုသည်သော်ငင်း၊ ဝါ–ကိုသော်ငင်း၊ အန္တောဒွါရေ–တံခါးအတွင်း၌၊ ကတော–ပြုအပ်သည်၊ ဝါ-ထားအပ်သည်၊ အထ ဟောတိ - အံ့၊ ယထာ - အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့် ငြမ်းဖွဲ့အပ်သော်၊ သံဝရိတုံ– ငှါ၊ န သက္ကောတိ, ( တထာ–ထို အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ) အနံ့ဝါ - ငြမ်းကိုသော်လည်း၊ အထဗန္ဓန္တိ - ကုန်အံ့၊ ဝေရူပေ-သော၊ အန္တရာယေ-သည်၊ သတိ–သော်၊ (ဥဒုက္ခလစသည် ပျက်ခြင်း, မတပ်ရခြင်းမှစ၍ တံခါးပိတ်မဖြစ်အောင် ငြမ်းဆင်ထားခြင်းအန္တရာယ်မျိုးရှိလျှင်) အသံဝရိတွာ နိပဇ္ဇိတုံ ဝဋ္ဋတိ၊ ပန- ဆက်၊ ကဝါဋံ-သည်၊ ယဒိ နတ္ထိ – အံ့၊ ( ဝေံသတိ )၊ လဒ္ဓကပ္ပမေဝ - ရအပ်သော အပ်မှုရှိသော အိပ်ခြင်းသည်သာ၊ (ဟောတိ)။

ဥပရိ–အထက်ထပ်၌၊ သယန္တေန–အိပ်သောရဟန်းသည်၊ နိဿေဏိံ –လှေကားကို၊ အာရောပေတွာ-(အထက်သို့) တင်၍၊ နိပဇ္ဇိတဗ္ဗံ-ရာ၏၊ [ပိသံရိတွာ-လှေကားကို ဖျက်၍ဖြစ်စေ , ဘူမိယံပါတေတွာ– အောက်ထပ်သို့ချ၍ဖြစ်စေ , ဆိန္ဒိတွာဝါ – အပေါ် မတက်နိုင်အောင် အဆက် ဖြတ်၍ ဖြစ်စေ, နိပဇ္ဇိတုံဒ် ဝဋ္ဋတိ၊-ဋီကာ။] နိဿေဏိ မတ္ထကေ-လှေကားထိပ်၌၊ ထကနကံ-အပိတ်သည်၊ သစေ ဟောတိ-အံ့၊ ( ဝေံသတိ )၊ ထကေတွာပိ-ပိတ်၍လည်း၊ နိပဇ္ဇိတဗ္ဗံ-ရာ၏၊ ဂဗ္ဘေ–အခန်း၌၊ နိပဇ္ဇန္တေန–အိပ်သောရဟန်းသည်၊ ဂဗ္ဘဒွါရံဝါ-အခန်းတံခါးကိုသော်ငင်း၊ ပမုခဒွါရံဝါ-အဝင်ဝတံခါးကိုသော်ငင်း၊ ယံကိဉ္စိ – အမှတ်မထား တပါးပါးသော တံခါးကို၊ သံဝရိတွာ– ၍၊ နိပဇ္ဇိတုံ ဝဋ္ဋတိ၊ ဧကေ ကုဋ္ဋကေ-တူသော နံရံရှိသော၊ ဂေဟေ-ကျောင်း၌၊ ဒွိသု ပဿေ

လိုက်ပါ''ဟု ပြော၍ မအိပ်ထိုက်၊ ထို့ကြောင့် မိမိအိပ်မည့်အချိန်ဝယ် အတွင်း၌အခြားသူနှင့် စကားပြောနေသော မာတုဂါမ ရှိလျှင် ပြခဲ့သော ( ယောကျ်ား တယောက်ယောက်ကို စောင့်ရှောက်ခိုင်းခြင်း, စောင့်ရှောက်လိမ့်မည်ဟု နှလုံးသွင်းခြင်း-စသော) အစီအစဉ်ကိုပြု၍အိပ်မှ အာပတ်လွတ်သည်။ [မာတုဂါမဿ အန္တောဂဗ္ဘေ ဌိတဘာဝံ ဇာနိတွာပိ ဒွါရေ ယထာဝုတ္တဝိဓိံ ကတွာ နိပဇ္ဇန္တဿ အနာပတ္တိ၊—ဋီကာ။]

သု-၂ ဘက်သော နံပါးတို့၌၊ ဒွါရာနိ-တံခါးတို့ကို၊ ကတွာ-၍၊ သစေဝဋ္ဋဒ္ဓန္တိ-အကယ်၍ သုံးစွဲကုန်အံ့၊ ( ဧဝံသတိ )၊ ဒွေပိ-၂ ပေါက်လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ဒွါရာနိ-တို့ကို၊ ဇဂ္ဂိတဗ္ဗာနိ-စောင့်ရှောက်ထိုက်ကုန်၏၊ တိဘူမကေပိ-ဘုံ ၃ဆင့် ရှိသည်လည်းဖြစ်သော၊ ဝါ-၃ ထပ်ရှိသည်လည်းဖြစ်သော၊ [ဥပရိသယန္တေန စသည်ဖြင့် ၂ ဆင့်ကို ပြပြီးဖြစ်သောကြောင့် " တိဘူမကေပိ " ဟု ဆိုသည်။] ပါသာဒေ-ပြာသာဒ်၌၊ ဝါ-အုဋ်တိုက်၌၊ ဒွါရံ,ဇဂ္ဂိတဗ္ဗမေဝ-သည်သာ။

ဘိက္ခုစာရာ-ဆွမ်းခံလှည့်ရာ ဆွမ်းခံရွာမှ၊ ပဋိက္ကမ္မ-ဖဲခဲ့၍၊ ဝါ-ပြန်ခဲ့၍၊ လောဟပါသာဒ သဒိသံ-လောဟပါသာဒနှင့် အလားတူသော၊ ပါသာဒံ-ပြာသာဒ်သို့၊ ဗဟူ-ကုန်သော၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ ဒိဝါဝိဟာရတ္ထံ-နေ့၌နေခြင်း အကျိုးငှါ၊ သစေ ပဝိသန္တိ – ကုန်အံ့၊ ( ဧဝံသတိ )၊ သံဃတ္ထေရေန - သံဃာ့ ထေရ်သည်၊ ဒွါရပါလဿ-တံခါးစောင့်အား၊ [တံခါးမုခ်၌ဖြစ်စေ,တံခါးမကြီး၌ဖြစ်စေ , လှေခါးရင်း၌ ဖြစ်စေ နေ၍စောင့်သော တံခါးစောင့်။] ဒွါရံ-ကို၊ ဇဂ္ဂါဟိ–စောင့်ရှောက်လိုက်လော၊ ဣတိ , ဝတ္တဗ္ဗော-သော်ငြား၊ ဒွါရဇဂ္ဂနံ-တံခါးကို စောင့်ရှောက်ခြင်းသည်၊ တေဿ – ၏ တံခါးစောင့်၏၊ ဘာရော-တာဝန်တည်း၊ ဣတိ အာဘောဂံ, ကတွာဝါ - သော်ငြား၊ ပဝိသိတွာ, နိပဇ္ဇိတဗ္ဗံ-ရာ၏၊ ယာဝ သံဃနဝကေန-သံဃနောရဟန်းတိုင်အောင်၊ ဝါ-သံဃာတွင်အငယ်ဆုံး ရဟန်းတိုင်အောင်၊ ဧဝမေဝ-ဤအတိုင်းသာ၊ ကာတဗ္ဗံ-ရာ၏၊ ပုရေ - ရှေး၌၊ ပဝိသန္တာနံ - ဝင်ကုန်သော ရဟန်းတို့၏၊ ( အာဘောဂ်၌စပ်) ဒွါရဇဂ္ဂနံနာမ– တံခါးကို စောင့်ရှောက်ခြင်းမည်သည်၊ ပစ္ဆိမာနံ–နောက်မှ လာကုန်သောရဟန်းတို့၏၊ ဘာရော–တည်း၊ ဣတိဧဝံ–သို့၊ အာဘောဂံ-ကုံ၊ ကာတုံပိ ဝဋ္ဋတိ၊ [ ပါဠိယာ အာဂစ္ဆန္တေ သန္တာယဝုတ္တံ= ဆက်ကာဆက်ကာ အစဉ်အတိုင်း ဝင်လာသူတို့ကို ရည်ရွယ်၍ " ပစ္ဆိမာနံ ဘာရော "ဟု ဆိုသည်၊ အဆက်ပြတ်၍ အတော်ကြာမှ ဝင်လာသူတို့ကိုကား တာဝန် မထားထိုက်။] အနာပုစ္ဆာဝါ - မပန်ပြောမူ၍သော်ငြား၊ အာဘောဂံ– ကို၊ အကတွာဝါ-သော်ငြား၊ အသံဝုတဒွါရေ - မပိတ်အပ်သော တံခါးရှိသော၊ အန္တောဂဗ္ဘေ

ဒွေပိ၊ပေ၊ဇဂ္ဂိတဗ္ဗာနိ ။ ။ အတွင်းခန်းနှင့် အပြင်ဆောင်မသည် ၄ ဘက်နံရံ အားဖြင့် တူသောနံရံရှိသည်ကို "ကေကုဋ္ဋကဂေဟ"ဟု ဆိုသည်၊ ထိုသို့ နံရံတူရာဝယ် အဝင်အထွက် (ဆောင်မအတွက် တခု , အခန်းအတွက် တခု) တံခါး ၂ ခုရှိလျှင် ၂ ခု လုံးကို ပိတ်ပါ–ဟူလို၊" သစေ ကေသ္မိံ ဒွါရေ ကဝါဋံဝါ နတ္ထိ , ဟေဋ္ဌာ ဝုတ္တနယေန သံဝရိတုံဝါ နသက္ကာ၊ ဧတရံ ဒွါရံ အသံဝရိတွာပိ ( ပိတ်၍ဖြစ်သော အခြားတံခါး ပေါက်ကို မပိတ်ဘဲလည်း ) နိပဇ္ဇိတုံ ဝဋ္ဋတိ " ဟု သာရတ္ထဋီကာဆို၏၊ သို့သော် ထို စကားကို စဉ်းစားသင့်၏၊ ပိတ်၍ဖြစ်သောတံခါးပေါက်ကို ပိတ်မှ သင့်မည်ထင်သည်။

ဝါ- အခန်းတွင်း၌သော်၎င်း၊ (ဆောင်မ၌- ဟူလို၊ ) [ အသံဝုဘာဠ္ဂါရေ ဗဟိ ဂဗ္ဘေတိ ယောဇေတဗ္ဗံ - ဋီကာ။ ] ဗဟိဝါ - အခန်းပြင်ဘက်၌ သော်၎င်း၊ နိပဇ္ဇန္တာနံ- အိပ်သောရဟန်းတို့၏၊ အာပတ္တိ(ဟောတိ)၊ ဂဗ္ဘေဝါ- အခန်း တွင်း၌ သော်၎င်း၊ ဗဟိဝါ- ပြင်ဘက်၌သော်၎င်း၊ နိပဇ္ဇနကာလေပိ - အိပ်ရာ အခါ၌လည်း၊ ဒွါရဇဂ္ဂနံနာမ- တံခါးကို စောင့်ရှောက်ခြင်းမည်သည်၊ မဟာ ဒွါရေ- တံခါးမကြီး၌၊ပေ၊ ဝဋ္ဋတိယေဝ- သည်သာ၊ လောဟပါသာဒါဒိသု- လောဟပါသာဒအစရှိသောကျောင်းတို့၌၊ အာကာသတလေ-အလယ်ခေါင် ဟင်းလင်းအပြင်၌၊ [ လောဟပါသာဒမည်သော သံကျောင်းကြီး၌ ပတ်ပတ် လည် အခန်းရှိ၍ အလယ်ခေါင်၌ အမိုးမရှိဘဲ ကြမ်းပြင်သာရှိသည်၊ ] နိပဇ္ဇ န္တေနာပိ- အိပ်သောရဟန်းသည်လည်း၊ ဒွါရံ သံဝရိတဗ္ဗမေဝ။

ဟိ- ဆက်၊ အယံ - ဤဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ ဧတ္ထ - ဤ ဒွါရံပိဝရိတွာနိပန္န ဝတ္ထု၌၊ သင်္ခေပေါ - အကျဉ်းချုပ်တည်း၊ ဇာဝံ ဒိဝါပဋိသလ္လီယနံ - ဤနေ့၌ အိပ်ခြင်းကို၊ ယေနကေနစိ - အမှတ်မထား တပါးပါးသော အကာဖြင့်၊ [တံတိုင်းဖြင့်ဖြစ်စေ, စည်းရိုးဖြင့်ဖြစ်စေ-ဟူလို၊]ပရိက္ခိတ္တေ- ကာရံအပ်သော၊ [အကာ၏ အမြင့်ပမာဏကို သဟသေယျသိက္ခာပုဒ်အတိုင်း "တတောင်ထွာ" ဟု ဆိုကြ၏၊] သဒွါရဗန္ဓေ-ဖွဲ့တပ်အပ်သော တံခါးနှင့်တကွဖြစ်သော၊ ဌာနေ- အရပ်၌၊ ကထိတံ - ဆိုအပ်ပြီ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ အဗ္ဘောကာသေဝါ-လွင်တီး ခေါင်၌သော်၎င်း၊ ရုက္ခမူလေဝါ - သစ်ပင်၏အနီးအောက်၌သော်၎င်း၊ မဏ္ဍ ပေဝါ - မဏ္ဍပ်၌သော်၎င်း၊ ယတ္ထကတ္ထစိ - အမှတ်မထား တပါးပါးသော၊ သဒွါရဗန္ဓေ-ဖွဲ့တပ်အပ်သော တံခါးနှင့်တကွဖြစ်သော အရပ်၌၊ နိပဇ္ဇန္တေန- သည်၊ပေ၊နိပဇ္ဇိတဗ္ဗံ-၏၊ မဟာပရိဝေဏ-ပရိဝုဏ်ကြီးသည်၊ဝါ-ကျောင်းဝိုင်း ကြီးသည်၊ မဟာဗောဓိယင်္ဂဏလောဟပါသာဒင်္ဂဏသဒိသံ - မဟာဗောဓိ ယင်ပြင်, လောဟပါသာဒယင်ပြင်နှင့် အလားတူသော၊ [ ဤ စကားကား အများလှည့်လည်ရာဖြစ်ပုံကို ပြသောစကားတည်း၊ ] ဗဟူနံ – များစွာသော ရဟန်းရှင် လူတို့၏၊ သြသရဏဋ္ဌာနံ – သက်ရောက်ရာ အရပ်သည်၊ သစေ ဟောတိ-အံ့၊ ယတ္ထ-အကြင်ပရိဝုဏ်ကြီး၌၊ ဝါ – အကြင်ကျောင်းဝိုင်းကြီး၌၊ ဒွါရံ–သည်၊ ဝါ-ကို၊ သံဝုတံ-ပိတ်အပ်သည်၊ (သမာနံ)ပိ – လည်း၊ သံဝုတ ဋ္ဌာနေ-ပိတ်အပ်သော အရာ၌၊ ဝါ- ပိတ်မြဲတိုင်၊၊ န တိဋ္ဌတိ-မတည်၊ ဒွါရံ– ကို၊ အလဘန္တာ – မရသူတို့သည်၊ ပါကာရံ - တံတိုင်းကို၊ အာရုဟိတွာပိ – တက်၍လည်း၊ ဝိစရန္တိ - လှည့်လည်တတ်ကုန်၏၊ တတ္ထ - ထို ပရိဝုဏ်ကြီး၌၊ ဝါ – ၌၊ သံဝရဏ ကိစ္စံ – ပိတ်ဘွယ် ကိစ္စသည်၊ နတ္ထိ၊ [ဤနေရာ၌ "ဇာတိ –

ဤကား အကျဉ်းချုပ်တည်း" ပြန်လှည့်ဘို့ရန် ဉာတိ ရှိသင့်မည်ထင်သည်။ အတော်ဝေးမှ "ယောစ ဗန္ဓိတွာ နိပဇ္ဇာပိတောတိ" ဟု ဉာတိ တွေ့ရ၏၊ ထို ဉာတိကျမှ ပြန်လှည့်လျှင်"သင်္ခေပ"ဟု မဆိုနိုင်၊ အတော်ကျယ်သော ဝိတ္ထာရ ဖြစ်နေပြီ။]

ရတ္တိံ - ညဥ့်အခါ၌၊ ဒွါရံ – ကို၊ ဝိဝရိတွာ – ဖွင့်၍၊ နိပန္နော – အိပ်သော ရဟန်းသည်၊ အရုဏေ - အရုဏ်သည်၊ ဥဂ္ဂတေ - တက်ပြီးလသော်၊ ဝါ– တက်ပြီးခါမှ၊ ဥဋ္ဌဟတိ-ထအံ့၊ အနာပတ္တိ (ဟောတိ)၊ ပဗုဇ္ဈိတွာ – နိုးပြီး၍၊ ပုန–တဖန်၊ ဝါ- ထပ်၍၊ သစေ သုပတိ – အကယ်၍ အိပ်အံ့၊ ( ဧဝံ သတိ )၊ အာပတ္တိ(ဟောတိ)၊ ပန– ဆက်၊ ယော - အကြင် ရဟန်းသည်၊ အရုဏော- သည်၊ ဥဂ္ဂတေ–တက်ပြီးလသော်၊ ဝုဋ္ဌဟိဿာမိ– ထအံ့၊ ဉာတိ–သို့၊ ပရိစ္ဆိန္ဒိတွာဝ–အချိန်ကို ပိုင်းခြားပြီး၍သာ၊ ဒွါရံ,အသံဝရိတွာ-မပိတ်မူ၍၊ ရတ္တိံ–၌၊ နိပဇ္ဇတိ-၏၊ စ – အိပ်ရှိသော မကသေး၊ ယထာပရိစ္ဆေဒမေဝ - အပိုင်းအခြား အတိုင်းသာလျှင်၊(အရုဏ်တက်မှသာ)၊ ဝုဋ္ဌာတိ-ထအံ့၊ [တချို့စာအုပ်များ၌၊ နဝုဋ္ဌာတိဟု နပါသည်ကားအပို။][ယထာပရိစ္ဆေဒမေဝ ဝုဋ္ဌာတီတိ အရုဏေ ဥဂ္ဂတေယေဝ ဥဋ္ဌဟတိ၊– ဋီကာ။] တဿ – ထို ရဟန်း၏၊ အာပတ္တိယေဝ– ပင်တည်း၊ ပန–ဝါဒန္တရကား၊ မဟာပစ္စရိယံ-၌၊ ဧဝံ-သို့၊ ["အရုဏ်တက်မှ

**အရုဏေ ဥဂ္ဂတေ၊ပေ၊အနာပတ္တိ။** ။ ညဥ့်အခါ၌ အိပ်စဉ်က "အရုဏ်တက် သော်လည်း မထဘူး"ဟူသော အသုဒ္ဓစိတ် မပါဘဲ ညဥ့်အိပ်ရိုး အိပ်စဉ် သုဒ္ဓစိတ်ဖြင့် အိပ်သောကြောင့် အရုဏ်တက်ပြီးသည့် တိုင်အောင် အိပ်ပျော်နေသော်လည်း အနာ ပတ္တိ။ [သုဒ္ဓစိတ္တေန နိပန္နဿ နိဒ္ဒါယန္တဿေဝ အရုဏေ ဥဂ္ဂတေယေဝ နိဒ္ဒါဝသေနေဝ အနာပတ္တိ၊ (ဥဂ္ဂတေ၌ တပစ္စည်း အတိတ်ဟော)။]

**သစေ ပဗုဇ္ဈိတွာ၊ပေ၊အာပတ္တိ။** ။အာရုဏ်တက်ပြီးမှ နိုးလာ၍, မထဘဲ အိပ်မြဲ တိုင်း ဆက်အိပ်လျှင် အာရုဏ်တက်မှန်း မသိသော်လည်း အာပတ်သင့်၏။ [ဥဋ္ဌဟိတွာ ကတ္တဗ္ဗဿ ဒွါရသံဝရဏာဒိနော အကတတ္တာ အကိရိယသမုဋ္ဌာနာ အာပတ္တိဟောတိ= ထ၍ တံခါးပိတ်မှုကို မပြုခြင်းကြောင့် သင့်အပ်သော အာပတ်ဖြစ်၏၊ အယံ ဟိ အာပတ္တိ ဤဒိသေ ဌာနေ အကိရိယာ၊ ဒိဝါ အသံဝရိတွာ နိပဇ္ဇနက္ခဏေ ကြိယာစ အစိတ္တကာ စာတိ ဝေဒိတဗ္ဗာ၊–ဝိမတိ၊] ထို့ပြင်– "နေ့အခါ မိမိက တံခါးပိတ်၍ အိပ်ပါလျက် တစုံတယောက်က ဖွင့်သွားသော်ငြား , သူ့ဘာသာ ပွင့်သော်ငြား အာနာပတ္တိ " ဟု ဋီကာတို့ ဆိုကြသည်။

**အရုဏော၊ပေ၊အာပတ္တိယေဝ။** ။"အရုဏ်တက်ပြီးမှ ထမည်" ဟု ကြံ၍ ညဥ့် အိပ်စဉ်က တံခါးမပိတ်ဘဲ အိပ်၏၊ ထိုကြံသည့်အတိုင်းလည်း အရုဏ်တက်ပြီးမှ ထ၏၊ ထိုသူ့မှာ နေ့အခါအိပ်မှုကြောင့် ဒုက္ကဋ်အာပတ်သင့်သည်၊ဘာ့ကြောင့်နည်း-"အရုဏော

ထအံ့''ဟု ပိုင်းခြား၍–ဟူလို။ ] နိပဇ္ဇန္တော - အိပ်သော ရဟန်းသည်၊ အနာဒရိယဒုက္ကဋ္ဌာပိ-အနာဒရိယဒုက္ကဋ်မှလည်း၊ န မုစ္စတိ၊ ဧတိ ဝုတ္တံ၊ ပန–ဆက်၊ ယော – အကြင် ရဟန်းသည်၊ ဗဟုဒေဝရတ္တိံ – များစွာသော ညဥ့်ပတ်လုံး၊ ဇဂ္ဂိတွာ – တခါးကို စောင့်ရှောက်ရ၍သော်ငင်း၊ အဒ္ဓါနံ – အဝွန့်ရှည်သော ခရီးကို၊ ဂတ္တွာဝါ- သွားရသော်ငင်း၊ ဒိဝါ- ၌၊ ကိလန္တရူပေါ-ပင်ပန်းသူ၏ အဖြစ်ဟူသော သဘောရှိသည်၊(ဟုတွာ)၊ မဉ္စေ-ညောင်စောင်း၌၊ နိသိန္နော– ထိုင်လျက်၊ ပါဒေ– တို့ကို၊ ဘူမိတော–မြေမှ၊ ဝါ- တည်ရာ အရပ်မှ၊ အမောစေတွာဝ–မလွှတ်စေမူ၍သာလျှင်၊ နိဒ္ဒါဝသေန- အိပ်ပျော်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ နိပဇ္ဇတိ-လျောင်း၏၊ တဿ–ထို ရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ (ဟောတိ)၊ ဩက္ကန္တနိဒ္ဒေါ– သက်ရောက်အပ်သော အိပ်ပျော်ခြင်းရှိသည်၊ ( ဟုတွာ ) [ ( နှစ်နှစ်မြိုက်မြိုက် အိပ်ပျော် သွားသည် - ဟူလို။ ) ] အဇာနန္တောပိ - မသိပါသော်လည်း၊ ပါဒေ-တို့ကို၊ မဉ္စကံ- ညောင်စောင်းငယ်သို့၊ သစေ အာရောပေတိ- အကယ်၍ တင်မိအံ့၊(ဧဝံသတိ)၊ အာပတ္တိယေဝ-ပင်တည်း၊ နိသီဒိတွာ-ထိုင်၍၊ အပဿာယ-တိုင်စသည်ကို မှီ၍၊ သုပန္တဿ- အိပ်သော ရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ (ဟောတိ)၊ စ–ဆက်၊ ယောပိ-အကြင်ရဟန်းသည်လည်း၊ နိဒ္ဒံ–အိပ်ငိုက်ခြင်းကို၊ ဝိနောဒေဿာမိ-ပယ်ဖျောက်အံ့၊ ဣတိ–ဤသို့ ကြံ၍၊ စင်္ကမန္တော - စင်္ကြံ

ဥဂ္ဂတေ–အာရုဏ်တက်ပြီးမှ ထမည်''ဟု အသုဒ္ဓစိတ်ဖြင့် အိပ်သောကြောင့်တည်း၊ ထိုစိတ်မျိုးဖြင့် အိပ်သူမှာ "အနာဒရိယ ( သိက္ခာပုဒ်တော်ကို မလေးစားသော) ဒုက္ကဋ်အာပတ်လည်း (ပဌမအိပ်တုန်းကပင်) သင့်ခဲ့၏''ဟု မဟာပစ္စရီအဋ္ဌကထာ ဆိုသည်။

**နိဒ္ဒါဝသေန နိပဇ္ဇတိ။** ။"အိပ်ပျော်သော အားဖြင့် လဲလျောင်း၏'' ဟူသော ဤစကားကို လောက ပြောရိုးအတိုင်း ပြောသည်၊ အမှန်အားဖြင့်ကား – ဘူမိတော အမောစေတွာ–ခြေတို့ကို တည်ရာ မြေပြင် (ကြမ်းပြင်) မှ မလွှတ်စေဘဲ တဘက်စောင်း လဲလျောင်းသောကြောင့်"နိပန္န–အိပ်သူ''ဟု မခေါ်နိုင်၊ ထို့ကြောင့် " တဿ အနာပတ္တိ'' ဟု ဆိုသည်။ [ နိဒ္ဒါဘိဘူတတာယ ဧကပဿေန ( နံပါးတဘက်ဖြင့်၊ ဝါ–တစောင်း၊) နိပဇ္ဇတိ၊ ဧဝံ ပန နိပန္နော နိပန္နောနာမ နဟောတီတိ အနာပတ္တိ ဝုတ္တာ၊-ဋီကာ။]

**အပဿာယ သုပန္တဿ။** ။ကဋိတော ဥဒ္ဓံ ပိဋ္ဌိကဏ္ဍကေ အပ္ပမတ္တကမ္ပိ ပဒေသံ ဘူမိံ အဖုသာပေတွာ–ခါးအထက် ကျောရိုးတို့ကို အနည်းငယ်မျှ တည်ရာ အရပ်ကို မထိစေဘဲ၊ ထမ္ဘာဒိံ အပဿာယ သုပန္တဿ (အနာပတ္တိ) ၊ ကဋိဋ္ဌံ ပန ဘူမိံ ဖုသာပေန္တဿ သယနံ ဟောတိ=ကျောရိုးကို တည်ရာအရပ်၌ထိစေသူမှာ အိပ်ခြင်းဖြစ်၏၊ (အိပ်သူ ဟုပင် ခေါ်ရ၏၊) ပိဋ္ဌိပသာရဏလက္ခဏာ ဟိ သေယျာ=အိပ်ခြင်းဟူသည် ကျောကို ဆန့်ခြင်းလက္ခဏာရှိ၏။ (ဝိမတိ)။

သွားစဉ်၊ ပတိတ္ဝာ – လည်းကျ၍၊ သဟသာဝ – အဆောတလျင် သာလျှင်၊ ဝုဋ္ဌာတိ- အံ့၊ တဿာပိ- ထိုရဟန်း၏လည်း၊ အနာပတ္တိ၊ ပန-ကား၊ ယော- အကြင် ရဟန်းသည်၊ ပတိတ္ဝာ- ၍၊ တတ္ထေဝ - ထို လည်းကျရာ အရပ်၌ပင်၊ သယတိ-အိပ်အံ့၊ န ဝုဋ္ဌာတိ-မထအံ့၊ တဿ- ထိုရဟန်း၏၊ အာပတ္တိ(ဟောတိ)။

ဧဝ –ဤသို့ နေ့အခါဝယ် အိပ်ရာ၌၊ [တချို့စာအုပ်များ၌ "ဧဝ" မပါ။] ကော-အဘယ် ရဟန်းသည်၊ မုစ္စတိ–အာပတ်မှ လွတ်သနည်း၊ ကော-သည်၊ န မုစ္စတိ–သနည်း၊ ဣတိ–ဤကား အမေးတည်း၊ တာဝ - ကုရုန္ဒီအဋ္ဌကထာ စသည်တို့မှ ရွေးဦးစွာ၊ မဟာပစ္စရိယံ-၌၊ ကေဘင်္ဂေန-တဖက်သော နံပါးကို ချိုးခြင်းဖြင့်၊ ဝါ– တဖက်စောင်း၊ နိပန္နကောယေဝ - အိပ်သော ရဟန်းသည် သာ၊ မုစ္စတိ–အာပတ်မှ လွတ်၏၊ ပန-ဆက်၊ ပါဒေ ဘူမိတော, မောစေတွာ- လွတ်စေ၍၊ နိပန္နော- အိပ်သော ရဟန်းသည်၊ ယက္ခဂဟိတကောပိ - ဘီလူး ဖမ်းယူအပ်သော ရဟန်းသည်ငှင်း၊ ဝိသညီဘူတောပိ - ကင်းသော သညာ ရှိသည်ဖြစ်၍ ဖြစ်သော ရဟန်းသည်ပင်း၊ န မုစ္စတီဟိ ဝုတ္တံ။

ပန - ဝါဒန္တရကား၊ ကုရုန္ဒဋ္ဌကထာယံ- ၌၊ ဗန္ဓိတွာ- ဖွဲ့တုပ်၍၊ နိပဇ္ဇာပိ တောဝ- အိပ်စေအပ်သောရဟန်းသည်သာ၊ မုစ္စတိ-၏၊ ဣတိဝုတ္တံ၊ ပန- ဝါဒ န္တရကား၊ မဟာအဋ္ဌကထာယံ – မဟာအဋ္ဌကထာ၌၊ [ မဟာပဒုမတ္ထေရေန ဝုတ္တံ-၌စပ်။]ယော-အကြင်ရဟန်းသည်၊ စင်္ကမန္တော-စဉ်၊ မုစ္ဆိတ္ဝာ-မိန်းမော တွေဝေ၍၊ ပတိတော–လည်းကျသည်၊ (ဟုတွာ)၊ တတ္ထေဝ–ထို လည်းကျရာ အရပ်၌ပင်၊ သုပတိ-၏၊ တဿာပိ-ထိုရဟန်း၏လည်း၊ အဝိသယတ္တာ–အရာ မဟုတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အာပတ္တိ–သည်၊ နဒိဿတိ- မထင်ရှား၊ ပန– ထိုသို့ပင် အာပတ်မထင်ရှားပါသော်လည်း၊ အာစရိယာ–တို့သည်၊ ဧဝံ-ဤသို့ အနာပတ်ဟူ၍၊ န ကထယန္တိ-မဆိုကြကုန်၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ အာပတ္တိယေဝ–

**တဿာပိ အနာပတ္တိ**။ ။ချော်လဲသလို အိပ်ငိုက်၍ လဲသွားရကား မစောင့်စည်း နိုင်သော အရာဖြစ်သောကြောင့် အာပတ်မသင့်၊ အငိုက်ပြေ၍ စောင့်စည်းနိုင်သော အရာရောက်ပြန်လျှင်လည်း ကမျာကယာ ထသောကြောင့် အာပတ်မသင့်။

**ကေဘင်္ဂေန နိပန္နကော**။ ။ [ကေသဿ ပဿဿ ဘဥ္ဇနေန – ဋီကာ။] ဥဘော ပါဒေ ဘူမိတော အမောစေတွာဝ (ခြေတို့ကို တည်ရာကြမ်းပြင် မြေပြင်မှ မလွတ်စေ ဘဲသာ) ကေပဿေန သရီရံ ဘဥ္ဇိတွာ နိပန္နော – တဖက်စောင်းအားဖြင့် ကိုယ်ကို ချိုး၍ ခတင်ပေါ် ကုလားထိုင်ပေါ်၌ အိပ်သူ။ [တဖက်စောင်း အိပ်သူ အတွက်သာ အနာပတ် ဟု ဆိုသောကြောင့် တဖက်စောင်း မဟုတ်ဘဲ ခြေကို ကြမ်းပြင်ပေါ်ချ၍ ပက်လက်ကုလားထိုင်၌ အိပ်လျှင် ဝိဋ္ဌပသာရဏ ဖြစ်ရကား အာပတ်မှ မလွတ်။]

အာပတ်ပင်တည်း၊ ဣတိ-သို့၊ မဟာပဒုမတ္ထေရေန-သည်၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ပန-ဆက်၊ ယော- အကြင်ရဟန်းကို၊ ယက္ခဂဟိတော- ဘီလူးဖမ်းယူအပ်ပြီ၊ (သော)စ- ထိုရဟန်းငင်း၊ ယော-အကြင်ရဟန်းကို၊ ဗန္ဓိတွာ- ဖွဲ့တုပ်၍၊ နိပဇ္ဇာပိတော- အိပ်စေအပ်ပြီ၊ (သော) စ- ထိုရဟန်းငင်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဒွေ- ၂ ပါးကုန်သော၊ ဇနာ-ရဟန်းတို့သည်၊ အာပတ္တိတော-မှ၊ မုစ္စန္တိယေဝ-ဧကန် လွတ်ကုန်သည် သာ၊ ဣတိ-ဤကား အဖြေတည်း။

ဘာရုကစ္ဆကဝတ္ထုမှိ – ၌၊ အနာပတ္တိ သုပိနန္တေနာတိ– ကား၊ ယသ္မာ– ကြောင့်၊ သုပိနန္တေ - အိပ်မက်၌၊ အဝိသယတ္တာ – အရာမဟုတ်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ (မစောင့်စည်းနိုင်သောကြောင့်၊) စေ- ၍သို့(မေထုန်မှီဝဲရသည်ဟု အိပ်မက် မက်ခြင်းသည်၊) ဟောတိ– ၏၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဥပါလိတ္ထေရော- သည်၊ ဘဂဝတာ– သည်၊ အဝိနိစ္ဆိတပုဗ္ဗံ – ရှေး၌ မဆုံးဖြတ်အပ်သေးသည်၊ (သမာနံပိ-သော်လည်း၊ ဝါ-ဖြစ်သည်လည်းဖြစ်သော၊) ဣမံဝတ္ထုံ-ဤဝတ္ထု ကို၊ နယဂ္ဂါဟေန – နည်းယူသဖြင့်၊ ( ဘုရား ဆုံးဖြတ်ပြီးသည့် ဝတ္ထုများကို နည်းယူသောအားဖြင့်၊)ဝိနိစ္ဆိနိ-ဆုံးဖြတ်ပြီ၊ စ-ဆက်၊ ဘဂဝါပိ-သည်လည်း၊ သုတွာ-ဆုံးဖြတ်ပုံကိုကြားတော်မူ၍၊ ဘိက္ခဝေ-ကို၊ ဥပါလိနာ–သည်၊ သုကထိ တံ- ကောင်းစွာဆိုအပ်ပြီ၊ ဝါ- ကောင်းစွာ ဆုံးဖြတ်အပ်ပြီ၊ အပဒေ- ခြေရာ မရှိသောအရပ်၌၊ ဝါ-ခြေရာမထင်သောအရပ်၌၊ ပဒံ–ခြေရာကို၊ ကရောန္တော ဝိယ– ပြုသူကဲ့သို့၊ အာကာသေ- ၌၊ ပဒံ– တို့၊ ဒဿေန္တော ဝိယ- ပြသူကဲ့သို့၊ ["အပဒေ ပဒံ ကရောန္တော ဝိယ"ကိုပင် ထင်ရှားအောင် "အာကာသေ ပဒံ ဒဿေန္တော ဝိယ"ဟု ထပ်ဖွင့်သည်။] ဥပါလိ – ဥပါလိသည်၊ ဣမံ ပဉှံ – ၍ ပြဿနာကို၊ ကထေသိ-ဖြေဆိုပြီ၊ ဝါ-ဆုံးဖြတ်ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝတွာ-မိန့်တော် မူ၍၊ ထေရံ – ကို၊ ဧတဒဂ္ဂံ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ဥပါလိတိ – ဟူ၍၊ ဧတဒဂ္ဂေ- ဧတဒဂ် အရာ၌၊ ထပေသိ- ထားတော်မူပြီ၊ [ ပဌမ သံဂါယနာအခန်း၌ အနက်ပေး ထားပြီ။] ဣတော- ၍ ဘာရုကစ္ဆကဝတ္ထုမှ၊ ပရာနိ-ကုန်သော၊ သုပဗ္ဗာဒီနိ- သုပဗ္ဗအစရှိကုန်သော၊ ဝတ္ထူနိ- ဝတ္ထုတို့သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထာနေဝ။

**အစိတ္တက ကိရိယာကိရိယ။** ။၍ ဒိဝါပဋိသလ္လိယန သိက္ခာပုဒ်သည် ဝတ္ထုကို သိသောစိတ်, ကျူးလွန်လိုသောစိတ်မရှိဘဲ နေ့အခါ၌ အမှတ်တမဲ့ တံခါးမပိတ်ဘဲ အိပ်မိ လျှင်လည်း သင့်အပ်သောကြောင့် အစိတ္တကသိက္ခာပုဒ်တည်း၊ အိပ်မှုကိုပြုခြင်းသည် ကိရိယ , တံခါးကို မပိတ်ခြင်းကား အကိရိယတည်း။ [ နေ့အခါ မိမိအိပ်တုန်းက တံခါးကိုပိတ်ပါလျက် တစုံတယောက်က ဖွင့်သွားအပ်သော်လည်း "အနာပတ္တိ "ဟု ငင်း , မိမိအိပ်စဉ်က မင်းတုတ်မထိုးဘဲ စေ့ရုံ စေ့ထားသဖြင့် အလိုလို ပွင့်သွားသော် လည်း "ဝဋ္ဋတိ"ဟု ငင်း ဋီကာဆိုသည်။]

ဘိက္ခုနိသမ္ဘယောဇနောဒိသု- ဘိက္ခုနိသမ္ဘယောဇနအစရှိသော ဝတ္ထုတို့၌၊ တေ လိစ္ဆဝိကုမာရာ-ထို လိစ္ဆဝီမင်းသားတို့သည်၊ ခိန္နာပသုတာ– ပျော်ပါးခြင်း၌ အားထုတ်ကြကုန်သည်၊ ( ဟုတ္ဘာ )၊ အတ္တနော – မိမိမိမိ၏၊ ( ဝိစ္ဆာ တပုဒ်ကြေ၊ ) အနာဒရေန – သံဃာကို မလေးစားခြင်းကြောင့်၊ ဧဝံ - သို့၊ အကံသု– ကုန်ပြီ၊ စ - ဆက်၊ တတော – ထိုသို့ သံဃာကို မလေးမစားပြုရာ အခါမှ၊ ပဋ္ဌာယ–စ၍၊ ဝိနာသောဝေ - ပျက်စီးခြင်းသည်သာလျှင်၊ ဥဒပါဒိ– ထင်ရှားဖြစ်ပြီ။

ဝုမ္ပပဗ္ဗဇိတဝတ္ထုမှိ-ဝုမ္ပပဗ္ဗဇိတဝတ္ထု၌၊ ဒသာနံအဂမာသိတိ- ကား၊ အနုကမ္ပါယ-သနားခြင်းကြောင့်၊ တံ–ထိုဇနီးဟောင်းကို၊ ဒက္ခိသာမိ – ကြည့်ရှုအံ့၊ ဣတိ–ဤသို့ကြံ၍၊ ဂေဟံ-အိမ်သို့၊ အဂမာသိ-သွားပြီ၊ အထ-ထိုအခါ၌၊ အဿ – ထိုရဟန်းအား၊ [သံဝဏ္ဏေသိ၌စပ်။] သာ – ထိုဇနီးဟောင်းသည်၊ အတ္တနောစ-မိမိ၏ငှင်း၊ ဒါရကာနဥ္စ – ကလေးတို့၏ငှင်း၊ နာနပ္ပကာရေဟိ - အထူးထူးသော အပြားတို့ဖြင့်၊ အနာထဘာဝံ – ကိုးကွယ်ရာ မရှိကုန်သူတို့၏ အဖြစ်ကို၊ သံဝဏ္ဏေသိ – ချဲ့ထွင်ပြောဆိုပြီ၊ စ - ဆက်၊ နံ – ထိုရဟန်းကို၊ အနပေက္ခံ – ငဲ့ကွက်ခြင်းမရှိသည်ကို၊ ဥတွာ - သိ၍၊ ကုပိတာ – စိတ်ဆိုးသည်၊ (ဟုတ္ဘာ)၊ ဟေ-လာလော၊ ဝိဃ္ဃမာဟ် - လူထွက်လော၊ ဣတိ-ဤသို့ပြော၍၊ (ပြောပြောဆိုဆို၊ ) ဗလက္ကာရေန - အားကို အသုံးပြုသဖြင့်၊ ဝါ - အနိုင်အထက်၊ အဂ္ဂဟေသိ – ဆွဲယူပြီ၊ သော - ထို ရဟန်းသည်၊ အတ္တာနံ - မိမိကိုယ်ကို၊ မောစေတုံ-လွတ်စေခြင်းငှါ၊ ပဋိက္ကမန္တော–နောက်ဆုတ်နောက်ဆုတ်သွားလသော်၊ ဇရာဒုဗ္ဗလတာယ - ဇရာကြောင့်အားမရှိသူ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဥတ္တာနော–ပက်လက်၊ ပရိပတိ-လဲကျပြီ၊ တတော-ထိုသို့ လဲကျခြင်းကြောင့်၊ သာ–ထိုဇနီးဟောင်းသည်၊ အတ္တနော-၏၊ မနံ-စိတ်အလိုကို (စိတ်ဘိုင်းကျ)၊ အကာသိ–ပြီ၊ ပန-ဆက်၊ သောဘိက္ခု-သည်၊ အနာဂါမိ- အနာဂါမ်တည်း၊ သမုစ္ဆိန္နကာမရာဂေါ– ကာမရာဂကို အကြွင်းမဲ့ ဖြတ်ပြီးသူတည်း၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ န သာဒယိ– မသာယာ၊ ဣတိ - ဤသို့ မှတ်အပ်၏၊ မိဂပေါတက ဝတ္ထု–မိဂပေါတကဝတ္ထုသည်၊ ဥတ္တာနတ္ထမေဝ–သာ၊ ဣတိ-အပြီးတည်း။....

သမန္တပါသာဒိကာယ - မည်သော၊ ဝိနယသံဝဏ္ဏနာယ - ၌၊ ပဌမပါရာဇိက ဝဏ္ဏနာ-သည်၊ နိဋ္ဌိတာ–ပြီ။ [ တတြိဒံမှစ၍ ဂါထာအားလုံးကို ဝေရဥ္ဇကဏ္ဍ အဆုံး၌ ဖွင့်ခဲ့ပြီ၊ တတြိဒံတိအာဒိ ပေဌ္ဌာ ဝုတ္တတ္ထမေဝ၊–ဋီကာ။]

**ပဌမပါရာဇိကဘာသာဋီကာ ပြီးပြီ။**

# ဒုတိယပါရာဇိက အဖွင့်

အဒုတိယေန– အတူကင်းပျောက်, ၂ ဆူမမြောက် ရှိတော်မမူသော၊ ဝါ– အတူမဲ့ဖြစ်တော်မူသော၊ ဇိနေန – ငါးမာရ်အောင်မြင် ဘုရားရှင်သည်၊ ဒုတိယံ– ၂ ပါးမြောက်ဖြစ်သော၊ ယံ ပါရာဇိကံ– အကြင် ပါရာဇိကသိက္ခာပုဒ်ကို၊ ပကာသိတံ–ထင်ရှားပြတော်မူအပ်ပြီ၊ တဿ–ထိုဒုတိယပါရာဇိကာ၏၊ သံဝဏ္ဏနာက္ကမော–ဖွင့်ကြောင်းဖွင့်ရာ အဋ္ဌကထာအစဉ်သည်၊ ဒါနိ–ပဌမပါရာဇိကကို ဖွင့်ပြီးရာ ယခုအခါ၌၊ ယသ္မာ–ကြောင့်၊ ပတ္တော– ဆိုက်ရောက်လာ၏၊ [ဒါနိကို ထောက်၍ ပစ္စုပ္ပန်ဟော။] တသ္မာ–ကြောင့်၊ (ဒုတိယပါရာဇိကအဖွင့် အစဉ်၏ ဆိုက်ရောက်လာသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) [ဟောတိ–၌စပ်၊] ယံ–အကြင်ပုဒ်ကို၊ (သောတူဟိ– စာသင်သားတို့သည်၊) သုဝိညေယျံ–လွယ်ကူစွာသိနိုင်၏၊ ဝါ– သိလွယ်၏၊ ယဉ္စ–အကြင်ပုဒ်ကိုလည်း၊ (မယာ)ပုဗ္ဗေ–၌၊ ပကာသိတံ–ထင်ရှား ပြအပ်ပြီ၊ တံ သဗ္ဗံ - ထို အလုံးစုံသော သုဝိညေယျ , ပုဗ္ဗေ ပကာသိတ ပုဒ်ကို၊ ဝဇ္ဇယိတွာန– ရှောင်ကြဉ်၍၊ အယံ သံဝဏ္ဏနာ– ဤ ဖွင့်ကြောင်းဖွင့်ရာ, အဋ္ဌကထာသည်၊ ဟောတ်- ၏၊ ဝါ–ဖြစ်တော့လတ့်။ [ သမိပဝတ္တမာန်၊ ]

တေန သမယေန၊ပေ၊ဂိဇ္ဈကူဋေ ပဗ္ဗတေတိ ဧတ္ထ–၌၊ ရာဇဂဟေတိ–ကား၊ ဧဝံ နာမကေ – ဤသို့ ရာဇဂဟ အမည်ရှိသော၊ နဂရေ – မြို့၌၊ ဟိ – မှန်၏၊ (တနည်း)ဟိ–အကြောင်းကိုပြဉ္စုးအံ့၊ တံ–ထိုမြို့ကို၊ (တဿ–ထိုမြို့၏၊) [ဟိတ်၏ သမ္ဗန်ခံ၊ ] မန္ဓာတု မဟာဂေါဝိန္ဒာဒီဟိ – မန္ဓာတ်စကြာမင်း , မဟာဂေါဝိန္ဒ

**ဒုတိယံ အဒုတိယေန**။ ။ပဌမပါရာဇိကပါဠိတော်ကို ဖွင့်ပြပြီး၍ ဒုတိယပါရာဇိက ပါဠိတော်ကို ဖွင့်ပြတော်မူလိုသောကြောင့် “ ဒုတိယံ အဒုတိယေန ” စသည်ကိုမိန့်၊ ဘုရားရှင်၌ ဂုဏ်တော်များစွာရှိပါသော်လည်း ဒုတိယပါရာဇိကနှင့် လိုက်လျောအောင် “အဒုတိယေန” ဟူသော ဂုဏ်ပုဒ်ဖြင့် ချီးမွမ်းတော်မူသည်။ [ ပကတိဟောသာ အာစရိယာနံ၊ ယဒိဒံ အာရမ္ဘာနုရူပထောမနာ = အားထုတ်အပ်လတ့် ဖြစ်သော ကျမ်းအား လျော်စွာ ဘုရားရှင်ကို ချီးမွမ်းခြင်းသည် ကျမ်းဆရာများ၏ ထုံးစံတည်း။ ]

**ဧဝံနာမကေ၊ပေ၊ဝုစ္စတိ**။ ။ဧဝံ (ဤသို့သော) + နာမံ ယဿာတိ ဧဝံနာမကံ၊ [သမာသန္တကပစ္စည်း၊] ထိုစကားကို ခိုင်မြဲစေလို၍ , တနည်း — ရာဇဂဟအမည် ရခြင်း၏အကြောင်းကိုပြလို၍ “တံဟိ၊ပေ၊ဝုစ္စတိ”ဟု မိန့်၊ ဤဝါကျမျိုးသည် သဒ္ဒပ္ပဝတ္တိ နိမိတ် ( ရာဇဂဟသဒ္ဒါ ဖြစ်ပေါ်လာခြင်း၏ အကြောင်း ) ကို ပြသော ဝါကျတည်း။ [ရှေးဆရာတို့က “မန္ဓာတု မဟာဂေါဝိန္ဒာဒီဟိ ပရိဂ္ဂဟိတတ္တာ”ကို နာမလာဘဟိတ် ( နာမည်ရခြင်း၏အကြောင်း ပြဟိတ် ) ဟု ခေါ်ကြ၏၊ သဒ္ဒပ္ပဝတ္တိနိမိတ် – ဟူသော စကားနှင့် သဘောတူပင်တည်း။]

ပုရောဟိတ် အစရှိသောပုဂ္ဂိုလ်တို့သည်၊ ပရိဂ္ဂဟိတတ္တာ- နေပြည်တော်အဖြစ်ဖြင့် သိမ်းပိုက်အပ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ရာဇဂဟန္တိ-ဟ ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏။

ဧတ္ထ-ဤ ရာဇဂဟံဟူသောပုဒ်၌၊ အညေပိ-ဆိုအပ်ပြီးသော အပြားမှတပါးလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ပကာရေ-အပြားတို့ကို၊ ဝဏ္ဏယန္တိ-ဖွင့်ကြကုန်၏၊ တေဟိ-ထို အပြားတို့ဖြင့်၊ ကိံ-အဘယ်အကျိုး ရှိအံ့နည်း၊ တံ-ဤ ရာဇဂဟဟူသော အမည်သည်၊ တဿ နဂရဿ- ၏၊ နာမံ- တည်း၊ ပန- ဆက်၊ တံ ဧတံ- ထို ရာဇဂဟအမည်ရသော ဤမြို့သည်၊ ဗုဒ္ဓကာလေစ-ဘုရားပွင့်တော်မူရာအခါ၌၎င်း၊ စက္ကဝတ္တိကာလေစ-စကြာမင်းပေါ်ရာအခါ၌၎င်း၊နဂရံ-နေပြည်တော်သည်၊ ဟောတဲ - ၏၊ [ ယေဘုယျအားဖြင့် ဆိုသည်၊ အခြားအခါ၌လည်း မြို့

**မန္ဓာတု၊ပေ၊ပရိဂ္ဂဟိတတ္တာ။** ။ ဤဟိတ်ကိုကြည့်၍ “ ဂယှတီတိ ဂဟံ၊ ( ဝိမတိဝိဂ္ဂဟ၊ ) ရာဇူနံ—တို့၏၊ ဝါ—တို့သည်+ဂဟံတိ ရာဇဂဟံ”ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု။ [အဋ္ဌကထာ၌ “သိမ်းပိုက်အပ်”တွင် စပ်လို၍ “ရာဇူဟိ”ဟု ကတ္တုရုပ် ထားသော်လည်း “ဂဟံ”ဟုပြီးသောအခါ “မြို့”ကို အရကောက်ရသောကြောင့် ဋီကာတို့၌ “ ရာဇူနံ ” ဟု သာမိ သမ္ဗန်ထားသည်၊ “မင်းတို့၏မြို့+ဝါ-နေပြည်တော်မြို့ ”ဟူလို၊ ဂဟဓာတ် အပစ္စည်း၏ မူလလိန်မှာ ပုလ္လိန်တည်း၊ သို့သော်“နဂရံ”ဟူသော အဘိဓေယျပုဒ်၏လိန်သို့ လိုက်၍ “ ရာဇဂဟံ ”ဟု နပုလ္လိန်ထားရသည်။ ] ဆက်ဦးအံ့— ရာဇအရကို “ မန္ဓာတု မဟာဂေါဝိန္ဒ”ဟု သရုပ်ပြရာ၌ မန္ဓာတ်မင်းသာလျှင်“ရာဇ”ဖြစ်၏၊ မဟာဂေါဝိန္ဒမှာ ရေဏုမင်း၏ ပုရောဟိတ်ပုဏ္ဏားတည်း၊ ထို့ကြောင့် မဟာဂေါဝိန္ဒ၏သိမ်းပိုက်ခြင်းဖြင့် ရေဏုမင်း၏ သိမ်းပိုက်ခြင်းကို မှတ်သားပြသော ဥပလက္ခဏာနည်းဟု မှတ်။

**ဋီကာ ။** ။ ဒုဂ္ဂဇနပဒ ဌာနဝိသေသ သမ္ပဒါဒိယောဂတော — ရန်သူတို့ အသွားအလာ အဝင် အထွက် ခက်သော ဇနပုဒ်ဖြစ်၍ ဌာနဝိသေသ၏ ပြည့်စုံခြင်းစသော ဂုဏ်ထူးတို့နှင့် ယှဉ်ခြင်းကြောင့်၊ ရာဇူဟိ+ဂဟိတံ (ပရိဂ္ဂဟိတံ—သိမ်းပိုက်အပ်၏၊) ဣတိ ရာဇဂဟန္တိ အာဟ—မန္ဓာတု၊ပေ၊ဝုစ္စတီတိ။ [ဒုက္ခေန+ဂန္တဗ္ဗောတိ ဒုဂ္ဂေါ (ဇနပဒေါ)။]

**အညေပကာရေ ။** ။ နဂရမာပနေ — မြို့ကို ဖန်ဆင်းရာအခါတုန်းက၊ ရညာ ကာရိတ သဗ္ဗဂဟတ္တာ — မင်းသည် ဆောက်လုပ်စေအပ်သော အလုံးစုံအိမ်ရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ရာဇဂဟံ-မည်၏၊ မြို့တည်စဉ်အခါ၌ လမ်းတွေကိုအကွက်ချ၍ အိမ်တွေကို မင်း၏ဘဏ္ဍာဖြင့် ဆောက်လုပ်စေ၏၊ ထို့ကြောင့်ထိုအိမ်များသည်မင်းပိုင်အိမ်များချည်းဖြစ်ရကား “ရညော + ဂဟာနိ ဧတ္ထာတိ ရာဇဂဟံ” ဟုပြု၊ တနည်း – ဂိဇ္ဈကုဋ်စသော တောင်မင်းကြီးငါးလုံးတို့ အိမ်ကို ခြံခတ်သကဲ့သို့ ခြံရံအပ်သောကြောင့်“ဂဟံ ဝိယာတိ ဂဟံ၊ ရာဇူဟိ—တောင်မင်းကြီးတို့သည်+ပရိက္ခိတ္တံ—ကာရံအပ်သော၊ ဂဟံ—အိမ်နှင့်တူသောမြို့တည်း၊ ဣတိ ရာဇဂဟံ ”၊ ဤသို့ စသည်ဖြင့် ဋီကာ၌ ပြထားသော အပြားကို“အညေပကာရေ”ဆိုသည် ဟု မှတ်။

ဖြစ်ပါသေး၏။] သေသကာလေ - ၌၊ သုည့် - လူတို့မှကင်းဆိတ်သည်၊ ယက္ခပရိဂ္ဂဟိတံ-နတ်ဘီလူးတို့ သိမ်းပိုက်အပ်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ တေသံ- ထိုနတ်ဘီလူးတို့၏၊ ဝသန္တဝနံ- ဝသန္တဥတုအခါ ပျော်မွေ့ရာတောသည်၊ ဟုတွာ- ၍၊ တိဋ္ဌတိ- ၏။ [သေရည်သော်၍ပျော်ပါးရာ ဥယျာဉ်ကြီးဖြစ်သည်-ဟူလို။]

ဇဝံ-လျှင်၊ ဂေါစရဂါမံ- ဆွမ်းခံရွာကို၊ ဒဿေတွာ-ပြပြီး၍၊[ရွာမဟုတ်ဘဲ မြို့ဖြစ်သော်လည်း သဒိသူပစာရ – အတင်ရှင်ဦးအားဖြင့် မြို့ကိုလည်း "ဂေါစရဂါမ" ဟု ခေါ်သည်၊] နိဝါသနဋ္ဌာနံ – သီတင်းသုံးတော်မူရာအရပ်ကို၊ ဂိဇ္ဈကူဋေပဗ္ဗတေတိ– ဟူ၍၊ (သံ ဂီတိကာရေဟ – သည်၊)အာဟ – မူပြီ၊ စ–ဆက်၊ ဧသာ–ထိုတောင်ကို၊ [ဝုစ္စတိ၌စပ်၊]တဿ – ထိုတောင်၏၊ ကူဋေသု- အထွဋ်တို့၌၊ ဂိဇ္ဈာ-လင်းတတို့သည်၊ ဝသိံသု-နေကုန်ပြီ၊ ဝါ-နည်း၊ တဿ–၏၊ ဂိဇ္ဈသဒိသာနိ– လင်းတနှင့် တူကုန်သော၊ ကူဋာနိ- တို့သည်၊ (သန္တိ)၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ ဂိဇ္ဈကူဋောတိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ–၏၊ ဧတိ– သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗော– ၏။

**ဝသန္တဝနံ**။ ။"ဝသနဝနံ"ဟု စာအများရှိ၏၊ သို့သော် ဝသန္တဝနန္တိ–ကီဠာဝနံ=ပျော်မွေ့ရာတောသည် ဝသန္တဝနမည်၏၊ "ပျော်မွေ့ရာတောကို အဘယ့်ကြောင့် ဝသန္တဝနဟု ဆိုအပ်သနည်း"ဟုမေးဘွယ်ရှိသောကြောင့်"ဝသန္တကာလေ ကီဠာယယောဂျတ္တာပန ဝသန္တဝနန္တိဝုတ္တံ" ဟု မိန့်၊ ဝသန္တဥတုအခါဝယ် ပျော်မွေ့ခြင်း၏ များသည်၏အဖြစ်ကြောင့် ယောဂျနည်းအားဖြင့်ထိုတောကို"ဝသန္တဝန"ခေါ်သည် ဟူလို၊ ဤအလို"ဝသန္တေ+ကီဠာဝနံ ဝသန္တဝနံ"ဟုပြု၊ ဤကား ဝိမတိအဖွင့်တည်း၊ ဤအလို "ဝသန္တဝနံ" ဟု ပါဌ်ရှိသင့်၏၊ သာရတ္ထ၌ကား – "အာပါနဘူမိဘူတံ ဥပဝနံ – သေရည်အရက်ဝိုင်းဖြစ်ရာ မြို့အနီး တော"ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုအဖွင့်လည်း "ဝသနဝနံ"နှင့် အလှမ်းဝေးလှ၏၊ ယောဇနာ၌မူ"ဝသန္တိ ဧတ္ထာတိ ဝသနံ"ဟု ပြု၍"ဝသနဝနံ "ဟုပင် ဆိုလေသည်။ [သီလက္ခန်၌ကား "ဝသနဋ္ဌာနံ ဝနံ"ဟု တွေ့ရ၏။]

**ဂိဇ္ဈာ၊ ပေ၊ ဝသိံသု**။ ။ ဤဝါကျကို ကြည့်၍ " ဂိဇ္ဈာ ယဿ ကူဋေသူတိ ဂိဇ္ဈကူဋော"ဟု ဘိန္နာဓိကရဏဗဟုဗ္ဗီဟိ ပြုသင့်၏၊ "အထွဋ်တို့၌ လင်းတရှိသောတောင်" ဟုပေး၊ သို့သော် ဋီကာ၌ "ဂိဇ္ဈာ ဧတ္ထ သန္တီတိ ဂိဇ္ဈံ၊ ဂိဇ္ဈံ–( လင်းတရှိသော )+ကူဋံ ဧတဿာတိ ဂိဇ္ဈကူဋော"ဟု ပြုသည်၊ ထိုအလို"လင်းတရှိသော အထွဋ်ရှိသောတောင်" ဟုပေး၊ "ဂိဇ္ဈသဒိသာနိ ဝါ" စသော ဤ ဝါကျဖြင့် "ဂိဇ္ဈာဝိယာတိ ဂိဇ္ဈာနိ၊ ဂိဇ္ဈာနိ+ကူဋာနိ ဧတဿာတိ ဂိဇ္ဈကူဋော " ဟု ပြုစေလို၏၊ ဋီကာ၌ကား –"ဂိဇ္ဈောဝိယာတိ ဂိဇ္ဈံ"ဟု ကေဝုစ်ပြု၏၊ "လင်းတနှင့်တူသော အထွဋ်ရှိသော တောင်"ဟု ပေး။

**တနည်း** – "ဂိဇ္ဈသဒိသကူဋော"ဟု ဆိုလိုလျက် "သဒိသ"အလယ်ပုဒ်ကြေသော မဇ္ဈေပဒ လောပီ တပ္ပုရိသ် သမာသ်တည်း၊ ဥပမာ – အစွမ်းသတ္တိကို နှစ်သက်သော မင်းကို"သာကပ္ပိယပတ္ထိဝ"ဟု ဆိုလိုလျက်"ပိယ"အလယ်ပုဒ်ကိုချေ၍"သာကပတ္ထိဝ"

သမ္ဘဟုလာတိ - ကား၊ ဝိနယပရိယာယေန - ဝိနည်း ဒေသနာအားဖြင့်၊ [ဝိနည်း အသုံးအားဖြင့်–ဟူလို၊] တယော– ၃ ပါးကုန်သော၊ ဇနာ- ရဟန်းတို့ကို၊ သမ္ဘဟုလာတိ- လတို့ဟူ၍၊ ဝုစ္စန္တိ–န်၏၊ တတော–ထို ၃ ပါးမှ၊ ပရံ–၌၊ (ဇနော-ရဟန်းအပေါင်းကို၊ ) သံဃောတိ-ဟူ၍၊ (ဝုစ္စတိ–၏၊) ["စတုဝဂ္ဂ သံဃာသည် ပြုအပ်သောကံ"စသည်ဖြင့် ၄ပါးကိုပင် သံဃာဟု သုံးနှုန်းသည်-ဟူလို။] သုတ္တန္တ ပရိယာယေန–ဖြင့်၊ တယော-၃ ပါးတို့သည်၊ တယော ဧဝ- တယောတို့သာတည်း၊ တတော–ထို ၃ ပါးမှ၊ ပဋ္ဌာယ–၍၊ သမ္ဘဟုလာတိ- လ တို့မည်၏၊ ပန – အတ္ထုဒ္ဓါရ သာမညမှတပါး အတ္ထုဒ္ဓေသ ဝိသေသကို ဆိုဦးအံ့၊ ဣဓ - ဤ ဒုတိယပါရာဇိက နိဒါန်းအရာ၌၊ တေ - ထို ရဟန်းတို့ကို၊ သုတ္တန္တ ပရိယာယေန–ဖြင့်၊ သမ္ဘဟုလာတိ–ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-န်၏။

သန္ဒိဋ္ဌာတိ – ကား၊ နာတိဝိဿာသိကာ – အလွန် အကျွမ်းဝင်ခြင်း ရှိသူ မဟုတ်ကုန်သော၊ နဒဠ္ဟမိတ္တာ – ခိုင်မြဲသော မိတ်ဆွေမဟုတ်ကုန်သော ရဟန်းတို့တည်း၊ ဟိ – မှန်၊ (တနည်း) ဟိ – အကြောင်းကိုပြဦးအံ့၊ တတ္ထ တတ္ထ– ထိုထို အရပ်၌၊ သင်္ဂမ္မ–ပေါင်းဆုံ၍၊ ဒိဋ္ဌတ္တာ-မြင်အပ်ဘူး ကုန်သည်၏ အဖြစ် ကြောင့်၊ တေ-ထိုအလွန်အကျွမ်းမဝင်သော မိတ်ဆွေရဟန်းတို့ကို၊ သန္ဒိဋ္ဌာတိ-ဋ္ဌတို့ဟူ၍၊ ဝုစ္စန္တိ၊ သမ္ဘတ္တာတိ–ကား၊ အတိဝိဿာသိကာ–အလွန် အကျွမ်းဝင်ခြင်းရှိကုန်သော၊ ဒဠ္ဟမိတ္တာ-ခိုင်မြဲသောမိတ်ဆွေ ရဟန်းတို့တည်း၊ ဟိ- မှန်၊ (တနည်း) ဟိ-အကြောင်းကိုပြဦးအံ့၊ တေ- ထိုခိုင်မြဲသော မိတ်ဆွေရဟန်းတို့ကို၊ သုဋ္ဌု– ကောင်းစွာ၊ ဘတ္တာ ဘဇမာနာ – ဆည်းကပ် တတ်ကုန်၏၊ ကေသမ္ဘောဂ ပရိဘောဂါ – တူသော အာမိသကို သုံးဆောင်ခြင်း, ဓမ္မကို သုံးဆောင်ခြင်းရှိကုန်၏၊ ဣတိကတွာ- ဤသို့ပြု၍၊ ဝါ-ဤအကြောင်းကြောင့်၊ သမ္ဘတ္တာ- တို့ဟူ၍၊ ဝုစ္စန္တိ။

ဟု ခေါ်ရသကဲ့သို့တည်း။ [ဂဏ္ဌိသဒိသကူဠေဘာတိ ဂဏ္ဌိကူဠဘောတ်ဝါ မဇ္ဈေပဒလောပီ သမာသော၊ ယထာ–သာကပတ္ထိဝေါ၊ ဋီကာ။] ပတ္ထိဝ, ပတ္တဝ-၂ ပုဒ်သင့်သောနည်း ရှိ၏၊ ထို နည်းများကို မောဂ္ဂလ္လာန် နိဿယသစ် (၃) ကဏ္ဍ (၁၀) သုတ်အဖွင့်နှင့် သမာသ်ကစ္စည်း ဘာသာဋီကာ–အမာဒယော ပရပဒေဘိ သုတ်အဖွင့်တို့မှာ ရှုပါ။

**သန္ဒိဋ္ဌ, သမ္ဘတ္တာ။** ။ [အတိဝိဿာသော ယေသံ အတ္ထီတိ အတိဝိဿာသိကာ၊ န+အတိဝိဿာသိကာ နာတိဝိဿာသိကာ၊ ဒဠှာ–မကွဲနိုင်အောင် မြဲခိုင်ကုန်သော+ မိတ္တာ ဒဠ္ဟမိတ္တာ။ ] တတ္ထ တတ္ထ သင်္ဂမ္မ ဒိဋ္ဌတ္တာ ကိုကြည့်၍ " သံ + ဒိဋ္ဌ "၌ သံသည် "သံ သမောဓာန သင်္ခေပ"စသောအနက်တို့တွင် သမောဓာန အနက်ဟောဟု သိပါ၊ သမောဓာနနှင့် " သင်္ဂမ္မ "ကား အနက်တူတည်း၊ ပဿိယိံသူတိ ဒိဋ္ဌာ၊ သင်္ဂမ္မ+ဒိဋ္ဌာ သန္ဒိဋ္ဌာ – ထို၍အရပ် ပေါင်းဆုံလတ်၍ မြင်အပ်ဘူးသော မိတ်ဆွေတို့၊ "တွေ့ဘူး

ဇာသိဂိလိပဿေတိ-ကား၊ ဇာသိဂိလိနာမ-လိမည်သော၊ ပဗ္ဗတော-တောင်သည်၊(အတ္ထိ)၊ တဿ—ထို တောင်၏၊ ပဿေ - နံပါး၌၊ ကိရ- ချဲ၊ ပုဗ္ဗေ-၌၊ ပဥ္စသတမတ္တာ—ငါးရာ အတိုင်း အရှည် ရှိကုန်သော၊ ပစ္စေကဗုဒ္ဓါ—တို့သည်၊ ကာသိကောသလာဒီသု-ကာသိတိုင်း ကောသလတိုင်း အစရှိကုန်သော၊ ဇနပဒေသု-တို့၌၊ ပိဏ္ဍာယ-ငှါ၊ စရိတွာ-ပြီး၍၊ ပစ္ဆာဘတ္တံ-ဆွမ်းစားရာကာလ၏ နောက်၌၊ တသ္မိံ ပဗ္ဗတေ-၌၊ သန္နိပတိတွာ-စုဝေးပြီး၍၊ သမာပတ္တိယာ-သမာပတ်ဖြင့်၊ ဝီတိနာမေန္တိ—အချိန်ကို လွန်စေကြကုန်၏၊ မနုဿာ-တို့သည်၊ တေ-ထို ပစ္စေကဗုဒ္ဓါတို့ကို၊ ပဝိသန္တေဝ- ဝင်သွားသည်တို့ကိုသာ၊ ပဿန္တိ- မြင်ကြရကုန်၏၊ နိက္ခမန္တေ - ပြန်ထွက်လာသည်တို့ကို၊ န ပဿန္တိ - န်၊ တတော-ကြောင့်၊ (ဝင်သွားသည်တို့ကိုသာမြင်ရ၍ ပြန်ထွက်လာသည်တို့ကို မမြင်ရခြင်းကြောင့်၊)အာဟံသု-န်ပြီ၊(ကိံ)၊အယံ ပဗ္ဗတော-သည်၊ ဣမေ ဣသယော—ဤရသေ့တို့ကို၊ ဂိလတိ-မျို၏၊ ဣတိ-သို့၊(အာဟံသု)၊တံ-ထိုစကားကို၊ဥပါဒါယ-အစွဲပြု၍၊ တဿ- ထို တောင်၏၊ ဇာသိဂိလိတွေဝ—လိ ဟူ၍သာ၊ သမညာ—အမည်သည်၊ ဥဒပါဒိ-ထင်ရှားဖြစ်ပြီ။ [ သမ+ ဉာ၊ သမသ္မိံ ( အလုံးစုံသော အရပ်၌ ) ဉာယတိ တောယာတ် သမညာ = အားလုံးအရပ်၌ အသိအမှတ်ပြုကြောင်း အမည်၊ (ထောမနိဓိ)။ ] တဿ - ထိုတောင်၏၊ ပဿေ— နံပါးဖြစ်သော၊ ပဗ္ဗတပါဒေ—တောင်ခြေ၌။

တိဏှကုဋိယော ကရိတွာတိ—ကား၊ တိဏစ္ဆဒနာ - မြက်ဟူသော အမိုးရှိကုန်သော၊ သဒ္ဒါရဗန္ဓာ - ဖွဲ့တပ်အပ်သော တံခါးနှင့် တကွ ဖြစ်ကုန်သော၊

မြင်ဘူးရုံသာ ရှိသည်, အကျွမ်းမဝင်လှ” ဟူလို၊ “ သုဋ္ဌု ဘတ္တာ ဘဇမာနာ” ကြည့်၍ သံသည် သမ္မာ(သုဋ္ဌု)အနက်ဟောဟုသိပါ၊ ဘဇမာနာကိုကြည့်၍“ဘတ္တာဠ်ဘဇဓာတ်တပစ္စည်း ”၊ “ဘဇန္တီတိ ဘတ္တာ၊ သုဋ္ဌု+ ဘတ္တာ သမ္ဘတ္တာ ”ဟု ပြု၊ ကေသမ္ဘောဂ—စသည်ကား “ သုဋ္ဌု ဘဇမာန ” ဖြစ်ပုံကို သရုပ်ဖေါ်ပြသော စကားတည်း၊ “ကေသမ္ဘောဂ ပရိဘောဂ ဖြစ်လောက်အောင် အလွန် အကျွမ်းဝင်ကြသည်”ဟူလို။

ဇာသိဂိလိ။ ။ ဂိလတီတိ ဂိလိ၊ ဂိလဓာတ် ဣ ပစ္စည်း၊ ဇာသယော — ပစ္စေကဗုဒ္ဓါဟူသော ဇာသိတို့ကို+ဂိလတိ-မျိုတတ်၏၊ ဣတိ ဇာသိဂိလိ၊ ထိုပစ္စေကဗုဒ္ဓါတို့သည် ပဒုမဝတီမိဖုရား၏ သားတော်ငါးရာတို့ ဖြစ်ကုန်သတတ်၊ အကျယ်ကို သာရတ္ထမှာရှု။

တိဏကုဋိယော ။ ။ တိဏာနိ + ဆဒနာနိ ယာသံတိ တိဏစ္ဆဒနာ—မြက်အမိုးရှိသော ကျောင်းငယ်တို့၊ တိဏစ္ဆဒနာဝ+တာ + ကုဋိယောစာတိ“တိဏစ္ဆဒနကုဋိယော”ဟု ဆိုလိုလျက် ဆဒနအလယ်ပုဒ်ကိုချေ၊ “မြက်အမိုးရှိသောကျောင်းငယ်တို့” ဟုပေး၊ တနည်း—ကုဋိဟူသောအမည်သည် တကျောင်းလုံး(အပေါင်း)၏ အမည်တည်း၊ ထိုအမည်ကို အစိတ်ဖြစ်သော တိဏဥ တင်စား၍ ကေဒေသူပစာရ အားဖြင့်

ကုဋိယော–ကျောင်းငယ်တို့ကို၊ ကတွာ-၍၊ ( ဝဿံ- မိုယ်းအခါ၌ နေခြင်းသို့၊ ဝါ–သို့၊ ဥပဂစ္ဆိံသု-ကပ်ရောက်ကြကုန်ပြီ၊) ဟိ-ချဲ့၊ ( တနည်း ) ဟိ ယသ္မာ– ကြောင့်၊ ဝဿံ– မိုယ်းအခါ၌ နေခြင်းသို့၊ ဝါ - ဝါသို့၊ ဥပဂစ္ဆန္တေန - ကပ်ရောက်သော ရဟန်းသည်၊ နာလကပဋိပဒံ – နာလကထေရ်၏ မောနေယျအကျင့်ကို၊ ပဋိပန္နေနာပိ-ကျင့်သောရဟန်းသော်မှလည်း၊[အပိသဒ္ဒါ သမ္ဘာဝနာ] ပဋ္ဌန္တိ- အုဋ္ဌ ကျောက် သစ်ရွက်, အင်္ဂတေ မြက်ဟု, ငါးချက်ကုန်သော၊ ဆဒနာနံ-အမိုးတို့တွင်၊ အညတရေန-တမျိုးမျိုးသောအမိုးဖြင့်၊ ဆန္နေယေဝ- မိုးအပ်သည်သာလျှင်ဖြစ်သော၊ သဒ္ဒါရဗန္ဓေ- ဖွင့်တပ်အပ်သော တံခါးနှင့်တကွ ဖြစ်သော၊ သေနာသနေ-ကျောင်း၌၊ ဥပဂန္တဗ္ဗံ- ကပ်ရာ၏။

ဟိ–သာဓကကား၊ န ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ဒုက္ကဋဿာတိ-ဟူသော၊ တေံ(သုတ္တံ)- ၍ ပါဠိကို၊ (ဘဂဝတာ)ဝုတ္တံ – ပြီ။ [ဘိက္ခဝေ – တို့၊ အသေနာသနိကေန - ကျောင်းမရှိသည်၊(ဟုတွာ – ၍၊)ဝဿံ–သို့၊ ဝါ–သို့၊ န ဥပဂန္တဗ္ဗံ-မကပ်ရာ၊ ယော-အကြင်ရဟန်းသည်၊ (အသေနာသနိကော-သည်၊ ဟုတွာ-၍၊ ဝဿံ- သို့၊ ) ဥပဂစ္ဆေယျ – အံ့၊ ( အသေနာသနိကဿ – ကျောင်းမရှိသည်ဖြစ်၍၊ ဝဿံ – သို့၊ ဥပဂစ္ဆန္တဿ – သော၊ တဿ– ထိုရဟန်း၏၊) ဒုက္ကဋဿ–သို့၊

"တိဏကုဋိ" ဟု ဆိုသည်။ [ ဧကဒေသေ ဝါ သမုဒါယဝေါဟာရဝသေန တိဏကုဋိ ယောတိ ဝုတ္တံ၊ မြက်ကိုမှတ်၍ ဆိုသောကြောင့် ဥပလက္ခဏနည်းလည်း ဖြစ်သင့်၏။]

**သဒ္ဒါရဗန္ဓာ** ။ ။ " ဝါကပ်သော ပုဂ္ဂိုလ်မှန်လျှင် အဝင်အထွက် တံခါးပေါက် ပါရှိသော ကျောင်း၌သာ ဝါကပ်ရသည် " ဟု သိစေလို၍ " သဒ္ဒါရဗန္ဓာ " ဟု မိန့်။ [ဗန္ဓီယတေတိ ဗန္ဓံ၊ ဒွါရဉ္စ+တံ+ဗန္ဓဉ္စာတိ ဒွါရဗန္ဓံ၊ သဟ + ဒွါရဗန္ဓေန ယာ ဝတ္တ န္တီတိ သဒ္ဒါရဗန္ဓာ။] သို့သော် လှေစသောအရပ်၌ ခရီးသွားရင်း ဝါကပ်သူမှာ သဒ္ဒါရ ဗန္ဓရှာဘွယ်–မလို။

**ဝဿံ ဥပဂစ္ဆန္တေန** ။ ။ ဝဿံ အရ မိုးလရ၏၊ ဤ၌ကား မိုးလအခါ၌ နေခြင်းကို"ဝဿံ"ဟု ဆိုထားသည်။ [ဝဿဝါသံ ဥပဂစ္ဆန္တေန၊–ဋီကာ။] ဤအလို ဌာန ကာလဖြင့် ဌာနီနေခြင်းတိုင်အောင် ဌာနူပစာရအားဖြင့် ယူပါ၊ တနည်း— "ဝဿဝါသံ"ဟု ဆိုလိုလျက် "ဝါသ" ဟူသော နောက်ပုဒ်ကို ချေ။ [ " ဝဿံ+ ဥပေမိ"၌လည်း ဤနည်းပင်။]

**နာလကပဋိပဒံ**။ ။ နာလကမထေရ်သည် ပုထုဇဉ်ဘဝမှ စ၍ ကိလေသာ မဖြစ် စေဘဲ တနေရာ၌ ၂ ရက်လည်း မနေဘဲ တသွားထည်း သွားနေကြောင်း အကျင့်ကို ကျင့်၏၊ ထိုအကျင့်ကို"မောနေယျ"အကျင့် ဟု ခေါ်၏၊"နာလကရဟန်း၏ မောနေ ယျအကျင့် " ဟူလို၊ မုနိနော+ဘာဝေါ မောနေယျံ = မုနိ၏ ဖြစ်ကြောင်း အကျင့်၊ အကျယ်ကို ဋီကာ၌ ရှု။

အာပတ္တိ-ရောက်ခြင်းသည်၊ ဟောတိ-၏၊ (ဝဿူပနာယိကက္ခန္ဓက)၊]တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ဝါကပ်သောရဟန်း၏ အမိုးရှိသော သဒ္ဒါရဗန္ဓသေနာသန ၌သာ ဝါကပ်ရသည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊) ဝဿကာလေ-မိုယ်းအခါ၌၊ သေနာသနံ-ကို၊ သစေ လဘတိ-အံ့၊ ဧဝ္ဓေတံ - ဤသို့ရခြင်းသည်၊ ကုသလံ- ကောင်း၏၊ နောစေ လဘတိ- အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ ဟတ္ထကမ္မံ- ဟတ္ထကမ်ကို၊ ဝါ- လက်ဖြင့် ပြုအပ်သော အမှုကို၊ [ဟတ္ထေန+ကတ္တဗ္ဗံ+ကမ္မံ၊ ဟတ္ထကမ္မ၏ အဓိပ္ပါယ်ကို ဤ ကျမ်းအစ သံဂါယနာတင်ခါနီး၌ ပြခဲ့ပြီ။ ] ပရိယေသိတ္ဝာပိ - ရှာ၍လည်း၊ ကာတဗ္ဗံ-ပြုရာ၏။

ဟတ္ထကမ္မံ-ကို၊ ဝါ-ကို၊ အလဘန္တေန- မရသောရဟန်းသည်၊ သာမဝိ-ကိုယ်တိုင်လည်း၊ ကာတဗ္ဗံ - ပြုနိုင်၏၊ [ ဝိနည်းနှင့် လျော်သော မိုးမှ ကာမှု ဖွဲ့ချည်မှုစသည်ကိုသာကိုယ်တိုင်ပြုနိုင်သည်၊ သစ်ပင်ခုတ်မှု,တွင်းတူးမှုစသည်ကို မပြုနိုင်၊ ] အသေနာသနိကေန-သည်၊ ( ဟုတွာ- ၍၊ ) ဝဿံ- သို့၊ နတွေဝ ဥပဂန္တဗ္ဗံ-မကပ်ရာသည်သာ၊အယံ-ဤအမိုးရှိသော သဒ္ဒါရဗန္ဓသေနာသန၌ ဝါကပ်ခြင်းသည်၊ အနုဓမ္မတာ-လောကုတ္တရာတရား ၉ ပါးအားလျော်သော ကျင့်ဝတ်တည်း၊ [အနုဓမ္မတာ - ဝတ္တံ ( ဋီကာ )၊ ခရီးသွားရင်း လှေပေါ်, ကုန်သည်အပေါင်း, ထိုဤ ပြောင်းရွှေ့လေ့ရှိသော နွားခြံတို့၌ကား ကျောင်း မရှိဘဲလည်း ဝါကပ်နိုင်သည် ဟု သီးခြားခွင့်ပြုချက်ရှိသည်။ ]တသ္မာ-ကြောင့်၊ ( ကျောင်းမရှိဘဲ ဝါမကပ်ရသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ) တေဘိက္ခူ - တို့သည်၊ တိဏကုဋိယော - မြက် ကုဋိတို့ကို၊ ကရိတ္ဝာ - ပြုပြီး၍၊ ရတ္တိဋ္ဌာန ဒိဝါဋ္ဌာနာဒီနိ-ညဥ့်နေရာအရပ်, နေ့နေရာအရပ် အစရှိသောအရပ်တို့ကို၊ ပရိစ္ဆိန္ဒိတ္ဝာ-ပိုင်းခြား သတ်မှတ်ပြီး၍၊ ကတိကဝတ္တာနိစ - ကတိကဝတ် တို့ကိုင်၊ ခန္ဓက ဝတ္တာနိစ- တို့ကိုင်၊ အဓိဋ္ဌာယ-ဆောက်တည်၍၊ တီသု-ကုန်သော၊ သိက္ခာသု-တို့၌၊ သိက္ခမာနာ - ကျင့်ကုန်လျက်၊ ဝဿံ-သို့၊ ဥပဂစ္ဆိံသု-န်ပြီ။

ကတိကဝတ္တာနိ။ ။ “ကတိ – ဆေဒနေ” ဟူသော ဓာတ်နှင့်အညီ ပိုင်းခြား သတ်မှတ်ခြင်းကို“ကတိ”ဟု ခေါ်၏၊ ကတိယာ+ကာတဗ္ဗာနိ ကတိကာနိ–ပိုင်းခြား သတ်မှတ်ခြင်းဖြင့် ပြုကျင့်အပ်သော ကျင့်ဝတ်တို့၊ ထို ကျင့်ဝတ်များကား—

၁။ ပရိယတ်တရားတော်မည်သည် ပဋိပတ် ပဋိဝေဓ သဒ္ဓမ္မ ၃ ပါးလုံးကို တည်တံ့ စေနိုင်၏၊ ထို့ကြောင့် လေးလေးစားစား၊ ဥဒ္ဒိသထ – ပါဠိကို ရွတ်ပြသောအားဖြင့် ပို့ချကြ၊ ဥဒ္ဒိသာပေထ – လေးလေးစားစား ရွတ်ပြစေသောအားဖြင့် စာတက်ကြ၊ သဇ္ဈာယံ ကရောထ–စာအံကြ စာပြန်ကြ၊ ကမ္မဋ္ဌာန်းကျောင်း၌ နေသူတို့ကို မထိခိုက် စေဘဲ ( မဆူညံစေဘဲ ) ကိုယ့်ကျောင်း အတွင်း၌သာ စာအံ – စာတက် – စာချကြ၊ တရားနာမှုကိုလည်း ပြည့်စုံအောင် ပြုလုပ်ကြ။

အာယသ္မာပိ ဓနိယောတိ - ကား၊ ကေဝလံ - (အရှင် ဓနိယနှင့် မဘက်) သက်သက်၊ တေ ထေရာဝ-ထို ထေရ်တို့ချည်းသာ၊(ဝသံ-သို့၊န ဥပဂစ္ဆိံသု-ကပ်ရောက်ကြကုန်သည် မဟုတ်သေး၊ ) ဇုမဿ သိက္ခာပဒဿ – ၏၊ အာဒိကမ္မိကော-အစအမှု၌ယှဉ်သော၊ အာယသ္မာ ဓနိယောပိ-သည်လည်း၊(ဝသံ ဥပဂစ္ဆိ၊) ကုမ္ဘကာရပုတ္တောတိ- ကား၊ ကုမ္ဘကာရဿ–ဒိုး လုပ်သူ၏၊ဝါ–အိုးထိန်းသည်၏၊ ပုတ္တော - သော၊ ဟိ - မှန်၊ တဿ - ထို ထေရ်၏၊ နာမံ-သည်၊ ဓနိယော–ဓနိယတည်း၊ ပိတာ–သည်၊ ကုမ္ဘကာရော-တည်း၊ တေန-ကြောင့်၊ ဓနိယော ကုမ္ဘကာရပုတ္တောတိ-ဟူ၍၊(သံ ဂီတိကာရေဟိ-တို့သည်၊) ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ဝသံ ဥပဂစ္ဆီတိ-ကား၊ တေဟိ ထေရေဟိ-တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ–ကွ၊ ဧကဋ္ဌာနေ ယေဝ–တနေရာတည်း၌ပင်၊ တိဏကုဋိကံ ကရိတွာ ဝသံ ဥပဂစ္ဆိ။

၂။ ရှင်ပြုပေးလျှင် ထိုရှင်လောင်းကို အပြစ်မှစင်ကြယ်စေ၍ (ဝိနည်းထုံးစံအတိုင်း) ရှင်ပြုပေးကြ၊ ရဟန်းပြုပေးလျှင် ရဟန်းလောင်းကို စစ်ဆေး မေးမြန်းသော အားဖြင့် သုမ်သင်၍ရဟန်းပြုပေးကြ၊ နိဿယည်းပေးလျှင် သူ၏လဇ္ဇီ ဟုတ်မဟုတ်ကို သုမ်သင်၍ စုံစမ်းစစ်ဆေးပြီးမှ နိဿယည်းပေးကြ၊ အမျိုးကောင်းသား တယောက်လောက် ရှင်-ရဟန်းဖြစ်လာလျှင် သာသနာတော်အားလုံးကို တည်တံ့စေနိုင်ပါသည်။

၃။ မိမိ၏အားအစွမ်းလိုက်၍ စွမ်းနိုင်သမျှ ဓုတင်တို့ကိုလည်း ဆောက်တည်ကြ။

၄။ ဝါတွင်းဆိုတာ တနေ့လုံးရင်း ညဉ့်၏ ပုရိမယာမ် ပစ္ဆိမယာမ်၌ရင်း မမေ့ မလျော့ မပေါ့မဆ ဝီရိယကို ကြိုးစားရပါသည်။

၅။ ရှေး မဟာထေရ်တို့လည်း ဝါတွင်း၌ ပလိဗောဓ အားလုံးဖြတ်၍ တပါးတည်း ကျင့်ခြင်းဟူသော ကျင့်ဝတ်ကို ဖြည့်ကြပါသည်။

၆။ စကားပြောခြင်း၌ အတိုင်းအရှည်ကိုသိ၍ အင်္ဂတ္တိုရ် နဝကဝဂ်၌လာသော အပ္ပိစ္ဆတာ, သန္တုဋ္ဌိတာစသော ဆယ်မျိုးသောစကား, အသုဘစသော ကမ္မဋ္ဌာန်းစကားကိုသာ ပြောသင့်ပါသည်၊ နေ့တိုင်း သီလကိုဆင်ခြင်၍ ဗုဒ္ဓါဿနုတိ, မေတ္တာ, အသုဘ, မရဏဿတိ ဟူသော ၄ ပါးသော ကိုယ်စောင့်တရားကို မယုတ်မလျော့ စေကြပါနှင့်၊ ဤသို့စသော ကတိကဝတ်များတည်း။

**အာယသ္မာပိ ဓနိယော**။ ။ သမ္ပိဏ္ဍနတ္ထ ပိ သဒ္ဒါကြောင့် " န ကေဝလံ တေ ထေရာဝ" ဟူသော ဗျတိရေက အဖွင့်ကို ရနိုင်၏၊ ဤသို့ နောက်ဝါကျ၌ ပိသဒ္ဒါပါလျှင် " ထို ထေရ်တို့ချည်းသာ ဝါကပ်ကြသလော " ဟု စောဒနာဘွယ် ရှိသောကြောင့် "အာယသ္မာပိ ဓနိယော"ဟု မိန့်၊ ဤသို့ ရှေ့ဝါကျရှိ အနက်များကို " ဧဝ–သာ " ဟု ထည့်၍ စောဒနာတက်ရသည်။

[**ဆောင်**] သံပိဏ္ဍနတ္ထ, နောက်၌ပြ, ဧဝ စုဒ်ထုတ်မြဲ။

ဝဿံ ဝုတ္ထာတိ– ကား၊ ပုရိမိကာဝဿံ– ပုရိမဝါ၌၊ ဥပဂတာ - ဝါကပ်ကြကုန်သော ရဟန်းတို့ကို၊ မဟာပဝါရဏာယ - မဟာပဝါရဏာနေ့၌၊ ပဝါရေတွာ – ပဝါရဏာ ပြုပြီး၍၊ ပါဋိပဒ ဒိဝသတော – အထွက်တရက်နေ့မှ၊ ဝါ-လပြည့်ကျော်တရက်နေ့မှ၊ ပဋ္ဌာယ-စ၍၊ ဝုတ္ထဝဿာတိ-ဝုတ္ထဝဿာတို့ဟူ၍၊ ဝုစ္စန္တိ- န်၏၊ ဇဝံ–လျှင်၊ ဝဿံ – မိုးဃ်းလပတ်လုံး၊ ဝုတ္ထာ – နေပြီးကုန်သည်၊ ဟုတ္ဂာ ("ဇနပဒစာရိကံ ပက္ကမိံသု"၌စပ်။)

ဝဿံ ဝုတ္ထာ။ ။ဝုတ္ထာ၌ ဝသဓာတ်, အတိတ်ဟော (တ) ပစ္စည်း၊ ထို့ကြောင့် "နေပြီးကုန်သည်"ဟု အနက်မှန်ပေး၊ ရှေးက"ဝဿံ ဝုဋ္ဌာ"ဟု မုဒ္ဓဇ"ဋ္ဌ"ဖြင့် ပါဌ်ရှိသောကြောင့်"ဝါမှ ထကုန်သည်"ဟု အနက်ပေးမှားကြ၏၊"ဝုဋ္ဌာ"ဟု ရှိသော်လည်း ဝသဓာတ်,တပစ္စည်းပင်၊ထိုပါဌ် ၂ မျိုးတွင်"ဝုတ္ထာ"ဟု ဒန္တဇ-တ္ထဖြင့်ရှိသောပါဌ်သည် ရူပသိဒ္ဓိ အလိုတည်း၊ အဘယာရာမ ဆရာတော်ကား ရူပသိဒ္ဓိဝါဒကို မနှစ်သက်၊ "သာသဒိသတော တဿ ရိဋ္ဌောစ, သာဒိ သန္တပုစ္ဆဘန္တ ဟံသာဒီဟိ ဋ္ဌော"ဟူသော မုဒ္ဓဇ ဋ္ဌ အပြုနောင် ဆက်၍လာသော "ဝသတော ဥဋ္ဌ" သုတ်လည်း မုဒ္ဓဇ ဋ္ဌ ဖြင့်သာ ရှိသင့်သည်–ဟု ဆုံးဖြတ်တော်မူသည်။

ဝဿံ ဝုဋ္ဌ ရက်။ ။"ပါဋိပဒဒိဝသတော ပဋ္ဌာယ ဝုတ္ထဝဿာတိ ဝုစ္စန္တိ"ဟု ဤအဋ္ဌကထာ၌ တိုက်ရိုက်လာသောကြောင့် သီတင်းကျွတ်လပြည့်ကျော်၁ရက်နေ့ရောက်မှ "ဝဿံ ဝုဋ္ဌ–မိုဃ်း ၃ လပတ်လုံးနေ၍ ပြီးသောပုဂ္ဂိုလ်"ဟု ခေါ်နိုင်ကြောင်း သိသာ၏၊ လပြည့်ကျော် ၁ ရက်နေ့မရောက်ခင် လပြည့်နေ့၌ကား သတ္တာဟကရဏီယကိစ္စရှိမှ ခရီးသွားကောင်း၏၊ ထိုကိစ္စမရှိဘဲ ပဝါရဏာပြုပြီးရုံမျှဖြင့်ခရီးသွားလျှင် ဝါလည်းပျက်၏၊ ဝဿစ္ဆေဒ ဒုက္ကဋ်အာပတ်လည်း သင့်၏၊ ( ဝိမတိ )၊ ဤသို့ ၃ လတိတိပြည့်အောင် နေပြီးသူသာ ကထိန်ခံထိုက်သောကြောင့် ကထိန်ခင်းရာ ခေတ်ကိုလည်း သီတင်းကျွတ် လပြည့်ကျော် ၁ ရက်နေ့မှ တံဆောင်မုန်းလပြည့် အထိသာ သတ်မှတ်၍ "အနုဇာနာမိ ဘိက္ခဝေ ဝဿံဝုဋ္ဌာနံ ကထိနံအတ္ထရိတုံ" ဟု ခွင့်ပြုတော်မူသည်။

သာရတ္ထ။ ။သာရတ္ထ၌ကား ဤသို့မယူဘဲ"အနုဇာနာမိ ဘိက္ခဝေ ဝဿံ ဝုဋ္ဌာနံ တီဟိ ဌာနေဟိ ပဝါရေတုံ"ဟူသော ပဝါရဏက္ခန္ဓကပါဠိတော်ကိုထောက်၍ သီတင်းကျွတ်လပြည့်နေ့ နံနက် အရုဏ်တက်သည်မှစ၍ " ဝဿံ ဝုဋ္ဌ ဖြစ်ပြီ–ဝါကျွတ်ပြီ " ဟု ယူလေသည်၊ သာရတ္ထအလိုကား–"ဝဿံ ဝုဋ္ဌ (ဝါကျွတ်ပြီး) ပုဂ္ဂိုလ်သာ ပဝါရဏာပြုခွင့်ပေးသောကြောင့် ပဝါရဏာပြုချိန်၌ ဝါကျွတ်ပြီးဖြစ်နေ၏"ဟု ဆိုလိုသည်။

သို့သော်–ထို ပဝါရဏာနေ့၌"ဇုမ်တေမာသံ ဝဿံ ဥပေမိ"ဟူသော ပဋိညာဉ်နှင့်ညီအောင် ၃ လ မပြည့်သေး၊ သီတင်းကျွတ်လပြည့်ကျော် ၁ ရက်ရောက်ဘို့ အရုဏ်တက်မှ ၃ လပြည့်သောကြောင့် "ဝဿံ ဝုဋ္ဌာနံ ပဝါရေတုံ"၌ ပါသော ဝဿံဝုဋ္ဌသည် "ဝဿံ ဝုဋ္ဌ" မုချ မဟုတ်သေး၊ အနည်းငယ်ကျန်သေးသော အချိန်ကို ဂဏန်းမဖွဲ့ဘဲ ပဝါရဏာပြုမှုကို အကြောင်းပြု၍ သီတင်းကျွတ် လပြည့်နေ့ကို ပရိယာယ်အားဖြင့်

တိဏကုဋိယော ဘိန္ဒိတွာတိ-ကား၊ ဒဏ္ဍမုဂ္ဂရာဒီဟိ-ဒုတ်, လက်ရိုက် အစ ရှိသည်တို့ဖြင့်၊ စုဏ္ဏဝိစုဏ္ဏံ - မှုန့်မှုန့်ညက်ညက်၊ ကတွာ- ၍၊ (ဇနပဒစာရိကံ- ကို၊ န ပက္ကမိံသု-ဖဲသွားကြကုန်သည်မဟုတ်၊) ပန-အဟုတ်ကား၊ ဝဿာသီသေန – ကျင့်ဝတ်ကို အဦးပြုသဖြင့်၊ [ ခရီးသွားမည့် ရဟန်းတို့၏ ဂမိယဝတ်ကို ပဓာနပြုသောအားဖြင့်၊] တိဏဉ္စ – ကိုဋင်း၊ ဒါရုဝလ္လိ အာဒိနိစ- သစ်သား, နွယ် အစရှိသည်တို့ကိုဋင်း၊ ဩရောပေတွာ-အောက်သို့ချ၍၊ (ဇနပဒစာရိကံ- ကို၊ ပက္ကမိံသု-ပြီ၊) ဣတိအတ္ထော-နက်၊ ဟိ-ချဲ့၊ ယေန-အကြင်ရဟန်းသည်၊ ဝိဟာရပစ္စန္တေ– ကျောင်းတိုက်၏အစွန်၌၊ ကုဋိ-ကျောင်းငယ်သည်၊ ဝါ- ကို၊ ကတာ- ပြုအပ်ပြီးသည်၊ ဟောတိ - ၏၊ တေန – ထို ရဟန်းသည်၊ အာဝါသိကာ-အာဝါသိကဖြစ်ကုန်သော၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ သစေ ဟောန္တိ-အကယ်၍ ရှိကုန်အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ တေ– ထို အာဝါသိကရဟန်းတို့ကို၊ အာပုစ္ဆိတဗ္ဗာ– ပန်ပြောထိုက်ကုန်၏၊(ကိံ)ဣမံ ကုဋိံ-ကို၊ ပဋိဇဂ္ဂိတွာ-စောင့်ရှောက်၍၊ ဝါ– သုမ်သင်၍၊ ကောစိ-သည်၊ ဝသိတုံ-ငှါ၊ သစေ ဥဿဟတိ-အကယ်၍ စွမ်းနိုင် အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ တဿ - ထိုရဟန်းအား၊ ဒေထ-ပေးလိုက်ပါကုန်၊ ဣတိ– ဤသို့ ပန်ပြောထိုက်ကုန်၏၊ ဣတိ- သို့၊ ဝတ္တာ-၍၊ ပက္ကမိတဗ္ဗံ- ဖဲသွားရာ၏။

ယေန-အကြင်ရဟန်းသည်၊ အရညေ-၌၊ (ကုဋိ-သည်၊ ဝါ-ကို၊) ကတာ– သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ တေနဝါ- ထိုရဟန်းသည်ဋင်း၊ (ယော- အကြင်ရဟန်း သည်၊ ဝိဟာရပစ္စန္တေ၌နေသော ရဟန်းသည်-ဟူလို၊) ပဋိဇဂ္ဂနကံ-စောင့်ရှော် သုမ်သင်မည့်သူကို၊ န လဘတိ - မရ၊ တေနဝါ – သည်ဋင်း၊ အညေသံပိ– ( ဤနေရာသို့ ရောက်လာမည့်) အခြားရဟန်းတို့၏လည်း၊ ပရိဘောဂံ- အသုံး

“ ဝဿံ ဝုဋ္ဌ ” ဟု မိန့်တော်မူခြင်းသာတည်း၊ ထို့ကြောင့် သာရတ္ထဝါဒကို ဝိမတိနှင့် တကွ ဆရာမြတ်တို့ နှစ်သက်တော်မမူကြ။

**ကတာကတ ဝေါဟာရ ။** ။ ကိစ္စတခု၌ ဆယ်ပုံပုံ၍ ၉ ပုံ ကျော်ကျော်လောက် ပြီးနေလျှင် ထိုကိစ္စကို “ကတ – ပြုအပ်ပြီး” ဟု ခေါ်နိုင်၏၊ မပြုအပ်သေးသော အစိတ် အပိုင်း အကတမှာ မပြောပလောက်တော့၊ ထို့အတူ မိုဃ်းလပတ်လုံး နေပြီးရာရက်က ၃ လပြည့်ခါနီးပြီဖြစ်၍ ကျန်သော အစိတ်အပိုင်းအချိန်ကို ဂဏန်းမဖွဲ့ဘဲ ပဝါရဏာပြုခါ နီး၌ “ ဝဿံဝုတ္ထ – မိုဃ်းလပတ်လုံး နေပြီးသူ ” ဟု ဆိုနိုင်သည်၊ ဤသို့သော ပြောဆို ခြင်းကို “ ကတာကတ ဝေါဟာရ” ဟု ခေါ်သည်၊ ဥပမာ – သင်ဖြူးယက်နေသူကို “ပြီးပလား” မေးလျှင် ပြီးခါနီးသောကြောင့် “ကတ-ပြီးပါပြီ” ဟု ပြောသကဲ့သို့တည်း၊ ပြီးလျှင် “ယူခဲ့စမ်း” ဟု ပြောသောအခါ၌ကား နဲနဲကျန်သေး၍ “အကတ–မပြီးတတ် သေး” ဟု ပြောလေ့ရှိသည်။

အဆောင်သည်၊[တိဏကဌ်ငွဲ၍ ပရိဘောဂဟုနပုလ္လိန်ထားသည်၊]ဘိဝိဿတိ- တုံ၊ ဣတိ-ဤသို့ နှလုံးသွင်း၍၊ ပဋိသာမေတွာ- သိမ်းဆည်း၍၊ ဂန္တုံ့- သွားရာ၏၊ ပန-ဆက်၊ တေဘိက္ခု- တို့သည်၊ အရညေ- ၌၊ ကုဋိယော-တို့ကို၊ ကတွာ-၍၊ ပဋိဇဂ္ဂနကံ-ကို၊ အလဘန္တာ-န်သည်၊(ဟုတွာ)၊ တိဏဥ္စ- ကိုငင်း၊ ကဋ္ဌဥ္စ- ကိုငင်း၊ ပဋိသာမေတွာ- ၍၊ သင်္ဂေါပေတွာ- ကောင်းစွာ လုံခြုံစေ၍၊ ( ဇနပဒစာရိကံ၊ ပက္ကမိံသု ) ဣတိ အတ္တော၊

စ-ဆက်၊ ယထာ- အကြင်အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ထပိတံ-ထားအပ်သည်၊ (သမာနံ-ဖြစ်လသော်၊ ဝါ-ဖြစ်သော၊) တံ-ထို မြက်, ထင်းသည်၊ ဝါ- ကို၊ ဥပစိကာဟိ-ခြတို့သည်၊ နခဇ္ဇတိ-မခဲစားအပ် မခဲစားနိုင်၊အနောဝဿကဥ္စ- မိုယ်းမစွတ်အပ်သည်လည်း၊ ဟောတိ-၏၊[န+ဩဝဿတီတိ အနောဝဿကံ၊ ကံအနက်၌ ဏွုသက်၊ ] တထာ – ထို အခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ (ခြတို့ မခဲစား နိုင်လောက်အောင်သော အခြင်းအရာ , မိုယ်းမစွတ်နိုင်လောက်အောင်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊)ထပေတွာ-၍၊ ဣမံ ဌာနံ-သို့၊ အာဂတွာ–၍၊ ဝသိတု ကာမာနံ – န်သော၊ သမြဟ္မစာရီနံ – တို့အား၊ ဥပကာရာယ – လျော်စွာ ကျေးဇူးပြုခြင်း၄ါ၊ ဘဝိဿတိ-တုံ၊ ဣတိ–ဤသို့ကြံ၍၊ ဂမိယဝတ္တံ-ကို၊ ဝါ-ခရီး သွားမည့်သူတို့၏ ကျင့်ဝတ်ကို၊[ကကို ယပြု၍ ဂမ်ယ-ဟု ဖြစ်သည်၊]ပူရေတွာ- ပြည့်စေ၍၊(ဇနပဒ စာရိကံ–ကို၊ ပက္ကမိံသု–န်ပြီ။)

ဇနပဒစာရိကံ ပက္ကမိံသူတိ- ကား၊ အတ္တနော အတ္တနော - ၏၊ စိတ္တာနု ကူလံ-စိတ်အားလျော်သော၊ ဝါ–စိတ်ကြိုက်ဖြစ်သော၊ ဇနပဒံ–သို့၊ အဂမံသု- န်ပြီ၊ အာယသ္မာ ပန ၊ ပေ၊ ဝသိတိအာဒိ-အစရှိသော ဝါကျသည်၊ ဥတ္တာနတ္ထ

ယထာ ထပိတံ တံ ။ ။ ယခု စာအုပ်များ၌ ဤအတိုင်းပင် ရှိ၏၊ ဋီကာလည်း " ဣဒါနိ သင်္ဂေါပနဝိဓိံ ဒဿေန္တော (လုံခြုံစေပုံ အစီအရင်ကိုပြလို၍) ယထာစ ထပိ တန္တိ အာဒိမာဟ"ဟု ဖွင့်၏၊ သို့သော် ဤကဲ့သို့ ယထာ တထာရှိရာ၌ စာသွားရိုးရာမှာ "တထာ ထပေတွာ"မှ ထပနကြိယာကို ယူ၍"ထပိယမာန် (တံ) "ဟု လက္ခဏာပြင်ရိုး ဖြစ်၏၊ ထို့ကြောင့် ထပိတံသည် ပိုသကဲ့သို့ ထင်ရ၏။ [ယောဇနာ၌ကား " ထပိတံ တိဏကဋ္ဌံ"ဟု ပင် ဖွင့်၏၊ ၎င်အလို "တံ"ရှိပုံလည်း မရ။]

ဇနပဒစာရိကံ။ ။စရဏံ စာရိကာ-လှည့်လည်ခြင်း၊ ဇနပဒေ+စာရိကာ ဇန ပဒစာရိကာ၊ ခရီးရှည်သွားခြင်း၌"စာရိကာ"ဟူသော အသုံးအနှုန်းသည် သာသနာ တော်၌ ထင်ရှား၏၊ ဤ ဒေသစာရီလှည့်လည်ခြင်းကိုလည်း လူအများကို ချီးမြှောက် ဘို့ရာ ကြွသော ဘုရားရှင်များ အတွက်သာ ရနိုင်၏၊ သို့သော် ဘုရားရှင်ကို အစပြု၍ အတွင်းရှင် (သဒ္ဓိဝိဟာရိက) အားဖြင့် သာဝကတို့လှည့်လည်ခြင်းကိုလည်း "စာရိကာ"

မေဝ- သည်သာ၊ ယာဝ တတိယကန္တိ-ကား၊ ယာဝတတိယဝါရ- ၃ ကြိမ်တိုင်အောင်၊ အနဝယောတိ (ပဒဿ)- အနဝယော ဟူသောပုဒ်၏၊ အနုအဝယော(တိ ပဒစ္ဆေဒေါ)-အနု အဝယောဟုပုဒ်ဖြတ်ခြင်းကို၊(ကာတဗ္ဗော-ပြုထိုက်၏၊)သန္ဓိဝသေန-သန္ဓိ၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဥကာရလောပေါ-ဥ အက္ခရာ၏ ကြေခြင်းသည်၊ (ဟောတိ၊) အနု အနု- အလုပ်ကိစ္စတိုင်း အလုပ်ကိစ္စတိုင်း၌၊ အဝယော - ယုတ်လျော့ခြင်း မရှိ၊ ကုမ္ဘကာရေဟိ - အိုးထိန်းသည်တို့သည်၊ ကတ္တဗ္ဗံနာမ-ပြုထိုက်သည်မည်သော၊ ယံယံ-အကြင်အကြင် အလုပ်ကိစ္စသည်၊ အတ္ထိ-၏၊[မြေကောင်းကို ရှာခြင်း, မြေ နှင့် ရေ ရောစပ်ခြင်း, အိုးဖြစ်အောင် လုပ်ခြင်းစသော အလုပ်များ။]သဗ္ဗတ္ထ-အလုံးစုံသော အလုပ်ကိစ္စ၌၊ အနူနော (န+ဥူနော)- ယုယ်လျော့ခြင်း မရှိ၊ ပရိပုဏ္ဏသိပ္ပေါ - ထက်ဝန်းကျင် ပြည့်စုံသော အတတ်ရှိ၏၊ ဣတိ အတ္ထော။

သကေတိ-ကား၊ အတ္တနော-၏၊ သန္တကေ- ဥစ္စာဖြစ်သော၊ [ " သဿ+ ဣဒံ သကံ"ဟု ပြု။] အာစရိယကေတိ - ကား၊ အာစရိယကမ္မေ - ဆရာ၏ အလုပ်ကိစ္စ ဖြစ်သော၊["အာစရိယဿ+ ကမ္မံ အာစရိယကံ " ဟု ပြု၊ ] ကုမ္ဘကာရ ကမ္မေတိ-ကား၊ ကုမ္ဘကာရာနံ- တို့၏၊ ကမ္မေ - ၌၊ ကုမ္ဘကာရေဟိ-တို့သည်၊ ကတ္တဗ္ဗကမ္မေ-ပြုထိုက်သော အလုပ်ကိစ္စ၌၊ ဣတိ အတ္ထော၊ တေန-၍ ကုမ္ဘကာရကမ္မေဟူသော ပါဠ်ဖြင့်၊ သကံ - သော၊ အာစရိယကံ – သည်၊ ဝါ – ကို၊ သရူပတော - သရုပ်သကောင်အားဖြင့်၊ ဒဿိတံ - ပြအပ်သည်၊ ဟောတိ-၏၊ ပရိယောဒါတသိပ္ပေါတိ-ကား၊ ပရိသုဒ္ဓသိပ္ပေါ-ထက်ဝန်းကျင် စင်ကြယ်သော အတတ်ရှိ၏၊ အနဝယတ္တေ- အလုပ်တိုင်း အလုပ်တိုင်း၌ ယုတ်လျော့ခြင်းမရှိသည်၏အဖြစ်သည်၊ သတိပိ-လည်း၊ အညေဟိ-အခြားအိုးထိန်းသည်တို့နှင့်၊ အသဒိသသိပ္ပေါ- မတူသောအတတ်ရှိ၏၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ။

ဟု ခေါ်နိုင်သည်၊ ဥပမာ– ထန်းရွက်ယပ်ဝန်းကို "တာလဝဏ္ဋ "ဟု ခေါ်တွင်ခဲ့ရာမှ နှီးယပ်ကိုလည်း"တာလဝဏ္ဋ" ဟု ခေါ်နိုင်သကဲ့သို့တည်း။

**ယာဝတတိယကံ။** ။တိဏ္ဏံ+ပူရဏော တတိယော (ဝါရော)၊ တတိယောယေဝ တတိယကော (သွတ္ထဠ္ဌ ကပစ္စည်း)၊ ယာဝနှင့်ယှဉ်သောကြောင့် " တတိယကံ " ဟု ဒုတိယန္တ ရှိရသည်။

**အနဝယော။** ။အနု+အဝယော၊"အာယဝယ-အထွက်နှင့် အဝင်၊ ဝါ-အရနှင့် အကုံ(အရနှင့် အလျော့)"ဟူရာ၌ကဲ့သို့ ဝယသဒ္ဒါသည် " ဟာနိ-ယုတ်လျော့ခြင်း" အနက်ဟောတည်း၊ ဝယနံ ဝယော၊ နတ္ထိ+ဝယော ယဿာတိ အဝယော၊ အနုအနု+ အဝယော အနဝယော၊ အနုသဒ္ဒါ ဝိစ္ဆာဝါစက၊"ကိစ္စတိုင်း ကိစ္စတိုင်း" ဟူလို။

သမ္ဗမတ္တိကာမယန္တိ- ကား၊ ပိဋ္ဌသံယာဋ၊ပေ၊ ကဝါဋမတ္တံ- တံခါးပေါင်, တံခါးရွက်, သံကောက်, မင်းတုတ်, လေသောက်ပြူတင်း၏ တံခါးရွက်မျှကို၊ ထပေတွာ-ထား၍၊[အဘိဓာန်၌''ပိဋ္ဌသံဃာဋ-တံခါးပေါင်(ကျည်းခွေ)''ဟု ရှိ၏၊] အဝသေသံ-သော၊ ဘိတ္တိ၊ပေ၊ဘေဒံ-နံရံ, အမိုးအုပ္ပ,တိုင် အစရှိသော အပြားရှိသော၊ သမ္ဗံ-သော၊ ဂေဟသမ္ဘာရံ- ကျောင်း၏ အဆောက်အဦးကို၊ မတ္တိကာမယမေဝ – မြေညက်ဖြင့် ပြုအပ်သည် ကိုသာ၊ ကတွာ - ၍၊ ဇုတိ အတ္တော-နက်၊[မတ္တိကာယ+ကတာ မတ္တိကာမယာ၊ သမ္ဗံ-အလုံးစုံ+မတ္တိကာ မယာ သဗ္ဗမတ္တိကာမယာ၊ ဤနေရာ၌ ပါဠိတော်ပဌမဝါကျဝယ်''ကရေယျံ'' ဟု ရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် ''ကတွာ''နေရာဝယ် ''ကရေယျံ''ဟု ရှိလျှင်ကောင်း၏၊ ဒုတိယဝါကျ၌လည်း ကတွာ ဟု မရှိဘဲ''ကရိတွာ''ဟု သာရှိသည်၊] တိဏာဋ္ဌ ၊ပေ၊ ပစိတိ– ကား၊ တံ - ထိုကျောင်းငယ်ကို၊ သမ္ဗ မတ္တိကာမယံ - အလုံးစုံ မြေညက်ဖြင့် ပြုအပ်သည်ကို၊ ကတွာ - ၍၊ ပါဏိကာယ - လက်နှင့်တူသော သံလက်ဖြင့်၊ [ပါဏိဝိယာတိ ပါဏိကာ=လက်နှင့်တူသော ပန်းရံသုံးပစ္စည်း (သံလက်)၊''လက်ဖနောင့်ဖြင့်''ဟု ပေးကြသည်ကို စဉ်းစားပါ။]ဃံသိတွာ– အချော တိုက်၍၊ သုက္ခာပေတွာ – ခြောက်စေ၍၊ တေလ တမ္ဗမတ္တိကာယ- ဆီဖြင့် ရောအပ်သော နီသောမြေညက်ဖြင့်၊ [ တေလမိဿတမ္ဗမတ္တိကာယ၊ မိဿအလယ်ပုဒ်ကြေ၊] ပရိမဇ္ဇိတွာ–ပွတ်တိုက်၍၊ အန္တော စ– အတွင်း၌၎င်း၊ ဗဟိစ–၌၎င်း၊ တိဏာဒီဟိ- တို့ဖြင့်၊ ပူရေတွာ- ၍၊ ယထာ- အကြင် အခြင်း အရာအားဖြင့်၊ ပက္ကာ-ဖုတ်အပ်သည်၊ ( သမာနာ )၊ သုပက္ကာ–ကောင်းစွာ ကျက်သည်၊ ဟောတိ၊ ဧဝံ–ဤသို့ ကောင်းစွာ ကျက်နိုင်လောက်အောင်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ပစိ–ဖုတ်ပြီ၊ စ ပန-ထပ်၍ဆက်ဦးအံ့၊ ဧဝံ-သို့၊ ပက္ကာ- ဖုတ်အပ်သော၊ သာကုဋိကာ - သည်၊ ( အဘိရူပါ – လွန်ကဲသော အဆင်း ရှိသည်၊)အဟောသိ-ပြီ။[''သာ အဟောသိ ကုဋိကာ''ကား ပါဠိတော်ရင်း ပါဌ်ဘည်း၊ ထို့ကြောင့် အဘိရူပါ စသည်တို့နှင့်တွဲ၍ အဟောသိကို အနက် ပေးပါ။]အဘိရူပါတိ–ကား၊ သုရူပါ–ကောင်းသောအဆင်းရှိသည်၊ ပါသာ ဒိကာတိ–ကား၊ ပသာဒဇနိကာ–စိတ်၏ ကြည်လင်ခြင်းကို ဖြစ်စေတတ်သည်၊

သူစိ ဃဋိကာ။ ။သူစိကာတိ တတ္ထ ('ထိုတံခါးရွက်၌)မဇ္ဈေ ဆိဒ္ဒံကတွာ ပဝေ သိတာ-သွင်းအပ်သော''သံကော်''တည်း၊ ယခုအခါ၌ ထိုသံကောက်အစား သော့ကို အသုံးပြုကြသည်၊ ဃဋိကာတိ ဥပရိယောဇိတာ၊ ရှေးက ကန့်လန့်ဒုတ်ချောင်းကို ''မင်းတုတ်''ဟု ခေါ်၏၊ (သေနာသနက္ခန္ဓက အဋ္ဌကထာ၊) [ရှေးနိဿယ၌''သူစိ– ကျည်သေး၊ ဃဋိကာ–ကျည်မ''ဟု ပေး၏။]

လောဟိဘိကာတိ - ကား၊ လောဟိတဝဏ္ဏာ - နီမြန်းသော အဆင်းရှိသည်၊
[ လောဟိတံ ယဿာ အတ္ထီတိ လောဟိတိကာ။ ] ကိံကိဏိကသဒ္ဒေါတိ-
ကား၊ ကိံကိဏိကဇာလဿ-ခြူငယ်အပေါင်း၏၊ သဒ္ဒေါ-သည်၊(“ဟောတိ
သေယျထာပိ-ဖြစ်သကဲ့သို့”ဟု ပါဠိတော်၌စပ်၊)ကိရ-ချဲ့၊ နာနာရတနေဟိ-
အမျိုးမျိုးသောရတနာတို့ဖြင့်၊ ကတဿ-ပြုအပ်သော၊ ကိံကိဏိကဇာလဿ-
ခြူငယ် အပေါင်း၏၊ သဒ္ဒေါ - သည်၊ ဟောတိ ယထာ - ကဲ့သို့၊ ဧဝံ – တူ၊
ဝါတပါနန္တရိကာဒီဟိ–လေသော်ပြူတင်းပေါက်အကြား အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊
ပဝိဋ္ဌေန–ဝင်လာသော၊ ဝါတေန–လေသည်၊ သမာဟတာယ–ကောင်းစွာ
တိုက်ခတ်အပ်သော၊ တဿာ ကုဋိကာယ - ၏၊ သဒ္ဒေါ- သည်၊ အဟောသိ၊
ဝါတေန-ဤကိင်္ကိဏိကသဒ္ဒေါအစရှိသောပါဠိဖြင့်၊အဿာ-ထိုကျောင်းငယ်၏၊
အန္တောစ – အတွင်း ၌၎င်း၊ ဗဟိစ – အပြင်ဘက် ၌၎င်း၊ သုပက္ကဘာဝေါ–
ကောင်းစွာကျက်သည်၏အဖြစ်သည်၊ ဝါ – ကို၊ ဒဿိတော ဟောတိ၊ ပန–
ဝါဒန္တရကား၊မဟာအဋ္ဌကထာယံ-၌၊ ကိင်္ကိဏိကာတိ-ကား၊ ကံသဘာဇနံ-
ကြေးခွက်တည်း၊ တသ္မာ, အဘိဟတဿ–တီးခေါက်အပ်သော၊ ကံသဘာဇ
နဿ- ၏၊ သဒ္ဒေါယထာ- ကဲ့သို့၊ ဧဝံ- ဤ့အတူ၊ ဝါတပ္ပဟတာယ-လေသည်
တိုက်ခတ်အပ်သော၊ အဿာ- ၏၊ သဒ္ဒေါ အဟောသိ၊ ဣတိ ဝုတ္တံ။

ကိံ ဧတံ ဘိက္ခဝေတိ ဧတ္ထ-၌၊ ဇာနန္တောဝ-သိတော်မူလျက်သာလျှင်၊ ဘဂ
ဝါ-သည်၊ ကထာသမုဋ္ဌာပနတ္ထံ- စကားကိုဖြစ်ပေါ်စေခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဝါ-
စကားလက်စ ရစေခြင်းအကျိုးငှါ၊ ပုစ္ဆိ – မူပြီ၊ ( ဣတိ – သို့၊ အတ္ထော– ကို၊
ဝေဒိတဗ္ဗော– ၏၊ ဧတ္ထ၏ စပ်ပုဒ်မရှိ၍ ထည့်သည်။ ) ဘဂဝတော ဧတမတ္ထံ
အာရောစေသုန္တိ–ကား၊ သဗ္ဗမတ္တိကာမယာယ- အလုံးစုံမြေညက်ဖြင့် ပြုအပ်
သော၊ ကုဋိကာယ - ၏၊ ဝါ – ကို၊ ကရဏဘာဝံ – ပြုအပ်သည်၏ အဖြစ်ကို၊
[ကရဏဘာဝန္တိ-ကတဘာဝံ၊ ယုပစ္စည်း ကံဟော၊]အာဒိတော-မှ၊ပဋ္ဌာယ-
၍၊ ဘဂဝတော - အား၊ အာရောစေသုံ - နှ်ပြီ၊ ကထံ ဟိ နာမ သော၊ပေ၊
ကရိဿတီတိ ဣဒံ - ဿတိဟူသော ဤ သဒ္ဒါသည်၊ အတီတတ္ထေ - အတိတ်
အနက်၌၊ အနာဂတဝစနံ-အနာဂတ်ဝိဘတ်ရှိသောသဒ္ဒါတည်း၊[ဤဝါကျ၌

**ကိင်္ကိဏိကဇာလဿ။** ။“ကိဋ္ဌိကိဏံ-အနည်းငယ်သော အသံကို၊ ကရောတီတိ
ကိင်္ကိဏီ”ဟု ထောမနိမိရှိ၏၊ ကသည် ခုဒ္ဒကအနက်ဟော၊ ချူငယ်ကလေး၊ ဇာလ
သဒ္ဒါသည် အဘိဓာန်လာအနက်တို့တွင် ဤနေရာ၌ သမူဟအနက်သင့်၏၊ “ ခြူငယ်
ကလေးအများ၏ အသံတွေကဲ့သို့ ကျောင်းကလေး မှာလည်း အသံတွေ မြည်သည်–
ဟူလို၊ [ရှေးနိဿယ၌ “ရွှေခြူကွန်ရက်၏”ဟု ပေး၏။ ]

"ကရိယတိ"ကို ဆိုသည်၊] အကာသိ(နာမ)- ပြုရတုံဘိသနည်း၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ [ ဤသို့ ပါဠိတော် နာမသဒ္ဒါနှင့် တွဲပေး၊ ] တဿ - ထို အတိတ် အနက်၌ အနာဂတ်ဝိဘတ်၏၊ လက္ခဏံ - မှတ်ကြောင်းသုတ်ကို၊ သဒ္ဒသတ္ထ တော-သဒ္ဒါကျမ်းမှ၊ ပရိယေသိတဗ္ဗံ-ရှာမှီးရာ၏၊ ဝါ-ပါလေ။

နဟိ နာမ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ဘဝိဿတီတိ ဧတ္ထ-၌၊ အနုဒယာတိ-ကား၊ အနု ရက္ခဏာ- အဖန်ဖန်စောင့်ရှောက်ခြင်းသည်၊ တေန- ဤ အနုဒယာဟူသော ပုဒ်ဖြင့်၊ မေတ္တာပုဗ္ဗဘာဂံ – မေတ္တာဈာန်၏ ရှေ့အဘို့၌ ဖြစ်သော မေတ္တာကို၊ ဒဿေတိ-ပြတော်မူ၏၊ အနုကမ္ပါတိ-ကား၊ ပရဒုက္ခေန-သူတပါးတို့၏ဆင်းရဲ ခြင်းကြောင့်၊ စိတ္တကမ္ပနာ-စိတ်၏ တုန်လှုပ်ခြင်းသည်၊ အဝိဟေသာတိ- ကား၊

သဒ္ဒသတ္ထတော ပရိယေသိတဗ္ဗံ။ ။နာမေ ဂရဟာဝိမှယေသု (မောဂ္ဂလ္လာန်, ၆–ကဏ္ဍ, ၂–သုတ်၊) [နာမေ–နာမနိပါတ်ရှိလသော်၊ ဂရဟာ ဝိမှယေသု–ကဲ့ရဲ့ခြင်း, အံ့ဩခြင်း အနက်တို့ကို၊ ဂမျမာနေသု – သိအပ်ကုန်သော်၊ ဿတျာဒယော – ဿတိ အစရှိသော ဝိဘတ်တို့သည်၊ ဟောန္တိ။ ] ဤသုတ်၌ ဤ ပါဠိတော်ပုံစံနှင့်တကွ များစွာ သော ပုံစံတို့ကို ထုတ်လေသည်၊ ပါဏိနိ, စန်းကျမ်းစသော သက္ကတသဒ္ဒါကျမ်းများ၌ လည်း ဤသုတ်မျိုး ပါရှိ၏၊ သဒ္ဒနီတိ၌ကား– "ကထံဟိနာမယောဂေနာတီတေ အနာ ဂတဿ ဣဓ ပယောဂေါ ဟောတိ=ကထံဟိ+ နာမပုဒ်တို့နှင့် ယှဉ်ရာ၌ အတိတ်အနက် ဝယ် အနာဂတ်ကဲ့သို့ ပြယုဂ်ရှိ၏"ဟု သုတ်တည်လေ၏၊ ဤသို့ သက္ကတ ပါဠိ သဒ္ဒါကျမ်း များ၌ သုတ်ရှိသောကြောင့် "လက္ခဏံ သဒ္ဒသတ္ထတော ပရိယေသိတဗ္ဗံ"ဟု မိန့်သည်။

အနုရက္ခဏာ၊ပေ၊ဒဿေတိ။ ။"ဒယ – ရက္ခဏေ" ဟူသော ဓာတ်နက်အရ ဒယာကို ရက္ခဏာ ဟု ဖွင့်သည်၊ ထို အနုရက္ခဏာအနက်ကို အတွင်းပြု၍ အနုဒယာ သဒ္ဒါသည် မေတ္တာကရုဏာ ၂ မျိုးလုံးကို ဟောနိုင်၏၊ သို့သော် အနုကမ္ပါ အဝိဟေ သာပုဒ်တို့က ကရုဏာကိုဟောလတ့်ဖြစ်သောကြောင့် ဂေါဗလိဗဒ္ဒနည်း, ပုညညာဏ သမ္ဘာရနည်းဖြင့် အနုဒယာပုဒ်က မေတ္တာကိုသာ ဟောရတော့၏၊ မေတ္တာဈာန်၏ ရှေ့၌ဖြစ်သမျှ မေတ္တာကို " မေတ္တာပုဗ္ဗဘာဂ "ဟု ဆိုသည်၊ ထို့ကြောင့် " အပ္ပမတ္တိ ကာပိ = အနည်းငယ်သော မေတ္တာသည်လည်း၊ န ဘဝိဿတိနာမ " ဟု မိန့်တော်မူ လတ့်၊ [မေတ္တာဈာနဿ ပုဗ္ဗဘာဂဘူတံ သဗ္ဗသတ္တေသု ဟိတဖရဏမေတ္တံ၊–ဋီကာ။] "မေတ္တာယ+ ပုဗ္ဗဘာဂေါ မေတ္တာပုဗ္ဗဘာဂေါ "ဟု ပြု၊ တချို့က " ပုဗ္ဗဘာဂ "အရ ဥပစာရမေတ္တာကိုသာ ယူကြ၏၊ ထိုအယူကို "အပ္ပမတ္တိကာပိ "ဖြင့် စဉ်းစားပါ။

စိတ္တကမ္ပနာ။ ။အနုကမ္ပာကို"စိတ္တကမ္ပနာ"ဟု သဒ္ဒတ္ထဖွင့်သည်၊ ဤအဖွင့်သည် "ပရဒုက္ခေ သတိ သာဓူနံ ဟဒယကမ္ပနံ ကရောတီတိ ကရုဏာ" ဟူသော ဝိဂ္ဂဟနှင့် ထပ်မိ၏၊ ဤ အဖွင့်အတိုင်းပင် "အနုကမ္ပံ ဥပါဒါယ" စသည်၌လည်း "အနုကမ္ပံ – စိတ်၏တုန်လှုပ်ကြောင်း ကရုဏာကို၊ ဝါ – သနားခြင်းဇကို"ဟု ပေးပါလေ၊ "သနား စောင့်ရှောက်ချီးမြှောက်ခြင်းကို"ဟု ပေးကြသောအနက်ကို စဉ်းစားပါ။

အဝိဟိံသနာ – မညှဉ်းဆဲခြင်းသည်၊ တေဟိ – ဤ အနုကမ္ပါအဝိဟေသာ ဟူသောပုဒ်တို့ဖြင့်၊ ကရုဏာပုဗ္ဗဘာဂံ- ကရုဏာဈာန်၏ ရှေးအဘို့၌ဖြစ်သော ကရုဏာကို၊ ဒဿေတိ-မူ၏၊ ဠာဒံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဘိက္ခဝေ-တို့၊ တဿမောဃ ပုရိသဿ–ထိုမဂ်ဖိုလ်မှ အချည်းနှီးဖြစ်သောယောကျ်ား၏၊ ပထဝီခဏနပေ၊ အဂ္ဂိဒါနေသု – မြေတူးခြင်း, မြေညက်နယ်ခြင်း, မီးပေးခြင်းတို့၌၊ [ စိက္ခလ္လံ- မတ္တိကာ၊ ] ဗဟူ – န်သော၊ ခုဒ္ဒါနုခုဒ္ဒကေ – ငယ်ကုန် သာ၍ငယ်ကုန်သော၊ ပါဏေ-သတ္တာတို့ကို၊ ဗျာဗာဓေန္တဿ (ဝိ+အာဗာဓေန္တဿ)-ညှဉ်းဆဲစဉ်၊ ဝိနာသေန္တဿ-ဖျက်ဆီးစဉ်၊ တေသု ပါဏေသု– တို့၌၊ မေတ္တာ ကရုဏာနံ– မေတ္တာဈာန် ကရုဏာဈာန်တို့၏၊ [ အပ္ပနာပတ္တ မေတ္တာ ကရုဏာနံ၊ ] ပုဗ္ဗ ဘာဂမတ္တာပိ- ရှေးအဘို့မျှလည်းဖြစ်သော၊ အနုဒယာ-စီးပွားဖြင့် စောင့်ရှောံ ခြင်းသည်၊ ဝါ-စီးပွားဖြင့် စောင့်ရှောက်ကြောင်း မေတ္တာသည်၊ အနုကမ္ပါ– စိတ်၏ တုန်လှုပ်ခြင်းသည်၊ ဝါ – စိတ်၏ တုန်လှုပ်ကြောင်း ကရုဏာသည်၊ အဝိဟေသာ - သည်၊ နဟိနာမ ဘဝိဿတိ- မဖြစ်လေယောင်တကား၊ ဝါ- မဖြစ်လေရော့သလား၊ အပ္ပမတ္တိကာပိ- အနည်းငယ်လည်းဖြစ်သော မေတ္တာ ကရုဏာသည်လည်း၊ န ဘဝိဿတိနာမ- တကား၊ ဣတိ (ဝုတ္တံ ဟောတိ)။

မာ ပစ္ဆိမာ ၊ပေ၊ အာပဇ္ဇိတိ–ကား၊ ပစ္ဆိမော – နောက်၌ဖြစ်သော၊ ဇန သမူဟော- လူအပေါင်းသည်၊ ပါဏေသု – တို့၌၊ ပါတဗျဘာဝံ- ဖျက်ဆီးနိုင် သည်၏ အဖြစ်သို့၊ [ပါတဗျဘာဝန္တိ– ဝိနာသေတဗ္ဗတံ၊ (ဋီကာ)၊ “ဘူတဂါမ ပါတဗျတာယ”၌ ပါတဗျ ပုဒ်ကဲ့သို့ ပါဓာတ်သည် ဝိနာသန အနက်ဟော ဟု သိစေ၏၊] မာအာပဇ္ဇိ–မရောက်ပါစေလင့်၊ ဗုဒ္ဓကာလေပိ – ဘုရားလက်ထက် တော်အခါ၌သော်မှလည်း၊ [ပိ – ကား သမ္ဘာဝနာ၊] ဘိက္ခူဟိ – တို့သည်၊ ဧဝံ – သို့၊ ကတံ - ပြုအပ်ပြီ၊ ဤဒိသေသု – န်သော၊ ဌာနေသု - အရာတို့၌၊ [ ကျောင်း အိမ် ဆောက်ခြင်း , ရေတွင်းတူးခြင်း အစရှိသော အရာတို့၌၊ ] ပါဏာတိပါတံ– ပါဏာတိပါတအမှုကို၊ ကရောန္တာနံ–ပြုကုန်သော ရဟန်း

မှတ်ချက်။ ။အရှင်ဓနိယ၌ ကုဋီဆောက်လုပ်ရာဝယ် ပိုးငယ်ကလေးများကို သေစေလိုသော စေတနာမရှိပါပေ၊ သို့သော် အရင်းခံကရုဏာ မရှိခြင်းကြောင့်သာ “ ငါက မြေတူးမှုစသည်ကို ပြုလျှင် ပိုးကောင်ကလေးတွေ သေကြလိမ့်မည် ” ဟု ဆင်ခြင်မှုမရှိရကား ထို မဆင်မခြင်ပြုမှုကြောင့် ရှင်ဓနိယကို ပြစ်တင်ကဲ့ရဲ့တော်မူသည်။

**ပါဏာတိပါတံ**။ ။ရှင်ဓနိယသည် ပါဏာတိပါတကို မပြုပါ၊ သို့သော်အများက “ပါဏာတိပါတမှု ပြုသည်”ဟု ထင်သော့ကြောင့် ထို အထင်အတိုင်း“ပါဏာတိပါတံ ကရောန္တာနံ”ဟု ဆိုသည်။

တို့၏၊ ဒေါသော - အပြစ်သည်၊ နတ္ထိ၊ ဣတိ – ဤသို့၊ မညိတွာ – မှတ်ထင်၍၊ ဣမဿ – ဤရှင် ဓနိယ၏၊ ဒိဋ္ဌာနုဂတိံ – အယူကို အစဉ်လိုက်ခြင်းသို့၊ [ဒိဋ္ဌိ ယာ – (ကျောင်း အိမ် ဆောက်ခြင်းစသော ဤကိစ္စမျိုး၌ ပါဏာတိပါတကို ပြုကောင်း၏ ဟူသော)အယူကို+အနုဂတိ–အစဉ်လိုက်ခြင်း၊]အာပဇ္ဇမာနာ-ရောက်သော၊ ပစ္ဆိမာ - သော၊ ဇနတာ– သည်၊ ပါဏေ-တို့ကို၊ ဧဝံ-သို့၊ [ဤ အရှင်ဓနိယ ပြုအပ်သည့်အတိုင်း၊] မာမညိ - မမှတ်ထင်ပါစေလင့်၊ [ ယထာ ထေရေန ကတံ, ဧဝံ မာမညိ၊] ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ဧဝံ– လျှင်၊ ဓနိယံ - ကို၊ ဂရဟိတွာ - ကဲ့ရဲ့တော်မူပြီး၍၊ န စ ဘိက္ခဝေ ၊ပေ၊ ကာတဗ္ဗာတိ - ဟူ၍၊ အာယတိံ – နောင်အခါ၌၊ တာဒိသာယ– သော၊ ကုဋိကာယ–ကို၊ ကရဏံ–ကို၊ ပဋိက္ခိပိ-မူပြီ၊ စ–ဆက်၊ ပဋိက္ခိပိတွာ-မူပြီး၍၊ ယော ကရေယျ, အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿာတိ-ဟူ၍၊ သဗ္ဗမတ္တိကာမယကုဋိကာကရဏေ- အလုံးစုံ မြေညက်ဖြင့် ပြုအပ်သော ကျောင်းငယ်ကို ပြုခြင်း၌၊ အာပတ္တိံ – ကို၊ ထပေသိ – မူပြီ၊ တသ္မာ – ကြောင့်၊ (အာပတ်သင့်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) ယောပိ – အကြင် ရဟန်းသည်လည်း၊ ပထဝီ ခဏနာဒိနာ – မြေတူးခြင်း အစရှိသောအမှုဖြင့်၊ ပါဏေသု- တို့၌၊ ပါတဗျတံ – သို့၊ အနာပဇ္ဇန္တော – မရောက်ဘဲ၊ တာဒိသံ-သော၊ [အချို့စာအုပ်၌၊ ပိ-ပါ၏၊ မကောင်း၊] ကုဋိကံ - ကို၊ ကရောတိ– ၏၊ သောပိ–ထို ရဟန်းသည်လည်း၊ ဒုက္ကဋံ-သို့၊ အာပဇ္ဇတိ–၏။

ပန-ဆက်၊ ပထဝီခဏနာဒီဟိ - တို့ဖြင့်၊ ပါဏေသု- တို့၌၊ ပါတဗျတံ–သို့၊ အာပဇ္ဇန္တော - လျက်၊ ယံယံ ဝတ္ထုံ - အကြင်အကြင် (မြေတူးခြင်းစသော) ဝတ္ထုကို၊ ဝီတိက္ကမတိ – လွန်ကျူး၏၊ တတ္ထ တတ္ထ – ထိုထို (မြေတူးခြင်း အစရှိသော) ဝတ္ထု၌၊ ဝုတ္တမေဝ - ဟောတော်မူအပ်ပြီးသည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊ (ပထဝီခဏန,ဘူတဂါမ–စသည်ကို ရည်ရွယ်သည်၊)အာပတ္တိံ - သို့၊ အာပဇ္ဇတိ-၏၊ ဓနိယတ္ထေရဿ - ၏၊ အာဒိကမ္မိကတ္တာ - အစအမှု၌ ယှဉ်သူ၏အဖြစ်ကြောင့်၊ အနာပတ္တိ – အနာပတ်တည်း၊ [''ယော ကရေယျ, အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿ''အရ ဟောတော်မူအပ်သော အာပတ်သည် အရှင်ဓနိယမှာ အာဒိကမ္မိက ဖြစ်သောကြောင့် မသင့်–ဟူလို။] သေသာနံ-အရှင်ဓနိယမှ ကြွင်းကုန်သော၊ သိက္ခာပဒံ-ကို၊ [''န ဘိက္ခဝေသဗ္ဗမတ္တိကာမယာ''စသော သိက္ခာပုဒ်ကို၊] အတိက္ကမိတွာ- ကျူးလွန်၍၊ ကရောန္တာနမ္ပိ - ပြုကုန်သော ရဟန်းတို့၏ ၎င်း၊ ကတံ– သူတပါးပြုအပ်ပြီးသော ကုဋိကို၊ လဘိတွာ-၍၊ တတ္ထ-ထိုကုဋိ၌၊ ဝသန္တာနမ္ပိ–တို့၏၎င်း၊ ဒုက္ကဋမေဝ–သည်သာ (ဟောတိ)၊ [သူတပါးပြုအပ်ပြီးသော ကုဋိ၌ နေကောင်းသေးလျှင် အဖျက်ခိုင်းတော် မမူရာ၊ အဖျက်ခိုင်း

တော်မူခြင်းကိုထောက်၍“မနေကောင်း”ဟုသိသာ၏၊ ထို့ကြောင့်“နေလျှင် ဒုက္ခင်”ဟု အဋ္ဌကထာမိန့်သည်။] ပန-အန္ဓယကား၊ ဒဗ္ဗသ မ္ဘာရမိဿကာ- သစ်,ဝါး စသည်တို့ဖြင့် ရောအပ်သော ကျောင်းငယ်သည်၊ ယထာဝါ တထာ ဝါ-ဟုတ်ဟုတ်ခြားခြားသောအခြင်းအရာအားဖြင့်၊ မိဿာ-ရောအပ်သည်၊ ဟောတု- စေ၊ ဝဋ္ဋတိ- ၏၊ [အောက်ခံ မြေညက်ခုံပေါ်၌ သစ် ဝါး ရောခြင်း စသည်ဖြင့် တနည်းနည်းရောလျှင် အပ်၏၊] သုဒ္ဓမတ္တိကာမယာဝ–သက်သက် မြေညက်ဖြင့် ပြုအပ်သော ကျောင်းငယ်သည်သာ၊ နဝဋ္ဋတိ - မအပ်၊ သာဝိ– ထိုသုဒ္ဓမတ္တိကာမယ ကျောင်းငယ်သည်လည်း၊ ဋ္ဌကာဟိ - အုဋ်တို့ဖြင့်၊ ဂိဉ္ဇ ကာဝသထ သခေ်ပေန–အုဋ်ခွတိုက်အသွင်ဖြင့်၊ ကတာ–ပြုအပ်သောကျောင်း သည်၊ ဝဋ္ဋတိ–၏။ [ဂိဉ္ဇကာဟိ ဝေ – အင်္ဂတေမပေါ်, မြေနီသရွတ်တို့ဖြင့်သာ+ ကတော- ပြုအပ်သော (အင်္ဂတေလည်း မသုတ်အပ်သော)+အာဝသထော ဂိဉ္ဇကာဝသထော။]

ဝေဝံ ဘဏ္ဍေတိခေါ၊ပေ၊ဘိန္ဒိံသုတိ-ကား၊ ဘဂဝတော-၏၊ ဝစနံ-တော်ကို၊ သမ္ပဋိစ္ဆိတွာ–ဝန်ခံပြီး၍၊ ကဋ္ဌေဟိစ–သစ်သားတို့ဖြင့်၎င်း၊ ပါသာဏေဟိစ– ကျောက်ခဲတို့ဖြင့်၎င်း၊ တံ ကုဋိကံ–ကို၊ ဝိကိ ရန္တာ - ဖရိုဖရဲ ဖြန့်ကြဲကုန်လျက်၊ (မှုန့်မှုန့် ညက်ညက် ပြုကုန်လျက်)၊ [ဝိကိရန္တာ-စုဏ္ဏဝိစုဏ္ဏံ ကရောန္တာ၊] ဘိန္ဒိံသု - ဖျက်ကြကုန်ပြီ၊ အထခေါ အာယသ္မာ ဓနိယောတိ အာဒိမှိ - အစ ရှိသောဝါကျ၌၊ အယံ– ဤ ဆိုအပ်လတံ့ကား၊ သခေ်ပတ္တော– အကျဉ်းချုပ် အနက်တည်း၊ ဓနိယော-သည်၊ ကေပဿော-ကျောင်း၏ဘေးတဘက်၌၊ ဒိဝါ ဝိဟာရံ–နေ့အခါ၌နေခြင်းငှါ၊ ဝါ–နေ့အခါဝယ် နေရာအရပ်၌၊ [နိသိန္နော– သည် အကမ္မက ဓာတ်ဖြစ်၍ “ ကို ” ဟု မပေးရ၊] နိသိန္နော - ထိုင်နေသည်၊ (ဟုတ္ဂာ၊)တေနသဒ္ဒေန-ထိုကျောင်းဖျက်သံကြောင့်၊အာဂန္တွာ-၍၊တေဘိက္ခူ- တို့ကို၊ အာဝုသော-အရှင်ဘုရားတို့၊ တုမှေ-တို့သည်၊ ကိဿ-ကြောင့်၊ မေ-၏၊ ကုဋိံ – ကို၊ ဘိန္ဒထ - ဖျက်ကြပါကုန်သနည်း၊ ဣတိ - သို့၊ ပုစ္ဆိတွာ – မေး၍၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ဘေဒါပေသိ-ဖျက်စေတော်မူပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ သုတွာ-၍၊ သုဗ္ဗစ တာယ – ကောင်းစွာ ပြောဆိုအပ်သော စကားရှိသူ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ– ပြောဆို၍ လွယ်သူ၏အဖြစ်ကြောင့်၊ သမ္ပဋိစ္ဆိ–လက်ခံပြီ၊ ဣတိ အယံ–ကား၊ သခေ်ပတ္တော-တည်း၊ [“သမ္ပဋိစ္ဆိတိ”ဟု “ဣတိ” ပါစေ။]

ပန–ပရိဟာရပက္ခမှတပါး စောဒကပက္ခကို ဆိုဦးအံ့၊ ကသ္မာ– ကြောင့်၊ ဘဂဝါ-သည်၊ အတိမဟန္တေန-အလွန်ကြီးစွာသော၊ ဥမိနာ ဥဿာဟေန- ၍အားထုတ်ခြင်းဖြင့်၊ အတ္တနော - ၏၊ ဝသနတ္ထံ - နေခြင်းအကျိုးငှါ၊ ကတံ–

ပြုအပ်ပြီးသော၊ ကုဋိကံ-ကို၊ ဘေဒါပေသိ-ဖျက်စေတော်မူသနည်း၊ တေသ-ဤအရှင်ဓနိယ၏၊ ဣဓ-ဤ ကျောင်းငယ်၌၊ ဝယကမ္မမ္ပိ-ကုန်ကျမှုသည်လည်း၊ အတ္ထိ နနု- ရှိသေးသည် မဟုတ်ပါလော၊ ဣတိ - ဤကား စောဒနာတည်း၊ ကိဉ္စာပိအတ္ထိ-အကယ်၍ကားရှိပါပေ၏၊ အထခေါ-ထိုသို့ပင်ရှိပါသော်လည်း၊ နံ-ထိုကျောင်းငယ်ကို၊ ဘဂဝါ-သည်၊ အကပ္ပိယာ-မအပ်၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ဘိန္ဒာပေသိ - မူပြီ၊ တိတ္ထိယဓဇော - တိတ္ထိတို့၏အလံတည်း၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ ဘိန္ဒာပေသိ- ပြီ၊ အယံ- ပြီးကား၊ ဣဓ-ဤအဋ္ဌကထာ၌၊ ဝိနိစ္ဆယော-အဆုံးအဖြတ်တည်း၊ အဋ္ဌကထာယံ ပန-မဟာအဋ္ဌကထာ၌ကား၊ သတ္တာနုဒယာယ ၊ပေ၊ပဋိသေဓနာယာတိ အာဒီနိ- အစရှိကုန်သော၊ အညာနိပိ-အခြားလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ကာရဏာနိ-တို့ကို၊ ဝုတ္တာနိ-နပြီ၊ [သတ္တာနုဒယာယ-သတ္တဝါတို့ကို စောင့်ရှောက်ခြင်းငှါ၊ ( ဘိန္ဒာပေသိ - မူပြီ၊ ) ပတ္တစီဝရ ဂုတ္တတ္ထာယ-သပိတ်သင်္ကန်း၏ လုံခြုံသည်၏ အဖြစ်အကျိုးငှါ၊ ( ဘိန္ဒာပေသိ၊ " ဂုတ္တဘာဝတ္ထာယ"ဟု ဆိုလိုလျက် " ဘာဝ " ပုဒ်ကြေသည်၊ ) သေနာသန ဗာဟုလျပဋိသေဓနာယ - ကျောင်း၏ များသည်၏အဖြစ်ကို တားမြစ်ခြင်း အကျိုးငှါ၊ (ဘိန္ဒာပေသိ- ပြီ၊ )တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဣဒါနိပိ-ယခုခေတ်၌လည်း၊ ဗဟုဿုတော- များသောသုတရှိသော၊ ဝိနယညူ - ဝိနည်းကို တတ်သိသော၊ ယော ဘိက္ခု-သည်၊ အညံ-သော၊ ဘိက္ခုံ-ကို၊ အကပ္ပိယံ-မအပ်သော၊ ပရိက္ခာရံ-

ဝယကမ္မံပိ။ ။မြေတူးခြင်း-တံခါးရွက် စသော သစ်သားဆိုင်ရာကို ပြုလုပ်ခြင်းတို့၌ ရှင်ဓနိယကိုယ်တိုင် မတတ်နိုင်ရကား ငှါးရလိမ့်မည်၊ ငှါးရလျှင်လည်း အပ်သောနည်းဖြင့် လက်ခပေးရမည် ဖြစ်၍ ကုန်ကျစရိတ်ရှိသည်၊ ထို့ကြောင့် ဖျက်သူတို့မှာ ဂီဝါ (အစားပေး) ထိုက်သည် မဟုတ်ပါလား-ဟူလို။

တိတ္ထိယဓဇော။ ။ဘိက္ခူနံ အကပ္ပိယတ္တာ ဇ ဝ တိတ္ထိယဝတာနုရူပတ္တာ တိတ္ထိယဓဇော=ရဟန်းတို့အား မအပ်လျှင် တိတ္ထိတို့အကျင့်အားလျော်သော ကုဋိဖြစ်နေရကား တိတ္ထိတို့၏ အလံ ( တိတ္ထိတို့သည် ထို ကုဋိနှင့် အလားတူသော စာဋိ (အိုးစရည်းကြီး) စသည်၌ နေလေ့ရှိရကား တိတ္ထိတို့၏ အမှတ်အသား) ဖြစ်သည်။

အညာနိပိ။ ။ ထို ကုဋိမျိုးလုပ်ရာ၌ မြေတူးမှုစသည်ကြောင့် ပျက်စီးမည့် သတ္တဝါတို့ကို စောင့်ရှောက်တော်မူလိုခြင်းသည် သတ္တာနုဒယတည်း၊ ထို ကုဋိမျိုးသည် အဧအပူလည်း မမျှ, သူခိုးများ ဖျက်ဘို့လည်း လွယ်၏၊ ထို့ကြောင့် ထိုကုဋိ၌ ထားအပ်သော ပတ္တစီဝရတို့ ဆွေးမြည့်လွယ်၏, လုံလည်း မလုံခြုံ၊ ထိုသို့ မဖြစ်စေခြင်းသည် ပတ္တစီဝရဂုတ္တတည်း၊ ထို ကုဋိကို ခွင့်ပြုလိုက်လျှင် ကျောင်းအမျိုး အစားတွေ များလွန်းလာဘွယ် ရှိခြင်းသည် သေနာသန ဗာဟုလ္လတည်း၊ ဤသို့ စသော အကြောင်းများကို "အညာနိပိ"ဟု ဆိုသည်၊ ပိဖြင့် မိမိပြခဲ့သော အကြောင်း ၂ မျိုးကိုလည်း ပေါင်း။

ကို၊ ဂဟေတွာ–၍၊ ဝိစရန္တံ-လှည့်လည်နေသည်ကို၊ ဒိသွာ-၍၊ တံ–ထို ပရိက္ခရာကို၊ ဆိန္ဒာပေယျဝါ–ဖြတ်မူလည်း ဖြတ်စေအံ့၊ ဘိန္ဒာပေယျဝါ-ခွဲမူလည်း ခွဲစေအံ့၊ သော – ထိုရဟန်းသည်၊ အနုပဝဇ္ဇော– ကဲ့ရဲ့ထိုက်သော အပြစ်မရှိ၊ [ အနုပဝဇ္ဇော- နတ္ထိ+ဥပဝဇ္ဇံ ယဿာတိ အနုပဝဇ္ဇော၊ " ဒေါသံ အာရောပေတွာ နဝတ္တဗ္ဗော "ဟု ဋီကာ ဖွင့်သည်ကား အဓိပ္ပါယတ္ထ၊ ထို အနုပဝဇ္ဇကို "နေဝစောဒေတဗ္ဗော "စသည်ဖြင့် အဓိပ္ပါယ် ဖေါ်သည်။ ] နေဝ စောဒေတဗ္ဗော–မစောဒနာထိုက်၊ န သာရေတဗ္ဗော– အပြစ်ကို အမှတ်မရစေထိုက်၊ တံ - ထိုရဟန်းကို၊ မမ– ၏၊ ပရိက္ခာရော– ကို၊ တယာ- သည်၊ နာသိတော-ဖျက်ဆီးအပ်ပြီ၊ တံ–ထိုပရိက္ခရာကို၊ ဝါ - ထိုပရိက္ခရာ၏ တန်ဘိုးကို၊ ဒေဟိ-လော့၊ ဣတိ- သို့၊ ဝတ္တုံ- ပြောဆိုခြင်းငှါ၊ န လဗ္ဘာ-မရအပ်။

တတြ – ထို အကပ္ပိယပရိက္ခရာကို ဖျက်စေရာ၌၊ အယံ - ဤ ဆိုအပ်လတ္တံကား၊ ပါဠိမုတ္တကော – ပါဠိတော်မှလွတ်သော၊ ကပ္ပိယာကပ္ပိယ ပရိက္ခာရဝိနိစ္ဆယော-အပ်, မအပ် ပရိက္ခရာကို ဆုံးဖြတ်ကြောင်းစကားတည်း၊ ကေစိ–အချို့ ရဟန်းတို့သည်၊ တာလပဏ္ဏစ္ဆတ္တံ – ထန်းရွက် ထီးကို၊ အန္တောဝါ–အတွင်းဘက်၌သော်၎င်း၊ ဗဟိဝါ – ပြင်ဘက်၌သော်၎င်း၊ ပဉ္စဝဏ္ဏေန– နီလ စသား ငါးပါးသော အဆင်းရှိသော၊ သုတ္တေန – ရောင်စုံချည်ဖြင့်၊ သိဗ္ဗန္တာ–ချုပ်စပ်ကုန်လျက်၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌံ – ပြေပြစ် ညက်ညောသောအဆင်း ရှိသည်ကို၊ ကရောန္တိ-န်၏၊ တံ- ထိုသို့ပြုခြင်းသည်၊ န ဝဋ္ဋတိ-မအပ်၊ ပန-အန္ဒယကား၊ ဧကဝဏ္ဏေန–တမျိုးသော အဆင်းရှိသော၊ နီလေနဝါ- အညိုမူလည်း ဖြစ်သော၊ ပီတကေနဝါ – အရွှေမူလည်းဖြစ်သော၊ [ အညိုဂုဏ်ဖြင့် ဂုဏီချည်ဒြဗ်ကိုယူ၊ ဂုဏူပစာရတည်း၊ ပီတက၌လည်း နည်းတူ။ ] ယေနကေနစိ - အမှတ်မထား တပါးပါးသော၊ သုတ္တေန-ဖြင့်၊ အန္တောဝါ-၌၎င်း၊ ဗဟိဝါ-၌၎င်း၊ သိဗ္ဗိတုံ-ချုပ်ခြင်းငှါ၎င်း၊ ဆတ္တဒဏ္ဍဂ္ဂါဟကံ – ထီးရိုးကို ယူတတ်သော၊ သလာကပဉ္ဇရံ- ဝါးခြမ်းခရိုင်ကို၊ ဝိနန္ဓိတုံဝါ - ဖွဲ့ကြက်ခြင်းငှါ၎င်း၊ ဝဋ္ဋတိ – အပ်၏၊

**တာလပဏ္ဏစ္ဆတ္တံ။** ။ ရှေးက ထန်းရွက်ဖြင့် ပြုအပ်သောကြောင့် " တာလပဏ္ဏစ္ဆတ္တံ " ဟု ဆိုဟန်တူ၏၊ ယခုခေတ်၌ အဝတ်ဖြင့် ပြုအပ်သောကြောင့် ထို ဝတ္ထစ္ဆတ္တကိုလည်း အတွင်ရုဠှိ (သဒိသူပစာရ) အားဖြင့် တာလပဏ္ဏစ္ဆတ္တဟုပင်ခေါ်၊ သို့သော် ဝတ္ထစ္ဆတ္တမှာ (ထန်းရွက်များစပ်သလို) စပ်၍ ချုပ်ဘွယ်မလို။

**ဆတ္တဒဏ္ဍ၊ပေ၊ သလာကပဉ္ဇရံ။** ။"ထီးရိုးကိုယူတတ်သော ထီး ခရိုင်"ဟူသည် ယခုအခါ ထီး၏ အတွင်းဘက်ရှိ ထီးခရိုင်ပင်တည်း၊ ထိုခရိုင်များကိုလည်း ခိုင်မြဲအောင် အရောင်တမျိုးထည်းသာရှိသောကြိုးဖြင့် ဖွဲ့တုပ်နိုင်သည်။ [ ကေဝဏ္ဏေန– စသည်ကို

တဥ္စ - ထို ထီးခရိုင်ကိုလည်း၊ ထိရကရဏတ္ထံ– ခိုင်မြဲအောင်ပြုခြင်း အကျိုးငှါ၊ (ဝိနန္ဒိတုံ ဝဋ္ဋတိ- ၏၊) ဝဏ္ဏမဋ္ဌတ္ထာယ- အဆင်း၏ပြေပြစ်ညက်သောသည်၏ အဖြစ်အကျိုးငှါ၊ န ဝဋ္ဋတိ–မအပ်၊ ဆတ္တ ပဏ္ဏကေသု-ထီးရွက်တို့၌၊[ထီးရွက်အဖျားတို့၌၊ ] မကရဒန္တကံဝါ - မကန်းသွား ပုံသဏ္ဌာန်ကိုသော်ငင်း၊ အဍ္ဍစန္ဒကံဝါ-လ ထက်ဝက် ပုံသဏ္ဌာန်ကိုသော်ငင်း၊ [ ယခု ဖဲထီးအဖျား၌ ဝိုက်၍ထားသောပုံမျိုး၊ ] ဆိန္ဒိတုံ - ငှါ၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ဆတ္တဒဏ္ဍေ – ထီးရိုး၌၊ ဂေဟထမ္ဘေသု ဝိယ– အိမ်တိုင် တို့၌ကဲ့သို့၊ ဃဋကောဝါ – ရေအိုးငယ် သည်ငင်း၊ [ကြာသွတ်ဒိုး-ဟု ပေးကြ၏၊ ကြာပန်းစိုက်၍ သွတ်၍ထားသောအိုး–ဟူလို၊] ဝါဠရူပကံဝါ - ခြင်္သေ့ သစ်ကျား သားရဲရုပ်သည်ငင်း၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ သဗ္ဗတ္တ – ထီးရိုး၏ အလုံးစုံသောအရပ်၌၊ [ဆတ္တဒဏ္ဍေ သဗ္ဗတ္တ၊] အာရဂ္ဂေန- ဆောက်ဖျားဖြင့်၊[အာရဂ္ဂေန-နိခါဒန မုခေန၊ ဤနေရာ၌ အာရသဒ္ဒါသည် နိခါဒန၏ ပရိယာယ်တည်း၊ ] လေခါ – အရေးသည်၊ ဝါ– ကို၊ ဒိန္နာ - ပေးအပ်သည်၊ သစေပိ ဟောတိ- အကယ်၍မူလည်း ဖြစ်အံ့၊ (ဝဲသတိ)၊ သာပိ– ထိုအရေးသည်လည်း၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ဃဋကမ္ပိ – အိုးငယ်ကိုငင်း၊ ဝါဠရူပမ္ပိ - ကိုငင်း၊ ဘိန္ဒိတွာ – ဖျက်၍၊ ဓာရေတဗ္ဗံ – ဆောင်ရာ၏၊ ဝါ– ဆောင်းရာ၏၊ လေခါပိ– ကိုလည်း၊ ဃံသိတွာ ဝါ-ပွတ်တိုက်၍မူလည်း၊ အပနေတဗ္ဗာ- ဖယ်ရှားထိုက်၏၊ သုတ္တကေန ဝါ - ချည်ဖြင့်မူလည်း၊ ဒဏ္ဍော – ကို၊ ဝေဌေတဗ္ဗော – ရစ်ပတ်ထိုက်၏၊ ပန-ကား၊ ဒဏ္ဍဗုန္ဒေ– ထီးရိုး၏အရင်း၌၊ အဟိစ္ဆတ္တကသဏ္ဌာနံ– မှိုင်ပုံ သဏ္ဌာန်သည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ ဝါတပ္ပဟာရေန- လေ၏ တိုက်ခတ်ခြင်းကြောင့်၊ အစလနတ္ထံ – မလှုပ်ရှားခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဆတ္တ မဏ္ဍလိကံ – ထီးရိုးအတွင်း၏ အဝိုင်းငယ်ကို၊ [ ဆတ္တဿ အန္တော ခုဒ္ဒကမဏ္ဍလံ။ ] ရဇ္ဇုကေဟိ – ကြိုးငယ်တို့ဖြင့်၊ ဂါဟေတွာ– ယူစေ၍၊ ဒဏ္ဍေ – ထီးရိုး၌၊ ဗန္ဓန္တိ– ဖွဲ့ကြကုန်၏၊ တသ္မိံ

လိုက်စေ။] [တဿ– ထို ထီးရိုး၏၊ အပရိဂဠနတ္ထံ– မလျှောကျခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဆတ္တသလာကာနံ – ထီး၌ပါသော ဝါးခြမ်းစိတ်တို့၏၊ မူလပဒေသဒဏ္ဍဿ သမန္တတော ဒဠ္ဌံ ပဋ္ဌရံ ကတွာ သုတ္တေဟိ ဝိနန္ဓန္တိ၊ သော ပဒေသော ဆတ္တဒဏ္ဍဿ သလာကပဋ္ဌရံ နာမ–ဝိမတိ။ ]

ဃဋကံပိ၊ပေ၊ဝေဌေတဗ္ဗော။ ။ရှေးက တိုင်ထိပ်၌ ရေအိုးငယ် (ကြာစိုက်အိုး) ခြင်္သေ့စသော အရုပ်များ တပ်ထားတတ်၏၊ ထို့အတူ ထီးရိုးထိပ်၌လည်း တပ်ထားတတ်၏၊ ထိုအိုး ထိုအရုပ်များကို ဖျက်ပြီးမှ ထိုထီးကို သုံးစွဲရသည်၊ အရိုး၌ အရေးအကြောင်းများ ခြစ်၍ထားတတ်၏၊ ထို အရေးအကြောင်းကိုလည်း ဒါးဖြင့်ဖျက်၍ဖြစ်စေ, အရေးမပေါ်စေဘဲ အရိုးနှင့်အရေး တပြေးထည်းဖြစ်အောင် ကြိုးငယ်တို့ဖြင့်ရစ်ပတ်၍ဖြစ်စေ ထီးကိုသုံးစွဲပါ။

ဗန္ဓနဋ္ဌာနေ– ထို ဖွဲ့ရာအရပ်၌၊ ဝလယမိဝ – လက်ကောက်ကဲ့သို့၊ ဥက္ကိရိတွာ- အထက်သို့ တက်စေ၍၊ လေခံ-ကို၊ ထပေန္တိ-ထားကြကုန်၏၊ သာ–ထို အရေးသည်၊ ဝဋ္ဋတိ – အပ်၏။ [ဝါတပ္ပဟာရေန – စသော ဝါကျ၏အဓိပ္ပါယ်မှာ ယခုထီးများကိုကြည့်၍ မရှင်းပါ၊ နားလည်သူများကို မေးကြပါလေ။]

စိဝရံ–ကို၊ မဏ္ဍနတ္ထာယ-တန်ဆာဆင်ခြင်းအကျိုးငှါ၊နာနာသုတ္တကေဟိ- အမျိုးမျိုးသော အဆင်းရှိသောအပ်ချည်တို့ဖြင့်၊ သတပဒိသဒိသံ – ကင်းခြေများနှင့်တူစွာ၊ ဝါ- ကင်းခြေများသဏ္ဍာန်၊ သိဗ္ဗန္တာ–ချုပ်ကုန်လျက်၊ အာဂန္တုကပဋ္ဋံ- အာဂန္တုကအလွှာကို၊ ဝါ – သလင်းတောင်ကို၊ ထပေန္တိ – န်၏၊ [ မူလပိတ်သားထဲတွင် မပါဘဲနှင့် အပေါ်က အပိုထပ်အပ်သော အလွှာကို "အာဂန္တုကပဋ္ဋ"ဟု ခေါ်သည်၊ ထိုအလွှာကို ရှေးက "သလင်းတောင်"ဟု ခေါ်ကြ၏၊] အညမ္ပိ–(ကင်းခြေများသဏ္ဍာန်မှ) အခြားလည်းဖြစ်သော၊ ယံ ကိဉ္စိ – သော၊ သူစိကမ္မဝိကာရံ – အပ်ချုပ်မှု၏ ထူးခြားသောအမှုအရာကို၊ ကရောန္တိ-န်၏၊ ပဋ္ဋမုခေဝါ-အလွှာ၏ အဥုးအစပ်၌သော်၎င်း၊ ပရိယန္တေဝါ- သင်္ကန်း အဆုံး၌သော်၎င်း၊ [ပရိယန္တေတိ-စီဝရပရိယန္တေ၊ စီဝရအနုဝါတံ (သင်္ကန်း၏ အလျားအဆုံးကို) သန္ဓာယ ဝေတံ ဝုတ္တံ၊] ဝေဏိံ ဝါ - ပြောင်းနှံသဏ္ဍာန် ချုပ်ခြင်းကို၎င်း၊ [ဝေဏိံတိ-ဝရကသီသာကာရေန သိဗ္ဗနံ၊]သင်္ခလိကံဝါ–သံကွင်းဆက်သဏ္ဍာန် ချုပ်ခြင်းကို၎င်း၊ (ကရောန္တိ-န်၏၊) ဝေမာဒိံ- ဤသို့ အစရှိသော၊ သဗ္ဗံ – အလုံးစုံသော ချုပ်မှုသည်၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ပကတိသူစိ

**ဝလယမိဝ ဥက္ကိရိတွာ** ။ ။ ကြိုးချည်ဘို့နေရာ၌ လက်ကောက် သေးသေးကဲ့သို့ အရေးအကြောင်းကလေး အထက်၌ ပေါ်ထင်စေ၍၊ [ဥက္ကိရိတွာတိ – ဥဋ္ဌာပေတွာ (အထက်၌တက်စေ၍)။] ဝိမတိ၌ကား–"နိန္နံ ဥန္နတံဝါ ကတွာ"–ဟု ဆိုသည်၊ နိမ့် (ချိုင့်)၍ သော်လည်းနေစေ, အပေါ်၌ မောက်၍သော်လည်းနေစေ – ဟူလို။ [ဤ စကားဖြင့် "လေခါ မအပ်"ဟု ဆိုသော်လည်း ဤမဏ္ဍလ၌ကား "လေခါအပ်ပါ၏" ဟု သိစေ၏။]

**နာနာသုတ္တကေဟိ**။ ။နာနာဝဏ္ဏေဟိ သုတ္တေဟိ၊ ဇာဒဓ္ဓ–ဤနာနာသုတ္တကေဟိ ဟူသော စကားကိုလည်း၊ တထာကရောန္တာနံ ကရဏပ္ပကာရဒဿနတ္ထံ ဝုတ္တံ=ထိုကဲ့သို့ ပြုသူတို့၏ ပြုပုံနည်းအပြားကို ပြခြင်းငှါ ဆိုအပ်၏၊ ဧကဝဏ္ဏသုတ္တေနပိ ဝုတ္တပ္ပကာရေန (အဋ္ဌကထာ၌ ဆိုအပ်ပြီးသော သတပဒိသဏ္ဍာန်စသော အပြားအားဖြင့်) သိဗ္ဗိတုံ နဝဋ္ဋတိယေဝ။

**ပတ္တမုခေ** ။ ။ ပတ္တကောဋိယံ၊ ဒွိန္နံ ပတ္တာနံ သင်္ဃဋိတဋ္ဌာနံ သန္ဓာယ ဝေတံ ဝုတ္တံ၊ [ သင်္ကန်းကို ၅ ခဏ်း စသည် ဖြတ်ပြီးနောက် , ထို အပြတ်ခြင်း ဆက်စပ်ရာ ဌာနကို ရည်ရွယ်၍"ပတ္တမုခေ"ဟု ဆိုသည်။]

ကမ္မမေဝ – ပကတိအပ်ချုပ်မှုသည်သာ၊ (ရိုးရိုးအပ်ချုပ်မှုသည်သာ၊) ဝဋ္ဋတိ၊ ဂဏ္ဌိကပန္နကဥ္စ – ကမ္ပတ်သီးတပ်ရာ အပေါ်လွှာကိုငှင်း၊ [ အနားပတ်သီးတပ်ရာအိမ်-ဟူလို၊] ပါသက ပန္နကဥ္စ-ကမ္ပတ်ကွင်းတပ်ရာအပေါ်လွှာကိုငှင်း၊ [အနားပတ်ကွင်းဘပ်ရာအိမ် - ဟူလို၊ ] အဋ္ဌကောဏမ္ပိ – ရှစ်ထောင့်ကိုငှင်း၊ သောဠသကောဏမ္ပိ - ငှင်း၊ ကရောန္တိ၊ တတ္ထ - ထိုအလွှာတို့၌၊ အဂ္ဃိယဂယမုဂ္ဂရာဒီနိ-စေတီပုံ, ချွန်းပုံ, ဝါးရင်းတုတ်ပုံအစရှိသည်တို့ကို၊ ဒဿေန္တိ- နှ်၏၊ ကက္ကဋက္ခီနိ - ပုဇွန်မျက်လုံးပုံတို့ကို၊ ဥက္ကိရန္တိ- ပေါ်ထွက်စေကြကုန်၏၊ သဗ္ဗံ– သည်၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ စတုကောဏမေဝ– ၄ ထောင့်အလွှာသည်သာ၊ ဝဋ္ဋတိ။

ကောဏသုတ္တပိဠကာစ-ကမ္ပတ်သီးအိမ် ကမ္ပတ်ကွင်းအိမ်၏အထောင့်တို့မှထွက်သော ချည်အဖုတို့သည်လည်း၊ ဝါ – ကမ္ပတ်သီးအိမ် ကမ္ပတ်ကွင်းအိမ်၏အထောင့်တို့မှ ထွက်သောချည်, ထွက်သောအဖုတို့သည်လည်း၊ စီဝရေ- ကို၊ ရတ္တေ- ဆိုအပ်ပြီးသော်၊ ဒုဝိညေယျရူပါ- မသိအပ်သောသဘောရှိကုန်သည်၊ ဝါ-မထင်ရှားသော သဘောရှိကုန်သည်၊ (သမာနာ-ဖြစ်ကုန်လသော်၊) ဝဋ္ဋန္တိ - နှ်၏၊ ကဥ္စုကပိဠခလိအာဒီသု - ဆံပုန်းရည်, မုန့်ညက်ရည်, ကစည်ရည်အစရှိသည်တို့၌၊ စီဝရံ - ကို၊ ပက္ခိပိတုံ - ထည့်ခြင်းငှါ၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ [ သင်္ကန်းတောင့်တောင့်ကလေးနေအောင်မထည့်ရ- ဟူလို။] ပန- အနွယကား၊ စီဝရကမ္မကာလေ- သင်္ကန်းချုပ်မှုကို ပြုရာအခါ၌၊ ဟတ္ထမလ သူစိမလာဒီနံ- လက်အညစ်အကြေး, အပ် အညစ်အကြေး အစရှိသည်တို့ကို၊ မောဝနတ္ထံ- ဖွပ်ခြင်းအကျိုးငှါငှင်း၊ ကိလိဋ္ဌကာလေ – ညစ်နွမ်းရာအခါ၌၊ မောဝနတ္ထံစ - ငှါငှင်း၊

အဂ္ဃိယ ဂယ မုဂ္ဂရာဒီနိ။ ။ အဂ္ဃိယံနာမ–စေတိယသဏ္ဍာနေန ( အရင်းတုတ်အဖျားသေး) သိဗ္ဗနံ၊ မူလေ တနုကံ (အရင်းသေး) အဂ္ဂေ မဟန္တံ ( အဖျားတုတ် ) ကတွာ ဂဒါကာရေန သိဗ္ဗနံ ဂယာ၊ မူလေစ အဂ္ဂေစ ဧကသဒိသံကတွာ မုဂ္ဂရာကာရေန (ဝါးရင်းတုတ်သဏ္ဍာန်ဖြင့်) သိဗ္ဗနံ မုဂ္ဂရော။ ["ဆောက်ပုတ်"ဟု မပေးနှင့်။]

ကက္ကဋက္ခီနိ။ ။ဂဏ္ဌိကပတ္တ ပါသကပတ္တာနံ အန္တေ (အဆုံး၌) ပါဠိဗန္ဓံ ကတွာ (အစဉ်အတန်းအားဖြင့် ဖွဲ့စပ်အပ်သည်ကို ပြု၍ ) ကက္ကဋ္ဌာနံ အက္ခိသဏ္ဍာနံ ( ပုဇွန်မျက်စိသဏ္ဍာန်ရှိသော အပေါ်၌ ပြူး၍ထွက်နေသော အသီးကလေးကို) ဥဋ္ဌာပေန္တိ။

ကောဏသုတ္တပိဠကာ။ ။ဂဏ္ဌိကပါသကပတ္တာနံ ကောဏေဟိ နီဟတသုတ္တာနံ ကောဋိယော–ကမ္ပတ်သီး,ကမ္ပတ်ကွင်း အလွှာ (အိမ်တို့) ၏ အထောင့်တို့မှ ထုတ်အပ်သော ချည်မျှင် အစွန်းများ၊ ဧတိ တီသု ဂဏ္ဌိပဒေသု ဝုတ္တံ၊ ထို ချည်မျှင်များကို မထင်ရှားအောင် တကြိမ်(တပတ်) မျှ ထုံး၍သော်လည်း ထားပါ၊ သို့မဟုတ်-ထိုချည်မျှင်ကို ပြန်၍သော်လည်း ချုပ်ပါ၊ ခုဒ္ဒသိက္ခာဋီကာ၌ ကား " ကောဏသုတ္တ တခု, ပိဠက (အဖု) တခု"ခွဲ၍ ဆိုသည်၊ ထို နည်းအလို ပိဠကကို ဖြတ်၍ပစ်မှ မထင်ရှားဘဲ ရှိမည်။

ဝဋ္ဋတိ၊ ဂန္ဓဝါ-နံ့သာကိုငှင်း၊ လာခံဝါ-ချိပ်ရည်ကိုငှင်း၊ တေလံဝါ-ဆီကိုငှင်း၊ ရဇနေ-ဆိုးရည်၌၊ ပက္ခိပိတုံ- ငှါ၊ န ဝဋ္ဋတိ။ [သင်္ကန်း၌ မွှေးအောင်ငှင်း, နီနီရဲရဲရှိအောင်ငှင်း, အရောင်စိုအောင်ငှင်း ဆိုးရည်၌ နံ့သာစသည် မထည့်ရ။]

စီဝရံ–ကို၊ ရဇိတွာ–ဆိုးပြီး၍၊ သင်္ခေနဝါ – ခရုသင်းဖြင့်သော်ငှင်း၊ မဏိနာဝါ–မသာရဂလ် အစရှိသော ကျောက်ဖြင့်သော်ငှင်း၊ [ မဏိနာ–မသာရဂလ္လာဒိ ပါသာဏေန၊ ] ယေန ကေနစိ – အမှတ်မထား တပါးပါးသော ဝတ္ထုဖြင့်၊ န ဃဋ္ဋေတဗ္ဗံ–မပွတ်တိုက်ရာ၊ [ အရောင်ထွက်လာအောင် ခရုသင်း စသည်ဖြင့် မပွတ်တိုက်ရ၊ ] ဘူမိယံ – ၌၊ ဇာဏုကာနိ – ပုဆစ်ဒူးဝန်းတို့ကို၊ နိဟတွာ - ထောက်၍၊ ( တနည်း ) ဇာဏုကာနိ နိဟတွာ – ဒူးထောက်၍၊ ဟတ္ထေဟိ- တို့ဖြင့်၊ ဂဟေတွာ- ကိုင်၍၊ ဒေါဏိယမ္ပိ – ဆိုးရည်ကျင်း၌လည်း၊ န ဃံသိတဗ္ဗံ- မပုတ်ခတ်ရာ၊ ဝါ–မဆောင့်ရာ၊ [ သင်္ကန်း နာမည်စိုး၍ ထိုကဲ့သို့ ပြင်းထန်စွာ တဖြန်းဖြန်းမြည်အောင် မပုတ်ခတ်ရ။]ပန-အန္တယကား၊ ဒေါဏိယံဝါ-၌သော်ငှင်း၊ဖလကေဝါ-သင်္ကန်းဆိုးရာ ပျဉ်ချပ်၌သော်ငှင်း၊ထပေတွာ-၍၊ အန္တေ–အစွန်တို့ကို၊ ဂါဟာပေတွာ–တယောက်ယောက်ကို ကိုင်စေ၍၊ ဟတ္ထေဟိ–တို့ဖြင့်၊ ပဟရိတုံ–ငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ–၏၊ [ ဆိုးရည် အတွင်းဝင်အောင် ပုတ်ခတ်ခြင်းဖြစ်၍ ထိုပုတ်ခတ်ခြင်းငှါအပ်၏။ ]တမ္ပိ-ထိုပုတ်ခတ်ခြင်းကိုလည်း၊ မုဋ္ဌိနာ–လက်ဆုပ်ဖြင့်၊ နကာတဗ္ဗံ–မပြုရာ။

ပန – ဆက်၊ ပေါရာဏကတ္ထေရာ-ရှေး၌ဖြစ်သော ထေရ်တို့သည်၊ ဒေါဏိယမ္ပိ - ၌လည်း၊ န ထပေသုံ - မထားကြကုန်၊ [ ဒေါဏိနှင့် သင်္ကန်း ပွတ်မိဖန်များလျှင် သင်္ကန်းအသားနာမည်စိုး၍မထားကြကုန်၊] ဧကော- တပါးသည်၊ ဝါ–က၊ ဂဟေတွာ–ကိုင်၍၊ တိဋ္ဌတိ–၏၊ အပရော–အခြား တပါးသည်၊ ဝါ–က၊ ဟတ္ထေ–လက်တဖက်ပေါ်၌၊ ကတွာ–ပြု၍၊ ဝါ-ထား၍၊ ဟတ္ထေန-အခြား လက်တဖက်ဖြင့်၊ ပဟရတိ-ပုတ်၏၊ စီဝရဿ-၏၊ ကဏ္ဏသုတ္တကံ-သင်္ကန်းအနားချည်သည်၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ရဇိတကာလေ–ဆိုးအပ်ပြီးရာအခါ၌၊ ဆိန္ဒိတဗ္ဗံ–ဖြတ်ရာ၏၊ [ သင်္ကန်းအနား၌ တွဲလျား ကျနေသော ချည်စကို ဖြတ်ရမည်။ ] ပန-ဆက်၊ အနုဇာနာမိ ဘိက္ခဝေ ကဏ္ဏသုတ္တကန္တိ-ဟူ၍၊ ဧဝံ–သို့၊ ယံ(ကဏ္ဏသုတ္တကံ)–ကို၊ အနုညာတံ-ခွင့်ပြုတော်မူအပ်ပြီ၊ တံ-ထိုသင်္ကန်းအနားချည်ကို၊ ရဇနကာလေ – ဆိုးရာအခါ၌၊ လဂ္ဂနတ္ထာယ – ချိတ်ဆွဲထားခြင်း အကျိုးငှါ၊ အနုဝါတေ– အလျား၌၊ ပါသကံ– ကွင်းကို၊ ကတွာ- ပြု၍၊ ဗန္ဓိတဗ္ဗံ–ဖွဲ့ချည်ရာ၏၊ [ရဇနကာလေ ဗန္ဓိတဗ္ဗံ-ဆိုးတုန်းအခါ ဖွဲ့ချည်ရာ၏၊ သေသကာလေ(မဆိုးရာအခါ၌) မောစေတွာ ထပေတဗ္ဗံ (ဖြုတ်ထားရာ၏၊)] ဂဏ္ဌိကေပိ-ကမ္ပတ်သီး

၌လည်း၊ [ဒန္တမယာဒိ ဂဏ္ဌိကေ၊] သောဘာကရဏတ္ထံ-တင့်တယ်မှုကိုပြုခြင်း အကျိုးငှါ၊ လေခါဝါ-သည်ရင်း၊ ပိဠကာဝါ-အဖုသည်ရင်း၊ နဝဋ္ဋတိ၊ [ပိဠံ ပိဠံ ကတွာ ဥဋ္ဌာပေတဗ္ဗ ပိဠကာ – အပြောက် အပြောက် ထစေအပ်သော အဖုတို့၊] နာသေတွာ-ဖျက်ဆီးပြီး၍၊ ပရိဘုဉ္ဇိတဗ္ဗံ-(သက်န်းကို)သုံးစွဲရာ၏။

ပတ္တေဝါ-သပိတ်၌သော်ရင်း၊ထာလကေဝါ-ခွက်၌သော်ရင်း၊ အာရဂ္ဂေန-ဆောက်ဖျားဖြင့်၊ လေခံ - ကို၊ ကရောန္တိ - နှ်၏၊ အန္တောဝါ- အတွင်း၌ရင်း၊ ဗဟိဝါ-၌ရင်း၊ နဝဋ္ဋတိ၊မဏိဝဏ္ဏံ-မြညီအဆင်းရှိသည်ကို၊[ပြောင်လက်သော အဆင်းရှိသည်ကို၊]ကရိဿာမ-နှ်အံ့၊ ဇုတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ ပတ္တံ-ကို၊ဘမံ-ပွတ်သို့၊ အာရောပေတွာ-၍၊ မဇ္ဇိတွာ-ပွတ်တိုက်၍ (ပွတ်ခံ၍၊) ပစန္တိ-ဖုတ်ကြကုန်၏၊ နဝဋ္ဋတိ၊ ပန-အန္တယကား၊ တေလဝဏ္ဏော-ဆီကြည်အရောင် ညိုမှောင်သော အဆင်းရှိသော သပိတ်သည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ ပတ္တမဏ္ဍလေ-သပိတ်အောက်ခံအဝိုင်း၌၊ [ တိပုသီသာဒိ မယေ – ခဲဖြူ ခဲမည်း စသည်ဖြင့် ပြုအပ်သော၊ ပတ္တမဏ္ဍလေ၊ ယခုခေတ် သပိတ်ခြေပင်တည်း။ ] ဘိတ္တိကမ္မံ - နံရံ၌ အပြေအပြစ် ပြုမှုသည်၊ နဝဋ္ဋတိ၊ပန-အန္တယကား၊ မကရဒန္တကံ-မကရ်းသွားသဏ္ဍာန်သည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ [သပိတ်ခြေ၌ အရုပ်အမျိုးမျိုးနှင့် ပန်းပြောက် စသည်မပြုရ၊ သပိတ်လျှောမကျ အောင် အထက်အောက်၌ မကရ်းသွားသဏ္ဍာန် ( ခွေးသွားစိတ် ) ရှိသော သပိတ်ခြေကိုကား ပြုကောင်း၏။] ဓမကရဏ ဆတ္တကဿ – ဓမကရိဏ်၏ ထီးနှင့်တူသော အထက်ပိုင်း၏၊ ဥပရိဝါ–အထက်၌ရင်း၊ ဟေဋ္ဌာဝါ-၌ရင်း၊ ဓမကရဏကုစ္ဆိယံဝါ- ဓမကရိဏ်၏ဝမ်း၌ရင်း၊ လေခါ-အရေးအသားသည်၊ နဝဋ္ဋတိ၊ ပန-အန္တယကား၊ အဿ-ထို ဓမကရိဏ်၏၊ ဆတ္တမုခဝဋ္ဋိယံ–ထီး၏ မျက်နှာရစ်၌၊ လေခါ-သည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊

ကာယဗန္ဓနဿ–ခါးပန်းကြိုး၏၊ သောဘနတ္ထံ– တင့်တယ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ တဟိံ တဟိံ - ထိုထိုအရပ်၌၊ ဒိဂုဏံ – ၂ ထပ်သော၊ သုတ္တံ-ကို၊ ကောဋ္ဋေန္တိ–ခတ်ကြကုန်၏၊ ဝါ- ယက်ကြကုန်၏၊ [ရှေးက "ကျစ်ကြကုန်၏" ဟု ပေးကြ၏၊ ကြိုးကျစ်သလိုမဟုတ်၍ မသင့်၊ ] ကက္ကဋဇ္ဈိနိ - ပုဇွန်မျက်လုံးသဏ္ဍာန်တို့ကို၊

ဓမ၊ပေ၊ဆတ္တကဿ။ ။"ဓမတိ– မှုတ်၍၊ ကရောတိ – အသံပြုတတ်၏"နှင့် အညီ ပုဝါရေစစ် မဟုတ်သော လက်ဖြင့် အပေါ်အပေါက်ကို ပိတ်၍စစ်ရသော ရေစစ်ကို မှု–ဟု အသံပြုတတ်သောကြောင့် "ဓမကရဏ (ဓမကရိဏ်)"ဟု ခေါ်၏၊ ထို၏ အထက်ပိုင်း၌ ထီးသဏ္ဍာန်ရှိသော အရပ်ကို "ဆတ္တံဝိယာတိ ဆတ္တကံ" ဟု ပြု၍ "ဓမကရဏ ဆတ္တက" ဟု ခေါ်သည်၊ ထိုထီး၏ အထက်ထိပ်၌ရင်း, အောက်ဘက်၌ရင်း, ထီး၏ အောက်ကျသော ဝမ်းဘက်၌ရင်း လေခါမအပ်၊ ထို ထိပ်နှင့် အောက်ဘက်၏ အကြားရှိ ပတ်လည်အရပ်ကို "မုခဝဋ္ဋိ"ဟု ခေါ်၏၊ ထို၌ကား လေခါအပ်၏။

ဥဋ္ဌာပေန္တိ - ထစေကြကုန်၏၊ ဝါ - ပေါ်ထွက်စေကြကုန်၏၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ပန- အန္ဓယကား၊ ဥဘောသု-နှစ်သော၊ အန္တေသု-အစွန်တို့၌၊ [ခါးပန်းကြိုးပြား၏ အစွန်တို့၌။] ဒသာမုခသ္မ - အမြိတ်အဆာ၏ အရင်းပိုင်းအစ၏၊ ထိရဘာဝါယ-ခိုင်မြဲသည်၏အဖြစ်အကျိုးငှါ၊ ဒိဂုဏံ- ၂ ထပ်၊ ကောဋ္ဋေတုံ-ငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ၊ [ ခါးပန်းကြိုးအပြား၏ ဘေး၌ထွက်သော ၂ ကြိုးကို "ဒသာ" ဟု ခေါ်သည်၊ ထို ဒသာ၏အရင်းပိုင်းအစကို "ဒသာမုခ"ဟု ခေါ်သည်။] ပန-အန္ဓယကား၊ ဒသာမုခေ-အမြိတ်အဆာ၏ အရင်းပိုင်းအစ၌၊ ဃဋ္ဋကံဝါ-ဒိုးငယ်သဏ္ဌာန် မူလည်းဖြစ်သော၊ မကရမုခံဝါ - မကရ်းပါးစပ်သဏ္ဌာန် မူလည်းဖြစ်သော၊ ဒေဍုဘသီသံဝါ - ရေမြွေ၏ ဦးခေါင်းသဏ္ဌာန်မူလည်းဖြစ်သော၊ ယံကိဉ္စိ- သော၊ ဝိကာရရူပံ-ထူးခြားစွာပြုအပ်သော အရုပ်ကို၊ ကာတုံ-ငှါ၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ တတ္ထ တတ္ထ- ခါးပန်းကြိုး၏ ထိုထိုအရပ်၌၊ အစ္ဆိနိ - ဆင့်မျက်စိသဏ္ဌာန်တို့ကို၊ ဒဿေတွာ - ပြ၍၎င်း၊ [ အစ္ဆိနိတိ- ကုဉ္စရစ္ဆိသဏ္ဌာနာနိ၊ ပုဇွန့်မျက်စိသည် အပေါ်၌ ပြူးထွက်၏၊ ဆင့်မျက်စိကား အတွင်းဝင်နေသည်။ ] မာလာကမ္မ လတာကမ္မာဒိနိ- ပန်းပြောက်ပြုမှု,နွယ်ကြောင်းပြုမှုအစရှိသည်တို့ကို၊ ကတွာ ဝါ-၍၎င်း၊ ကောန္ဋိတကာယ ဗန္ဓနမ္ပိ-ခတ်အပ်သောခါးပန်းကြိုးသည်လည်း၊ န ဝဋ္ဋတိ။

ပန-အန္ဓယကား၊ ဥဇုကမေဝ-ဖြောင့်သည်သာလျှင်ဖြစ်သော၊ (တန်းတန်း သာလျှင်ဖြစ်သော၊ ) မစ္ဆကဏ္ဋကံဝါ - ငါးရိုးသဏ္ဌာန်ကို သော်၎င်း၊ ခဇ္ဇူရိ ပတ္တကံဝါ - သင်ပေါင်းရွက်သဏ္ဌာန်ကိုသော်၎င်း၊ မဋ္ဌပဋ္ဋကံဝါ- ချောသော အပြားကိုသော်၎င်း၊ ကတွာ- ၍၊ ကောန္ဋိတုံ-ငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ၊ ကာယဗန္ဓနဿ- ၏၊ ဒသာ-အမြိတ်အဆာသည်၊ ဧကာ-တချောင်းသည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ ဒွေ- ၂ ချောင်း တို့သည်၎င်း၊ တိဿော-၎င်း၊ စတဿောပိ-၄ ချောင်းတို့သည်၎င်း၊ ဝဋ္ဋန္တိ၊ [အဆာ ကြိုးသည် ၄ ချောင်းအထိ အပ်၏-ဟူလို။] တတော-ထို ၄ ချောင်းထက်၊ ပရံ- အလွန်၊ န ဝဋ္ဋန္တိ၊ [ဒသာကိုငဲ့၍"နဝဋ္ဋတိ"ဟု ရှိလျှင် ကောင်းသည်။]ရဇ္ဇုက ကာယဗန္ဓနံ-ကြိုး ခါးပန်းကြိုးသည်၊ ဧကမေဝ-ကြိုးတချောင်းတည်းသာလျှင်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ ပန—ဆက်၊ ပါမင်္ဂသဏ္ဌာနံ-ဆောက်လုံးသဏ္ဌာန်ကြိုးသည်၊ ဧကမ္ပိ- တချောင်းသည်လည်း၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ဒသာပန-သည်ကား၊ ပါမင်္ဂသဏ္ဌာနာပိ- ဆောက်လုံးသဏ္ဌာန်ရှိသော အဆာသည်လည်း၊ ဝဋ္ဋတိ၊ ဗဟုရဇ္ဇုကေ - များစွာသောကြိုးငယ်တို့ကို၊ ဧကတော-တပေါင်းတည်း၊ ကတွာ-၍၊ ဧကေန- ကြိုးတချောင်းဖြင့်၊ နိရန္တရံ-အကြားမရှိအောင်၊ ဝေဌေတွာ-ရစ်ပတ်၍၊ ကတံ- ပြုအပ်သော ခါးပန်းကြိုးကို၊ ဗဟုရဇ္ဇုကန္တိ-ဟူ၍၊ နဝတ္တဗ္ဗံ-မဆိုထိုက်၊ တံ-ထို

ခါးပန် ကြီးသည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ [ ကြီးတချောင်းတည်းဖြင့် အပေါ်က ရစ်ပတ်၍ ထားသောကြောင့်"အမျှား"ဟု မဆိုထိုက်-ဟူလို ]ကာယဗန္ဓနဝိဓေ-ခါးပန်း ဗိ၌၊ ဝါ-ခါးပန်းသီး၌၊ အဋ္ဌမင်္ဂလာဒိကံ-ရှစ်ပါးသောမင်္ဂလာရုပ်အစရှိသော၊ ယံ ကိဉ္စိ–သော၊ ဝိကာရရူပံ- ထူးခြားစွာ ပြုအပ်သောအရုပ်သည်၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ပရိစ္ဆေဒလေခါမတ္တံ- အပိုင်းအခြား အရေးမျှသည်၊ ဝဋ္ဋတိ-၏၊ [ ဥဘောသု ကောဋီသု ကတ္တဗ္ဗပရိစ္ဆေဒရာဇိကမတ္တံ – ခါးပန်းသီး၏ ၂ ဘက် အစွန်းတို့၌ ပြုထိုက်သောအရေးမျှ ] ဝိဓကေသု– ခါးပန်းဗိ၏၊ ဝါ- ခါးပန်းသီး၏၊ ဥဘောသု- ၂ ဘက်ကုန်သော၊ အန္တေသု - တို့၌၊ ထိရကရဏတ္ထာယ – ခိုင်မြဲအောင် ပြုခြင်းအကျိုးငှါ၊ ယမကံ-အိုးငယ်သဏ္ဌာန်ကို၊ ကရောန္တိ၊ အယမ္ပိ-၍ အိုးငယ် သဏ္ဌာန် ပြုခြင်းသည်လည်း၊ ဝဋ္ဋတိ။

အဥ္ဇနိယံ-မျက်စဉ်းကျည်၌၊ [မျက်စဉ်း ထည့်ရန် ဗူး၌–ဟူလို၊] ဣတ္ထိပုရိသ စတုပ္ပဒ သကုနရူပံဝါ – မိန်းမရုပ်, ယောကျ်ားရုပ်, အခြေ ၄ ချောင်းရှိသော သားကောင်ရုပ်, ငှက်ရုပ်မှုလည်းဖြစ်သော၊ မာလာကမ္မ ၊ ပေ ၊ ဘေဒံဝါ– ပြုအပ်သော ပန်းပြောက်, ပြုအပ်သော နွယ်ချောင်း , မကရ်းသွားသဏ္ဌာန်, နွားကျင်ငယ်ကောက်သဏ္ဌာန် , လ ထက်ဝက်သဏ္ဌာန်အစရှိသော အပြား ရှိသည် မှုလည်းဖြစ်သော၊ ဝိကာရရူပံ – သည်၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ဃံသိတွာဝါ - ပွတ်ဖျက်၍သော်၎င်း၊ ဆိန္ဒိတွာဝါ-ဖြတ်တောက်၍သော်၎င်း၊ ယထာ-အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့် ရစ်အပ်သော်၊ န ပညာယတိ– မထင်ရှား၊ တထာ–ထို မထင်ရှား နိုင်လောက်အောင်သော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ သုတ္တေန - ဖြင့်၊ ဝေဌေတွာဝါ - ရစ်ပတ်၍သော်၎င်း၊ ဝဠဇ္ဇေတဗ္ဗာ – သုံးစွဲထိုက်၏၊ [ အချို့ စာအုပ်၌ "ဝဋ္ဋဇ္ဇေတဗ္ဗော" ဟု ရှိ၏၊ အဥ္ဇနီထောက်၍ ဣတ္ထိလိင်သာကောင်း သည်။] ဥဇုကမေဝ - ဖြောင့်စွာသာလျှင်၊ [ဝဋ္ဋတိ – ၌ ကြိယာဝိသေသနစပ်၊ တချို့စာ၌"ဥဇုကာ ယေဝ– ဖြောင့်စွာသာလျှင်ဖြစ်သော"ဟု ရှိ၏၊ အဥ္ဇနီ-

**ကာယဗန္ဓန ဝိဓေ။** ။ခါးပန်းသီးကို "ဝိဓ"ဟု ခေါ်သည်၊ အလယ်၌ အပေါက် ဖေါက်အပ်သောကြောင့် "ဝိဇ္ဈတေတိ ဝိဓော"ဟု ပြု၊ ပါသန္တေ ဒသာမူလေ ( ကွင်း ဟူသော အဆုံးအရပ်,အမြိတ်ကြိုး၏ အရင်းအရပ်၌) တဿ ထိရဘာဝတ္ထံ (ထို ခါးပန်း ကြိုးခိုင်အောင် ) ကတ္တဗ္ဗေ ဒန္တဝိသာဏာဒိ မယေ။ [ ယခု အခါ၌ ဒသာမူလဝယ် ခါးပန်းသီး မတပ်ကြတော့။]

**အဋ္ဌမင်္ဂလာဒိကံ။** ။သင်္ခ,စက္က (လှည်းဘီး) , ပုဏ္ဏကုမ္ဘ (ရေပြည့်အိုး) , ဂယာ (ချွန်းဖြောင့်) , သိရိဝစ္ဆ (အသရေရှိ နွားငယ်) , အင်္ကုသ ( ချွန်းကောက် ) , ဓဇ, သောဝတ္တိက (လည်ရေး ၃ ဆင့်)၊ ဤရှစ်ပါးကို"အဋ္ဌမင်္ဂလ"ဟု ခေါ်သည်။

၌ တုလျာမိကရဏာဝိသေသနစပ်၊] စတုရံသာဝါ- ၄ မြောင့်ရှိသည် မူလည်း ဖြစ်သော၊ပေ၊ အဍ္ဍုနိ – မျက်စဉ်းကျည်သည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ အဿာ - ထို မျက်စဉ်း ကျည်၏၊ ဟေဋ္ဌတောပိ-အောက်၌လည်း၊ ဒွေဝါ – ၂ခုသော်လည်း ဖြစ်ကုန် သော၊ တိသောဝါ - နှိသော၊ ဝဋ္ဋလေခါယော – လုံးသော အရေးတို့သည်၊ ဝဋ္ဋန္တိ၊ အဿာ-ထိုမျက်စဉ်းကျည်၏၊ ဂီဝါယမ္ပိ-လည်ပင်း၌လည်း၊ ပိဓာနက ဗန္ဓနတ္ထံ - ဖုံးပိတ်ကိုဖွဲ့ချည်ခြင်း အကျိုးငှါ၊ ကော-သော၊ ဝဋ္ဋလေခါ - သည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ အဍ္ဍုနိသလာကာယပိ – မျက်စဉ်းတံ၌လည်း၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌကမ္မံ- အဆင်း ၏ ပြေပြစ်ညက်သော ချောမောအောင် ပြုမှုသည်၊ နဝဋ္ဋတိ၊ အဍ္ဍုနိထဝိကာ ယမ္ပိ–မျက်စဉ်းကျည်အိတ်၌လည်း၊ ယံ ကိဉ္စိ– သော၊ နာနာဝဏ္ဏေန–အမျိုး မျိုးသော အဆင်းရှိသော၊ သုတ္တေန - ဖြင့်၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌကမ္မံ – သည်၊ နဝဋ္ဋတိ၊ ကုဉ္စိကာ ကောသကေပိ- သံကောက်အိတ်၌လည်း၊ ဧသေဝနယော–ဤနည်း ပင်တည်း၊ ကုဉ္စိကာယ - သံကောက်၌၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌကမ္မံ-သည်၊နဝဋ္ဋတိ၊ သိပါတိ ကာယံ- ပဲခွပ်စသော ဘဏ္ဍာထည့်ရာအိတ်၌၊ တထာ - ထို့အတူတည်း၊ ပန- ဆက်၊ တွေ – ဤအိတ်တို့တွင်၊ ယေနကေနစိ - သော၊ ဧကဝဏ္ဏသုတ္တေန – တမျိုးသောအဆင်းရှိသောချည်ဖြင့်၊ ယံကိဉ္စိ-အမှတ်မထား တပါးပါးသော အိတ်ကို၊ သိဗ္ဗိတုံ-ငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ။

အာရကဏ္ဋကေပိ – ပေ စသည်ကို ပြုပြင်ခြင်းငှါ ဥုးချွန်းဒါးငယ်၌လည်း၊ [ပေါတ္ထကာဒိအဘိသင်္ခရဏတ္ထံ ကတေ ဒီဃမုခသတ္ထကေ။] ဝဋ္ဋမဏိကံဝါ - ရွဲလုံးသဏ္ဍာန်မူလည်းဖြစ်သော၊ [ဝဋ္ဋံဝ ကတ္တာ အဂ္ဂကောဋိယံ ဥဋ္ဌာပေတဗ္ဗ ပုပ္ဖုဠံ။]အညံဝါ–မူလည်းဖြစ်သော၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌံ-ပြေပြစ်သောပုံသဏ္ဍာန်သည်၊ နဝဋ္ဋတိ၊ ပန – အန္တယကား၊ ဂီဝါယံ- ၌၊ ပရိစ္ဆေဒလေခါ–သည်၊ ဝဋ္ဋတိ- ၏၊ ပိပ္ဖလိကေပိ – တစုံတခုကိုဖြတ်ကြောင်း ဒါးငယ် ၌လည်း၊ မဏိကံဝါ – ရွဲလုံးသဏ္ဍာန်မူလည်း ဖြစ်သော၊ [ ကော ဝဋ္ဋမဏိ (ရွဲလုံး)၊ ] ပိဠကံဝါ– အဖုမူလည်းဖြစ်သော၊ ယံ ကိဉ္စိ – အမှတ်မထား တပါးပါးသောပုံ သဏ္ဍာန် ကို၊ [ သာသပမတ္တိကာ မုတ္တရာဇိသဒိသာ ဗဟုဝဋ္ဋလေခါ(မုံညင်းစေ့ပမာဏ ရှိ၍ ပုလဲအရေးနှင့် တူသော များစွာသော လုံးသော အရေး။] ဥဋ္ဌာပေတုံ- ထစေခြင်းငှါ၊ ဝါ – ထင်စေခြင်းငှါ၊ နဝဋ္ဋတိ၊ ပန – ဆက်၊ ဒဏ္ဍကေ- မျက်စဉ်းဒုတ်တံ၌၊ ပရိစ္ဆေဒလေခါ- သည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ နခစ္ဆေဒနံ–လက်သည်း ဖြတ်ကြောင်းဒါးကို၊ ဝါ–လက်သည်းလှည်းဒါးကို၊ ဝလိတကံယေဝ–အတွန့် ရှိသည်ကိုသာလျှင်၊ [ မဇ္ဈေ ဝလိံ ဥဋ္ဌာပေတွာ၊ ] ကရောန္တိ – ပြုကြကုန်၏၊ တသ္မာ, တံ- ထို အတွန့်ရှိသောဒါးငယ်သည်၊ ဝဋ္ဋတိ–၏။

ဥတ္တရာရဏိယံ ဝါ အပေါ်ပွတ်ကျည်၌၎င်း၊ အဓရာရဏိယံ ဝါ-အောက်ပွတ်ခုံ၌၎င်း၊ အရဏိဓနုကေ ဝါ-ပွတ်နှိပ်လေးငယ်၌၎င်း၊ ဥပရိပေလ္လနဒဏ္ဍကေ ဝါ - အထက်၌ နှိပ်ကြောင်းဒုတ်၌၎င်း၊ မာလာကမ္မာဒိကံ - ပြုအပ်သော ပန်းပြောက်အစရှိသော၊ ယံကိဉ္စိ-သော၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌံ-ပြေပြစ်ညက်ညောသောပုံ သဏ္ဌာန်သည်၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ပေလ္လနဒဏ္ဍကဿ-နှိပ်ကြောင်းဒုတ်၏၊ ဝေမဇ္ဈေ-အလယ်၌၊ မဏ္ဍလံ- အပေါက်ဝိုင်းသည်၊ ဟောတိ- ရှိ၏၊ [ ဥတ္တရာရဏိယာ-ကို၊ ပဝေသနတ္ထံ အာဟတမဏ္ဍလံ ( ဖေါက်အပ်သော အပေါက်ဝိုင်း )၊ ] တတ္ထ - ထို အပေါက်ဝိုင်း၌၊ ပရိစ္ဆေဒလေခါမတ္တံ – အပိုင်းအခြား အရေးမျှသည်၊ ဝဋ္ဋတိ–၏၊ သူစိသဏ္ဌာသံ - အပ်ညှပ်ကို၊ ကရောန္တိ၊ ယေန- အကြင် အပ်ညှပ်ဖြင့်၊ သူစိံ - ကို၊ ဥံသာပေတွာ - ကိုက်စေ၍၊ ဝါ – ညှပ်၍၊ ဃံသန္တိ-ပွတ်ကြကုန်၏၊ [ သံချေးတက်နေသည်ကို ပွတ်ကုန်၏] တတ္ထ - ထို အပ်ညှပ်၌၊ မကရမုခါဒိကံ - မကရ်းနှုတ်ခမ်း သဏ္ဌာန်အစရှိသော၊ ယံ ကိဉ္စိ, ဝဏ္ဏမဋ္ဌံ – သည်၊ န ဝဋ္ဋတိ၊ ပန- အနွယကား၊ သူစိဥံသနတ္ထံ–အပ်ကို ကိုက်ခြင်းအကျိုး ငှါ၊ မုခမတ္တံ - ပါးစပ်မျှသည် ၊ဟောတိ၊ တံ – ထိုပါးစပ်မျှသည်၊ ဝဋ္ဋတိ၊ ဒန္တကဋ္ဌစ္ဆေဒနဝါသိယမ္ပိ- ဒန်ပူဖြတ်ကြောင်း ဒါးငယ်၌လည်း၊ [''ဝါသိ-ပဲခွပ်'' ဟု ပေးလေ့ရှိသော်လည်း ထောမနိမိ၌ '' ကုဌာရဘေဒ - ဒါးအထူး'' ဟု ဖွင့်၏၊ ]ယံကိဉ္စိ-သော၊ပေါဥဇုကမေဝ- ဖြောင့်စွာသာလျှင်၊ ကပ္ပိယလောဟေန-အပ်သောကြေးနီဖြင့်၊[''ကပ္ပိယ''ပုဒ် ပါသောကြောင့် သံဘဏ္ဍာ၌ အပ်-မအပ် စဉ်းစားဘို့မလို၊ ကြေးဘဏ္ဍာအတွက်သာစဉ်းစားဘို့ရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် ''ကြေးနီ''ဟု ပေးသည်၊ ]ဥဘောသု- ၂ဘက်ကုန်သော၊ ပဿေသုဝါ-နံ့ဘေး တို့၌သော်၎င်း၊ ( ကေပဿေဝါ– နံ့ဘေးတဖက်၌သော်၎င်း၊ ) စတုရံသံဝါ-၄ထောင့်ကိုသော်၎င်း၊ အဋ္ဌံသံဝါ–၎င်း၊ ဗန္ဓိတုံ-ဖွဲ့တုပ်ခြင်းငှါ၊ ဝဋ္ဋတိ။

ကတ္တရဒဏ္ဍေပိ - တောင်ဝှေး၌လည်း၊ပေ၊ ဟေဋ္ဌာ - ၌၊ ဧကာဝါ - တခုသော်လည်းဖြစ်သော၊ ဒွေဝါ–ကုန်သော၊ ဝဋ္ဋလေခါ-လုံးသော အရေးတို့ သည်၎င်း၊ ဥပရိ- အထက်၌၊ အဟိစ္ဆတ္တကမကုဠမတ္တ-မှိုငုံသဏ္ဌာန်မျှသည် ၎င်း၊ ဝဋ္ဋတိ၊ [ကတ္တရယဋ္ဌိကောဋိယံ ကတအယောဝလယာနိပိ-ပြုအပ်သော သံကွင်းတို့သည်လည်း၊ ဝဋ္ဋန္တိ၊ ဟု ဋီကာအပိုဆိုသည်။] တေလဘာဇနေသု-

ဥဘောသုဝါ ပဿေသု။ ။ကေပဿေဝါတိ ဝစနသေသော၊ ဥဘောသုဝါဟု ဝါပါသောကြောင့် ထို ဝါဖြင့် ဧကပဿေဝါ ဟု ဆည်းပါ – ဟူလို၊ ဝါသိဒဏ္ဍဿ ဥဘောသု ကောဋီသု ( ၂ ဘက် အစွန်းတို့၌ ) ဒဏ္ဍကောဋိနံ အစလနတ္ထံ ဗန္ဓိတုံတိ အတ္ထော၊ (ဝိမတိ)။

ဆီအိုး ဆီဗူးဘို့တွင်၊ ဝိသာဏော ဝါ–သားချိုဆီဗူး၌ငှင်း၊ နာဠိယံ ဝါ–ဆီကျည်တောက်၌ငှင်း၊ အလာဗုကေ ဝါ- ဗူးသီး ဆီဗူး၌ငှင်း၊ အာမဏ္ဍသာရကေ ဝါ-ရှစ်ရှားသီးမှုန့်ဖြင့် ပြုအပ်သော ဆီဗူး၌ငှင်း၊ [အာမလကာနိ ပိသိတွာ တေန ကက္ကေန ( ထိုရှစ်ရှားစေ့ အမှုန့်ဖြင့်) ကတဘာဇနေ၊ ထိုဗူး၌ ဆီထည့်ထားလျှင် မြေမြရှိ၏၊ (ဝိမတိ)၊ ] ဌတ္တိရူပံ- ကိုငှင်း၊ ပုရိသရူပဋ္ဌ-ကိုငှင်း၊ ထပေတွာ - ၍၊ အဝသေသံ – သော၊ သဗ္ဗမ္ပိ – သော၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌကမ္မံ – ပြေပြစ်ညက်ညောအောင်ပြုအပ်သော ပုံသဏ္ဌာန်သည်၊ ဝဋ္ဋတိ။

မဉ္စပီဌေ-ညောင်စောင်း အင်းပျဉ်ငှင်း၊ [ဌတိ-၌စပ်၊] ဘိသိဗိမ္ဗောဟနေ-ဘုံလျို, ခေါင်းအုံးငှင်း၊ ဘူမတ္ထရဏေ–မြေအခင်းငှင်း၊ ပါဒပုဉ္ဆနေ–ခြေသုတ်ပုဝါငှင်း၊ စက်မန ဘိသိယာ - စကြိုလမ်း၌ ခင်းအပ်သော ဘုံလျိုငှင်း၊ သမ္မုဉ္စနိယံ-တံမြက်စည်းငှင်း၊ ကစဝရ ဆဍ္ဍနကေ-အမှိုက်စွန့်ကြောင်း တောင်းငှင်း၊ ရဇနဒေါဏိကာယ–ဆိုးရည်ထည့်ရာ ဇလားငှင်း၊ ပါနီယဉဠုင္ကေ-သောက်ရေမှုတ်ငှင်း၊ ပါနီယဃဋေ – သောက်ရေအိုးငှင်း၊ [ " ပါနီယဃဋေ " ပါဠ်ဖြင့် "ကုဏ္ဍိက သရကေပိ(ရေကယားခရတကောင်းဟူသောအိုးငယ်တို့ကိုလည်း၊) သင်္ဂဟာတိ၊ ] ပါဒကထလိကာယ– ခြေပွတ်အိုးခြမ်းငှင်း၊ ဖလက ပီဌကေ– ပျဉ်ချပ် အင်းပျဉ်ငှင်း၊ ဝလယာဓာရကေ – လက်ကောက် သပိတ်ခြေငှင်း၊ ဒဏ္ဍာဓာရကေ – လှန်တံ သပိတ်ခြေငှင်း၊ ပတ္တာပိဓာနေ – သပိတ်ဖုံး ငှင်း၊ တာလဝဏ္ဋေ-ထန်းရွက်ယပ်ဝန်းငှင်း၊ ဗီဇနေ-၄ ထောင့်ယပ်ငှင်း၊[ဗီဇနေတိ-စတုရဿဗီဇနေ၊ ရဿသဒ္ဒါ အထောင့်ဟော၊ ] ဌတိ – ၍သို့၊ ဧတေသု-၍ ဘဏ္ဍာတို့၌၊ သမ္ဗံ-သော၊ မာလာကမ္မာဒိ ဝဏ္ဏမဋ္ဌကမ္မံ-ပန်းပြောက်အစရှိသော အပြေအပြစ် ပြုအပ်သောပုံသဏ္ဌာန်သည်၊ ဝဋ္ဋတိ။

ပန – ကား၊ သေနာသနေ – ၌၊ ဒွါရကဝါဋ္ဌ ဝါတပါန ကဝါဋ္ဌာဒိသု–တံခါးမ တံခါးရွက်, လေသောက်ပြူတင်း တံခါးရွက် အစရှိသည်တို့၌၊ သဗ္ဗ ရတနမယံ–အလုံးစုံရတနာတို့ဖြင့် ပြုအပ်သည်၊ ( သမာနံ ) ပိ - သော်လည်း၊ ဝဏ္ဏမဋ္ဌကမ္မံ ဝဋ္ဋတိ၊ သေနာသနေ- ၌၊ ဝိရုဒ္ဓသေနာသနာ - ဆန့်ကျင်ဘက်ကျောင်းကို၊ အညတြ-၍၊ ကိဉ္စိ-သော၊ ပဋိသေဓေတဗ္ဗံ - တားမြစ်ဘွယ်သည်၊

ဘူမတ္ထရဏေ။ ။စိတ္တကဋသာရက စိတ္တတ္ထရဏာဒိကေ-ဆန်းကြယ်သော သင်ဖြူး, ဆန်းကြယ်သော အခင်းအစရှိသော၊ ပရိကမ္မကတာယ ဘူမိယာ–အပြေအပြစ်အချောပြုအပ်သော (အင်္ဂတေစသည် ကိုင်ထားသော) မြေပေါ်၌၊ အတ္ထရိတဗ္ဗအတ္ထရဏေ–ခင်းစရာ အခင်း၌၊ ဤ ဋီကာဖွင့်ကို ထောက်၍ "ဘူမိ"အရ အချော ပြုပြင်ထားသော မြေကို ယူ၊ ကြမ်းပြင်ပေါ်၌ ခင်းစရာ အခင်းများလည်း ဘူမတ္ထရဏာပင် မည်၏။

နတ္တိ၊ အညေသံ-အခြားရဟန်းတို့၏၊ သီမာယ–မဟာသိမ်၌၊ ရာဇဝလ္လဘေဟိ-မင်း၏ အကျွမ်းဝင် ဖြစ်ကုန်သော အလဇ္ဇီရဟန်းတို့သည်၊ ကတသေနာသနံ-ကို၊ ဝိရုဒ္ဓသေနာသနံ နာမ - ဆန့်ကျင်ဘက် ကျောင်းမည်၏ ဟူ၍ ဝုစ္စတိ၊ တသ္မာ, ယေ–အကြင် အလဇ္ဇီရဟန်းတို့သည်၊ တာဒိသံ- သော၊ သေနာသနံ-ကို၊ ကရောန္တိ- နိ၏၊ တေ– တို့ကို၊ ဝတ္တဗ္ဗာ၊ ( ကိံ )၊ အမှာကံ– တပည့်တော်တို့၏၊ သီမာယ– ၌၊ သေနာ သနံ မာကရောထ၊ ဣတိ ( ဝတ္တဗ္ဗာ )၊ အနာဒိယိတွာ-စကားကို မနာယူမူ၍၊ ကရောန္တိယေဝ–ပြုမြဲ ပြုကုန်အံ့၊ (ဧဝံ သတိ)၊ ပုနပိ ဝတ္တဗ္ဗာ၊(ကိံ)၊ ဧဝံ–သို့၊ မာ အကတ္ထ–မပြုပါကုန်လင့်၊ အမှာကံ- တို့၏၊ ဥပေါသထပဝါရဏာနံ-ဥပုသ်ပဝါရဏာတို့၏၊ အန္တရာယံ-ကို၊ မာအကတ္ထ၊ သာမဂ္ဂိံ–သံဃာ၏ ညီညွတ်မှုကို၊ မာဘိန္ဒိတ္ထ–မဖျက်ဆီးပါကုန်လင့်၊ တုမှာကံ-တို့၏၊ သေနာသနံ–သည်၊ ဝါ–ကို၊ ကတံ-ပြုအပ်ပြီးသည်၊(သမာနံ)ပိ၊ ကတဋ္ဌာနေ–ပြုအပ်ပြီး အရာ၌၊(ပြုထားသည့်အတိုင်း)၊ န ဌဿတိ-တည်လိမ့်မည် မဟုတ်ပါ၊ ဣတိ (ဝတ္တဗ္ဗာ)၊ ဗလက္ကာရေန – အားကို အသုံးပြုသဖြင့်၊ ဝါ – အနိုင်အထက်၊ သစေ ကရောန္တိယေဝ - ကုန်အံ့၊ ( ဧဝံ သတိ )၊ ယဒါ - ၌၊ တေသံ-ထိုကျောင်းရှင် ရဟန်းတို့၏၊ လဇ္ဇိပရိသာ- လဇ္ဇီပရိသတ်သည်၊ ဉဿန္နာ–များလာသည်၊ ဟောတိ၊ စ-များလာရုံသာ မကသေး၊ ဓမ္မိကော–တရားရှိသော၊ ဝိနိစ္ဆယော-အဆုံးအဖြတ်သည်၊ ဝါ-ကို၊ လဒ္ဓုံ- ၄ါ၊ သက္ကာ–တတ်ကောင်းသည်၊ ဟောတိ၊ တဒါ-၌၊ တေသံ–ထို ရဟန်းတို့၏ အထံသို့၊ ပေသေတဗ္ဗံ-စေလွှတ်ရာ၏.(ကိံ-အဘယ်သို့မှာ၍စေလွှတ်ရာသနည်း၊)တုမှာကံ-တို့၏၊ အာဝါသံ-ကျောင်းကို၊ ဟရထ– ဆောင်လှည့်ကြပါကုန်၊ ဣတိ– ဤသို့မှာ၍၊ ( ပေသေတဗ္ဗံ )၊ ယာဝတတိယံ - အောင်၊ ပေသိတေ - စေလွှတ်အပ်သော်၊ သစေ ဟရန္တိ၊(ဧဝံ သတိ)၊ သာဓု-ကောင်း၏၊ နောစေ ဟရန္တိ၊(ဧဝံ သတိ)၊ ဗောဓိဉ္စ- ဗောဓိပင်ကိုငှင်း၊ စေတိယဉ္စ - ကိုငှင်း၊ ထပေတွာ – ထား၍၊ အဝသေသ သေနာသနာနိ- ကြွင်းသော ကျောင်းတို့ကို၊ ဘိန္ဒိတဗ္ဗာနိ - ဖျက်ထိုက်ကုန်၏၊စခေါ်-ထိုသို့ပင်ဖျက်နိုင်ပါသော်လည်း၊အပရိဘောဂံ-သုံးဆောင်ဘွယ် မဟုတ်သည်ကို၊ ဝါ-သုံးမဖြစ်အောင်၊ ကရောန္တေဟိ-ပြုကုန်လျက်၊ နော(ဘိန္ဒိတဗ္ဗာနိ)- မဖျက်ထိုက်ကုန်၊ ပန- အန္တယကား၊ ပဋိပါဋိယာ - အစဉ်အားဖြင့်၊

ရာဇဝလ္လဘေဟိ။ ။ပရနိကာယိကာပိ(ဂိုဏ်းတပါးသားလည်း ဖြစ်ကုန်သော) ဧကနိကာယိကာပိ ( ဂိုဏ်းတူသားလည်း ဖြစ်ကုန်သော ) ဥပေါသထပဝါရဏာနံ အန္တရာယကရာ အလဇ္ဇိနော ရာဇကုလူပဂါဝုစ္စန္တိ။ [ဝိမတိ၌ "ဧကနိကာယိက"မပါ၊ "ဘိန္နလဒ္ဓိက–အယူမတူသူ"ဟု ဆို၏။]

ဆဒန ဂေါပါနသီ ဇုဋ္ဌကာဒိနိ-အမိုး, အခြင် ယနယ်, အုဋ္ဌ် အစရှိသည်တို့ကို၊ အပနေတွာ-ဖယ်ရှား၍၊ တေသံ-ထို အလဇ္ဇီ ရဟန်းတို့၏(အထံသို့)၊ ပေသေတမ္ပိ၊(ကိ )၊ တုမှာကံ- တို့၏၊ ဒမ္ဗသမ္ဘာရေ- သစ် ဝါး အစရှိသော အဆောံ အဉုံးတို့ကို၊ ဟရထ-ဆောင်လှည့်ကြကုန်၊ ဣတိ-၍သို့ မှာ၍၊ (ပေသေတမ္ပိ၊) သစေ ဟရန္တိ၊ (ဝေံသတိ)၊ သာဓု- ကောင်း၏၊ နောစေ ဟရန္တိ၊ အထ- ထိုသို့ မဆောင်ယူကုန်လသော်၊ တေသု ဒမ္ဗသမ္ဘာရေသု – ထို သစ် ဝါး စသော အဆောက် အဉုံးတို့ကို၊ ဝါ-တို့သည်၊ ဟိမဝဿဝါတာတပါဒိဟိ- ဆီးနှင်း, မိုယ်း, လေ, နေပူ အစရှိသည်တို့ကြောင့်၊ ပူတိဘူတေသုဝါ – ပုတ်ကုန်သည် ဖြစ်၍ဖြစ်ကုန်သော်ငင်း၊ စောရေဟိ- တို့သည်၊ ဟတေသုဝါ- ဆောင်အပ်ကုန် သော်ငင်း၊ အဂ္ဂိနာ–သည်၊ ဒဍ္ဎေသုဝါ-လောင်အပ်ကုန်သော်ငင်း၊ သီမဿာမိ ကာ-သိမ့်ရှင် ဖြစ်ကုန်သော၊ ဘိက္ခူ-တို့သည်၊ အနုပဝဇ္ဇာ- ကဲ့ရဲ့ထိုက်သော အပြစ် မရှိကုန်၊ တုမှေဟိ- တို့သည်၊ အမှာကံ–ငါတို့၏၊ ဒမ္ဗသမ္ဘာရာ- တို့ကို၊ နာသိတာ-ဖျက်ဆီးအပ်ကုန်ပြီ၊ ဣတိဝါ-၍သို့သော်ငင်း၊ တုမှာကံ-သင်တို့၏၊ ဂီဝါ-ဘဏ္ဍာစားသည်၊(ဟောတိ)၊ဣတိဝါ-ငင်း၊ စောဒေတုံ-ငှါ၊ န လဗ္ဘာ- မရအပ်ကုန်၊ ပန-ဆက်၊ သီမဿာမိကေဟိ–န်သော၊ ဘိက္ခူဟိ-တို့သည်၊ ယံ- အကြင် ဖျက်မှုကို၊ ကတံ – ပြုအပ်ပြီ၊ တံ – ထို ဖျက်မှုသည်၊ သုကတမေဝ – ကောင်းစွာ ပြုအပ်သည်သာ၊ ဟောတိ၊ ဣတိ (အယံ) –၍ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ (ပါဠိမုတ္တကော – သော၊ ကပ္ပိယာ ကပ္ပိယ ပရိက္ခာရဝိနိစ္ဆယော - တည်း။) ပါဠိမုတ္တက ဝိနိစ္ဆယော-သည်၊ နိဋ္ဌိတော–ပြီ။

ပန – ဆက်၊ ဧဝံ – သို့၊ ဝါ – ၍ ဆိုအပ်ပြီးသည့်အတိုင်း၊ ကုဋိကာယ - ကျောင်းငယ်ကို၊ ဘိန္ဒာယ-ဖျက်အပ်ပြီးသော်၊ ဓနိယဿ-အရှင်ဓနိယ၏၊ ပရိဝိတက္ကဋ္ဌ-ကြံပုံကိုငင်း၊ ပုန-တဖန်၊ ကုဋိကရဏတ္ထာယ-ကျောင်းငယ်ကို ပြုခြင်း အကျိုးငှါ၊ ဥဿာဟဋ္ဌ-အားထုတ်ပုံကိုငင်း၊ ဒဿေတုံ-ငှါ။ အထခေါ် အာယ သ္မာတောတိ အာဒိ – ကို၊ (သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ၊ တတ္ထ – ထို အထခေါ် အာယသ္မာတော အစရှိသောဝါကျ၌၊ဒါရုဂဟေ ဂဏကောတိ-ကား၊ ရညော- ၏၊ ဒါရုဘဏ္ဍာဂါရေ–သစ်ဘဏ္ဍာ ထားရာအိမ်၌၊ [သစ်တို့ကိုထားရာ ဂိုဒေါင်

**သုကတမေဝ ။** ။ အညေသံ သန္တကောပိ ( သူများဥစ္စာ ဖြစ်သော်လည်း ) အတ္တနော သီမာယ အန္တော ( မိမိသိမ်အတွင်း၌ ) ဝုတ္တဝိဓိနာ ကတံ ( အဋ္ဌကထာ ဆိုအပ်သောအစီအစဉ်ဖြင့် ပြုအပ်သည်ရှိသော်) သုကတမေဝ၊ (ဘာ့ကြောင့်နည်း.... အလဇ္ဇိနိဂ္ဂဟတ္ထာယ ပဝတ္တိတဗ္ဗတော-အလဇ္ဇီနှိပ်ဘို့ရန် ဖြစ်စေအပ် ပြုအပ်သောကြောင့် တည်း၊—ဝိမတိ။)

၌- ဟူလို၊ ''သစ်တောရိုး''ဟုလည်း ပေးကြ၏။] ဒါရုဂေါပကော - သစ်တိုကို စောင့်ရှောက်သူသည်၊ ဝါ- သစ်ထိန်းသည်၊ ( အတ္တိ )၊ ဒေဝဂဟာဒါရုနီတိ- ကား၊ ဒေဝေန-ဘုရင်မင်းမြတ်သည်၊ ဂဟိတဒါရုနိ-ယူအပ်သောသစ်တို့သည်၊ ရာဇပရိဂ္ဂဟိတဘူတာနိ-ဘုရင်မင်းမြတ်သည် သိမ်းပိုက်အပ်သည်ဖြစ်၍ ဖြစ်ကုန် သော၊ ဒါရူနိ - တို့သည်၊ (အတ္ထိ – နှ်၏၊ ) ဇုတိအဖွော၊ နဂရပဋိသင်္ခါရိကာ နီတိ- ကား၊ နဂရဿ–ကို၊ ပဋိသင်္ခါရပကရဏာနိ- ပြင်ဆင်ခြင်း၏ အဆောင် အဥ္စုးဖြစ်ကုန်သော၊ [''ပဋိသင်္ခါရဿ+ဟိတာနိ ပရိသင်္ခါရိကာနိ''ဟု ဟိတ တဒ္ဓိတ်ပြု၊] အာပဒတ္ထာယ နိက္ခိတ္တာနီတိ– ကား၊ အဂ္ဂိဒါဟေနဝါ-မီးလောင် ခြင်းကြောင့်သော်၎င်း၊ ပုရာဏ ဘာဝေနဝါ – ဟောင်းနွမ်းသည်၏ အဖြစ် ကြောင့်သော်၎င်း၊ ပဋိရာဇူပရုန္ဓနာဒိနာဝါ-ရန်သူမင်း၏ ပိတ်ဆို့ဖျက်ဆီးခြင်း အစရှိသော အကြောင်းကြောင့်သော်၎င်း၊ [ ''ဥပရုန္ဓန'' ဟု ရှိ၏၊ ရုမ်ဓာတ် သည် ပိတ်ဆို့ခြင်း ဝိုင်းထားခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ ဤနေရာ၌ ဖျက်ဆီးခြင်း အနက်တိုင်အောင်ယူသင့်သည်၊] ဂေါပုရဋ္ဋာလက ရာဇင္ဂေဟ ဟတ္ထိသာလာ ဒိနံ – တံခါးမုခ် , ပြအိုးတန်ဆောင်း, နန်းတွင်း , ဆင်တင်းကုပ် အစရှိသည် တို့၏၊ ဝိပတ္တိ-ပျက်စီးခြင်းကို၊ အာပဒါတိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ၊ [ဝိပတ္တိနှင့် အာပဒါကို အဘိဓာန်၌ ပရိယာယ်ဆို၏။] တဒတ္ထံ-ထို ပျက်စီးခြင်းအကျိုး၄ါ၊ (ပျက်သော အခါ ပြင်ဘို့ရာ-ဟူလို။] နိက္ခိတ္တာနိ-ထားအပ်ကုန်သော၊ ဇုတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊

ခဏ္ဍာခဏ္ဍိကံ ဆေဒါပေတွာတိ – ကား၊ အတ္တနော – ၏၊ ကုဋိကာယ- ကျောင်းငယ်၏၊ ပမာဏံ-ကို၊ သလ္လက္ခေတွာ-မှတ်သား၍၊ ကိဥ္စိ-အချို့သစ်ကို၊ အဂ္ဂေ-အဖျား၌၎င်း၊ ကိဥ္စိ-ကို၊ မဇ္ဈေ-၌၎င်း၊ ကိဥ္စိ–ကို၊ မူလေ-အရင်း၌၎င်း၊ ခဏ္ဍာခဏ္ဍံ– အပိုင်းငယ် အပိုင်းကြီးကို၊ ကရောန္တော – လျက်၊ ဆေဒါပေသိ- ဖြတ်စေပြီ။ [ ခဏ္ဍ + အခဏ္ဍ၊ အ သဒ္ဒါသည် ဝုဒ္ဓိ အနက်ဟော၊ အခဏ္ဍကို ''အပိုင်းကြီး'' ဟု ဆိုသဖြင့် ခဏ္ဍကို ''အပိုင်းငယ် ''ဟု သိရသည်၊ ခဏ္ဍံကံ၌ ဏိကသည် သွတ္ထ၊ အံကား ကြိယာဝိသေသနတ္ထ။]

**ဒေဝေန၊ ပေ၊ အဖွော**။ ။ဒေဝေနဖြင့် '' ဒေဝေန+ဂဟာနိ ဒေဝဂဟာနိ '' ဟု တတိယာတပ္ပုရိသ်ကိုပြ၏၊ ဂဟာနိဖြင့် ''ဂယိံသူတိ ဂဟာနိ''ဟု ကံဟော အ ပစ္စည်းကို ပြ၏၊ ရာဇပရိဂ္ဂဟိတဘူတာနိဖြင့် ''ဒေဝ'' အရ လူမင်းတည်းဟူသော သမ္မုတိနတ်ကို ယူပါဟု ၎င်း, ဂဟအရလည်း သာမညယူခြင်းမဟုတ်၊ ငါ့ဥစ္စာဟု သိမ်းပိုက်ထားခြင်း ဟု၎င်း ပြ၏၊ '' ယဿဝါ ပရိဂ္ဂဟော၊ တံ သာမိ''နှင့် အညီ ''ပရိဂ္ဂဟ''ဟု လာသမျှ၌ ဥစ္စာရှင်ဖြစ်အောင်သိမ်းပိုက်ခြင်းကိုယူရသည်၊ ထို့ကြောင့် ဋီကာ၌ ''ရညော သန္တကာ နီတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ''ဟု ဖွင့်သည်။

ဝဿကာရောတိ- ကား၊ တဿ ဗြာဟ္မဏဿ- ၏၊ နာမံ- တည်း၊ မဂဓ မဟာမတ္တောတိ- ကား၊ မဂဓရဋ္ဌေ- မဂဓတိုင်း၌၊ မဟာမတ္တော-အမတ်ကြီး သည်၊ မဟတိယာ-ကြီးစွာသော၊ ဣဿရိယမတ္တာယ-အစိုးရသူ၏ဖြစ်ကြောင်း ရာထူး အတိုင်းအရှည်နှင့်၊ သမန္နာဂတော-ပြည့်စုံသူသည်၊ ဝါ-တနည်း၊ မဂဓ ရညော-၏၊ မဟာမတ္တော-ကြီးသောရာထူး အတိုင်းအရှည်ရှိသူသည်၊ မဟာ အမစ္စော-အမတ်ကြီးသည်၊ ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ အနုသညာယမာနောတိ- ကား၊ တတ္ထတတ္ထ - ထိုထိုအရပ်သို့၊ ဂန္တွာ - ၍၊ ပစ္စဝေက္ခမာနော - ကြည့်ရှု စုံစမ်းလသော်၊ [အနုကို တတ္ထတတ္ထ ဂန္တွာ ဟု ၎င်း,သံ+ဉာယမာနောကို ပစ္စ ဝေက္ခမာနောဟု၎င်း ဖွင့်၊ "သံဉာယ-မှတ်သား"ဟူသည် ကြည့်ရှု စုံစမ်းခြင်း တည်း၊] ဘဏောတိ-ဘဏောဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ ဣဿရာနံ-အစိုးရသူတို့၏၊ နီစဋ္ဌာနိကပုရိသာလပနံ-နိမ့်သောရာထူးရှိသောယောကျ်ားကို ခေါ်ကြောင်း သဒ္ဒါတည်း။

ဗန္ဓံအာဏာပေသီတိ - ကား၊ ဗြာဟ္မဏော-ကို၊ ပကတိယာပိ- ပင်ကိုယ် အားဖြင့်လည်း၊ တသ္မိံ- ထိုသစ်ထိန်း၌၊ ဣဿာပကတော ဝ - ဣဿာသည် ပင်ကိုယ်သဘောမှ ကင်းအောင် ပြုအပ်သည်သာ၊ ဝါ - ဣဿာနှိပ်စက်အပ် သည်သာ၊ သော - ထိုပုန်ဏားသည်၊ ရညော-၏၊ အာဏာပေဟီတိဝစနံ- ဟိဟူသောစကားကို၊ သုတွာ - ၍၊ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ ပဏ္ဍောသာပေဟီတိ- ဟူ၍၊ ရညာ-သည်၊ န ဝုတ္တံ-မဆိုအပ်၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ နံ-ထိုသစ်ထိန်းကို၊ [နံကို ကတွာ၌ ပကတိ ကံ စပ်၊ ယောဇနာ၌ ဗန္ဓံ၏ ကံ ဟု ဆိုမှား၏၊] ဟတ္ထေ သုစ- တို့၌၎င်း၊ ပါဒေသုစ - တို့၌၎င်း၊ ဗန္ဓံ - နှောင်ဖွဲ့အပ်သည်ကို၊ ကတွာ-၍၊ အာဏာပေဿာမိ - စေခိုင်းအံ့၊ ဣတိ - ဤသို့ကြံ၍၊ ဗန္ဓံ- နှောင်ဖွဲ့အပ်သည် မည်လောက်အောင်၊ အာဏာပေသိ-စေခိုင်းပြီ၊ ဝါ-အာဏာပေးပြီ၊ အဒ္ဒသ ခေါ အာယသ္မာ ဓနိယောတိ - ကား၊ ကထံ - အဘယ်နည်းဖြင့်၊ အဒ္ဒသ - သနည်း၊ ကိရ-ချဲ၊ (တနည်း၊) ကိရ(ယသ္မာ)-ကြောင့်၊ သော-ထိုအရှင်ဓနိယ

**မဂဓမဟာမတ္တော**။ ။မဂဓရဋ္ဌေဖြင့် မဂဓအရ တိုင်းကိုယူစေလို၏၊ "မဂဓေသု+ မဟာမတ္တော မဂဓမဟာမတ္တော" ဟု ပြု၊ [တိုင်းဟောပုဒ်များ၌ ဗဟုဝုစ်သာ။] မဂဓ ရညောဝါဖြင့် "မဂဓ" အရ ဌာနတိုင်း၏ အမည်ကို ဌာနီမင်း၌တင်စား၍ ဌာနူပစာရ အားဖြင့် မင်းကိုယူစေလို၏၊ "မဂဓဿ+မဟာမတ္တော" ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၊ မဟတိယာ၊ပေ၊ သမန္နာဂတောဖြင့်"မဟတီ+မတ္တာ ယဿ"ဟူသော ဗဟုဗ္ဗီဟိ ဝစနတ္ထကိုပြ၏၊ ဣဿ ရိယမတ္တာယဖြင့် "မတ္တာ"အရ ရာထူး (ဌာနန္တရ) ကို ယူစေလို၏၊ "ဣဿရဿ + ဘာဝေါ ဣဿရိယံ-အစိုးရသူ၏ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ"ဟူသည်"ရာထူး" ပင်တည်း။

သည်၊ အတ္တနော - ၏၊ လေသေန - အနည်းငယ်သော အကြောင်းဖြင့်၊ ဝါ-
အမြွက်အားဖြင့်၊ [ဘိသိက်ခံစဉ်က "ဒိန္နညေဝ သမဏာမြာပဗ္ဗဇ္ဇာနံ" စသော
စကားကိုပင် သစ်တို့ကို ယူနိုင်ခြင်း၏ အနည်းငယ်သော အကြောင်းဖြစ်၍
''လေသ''ဟု ဆိုသည်၊]ဒါရုန်-တို့၏၊ ဟရဘာဝံ - ဆောင်အပ်ကုန်သည်၏
အဖြစ်ကို၊ ဥတွာ - ၍၊ နိဿံသယံ - ယုံမှားမဲ့၊ ဝါ - မချွတ်ကေန်၊ သေ - ဤ
သစ်ထိန်းသည်၊ ဒါရုနံ - တို့၏၊ ကာရဏာ - အကြောင်းကြောင့်၊ ရာဇကုလ
တော-မင်းအိမ်မှ၊ ဝဓံဝါ- ညှဉ်းဆဲအပ်သည်၏ အဖြစ်သို့သော်ငင်း၊ ဗန္ဓံဝါ-
နှောင်ဖွဲ့အပ်သည်၏အဖြစ်သို့သော်ငင်း၊ ပါပုဏိဿတိ- ရောက်လတ့်၊[''ဥဒ္ဒေသံ
အာဂစ္ဆန္တိ''၌ ကဲ့သို့ ဝဓံဗန္ဓံတို့၌ ဘာဝပစ္စယ ခနကြံ၊]တဒါ-၌၊ နံ-ထိုသစ်ထိန်း
ကို၊ အဟမေဝ- ငါသည်ပင်၊ မောစေဿာမိ-လွတ်စေအံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊
နိစ္စကာလံ - အမြဲကာလပတ်လုံး၊ တဿ - ထိုသစ်ထိန်း၏၊ ပဝတ္တိံ - ဖြစ်ပုံ
အကြောင်းကို၊ သုဏာနန္တာယေဝ-နားထောင်လျက်သာ၊ ဝိစရတိ-လှည့်လည်
၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ တံခဏညေဝ - ထိုခဏ၌ပင်၊ ဂန္တွာ- ၍၊ အဒ္ဒသ-ပြီ၊
တေန- ကြောင့်၊ အဒ္ဒသခေါ် အာယသ္မာ ဓနိယောတိ-ဟူ၍၊(သံဂီတိကာရေ
ဟိ)၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ဒါရုနံ ကိစ္စာတိ-ကား၊ ဒါရုနံ-တို့၏၊ ကာရဏာ- ကြောင့်၊
ပုရာဟံ ဟညာမိတိ-ကား၊အဟံ တပည့်တော်ကို၊ပုရာဟညာမိ-မသတ်အပ်မီ၊
ယာဝ-အကြင်အခါ၌၊ အဟံ- ကို၊ န ဟညာမိ-မသတ်အပ်သေး၊ တာဝ-ထို
မသတ်အပ်သေးမီ၊ တွံ-အရှင်ဘုရားသည်၊ ဂစ္ဆာသိ - လိုက်ခဲ့ပါလော၊ ဣတိ
အတ္ထော-နက်။ [ယာဝ - စသည်ကား ပုရာဟညာမိ၏ အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်၊ ပုရေ-
ပုရာတို့နှင့်တွဲလျှင် အနာဂတ်အနက်၌ ဝတ္တမာန်သက်၏၊"ပုရေဒိဗ္ဗတ်"စသော
သံဂါယနာတင်ခဏ်းကို ပြန်ကြည့်ပါ။]

ဣဿ ဘန္တေသရာပေဟီတိ ဧတ္ထ- ၌၊ ဣဿာတိ- ဣဿဟူသောသဒ္ဒါသည်၊
စောဒနတ္ထေ - တိုက်တွန်းခြင်း အနက်၌၊ (ပဝတ္တော) နိပါတော - တည်း၊
ပဉ္စမာဘိသိတ္တောတိ-ကား၊အဘိသိတ္တော-ဦးခေါင်း၌ရေစင်ဖြင့်သွန်းလောင်း
အပ်ပြီးသည်၊ ဝါ - အဘိသိက်သွန်းအပ်ပြီးသည်၊ ဟုတွာ - ၍၊ ပဉ္စမံ- ရှေးဦး
အစ၌၊ ဝေရူပိံ ဝါစံ ဘာသိတာတိ - ကား၊ ဒိန္နညေဝ ၊ပေ၊ ပရိဘုဉ္ဇန္တူတိ-
ဟူ၍၊ ဝေရူပိံ-ဤသို့ သဘောရှိသော၊ ဣမံဝါစံ-ကို၊ အဘိသိတ္တော-သည်၊

ပဌမာဘိသိတ္တော။ ။အဘိသိတ္တော- စသောအဖွင့်သည် အဓိပ္ပါယ်တည်း၊
" ပဌမံ + အဘိသိတ္တဿ ယဿာတိ ပဌမာဘိသိတ္တော " ဟု ပြု၊ သတ္တာဟပရိနိဗ္ဗု
တောကို "ပရိနိဗ္ဗာနတော ပဋ္ဌာယ သတ္တာဟံ"ဟု အဓိပ္ပါယ်ဖွင့်သော်လည်း "သတ္တာ
ဟံ ပရိနိဗ္ဗုတဿ အဿာတိ သတ္တာဟ ပရိနိဗ္ဗုတော"ဟု ပြုရသကဲ့သို့တည်း။

ဟုတ္ဂာ—ဤ၊ ပဌမမေဝ—ရှေးဦးအစ၌ပင်၊ ယံ–အကြင်စကားကို၊ တွံ–အသင် ဒကာတော်သည်၊ အဘာသိ-ပြောဆိုပြီ၊ တံ-ထိုစကားကို၊သယမေဝ-ကိုယ်တိုင် သာလျှင်၊ ဘာသိတွာ-ပြီး၍၊ ဣဒါနိ–၌၊ သရသိ-အမှတ်ရပါလော၊ ဣတိဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ကိရ- ချဲ့၊ ရာဇာနော– တို့သည်၊ အဘိသိတ္တမတ္တာယေဝ - ဦးထိပ်၌ ရေစင်ဖြင့် သွန်းလောင်းအပ်ပြီးကာမျှ တို့သည်သာလျှင်၊ (ဟုတ္ဂာ–၍၊ ) ဒိန္န ညေဝ၊ ပေ၊ပရိဘုဥ္ဇန္တု၊တိ- ဟူ၍၊ ဓမ္မဘေရိံ-တရားစည်ကို၊ ဝါ-ထုံးစံသဘော ကို ဖေါ်ပြကြောင်း စည် ကို၊ စရာပေန္တိ - လည်စေကြကုန်၏၊ [ ဓမ္မဘေရိံ၌ ဓမ္မသည် သဘာဝ ( ထုံးစံသဘော )ကို ဟော၏၊ ပုရာဏသဘာဝသင်္ခါတံ— ဓမ္မဘေရိံ၊ ယောဇနာ၊ ] တံ - ထိုစကားကို၊ သန္ဓာယ- ရည်ရွယ်၍၊ ဧသ - ဤ အရှင်မနိယသည်၊ ဝဒတိ–ပြော၏၊ [သမဏဗြာဟ္မဏာနံ – ရဟန်းပုန်ဏား တို့အား၊ တိဏကဋ္ဌောဒကံ - မြက် ထင်း ရေကို၊ ဒိန္နညေဝ– ( ခမည်းတော် ဘိုးတော်တို့ကဲ့သို့ )ပေးမြဲ ပေးအပ်သည်သာ၊ တိဏကဋ္ဌောဒကံ-ကို၊ သမဏ ဗြာဟ္မဏာ- တို့သည်၊ ပရိဘုဥ္ဇန္တု– သုံးဆောင်ကြပါကုန်၊ " တိဏ ကဋ္ဌော ဒကံ"ပုဒ်သည် ရှေ့နောက်ငဲ့သော ကာကောလောကန နည်း။]

တေသံ မယာ သန္ဓာယ ဘာသိတန္တိ - ကား၊ အပ္ပမတ္တကေပိ- နည်းသော အတိုင်းအရှည်ရှိသော မြက် ထင်း ရေ၌လည်း၊ ကုက္ကုစ္စာယန္တာနံ-ကုက္ကုစ္စကို ပြုကြကုန်သော၊ သမိတ ဗာဟိတ ပါပါနံ – ငြိမ်းအပ်ပြီးသော မကောင်းမှု, မျှောအပ်ပြီးသောမကောင်းမှုရှိကုန်သော၊ တေသံ သမဏဗြာဟ္မဏာနံ-တို့၏၊ တိဏကဋ္ဌောဒက ဟရဏံ- မြက် ထင်း ရေကို ဆောင်ယူခြင်းကို၊ သန္ဓာယ- ၍၊ မယာ– ဒကာတော်သည်၊ တံ - ဤစကားကို၊ ဘာသိတံ– ပြောဆိုအပ်ပါပြီ၊ တုမှာဒိသာနံ – အရှင်တို့ကဲ့သို့ ရှုအပ်သော ပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊ ( ဒါရုဟရဏံ– သစ်တို့ကို ဆောင်ယူခြင်းကို၊ ) သန္ဓာယ– ၍၊ န ဘာသိတံ–ပြောဆိုအပ်သည် မဟုတ်ပါ၊ ဣတိ-ဤကား၊အဓိပ္ပါယော-ဗိမ္ဗိသာရမင်း၏အလိုတည်း၊တတ္ထခေါ် အရညေ အပရိဂ္ဂဟိတန္တိ-ကား၊ တဥ္စ တိဏကဋ္ဌောဒကံ-ကိုလည်း၊(အရညေ- ၌၊ အပရိဂ္ဂဟိတံ– မသိမ်းပိုက်အပ်သော မြက် ထင်း ရေကို၊ သန္ဓာယ – ၍၊

**ဘာသိတာ ဘာသိတွာ။** ။"ဝေရုပိံ ဝါစံ"နောက်၌"ဘာသိတာ,ဘာသိတွာ" ဟု ပါဌ် ၂ မျိုးရှိ၏၊ ၂ မျိုးလုံး အသင့်ဟု ယောဇနာဆို၏၊ "သယမေဝ ဘာသိတွာ" ဟူသော အဋ္ဌကထာဖွင့်ကို ထောက်၍ ဘာသိတွာသင့်၏၊ " နာဘိဇာနာမိ သဉ္စိစ္စ ပါဏံ ဇီဝိတာ ဝေါရောပေတာ"အင်္ဂုလိမာလသုတ် စသည်ကိုထောက်လျှင် ဘာသိတာ လည်းသင့်၏၊ "ဘာသိတာ-ဆိုပြီးသည်၊ ဟုတ္ဂာ-၍"ဟု ပေးရသောကြောင့် အနက်တူ ချည်းတည်း၊"ဘာသိတံဟု ရှိသောပါဌ်ကားမသင့်"ဟုယောဇနာလည်းဆိုးဖြတ်သည်။

ဘာသိတံ-ပြီ၊) [ကင္ခေါဒကံ– နောက်၌ ပိုဒ်ခတ်၍ ဤသို့ ပါဠိတော်လှမ်းစပ်၊ ဒီပေတိ၏ ကရိုဏ်းကို "ဇုမိနာ" ဟု သီးခြားထည့်။ ] (ဇုမိနာ– ဤ တဥ္စခေါ အရညေ အပရိဂ္ဂဟိတံ ဟူသောပါဠ်ဖြင့်၊ ) ယံ–အကြင်မြက် ထင်း ရေသည်၊ ဝါ–ကုံ၊ အရညေ–၌၊ အပရိဂ္ဂဟိတံ– သည်၊ ဟောတိ၊ တေံ– ဤ မသိမ်းပိုက် အပ်သော မြက် ထင်း ရေကို၊ သန္ဓာယ–၍၊ မယာ ဘာသိတံ၊ ဇုတိ–ဤအနက် အဓိပ္ပါယ်ကို၊ ဒီပေတိ-ပြ၏။

လောမေန တွံ မုစ္စော့သီတိ စွေ-၌၊ (အစ္စော့ ဝေံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊)လောမ မိဝ- အမွေးနှင့်တူ၏၊ (ဇုတိ – ကြောင့်၊) လောမံ- လောမမည်၏၊ ပန- ပရိ ဟာရပက္ခမှတပါး စောဒကပက္ခကို ဆိုဦးအံ့၊ တံ - ထို အမွေးနှင့်တူသော အရာဟူသည်၊ ကိံ – နည်း၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာလိင်္ဂ – ရှင်ရဟန်း၏အသွင်တည်း၊ ကံ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ ယထာနာမ – ဉပမာမည်သည်ကား၊ ဝုတ္တာ - သေသောက်ကြူးတို့ သည်၊ မံသံ - ကို၊ ခါဒိဿာမ – နံအံ့၊ ဇုတိ – ဤသို့ကြံ၍၊ မဟဏ္ဍလောမံ – များသောအဖိုးရှိသော အမွေးရှိသော၊ ဝါ - အဖိုးများစွာထိုက်သော အမွေး ရှိသော၊ ဧဠကံ – သိုးကို၊ ဂဏှေယျုံ – ဖမ်းယူကုန်ရာ၏၊ တမေနံ–ထိုသိုးကို၊ အညော- သော၊ ဝိညူ– တတ်သိနားလည်သော၊ ပုရိသော- သည်၊ ဒိသွာ–၍၊ ဇုမဿ ဧဠကဿ-၏၊ မံသံ-သည်၊ ကဟာပဏမတ္တံ–တကျပ်မျှကို၊ အဍ္ဍတိ– ထိုက်တန်၏၊ လောမာနိပန - တို့သည်ကား၊ လောမဝါရေ လောမဝါရေ– အမွေးအကြိမ်တိုင်း အမွေးအကြိမ်တိုင်း၌၊ (အမွေးရိတ်တိုင်း အမွေးရိတ်တိုင်း ၌၊) အနေကေ-များစွာကုန်သော၊ ကဟာပဏေ-တို့ကို၊ အဍ္ဍန္တိ-န်၏၊ ဇုတိ- ဤသို့ကြံ၍၊ ဒွေ–၂ ကောင်ကုန်သော၊ အလောမကေ– အမွေးမရှိကုန်သော၊ ဧဠကေ- တို့ကို၊ ဒတွာ- ၍၊ ဂဏှေယျ– ယူရာ၏၊ ဝံ-လျှင်၊ သော ဧဠကော– သည်၊ ဝိညုံ-သော၊ ပုရိသံ- ကို၊ အာဂမ္မ– စွဲ၍၊ လောမေန- အမွေးကြောင့်၊ မုစ္စေယျယထာ-လွတ်ရာသကဲ့သို့၊ ဧဝမေဝ-လျှင်၊ တွံ-သည်၊(ဧဓဗ္ဗနာရဟော ၌စပ်၊) ဇုမဿ ကမ္မဿ–ဤ သစ်ခိုးမှု၏၊ ဝါ–ကုံ၊ ကတတ္တာ-ပြုအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝဓဗန္ဓနာရဟော- သတ်ခြင်း နှောင်ဖွဲ့ခြင်းကို ထိုက်၏၊ ပန– ထိုသို့ပင် သတ်ထိုက် နှောင်ဖွဲ့ထိုက်ပါသော်လည်း၊ ယသ္မာ- ကြောင့်၊ အရဟ ဓော- ရဟန္တာတို့၏ အလံတံခွန်သည်၊ ဝါ– ကုံ၊ [ " အရဟန္တာနံ+ဓဇော အရဟန္တဓဇော" ဟု ဆိုလိုလျက် (န္တ)ချေ၊] သန္တိ-သူတော်ကောင်းတို့သည်၊ အဝဇ္ဈရူပေါ – မသတ်ထိုက်သည်၏ အဖြစ်ဟူသောသဘော ရှိ၏၊ [ န ဟည တေတိ အဝဇ္ဈော၊ ဏျပစ္စည်း, ဟနကို ဝဓပြု၍, ဈကို ဈပြု၊ အဝဇ္ဈဘာဝ-ဟု ဆိုလိုလျက် ဘာဝချေ၊ တနည်း – ဘာဝပ္ပဓာန၊ အဝဇ္ဈော + ရူပံ ယဿာတိ

အဝဇ္ဈုရှုပေါ။] တဗ္ဗု-သည်လည်း၊ သာသနေ-၌၊ ပဗ္ဗဇိတတ္တာ-ကြောင့်၊ ပဗ္ဗဇ္ဇာလိင်္ဂဘူတံ-ရှင်ရဟန်း၏အသွင်ဖြစ်၍ဖြစ်သော၊ တံ အရဟဒ္ဓဇံ-ကို၊ ဓာရေသိ-ဆောင်၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ဧဝေကော - သည်၊ ဝိညူ - သော၊ ပုရိသံ-ကို၊ အာဂမ္မ-၍၊ မုတ္တော-သတ်ခြင်းမှလွတ်သည်၊ (ဟောတိ)ဝိယ-ကဲ့သို့၊ (တထာ-တူ၊)တွံ-သည်၊ ဣမိနာ ပဗ္ဗဇ္ဇာလိင်္ဂလောမေန-ဤရှင်ရဟန်း၏အသွင်ဟူသော အမွေးကြောင့်၊ မုတ္တော-သည်၊ အသိ-၏၊ ဣတိ (ဝုတ္တံ ဟောတိ။)

မနုဿာ ဥဇ္ဈာယန္တီတိ-ကား၊ ရညော- သည်၊ ပရိသတိ- ၌၊ ဘာသမာနဿ- ပြောစဉ်၊ သမ္မုခါစ- မျက်မှောက်၌၎င်း၊ ပရမ္မုခါစ - မျက်ကွယ်၌၎င်း၊ သုတ္ဝာ-၍၊ တတ္ထ တတ္ထ-ထိုထို အရပ်၌၊ မနုဿာ-တို့သည်၊ ဥဇ္ဈာယန္တိ, အဝဇ္ဈာယန္တိ-အောက်တန်းစား ဟု အသိအမှတ်ပြုလျက် ကြည့်ရှုကြကုန်၏၊ ဝါ-နှုတ်ဖြင့်မပြောဘဲ တွေးတောကြံစည်ကြကုန်၏၊ အဝဇာနန္တာ - အောက်တန်းစား ဟု သိကြကုန်လျက်၊ တံ- ထို အရှင်ဓနိယကို၊ ဈာယန္တိ ဩလောကေန္တိ-ကြည့်ကြကုန်၏၊ ဝါ-တနည်း၊ လာမကတော- ယုတ်ညံ့သူ၏အဖြစ်ဖြင့်၊ ဝါ-ယုတ်ညံ့သူဟူ၍၊ စိန္တေန္တိ-ကြံစည်ကြကုန်၏၊ ဣတိ အတ္ထော။

ခိယန္တီတိ-ကား၊ တဿ-ထို အရှင်ဓနိယ၏၊ အဝဏ္ဏံ-ဂုဏ်၏ဆန့်ကျင်ဘက်ကို၊ ဝါ- အပြစ်ကို၊ ကထေန္တိ - နှ်၏၊ ပကာသေန္တိ - ထင်ရှား ပြကြကုန်၏၊ [ခိဓာတ်၏ အဝဏ္ဏ ဘာသနအနက်ကို ပြသည်၊ " ဓာတူနံ အနေကတ္ထတ္တာ" ပင်၊ ဣကို ဣယပြု၍ " ခိယ "ဟု ဖြစ်၏၊] ဝိပါစေန္တီတိ - ကား၊ ဝိတ္ထာရိတံ-ကျယ်ပြန့်ခြင်းရှိသည်ကို၊ ကရောန္တိ-နှ်၏၊ သဗ္ဗတ္ထ- အလုံးစုံသော အရပ်တို့၌၊

**အဝဈာယန္တိ**။ ။ဥဇ္ဈာယန္တိ၌ ဥသည် အဝကိုပြုထားသော ဩ၏ ဝိပရိတ်ဥတည်း၊ ထို့ကြောင့် "အဝဈာယန္တိ "ဟု ဖွင့်၊ ထိုအဝလည်း အဝမညန အနက်ဟော (အဘိဓာန်လာ အနက်တို့တွင် "အဓောဘာဂ " အနက်ဟော)ဟု သိစေလို၍ " အဝဇာနန္တာ"ဟုရင်း, ဈေဓာတ်သည် ဩလောကနအနက်ဟောဟု သိစေလို၍"ဩလောကေန္တိ"ဟုရင်း ဖွင့်သည်၊ ဒုတိယနည်း၌"အဝသည် လာမကအနက်ဟော, ဈေဓာတ်သည် စိန္တနအနက်ဟော"ဟု ပြ၏။ [ဓာတ်ကျမ်း၌ " ဩလောကန" အနက် မရှိသော်လည်း "ဓာတူနံ အနေကတ္ထ" ဖြစ်သောကြောင့် ဖွင့်သည်။]

**ဝိပါစေန္တိ**။ ။"ပစိ—ဝိတ္ထာရေ"ဟု ဓာတ်ကျမ်းရှိ၏၊ ကာရိတ်ကြောင့်"ပါ"ဟု ဖြစ်သည်၊ ထိုပစိဓာတ်သည် အကမ္မကဖြစ်၍ ကာရိတ်ဝင်မှ ကံတခုသာရ၏၊ ထို့ကြောင့် "ဝိတ္ထာရိတံ ကရောန္တိ"ဟု ဖွင့်သည်၊ " ကျယ်ပြန့်စေ" ဟူသည်မှာ " ထိုထို အရပ်၌ နှံ့သွားအောင်ဖြန့်ခြင်း"ဟုသိစေလို၍"တတ္ထ တတ္ထ ပတ္ထရန္တိ"ဟု အဓိပ္ပါယတ္ထဖွင့်သည်။ [ဝိတ္ထာရော+သဉ္ဇာတော ယဿာတိ ဝိတ္ထာရိတော၊ အဝဏ္ဏော၊ ( ဣတပစ္စည်း )။]

ပဏ္ဍရန္တိ-ဖြန့်ကြကုန်၏၊ စ- ဆက်၊ အယံအတ္ထော-ကို၊ သဒ္ဒသတ္ထာနုသာရေန-သဒ္ဒါကျမ်းသို့ အစဉ်လိုက်သဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ [ခေတ်ကျမ်းကိုပင်"သဒ္ဒသတ္ထ"ဟု ဆိုသည်၊] ပန-ဆက်၊ အယံ-ဤ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ထွေ-ဤဥဇ္ဈာယန္တိအစရှိသော ဝါကျ၌၊ ယောဇနာ-ပုဒ်တို့ကိုယှဉ်စေခြင်းတည်း၊အလဇ္ဇီနော ဣမေသမဏာ သကျပုတ္တိယာတိ အာဒီနိ-ယာအစရှိသော အကြောင်းအရာတို့ကို၊ [ အာဒီနိဖြင့် ပါဠိတော်၌ တိုက်ရိုက်လာသော " ဒုဿီလာ " စသည်တို့ကိုယူ၊] စိန္တေန္တာ-နှလျက်၊ ဥဇ္ဈာယန္တိ-အောက်တန်းစားဟု အသိအမှတ်ပြုလျက် ကြည့်ရှုကြကုန်၏၊ နတ္ထိ ဣမေသံ သာမညန္တိ အာဒီနိ – အစရှိသော စကားတို့ကို၊ ဘဏန္တာ-နှလျက်၊ ခိယန္တိ-ရှုတ်ချကြကုန်၏၊ အပဂတာ ဣမေ သာမညာတိ အာဒီနိ-စကားတို့ကို၊ တတ္ထတတ္ထ-ထိုထိုအရပ်၌၊ ဝိတ္ထာရေန္တာ-ချဲ့ဖြန့်ကုန်လျက်၊ ဝိပါစေန္တိ – ကျယ်ပြန့်စေကြကုန်၏၊ ဣတိအယံ – ကား၊ ယောဇနာ - တည်း၊ ဧတေန နယေန - ဖြင့်၊ ဣမေသံ ပဒါနံ - ဤ ဥဇ္ဈာယန္တိ အစရှိသော ပုဒ်တို့၏၊ ဣတော-ဤသိက္ခာပုဒ်မှ၊ ပရမ္ပိ-နောက်၌လည်း၊ တတ္ထတတ္ထ- ထိုထိုသိက္ခာပုဒ်၌၊ အာဂတ ပဒါနုရူပေန-လာသောပုဒ် အားလျော်သဖြင့်၊ ယောဇနာ-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-၏။[အလဇ္ဇီနော ဣမေ သမဏာ-စသော ပုဒ်တို့နှင့် အလားတူ ပုဒ်မျိုးကို "အာဂတပဒ"ဟု ဆိုသည်၊]

တတ္ထ- ထိုအလဇ္ဇီနော ဣမေသမဏာ သကျပုတ္တိယာ အစရှိသော ဝါကျ၌၊ ဗြဟ္မစာရိနောတိ – ကား၊ သေဋ္ဌစာရိနော - မြတ်သောအကျင့်ကို ကျင့်လေ့ရှိသူတို့ဟူ၍၊ [ ပတိဇာနိဿန္တိ နာမနှင့်တွဲ။ ] သာမညန္တိ – ကား၊ သမဏဘာဝေါ - သမဏ၏ ဖြစ်ကြောင်းအကျင့်သည်၊ ဗြဟ္မညန္တိ – ကား၊ သေဋ္ဌဘာဝေါ-မြတ်သူ၏ဖြစ်ကြောင်းအကျင့်သည်၊ (နတ္ထိ)၊ [ရဟန်းများကို ကဲ့ရဲ့သည့် အရာဖြစ်၍ " ဗြာဟ္မဏဘာဝေါ " ဟု မဖွင့်ဘဲ "သေဋ္ဌဘာဝေါ" ဟု ဖွင့်သည်၊ ဤနေရာ၌ "ဗြာဟ္မဏ" သဒ္ဒါသည် "သေဋ္ဌ" သဒ္ဒါ၏ ပရိယာယ်၊] သေသံ- ကြွင်းသောပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ဥတ္တာနတ္ထမေဝ – သာ၊ ရညောဒါရုန္တိအာဒိမှိ – ဝါကျ၌၊ အဒိန္နံ အာဒိယိဿတီတိ– ဿတိ ဟူသော၊ အယံ-ဤ မပေးအပ်သော ဥစ္စာကို ယူခြင်းဟူသော အနက်သည်၊ ဥဇ္ဈာယနတ္ထော-

မှတ်ချက် ။ ။နှုတ်ဖြင့် မပြောဘဲ မျက်စိဖြင့်" လူယုတ်ဘဲ " ဟု ကြည့်မှုကိုရင်း, စိတ်ဖြင့် အထင်သေးမှုကိုရင်း ဥဇ္ဈာယန္တိဖြင့်ပြ၏၊ အထင်သေး အမြင်သေးဖြစ်ရုံ မက, နှုတ်ဖြင့်အပြစ်ပြောမှု ကဲ့ရဲ့ရှုတ်ချမှုကို ခိယန္တိဖြင့်ပြ၏၊ တနေရာ၌ အချင်းချင်းပြောကြ-ကဲ့ရဲ့ကြရုံ မက, ထိုထိုဤဤ နံ့သွားအောင် စပ်ရာစပ်ရာ၌ မကောင်းသတင်း ပြောမှုကို ဝိပါစေန္တိဖြင့် ပြသည်။

ကဲ့ရဲ့ကြောင်း အနက်တည်း၊ ပန - ဆက်၊ ယံ ဧတံ အဒိန္နံ - အကြင်မပေးအပ်သော ဥစ္စာကို၊ အာဒိယိ–ယူပြီ၊ တံ–ထိုမပေးအပ်သောဥစ္စာကို၊ ဒသေတုံ–ငှါ၊ ရညော ဒါရုနီတိ – ဟူ၍၊ ( မနုဿေဟိ - ကဲ့ရဲ့ကုန်သော လူတို့သည်၊ (တနည်း) သံဂိတိကာရေဟိ-တို့သည်၊ )ဝုတ္တံ- ပြီ၊ ဣတိ-လျှင်၊ ဝစနဘေဒေ-ကေဝုစ်ဗဟုဝုစ်ကွဲပြားခြင်း၌၊ အသမ္မုယှန္တေဟိ-မတွေဝေကုန်ဘဲ၊ အတ္ထော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော–၏။

ပုရာဏာ၊ပေ၊မဟာမတ္တောတိ- ကား၊ ဘိက္ခုဘာဝတော-ရဟန်းအဖြစ်မှ၊ ပုရာဏော- ရှေးဖြစ်သော၊ ဂိဟိကာလေ-လူဖြစ်ရာအခါ၌၊ ဝိနိစ္ဆယဝေါဟာရေ-တရားဆုံးဖြတ်ကြောင်း စကား၌၊ နိယုတ္တတ္တာ-ယှဉ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝေါဟာရိကောတိ–ဟူ၍၊ သင်္ခံ-ခေါ်ဝေါ်အပ်သည်၏ အဖြစ်သို့၊ ဂတော–သော၊ မဟာအမစ္စော - အမတ်ကြီးသည်၊ ( နိသိန္နော ဟောတိ – ၌ စပ်၊ ) အထခေါ ဘဂဝါတံ ဘိက္ခုံ တေဒဝေါစာတိ-ကား၊ ဘဂဝါ–သည်၊ သာမံ ယေဝ – ကိုယ်တော်တိုင်သာလျှင်၊ လောကဝေါဟာရမ္ပိ - လောက၌ အသုံး

**ဥဇ္ဈာယနတ္ထော**။ ။ဥဇ္ဈာယန္တိ ဧတေနာတိ ဥဇ္ဈာယနံ=အထင်အမြင်သေးကြောင်း (ပေးရိုးအားဖြင့်“ ကဲ့ရဲ့ကြောင်း”)၊ ဥဇ္ဈာယနံ + အတ္ထော ဥဇ္ဈာယနတ္ထော၊ ကဲ့ရဲ့အပ်သူသည် ရှင်ဓနိယ၊ ကဲ့ရဲ့ကြောင်းကား ခိုးမှုတည်း၊ [ ဥဇ္ဈာယနဿ အဒိန္နာဒါနဝိသယတ္တာ ( အဒိန္နာဒါနလျှင် အကြောင်းအရာရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် ) အဒိန္နာဒါနံ ( မပေးအပ်သော သူ့ဥစ္စာကို ယူခြင်းသည် ) ဥဇ္ဈာယနတ္ထောတိ ဝုတ္တံ၊—ဋီကာ။ ] ဆိုလိုရင်းကား—ကဲ့ရဲ့ကြောင်းသည် သစ်များ မဟုတ်, အဒိန္နာဒါနတည်း၊ ထို့ကြောင့် “အဒိန္နံ အာဒိယိဿတိ”ဟု အဒိန္နံ၌ ဧကဝုစ်ထားသည်၊ ထိုအဒိန္နပစ္စည်းများကိုပြလို၍ “ဒါရူနိ”ဟု ဗဟုဝုစ်ထားသည်—ဟူလို။

**သာမည ဝိသေသကံ**။ ။ဒါရူနိနှင့် အဒိန္နံသည် ဝိသေသန ဝိသေသျ မဟုတ်၊ အဒိန္နံသည် သာမညကံ , ဒါရုနိကား ဝိသေသကံ တည်း၊ ယောဇနာ၌ “ အဒိန္နံကို ကြိယာဝိသေသန”ဟု ဖွင့်၏၊ ထိုအလို“အဒိန္နံ—အရှင်မပေးအပ်ဘဲ”ဟုပေး၊ သို့သော် “ သင္ဃမတ္တေ ထာလိပါကေ ဘတ္တာဘိဟာရံ အဘိဟရိံသု”နှင့် ဤဒါရုနိ အဒိန္နံသည် စာသွားတူသောကြောင့် ထိုယောဇနာအဖွင့်သည် မကောင်းလှ၊ ထိုဘတ္တာဘိဟာရံကို ကြိယာဝိသေသန မပေးနိုင်။

**ပုရာဏ ဝေါဟာရိကော**။ ။ ဝေါဟာရသဒ္ဒါသည် အဘိဓာန်လာ ဝေါဟာရသဒ္ဒါ၏ အနက်တို့တွင် သဒ္ဒ – အသံပြုခြင်း ( စကားပြောခြင်း ) အနက်ကို ဟော၏၊ ထို စကားဟူသည်လည်း ဝိနိစ္ဆယကထာ – အဆုံးအဖြတ်စကားတည်း၊ ထို့ကြောင့် “ ဝိနိစ္ဆယဝေါဟာရေ”ဟု ဖွင့်သည်၊ နိယုတ္တတ္တာဖြင့် “ ဝေါဟာရေ + နိယုတ္တော” ဟူသော ဝစနတ္ထကိုပြ၏၊ ပုရာဏော—ရှေ့ လူဖြစ်စဉ်အခါ၌+ ဝေါဟာရိကော—ဝိနိစ္ဆယ စကား၌ ယှဉ်သူတည်း၊ ဝါ—တရားဆုံးဖြတ်သူတည်း၊ ပုရာဏဝေါဟာရိကော—သူ။

အနှုန်းကိုလည်း၊ ဇာနာတိ – မှု၏၊ [ ဤ ဝေါဟာရသဒ္ဒါကား အသုံးအနှုန်း (အခေါ်အဝေါ်)ပညတ်အနက်ဟောတည်း၊] အတီတဗုဒ္ဓါနံ-ရှေး ဘုရားရှင်တို့၏၊ ပညတ္တိံမ္ပိ– ပညတ်တော်ကိုလည်း၊ ဇာနာတိ၊ (ကိံ)၊ ပုဗ္ဗေပိ– ၌လည်း၊ ဗုဒ္ဓါ- တို့သည်၊ တွေကေန- ဤမျှ အတိုင်းအရှည်ရှိသော ခိုးမှုဖြင့်၊ ပါရာဇိကံ– ပါရာဇိကအာပတ်ကို၊ ပညပေန္တိ– ပညတ်တော်မူကြကုန်၏၊ တွေကေန-ဖြင့်၊ ထုလ္လစ္စယံ-ကို၊(ပညပေန္တိ၊)တွေကေန ဒုက္ကဋံ(ပညပေန္တိ၊)ဣတိ-သို့၊ (ဇာနာတိ)၊ဧဝံသန္တေပိ-ဤသို့ဖြစ်သော်လည်း၊အညေဟိ-နံသော၊ လောကဝေါဟာရ ဝိညူဟိ – လောကအသုံးအနှုန်းကို သိသူတို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ – ကွ၊ အသံသန္ဒိတွာ– မနှီးနှောမူ၍၊ ပါဒမတ္တေန- တမတ်မျှဖြင့်၊ ပါရာဇိကံ- ကို၊ သစေ ပညပေယျ– အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ တေန-ထိုသို့ ပညတ်တော်မူခြင်းကြောင့်၊ အဿ-ထို မြတ်စွာဘုရားကို၊ ဝတ္တာရော-ပြောဆိုမည့်သူတို့သည်၊ ဝါ-အပြစ်တင်မည့်သူတို့သည်၊ သိယုံ-ရှိကုန်ရာ၏၊ (ကိံ)၊ သီလသံဝရောနာမ-သီလ စောင့်စည်းခြင်းမည်သည်၊ ဝါ – ကို၊ ကေဘိက္ခုသပိ – ရဟန်းတပါး၏အတွက်လည်း၊ အပ္ပမေယျော– မနှိုင်းယှဉ်အပ် မနှိုင်းယှဉ်နိုင်၊ အသင်္ချေယျော–မရေတွက်အပ် မရေတွက်နိုင်၊ မဟာပထဝိ သမုဒ္ဒ အာကာသာနိဝိယ – မြေကြီး , သမုဒြာ, ကောင်းကင်တို့ ကဲ့သို့၊ အတိဝိတ္ထိန္နော–အလွန်ပြန့်ကျယ်၏၊ ကထံဟိ–အဘယ့်ကြောင့်၊ ဘဂဝါ- သည်၊ ပါဒမတ္တကေန–တမတ်မျှလောဲဖြင့်၊ နာသေသိနာမ (တနည်း)နာသေ ဿတိနာမ-ဖျက်ဆီးရတုံဘိသနည်း၊ဣတိ(ဝတ္တာရော သိယုံ၊)[ကထံနာမနှင့် ယှဉ်သောကြောင့် “ နာသေဿတိတိ ”ရှိမှ သာ၍ စာသွားထုံးစံကျမည်၊] တတော-ထိုသို့ ပညတ်တော်မူခြင်းကြောင့်၊ [ယောဇနာ၌“တဒါ”ဟု ဖွင့်၏၊ “တတော–ထိုအခါ၌”ဟုပေး။]တထာဂတဿ-၏၊ ဉာဏဗလံ-ဉာဏ်တော် အစွမ်းကို၊ အဇာနန္တာ –မသိသူတို့သည်၊ သိက္ခာပဒံ – ကို၊ ကောပေယျုံ– ဖျက်ဆီးကုန်ရာ၏၊ ပညတ္တမ္ပိ – ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးလည်း ဖြစ်သော၊ သိက္ခာ ပဒံ- သည်၊ ယထာဌာနေ–၌၊ န တိဋ္ဌေယျ–မတည်ရာ။

ပန-အနွယကား၊ လောက ဝေါဟာရဝိညူဟိ–လောက အသုံးအနှုန်းကို သိသူတို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ– ကွ၊ သံသန္ဒိတွာ – နှီးနှော၍၊ ပညတ္တေ –ပညတ်တော် မူအပ်သော်၊ သော ဥပဝါဒေါ–ထို စွပ်စွဲခြင်းသည်၊ န ဟောတိ-မဖြစ်တော့၊ အညဒတ္ထု-စင်စစ်ကား၊ ဧဝံ-သို့၊ ဝတ္တာရော-ချီးမွမ်းပြောဆိုမည့် သူတို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ (ကိံ)၊ ဣမေ အဂါရိကာပိ–ဤ အိမ်၌နေသူ မင်းတို့သော်မှလည်း၊ ပါဒမတ္တေန-တမတ်မျှဖြင့်၊ စောရံ-ကို၊ ဟနန္တိပိနာမ-ညှဉ်းဆဲကုန်သည်လည်း မည်တုံသေး၏၊ ဗန္ဓန္တိပိနာမ–နှောင်ဖွဲ့ကုန်သည်လည်းမည်တုံသေး၏၊ ပဗ္ဗာဇေ

နိဒ္ဒိဗိန္နာမ-နှင်ထုတ်ကုန်သည်လည်းမည်တုံသေး၏၊ ကသ္မာ-ကြောင့်၊ ဘဂဝါ-သည်၊ ယေန-အကြင်ရဟန်းဖြစ်သူသည်၊ ပရသန္တကံ-သူတပါးဥစ္စာကို၊ တိဏသလာက မတ္တမ္ပိ- မြက်, ဝါးခြမ်းစိတ်မျှကိုလည်း၊ န ဂဟေတဗ္ဗံ- မယူထိုက်၊ (တံ) ပဗ္ဗဇိတံ - ထို ရဟန်းဖြစ်သူကို၊ န နာသေဿတိ- ဖျက်ဆီးတော်မမူဘဲ ရှိအံ့နည်း၊ ဣတိ-သို့၊ (ဝတ္တာရော ဟောန္တိ၊)စ-သည်သာ မကသေး၊ တထာဂတဿ-၏၊ ဉာဏဗလံ-ဉာဏ်တော်စွမ်းကို၊ ဇာနိဿန္တိ-နိလတ့်၊ စ-သည်သာမကသေး၊ ပညတ္တံပိ-ပညတ်အပ်ပြီးလည်း ဖြစ်သော၊ သိက္ခာပဒံ-သည်၊ အကုပ္ပံ- မဖျက်ဆီးအပ်သည်၊ ဘဝိဿတိ၊ ယထာ ဌာနေ- တည်မြဲတိုင်းသော အရာ၌၊ ဌဿတိ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ လောကဝေါဟာရဝိညူဟိ-တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ၊ သံသန္ဒိတွာ-၍၊ ပညပေတုကာမော-ပညတ်တော်မူလိုသည်၊ (ဟုတွာ)၊ သဗ္ဗာဝန္တံ-အလုံးစုံ အစိတ်အပိုင်းရှိသော၊ ပရိသံ-ကို၊ အနုဝိလောကေန္တော-အစဉ်ကြည့်တော်မူလသော်၊ အထခေါ-သစ်ခိုးမှုဖြစ်ရာ ထိုအခါ၌၊ ဘဂဝါ-သည်၊ အဝိဒူရေ-အနီး၌၊ နိသိန္နံ-ထိုင်နေသည်ကို၊ ဒိသွာ-မှု၍၊ တံ ဘိက္ခုံ-ကို၊ ကိတ္တကေနခေါ၊ပေ၊ ပဗ္ဗာဇေတိ ဝါတိ-ဟူသော၊ ဧတံ-ကို၊ အဝေါစ-ပြီ၊ [ဘိက္ခု-ရဟန်း၊ ကိတ္တကေန- အဘယ်မျှ ခိုးအပ်သောဥစ္စာကြောင့်၊ မာဂဓော- မဂဓတိုင်းတို့၏ အစိုးရဖြစ်သော၊ သေနိယော-များသောစစ်တပ်ရှိသော၊ [သေနာအဿ အတ္ထီတိ သေနိကော၊ ကကို ယပြု။] ဗိမ္ဗိသာရော–မည်သော၊ ရာဇာ-သည်၊ စောရံ-ကို၊ ဂဟေတွာ-၍၊ ဟနတိဝါ-ညှဉ်းဆဲမှုလည်းညှဉ်းဆဲသနည်း၊ ဗန္ဓတိဝါ-နည်း၊ ပဗ္ဗာဇေတိဝါ-နည်း။]

တတ္ထ – ထို ကိတ္တကေန ခေါ အစရှိသောဝါကျ၌၊ မာဂဓောတိ – ကား၊ မဂဓာနံ-မဂဓတိုင်းတို့၏၊ ဣဿရော-အစိုးရဖြစ်သော၊ သေနိယောတိ-ကား၊ သေနာယ-စစ်တပ်နှင့်၊ သမ္ပန္နော-ပြည့်စုံသော၊ ဗိမ္ဗိသာရောတိ-ကား၊ တဿ-

**သဗ္ဗာဝန္တံ**။ ။ဘိက္ခု, ဘိက္ခုနီ, ဥပါသက, ဥပါသိကာ ၄ ပါးဟူသော အစိတ်အပိုင်း အစုံအလင်ရှိသည်ကို (ပါဝင်သည်ကို) "သဗ္ဗာဝန္တာ" ဟု ဆိုသည်၊ "သဗ္ဗာ (စတုပရိသာသင်္ခါတာ ပဇာ) ဧတ္ထ အတ္ထီတိ သဗ္ဗာဝန္တာ" ဟု သာရတ္ထ၌ ဝန္တုနောင် ဤပစ္စည်းမသက်ဘဲ အာပစ္စည်းဖြင့် ပါ၌ရှိ၏။

**မဂဓာနံ ဣဿရော**။ ။ဤအဖွင့်ဖြင့်"မဂဓာနံ+ဣဿရော မာဂဓော"ဟု ပြုစေလို၏၊ မဂဓပုဒ်ရင်းသည် တိုင်းသူတိုင်းသားဟူသောအနက်ကို မဟော၊ တိုင်းကိုသာ ဟော၏၊ ထိုတိုင်းဟောပုဒ်များ၌ ပုလ္လိန်ဗဟုဝုစ် ရှိမြဲ၊ ထို့ကြောင့် " မဂဓာနံ " ဟု ဗဟုဝုစ်ထား၏၊ ဣဿရောပုဒ်က ဆဋ္ဌီကံကိုမငဲ့သောကြောင့် "မဂဓာနံ–မဂဓတိုင်းသူတိုင်းသားတို့ကို+ဣဿရော–အစိုးရသော" ဟု ပေးသည်ကို စဉ်းစားပါ။

ထိုမင်း၏၊ နာမံ - တည်း၊ ပဇ္ဇောတေတိ ဝါတိ - ကား၊ ရဋ္ဌတော - တိုင်းနိုင်ငံမှ၊ နိက္ခာမေတိ-ထွက်သွားစေသနည်း။ ["ပပုဗ္ဗ ဝဇ-ဂတိမှ"ဓာတ်,ဏေပစ္စည်း၊ ပ အတွက်ကြောင့် "ထွက်သွား"ဟု ပေးရ၏၊] ထွေ-ဤကိစ္စကေနခေါ်အစ ရှိသောဝါကျ၌၊ သေသံ-သည်၊ ဥတ္တာနတ္ထ မေဝ-သာ။

ပဥ္စမာသကော ပါဒေါတိ-ကား၊ တဒါ-၌၊ ရာဇဂဟေ-၌၊ ဝီသတိမာသကော - ၂၀ သော ပဲသည်၊ ကဟာပဏော - တကျပ်သည်၊ ဟောတိ - ၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊ ပဥ္စမာသကော-၅ ပဲသည်၊ ပါဒေါ - ပါဒမည်၏၊ ဧတေန လက္ခဏေန - ဤပဲ ၂၀ လျှင် တကျပ်ဟူသော အမှတ်အသားဖြင့်၊ သဗ္ဗဇနပဒေသု - တို့၌၊ ကဟာပဏဿ - ၏၊ စတုတ္ထော - ၄ ခုမြောက်ဖြစ်သော၊ ဘာဂေါ-အဘို့ကို၊ (တနည်း)စတုတ္ထောဘာဂေါ- ၄ဘို့တဘို့ကို၊ ပါဒေါတိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော - ၏၊ သောစ - ထို ပါဒကိုလည်း၊ ပေါရာဏဿ-ရှေး၌ ဖြစ်သော၊ နီလကဟာပဏဿ - ညစ်ကြေးမတင် သန့်စင်သော အသပြာ၏၊

ဓိမ္ပိသာရော။ ။ဓိမ္ပီတိ သုဝဏ္ဏံ၊ တသ္မာ သာရသုဝဏ္ဏသဒိသဝဏ္ဏတာယ ဓိမ္ပိသာရော တိ ဝုစ္စတိ–ဋီကာ၊ " သာရဓိမ္ပိ "ဟု ဆိုလိုလျက် ဝိသေသန သာရပုဒ် နောက်ကျသည်၊ "ဓိဋ္ဌိသာရောဝိယာတိ ဓိမ္ပိသာရော"ဟု ဆက်၊ ကောင်းမြတ်သောရွှေနှင့်တူသောမင်း၊ ရွှေအဆင်းကဲ့သို့ ဝါဝင်းသော အသားအရေရှိသောမင်း။

**နီလကဟာပဏ**။ ။ကဟ+အာပဏ၊ ပဏဓာတ်သည် ရောင်းဝယ်ခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ အာပဏိယတိ အနေနာတိ အာပဏော—ရောင်းဝယ်ကြောင်းငွေ၊ သက္ကတ၌ " ကရ်ိသ" သည် ပါဠိ၌ " ကရိသ "ဟု ဖြစ်၏၊ ထိုပုဒ်သည် ၁၆ ပဲ အတိုင်းအရှည်ကို ဟော၏၊ ဒေသလိုက်၍ ပဲ ၂၀ လည်း ဟောနိုင်ရာ၏၊ ထို့ကြောင့် "၁၆ ပဲ (ပဲ ၂၀ ) အတိုင်းအရှည်ရှိသော ရောင်းဝယ်ကြောင်းအရာ" ဟူသည် အသပြာ ( တကျပ် )ပင် တည်း၊ ကရိသနှင့် ကဟကို ပရိယာယ်ဟု ဆိုသင့်၏၊ အထော ကဟာပဏော နိတ္ထီ, ကထျတေ ကရိသာပဏော၊ (၄၇၁) [အဘိဓာန်။]

**နီလ**။ ။န + လေ၊ လေသဒ္ဒါသည် အပြစ်ကိုဟော၏၊ နတ္ထိ+လော ယဿာတိ နီလော၊ ကော် ဤပြု၍ " နီလ"ဟု ဖြစ်၏၊ နီလောစ + သော + ကဟာပဏောစာတိ နီလကဟာပဏော၊ ကဟာပဏလုပ်ရာ၌ အညစ်အကြေးကင်းသော ရွှေစင် တမတ်, ငွေစင်တမတ်,ကြေးနီ ၂ မတ်, ဤအားလုံးကိုပေါင်းစပ်၍ ဆိုင်ရာတံဆိပ်ခတ်နှိပ်လျက် လုပ်ရသည်–ဟု ပြသည်၊ ထိုသို့ အညစ်အကြေးစင်ကြယ်သော ရွှေ ငွေ ကြေးနီတို့ဖြင့် လုပ်ရသောကြောင့် "နီလကဟာပဏ"ဟု ခေါ်သည်။

ဟေမပါဒံ သဇ္ဈုပါဒံ, တမ္ဗပါဒဒွယံ ဟိ သော၊
မိဿေတွာ ရူပမဒ္ဒေတွာ, ကာတုံ သတ္တေသု ဒဿိတော။
လောတိ ဝုစ္စတေ ဒေါသော, နိဒ္ဒေါသတ္တာ တထီရိတော။

ဝသေန – ဖြင့်၊ ( ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ) ဥတ္တရေသံ - နီလကဟာပဏမှ တပါး ကုန်သော၊ ဒုဒြဒါမကာဒီနံ-ဒုဒြဒါမအသပြာအစရှိသည် တို့၏၊ ဝါ-ဒုဒြဒါမ အမည်ရသူသည် ပြုအပ်သော အသပြာအစရှိသည်တို့၏၊ ( ဝသေန – ဖြင့်၊ န ဝေဒိတဗ္ဗော-မသိထိုက်၊) ဟိ-ဆက်၊ တေန ပါဒေန–ဖြင့်၊ အတီတဗုဒ္ဓါပိ– ရှေးဘုရားရှင်တို့သည်လည်း၊ ပါရာဇိကံ- ကို၊ ပညပေသုံ – ပညတ်တော်မူကြ ကုန်ပြီ၊ အနာဂတာပိ-နောင်ဘုရားရှင်တို့သည်လည်း၊ ပညပေဿန္တိ-န်လတ္တံ့၊ ဟိ–မှန်၊ (တနည်း) ဟိ ယသ္မာ–ကြောင့်၊ သဗ္ဗဗုဒ္ဓါနံ–တို့၏၊ ပါရာဇိကဝတ္ထု မှိဝါ - ပါရာဇိကဝတ္ထု၌ဒုင်း၊ ပါရာဇိကေဝါ – ပါရာဇိက အာပတ်၌ဒုင်း၊ နာနတ္တံ – ထူးသည်၏အဖြစ်သည်၊ နတ္ထိ–မရှိ၊ [ပါရာဇိက အခဏ်းဖြစ်၍ ပါရာ ဇိကကို နာမည်တပ်သည်၊ သံဃာဒိသေသ် စသည်၌လည်း ဝတ္ထု – အာပတ် အထူး မရှိပါ၊ သို့သော် အာပတ်အားလုံး စုံအောင်ကား အကြောင်းမပေါ် လျှင် ပညတ်တော်မူကြမည်မဟုတ်။]ဣမာနေဝ စတ္တာရိ–၌မေထုန ဝိတ္တက္ကမ် စသော လေးပါးတို့သည်ပင်၊ ပါရာဇိကဝတ္ထူနိ – တို့တည်း၊ ဣမာနေဝ စတ္တာရိ – ၌မေထုန ပါရာဇိကစသော လေးပါးတို့သည်ပင်၊ ပါရာဇိကာနိ– ပါရာဇိကအာပတ်တို့တည်း၊ ဣတော–၌၄ပါးထက်၊ ဝါ-အောက်၊ ဥနံဝါ-

သော – ထို အသပြာကို၊ ဟေမပါဒံ – ရွှေတမတ်သားကိုဒုင်း ၊ပေ၊ မိဿေတွာ– ရော၍၊ ရူပံ–အရုပ်ကို၊ အပ္ပေတွာ-နှိပ်၍၊ ကာတုံ-၄ါ၊ သတ္ထေသု-အသပြာလုပ်နည်းကို ပြသောကျမ်းတို့၌၊ ဒဿိတော–ပြီ၊ပေ၊ နိဒ္ဒေါသတ္တာ–အပြစ်မရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ တထာ–ထို နီလဟူ၍၊ ဉ်ရိတော–ဆိုအပ်ပြီ။

**ဝိမတိ**။ ။ဝိမတိ ဋီကာ၌ကား –“ပေါရာဏသတ္တာနုရူပံ ဥပ္ပါဒိတော – ကဟာ ပဏ လုပ်နည်းကိုပြသော ရှေးကျမ်းအားလျော်စွာ ဖြစ်စေအပ် (ပြုလုပ်အပ်) သော၊ ဝိသတိမာသပ္ပမာဏ ဥတ္တမသုဝဏ္ဏဿနကော-ဝါ၂ဝ ပမာဏရှိသောကောင်းမြတ်သော ရွှေကို ထိုက်တန်သော၊ လက္ခဏ သမ္ပန္နော- အမှတ်တံဆိပ်နှင့်ပြည့်စုံသော ( ဒေါင်းရုပ်– မင်း၏ဦးခေါင်းရုပ်စသော တံဆိပ်ပါသော ) အသပြာကို၊ နီလကဟာပဏောတိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗော”= “ရွှေဒင်္ဂါးကို နီလကဟာပဏ”ဟု ဆိုလို၏၊ ထိုသို့ဆိုပြီးလျှင် “ပါဒ” ကိုလည်း“ ရွှေစင်တမတ် ”ဟု သတ်မှတ်လေသည်၊ ထိုအဆိုကို ဆရာမြတ်တို့ လက်မခံ ကြကုန်။ [“ဝါ ၂ဝ ကိုတကျပ်”ဟုဆိုသဖြင့် ထိုတကျပ်ကို ၂ဝ ပုံလျှင် တပုံကို“မာသက- တပဲ”ခေါ်သည်ဟုလည်း သိသာပြီ။]

**ဒုဒြဒါမကာဒီနံ**။ ။ဒုဒြဒါမေနနာမ ကေနစိ ဥပ္ပါဒိတော ဒုဒြဒါမကော=ဒုဒြဒါမ မည်သော တစုံတယောက်သည် ဖြစ်စေအပ်သော အသပြာသည်“ဒုဒြဒါမက”မည်၏၊ ( ဝိမတိ )၊ “ကေနစိ” ဟု ဆိုသောကြောင့် “ရာဇ” မဟုတ်ကြောင်း, အသပြာလုပ် နိုင်သော ခေါင်းဆောင်တယောက် ဖြစ်ကြောင်း သိသာ၏၊ ထို ဒုဒြဒါမက အသပြာ သည် နီလကဟာပဏ၏ ၃ ဆထိုက်တန်သတတ်။

အယုတ်အလျော့ သည်ငှင်း၊ အတိရေကံဝါ – အပိုအလွန်သည်ငှင်း၊ နတ္ထိ၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ ဘဂဝါဒိ - သည်လည်း ဓနိယံ-ကို၊ ဝိဂရဟိတွာ - ပြီး၍၊ ပါဒေနဝ - ဖြင့်သာလျှင်၊ ဒုတိယပါရာဇိကံ - ကို၊ ပညပေန္တော– လိုသည်၊ (ဟုတွာ)၊ ယောပန ဘိက္ခု အဒိန္နံ ထေယျသင်္ခါတန္တိအာဒိ – သင်္ခါတံ အစ ရှိသော သိက္ခာပုဒ်ကို၊ အာဟ–မူပြီ။

ဝေံ လျှင်၊ မူလစ္ဆေဇ္ဇဝသေန–သာသနာတော်၌ အမြစ်အရင်း ပြတ်ခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ဒဠှံ-မြဲသည်ကို၊ ကတွာ-၍၊ ဒုတိယပါရာဇိကေ-ကို၊ ပညတ္တေ-ပညတ်တော်မူအပ်ပြီးသော်၊ အပရံပိ – အခြားလည်းဖြစ်သော၊ အနုပညတ္တတ္ထာယ-နေ့ထပ်ပညတ်တော်မူခြင်း အကျိုးငှါ၊ ရဇကဘဏ္ဍိကဝတ္ထု- ရဇကဘဏ္ဍိက ဝတ္ထုသည်၊ ဥဒပါဒိ–ထင်ရှားဖြစ်ပြီ၊ တဿ-ထိုရဇကဘဏ္ဍိကဝတ္ထု၏၊ ဥပ္ပတ္တိ ဒီပနတ္ထံ-ဖြစ်ပုံကို ပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဧဝဉ္စိဒံ၊ပေ၊ ဟောတီတိ - ဟူသော၊ တော်-၌စကားကို၊ (သံဂီတိကာရေဟိ )၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တဿ- ထိုဧဝဉ္စိဒံ ဘဂဝတာ၊ပေ၊ဟောတိဟူသော စကားရပ်၏၊ အတ္ထော စ-ကိုငှင်း၊ အနုပညတ္တိသမ္ဗန္ဓော စ-အနုပညတ်၏ အနုသန္ဓေ ဆက်စပ်ပုံကိုငှင်း၊ ပဌမပါရာဇိကဝဏ္ဏနာယံ– ၌၊ ဝုတ္တနယေ နေဝ- ဖြင့်သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ စ–ဆက်၊ ဣဓ–ဤသိက္ခာပုဒ်၌၊ ( တဿ – ထိုစကားရပ်၏၊ အတ္ထော စ – ကိုငှင်း၊ အနုပညတ္တိ သမ္ဗန္ဓော စ– ကိုငှင်း၊ ပဌမပါရာဇိကဝဏ္ဏနာယံ-၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ-ဖြင့်သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗော ယထာ-ကဲ့သို့၊)ဧဝံ-တူ၊ ဣတော-ဤသိက္ခာပုဒ်မှ၊ ပရေသု-နောက်ဖြစ်ကုန်သော၊ သဗ္ဗသိက္ခာပဒေသု- တို့၌၊ [တဿ - ထိုစကား၏၊ အတ္ထော စ အနုပညတ္တိ သမ္ဗန္ဓော စ ပဌမပါရာဇိကဝဏ္ဏနာယံ ဝုတ္တနယေနေဝ ဝေဒိတဗ္ဗော၊] ဟိ(ယုတ္တံ)-

တဿတ္ထော ။ ။ ပဌမပါရာဇိက–မက္ကဋီဝတ္ထု ဖြစ်ပုံပြသော ပါဠိတော်အစ၌ "ဧဝဉ္စိဒံ၊ပေ၊ဟောတိ"ဟု ဤအတိုင်းပါ၏၊ ထိုဝါကျ၏အနက်ကိုလည်း " ဘဂဝတာ ဘိက္ခူနံ ဣဒံ သိက္ခာပဒံ ဧဝံ ပညတ္တံ ဟောတိစ၊ ဣဒဥ္စ အညံ ဝတ္ထု ဥဒပါဒိ"ဟု အဋ္ဌကထာဖွင့်ခဲ့၏၊ ထိုအဖွင့်ကို "တဿတ္ထော စ"ဟု ဆိုသည်။

အနုပညတ္တိ သမ္ဗန္ဓော စ။ ။ [ဋီကာ၌ "သမ္ဗန္ဓော စ"ဟု စပါသည်။] အနုပညတ် ဖြစ်ပုံကို ဆက်သွယ်ပြသော အနုသန္ဓေစကားကို " အနုပညတ္တိသမ္ဗန္ဓ " ဟု ဆိုသည်၊ ပဌမပါရာဇိက–မက္ကဋီဝတ္ထုကိုစ၍ ဖွင့်ပြသောအဋ္ဌကထာ၌ "ဣဒါနိ ယံတံ အညံ ဝတ္ထု ဥပ္ပန္နံ၊ တံ ဒဿေတုံ တေန ခေါပန သမယေနာတိ အာဒိမာဟ " ဟု အပရာနုသန္ဓေ ကျမ်းတက်ပုံကိုရည်ရွယ်၍ "အနုပညတ္တိသမ္ဗန္ဓော စ"ဟု ဆိုသည်။

ယထာ စ။ ။"ယထာ စ၊ပေ၊ သဗ္ဗသိက္ခာပဒေသု"၌ ယောဇနာ ရှိသည့်အတိုင်း သဗ္ဗသိက္ခာပဒေသုနောင် ဗိန္ဒုခတ်လျက် "အတ္ထော စ၊ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗော"ဟု ရှေ့ဝါကျမှ လိုက်စေ၍ အနက်ပေးခဲ့သည်၊ ထို့နောက် ယောဇနာ၌"ယံ ဟိတိ အာဒိ ဒဠှီကရဏ"

ဤသို့ မှာထားခြင်းသည် သင့်၏၊ ယံယံ-အကြင် အကြင်ပုဒ်ကို၊ (မယာ-သည်၊) ပုဗ္ဗေ – ၌၊ ဝုတ္တံ – ဖွင့်ဆိုအပ်ပြီ၊ ( ဖွင့်ဆိုခဲ့ပြီ )၊ တံတံ – ထိုထို ပုဒ်ကို၊ သဗ္ဗံ-အလုံးစုံကို၊ (ဝိသေသ-ကံ) ဝဏ္ဏေတွာ–၍၊ ဥပရူပရိ-အထက်အထက်၌၊ အပုဗ္ဗမေဝ–ရှေးမဟုတ်သော ပုဒ်ကိုသာ၊ ဝါ– အသစ်ဖြစ်သော ပုဒ်ကိုသာ၊ ဝဏ္ဏယိဿာမ – ဖွင့်ကုန်တော့အံ့၊ ဟိ –လဒ္ဓဒေါသ ထင်ရှားပြအံ့၊ (တနည်း) ဟိ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ယံယံ-အကြင်အကြင်ပုဒ်သည်၊ ဝုတ္တနယံ-ရှိ၏၊ တံတံ-ထိုထို ပုဒ်ကို၊ ပုနပိ–ထပ်၍လည်း၊ ယဒိ ဝဏ္ဏယိဿာမ – နံ့အံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ ကဒါ– ၌၊ ဝဏ္ဏနာယ- အဖွင့်၏၊ အန္တံ – အဆုံးသို့၊ ဂမိဿာမ - ရောက်ကုန်တော့အံ့နည်း၊ တသ္မာ- ကြောင့်၊ (ဖွင့်အပ်ပြီးပုဒ်တို့ကို ထပ်ဖွင့်လျှင် အဆုံးသို့ မရောက်နိုင်ခြင်းကြောင့်၊) ယံယံ- ပုဒ်ကို၊ပေ၊ သာဓုကံ–ကောင်းမွန်စွာ၊ ဥပသလ္လက္ခေတွာ–မှတ်သား၍၊ တတ္ထ တတ္ထ-ထိုထိုပုဒ်၌၊ အတ္ထော စ-ကိုင်ငင်း၊ ယောဇနာ စ– ပုဒ်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းကိုင်ငင်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ – ၏၊ ပန- ဆက်၊ အပုဗ္ဗံ – သော၊ ယံကိဉ္စိ – အမှတ်မရှိ တစုံတခုသောပုဒ်သည်၊ အနုတ္တာနတ္ထံ- မပေါ်လွင်သော အနက်ရှိ၏၊ တံသဗ္ဗံ – ထိုအလုံးစုံသောပုဒ်ကို၊ မယမေဝ - ငါတို့ကိုယ်တိုင်ပင်၊ ဝဏ္ဏယိဿာမ–ဖွင့်ကုန်အံ့။

ရဇကတ္ထရဏံ ဂတွာတိ-ကား၊ ရဇကတိတ္ထံ–ကဝါဆိပ်ကမ်းသို့၊ ဂတွာ-၍၊ ဟိ-မှန်၊ [(တနည်း) ဟိ(ကသ္မာ)- ကြောင့်၊ တံ – ထို ကဝါဆိပ်ကမ်းကို၊ ရဇကတ္ထရဏန္တိ–ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- နည်း၊]တံ – ထိုကဝါဆိပ်ကမ်းကို၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ တတ္ထ–ထိုကဝါဆိပ်ကမ်း၌၊ ရဇကာ-ကဝါသည်တို့သည်၊ ဝတ္ထာနိ–အဝတ်တို့ကို၊ အတ္ထရန္တိ – ဖြန့်လှန်းကြကုန်၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ (ကဝါသည်တို့၏ အဝတ်တို့ကို ဖြန့်လှန်းရာ၏အဖြစ်ကြောင့်၊) ရဇကတ္ထရဏန္တိ – ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ–၏၊ [ "အတ္ထရန္တိ ဧတ္ထာတိ အတ္ထရဏံ၊ အာပုဗ္ဗ+ထရ - ယု၊ ရဇကာနံ + အတ္ထရဏံ ရဇကတ္ထရဏံ " ဟု အစစ်ပြု၊ ] ရဇကဘဏ္ဍိကန္တိ - ကား၊ ရဇကာနံ - တို့၏၊ ဘဏ္ဍိကံ– ဘဏ္ဍာထုပ်ကို၊ [ဘဏ္ဍံ ဧတ္ထ အတ္ထီတိ ဘဏ္ဍိကံ၊] ရဇကာ-တို့သည်၊ သာယန္ဟသမယေ–၌၊ နဂရံ- သို့၊ ပဝိသန္တာ–ဝင်ခါနီးကုန်လသော်၊ ဗဟူနိ-န်သော၊ ဝတ္ထာနိ-တို့ကို၊ ဧကေကံ–တခုတခုသော၊ ဘဏ္ဍိကံ-ဘဏ္ဍာထုပ်ကို၊ ဝါ-ဘဏ္ဍာထုပ်ဖြစ်အောင်၊ ဗန္ဓန္တိ-ဖွဲ့ကြကုန်၏၊ တတော-ထို

ဟု ရှိ၏၊ ထိုအလို"ယံ ဟိ"ဟု ရှိသင့်၏၊ ဤဋီကာ၌ "ယံယံ"ဟု ဝိစ္ဆာလည်းသင့်သောကြောင့် ယံယံဟုပင်အနက်ပေးလိုက်သည်၊ ဒွိဇောတက ဟိသဒ္ဒါကား ကျန်ရှိသင့်၏၊ "ယံ ဝစနံ"ဟု ယောဇနာဖွင့်သော်လည်း "ပဒံ" စွဲခြင်းက သဘာဝကျသောကြောင့် အနုတ္တာနပဒနှင့်လိုက်အောင်"ပုဒ်"ဟု ဆိုလိုက်သည်။

ဘဏ္ဍာထုပ်တို့မှ၊ ဇေ-သော၊ ဘဏ္ဍိကံ-ကို၊ တေသံ - ထိုကဝါသည်တို့သည်၊ ပမာဒေန-ကြောင့်၊ ဝါ-အမှတ်တမဲ့ နေခြင်းကြောင့်၊ အပဿန္တာနံ - မမြင်ကုန်စဉ်၊ အဝဟရိတွာ-အယုတ်အားဖြင့် ဆောင်ယူ၍၊ ထေနေတွာ-ခိုး၍ကဲ၍၊ (အာရာမံ ဟရိတွာ ဘာဇေယုံ-၅စပ်၊) ဣတိ အတ္ထော-နက်။

ဂါမောနာမာတိ ဝေမာဒိ- ဂါမောနာမ ဤသို့ အစရှိသော စကားကို၊ ဂါမာဝါ အရညာဝါတိ ဧတ္ထ-ဝါဟူသော ဤပါဌ်၌၊ ဝုတ္တသာ-ဟောတော်မူအပ်ပြီးသော၊ ဂါမဿာစ-၏ပင်း၊ အရညဿစ-၏ပင်း၊ ပဘေဒ ဒဿနတ္တံ-အထူးအပြားကို ပြခြင်းအကျိုးငှါ၊(ဘဂဝတာ)၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တတ္ထ-ထို ဂါမော နာမ အစရှိသော ဝါကျ၌၊ မလယဇနပဒေ-မလယဇနပုဒ်၌၊ (ဧကော-တလုံးသော၊ ကုဋိ-အိမ်ငယ်သည်၊ အတ္ထိသေယျထာပိ- ရှိသကဲ့သို့၊ ဧဝံ- တူ၊) ယသ္မိံ ဂါမေ-၌၊ ဧကော ဝေ-သော၊ ကုဋိ-သည်၊ ဇေ-သော၊ ဂေဟံ-သည်၊(အတ္ထိ)၊ အယံ - ဤ ရွာသည်၊ ဧကကုဋိကော ဂါမောနာမ - ဧကကုဋိကဂါမ မည်၏၊ ဧတေန နယေန-ဖြင့်၊ အပရေပိ အခြားရွာတို့ကိုလည်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-နိ၏။

ယော-အကြင်ရွာသည်၊ သဗ္ဗသော-အလုံးစုံသောအခြင်းအရာအားဖြင့်၊ မနုဿာနံ - တို့၏၊ အဘာဝေန - မရှိခြင်းကြောင့်၊ ယက္ခပရိဂ္ဂဟဘူတော-ဘီလူးတို့ သိမ်းပိုက်အပ်သည် ဖြစ်၍ ဖြစ်၏၊ ( သောဝါ - ထို ရွာသည်ဝင်း၊ ) ယတော - အကြင် ရွာမှ၊ မနုဿာ - တို့သည်၊ ကေနစိ- သော၊ ကာရဏေန-အကြောင်းကြောင့်၊ ပုနပိ-လည်း၊ အာဂန္တုကာမာဝေ-ပြန်လာလိုကုန်သည် သာလျှင်၊(ဟုတွာ)၊ အပက္ကန္တာ - ဖဲသွားကုန်ပြီ၊ ( သောဝါ – သည်ဝင်း၊ ) အမနုဿောနာမ-အမနုဿဂါမမည်၏၊ပရိက္ခိတ္တောနာမ-ပရိက္ခိတ္တမည်သည်၊ ဣဋ္ဌကပါကာရံ - အုတ်တံတိုင်းကို၊ အာဒိံ ကတွာ – ၍၊ အန္တမသော – ဖြင့်၊ ကဏ္ဋကသာခါဟိပိ – ဆူးခက်တို့ဖြင့်လည်း၊ ပရိက္ခိတ္တော – ကာရံအပ်သော ရွာတည်း၊ဂေါနိသာဒိနိဝိဋ္ဌောနာမ-ဋ္ဌမည်သည်၊ ဝီထိ သန္နိဝေသာဒိဝသေန-လမ်းအားဖြင့် ကောင်းစွာတည်နေခြင်း အစရှိသည်တို့၏ အစွမ်းဖြင့်၊ အနိဝိသိတွာ – မတည်နေမူ၍၊ ဂါဝေါ– တို့သည်၊ တတ္ထ တတ္ထ - ထိုထို အရပ်၌၊

ယက္ခပရိဂ္ဂဟဘူတော။ ။ဤပါဌ်ဖြင့် လူမရှိရုံမက,ဘေးရန်မကင်းသော အမနုဿဂါမဖြစ်နေကြောင်းကိုပြ၏၊ တနည်း–ဤပါဌ်ဖြင့် ဘီလူး နတ်တို့၏မြို့ကိုပြ၏၊ ထိုနတ်မြို့လည်း ဘုံဗိမာန်များ မထင်ရှားသော်လည်း ဈေးစသည်က ထင်ရှား ( မြင်ရ ) လျှင် ဂါမတွင် ပါဝင်၍ ဝိကာလေဂါမပ္ပဝေသန စသည်၌ ပန်ပြောမှု စသည်ကို ပြုရမည် ဟု ဋီကာတို့ဆိုကြ၏။ [လူမရှိသောရွာကို "နတ္ထိ+မနုဿာ ဧတ္ထာတိ အမနုဿော၊ အမနုဿောစ+သော+ဂါမောစာတိ အမနုဿဂါမော" ဟု ပြု။]

ဒွတ္တယော–၂ ကောင် ၃ ကောင်တို့သည်၊ (ဟုတွာ)၊ နိသီဒန္တိယထာ- ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ တတ္ထ တတ္ထ-အရပ်၌၊ ဒွတ္တိဃာ–၂ အိမ် ၃ အိမ် ကုန်သော၊ ဃရာနိ–တို့ကို၊ ကတွာ–၍၊ နိဝိဋ္ဌော-တည်နေစေအပ်သော ရွာတည်း။

သတ္တောတိ-ကား၊ ဧဿသတ္တ သကငှသတ္တာဒိသု- ခြေကုန်သည် အပေါင်း လှည်းကုန်သည် အပေါင်း အစရှိသည်တို့တွင်၊ ယောကောစိ – အမှတ် မရှိ တစုံတခုသော ကုန်သည်အပေါင်းတည်း၊ စ- ဆက်၊ ဣမသ္မိံ သိက္ခာပဒေ-၌၊ နိဂမောပိ– ကိုငင်း၊ နဂရမ္ပိ– ကိုငင်း၊ ဂါမဂ္ဂဟဏေနေဝ-ဂါမသဒ္ဒါဖြင့်ပင်၊ ဂဟိတံ-ယူအပ်ပြီ၊ ဣတိ–သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ – ၏၊ ဂါမူပစာရောတိအာဒိ – ရော အစရှိသော စကားကို၊ အရညပရိစ္ဆေဒ ဒဿနတ္ထံ-တော၏ အပိုင်းအခြားကို ပြခြင်းအကျိုးငှါ၊ (ဘဂဝတာ) ဝုတ္တံ-ပြီ။

ဣန္ဒခိလေ ဌိတဿာတိ – ကား၊ အနုရာဓပုရဿ-အနုရာဓမြို့၏၊ ဒွေ–၂ ခု ကုန်သော၊ ဣန္ဒခိလာ-တံခါးခုံတို့သည်၊ အတ္ထိ ဣဝ–ရှိကုန်သကဲ့သို့၊ (တထာ–တူ၊) ယဿဂါမဿ–၏၊ ဒွေ-န်သော၊ ဣန္ဒခိလာ-တို့သည်၊ (အတ္ထိ)၊ တဿ-ထိုရွာ၏၊ အဗ္ဘန္တရိမေ-အတွင်း၌ဖြစ်သော၊ ဣန္ဒခိလေ-၌ဌိတဿ-တည်သော၊ (“မဇ္ဈိမဿ-အားစွမ်းအားဖြင့် အလယ် အလတ်၌ဖြစ်သော၊ ပုရိသဿ-၏” ဟု ပါဠိတော်၌စပ်။) ဟိ-ချဲ့၊ တဿ-ထိုရွာ၏၊ ဗာဟိရော-ပြင်ဘက်၌ဖြစ်သော၊ ဣန္ဒခိလော– သည်၊ အာဘိဓမ္မိကနယေန – အဘိဓမ္မာ၌ လာသောနည်းဖြင့်၊ အရညသင်္ခေပ်–တော၌ ထည့်သွင်းအပ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ဝါ– တောဟူသော အရေအတွက်သို့၊ ဂစ္ဆတိ–၏၊ ပန-ကား၊ ယဿ-ရွာ၏၊ ဧကော-သော၊ (ဣန္ဒ

**ဂေါနိ သာဒိ နိဝိဋ္ဌော**။ ။နိသီဒနံ–နေခြင်း၊ နိသာဒေါ–ခြင်း၊ [နိပုဗ္ဗ, သဒ–ဏ။] ဂုန္နံ+နိသာဒေါ ဂေါနိသာဒေါ၊ ဂေါနိသာဒေါဝိယာတိ ဂေါနိသာဒေါ၊ နွားတို့၏ နေခြင်းနှင့်တူသော နေခြင်း၊ ဂေါနိသာဒေါ ယဿာတိ ဂေါနိသာဒီ၊ နိဝိသီယတေ–တည်နေစေအပ်၏၊ ဣတိ နိဝိဋ္ဌော၊ ဂေါနိသာဒီစ+သော+နိဝိဋ္ဌောစာတိ ဂေါနိသာဒိ နိဝိဋ္ဌော။

**ဂါမူပစာရောတိ အာဒိ** ။ ။ သိက္ခာပုဒ်၌ “ ဂါမာဝါ အရညာဝါ”ဟု ရှိသော ကြောင့် ပဒဘာဇနီ၌ ဂါမကိုဖွင့်ပြီးလျှင် အရညကိုသာ ဖွင့်ထိုက်သည်မဟုတ်ပါလော၊ အဘယ့်ကြောင့် “ဂါမူပစာရော စသောစကားကို မိန့်ရပါသနည်း ”ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ “ဂါမူပစာရောတိ အာဒိ၊ပေ၊ဝုတ္တံ”ဟု မိန့်သည်၊ ဂါမူပစာရကို မပြလျှင် ဂါမမဟုတ်သမျှ အရပ်ကို“အရည”ဟု ထင်မှားဘွယ်ရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် ဂါမူပစာရလည်း အရညမဟုတ်, ဂါမူပစာရ ပြင်ဘက်ရောက်မှ အရညခေါ်သည် ဟု အရညအပိုင်းအခြားကို ပြခြင်းငှါ “ ဂါမူပစာရော ” စသော စကားကို ပဒဘာဇနီ၌ မိန့်တော်မူအပ်သည် – ဟူလို။ [သိက္ခာပုဒ်၌ကား ဂါမူပစာရကို ဂါမ၌သွင်းထားသည်။]

ခိလော-သည်၊ အတ္ထိ)၊ တဿ-ရွာ၏၊ ဂါမဒွါရဗာဟာနံ- ရွာတံခါးဘောင်တို့၏၊ ဝေမဇ္ဈေ -အလယ်၌၊ ဠိတဿ- သော၊ (မဇ္ဈိမဿ ပုရိသဿ၊) ဟိ-မှန်၊ ယတြာပိ – အကြင်ရွာ၌လည်း၊ ဣန္ဒခိလော– သည်၊ နတ္ထိ၊ တတြ- ရွာ၌၊ ဂါမဒွါရဗာဟာနံ-တို့၏၊ ဝေမဇ္ဈမေဝ-အလယ်အရပ်ကိုသာ၊ ဣန္ဒခိလောတိ-ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ-၏၊ တေန- ကြောင့်၊ ဂါမဒွါရဗာဟာနံ မဇ္ဈေ ဠိတဿာတိ-ဟူ၍၊ (မယာ) ဝုတ္တံ-ပြီ၊

မဇ္ဈိမဿာတိ – ကား၊ ထာမမဇ္ဈိမဿ - အားအစွမ်းအားဖြင့် အလယ်အလတ်၌ ဖြစ်သော၊ နေဝ ပမာဏမဇ္ဈိမဿ – ပမာဏအားဖြင့် အလယ်အလတ်၌ဖြစ်သူမဟုတ်သော၊(ပုရိသဿ-၏၊)နေဝအပ္ပထာမဿ-နည်းသောအားရှိသူလည်းမဟုတ်သော၊ န မဟာထာမဿ-ကြီးသောအား ရှိသူလည်းမဟုတ်သော၊ မဇ္ဈိမထာမဿ - အလယ် အလတ်၌ဖြစ်သော အားရှိသော၊ (ပုရိသဿ-၏၊)ဣတိ ဝုတ္တံ ဟောတိ၊ [နေဝ ပမာဏမဇ္ဈိမဿ၌ မူလသံဝဏ္ဏနာပြီး၏၊ နေဝ၊ပေ၊ဝုတ္တံ ဟောတိ- ကား၊ ဥဇုကတ္ထကိုပြသော အနုသံဝဏ္ဏနာတည်း။ ] လေဍ္ဍုပါတောတိ - ကား၊ မာတုဂါမော - သည်၊ ကာကေ - ကျီးတို့ကို၊ ဥဋ္ဌာပေန္တော - ထစေလသော်၊ ဝါ - ပုံစေလသော်၊ ဥဇုကမေဝ – ဖြောင့်စွာသာလျှင်၊ ဟတ္ထံ- ကို၊ ဥက္ခိပိတွာ–မြှောက်၍၊ လေဍ္ဍုံ- ခဲကို၊ ခိပတိယထာ-ပစ်သကဲ့သို့ငှင်း၊ ဥဒကုက္ခေပေ-ဥဒကုက္ခေပသိမ်၌၊ ဥဒကံ- ကို၊ ခိပန္တိ ယထာစ- ပစ်ကုန်သကဲ့သို့ငှင်း၊ ဧဝံ - ဤ့အတူ၊ အခိပိတွာ-မပစ်မူ၍၊ တရုဏ မနုဿာ – လူငယ်တို့သည်၊ ဝါ – လူပျိုတို့သည်၊ အတ္တနော - ၏၊ ဗလံ - ကို၊ ဒဿေန္တာ- ပြကုန်လသော်၊ [“ဒဿေန္တာ-ပြလိုကုန်သည်၊ ဟုတွာ”ဟုလည်းပေး။ ] ဗာဟံ – လက်မောင်းကို၊ ပသာရေတွာ – ဆန့်တန်း၍၊ လေဍ္ဍုံ- ကို၊ ခိပန္တိယထာ–ပစ်ကုန်သကဲ့သို့ငှင်း၊ ဧဝံ- ဤ့အတူ၊ ခိတ္တဿ- ပစ်အပ်သော၊ လေဍ္ဍုဿ– ၏၊ ပတနဋ္ဌာနံ– ကျရာ အရပ်တည်း၊ ပန- ဗျတိရိက်ကား၊ ပတိတော-ကျပြီးသောခဲသည်၊ လုဠိတွာ-လိမ့်၍၊ ယတ္ထ-အကြင်အရပ်သို့၊ ဂစ္ဆတိ-သွား၏၊ တံ-ထိုအရပ်ကို၊ န ဂဟေတဗ္ဗံ-မယူရာ၊

ပန – ကား၊ အပရိက္ခိတ္တဿ ဂါမဿ၊ပေ၊ လေဍ္ဍုပါတောတိ ဧတ္ထ – ၌၊ နိဗ္ဗကောသဿ-တံစက်မြိတ်၏၊ [နိဗ္ဗ တု ဆဒ္ဒကောဋိယံ(အဘိဓာန်-၂၁၇)။]

တတြ၊ပေ၊ဝုစ္စတိ။ ။ရွာတံခါးဘောင်၏အလယ်အရပ်ကို( တံခါးခုံမရှိသော်လည်း တံခါးခုံတပ်ရာ အရပ်ဖြစ်သောကြောင့်) ဌာနျူပစာရအားဖြင့်“ဣန္ဒခိလ”ဟု ခေါ်ပါ-ဟူလို။ [ ဝုစ္စတိ ဝုတ္တံ,နာမံပရိယာယ,ရှိလေကမှ,ဥပစာ။ ] ဒွါရဗာဟာလည်း မရှိပြန်လျှင် ရွာစည်းနှစ်ဘက်အစွန်း၏ အလယ်ကို “ဣန္ဒခိလ”ဟု ခေါ်ရသည်။

ဥဒက ပါတဋ္ဌာနေ-၌၊ ဋ္ဌိတသ–သော၊ မဇ္ဈိမဿ–သော၊ ပုရိသဿ–၏၊ သုပ္ပ ပါတော ဝါ– မန်း ( စကော ) ကျရာအရပ်သည်၎င်း၊ မုသလပါတော ဝါ– ကျည်ပွေ့ကျရာ အရပ်သည်၎င်း၊ ယတ္ထုပစာရေနာမ– ရ မည်၏၊ တသ္မိံ ယတ္ထု ပစာရေ-ထိုအိမ်၏ဥပစာ၌၊ဋ္ဌိတဿ-တည်သောယောကျ်ား၏၊ခေလ္ဍုပါတော-ခဲကျရာအရပ်သည်၊ ဂါမုပစာရော-ရမည်၏၊ ဣတိ–သို့၊ ကုရုန္ဒ ဋ္ဌကထာယံ–ကုရုန္ဒီ အဋ္ဌကထာ၌၊ဝုတ္တံ-ပြီ၊မဟာပစ္စရိယမ္ပိ-မဟာပစ္စရီ အဋ္ဌကထာ၌လည်း၊ တာဒိသ မေဝ–ထိုကဲ့သို့ ရှုအပ်သည်သာ။ [ထိုအတိုင်းဆိုသည်–ဟူလို။]

ပန–ဝါဒန္တရကား၊ မဟာ အဋ္ဌကထာယံ-၌၊(ထပေတွာ,ဝုတ္တံ-တို့၌စပ်၊) ဃရံနာမ-အိမ်မည်သည်၊ (အတ္ထိ)၊ ဃရူပစာရော နာမ-အိမ့်ဥပစာမည်သည်၊ ( အတ္ထိ )၊ ဂါမောနာမ ( အတ္ထိ )၊ ဂါမူပစာရော နာမ ( အတ္ထိ )၊ ဣတိ-သို့၊ မာတိကံ-မာတိကာ ၄ ချက်ကို၊ ထပေတွာ-၍၊ နိဗ္ဗကောသဿ-တံစက်မြိတ်၏၊ ဥဒက ပါတဋ္ဌာနဗ္ဘန္တရံ – ရေကျရာအရပ်၏ အတွင်းအရပ်သည်၊ ဃရံနာမ–ဃရမည်၏၊ ပန-ကား၊ ဒွါရေ-အိမ်တံခါး၌၊ ဋ္ဌိတော–သော၊ မာတုဂါမော–သည်၊ ယံ ဘာဇနဓောဝန ဥဒကံ-အကြင် ခွက်ဆေးရေကို၊ ဆဍ္ဍေတိ-စွန့်၏၊ တဿ- ထို ခွက်ဆေးရေ၏၊ ပတနဋ္ဌာနဥ္စ-ကျရာအရပ်သည်၎င်း၊ မာတုဂါမေ နေဝ- သည်ပင်၊ အန္တောဂေဟေ - အိမ်တွင်း၌၊ [ဆင်ဝင်၏ အတွင်းကျသော အရပ်ကို "အန္တောဂေဟ"ဟု ဆိုသည်၊ ]ဋ္ဌိတေန-တည်လျက်၊ ပကတိယာ–ပင်ကိုယ်အားဖြင့်၊ [အားစွမ်းပြခြင်း မဟုတ်-ဟူလို၊]ဗဟိ-သို့၊ ခိတ္တဿ-သော၊ သုပ္ပဿဝါ– ၏သော်၎င်း၊ သမ္မုဉ္စနိယာ ဝါ - တံမြက်စည်း၏ သော်၎င်း၊ ပတန ဋ္ဌာနဥ္စ-ကျရာ အရပ်သည်၎င်း၊ [ဤ ၂ ဝါကျဖြင့် ဝင်းအကာမရှိသော အိမ်၏ ဥပစာကိုပြ၏၊] ဃရဿ- ၏၊ ပုရတော- ရှေ့မျက်နှာသာ၌၊ ဋ္ဌိသု-၂ခု ကုန်သော၊ ကောဏေသု- အထောင့်တို့၌၊ သမ္ဗန္ဓိတွာ- ဆက်စပ်၍၊ မဇ္ဈေ - ၌၊ ရုက္ခသူစိဒွါရံ-သစ်ကျည်လျှိုတံခါးကို၊ ထပေတွာ-၍၊ ဂေါရူပါနံ-နွားအပေါင်း တို့၏၊ ပဝေသန နိဝါရဏတ္ထံ – ဝင်ခြင်းကို တားမြစ်ခြင်း အကျိုးငှါ၊ ကတ ပရိက္ခေပေါစ-ပြုအပ်သော အကာအရံသည်၎င်း၊ (အတ္ထိ)၊ အယံသဗ္ဗောပိ–

ဃရဿ၊ပေ၊ပရိက္ခေပေါစ။ ။ဤဝါကျဖြင့် ဝင်းအကာရှိသောအိမ်၏ ဥပစာကို ပြ၏၊ များသောအားဖြင့် ဝင်းတံခါးကို ရှေ့မျက်နှာသာ ထောင့်မှာ တပ်လေ့ရှိသော ကြောင့် "ပုရတော ဋ္ဌိသု ကောဏေသု"ဟု ဆိုသည်၊ ထိုသို့တပ်မှ နေရာလည်း ကျယ်, အထွက်အဝင်လည်း လွယ်ကူသည်၊ အလယ် သစ်တိုးတန်း၍ ထိုသစ်တိုးကို အပေါက် ဖေါက်ပြီးလျှင် သစ်သားချောင်း, သို့မဟုတ် ဝါးဟူသော အကျည်ကို လျှိုထားသော တံခါးကို "ရုက္ခသူစိဒွါရ"ဟု ခေါ်သည်။

၌အလုံးစုံသော အရပ်သည်လည်း၊ ဃရူပစာရော နာမ- မည်၏၊ တသ္မိံ ဃရူ ပစာရေ– ထို အိမ်ဥပစာ၌၊ [ရွာတွင် အစွန်ကျသော အိမ်၏ဥပစာ– ဟူလို၊] ဌိတဿ-သော၊ မဇ္ဈိမဿ-အားအစွမ်းအားဖြင့် အလယ်အလတ်၌ဖြစ်သော၊ ပုရိသဿ-၏၊ လေဍ္ဍုပါတဗ္ဘန္တရံ– ခဲတကျ၏ အတွင်းအရပ်သည်၊ ဂါမော နာမ-မည်၏၊တတော- ထို ပဌမခဲတကျမှ၊ အညဿ-သော၊ လေဍ္ဍုပါတဿ- ဒုတိယ ခဲတကျ၏၊ အဗ္ဘန္တရံ-အတွင်းအရပ်သည်၊ ဂါမူပစာရောနာမ-မည်၏၊ ဣတိ-သို့၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊

ဧတ္ထ-၌ အပရိက္ခိတ္တဿ ဂါမဿ အစရှိသောပါဠိရပ်၌၊ ဣမံ-၌ မဟာ အဋ္ဌကထာ စကားသည်၊ ပမာဏံ – နှိုင်းယှဉ်ကြောင်း စကားတည်း၊ ဝါ- လိုရင်းစကားတည်း၊ စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ- ၌အပရိက္ခိတ္တဿ ဂါမဿအစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ (ဣဒံ-သည်၊ ပမာဏံ-သည်၊ ဟောတိ ယထာ-ကဲ့သို့၊) ဧဝံ-တူ၊ သဗ္ဗတ္ထ–အလုံးစုံသောရှေ့နောက်ပါဠိရပ်တို့၌၊ ယော အဋ္ဌကထာဝါဒေါဝါ- အကြင် အဋ္ဌကထာ ဝါဒကိုသော်၎င်း၊ ယော ထေရဝါဒေါဝါ-ကိုသော်၎င်း၊ ပစ္ဆာ – ၌၊ ဝုစ္စတိ – ၏၊ သော - ထို နောက်၌ဆိုအပ်သော ဝါဒကို၊ ပမာဏ တော–ပမာဏအားဖြင့်၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗော–၏။ [" သော " ဟု နိယာမ တချက်သာ ရှိသောကြောင့်၎င်း, သဗ္ဗတ္ထ- ဟု ပါပြီးသောကြောင့်၎င်း "ယော ယော"ဟု ဝိစ္ဆာ မရှိသင့်၊ ဝိကာလေဂါမပ္ပဝေသန စသော သိက္ခာပုဒ်တို့၌ မဟာ အဋ္ဌ ကထာစကားကို အတိုင်းအတာလုပ်ရမည်ဖြစ်ခြင်းကြောင့် " ပမာဏ " ဟု ဆိုသည်၊ပမီယတေ အနေနာတိ ပမာဏံ=နှိုင်းယှဉ်တိုင်းတာကြောင်းစကား။]

စ-ဆက်၊ ယံ ဧတံ-အကြင်သို့သော ၌ စကားကို၊ မဟာအဋ္ဌကထာယံ- ၌၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တံ -ထို စကားသည်၊ ပါဠိယာ-နှင့်၊ ဝိရုဒ္ဓမိဝ-ဆန့်ကျင်သကဲ့သို့၊ ဒိဿတိ - ထင်ရ၏၊ ဟိ - မှန်၊ (တနည်း) ဟိ ယသ္မာ - ကြောင့်၊ ပါဠိယံ-၌၊ ဃရူပစာရေ၊ပေ၊လေဍ္ဍုပါတောတိ–ဟူ၍၊ ဧတ္တကမေဝ-၌မျှလောက်ကိုသာ၊ ဝုတ္တံ – ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊ အဋ္ဌကထာယံ ပန– မဟာအဋ္ဌကထာ၌ကား၊

ယဉ္စေတံ။ ။"ယဉ္စေတံ၊ပေ၊ဝုတ္တောတိ"ဟူသောစကားသည် စောဒကတယော် ယောက်၏ စောဒနာပုံကို ပြသောစကားတည်း၊ ပါဠိတော်၌ "ဃရူပစာရေ ဋ္ဌိတဿ မဇ္ဈိမဿ ပုရိသဿ လေဍ္ဍုပါတော " ဟု သာရှိ၏၊ ထိုလေဍ္ဍုပါတကို " ဂါမ " ဟု မိန့်တော်မူအပ်သောစကားမရှိ၊ " ဂါမူပစာရောနာမ " ဟု စတည်ခဲ့သောကြောင့် ထို လေဍ္ဍုပါတသည် ဂါမူပစာရသာဖြစ်သင့်၏၊ သို့ပါလျက် မဟာအဋ္ဌကထာ၌ ထိုလေဍ္ဍု ပါတကို ဂါမ ဟု ဆိုထားသဖြင့် ပါဠိတော်နှင့် ဆန့်ကျင်သကဲ့သို့ ထင်ရသည် – ဟူလို။ [ဧတ္တကမေဝ၌ ဧဝဖြင့်"ဂါမောနာမ"မပါဟု ကန့်။]

**တံ** လေဍ္ဍုပါတံ–ထို ခဲတကျအရပ်ကို၊ ဂါမသင်္ခေပံ-ရွာ၌သွင်းယူအပ်သည်ကို၊ ကတွာ-ရ၍၊ တတော- ထို ခဲတကျမှ၊ ပရံ- ၌၊ ဂါမူပစာရော–ကို၊ ဝုတ္တော–ပြီ၊ ဣတိ–ကြောင့်၊(ဝိရုဒ္ဓမိဝ-သို့၊ ဒိဿတိ–၏၊) ပရိဟာရော- ကို၊ မယာ–သည်၊ ဝုတ္တော၊ ပါဠိယံ–၌၊ ဝုတ္တံ–ဟောတော်မူအပ်သည်ကား၊ သစ္စမေဝ–အမှန်ပင်တည်း၊ ပန– ထိုသို့ပင် မှန်ပါသော်လည်း၊ ဧတ္ထ – ဤ ဃရူပစာရေ ဌိတဿ အစရှိသော ပါဠိရပ်၌၊ အဓိပ္ပါယော – ဘုရားရှင်၏ အလိုတော်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော - ၏၊ သောစ – ထို ဘုရားရှင်၏ အလိုတော်ကိုလည်း၊ အဋ္ဌကထာစရိယာနမေဝ – ရှေးအဋ္ဌကထာ ဆရာတို့သည်သာ၊ ဝိဒိတော - သိအပ်ပြီ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ဃရူပစာရေ ဌိတဿာတိ ဧတ္ထ-၌၊ ဃရူပစာရလက္ခဏံ–ဃရူပစာရ၏အမှတ်အသားကို၊ ပါဠိယံ-၌၊ အဝုတ္တံ–တိုက်ရိုက် မဟောအပ်သည်၊ (သမာနံပိ- သော်လည်း၊ ) အဋ္ဌကထာယံ - ၌၊ ဝုတ္တဝသေန – ဆိုအပ်သော စကား၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဂဟိတံ ယထာ–ကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊ သေသမ္ပိ- ကြွင်းသော ဂါမူပစာရလက္ခဏာကိုလည်း၊ ဂဟေတဗ္ဗံ - ၏။ [ သေသမ္ပီတိ- ဂါမူပစာရလက္ခဏံ သန္ဓာယ ဝဒတိ၊ ဃရူပစာရလက္ခဏာမှကြွင်းသော အပရိက္ခိတ္တဂါမ၏ ဂါမူပစာရလက္ခဏာကိုလည်း–ဟူလို။]

တတြ-ထို ဂါမူပစာရကို ယူခြင်း၌၊ [တသ္မိံ ဂါမူပစာရဂ္ဂဟဏေ] အယံ-ကား၊ နယော - သိကြောင်းနည်းတည်း၊ ဣဓ – ဤ ဂါမာဝါ အရညာဝါ ဟူသော ပါဠ်၌၊ ဂါမော နာမ-ဂါမမည်သည်၊ ပရိက္ခိတ္တောစ- ပရိက္ခိတ္တ ဂါမ ၄င်း၊အပရိက္ခိတ္တောစ–၄င်း (ဣတိ) ဒုဝိဓော ဟောတိ၊ တတြ-ထို ၂မျိုးတို့တွင်၊ **ပရိက္ခိတ္တ**ဿ–ကာရံအပ်သော ရွာ၏၊ ပရိက္ခေပေါယေဝ - အကာအရံသည်ပင်၊ ပရိစ္ဆေဒေါ-အပိုင်းအခြားတည်း၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊တဿ-ထို ပရိက္ခိတ္တဂါမ၏၊ ဝိသုံ - သီးခြား၊ ပရိစ္ဆေဒံ–ကို၊ အဝတွာ - ဟောတော် မမူဘဲ၊ ဂါမူပစာရော နာမ၊ပေ၊လေဍ္ဍုပါတောတိ–ဟူ၍၊ ပါဠိယံ–၌၊ ဝုတ္တံ-ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊ ပန-ကား၊ အပရိက္ခိတ္တဿ-သော၊ ဂါမဿ-၏၊ ဂါမပရိစ္ဆေဒေါ-ရွာ့အပိုင်းအခြားကို၊ ဒဿေတဗ္ဗော-မိန့်တော်မူထိုက်၏၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ တဿ-ထို အပရိက္ခိတ္တဂါမ၏၊ ဂါမပရိစ္ဆေဒဒဿနတ္ထံ–၄ါ၊ အပရိက္ခိတ္တဿ ဂါမဿ ၊ပေ၊လေဍ္ဍုပါတောတိ – ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ–ပြီ၊ စ - ဆက်၊ ဂါမပရိစ္ဆေဒေ – ကို၊ ဒဿိတေ-ပြတော်မူအပ်ပြီးသော်၊ ဂါမူပစာရလက္ခဏံ–ကို၊ ပုဗ္ဗေ - ၌၊ ဝုတ္တ

**ဃရူပစာရလက္ခဏံ**။ ။"ဃရူပစာရ"နာမည်ပါသော်လည်း "မည်သည့်အရပ်မှ စ၍ မည်သည့် အရပ်တိုင်အောင် ဃရူပစာရခေါ်သည် " ဟု ဃရူပစာရ၏ အမှတ်အသား မပါသည်ကို"ပါဠိယံ အဝုတ္တံပိ"ဟု ဆိုသည်။

နယေနေဝ–သာ၊ ဉာတုံ-ငှါ၊ သက္ကာ - တတ်ကောင်းပြီ၊ [ " ပရိက္ခိတ္တ ဂါမ၏ ဥပစာ၌ ဆိုအပ်ပြီးသောနည်းအတိုင်း ဒုတိယ ခဲတကျကို ဂါမူပစာရ ဟု သိနိုင်လောက်ပြီ" ဟူလို၊] ဣတိ- ကြောင့်၊ ပုန–ဖန်၊ တတ္ထ ဌိတဿ ၊ ပေ ၊ လေဍ္ဍုပါတောတိ-ဟူ၍၊ န ဝုတ္တံ-ဟောတော်မမူအပ်၊ (ဣတိ အယံ-ကား၊ နယော-တည်း၊) [ တတ္ထ–ထို ဂါမ၌၊ ဌိတဿ-သော၊ မဇ္ဈိမဿ- အားစွမ်းအားဖြင့် အလယ်အလတ်၌ ဖြစ်သော၊ ပုရိသဿ- ၏၊ လေဍ္ဍုပါတော - သည်၊ (ဂါမူပစာရောနာမ-ရမည်၏၊ ) ဤ နဝုတ္တံ၏ နောက်၌ " တတြာယံ နယော " ကို ပြန်၍အုပ်ဘိုရာ ပရိသမာပနတ္ထ ဣတိသဒ္ဒါ ပါသင့်၏၊ မပါလျှင် ထည့်၍ပေးရမည်၊ ထို နယ ဟူသည်လည်း တိုက်ရိုက်မဟောဘဲ ပြီးနိုင်သော အဝုတ္တသိဒ္ဓိ နည်းတည်း။]

ပန – ဆက်၊ ယော - အကြင်ဆရာသည်၊ ဃရူပစာရေ - ၌၊ ဌိတဿ – တည်သောယောကျ်ား၏၊ လေဍ္ဍုပါတံယေဝ - ခဲတကျကိုပင်၊ ဂါမူပစာရော တိ-ဟူ၍၊ ဝဒတိ-ဆို၏၊ [ကုရုန္ဒီအဋ္ဌကထာဆရာ, မဟာပစ္စရီအဋ္ဌကထာဆရာ တို့ကို စောင်းသောစကား၊ ] တဿ- ထိုဆရာ၏၊ (ဝါဒေ – အယူဝါဒ၌၊)ဃရူပစာရော-သည်၊ ဂါမော - ဂါမမည်၏၊ ဣတိ(အဗ္ဘော) – ဤ အနက်သည်၊ အာပဇ္ဇတိ – ဖြစ်၏၊ [ကံ မရှိသောကြောင့် " ရောက်၏ " ဟု မပေးလင့်၊] တတော-ထိုသို့ဖြစ်ခြင်းကြောင့်၊ ဃရံ-ငှင်း၊ပေ၊ ဂါမူပစာရော-ငှင်း၊ ဣတိ-သို့၊ သေ ဝိဘာဂေါ – ဤ ဝေဘန်အပ်သော အထူးသည်၊ သံကိရတိ - ရောနှောရှုပ်ထွေး၏၊ ဝိကာလေဂါမပ္ပဝေသနာဒိသု–သနအစရှိသော သိက္ခာပုဒ်တို့၌၊ ဝါ-ပုဒ်တို့အတွက်၊ ဧတ္ထ – ဤဃရ, ဃရူပစာရ, ဂါမ, ဂါမူပစာရတို့၌၊ အသံကိရတောစ – မရောနှောသော အားဖြင့်လည်း၊ ဝိနိစ္ဆယော - ကို၊ ဝေဒိ

သကိရတိ ။ ။ သံကိလ္လောပုဒ်၌ သံပုဗ္ဗ ကိ-ရဓာတ်သည် ရောနှောခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ ဤ၌လည်း သံပုဗ္ဗ ကိရဓာတ်ဖြင့် "သံကိရတိ=သင်္ကိရတိ" ဟု ရှိသောကြောင့် "မိဿယတိ" ဟု သာရတ္ထဖွင့်သည်၊ မိဿဓာတ် စုရာဒိဂဏယပစ္စည်း ဖြစ်၍ "မိဿယ" ဟု ပါဌ်မှန်ရှိစေ၊ နောက်၌လည်း "အသင်္ကိရတော" ဟု ရှိစေ။

ဝိကာလေ၊ပေ၊ဒီသု။ ။ ဝိကာလေ ဂါမပ္ပဝေသန သိက္ခာပုဒ်၌ "ပရိက္ခိတ္တဂါမ၏ အကာကိုလွန်လျှင်ငှင်း, အပရိက္ခိတ္တဂါမ၏ ဥပစာသို့ သက်ရောက်လျှင်ငှင်း ပါစိတ်" ဟု ပညတ်တော်မူသောကြောင့် ထို သိက္ခာပုဒ်များအတွက် ဂါမနှင့် ဂါမူပစာရကို မရော အောင် ဆုံးဖြတ်ထားဘို့ အရေးကြီးသည်– ဟူလို၊ အာဒိဖြင့် ဃရ, ဃရူပစာရ, ဂါမ, ဂါမူပစာရတို့၌ဖြစ်သော သံဃိကလာဘ်ကို ဝေဘန်ခြင်းစသော ကိစ္စကိုယူပါ၊ "ဃရ၌ ဖြစ်သောလာဘ်ကို ထိုဃရ၌တည်သော ရဟန်းတို့သာ ဝေဘန်၍ယူနိုင်၏ " စသည်၌ လည်း ဃရစသည်ကို ကွဲကွဲပြားပြား ဆုံးဖြတ်ပြီးဖြစ်ဘို့ အရေးကြီးသည်–ဟူလို။

တမ္ဗော-၏၊ တသ္မာ - ကြောင့်၊(ဝိကာလေ ဂါမပ္ပဝေသနအစရှိသော သိက္ခာပုဒ်တို့အတွက် မရောန္နေ့သောအားဖြင့် အဆုံးအဖြတ်၏သိထားထိုက်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) ပါဠိဒ္ဓ-ကိုရင်း၊ အဋ္ဌကထဋ္ဌ-ကိုရင်း၊ သံသန္ဒိတွာ- နှီးနှောရ၍၊ ဝိတ္ထာနယေနေဝ – ဖြင့်သာ၊ ဧတ္ထ - ဤ ဂါမာဝါ အရညာဝါ ဟူသောပါဌ်၌၊ ဂါမောစ – ကိုရင်း၊ ဂါမူပစာရောစ - ကိုရင်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗော - ၏၊ စ - ဆက်၊ ယောပိဂါမော – သည်လည်း၊ ပုဗ္ဗေ–၌၊ မဟာ-ကြီးကျယ်သည်၊ ဟုတွာ–၍၊ ပစ္ဆာ - ၌၊ ကုလေသု – အမျိုးတို့သည်၊ နဋ္ဌေသု – ပျက်စီးကုန် လသော်၊ အပ္ပကော-ငယ်သည်၊ ဟောတိ၊ သော-ထိုရွာကို၊ ဃရူပစာရတော-အစွန်ဆုံး အိမ်၏ဥပစာမှ၊ လေဍ္ဍုပါတေနေဝ – ဖြင့်သာ၊ ပရိစ္ဆိန္ဒိတဗ္ဗော – ပိုင်းခြားထိုက်၏၊ ပန - ဗျတိရိက်ကား၊ အသ - ထိုရွာ၏၊ ပရိက္ခိတ္တသာပိ - ကာရံအပ်သောရွာ၏ရင်း၊ အပရိက္ခိတ္တသာပိ-၏ရင်း၊ ပုရိမပရိစ္ဆေဒေါ-ရှေးအပိုင်းအခြားသည်၊ အပ္ပမာဏမေဝ–ပမာဏမဟုတ်သည်သာ၊ ဣတိ–ဂါမာဝါနှင့်စပ်၍ ဆိုဘွယ်စကားရပ် အပြီးသတ်တည်း။

အရညံနာမ ထပေတွာ ဂါမဥ္စ ဂါမူပစာရဥ္စာတိ – ကား၊ ယထာဝုတ္တလက္ခဏံ – အကြင်အကြင် ဆိုအပ်ပြီးသော အပိုင်းအခြား အမှတ်အသားရှိသော၊ ဣမံဂါမဥ္စ - ကိုရင်း၊ ဣမံ ဂါမူပစာရဥ္စ – ကိုရင်း၊ ထပေတွာ– ၍၊ ဣမသ္မိံ အဒိန္နာဒါနသိက္ခာပဒေ - ၌၊ အဝသေသံ – ကြွင်းသောအရပ်သည်၊ အရည့်နာမ– မည်၏၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ ပန–ကား၊ အဘိဓမ္မေ-အဘိဓမ္မာပါဠိတော်၌၊ အရညန္တိ နိက္ခမိတွာ ၊ ပေ ၊ အရညန္တိ – ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ–ပြီ။ [အရညန္တိ- ကား၊ ဣန္ဒခီလာ–တံခါးခုံမှ၊ ဗဟိ–သို့၊ နိက္ခမိတွာ- ၍၊(ယံဌာနံ အတ္ထိ၊) သဗ္ဗံ-သော၊ ဧတံ–ဤအရပ်သည်၊ အရညံ-မည်၏။]အာရညကသိက္ခာပဒေ- အာရညကသိက္ခာပုဒ်၏ ပဒဘာဇနီ၌၊ အာရညကံနာမ၊ပေ၊ပစ္ဆိမံတိ- ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ- ပြီ၊ တံ- ထိုတောရကျောင်းကို၊ ဣန္ဒခီလတော- မှ၊ ပဋ္ဌာယ-၍၊ အာရောပိတေန – ညို့တင်အပ်ပြီးသော၊ အာစရိယဓနုနာ - လေးဆရာ၏ လေးဖြင့်၊ ပဉ္စဓနုသတပ္ပမာဏန္တိ – လေးအပြန်ငါးရာ ပမာဏရှိ၏ ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ–၏။ [ပစ္ဆိမံ–နောက်ဆုံး၌ဖြစ်သော၊ ပဉ္စဓနုသတိကံ - လေးအပြန် ငါးရာရှိသောအရပ်သည်၊ အာရညကံနာမ-သော၊ သေနာသနံ–တည်း။]

**အာစရိယဓနုံ** ။ ။ လေးအတတ် သင်ပြသော ဆရာတို့၏ ကိုင်နေကျလေးသည် ညှို့မတင်သေးဘဲ တိုင်းလျှင် ရိုးရိုးအထွာဖြင့် ၉ ထွာ ( ၄ တောင်ထွာ ) ရှိ၏၊ ညှို့တင်ပြီးမှ တိုင်းလျှင် ၄ တောင်ရှိ၏-ဟု ပြောစမှတ်ရှိ၏။ [အရညအခွဲ ၃ နည်းတွင် အဘိဓမ္မာနည်းသာ မုချ အရညတည်း၊ ဝိနည်း–သုတ္တန်နည်းမှာ ပရိယာယ်သာ။]

စေ-လျှင်၊ ဘဂဝတာ- သည်၊ ဂါမာဝါ အရညာဝါတိ တေသ-ပါဠိ၏၊ အတ္ထံ-ကို၊ ဝိဘဇန္တေန- ဝေဘန်တော်မူလသော်၊ ဃရံ၊ပေ၊အရညန္တိ- ဟူ၍၊ ပါပဘိက္ခုနံ-ယုတ်မာကုန်သော ရဟန်းတို့၏၊ လေသောကာသ နိသေမနတ္ထံ-အမြွက်ထောင်ခွင့်ကို တားမြစ်တော်မူခြင်းအကျိုးငှါ၊ ပဉ္စ-န်သော၊ ကောဋ္ဌာသ-အဘို့အစုတို့ကို၊ ဒဿိတာ-န်ပြီ၊ [သိက္ခာပုဒ်၌ "ဂါမာဝါ အရညာဝါ" ဟုသာ ဆို၏၊ ငါက "အိမ်မှ, သို့မဟုတ် အိမ်ဥပစာမှ, သို့မဟုတ် ရွာဥပစာမှ ယူသည်" ဟု အမြွက်ထောင်ခွင့်ကို တားမြစ်ခြင်းငှါ ငါးပါးသော အဘို့ကို ပြတော်မူသည်-ဟူလို။]တသ္မာ-ကြောင့်၊ဃရေဝါ-၌သော်ငင်း၊ပေ၊အရညေ ဝါ-၌သော်ငင်း၊ ပါဒဃ္ဃနကတော-မှ၊ ပဋ္ဌာယ-၍၊ သဿာမိကံ - ဥစ္စာရှင် ရှိသော၊ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ အဝဟရန္တဿ-ယုတ်ယုတ်မာမာဆောင်သောရဟန်း၏၊ ဝါ-ခိုးသောရဟန်း၏၊ ပါရာဇိကမေဝ-ပင်တည်း၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏။

ဣဒါနိ – (ဂါမာဝါ အရညာဝါပုဒ်ကို ဖွင့်ပြပြီးရာ) ယခုအခါ၌၊ အဒိန္နံ ထေယျသင်္ခါတံ အာဒိယေယျာတိအာဒိနံ-ယျအစရှိသောပုဒ်ရပ်တို့၏၊ အတ္ထ ဒဿနတ္ထံ-ငှါ၊ အဒိန္နံနာမာတိအာဒိံ-ကို၊ အာဟ-၏၊ တတ္ထ-ထို အဒိန္နံနာမ အစရှိသောပါဠိရပ်၌၊ ဒန္တပေါဏ သိက္ခာပဒေ-၌၊ အတ္တနော-၏၊ သန္တကံ-ဥစ္စာသည်၊ (သမာနံပိ- သော်လည်း၊) အပ္ပဋိဂ္ဂဟိတကံ-အကပ်မခံအပ်သော၊ ကပ္ပိယံ-ရဟန်းတို့အား အပ်သော၊ [ရဟန်းအားလျော်သော ပစ္စည်းကိုပြလို၍ " ကပ္ပိယံ " ဟု ဆိုသည်၊ အကပ္ပိယအာဟာရလည်း အကပ်မခံရသေးလျှင် အဒိန္နပင်။] အဇ္ဈောဟရဏီယံ - စားမျိုထိုက်သော အာဟာရကို၊ အဒိန္နန္တိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ- ၏၊ ပန- ကား၊ ဣဓ- ဤသိက္ခာပုဒ်၌၊ ယံကိဉ္စိ-သော၊ ပရပရိဂ္ဂ ဟိတံ-သူတပါးတို့ သိမ်းပိုက်အပ်သော၊ [ကလေးစသူကဲ့သို့ ဥစ္စာရှင်က ကိုယ့် ဥစ္စာမှန်းမသိသော်လည်း စွန့်ပေး စသည်ကို မပြုသေးလျှင် ထိုသူ၏အပိုင်ဖြစ်၍ "ပရပရိဂ္ဂဟိတ"တွင် ပါဝင်၏၊ "ပရေဟိ+ ပရိဂ္ဂဟိတံ ပရပရိဂ္ဂဟိတံ"ဟု ပြု၊] သဿာမိကံ- သော၊ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ (အဒိန္နန္တိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ—၏၊) တဒေတံ-ထို ဘဏ္ဍာသည်၊ ဝါ-ကို၊ တေဟိ သာမိကေဟိ-တို့သည်၊ ကာယေနဝါ-ဖြင့်သော် ငင်း၊ ဝါစာယဝါ–ငင်း၊ နဒိန္နံ-မပေးအပ်၊ ဣတိ–ကြောင့်၊ အဒိန္နံ-န္နမည်၏။

စေ၊ပေ၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ ။ ။ စေ ၊ပေ၊ ဒဿိတာဖြင့် ဂါမာဝါ အရညာဝါ ဟူသော သံဝဏ္ဏေတဗ္ဗ၏ အဖွင့်အဆုံး နိဂုံးကိုပြ၏၊"တသ္မာ၊ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗံ"ဖြင့် ထိုအဖွင့်ကြောင့် ရအပ်သော (လဒ္ဓဂုဏ်) ကို ပြသည်၊ ထို့ကြောင့် တသ္မာ၊ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗံကို " လဒ္ဓဂုဏ် ဝါကျ "ဟု ၎င်း, ဂါမာဝါစသည်၏ အဖွင့်ဖြစ်သော ရှေ့စကား အားလုံးကို " ယုတ္တိ ဝါကျ=အသင့် ယုတ္တိရှိသော အနက်ကိုပြသောဝါကျ"ဟု၎င်း ခွဲပါ။

အတ္တနော- ၏၊ ဟတ္ထတောဝါ- မှသော်၎င်း၊ ယထာ ဋ္ဌိတဋ္ဌာနတောဝါ- တည်မြဲတိုင်းသော အရပ်မှသော်၎င်း၊ နိသဋ္ဌံ – လွှတ်အပ်သည်၊ န – မဟုတ်၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ အနိသဋ္ဌံ-ဋ္ဌမည်၏၊ ယထာဋ္ဌာနေ-တည်မြဲအရပ်၌၊ ဋ္ဌိတံ-သည်၊ ( သမာနံပိ- လည်း၊ ) အနပေက္ခတာယ- ငဲ့ကွက်ခြင်း မရှိသည်၏အဖြစ်ဖြင့်၊ ပရိစ္စတ္တံ – စွန့်အပ်သည်၊ န - မဟုတ်၊ ဣတိ - ကြောင့်၊ အပရိစ္စတ္တံ - မည်၏၊ အာရက္ခသံဝိဓာနေန – အစောင့်အရှောက်ကို စီရင်ခြင်းဖြင့်၊ ရက္ခိတဏ္ဍာ– စောင့်ရှောက် အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ရက္ခိတံ - မည်၏၊ မဉ္ဇူသာဒိသု– သေတ္တာ အစရှိသည်တို့၌၊ ပက္ခိပိတ္တာ - ထည့်၍၊ ဂေါပိတဏ္ဍာ - လုံခြုံစေအပ်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဂေါပိတံ–မည်၏၊ ဣဒံ-ဤဥစ္စာသည်၊ မမံ-ငါ၏ဥစ္စာ၊ ဣတိ – သို့၊ တဏှာမမတ္တေန – ငါ့ဥစ္စာဟု စွဲလမ်းမှု၏ ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာ တဏှာဖြင့်၊ မမာယိတဏ္ဍာ – ငါ့ဥစ္စာ ဟု ပြုကျင့်အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ-မြတ်နိုးအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ မမာယိတံ-မည်၏၊တာဟိ အပရိစ္စာဂ ရက္ခဏ ဂေါပနာဟိ–ထို မစွန့်ခြင်း, စောင့်ရှောက်ခြင်း, လုံခြုံစေခြင်းတို့ဖြင့်၊ ဘဏ္ဍသာမိကေဟိ - ကုန်သော၊ တေဟိ ပရေဟိ – ထို သူတပါးတို့သည်၊ ပရိဂ္ဂဟိတံ-သိမ်းပိုက်အပ်၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ပရပရိဂ္ဂဟိတံ- တမည်၏၊ တံ-ဤ အဒိန္နံ, အနိသဋ္ဌ, အပရိစ္စတ္တ,ရက္ခိတ, ဂေါပိတ,မမာယိတ,ပရပရိဂ္ဂဟိတ ဘဏ္ဍာသည်၊ အဒိန္နံ နာမ–မည်၏။

ထေယျသင်္ခါတန္တိ ဧတ္ထ - ၌၊ ထေနောတိ - ကား၊ စောရော–ခိုးသူတည်း၊ ထေနဿ–ခိုးသူ၏၊ ဘာဝေါ- ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာတည်း၊ ထေယျံ-ရာ၊ တံ-ဤ ထေယျသင်္ခါတံဟူသောအမည်သည်၊ အဝဟာရဏစိတ္တဿ-ယုတ်ညံ့သော အားဖြင့် ဆောင်ယူကြောင်း စိတ်၏၊ ဝါ – ခိုးယူကြောင်း စိတ်၏၊ အဓိဝစနံ-အမည်တည်း၊ သင်္ခါ သင်္ခါတန္တိ-သင်္ခါ, သင်္ခါတံ ဟူသောပုဒ် ၂ ပါးအပေါင်းသည်၊အတ္တတော-အနက်အားဖြင့်၊ဧကံ-တူ၏၊ ဧကံ-ဤသင်္ခါသင်္ခါတံဟူသော

**တဏှာမမတ္တေန**။ ။ မမ+ဣဒံ မမံ=ငါ၏ ဥစ္စာ၊ အမှနောင် ဣဒံ အနက်၌ ဏ သက်၊ အမှကို မမပြု၊ မမဿ–ငါ့ဥစ္စာ ဟု စွဲလမ်းတတ်သူ၏+ဘာဝေါ–ဖြစ်ကြောင်း ဖြစ်ရာ တဏှာတည်း၊ မမတ္တံ–ဏှာ၊ တဏှာစ+သာ+မမတ္တံစာတိ တဏှာမမတ္တံ။

**မမာယိတံ**။ ။မမံနောင် အာစာရ အနက်၌ အာယသက်၍ "မမာယ–ငါ့ဥစ္စာ ဟု ပြု"ဟု ဖြစ်၏၊ ကံဟော တပစ္စည်းသက်၍ "မမာယိတံ"ဟု ဖြစ်၏၊ ["ငါ့ဥစ္စာ ဟု ပြုအပ်၏"ဟု ပေး။]

**ထေယျသင်္ခါတံ**။ ။ထေနဓာတ်သည် ခိုးခြင်းအနက်ဟော၊ ထေန နောင်ဘာဝတ္တ ဏျသက် ( န ) ချေ၍ "ထေယံ" ဟု ထောမနိဒ္ဒိဋ္ဌရှိ၏၊ ပါဠိ၌ ယ တလုံးလာ၊ ဤ၌ "သင်္ခါတံ"ဟု လာသော်လည်း အခြားနေရာ၌ သင်္ခါပုဒ်သည်သာ ကောဋ္ဌာသအနက်

သဒ္ဒါသည်၊ ကောဋ္ဌာသသ – အဘို့အစုအနက်ကို၊ အဓိဝစနံ – ဟောသော သဒ္ဒါတည်း၊(ကေသုဝိယ-အဘယ်ပါဠိရပ်တို့၌ကဲ့သို့နည်း၊)သညာနိဒါနာဟိ ပပဉ္စသင်္ခါတိ အာဒီသုဝိယ-ပါဠိရပ်တို့၌ ကဲ့သို့တည်း၊ [ပပဉ္စသင်္ခါ-သံသရာကို ချဲ့ထွင်တတ်သော တဏှာ မာန ဒိဋ္ဌိတရားအစုတို့သည်၊ သညာနိဒါနာ(ဟိ)- သညာလျှင် အကြောင်းရင်းရှိကုန်သည်သာ၊] ထေယျပ္ပ– ခိုးသူ၏ဖြစ်ကြောင်း လည်းဟုတ်၏၊ တံ–ဟူသည်၊ သင်္ခါတဉ္စ–အစုလည်းဟုတ်၏၊ ဣတိ–ကြောင့်၊ ထေယျသင်္ခါတံ–မည်၏၊ ထေယျစိတ္တ သင်္ခါတော-ခိုးသူ၏ဖြစ်ကြောင်းစိတ်ဟု ဆိုအပ်သော၊ ဧကော - တပါးသော၊ စိတ္တကောဋ္ဌာသော - စိတ်အစုတည်း၊ ဣတိအတ္ထော-နက်၊

စ – ဆက်၊ တံ - ၌ ထေယျသင်္ခါတံဟူသော သဒ္ဒါသည်၊ ကရဏတ္ထေ - ၌၊ ပစ္စတ္တဝစနံ-ပဌမာဝိဘတ်ရှိသော သဒ္ဒါတည်း၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊(ကရိဏ်း အနက်၌ ပဌမာဝိဘတ်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊) ထေယျ သင်္ခါတေန-ခိုးသူ၏ ဖြစ်ကြောင်း စိတ်အစုဖြင့်၊ (အာဒိယေယျ– ယူအံ့၊) ဣတိ - သို့၊ အတ္ထတော- ဖြင့်၊ ဒဋ္ဌဗ္ဗံ – ၏၊ စ– ဆက်၊ ယော - အကြင်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ထေယျသင်္ခါတေန- ဖြင့်၊ အာဒိယတိ-၏၊ သော–သည်၊ ယသ္မာ-ကြောင့်၊ ထေယျစိတ္တော-ခိုးသူ၏ ဖြစ်ကြောင်းစိတ်ရှိသည်၊ ဟောတိ၊ တသ္မာ၊ ဗျဉ္ဇနံ - သဒ္ဒါကို၊ အနာဒိယိတွာ– အလေးအမြတ်အားဖြင့်မယူမူ၍၊ ဝါ-ဂရုမစိုက်မူ၍၊[သင်္ခါတသဒ္ဒါနှင့် ပဌမာ ဝိဘတ်ကိုဂရုမစိုက်မူ၍–ဟူလို၊]အတ္ထမေဝ–လိုရင်းအနက်ကိုသာ၊ ဒဿေတုံ- ၄၊ ထေယျစိတ္တော အဝဟရဏစိတ္တောတိ-ဟူ၍၊ ဧဝံ- သို့၊ အဿ–ထိုထေယျ သင်္ခါတံ ပုဒ်၏၊ ပဒဘာဇနံ-ဇနီကို၊ ဝုတ္တံ–ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏။

ပန- ကား၊ အာဒိယေယျပေ၊ ဝီတိနာမေယျာတိတ္တေ-၌၊ ပဌမပဒံ-အာဒိ ယေယျဟူသော ပဌမပုဒ်ကို၊ အဘိယောဂဝသေန - မိမိရဘို့ရာ လွှန်စွာ အားထုတ်ခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဝါ-တရားစွဲခြင်း၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဝုတ္တံ-ဟောတော် မူအပ်ပြီ၊ ဒုတိယပဒံ - ဟရေယျဟူသော ဒုတိယပုဒ်ကို၊ အညေသံ - အခြား ပုဂ္ဂိုလ်တို့၏၊ ဘဏ္ဍံ–ကို၊ ဟရန္တဿ - ဆောင်လျက်၊ ဂစ္ဆတော - သွားသော

ဟောပုံ ထင်ရှားသောကြောင့် ထိုသင်္ခါကို အဖေါ်ညှိသောအားဖြင့်“သင်္ခါ-သင်္ခါတံတိ အတ္ထတောဧကံ”ဟု ဆိုသည်၊ သင်္ခါ၌ သံပုဗ္ဗ ခါဓာတ်, အပစ္စည်း၊ သင်္ခါတံ၌ တပစ္စည်း ဖြစ်၍ ပစ္စည်းသာကွဲသောကြောင့် အနက်ချင်းတူသည်–ဟူလို၊ ထိုတွင်“သင်္ခါ တု ဉာဏ ကောဋ္ဌာသ, ပညတ္တိ ဂဏနာသုစ” ဟု အဘိဓာန်လာသည့်အတိုင်း သင်္ခါပုဒ်၏အနက် ကား များ၏၊ ကြွင်းမှတ်ဘွယ်ကို ပါတိမေဒံ ဘာသာဋီကာ၌ ပြထားပြီ၊ “ပပဉ္စသင်္ခါ”၌ “ပပုဗ္ဗ+ပစိ–ဝိတ္ထာရေ”ဟူသော ဓာတ်တည်း။

ပုဂ္ဂိုလ်၏၊ ဝသေန - ဖြင့်၊ (ဝုတ္တံ - ပြီ၊) တတိယပဒံ – အဝဟရေယျဟူသော တတိယပုဒ်ကို၊ ဥပနိက္ခိတ္တဘဏ္ဍဝသေန – အပ်နှံထားအပ်သော ဘဏ္ဍာ၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ( ဝုတ္တံ )၊ စတုတ္ထံ – ဣရိယာပထံ ဝိကောပေယျဟူသော စတုတ္ထ ပုဒ်ကို၊ သဝိညာဏကဝသေန–သဝိညာဏကဘဏ္ဍာ၏ အစွမ်းဖြင့်၊ (ဝုတ္တံ)၊ ပဉ္စမံ-ဌာနာစာဝေယျဟူသောပဉ္စမပုဒ်ကို၊ ထလေနိက္ခိတ္တာဒိဝသေန–ကုန်း၌ ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာအစရှိသည်တို့၏ အစွမ်းဖြင့်၊ (ဝုတ္တံ)၊ ဆဋ္ဌံ-သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျဟူသော ဆဋ္ဌ ပုဒ်ကို၊ ပရိကပ္ပဝသေနဝါ – ကြံဆ အပ်သော အရပ်၏ အစွမ်းဖြင့်သော်၎င်း၊ သုက်ဃာတဝသေနဝါ-ကင်းကောက်ထားရာ အရပ်၏ အစွမ်းဖြင့်သော်၎င်း၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏။

ပန – ကား၊ ဧတ္ထ – ဤ အာဒိယေယျ အစရှိသောပုဒ်တို့၌၊ ယောဇနာ - ပုဒ်တို့ကို ယှဉ်စေခြင်းသည်၊ ဧကဘဏ္ဍဝသေနပိ-တမျိုးသောဘဏ္ဍာ၏ အစွမ်း အားဖြင့်၎င်း၊ နာနာဘဏ္ဍဝသေနပိ – အမျိုးမျိုးသော ဘဏ္ဍာ၏ အစွမ်း အားဖြင့်၎င်း၊ ဟောတိ၊ စ-ဆက်၊ ဧကဘဏ္ဍဝသေန- ဖြင့်၊ သ ဝိညာဏကေ နေဝ-သ ဝိညာဏကဘဏ္ဍာဖြင့်သာ၊ လဗ္ဘတိ–ရအပ်၏၊ ဝါ-ရနိုင်၏၊ နာနာ ဘဏ္ဍဝသေနပန - ဖြင့်ကား၊ သ ဝိညာဏကာ ဝိညာဏကမိဿကေန – သ ဝိညာဏက, အဝိညာဏက ရောသောဘဏ္ဍာဖြင့်၊ (လဗ္ဘတိ–၏၊) တတ္ထ-ထို ဧကဘဏ္ဍ နာနာဘဏ္ဍတို့တွင်၊ တာဝ – ဧကဘဏ္ဍမှ ရှေးဦးစွာ၊ နာနာဘဏ္ဍ ဝသေန - ဖြင့်၊ (ယောဇနာ - အာဒိယေယျစသော ပုဒ်တို့ကိုယှဉ်စေခြင်းကို၊) ဧဝံ-ဤ ဆိုအပ်လတံ့သောနည်းဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ-၏၊ အာဒိယေယျာတိ-ကား၊ အာရာမံ–သစ်သီးအာရာမ် ပန်းအာရာမ်ကို၊ ဝါ–သစ်သီးခြံ ပန်းခြံကို၊ အဘိ ယုဥ္ဇတိ–မိမိရဘို့ရာ လွန်စွာအားထုတ်အံ့၊ ဝါ–တရားစွဲအံ့၊ ဒုက္ကဋဿ–ဒုက္ကဋ် အာပတ်သို့၊ အာပတ္တိ- ရောက်ခြင်းသည်၊ ( ဟောတိ)၊ (တနည်း) [ယော– အကြင်ရဟန်းသည်၊ အာရာမံ-ကို၊ အဘိယုဥ္ဇတိ-၏၊ (တဿ– ထိုရဟန်း၏၊) ဒုက္ကဋဿ- သို့၊ အာပတ္တိ- သည်၊ ဟောတိ၊ (တနည်း) ဒုက္ကဋာ–ဋမည်သော၊ အာပတ္တိ-အာပတ်သည်၊ အဿ- ဖြစ်၏၊ နောက်၌လည်း ဤအတိုင်းပေးပါ။]

**ဧကဘဏ္ဍဝသေန လဗ္ဘတိ**။ ။ဘဏ္ဍာတမျိုးထည်းကို အာဒိယေယျစသော ၅ မျိုးနှင့်တွဲရာ၌ သက်ရှိဘဏ္ဍာဖြင့်သာ တွဲ၍ဖြစ်နိုင်သည်–ဟူလို။ [ဝသေနပိဟု ရှိသည်ကား မကောင်း၊ "ဝသေနစ" ဟု သင်္ဂါယနာတင်စာ၌ ပြင်ထားသည့်အတိုင်း ကောင်း၏။]

**နာနာဘဏ္ဍဝသေန လဗ္ဘတိ** ။ ။ ဘဏ္ဍာအမျိုးမျိုးကို အာဒိယေယျ စသည်နှင့် တွဲရာ၌ သဝိညာဏက အဝိညာဏက ၂ မျိုးရော၍ တွဲမှဖြစ်နိုင်သည် – ဟူလို။ [ နာနာဘဏ္ဍ ဝသေနပိဟု ရှိခြင်းလည်းမကောင်း၊ "နာနာဘဏ္ဍဝသေန ပန" ဟု ရှိမှ စသွားလှ၏။]

သာမိကဿ–ဥစ္စာရှင်၏၊ ဝိမတိ–တွေးတောခြင်းကို၊ [ရမှ ရပါတော့မလား-ဟု တွေးတောမှုကို၊] ဥပ္ပါဒေတိ–အံ့၊ ထုလ္လစ္စယဿ–သို့၊ အာပတ္တိ–သည်၊ (ဟောတိ)၊ သာမိကော–သည်၊ မယှံ–ငါ၏ဥစ္စာသည်၊ န ဘဝိဿတိ–မဖြစ်တော့လတ့်၊ ဣတိ–ဤသို့ကြံ၍၊ ဓုရံ–လုလ္လဝီရိယကို၊ နိက္ခိပတိ–လျှော့ချလိုက်အံ့၊ ပါရာဇိကဿ–သို့၊ အာပတ္တိ–သည်၊ ဟောတိ၊ [ဤ ပြခဲ့သော စကားဖြင့် အာရာမ် တည်းဟူသောဘဏ္ဍာကို အာဒိယေယျပုဒ်နှင့် ယောဇနာပုံကိုပြ၏၊] ဟရေယျာတိ–ကား၊ အညဿ–အခြားသူ၏၊ ဘဏ္ဍံ–ကို၊ ဟရန္တော–ဆောင်ယူသွားစဉ်၊ သီသေ–၌၊ ဘာရံ–ဆောင်ယူအပ်သောဘဏ္ဍာကို၊ [ဥစ္စာရှင်က တခြားသူထံပေးလိုက်ရှ် ဆောင်ယူအပ်သောဘဏ္ဍာ–ဟူလို၊] ထေယျစိတ္တော–ခိုးသူ၏ ဖြစ်ကြောင်းစိတ်ရှိသည်၊ (ဟုတွာ) အာမသတိ–သုံးသပ်အံ့၊ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿ၊ ဖန္ဒာပေတိ–လှုပ်ရှားစေအံ့၊ ပေ၊ ခန္ဓံ–ပခုံးသို့၊ ဩရောပေတိ–ချအံ့၊ အာပတ္တိ ပါရာဇိကဿ။ [ဤ ပြခဲ့သောစကားဖြင့် သက်နိုး စသောဘဏ္ဍာကို အာဒိယေယျပုဒ်နှင့် ယောဇနာ (ယှဉ်စပ်)ပုံကို ပြ၏။]

အဝဟရေယျာတိ–ကား၊ ဥပနိက္ခိတ္တံ–အနီး၌ချထားအပ်သော၊ ဝါ–အပ်နှံထားအပ်သော၊ ဘဏ္ဍံ–ကို၊ မေ–၏၊ ဘဏ္ဍံ–ကို၊ ဒေဟိ–ပေးပါလော၊ ဣတိ–သို့၊ ဝုစ္စမာနော–သော်၊ အဟံ–သည်၊ န ဂဏှာမိ–မယူ၊ ဣတိ–သို့၊ ဘဏတိ–အံ့၊ ပေ၊ သာမိကော–သည်၊ မယှံ–အား၊ န ဒဿတိ–ပြန်ပေးတော့မည်မဟုတ်၊ ဣတိ–၍၊ ဓုရံ–ကို၊ နိက္ခိပတိ–အံ့၊ အာပတ္တိ ပါရာဇိကဿ။ [သမိတ်စသော

အဘိယုဥ္ဇတိ။ ။ ရုဓာဒိ ယုဇဓာတ်သည် ဥဿာဟ – အားထုတ်ခြင်းအနက်ကိုဟော၏၊ ဤနေရာ၌ အာရာမ်ကိုမိမိရအောင် အားထုတ်မှုကို "အဘိယုဥ္ဇတိ"ဟု ဆိုလို၏၊ ထို အားထုတ်ခြင်းဟူသည် တရားရုံး၌ စောဒက (တရားလို) လုပ်၍ စောဒနာခြင်း တရားစွဲခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့်"အဘိယုဥ္ဇတိ-စောဒေတိ၊ အဋ္ဋံ ကရောတီတိအတ္ထော" ဟု အဓိပ္ပါယ်နက်ဖွင့်သည်။

ဓုရံ နိက္ခိပတိ ။ ။ "ယုဂေ ဓိကာရေ ဝီရိယေ, ပဓာနေ စာဂ္ဂကေ ဓုရော" (၁၀၀၄) အဘိဓာန်လာအနက်တို့တွင် လုလ္လဝီရိယအနက်တည်း၊ ဤနေရာ၌ ဥစ္စာရှင်က ရဘို့ရန်ကြိုးစားမှုကို လျှော့ချလိုက်ခြင်းကို "ဓုရနိက္ခေပ"ဟု ဆိုလိုသည်၊ [ဓုရ်ဓ (ဟိံသာယံ) ကိုပစ္စည်း, ဋာပ်ပစ္စည်းဖြင့် "ဓုရာ"ဟု ထောမနိမိ၌ ဣတ္ထိလိင်ရှိ၏၊ "ဓုဗ္ဗတိ – မိမိကိန်းရာသတ္တဝါကို ညှဉ်းဆဲတတ်၏၊ ဝါ – ညှဉ်းဆဲရာရောက်၏၊ ဣတိ ဓုရာ"ဟု ပြု။] "ဓုရနိက္ခေပ"ကို ရှေးက"ဝန်ချခြင်း"ဟု အနက်ပေးကြ၏၊ ဓုရာသဒ္ဒါသည် ဘာရ-တာဝန်, ဝန်ထုပ်အနက်ဟောသော်လည်း သူတပါးအတွက် ဆောင်ဘွယ်ကို "တာဝန်"ဟု ခေါ်သောကြောင့် ထိုအနက်သည် ဤနေရာနှင့် မလျော်ပါ။ [ကင်္ခါ ဘာသာဋီကာ "ဓုရံ နိက္ခိပတိ"၌လည်း အဓိပ္ပါယ်ပြထားပြီ။]

ဘဏ္ဍာတမျိုးကို အာဒိယေယျနှင့် ယောဇနာပုံကိုပြ၏၊] ဍုရိယာပထံ ဝိကော ပေယျာတိ – ကား၊ သဟဘဏ္ဍဟာရကံ – ဘဏ္ဍာဆောင်သူနှင့် တကွသော ဘဏ္ဍာကို၊ နေဿာမိ-အံ့၊ ဣတိ - ဤသို့ကြံ၍၊ ပဌမံပါဒံ - ပဌမခြေလှမ်းကို၊ သင်္ကာမေတိ-ရွှေ့စေအံ့၊ [နေရာမှဖြစ်စေ, သွားမြဲလမ်းမှဖြစ်စေ ပြောင်းရွှေ့ စေအံ့–ဟူလို။] ပေ၊ဒုတိယံပါဒံ-ကို၊ သင်္ကာမေတိ- အံ့၊ပေ၊ [အခြား ဘဏ္ဍာ တမျိုးကို အာဒိယေယျနှင့် ယှဉ်ပုံကိုပြ၏၊] ဌာနာ စာဝေယျာတိ–ကား၊ ထလ ဋ္ဌံ-ကုန်း၌တည်သော၊ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ ထေယျစိတ္တော-သည်၊(ဟုတ္ဂာ)၊အာမသတိ- အံ့၊ပေ၊ဖန္ဒာပေတိ-အံ့၊ပေ၊ဌာနာ-မှ၊ စာဝေတိ-အံ့၊ အာပတ္တိ ပါရာဇိကဿ။ [ကုန်း၌တည်သော ဘဏ္ဍာတမျိုးကို အာဒိယေယျနှင့်ယှဉ်ပုံကိုပြ၏၊]

သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျာတိ - ကား၊ ပရိကပ္ပိတဋ္ဌာနံ – ကြံဆအပ်သော အရပ်ကို၊ ဝါ – မှန်းထားအပ်သော အရပ်ကို၊ [ ဩကာသပရိကပ္ပနဝသေန ပရိကပ္ပိတပဒေသံ=မည်သည့် အရပ်တိုင်အောင် ပဌမယူသွားပြီးမှ ဥစ္စာရှင်တို့ မမြင်လျှင် ခိုးသွားမည် ဟု မှန်းထားအပ်သော အရပ်ကို၊ ] ပဌမံ ပါဒံ–ကို၊ အတိက္ကာမေတိ – အံ့၊ အာပတ္တိထုလ္လစ္စယဿ၊ ဒုတိယံ ပါဒံ အတိက္ကာမေတိ၊ အာပတ္တိပါရာဇိကဿ၊ အထဝါ - ကား၊ ပဌမံ ပါဒံ – ကို၊ သုင်္ကဃာတံ- ကင်းကောက်ရာ အရပ်ကို ၊ ပေ ၊ အာပတ္တိပါရာဇိကဿ၊ ဣတိ အယံ–ကား၊ ဧတ္ထ-ဤ အာဒိယေယျ အစရှိသော ပုဒ်တို့၌၊ နာနာဘဏ္ဍဝသေန- အမျိုးမျိုး သော ဘဏ္ဍာတို့၏အစွမ်းဖြင့်၊[အာဒိယေယျအတွက်ဘဏ္ဍာတမျိုး,သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျအတွက်ဘဏ္ဍာတမျိုး,ဤသို့ အမျိုးမျိုးသောဘဏ္ဍာတို့၏အစွမ်း ဖြင့်-ဟူလို၊] ယောဇနာ-ယှဉ်စေခြင်းတည်း။

ပန-ကား၊ ဧကဘဏ္ဍဝသေန– တမျိုးတည်းသော ဘဏ္ဍာ၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ( ယောဇနာ-ကို၊ ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗာ )၊ သဿာမိကံ- သော၊ ဒါသံဝါ–ကျွန်ကို သော်ရင်း၊ တိရစ္ဆာနံဝါ – ကိုသော်ရင်း၊ ယထာဝုတ္တေန – အကြင် အကြင်

သုင်္ကဃာတံ။ ။ရာဇူနံ ဒေယျဘာဂဿ ဧတံ အဓိဝစနံ သုင်္ကာတိ=ပိမိယူဆောင် လာသော ပစ္စည်းအတွက် မင်းတို့အားပေးထိုက်သော အခွန်အကောက်ကို“သုင်္က”ဟု ခေါ်၏၊ ဟညတိ ဧတ္တာတိ ဃာတော = အခွန်မပေးဘဲသွားလျှင် မင်းမှာ ထို အခွန် ပျက်တော့၏၊ ထို့ကြောင့် အခွန်မပေးဘဲ သွားသူတို့က ဖျက်ဆီးအပ်ရာ ဖြစ်သော (ကင်းကောက်ရာ)အရပ်သည် ဃာတမည်၏၊ သုင်္ကဿ+ဃာတော သုင်္ကဃာတော- မပေးဘဲသွားသူတို့၏ ကင်းခွန်ကို ဖျက်ဆီးအပ်ရာအရပ် , ဝါ – ကင်းကောက်ဌာန။ [“ ဧတ္ထ ပဝိဋ္ဌေဟိ သုင်္ကော ဒါတဗ္ဗောတိ– ဤ အရပ်ဝင်လာသူမှန်သမျှ အကောက် အခွန်ပေးရမည်”ဟု၊ ရုက္ခပဗ္ဗတာဒိသညာဏေန နိယမိတပ္ပဒေသဿေတံ အဓိဝစနံ။]

ဆိုအပ်ပြီးသော၊ အဘိယောဂါဒိနာ – တရားစွဲခြင်း အစရှိသော၊ နယေန– ဖြင့်၊ အာဒိယတိဝါ- ယူမှုလည်း ယူ၏၊ ဟရတိဝါ- ဆောင်၍သွားစဉ် ခိုးစိတ် ဝင်၍မှုလည်းယူ၏၊ အဝဟရတိဝါ- အပ်နှံထားအပ်သောဘဏ္ဍာကို အယုတ် အားဖြင့်မှုလည်း ယူ၏၊ ဣရိယာပထံဝါ-ဘဏ္ဍာ၏ ဣရိယာပုထ်ကိုမှုလည်း၊ ဝိကောပေတိ-ဖျက်ဆီး၏၊ ဌာနာဝါ-မှလည်း၊ စာဝေတိ-ရွေ့စေ၏၊ ပရိစ္ဆေ ဒံဝါ- အပိုင်းအခြားကိုမှုလည်း၊ အတိက္ကာမေတိ- ၏၊ အယံ-ကား၊ ဧတ္ထ- ဤ အာဒိယေယျအစရှိသောပုဒ်တို့၌၊ ကေတဗ္ဗာဝသေန-ဖြင့်၊ ယောဇနာ-တည်း၊

အပိစ-သည်သာမကသေး၊ ဆ-နှ်သော၊ ဣမာနိ ပဒါနိ-ဤ အာဒိယေယျ အစရှိသော ပုဒ်တို့ကို၊ ဝဏ္ဏေန္တေန – ဖွင့်ပြသော ဆရာသည်၊ ပဥ္စပဥ္စကေ– ၅ ပါးသော ပဥ္စကတို့ကို၊ သမောဓာနေတွာ - ပေါင်း၍၊ ပဉ္စဝီသတိ - သော၊ အဝဟာရာ–ခိုးခြင်းတို့ကို၊ ဒဿေတဗ္ဗာ-နှ်၏၊ ဟိ-လဒ္ဒဂုဏ်ကို ပြဦးအံ့၊ ဧဝံ- ဤသို့ ၂၅ ပါးသော ခိုးခြင်းတို့ကို ပြ၍၊ ဝဏ္ဏယတာ– ဖွင့်ပြသော ဆရာသည်၊ ဣဒံ အဒိန္နာဒါန ပါရာဇိကံ – သည်၊ ဝါ – ကို၊ သုဝဏ္ဏိတံ–ကောင်းစွာဖွင့်ပြ အပ်သည်၊ ဝါ – စုံလင်စွာ ဖွင့်ပြအပ်သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ စ – ဆက်၊ ဣမသ္မိံ ဌာနေ–၌၊ သဗ္ဗအဋ္ဌကထာ- အလုံးစုံသော ရှေးအဋ္ဌကထာတို့သည်၊ အာကု လာ– ရောယှက် ရှုပ်ထွေးကုန်၏၊ လုလိတာ - မငြိမ်မသက် လှုပ်လှုက်ကုန်၏၊ ဝါ- ချောက်ချားကုန်၏၊ ဒုဝိညေယျ ဝိနိစ္ဆယာ - ခဲယဉ်းသဖြင့် သိအပ်သော အဆုံးအဖြတ်ရှိကုန်၏၊ ဝါ-အသိခက်သော အဆုံးအဖြတ်ရှိကုန်၏။

တထာဟိ–ထိုစကားကို ချဲဦးအံ့၊ သဗ္ဗအဋ္ဌကထာသု–တို့၌၊ ပါဠိယံ-ပါဠိ တော်၌၊ ပဉ္စဟာကာရေဟိ ၊ပေ၊ ဟောတီတိ အာဒိနာ-သော၊ နယေန-ဖြင့်၊ ယာနိတာနိ အဝဟာရင်္ဂါနိ-အကြင်ခိုးခြင်း၏အင်္ဂါတို့ကို၊ ဝုတ္တာနိ-ဟောတော် မူအပ်ကုန်ပြီ၊ [ဝိနီတဝတ္ထုရှေ့နား၌ ဟောထားတော်မူသည်၊] တာနိပိ - ထို အဝဟာရင်္ဂ တို့ကိုလည်း၊ ဂဟေတွာ - ၍၊ ကတ္ထစိ – အချို့အဋ္ဌကထာ၌၊ ဧကံ ပဉ္စကံ–တမျိုးသော ပဉ္စကကို၊ ဒဿိတံ-ပြအပ်ပြီ၊ ကတ္ထစိ-အချို့အဋ္ဌကထာ၌၊ ဆဟာကာရေဟီတိ - ဟူ၍၊ အာဂတေဟိ – လာသောပုဒ်တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ , ဒွေ ပဉ္စကာနိ-၂ မျိုးသောပဉ္စကတို့ကို၊ ဒဿိတာနိ၊ [ပဌမပဉ္စကနှင့်တကွ ၂ပါး-

**အာကုလာ, လုလိတာ။** ။အာပုဗ္ဗ ကုလ, ကပစ္စည်းသည် ဗျာကုလ– ရောယှက် ရှုပ်ထွေးခြင်းအနက်ကို ဟော၏၊ "သင်္ကုလာ" ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ ဤ အနက်ပင်တည်း၊ လုလဓာတ်သည် အာန္ဒောလန, စာလန အနက်တို့ကိုဟော၏၊ အာန္ဒောလန–ဟူသည် ပုခက်လွှဲသကဲ့သို့ လှုပ်လှုက်ခြင်း အကြိမ်ကြိမ် ဟိုရောက် သည်ရောက်ဖြစ်ခြင်း , အနဝဋ္ဌာန-အဖန်ဖန်ဆက်စပ်ခြင်းတည်း၊ ဋီကာ၌"ဝိလောလိတာ"ဟု အနက်တူဖွင့်၏။

ဟူလို။] တောနိစ–၍အဝဟာရင်္ဂတို့သည်လည်း၊ [ယောဇနာ၌"တောနိ ပဉ္စကာနိ"ဟု ရှိ၏၊ နေဝံက-ပဉ္စကာနိနှင့်ထပ်ခနေ၍ မကောင်း။]ပဉ္စကာနိ-ပဉ္စကတို့သည်၊ နဟောန္တိ – မဟုတ်ကုန်၊ (ကသ္မာ)နဟောန္တိ၊ ဟိ(ယသ္မာ)ယဏ္ဍ - အကြင်ပုဒ် ၅ ပါးအပေါင်း၌၊ ဝါ – တွင်၊ ဧကေကေန - တပါးတပါးသော၊ ပဒေန–ဖြင့်၊ အဝဟာရော - ခိုးခြင်းသည်၊ သိဇ္ဈတိ-ပြီးစီး၏၊ တံ-ထိုပုဒ်၅ပါးအပေါင်းကို၊ ပဉ္စကံနာမ – ပဉ္စကမည်၏ ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ၊ [ပဉ္စန္နံ- ငါးမျိုးသော ခိုးနည်းတို့၏+သမူဟော ပဉ္စကံ။] ( တသ္မာ- ကြောင့်၊ တောနိ- ၍အဝဟာရင်္ဂတို့သည်၊ ပဉ္စကာနိ နဟောန္တိ၊) ပန- ဆက်၊ ဧတ္ထ - ၌ ပဉ္စဟာကာရေဟိ အဒိန္နံ အာဒိယန္တဿအစရှိသော ပါဠိရပ်တို့၌၊ သဗ္ဗေဟိပိ – ကုန်သော၊ ပဒေဟိ–ပုဒ်တို့ဖြင့်၊ ဧကောယေဝ - တမျိုးသာလျှင်ဖြစ်သော၊ အဝဟာရော– သည်၊ (ဟောတိ)၊ စ- ဆက်၊ တတ္ထ- ထို ရှေးအဋ္ဌကထာတို့၌၊ လဗ္ဘမာနာနိ ယေဝ-ရထိုက်သည်သာလျှင် ဖြစ်ကုန်သော၊ ယာနိပိ ပဉ္စကာနိ- တို့ကိုလည်း၊ [ပဉ္စဝီသတိယာ အဝဟာရေသု လဗ္ဘမာနပဉ္စကာနိ။]ဒဿိတာနိ၊ တေသံပိ-ထို ပဉ္စကတို့၏လည်း၊ သဗ္ဗေသံ-အလုံးစုံသော ပဉ္စကတို့၏၊ အတ္ထော-ကို၊ န ပကာသိတော- ထင်ရှားမပြအပ်၊ စေ-လျှင်၊ ဣမသ္မိံ ဌာနေ ၊ပေ၊ ဒဿိယမာနာ- ပြအပ်လတ့်ကုန်သော၊ ပဉ္စဝီသတိ-သော၊ ဣမေအဝဟာရာ-တို့ကို၊ သာဓုကံ- စွာ၊ သလ္လက္ခေတဗ္ဗာ - မှတ်သားထိုက်ကုန်၏၊ ဝါ- မှတ်သားကြပါလေ။

ပဉ္စ-ကုန်သော၊ ပဉ္စကာနိနာမ-တို့မည်သည်၊ နာနာဘဏ္ဍ ပဉ္စကံ-ငှင်း၊ပေ၊ ဣတိ – ၍သည်တို့တည်း၊ တတ္ထ- ထို ၅ ပါးသော ပဉ္စကတို့တွင်၊ နာနာဘဏ္ဍ ပဉ္စကဉ္စ-ကိုငှင်း၊ ဧကဘဏ္ဍ ပဉ္စကဉ္စ- ကိုငှင်း၊ အာဒိယေယျ၊ပေ၊ ဌာနာ စာဝေယျာတိ-ဟူကုန်သော၊ ဣမေသံပဒါနံ ဝသေန လဗ္ဘန္တိ၊တာနိ-ထိုပဉ္စကတို့ကို၊ ပုဗ္ဗေ - ၌၊ ယောဇေတွာ – ယှဉ်စေ၍၊ ဒဿိတ နယေနေဝ - ပြအပ်ပြီးသော နည်းဖြင့်သာ၊ ဝေဒိတဗ္ဗာနိ၊ ပန-ဆက်၊သဟတ္ထံ ဝိတိနာမေယျာတိ-ဟူသော၊ ဆဋ္ဌံ - ဖြစ်သော၊ ယံ ဧတံ ပဒံ - အကြင်ပုဒ်သည်၊ (အတ္ထိ)၊ တံ - ထိုပုဒ်သည်၊ ပရိကပ္ပါဝဟာရဿစ–ကြံဆခြင်းရှိသော ခိုးခြင်း၏ငှင်း၊ ဝါ-နှင့်ငှင်း၊ နိဿဂ္ဂိယာဝဟာရဿစ–ပစ်လွှင့်ခြင်းရှိသော ခိုးခြင်း၏ငှင်း၊ ဝါ-နှင့်ငှင်း၊ သာဓာရဏံ- တူသော ဆောင်ခြင်းရှိ၏၊ ဝါ - ဆက်ဆံ၏၊ တသ္မာ, တံ - ထိုသဟတ္ထံ ဝိတိနာမေယျ ဟူသောပုဒ်ကို၊ တတိယ ပဉ္စမေသု-တတိယ ပဉ္စမဖြစ်ကုန်သော၊ ပဉ္စကေသု – သာဟတ္ထိကပဉ္စက ထေယျာဝဟာရပဉ္စကတို့၌၊ လဗ္ဘမာနပဒ ဝသေန – ရထိုက်သော ပုဒ်၏အစွမ်းဖြင့်၊ ယောဇေတဗ္ဗံ – ယှဉ်စေရာ၏၊ [ သာဟတ္ထိကပဉ္စက၌ ရထိုက်သောပုဒ်သည် နိဿဂ္ဂိယာဝဟာရ ပုဒ်တည်း၊

ထေယျာဝဟာရပဉ္စကၔ ရထိုက်သောပုဒ်ကား ပရိကပ္ပါဝဟာရပုဒ်တည်း။]
နာနာဘဏ္ဍပဉ္စကဥ္စ - ကိုလည်းကောင်း၊ ဧကဘဏ္ဍ ပဉ္စကဥ္စ - ကိုလည်းကောင်း၊ ဝုတ္တံ - ဆိုအပ်ပြီ၊
ဝါ- ဆိုခဲ့ပြီ။

သာဟတ္ထိက ပဉ္စကံ–သာဟတ္ထိက ပဉ္စကဟူသည်၊ ကတမံ–အဘယ်နည်း၊ အဝဟာရာ–ခိုးခြင်းတို့သည်၊ သာဟတ္ထိကော–သာဟတ္ထိက ခိုးခြင်းလည်း ၊ပေ၊ ဓုရနိက္ခေပေါ - ဓုရနိက္ခေပ ခိုးခြင်းလည်း၊ ဣတိ - သို့၊ ပဉ္စ - တို့တည်း၊ တတ္ထ–ထို ငါးပါးတို့တွင်၊ ပရဿ - သူတပါး၏၊ ဘဏ္ဍံ- ကို၊ သဟတ္ထာ-မိမိလက်ဖြင့်၊ (ယံ) အဝဟရတိ - အကြင်ခိုး၏၊ (အယံ - ဤ ခိုးခြင်းသည်၊) သာဟတ္ထိကော နာမ–သာဟတ္ထိက ခိုးခြင်းမည်၏၊ ဝါ–မိမိလက်ဖြင့် ဖြစ်စေအပ်သော ခိုးခြင်း မည်၏၊ အသုကဿ–ထို မည်သူ၏၊ ဘဏ္ဍံ–ကို၊ အဝဟရ–ခိုးဆောင်ချေလော့၊ ဣတိ–သို့၊ အညံ–အခြားသူကို၊ ( ယံ ) အာဏာပေတိ–အကြင် စေခိုင်း၏၊ ( အယံ–ဤ စေခိုင်းခြင်းသည်၊ ) အာဏတ္တိကော နာမ-အာဏတ္တိက ခိုးခြင်း မည်၏၊ ဝါ-စေခိုင်းခြင်းဖြင့် ဖြစ်စေအပ်သော ခိုးခြင်းမည်၏၊(ယသ္မိံ–အကြင် ခိုးခြင်း၌၊ ) အဋ္ဌသာသုကဝါတေ ဌိတော ၊ပေ၊ ပါရာဇိကဿာတိ – ပါရာဇိကဿအစရှိသော၊ ဣမိနာစ-ဤပုဒ်နှင့်လည်း၊ သဒ္ဓိံ သင်္ကေတံဝီတိနာမေယျာ

သာဟတ္ထိက ပဉ္စကံ။ ။သကော+ဟတ္ထော သဟတ္ထော=မိမိဥစ္စာဖြစ်သောလက်၊ ဝါ-မိမိလက်၊ [သကကို သပြု၊] သဟတ္ထေန+နိဗ္ဗတ္တော-ဖြစ်စေအပ်သော ခိုးခြင်းတည်း၊ သာဟတ္ထိကော–ခြင်း၊ သာဟတ္ထိကာဒိ+ပဉ္စကံသာဟတ္ထိက ပဉ္စကံ=သာဟတ္ထိက အစရှိသောပဉ္စက၊ အာဒိသဒ္ဒါကိုချေ။ [ "ကုသလတ္တိကံ " ဟူရာ၌ကဲ့သို့ အာဒိလဒ္ဓနာမ–( အစပုဒ်ဖြင့် ရအပ်သော နာမည်တည်း၊ ) ပုဗ္ဗပယောဂ ပဉ္စက , ထေယျာဝဟာရ ပဉ္စကတို့၌လည်း နည်းတူ။]

အာဏတ္တိက , နိဿဂ္ဂိယ ။ ။ အာဏာပနံ – စေခိုင်းခြင်း၊ အာဏတ္တိ – ခြင်း၊ အာဏတ္တိယာ+နိဗ္ဗတ္တော–ဖြစ်စေအပ်သော ခိုးခြင်းတည်း၊ အာဏတ္တိကော – ခြင်း၊ နိသဇ္ဇနံ–ပစ်လွှတ်ခြင်း၊ နိသဂ္ဂေါ–ခြင်း၊ နိသဂ္ဂေါယေဝ–နိသဂ္ဂိယော၊ (သွတ္ထ၌ ဣယ ပစ္စည်း)၊ "နိသဂ္ဂိယ"ဟူသည် အဝဟာရ( ခိုးခြင်း )၏ အစိတ်အပိုင်း တပါးတည်း၊ ထို့ကြောင့် "ခိုးခြင်း"ကို အရကောက်ဘို့ရန် " ယသ္မိံ " ဟုလည်း, " အယံ " ဟုလည်း ထည့်၍ အနက်ပေးရသည်၊ သာဟတ္ထိကော စသည်၌လည်း ခိုးခြင်းကို အရကောက် ဘို့ရန် "ယံ+အယံ"ဟု ထည့်ရသည်။

ယောဇနာ၌ကား နိသဂ္ဂိယောနာမကို " လဘတိ၌ ကတ္တား " ဟု ဆို၏၊ ထိုအလို "နိသဂ္ဂိယောနာမ–နိသဂ္ဂိယ ခိုးခြင်းမည်သည်၊ပေ၊လဘတိ–ရ၏"ဟု ပေးရလိမ့်မည်၊ သို့ဖြစ်လျှင် "နိသဂ္ဂိယခိုးခြင်းသည်၊ ပဒယောဇနံ လဘတိ–ပုဒ်ကို ယောဇနာခြင်းကို ရ၏ "ဟု အဓိပ္ပါယ်မရှိသော အနက်ပေးခြင်းသာ ဖြစ်စရာရှိ၏၊ ထို့ကြောင့် နိဿယ၌ ယောဇနာအလိုမလိုက်ဘဲ တမျိုးပေးထားသည်။

တိ ဣဒံပဒံ–**သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျ**ဟူသော ဤပုဒ်သည်၊ ယောဇနံ-ယှဉ်စေခြင်းကို၊ လဘတိ-၏၊ (အယံ – ဤခိုးခြင်းသည်၊) နိသဂ္ဂိယောနာမ- မည်၏။ (တွံ-သည်၊)အသုကံနာမ–ထိုမည်သော၊ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ယဒါ-၌၊(အဝဟရိတုံ)၊ သက္ကောသိ၊ တဒါ–၌၊ အဝဟရ-ခိုးလော၊ ဣတိ-သို့၊ (ယံ) အာဏာပေတိ၊ (အယံ)၊ အတ္ထသာဓကောနာမ-အတ္ထသာဓက ခိုးခြင်းမည်၏၊ ဝါ-မခိုးမီကပင် ပါရာဇိကဟူသော အကျိုးကို ပြီးစေတတ်သော ခိုးခြင်းမည်၏၊ တတ္ထ – ထိုသို့ စေခိုင်းရာ၌၊ ပရော - စေခိုင်းအပ်သော အခြားသူသည်၊ အနန္တရာယိကော – အန္တရာယ်မရှိသည်၊(အနှောင့်အရှက်မရှိသည်-ဟူလို၊)ဟုတွာ,တံ-ထိုဘဏ္ဍာကို၊ သစေ အဝဟရတိ-အကယ်၍ ခိုးဖြစ်အံ့၊(ဝေံသတိ)၊**အာဏာပကော**-စေခိုင်းတတ်သော ရဟန်းသည်၊ အာဏာတ္တိက္ခဏေယေဝ - စေခိုင်းအပ်ရာခဏ၌ပင်၊ ပါရာဇိကော-ပါရာဇိကကျသည်၊ဟောတိ၊အဝဟာရကောပန-ခိုးတတ်သော ရဟန်းသည်ကား၊ အဝဟင္ရကာလေ- ခိုးအပ်ရာအခါ၌၊ ဝါ- ခိုးအပ်ရာ အခါရောံမှ၊(ပါရာဇိကော ဟောတိ)၊ အယံ-ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊အတ္ထသာဓကော-အတ္ထသာဓက ခိုးခြင်းတည်း၊ ပန-ကား၊ ဓုရနိက္ခေပေါ-ဓုရနိက္ခေပ ခိုးခြင်းကို၊

**ဣဒံ ပဒံ ယောဇနံ လဘတိ**။ ။[ပဒယောဇနံ ဟု စာအုပ်များ၌ ရှိသော်လည်း "ဣဒံ ပဒံ ယောဇနံ"ဟု ရှိမှ စာသွားကောင်းပါသည်၊ "ပုဒ်"ဆိုသော်လည်း ဝါကျပုဒ်တည်း။] " သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျ" ဟု ရှေ့၌ ဆိုအပ်ခဲ့သော ပုဒ်သည် နိသဂ္ဂိယခိုးခြင်း၌ ယှဉ်စပ်မှု သုံးစွဲမှုကို ရသည် – ဟု ဆိုလိုသည်၊ သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျ၏ အဖွင့်ကို ပြန်ကြည့်ပါ၊ ထို အဖွင့်၌"ပရိကပ္ပိတဋ္ဌာနံ အတိက္ကာမေတိ"ကို တွေ့ရလိမ့်မည်၊ ထိုစကားကို ဤနိသဂ္ဂိယ ခိုးခြင်း၌ ယှဉ်စေပါ၊ "ပရိကပ္ပိတဋ္ဌာနကို လွန်စေ" ဟူရာ၌ "ခိုးလာသောဘဏ္ဍာကို ပရိကပ္ပိတဋ္ဌာနကို လွန်သွားအောင်ပစ်လွှတ်၏"ဟု အဓိပ္ပါယ်ကို ယှဉ်စေလျှင် နိသဂ္ဂိယခိုးခြင်းပင် ဖြစ်တော့၏–ဟူလို။

**ဣမိနာ စ သဒ္ဓိံ**။ ။စဖြင့် ဣဒံပဒံကို ပေါင်း၊ နောံသုက်ဃာတကထာ၌ "အန္တော သုက်ဃာတေ၊ပေ၊ ပါရာဇိကဿ" ဟု လာလတံ့၊ သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျ ဟူသော ဤပုဒ်သာ မက, သုက်ဃာတကထာ၌ လာမည့် ဤ စကားလည်း ဤ နိသဂ္ဂိယခိုးခြင်း၌ သုံးစွဲနိုင်ပါသည် – ဟူလို၊ သုံးစွဲပုံကား – ကင်းကောက်ရာ အရပ်၏ အတွင်းဘက်၌ တည်နေလျက် မိမိယူလာသော ဝတ္ထုအတွက် ကင်းကောက် မပေးလိုသဖြင့် ထိုဝတ္ထုကို ကင်းကောံဌာန ပြင်ဘက်ရောက်အောင် ပစ်လိုက်လျှင် ကင်းခွန်ငွေကို နိသဂ္ဂိယခိုးခြင်းဖြင့် ခိုးရာရောက်သည်၊ ဤသို့ သုံးစွဲပါ–ဟူလို။

**အတ္ထသာဓကေ**။ ။ အတ္ထံ + သာဓေတီတိ အတ္ထသာဓကော–အကျိုးကို ပြီးစေတတ်သော အဝဟာရတည်း။ [ ကြိယာသိဒ္ဓိတော ပုရေတရမေဝ– ခိုးမှုကြိယာ ပြီးစီးခြင်းမှ ရှေးဦးစွာသာလျှင်၊ ပါရာဇိကာပတ္တိ သင်္ခါတံ အတ္ထံ–ပါရာဇိက အာပတ်သင့်ခြင်းဟူသောအကျိုးကို၊ သာဓေတိ– ပြီးစေ၏။ ]

ဝါ–လုလ္လကို လျှော့ချခြင်းဟူသောခိုးခြင်းကို၊ ဥပနိက္ခိတ္တ ဘဏ္ဍာဝသေန–အပ်နှံထားအပ်သော ဘဏ္ဍာ၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ဣဒံ–ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ သာဟတ္ထိကပဉ္စကံ–သာဟတ္ထိက ပဉ္စကတည်း။

ပုဗ္ဗပယောဂပဉ္စကံ–ပုဗ္ဗပယောဂပဉ္စကဟူသည်၊ကတမံ–နည်း၊အပရေပိ–သာဟတ္ထိကပဉ္စကမှ တပါးလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ အဝဟာရာ - တို့သည်၊ ပုဗ္ဗပယောဂေါ– ပုဗ္ဗပယောဂ ခိုးခြင်းငှင်း၊ သဟပယောဂေါ-ငှင်း၊ သံဝိဒါဝဟာရော-ငှင်း၊သင်္ကေတကမ္မံ-ငှင်း၊နိမိတ္တကမ္မံ-ငှင်း၊ ဣတိ-သို့၊ပဉ္စ-တို့တည်း၊ တတ္ထ–ထို ငါးပါးတို့တွင်၊ အာဏတ္တိဝသေန–စေခိုင်းခြင်း၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ပုဗ္ဗ

**ဓုရနိက္ခေပ**။ ။ဓုရဿ-လုလ္လကို+နိက္ခိပနံ ဓုရနိက္ခေပေါ။ [အာရာမာဘိယုဉ္ဇနာဒိသု အတ္တနော စ ပရဿ စ ဒါနဂဟဏေသု ( မိမိက ပြန်ပေးခြင်း , ဥစ္စာရှင်က ပြန်ယူခြင်းတို့၌ ) နိရုဿာဟဘာဝါပါဒနံ ( အားထုတ်ခြင်း မရှိသူ၏ အဖြစ်သို့ရောက်စေခြင်းတည်း)၊နိရုဿာဟ-အဖွင့်ကိုထောက်၍“ဓုရ”ကို အားထုတ်ခြင်းဝီရိယဟုပေး။]

**အာဏတ္တိကနှင့်အတ္ထသာဓက**။ ။“အတ္ထသာဓကောနာမ ၊ပေ၊ အာဏာပေတိ” ဟု ဆိုသောကြောင့် အာဏတ္တိကနှင့်အတ္ထသာဓကသည် စေခိုင်းခြင်းအားဖြင့်တူသော်လည်း အာဏတ္တိ စေခိုင်းခြင်းသည် ယခု ခိုးဘို့ရန် ခိုင်းခြင်းတည်း၊ အတ္ထသာဓကခိုင်းခြင်းကား နောင်ခါစွမ်းနိုင်မှ ခိုးဘို့ရန်ခိုင်းခြင်းတည်း၊ ဤသို့ ယခုခိုင်း– နောင်ခါခိုင်းအားဖြင့် ခိုင်းပုံကွဲပြားသည်၊ ထို့ပြင်-အတ္ထသာဓက၌ သာဟတ္ထိကပယောဂလည်းရှိ၏၊ ဆီအိုးထည်းမှဆီကိုပျက်စေလို၍ သားရေဘိနပ်ကို ကိုယ်တိုင်ချရာ၌ တမတ်တန်ကိုစုတ်ယူမည်မှန်လျှင် လက်ကလွတ်သည်နှင့်တပြိုင်နက် အတ္ထသာဓကခိုးခြင်းဖြစ်တော့၏။

**ဥပနိက္ခိတ္တ ဘဏ္ဍဝသေန**။ ။ဤစကားလည်း ဥပလက္ခဏနည်းသာ၊ အာရာမ်ကိုတရားစွဲခြင်း ခေတ္တယူပြီးနေခံ ပြန်မပေးခြင်း, ဘဏ္ဍဒေယျထိုက်ရာ၌ အစားမပေးခြင်းတို့၌လည်း ဓုရနိက္ခေပပြုလျှင် ပါရာဇိကပင် ဖြစ်သည်။

**ပုဗ္ဗပယောဂပဉ္စက**။ ။ပုဗ္ဗေ– ဘဏ္ဍာကိုမယူမီရှေ့၌ + ပဝတ္တော ပယောဂေါ–ပုဗ္ဗပယောဂေါ၊ ပယောဂေန+သဟ ဝတ္တတီတိ သဟပယောဂေါ (အဝဟာရော)–ပယောဂနှင့် တပြိုင်နက်ဖြစ်သောခိုးခြင်း၊ သံဝိဓာယ+အဝဟာရော သံဝိဒါဝဟာရော-စုပေါင်းတိုင်ပင်၍ ခိုးခြင်း၊ သင်္ကေတကမ္မံနာမ – ပုဗ္ဗနာဒိကာလပရိစ္ဆေဒဝသေန ( နံနက်စသော ကာလအပိုင်းအခြား၏ အစွမ်းဖြင့် ) သဉ္ဇာနနကမ္မံ – သိကြောင်းအမှတ်အသားကိုပြုခြင်း၊ နိမိတ္တကမ္မံနာမ-သညုပ္ပါဒနတ္ထံ (အမှတ်အသားကိုဖြစ်စေခြင်းအကျိုးငှါ)အက္ခိနိခဏာဒိနိမိတ္တကရဏံ-မျက်စိမှိတ်ပြခြင်းစသော အရိပ်နိမိတ်ပြုခြင်း။

**အာဏတ္တိဝသေန ပုဗ္ဗပယောဂေါ**။ ။ကေန် ခိုးမည့်သူကို အခိုးခိုင်းရာ၌ မခိုးမီရှေးဦးစွာ အာပတ်သင့်နှင့်သောကြောင့်“ပုဗ္ဗေ–မခိုးမီရှေ့၌+ပဝတ္တော ပယောဂေါ–စေခိုင်းခြင်းပယောဂတည်း၊ ဣတိ ပုဗ္ဗပယောဂေါ”။ [သံဝိဒါဝဟာရ – အစရှိသောပုဒ်အပေါင်းမှာ နောက်၌ထင်ရှားလတ့ံ၊]

ပယောဂေါ-ပုဗ္ဗပယောဂ ခိုးခြင်းကို၊ ဝါ-မခိုးမီ ရှေ့အဘို့၌ဖြစ်သော ပယောဂကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ဌာနာ-မှ၊ စာဝနဝသေန-ဖြင့်၊ သဟပယောဂေါ- သဟ ပယောဂ ခိုးခြင်းကို၊ ဝါ – ခိုးခြင်းနှင့် တကွ ဖြစ်သော ပယောဂကို၊ ( ဝေဒိ တဗ္ဗော)၊ ပန - ကား၊ ဣတရေ - ပုဗ္ဗပယောဂ သဟပယောဂမှ အခြားကုန် သော၊ တယော–သုံးပါးသော ခိုးခြင်းတို့ကို၊ ပါဠိယံ-ပါဠိတော်၌၊ အာဂတ နယေနေဝ–သာလျှင်၊ ဝေဒိတဗ္ဗာ–ကုန်၏၊ ဣတိ ဣဒံ – ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ ပုဗ္ဗပယောဂပဉ္စကံ-တည်း။

ထေယျာဝဟာရပဉ္စကံ-ဟူသည်၊ ကတမံ–နည်း၊ အပရေပိ-အခြားလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ အဝဟာရာ - တို့သည်၊ ထေယျာဝဟာရော- ထေယျာဝဟာရ ခိုးခြင်းငှင်း၊ပေ၊ကုသာဝဟာရော – ငှင်း၊ ဣတိ – သို့၊ ပဉ္စ- တို့တည်း၊ ပဉ္စပိ- ငါးပါးလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ တေ - ထို ခိုးခြင်းတို့ကို၊ အညတရော ဘိက္ခု၊ပေ၊ အဂ္ဂဟေသီတိ-ဟူသော၊ တေသံ ကုသသင်္ကာမန ဝတ္ထုသံ - ဤ ကုသသင်္ကာ မနဝတ္ထု၌၊ ဝဏ္ဏယိဿာမ-ကုန်အံ့၊ ဣဒံ-ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ ထေယျာဝဟာရ ပဉ္စကံ-တည်း၊ ဧဝံ–လျှင်၊ ပဉ္စ- ကုန်သော၊ ဣမာနိ ပဉ္စကာနိ–တို့ကို၊ပေ၊ဝေဒိ တဗ္ဗာ၊ ပန- ဆက်၊ ပဉ္စသု- ကုန်သော၊ ဣမေသု ပဉ္စကေသု – ဤ ပဉ္စကတို့၌ လည်း၊ ကုသလေန - ကျွမ်းကျင်သော၊ ဝိနယဓရေန- ဝိနည်းဓိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ ဩတိဏ္ဏံ-သက်ရောက်လာသော၊ ဝတ္ထုံ-ဝတ္ထုကို၊ သဟသာ-အဆောတလျှင်၊ အဝိနိစ္ဆိတွာဝ– မဆုံးဖြတ်သေးမူ၍သာလျှင်၊ ပဉ္စ-ကုန်သော၊ ဌာနာနိ- ဌာန တို့ကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗာနိ-ကြည့်ရှုထိုက်ကုန်၏၊ ယာနိ-ယင်း ငါးဌာနတို့ကို၊ သန္ဓာယ–၍၊ ပေါရာဏာ–ရှေး၌ဖြစ်ပေါ် ဆရာတော်တို့သည်၊ အာဟု-ကုန်ပြီ၊

**ဌာနာ ၊ ပေ ၊ ပယောဂေါ ။** ။ ဤစကားလည်း နိဒဿန နည်းသာတည်း၊ ဘာ့ကြောင့်နည်း– ငုတ်တိုင်အမှတ်အသားကို ပြောင်းရွှေ့၍ မြေကိုခိုးရာ၌ ဘဏ္ဍာ၏ ဌာနာစာဝနမရှိဘဲ သဟပယောဂ ဖြစ်နိုင်သောကြောင့်တည်း။

**ထေယျာဝဟာရ ပဉ္စက ။** ။ ထေယျေန + အဝဟာရော ထေယျာဝဟာရော (ခိုးသူ၏ဖြစ်ကြောင်းဖြစ်ရာ) ပုန်းလျှိုးကွယ်လျှိုး မမြင်အောင်ခိုးခြင်း,ချိန်ခွင်စသည်ဖြင့် လှည့်ပတ်၍ခိုးခြင်းတည်း၊ ပသယှ– လွှမ်းမိုးနှိပ်စက်၍+အဝဟာရော ပသယှာဝဟာ ရော = ဒါးမြတိုက်ခြင်း , အနုကြမ်းစီးခြင်း , အကြပ်ကိုင်ခြင်းများတည်း၊ ပရိကပ္ပေါ ယဿာတိ ပရိကပ္ပေါ၊ ပရိကပ္ပေါစ+သော+အဝဟာရောစာတိ ပရိကပ္ပါဝဟာရော= ဘဏ္ဍာကိုဖြစ်စေ, ယူရာအရပ်ကိုဖြစ်စေ, ကြံဆ မှန်းထားခြင်းရှိသောခိုးခြင်း၊ ပဋိစ္ဆန္န သ + အဝဟာရော ပဋိစ္ဆန္နာဝဟာရော – မြက် စသည်ဖြင့် ဖုံးထားအပ်ပြီးသော ဘဏ္ဍာကို နောက်မှခိုးယူခြင်း၊ ကုသေန– ပြောင်းရွှေ့အပ်သောမဲဖြင့် +အဝဟာရော ကုသာဝဟာရော၊ ဤသို့ သဒ္ဒါနက်မျှကိုသာ သိနှင့်ပါ၊ အဓိပ္ပါယ်ကို နောက်၌ပြလတ္တံ့။

(ကိံ)၊ ဝတ္တုံကာလဥ္စ၊ ပေ၊ ဝိစက္ခဏောတိ- ဟူ၍၊ (အာဟ)၊ [ဝိစက္ခဏော- စူးစမ်းမြင်သိ, ပညာရှိသည်၊ ဝတ္ထုံစ- ဝတ္ထုကိုင်၊ ကာလဥ္စ- အချိန်အခါကို ၎င်း၊ ဒေသဥ္စ-အရပ်ကို၎င်း၊ အဃ္ဃံ-တန်ဖိုးကို၎င်း၊ ပဋ္ဌမံ-ငါးခုမြောက်ဖြစ်သော၊ ပရိဘောဂ (ပရိဘောဂံ)-သုံးစွဲခြင်းကို၎င်း၊ ပဥ္စ- ကုန်သော၊ ဌာနာနိ- တို့ကို၊ တုလယိတွာ - နှိုင်းချိန်၍၊ အတ္ထံ – အနက်ကို၊ (အာပတ်, အနာပတ်စသော အနက်ကို) ဓာရေယျ-ဆောင်ရွက်ရာ၏။]

တတ္ထ-ထိုဂါထာ၌၊ ဝတ္ထုန္တိ-ဝတ္ထုဟူသည်ကား၊ [ဝတ္ထုံတိ-ဟု ပဋ္ဌမန္တဖြင့် ဆိုလိုလျက် ဝါစာသိလိဋ္ဌ နိဂ္ဂဟိတ်လာထားသည်၊ နောင်၌လည်း "ကာလော တိ ဒေသောတိ" ဟု ပဋ္ဌမန္တဖြင့် ဆိုလတံ့။] ဘဏ္ဍံ - ခိုးယူအပ်သောဘဏ္ဍာ တည်း၊ ဟိ-ချဲ့၊ အဝဟာရကေန–ခိုးသောရဟန်းသည်၊ မယာ–တပည့်တော် သည်၊ ဣဒံနာမ-၍ မည်သောဝတ္ထုကို၊ အဝဟဋံ- ခိုးအပ်ပါပြီ၊ ဝါ- ခိုးမိပါ ပြီ၊ ဣတိ-သို့၊ ဝုတ္တေပိ-လျှောက်အပ်ပါသော်လည်း၊ [ဝိနည်းဓိုရ်ကို လျှော်အပ် ပါသော်လည်း] အာပတ္တိံ -သို့၊ အနာရောပေတွာဝ–မတင်သေးမူ၍သာ၊ တံ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ သဿာမိကံတိဝါ-ဥစ္စာရှင် ရှိလေသလောဟူ၍သော်၎င်း၊ အဿာ မိကန္တိဝါ - ၎င်း၊ ဥပပရိက္ခိတဗ္ဗံ - စူးစမ်း နှိုင်းချိန်ထိုက်၏၊ သဿာမိကေ- အရှင်ရှိသော ဥစ္စာသည်၊ (သမာနေပိ – ဖြစ်ပြန်သော်လည်း၊) သာမိကာနံ- တို့၏၊ သာလယဘာဝေါဝါ - တွယ်တာခြင်း ရှိကုန်သည်၏အဖြစ်ကို၎င်း၊ နိရာ လယဘာဝေါဝါ- ကို၎င်း၊ ဥပပရိက္ခိတဗ္ဗော– ထိုက်၏၊ တေသံ– ထို ဥစ္စာရှင် တို့၏၊ သာလယကာလေ-တွယ်တာခြင်းရှိရာအခါ၌၊ ဟင်္ဋ-ခိုးဆောင်အပ်သည်၊ သစေ ဟောတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ ဘဏ္ဍံ- ကို၊ အဃ္ဃါပေတွာ – တန်ဖိုးပြတ်စေ၍၊ အာပတ္တိ- ကို၊ ကာတဗ္ဗာ- ၏၊ [ပစ္စည်း၏တန်ဖိုးကိုလိုက်၍ ဒုက္ကဋ်, ထုလ္လစ္စဉ်း, ပါရာဇိကဟု ဆုံးဖြတ်ပါ – ဟူလို၊] နိရာလယကာလေ-၌၊ ဟင်္ဋ-သည်၊ သစေ ဟောတိ၊(ဧဝံသတိ အဝဟာရကော–ခိုးသောရဟန်းကို၊)ပါရာဇိကေန-ဖြင့်၊ န ကာရေတဗ္ဗော-မပြုစေထိုက်၊ ဝါ-မဆုံးဖြတ်ထိုက်၊ ပန-ထိုသို့ပင် ပါရာဇိက ဖြင့် မဆုံးဖြတ်ထိုက်ပါသော်လည်း၊ ဘဏ္ဍသာမိကေသု- တို့သည်၊ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ အာဟရာပေန္တေသု-ဆောင်စေကုန်လသော်၊ ဝါ-ပြန်ယူကုန်လသော်၊ ဘဏ္ဍံ- ကို၊ ဒါတဗ္ဗံ-ပြန်ပေးထိုက်၏၊ အယံ-၌သို့ ပြန်ပေးခြင်းသည်၊ ဧတ္ထ-၌ သူတပါး ဥစ္စာကို ယူမိရာ၌၊ သာမိစိ – လောကုတ္တရာတရား ၉ ပါးအား လျော်သော ကျင့်ဝတ်တည်း။

ပန- ဆက်၊ ဣမဿ အတ္ထဿ – ၏ အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို၊ (တပည့်တော် ၌မည်သောဘဏ္ဍာကို ခိုးမိပါပြီ- ဟု လျှောက်အပ်လျက် "အာပတ်သို့ မတင်

မူ၍မှ''စ၍ '' ဘဏ္ဍာကို ပြန်ပေးလိုက်၏ ''တိုင်အောင် အနက်အဓိပ္ပါယ်ကို။] ဒိပနတ္ထံ–၄ါ၊ ဣဒံ–ဤ ဆိုအပ်လတ့်ကား၊ ဝတ္ထု-ဝတ္ထုကြောင်းတည်း၊ ကိရ– ချို၊ ဘာတိယရာဇကာလေ – ဘာတိယမင်းလက်ထက်၌၊ မဟာစေတိယပူဇာ ယ – မဟာစေတီပူဇော်ပွဲ၌၊ ( မဟာစေတီဘုရားပွဲ၌ )၊ ဒက္ခိဏဒိသတော – တောင်အရပ်မှ၊ ဧကော-သော၊ ဘိက္ခု-သည်၊ သတ္တဟတ္ထံ-ခုနစ်တောင်ရှိသော၊ ပဏ္ဍုကာသာဝံ– ဖျော့တော့သောအဆင်းရှိသော သင်္ကန်းကို၊ အံသေ–ပခုံး ပေါ်၌၊ ကရိတွာ–ပြု၍၊ ဝါ–တင်၍၊ စေတိယင်္ဂဏံ- စေတီယင်ပြင်သို့၊ ပါဝိသိ– ဝင်ပြီ၊ စ-ဆက်၊ တင်္ခဏမေဝ-ထိုခဏ၌ပင်၊ရာဇာပိ-ဘာတိယမင်းသည်လည်း၊ စေတိယဝန္ဒနတ္ထံ – စေတီတော်ကို ရှိခိုးခြင်း အကျိုးငှါ၊ အာဂတော - လာပြီ၊ တတ္ထ-ထို ရှင်ဘုရင်လာရာ၌၊ ဥဿာရဏာယ-ဘေးသို့ ရွှေ့ရှားစေခြင်းသည်၊ ဝါ- လမ်းရှင်းခြင်းသည်၊ ဝတ္တမာနာယ– ဖြစ်လသော်၊ မဟာဇနသမ္မဒ္ဒေါ– များစွာသောလူအပေါင်း၏ အချင်းချင်း နင်းမိခြင်းသည်၊ ဝါ- များစွာသော လူအပေါင်း၏ တိုးဝှေ့ခြင်းသည်၊ အဟောသိ၊ အထ-ထိုအခါ၌၊ သောဘိက္ခု- သည်၊ ဇနသမ္မဒ္ဒပီဠိတော–လူအပေါင်း၏ တိုးဝှေ့ခြင်းသည် နှိပ်စက်အပ်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ အံသတော-ပခုံးမှ၊ ပတန္တံ–ကျရစ်သော၊ ကာသာဝံ-သင်္ကန်းကို၊ အဒိသွာဝ- မမြင်မူ၍သာ၊ (မသိလိုက်မူ၍သာလျှင်- ဟူလို၊) နိက္ခန္တော-ထွက် သွားပြီ၊ စ-ဆက်၊ နိက္ခမိတွာ– ထွက်ပြီး၍၊ ကာသာဝံ– ကို၊ အပဿန္တော– ပခုံးပေါ်၌ မမြင်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ကော- ဘယ်သူသည်၊ ဤဒိသေ– ဤကဲ့သို့ ရှုအပ်သော၊ ဇနသမ္မဒ္ဒေ–လူအပေါင်း၏ အချင်းချင်း တိုးဝှေ့ရာအရပ်၌၊ ကာ သာဝံ–ကို၊ လစ္ဆတိ–ရတော့လတ့်နည်း၊ ဒါနိ-၌၊ တံ–ထိုသင်္ကန်းသည်၊ မယှံ- ငါ၏ဥစ္စာသည်၊ န–မဟုတ်တော့၊ ဣတိ - သို့၊ ခုရနိက္ခေပံ – (သင်္ကန်းရှေ့မှု၌) လုလ္လကို လျှော့ချခြင်းကို၊ ကတွာ ဂတော၊ အထ – ထိုအခါ၌၊ အညော-

**ဥဿာရဏာယ**။ ။ဥ–လမ်းမဟုတ်သောဘေးသို့+သာရဏာ–ရွှေ့ရှားစေခြင်း (ဖဲစေခြင်း)၊ ရှင်ဘုရင်လာလမ်း၌မနေဘို့ရန် မင်းမှုထမ်းတို့က လမ်းမှဖွဲ့သွားရှောင်ရှား စေခြင်း (လမ်းရှင်းပေးခြင်း)။ [''ဥပုဗ္ဗ+သရ (ဂတိမှိ), ကာရိတ်ဏေ, ယု=ဖဲ့သွား စေခြင်း''ဟု သဒ္ဒတ္ထပေး။ ]

**မဟာဇနသမ္မဒ္ဒေါ**။ ။ [သမ္မဒ္ဒနံ – အချင်းချင်းနင်းမိခြင်း၊ သမ္မဒ္ဒေါ – ခြင်း၊ သံ+မဒ္ဒဓာတ်၊ ] မဟာဇနဿ+သမ္မဒ္ဒေါ မဟာဇနသမ္မဒ္ဒေါ၊ ''မဟာဇန သမ်ဒေါဘော– လှုပ်ချောက်ချားခြင်း '' ဟု ဋီကာဖွင့်၏၊ မင်းမှုထမ်းတို့က ကြိမ် စသည်ဖြင့် ရမ်း၍ လမ်းရှင်းသောအခါ လူအများ၏ လှုပ်ရှားခြင်း ရုတ်ရုတ်ရက်ရက်ဖြစ်၍ တယောက် တယောက် နင်းမိကြခြင်းဖြစ်သည်–ဟူလို။

အခြားသော၊ ဘိက္ခု - သည်၊ ပစ္ဆာ - နောက်မှ၊ အာဂစ္ဆန္တော,- သော်၊ တံ ကာသာဝံ ဒိသွာ၊ ထေယျစိတ္တေန - ဖြင့်၊ ဂဟေတွာ - ၍၊ ပုန- တဖန်၊ ဝိပ္ပဋိ သာရီ-နှလုံး မသာယာခြင်းရှိသည်၊ ဟုတွာ,ဒါနိ-၌၊ အဿမဏော-ရဟန်း မဟုတ်တော့သည်၊ အမှိ-၏၊ ဝိဗ္ဘမိဿာမိ-လူထွက်တော့အံ့၊ ဣတိ-သို့၊ စိတ္တေ- သည်၊ ဥပ္ပန္နေပိ - ဖြစ်ပါသော်လည်း၊ ဝိနယဓရေ - ဝိနည်းမိုရ်ပုဂ္ဂိုလ်တို့ကို၊ ပုစ္ဆိတွာ- ၍၊ ဉ ဿာမိ- ပါရာဇိကကျ, မကျကို သိအံ့၊ ဣတိ-သို့၊ စိန္တေသိ။

စ-ဆက်၊ တေန သမယေန-၌၊ စူဠသုမနတ္ထေရော နာမ-ထေရ်မည်သော ပုဂ္ဂိုလ်သည်၊ သဗ္ဗပရိယတ္တိဓရော - အလုံးစုံသော ပရိယတ်ကို ဆောင်သော၊ ဝိနယာစရိယ ပါမောက္ခော-ဝိနည်းမိုရ်ဆရာတို့၏ အကြီးအကဲသည်၊(ဟုတွာ) မဟာ ဝိဟာရေ - မဟာ ဝိဟာရကျောင်းတိုက်၌၊ ပဋိဝသတိ - နေတော်မူ၏၊ သောဘိက္ခု-သည်၊ ထေရံ-ကို၊ ( ပုစ္ဆိ-၌စပ်၊ ) ဝါ-သို့၊ ဥပသင်္ကမိတွာ-၍၊ ဝန္ဒိတွာ-၍၊ ဩကာသံ-မေးလျှောက်ခွင့်ကို၊ ကာရေတွာ-စေ၍၊ အတ္တနော- ၏၊ ကုက္ကုစ္စံ-ကို၊ပုစ္ဆိ-ပြီ၊ ထေရော-သည်၊တေန-ထိုရဟန်းသည်၊ ဇနကာယေ- သည်၊ ဘဏ္ဍေ - လျှောလသော်၊ ဝါ - ကင်းလသော်၊ [အပဂတေ - ငိုကာ၊] ပစ္ဆာ-မှ၊ အာဂတ္တွာ-၍၊ ဂဟိတဘာဝံ-ကို၊ ဉတွာ-၍၊ဒါနိ-၌၊ ဧတ္ထ-ဤသက်နိုး ကိုယူရာ၌၊ ဩကာသော- ပါရာဇိက မကျဘို့ရန် အခွင့်အလမ်းသည်၊ အတ္ထိ- ရှိသေး၏၊ ဣတိ- သို့၊ စိန္တေတွာ အာဟ၊ (ကိံ)၊ ကာသာဝဿာမိက- သက်နိုး ရှင်ဖြစ်သော၊ ဘိက္ခု-ကို၊ သစေ အာနေယျာသိ-အကယ်၍ခေါ်ဆောင်နိုင်အံ့၊ ( ဧဝံသတိ )၊ တဝ-၏၊ ပတိဋ္ဌာ-ထောက်တည်ရာသည်၊ ဝါ-ကို၊ ကာတုံ-ငှါ၊ သက္ကာ-တတ်ကောင်းသည်၊ ဘဝေယျ-၏၊ ဣတိ-ဤသို့ မိန့်တော်မူပြီ။

ဘန္တေ - ရား၊ အဟံ-သည်၊ ကထံ - အဘယ် အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ဝါ- အဘယ်နည်းဖြင့်၊ တံ - ထိုသက်နိုး ရှင်ရဟန်းကို၊ ဒက္ခိဿာမိ - တွေ့နိုင်ပါ အံ့နည်း၊ ဣတိ - ဤသို့လျှောက်ပြီ၊ တဟိံ တဟိံ - ထိုထို အရပ်သို့၊ ဂန္တွာ ဩလောကေဟိ-ကြည့်လော၊ ဣတိ-ပြီ၊ သော-ထိုရဟန်းသည်၊ ပဥ္စပိ-၅ တိုက် လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ မဟာဝိဟာရေ - ကျောင်းတိုက်ကြီးတို့ကို၊ ဩလော ကေတွာ - ၍၊ နေဝ အဒ္ဒက္ခိ - မတွေ့ရ၊ တတော - ထိုသို့ မတွေ့ရခြင်းကြောင့်၊ နံ-ထိုရဟန်းကို၊ ထေရော ပုစ္ဆိ၊ (ကိံ)၊ ကတရာယ ဒိသာယ-မှ၊ ဗဟူ-န်သော၊ ဘိက္ခူ- တို့သည်၊ အာဂစ္ဆန္တိ-နည်း၊ ( ထိုဘုရားပွဲ၌ လာကြသနည်း-ဟူလို၊ ) ဣတိ-ပြီ၊ ဘန္တေ, ဒက္ခိဏာယ ဒိသာယ-မှ၊ (ဗဟူ ဘိက္ခူ အာဂစ္ဆန္တိ၊)ဣတိ- ပြီ၊ တေနဟိ- ထိုသို့ဖြစ်လျှင်၊ကာသာဝံ-ကို၊ ဒီဃတောစ-အလျားအားဖြင့်၎င်း၊ တိရိယဥ္စ - အနံအားဖြင့်၎င်း၊ မိနိတွာ - တိုင်းပြီး၍၊ ထပေဟိ - ထားလော၊

ထပေတွာ-ပြီး၍၊ ဒိက္ခိဏာ ဒိသာယ-၌၊ ဝိဟာရ ပဋိပါဋိယာ-ကျောင်းအစဉ်အားဖြင့်၊ ဝိစိနိတွာ-စူးစမ်းရှာဖွေ၍၊ တံဘိက္ခုံ-ကို၊အာနေဟိ-ဆောင်ခဲ့လော၊ ဣတိ-ဤသို့ မိန့်တော်မူပြီ၊ သော-သည်၊ တထာ-ထို စေခိုင်းသည့်အတိုင်း၊ ကတွာ-၍၊ တံ ဘိက္ခုံ-ထို သင်္ကန်းရှင်ရဟန်းကို၊ ဒိသွာ-တွေ့၍၊ ထေရဿ-၏၊ သန္တိကံ-သို့၊ အာနေသိ-ပြီ။

ထေရော ပုစ္ဆိ(ကိံ)၊ ဣဒံ- ဤသင်္ကန်းသည်၊ တဝ-၏၊ ကာသာဝံ-လော၊ ဣတိ (ပုစ္ဆိ)၊ ဘန္တေ - ရား၊ အာမ-မှန်ပါ၊ ဣတိ - ဤသို့လျှောက်ပြီ၊ တေ-သင်သည်၊ ကုဟိံ-၌၊ ပါတိတံ-ကျစေအပ်သနည်း၊ ဣတိ-ဤသို့မေးပြီ၊ သော-ထိုသင်္ကန်းရှင်ရဟန်းသည်၊ သဗ္ဗံ-ကို၊ အာစိက္ခိ-လျှောက်ထားပြီ၊ ပန-ဆက်၊ ထေရော - သည်၊ တေန – ထို ရဟန်းသည်၊ ကတံ - သော၊ ဓုရနိက္ခေပံ- ကို၊ သုတွာ, ဣတရံ-သင်္ကန်းရှင်ရဟန်းမှအခြားသော သင်္ကန်းကောက်ယူခဲ့သော ရဟန်းကို၊ ပုစ္ဆိ (ကိံ)၊ တယာ, ဣဒံ - ဤ သင်္ကန်းကို၊ ကုဟိံ ဒိသွာ ဂဟိတံ၊ ဣတိ (ပုစ္ဆိ)၊ သောပိ – ထို သင်္ကန်းကောက်ယူခဲ့သော ရဟန်းသည်လည်း၊ သဗ္ဗံ အာရောစေသိ၊ တတော – ထိုမှ နောက်၌၊ နံ - ထို သင်္ကန်းကောက်ယူခဲ့သော ရဟန်းကို၊ ထေရော အာဟ၊ (ကိံ)၊ တေ – သင်သည်၊ သုဒ္ဓစိတ္တေန-စင်ကြယ်သောစိတ်ဖြင့်၊ ဂဟိတံ - ယူအပ်သည်၊ သစေ အဘဝိဿ – အံ့၊ (ဧဝံ သတိ)၊ တေ- ၏၊ အနာပတ္တိယေဝ–အနာပတ်သည်သာ၊ အဿ- ဖြစ်ရာ၏၊ ထေယျစိတ္တေန – ဖြင့်၊ ဂဟိတတ္တာ ပန - ယူအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ကား၊ ဒုက္ကဋံ အာပန္နော အသိ၊ တံ – ထို ဒုက္ကဋ်အာပတ်ကို၊ ဒေသေတွာ - ဒေသနာပြော၍၊ အနာပတ္တိကော – အာပတ်မရှိသူသည်၊ ဟောဟိ- ဖြစ်လော၊ ဣဒဉ္စ ကာသာဝံ– ကိုလည်း၊ အတ္တနော သန္တကံ ကတွာ, တေဿဝဘိက္ခုနော-အားသာလျှင်၊ ဒေဟိ - ပေးလိုက်လော၊ ဣတိ (အာဟ)၊ သောဘိက္ခု - ထို သင်္ကန်းကောက်ယူခဲ့သော ရဟန်းသည်၊ အမတေန-အမြိုက်ရေစင်ဖြင့်၊ အဘိ

**ဣဒဉ္စ၊ပေ၊ ဒေဟိ** ။ ။ သင်္ကန်းရှင်သည် ဓုရနိက္ခေပ ပြုပြီးဖြစ်၍ သူမပိုင်တော့၊ သို့သော် ပြန်တွေ့သောအခါ“တပည့်တော်၏ဥစ္စာဘဲ”ဟု လျှော်၏၊ ထိုအခါ သင်္ကန်းယူထားသောရဟန်းသည်လည်း ထိုသင်္ကန်း၌ အာလယပြတ်သွားတော့၏၊ ထို့ကြောင့် ၂ ပါးလုံးမဆိုင်၊ ထို့ကြောင့် မူလသင်္ကန်းရှင်က ယူသွားလျှင် ယူထားသော ရဟန်းမှာ “ငါက ပြန်ပေးရမည့်ဘဏ္ဍာကို ငါ့လက်ဖြင့် မပေးဘဲ ယူသွားပြီ၊ ငါ့မှာ ဘဏ္ဍာစားထိုက်ဦးမှာလား”ဟု သံသယဖြစ်ဘွယ်ရှိ၏၊ မူလ သင်္ကန်းရှင်မှာလည်း“ငါဓုရနိက္ခေပပြုပြီးသင်္ကန်းကို သူက မပေးဘဲ ယူမိပြီ၊ ငါ့မှာ အာပတ်သင့်လေသလား ” ဟု သံသယဖြစ်ဘွယ်ရှိ၏၊ ထိုသို့မဖြစ်ရအောင် “ကိုယ်ပိုင်လုပ်ပြီး ပေးလိုက်ပါ”ဟု မိန့်သည်။

သိဏ္ဍောဒရ - ဥုးထိပ်၌ သွန်းလောင်းအပ်သုကဲ့သို့၊ ပရမဿာသပ္ပတ္တော - အလွန်သက်သာရာသို့ ရောက်သည်၊ အဟောသိ-ပြီ၊ ဣတိ-ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ ( ဝတ္တု - ဝတ္ထုကြောင်းတည်း၊ ) ဧဝံ - သို့လျှင်၊ ဝတ္ထု - ဘဏ္ဍာဟူသော ဝတ္ထုကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗံ-ထိုက်၏။

[ဂါထာ၌ဝတ္ထုံကာလမျှစသောဌာနတို့တွင် ဝတ္ထုံအရဖွင့်ပြပြီး၍ကာလံ အရကို ဖွင့်ပြသောကြောင့် '' ကာလောတိ '' စသည်တက်။] ကာလောတိ-ကား၊ အဝဟာရကာလော - ခိုးအပ်ရာအခါတည်း၊ ဟိ—ချဲ့၊ တဒေဝဘဏ္ဍံ-ထိုဘဏ္ဍာသည်ပင်၊ ကဒါစိ- ၌၊ သမဂ္ဃံ- နည်းသောအဖိုးရှိသည်၊ ဝါ-အဖိုး ချိုသည်၊[အဘိဓာန်လာ သံ၏အနက်များစွာတို့တွင်အပ္ပအနက်ဟောတည်း။] ဟောတိ၊ ကဒါစိ, မဟဂ္ဃံ- များသော အဖိုးရှိသည်၊ ဝါ – အဖိုးတန်သည်၊ (ဟောတိ)၊ တသ္မာ, ယံဘဏ္ဍံ – ကို၊ ယသ္မိံ ကာလေ-၌၊ အဝဟင်္ခ-ပြီ၊ တသ္မိံ ယေဝကာလေ - ထို ခိုးအပ်ရာအခါ၌သာလျှင်၊ တဿ - ထိုဘဏ္ဍာ၏၊ ယော အဂ္ဃော-သည်၊ ဟောတိ၊ တေန အဂ္ဃေန အာပတ္တိ ကာရေတဗ္ဗာ၊ ဧဝံ-လျှင်၊ ကာလော - ခိုးအပ်ရာအခါကို၊ ဩလောကေတဗ္ဗော–ထိုက်၏၊ ဒေသောတိ-ကား၊ အဝဟာရဒေသော - ခိုးယူအပ်ရာအရပ်တည်း၊ ဟိ-ချဲ့၊ ယံ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ ယသ္မိံ ဒေသေ,အဝဟင်္ခ-ပြီ၊ တသ္မိံ ယေဝဒေသေ- လျှင်၊ တဿ- ထိုဘဏ္ဍာ၏၊ ယောအဂ္ဃော ဟောတိ၊ပေ၊ဟိ-မှန်၊ ဘဏ္ဍုဋ္ဌာနဒေသေ-ဘဏ္ဍာထွက်ပေါ်ရာ အရပ်၌၊ ဘဏ္ဍံ-သည်၊သမဂ္ဃံ ဟောတိ၊ အညတ္ထ-ဘဏ္ဍာထွက်ပေါ်ရာအရပ်မှ တပါးသောအရပ်၌၊ မဟဂ္ဃံ (ဟောတိ)။

စ-ဆက်၊ ဣမဿာပိ အတ္ထဿ-ဤ ဒေသကိုကြည့်ရမည် ဟူသော အနက် အဓိပ္ပါယ်ကိုလည်း၊ [ပိဖြင့် ဝတ္ထုတုန်းက အတ္ထကိုဆည်းသည်။] ဒီပနတ္ထံ ဣဒံ ဝတ္ထု၊ ကိရ – ချဲ့၊ အန္တရသမုဒ္ဒေ – အန္တရသမုဒ္ဒ အရပ်၌၊ [ သီဟိုဠ်ကျွန်းနှင့် သမုဒ္ဒရာ၏အကြား ကျွန်းငယ်၌၊] ဧကော ဘိက္ခု,သုသဏ္ဌာန်-ကောင်းသော ပုံသဏ္ဌာန်ရှိသော၊ နာဠိကေရံ – အုန်းမှုတ်ကို၊ လဘိတွာ၊ ဘမံ – ပွတ်သို့၊ အာရောပေတွာ-တင်၍၊ သင်္ခထာလကသဒိသံ-ခရုသင်းခွက်နှင့်တူစွာ၊မနော

တသ္မာ ယံ ဘဏ္ဍံ။ ။ယခုစာအုပ်များ၌ '' တံဘဏ္ဍံ ''ဟု ရှိ၏၊ စသွားထုံးစံမှာ ''ယ''၏ ရှေ့ကပုဒ်သည် ''တ''နောက်၌ စပ်ပုဒ်ရှိ၏၊ ဤ တံ ဘဏ္ဍံကား တသ္မိံယေဝ ကာလေ၏ နောက်၌စာစပ်စရာမရှိ၊ ထို့ကြောင့် ''တံဘဏ္ဍံ''ဟု မရှိရ၊ ''ယံ ဘဏ္ဍံ''ဟု ရှိရမည်၊ အဝဟင်္ခ ၌ စပ်၊ ဤ ယံကိုပင် ''တဿ''ဟု နောက်၌ နိယမပုဒ် ပြလတ့်၊[တံဟိ ဘဏ္ဍံ ယသ္မိံကာလေ အဝဟင်္ခ''၌လည်း ''ယံ ဟိ ဘဏ္ဍံ''ဟု ပင်ရှိစေ၊ ဤဝါကျမျိုးကို အနိယမ နိယမဆက်၍ဆက်၍ပြသော ''သံကွင်းဆက်ဝါကျ''ဟု မိန့်ကြသည်။

ရမ္မံ – စိတ်၏ မွေ့လျော်ရာဖြစ်သော၊ ပါနီယထာလကံ – သောက်ရေခွက်ကို၊ ကတွာ, တဏ္ဍေ၀-ထို အန္တရသမုဒ္ဒ အရပ်၌ပင်၊ ထပေတွာ-ထားခဲ့၍၊ စေတိယ ဂိရိံ–စေတိယ တောင်သို့၊ အဂမာသိ–သွားပြီ၊ အထ–ထိုအခါ၌၊ အညော ဘိက္ခု ၊ပေ၊ အာဂတော–လာပြီ၊ တဿ–ထို ခွက်ခိုးရဟန်းသည်၊ တတ္ထ–ထို စေတိယတောင်၌၊ ယာဂုံ - ကို၊ ပိဝန္တဿ- သောက်စဉ်၊ တံထာလကံ ဒိသွာ၊ ထာလကဿာမိကော-ခွက်ရှင်ဖြစ်သော၊ဘိက္ခု အာဟ၊ (ကိံ)၊ တေ-သည်၊ ကုတော–မှ၊ ဣဒံ–ဤခွက်ကို၊ လဒ္ဓံ–နည်း၊ ဣတိ–ဤသို့မေးပြီ၊ မေ–သည်၊ အန္တရသမုဒ္ဒတော - အန္တရသမုဒ္ဒအရပ်မှ၊ အာနီတံ – ဆောင်ယူအပ်ပါပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့လျှော်ပြီ၊ သော-ထိုခွက်ရှင် ရဟန်းသည်၊ တံ-ထိုခွက်ခိုးရဟန်းကို၊ ဧတံ-ဤခွက်သည်၊ တဝ-၏၊န သန္တကံ-ဥစ္စာမဟုတ်၊ တေ-သည်၊ ထေယျာယ-ခိုးသူ၏အဖြစ်ဖြင့်၊ ဂဟိတံ- ပြီ၊ ဣတိ–ဤသို့ပြော၍၊ သံဃမဇ္ဈံ- သို့၊ အာကခို-ဆွဲငင်ပြီ၊ စ– ဆက်၊ တတ္ထ- ထို စေတိယတောင်၌၊ပေ၊ အာဂမိံသု၊ တတ္ထ–ထို မဟာဝိဟာရကျောင်းတိုက်၌၊ ဘေရိံ - စည်ကို၊ ပဟရာပေတွာ – တီးစေ၍၊ မဟာစေတိယ သမီပေ – မဟာစေတီတော်၏ အနီး၌၊ သန္နိပါတံ - အစည်း အဝေးကို၊ကတွာ,ဝိနိစ္ဆယံ–ဆုံးဖြတ်ခြင်းကို၊ အာရဘိံသု၊ ဝိနယဓရတ္ထေရာ-တို့သည်၊ အဝဟာရံ – ခိုးယူလာခဲ့ပုံကို၊ သညာပေသုံ–သိစေကြကုန်ပြီ။

စ – ဆက်၊ တသ္မိံသန္နိပါတေ – ၌၊ အာဘိဓမ္မိက ဂေါဒတ္တတ္ထေရောနာမ– အာဘိဓမ္မိကဂေါဒတ္တ ထေရ်မည်သည်၊ ဝိနယကုသလော ဟောတိ၊ သော-ထို ထေရ်သည်၊ ဧဝံ အာဟ၊ (ကိံ)၊ ဣမိနာ – ဤရဟန်းသည်၊ ဣဒံ ထာလကံ ကုဟိံ, အဝဟဋံ–ခိုးယူအပ်သနည်း၊ ဣတိ–ဤသို့မေးပြီ၊ အန္တရသမုဒ္ဒေ-၌၊ အဝဟဋံ-ပြီ၊ ဣတိ-ဤသို့လျှောက်ပြီ၊ တတြ-ထို အန္တရသမုဒ္ဒအရပ်၌၊ ဣဒံ-ဤ ခွက်သည်၊ ကိံ- ကို၊ အဂ္ဃတိ - ထိုက်တန်သနည်း၊ (တနည်း) ကိံ အဂ္ဃတိ- ဘယ်လောက်တန်သနည်း၊ ဣတိ-ဤသို့မေးပြီ၊ ကိဉ္စိ–တစုံတခုကို၊ န အဂ္ဃတိ- မတန်ပါ၊ (တနည်း) န ကိဉ္စိ အဂ္ဃတိ– ဘယ်လောက်မျှ မတန်ပါ၊ [ဟိ–မှန်၊ တတြ– ထို အန္တရသမုဒ္ဒ အရပ်၌၊ နာဠိကေရံ– အုန်းသီးကို၊ ဘိန္ဒိတွာ- ခွဲ၍၊ မိဉ္ဇံ-အဆန်ကို၊ ခါဒိတွာ-၍၊ကပါလံ-အုန်းမှုတ်ကို၊ဆဍ္ဍေန္တိ-စွန့်ပစ်ကြကုန်၏။] ပန-ဆက်၊ ဒါရုအတ္ထံ- ထင်းအကျိုးကို၊ ဝါ-ထင်းကိစ္စကို၊ ဖရတိ-ပြီးစေပါ၏၊ [ဒါရုဟိ ကတ္တဗ္ဗကိစ္စံ သာဓေတိ၊] ဣတိ-ဤသို့လျှော်ပြီ၊ ဣမဿ ဘိက္ခုနော– ၏ ခွက်ရှင်ရဟန်း၏၊ ဟတ္ထေ – ၌ ခွက်လုပ်ရာ၌၊ ဟတ္ထကမ္မံ – ဟတ္ထကမ်သည်၊ ဝါ-လက်ဖြင့်ပြုအပ်သော အမှုသည်၊ ကိံ အဂ္ဃတိ–ဘယ်လေဒံ တန်သနည်း၊ ဣတိ-ပြီ၊ မာသကံ-တပဲကိုသော်၎င်း၊ ဥနမာသကံဝါ-တပဲအောံယုတ်လျော့

သော အဖိုးကိုသော်၎င်း၊ ( အဎ္ဍတိ-၏၊ ) ဣတိ-ဤသို့လျှောက်ပြီ၊ ကတ္ထစိ-တစုံတခုသော အရပ်၌၊ သမ္ဘာသမ္ဘုဒ္ဓေန- သည်၊ မာသေန၀ါ - တပဲဖြင့်သော်၎င်း၊ဥုနမာသေန၀ါ-တပဲအောက်ယုတ်လျော့သောအဖိုးဖြင့်သော်၎င်း၊ပညတ္တံ-ပညတ်တော်မူအပ်သော၊ ပါရာဇိကံ- သည်၊ အတ္ထိ ပန- ရှိပါသလော၊ ဣတိ ဧဝံ-သို့၊ ပုစ္ဆေ-မိန့်တော်မူအပ်သော်၊ သာဓု သာဓု-သာဓု သာဓု၊သုကထိတံ-ကောင်းစွာ ဆိုအပ်ပါပေစွ၊ သုဝိနိစ္ဆိတံ-ကောင်းစွာဆုံးဖြတ်အပ်ပေစွ၊ ဣတိ-သို့၊ ဧကေ သာဓုကာရော – တပြိုင်နက်သော သာဓုသံသည်၊ အဟောသိ - ပြီ၊ စ-ဆက်၊ တေနသမယေန-၌၊ဘာတိယရာဇာပိ-သည်လည်း၊စေတိယ၀န္ဒနတ္ထံ-ငှါ၊ နဂရတော- မှ၊ နိက္ခမန္တော-ထွက်လာလသော်၊ တံသဒ္ဒံ-ထို သာဓုသံကို၊ သုတွာ၊ ဣဒံ – ဤအသံသည်၊ ကိံ – အဘယ်နည်း၊ ဣတိ ပုစ္ဆိတွာ ၊ပေ၊ ပဋိပါတိယာ– အစဉ်အားဖြင့်၊ပေ၊ စရာပေသိ–လည်စေပြီ၊ (ကိံ)၊ မယိ–သည်၊ သန္တေ-ထင်ရှားရှိစဉ်၊ ဘိက္ခူနံပိ-တို့၏၎င်း၊ ဘိက္ခုနီနံပိ–၎င်း၊ ဂိဟီနံပိ- ၎င်း၊ အဓိကရဏံ–ကို၊ အာဘိဓမ္မိက ဂေါဒတ္တတ္ထေရေန–သည်၊ ဝိနိစ္ဆိတံ–ဆုံးဖြတ်အပ်သည်၊ ( သမာနံ– သော်၊ ) သုဝိနိစ္ဆိတံ - ကောင်းစွာ ဆုံးဖြတ်အပ်ပြီ၊ တဿ–ထိုထေရ်၏၊ ဝိနိစ္ဆယေ-၌၊ အတိဋ္ဌမာနံ-မတည်သူကို၊ ရာဇာဏာယ-မင်းအာဏာဖြင့်၊ ထပေမိ – ထားအံ့၊ ဣတိ (စရာပေသိ)၊ ဣတိ - ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ (ဝတ္ထု-ဝတ္ထုကြောင်းတည်း၊) ဧဝံ ဒေသော ညြလောကေတမ္ဘော။

အဍ္ဎေါတိ–ကား၊ ဘဏ္ဍာဍ္ဎေါ- ဘဏ္ဍာ၏တန်ဖိုးတည်း၊ ဟိ-ချဲ့၊ နဝဘဏ္ဍဿ-အသစ်ဘဏ္ဍာ၏၊ ယော အဍ္ဎေါ- အကြင်အဖိုးသည်၊ ဟောတိ၊ သော–ထိုအဖိုးသည်၊ ပစ္ဆာ–၌၊ ပရိဟာယတိ-ယုတ်လျော့၏၊ ယထာ-ဥပမာကား၊ နဝဓောတော-ပွတ်ခံအပ်ပြီး၍ အသစ်ဖြစ်သော၊ ပတ္တော–သပိတ်သည်၊ အဋ္ဌ၀ါ - ရှစ်အသပြာတို့ကိုသော်၎င်း၊ ဒသ၀ါ - ဆယ် အသပြာတို့ကိုသော်၎င်း၊ အဍ္ဎတိ – ၏၊ သော - ထိုသပိတ်သည်၊ ပစ္ဆာ – ၌၊ ဘိန္နော - ကွဲအက်သည်၊ (ဟုတွာ)ဝါ-၎င်း၊ ဆိဒ္ဒေါ-ပေါက်သည်၊(ဟုတွာ)ဝါ-၎င်း၊ အာဏိဂဏ္ဌိကာဟတော – ထည့်သွင်းအပ်သော စို့ မယ်န, ထည့်သွင်းအပ်သော အထုံးအဖွဲ့

**အာဏိဂဏ္ဌိကာဟတော။** ။အာဟတအာဏိ- ပေါက်သည်ဖြစ်၍ ထိုအပေါက်၌ ရိုက်သွင်းအပ်သောစို့ (မယ်န=သတ်) ရှိသည်၊အာဟတဂဏ္ဌိက-(ကွဲအက်သည်ဖြစ်၍ အက်ကြောင်း ၂ ဘက်၌ အပေါက်ဖေါက်ပြီးလျှင် ထို အပေါက်၌ ကြိုးငယ် သွင်း၍ ထုံးဖွဲ့အပ်သည်ကို ဆိုရကား) ထည့်အပ်သော အထုံးအဖွဲ့ရှိသည်၊ ဤသို့ အာဟတကို ရှေ ၂ ပုဒ်နှင့် ပြန်၍တွဲပါ၊ ဝိသေသနပရနိပါတ (ဒွန်အတွင်းငုပ်သော) ကမ္မဓာရည်းတည်း၊ ဘိန္န ဆိဒ္ဒ ၂ မျိုးနှင့်တွဲရမည်ဖြစ်၍“ဟတော၀ါ”ဟု ၀ါမပါသင့်–ဟု ထင်သည်။

ရှိသည်၊ (သမာနော–သော်၊) အပ္ပဋ္ဌေါ–နည်းသောအဖိုးရှိသည်၊ ဟောတိ၊ တသ္မာ သမ္ဗဒါ, ဘဏ္ဍံ-ကို၊ ပကတိ အဋ္ဌေနေဝ-ပင်ကိုယ်တန်ဖိုးဖြင့်သာလျှင်၊ န ကာတဗ္ဗံ-ထိုက်၊ ဣတိ-ဤသို့မှတ်အပ်၏၊ ဧဝံ အဋ္ဌေါ ဒြဿလောကေတဗ္ဗော။

ပရိဘောဂေါတိ–ကား၊ ဘဏ္ဍာပရိဘောဂေါ-ဘဏ္ဍာကို သုံးစွဲခြင်းတည်း၊ ဟိ–ချဲ့၊ ပရိဘောဂေနာပိ–သုံးစွဲခြင်းကြောင့်လည်း၊ ဝါသိအာဒိ ဘဏ္ဍဿ–ဒါး အစရှိသောဘဏ္ဍာ၏၊ [ရှေးက ဝါသိကို ပဲခွပ်ဟု ပေးကြ၏။]အဋ္ဌေါ ပရိဟာယတိ၊ တသ္မာ ဧဝံ, ဥပပရိက္ခိတဗ္ဗံ- စူးစမ်းဆင်ခြင်ထိုက်၏၊ ကောစိ– တစုံတယောက်သောရဟန်းသည်၊ ကဿစိ–တစုံတယောက်၏၊ ပါဒဂ္ဃနကံ– တမတ်တန်သော၊ ဝါသိံ–ဒါးကို၊ သစေ ဟရတိ– အကယ်၍ ခိုးဆောင်အံ့၊ တတြ–ထိုသို့ ခိုးဆောင်ရာ၌၊ ဝါသိဿာမိကော - ဒါးရှင်ကို၊ ပုစ္ဆိတဗ္ဗော ( ကိံ )၊ တယာ-သည်၊ အယံ ဝါသိ-ကို၊ ကိတ္တကေန-အဘယ်မျှသောအဖိုးဖြင့်၊ ကီတာ-ဝယ်အပ်သနည်း၊ ဣတိ(ပုစ္ဆိတဗ္ဗော)၊ ဘန္တေ,ပါဒေန-တမတ်ဖြင့်၊(ကီတာ)၊ ဣတိ - ဤသို့လျှောက်အံ့၊ ကိံပန – အသို့နည်း၊ တေ- သည်၊ ကိဏိတွာဝ-ဝယ်ပြီး၍သာလျှင်၊ ထပိတာ – သိမ်းထားအပ်သလော၊ ဥဒါဟု- သို့မဟုတ်၊ တံ- ထိုဒါးကို၊ ဝဠဉ္ဇသိ– သုံးစွဲသေးသလော၊ [ဘူဝါဒ်ဖြစ်၍ " ဝဠဉ္ဇသိ " ဟု ရှိစေ။] ဣတိ - ဤသို့ မေးထိုက်၏၊ သစေဝဒတိ - အကယ်၍လျှောက်အံ့၊ (ကိံ)၊ ဧကဒိဝသံ- တနေ့သ၌၊ မေ- သည်၊ ဒန္တကဋ္ဌံ-ဒန်ပူကို၊ ဆိန္နံ-ဖြတ်အပ်ပါပြီ၊ (ဣတိ) ဝါ- ဤသို့သော်၎င်း၊ ရဇနဆလ္လိ–ဆိုးရည်ခေါက်ကို၊ [ဝုတ္တကံ ဖြစ်၍ "ရဇနဆလ္လိ "ဟု ရှိစေ။ ] ဆိန္နာ, ဣတိဝါ၊ ပတ္တပစနကဒါရု- သပိတ် ဖုတ်ကြောင်းထင်းကို၊ ဆိန္နံ , ဣတိဝါ၊ ဃံသိတွာ – ပွတ်တိုက်၍၊ နိသိတာ– သွေးအပ်ပါပြီ၊ ဣတိဝါ– ဤသို့သော်၎င်း၊ သစေ ဝဒတိ – အံ့၊ အထ– ထိုသို့ လျှော်လသော်၊ အဿာ- ထိုဒါး၏၊ ပေါရာဏော-ရှေး၌ဖြစ်သော၊ အဋ္ဌေါ-သည်၊ ဘဋ္ဌော-လျော့ကျပြီ၊ ဣတိ ဝေဒိတဗ္ဗော။

စ-ဆက်၊ ဝါသိယာ-၏၊ (အဋ္ဌေါ- သည်၊ ဘဿတိယထာ-ကဲ့သို့၊) ဧဝံ-တူ၊ အဉ္ဇနိယာဝါ-မျက်စဉ်းကျည်တော့်၏၎င်း၊ (အဋ္ဌေါ- ၌စပ်၊) ဝါ-ကို၎င်း၊ (ဓောဝနာ–၌စပ်၊) အဉ္ဇနိသလာကာယဝါ- မျက်စဉ်းတံ၏၎င်း၊ ဝါ- ကို၎င်း၊ ကုဉ္စိကာယဝါ-သံကောက်၏၎င်း၊ ဝါ–ကို၎င်း၊ ပလာလေနဝါ–ကော်ရိုးဖြင့် သော်၎င်း၊ ထုသေဟိဝါ- ဖွဲတို့ဖြင့်သော်၎င်း၊ ဣဋ္ဌကစုဏ္ဏေနဝါ- အုဋ်မှုန့်ဖြင့် သော်၎င်း၊ ဧကဝါရံ - ကြိမ်၊ ဃံသိတွာ – ပွတ်တိုက်၍၊ ဓောဝနမတ္တေနာပိ– ဆေးခြင်းမျှဖြင့်လည်း၊ အဋ္ဌေါ–သည်၊ ဘဿတိ–၏၊ တိပုမဏ္ဍလဿ–သလွဲ ဖြူဖြင့်ပြုအပ်သော သပိတ်ခြေဝန်း၏၊ မကရဒန္တစ္ဆေဒနေနာပိ-မကရ်ရုပ်းသွားကို

ဖြတ်ခြင်းမျှဖြင့်ငင်း၊ ပရိမဇ္ဇိတ မတ္တေနာပိ–ပွတ်တိုက်ခြင်းမျှဖြင့်ငင်း၊ (အဋ္ဌေါ ဘာသတိ၊) ဥဒကသာဋိကာယ-၏၊ သကိံ,နိဝါသနပါရုပနေနာပိ-ဝတ်ခြင်း, ခြုံခြင်းဖြင့်ငင်း၊ ပရိဘောဂသီသေန–သုံးစွဲခြင်းကို အဦးပြုသဖြင့်၊ အံသေဝါ- ပခုံး၌သော်ငင်း၊ သီသေဝါ– ၌သော်ငင်း၊ ထပနမတ္တေနာပိ– ထားခြင်းမျှဖြင့် ငင်း၊ အဋ္ဌေါ ဘာသတိ၊ တဏ္ဍုလာဒီနံ- တို့၏၊ ပဗ္ဗေါဋနေနာပိ–ခါချခြင်းဖြင့် ငင်း၊ တတော- ထိုဆန်မှ၊ ဂေါဝါ– တလုံးကိုသော်ငင်း၊ ဒွေဝါ- တို့ကိုသော် ငင်း၊ အပနယနေနာပိ– ပယ်ခြင်းဖြင့်ငင်း၊ အက္ကမသော–ဖြင့်၊ ဂေါ – သော၊ ပါသာဏသက္ခရံ-ကျောက်, ကျောက်စလစ်ကို၊ ဥဒ္ဓရိတွာ–ထုတ်ပယ်၍၊ ဆဋ္ဋိတ မတ္တေနပိ စွန့်ခြင်းမျှဖြင့်ငင်း၊ အဋ္ဌေါ ဘာသတိ။

သပ္ပိတေလာဒီနံ-တို့၏၊ ဘာဇနန္တရပရိဝတ္တနေနာပိ- တပါးသောခွက်သို့ ပြောင်းခြင်းဖြင့်ငင်း၊ အန္တမသော - ဖြင့်၊ တတော - ထိုထောပတ် ဆီမှ၊ မက္ခိကံဝါ-ယင်ကောင်ကိုသော်ငင်း၊ ကိပိလ္လိကံဝါ– ပိုးကောင်ကိုသော်ငင်း၊ ဥဒ္ဓရိ တွာ–ထုတ်ဆယ်၍၊ ဆဋ္ဋိတမတ္တေနာပိ-စွန့်ခြင်းမျှဖြင့်ငင်း၊ အဋ္ဌေါ ဘာသတိ၊ ဂုဠပိဏ္ဍကဿ–တင်းလဲခဲ၏၊ မဓုရဘာဝဇာနနတ္တံ- ချိုသည်၏အဖြစ်ကို သိခြင်း အကျိုးငှါ၊ နခေန-ဖြင့်၊ ဝိဇ္ဈိတွာ-ထိုး၍၊ အဏုမတ္တံ–အဏုမြူလောက်၊ ဂဟိတ မတ္တေနာပိ-ယူခြင်းမျှဖြင့်လည်း၊ အဋ္ဌေါဘာသတိ၊ တသ္မာ-ကြောင့်၊ ယံကိဉ္စိ- သော၊ ပါဒပူရဏံ – တမတ်ထိုက်တန်သော ဘဏ္ဍာကို၊ ဝုတ္တနယေနေဝ – ဖြင့်သာ၊ သာမိကောဟိ - တို့သည်၊ ပရိဘောဂေန-ကြောင့်၊ ဥုနံ -ယုတ်လျော့ သည်ကို၊ ကတံ - သည်၊ဟောတိ၊ တံ- ထိုဘဏ္ဍာကို၊ အဝဟရေ - ခိုးသော၊ ဘိက္ခု– ကို၊ ပါရာဇိကေန-ဖြင့်၊ နကာရေတဗ္ဗော– မပြုစေထိုက်၊ ဝါ - မဆုံး ဖြတ်ထိုက်၊ ဧဝံ ပရိဘောဂေါ ဩလောကေတဗ္ဗော။

[အားလုံး၏နိဂုံးကို ပြလို၍ "ဧဝံ" စသည်မိန့်၊] ဧဝံ – လျှင်၊ ပဉ္စ–န်သော၊ ဌာနာနိ ဌာနာနိ - တို့ကို၊ တုလယိတွာ-၍၊ ဝိစက္ခဏော – သည်၊ အတ္တံ - ကို၊ ဓာရေယျ - ၏၊ အာပတ္တိံဝါ – ကိုသော်ငင်း၊ အနာပတ္တိံဝါ – ကိုသော်ငင်း၊ ဂရုကံ အာပတ္တိံဝါ – ကိုသော်ငင်း၊ လဟုကံ အာပတ္တိံဝါ – ကိုသော်ငင်း၊ ယထာဌာနေ - ထားမြဲတိုင်းသောအရာ၌၊ (မြတ်စွာဘုရားထားမြဲတိုင်းသော အရာ၌၊) ထပေယျ- ရာ၏။ [အာပတ္တိံဝါ-စသောဝါကျကား ဓာရေယျ အတ္တံ ကို ထပ်ပြသော ဝါကျဖြစ်သည်။] ဣတိ – အပြီးတည်း၊ အာဒိယေယျ ၊ပေ၊ သင်္ကေတံ ဝီတိနာမေယျာတိ – ဟူကုန်သော၊ ဣမေသံ ပဒါနံ - တို့၏၊ ဝိနိစ္ဆယော–သည်၊ နိဋ္ဌိတော-ပြီ၊

ဣဒါနိ– ၌၊ ယထာရူပေ အဒိန္နာဒါနေတိ အာဒိနိ–အစရှိသော ပုဒ်တို့ကို၊ ဝိဘဇန္တေန-အကျယ်ဝေဘန်တော်မူသော၊(ဘဂဝတာ)၊ယထာရူပံ နာမာတိ အာဒိ–အစရှိသော၊ ယဒိဒံ(ဝစနံ)–ကို၊ ဝုတ္တံ- ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊ တတ္ထ– ထိုစကားရပ်၌၊ ယထာရူပန္တိ-ကား၊ ယထာဇာတိကံ-အကြင်အကြင် သဘော ရှိသော၊(အဒိန္နံ-ကို၊) ပန–ဆက်၊ တံ–ထို ယထာရူပ ဘဏ္ဍာသည်၊ ယသ္မာ, ပါဒတော–တမတ်မှ၊ ပဋ္ဌာယ - ၍၊ ဟောတိ၊ တသ္မာ, ပါဒံဝါ ပါဒါရဟံဝါ အတိရေကပါဒံဝါတိ–ဟူ၍၊ အာဟ–ဟောတော်မူပြီ၊ တတ္ထ–ထို ပါဒ ပါဒါရဟ အတိရေကပါဒ တို့တွင်၊ ပါဒေန - ပါဒ သဒ္ဒါဖြင့်၊ ကဟာပဏဿ– အသပြာ၏၊ စတုတ္ထဘာဂံ-လေးခုမြောက် အဘို့ဖြစ်သော၊ ဝါ-လေးဘို့ တဘို့ ဖြစ်သော၊ အကပ္ပိယဘဏ္ဍမေဝ-အကပ္ပိယဘဏ္ဍာကိုသာ၊ ဒဿေတိ–ပြတော်မူ၏၊ ပါဒါရဟေန – ပါဒါရဟ သဒ္ဒါဖြင့်၊ ပါဒဂ္ဃနကံ - တမတ်တန်သော၊ ကပ္ပိယဘဏ္ဍံ-ကပ္ပိယဘဏ္ဍာကို၊(ဒဿေတိ)၊ အတိရေကပါဒေန-အတိရေက ပါဒသဒ္ဒါဖြင့်၊ ဥဘယမ္ပိ- အကပ္ပိယဘဏ္ဍာ ကပ္ပိယဘဏ္ဍာ နှစ်ပါးစုံကိုလည်း၊ (ဒဿေတိ )၊ ဧတ္တာဝတာ – ဤမျှအတိုင်းအရှည်ရှိသော ပါဒ , ပါဒါရဟ, အတိရေက ပါဒသဒ္ဒါဖြင့်၊ သဗ္ဗာကာရေန– အလုံးစုံသော အခြင်းအရာအား ဖြင့်၊ ဒုတိယပါရာဇိကပ္ပဟောနကဝတ္ထု – ဒုတိယပါရာဇိက လောက်သော ဝတ္ထုသည်၊ ဝါ–ကို၊ ဒဿိတံ–ပြအပ်ပြီးသည်၊ ဟောတိ။

ပထဗျာရာဇာတိ-ကား၊ဒီပစက္ကဝတ္တိ-ဒီပစက္ကဝတ်ဖြစ်သော၊ဝါ-တကျွန်း၌ အာဏာစက်ကို ဖြစ်စေနိုင်သော၊ အသောကသဒိသော - အသောကမင်းနှင့် တူသော၊ သကလပထဝိယာ-အလုံးစုံသောမြေ၏၊ ဝါ-တကျွန်းလုံး၏၊ ရာဇာ- မင်းတည်း၊ ဝါ ပန-သည်သာ မကသေး၊ သီဟဠ ရာဇသဒိသော–သီဟိုဠ်မင်း နှင့် တူသော၊ အညောပိ-အခြားလည်း ဖြစ်သော၊ ဧကဒီပေ-တကျွန်းလုံး၌၊

**ပါဒေနစသည်**။ ။"တမတ်" ဟူသော အသုံးအနှုန်းသည် ငွေကိုခေါ်သော အသုံးအနှုန်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် ပါဒေနဖြင့် တမတ်ဟူသော အကပ္ပိယငွေကိုရင်း, ငွေ ကဲ့သို့ ရောင်းဝယ်၍ရသော ပုလဲစသည်ကိုရင်းပြ၏၊ "တမတ်တန်" ဟူသော အသုံး အနှုန်းကား ပစ္စည်းကိုခေါ်သော အသုံးအနှုန်းတည်း၊ ထို့ကြောင့် ပါဒါရဟေနဖြင့် ကပ္ပိယပစ္စည်းဝတ္ထုကို ပြသည်။

**ပထဗျာ**။ ။သမုဒ္ဒရာရေဖြင့် ပိုင်းခြားအပ်သောမြေကို "ပထဝီ–မြေပြင်အားလုံး" ဟု ခေါ်ရကား "ပထဗျာ – တမြေပြင်လုံး၏ + ရာဇာ"အရ ဇမ္ဗူဒီပတမြေပြင်လုံးကို ဖြစ်စေ, သီဟိုဠ်တကျွန်းလုံးကိုဖြစ်စေ, အစိုးရသောမင်းများကိုယူ၊ ထို မင်းများကိုပင် "ဒီပစက္ကဝတ္တိ"ဟု ခေါ်သည်၊ မန္ဓာတ် စကြာမင်းကဲ့သို့ ၄ ကျွန်းလုံး အာဏာနှံ့သော မင်း မဟုတ်။

ယောရာဇာ-သည်၊(အတ္ထိ)၊ (သော-ထိုမင်းသည်၊) ပထဗျာရာဇာ- ပထဗျာရာဇာမည်၏၊ ပဒေသရာဇာတိ-ကား၊ ဗိမ္ဗိသာရ ပသေနဒိအာဒယောဝိယ-ဗိမ္ဗိသာရမင်း, ပသေနဒိကောသလမင်း အစရှိကုန်သော မင်းတို့ကဲ့သို့၊ ဧကဒီပဿ-တကျွန်းလုံး၏၊ ပဒေသိဿရော-တစိတ် တပိုင်းသော အရပ်၏ အစိုးရသောမင်းတည်း၊ ဝါ-ပဒေသရာဇ်မင်းတည်း၊ ယေ- အကြင်မင်းတို့သည်၊ ဒီပပဒေသေပိ-ကျွန်း၏တစိတ်တပိုင်းသော အရပ်၌လည်း၊ ဧကမေကံ-တခု တခုသော၊ မဏ္ဍလံ-အဝန်း အဝိုင်းကို၊ ဘုဉ္ဇန္တိ- အပိုင်စားကြရကုန်၏၊ (တေ-ထိုမင်းတို့သည်၊) မဏ္ဍလိကာနာမ- မဏ္ဍလိကတို့မည်၏၊ ဒွိန္နံ- ၂ ဦးကုန်သော၊ ရာဇူနံ-တို့၏၊ အန္တရာ- အကြား၌၊ ကတိပယ ဂါမသာမိကာ-အနည်းငယ်သော ရွာတို့၏ အရှင်ဖြစ်သော တိုင်းကြပ်မင်းတို့သည်၊ အန္တရဘောဂိကာနာမ-က တို့မည်၏။

အက္ခဒဿာတိ-ကား၊ ဓမ္မဝိနိစ္ဆနကာ-တရားကိုဆုံးဖြတ်တတ်သောတရားသူကြီးမင်းတို့တည်း၊ တေ-ထို တရားသူကြီးမင်းတို့သည်၊ ဓမ္မသဘာယံ-တရားရုံး၌၊ နိသီဒိတွာ-ရုံးထိုင်၍၊ အပရာဓာနုရူပံ-အပြစ်အားလျော်စွာ၊ စောရာနံ-ခိုးသူတို့၏၊ ဟတ္ထပါဒစ္ဆေဇ္ဇာဒိံ-လက် ခြေ ဖြတ်ခြင်း အစရှိသောအမှုကို၊ အနုသာသန္တိ- ဆုံးမကြကုန်၏၊ ပန – ဆက်၊ ဌာနန္တရပ္ပတ္တာ- ရာထူးသို့ ရောက်ကုန်သော၊ ယေအမစ္စာဝါ – အကြင် အမတ်တို့သည်သော်၎င်း၊ ယေ ရာဇကုမာရာဝါ - အကြင် မင်းသားတို့သည်သော်၎င်း၊ ကတာပရာဓာ - ပြုအပ်ပြီးသော အပြစ်ရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ၊ တေ– ထို အမတ်, သို့မဟုတ် မင်းသားတို့ကို၊ ရညော- အား၊ အာရောစေန္တိ- သံတော်ဦး တင်ကြရကုန်၏၊ ဂရုကံ-ကြီးလေးသော၊ ဌာနံ- အရာကို၊ သယံ - တရားသူကြီးမင်းတို့ ကိုယ်တိုင်၊ န

ပဒေသရာဇာစသည် ။ ။ ပဒေ သဿ – တကျွန်း၏ တစိတ်တပိုင်း အရပ်၏+ရာဇာ ပဒေသရာဇာ၊ မဏ္ဍလံ-တစိတ်တဒေသ၏ တဝန်းတပိုင်းကို+ဘုဉ္ဇန္တိ-အပိုင်စားရကြ(အခွန်ရကြ) ကုန်၏၊ ဣတိ မဏ္ဍလိကာ (စော်ဘွားများ)၊ ဘုဉ္ဇိတဗ္ဗာတိ ဘောဂါ-သုံးဆောင်ခံစားအပ်သော ၂ ရွာ ၃ ရွာတို့၊ ဘောဂါ ယေသံတိ ဘောဂိကာ၊ အန္တရေ–မင်း ၂ ယောက်တို့၏ အကြား၌+ဘောဂိကာ အန္တရဘောဂိကာ၊(တိုင်းကြား) မင်းတို့။

အက္ခဒဿာ။ ။အက္ခေ– တရားရုံး၌+ဒဿာ – အပြစ်ငယ်အပြစ်ကြီးကို သိမြင်တတ် ( ဆုံးဖြတ်တတ် )သော တရားသူကြီးတို့တည်း၊ အက္ခဒဿာ – တို့၊ [ အက္ခသဒ္ဒေန ကိရ ဝိနိစ္ဆယသာလာ ဝုစ္စတိ၊ တတ္ထ နိသီဒိတွာ ဝဇ္ဇာဝဇ္ဇံ ပဿန္တီတိ အက္ခဒဿာ ဝုစ္စန္တိ ဓမ္မဝိနိစ္ဆနကာ၊] အဘိဓာန် (၃၄၁) ၌ကား ကြွေးယူခြင်း အမွေခွဲခြင်းစသော ငြင်းခုန်မှုတို့ကို ဆုံးဖြတ်ပေးသော တရားသူကြီးကို“အက္ခဒဿ”ဟု ဆိုသည်။

ဝိနိစ္ဆိနန္တိ-မဆုံးဖြတ်ကြကုန်၊ မဟာမတ္တာတိ-ကား၊ ဌာနန္တရပ္ပတ္တာ-န်သော၊ မဟာအမစ္စာ - အမတ်ကြီးတို့တည်း၊ တေပိ - ထို အမတ်ကြီးတို့သည်လည်း၊ တတ္ထ တတ္ထ- ထိုထို အရပ်၌၊ ဂါမေဝါ- ၌သော်၎င်း၊ နိဂမေဝါ- ၌သော်၎င်း၊ နိသီဒိတွာ- ရုံးထိုင်၍၊ ရာဇကိစ္စံ - မင်း၏ ကိစ္စကို၊ ကရောန္တိ၊ ယေဝါပနာတိ- ပါဌ်ဖြင့်၊(ဒဿေတိ၌ စပ်။) အညေပိ - ကုန်သော၊ ယေ - အကြင်သူတို့သည်၊ ရာဇကုလနိဿိတာ-မင်းမျိုးကို မှီကုန်သည်၊(ဟုတွာ) ဝါ - သော်၎င်း၊ သက ဝိရိယနိဿိတာ- မိမိ၏လုလ္လကို မှီကုန်သည်၊ ဟုတွာဝါ- ၎င်း၊ ဆေဇ္ဇဘေဇ္ဇံ- ဖြတ်ခြင်း ခွဲခြင်းကို၊[ဆိန္ဒနံ ဆေဇ္ဇံ,ဘိန္ဒနံ ဘေဇ္ဇံ၊(ဗျုပ္ပတ္တိ)။]အနုသာသန္တိ-ကုန်၏၊ သဗ္ဗေပိ-န်သော၊ တေ-ထိုသူတို့သည်၊ ဣမသ္မိံ အတ္ထေ-၌ သိက္ခာပုဒ်၏ အနက်၌၊ ရာဇာနော-မင်းတို့မည်၏၊ ဣတိ- သို့၊ ဒဿေတိ-ပြတော်မူ၏။

ဟနေယျုန္တိ– ကား၊ ပေါထေယျုံ ဝဓေယျုံ- ပုတ်ခတ်မှုလည်း ပုတ်ခတ်ကုန်ရာ၏၊ ဆိန္ဒေယျုံ-ဖြတ်တော့်မှုလည်း ဖြတ်တောက်ကုန်ရာ၏၊ပဗ္ဗာဇေယျုန္တိ- ကား၊ နီဟရေယျုံ – နှင်ထုတ်မှုလည်း နှင်ထုတ်ကုန်ရာ၏၊ စောရောသီတိဧဝ မာဒီနိ- စောရောသိ ဤသို့အစရှိသော စကားတို့ကို၊ ဝတ္တာ – ပြောဆို၍၊ ပရိ ဘာသေယျုံ – ကြိမ်းမောင်းမှုလည်း ကြိမ်းမောင်းကုန်ရာ၏၊ တေနေဝ-ပင်၊ ပရိဘာသော ဧသောတိ-ဟူ၍၊ အာဟ – ဟောတော်မူပြီ၊ ပုရိမံ ဥပါဒါယာတိ-ကား၊ မေထုနံဓမ္မံ-ကို၊ ပဋိသေဝိတွာ-၍၊ ပါရာဇိကံ-မည်သော၊ အာပတ္တိံ-သို့၊ အာပန္နံ-ရောက်သော၊ ပုဂ္ဂလံ-ကို၊ ဥပါဒါယ–စွဲယူ၍၊ (အယမ္ပီတိ- ဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ၊) သေသံ-ကြွင်းသောပုဒ်အပေါင်းသည်၊ ပုဗ္ဗေ – ရှေ၌၊ ဝုတ္တနယတ္တာ-ဆိုအပ်ပြီးသော နည်းရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ဥတ္တာနပဒတ္ထတ္တာစ – ပေါ်လွင်သောပုဒ်နက်ရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း၊ ပါကဋမေဝ-သာ၊ ဣတိ-ပါဠိတော်၏ ပဒဘာဇနီ အဖွင့်အပြီးတည်း။

ဧဝံ – လျှင်၊ ဥဒ္ဒိဋ္ဌသိက္ခာပဒံ - သရုပ်အရ ထုတ်ပြအပ်သော သိက္ခာပုဒ်ကို၊ ပဒါနုက္ကမေန–ပုဒ်အစဉ်အားဖြင့်၊ ဝိဘဇိတွာ–၍၊ ဣဒါနိ-၌၊ ( ဝိဘင်္ဂံအာဟ ၌စပ်။ ) အာဒိယေယျာတိ အာဒိယိ–ကုန်သော၊ ဆဟိ–ကုန်သော၊ ပဒေဟိ–တို့ဖြင့်၊ သင်္ခေပတော-အကျဉ်းချုပ်အားဖြင့်၊ အာဒါနံ-ယူပုံကို၊ ဒဿေတွာ-ပြတော်မူပြီး၍၊ သင်္ခေပတော ဧဝ–ပင်၊ ပါဒံဝါ ပါဒါရဟံဝါ အတိရေကပါဒံ

ပုရိမံဥပါဒါယ။ ။"အယမ္ပီတိ ပုရိမံ ဥပါဒါယ ဝုစ္စတိ" ဟူသော ပါဠိတော်တည်း၊ ရှေ့ပါရာဇိက ကိုစွဲ၍"အယံပိ"ဟု ပိသဒ္ဒါနှင့်တကွ ဆိုအပ်သည်၊ ပိဖြင့်"မေထုန်မှီဝဲသော ရဟန်းသာ ပါရာဇိကကျသည် မဟုတ်သေး , ပါဒစသည်ကို ခိုးသော ဤရဟန်းလည်း ပါရာဇိကကျ၏"ဟု ပေါင်းသည်–ဟူလို။

ဝါတိ-ဟူ၍၊ ယံတံ အာဒါတဗ္ဗဘဏ္ဍံ- အကြင်ယူထိုက်သော ဘဏ္ဍာကို၊ ဒဿိတံ-ပြတော်မူအပ်ပြီ၊ တံ-ထိုယူထိုက်သောဘဏ္ဍာကို၊ (ဒဿေတုံ၌ ပဓာနကံ စပ်။) ဝါ - သည်၊ ( ဂဏ္ဌတိ၌ သာမညကတ္တားစပ်။) ယတ္ထ ယတ္ထ – အကြင် အကြင် မြေ, ကုန်းစသော အရပ်၌၊ [ဘူမဋ္ဌ ထလဋ္ဌစသည်ကို ရည်ရွယ်သည်။] ဌိတံ-တည်သောဘဏ္ဍာကို၊ ဝါ-သည်၊ (ဂဏ္ဌတိ၌ ဝိသေသကတ္တား။)ယထာ ယထာ - အကြင် အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ အာဒါနံ – ယူအပ်သည်၏ အဖြစ်သို့၊ (ဘာဝပ္ပဓာန, ဘာဝလောပ။) ဂစ္ဆတိ- ရောက်၏၊ အနာဂတေ-၌၊ ပါပဘိက္ခုနံ-တို့၏၊ လေသောကာသ နိရုန္ဓနတ္ထံ-အမြွက်ထောင်ခွင့်ကိုပိတ်ဆို့ ခြင်းအကျိုးငှါ၊ တထာတထာ- အားဖြင့်၊ ဝိတ္ထာရတော- အကျယ်အားဖြင့်၊ ဒဿေတုံ၊ ဘူမဋ္ဌ ထလဋ္ဌန္တိအာဒိနာ – သော၊ နယေန-ဖြင့်၊ မာတိကံ – ကို၊ ထပေတွာ– ၍၊ ဘူမဋ္ဌံနာမ၊ ပေ၊ ဟောတီတိအာဒိနာ - သော၊ နယေန - ဖြင့်၊ တဿာ - ထို မာတိကာ၏၊ ဝိဘင်္ဂံ –အကျယ် ဝေဘန်ကြောင်း စကားကို၊ အာဟ–၏၊ တတြ–ထိုဝိဘင်း၌၊ အယံ– ဤဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ အနုတ္တာန ပဒ ဝဏ္ဏနာယ – မပေါ်လွင်သော ပုဒ်တို့၏ အဖွင့်နှင့်၊ သဒ္ဓိံ, ဝိနိစ္ဆယကထာ- ဆုံးဖြတ်ကြောင်းစကားတည်း၊ နိခါတန္တိ-ကား၊ ဘူမိယံ–၌၊ ခဏိတွာ–တူး၍၊ ထပိတံ-ထားအပ်၏၊ ပဋိစ္ဆန္နန္တိ–ကား၊ ပံသု ဣဋ္ဌကာဒီဟိ- မြေမှုန့်အုဋ် အစ ရှိသည်တို့ဖြင့်၊ ပဋိစ္ဆန္နံ–ဖုံးထားအပ်၏။

ဘူမဋ္ဌံဘဏ္ဍံ၊ပေ၊ဂစ္ဆတိဝါ၊အာပတ္တိဒုက္ကဋဿာတိ-ကား၊ ဧဝံ-ဤဆိုအပ် ပြီးသောနည်းဖြင့်၊ နိခဏိတွာဝါ – တူးမြှုပ်၍သော်၎င်း၊ ပဋိစ္ဆာဒေတွာဝါ– ဖုံးအုပ်၍သော်၎င်း၊ ထပိတတ္တာ-ထားအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဘူမိယံ-၌၊ ဌိတံ – သော၊ တံဘဏ္ဍံ – ကို၊ ယောဘိက္ခု, ကေနစိဒေဝ – တစုံတခုသာလျှင် ဖြစ်သော၊ ဥပါယေန- အကြောင်းဖြင့်၊ ဝါ- ဥပါယ်တမည်ဖြင့်၊ ဉတွာ– ၍၊ အာဟရိဿာမိ-ဆောင်ယူအံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ ထေယျစိတ္တော ဟုတွာ, ရတ္တိ ဘာဂေ– ၌၊ ဥဋ္ဌာယ- ထ၍၊ ဂစ္ဆတိ- သွား၏၊ သော- ထိုရဟန်းသည်၊ ဘဏ္ဍဋ္ဌာနံ - ဘဏ္ဍာတည်ရာ အရပ်သို့၊ အပ္ပတွာပိ - မရောက်သေး မူ၍လည်း၊ သဗ္ဗ ကာယဝစီ ဝိကာရေသု-အလုံးစုံသော ကာယဝိကာရ ဝစီဝိကာရတို့၌၊ ဒုက္ကဋံ အာပဇ္ဇတိ၊ ကထံ-အဘယ်သို့ရေ၌သနည်း၊ ဟိ-အဖြေကိုဆိုဦးအံ့၊ (တနည်း)

ယထာ ၊ ပေ ၊ အာဟ။ ။ပါဠိတော်၌ ပြအပ်သော ယူပုံယူနည်းစုံအောင် ခိုးယူ ခြင်းငှါ မတတ်နိုင်သော်လည်း အကြင်အကြင် တနည်းနည်းဖြင့်ယူလျှင် အထမြောက်၏၊ ထိုထို တနည်း တနည်းစီကို အကျယ်ပြလို၍ “ ဘူမဋ္ဌံ , ထလဋ္ဌံ ” စသော မာတိကာကို ထားတော်မူပြီးလျှင် ထိုမာတိကာကို အကျယ်ပြသောဝိဘင်းကို မိန့်တော်မူသည်။

ဟိ-၌၊ သော – ထိုရဟန်းသည်၊ တဿ – ထိုဘဏ္ဍာကို၊ အာဟရဏတ္ထာယ– ဆောင်ယူခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဥဋ္ဌဟန္တော-ထစဉ်၊ အင်္ဂပစ္စင်္ဂံ–အင်္ဂါကြီးငယ်ကို၊ ယံယံ ဖန္ဒာပေတိ-အကြင်အကြင် လှုပ်ရှားစေ၏၊ သဗ္ဗတ္ထ-အလုံးစုံသော ထိုထို လှုပ်ရှားစေခြင်း၌၊ ဒုက္ကဋမေဝ(ဟောတိ)၊ နိဝါသန ပါရုပနံ-သင်းပိုင် ကေသီ ကို၊ သဏ္ဌာပေတ်- ကောင်းစွာတည်စေအံ့၊ ဟတ္ထဝါရေ ဟတ္ထဝါရေ– လက် အကြိမ် လက်အကြိမ်တိုင်း၌၊ ဒုက္ကဋံ (ဟောတိ)၊ နိမာနံ– မြှုပ်ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာသည်၊ မဟန္တံ–ကြီး၏၊ ကေန–ငါတယောံထည်းသည်၊ အာဟရိတုံ- ငှါ၊ နသက္ကာ- မတတ်နိုင်၊ ဒုတိယံ– ၂ ယောက်မြောက်ကို၊ ဝါ – အဖေါ်ကို၊ ပရိယေသိဿာမိ- ရှာဦးအံ့၊ ဣတိ– ဤသို့ကြံ၍၊ ကဿစိ- သော၊ သဟာယ ဿ- ၏၊ သန္တိကံ–သို့၊ ဂန္တုကာမော (ဟုတ္တာ)၊ ဒွါရံ- ကို၊ ဝိဝရတိ–ဖွင့်အံ့၊ ပဒဝါရေစ-ခြေအကြိမ်၌၄င်း၊ ဟတ္ထဝါရေစ-၌၄င်း၊ ဒုက္ကဋံ (ဟောတိ)၊ ပန– အထူးကား၊ ဒွါရပိဒဟနေ-တံခါးကို ပြန်ပိတ်ခြင်း၌၄င်း၊ အညသ္မိံ – တံခါးကို ပြန်ပိတ်ခြင်းမှ တပါးသော၊ ဂမနဿ – သွားခြင်းအား၊ အနုပကာရေဝါ– လျော်သောကျေးဇူးကို မပြုသောပယောဂ၌၄င်း၊ အနာပတ္တိ ( ဟောတိ )၊ တဿ-ထိုအဖေါ်ရဟန်း၏၊ နိပန္နောကာသံ-အိပ်ရာအရပ်သို့၊ ဂန္တွာ-ရောံ၍၊ ဣတ္ထန္နာမာတိ- မ ဟူ၍၊ ပက္ကောသတိ- ခေါ်အံ့၊ တမတ္ထံ - ထိုအကြောင်းကို၊ ( အခိုးသွားမည့် အကြောင်းကို၊ ) အာရောစေတွာ–၍၊ ဟေိ – လာလော့၊ ဂစ္ဆာမ – သွားကြစို့၊ ဣတိ ဝဒတိ၊ ဝါစာယ ဝါစာယ – စကားခွန်းတိုင်း စကားခွန်းတိုင်း၌၊ ဒုက္ကဋံ ( ဟောတိ )၊ [ ကေကတ္ထဒီပိကာယ ဝါစာယ ဝါစာယ– အနက်အဓိပ္ပါယ် တခုတခုကိုပြသော စကားခွန်းတိုင်း စကားခွန်း တိုင်း၌။]သော-ထိုအဖေါ်ရဟန်းသည်၊ တဿ-ထိုအခေါ်လာသောရဟန်း ၏၊ ဝစနေန-ကြောင့်၊ ဥဋ္ဌဟတိ-ထအံ့၊ တဿာပိ-ထိုအဖေါ်ရဟန်း၏လည်း၊ ဒုက္ကဋံ (ဟောတိ)၊ ဥဋ္ဌဟိတွာ- ၍၊ တဿ - ထို အခေါ်လာသောရဟန်း၏၊ ပေ၊ ဟတ္ထဝါရ ပဒဝါရေသု–ကုန်သော၊ သဗ္ဗတ္ထ– တို့၌၊ ဒုက္ကဋံ (ဟောတိ)။

သော–ထိုအခေါ်လာသောရဟန်းသည်၊တံ–ထိုအဖေါ်ရဟန်းကို၊ ပုစ္ဆတိ (ကိံ)၊ အသုကောစ အသုကောစ– ထို မည်သူ ထိုမည်သူသည်လည်း၊ ကုဟိံ- အဘယ်မှာနည်း၊ အသုကဥ္စ အသုကဥ္စ – ထို မည်သူ ထိုမည်သူကိုလည်း

**ဂမနဿ အနုပကာရေ ။** ။ တံခါးကို ပြန်၍ ပိတ်ခြင်းသည် သွားခြင်းအား လျော်သောကျေးဇူးကိုပြုသောပယောဂ မဟုတ်သကဲ့သို့,ထို့အတူ နှပ်ညှစ်ခြင်း,အလေး အပေါ့စွန့်ခြင်းစသော ပယောဂများလည်း သွားခြင်းအားလျော်သောကျေးဇူးကို မပြု ထိုသို့သော ပယောဂစုကြောင့် အာပတ်မသင့်–ဟူလို။

ပက္ကောသာပဟိ- ခေါ်ပါလော၊ ဣတိ-သို့၊ ဝဒတိ၊ပေ၊သဗ္ဗေ - အလုံးစုံသော ရဟန်းတို့ကို၊ သမာဂတေ - အညီအညွတ် ရောက်လာသည်တို့ကို၊ ဒိသွာ၊ပေ၊ ဝေရှပေါ- သော၊ နိမိ - မြုပ်နှံထားအပ်သော ဘဏ္ဍာကို၊ ဥပလဒ္ဓေါ-သိရ အပ်ပြီ၊ [ဥပလဒ္ဓေါတိ-ဉာတော။] ဂဏှာမ-စို့၊ တံ-ထိုဘဏ္ဍာကို၊ ဂဟေတွာ, ပုညာနိစ – တို့ကိုလည်း၊ ကရိဿာမ၊ သုခဥ္စ - ချမ်းချမ်းသာသာလည်း၊ ဇီဝိ ဿာမ-အသက်မွေးကြကုန်စို့၊ ဣတိ ဝဒတိ၊ပေ၊ဝေံ-သို့၊ လဒ္ဓသဟာယော-ရအပ်သော အဖေါ်ရှိသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ ကုဒါလံ - ပေါက်တူးကို၊ ပရိယေ သတိ-ရှာအံ့၊ ပန-ဆက်၊ အဿ-ထို မူလရဟန်း၏၊ ဝါ-ထို မူလရဟန်းမှာ၊ အတ္တနော-၏၊ ကုဒါလော-သည်၊ သစေ အတ္ထိ(ဝေံသတိ)၊ တံ-ထိုပေါက်တူး ကို၊ အာဟရိဿာမိ - အံ့၊ ဣတိ – ဤသို့ ကြံ၍၊ ဂစ္ဆန္တော - သွားစဉ်ရင်း၊ ဂဏှန္တော စ – ရင်း၊ အာဟရန္တော စ–ရင်း၊ သဗ္ဗတ္ထ – ကုန်သော၊ပေ၊ဒုက္ကဋံ အာပဇ္ဇတိ၊ (အတ္တနော– ၏၊ ဝါ- မှာ၊ ကုဒါလော၊)သစေ နတ္ထိ၊(ဝေံသတိ) အညံ-သော၊ ဘိက္ခုံ၊ဝါ-ကိုသော်ငင်း၊ ဂဟဋ္ဌံ၊ဝါ-လူဝတ်ကြောင်ကိုသော်ငင်း၊ ဂတ္ဂွာ–၍၊ ယာစတိ – တောင်းအံ့၊ ယာစန္တော–သော်၊ မေ–အား၊ ကုဒါလံ-ကို၊ ဒေဟိ-ပေးပါလော၊ မေ-အား၊ ကုဒါလေန-ဖြင့်၊ အတ္ထော - အလိုသည်၊ (အတ္ထိ)၊ ကိဥ္စိ-သော၊ ကာတဗ္ဗံ-ပြုဘွယ်ကိစ္စသည်၊အတ္ထိ၊ တံ–ထို ပြုဘွယ်ကိစ္စ ကို၊ကတွာ-ပြီး၍၊ ပစ္စာဟရိဿာမိ-ပြန်ဆောင်ပါအံ့၊ ဣတိ-သို့၊မုသာ-မုသား စကားကို၊ အဘဏန္တော - မပြောဘဲ၊ သစေ ယာစတိ၊ (ဝေံသတိ)၊ ဝါစာယ ဝါစာယ ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)၊ သောဓေတဗ္ဗာ-သုမ်သင်ထိုက်သော၊ မာတိကာ-ရေမြောင်းသည်၊ အတ္ထိ – ရှိပါ၏၊ ဝိဟာရေ–၌၊ ကာတဗ္ဗ-သော၊ ဘူမိကမ္မံ–မြေအမှုသည်၊အတ္ထိ၊ဣတိ-သို့၊ မုသာပိ-ကိုလည်း၊ ဘစေ ဘဏတိ၊(ဝေံသတိ)၊ ယံယံဝစနံ - သည်၊ မုသာ - သည်၊ (ဟောတိ)၊ တတ္ထ တတ္ထ–ထိုထိုစကား၌၊ ပါစိတ္တိယံ (ဟောတိ)။

ပန–ဝါဒန္တရကား၊ မဟာအဋ္ဌကထာယံ–၌၊ သစ္စေပိ-မှန်သောစကား၌ ငင်း၊ အလိကေပိ-ချွတ်ယွင်းသော မုသားစကား၌ငင်း၊ ဒုက္ကဋမေဝ-ကိုသာ၊ ဝုတ္တံ၊ တံ – ထိုစကားကို၊ ပမာဒလိခိတန္တိ - မေ့လျော့ခြင်းကြောင့် ရေးသား အပ်သော စကားဟူ၍၊ ဝါ – အမှတ်တမဲ့ ရေးသားအပ်သော စကားဟူ၍၊ [ စတုတ္ထသံဂါယနာ ပေထက် အက္ခရာတင်တုန်းက အမှတ်တမဲ့ ရေးသား အပ်သောစကား - ဟူလို။] ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊ ဟိ - မှန်၏၊ (တနည်း)ဟိယသ္မာ၊ အဒိန္နာဒါနဿ- အဒိန္နာဒါန၏၊ ပုဗ္ဗပယောဂေ - ပုဗ္ဗပယောဂ၌၊ ပါစိတ္တိယ ဋ္ဌာနေ -ပါစိတ်အရာ၌၊ ဒုက္ကဋံနာမ - ဒုက္ကဋ်မည်သည်၊ နအတ္ထိ၊ ( တသ္မာ-

ကြောင့်၊ တံ - ထိုစကားကို၊ ပမာဒလိခိတန္တိ ဝေဒိတဗ္ဗံ)၊ ပန - ဆက်၊ ကုဒါလဿ-၏၊ ဒဏ္ဍော-အရိုးသည်၊ သစေ နတ္ထိ၊(ဝေဒိတဗ္ဗံ)၊ ဒဏ္ဍံ-ကို၊ ကရိဿာမိ-အံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ ဝါသိံဝါ- ဒါးကိုသော်ငှင်း၊ ဖရသုံဝါ - ပုဆိန်ကိုသော်ငှင်း၊ သစေ နိသေတိ-အကယ်၍သွေးအံ့၊ တဒတ္ထာယ-ထိုပေါက်တူးရိုးအကျိုးငှါ၊ ဂစ္ဆတိ- အံ့၊ ဂန္တွာ - သွားပြီး၍၊ သုက္ခကဋ္ဌံ - ခြောက်သောထင်းကို၊ ဆိန္ဒတိ - အံ့၊ တစ္ဆတိ - ရွေအံ့၊ (ဖြောင့်အောင်ရွေအံ့၊) အာကောဋေတိ - ရိုက်နှက်၍ အရိုးတပ်အံ့၊ ပေ၊အလ္လရုက္ခံ - စိုသောသစ်ပင်ကို၊ ဆိန္ဒတိ၊ ပါစိတ္တိယံ(ဟောတိ)၊ တတောပရံ- ထိုမှနောက်၌၊ပေ၊ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)၊

ပန- ဝါဒန္တရကား၊ သခေ်ပဋ္ဌကထာယံ- ၌ငှင်း၊ မဟာပစ္စရိယဋ္ဌ-၌ငှင်း၊ တတ္တဇာတက ကဋ္ဌလတာ ဆေဒနတ္ထံ-ထိုအိုးပေါ်၌ပေါက်သော သစ်ပင်နွယ်တို့ကို ဖြတ်ခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဝါသိဖရသုံ - ဒါး ပုဆိန်ကို၊ ဖရိယေသန္တာနမ္ပိ-ရှာကုန်သော ရဟန်းတို့၏လည်း၊ ဒုက္ကဋံ- ကို၊ ဝုတ္တံ၊ ပန- ဆက်၊ တေသံ-ထိုခိုးသူရဟန်းတို့၏၊ ဧဝံ- ဤအကြံသည်၊ သစေ ဟောတိ၊ (ကိံ)၊ ဝါသိဖရသုကုဒါလံ-ဒါး, ပုဆိန်, ပေါက်တူးကို၊ ယာစန္တာ-ကုန်လသော်၊ ဝါ-တောင်းကုန်သော၊ (မယံ) အာသင်္ကိတာ – ယုံမှားအပ်ကုန်သည်၊ ဘဝိဿာမ – ဖြစ်ကုန်လိမ့်အံ့၊ [ ဒါး စသည်ကို တောင်းနေလျှင် ငါတို့ကို "ရိုးမှ ရိုးသားကြရဲ့လား"လို့ ယုံမှားစရာ ဖြစ်နေလိမ့်မည်-ဟူလို။] လောဟံ- သံကို၊ သမုဋ္ဌာပေတွာ-ထွက်ပေါ်စေ၍၊ ကရောမ–အံ့၊ဣတိ-ဤအကြံသည်၊ သစေ ဟောတိ၊ တတော- ထိုသို့ အကြံဖြစ်ခြင်းကြောင့်၊ အရညံ့ ဂန္တွာ၊ လောဟဗီဇတ္ထံ- သံမျိုးစေ့အကျိုးငှါ၊ ပထဝိံ,ခဏန္တိ–အံ့၊ အကပ္ပိယပထဝိံ- မအပ်သော မြေကို၊ ခဏန္တာနံ-တူးကုန်သောရဟန်းတို့၏၊ ဒုက္ကဋေဟိ–တို့နှင့်၊ သဒ္ဓိံ ပါစိတ္တိယာနိ (ဟောန္တိ)၊ ဣတိ မဟာပစ္စရိယံ ဝုတ္တံ၊ ဣဓ – အကပ္ပိယ မြေကို တူးရာ၌၊ (ဒုက္ကဋေဟိ သဒ္ဓိံ ပါစိတ္တိယာနိ ဟောန္တိ ) ယထာ၊ ဧဝံ- တူ၊ သဗ္ဗတ္ထ - အလုံးစုံသော ပယောဂတို့၌၊ ပါစိတ္တိယဋ္ဌာနေ ဒုက္ကဋာ နမုစ္စတိ၊ ကပ္ပိယပထဝိံ– အပ်သောမြေကို၊ ခဏန္တာနံ–တို့၏၊ ဒုက္ကဋာနိယေဝ( ဟောန္တိ )၊ ပန-ဆက်၊ ဗီဇံ- သံမျိုးစေ့ကို၊ ဂဟေတွာ - ယူပြီး၍၊ တတောပရံ – ၌၊ သဗ္ဗကြိယာသု- အလုံးစုံသောအပြုအမူတို့၌၊ ပယောဂေ ပယောဂေ-၌၊ ဒုက္ကဋံ ( ဟောတိ)၊ ပိဋ္ဌကပရိယေသနေပိ - တောင်းကို ရှာခြင်း၌လည်း၊ ပေ၊ ပိဋ္ဌကံ-တောင်းကို၊ ကာတုကာမတာယ–ကြောင့်၊ ဝလ္လိဆေဒနေ- နွယ်ကို ဖြတ်ခြင်း၌၊ [ မြေကျုံးဘို့ရန်ဖြစ်၍ နွယ်တောင်းလုပ်သည်၊ ထန်းလျှော်တောင်း မဟုတ်။] ပါစိတ္တိယံ (ဟောတိ)၊ ဣတိ- ဤသို့ အစရှိသော၊ သဗ္ဗံ - အလုံးစုံသော အစီအရင်ကို၊

ပုရိမနယေနေဝ ဝေဒိတဗ္ဗံ။ [သဗ္ဗံပုရိမနယေနေဝါတိ-ယာဝပိဋ္ဋက ပရိယော သာနာ ဟတ္ထဝါရ ပဒဝါရေ ဒုက္ကဋံ။]

ဂစ္ဆတိဝါ အာပတ္တိဒုက္ကဋဿာတိ - ကား၊ ဧဝံ - သို့၊ ပရိယိဋ္ဌသဟာယ ကုဒါလပိဋကော - ရှာအပ်ပြီးသော အဖေါ်, ပေါက်တူး, တောင်းရှိသည်၊ (ဟုတ္ဝာ) နိဓိဋ္ဌာနံ- ဘဏ္ဍာအိုး တည်ရာ အရပ်သို့၊ ဂစ္ဆတိ - အံ့၊ ပဒဝါရေ ပဒဝါရေ- တိုင်း၌၊ ဒုက္ကဋံ ( ဟောတိ )၊ ပန-ဆက်၊ ဂစ္ဆန္တော- သွားစဉ်၊ ဧဝံ နိဓိံ - ဤ ဘဏ္ဍာ အိုးကို၊ လဒ္ဓါ - ရ၍၊ ဗုဒ္ဓပူဇံ - ဘုရား ပူဇော်မှုကို၊ (ကရိဿာမိ, ဣတိ)ဝါ-ဤသို့သော်၎င်း၊ ဓမ္မပူဇံ-ကို၊ ( ကရိဿာမိ, ဣတိ) ဝါ-၎င်း၊ သံဃဘတ္တံ-သံဃဘတ်ကို၊ ကရိဿာမိ, ဣတိဝါ – ၎င်း၊ ကုသလံ- ကုသိုလ်စိတ်ကို၊ ဥပ္ပါဒေတိ - ဖြစ်စေအံ့၊ ကုသလစိတ္တေန - ဖြင့်၊ ဂမနေ – ၌၊ အနာပတ္တိ(ဟောတိ)၊ ကသ္မာ-နည်း၊ ထေယျစိတ္တော၊ပေ၊အာပတ္တိဒုက္ကဋဿာ တိ–ဟူ၍၊ ဝုတ္တတ္တာ-ဟောတော်မူအပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ စ-ဆက်၊ ဣဓ–ဤကုသိုလ်စိတ်ဖြင့် သွားခြင်း၌၊(အနာပတ္တိ ဟောတိ) ယထာ-သကဲ့သို့၊ ဧဝံ-တူ၊သဗ္ဗတ္ထ-အလုံးစုံသော ပယောဂတို့၌၊ အထေယျစိတ္တဿ- ထေယျစိတ် မရှိသော ရဟန်း၏၊ အနာပတ္တိ ( ဟောတိ )၊ မဂ္ဂတော – သွားရိုးလမ်းမှ၊ ဩက္ကမ္မ - ဖဲ၍၊ နိခါနဋ္ဌာနံ - မြှုပ်နှံရာအရပ်သို့၊ ဂမနတ္ထာယ – ၄ါ၊ မဂ္ဂံ- ကို၊ ကရောန္တော-သော်၊ ဘူတဂါမံ-ဘူတဂါမ်သစ်ပင်ကို၊ ဆိန္ဒတိ-အံ့၊ ပါစိတ္တိယံ (ဟောတိ)၊ သုက္ခကဋ္ဌံ-ခြောက်သောထင်းကို၊ ဆိန္ဒတိ-အံ့၊ ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)။

တတ္ထဇာတကန္တိ – ကား၊ စိရနိဟိတာယ – မြှုပ်နှံထားအပ်သော ဒိုး၏ ကြာမြင့်ခဲ့သော ကာလရှိသော၊ ဝါ – ကြာမြင့်သော ကာလက မြှုပ်နှံထား အပ်သော၊ ကုမ္ဘိယာ-အိုး၏၊ ဥပရိ-၌၊ ဇာတကံ-ပေါက်သော၊ ကဋ္ဌံဝါ လတံ ဝါတိ- ကား၊ ကေဝလံ – မြက် စသည် မဘက် သက်သက်၊ ကဋ္ဌလတမေဝ- ထင်းနွယ်ကိုသာ၊(ဆိန္ဒန္တဿ-ဖြတ်သောရဟန်း၏၊ ဒုက္ကဋံ–သည်၊ ဟောတိ- ဖြစ်သည်ကား၊ ) န-မဟုတ်သေး၊ ယံကိဉ္စိ-သော၊ အလ္လံဝါ- စိုသည်မူလည်း ဖြစ်သော၊ သုက္ခံဝါ- သော၊ တိဏရုက္ခ လတာဒိံ- မြက်, သစ်ပင်, နွယ် အစ ရှိသည်ကို၊ ဆိန္ဒန္တဿ – ၏၊ သဟပယော ဂတ္တာ – သဟ ပယောဂ၏အဖြစ် ကြောင့်၊ ဒုက္ကဋမေဝ ဟောတိ၊ ဟိ - ဆက်၊ ပုဗ္ဗပယောဂဒုက္ကဋံ- ပုဗ္ဗပယောဂ ဒုက္ကဋ်၎င်း၊ပေ၊ ပဋိဿဝ ဒုက္ကဋံ-၎င်း၊ ဣတိ-သို့၊ အဋ္ဌဝိဓံ-သော၊ ဧတံဒုက္ကဋံ နာမ- မည်သည်ကို၊ ဣမသ္မိံ ဌာနေ-ဤနေရာ၌၊ သမောဓာနေတွာ–ပေါင်း၍၊ ထေရေဟိ-သံဂါယနာတင်ထေရ်တို့သည်၊ဒဿိတံ-ပြအပ်ပြီ။ [ပုဗ္ဗပယောဂနှင့် သဟပယောဂတို့၏ ထူးပုံသိဘို့ရာ ဒုက္ကဋ်ရှစ်မျိုးကိုပေါင်း၍ ပြထားကြသည်။]

တတ္ထ- ထိုရှစ်မျိုးသော ဒုက္ကဋ်တို့တွင်၊ ထေယျစိတ္တော၊ ဒုတိယံ၀ါ ပရိယေသတိ၊ပေ၊ ဂစ္ဆတိ၀ါ၊ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿာတိ- သော၊ ဣဒံ - ဤဒုက္ကဋ်သည်၊ ပုဗ္ဗပယောဂ ဒုက္ကဋံနာမ-ပုဗ္ဗပယောဂ ဒုက္ကဋ်မည်၏၊ ဝါ- မခိုးမီ ရှေးအဘို့၌ ဖြစ်သော ပယောဂကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သော ဒုက္ကဋ်မည်၏၊ ဟိ - ဆက်၊ ဧတ္ထ-ဤ ပုဗ္ဗပယောဂ၌၊ ဒုက္ကဋဋ္ဌာနေ-ဒုက္ကဋ်အရာ၌၊ ဒုက္ကဋံ (ဟောတိ) ၊ပေ၊ တတ္ထဇာတကံ ကဋ္ဌံ၀ါ ၊ပေ၊ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿာတိ - ဟူသော၊ ဣဒံ - ဤ ဒုက္ကဋ်သည်၊ သဟပယောဂ ဒုက္ကဋံနာမ-မည်၏၊ ၀ါ-ခိုးခြင်းနှင့်တကွဖြစ်သော ပယောဂကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သော ဒုက္ကဋ်မည်၏၊ ပန - ဆက်၊ ဧတ္ထ- ဤ သဟပယောဂ၌၊ ပါစိတ္တိယဝတ္ထုစ-ပါစိတ်အာပတ်၏ အကြောင်းဝတ္ထုသည် ၎င်း၊ [မှသားပြောခြင်း , သစ်ပင်အစို ခုတ်ခြင်း ဝတ္ထုဟူလို။] ဒုက္ကဋဝတ္ထုစ- ၎င်း၊ ဒုက္ကဋဋ္ဌာနေယေ၀ တိဋ္ဌတိ၊ ကသ္မာ- နည်း၊ အဝဟာရဿ- ခိုးခြင်း၏၊ သဟပယောဂတ္တာ-သဟပယောဂ၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ၀ါ-အတူတကွ ဖြစ်သောပယောဂ၏ အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဣတိ - ဤသို့ မှတ်အပ်၏၊ ပန- ကား၊ ဒသဝိဓံ-သော၊ ရတနံ-ကိုငင်း၊ သတ္တဝိဓံ-သော၊ ဓညံ-စပါးကို၎င်း၊ သဗ္ဗံ- သော၊ အာဝုဓဘဏ္ဍာဒိံစ- လက်နက်ဘဏ္ဍာ အစရှိသည်ကို၎င်း၊ အာမသန္တဿ-သုံးသပ်သောရဟန်း၏၊ ယံ ဒုက္ကဋံ-ကို၊ ဝုတ္တံ-ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊ ဣဒံ-ဤ ဒုက္ကဋ်သည်၊ အနာမာသ ဒုက္ကဋံနာမ-မည်၏၊ ဝါ-မသုံးသပ်အပ်သော ဝတ္ထုကို သုံးသပ်ခြင်းကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သော ဒုက္ကဋ်မည်၏။

**ပုဗ္ဗ,သဟပယောဂ**။ ။ပုဗ္ဗေ-မခိုးမီ ရှေးအဘို့၌+ပဝတ္တော-သော+ပယောဂေါ- ကာယဝစီ ပယောဂတည်း၊ ပုဗ္ဗပယောဂေါ၊ သဟ-ခိုးခြင်းနှင့်အတူတကွ+ပဝတ္တော+ ပယောဂေါ သဟပယောဂေါ။

**ဒသ, သတ္တဝိဓ**။ ။မဏိ (ပဒုမြား),မုတ္တ (ပုလဲ),ဝေဠုရိယ (ကြောင်မျက်ရွဲ), သင်္ခ, သိလာ (သလင်း),ပဝါဠ (သန္တာ),ရဇတ, ဇာတရူပ, လောဟိတင်္ဂ (ပဒုမြားနီ), မသာရဂလ္လ ( ပဒုမြားပြောက် ) , ဤကား ရတနာ ၁၀ ပါး၊ စပါးမျိုး ၇ ပါးကား- သာလိ, ဝီဟိ, ယဝ (မုယော=ဂျုံမြို) , ကင်္ဂု, ကုဒြူသက, ဝရက, ဂေါဓုမ တို့တည်း။ [အဘိဓာန် (၄၉၀-စသည်) (၄၅၀) စသည် နိဿယမှာ ရှု။]

**အနာမာသ** ။ ။ အာဝုဓ ဘဏ္ဍာဒိံတိ အာဒိသဒ္ဒေန တူရိယဘဏ္ဍ ဣတ္ထိရူပါဒိံ သင်္ဂဏှာတိ၊ အာမသိတဗ္ဗန္တိ အာမာသံ၊ န + အာမာသံ အနာမာသံ = မသုံးသပ် ကောင်း (မကိုင်ကောင်း) သောဝတ္ထု၊ အနာမာသေ- မသုံးသပ်ကောင်းသောဝတ္ထု ၌+ ဒုက္ကဋံ အနာမာသဒုက္ကဋံ= မကိုင်ကောင်းသောဝတ္ထုအပေါ်၌ ( ကိုင်ခြင်းကြောင့် ဖြစ်သော) ဒုက္ကဋ်။

ကဒလိ နာဠိကေရာဒီနံ – ငှက်ပျောပင် အုန်းပင် အစရှိသည်တို့၏၊ တတ္ထ ဇာတကဖလာနိ- ထိုအပင်၌ဖြစ်သော အသီးတို့ကို၊ အာမသန္တဿ ယံဒုက္ကဋံ ဝုတ္တံ၊ ဣဒံ-ဤဒုက္ကဋ်သည်၊ ဒုရုပစိဏ္ဏ ဒုက္ကဋံနာမ-မည်၏၊ ဝါ-မကောင်းသဖြင့် ကျင့်ခြင်းကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သောဒုက္ကဋ် မည်၏၊ ပန - ကား၊ ပိဏ္ဍာယ-ငှါ၊ စရန္တဿ–စဉ်၊ ဝါ- လှည့်လည်သောရဟန်း၏၊ ပတ္တေ-၌၊ ရဇေ–မြူမှုန် သည်၊ ဝါ- ဖုံသည်၊ ပတိတေ- သော်၊ ပတ္တံ- ကို၊ အပ္ပဋိဂ္ဂဟေတွာဝါ- အကပ် မခံဘဲသော်၎င်း၊ အဓောဝိတွာဝါ–ဆေးမပစ်ဘဲသော်၎င်း၊ တတ္ထ-ထိုသပိတ် ၌၊ ဘိက္ခံ – ကို၊ ဂဏှန္တဿ – ၏၊ ယံ ဒုက္ကဋံ ဝုတ္တံ၊ ဣဒံ , ဝိနယဒုက္ကဋံနာမ– မည်၏၊ ဝါ-ဝိနည်း၌ ပညတ်တော်မူအပ်သော ဒုက္ကဋ်မည်၏၊ သုတွာ န ဝဒန္တိ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿာတိ – ဟူသော၊ ဣဒံ - ဤ ဒုက္ကဋ်သည်၊ ဉာတဒုက္ကဋံနာမ– မည်၏၊ ဝါ-သိပါလျက် မပြောခြင်းကြောင့် သင့်ရော်အပ်သောဒုက္ကဋ်မည်၏၊ [သုတွာ-ကြားပါလျက်၊ န ဝဒန္တိ - မပြောကုန်အံ့။] ဧကာဒသသု- ကုန်သော၊ သမနုဘာသနာသု-သမနုဘာသနာတို့၌၊ [သံဃာဒိသေသ်၌လာသော "ယာဝ တတိယံ သမနုဘာသိတဗ္ဗော"ဟူသော သမနုဘာသနာတို့၌-ဟူလို။]ဉတ္တိယာ ဒုက္ကဋန္တိ–ဟူ၍၊ ယံ-အကြင်ဒုက္ကဋ်ကို၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ ဣဒံ, ဉတ္တိဒုက္ကဋံနာမ-မည်၏၊ ဝါ-ဉတ်ကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သောဒုက္ကဋ် မည်၏၊ တဿ ဘိက္ခဝေ၊ပေ၊ ဒုက္ကဋဿာတိ- ဟူသော၊ ဣဒံ, ပဋိဿဝဒုက္ကဋံနာမ – မည်၏၊ ဝါ-ဝန်ခံမှု၏

ဒုရုပစိဏ္ဏ။ ။န ကာတဗ္ဗံတိ ဝါရိတဿ ကတတ္တာ – မပြုထိုက်ဟု တားမြစ်အပ် သော အမှုကို ပြုသည့်အတွက်၊ ဒုဋ္ဌု-မကောင်းသော+ ဥပစိဏ္ဏံ-အလေ့အကျင့်တည်း၊ ဒုရုပစိဏ္ဏံ – မကောင်းသော အလေ့အကျင့်၊ ဒုရုပစိဏ္ဏေ – မကောင်းသော အလေ့ အကျင့်၌၊ ဝါ–ကြောင့်၊ ပဝတ္တံ+ဒုက္ကဋံ ဒုရုပစိဏ္ဏဒုက္ကဋံ။

ဝိနယဒုက္ကဋံ။ ။ဝိနယေ- ဝိနည်းပါဠိတော်၌+ပညတ္တံ- ပညတ်တော်မူအပ်သော +ဒုက္ကဋံ ဝိနယဒုက္ကဋံ၊ ဒုက္ကဋ် ၈ မျိုးတွင် အခြား ၇ မျိုး၌ တိုက်ရိုက်မပါသော ဒုက္ကဋ် အာပတ်ကို"ဝိနယဒုက္ကဋ်"ဟုချည်း ခေါ်ရ၏၊ ထို့ကြောင့် ဆွမ်းခံလှည့်စဉ် မြူမှုန်ကျလျှင် ထိုမြူမှုန်ကို ကျရာဆွမ်းနှင့်တကွ ဖယ်၍သော်လည်းပစ်ရ၏၊ သပိတ်ကိုထပ်၍သော်လည်း အကပ်ခံရာ၏၊ ဆွမ်းမခံရသေးလျှင် ထပ်၍သော်လည်း ဆေးရာ၏၊ ထိုသို့ မပြုဘဲ ဆွမ်း ခံလျှင် ဒုက္ကဋ်အာပတ်သင့်၏၊ ထိုဒုက္ကဋ်ကို " ဝိနယဒုက္ကဋ် "ဟု ခေါ်ရသည်၊ ကျသော မြူမှုန်နှင့်တကွ စားမိလျှင် ဥဂ္ဂဟပါနသိက္ခာပုဒ်အရ ပါစိတ်လည်း သင့်နိုင်၏။

မှတ်ချက်။ ။ရဟန်းသည် ခဲဘွယ်ဘောဇဉ်ကို အကပ်မခံဘဲ နေရာမရွေ့အောင် ထိရုံထိလျှင် ပြခဲ့သောအနာမာသ ဒုက္ကဋ်သင့်၏၊ နေရာရွေ့လျှင် ဥဂ္ဂဟိတကဒုက္ကဋ် ဟု ခေါ်ကြ၏၊ ပြခဲ့သောဒုက္ကဋ် ၈ မျိုးတွင်ကား တိုက်ရိုက်မပါ၊ ထို့ကြောင့် ဝိနယဒုက္ကဋ်၌ သွင်းသင့်သည်။

ပျက်ကွက်ခြင်းကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သောဒုက္ကဋ် မည်၏၊ [ ဘိက္ခုဝေ – တို့၊ တဿ ဘိက္ခုနော – ထို နောက်တကျောင်းကိုလက်ခံသော ရဟန်း၏၊ ပုရိမိကာစ – ရှေး၌ဖြစ်သောကျောင်း ခံယူခြင်းသည်လည်း၊ န ပညာယတိ-မထင်ရှားတော့၊ (ပဌမကျောင်း၌ ထိုရဟန်းမနေရတော့– ဟူလို၊) ပဋိဿဝေစ– ဝန်ခံမှုကြောင့်လည်း၊ ဝါ – ပဋိညာဉ် ပျက်ကွက်မှုကြောင့်လည်း၊ ဒုက္ကဋဿ အာပတ္တိ (ဟောတိ)။] ပန - ဆက်၊ (တနည်း ) ပန – အတ္ထုဒ္ဓါရသာမညမှ တပါး အတ္ထုဒ္ဒေသဝိသေသကိုဆိုဦးအံ့၊ ဣဓ-ဤဒုက္ကဋ်သည်၊ [“တတ္ထဇာတကံ ကဋ္ဌံဝါ လတံဝါ ဆိန္ဒတိ၊ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿ ” ဟု ပါဠိတော်၌ လာသော ဒုက္ကဋ်သည် – ဟူလို၊ ] သဟပယောဂဒုက္ကဋံ – သဟပယောဂ ဒုက္ကဋ်တည်း၊ တေန- ကြောင့်၊ ယံကိဉ္စိပေ၊ဒုက္ကဋမေဝ ဟောတီတိ- ဟူ၍၊ (မယာ) ဝုတ္တံ–ဆိုအပ်ပြီ၊ ဝါ–ဆိုခဲ့ပြီ။

ပန–ဆက်၊ အဿ–ထိုရဟန်း၏၊ တတ္ထ ဇာတကေ– ထို ဘဏ္ဍာအိုးပေါ်၌ ပေါက်သော၊ တိဏရုက္ခလတာဒိမှိ-မြက်, သစ်ပင်, နွယ်အစရှိသည်ကို၊ ဆိန္ဒေ ဝိ-ဖြတ်အပ်ပြီးသော်လည်း၊ ဝါ-ဖြတ်အပ်ပြီးမှလည်း၊ လဇ္ဇိဓမ္မော-လဇ္ဇီတို့၏ သဘောသည်၊ သစေ ဩက္ကမတိ- အကယ်၍ သက်ရောက်အံ့၊ သံဝရော-စောင့်စည်းခြင်းသည်၊ ဝါ-စောင့်စည်းကြောင်းစိတ်သည်၊ သစေ ဥပ္ပဇ္ဇတိ-အံ့၊ [လဇ္ဇိဓမ္မော ဩက္ကမတိကိုပင် “သံဝရော ဥပ္ပဇ္ဇတိ”ဟု ထပ်ဖွင့်သည်၊ “မခိုးတော့ပါဘူး”ဟု စောင့်စည်းကြောင်းစိတ် ဖြစ်ခြင်းကို“လဇ္ဇိဓမ္မ ဩက္ကမန”ခေါ်သည်-ဟူလို၊ ] ( ဧဝံသတိ )၊ ဆေဒနပစ္စယာ - မြက် စသည်ကို ဖြတ်ခြင်းဟူသော အကြောင်းကြောင့်၊ ဒုက္ကဋံ – ကို၊ ဒေသေတွာ – ဒေသနာပြော၍၊ မုစ္စတိ– အာပတ်မှလွတ်၏၊ ဓုရနိက္ခေပံ - ကို၊ အကတွာ – ၍၊ သ ဥဿာဟောဝ – အားထုတ်ခြင်းနှင့်တကွ ဖြစ်သည်သာလျှင်၊ (ဟုတွာ)၊ ပံသုံ–မြေမှုန်ကို၊ အထ ခဏတိ-အကယ်၍တူးအံ့၊ (ဧဝံသတိ) ဆေဒနဒုက္ကဋံ-မြက် စသည်ကို ဖြတ်ခြင်း ကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သောဒုက္ကဋ်သည်၊ ပဋိပ္ပဿမ္ဘတိ- အလိုအလျောက်

ဉာတ, ဥတ္တိ, ပဋိဿဝ။ ။ဉာတေ – (သံဃာကွဲပြားအောင် အားထုတ်နေ၏ – ဟု)သိအပ်သော အကြောင်းကိစ္စ၌+အဝဒန္တဿ— မပြောဆိုသောရဟန်း၏+ဒုက္ကဋံ ဉာတဒုက္ကဋံ၊ ဥတ္တိယာ+ပဝတ္တံ + ဒုက္ကဋံ ဥတ္တိဒုက္ကဋံ၊ ပဋိဿဝေ – ဝန်ခံခြင်းကြောင့်၊ ( ဝန်ခံသည့်အတိုင်း မပြုလုပ်ခြင်းတိုင်အောင်ယူ ) + ပဝတ္တံ ဒုက္ကဋံ ပဋိဿဝဒုက္ကဋံ၊ [ပဋိဿဝဝိသံဝါဒေ, သုဒ္ဓစိတ္တဿ ဒုက္ကဋံ၊ – ခုဒ္ဒသိက္ခာ၊ ဤကျောင်းသို့လာ၍ နေပါမည် ဟု သန့်ရှင်းသောစိတ်ဖြင့် ဝန်ခံပြီးလျှင် နောင်ခါ လာ၍မနေသောရဟန်းမှာ ပဋိဿဝဒုက္ကဋ် အာပတ်သင့်၏။ ] ဒုက္ကဋ်ရှစ်ပါး ဂါထာကို သာရတ္ထဋီကာမှာ ရှု။

ငြိမ်းပျောက်၏၊ ခဏနဒုက္ကဋေ - မြေတူးခြင်းကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သော ဒုက္ကဋ်၌၊ ပတိဋ္ဌာတိ-၏၊ ဟိ-မှန်၊ အကပ္ပိယပထဝိံ-ကို၊ ခဏန္တော ၁ဝိ- တူးပါ သော်လည်း၊ ဧဝ-၍ ဘဏ္ဍာအိုးကိုယူရာ၌၊ သဟပယောဂတ္တာ-သဟပယော ဂ၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဒုက္ကဋမေဝ အာပဇ္ဇတိ၊ ပန- ဆက်၊ အဿ- ထိုရဟန်း၏၊ သဗ္ဗဒိသာသု- အလုံးစုံသောအရပ်တို့၌၊ [အိုး၏ ဘေးပတ်ပတ်လည် အရပ်တို့ ၌-ဟုလို။]ခဏိတွာ-တူးပြီး၍၊ ကုမ္ဘိ မူလံ-အိုးအရင်းသို့၊ ပတ္တဿ-ရောက်သည် ဖြစ်၍၊ (သမာနဿ)ပိ-သော်လည်း၊ လဇ္ဇိဓမ္မော သစေ ဩက္ကမတိ(ဝေ၀ံသတိ)၊ ခဏနပစ္စယာ-မြေတူးခြင်းဟူသော အကြောင်းကြောင့်၊ပေ၊မုစ္စတိ။

ဝိယူဟတိဝါတိ-ကား၊ ပန-သို့မဟုတ်၊ သဉဿာဟော၁ဝ-လျှင်၊ ပံသုံ,အထ ဝိယူဟတိ-အကယ်၍ယက်အံ့၊ ကေပဿေ- တဘက်သောဘေး၌၊ ရာသိံ-အစု အပုံကို၊ အထကရောတိ - အံ့၊ ခဏနဒုက္ကဋံ - ခဏနဒုက္ကဋ်သည်၊ ပဋိပ္ပဿမ္ဘ တိ-၏၊ ဝိယူဟနဒုက္ကဋေ-မြေယက်ခြင်းကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သောဒုက္ကဋ်၌၊ ပတိဋ္ဌာတိ-၏၊ စ-ဆက်၊ တံပံသုံ-ကို၊ တတ္ထတတ္ထ - ထိုထိုအရပ်၌၊ ပုဉ္ဇံ-အပုံ ကို၊ ကရောန္တော- သော်၊ပေ၊ပန-ဆက်၊ ရာသိံ-ကို၊ ကတွာ၁ဝိ-ပြုပြီး၍လည်း၊ ခုရနိက္ခေပံ သစေ ကရောတိ၊ လဇ္ဇိဓမ္မံ- လဇ္ဇိတို့၏သဘောသို့၊ သစေ အာပဇ္ဇ တိ၊ (ဝေ၀ံသတိ)၊ ဝိယူဟနဒုက္ကဋံ - ဝိယူဟနဒုက္ကဋ်ကို၊ ဒေသေတွာ မုစ္စတိ၊ ဥဒ္ဓ ရတိဝါတိ – ကား၊ ပန – သို့မဟုတ်၊ သဉဿာဟော၁ဝ ပံသုံ , ဥဒ္ဓရိတွာ – ထုတ်ဆယ်၍၊ ဗဟိ - ဘေးသို့၊ အထ ပါတေတိ - အံ့၊ ( ဝေ၀ံသတိ )၊ ဝိယူဟန ဒုက္ကဋံ– သည်၊ ပဋိပ္ပဿမ္ဘတိ – ၏၊ ဥဒ္ဓရဏဒုက္ကဋေ - မြေမှုန်ကို ထုတ်ဆယ် ခြင်းကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သော ဒုက္ကဋ်၌၊ ပတိဋ္ဌာတိ၊ ပန- ဆက်၊ ပံသုံ-ကို၊ ကုဒါလေနဝါ - ပေါက်ပြားဖြင့်သော်၎င်း၊ ဟတ္ထေဟိဝါ - သော်၎င်း၊ ပစ္ဆိ ယာဝါ-တောင်းဖြင့်သော်၎င်း၊ တဟိံတဟိံ-ထိုထိုအရပ်သို့၊ ပါတေန္တော- သော် ၊ပေ၊ ပန – ဆက်၊ သဗ္ဗံ - သော၊ ပံသုံ, နီဟရိတွာ – ထုတ်ဆယ်ပြီး၍၊ ကုမ္ဘိံ-အိုးကို၊ ထလဋ္ဌံ-ကုန်းမြင့်၌တည်သည်ကို၊ ကတွာ၁ဝိ-ပြုပြီး၍လည်း၊ပေ၊

ခုရနိက္ခေပံ အကတွာ။ ။"ခုရနိက္ခေပမပြုဘဲ"ဟု ဆိုသောကြောင့်"ခုရနိက္ခေပကို ပြုပြီးမှ နောက်ထပ် ခိုးချင်စိတ် ပေါ်လာပြန်သဖြင့် ဆက်၍မြေကိုတူးလျှင် ဆေဒနဒုက္ကဋ်စသော ရှေးရှေးအာပတ်များ မငြိမ်းကြ" ဟု မှတ်။ [ ထိုသို့ခိုးအံ့ ဟု အားထုတ်သော စိတ်နှင့် တကွဖြစ်သည်ကို"သဉဿာဟ"ဟု ဆိုသည်။]

ထလဋ္ဌံ ကတွာ ။ ။ ပတ်ဝန်းကျင်မှမြေတွေကို ယက်ထုတ်ပြီး ဖြစ်သောကြောင့် ဘဏ္ဍာတည်ရာ မြေနေရာသည် ကုန်းမြင့်ကလေးဖြစ်နေ၏၊ ထိုကုန်းမြင့်၌ နဂိုရ်အတိုင်း တည်သည်ကို"ထလဋ္ဌံ ကတွာ"ဟု ဆိုသည်၊ မူလနေရာမှရွှေ့၍"ကုန်းပေါ်၌ တည်နေ အောင် ပြုသည်"ဟု မမှတ်လင့်။

မုစ္စတိ၊ ပန-ဆက်၊ပေ၊အထ အာမသတိ- အံ့၊ပေ၊အာမသနဒုက္ကဋေ-သုံးသပ်ခြင်းကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သော ဒုက္ကဋ်၌၊ပတိဋ္ဌာတိ၊ စ - ဆက်၊ အာမသိတွာပိ - ၍လည်း၊ လင္ဃိ၊ပေ၊မုစ္စတိ၊ သဥဿာဟော၀ ကုမ္ဘိံ, အထ ဖန္ဒာပေတိ-အကယ်၍လှုပ်စေအံ့၊ (ဝေံသတိ)၊ အာမသနဒုက္ကဋံ ပဋိပ္ပဿမ္ဘတိ၊ ဖန္ဒာပေတိ အာပတ္တိထုလ္လစ္စယဿာတိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တထုလ္လစ္စယေ - ဟောတော်မူအပ်သော ထုလ္လစ္စည်းအာပတ်၌၊ ပတိဋ္ဌာတိ။

တတြ - ထိုအာပတ္တိဒုက္ကဋဿ အာပတ္တိထုလ္လစ္စယဿ ဟူသော ပါဠိရပ်၌၊ အယံ-ဤဆိုအပ်လတ့ံကား၊ ဒွိန္နမ္ပိ-နှစ်ပါးလည်းဖြစ်ကုန်သော၊ ဒုက္ကဋ ထုလ္လစ္စယာနံ-ဒုက္ကဋ ထုလ္လစ္စယသဒ္ဒါတို့၏၊ ဝစနတ္ထော - သဒ္ဒါနက်တည်း၊ ဧတ္ထ - ဤဒုက္ကဋထုလ္လစ္စယသဒ္ဒါတို့တွင်၊ တာဝ-ထုလ္လစ္စယမှ ရှေးဦးစွာ၊ (နိဒ္ဒိဋ္ဌံ)၊ ပဌမံ-ပဌမဖြစ်သော ဒုက္ကဋသဒ္ဒါသည်၊ ( ဒုက္ကဋံ၌စပ်၊ ) ဒုဋ္ဌု - မကောင်းသဖြင့်၊ ကတံ-ပြုအပ်သောအမှုတည်း၊ သတ္ထာရာ-သည်၊ ဝုတ္တကိစ္စံ-ဟောတော်မူအပ်သော ကိစ္စကို၊ ဝိရာဓေတွာ-ချွတ်ယွင်းစေ၍၊ ကတံ - ပြုအပ်သောအမှုတည်း၊ ဣတိ -ကြောင့်၊ ဒုက္ကဋံ-ဒုက္ကဋမည်၏၊ အထဝါ - ထို့ပြင်တနည်းကား၊ ဒုဋ္ဌု-မကောင်းသော၊ ကတံ - အမှုအရာတည်း၊ ဝိရူပါ - ဖေါက်ပြန်သော၊ သာ ကြိယာ-ထိုအမှုအရာသည်၊ ဘိက္ခုကြိယာနံ-ရဟန်းအမှုအရာတို့၏၊ မဇ္ဈေ-၌၊ နသောဘတိ- မတင့်တယ်၊ ဣတိ ဝေမ္ပိ- ဤအကြောင်းကြောင့်လည်း၊ ဒုက္ကဋံ-မည်၏။

စ-သာမကကား၊ ဒုက္ကဋံ ဣတိ ယံ ဝုတ္တံ ၊ပေ၊ တေနေတံ ဣတိ ဝုစ္စတီတိ-ဟူသော၊ ဧတံ- ဤ ဂါထာစကားကို၊ (ပရိဝါရေ သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ-မိန့်တော်မူအပ်ပြီ၊ [ယံ (အာပတ္တိဇာတံ)-အကြင်အာပတ်ကို၊ ဒုက္ကဋံ ဣတိ-

ဒုဋ္ဌုကတံ။ ။ဒုသဒ္ဒါ၏ ဒုဋ္ဌုအနက်ကိုယူ၍ "ဒုဋ္ဌု+ကတံ ဒုက္ကဋံ" ဟု ပြုစေလို၏၊ "သတ္ထာရာ ဝုတ္တကိစ္စံ ဝိရာဓေတွာ "ကား ဒုဋ္ဌု၏ အဖွင့်တည်း၊ ဘုရားရှင် ဟောတော်မူအပ်သောကိစ္စကို ( မလိုက်နာဘဲ ) ချွတ်ယွင်းစေခြင်းကို "ဒုဋ္ဌု" ဆိုသည် – ဟူလို။ [ ဒုက္ကဋံ–မကောင်းသဖြင့် ပြုအပ်သောအမှု၊ ထိုအမှုကြောင့် သင့်အပ်သော အာပတ်ကိုလည်း ကာရဏူပစာရအားဖြင့် "ဒုက္ကဋ"ဟု ခေါ်သည်။ ]

အထဝါ။ ။ဤဒုတိယနည်း၌ ဒုဋ္ဌုကို ဝိရူပါ,ကတံကို ကြိယာ, ဟု ဖွင့်၏၊ "ကရဏံ-ပြုခြင်း၊ ကတံ–ခြင်း "ဟု ဘာ၀သာဓနပြု၊ "ဘိက္ခုကြိယာနံ မဇ္ဈေ နသောဘတိ"ကား ဝိရူပ ဖြစ်ပုံကို ထင်ရှားပြသော စကားတည်း၊ ဘဏ္ဍာအိုးကို ခိုးဘို့ရန် မြေကိုတူးခြင်း စသောအမှုအရာ (အပြုအမှု) သည် ဖေါက်ပြန်သောအမှုအရာဖြစ်သောကြောင့် ဘိက္ခုအမှုအရာတို့၏ အလယ်တွင် မတင့်တယ်သော အမှုအရာဖြစ်သည်–ဟူလို။ [ "ဒုက္ကဋံ–ဖေါက်ပြန်သော အမှုအရာ"ဟု ပေး။ ]

ဒုက္ကဋ်ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-ဟောတော်မူအပ်ပြီ၊ တံ(အာပတ္တိဇာတံ) ကို၊ ယထာတထံ-မဖေါက်မပြန် ဟုတ်တိုင်းမှန်စွာ၊ သုဏောဟိ-နားထောင်လော၊ ယံ-အကြင် အမှုသည်၊ ဝါ-ကို၊အပရဒ္ဓံစ-ပြစ်မှားလည်း ပြစ်မှားအပ်၏၊ ဝါ-ပြမှားလည်း ပြမှားအပ်၏၊ ဝိရဒ္ဓံစ-ချွတ်ယွင်းလည်း ချွတ်ယွင်း၏၊ ခလိတံစ-ချော်လည်း ချော်၏၊ (တံ - ထိုအမှုသည်၊) ဒုက္ကဋံ - ဒုက္ကဋမည်၏၊ ဝါ - မကောင်းသဖြင့် ပြုအပ်သော အမှုမည်၏၊ ဝါ-ဖေါက်ပြန်သော အမှုအရာမည်၏၊ မနုဿော-လူတယောက်သည်၊ ယံပါပံ-အကြင် မကောင်းမှုကို၊ အာဝိဝါ-မျက်မှောက်၌ သော်၎င်း၊ ယဒိ - ထိုမြို့၊ ရဟောဝါ- မျက်ကွယ်၌သော်၎င်း၊ ကရေ- ပြု၏၊ (တံပါပံ-ကို၊ ) ဒုက္ကဋန္တိ-ဒုက္ကဋဟူ၍၊ ပဝေဒေန္တိ (ယထာ) - ပြောဆိုကြကုန် သကဲ့သို့၊ ( တထာ , ဣဒမ္ပိ-ဤ အမှုသည်လည်း၊ ယေန ကာရဏေန , ပါပံ-မကောင်းမှုတည်း၊) တေန (ကာရဏေန)-ကြောင့်၊ တေံ-ဤ အမှုကို၊ ဝါ ဤ အမှုကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သော အာပတ်ကို၊ ဣတိ-ဤဒုက္ကဋဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ။]

ပန - ကား၊ ဣတရံ- ဒုက္ကဋမှ တပါးသော ထုလ္လစ္စယသည်၊ အစ္စယဿ-အပြစ်၏၊ ထူလတ္တာ- ရှုန့်ရင်း ကြမ်းတန်းသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ထုလ္လစ္စယံ-

ဝုတ္တ ခွေတံ။ ။ပရိဝါပါဠိတော်တည်း၊ အပရဒ္ဓံ ဝိရဒ္ဓံ ခလိတံ ၃ ပုဒ်သည် ဒုက္ကဋ်၏ အနက်ကိုပြသော ပရိယာယ်ပုဒ်များတည်း၊ ယထာ သတ္ထာရာ ဝုတ္တံ, ဧဝံ အကတတ္တာ အပရဒ္ဓံ=ဘုရားရှင်ဟောတော် မူထားသည့်အတိုင်း မပြုအပ်သည်ကို "အပရဒ္ဓ—ပြစ်မှား အပ် — အပြမှားအပ်"ဟု ဆို၏၊ ကုသလံ ဝိရဇ္ဈိတွာ ပဝတ္တတ္တာ ဝိရဒ္ဓံ=ကုသိုလ်ကိစ္စကို ချွတ်ယွင်းစေ၍ ဖြစ်သည်ကို "ဝိရဒ္ဓ—ချွတ်ယွင်း"ဟု ဆို၏၊ အရိယဝံသ (ဝတ္တ) ပဋိပဒံ အနာရုဠှတ္တာ ခလိတံ = အရိယာနွယ် ဖြစ်သော အကျင့်လမ်းသို့ မတက်နိုင်ဘဲ ချော် သည်ကို "ခလိတ—ချော်"ဟု ဆိုသည်၊ ယံ မနုဿော ကရေ ပါပံ—စသည်ကား ဥပမာ စကားတည်း၊ ထို့ကြောင့် " ယထာ " စသည်ထည့်၍ ဋီကာဖွင့်သည့် အတိုင်း အနက် ပေးထားသည်။

ထူလတ္တာ အစ္စယဿ။ ။ ယခုစာအုပ်များ၌ "ထူလတ္တာ အစ္စယတ္တာစ"ဟု ရှိ၏၊ [ထူလတ္တာ— ကြောင့်၎င်း၊ အစ္စယတ္တာစ — အပြစ်၏ အဖြစ်ကြောင့်၎င်း"ဟု ပေး။] ပရိဝါပါဠိတော် ဂါထာသင်္ဂဟကအဖွင့် အဋ္ဌကထာ၌ " ထူလတ္တာ အစ္စယဿ ဧတံ ထုလ္လစ္စယန္တိ ဝုစ္စတီတိ အတ္ထော" ဟု ရှိ၏၊ ထိုသို့ရှိမှလည်း အစ္စယနှင့် ထူလတို့ အရတူ ကမ္မဓာရည်းဖြစ်ကြောင်း သိသာ၏၊ ထို့ကြောင့် ဤ၌လည်း "ထူလတ္တာ အစ္စယဿ" ဟုသာ ရှိသင့်သည်၊ ထူလအစ္စယ—ဟူသည် ဒေသနာပြောရ ကြားရသောအပြစ်တို့တွင် ဤအပြစ်၏ အရှုန့်ရင်း အကြမ်းတန်းဆုံး ဖြစ်ခြင်းတည်း၊ ထို့ကြောင့်"ဒေသေတဗ္ဗေသု ဟိ " စသည်ဖြင့် ဒုဋ္ဌဝါကျကို ဆက်ပြသည်။ [ ပါတိမောက္ခပဒတ္ထ ၌ကား "ထူလံ အစ္စယံ ( အပရာဓော ) ဧတဿာတိ ထုလ္လစ္စယံ" ဟု ဗဟုဗ္ဗီဟိပြု၍ ထူလ သဒ္ဒါလည်း ("အဏုံထူလာနိ" ကဲ့သို့ ) မဟန္တဝါစကဟု ဆိုသတတ်။]

ထုလ္လစ္စယမည်၏၊ စ– ဆက်၊ သမ္ဗရာယေစ – တမလွန် ဘဝ၌လည်း၊ ဒုဂ္ဂတိ-မကောင်းသောဂတိသည်၊ ( ဟောတိ )၊ [ ဤကား ပုံစံပါဠိတရပ်၊] တံ- ထိုမကောင်းမှုသည်၊ ကဋုကပ္ဖလံ- ခါးစပ်သော အကျိုးရှိသည်၊ ဟောတိ, ဣတိ အာဒိသုဝိယ-ပါဠိရပ်တို့၌ကဲ့သို့၊ ဧတ္ထ-ဤ ထုလစ္စယပုဒ်၌၊ သံယောဂဘာဝေါ-သံယုဂ်၏အဖြစ်ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ဟိ- မှန်၊ (ထုလအစ္စယ– ဟူသောအနက်သည် မှန်၏၊) ဧကဿ- တပါးသောရဟန်း၏၊ သန္တိကေ- အထံ၌၊ ဒေသေတဗ္ဗေသု-ဒေသနာပြောထိုက်ကုန်သော၊ အစ္စယေသု–အပြစ်တို့တွင်၊ တေန-ထိုအပြစ်နှင့်၊ သမော-တူသော၊ ထုလော-ရှုန့်ရင်းသော၊ အစ္စယော-သည်၊ နတ္ထိ၊ တသ္မာ–ကြောင့်၊ ထုလတ္တာ အစ္စယဿ ထုလ္လစ္စယန္တိ-ဟူ၍၊(မယာ) ဝုတ္တံ၊ စ-သာမကကား၊ ထုလ္လစ္စယန္တိ ယံ ဝုတ္တံ၊ ပေ၊ တေနေတံ ဣတိ ဝုစ္စတီတိ-ဟူသော၊ ဧတံ - ကို၊ (ပရိဝါရေ သံဂီတိကာရေဟိ) ဝုတ္တံ၊ [ယံ (အာပတ္တိဇာတံ) -ကို၊ ထုလ္လစ္စယန္တိ-ဟူ၍၊ ဝုတ္တံ-ပြီ၊ တံ (အာပတ္တိဇာတံ ) ယထာတထံ သုဏောဟိ၊ ဧကဿ-ရဟန်းတပါး၏၊ မူလေ—အထံ၌၊ ယော-အကြင်ရဟန်းသည်၊ ဒေသေတိ- ဒေသနာပြော၏၊ ယော စ-အကြင်ရဟန်းသည်လည်း၊ တံ- ထိုဒေသနာကို၊ ပဋိဂ္ဂဏှာတိ-လက်ခံ၏၊ (တေသံ- ထိုဒေသနာပြော, ဒေသနာခံ ရဟန်းတို့၏၊) တေန–ထိုအပြစ်နှင့်၊ သမော-သော၊ အစ္စယော–သည်၊ နတ္ထိ၊ တေန-ကြောင့်၊ ဧတံ–ဤအပြစ်ကို၊ ဝါ - ဤအပြစ်ကြောင့် သင့်ရောက်အပ်သောအာပတ်ကို၊ ဣတိ-ဤ ထုလ္လစ္စယဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ။]

စ–ဆက်၊ [ ပြတ်ပြီးစကားကို ပြန်ဆက်၊ ] ဖန္ဒာပေန္တဿ--လှုပ်စေသောရဟန်း၏၊ပေ၊ ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ စ–ဆက်၊ ဖန္ဒာပေတွာပိ–ပြီး၍လည်း၊ လဇ္ဇိဓမ္မံ - သို့၊ ဩက္ကမန္တော – သော်၊ ပေ၊ မုစ္စတိ၊ [ " ဩက္ကန္တော " ဟု အတိတ်ဟော တပစ္စည်းဖြင့် ရှိသည်ကား မကောင်း၊ " ဩက္ကမန္တော " ဟု ပစ္စုပ္ပန်ဟော အန္တပစ္စည်းဖြင့်ရှိမှ ကောင်းသည်၊ "လဇ္ဇိဓမ္မော ဩက္ကမတိ " စသည် ထောက်။] စ–ဆက်၊ သဟပယောဂတော-မှ၊ ပဋ္ဌာယေဝ–သာလျှင်၊

**သမ္ဗရာယေ၊ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗော။** ။ထုလော+စ+သော+အစ္စယော+စ+ဣတိ "ထုလစ္စယော" ဟု ဖြစ်သင့်လျက် " ထုလ္လစ္စယ " ရုပ်ပြီးရပုံကို အခြားပုဒ်များဖြင့် ထင်ရှားပြသောစကားတည်း၊ ဒုဂ္ဂတိပုဒ်၌ "ဒု+ ဂတိ"မှ ဒွေဘော်လာ၍ "ဒုဂ္ဂတိ" ဖြစ်ရသကဲ့သို့ငြား, "ကဋုက+ဖလံ"၌လည်း (ပ်)ဒွေဘော်လာ၍ "ကဋုကပ္ဖလံ" ဖြစ်ရသကဲ့သို့ငြား, ထို့အတူ ထုလစ္စယဝယ် (လ်) ဒွေဘော်လာ၍ငြား,"သံယောဂေပရေ ရဿတ္တံ" နှင့်အညီ သံယုဂ်နှောင်းရှာ၌ ထုကို ရဿပြု၍ငြား "ထုလ္လစ္စယ"ဟု လ္လ သံယုဂ်ဖြစ်ရပုံကို သိပါ – ဟူလို။ [ သံယုဂ်နှောင်းရှာဝယ် ရဿပြုရမြဲ ဖြစ်သောကြောင့် ရဿအဖြစ်ကို အထူးမဆိုတော့ဘဲ "သံယောဂဘာဝေါ"ဟုသာ ဆိုသည်။]

[ဝေဖြင့် ပုဗ္ဗပယောဂကို ကန့်။ ] ဧတ္ထ - ဤ အာပတ်တို့တွင်၊ ပုရိမာ ပုရိမာ– ရှေးရှေး၌ ဖြစ်သော၊ အာပတ္တိ – သည်၊ ပဋိပ္ပဿမ္ဘတိ၊ ပန - ကား၊ သဟ ပယောဂံ-ကို၊ အကတွာ-၍၊ လဋ္ဌိမဓ္မံ-သို့၊ ဩက္ကမန္တေန– သက်ရောက်သော ရဟန်းသည်၊ ( ဒေသေတဗ္ဗာ၌ ပဓာနစပ်၍ , အာပန္နာ၌ အပဓာနစပ်ပါ။) ပုဗ္ဗပယောဂေ-၌၊ ယာ ဒုက္ကဋ ပါစိတ္တိယော– တို့သို့၊ အာပန္နာ - ရောက်အပ် ကုန်ပြီ၊ သဗ္ဗာ - ကုန်သော၊ တာ - ထို ဒုက္ကဋ် ပါစိတ်တို့ကို၊ ဒေသေတဗ္ဗာ၊ စ-ဆက်၊ သဟပယောဂေ–၌၊ တတ္တဇာတကဆွေဒနေ-ထို ဘဏ္ဍာအိုးပေါ်၌ ပေါက်သော မြက်စသည်ကို ဖြတ်ခြင်းကြောင့်၊ ဗဟုကာနိပိ - များစွာလည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ ဒုက္ကဋာနိ – တို့သည်၊ ပံသုခဏနံ – မြေတူးခြင်းသို့၊ ပတွာ– ရောက်၍၊ ဝါ-သော်၊ ပဋိပ္ပဿမ္ဘန္တိ၊ ကေံ–သော၊ ခဏနဒုက္ကဋမေဝ–ခဏန ဒုက္ကဋ်သည်သာ၊ ဟောတိ၊ ခဏနေ-မြေတူးခြင်း၌၊ ဝါ-ကြောင့်၊ဗဟုကာနိပိ- များစွာလည်း ဖြစ်ကုန်သော ဒုက္ကဋ်အာပတ်တို့သည်၊ ဝိယူဟနံ – မြေယက် ခြင်းသို့၊ ( မြေကို ဘေးနား၌ ယက်၍ ပုံခြင်းသို့၊ ) ပတွာ ပဋိပ္ပဿမ္ဘန္တိ၊ ဝိယူဟနေ - ၌၊ ဝါ - ကြောင့်၊ ဗဟုကာနိပိ–တို့သည်လည်း၊ ဥဒ္ဓရဏံ - မြေကို ထုက်ဆယ်ခြင်းသို့၊ ( ပတွာ ပဋိပ္ပဿမ္ဘန္တိ၊ ) ဥဒ္ဓရဏေ - ၌၊ ဝါ - ကြောင့်၊ ဗဟုကာနိပိ – တို့သည်၊ အာမသနံ - အိုးကို သုံးသပ်ခြင်းသို့၊ ( ပတွာ ပဋိပ္ပ ဿမ္ဘန္တိ၊) အာမသနေ-၌၊ ဝါ–ကြောင့်၊ ဗဟုကာနိပိ- တို့သည်၊ ဖန္ဒာပနံ– အိုးကို လှုပ်စေခြင်းသို့၊ ပတွာ ပဋိပ္ပဿမ္ဘန္တိ။

စ-ဆက်၊ ပံသုခဏနာဒိသု- တို့၌၊ လဋ္ဌိမဓ္မေ- သည်၊ ဥပ္ပန္နေ- သော်၊ ဗဟု ကာပိ–ကုန်သော၊ အာပတ္တိယော–တို့သည်၊ ဟောန္တု - ဖြစ်ပစေကုန်၊ ဧက မေဝ - တခုသော အာပတ်ကိုသာ၊ ဒေသေတွာ မုစ္စတိ၊ ဣတိ – သို့၊ ကုရုန္ဒ ဋ္ဌကထာယံ-၌၊ ဝုတ္တံ၊ စ-ဆက်၊ သော ပုရိမာပတ္တိပဋိပ္ပဿဒ္ဓိ နာမ - ဤ ရှေး အာပတ်၏ငြိမ်းခြင်းမည်သည်ကို၊ ( ဂဟေတဗ္ဗာ၌စပ်၊) ဥ တ္တိယာ ဒုက္ကဋံ၊ပေ၊ ပဋိပ္ပဿမ္ဘန္တိတိ-ဟူ၍၊[တတိယကမ္မဝါစာအဆုံး၌ ဒုက္ကဋ်ထုလ္လစ္စဥ်းတို့ ငြိမ်း ကြသည်- ဟူ၍၊ ] ဧဝံ- သို့၊ အနုဿာဝနာသုယေဝ – ကမ္မဝါစာ တို့၌သာ၊ သုတ္တေ- ပါဠိတော်၌၊ အာဂတာ- ၏၊ ဣမ ပန ( ဒုတိယပါရာဇိကေ )- ဤ ဒုတိယ ပါရာဇိက ၌ကား၊ အဋ္ဌကထာစရိယပ္ပမာဏေန – အဋ္ဌကထာ ဆရာ တို့၏ ပမာဏအားဖြင့်၊ ဂဟေတဗ္ဗာ၊ ဣတိ - ဤသို့ မှတ်အပ်၏၊ ဌာနာ၊ ပေ၊ ပါရာဇိကဿာတိ - ကား၊ ပန–ကား၊ ယော - အကြင် ရဟန်းသည်၊ ပေ၊ ကေသဂ္ဂမတ္တမ္ပိ- တဆံဖျားမျှကိုလည်း၊ စာဝေတိ၊ ပါရာဇိကမေဝ အာပဇ္ဇတိ ဣတိ အတ္ထော။

စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ – ဤ ဌာနာ စာဝေတိ အာပတ္တိ ပါရာဇိကဿ ဟူသော ပါဠ်၌၊ ဌာနာ-တည်ရာ အရပ်မှ၊ စာဝနံ-ရွေ့စေခြင်းကို၊ ဆဟိ-ကုန်သော၊ အာကာသရေဟိ-တို့ဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊ ကထံ-အဘယ်သို့သိထိုက်သနည်း၊ ကုမ္ဘိံ-ကို၊ မုခဝဋ္ဋိယံ – နှမ်းရစ်၌၊ ဂဟေတွာ-၍၊ အတ္တနော-မိမိ၏ ( ဘက်သို့၊ ) အဘိမုခံ– ရှေးရှု၊ အာကမ္ပန္တော - ဆွဲငင်လသော်၊ ဝါ- ဆွဲငင်သော ရဟန်းသည်၊ ဣမိနာ အင်္ဂေန - ဤဘက်အစွန်သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ - ထိအပ်သော အရပ်ကို၊ ကေသဂ္ဂမတ္တံပိ - ကိုလည်း၊ ပါရိမင်္ဂေန – ထိုဘက် အစွန်သည်၊ (အတိက္ကာမေတိ၌ ကမုဓာတ်၏ကတ္တား၊)ဝါ- ကို၊ ( ကာရိတ်ကံ၊)အတိက္ကာမေတိ-အံ့၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ တထေဝ - ထိုနှမ်းရစ်၌ပင်၊ ဂဟေတွာ, ပရတော- ထိုဘက်သို့၊ ပေလ္လေန္တော- တွန်းလသော်၊ ဝါ-တွန်းသောရဟန်းသည်၊ ပါရိမင်္ဂေန-ထိုဘက်အစွန်သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ ကေသဂ္ဂမတ္တံပိ,ဣမိနာ အင်္ဂေန-ဤဘက်အစွန်သည်၊ ဝါ-ကို၊အတိက္ကာမေတိ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ဝါမတော ဝါ- လက်ဝဲဘက်သို့သော်၎င်း၊ ဒက္ခိဏတော ဝါ-လက်ျာဘက်သို့သော်၎င်း၊ အပနာမေန္တော-ဖဲ၍ ညွတ်စေလသော်၊ ဝါ- ဖယ်သော ရဟန်းသည်၊ ဝါမင်္ဂေန-လက်ဝဲဘက် အစွန်သည်၊ပေ၊ ဒက္ခိဏင်္ဂေန– လက်ျာဘက် အစွန်သည်၊ ဝါ- ကို၊ အတိက္ကာမေတိ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ဒက္ခိဏင်္ဂေန ဝါ- သည်မူလည်း၊ပေ၊ ဝါမင်္ဂေန– သည်၊ ဝါ- ကို၊ အတိက္ကာမေတိ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဥဒ္ဓံ – အထက်သို့၊ ဥက္ခိပန္တော - မြှောက်လသော်၊ ဝါ– မြှောက်သော ရဟန်းသည်၊ ကေသဂ္ဂမတ္တံပိ, ဘူမိတော– မြေမှ၊ မောစေတိ– လွတ်စေအံ့၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ခဏိတွာ- တူး၍၊ ဟေဋ္ဌတော– အောက်သို့၊ ဩသီဒေန္တော- နစ်စေလသော်၊ ဝါ –နှစ်ချသော ရဟန်းသည်၊ ဗုန္ဒေန- အိုးအရင်းသည်၊ ဝါ– အိုးဖင်သည်၊ ပေ ၊ မုခဝဋ္ဋိယာ– နှမ်းရစ်သည်၊ ဝါ– ကို၊ အတိက္ကာမေတိ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ဣတိ ဧဝံ-သို့၊ ဧကဋ္ဌာနေ-တခုသော နေရာ၌၊ ဌိတာယ– တည်သော၊ ကုမ္ဘိယာ - ၏၊ (ဌာနာ- မှ၊ စာဝနံ – ကို၊ ဆဟိ အာကာသရေဟိ ဝေဒိတဗ္ဗံ။) [ ဤသို့ ရှေ့ပြန်လှည့်၍ စပ်။]

ပန- ကား၊ ကုမ္ဘိမုခဝဋ္ဋိယာ- အိုးနှမ်းရစ်၌၊ ပါသံ-(ကွင်းကို)၊ ကတွာ, လောဟခါဏုံဝါ- သံငုတ်ကိုသော်၎င်း၊ ခဒိရသာရာဒိခါဏုံ- ရှားနှစ်စသော ငုတ်ကိုသော်၎င်း၊ ပထဝိယံ–မြေ၌၊ အာကောဋေတွာ- စိုက်နှက်၍၊ တတ္ထ- ထို ငုတ်တိုင်၌၊ သင်္ခလိကာယ-သံကြိုးဖြင့်၊ ဗန္ဓိတွာ-ဖွဲ့၍၊ ယဒိ ထပေန္တိ(ဧဝံသတိ)၊ ဧကိဿာ- သော၊ ဒိသာယ– ၌၊ ဧကာယ - တချောင်းသော၊ သင်္ခလိကာယ– သံကြိုးဖြင့်၊ ဗဒ္ဓါယ– ဖွဲ့အပ်သောအိုး၏၊ ဒွေ– ၂ ခုကုန်သော၊ ဌာနာနိ-ဌာန

တို့ကို၊ လဗ္ဘန္တိ၊ [ "ဒွိသု ဒိသာသု ဒွိဟိ သန်လိကာဟိ ဗဒ္ဓါယ တိဏ္ဏံ ဌာနာနိ လဗ္ဘန္တိ၊ တီသု ဒိသာသု တီဟိ သန်လိကာဟိ ဗဒ္ဓါယ စတ္တာရိ ဌာနာနိ လဗ္ဘန္တိ"ဟု အဋ္ဌကထာ၌ ပေယျာလမြှုပ်ထားသည်ကို ဖေါ်ပေးပါ။ ] စတူသု- န်သော၊ ဒိသာသု - တို့၌၊ စတူဟိ, သန်လိကာဟိ - တို့ဖြင့်၊ ဗဒ္ဓါယ— ၏၊ ပဉ္စ ဌာနာနိ လဗ္ဘန္တိ၊ တတ္ထ-ထိုအိုးတို့တွင်၊ ကေဓါကာကေ- တခုသောငုတ်၌၊ ဗဒ္ဓ ကုမ္ဘိယာ- ဖွဲ့အပ်သောအိုး၏၊ ပဌမံ- စွာ၊ ခါဏုကံဝါ- ငုတ်ကိုမူလည်း၊ ဥဒ္ဓ ရတိ – နှုတ်အံ့၊ သန်လိကံဝါ - သံကြိုးကိုမူလည်း၊ ဆိန္ဒတိ – အံ့၊ ထုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)၊ တတော-ထိုမှနောင်၌၊ ကုမ္ဘိံ-အိုးကို၊ ယထာဝုတ္တနယေန-ဖြင့်၊ [အတ္တနော အဘိမုခံ အာကနေ့န္တော စသောနည်းဖြင့်-ဟုလို။] ကေသဂ္ဂမတ္တံပိ ပေ၊အထ - သို့မဟုတ်၊ ပဌမံ ကုမ္ဘိံ , ဥဒ္ဓရတိ - ကြွမြှောက်အံ့၊ ထုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)၊ တတော-ထိုမှနောက်၌၊ပေ၊တေနေဝ ပါယေန-၍နည်းဖြင့်၊ ဒွီသု- န်သော၊ ခါဏုကေသု - တို့၌၎င်း၊ တီသု ခါဏုကေသု , စတူသု ခါဏုကေသု, ဗဒ္ဓကုမ္ဘိယာပိ - ၏လည်း၊ ပစ္ဆိမေ - နောက်ဆုံး၌ဖြစ်သော၊ ဌာနာစာဝနေ- တည်ရာမှရွှေ့စေခြင်း၌၊ ပါရာဇိကံ—ကို၎င်း၊သေသေသု-ပစ္ဆိမဌာနာစာဝနမှ ကြွင်းသော ပယောဂတို့၌၊ ထုလ္လစ္စယံ—ကို၎င်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊

ခါဏု - ငုတ်သည်၊ သစေနတ္ထိ ( ဧဝံသတိ)၊ သန်လိကာယ – ၏၊ အဂ္ဂေ- အဖျား၌၊ ဝလယံ– ကွင်းကို၊ ကတွာ, တတ္ထဇာတကေ-ထို အိုးမြှုပ်ရာအရပ်၌ ပေါက်သော၊ မူလေ-သစ်မြစ်၌၊ ပဝေသိတံ-သွင်းအပ်သည်၊(သစေ)ဟောတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ ပဌမံ ကုမ္ဘိံ , ဥဒ္ဓရိတွာ-ကြွမြှောက်ပြီး၍၊ ပစ္ဆာ-၌၊ မူလံ-သစ်မြစ် ကို၊ ဆေတွာ-ဖြတ်ပြီး၍၊ ဝလယံ-ကို၊ နီဟရတိ – ထုတ်ဆောင်အံ့၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ အထ–သို့မဟုတ်၊ မူလံ-ကို၊ အစ္ဆေတွာ-မဖြတ်သေးဘဲ၊ ဝလယံ, ဣတောစိတောစ – ၍မှ ၍မှလည်း၊ သာရေတိ– ရွှေ့စေအံ့၊ ဝါ – ရွှေ့အံ့၊ (အပေါ်မမြှောက်ဘဲ သစ်မြစ်ကိုပွတ်တိုက်လျက် ရွှေ့အံ့။) ရက္ခတိ-ပါရာဇိကမှ စောင့်သေး၏၊ ပန-သို့မဟုတ်၊ မူလတော-သစ်မြစ်မှ၊ အနီဟရိတွာပိ- မထုတ် ယူသေးမူ၍လည်း၊ ဟတ္ထေန - ဖြင့်၊ ဂဟေတွာ – ကိုင်၍၊ အာကာသဂတံ- ကောင်းကင်၌ တည်သည်ကို၊ ဝါ – အထက်သို့ မြှောက်လာအောင်၊ သစေ ကရောတိ (ဧဝံသတိ) ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ [ကွင်း (ဝင်း)မှ မကျွတ်သေး သော်လည်း ဝင်းနှင့်မထိအောင် အနည်းငယ်မြှောက်လိုက်သည်ကို"အာကာသ ဂတံ ကရောတိ"ဟု ဆိုသည်။]အယံ– ၍ဆိုအပ်ပြီးကား၊ ထေ- ၍အမြစ်ဝယ် တပ်အပ်သော ဝင်းရှိသော အိုး၌၊ ဝိသေသော– တည်း၊ သေသံ- ကြွင်းသော အစီအရင်သည်၊ ဝုတ္တနယမေဝ–သာ၊[ငုတ်ဝယ် ဖွဲ့ချည်အပ်သောအိုး၌ ဆိုအပ်

ပြီးသော နည်းအတိုင်းသာ– ဟူလို။] ပန - ဆက်၊ ကေစိ– အချို့အိုးမြုပ်သူ တို့သည်၊ နိမိတ္တတ္ထာယ - အမှတ်အသား အကျိုးငှါ၊ ကုမ္ဘိမတ္ထကေ – အိုး၏ အထက်၌၊ နိဂြောဓရုက္ခာဒီနိ – ပင်ညောင်ပင် အစရှိသည်တို့ကို၊ ရောပေန္တိ- စိုက်တတ်ကုန်၏၊ မူလာနိ– တို့သည်၊ ကုမ္ဘိံ, ဝိနန္ဓိတွာ– ဖွဲ့ကြက်၍၊ ဌိတာနိ– ကုန်သည်၊ ဟောန္တိ - ဖြစ်ကုန်အံ့၊ မူလာနိ– တို့ကို၊ ဆိန္ဒိတွာ ၊ ပေ ၊ ဒုက္ကဋံ (ဟောတိ)၊ ဆိန္ဒိတွာ-ဖြတ်ပြီး၍၊ ဩကာသံ- ထုတ်ယူနိုင်လောက်သော အရပ် ကို၊ ကတွာ၊ပေ၊ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ မူလာနိ- တို့ကို၊ ဆိန္ဒတော၀ - ဖြတ်စဉ် ကပင်၊ လုဠိတွာ- လိမ့်၍၊ ကုမ္ဘိ, နိန္နဋ္ဌာနံ- နိမ့်သော အရပ်သို့၊ ဂတာ–ရောက် သွားသည်၊( သစေ ဟောတိ၊ ဝံသတိ ) တာဝရက္ခတိ– ပါရာဇိကမှ စောင့် သေး၏၊ ဂတဋ္ဌာနတော - ရောက်အပ်သော အရပ်မှ၊ ဥဒ္ဓရတိ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ မူလေသု-အမြစ်တို့ကို၊ ဆိန္နေသု-ဖြတ်အပ်ကုန်ပြီးသော်၊ ကေမူလ မတ္တေန– တခုသော အမြစ်မျှဖြင့်၊ ကုမ္ဘိ သစေ တိဋ္ဌတိ၊ သောစ – ထို ရဟန်း သည်လည်း၊ တံ–ထိုအမြစ်ကို၊ ဠမသ္မိံမူလေ - သည်၊ ဆိန္နေ– ပြတ်လသော်၊ ပတိဿတိ –လိမ့်ကျတော့ လတ့ံ၊ ဉတိ - ဉာ်သိုသိ၍၊ ဝါ – ဉာ်သိုသိလျက်၊ ဆိန္ဒတိ-အံ့၊ ဆိန္နမတ္တေ- ဖြတ်အပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ဝါ- ပြတ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)။

ပန – ဆက်၊ ကေမူလေနေဝ - တခုသော အမြစ်ဖြင့်သာလျှင်၊ ပါသေ- ကျော့ကွင်း၌၊ ဗဒ္ဓသူကရောဝိယ – ဖွဲ့မိသောဝက်သည်ကဲ့သို့၊ ဌိတာ, သစေ ဟောတိ, အညံ– သော၊ ကိဉ္စိ–သော၊ လဂ္ဂနကံ- ဆွဲချိတ်ကြောင်းဝတ္ထုသည်၊ နတ္ထိ-မရှိအံ့၊ တသ္မိံပိမူလေ-ကိုလည်း၊ ဆိန္နမတ္တေ - ဖြတ်အပ်ပြီးကာမျှဖြစ်လ သော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ကုမ္ဘိမတ္ထကေ,မဟာပါသာဏော – ကြီးစွာ သော ကျောက်ခဲသည်၊ ထပိတော - တင်ထားအပ်သည်၊ သစေ ဟောတိ၊ (ဝံသတိ)၊တံ- ထို ကျောက်ခဲကို၊ ဒဏ္ဍေန-ဒုတ်ဖြင့်၊ ဝါ- ကုတ်ဖြင့်၊ ဥက္ခိပိတွာ- မြှောက်ကော်၍၊ အပနေတုကာမော - ဖယ်ရှားလိုသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ ကုမ္ဘိ မတ္ထကေ၊ပေ၊တဿာ - ထိုအိုး၏၊ သမီပေ-၌၊ ဇာတကံ–ပေါက်သောသစ်ပင် ကို၊ ဆေတွာ-၍၊ အာဟရတိ-အံ့၊ အတတ္ထဇာတကတ္တာ-တတ္ထဇာတက မဟုတ် သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဝါ-ထိုအိုးပေါ်၌ပေါက်သော သစ်ပင်မဟုတ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ တံ-ထိုသစ်ပင်ကို၊ ဆိန္ဒတော-ဖြတ်သော ရဟန်း၏၊ ပါစိတ္တိယံ (ဟောတိ)။

အတ္တနော ဘာဇနန္တိ – ကား၊ ပန – ကား၊ ကုမ္ဘိံ – ကို၊ ဥဒ္ဓရိတုံ – ငှါ၊ အသက္ကောန္တော-သည်၊(ဟုတွာ)၊ကုမ္ဘိဂတ ဘဏ္ဍာဂ္ဂဟဏတ္ထံ-အိုး၌တည်သော

ဘဏ္ဍာကို ယူခြင်းအကျိုးငှါ၊ အဏ္ဏနော, ဘာဇနံ-ကို၊ ပဝေသေတွာ-သွင်း၍၊ အန္တောကုမ္ဘိယံ-အိုးအတွင်း၌၊ပဥ္စမာသကံဝါ-ငါးပဲကိုသော်၎င်း၊အတိရေက ပဉ္စမာသကံဝါ-ငါးပဲထက် ပိုလွန်သော အသပြာကိုသော်၎င်း၊ အဏ္ဏနတံ - ထိုက်တန်သောဘဏ္ဍာကို၊ပေ၊ စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ- ဤ ထေယျစိတ္တော အာမသတိ အာပတ္တိဒုက္ကဋဿ ဟူသောပါဠိ၌၊ ပရိစ္ဆေဒေါ-ပဥ္စမာသက ဟူသောအပိုင်း အခြားကို၊ ပါရာဇိက နိယမနတ္ထံ - ပါရာဇိကကို မှတ်သားခြင်း အကျိုးငှါ၊ (အာစရိယေဟိ ) ဝုတ္တော၊ ပန- စင်စစ်ကား၊ ထေယျစိတ္တေန- ဖြင့်၊ ဥနပဥ္စမာသကမ္ပိ-ငါးပဲအောက်ယုတ်လျော့သောဘဏ္ဍာကိုလည်း၊ အာမသန္တော-သုံးသပ်သော ရဟန်းသည်၊ ဒုက္ကဋံ အာပဇ္ဇတိယေဝ။

ဖန္ဒာပေတီတိ ဧတ္ထ-ပါဠိ၌၊ (အတ္ထော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော)၊ ယာဝ-လော်၊ ကောဗဋ္ဋ-တစပ်ထည်းဖွဲ့အပ်သည်ကို၊ ကတွာ၊ပေ၊တာဝ- လောက်၊ ဖန္ဒာပေ တီတိ-ဖန္ဒာပေတိဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ၊ အပိစ-သည်သာ မကသေး၊ ဣတောစိတော စ-လည်း၊ အပဗျူဟန္တော ပိ - ယက်သောရဟန်းသည်လည်း၊ [ ဟေဋ္ဌာဠိတံ ဂဏှိဿာမီတိ ဟတ္ထေန ဠိဓော ကရောန္တော= အောက်ကဘဏ္ဍာကို ယူအံ့ ဟု ကြံ၍ အထက်ပိုင်းကို ဟိုဘက်ယက် ဒီဘက်ယက်၍ ခွဲခြားသူ။ ] ဖန္ဒာပေတိ ယေဝ – ဖန္ဒာပေတိ မည်သည်သာ၊ သော–ထို လှုပ်စေသော ရဟန်းသည်၊ ထုလ္လစ္စယံ အာပဇ္ဇတိ၊ ပန–ဆက်၊ ယဒါ–၌၊ ကောဗဋ္ဋဘာဝေါ–တစပ်ထည်း ဖွဲ့အပ်သည်၏ အဖြစ်သည်၊ ဆိန္နော– ပြတ်ပြီ၊ ကုမ္ဘိဂတံ - အိုး၌တည်သော ဘဏ္ဍာသည်၊ ကုမ္ဘိယမေဝ– ၌သာလျှင်၊ (ဟောတိ)၊ ဘာဇနဂတမ္ပိ – ခွက်၌ ရောက်သော ဘဏ္ဍာသည်လည်း၊ ဘာဇနေယေဝ ဟောတိ၊ [ ကောဗဋ္ဋ ဘာဝေါ ဆိန္နောကိုပင် ကုမ္ဘိဂတံ စသည်ဖြင့် ထပ်၍ဖွင့်သည်။ ]တဒါ- ၌၊ပေ၊ ဟောတိ၊ စ - ဆက်၊ ဧဝံ– ဤသို့ မိမိခွက်၌ရောက်သည်ကို၊ ကတွာ,ဘာဇနေ-ကို၊ ကုမ္ဘိတော-မှ၊ အနီဟတေပိ- မဆောင်အပ်သေးသော်လည်း၊ ပါရာဇိကံ အာပဇ္ဇတိ။

မုဋ္ဌိံ ဝါ ဆိန္ဒတီတိ ဧတ္ထ–၌၊ (အတ္ထော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော)၊ ယထာ-အကြင် အခြင်းအရာအားဖြင့် လက်ဆုပ်ကိုပြုလသော်၊ အင်္ဂုလန္တရေဟိ-လက်ချောင်း အကြားတို့မှ၊ နိက္ခန္တ ကဟာပဏာ- တို့သည်၊ ကုမ္ဘိဂတေ - အိုး၌တည်ကုန် သော၊ ကဟာပဏေ–အသပြာတို့ကို၊ န သမ္ဖုသန္တိ–မထိကြကုန်၊ ဧဝံ–ဤသို့ အသပြာချင်း မထိနိုင်လောက်အောင်သော အခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ မုဋ္ဌိံ– လက်ဆုပ်ကို၊ ကရောန္တော - ပြုသော ရဟန်းသည်၊ မုဋ္ဌိံ ဆိန္ဒတိနာမ - မုဋ္ဌိံ ဆိန္ဒတိမည်၏၊ သောပိ-ထိုရဟန်းသည်လည်း၊ ပါရာဇိကံ အာပဇ္ဇတိ။

သုတ္တာရုဠှန္တိ-ကား၊ သုတ္တေ-ချည်၌၊ အာရုဠှံ-တက်ရောက်သော၊ (ဘဏ္ဍံ-ကို၊ ) တံ- ဤ သုတ္တာရုဠှ ဟူသောအမည်သည်၊ သုတ္တေန-ဖြင့်၊ အာဝုတဿာပိ- သီကုံးအပ်သော ရွှေ ငွေ၏ပင်း၊ သုတ္တမယဿာပိ – ချည်ဖြင့်ပြုအပ်သော ဘဏ္ဍာ၏ပင်း၊ အမိဝစနံ – တည်း၊ ဟိ– မှန်၊ ပါမင်္ဂါဒိနို – ဆောက်လုံး ပုံသဏ္ဌာန်ရှိသော ဘဏ္ဍာအစရှိသည် တို့သည်၊ သောဝဏ္ဏမယာနိပိ–ရွှေဖြင့် ပြုအပ်သော ဘဏ္ဍာတို့သည်လည်း၊ ဟောန္တိ – ရှိကုန်၏၊ ရူပိယ မယာနိပိ (ဟောန္တိ)၊ မုတ္တာဝလိ အာဒယောပိ–ပုလဲသွယ် အစရှိကုန်သော ဘဏ္ဍာတို့ သည်လည်း၊ တေ္တဝ– ဤ သုတ္တာရုဠှဘဏ္ဍာ၌ပင်၊ သင်္ဂဟံ – သိမ်းယူအပ်ကုန် သည်၏အဖြစ်သို့၊ ဂတာ-န်၏၊သီသဝေဌနပဋော-ဦးခေါင်းကိုရစ်ပတ်ကြောင်း အဝတ်ကို၊ ဝါ–ခေါင်းပေါင်း ပုဝါကို၊ ဝေဌနန္တိ ဝုစ္စတိ၊ တေသု–ဤ ပါမင်္ဂ အစရှိသည်တို့တွင်၊ ယံ ကိဉ္စိ–အမှတ်မထား တပါးပါးသော ဘဏ္ဍာကို ၊ပေ၊ ပါမင်္ဂါဒိနို-တို့ကို၊ ကောဋိယံ–အဖျား၌၊ ဂဟေတွာ–ကိုင်၍၊ အာကာသင္ဂံ– ကောင်းကင်၌ တည်သည်ကို၊ အကရောန္တော-မပြုဘဲ၊ [ အိုးမှ အားလုံးလွတ် မသွားစေဘဲ-ဟူလို။] ဥစ္စာရေယိ-အထက်သို့မြှောက်အံ့၊ ထုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)။

ဃံသန္တော နီဟရတီတိ တေ္တ – ၌၊ (ဂုဠှတ္ထံ )၊ ပန (ဥဒ္ဓရိတွာ ဒသေသမိ)၊ ပရိပုဏ္ဏာယ– သော၊ ကုမ္ဘိယာ- ၏၊ ဥပရိ– ၌၊ သမတိတ္တိကံ – အနားရစ်နှင့် အညီအမျှပြည့်သည်ကို၊ ( ကုမ္ဘိံ-ပိုသည်၊ ) ကတွာ,ထပိတံ- ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာကိုသော်ငင်း၊ (နီဟရတော၌စပ်။) တံ– သော၊ ကောဋိံ-အစွန်ကို၊ ဗုန္ဓေ-အိုး၏အတွင်းအရင်း၌၊ တံ-သော၊ ကောဋိံ-ကို၊ မုခဝဋ္ဋိယံ–နှုခမ်းရစ် ၌၊ကတွာ,ထပိတံဝါ-ကိုသော်ငင်း၊ဃံသန္တဿ-ပွတ်တိုက်လျက်၊နီဟရတော- ထုတ်ဆောင်သောရဟန်း၏၊ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ကုမ္ဘိမုခါ-အိုးမျက်နှာဝမှ၊ မောစေန္တဿ-၏၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပန-ဆက်၊ ယံ–အကြင်ဘဏ္ဍာကို၊ ဥပဍ္ဎကုမ္ဘိယံဝါ – ထက်ဝက်ပြည့်သော အိုး၌သော်ငင်း၊ ရိတ္တကုမ္ဘိယံဝါ – အချည်းနှီးသောအိုး၌သော်ငင်း၊ ထပိတံ၊ တဿ-ထိုဘဏ္ဍာ၏၊ အတ္တနော-၏၊ ဖုဋ္ဌောကာသောဝ-ထိအပ်သောအရပ်သည်သာ၊ ဌာနံ-တည်ရာတည်း၊ သက လာ- သော၊ ကုမ္ဘီ– သည်၊ (ဌာနံ)၊ န– မဟုတ်၊ တသ္မာ, တံ–ထိုဘဏ္ဍာကို၊ ဃံသန္တဿာပိ- ပွတ်တိုက်လျက်လည်း၊ နီဟရတော- ၏၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသ တော-တည်ရာအရပ်မှ၊ ကေသဂ္ဂမတ္တေ-သည်၊ မုတ္တေ-သော်၊ ပါရာဇိကမေဝ (ဟောတိ)၊ ပန-ဆက်၊ ပရိပုဏ္ဏာယဝါ–ပြည့်သည်မူလည်းဖြစ်သော၊ ဥနာ ယဝါ – ယုတ်လျော့သည်မူလည်းဖြစ်သော၊ ကုမ္ဘိယာ – မှ၊ ဥဇုကမေဝ – ဖြောင့်ဖြောင့်သာလျှင်၊ ဝါ-တဲ့တဲ့သာလျှင်၊ ဥဒ္ဓရန္တဿ– ထုတ်ဆောင်သော

ရဟန်း၏၊ ဟေဋ္ဌိမကောဋိယာ – ၏၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသာ - မှ၊ မုတ္တမတ္တေဝ– လွတ်ကာမျှဖြစ်သော်သာ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ အန္တောကုမ္ဘိယံ–၌၊ ထပိ တံ-သော၊ ယံကိဉ္စိ-သော၊ ပါရာဇိကပ္ပဟောနကံ- ပါရာဇိကလောက်သော၊ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ သကလကုမ္ဘိယံ– ၌၊ စာရေန္တဿ- လှည့်လည်စေသောရဟန်း၏ ငင်း၊ ပါမင်္ဂါဒိ–ဆောက်လုံး အစရှိသောတန်ဆာကို၊ ဃံသိတွာ နီဟရန္တဿ စ-၏ငင်း၊ ယာဝ-လောက်၊ မုခဝဋ္ဋိ-နခမ်းရစ်ကို၊ နာတိက္ကမတိ-မလွန်သေး၊ တာဝ–ထိုနခမ်းရစ်ကို မလွန်သေးသမျှ၊ ထုလ္လစ္စယမေဝ (ဟောတိ)၊ ဟိ-မှန်၊ တဿ–ထိုဘဏ္ဍာ၏၊ သမ္ဘာဝိ- သော၊ ကုမ္ဘီ- သည်၊ ဌာနံ(ဟောတိ)၊ ဣတိ- သို့၊ သင်္ခေပ မဟာပစ္စရိအာဒိသု–တို့၌၊ ဝုတ္တံ။

ပန-ဝါဒန္တရကား၊မဟာအဋ္ဌကထာယံ-၌၊ ထပိတဋ္ဌာနမေဝ-ထားအပ်ရာ အရပ်သည်သာ၊ ဌာနံ-တည်ရာတည်း၊ သကလာ ကုမ္ဘီ(ဌာနံ)န၊တသ္မာ၊ပေ၊ ဝုတ္တံ၊ တံ-ထို မဟာအဋ္ဌကထာစကားသည်၊ ပမာဏံ-နှိုင်းယှဉ်ကြောင်းတည်း၊ ဝါ - လိုရင်းပမာဏတည်း၊ ဣတရံပန - အခြားသော သင်္ခေပအဋ္ဌကထာ, မဟာပစ္စရီအဋ္ဌကထာ အစရှိသည်တို့၌လာသော စကားကိုကား၊ ( ဝုတ္တံ၌ စပ်၊)အာကာသဂတံ, အကရောန္တဿ-ဘဲ၊ [“ကရောန္တဿ”ဟု ရှိသည်ကား မကောင်း။] စီဝရဝံသေ–သက်န်းတန်းဝါး၌၊ ထပိတစီဝရ ဝေဌနကနယေန- ထားအပ်သော သက်န်းရစ်ပတ်နည်းဖြင့်၊ ဝါ - သက်န်းကိုရစ်ပတ်၍ ထားပုံ နည်းဖြင့်၊ ဝုတ္တံ။ [သက်န်းတန်း၌ ရစ်ပတ်ထားအပ်သော သက်န်းခွေ၏အတွက် သက်န်းတန်းတခုလုံးတည်ရာ ဖြစ်ပုံနည်းဖြင့် ဆိုအပ်သည် - ဟူလို၊] တံ - ထို စကားကို၊ န ဂဟေတဗ္ဗံ၊ ဟိ - မှန်၊ ဝိနယဝိနိစ္ဆယေ - သည်၊ အာဂတေ- ရောက်လသော်၊ ဂရုကေ–လေးသောအရပ်၌၊ ဌာတဗ္ဗံ-တည်ရာ၏၊ သော-ဤ လေးသောအရာ၌ တည်ရခြင်းသည်၊ ဝိနယဓမ္မတာ - ဝိနည်း၏ ထုံးစံတည်း၊ ဝါ – ဝိနည်း၌ အလေးပြုသောပုဂ္ဂိုလ်၏ ထုံးစံတည်း၊ အပိစ – ဝိနယဓမ္မတာ ဖြစ်ရုံသာ မကသေး၊ ယထာ-အကြင်အကြောင်းကြောင့်၊ အန္တောကုမ္ဘိယံ-၌၊

ဝိနယဓမ္မတာ ။ ။ ဝိနယဂရုကာနံ ဓမ္မတာ။ (ဋီကာ)၊ [ဝိနယဂရုကတာဗျာပ နတ္တံ ဟိ ဝိနယဂရုကောဃေဝတ္တ ဝိနယသဒ္ဒေန ဝုတ္တော= ဝိနယဂရုကအဖြစ်ကို ပြန့်နှံ့ စေခြင်းအကျိုးငှါ ဝိနယဂရုကပုဂ္ဂိုလ်ကို ဝိနယသဒ္ဒါဖြင့် ဆိုအပ်သည်၊ ဝိနယဂရုက ပုဂ္ဂိုလ်အားလုံးနှင့် ဆိုင်အောင်“ဝိနယ ဓမ္မတာ”ဟု ဝိနယသဒ္ဒါကို ဆိုသည်–ဟူလို။]

အပိစ။ ။သင်္ခေပ မဟာပစ္စရီစသော အဋ္ဌကထာတို့၌ ဆိုအပ်သောစကားသည် ဝိနယထုံးစံနှင့် မညီရုံသာမက, ပါဠိတော်နှင့်လည်းမညီ ဟု ပြလို၍“အပိစ”စသည်မိန့်၊ အိုးအတွင်း၌တည်သောဘဏ္ဍာ၏ တည်ရာသည် အိုးတခုလုံးမဟုတ်, တည်နေရာဌာန

ဌိတဿ – တည်သောဘဏ္ဍာ၏၊ **သမ္ဘာ** ကုမ္ဘိ ဌာနံ, န – မဟုတ်၊ **တံ** - ဤ အလုံးစုံသောအိုး၏ တည်ရာ မဟုတ်ကြောင်းကို၊ အတ္တနော ၊ပေ၊ ဆိန္ဒတီတိ ဝစနတောပိ-ဆိန္ဒတိဟု ဟောတော်မူအပ်သောစကားတော်ကြောင့်လည်း၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊ ဣတိ–ဤသို့ မှတ်အပ်၏။

[ပါဠိတော်၌ "သပ္ပိံ ဝါ" စသည်ရှိသောကြောင့် ထို သပ္ပိစသည်ကို ဖွင့်ပြလို၍ "သပ္ပိအာဒိသု" စသည်မိန့်။ ] သပ္ပိအာဒိသု – တို့တွင်၊ ယံ ကိဉ္စိ-အမှတ်မထား တပါးပါးသော ဝတ္ထုကို၊ ပိဝတော - သောက်သောရဟန်း၏၊ ဧကပယောဂေန-တကြိမ်တည်းသော ပယောဂဖြင့်၊ ဝါ-တကြိုက်ထည်းဖြင့်၊ ပီတမတ္တေ – သောက်အပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဣတိ မဟာအဋ္ဌကထာယံ ဝုတ္တံ၊ ပန – ဝါဒန္တရကား၊ မဟာပစ္စရိအာဒိသု- တို့၌၊ အယံဝိဘာဂေါ – ဤဝေဘန်အပ်သော အထူးကို၊ ဒဿိတော၊ (ကိံ)၊ မုခံ- ပါးစပ်ကို၊ အနပနေတွာ- မဖဲရှားမူ၍၊ ဝါ – မလွှဲမူ၍၊ အာကឌ္ဍိတွာ-ဆွဲငင်လျက်၊ ဝါ – စုတ်ယူလျက်၊ ပိဝတော – ၏၊ ပရဂလဂတံ – လည်မျိုတဖက်၌ ရောက်သော ဝတ္ထုသည်၊ ပါဒံ - တမတ်ကို၊ သစေ န အဂ္ဃတိ၊ မုခဂတေန - ပါးစပ်၌ရောက်သော ဝတ္ထုနှင့်၊ သဒ္ဓိံ – တကွဖြစ်မှ၊ (ပါဒံ) သစေ အဂ္ဃတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊ တာဝရက္ခတိ-ပါရာဇိကမှ စောင့်သေး၏၊ ပန-ကား၊ ကဏ္ဌေန- လည်ချောင်းဖြင့်၊ ပရိစ္ဆိန္နကာလေယေဝ-ပိုင်းဖြတ်အပ်ပြီးရာအခါ၌သာလျှင်၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ [ခံတွင်းသို့ မျိုချလိုက်ခြင်းကို ကဏ္ဌေန ပရိစ္ဆိန္န – ဟု ဆိုသည်၊ "မုခဂတံ အဇ္ဈောဟရဏကာလေတိ အတ္ထော"–ဝိမတိ။] ဩဋ္ဌေဟိ- နှုတ်ခမ်းတို့ဖြင့်၊ ပရိစ္ဆိန္ဒန္တော–လျက်၊ ဩဋ္ဌေ-တို့ကို၊ သစေပိ ပိဒဟတိ၊ ပါရာဇိကမေဝ (ဟောတိ)၊ ဥပ္ပလဒဏ္ဍာ ဝေဠုနာဠိ နဠနာဠိအာဒိဟိ – ကြာရိုး, ဝါးကျည်တောက်, ကျူကျည်တောက် အစရှိသည်တို့ဖြင့်၊ ပိဝန္တဿာပိ – ၏လည်း၊ ပရဂလဂတမေဝ – လည်ချောင်းတဖက်၌ရောက်သော ဝတ္ထုသည်ပင်၊ ပါဒံ - ကို၊ သစေ အဂ္ဃတိ၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ မုခဂတေန – ပါးစပ်၌ ရောက်သောဝတ္ထုနှင့်၊ သဟ-တကွဖြစ်မှ၊ (ပါဒံ)သစေ အဂ္ဃတိ၊ (ဧဝံသတိ)၊

ကလေးမျှသာဖြစ်ကြောင်းကို "အတ္တနော ဘာဇနဂတံဝါ ကရောတိ, မုဉ္စံဝါဆိန္ဒတိ" ဟူသော ပါဠိတော်ထောံ၍လည်း သိနိုင်၏၊ မိမိခွက်ကို အိုးထည်း၌သွင်းချထားသော ကြောင့်ရင်း, လက်ဆုပ်လည်း အိုးထည်း၌ပင် တည်နေသောကြောင့်ရင်း, အိုးတခုလုံး တည်ရာဖြစ်လျှင် အတ္တနောဘာဇနဂတပြုရုံမျှဖြင့်ရင်း, မုဉ္စဆိန္ဒနပြုရုံမျှဖြင့်ရင်း ပါရာဇိက မကျနိုင်၊ ယခုသော် ပါရာဇိကကျ၏ ဟု မိန့်တော်မူသောကြောင့် "အိုးတခုလုံးသည် တည်ရာမဟုတ်နိုင်"ဟု သိသာသည်–ဟူလို။

ပါရာဇိကံ , နတာဝ ဟောတိ - မဖြစ်သေး၊ ဥပ္ပလဒဏ္ဍာဒိဂတေန - ကြာရိုး အစရှိသည့်၌တည်သောဝတ္ထုနှင့်၊ သဒ္ဓိံ, ကောဗန္ဓဘာဝံ-ကို၊ ကောပေတွာ- ဖျက်၍၊ ဩဋ္ဌေဟိ, ပရိစ္ဆိန္နမတ္တေ - သော်၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ဥပ္ပလ ဒဏ္ဍာဒိဂတေန - နှင့်၊ သဒ္ဓိံ (ပါဒံ)သစေ အဋ္ဌတိ၊ ဥပ္ပလဒဏ္ဍာဒီနံ- တို့၏၊ ဗုန္ဒေ – အရင်းကို၊ အင်္ဂုလိယာပိ – လက်ချောင်းဖြင့်လည်း၊ ပိဟိတမတ္တေ - ပိတ်အပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပါဒဋ္ဌနကေ-တမတ် တန်သောဝတ္ထုသည်၊ ပရဂလံ - လည်ချောင်းတဖက်သို့၊ အပ္ပဝိဋ္ဌေ – မဝင် သေးမီ၊ ဥပ္ပလဒဏ္ဍာဒိသုစ–တို့၌၎င်း၊ မုခေစ- ၌၎င်း၊ အတိရေကပါဒါရဟ မ္ပိ - တမတ်ထက်အလွန် ထိုက်တန်သောဝတ္ထုသည်လည်း၊ ကောဗဒ္ဓံ - သည်၊ ဟုတွာ တိဋ္ဌတိ၊ ရက္ခတိယေဝ၊ ဍုတိ – သို့၊ (အယံဝိဘာဝေါ ဒဿိတော၊) တံသဗ္ဗမ္ပိ-ထိုအလုံးစုံသော စကားကိုလည်း၊ [သုဒဿိတမေဝ၌ ပဓာနစပ်။] ဝါ-သည်လည်း၊ (ဘဇတိ၌ အပ္ပဓာနစပ်။)ယသ္မာ–ကြောင့်၊ အတ္တနောပေ၊ ဆန္ဒတီတိ - ဟူသော၊ ဍုမံ နယံ–သို့၊ ဘဇတိ – ကပ်ဝင်၏၊ တသ္မာ သုဒဿိ တမေဝ၊ သေ - ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ တာဝ - နာနာဗဒ္ဓမှ ရှေးဦးစွာ၊ ကော ဗဒ္ဓေ- တစပ်ထည်းဖွဲ့အပ်သောဝတ္ထု၌၊ နယော– တည်း။

ပန-ကား၊ဟတ္ထေနဝါ-ဖြင့်သော်၎င်း၊ ပဒေနဝါ-သော်၎င်း၊ ထာလကာ ဒိနာဝါ-သော်၎င်း၊ ကေနစိ ဘာဇနေန, ဂဟေတွာ–ခပ်ယူ၍၊ သစေ ပိဝတိ၊ (ဗေံသတိ)၊ ယမ္ပိပယောဂေ-အကြင်ပယောဂ၌၊ ပါဒဋ္ဌနကံ-သည်၊ ပူရတိ- ၏၊ တမ္ပိ-ထိုပယောဂသည်၊ ဂတေ-ရောက်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ အထ-သို့မဟုတ်၊ ယမ္ပိ-အကြင်ထောပတ် အစရှိသည်၌၊ ကေပယောဂေနေဝ- တကြိမ်တည်းသော ပယောဂဖြင့်ပင်၊ ဝါ – တကြိမ်တည်း ခပ်ယူခြင်း ဖြင့်ပင်၊ ပါဒဋ္ဌနကံ ဂဟေတုံ သက္ကောတိ၊ ( တံ ) သပ္ပိအာဒိ–သည်၊ မဟဋ္ဌံ - သည်၊ ဟောတိ- ၏၊ ကေဒ္ဓါရေယေဝ - တကြိမ်တည်း မြှောက်ခြင်း၌ပင်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပန-ဆက်၊ ဘာဇနံ–ကို၊နိမုဇ္ဇာပေတွာ-မြုပ်စေ၍၊ ဂဏှန္တဿ– ခပ်ယူသောရဟန်း၏၊ ယာဝ-လေ၁်၊ကောဗဒ္ဓံ-သည်၊ ဟောတိ၊တာဝ ရက္ခတိ၊ မုခဝဋ္ဋိ ပရိစ္ဆေဒေနဝါ-နခမ်းရစ် အပိုင်းအခြားဖြင့် သော်၎င်း၊ ဥဒ္ဓါရေနဝါ- ချက်ကို ထုတ်ဆောင်ခြင်းဖြင့် သော်၎င်း၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ပန–ဆက်၊

မုခ၊ပေ၊ဥဒ္ဓါရေနဝါ။ ။သပိတ်စသည့်၌ အပြည့်မထည့်ဘဲ ယူလျှင် အိုးတွင်းက ဘဏ္ဍာသည် မုခဝဋ္ဋိဖြင့် အဆက်ပြတ်၏၊ အပြည့်ထည့်၍ ယူလျှင် နဂိုရ်က အတွင်း၌ နှစ်ထားသောကြောင့် အဆက်မပြတ်သေး၊ ထို့ကြောင့် ကြွမြှောက်လိုက်မှ အဆက် ပြတ်၍ ပါရာဇိက ကျသည်။

ယဒါ-၌၊ သပ္ပိံ ဝါ-ကိုသော်၎င်း၊ တေလံဝါ-၎င်း၊ အစ္ဆံ-ကြည်သော၊ တေလ
သဒိသ မေဝ – ဆီနှင့် တူသည်သာလျှင်ဖြစ်သော၊ မဓု ဖါဏိတံဝါ- ပျားရည်
တင်လဲရည် ကိုသော်၎င်း၊ ကုမ္ဘိံ၊ အာဝိဉ္ဆန္တော - စောင်းငှဲ့၍၊ အတ္တနော
ဘာဇနေ ပဝေသေတိ၊ တဒါ, တေသံ – ထို ထောပတ် အစရှိသည်တို့၏၊ အစ္ဆ
တာယ-ကြည်သည်၏အဖြစ်ကြောင့်၊ ဧကာဗဒ္ဓတာ-တစပ်ထည်းဖွဲ့အပ်သည်၏
အဖြစ်သည်၊ နတ္ထိ၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ ပါဒဂ္ဃနကေ- တမတ်တန်ဝတ္ထုသည်၊ မုခ
ဝဋ္ဋိတော – မှ၊ ဝဋ္ဋိဘမတ္တေ – လျှောကျပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ
(ဟောတိ)၊ ပန-ကား၊ ပစိတွာ-၍၊ ထပိတံ-သော၊ မဓုဖါဏိတံ-သည်၊ သိလေ
သော ဝိယ-သစ်စေးကဲ့သို့၊စိက္ကနံ-ပြစ်သည်၊ အာကမုနဝိကမုနယောဂ္ဂံ-ရှေးရှု
ဆွဲငင်ခြင်း,တဘက်သို့ တွန်းပို့ခြင်း၌ လျောက်ပတ်သည်၊ ဟောတိ၊ [စိက္ကနန္တိ
ဗဒ္ဓံ (စပ်ဖွဲ့သည်)၊ အဘိမုခံ+ကမုနံ အာကမုနံ၊ ပရတော+ကမုနံ ဝိကမုနံ။]
ကုက္ကုစ္စေ-သည်၊ ဥပ္ပန္နေ-သော်၊ ဧကာဗဒ္ဓမေဝ-သည်သာ၊ ဟုတွာ, ပဋိနိဟ
ရိတုံ-တဖန် ဆောင်ခြင်းငှါ၊ [ အိုးထည်း၌ ပြန်သွင်းခြင်းငှါ-ဟူလို။] သက္ကာ–
တတ်ကောင်း၏၊ ဣတိ-ကြောင့်၊ တံ-ဤ ပျားရည် တင်လဲရည်သည်၊ မုခဝဋ္ဋိ
ယာ–မှ၊ နိက္ခမိတွာ, ဘာဇနေ-မိမိခွက်၌၊ ပဝိဋ္ဌေ–ဝင်ပြီးသည်၊ (သမာနံ) ပိ၊
ဗာဟိရေန-ပြင်ဘက် ဝတ္ထုနှင့်၊ သဒ္ဓိံ, ဧကာဗဒ္ဓတ္တာ–ကြောင့်၊ ရက္ခတိ၊ ပန–
ကား၊ပေ၊ ပါရာဇိကံ။

ယောပိ-အကြင် ရဟန်းသည်လည်း၊ ထေယျစိတ္တေန ပရဿ, ကုမ္ဘိယာ–
၌၊ ပါဒဂ္ဃနကံ-သော၊သပ္ပိံ ဝါ-ကိုသော်၎င်း၊ တေလံဝါ-သော်၎င်း၊ အဝဿံ-
မချွတ်ကေန်၊ ပိဝနကံ-သောက်လတံ့သော၊ ဝါ- စုတ်ယူလတံ့သော၊ ယံကိဉ္စိ-
သော၊ ဒုကူလသာဋကံဝါ-ဘွဲ့ဖြူ အဝတ်ကိုသော်၎င်း၊ စမ္မခဏ္ဍာဒီနံ- သားရေ
ပိုင်း အစရှိသည်တို့တွင်၊ အညတရံဝါ - ကိုသော်၎င်း၊ ပက္ခိပတိ- အံ့၊ပေ၊ ရိတ္တ
ကုမ္ဘိယာ–အချည်းနှီးသော အိုး၌၊ ဣဒါနိ-၌၊ တေလံ - ကို၊ အာကိရိဿန္တိ-
လောင်းထည့်ကုန်လတံ့၊ ဣတိ-သို့၊ ဥတွာ,ယံကိဉ္စိ, ဘဏ္ဍံ–ဘွဲ့ဖြူအဝတ် အစ
ရှိသော ဘဏ္ဍာကို၊ ထေယျစိတ္တော (ဟုတွာ ) ပက္ခိပတိ၊ တံ- ထိုဘဏ္ဍာသည်၊
တတ္ထ-ထို အချည်းနှီးသော အိုး၌၊ တေလေ- ဆီကို၊ အာကိဏ္ဏေ-လောင်းထည့်
အပ်ပြီးသော်၊ ပဋ္ဌမာသကဂ္ဃနကံ- ငါးပဲတန်သော ဆီစသည်ကို၊ စေ ပိဝတ်၊
(ဧဝံသတိ)၊ ပီတမတ္တေ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ဣတိ-သို့၊ မဟာအဋ္ဌကထာယံ

**ပဋိနိဟရိတုံ သက္ကာတိ။** ။ယခုစာများ၌“သက္ကောတိ”ဟုရှိ၏၊ ဧကာဗဒ္ဓံ ဟုတွာ
ထောက်၍ မဓုဖါဏိတသည် ကတ္တားဖြစ်၏၊ ထို ကတ္တား၌ စွမ်းနိုင်သောသတ္တိ မရှိ၊
တတ်ကောင်းသော သဘောသာရှိ၏၊ ထို့ကြောင့်“သက္ကာတိ”ဟု ပါဠိမှန် ရှိစေ။

ဝုတ္တံ၊ ပန-ဆက်၊ တံ-ထို မဟာအဋ္ဌကထာစကားသည်၊ တတ္ထေဝ- ထို မဟာအဋ္ဌကထာ၌ပင်၊ သုက္ခတဠာကေ-ခြောက်သောရေကန်၌၊ သုက္ခမာတိကာယ-ခြောက်သော ရေသွင်းမြောင်းကို၊ ဥဇုကရဏ ဝိနိစ္ဆယေန - ဖြောင့်အောင်ပြုရာဝယ် ဆုံးဖြတ်ကြောင်း စကားနှင့်၊ ဝိရုဇ္ဈတိ – ဆန့်ကျင်၏၊ ဧတ္ထ - ဤအချည်းနှီးသောအိုးဝယ်ဘဏ္ဍာကိုထည့်ရာ၌၊အဝဟာရလက္ခဏံစ-ခိုးခြင်း၏လက္ခဏာသည်လည်း၊ န ပညာယတိ– မထင်ရှား၊ တသ္မာ ( တံ - ထိုမဟာအဋ္ဌကထာစကားကို )၊ န ဂဟေတဗ္ဗံ၊ ပန – ဝါဒန္တရကား၊ မဟာပစ္စရိယာဒိသု–တို့၌၊ တဿ–ထို ချထားအပ်သော ဘဏ္ဍာကို၊ ဥဒ္ဓါရေ– ထုတ်ဆောင်ခြင်း၌၊ ပါရာဇိကံ ဝုတ္တံ၊ တံ-ထိုစကားသည်၊ ယုတ္တံ - သင့်၏။ [ ထုတ်ဆယ်၍ယူရာ၌ ဌာနာစာဝနပယောဂရှိသောကြောင့် ပါရာဇိကဟူသော ထိုစကားသည် သင့်၏။]

ပရဿ–သူတပါး၏၊ ရိတ္တကုမ္ဘိယာ– ၌၊ သင်္ဂေါပနတ္ထာယ - ဘဏ္ဍာကို လုံခြုံစေခြင်းငှါ၊[ဤစကားဖြင့် သုဒ္ဓစိတ်ဖြင့် ထားကြောင်း ပြ၏။] ဘဏ္ဍံ–ကို၊ ထပေတွာ-ထားပြီး၍၊ တတ္ထ - ထို အိုး၌၊ တေလေ - ကို၊ အာကိရေ–သော်၊ အယံ-ဤ အိုးရှင်သည်၊ သစေ ဇာနိဿတိ-အံ့၊(ဧဝံသတိ)၊ မံ – ကို၊ ပလိဗုန္ဓိဿတိ-နှောက်ရှက်လတ့်၊ ဣတိ-ဤသို့ ကြံ၍၊ ဘီတော – သည်၊ ( ဟုတွာ )၊ ပါဒဂ္ဃနကတေလံ - တမတ်တန်ဆီကို၊ ပီတံ – သောက်ပြီးသော၊ ဘဏ္ဍံ - ကို၊ ထေယျစိတ္တေန,ဥဒ္ဓရတိ-ထုတ်ဆောင်အံ့၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊သုဒ္ဓစိတ္တေန, ဥဒ္ဓရတိ-အံ့၊ ပရေ-အခြားသူသည်၊ ( ဆီ၏ အရှင်သည်၊ ) အာဟရာပေန္တေ–ဆောင်စေလသော်၊ ဝါ–အစားတောင်းလသော်၊ ဘဏ္ဍဒေယျံ–ဘဏ္ဍဒေယျသည်၊(ဟောတိ)၊ ပရဿ - အခြားသူ၏၊ ယံ – အကြင် ဘဏ္ဍာသည်၊ နဋ္ဌံ–ပျက်စီးပြီ၊ တဿ – ထို ပျက်စီးသော ဘဏ္ဍာ၏၊ မူလံဝါ - တန်ဖိုးကိုသော်ငင်း၊ တဒေဝဝါ ဘဏ္ဍံ - ထို ဘဏ္ဍာကိုပင်လျှင်သော်ငင်း၊ ဒါတဗ္ဗံ - အစားပေးထိုက်၏၊ ဣတိ- ဤ ဆိုအပ်ပြီးကား၊ အတ္ထော- ဘဏ္ဍဒေယျံပုဒ်၏ အနက်

တတ္ထေဝ၊ပေ၊ ဝိရုဇ္ဈတိ။ ။ ထို မဟာအဋ္ဌကထာ၌ပင် ရေမရှိသော ကန်ရိုးကို အားနည်းအောင် ပြုပြီးနောက် ကန်၏ ခြောက်နေသော ရေထုတ်ပြွန်ကို ပိတ်ခြင်း, တခြားသို့ သွားသော ရေလမ်းကို ကံသင်းဖွဲ၍ ရေကန်ဘက်သို့ လာအောင် ပြုခြင်း အားဖြင့် မိုးရွာသော အခါ ရေများစွာလာ၍ ကန်ရိုး ကျိုးအောင် ဖျက်ဆီးလျှင် ဘဏ္ဍာဒေယျ ဟု သာ ဆို၍ ပါရာဇိက ဟု မဆို၊ ထို့ကြောင့် ထို ဆိုအပ်ပြီးသော "ဆီစသည် မရှိသေးသော အိုး၌ ဆီစသည် စုံတ်အောင် အဝတ်စသည်ကို ချထားနှင့်လျှင် တမတ်တန်သောဆီကို စုတ်မိက ပါရာဇိကကျ၏"ဟူသော ထို မဟာအဋ္ဌကထာသည် သူ၏ စကားနှင့်ပင် ဆန့်ကျင်၏–ဟူလို။

တည်း၊ နော စေ ဒေတိ - အံ့၊ ( ဇေ၀ံသတိ )၊ သာမိကဿ- ၏၊ ဓုရနိက္ခေပေ- ကြောင့်၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )။

ပရဿ – ၏၊ ကုမ္ဘိယာ – ၌၊ အညော - သည်၊ သပ္ပိံ ၀ါ - ကိုသော်ငင်း၊ တေလံ ၀ါ – ကိုသော်ငင်း၊ သစေ အာကိရတိ – အကယ်၍ လောင်းထည့်အံ့၊ တတြ။-ထိုအိုး၌လည်း၊ အယံ– ဤရဟန်းသည်၊ ထေယျစိတ္တေန-ဖြင့်၊ တေလ ပိ၀နကံ – ဆီကိုသောက်လတ့်သော၊ [တေလသာ မက, သပ္ပိလည်းပါသော ကြောင့် '' တေလပိ၀နကံ " ဟု ရှိသည်ကား မကောင်း၊ '' ပါဒဂ္ဃနကပိ၀ နကံ''ဟု ရှိလျှင် သာ၍ကောင်းမည်။] ဘဏ္ဍံ ပက္ခိပတိ၊ ၀ုတ္တနယေနေ၀ ပါရာ ဇိကံ(ဟောတိ)၊ [ဟတ္ထတော မုတ္တမတ္တေ ပါရာဇိကံကို“၀ုတ္တနယေနေ၀''ဟု ဆိုသည်။] အတ္တနော, ရိတ္တကုမ္ဘိယာ–၌'ပေ၊အာကိရဏဘာ၀ံ- လောင်းထည့် လတံ့၏ အဖြစ်ကို၊ ဉတွာ ထေယျစိတ္တေန ဘဏ္ဍံ , နိက္ခိပတိ - ချထားအံ့၊ ပုဗ္ဗေ ၀ုတ္တနယေနေ၀, ဥဒ္ဓါရေ - ထုတ်ဆောင်ရာအခါ၌၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ သုဒ္ဓစိတ္တော -ရှိသည်၊ (ဟုတွာ)၊ နိက္ခိပိတွာ–၍၊ ပစ္ဆာ-၌၊ ထေယျစိတ္တေန ဥဒ္ဓ ရတိ၊ ပါရာဇိကမေ၀ (ဟောတိ)၊ သုဒ္ဓစိတ္တော၀- စင်ကြယ်သော စိတ်ရှိသည် သာ လျှင်၊ (ဟုတွာ)၊ ဥဒ္ဓရတိ၊ အ၀ဟာရော-ခိုးခြင်းသည်၊ နေ၀(ဟောတိ)၊ ဂိ၀ါ – ကြွေးမြီသည်၊ န (ဟောတိ)၊ ပန – ၀ါဒန္တရကား၊ မဟာပစ္စရိယံ , အနာပတ္တိမတ္တမေ၀ – အနာပတ်မျှ ကိုသာ၊ ၀ုတ္တံ၊ [ ''နေ၀ အ၀ဟာရော, န

**ဘဏ္ဍဒေယျံ ။** ။ ဘဏ္ဍဒေယျံပုဒ်၏အနက်ကို“ ယံ ပရဿ ၊ပေ၊ အတ္ထော” ဟု ဖေါ်သောကြောင့် ဘဏ္ဍဒေယျံ၏နောက်၌ “ဘဏ္ဍဒေယျံနာမ” ဟု မရှိသင့်၊ ထို နာမ သဒ္ဒါနှင့် တွဲရာ၌လည်း“အတ္ထော”ဟု ထားရိုး မရှိ၊“ယံ ပရဿ နဋ္ဌံ, တဿ မူလံ ၀ါ” ဖြင့် “ဒါတဗ္ဗံတိ ဒေယျံ၊ ဘဏ္ဍဿ – ၏၊ ဒေယျံ– အစားပေးထိုက်သော အဖိုးတည်း၊ ဘဏ္ဍဒေယျံ–ဖိုး” ဟူသောအနက်ကိုပြ၏၊ ဤအလို “ဘဏ္ဍာ၏ တန်ဖိုးငွေကိုပေး”ဟု ဆိုလို၏၊ “ တဒေ၀ ၀ါ ဘဏ္ဍံ ဒါတဗ္ဗံ ” ဖြင့် “ ဒါတဗ္ဗံတိ ဒေယျံ၊ ဘဏ္ဍမေ၀+ဒေယျံ ဘဏ္ဍဒေယျံ-အစားပေးထိုက်သောဘဏ္ဍာ၊ ၀ါ-ဘဏ္ဍာစား''ဟူသော အနက်ကိုပြ၏၊ [ယောဇနာ၌ “ ဘဏ္ဍည္ထ+တံ+ဒေယျံစာတိ ဘဏ္ဍဒေယျံ ”ဟု ပြု၏၊] ဤနည်းအလို “ဆိတဆယ်သားပျက်လျှင် ဆိတဆယ်သားကိုပင် အစားပေး”ဟု ဆိုလိုသည်။ [ပျက် စီးသောဆိက မရှိတော့ပြီဖြစ်၍,အလားတူဆိကိုပင်“တဒေ၀–ထိုဆိ”ဟု သဒိသူပစာရ နည်းအားဖြင့် ဆိုသည်။]

**ပါရာဇိက။** ။ဘဏ္ဍဒေယျထိုက်ရာ၌ “နော စေ ဒေတိ၊ သာမိကဿ ဓုရနိက္ခေပေ ပါရာဇိကံ” ဟု ဆိုသောကြောင့် မိမိကလည်း “ဘဏ္ဍာစားမပေးဘူး”ဟုရင်း, ဥစ္စာ ရှင်ကလည်း“ရမှာမဟုတ်တော့”ဟုရင်း, ဓုရနိက္ခေပပြုလိုက်လျှင် ပါရာဇိကကျသည်ကို သတိပြုပါ။

ဂိဝါ''ဟု ခွဲခြားမနေတော့ဘဲ''အနာပတ္တိ''ဟုသာဆိုသည်၊ သဘောသွားမှာ အတူတူပင်-ဟူလို။] ကိဿ-ကြောင့်၊ မမ-၏၊ ကုစ္ဆိယံ-၌၊ တေလံ-ကို၊ အာကိရသိ-လောင်းထည့်သနည်း၊ ဣတိ-၍သို့ပြော၍၊ ကုပိတော-စိတ်ဆိုးသည်၊ ( ဟုတွာ )၊ အတ္တနော ဘဏ္ဍံ ဥဒ္ဒရိတွာ , ဆနေ့တိ - စွန့်ပစ်အံ့၊ နော ဘဏ္ဍဒေယျံ-ဘဏ္ဍဒေယျမထိုက်၊ ဣတိ-သို့၊ ကုရုန္ဒိယံ ဝုတ္တံ။

ထေယျစိတ္တေန - ဖြင့်၊ တေလံ, ဂဠေတုကာမော- လျှောကျစေလိုသည်၊ (ဟုတွာ)၊ မုခဝဋ္ဋိယံ-အိုးနှုတ်ခမ်းရစ်၌၊ ဂဟေတွာ ကုမ္ဘိံ,အာဝိဉ္ဆတိ-စောင်းငံ့အံ့၊ ပါဒဂ္ဃနကေ- တမတ်တန်သောဆီသည်၊ ဂဠိတေ-လျှောကျလသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ထေယျစိတ္တေနေဝ-ပင်၊ သဝိတွာ-ယိုစီး၍၊ ဂမိဿတိ-သွားလတ့ံ၊ ဣတိ-၍သို့ကြံ၍၊ (ကုမ္ဘိံ-ကို၊) ဇဇ္ဇရံ-ဆွေးမြေ့အောင်၊ ဝါ-ပါးနေအောင်၊ ကရောတိ-အံ့၊ [ရှေးက''ဇဇ္ဇရံ-ကွဲအက်သည်ကို''ဟု ပေး၏။]

**နေဝ အဝဟာရော န ဂီဝါ။** ။ထေယျစိတ်မပါသောကြောင့် အဝဟာရလည်း မဖြစ်, မိမိအိုးဖြစ်၍ ဂီဝါလည်းမဖြစ်၊ ''ဣဏော ဂီဝါ ဂလေပိစ''အဘိဓာန်(၁၁၃၀) နှင့်အညီ ကြွေးကို ဂီဝါဟု ဆိုသည်။

**မှတ်ချက် ။** ။ ဘဏ္ဍဒေယျ၌ ဥစ္စာရှင်က တောင်းသောအခါ မပေးလျှင် တန်ဖိုးအလိုက်ဆုံးဖြတ်ရာသကဲ့သို့ ၌''ဂိဝါ''ဟု လာရာ၌လည်း ဆိုင်ရာကတောင်းသောအခါ မပေးလျှင် တန်ဖိုးအလိုက် ဆုံးဖြတ်ရသည်၊ ထို့ကြောင့် ဘဏ္ဍဒေယျနှင့် ဂီဝါကို ၌ နေရာမျိုး၌ ပရိယာယ်ဟုသာမှတ်။ [ ပဋိဒေယျ နဋ္ဌေ ဗိလ္လော, ဂီဝါ နေဝဒေယျ စောဒိတော၊ မုရနိကွေပတော တေသံ, ဟောတိ ဘဏ္ဍဿကာရိယော၊-ခုဒ္ဒသိက္ခာ,ပကိဏ္ဏက ခဏ်း(၃၂)။] (သူတပါးဥစ္စာကို စိတ်ကောင်း စေတနာကောင်းဖြင့် ရွေ့၍သိမ်းထားရာ စသည်၌) ထို ဥစ္စာပျောက်သွားလျှင် သိမ်းထားသူမှာ ဂီဂါ ထိုက်သည်ဟု ဆို၏၊ ထို ဂီဝါမျိုး၌ကား အစားမပေးသော်လည်း ပါရာဇိက မဖြစ်သင့်။

**အတ္တနော ဘဏ္ဍံ ။** ။ ဆီမလောင်းခင် မိမိအိုး၌ သုဒ္ဓစိတ်ဖြင့် ထားပြီးနောက် သူတပါး ဆီလောင်းလာသော အခါ ထိုဆီကို စုတ်ပြီးသောဘဏ္ဍာကို '' အတ္တနော ဘဏ္ဍံ ''ဟု ဆိုသည်။ [''ဘဏ္ဍဒေယျ မထိုက်''ဟူသောစကားဖြင့် မဟာအဋ္ဌကထာ၏ ''နေဝ အဝဟာရော, န ဂီဝါ'' ဟူသောစကားကိုပင် ထောက်ခံရာရောက်၏။]

**ဇဇ္ဇရံ။** ။အပေါက်ဖြစ်အောင် မဖေါက်သေးဘဲ ဆီကတိုးဖေ့ါလျှင် ပေါက်သွားလောက်အောင် အပေါက်ဖြစ်လုနီးနီး ပြုထားသည်ကို ''ဇဇ္ဇရံကရောတိ''ဟု ဆိုသည်။ [ ထောမနိမိ၌ ဇရ်ဇဓာတ်နောင် အရန်ပစ္စည်းဖြင့် '' ဇရ်ဇရ '' ဟု ရှိ၏၊ ရ်ပျောက်၍ ဒွေဘော်ရောက်လျက် ပါဠိ၌ ''ဇဇ္ဇရ''ဟု ပြီးသည်၊ ဇရ်ဇဓာတ်လည်း ဇရဓာတ်ကဲ့သို့ ဘဿန - နဂိုရ်သဘောမှ လျှောခြင်း အနက်ကို ဟော၏၊ ဓာတွတ္ထ သင်္ဂဟ၌ကား ဇဇ္ဇရောကို ဇရဓာတ်အရာ၌ ထုတ်ထား၏။]

ပါဒ႖ွနကေ-တမတ်တန်သောဆိသည်၊ သဝိတ္တာ-၍၊ ဂတေ-သွားလသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ထေယျစိတ္တေနေဝ , ဆိဒ္ဒ-အပေါက်ကို၊ ဩမဋ္ဌံဝါ-ဩမဋ္ဌအပေါက်ကိုသော်၎င်း၊ ဥမ္မဋ္ဌံဝါ - သော်၎င်း၊ ဝေမဋ္ဌံ ဝါ- သော်၎င်း၊ (ကရောတိ)၊ ပန-ဆက်၊ ဣဓ- ဤအပေါက်သုံးမျိုးသည်၊ သမ္မောဟဋ္ဌာနံ-တွေဝေခြင်း၏တည်ရာတည်း၊ [ အာပတ်ကို ဆုံးဖြတ်ဘို့ရန် တွေဝေစရာဌာန ဖြစ်သည်-ဟူလို။ ]တသ္မာ သုဋ္ဌု, သလ္လက္ခေတဗ္ဗံ-မှတ်သားရာ၏၊ ဟိ- ချဲ့၊ အယံ-ဤဆိုအပ်လတ္တံကား၊ ဧတ္ထ - ဤအပေါက်သုံးမျိုး၌၊ ဝိနိစ္ဆယော - တည်း၊ အဓောမုခဆိဒ္ဒံ - အောက်၌မျက်နှာဝရှိသောအပေါက်သည်၊ ဩမဋ္ဌံနာမ - ဩမဋ္ဌမည်၏၊ ဥဒ္ဓံမုခဆိဒ္ဒံ- အထက်၌ မျက်နှာဝရှိသောအပေါက်သည်၊ ဥမ္မဋ္ဌံနာမ-၏၊ ဥဋ္ဌုကြ်ာသ-ရေမှုတ်၏(ဆိဒ္ဒံဣဝ-ကဲ့သို့)ဥဇုကတဆိဒ္ဒံ-ဖြောင့်ဖြောင့်ပြုအပ်သောအပေါက်သည်၊ ဝေမဋ္ဌံနာမ - ၏၊ တတြ - ထို အပေါက်သုံးမျိုးတွင်၊ ဩမဋ္ဌသ - ဩမဋ္ဌအပေါက်၏၊ ဗဟိ - မှ၊ ပဋ္ဌာယ - ၍၊ ကတဿ-ပြုအပ်သောအပေါက်၏၊ အဗ္ဘန္တရတော-အတွင်းဘက်အစွန်းမှ၊ပါဒ႖ွနကေ-သော၊ တေလေ-သည်၊ဂဋ္ဌိတေ-သော်၊ ဗဟိ- သို့၊ အနိက္ခန္တေပိ-မထွက်သေးသော်လည်း၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ကသ္မာ- နည်း၊ ယသ္မာ, တတော-ထိုအတွင်းဘက်အစွန်းမှ၊ ဂဋ္ဌိတမတ္တံ- လျှောကျကာမျှသည်၊ (သမာနံဝေ-သာ၊) ဗဟိ- ၌၊ ဂတံနာမ- ရောက်ပြီးမည်သည်၊ ဟောတိ၊ ကုမ္ဘိဂတသ္မိံ- အိုး၌တည်သော ဆိဟူသော အရေအတွက်ကို၊ န လဘတိ - မရတော့၊ အန္တော-အတွင်းမှ၊ ပဋ္ဌာယ, ကတဿ- ပြုအပ်သော အပေါက်၏၊ ဗာဟိရန္တတော-အပြင်ဘက်အစွန်းမှ၊ ပါဒ႖ွနကေ - တမတ်တန် ဆိသည်၊ ဂဋ္ဌိတေ ပါရာဇိကံ ဟောတိ၊ ဥမ္မဋ္ဌဿ- ဥမ္မဋ္ဌအပေါက်၏၊ ယထာဝါ တထာဝါ-အမှတ်မထား တပါးပါးသော အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ကတဿ- ပြုအပ်သောအပေါက်၏၊ [အတွင်းမှဖြစ်စေ အပမှဖြစ်စေ စ၍ပြုအပ်သော အပေါက်၏] ၊ပေ၊ဟိ- မှန်၊ တံ- ထိုဆိသည်၊ ယာဝ-လောက်၊ ဗာဟိရန္တတော န ဂဋ္ဌတိ၊ တာဝ, ကုမ္ဘိဂတမေဝ-အိုး၌တည်သည်သာလျှင်၊ ဟောတိ။

စ-အဘို့တပါးကား၊ ဝေမဋ္ဌဿ-ဝေမဋ္ဌအပေါက်၏၊ ကပါလမဇ္ဈတော-အိုးအခွံ၏အလယ်မှ၊ ဂဋ္ဌိတဝသေန ကာရေတဗ္ဗော၊ ဣတိ-သို့၊ အဋ္ဌကထာသု

ဩမဋ္ဌံ စသည်။ ။အဝမသီယတေ— အောက်၌ မျက်နှာဝရှိအောင် သုံးသပ်အပ်(ဖေါက်အပ်)၏၊ ဣတိ ဩမဋ္ဌံ၊ စူးကို အောက်ဘက်မှ အထက်သို့ ထိုး၍ဖေါက်အပ်သော အပေါက်တည်း၊ ဥဒ္ဓံ မသီယတေတိ ဥမ္မဋ္ဌံ = အထက်၌ မျက်နှာဝရှိအောင် အထက်မှ အောက်သို့စိုက်၍ ဖေါက်အပ်သောအပေါက်၊ ဝိမသီယတေတိ ဝိမဋ္ဌံ၊ ဝိမဋ္ဌံယေဝ ဝေမဋ္ဌံ= ရှေ့ ၂ ပေါက်နှင့် မတူအောင် အလယ်တဲ့တဲ့ ဖေါက်အပ်သော အပေါက်။

ဝုတ္တံ၊ပန-ဆက်၊တံ-ထိုအဋ္ဌကထာတို့၌ ဆိုအပ်သောစကားသည်၊ အန္တောစ-မှငုင်း၊ ဗဟိစ-မှငုင်း၊ ပဋ္ဌာယ မဇ္ဈေ, ထပေတွာ-တန့်ထား၍၊ ကတဆိဒ္ဒေ-၌၊ [ပစ္ဆာ တံ ဆိန္ဒန္တေန ကတဆိဒ္ဒေ= အလယ်တဲ့တဲ့၌ ငုံးအသားကို ခပ်ပါးပါး ချန်ထား၍ အတွင်းနှင့် အပြင် ဖေါက်ပြီးမှ ထို အကျန်ကို ဖေါက်အပ်သော အပေါက်၌။] တဋ္ဌာကဿ – တဘက်ဆည်း ကန်၏၊ [ ဋီကာ၌ "စ" မပါ။ ] မရိယာဒ ဘေဒေန ( မရိယာဒ ဘေဒနေန ) – ကန်ဘောင် ကန်ရိုးကို ချိုးပုံ နည်းနှင့်၊ သမေတိ-ညီညွတ်၏၊[ဥဒကကထာ၌ ကန်သင်းဖျက်ပုံ ၃ နည်းပါ၏၊ ထိုတွင် အလယ်ခေါင်ကို နောက်မှ ဖျက်သောနည်းနှင့် တူသည်-ဟူလို။] ပန-ဆက်၊ အန္တော-မှ၊ ပဋ္ဌာယ, ကတေ-ပြုအပ်သော အပေါက်၌၊ ဗာဟိရန္တေန-အပြင်ဘက် အစွန်ဖြင့်ငုင်း၊ ဝါ-အပြင်ဘက်အစွန်မှ ဆီထွက်ခြင်းဖြင့်ငုင်း၊ဗဟိ ပဋ္ဌာယ ကတေ,အဗ္ဘန္တရေနဝါ-အတွင်းဘက်အစွန်ဖြင့်ငုင်း၊ ဝါ-အတွင်းဘက် အစွန်မှ ဆီထွက်ခြင်းဖြင့်ငုင်း၊ ကာရေတဗ္ဗော၊ ဠုတိ–ထို့ကြောင့်၊ ဠုဒံပိ–ဤ ၃ မျိုးသော အဆုံးအဖြတ်သည်လည်း၊ ဧတ္ထ–ဤ ဝေမဇ္ဈ အပေါက်၌၊ ယုတ္တံ–သင့်မြတ်၏။

ပန–ဆက်၊ ယော– အကြင်ရဟန်းသည်၊ (ကုမ္ဘိ-သည်၊) ဝဋ္ဋိတွာ-လိမ့်၍၊ ဂစ္ဆိဿတိ–သွားလတ့ံ၊ ဠုတိ–ဤသို့ကြံ၍၊ ထေယျစိတ္တေန-ဖြင့်၊ ကုမ္ဘိယာ-၏၊ အာမာရကံဝါ- တည်ရာ ကရွတ်ခွေကိုသော်ငုင်း၊ ဥပတ္ထမ္ဘန လေဋ္ဌုကေဝါ–ထောက်ခံထားသော ခဲတို့ကိုသော်ငုင်း၊ [ခုထားသော ခဲသုံးလုံး စသည်ကိုဆိုသည်။]အပနေတိ-ဖယ်ရှားအံ့၊(ကုမ္ဘိယာ-သည်၊)ဝဋ္ဋိတွာ,ဂတာယ-သွားလသော်၊ ပါရာဇိတံ (ဟောတိ)၊ ပန-ဆက်၊ တေလာကိရဏဘာဝံ–ဆီလောင်း ထည့်လတ့ံ၏ အဖြစ်ကို၊ ဥတွာ, ရိတ္တကုမ္ဘိယာ - ၏၊ ဇဏ္ဍရဘာဝေ- ဆွေးမြေ့သည်၏အဖြစ်ကို၊(ကတေ)ဝါ–သော်ငုင်း၊ ဆိဒ္ဒေသု-တို့ကို၊ကတေသုဝါ-ကုန်သော်ငုင်း၊ ပစ္ဆာ- ၌၊ နိက္ခန္တတေလပ္ပမာဏေန – ထွက်သောဆီပမာဏဖြင့်၊ ဘဏ္ဍာဒေယျံ ဟောဟိ၊ အဋ္ဌကထာသု ပန - တို့တွင်ကား၊ ကတ္ထစိ–အချို့ အဋ္ဌကထာ၌၊ ပါရာဇိကန္တိပိ–ပါရာဇိကံဟူ၍လည်း၊ လိခိတံ-ရေးသားအပ်ပြီ၊ တံ-ထိုစကားကို၊ပမာဒလိခိတံ-မေ့လျော့သဖြင့် ရေးသားအပ်၏၊ ဝါ-အမှတ်တမဲ့

ဠုဒ မေဇ္ဈ ယုတ္တံ။ ။အယံ တိပ္ပကာရောပိ ဧတ္ထ ဝေမဇ္ဈဆိဒ္ဒေ ယုတ္တော = အတွင်းအပြင် အလျင်ဖေါက်၍ အလယ်ကိုနောက်မှ ဖေါက်အပ်သော အပေါက်၌ အလယ်ဖြင့် ဆုံးဖြတ်,အတွင်းမှစ၍ ဖေါက်အပ်သောအပေါက်၌ အပြင်အစွန်းဖြင့် ဆုံးဖြတ်,အပြင်မှ စ၍ဖေါက်အပ်သော အပေါက်၌ အတွင်းအစွန်းဖြင့်ဆုံးဖြတ်၊ ဤဆုံးဖြတ်ပုံ ၃ နည်းလုံး သင့်၏။ ["တိပ္ပကာရောပိ"ဟု ဋီကာ၌ရှိသောကြောင့်"ဠုဒမေဇ္ဈ"ဟု ရှိရမည်။]

ရေးသားအပ်၏၊ ပရိပုဏ္ဏာယ-ဆိပြည့်နေသော၊ ကုမ္ဘိယာ-၏၊ ဥပရိ,ကဋ္ဌံဝါ-သစ်သားကိုသော်၎င်း၊ ပါသာဏံဝါ- ကျောက်ခဲကိုသော်၎င်း၊ (ဒုဋ္ဌုံ ကရောတိ, ဒုဋ္ဌပိတံ ထပေတိ၌စပ်။) ပတိတွာ-ကျ၍၊ ဘိန္ဒိဿတိ-ခွဲလတ္တံ့၊ တတော-ထိုသို့ ခွဲခြင်းကြောင့်၊ တေလံ- သည်၊ ပဂ္ဃရိဿတိ – ယိုစီးလတ္တံ့၊ ဣတိ-ဤသို့ကြံ၍၊ ထေယျစိတ္တေန,ဒုဗ္ဗဋ္ဌံဝါ-မကောင်းသဖြင့် ဖွဲ့ချည်အပ်သည်မည်လောက်အောင်မူလည်း၊ ကရောတိ-အံ့၊ ဒုဋ္ဌပိတံဝါ-မကောင်းသဖြင့် ထားအပ်သည်မည်လေဒံအောင်မူလည်း၊ ထပေတိ- အံ့၊ အဝဿံ- မချွတ်ဧကန်၊ ပတနကံ- ကျလတ္တံ့သည်၊ (သမာနံ)၊ တထာ–ထို အခြင်းအရာအားဖြင့်၊ ကရောန္တဿ-ပြုသောရဟန်း၏၊ ကတမတ္တေ – ပြုအပ်ပြီးကာမျှ၌၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ရိတ္တကုမ္ဘိယာ ဥပရိ,ကရောတိ-အံ့၊ [ကဋ္ဌ-ပါသာဏတခုခုကို ဒုဗ္ဗဋ္ဌ ဒုဋ္ဌပိတပြုအံ့။] တံ-ထိုသစ်သားသည်၊ ဝါ-ထိုကျောက်ခဲသည်၊ ပဋ္ဌာ, ပုဏ္ဏကာလေ-ဆိပြည့်ရာအခါ၌၊ ပတိတွာ – ကျ၍၊ ဘိန္ဒတိ – ခွဲအံ့၊ ဘဏ္ဍဒေယျံ (ဟောတိ)၊ ဟိ -မှန်၊ ဤဒိသေသု– ကုန်သော၊ ဌာနေသု- အရာတို့၌၊ ဘဏ္ဍဿ-၏၊ နတ္ထိကာလေ-မရှိရာအခါ၌၊ ကတပယောဂတ္တာ - ပြုအပ်သောပယောဂ၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အာဒိတောဝ-မှပင်၊ ပါရာဇိကံ, န ဟောတိ-သေး၊ ပန–ထိုသို့ပင် ပါရာဇိက မဖြစ်သေးပါသော်လည်း၊ ဘဏ္ဍဝိနာသ ဒွါရဿ – ဘဏ္ဍာ ပျက်စီးခြင်း၏ အကြောင်း၏၊ ဝါ–ကို၊ ကတတ္တာ ဘဏ္ဍဒေယျံ ဟောတိ၊ အာဟရာပေန္တေသု- ဥစ္စာရှင်တို့က ဆောင်စေကုန်လသော်၊ အဒဒတော – မပေးသောရဟန်း၏၊ သာမိကာနံ, ဓုရနိက္ခေပေန-ကြောင့်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)။

ထေယျစိတ္တေန, (ဥဒကံ - သည်၊) ဝန္နိတွာ – လိမ့်၍၊ ဂမိဿတိ – လတ္တံ့၊ (ဣတိ ) ဝါ – ဤသို့ ကြံ၍သော်၎င်း၊ ဝေလံ – ကမ်းကို၊ ဥတ္တရာပေဿတိ-လျှံတက်စေလတ္တံ့၊ ဣတိဝါ-၎င်း၊ မာတိကံ- ရေမြောင်းကို၊ ဥဇုကံ– အောင်၊ ကရောတိ-အံ့၊ (ဥဒကံ-သည်၊)ဝန္နိတွာဝါ-လိမ့်၍မူလည်း၊ ဂစ္ဆတု-သွားပစေ၊ ဝေလံဝါ – ကိုမူလည်း၊ ဥတ္တရတု – လျှံတက်ပစေ၊ ဥဇုကရဏကာလေ -

**ဥဇုကံ ကရောတိ**။ ။ရေမြောင်းသည် ကောက်နေလျှင် ရေစီးမသန်၊ ဖြောင့်မှ ရေစီးသန်၏၊ ထို့ကြောင့် ရေအားကောင်းသဖြင့် ရေမြောင်းမှဝင်လာသော ရေသည် (ဥစ္စာရှင်၏လယ်ထည်း၌ ရပ်တန့်မနေဘဲ ) လိမ့်၍သော်လည်း ထွက်သွားလိမ့်မည်၊ သို့မဟုတ် နဂိုရ်ရှိပြီးရေများကို ကံသင်းပေါ်သို့ လျှံတက်သွားစေလိမ့်မည်။ [ဂမိဿတိ, ဥတ္တရာပေဿတိ တို့၏ ကတ္တားကို ရေမြောင်းမှ အဟုန်ဖြင့် စီးလာသော ဥဒကကို ယူရမည်၊ ထို့ကြောင့် ယောဇနာ၌ “ ဥဒကံ ဝန္နိတွာ”ဟု“ဥဒကံ”ပါသည်၊ တိုက်ရိုက်ပါလျှင် ကောင်း၏၊ မပါလျှင် ထည့်ရမည်။]

ဖြောင့်အောင်ပြုရာအခါ၌၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ဟိ – မှန်၊ ဤဒိသာ – ကုန်သော၊ ပယောဂါ–တို့သည်၊ ပုဗ္ဗပယောဂါဝဟာရေ–၌၊ သင်္ဂဟံ ဂစ္ဆန္တိ၊ သုက္ခမာတိကာယ- ကို၊ ဥဇုကတာယ- ဖြောင့်အောင်ပြုအပ်ပြီးသော်၊ ပစ္ဆာ, ဥဒကေ- သည်၊ အာဂတေ- သော်၊ ဝဋ္ဋိတွာဝါ ဂစ္ဆတု၊ ဝေလံဝါ ဥတ္တရတု၊ ဘဏ္ဍဒေယျံ ( ဟောတိ )၊ ကသ္မာ – နည်း၊ ဌာနာစာဝန ပယောဂဿ - ၏၊ အဘာဝါ–မရှိခြင်းကြောင့်တည်း၊ တဿ-ထို ဌာနာစာဝနပယောဂ မရှိခြင်း ၏၊ လက္ခဏံ-သည်၊ နာဝဋ္ဌေ–နာဝဋ္ဌဘဏ္ဍာ၌၊ အာဝိ ဘဝိဿတိ။

တတ္တော့ ဘိန္ဒတိဝါတိ အာဒိသု-အစရှိသော ပါဠိရပ်တို့၌၊ တာဝ–ဝဒန္တိ ဝါဒမှ ရှေ့ဦးစွာ၊(မဟာ)အဋ္ဌကထာယံ-၌၊ဝုတ္တံ၊ [''အဋ္ဌကထာယံ ဝုတ္တန္တိ မဟာအဋ္ဌကထာယံ ဝုတ္တံ''ဟု ဋီကာဖွင့်သောကြောင့် ရှေးစာများ၌''မဟာ'' မပါဟုသိ။](ကိံ)၊ဘိန္ဒတိဝါတိ-ကား၊ မုဂ္ဂရေန-လက်ရိုက်ဖြင့်၊ ပေ ထေတွာ– ပုတ်ခတ်၍၊ ဘိန္ဒတိ – ခွဲအံ့၊ ဆဍ္ဍေတိဝါတိ - ကား၊ ဥဒကံဝါ – ကိုသော်၎င်း၊ ဝါလိကံဝါ-သဲကိုသော်၎င်း၊ အာကိရိတွာ–လောင်းထည့်၍၊ ဥတ္တရာပေတိ- လျှံတက်စေအံ့၊ ဈာပေတိဝါတိ-ကား၊ဒါရူနိ-တို့ကို၊ အာဟရိတွာ,ဈာပေတိ- လောင်စေအံ့၊ ဝါ - မီးရှို့အံ့၊ အပရိဘောဂံဝါ ကရောတီတိ– ကား၊ အခါဒိ တဗ္ဗံဝါ-မခဲစားထိုက်သည် ကိုသော်၎င်း၊ အပါတဗ္ဗံဝါ–မသောက်ထိုက်သည်ကို သော်၎င်း၊ ကရောတိ၊ ဥစ္စာရံဝါ – ကျင်ကြီးကို သော်၎င်း၊ ပဿာဝံဝါ – ကိုသော်၎င်း၊ ဝိသံဝါ-အဆိပ်ကိုသော်၎င်း၊ ဥစ္ဆိဋ္ဌံဝါ- စားကြွင်းကိုသော်၎င်း၊ ကုဏပံဝါ–အကောင်ပုတ်ကိုသော်၎င်း၊ ပါတေတိ-ကျစေအံ့၊ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿ၊ ဌာနာ- မှ၊ စာဝနဿ - ရွေ့စေခြင်း၏၊ နတ္ထိတာယ - ကြောင့်၊ ဒုက္ကဋံ-

တတ္တော့ ဘိန္ဒတိဝါ စသည်။ ။ပါဠိတော်၌ ''သပ္ပိံဝါ တေလံဝါ မဓုံဝါ ဖါဏိတံဝါ'' ဟု ရှေ့ဝါကျ၌ရှိ၏၊ ထိုပုဒ်များကို လိုက်စေ၍ ဘိန္ဒတိ, ဆဍ္ဍေတိ, ဈာပေတိ, အပရိဘောဂံ ကရောတိ တို့၏ ကံပုဒ်ကို ထည့်ပါ၊ ထိုတွင် ထောပတ်အိုး စသည်ကို လက်ရိုက်ဒုတ်ဖြင့် ရိုက်ခွဲသူကို ဘိန္ဒတိ ဟုရင်း, ထောပတ်အိုး စသည်၌ ရေ, သို့မဟုတ် သဲကို လောင်းထည့်၍ ထောပတ်စသည်တွေ လျှံတက်လာအောင် ပြုသူကို ဆဍ္ဍေတိ ဟု ရင်း, ထောပတ်အိုးဘေး၌ ထင်းတွေကို ပုံထား၍ မီးရှို့သူကို ''ဈာပေတိ'' ဟုရင်း ဆိုသည်။

အခါဒိတဗ္ဗံ အပါတဗ္ဗံ။ ။အပရိဘောဂံ၏ အဖွင့်တည်း၊ ထောပတ်, ဆီ, ပျား, တင်းလဲတို့က ပြစ်၍ အခဲဖြစ်နေလျှင် ခဲစားရ၏၊ ကြဲနေလျှင် သောက်ရ၏၊ ထိုသို့ မစား ထိုက် မသောက်ထိုက်အောင် (စား၍ သောက်၍ မဖြစ်အောင်) ပြုသူကို''အပရိဘောဂံ ကရောတိ'' ဟု ဆိုသည်၊ ထိုသို့ စား၍ သောက်၍ မဖြစ်အောင် ဘယ်ပုံ ပြုသနည်း ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍''ဥစ္စာရံဝါ၊ပေ၊ပါတေတိ''ဟု ဆက်၍ ပြသည်။

တည်း၊ သော- ၏အာပတ်ကို ပညတ်ခြင်းသည်၊ ဗုဒ္ဓဝိသယောနာမ – ဘုရားရှင်၏ အရာတော်မည်၏၊ ဒုက္ကဋံ – သည်၊ ကိဥ္စာပိ ( ဟောတိ )၊ ပန- လည်း၊ အာဟာရပေနေ့ – ဥစ္စာရှင်တို့က ဆောင်စေလသော်၊ ( အစား ပေးဘို့ရန် တောင်းလသော်၊ ) ဘဏ္ဍာဒေယျံ ( ဟောတိ )၊ ဣတိ – သို့၊ ( မဟာ ) အဋ္ဌကထာယံ ဝုတ္တံ။)

တတ္ထ–ထို ၄ မျိုးတို့တွင်၊ ပုရိမဒွယံ-ဘိန္နန , ဆဋ္ဌန ဟူသောရွှေပုဒ် ၂ မျိုး အပေါင်းသည်၊ နသမေတိ–ရွှေစကားနှင့်မညီ၊(ကသ္မာ)၊ ဟိ(ယသ္မာ)၊ တံ- ထို ရွှေပုဒ် ၂ ပါးအပေါင်းသည်၊ ကုမ္ဘိဇဇ္ဇရကရဏာနစ - အိုးကို ဆွေးမြေ့ အောင်ပြုခြင်းနှင့်၎င်း၊မာတိကာဥဇုကရဏာနစ-ရေမြောင်းကိုဖြောင့်အောင် ပြုခြင်းနှင့်၎င်း၊ သဒ္ဓိံ ,ကေလက္ခဏံ-တူသောလက္ခဏာရှိ၏၊(တသ္မာ နသမေတိ)၊ ပန– ကား၊ ပစ္ဆိမံ- သော၊ ဒွယံ – ဈာပန အပရိဘောဂ ကရဏ ၂ ပါး အပေါင်းသည်၊ ဌာနာ– မှ၊ အစာဝေနေ့နာပိ - ဘဲလည်း၊ ကာတုံ သက္ကာ၊

ဌာနာ၊ပေ၊ဒုက္ကဋံ ။ ။ သူတပါး၏ ပစ္စည်းကို ထိမျှလောက် ဖျက်ဆီးပါလျက် ပါဠိတော်၌ (ပါရာဇိက ဟု မဟောဘဲ) အဘယ့်ကြောင့် ဒုက္ကဋ်ဟုသာ ဟောတော်မူပါ သနည်း ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍“ဌာနာ စာဝနသ္မ နတ္ထိတာယ”ဟု မိန့်သည်၊ ဌာနာစာဝန မရှိသောကြောင့် ဒုက္ကဋ်သာ ဖြစ်ရသည်-ဟူလို။ [ဘဏ္ဍာဒေယျန္တိ တိုင်အောင် မဟာအဋ္ဌကထာ စကားတည်း။]

တတ္ထ၊ပေ၊ကေလက္ခဏံ။ ။ ဘိန္ဒန, ဆဋ္ဌန , ဈာပန , အပရိဘောဂ ကရဏ ဟု ၄ မျိုး ရှိသည်တွင် ရွှေ ၂ မျိုးသည် ရွှေ၌ ဆိုအပ်ပြီးသော စကားနှင့် မညီ၊ အဘယ့် ကြောင့် မညီသနည်း-ဟု မေးဘွယ်ရှိ၍ “တံ ဟိ” စသည်မိန့်၊ ကုမ္ဘိဇဇ္ဇရ ကရဏကို “ထေယျစိတ္တောနေဝ ဇဇ္ဇရံ ကရောတိ၊ သဝိတ္ထာ ဝမိဿတိတိ၊ ပါဒဂ္ဃနကေ သဝိတ္ထာ ဂတေ ပါရာဇိကံ” ဟု ရှေ့၌ ဆိုခဲ့ပြီ၊ မာတိကာ ဥဇုကရဏကိုလည်း “ထေယျစိတ္တေန ၊ပေ၊ပါရာဇိကံ ” ဟု ဆိုခဲ့ပြီ၊ ထိုတွင် ဘေဒန= သပ္ပိ စသည်၏အိုးကို ရိုက်ခွဲခြင်းသည် ကုမ္ဘိဇဇ္ဇရကရဏနှင့် သဘောတူ၏၊ ဆဋ္ဌန (သပ္ပိစသည်တို့ကို လျှံတက်စေခြင်း) သည် မာတိကာဥဇုကရဏနှင့် သဘောတူ၏၊ ထို ၂ မျိုး၌ ဌာနာစာဝနရှိသကဲ့သို့ ဤ၌လည်း ရိုက်ခွဲသောအခါ လျှံတက်စေသောအခါတို့ဝယ် ထောပတ်စသည်တို့ ထွက်သွားခြင်း ကြောင့် ဌာနာစာဝနရှိသည်–ဟူလို။

ပစ္ဆိမံ ပန ၊ပေ၊ ကာတုံ ။ ။ နောက်ဖြစ်သော ဈာပန , အပရိဘောဂ ကရဏ ၂ မျိုးကား ထောပတ် စသည်တို့၏တည်ရာ အိုးကို နေရာမှမရွေ့စေဘဲ ထိုနေရာ၌ပင် ခန်းသွားအောင်လည်း မီးရှို့နိုင်၏၊ ဥစ္စာရစသည်ကိုလည်း ထည့်နိုင်၏။ [တတ္ထမှ စ၍ ကာတုံတိုင်အောင် ကေ ဝဒန္တိ ဝါဒ ပေါ်လာခြင်း၏ အခြေခံကို ပြလို၍, သူတပါးတို့ ယူဆပုံကို ပြသော (အရှင်ဗုဒ္ဓဃောသ၏) စကားတည်း၊ အရှင်ဗုဒ္ဓဃောသ၏ အယူကို ကား“အယံ ပနေတ္ထ သာရော”ဟု ပြလတ့်။]

တသ္မာ, ဧတ္ထ - ဤ ဘိန္နတိဝါ စသောပုဒ်တို့၌၊ ဧဝံ ဝိနိစ္ဆယံ ဝဒန္တိ၊ (ကိံ)၊ အဋ္ဌကထာယံ- မဟာ အဋ္ဌကထာ၌၊ ဌာနာ ၊ ပေ ၊ ဒုက္ကဋန္တိ ဣဒံ - ဟူသော ဤစကားကို၊ ပစ္ဆိမဒွယံ - ဈာပန, အပရိဘောဂ ကရဏဟူသော နောက်ပုဒ် ၂ပါးအပေါင်းကို၊ သန္ဓာယ ဝုတ္တံ၊ ဟိ-မှန်၊ ဌာနာ-မှ၊ စာဝနံ-ရွေ့စေခြင်းကို၊ အကရောန္တော ယေဝ - မပြုဘဲသာလျှင်၊ ထေယျစိတ္တေနဝါ - ဖြင့်သော်၎င်း၊ ဝိနာသေတုကာမတာယဝါ- ဖျက်ဆီးခြင်းငှါ အလိုရှိသည်၏ အဖြစ်ဖြင့်သော် ၎င်း၊ ဈာပေယျပိ–မီးလည်းရှို့နိုင်၏၊ အပရိဘောဂမ္ပိကရေယျ-မသုံးဆောင် ကောင်းသည်ကိုလည်း ပြုနိုင်၏၊ ပန – ကား၊ ပုရိမဒွယေ – ဘိန္ဒန ဆဍ္ဍန ဟူသော ရှေ့ပုဒ် ၂ ပါးအပေါင်း၌၊ ဝုတ္တနယေန–မဟာအဋ္ဌကထာ၌ ဆိုအပ် သော နည်းဖြင့်၊ ဘိန္ဒန္တဿဝါ - ခွဲသော ရဟန်း၏၎င်း၊ ဆဍ္ဍေန္တဿဝါ – စွန့်ပစ်သော ရဟန်း၏၎င်း၊ ဌာနာစာဝနံ အတ္ထိ၊ တသ္မာ, တထာ-ထို အခြင်း အရာ အားဖြင့်၊ ( မဟာ အဋ္ဌကထာ ဆိုအပ်တိုင်းသော အခြင်း အရာဖြင့်၊) ကရောန္တဿ–ပြုသော ရဟန်း၏၊ ဝိနာသေတုကာမတာယ– ဖျက်ဆီးခြင်းငှါ အလိုရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဘဏ္ဍဒေယျံ ( ဟောတိ )၊ ထေယျစိတ္တေန– ကြောင့်၊ ပါရာဇိကံ၊ (ဟောတိ)၊ ဣတိ- သို့၊ (ဝဒန္တိ)၊ ပါဠိယံ – ပါဠိတော်၌၊ ဒုက္ကဋန္တိ–ဒုက္ကဋ်ဟူ၍၊ ဝါ–အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿဟူ၍၊ ဝုတ္တတ္တာ–ဟောတော်မူ အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ အယုတ္တံ-မသင့်၊ ဣတိ-သို့၊ စေ ( ဝဒေယျ )၊ န (အယုတ္တံ- မသင့် မဟုတ်, သင့်သည်သာ၊) ( ကသ္မာ )၊ အညထာ- မဟာအဋ္ဌ ကထာ၌ ဆိုအပ်သောအနက်မှ တပါးသော အပြားအားဖြင့်၊ ဂဟေတဗ္ဗတ္တ

**တသ္မာ၊ပေ၊ဝဒန္တိ**။ ။ ထို့ကြောင့် “ ဌာနာ စာဝနဿ နတ္ထိတာယ ဒုက္ကဋံ ” ဟူသော စကားကို နောက် ၂ မျိုး ရည်ရွယ်၍ ဆိုအပ်၏၊ ရှေ ၂ မျိုး၌ကား ဌာနာစာဝန ရှိသောကြောင့် ( တထာ ကရောန္တဿ ) ထို ဆိုအပ်ခဲ့သည့်အတိုင်း လက်ရိုက်ဖြင့် ရိုက်ခွဲမှု , ရေ – သဲ လောင်း၍ လျှံတက်စေမှုကို ပြုသူမှာ ဖျက်ဆီးလိုစိတ်ရှိလျှင် ဘဏ္ဍ ဒေယျ, ထေယျစိတ်ရှိလျှင် ပါရာဇိကသာ ဖြစ်သင့်၏၊ ဤသို့ ကေဆရာတို့ ဆိုကြ၏၊ [ပါရာဇိကန္တိတိုင်အောင် “ဧဝံ ဝိနိစ္ဆယံ ဝဒန္တိ”၏ နယ်တည်း၊ ထို့ကြောင့် ဣတိကို ဝဒန္တိ ပြန်လှည့်၊] ဤဝဒန္တိဝါဒကား မဟာအဋ္ဌကထာအဖွင့်ကို နောက် ၂ မျိုး အတွက် သာ လက်ခံ၍ ရှေ ၂ မျိုးကို ပယ်သည်။

**ပါဠိယံ၊ပေ၊အယုတ္တံတိ စေ**။ ။ ဝဒန္တိဝါဒ၌ အခြားပုဂ္ဂိုလ်ကဝင်၍ စောဒနာ ဘွယ်ကို ပြသောစကားတည်း၊ ပါဠိတော်၌ ဘိန္ဒနစသော ၄ မျိုးလုံးအတွက် ပေါင်း၍ “ ဒုက္ကဋံ ” ဟု ဟောတော်မူသောကြောင့် ဝဒန္တိဝါဒ၌ နောက် ၂ မျိုး အတွက်သာ ဒုက္ကဋ်, ရှေ ၂ မျိုးအတွက်ကား ဘဏ္ဍဒေယျနှင့်ပါရာဇိက ဟု ဆိုခြင်းသည် “ပါဠိတော် နှင့် ဆန့်ကျင်သောကြောင့် မသင့် ”ဟု တစုံတယောက်က ဆိုအံ့–ဟူလို။

တော–ယူထိုက်သောအနက်ရှိသည်၏အဖြစ်ကြောင့်တည်း၊ ဟိ–ချဲ့၊ ပါဠိယံ–၌၊ ထေယျစိတ္တပရိဗ္ဗေ–ထေယျစိတ္တအဘို့၌၊ ဘိန္နတိဝါတိ–ကား၊ ဥဒကေန–ဖြင့်၊ သမ္ဘိန္နတိ–ရောစပ်အံ့၊ ဆဍ္ဍေတိဝါတိ–ကား၊ တတ္ထ–ထို ထောပတ်အိုးစသည်၌၊ ဝမတိဝါ–ထွေးအန်မူလည်း ထွေးအန်အံ့၊ ပဿာဝံဝါ–ကိုမူလည်း၊ ဆဍ္ဍေတိ–အံ့၊ ဣတိ ဧဝံ–သို့၊ ကေ–အချို့ဆရာတို့သည်၊ ဝဒန္တိ။

ပန–ကား၊ ဧတ္ထ–၌ဘိန္နတိဝါ ဆဍ္ဍေတိဝါပုဒ်တို့၌၊ အယံ–ဤဆိုအပ်လတ္တံ့ကား၊ သာရော–ကောင်းမြတ်သော အနက်တည်း၊ ဝိနိစ္ဆယဝတ္ထုမှိ–ဝိနိစ္ဆယဝတ္ထု၌၊ တိဏဇ္ဈာပကော ဝိယ–မြက်ပုံကိုမီးရှို့သောရဟန်းသည်ကဲ့သို့၊

**န, အညထာ ဂဟေတဗ္ဗတ္တတော** ။ ။ဤကား ဝဒန္တိဝါဒဆရာတို့က ပြန်၍ချေပသော စကားတည်း၊ ပါဠိတော်၌ ဘိန္ဒတိဝါ ဆဍ္ဍေတိဝါ ဟူသော ရှေ ၂ မျိုးအတွက် အနက်တမျိုး ယူစရာရှိသောကြောင့် ရှေ ၂ မျိုးအတွက် ဘဏ္ဍဒေယျ– ပါရာဇိက ဟူသော ဝိနိစ္ဆယသည် မသင့်မဟုတ်, သင့်သည်သာ–ဟူလို။

**ပါဠိယံ ဟိ**။ ။အညထာ ဂဟေတဗ္ဗတ္တတောကို ချဲ့လို၍ "ပါဠိယံ ဟိ" စသည် မိန့်၊ မဟာအဋ္ဌကထာ၌ ဖွင့်အပ်သောအနက်မှ အနက်တမျိုးကား–ဘိန္ဒတိ၌ ထေယျစိတ်ဖြင့် ရေနှင့် ရောစပ်ခြင်းကို ယူ၊ ဆဍ္ဍေတိ၌ ထို ထောပတ်စသည်ဝယ် အန်ဖတ်ကို စွန့်ခြင်း, ကျင်ငယ်စွန့်ခြင်းကို ယူ၊ ထိုသို့ ပြုရာ၌ ဌာနာစာဝန မရှိသောကြောင့် ပါဠိတော်လာ ဒုက္ကဋ်ဟူသော စကားအတိုင်းပင် ဖြစ်နိုင်သည်–ဟူလို၊ သို့သော် ဘဏ္ဍဒေယျကား ထိုက်သည်သာ။ [ဝိနာသေတုကာမတာပက္ခ၌ကား ဆိုခဲ့သည့်အတိုင်းဖြစ်၍ "ထေယျစိတ္တပရိဗ္ဗေ" ဟု ဆိုသည်။] " ဧဝံ ဝိနိစ္ဆယံ ဝဒန္တိ " မှ စ၍ "ပဿာဝံဝါ ဆဍ္ဍေတိ" တိုင်အောင် ကေဆရာတို့၏ ဝါဒချည်း ဖြစ်သောကြောင့် " ဧဝံ ကေ ဝဒန္တိ " ဟု နိဂုံးအုပ်သည်။

**ဆိုလိုရင်း** ။ ။ဤ ကေဝါဒ၌ မဟာအဋ္ဌကထာဖွင့်သလို ဆိုလျှင် ဘိန္ဒန ဆဍ္ဍန ၂ မျိုး၌ ဌာနာစာဝန ရှိသောကြောင့် ဘဏ္ဍဒေယျ ပါရာဇိကတည်း၊ သူဖွင့်သလို "ဘိန္ဒတိ–ရေဖြင့်ရောစပ်၏၊ ဆဍ္ဍေတိ-အန်ဖတ်ကျင်ငယ်ကိုစွန့်၏" ဟု ပေးလျှင် ဌာနာစာဝန မရှိသောကြောင့် ပါဠိတော်အတိုင်း ဒုက္ကဋ် ဟု ဆိုလိုသည်။

**အယံ ပနေတ္ထ သာရော**။ ။ပြခဲ့သော ကေဝါဒ၌ ဆဍ္ဍေတိနှင့် အပရိဘောဂံဝါ ကရောတိသည် အဓိပ္ပါယ်ထပ်တူ ကျနေ၏၊ မဟာအဋ္ဌကထာ၌ "ဒုက္ကဋ်ဟူသော စကားကို နောက် ၂ ပါးကိုရည်ရွယ်၍ ဆိုအပ်၏ "ဟူသောစကားလည်း မဟာအဋ္ဌကထာ အလိုမကျ၊ မဟာအဋ္ဌကထာ၌ ၄ ပါးလုံးအတွက်ဖွင့်ပြီးမှ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿကိုဖွင့်သဖြင့် ၄ ပါးလုံးအတွက် ဒုက္ကဋ် ဟုပင် ဆိုလို၏၊ ဤသို့လျှင် ကေဝါဒ၌ မဟာအဋ္ဌကထာနှင့် ဆန့်ကျင်ရုံသာ မက, ဆဍ္ဍေတိနှင့် အပရိဘောဂံဝါ ကရောတိလည်း အဓိပ္ပါယ်ထပ်နေသောကြောင့် အနှစ်သာရ မရှိရကား မိမိအလိုကျ အနှစ်သာရဝိနိစ္ဆယကို ပြလိုသော အရှင်ဗုဒ္ဓဃောသသည် "အယံပနေတ္ထ သာရော" ဟု စကားချီလေသည်။

ဌာနာ-မှ၊ အစာဝေတုကာမော-ရွှေ့စေခြင်းငှါ အလိုမရှိသည်၊ (ဟုတွာ)ဝ, ကေဝလံ-( ဌာနာစာဝေတုကာမတာ မဘက် ) သက်သက်၊ ဘိန္ဒတိ - ခွဲ၏၊ ဘိန္ဒတ္တာပန-ကွဲသည်၏အဖြစ်ကြောင့်ကား၊ တေလာဒီနိ-တို့သည်၊ နိက္ခမန္တိ-ထွက်သွားကုန်၏၊ ဝါပန-သည်သာ မကသေး၊ [ဆီ စသည်တို့ထွက်သွားပုံမှတပါး ထွက်မသွားပုံကိုဆိုဦးအံ့-ဟူလို၊]ထွေ-ဤဒိုး၌၊ ယံ-အကြင်ဆီစသော ဝတ္ထုသည်၊ ပတ္တိန္ဒ-ပြစ်, ခွဲ, ခဲနေ၏၊ တံ - ထိုဆီစသောဝတ္ထုသည်၊ ကောဗဒ္ဓမေဝ-ဌာနာစာဝနမဖြစ်ဘဲ တစပ်ထည်းသာလျှင်၊ တိဋ္ဌတိ၊ စ-ဘိန္ဒနမှတပါး ဆန္ဒနကို ဆိုဦးအံ့၊ အဆန္ဒေတုကာမော – စွန့်ပစ်ခြင်းငှါ အလိုမရှိသည်၊ ( ဟုတွာ ) ယေဝ – ဖြစ်၍ပင်၊ ကေဝလံ - ( ဆန္ဒေတုကာမတာ မဘက် ) သက်သက်၊ တတ္ထ– ထို ဆီဒိုးစသည်၌၊ ဥဒက ဝါလိကာဒီနိ- တို့ကို၊ အာကိရတိ– လောင်းထည့်၏၊ အာကိဏ္ဏတ္တာ ပန– လောင်းထည့်အပ်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်ကား၊ တေလံ – ကို၊ ဆဍ္ဍိယတိ - စွန့်ပစ်အပ်၏၊ တသ္မာ, ဝေါဟာရဝသေန - ပြောရိုးဆိုစဉ်၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဘိန္ဒတိဝါ ဆန္ဒေတိဝါတိ - ဝါဟူ၍၊ ဝုစ္စတိ - ၏၊ ဣတိဝံ - သို့၊ တေသံ ပဒါနံ – တို့၏၊ အတ္ထော ဂဟေတဗ္ဗော၊ ပန–ကား၊ နာသေတုကာမတာပက္ခေ – နာသေတုကာမတာအဘို့၌၊ ဣတရ ထာပိ – ဆိုအပ်ပြီးသော အနက်မှ တပါးသော အပြားအားဖြင့်လည်း၊

**ဝိနီတ၊ပေ၊ဆန္ဒိယတိ။** ။ဝိနီတဝတ္ထု၌ "အညတရော ဘိက္ခု သံဃဿ ပုဋ္ဌကတံ တိဏံ ထေယျစိတ္တော ဈာပေတိ ၊ ပေ ၊ ဒုက္ကဋဿ " ဟု ရှိ၏၊ ထိုဝတ္ထု၌ ဌာနာစာဝန မရှိသောကြောင့် ဒုက္ကဋ် ဟု မိန့်တော်မူ၏၊ ထို့အတူ ဤ၌ ဌာနာစာဝန မဖြစ်စေလိုဘဲ အိုးကိုရိုက်ခွဲ၏၊ ထိုသို့ရိုက်ခွဲ၍ ထောပတ်စသည်၏ နေရာမှရွေ့သွားခြင်းကား ရိုက်ခွဲသူ၏ စိတ်တိုင်းကျမဟုတ်၊ အချို့ပြစ်ခဲနေသော ထောပတ်စသည်မှာ နေရာမှပင်မရွေ့၊ ထို့ကြောင့် ဌာနာစာဝနအတွက် အာပတ်မသင့်ဘဲ ရိုက်ခွဲမှုကြောင့် ဒုက္ကဋ်သာ သင့်ရသည်၊ အိုး၌ရှိသော ဘဏ္ဍာကို လျှံသွားစေလိုသော စိတ်မရှိဘဲ ဥဒကဝါလိက တို့ကို လောင်းထည့်၏၊ ဤမျှလောက်သာ ရဟန်း၏ပယောဂတည်း၊ လောင်းထည့်ခြင်းကြောင့် လျှံတက်သွားခြင်းမှာ ရဟန်း၏ပယောဂကြောင့် မဟုတ်၊ ထို့ကြောင့် ဌာနာစာဝန အတွက် အာပတ်မသင့်ဘဲ လောင်းထည့်မှုကြောင့် ဒုက္ကဋ်သာသင့်၏။

**တသ္မာ၊ ပေ၊ ဂဟေတဗ္ဗော ။** ။တသ္မာကို ဂဟေတဗ္ဗော၌စပ်၊ ထို့ကြောင့် လောကပြောရိုးအတိုင်း "ဘိန္ဒတိ – ရိုက်ခွဲဖျက်ဆီး၏" ဟုရင်း, ထောပတ်စသည်ကို စွန့်ပစ်ရာ ရောက်သောကြောင့် " ဆန္ဒေတိ " ဟုရင်း ဟောတော်မူသည် ဟု ဘိန္ဒတိ ဆန္ဒေတိပုဒ်တို့၏အနက်ကိုယူပါ၊ ကေဆရာတို့၏ ဘိန္ဒတိအတွက်"ရေနှင့်ရောစပ်၏" ဟူသောအနက်, ဆန္ဒေတိအတွက် "ဝမတိ ပဿာဝံ ဆန္ဒေတိ"ဟူသောအနက်တို့မှာ လောကဝေါဟာရ(ပြောရိုး)အနက် မဟုတ်ပါ–ဟူလို။

(အတ္တော - သည်၊) ယုဇ္ဇတိ - သင့်၏၊ ဟိ - လဒ္ဓဂုဏ်ကို ဆိုဦးအံ့၊ ဧဝံ - သို့၊ ကထိယမာနေ-ဖွင့်ဆိုအပ်သော်၊ ပါဠိစ-သည်၎င်း၊ အဋ္ဌကထာစ-သည်၎င်း၊ ပုဗ္ဗာပရေန-ရှေ့နောက်အားဖြင့်၊(တနည်း)ပုဗ္ဗံ-ရှေ့စကားသည်၊ အပရေန-နောက်စကားနှင့်၊ သံသန္ဒိတွာ - နှီးနှောတိုက်ဆိုင်၍၊ ကထိတာ - ဖွင့်ဆိုအပ်ကုန်သည်၊ ဟောန္တိ၊ (ဣတိ- ဤဆိုအပ်ပြီးကား၊ သာရော၊) အပိစ- ထိုသို့ပင် အနှစ်သာရ ဖြစ်ပါသော်လည်း၊ တွောဝတာ - ဤမျှ အတိုင်းအရှည်ရှိသော ဝိနိစ္ဆယဖြင့်၊ သန္တောသံ-တင်းတိမ်အားရခြင်းကို၊ အကတွာ-မပြုသေးမူ၍၊ အာစရိယေ-ဝိနိစ္ဆယအကျော် ဆရာတော်တို့ကို၊ ပယိရုပါသိတွာ-ဆည်းကပ်၍၊ ဝိနိစ္ဆယော- ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-သိထိုက်သေး၏၊ ဝါ-သိကြပါလေ၊ ဣတိ- အပြီးတည်း။.... ဘူမဋ္ဌကထာ - ဘူမဋ္ဌကထာသည်၊ ဝါ – မြေ၌ တည်သော ဘဏ္ဍာကိုပြဆိုရာ စကားရပ်သည်၊ နိဋ္ဌိတာ - အပြီးသတ်သတည်း။

ထလဋ္ဌေ – ထလဋ္ဌဘဏ္ဍာ၌၊ ( ဝိနိစ္ဆယော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ) ထလေ နိက္ခိတ္တန္တိ – ကား၊ ဘူမိတလေဝါ - မြေအပြင်၌ သော်၎င်း၊ ပါသာဏတလ ပဗ္ဗတတလာဒီသု ဝါ- ကျောက်အပြင်, တောင်အပြင် အစရှိသောအရပ်တို့၌ သော်၎င်း၊ ယတ္ထ ကတ္ထစိ – သော၊ ပဋိစ္ဆန္နေဝါ – ဖုံးအုပ်အပ်သော အရပ်၌ သော်၎င်း၊ အပ္ပဋိစ္ဆန္နေဝါ - သော်၎င်း၊ ထပိတံ– ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာကို၊ ထလဋ္ဌန္တိ-ဟူ၍၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ-၏၊[ "ဘူမိတလေဝါ" စသောအဖွင့်ကို ထောက်လျှင် ပဋ္ဌမကဏ္ဍရာဖြင့် " တလဋ္ဌံ " ဟု ရှိသင့်၏ဟု ထင်သည်။ ] တံ – ထိုဘဏ္ဍာကို၊

**နာသေတု ၊ပေ၊ ယုဇ္ဇတိ ။** ။ ပြခဲ့သောအနက်ကား ထေယျစိတ္တပက္ခအတွက် အနက်တည်း၊ ထို့ကြောင့် " နာသေတုကာမတာပက္ခေ ပန" ဟု သီးခြားဆိုသည်၊ ဣတရထာပိ – ဌာနာစာဝန မဖြစ်စေလိုသော အခြင်းအရာမှတပါး , ဌာနာစာဝန ဖြစ်စေလိုသော အခြင်းအရာ အားဖြင့်လည်း၊ ယုဇ္ဇတိ – ဒုက္ကဋံ ဟူသောစကားသည် သင့်၏၊ ဘိန္ဒန ဆန္ဒန အမှုကိုပြုရာ၌ ထေယျစိတ် မရှိသောကြောင့် ဌာနာစာဝနဖြစ်စေ လိုသော်လည်း ဒုက္ကဋ်ပင်သင့်သည်–ဟူလို၊

**ဝေဠု ။** ။ ဤပြခဲ့သောအဖွင့်သည် မဟာအဋ္ဌကထာအဖွင့်ကို ထောက်ကူသော အဖွင့်တည်း၊ ထို့ကြောင့် ဤအဖွင့်၏ လဒ္ဓဂုဏ်ကို ပြလို၍ "ဝေဠု၊ပေ၊ဟောန္တိတိ"ဟု မိန့်သည်၊ ဤ အနက်ကို ယူရခြင်းဖြင့် ပါဠိတော်နှင့် အဋ္ဌကထာတို့ ရှေ့နောက် မဆန့် ကျင်ခြင်း အကျိုးဂုဏ်ကိုရသည်– ဟူလို၊ [တသ္မာဟူသော ဖလဝါကျနောက် အကျိုး တပါး ဆက်၍လာလျှင် လဒ္ဓဂုဏ်ဝါကျ ဟု ချည်းမှတ်၊ ] အယံ ပနေတ္ထသာရောကို ပြန်၍အုပ်ဘို့ရန်"ဟောန္တိတိ"ဟု ပရိသမာပနတ္ထဣတိ ပါသင့်၏၊ တွောဝတာပိ စသည် ကား " မိမိ၏ ဝိနိစ္ဆယချည်း မကျေနပ်ကြသေးဘဲ အခြားဆရာတော်များကိုလည်း မေးလျှောက်ကြပါလေ"ဟု တိုက်တွန်းသော ဥယျောဇဉ်စကားတည်း။

(ဝိနိစ္ဆယတမ္ပ၌ ပဓာနစပ်၊)ဝါ-သည်၊(သစေ ဟောတိပုဒ်တိုင်း၌ အပဓာနစပ်။) ရာသိကတံ-အစုအပုံပြုအပ်သည်၊ သစေ ဟောတိ(ဝေံသတိ)၊အန္တောကုမ္ဘိယံ-၌၊ ဘာဇနဂတကရဏ မုဋ္ဌိစ္ဆေဒန ဝိနိစ္ဆယေန-မိမိခွက်၌ ရော်အောင်ပြုခြင်း, လက်ဆုပ်ဖြတ်ခြင်းကိုဆုံးဖြတ်နည်းဖြင့်၊ဝိနိစ္ဆတမ္ပ-၏၊ကောဗဒ္ဓ-တစပ်ထည်း ဖွဲ့အပ်သော၊သိလေသ နိယျာသာဒိ-စေးကပ်သော သစ်စေးအစရှိသည်သည်၊ သစေ ( ဟောတိ၊ ဝေံသတိ )၊ ပက္ကမဓုဖါဏိတ ဝိနိစ္ဆယေန - ချက်အပ်သော ပျားရည်,တင်လဲရည်ကိုဆုံးဖြတ်နည်းဖြင့် [ "ပစိတ္တာ ပန ထပိတံ မဓုဖါဏိတံ" စသောအဆုံးအဖြတ်ကို ဆိုသည်။ ] ဝိနိစ္ဆတမ္ပ–၏၊ ဂရုကံ-လေးသော၊ ဘာရဗဒ္ဓံ- ဝန်ထုပ် ဝန်ပိုးအဖြင့်ဖြင့် ဖွဲ့ချည်အပ်သော ဘဏ္ဍာသည်ရင်း၊ [ ဘာရဗဒ္ဓံ ပုဒ်ကို လောဟပိဏ္ဍိ ပုဒ်၌ ဝိသေသနပြု၍ မစပ်ပါနှင့်၊ လိန်ကွဲနေသည်၊ ] လောဟပိဏ္ဍိ တေလ မဓုဃဋာဒိဝါ – သံတွေခဲ, ဆီအိုး, ပျားရည်အိုး အစ ရှိသည်သော်ရင်း၊ သစေ ဟောတိ၊ ( ဝေံသတိ )၊ ကုမ္ဘိယံ- ၌၊ ဌာနာစာဝန ဝိနိစ္ဆယေန – တည်ရာမှ ရွေ့စေခြင်းကို ဆုံးဖြတ်နည်းဖြင့်၊ [ "မဟာအဋ္ဌ ကထာယံ ပန၊ပေ၊ န သကလာ ကုမ္ဘိ "စသော အဆုံးအဖြတ်။ ] ဝိနိစ္ဆတမ္ပ– ၏၊ စ – ဆက်၊ သင်္ခလိကဗဒ္ဓဿ– သံကြိုးဖြင့် ဖွဲ့ချည်အပ်သောဘဏ္ဍာ၏၊ ဌာန ဘေဒေါဝိ – ဌာန အပြားကိုလည်း၊ သလ္လက္ခေတဗ္ဗော - မှတ်သား ထိုက်၏၊ [ "ကေဿာ ဒိသာယ ၊ပေ၊ ဒွေဌာနာနိ လဗ္ဘန္တိ " စသော ဌာနအပြားကို လည်း မှတ်သားထိုက်သေးသည် - ဟူလို၊ ] ပန-ကား၊ ပဋ္ဌပိတွာ - ဖြန့်၍၊

**အန္တော ကုမ္ဘိယံ၊ပေ၊ ဝိနိစ္ဆိနိတဗ္ဗံ။** ။ရှေးဘူမဋ္ဌကထာဝယ် "အတ္တနော ဘာဇ နန္တိ"ဟုစချီ၍"တဒါ အတ္တနော ဘာဇနဂတံနာမ ဟောတိ"ဟုဆိုခဲ့၏၊ ထိုဆိုခဲ့ပြီးသော အဆုံးအဖြတ်ကို"အန္တောကုမ္ဘိယံ ဘာဇနဂတကရဏ"ဟု ဆို၏၊"မုဋ္ဌိံဝါ ဆိန္ဒတီတိ" ဟု စချီ၍ "ဝေံ မုဋ္ဌိံ ကရောန္တော မုဋ္ဌိံဆိန္ဒတိနာမ " ဟု ဆိုခဲ့၏၊ ထိုကို " မုဋ္ဌိစ္ဆေဒန " ဟုဆိုသည်။ [အိုး၌ထည့်အပ်သောဘဏ္ဍာနှင့် ပုံထားသောဘဏ္ဍာသည် သဘောတူ၏၊ ထို့ကြောင့် ထိုအဆုံးအဖြတ်အတိုင်း သိပါ–ဟု ဆိုသည်။]

**သစေ ဂရုကံ။** ။ဂရုကံ၏သရုပ်ကို "ဘာရဗဒ္ဓံ"ဟုရင်း, "လောဟ၊ပေ၊ဃဋာဒိ ဝါ" ဟု ရင်း ၂ မျိုးပြသည်၊ ဝန်ထုပ် ဝန်ပိုးဖြစ်အောင် အထုပ်ကြီး ဖွဲ့ထုပ်ထားအပ် သောကြောင့် လေးသည်၊ သို့မဟုတ်—သံခဲ ကြေးခဲ (လောဟပိဏ္ဍိ ) ဆီအိုး ပျားရည်အိုး ဖြစ်၍သော်လည်း လေးသည် – ဟူလို။ [ ယောဇနာ၌ ဘာရဗဒ္ဓံကို " လောဟ၊ပေ၊ ဃဋာဒိ "၏ ဝိသေသန ဟု ဆို၍ "လောဟပိဏ္ဍောစ+ ဂုဠပိဏ္ဍိစ+ တေလဉ္စ+ မဓုစ+ ဃဋာစ လောဟ၊ပေ၊ဃဋာ"ဟု ဝိဂ္ဂဟပြု၏၊ ထိုအလို "လောဟပိဏ္ဍ ဂုဠပိဏ္ဍိ"ဟု ရှိဟန် တူ၏၊ " တေလမဓုနံ + ဃဋာ (အိုးတို့) တေလမဓုဃဋာ " ဟု ပြုသင့်လျက် "ဃဋ– ထောပတ် "ဟု ယောဇနာ ယူလေသည်။]

တပိတံ-သော၊ ပါဝါရဏ္ဍရဏာသာဠကာဒိ°-ပုဝါ,အခင်း,အဝတ်အစရှိသည်ကို၊ ဥဇုကံ-ဖြောင့်စွာ၊ ဂဟေတွာ-ကိုင်ယူ၍၊ အာကမ္ပတိ-မိမိသို့ ရှေးရှုဆွဲငင်အံ့၊ ပါရိမန္တေ- ထိုမှာဘက် အစွန်သည်၊ (အတိက္ကန္တေ၌ စပ်။) ဩရိမန္တေန-၍မှာဘက် အစွန်သည်၊ (ဖုဋ္ဌ၌စ ပ်။) ဖုဋ္ဌောကာသံ- ထိအပ်သော အရပ်ကို၊ အတိက္ကန္တေ – လွန်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဝေံ–လျှင်၊ သဗ္ဗဒိသာသု သလ္လက္ခေတဗ္ဗံ၊ ဝေဋ္ဌေတွာ- ရစ်ပတ်၍၊ [ လက်ဖြင့်ရစ်၍– ဟူလို။] ဥဒ္ဓရတိ–ကြွမြှောက်အံ့၊ ကေသဂ္ဂမတ္တံ-ကို၊ ပေ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ သေသံ- သည်၊ ဝုတ္တနယမေဝ၊ ဣတိ-အပြီးတည်း။ …ထလဋ္ဌကထာ နိဋ္ဌိတာ။

အာကာသဋ္ဌေ-၌၊ (ဝိနိစ္ဆယော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော၊) မောရဿ- ဥဒေါင်း၏၊ ပုရတော – ရှေ့၌၊ မုခတုဏ္ဍကေန- နှုတ်သီးဖျားဝှင်း၊ [နောက်၌ ဣတိရှိ၍ “ဖြင့်ဝှင်း”ဟု မပေးရ၊] ပစ္ဆတော- ၌၊ ကလာပဂ္ဂေန- အမြီး၏ အဖျားဝှင်း၊ [ ပိဉ္ဆကလာပဿ အဂ္ဂေန၊ ] ဥဘယပဿေသု– နံပါး ၂ ဘက်တို့၌၊ ပက္ခပရိယန္တေဟိ-အတောင်၏ အစွန်တို့ဝှင်း၊ အဓော-၌၊ ပါဒနခသိခါယ–ခြေသည်းဖျားဝှင်း၊ ဥဒ္ဓံ- ၌၊ သိခဂ္ဂေန– အမောက်ဖျားဝှင်း၊ ဣတိ- သို့၊ ဆဟိ-န်သော၊ အာကာသရေဟိ-တို့ဖြင့်၊ ဌာနပရိစ္ဆေဒေါ-ဌာနအပိုင်းအခြားကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏၊ ဘိက္ခု-သည်၊ သဿာမိကံ-သော၊အာကာသဋ္ဌံ-ကောင်းကင်၌တည်သော၊ မောရံ-ကို၊ ဂဟေဿာမိ-ဖမ်းယူအံ့၊ ဣတိ–ဤသို့ကြံ၍၊ ပုရတော ဝါ-၌သော်လည်း၊ တိဋ္ဌတိ – ရပ်နေအံ့၊ ဟတ္ထံ ဝါ ပသာရေတိ၊ [ ဂဟဏတ္ထံ (ဖမ်းယူခြင်းငှါ) ပသာရေတိ၊] မောရော- သည်၊ အာကာသေယေဝ-၌သာလျှင်၊ ပက္ခေ- အတောင်တို့ကို၊ စာရေတိ–လှုပ်လည်စေအံ့၊ ဝါတံ-လေကို၊ ဂါဟာပေတွာ-ယူစေ၍၊ [အတောင်ခတ်၍–ဟူလို။] ဂမနံ-ကို၊ ဥပစ္ဆိန္ဒိတွာ-ဖြတ်၍၊ တိဋ္ဌတိ–အံ့၊ [စာရေတိကိုပင်“ဝါတံ၊ပေ၊တိဋ္ဌတိ”ဟု ထပ်ဖွင့်သည်။]တဿ ဘိက္ခုနော ဒုက္ကဋံ၊ တံ-ထို ဥဒေါင်းကို၊ အဖန္ဒန္တော – မလှုပ်စေဘဲ၊ပေ၊ဌာနာ-မှ၊ အစာဝေန္တော-မရွေ့စေဘဲ၊ပေ၊ပန-ကား၊ ဟတ္ထေန-ဖြင့်၊ ဂဟေတွာဝါ-ဖမ်းကိုင်၍သော်ဝှင်း၊ အဂ္ဂဟေတွာဝါ - ဝှင်း၊ [ ခဲစသည်ဖြင့် ပေါက်၍ ဆောင်ယူခြင်းကို ‘‘အဂ္ဂဟေတွာ’’ ဟု ဆိုသည်၊ ] မုခတုဏ္ဍကေန – သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ - ကို၊ ကလာပဂ္ဂံ- အမြီးအဖျားကိုသော်ဝှင်း၊ ကလာပဂ္ဂေန - သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ-ကို၊ မုခတုဏ္ဍကံဝါ – ကိုသော်ဝှင်း၊ အတိက္ကာမေတိ ပါရာဇိကံ၊ တထာ–တူ၊ ဝါမပက္ခပရိယန္တေန- လက်ဝဲ အတောင်အစွန်သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ, ဒက္ခိဏပက္ခပရိယန္တံ-လကျာအတောင် အစွန်ကိုသော်ဝှင်း၊ ဒက္ခိဏပက္ခ ပရိယန္တေန ဖုဋ္ဌောကာသံ , ဝါမပက္ခ ပရိယန္တံဝါ – ကိုသော်ဝှင်း၊ အတိက္ကာမေတိ-အံ့၊

ပါရာဇိကံ၊ တထာ - တူ၊ ပါဒနခသိခါယ- သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ-ကို၊ သိခဂ္ဂ-အမောက်ဖျားကိုသော်၎င်း၊ သိခဂ္ဂေန ဖုဋ္ဌောကာသံ-ကို၊ ပါဒနခသိခံဝါ-ကိုသော်၎င်း၊ အတိက္ကာမေတိ, ပါရာဇိကံ။

အာကာသေန- ဖြင့်၊ ဂစ္ဆန္တော- ပျံသွားသော၊ မောရော-သည်၊ သီသာဒီသု- ဦးခေါင်းအစရှိသော ကိုယ်အင်္ဂါတို့တွင်၊ ယသ္မိံ အင်္ဂေ-အကြင်ကိုယ်အင်္ဂါ၌၊ နိလီယတိ-နား၏၊ တံ- ထိုကိုယ်အင်္ဂါသည်၊ တဿ- ထိုဥဒေါင်း၏၊ ဌာနံ-ဟည်ရာတည်း၊ တသ္မာ, တံ-ထို ဥဒေါင်းကို၊ ဟတ္ထေ-လက်၌၊ နိလီနံ-နားနေသည်ကို၊ ဋတော စိတော စ ၌မှ ၌မှလည်း၊ ကရောန္တော ပိ-ပြုသောရဟန်းသည်လည်း၊ ဖန္ဒာပေတိယေဝ-လှုပ်စေရုံမည်သည်သာ၊ ပန- ကား၊ ဋတရေန- အခြားသော၊ ဟတ္ထေန- ဖြင့်၊ ဂဟေတွာ-၍၊ ဌာနာ- မှ၊ ယဒိ စာဝေတိ၊ (စဝံသတိ)၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဋတရံ – သော၊ ဟတ္ထံ- ကို၊ ဥပနေတိ-အနီးသို့ ကပ်ဆောင်အံ့၊ [ မူလလက်ပေါ်မှ ပြောင်းရွှေ့လာအောင် အနီးသို့ ကပ်ဆောင်သည်။] မောရော- သည်၊ သယမေဝ - အလိုလိုသာ၊ ဥဋ္ဌေတွာ-ပျံ၍၊ တတ္ထ– ထိုကပ်ဆောင်အပ်သောလက်၌၊ နိလီယတိ- နားအံ့၊ အနာပတ္တိ (ဟောတိ)၊ အင်္ဂေ- ကိုယ်အင်္ဂါ၌၊ နိလီနဘာဝံ– နားသည်၏အဖြစ်ကို၊ ဉတွာ ထေယျစိတ္တေန, ဧကံ- တခုသော၊ ပဒဝါရံ - ခြေလှမ်းအကြိမ်ကို၊ ဂစ္ဆတိ-အံ့၊ ထုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)၊ ဒုတိယံ ( ပဒဝါရံ ဂစ္ဆတိ )၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဘူမိယံ–၌၊ ဌိတမောရော-တည်သော ဥဒေါင်းသည်၊ ဒွိန္နံ- ၂ ဘက်ကုန်သော၊ ပါဒါနံဝါ–ခြေတို့၏၎င်း၊ ကလာပဿစ – အမြီး၏၎င်း၊ ဝသေန-ဖြင့်၊ တီဏိ ဌာနာနိ လဘတိ၊ တံ- ထိုဥဒေါင်းကို၊ ဥက္ခိပန္တဿ– မြှောက်သောရဟန်း၏၊ ယာဝ - လောက်၊ ဧကမ္ပိ ဌာနံ- တခုသော အရပ်သည်လည်း၊ ပထဝိံ - ကို၊ ဖုသတိ - ထိနေသေး၏၊ တာဝ ထုလ္လစ္စယံ ( ဟောတိ )၊ ကေသဂ္ဂမတ္တမ္ပိ - မျှလည်း၊ ပထဝိယာ - မှ၊ (မောရေ – ကို၊) မောစိတမတ္တေ - လွတ်စေအပ်ကာမျှဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပဉ္ဇရေ- ချိုင့်၌၊ ဌိတံ- တည်သော ဥဒေါင်းကို၊ ပဉ္ဇရေန-နှင့်၊ သဟ, ဥဒ္ဓရတိ၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ပန- ဆက်၊ (မောရော)၊ ပါဒံ-တမတ်ကို၊ ယဒိ နအဂ္ဃတိ-အကယ်၍မထိုက်တန်အံ့၊ (ဧဝံ သတိ- ဤသို့ တမတ်မတန်လသော်၊ ) သဗ္ဗတ္ထ- အလုံးစုံသော ယူခြင်း၌၊ အဂ္ဃဝသေန–တန်ဖိုး၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ကာတဗ္ဗံ-ဆုံးဖြတ်မှုကို ပြုထိုက်၏။

အန္တောဝတ္ထုမှိ– အိမ်ယာ၏အတွင်း၌၊ စရန္တံ-သော၊ မောရံ-ကို၊ ထေယျစိတ္တေန, ပဒသာ-ခြေဖြင့်၊ ဗဟိဝတ္ထုံ - အိမ်ယာ၏ပြင်ဘက်သို့၊ နီဟရန္တော-ထုတ်ဆောင်သော ရဟန်းသည်၊ ဒွါရပရိစ္ဆေဒံ - တံခါး အပိုင်းအခြားကို၊

အတိက္ကာမေတိ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဟိ - မှန်၊ ဝဇေ – ခြံ၌၊ ဋ္ဌိတဗလီ ဗဒ္ဓဿ - တည်သောနွားလား၏၊ ဝဇော – ခြံသည်၊ (ဌာနံ - တည်ရာသည်၊ ဟောတိ)ဝိယ၊ (တထာ-ထို့အတူ)အန္တောဝတ္ထု-အိမ်ယာ၏အတွင်းသည်၊ တဿ-ထိုဥဒေါင်း၏၊ ဌာနံ–တည်း၊ ပန-ဆက်၊ ဟဒ္ဓတ္ထန ဂဟေတွာ,အန္တော ဝတ္ထုသ္မိံပိ - ၌လည်း၊ အာကာသဂတံ ကရောန္တဿ , ပါရာဇိကမေဝ - ပင်တည်း၊ အန္တောဂါမေ - ၌၊ စရန္တမ္ပိ - လှည့်လည်နေသော ဥဒေါင်းကို လည်း၊ ဂါမပရိက္ခေပံ – ရွာ၏အပိုင်းအခြားကို၊ အတိက္ကာမေန္တဿ ပါရာဇိ ကံ(ဟောတိ)၊ သယမေဝ- အလိုလိုသာလျှင်၊ နိက္ခမိတွာ, ဂါမူပစာရေဝါ- ၌သော်၎င်း၊ ဝတ္ထုပစာရေဝါ - အိမ်ယာ၏ ဥပစာ၌သော်၎င်း၊ စရန္တံပန - လှည့်လည်နေသော ဥဒေါင်းကိုကား၊ ထေယျစိတ္တေန, (ဟုတ္တာ)ကဋ္ဌေနဝါ- သစ်သားဖြင့်သော်၎င်း၊ ကထလာယဝါ -အိုးခြမ်းဖြင့်သော်၎င်း၊ ဥတြာသေ တွာ-လန့်စေ၍၊ ဝါ-ချောက်လှန့်၍၊ အဋဝိမုခံ- တောအုပ်သို့ရှေ့ရှု၊ ကရောတိ- ပြုအံ့၊ မောရော, ဥဋ္ဌေတွာ - ပျံ၍၊ အန္တောဂါမေဝါ - ၌သော်၎င်း၊ အန္တော ဝတ္ထုမှိဝါ - ၌သော်၎င်း၊ ဆဒနပိဋ္ဌေဝါ - အိမ်အမိုးအပြင်၌သော်၎င်း၊ နိလီ ယတိ–အံ့၊ ရက္ခတိ-ပါရာဇိကမှ စောင့်သေး၏။ [သူပြုအပ်သော ပယောဂဖြင့် ရောက်လိုရာအရပ်သို့ မရောက်ခြင်းကြောင့် အာပတ်မှ စောင့်သေး၏။]

ပန - သို့မဟုတ်၊ အဋဝိမုခေါ - တောအုပ်သို့ ရှေ့ရှု၊ သစေ ဥဋ္ဌေတိဝါ– အကယ်၍ မူလည်း ပျံအံ့၊ သစေ ဂစ္ဆတိဝါ–အံ့၊ အဋဝိံ - သို့၊ ပဝေသေတွာ- သွင်း၍၊ ဂဟေဿာမိ–ဖမ်းယူအံ့၊ ဣတိ–ဤသို့သော၊ ပရိကပ္ပေ–အကြံသည်၊ အသတိ–သော်၊ ပထမိတော ကေသဂ္ဂမတ္တမ္ပိ , ဥဋ္ဌိတမတ္တေဝါ- ပျံပြီးကာမျှ၌ သော်၎င်း၊ ဒုတိယပဒဝါရေဝါ - ၌သော်၎င်း၊ [ မြေပေါ်၌ သွားနေသော ဒေါင်းကို ရည်ရွယ်၍“ဒုတိယပဒဝါရေ”ဟု ဆိုသည်၊]ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ [ ပရိကပ္ပေ အသတိ ဟု ဆိုခဲ့သောကြောင့် ရွာတွင်း၌ ဌာနာစာဝန ဖြစ်လျှင် ပါရာဇိက၊ ပရိကပ္ပရှိလျှင် တောထည်း၌ ဌာနာစာဝန ဖြစ်မှ ပါဇိရာက။ ] ကသ္မာ–နည်း၊ ယသ္မာ ဂါမတော,နိက္ခန္တဿ–ထွက်သော ဥဒေါင်း၏၊ ဋ္ဌိတ ဌာနမေဝ – တည်ရာ အရပ်သည်သာ၊ ဌာနံ ဟောတိ၊ ကပိဉ္ဇရာဒီသုပိ- ချိုး (ငှိုး)အစရှိသော ငှက်တို့၌လည်း၊[အာဒိဖြင့် ပါဠိတော်၌လာသော“တိတ္တိရ (ခါ)၊ ဝဋ္ဋက(ငုံး)”စသော ငှက်တို့ကိုယူ။] အယမေဝ – ဤဆိုအပ်ပြီးသော စကားရပ်သည်ပင်၊ ဝိနိစ္ဆယော- ဆုံးဖြတ်ကြောင်းကည်း။ [ ကပိဉ္ဇရောနာမ အညမည့် ယုဇ္ဈာပနတ္ထာယ ဗာလဇနေဟိ ပေါသာဝနီယပက္ခိဇာတ်= အချင်း ချင်း ခွပ်စေဘို့(တိုက်ဘို့)ရန် လူမိုက်တို့မွေးအပ်သော ငှက်တမျိုးတည်း။]

သာဋကံဝါဘိ-ကား၊ ဝါတဝေဂုက္ခိတ္တံ – လေအဟုန်သည် မြှောက်လွှင့်အပ်သော၊ ပထဝိတလေ-မြေအပြင်၌၊ ပတ္တရိတွာ-ဖြန့်၍၊ ထပိတမိဝ - ထားအပ်သော အဝတ်ကိုကဲ့သို့၊ အာကာသေန-ဖြင့်၊ ဂစ္ဆန္တံ-သွားသော၊ခလိဗဒ္ဓံ-ကစည်ရည်ဖြင့် ဖွဲ့အပ်သော၊ [''ခလိထဒ္ဓံ–ကစည်ရည်ဖြင့် တောင့်တင်းခိုင်မာနေသော''ဟုလည်းရှိ၏။] သာဋကံ-အဝတ်ကို၊ [ပြန့်၍ မာမာတောင့်တောင့်ဖြစ်နေအောင် ကစည်ရည်ဖြင့် ဖွဲ့အပ်သောအဝတ် – ဟူလို၊ ] အဘိမုခါဂတံ-မိမိသို့ရှေးရှုလာနေသည်ကို၊ ဟတ္ထေန-ဖြင့်၊ ဧကသ္မိံ-သော၊အဥ္စလေ-အစွန်၌၊ ဂဏှာတိ–ကိုင်အံ့၊ ဧတော စိတော စ- လည်း၊ ဌာနံ-ကို၊ အစိကောပေန္တော ယေဝ-မပျက်စေဘဲသာလျှင်၊ ဂမနူပစ္ဆေဒေ-သွားခြင်းကို ဖြတ်ခြင်းကြောင့်၊ ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)၊ ဌာနာ-မှ၊ စာဝနံ-ကို၊ အကရောန္တော- ဘဲ၊ စာလေတိ-အံ့၊ ဖန္ဒာပနေ-ကြောင့်၊ ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ပေ၊စ-ဆက်၊အဿ-ထိုကစည်ရေဖြင့် ဖွဲ့အပ်သော အဝတ်၏၊ ဌာနပရိစ္ဆေဒေါ–ကို၊ မောရဿေဝ-ဥဒေါင်း၏ ကဲ့သို့၊ ဆဟိ-ကုန်သော၊ အာကာရေဟိ–အပြားတို့ဖြင့်၊ ဝေဒိတဗ္ဗော။

ပန-ကား၊ အဗဒ္ဓသာဋကော-ကစည်ရည်ဖြင့် မဖွဲ့အပ်သောအဝတ်သည်၊ ဧကသ္မိံ-သော၊ အဥ္စလေ-ကို၊ ဂဟိတမတ္တေဝ- ကိုင်အပ်ကာမျှ ဖြစ်သော်သာ၊ ဒုတိယေန-သော၊ အဥ္စလေန – အစွန်ဖြင့်၊ ပတိတွာ - ကျ၍၊ [ ဒိကျ၍- ဟူလို၊ ယောဇနာ၌ ''ပပတိတွာ'' ဟု ရှိ၏။ ] ဘူမိယံ, ပတိဋ္ဌာတိ - ၏၊ တဿ – ထိုအဝတ်၏၊ ဟတ္ထောစေဝ - သည်၎င်း၊ ဘူမိစ - သည်၎င်း၊ ဒွေ – ကုန်သော၊ ဌာနာနိ- ဌာနတို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ တံ - ထို အဝတ်ကို၊ ယထာဂဟိတမေဝ–အကြင်အကြင်ယူအပ်တိုင်းသာလျှင်၊ပဌမံ-စွာ၊ဂဟိတောကာသပ္ပဒေသတော-ကိုင်ယူအပ်ရာကောင်းကင်အရပ်မှ၊ စာဝေတိ-ရွေ့စေအံ့၊ထုလ္လစ္စယံ ဟောတိ၊ [စာအုပ်များ၌ ''စာလေတိ ထုလ္လစ္စယံ ''ဟု ရှိ၏ မကောင်း၊ ၂ ဌာနရှိသော ကြောင့် ပဌမဌာနာစာဝန၌ ထုလ္လစ္စဉ်း , ဒုတိယ ဌာနာစာဝန၌ ပါရာဇိက ဖြစ်၍''စာဝေတိ''ဟု ရှိရမည်၊ ]ပစ္ဆာ-၌၊ ဘူမိတော-မှ၊ဒုတိယဟတ္ထေနဝါ-ဖြင့်သော်၎င်း၊ ပါဒေနဝါ-၎င်း၊ ဥက္ခိပတိ၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ဝါ-တနည်း၊ ပဌမံ-စွာ၊ ဘူမိတော ဥဒ္ဓရတိ၊ ထုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)၊ [ ''ပဌမံဝါ''ဟု ဝါ–ပါစေရမည်၊ ] ပစ္ဆာ ၊ပေ၊ စာဝေတိ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဝါ-တနည်း၊ ဂဟဏံ–ကိုင်ခြင်းကို၊ အမုဥ္စန္တော– မလွှတ်ဘဲ၊ ဥဇုကမေဝ - ဖြောင့်ဖြောင့်သာလျှင်၊ ဝါ-တဲ့တဲ့သာလျှင်၊ ဟတ္ထံ-ကို၊ ဩနာမေတွာ–အောက်သို့ ညွတ်စေ၍၊ ဘူမိဂတံ–မြေ၌တည်သော အဝတ်စကို၊ တေနေဝ ဟတ္ထေန- ထိုလက်ဖြင့်ပင်၊ ဥက္ခိပတိ- ကြွမြှောက်အံ့၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ [ဘူမိဂတံသည် ဥက္ခိပတိ၏

ကံဖြစ်သောကြောင့်၎င်း,လက်ကို မြေ၌တည်အောင်လုပ်ဘို့မလိုသောကြောင့် ၎င်း, ဘူမိဂတံနေဘ်၌ရှိသော"ကတ္ဘ"သည် ဖို၏။]ဝေဌနေပိ–ခေါင်းပေါင်း ၌လည်း၊ အယမေဝ-ပင်၊ ဝိနိစ္ဆယော-တည်း။

ဟိရညံဝါ သုဝဏ္ဏံဝါ ဆိင်္ဃမာနန္တိ–ကား၊ အလင်္ကာရေနန္တာနံ-တန်ဆာ ဆင်ကုန်သော၊ မနုဿာနံ – တို့၏၊ ဂီဝေယျကာဒိပိဠန္ဓနံ ဝါ – လည်ဆွဲအစ ရှိသော တန်ဆာသည်သော်၎င်း၊ သုဝဏ္ဏသလာကံ-ရွှေချောင်းကို၊ ဆိန္ဒန္တာ နံ-ဖြတ်ကုန်သော၊ သုဝဏ္ဏကာရာနံ- ရွှေပန်းထိမ်သည် တို့၏၊ သုဝဏ္ဏခဏ္ဍံဝါ- ရွှေအပိုင်းသည် သော်၎င်း၊ ဆိင်္ဃမာနံ–ပြတ်လျက်၊ ပတတိ–အံ့၊ ဘိက္ခု, တံ– ထိုငွေ ရွှေကို၊ အာကာသေန , အာဂစ္ဆန္တံ – လာသည်ကို၊ ထေယျစိတ္တော ( ဟုတွာ )၊ ဟတ္ထေန စေ ဂဏှာတိ၊ ( ဝံသတိ )၊ ဂဟဏမေဝ– ယူရာအရပ် သည်သာ၊ ဌာနံ – တည်း၊ ဂဟိတပ္ပဒေသတော – ယူအပ်ရာအရပ်မှ၊ ဟတ္ထံ, အပနေတိ-ဖယ်ရှားအံ့၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ [လူတရပ်လောက် မြင့်သော ကောင်းကင်အရပ်၌ ခံယူလျှင် ထို ကောင်းကင် အရပ်သည် ဌာန၊ ထို အရပ်မှ လက်ကိုရွှေ့လိုက်လျှင် ပါရာဇိက။] စီဝရေ–သင်္ကန်း၌၊ ပတိတံ- ကျပြီးသော ငွေ ရွှေကို၊ [ တန်ဆာကို ဖြစ်စေ , ရွှေပိုင်းကို ဖြစ်စေ။ ] ဟတ္ထေန ဥက္ခိပတိ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ အနုဒ္ဓရိတွာဝ - မကြွမြှောက် မူ၍သာလျှင်၊ ယာတိ– သွားအံ့၊ ဒုတိယေ ပဒဝါရေ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပတ္တေ – ၌၊ ပတိတေပိ– ကျသော ငွေ ရွှေ၌လည်း၊ ဧသေဝနယော၊ သီသေဝါ–သော်၎င်း၊ မုခေဝါ– မျက်နှာ၌သော်၎င်း၊ ပါဒေဝါ-၌သော်၎င်း၊ ပတိဋ္ဌိတံ-တည်သော ငွေ ရွှေကို၊ ဟတ္ထေန ဂဏှာတိ၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ အဂ္ဂဟေတွာဝ – လက်ဖြင့်မကိုင် မူ၍သာ၊ ယာတိ၊ပေ၊ ယတ္ထကတ္ထစိ – အမှတ်မထား တပါးပါးသော အရပ်၌၊ [ကိုယ်အင်္ဂါပေါ်၌ ဖြစ်စေ, သင်္ကန်း သပိတ်ပေါ်၌ဖြစ်စေ – ဟူလို။] ပတတိ၊ တဿ–ထို ငွေ ရွှေ၏၊ ပတိတောကာသောဝ–ကျရာ အရပ်သည်သာ၊ ဌာနံ (ဟောတိ)၊ သမ္ဘိ– သော၊ အင်္ဂပစ္စင်္ဂံဝါ - အင်္ဂါကြီးငယ်သည်၎င်း၊ ပတ္တစီဝရံ ဝါ–သည်၎င်း၊ ( ဌာနံ )၊ န–မဟုတ်၊ [ ဦးခေါင်းပေါ် ကျလျှင် ကျရာအရပ် သည်သာ ဌာန၊ ဦးခေါင်းတခုလုံး ဌာနမဟုတ်၊ သင်္ကန်းသပိတ် စသည်တို့ ၌လည်း နည်းတူ။] ဣတိ- အပြီးတည်း။.... အာကာ သဋ္ဌကထာ-သည်၊ ဝါ– ကောင်းကင်၌တည်သော ဘဏ္ဍာကို ပြဆိုရာစကားရပ်သည်၊ နိဋ္ဌိတာ။

ဝေဟာသဋ္ဌေ – မြင့်သောအရပ်ဝယ် တည်သောဘဏ္ဍာ၌၊ ( ဝိနိစ္ဆယော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော )၊ မဉ္စပီဌာဒီသု - ညောင်စောင်း အင်းပျဉ် အစရှိသောအရပ် တို့၌၊ [ အာဒိဖြင့် " စီဝရဝံသ , စီဝရ ရဇ္ဇု " စသော ပါဠိတော်လာ ဌာန

များကိုယူ။] ထပိတံ-သော၊ ဘဏ္ဍံ-သည်၊ အာမာသံဝါ-သုံးသပ်အပ်(သုံးသပ်ကောင်း)သော ဘဏ္ဍာသည်မူလည်း၊ ဟောတု - ဖြစ်စေ၊ အနာမာသံဝါ - မသုံးသပ်အပ်(မသုံးသပ်ကောင်း)သော ရွှေငွေစသောဘဏ္ဍာသည်မူလည်း၊ ဟောတု၊ပေ၊အာမသန္တဿ – သုံးသပ်သောရဟန်း၏၊ ဒုက္ကဋံ ( ဟောတိ )၊ ပန–ဆက်၊ ဧတ္ထ – ဤ ဝေဟာသဋ္ဌ ဘဏ္ဍာတို့တွင်၊ မဉ္စပီဌေသု - တို့၌၊ ထပိတဘဏ္ဍေ – ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာ၌၊ [ ထပိတံ ဘဏ္ဍံကိုထောက်၍ " ထပိတဘဏ္ဍေ '' ဟု ကေဝုစ် ရှိစေရမည်။] ထလဋ္ဌေ – ထလဋ္ဌဘဏ္ဍာ၌၊ပေ၊ ဝေဒိတဗ္ဗော၊

ပန–အထူးကား၊ အယံ-ဤ ဆိုအပ်လတ္တံကား၊ ဝိသေသော–တည်း၊ ခလိယာ – ကစည်ရည်ဖြင့်၊ ဗဒ္ဓသာဋကော – ဖွဲ့အပ်သော အဝတ်သည်၊ သစေ (ဟောတိ)၊ မဉ္စေဝါ-၌သော်၎င်း၊ ပီဌေဝါ-၌သော်၎င်း၊ ပတ္ထဋော–ဖြန့်အပ်သည်၊ (သမာနော)၊ မဉ္စေန - အလယ်ခေါင်ဖြင့်၊ မဉ္စတလံ – ညောင်စောင်းအပြင်ကို၊ န ဖုသတိ-မထိ၊ မဉ္စပါဒေ–ညောင်စောင်းခြေတို့ကိုသာ၊ ဖုသတိ–ထိ၏၊ [ ရှေးခတင်များ၌ ခြေထောက်၏အထက်ထိပ်သည် ခတင်၏ ကြမ်းပြင်အထက် လွန်တက်နေ၏၊ ထိုထိပ်ကို "မဉ္စပါဒေ" ဟု ဆိုသည်။] တေသံ – ထိုညောင်စောင်းခြေတို့၏၊ ဝသေန,ဌာနံ-ဌာနကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊ ဟိ-မှန်၊ ပါဒါနံ-ခြေတို့၏၊ ဥပရိ-၌၊ ဖုဋ္ဌောကာသမေဝ- ထိအပ်သောအရပ်ကိုသာ၊ တတ္ထ–ထိုကစည်ရည်ဖြင့် ဖွဲ့အပ်သောအဝတ်ကို၊ အတိက္ကာမိတမတ္တေ– လွန်စေအပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပန- ကား၊ မဉ္စပီဌေဟိ– တို့နှင့်၊ သဟ,ဟရန္တဿ-ဆောင်ယူသောရဟန်း၏၊ မဉ္စပီဌပါဒါနံ-တို့၏၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသဝသေန-တည်ရာအရပ်၏ အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဌာနံ-ဌာနကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗံ၊

စီဝရဝံသေတိ - ကား၊ စီဝရထပနတ္ထာယ - သင်္ကန်းထားခြင်းအကျိုးငှါ၊ ဗန္ဓိတ္ဝာ-ဖွဲ့ချည်၍၊ [ထုပ်စသည်၌ ကြိုးဖြင့်ချည်၍။] ထပိတေ-သော၊ ဝံသေဝါ-ဝါး၌သော်၎င်း၊ ကဋ္ဌဒဏ္ဍကေဝါ – သစ်သားချောင်း၌သော်၎င်း၊ ( ထပိတံ ဟောတိ)၊ တတ္ထ– ထို သင်္ကန်းတန်း၌၊ သံဟရိတွာ - ခေါက်၍၊ ပါရတော –

ဝေဟာသဋ္ဌေ ။ ။ ကောင်းကင်၌ ( ပျံသွားသော အားဖြင့် ) တည်သော ဥဒေါင်းစသော ဘဏ္ဍာကို "အာကာသဋ္ဌ" ဟု ခေါ်၏၊ မြင့်သောအရပ်ကို "ဝေဟာသ" ဟု ခေါ်၍ ထို အရပ်၌တည်သော ဘဏ္ဍာကို "ဝေဟာသဋ္ဌ" ဟု ခေါ်သည်။

အတိက္ကာမိတမတ္တေ တတ္ထ ။ ။ အတိက္ကာမိတမတ္တေ သတိ တတ္ထ အတိက္ကာမန နိမိတ္တေ၊ တတ္ထာတိဝါ တသ္မိံ သာဋကေ အတိက္ကာမိတမတ္တေ သတိ၊ – ယောဇနာ၊ "အတိက္ကာမိတမတ္တေ (န) တတ္ထ" ဟု စာအုပ်များ၌ရှိသည်ကား ယောဇနာနှင့်မညီ။

ထိုမှာဘက်၌၊ အန္တံ – သက်န်းအစွန်ကို၊ ဩရတော-ဤမှာဘက်၌၊ ဘောဂံ–သင်္ကန်းအခွေကို၊ ကတွာ , ထပိတစီဝရဿ – ၏၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသေန –တည်သောအရပ်သည်၊ [ ဝါးတန်း၌တည်သော သင်္ကန်းအရပ်ကိုဆိုသည်။ ] ဖုဋ္ဌောကာသော၀-ထိအပ်သောအရပ်သည်သာ၊[ဝါးတန်းအရပ်ကိုဆိုသည်၊] ဌာနံ (ဟောတိ )၊ သမ္ဗော – သော၊ စီဝရဝံသော – သင်္ကန်းတန်းဝါးသည်၊ (ဌာနံ)န - မဟုတ်၊ တသ္မာ ထေယျစိတ္တေန, တံ – ထိုသင်္ကန်းကို၊ ဘောဂေ–ဤမှာဘက်အခွေ၌၊ ဂဟေတွာ-ကိုင်၍၊ အာကမုန္တဿ – ရှေးရှု ဆွဲငင်သောရဟန်း၏၊ ဝါ-သည်၊ ပါရတော-ထိုမှာဘက်၌၊ ဝံသေ–၌၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသံ-တည်သောအရပ်ကို၊ ဩရတော–ဤမှာဘက်၌၊ စီဝရေန-သည်၊ (ဖုဋ္ဌ၌စပ်။) ဝံသဿ-ဝါး၏၊ (ပဒေသံ၌စပ်)၊ ဖုဋ္ဌပ္ပဒေသံ-ထိအပ်သောအရပ်ကို၊ အတိက္ကာမေန္တဿ – လွန်စေလသော်၊ ကေဒ္ဒဂ်ဲလမတ္တာကမုနေနေ၀ - လက် ၁ သစ် ၂ သစ်မျှကို ဆွဲငင်ခြင်းဖြင့်သာလျှင်၊ [ သင်္ကန်းတန်းက မတုတ်သောကြောင့် “လက်တသစ် ၂ သစ်”ဟုဆိုသည်၊ သင်္ကန်းတန်းကတုတ်လျှင် တုတ်သလောက် လက်သစ်များရာ၏။ ] ပါရာဇိကံ (ဟောတိ )၊ အန္တေ – ထိုမှာဘက်အစွန်၌၊ ဂဟေတွာ၊ပေ၊သေ၀နယော။

ပန – ဆက်၊ တတ္ထေ၀ – ထို သင်္ကန်းတန်းဝါး၌ပင်၊ [ စီဝရဝံသေပိုဟန်တူသည်။] ဝါမတော၀ါ-လက်ဝဲဘက်မှငင်း၊ ဒက္ခိဏတော၀ါ-လက်ျာဘက်မှငင်း၊ ဟရန္တဿ- ဆောင်ယူသောရဟန်း၏၊ ဝါမန္တေန- လက်ဝဲဘက် အစွန်အားဖြင့်၊ (အတိက္ကန္တမတ္တေ၌စပ်)၊ ဒက္ခိဏန္တဋ္ဌာနံ - လက်ျာဘက် အစွန်အရပ်ကိုသော်ငင်း၊ ဒက္ခိဏန္တေန – အားဖြင့်၊ ဝါမန္တဋ္ဌာနံ၀ါ – ကိုသော်ငင်း၊ အတိက္ကန္တမတ္တေ – လွန်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ [ “ အတိက္ကန္တမတ္တေန ”ဟုန- ပါသည်ကား အပို။] ဒသဒ္ဓါဒသင်္ဂုလမတ္တ ဟရဏေနေ၀- လက်ဆယ်သစ် ၁၂ သစ်မျှကို ဆောင်ခြင်းဖြင့်သာလျှင်၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ဥဒ္ဓံ – သို့၊ ဥက္ခိပန္တဿ - မြှောက်သောရဟန်း၏၊ ကေသဂ္ဂမတ္တုက္ခိပနေန - တဆံဖျားမျှ မြှောက်ခြင်းဖြင့်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ စီဝရဝံသံ- ကို၊ ဖုသန္တံ၀ါ- ထိသည်မှုလည်းဖြစ်သော၊ အဖုသန္တံ၀ါ-သော၊ ရဇ္ဇုကေန-ကြိုးငယ်ဖြင့်၊ ဗန္ဓိတွာ-၍၊ ထပိတစီဝရံ- ကို၊ မောစေန္တဿ - လွှတ်စေသောရဟန်း၏၊ ဝါ – ဖြေသောရဟန်း၏၊ ထုလ္လစ္စယံ ( ဟောတိ )၊ မုတ္တေ - လွှတ်ပြီးလသော်၊ ပါရာဇိကံ

**ဖုသန္တံ၀ါ အဖုသန္တံ၀ါ ။** ။ သင်္ကန်းတန်းကို ကြိုးချည်၍ ဆွဲထားအပ်သော သင်္ကန်းသည် ဝါး၌ ထိ–မထိ ၂ မျိုးရှိ၍ ဖုသန္တံ၀ါ အဖုသန္တံ၀ါ ဟု ဆိုသည်၊ ဝါးကို ထိနေသော်လည်း ဝါးသည် တည်ရာမဟုတ်–ဟု ပြလို၍ ဤစကားကို ဆိုသည်။

(ဟောတိ)၊ ဟိ-မှန်၊ မုတ္တမတ္တမေဝ-လွတ်ပြီးကာမျှသာလျှင် ဖြစ်သော၊ တံ-ထိုသက်နှိုးသည်၊ ဌာနာ-မှ၊ စုတံ-ရွေ့လျောပြီ၊ ဇာတိ- သို့၊ သဉ္စ်-ခေါ်ဝေါ် အပ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ဂစ္ဆတိ-ရောက်၏၊ ဝံသေ-ဝါး၌၊ ဝေဌေတွာ- ရစ်ပတ်၍၊ ထပိတံ-ထားအပ်သောသက်နှိုးကို၊ နိဗ္ဗေဌေန္တဿ-ဖြေသောရဟန်း၏၊ ထုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)၊ နိဗ္ဗေဌိတမတ္တေ-ဖြေအပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)။ [ယောဇနာ၌ "နိဝေဌေန္တဿ=နိဗ္ဗေဌေန္တဿ"ဟု ပါ၍ ၂ မျိုး ပြ၏၊ ဝေဌခေတ်ဖြစ်၍ ၂ မျိုးလုံး မသင့်။]

ဝလယံ-ကွင်း (ဝွင်း)ကို၊ ကတွာ, ထပိတေ - ထားအပ်သော သက်နှိုး၌၊ ဝလယံ-ကို၊ ဆိန္ဒတိဝါ- ဖြတ်မူလည်း ဖြတ်အံ့၊ မောစေတိဝါ - ဖြေမူလည်း ဖြေအံ့၊ တော် - တဘက်သော၊ ဝံသကောဋိံဝါ - ဝါးအစွန်ကို မူလည်း၊ မောစေတွာ - ဖြေ၍၊ [ နဂိရိက သက်နှိုးတန်းအစွန် ၂ ဘက်ကို ထုပ်စသည်၌ ချည်ထားသောကြောင့် "ဝံသကောဋိံ မောစေတွာ"ဟု ဆိုသည်။]နီဟရတိ-ထုတ်ဆောင်အံ့၊ ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ ဆိန္နမတ္တေစ-ပြတ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်သော်ငင်း၊ မုတ္တမတ္တေစ-လွတ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်သော်ငင်း၊ နီဟဋမတ္တေစ-ထုတ်ဆောင် အပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်သော်ငင်း၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ တထာ-ထိုအခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ [ ဖြတ်ခြင်း , ဖြေခြင်း , ထုတ်ဆောင်ခြင်း ဟူသော အခြင်းအရာ အားဖြင့်၊ ] အကတွာဝ - မူ၍သာလျှင်၊ စီဝရဝံသေ-၌၊ ဇာတောစိတောစ - မှလည်း၊ သာရေတိ - ရွေ့စေအံ့၊ ဝါ - ရွေ့အံ့၊ တာဝရက္ခတိ - ပါရာဇိကမှ စောင့်သေး၏၊ ဟိ - မှန်၊ ဝလယဿ-၏၊ သမ္ဗောပိ – သော၊ စီဝရဝံသော-သည်၊ ဌာနံ (ဟောတိ)၊ ကသ္မာ - နည်း၊ တတ္ထ - ထို သက်နှိုးတန်းဝါး၌၊ သံသရဏဓမ္မတာယ-ထိုမှ ဤမှ ရွေ့ရှားခြင်းသဘောရှိသည်၏ အဖြစ်ကြောင့် တည်း၊ ပန - ဆက်၊ ယဒါ-၌၊ နံ – ထိုသက်နှိုးကွင်းကို၊ ဟတ္ထေန ဂဟေတွာ, အာကာသဂတံ – ကောင်းကင်၌ တည်သည်ကို၊ ဝါ – မြောက်သွားအောင်၊ ကရောတိ-၏၊ (တဒါ) ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)။

ပသာရေတွာ-ဖြန့်၍၊ ထပိတဿ-ထားအပ်သော သက်နှိုး၏၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသေန - တည်သော သက်နှိုးအသား အရပ်သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသောဝ-ထိအပ်သော ဝါးတန်းအရပ်သည်သာ၊ ဌာနံ(ဟောတိ)၊တတ္ထ-ထိုဖြန့်ထား အပ်သောသက်နှိုး၌၊ သံဟရိတွာ-ခေါက်၍၊ ထပိတေ-ထားအပ်သောသက်နှိုး ၌၊ ဝုတ္တနယေန၊ [" တတ္ထ သံဟရိတွာ ပါရတော အန္တံ" စသည်ဖြင့် အဆုံး အဖြတ်။] ဝိနိစ္ဆယော ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ပန- ကား၊ ယံ- အကြင် သက်နှိုးသည်၊ ဧကေန-သော၊ အန္တေန-ဖြင့်၊ ဘူမိံ၊ ဖုသိတွာ- ထိ၍၊ ဌိတံ ဟောတိ၊ တဿ–

ထိုသင်္ကန်း၏၊ စီဝရ ဝံသေစ – ၌၎င်း၊ ဘူမိယဉ္စ – ၌၎င်း၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသ ဝသေန-တည်သော သင်္ကန်းအရပ်၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ဒွေ ဌာနာနိ ( ဟောန္တိ )၊ တတ္ထ–ထို သင်္ကန်း၌၊ ဘူမိယံ-၌၊ ဧကေန–သော၊ အန္တေန-ဖြင့်၊ ပတိဋ္ဌိတေ–သော၊ အဗဒ္ဓသာဋကေ– ကစည်ရည်ဖြင့် မဖွဲ့အပ်သော အဝတ်၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ ဝိနိစ္ဆယော ဝေဒိတဗ္ဗော။ [ အဗဒ္ဓသာဋကော ပန ကေသွိံအန္တေ – စသည်ဖြင့် အာကာသဋ္ဌကထာ၌ ဆိုအပ်ခဲ့သော အဆုံးအဖြတ်။ ] စီဝရရဇ္ဇုယာပိ – သင်္ကန်းတန်း ကြိုး၌လည်း၊ အယမေဝ – ဤ ဆိုအပ်သော စကားသည်သာ၊ ဝိနိစ္ဆယော။

ပန-ကား၊ အင်္ကုသကေ- ချွန်းချိတ်၌၊ [ချွန်းကဲ့သို့ ကော့နေသော ချိတ်၌။] လဂ္ဂေတွာ–ချိတ်၍၊ ထပိတဘဏ္ဍံ– သည်၊ ဘေသဇ္ဇဃဋောဝါ–ဆေးအိုး သည်သော်၎င်း၊ ဘေသဇ္ဇတ္ထဝိကာဝါ-ဆေးအိတ်သည် သော်၎င်း၊ [ထပိတဘဏ္ဍံကိုပင် ဘေသဇ္ဇဃဋော, ဘေသဇ္ဇတ္ထဝိကာ-ဟု သရုပ်ဖေါ်သည်။] ဘိတ္တိံ ဝါ–နံရံကိုသော်၎င်း၊ ဘူမိံ ဝါ-ကိုသော်၎င်း၊ အဖုသိတွာ-မထိမူ၍၊ ထပိတံ-သည်၊ သစေ (ဟောတိ)၊ (ဇဝံသတိ)၊ လဂ္ဂနကံ- ဆွဲချိတ်ကြောင်းကြိုးကို၊ (အိုးကြိုး, အိတ်ကြိုးကို-ဆိုသည်။)ဃံသန္တဿ-ချွန်းချိတ်ကိုပွတ်တိုက်လျက် နီဟရတော-ထုတ်ဆောင်သောရဟန်း၏၊ အင်္ကုသကောဋိတော-ချွန်းချိတ်အစွန်မှ၊ နိက္ခန္တမတ္တေ – ထွက်ပြီးခါမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ လဂ္ဂနကံ-ဆွဲချိတ်ကြောင်းကြိုးသည်၊ ဗဒ္ဓံ (ထဒ္ဓံ)–တောင့်သည်၊ ဟောတိ–အံ့၊ [ဗဒ္ဓံဟု စာရှိ၏၊ထဒ္ဓံရှိမှကောင်းသည်၊ ဆေးအိုး၌ ချည်ထားသောကြိုးက ထန်းလျှော်စသည်ဖြစ်၍ တောင့်နေလျှင်-ဟူလို။] ဗုန္ဒေန-အောက်အခြေဖြင့်၊(အိုးဖင်ဖြင့်၊) ဥက္ခိပိတွာ၊ အာကာသဂတံ ကရောန္တဿ၊ပေ၊ ဘိတ္တိနိဿိတံ-နံရံ၌မှီသည်၊ [နံရံ၌ ကပ်နေသည်၊ ] ဟောတိ – အံ့၊ ပဍမံ– စွာ၊ အင်္ကုသကောဋိတော- မှ၊ နီဟရတိ၊ ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ ပစ္ဆာ-မှ၊ဘိတ္တိံ-ကို၊ မောစေတိ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ပေ၊ ဧသေဝနယော-တည်း၊ ပန-ကား၊ဘာရိယံ-ဝန်လေးသော၊ ဘဏ္ဍံ-ကို၊ (ဘာရိယတ္တာ- ဝန်လေးသည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ ဟေတုမန္တဝိသေသန) နီဟရိတုံ–ငှါ၊ အသက္ကောန္တော–သည်၊ (ဟုတွာ)၊ သယံ–ကိုယ်တိုင်၊ ဘိတ္တိနိဿိတံ – နံရံ၌ မှီသည်ကို၊ ကတွာ၊ [ ဘဏ္ဍာက လေးနေ၍ မမနိုင်သောကြောင့် အိုးကို နံရံကပ်၍ ဖေးထားသည်။ ] အင်္ကုသတော နီဟရတိ၊ ပုန ဘိတ္တိံ , အမောစေတွာပိ–မလွှတ်စေ ဘဲလည်း၊ပေ၊ ဟိ-မှန်၊ အတ္တနာ–မိမိသည်၊ ကတဋ္ဌာနံ-ပြုအပ်သော အရပ်သည်၊ [နံရံ၌ထိအောင် ပြုအပ်သော အရပ် – ဟူလို။] ဌာနံ န ဟောတိ၊ ပန – ဆက်၊ ဘူမိံ ဖုသိတွာ , ဋ္ဌိတဿ–

တည်သော ဘဏ္ဍာ၏၊ ဒွေဓေ ဌာနာနိ ( ဟောန္တိ )၊ တတ္ထ – ထို မြေ၀ယ် ထိနေသောဘဏ္ဍာ၌၊ ဝိနိစ္ဆယော-ကို၊ ဝုတ္တောယေဝ၊ [''တဿ ဒွေဌာနာနိ'' စသည်ဖြင့် အာကာသဋ္ဌကထာ၌ ဆိုခဲ့ပြီ။] ပန-ကား၊ယံ-အကြင်ဘဏ္ဍာသည်၊ ဝါ-ကို၊ သိက္ကာယ-ဆိုင်း၌၊ ပက္ခိပိတွာ-ထည့်၍၊ လဂ္ဂိတံ-ချိတ်ထားအပ်သည်၊ ဟောတိ၊ တံ – ထို ဘဏ္ဍာကို၊ သိက္ကတော – မှ၊ နီဟရန္တဿ ဝါ – ၏ငှင်း၊ သိက္ကာယ – နှင့်၊ သဟ အက်ုသတော , နီဟရန္တဿပိ – ၏ငှင်း၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ စ-ဆက်၊ တတ္တ- ၌ဆိုင်း၀ယ် ထည့်အပ်သော ဘဏ္ဍာ၌၊ ဘိတ္တိ ဘူမိသန္နိဿိတဘဝသေန - နံရံ၌မှီသောဘဏ္ဍာ, မြေ၌မှီသော ဘဏ္ဍာ၏ အစွမ်း ဖြင့်၊ ဌာနဘေဒေါပိ ဝေဒိတဗ္ဗော။

ဘိတ္တိခိလေတိ- ကား၊ ဥဇုကံ - ဖြောင့်ဖြောင့်၊ ကတွာ ၊ [ ချွန်းချိတ်ကဲ့သို့ အကောက်မဟုတ်ဘဲ ဖြောင့်ဖြောင့်ပြု၍ – ဟူလို။]ဘိတ္တိယံ - ၌၊ အာကောဋိ တောဝါ- စိုက်အပ်သောငုတ်သည်သော်ငှင်း၊ တတ္ထဇာတကော ဝေဝါ - ထို နံရံ၌ဖြစ်သော ငုတ်သည်သာလျှင်သော်ပင်း၊ ( ဘိတ္တိခိလော – မည်၏၊) ပန- ကား၊နာဂဒန္တော-နာဂဒန္တဟူသည်၊ ဝင်္ကော–ကောက်သော၊ အာကောဋိ တောဝေ – စိုက်အပ်သော ငုတ်သာတည်း၊ [ ဆင်စွယ်ကဲ့သို့ ကောက်သော ငုတ်သာ၊ ဝေဖြင့် တတ္ထဇာတကကိုကန့်။] တေသု - ထို ဘိတ္တိခိလ နာဂဒန္တ တို့၌၊ လဂ္ဂေတွာ- ချိတ်၍၊ ထပိတံ- ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာကို၊ အက်ုသကေ- ချွန်းချိတ်၌၊ ဝုတ္တနယေနေဝ ဝိနိစ္ဆိတဗ္ဗ၊ ပန– ဆက်၊ ဋ္ဌိသု- ၊ ခုသော်လည်း ဖြစ်ကုန်သော၊ တီသု – န်သော၊ ပဋိပါဋိယာ - အစဉ်အားဖြင့်၊ ဌိတေသု – တည်သော နံရံတန်သင်း, ဆင်စွယ်ကောက်တို့၌၊ [ ယခုခေတ်၌ အင်္ကျီစသည် ချိတ်ထားဘို့ရာ နံရံ၌ကပ်ထားအပ်သော သစ်သား – သံ စသော အချောင်း ကလေးကဲ့သို့ လုပ်ထားအပ်သော ခိလ- နာဂဒန္တကိုဆိုသည်။ ] အာရောပေ တွာ – တင်၍၊ ထပိတံ - သော၊ ကုန္တံဝါ– လှံကိုသော်ငှင်း၊ ဘိန္ဒိဝါဠံဝါ– ခက်ရင်းကိုသော်ငှင်း၊ အဂ္ဂေဝါ – အဖျား၌သော်ငှင်း၊ ဗုန္ဓေဝါ – အရင်း၌ သော်ငှင်း၊ ဂဟေတွာ, အာကဍ္ဎတိ - အံ့၊ ဧကမေကဿ – တခုတခုသော တန်သင်း၏၊ ဝါ - တခုတခုသော ဆင်စွယ်ကောက်၏၊ [ ဩကာသ၌စပ်၊ အချောင်း ၃ ခုတွင် တခုတခု၏ ( ထိအပ်သော ) အရပ် – ဟူလို။ ] ဖုဋ္ဌော ကာသမတ္တေ - လုံစသည်ထိအပ်သော အရပ်ကို၊ အတိက္ကန္တေ – လွန်အပ်ပြီး သော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ [''ဧကမေကဿ၊ပေ၊ ပါရာဇိကံ'' ဟူသော ဤ ဝါကျအနက်ပေးပုံမှာ ရှေးနိဿယများနှင့်မတူ။]ဟိ-မှန်၊ တေသံ-ထိုလုံ, ခက်ရင်းတို့၏၊ ဖုဋ္ဌောကာသမတ္တမေဝ- ထိအပ်သော အရပ်မျှသည်သာ၊ ဌာနံ

ဟောတိ၊ သမ္ဗေ-ကုန်သော၊ ခိလာဝါ-တန်သင်းတို့သည်၎င်း၊ နာဂဒန္တာဝါ-ဆင်စွယ်ကောက်တို့သည်၎င်း၊ (ဌာနံ)၊ န-မဟုတ်၊ ဘိတ္တိအဘိမုခေါ- နံရံသို့ ရှေးရှုသော မျက်နှာရှိလျက်၊ ဝါ - နံရံသို့ရှေးရှု မျက်နှာမူလျက်၊ ဌတွာ-ရပ်၍၊ မဇ္ဈေ-လုံ, ခက်ရင်းတို့၏ အလယ်၌၊ ဂဟေတွာ အာကဍ္ဎတိ၊ ဩရိမန္တေန-ဤမှာဘက်အစွန်သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ- ထိအပ်သော အရပ်ကို၊ ပါရိမန္တေန- ထိုမှာဘက်အစွန်အားဖြင့်၊ အတိက္ကန္တမတ္တေ-လွန်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပရတော- ထိုမှာဘက်သို့၊ ပေလ္လေန္တ ဿာပိ- တွန်းသော ရဟန်း၏လည်း၊ ဧသေဝနယော၊ ဟတ္ထေန၊ပေ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောဘိ)။

ဘိတ္တိံ-ကို၊ နိဿာယ-၍၊ ထပိတံ-ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာကို၊ ဃံသန္တော-ပွတ်တိုက်လျက်၊ အကဍ္ဎတိ-အံ့၊ [ထပိတံ နောက်၌ ဘိတ္တိံ ထပ်ပါနေသည်ကား မကောင်း၊ တဝါကျတည်း၌ ဝိဘတ်တူပုဒ် ၂ ခုရှိရိုး ထုံးစံမရှိ။] အဂ္ဂေန - အဖျားသည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ-ကို၊ ဗုန္ဒံ - အရင်းကိုသော်၎င်း၊ ဗုန္ဒေန - သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ - ကို၊ အဂ္ဂံဝါ - အဖျားကိုသော်၎င်း၊ အတိက္ကာမေန္တဿ-၏၊ ပါရာဇိကံ(ဟောဟိ)၊ ဘိတ္တိအဘိမုခေါ-လျက်၊ ဌတွာ,အာကဍ္ဎန္တော-ဆွဲငင်သော ရဟန်းသည်၊ ပေ၊ အပရန္တံ - အခြားဘက် အစွန်ကို၊ အတိက္ကာမေတိ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ဥဇုကံ, ဥက္ခိပန္တော-မြှောက်သော ရဟန်းသည်၊ပေ၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ရုက္ခေဝါ လဂ္ဂိတန္တိ ကား၊ တာလရုက္ခာဒိသု - ထန်းပင်အစရှိသော သစ်ပင်တို့၌၊ အာရောပေတွာ-တင်၍၊ လဂ္ဂိတံ-ချိတ်ထားအပ်သောဘဏ္ဍာတည်း၊ တတ္ထ-ထိုသစ်ပင်ဝယ် ချိတ်ထားအပ်သောဘဏ္ဍာ၌၊ ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗော။[''လဂ္ဂိတေ''ဟုရှိသည်ကား မကောင်း၊ လဂ္ဂိတံတိုင်အောင် တဝါကျဖြတ်၍ ''တတ္ထ အင်္ကုသကာဒိသု''ဟု ရှိရမည်။]

ပန – ဆက်၊ တတ္ထဇာတံ – ထို ထန်းပင်ပေါ်၌ ဖြစ်သော၊ တာလပိဏ္ဍိံ – ထန်းသီးခိုင်ကို၊ စာလေန္တဿ-လှုပ်ချသောရဟန်း၏၊ ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ ယသ္မိံ ဖလေ- ၌၊ ပါရာဇိကဝတ္ထု – သည်၊ ပူရတိ-ပြည့်၏၊ တသ္မိံ-ထို အသီးသည်၊ ဗန္ဓနာ– အညှာမှ၊ မုတ္တမတ္တေ - သော်၊ ပါရာဇိကံ၊ ပိဏ္ဍိံ - ထန်းသီးအခိုင်ကို၊ ဆိန္ဒတိ-ချိုင်အံ့၊ ပါရာဇိကံ၊ အဂ္ဂေန-အခိုင်၏ အဖျားဖြင့်၊ပဏ္ဏန္တရံ-ထန်းရွက်ကြားသို့၊အာရောပေတွာ-၍၊ ထပိတာ-ထားအပ်သောထန်းသီးခိုင်သည်၊ ထပိတဋ္ဌာနဉ္စ- ကို၎င်း၊ ဝဋ္ဋဋ္ဌာနဉ္စ- အညှာအရပ်ကို၎င်း၊ ဒွေ-နှ်သော၊ ဌာနာနိ– တို့ကို၊ လဘတိ၊ တတ္ထ – ထို ၂ ဌာန ရသော ထန်းသီးခိုင်၌၊ ဝုတ္တနယေန-ဖြင့်၊ ဝိနိစ္ဆယော ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ပန–ဆက်၊ ယော - အကြင် ရဟန်းသည်၊ ဆိန္နမတ္တာ = ဖြတ်အပ်ပြီးခါမျှသော ထန်းသီးခိုင်သည်၊ ပတမာနာ–

ကျလသော်၊ သဒ္ဒံ-ကို၊ ကရေယျ-ရာ၏၊ ဣတိ-သို့၊ ဘယေန-ကြောင့်၊ သယံ-တိုင်၊ အဝှေန-ဖြင့်၊ ပဏ္ဏန္တရံ-သို့၊ အာရောပေတွာ- ၍၊ ဆိန္ဒတိ- ချိုင်အံ့၊ ဆိန္ဒမတ္တေ ပါရာဇိကံ၊ ဟိ - မှန်၊ အတ္တနာ-သည်၊ ကတဋ္ဌာနံ- သည်၊ ဌာနံ-သည်၊ န ဟောတိ-မဟုတ်၊ တေန ဥပါယေန-ဖြင့်၊ သဗ္ဗရုက္ခာနံ-တို့၏၊ ပုပ္ဖဖလေသု-တို့၌၊ ဝိနိစ္ဆယော-ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော-၏။

ပဏ္ဏာခါရကေပီတိ ဧတ္ထ-၌၊ ရုက္ခာခါရကောဝါ – သစ်သား သပိတ်ခြေသည်မှုလည်း၊ ဟောတု-ဖြစ်စေ၊[၄ ထောင့် သပိတ်ခြေကို ဆိုသည်။]ဝလယာခါရကောဝါ-လက်ကောက် သပိတ်ခြေသည်မှုလည်း၊ ဟောတု၊ [သပိတ်ခြေအဝိုင်းကို ဆိုသည်။ ] ဒဏ္ဍာခါရကောဝါ – ဒုတ်ချောင်း သပိတ်ခြေသည်မှုလည်း၊ ဟောတု၊ [ ဒုတ်ချောင်းကလေးများကို ထောင်၍ လုပ်ထားသော သပိတ်ခြေကို ဆိုသည်၊] ယံကိဉ္စိ- သော၊ ပတ္တဋ္ဌပနကံ - သပိတ်ထားရာ အခြေသည်၊[သချုံဂဏ္ဌိတို၌စပ်၊] ပန္တိကာပိ-တောင်းသည်မှုလည်း၊ ဟောတု၊ ပဏ္ဏာခါရကောတ္တေဝ-ပဏ္ဏာခါရက ဟူ၍သာ၊ သချုံ-ခေါ်ဝေါ်အပ်သည်၏အဖြစ်သို့၊ ဂစ္ဆတိ- ရောက်၏၊ တတ္ထ - ထို သပိတ်ခြေ၌၊ ထပိတပတ္တဿ - ထားအပ်သော သပိတ်၏၊ ပတ္တေန–သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသောဝေ – ထိအပ်သော အရပ်သည်သာ၊ ဌာနံ(ဟောတိ)၊ တတ္ထ- ထို သပိတ်ခြေတို့တွင်၊ ရုက္ခာခါရကေ–သစ်သား သပိတ်ခြေ၌၊ပေါ၊ဟောတိ၊ [အရပ် ၄ မျက်နှာ ဌာနနှင့် အထက်သို့ မြှောက်ယူရာ ဌာန၊]တတ္ထ-ထို သစ်သား သပိတ်ခြေ၌၊ ဌိတံ-သော၊ ပတ္တံ-ကို၊ မုခဝဋ္ဋိယံ – ၌၊ ဂဟေတွာ၊ စတူသု-လေးဘက်ကုန်သော၊ ဒိသာသု–တို့တွင်၊ ယတောကုတောစိ – အမှတ်မထား တပါးပါးသော အရပ်မှ၊ ကဍ္ဎန္တော- ဆွဲငင်သော ရဟန်းသည်၊ ဧကေန , အန္တေန – သည်၊ ဖုဋ္ဌောကာသံ – ကို၊ အပရန္တံ - အခြားတဘက် အစွန်ကို၊ အတိက္ကာမေတိ၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပေ၊အာခါရကေန- သပိတ်ခြေနှင့်၊ သဟ, ဟရန္တဿာပိ - ခိုးဆောင်သော ရဟန်း၏လည်း၊ ဧသေဝနယော၊ ဣတိ- အပြီးတည်း။….ဝေဟာသဋ္ဌကထာ-သည်၊ ဝါ-မြင့်သောအရပ်၌ တည်သောဘဏ္ဍာကို ပြဆိုရာ စကားရပ်သည်၊ နိဋ္ဌိတာ–တည်း။

ဥဒကဋ္ဌေ – ဥဒကဋ္ဌဘဏ္ဍာ၌၊ ( ဝိနိစ္ဆယော ဧဝံ ဝေဒိတဗ္ဗော )၊ ဥဒကေ နိက္ခိတ္တံ ဟောတီတိ-ကား၊ ရာဇဘယာဒိဘီတေဟိ- မင်းဘေး အစရှိသည်တို့မှ ကြောက်သူတို့သည်၊ ဥဒကေန – ကြောင့်၊ အဝိနဿနဓမ္မေသု – ပျက်စီးခြင်းသဘော မရှိကုန်သော၊ [ ဒိ၀ါဒိ နသဓာတ်, ယုပစ္စည်းဖြစ်၍ “ နဿန ” ဟု ရှိစေ။] တမ္ဗလောဟဘာဇနာဒီသု- ကြေးနီခွက် အစရှိသည်တို့၌၊ သုပ္ပဋိစ္ဆန္နံ-

ကောင်းစွာ ဖုံးအုပ်သည်ကို၊ ကတွာ , ပေါက္ခရဏီအာဒီသု - ရေကန် အစရှိသည်တို့၌၊ အသန္ဒနကေ - မစီးသော၊ ဥဒကေ-၌၊ နိက္ခိတ္တံ - ထားအပ်သော ဘဏ္ဍာတည်း၊ [ စီးသောရေ၌ထားလျှင် တဖြေးဖြေး ရွေ့သွားမည်ဖြစ်၍ အသန္ဒနမာနကိုပြသည်။]တဿ-ထိုဘဏ္ဍာ၏၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသောယေဝ-တည်ရာအရပ်သည်သာ၊ ဌာနံ - ဌာနတည်း၊ သဗ္ဗံ - သော၊ ဥဒကံ - သည်၊ (ဌာနံ)န၊ ဂစ္ဆတိဝါ အာပတ္တိ ဒုက္ကဋဿာတိ-ကား၊အဂမ္ဘီရေ-မနက်သော၊ ဥဒကေ-၌၊ ပဒသာ – ခြေဖြင့်၊ ဂစ္ဆန္တဿ - သွားသောရဟန်း၏၊ ပဒဝါရေ ပဒဝါရေ–၌၊ ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)၊ ဂမ္ဘီရေ-နက်သော၊ (ဥဒကေ–၌)၊ ဟတ္ထေဟိဝါ-တို့ဖြင့်သော်၎င်း၊ ပါဒေဟိဝါ-သော်၎င်း၊ပယောဂံ-ကူးခြင်းပယောဂကို၊ ကရောန္တဿ-ပြုသောရဟန်း၏၊ပေ၊ဒုက္ကဋံ(ဟောတိ)၊ ကုမ္ဘိဂ္ဂဟဏတ္ထံ-ဘဏ္ဍာအိုးကို ယူခြင်းအကျိုးငှါ၊ နိမုဇ္ဇနုမ္မုဇ္ဇနေသု - ငုပ်ခြင်း, ပေါ်ခြင်းတို့၌၊ ဧသေဝနယော၊ ပန– ဆက်၊ အန္တရာ– အိုးသို့ မရောက်မီ အကြား၌၊ ကိဥ္စိ– တကောင်ကောင်သော၊ ဥဒကသပ္ပံဝါ - ရေမြွေကိုသော်၎င်း၊ ဝါဠမစ္ဆံဝါ-ရဲသောငါးကိုသော်၎င်း၊ [ ငါးမန်းစသော ငါးကြီးများကိုဆိုသည်။] ဒိသွာ, ဘီတော–သည်၊ (ဟုတွာ)၊ သစေ ပလာယတိ – အံ့၊ (ဧဝံသတိ) အနာပတ္တိ ( ဟောတိ)။ [ပြေးသွားရာ လက်အကြိမ် ခြေအကြိမ် ပယောဂ၌ ခိုးခြင်းနှင့် မဆိုင်သောကြောင့် ဒုက္ကဋ်အာပတ် မသင့်။]

အာမသနာဒီသု-တို့၌၊ ဘူမိဂတာယ-မြေ၌တည်သော၊ ကုမ္ဘိယာ-၌၊ပေ၊ ပန – အထူးကား၊ အယံ - ကား၊ ဝိသေသော – တည်း၊ တတ္ထ- ထို မြေဝယ် တည်သောအိုး၌၊ ဘူမိံ - ကို၊ ခဏိတွာ – ၍၊ ကမ္မတိ – ဆွဲချရ၏၊ [ကမ္မတီတိ ဟေဋ္ဌတော ဩသာရေတိ–အောက်သို့ကျစေ၏။]ဣဓ- ဤ ရေဝယ်တည်သော အိုး၌၊ ကဒ္ဒမံဝ–ညွန်ကိုသာလျှင်၊ ဩသာရေတိ– အောက်သို့ ယက်ချရ၏၊ပေ၊ ဥပ္ပလာဒီသု– ကြာညို အစရှိသည်တို့တွင်၊ ယသ္မိံ ပုပ္ဖေ– ၌၊ ဝတ္ထု-ပါရာဇိက ဝတ္ထုသည်၊ ပူရတိ-၏၊ [“ဝတ္ထုံ ပူရေတိ”ဟုရှိသည်ကား မကောင်း။]တသ္မိံ-ထိုအပွင့်ကို၊ ဆိန္နမတ္တေ-ဖြတ်အပ်ပြီးကာမျှဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ [ ရေအထက်၌ ပေါ်နေသောအရပ်မှ ဖြတ်ခြင်းကိုရည်ရွယ်၍ ပါရာဇိကဟု ဆိုသည်၊ ရေအတွင်းမြုပ်နေရာမှဖြတ်လျှင် ရေကပေါ်မှ ပါရာဇိက။]စ-ဆက်၊ ဧတ္ထ – ဤကြာတို့တွင်၊ ဥပ္ပလဇာတိကာနံ – ဥပ္ပလဇာတ်ရှိသော ကြာတို့၏၊

ဥပ္ပလာဒီသု။ ။အာဒိဖြင့် ပဒုမ, ပုဏ္ဍရီကတို့ကိုယူ၊ ရတ္တံ ပဒုမံ, သေတံ ပုဏ္ဍရီကံ၊ သေတံဝါ ပဒုမံ၊ ရတ္တံ ပုဏ္ဍရီကံ၊ အထဝါ ရတ္တံဝါ ဟောတု သေတံဝါ၊ သတပတ္တံ – ပုဏ္ဍရီကံ။

ယာဝ - လောက်၊ ကေသဂ္ဂံပိ - သော၊ ပဿေ - ဘေး၌၊ ဝါကော- လျှော်မျှင်သည်၊ န ဆိဇ္ဇတိ- မပြတ်သေး၊ တာဝ- လောက်၊ ရက္ခတိ - ၏၊ ပန-ကား၊ ပဒုမဇာတိကာနံ - ပဒုမ္မာဇာတ်ရှိသော ကြာတို့၏၊ ဒဏ္ဍေ-အရိုးကို၊ ဆိန္နေ-ဖြတ်အပ်ပြီးသော်၊ အဗ္ဘန္တရေ- အတွင်း၌၊ သုတ္တံ-ချည်သည်၊ အစ္ဆိန္နံ-မပြတ်သေးသည်၊ ( သမာနံ )ပိ, န ရက္ခတိ - ပါရာဇိကမှ မစောင့်၊ သာမိကံ ကဟိ-တို့သည်၊ ဆိန္နမတ္တာ, ထပိတာနိ- ကုန်သော၊ ဥပ္ပလာဒီနိ- ကြာညို အစရှိသည်တို့သည်၊ ဟောန္တိ- ရှိတတ်ကုန်၏၊ ယံ- အကြင်ကြာသည်၊ ဝတ္ထုံ-ပါရာဇိကဝတ္ထုကို၊ ပူရေတိ-ပြည့်စေ၏၊ တံ့- ထိုကြာကို၊ ဥဒ္ဓဋေ-ရေမှ ထုတ်ဆောင်အပ်ပြီးသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ )၊ ဟတ္ထကဗဒ္ဓါနိ - ကြာစည်းအဖြစ်ဖြင့်ဖွဲ့အပ်ကုန်သော ကြာတို့သည်၊ ဟောန္တိ - ရှိတတ်ကုန်၏၊ [ ပန်းဆယ်ပွင့်ကိုစုပေါင်း စည်းထားအပ်သော ကြာစည်းကို "ဟတ္ထက"ဟု ခေါ်သည်။] ယသ္မိံ ဟတ္ထကေ-အကြင်ကြာစည်း၌၊ ဝတ္ထု-သည်၊ ပူရတိ-၏၊ တသ္မိံ-ထိုကြာစည်းကို၊ ဥဒ္ဓဋေ-ရေမှ ထုတ်ယူအပ်ပြီးသော်၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ဘာရဗဒ္ဓါနိ-ဝန်ထုပ်ဝန်ပိုးအဖြစ်ဖြင့် ဖွဲ့အပ်ကုန်သောကြာတို့သည်၊ ဟောန္တိ၊ [ပန်းအစည်းများစွာ ဖွဲ့ထားအပ်သည်ကို "ဘာရဗဒ္ဓ"ဟု ခေါ်၏။] တံ ဘာရံ- ထို ဝန်ထုပ်ဝန်ပိုးကို၊ ဆန္ဒ-ကုန်သော၊ အာကာရာနံ-တို့တွင်၊ပေ၊စာဝေ န္တဿ-၏၊ ဘူမဋ္ဌကုမ္ဘိယံ-မြေ၌တည်သော အိုး၌၊ ဝုတ္တနယေန ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)။

ဒီဃနာဠာနိ- ရှည်သောရိုးတံ ရှိကုန်သော၊ ဥပ္ပလာဒီနိ - ကြာညို အစရှိသည်တို့သည်၊ ဟောန္တိ - ရှိတတ်ကုန်၏၊ ပုပ္ဖေသုဝါ - အပွင့်တို့၌သော်၎င်း၊ နာဠေသုဝါ - ရိုးတံတို့၌သော်၎င်း၊ ဝေဏိံ - အထုံးကို၊ ကတွာ, ဥဒကပိဋ္ဌေ-ရေအပြင်၌၊ ရဇ္ဇုကေဟိ- ကြိုးငယ်တို့ဖြင့်၊ (ထပေန္တိ ဗန္ဓန္တိတို့၌စပ်။) တိဏာနိ- တို့ကို၊ သန္ထရိတွာ- ဖြန့်ခင်း၍၊ ထပေန္တိဝါ- ထားသော်လည်း ထားတတ်ကုန်၏၊ ဗန္ဓန္တိဝါ- ဖွဲ့ချည်သော်လည်း ဖွဲ့ချည်တတ်ကုန်၏၊ တေသံ-ထို ကြာပွင့်တို့၏၊ ဒီဃတော-အလျားမှ၊ ပုပ္ဖဂ္ဂေနစ- အပွင့်ဖျားဖြင့်၎င်း၊ နာဠန္တေနစ-ရိုးတံဖျားဖြင့်၎င်း၊ တိရိယံ-ဖီလာ၌၊ ပရိယန္တေဟိ-အစွန်တို့ဖြင့်၎င်း၊ ဟေဋ္ဌာ- အောက်၌၊ ပတိဋ္ဌိတောကာသေန- ဖြင့်၎င်း၊ ဥဒ္ဓံ-၌၊ ဥပရိ-အပေါ်၌၊ ဌိတဿ- တည်သော ကြာ၏၊ ပိဋ္ဌိယာ-ရေအပြင်ဖြင့်၎င်း၊ ဌာတိ-သို့၊ပေ၊ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ယောပိ-အကြင်

ပုပ္ဖေသုဝါ၊ ပေ၊ ဗန္ဓန္တိ ။ ။ ကြာတို့ကို စုပေါင်းထုံးဖွဲ့အပ်ပြီးလျှင်, ရေပြင်၌ ကြိုး ၂ ချောင်းထား၊ ထိုကြိုးပေါ်၌ မြက်များကိုဖြန့်၊ ထို မြက်ပေါ်၌ ကြာထုံးများကို ထား၍ အောက်ကခံထားသော ကြိုး ၂ ချောင်းကို ပန်းတွေ၏အပေါ်၌ တင်ထားခြင်း သို့မဟုတ်—ဖွဲ့ချည်ထားခြင်းကို ဆိုသတတ်။

ရဟန်းသည်လည်း၊ ဥဒကပိဋ္ဌိယံ – ရေအပြင်၌၊ ထပိတ ပုပ္ဖကလာပကံ – ထားအပ်သောပန်းစည်းငယ်ကို၊ ဥဒကံ- ကို၊ စာလေတွာ – လှုပ်စေ၍၊ ဝီစိံ- လှိုင်းကို၊ ဥဋ္ဌာပေတွာ – ထစေ၍၊ ကေသဂ္ဂမတ္တမ္ပိ - မျှလည်း၊ ယထာဋ္ဌိတဋ္ဌာန တော-တည်မြဲတိုင်းသောအရပ်မှ၊ စာဝေတိ၊(တဿ-ထိုရဟန်း၏၊)ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊[ထိုဘက်အစွန်သည် ထိအပ်သောအရပ်ကို ဤဘက်အစွန်က တဆံ ဖျားမျှ လွန်လျှင် ပါရာဇိက။] ပန-သို့မဟုတ်၊ ဧတ္ထ-ဤအရပ်သို့၊[သူမှန်းထား အပ်သောအရပ်သို့-ဟူလို။]ဂတံ-ရေခံသောကြာစည်းကို၊ ဂဟေဿာမိ-အံ့၊ ဣတိ – သို့၊ အထ ပရိကပ္ပေတိ – အကယ်၍ကြံအံ့၊ (ဧဝံသတိ)၊ တာဝ ရက္ခတိ၊ [ဌာနာစာဝနဖြစ်ရုံမျှဖြင့် ပါရာဇိက မကျသေး – ဟူလို။] ပန- အနွယကား၊ ဂတဋ္ဌာနေ-ရေခံအပ်သောအရပ်၌၊ ဥဒ္ဓရတော–ထုတ်ဆောင်သောရဟန်း၏၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ၊) ဥဒကတော– မှ၊ အစ္စုဂ္ဂတဿ- ပေါ်တက်သော၊ ပုပ္ဖ ဿ– အပွင့်၏၊ သကလံ- သော၊ ဥဒကံ - သည်၊ [ဒဏ္ဍေန ဖုဋ္ဌောကာသဂတံ သကလမုဒကံ = အရိုးတံနှင့် ထိနေသော ရေအားလုံးကို ဆိုသည်၊ ရေပြင် အာလုံးမဟုတ်။] ဌာနံ– တည်း၊ တံ-အပွင့်ကို၊ ဥပ္ပါဋေတွာ–နှုတ်၍၊ ဥဇုကံ- ဖြောင့်ဖြောင့်၊ ဥဒ္ဓရန္တဿ - ၏၊ နာဠန္တေ - အရိုးတံ အစွန်သည်၊ ကေသဂ္ဂ မတ္တံ-မျှ၊ ဥဒကတော-မှ၊ အတိက္ကန္တေ- သော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပုပ္ဖေ- တို့ကို၊ ဂဟေတွာ-ကိုင်၍၊ အပနာမေတွာ-ဘေးသို့ညွတ်စေ၍၊ အာကမုန္တော- လျက်၊ ဥပ္ပါဋေတိ–အံ့၊ ဥဒကံ-သည်၊ ဌာနံ-သည်၊ န-မဟုတ်၊ ဥပ္ပါဋိတမတ္တေ- နှုတ်အပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)။

ကလာပဗဒ္ဓါနိ–အစည်းအဖြစ်ဖြင့် ဖွဲ့အပ်ကုန်သော၊ ပုပ္ဖါနိ–တို့ကို၊ ဥဒက ဋ္ဌာနေဝါ - ရေဟူသောအရပ်၌သော်ငင်း၊ ရုက္ခေဝါ – သော်ငင်း၊ ဂစ္ဆေဝါ- ချုံ၌သော်ငင်း၊ ဗန္ဓိတွာ - ဖွဲ့ချည်၍၊ ထပေန္တိ၊ ဗန္ဓနံ - ဖွဲ့ချည်ကြောင်းကြိုးကို၊ အမောစေတွာ - မဖြေမူ၍၊ ဣတောစိတောစ, ကရောန္တဿ– ၏၊ ဌုလ္လစ္စယံ (ဟောတိ)၊ ဗန္ဓနေ - ဖွဲ့ချည်ကြောင်း ကြိုးကို၊ မုတ္တမတ္တေ - ဖြေအပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)၊ ပဌမံ, ဗန္ဓနံ - ကို၊ မောစေတွာ- ဖြေ၍၊ ပစ္ဆာ-၌၊ ဟရတိ– တည်ရာအရပ်မှ ဆောင်အံ့၊ ဧတ္ထ - ဤသို့ဆောင်ရာ၌၊ပေ၊ ဌာနပရိစ္ဆေဒေါ - သည်၊ (ဟောတိ)၊ ဣတိ ဣဒံ ဥဘယံ – ဤ နှစ်ပါးစုံသော

ပုပ္ဖေ ဂဟေတွာ၊ ပေ၊ ဌာနံ ။ ။ ရှေ့ဝါကျမှ "ဥဒကတော အစ္စုဂ္ဂတဿ" လိုက် စေ၍ ရေမှပေါ်တက်နေသောအပွင့်ကို "ပုပ္ဖေ" ဟု ဆိုသည်၊ ထို အပွင့်ကိုကိုင်၍ နဂိုရ် ဌာနမဟုတ်သောဘေးက တစပ်ထည်းနေသောရေထဲသို့ညွှတ်စေပြီးမှ ဆွဲငင်နှုတ်ယူလျှင် ရေက မပေါ်သေးသော်လည်း နှုတ်ပြီးလျှင် ပါရာဇိက။

စကားကို၊ [" ဗန္ဓနံ အမောစေတွာ ၊ ပေ ၊ ပါရာဇိကံ " သည် စကားတရပ်၊ " ပဌမံ၊ပေ၊ဌာနပရိဠေဒေါ "သည် စကားတရပ်။ ] မဟာပစ္စရိအာဒီသု- တို့၌၊ ဝုတ္တံ။

ပဒုမိနိယံ-ပဒုမ္မာကြာရှိသောချိုင့်၌ [ပဒုမိနိယန္တိ – ပဒုမဂစ္ဆေ။] ပုပ္ဖါနိ- တို့ကို၊ ပဒုမိနိယာ - ပဒုမ္မာကြာချိုနှင့်၊ သဟ - ကွ၊ ဂဏှိတုကာမဿ – ၏၊ ပုပ္ဖနာဠေဟိစ - အပွင့်ရိုးတံ တို့သည်၎င်း၊ ပတ္တနာဠေဟိစ – အရွက် ရိုးတံ တို့သည်၎င်း၊ ဖုဋ္ဌဥဒကဝသေန-ထိအပ်သောရေ၏အစွမ်းအားဖြင့်၊ ဥဒ္ဓရေဝ- ၌၎င်း၊ တိရိယဉ္စ– ဖီလာအရပ်၌၎င်း၊ ဌာနပရိစ္ဆေဒေါ- ကို၊ ဝေဒိတဗ္ဗော- ၏၊ ပန–ဆက်၊ အဿ-ထိုရဟန်း၏၊ ဝါ–သည်၊ တံ ပဒုမိနိံ-ကို၊ အနုပ္ပါဋေတွာ– ၍၊ ပုပ္ဖါနိ ဝါ-အပွင့်တို့ကိုသော်၎င်း၊ ပတ္တာနိ ဝါ-တို့ကိုသော်၎င်း၊ အတ္တနော- မိမိ၏ဘက်သို့၊အဘိမုခံ-ရှေ့ရှု၊အာကမ္ဘန္တဿ-လသော်၊ ထုလ္လစ္စယံ(ဟောတိ)၊ ပေ၊ပုပ္ဖပတ္တနာဠေ–အပွင့်ရိုးတံ, အရွက်ရိုးတံတို့ကို၊ ဌာနတော၊ အစာဝေတွာ ဝိ၊ပေ၊ ပဿာ- ၌၊ ပုပ္ဖပတ္တနာဠေသု –အပွင့်ရိုးတံ, အရွက်ရိုးတံတို့ကို၊ ဌာနာ, စာဝိတေသု- ရွေ့စေအပ်ကုန်ပြီးသော်၊ ပါရာဇိကံ(ဟောတိ)၊ ဥပ္ပါဋိတာယ- သော၊ ပဒုမိနိယာ- ၌၊ [သူတပါးတို့က သူတို့ဘို့နှုတ်အပ်ပြီးသော ပဒုမ္မာကြာ ချို၌။] ပုပ္ဖံ- ကို၊ ဂဏှန္တော ပန-ယူသော ရဟန်းကိုကား၊ ဘဏ္ဍံ- ကို၊ အဂ္ဃါပေတွာ - အဘိုးပြတ်စေ၍၊ ကာရေတဗ္ဗော၊ ဗဟိ- ၌၊ ထပိတေ- သော၊ ရာသိ ကတ ကလာပဗဒ္ဓ ဘာရဗဒ္ဓပုပ္ဖေသုပိ- အစုပြုအပ်သော ပန်း, အစည်းအဖြစ်ဖြင့် ဖွဲ့အပ်သောပန်း, ဝန်ထုပ်ဝန်ပိုးအဖြစ်ဖြင့် ဖွဲ့အပ်သောပန်း၌လည်း၊ ဧသေဝ နယော။

ဘိသံဝါ – ကြာစွယ်ကိုသော်၎င်း၊ မုဠာလံဝါ – ကြာရင်းကိုသော်၎င်း၊ (ဥပ္ပါဋေန္တဿ၌ သာမညကံစပ်။) ယေန– အကြင်ကြာစွယ်ဖြင့်၊ ဝါ-အကြင် ကြာရင်းဖြင့်၊ ဝတ္ထု– ပါရာဇိကဝတ္ထုသည်၊ ပူရတိ၊ တံ- ထိုကြာစွယ်ကို၊ ဝါ-

ဗဟိထပိတေ ။ ။ ရေမှပြင်ဘက်၌ ထားအပ်သော ရာသိကတပန်း, ကြားစည်း အငယ်စားဖြစ်အောင်ဖွဲ့အပ်သော ကလာပဗဒ္ဓပန်း, ကြာစည်းအများပေါင်း၍ ထမ်းရ လောက်အောင် ထုပ်ပိုးထားအပ်သော ဘာရဗဒ္ဓကြာပန်း။ [ဟတ္ထကဝသေန ခုဒ္ဒကံ ကတွာ ဗဒ္ဓံ ကလာပဗဒ္ဓံ၊ ဘာရဗဒ္ဓံနာမ သီသဘာရာဒိဝသေန ဗဒ္ဓံ၊–ဝိမတိ။]

ဘိသမုလာဠ ။ ။အဘိဓာန် ( ၆၈၇ )၌ ကြာစွယ်အနက်ဟော ပရိယာယ် ၂ ပုဒ် ဟု ဆိုထား၏၊ နိဿယသစ်၌ "မုလာဠန္တိ သေတရတ္တပဒုမာနံ မူလံ– ကြာရင်း၊ ဘိသ (ဗိသ) န္တိ တေသံ ယေဝ ကန္ဒံ( ကြာအု )"ဟူသော ဝဏ်သံယုတ် ဋီကာကို ပြ၍ ထို ၂ ပုဒ်၏အနက်ကို ခွဲခြားထားတော်မူ၏၊ သာရတ္ထ ဝိမတိတို့၌ "မုလာဠန္တိ–ကန္ဒံ" ဟု ဝဏ်သံယုတ်ဋီကာမှ ပြောင်းပြန်ဖွင့်၏။

ထိုကြာရင်းကို၊ ဥပ္ပါဠေန္တသ- နှုတ်သောရဟန်း၏၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ)၊ စ– ဆက်၊ ဧတ္ထ - ဤ ကြာစွယ် ကြာရင်းတို့၌၊ ကဒ္ဒမေ- ညွှန်၌၊ ဖုဋ္ဌောကာသ ဝသေန-ထိအပ်သော အရပ်၏အစွမ်းဖြင့်၊ ဌာနံ- ကို၊ ပရိစ္ဆိန္ဒိတဗ္ဗံ- ပိုင်းခြား ထိုက်၏၊ တာနိ - ထို ကြာစွယ် ကြာရင်းတို့ကို၊ ဥပ္ပါဠေန္တသ–၏၊ သုခုမမ္ပိ– သိမ့်မွေ့ သေးငယ်သည်လည်း ဖြစ်သော၊ မူလံ–အမြစ်သည်၊ အစ္ဆိန္နံ–မပြတ် သေးသည်၊ ဟောတိ –အံ့၊ တာဝရက္ခတိ၊ ဘိသပဗ္ဗေ – ကြာစွယ် အဆစ်၌၊ ဇာတံ-ပေါက်သော၊ ပတ္တံဝါ– အရွက်သည်သော်၍ငင်း၊ ပုပ္ဖံဝါ - သော်ရင်း၊ ဟောတိ-ရှိတတ်၏၊[ဣဒံ ကဒ္ဒမဿ အန္တော ပဝိသိတွာ ဌိတံ သန္ဓာယ ဝုတ္တံ= ညွှန်တွင်း၌ ဝင်နေသည်ကိုရည်ရွယ်သည်။]တမ္ပိ-ထို အရွက် အပွင့်သည်လည်း၊ (အစ္ဆိန္နံ ဟောတိ)၊ ရက္ခတိ၊ ဣတိ - သို့၊ မဟာ အဋ္ဌကထာယမေဝ– ၌သာ၊ ဝုတ္တံ၊ [အခြားအဋ္ဌကထာ၌မဆို–ဟူလို။] ပန–ဆက်၊ ဘိသဂဏ္ဌိမှိ– ကြာစွယ် အဆစ်၌၊ ယောဗ္ဗနပတ္တာနံ–အရွယ်ရောက်ကုန်သော လူပျိုတို့၏၊ မုခပိဠကာ ဝိယ – မျက်နှာ၌ ပေါက်သောအဖုသည် ကဲ့သို့၊ ဝါ – မျက်နှာ၌ပေါက်သော ဝက်ခြံသည်ကဲ့သို့၊ ကဏ္ဍကော– ဆူးသည်၊ ဟောတိ – ၏၊ အယံ-ဤဆူးသည်၊ အဒီဃတ္တာ–မရှည်သည်၏ အဖြစ်ကြောင့်၊ န ရက္ခတိ၊ သေသံ–ကြွင်းသော အစီ အရင်သည်၊ ဥပ္ပလာဒီသု-တို့၌၊ ဝုတ္တနယမေဝ။

သဿာမိကာနံ-ကုန်သော၊ မစ္ဆကစ္ဆပါနံ–ငါး,လိပ်တို့၏၊ ဝါပိအာဒီသု- ရေကန် အစရှိသည်တို့၌၊ သကလံ-သော၊ဥဒကံ-သည်၊ ဌာနံ–တည်း၊ တသ္မာ, ယော-အကြင်ရဟန်းသည်၊ ပဋိဇဂ္ဂန ဋ္ဌာနေ- စောင့်ရှောက်ထားရာ အရပ်၌၊ သဿာမိကံ - သော၊ မစ္ဆံ - ကို၊ ဗဠိသေနဝါ – ငါးမျှားချိတ်ဖြင့် သော်ရင်း၊ ဇာလေနဝါ-ပိုက်ကွန်ဖြင့်သော်ရင်း၊ ကုမိနေနဝါ-မြှုံးဖြင့်သော်ရင်း၊ ဟတ္ထေန ဝါ-သော်ရင်း၊ ဂဏှာတိ- ဖမ်းယူ၏၊ တဿ-ထို ရဟန်း၏၊ ယေန မစ္ဆေန-ဖြင့်၊ ဝတ္ထု-ပါရာဇိကဝတ္ထုသည်၊ ပူရတိ၊ တသ္မိံ-ထိုငါးကို၊ ကေသဂ္ဂမတ္တမ္ပိ-လည်း၊ ဥဒကတော, ဥဒ္ဓရမတ္တေ- ထုတ်ဆောင်အပ်ပြီးကာမျှ ဖြစ်လသော်၊ ပါရာဇိကံ ( ဟောတိ )၊ ကောစိ- အချို့သော၊ မစ္ဆော- သည်၊ ဂယှမာနော - ဖမ်းယူအပ် သော်၊ ဣတော စိတော စ, ဓာဝတိ–ပြေး၏၊ အာကာသံဝါ-ကောင်းကင်သို့ သော်လည်း၊ ဥပ္ပတတိ– ခုန်တက်၏၊ တီရေဝါ-ကမ်း၌သော်လည်း၊ ပတတိ– ကျ၏၊ တံ-ထိုငါးကို၊ ( သာမညကံ )၊ အာကာသေ–၌၊ ဌိတံဝါ-တည်သော ငါးကိုသော်ရင်း၊ တီရေ-၌၊ပတိတံဝါ-ကျသောငါးကို သော်ရင်း၊ဂဏှာတောပိ ပါရာဇိကမေဝ၊ ကစ္ဆပမ္ပိ – ကိုလည်း၊ ဗဟိ – ၌၊ ဂေါစရတ္ထံ - ကျက်စားရာ အကျိုးငှါ၊ ဂတံ - ရောက်နေသော လိပ်ကို၊ ဂဏှတော - ၏၊ ဧသေဝနယော၊

ပန – ဆက်၊ ဥဒကဥ္စံ – ရေ၌ တည်သော လိပ်ကို၊ ဥဒကာ, မောစယတော– လွတ်စေသော ရဟန်း၏၊ ပါရာဇိကံ (ဟောတိ)။

ပန – ကား၊ တေသုတေသုဇနပဒေသု– တို့၌၊ သမ္ဗာသာဓာရဏာဿ–အလုံးစုံသောလူတို့နှင့် ဆက်ဆံသော၊ မဟာတဠာကဿ–ရေကန်ကြီး၏၊နိဒ္ဓမနတုမ္ဗ– ရေထုတ်ကြောင်း ပြွန်ကို၊ [ ဝါပိယာ ဥဒကဿ နိက္ခမနမဂ္ဂံ။ ] နိဿာယ– ၍၊ သမ္ဗာသာဓာရဏာ မေဝ –အလုံးစုံသော လူတို့နှင့် ဆက်ဆံသည်သာလျှင် ဖြစ်သော၊ ကုန္နဒီသဒိသံ – မြစ်ငယ်နှင့် တူသော၊ ဥဒကဝါဟတံ – ရေကို ဆောင်ကြောင်း မြောင်းကြီးကို၊ ခဏန္တိ – တူးတတ်ကုန်၏၊ တတော – ထို ရေမြောင်းကြီးမှ၊ ခုဒ္ဒက မာတိကာယော – မြောင်းငယ်တို့ကို၊ နီဟရိတွာ- ထုတ်ဆောင်၍၊ ဝါ – သွယ်၍၊ မာတိကာ ကောဋိယံ – ရေမြောင်း အစွန်၌၊ အတ္တနော အတ္တနော– ၏၊ ဝဠဥ္ဇနတ္ထာယ – သုံးစွဲခြင်းအကျိုးငှါ၊ အာဝါဋေ- တွင်းတို့ကို၊ ခဏန္တိ-ကုန်၏၊ ပန-ဆက်၊ တေသံ–ထိုလူတို့၏၊ ယဒါ၊ ဥဒကေန- ဖြင့်၊ အတ္တော – အလိုသည်၊ ဟောတိ – ၏၊ တဒါ, အာဝါဋေ - တို့ကိုရင်း၊ ခုဒ္ဒက မာတိကာယော - တို့ကိုရင်း၊ ဥဒကဝါဟကဉ္စ - ကိုရင်း၊ သောဓေတွာ- သုတ်သင်၍၊ ဝါ–ရှင်းလင်း၍၊ နိဒ္ဓမနတုမ္ဗ–ကို၊ ဥဃ္ဃါဋေန္တိ - ဖွင့်ကြကုန်၏၊ တတော-ထိုပြွန်မှ၊ ဥဒကေန သဒ္ဓိံ ၊ပေ၊ အာဝါဋေ–၌၊ ပတွာ, ဝသန္တိ-န်၏၊ တတ္ထ-ထိုငါးတို့တွင်၊တဠာကေစ-ရေကန်၌ရင်း၊ ဥဒကဝါဟကေသုစ-တို့၌ရင်း၊ မစ္ဆေ – တို့ကို၊ ဂဏှန္တေ – ဖမ်းယူသူတို့ကို၊ န နိဝါရေန္တိ၊ [ အများဆိုင် ဖြစ်သောကြောင့် မတားမြစ်ကြ။ ] ပန–အန္တယကား၊ ခုဒ္ဒကာသု–ကုန်သော၊ အတ္တနော အတ္တနော, မာတိကာသု-တို့၌ရင်း၊ ဥဒကအာဝါဋေသုစ-ရေတွင်း တို့၌ရင်း၊ ပဝိဋ္ဌမစ္ဆေ –ဝင်ပြီးကုန်သော ငါးတို့ကို၊ ဂဏိှတုံ–ငှါ၊ ဝါ–ဖမ်းယူ ခွင့်ကို၊ န ဒေန္တိ– မပေးကြကုန်၊ နိဝါရေန္တိ– တားမြစ်ကြကုန်၏၊ တတ္ထ– ထို ငါးတို့တွင်၊ ယော - အကြင် ရဟန်းသည်၊ တဠာကေဝါ - ၌သော်ရင်း ၊ပေ၊ ဂဏှာတိ-၏၊အဝဟာရေန-ခိုးခြင်းဖြင့်၊သော-ထိုရဟန်းကို၊ န ကာရေတဗ္ဗော၊ ပန–ကား၊ ခုဒ္ဒကမာတိကာသု– တို့၌သော်ရင်း၊ အာဝါဋေသုဝါ– တို့၌သော် ရင်း၊ ပဝိဋ္ဌ– ဝင်ပြီးငါးကို၊ ဂဏှန္တော– ဖမ်းယူသောရဟန်းကို၊ ဂဟိတဿ- ဖမ်းအပ်သောငါး၏၊ အဋ္ဌဝသေန-တန်ဖိုး၏ အစွမ်းဖြင့်၊ ကာရေတဗ္ဗော။

တတော- ထို မြောင်းငယ်မှ၊ ဝါ–ထိုတွင်းမှ၊ ဂယှမာနော- ဖမ်းယူအပ် သော်၊ ဝါ-ဖမ်းယူအပ်သော၊ မစ္ဆော–သည်၊ပေ၊တံ-ထို ငါးကို၊(သာမည၊) အာကာသဋ္ဌံဝါ = ကောင်းကင်၌ တည်သည်မူလည်း ဖြစ်သော၊ တီရဋ္ဌံဝါ- ကမ်း၌ တည်သည်မူလည်းဖြစ်သော၊ ဥဒကဝိနိမုတ္တံ- ရေမှလွတ်သော ငါးကို၊

ဂဏှာတော-၏၊ အဝဟာရော နတ္ထိ၊ ကဿာ-နည်း၊ ယဿာ, အတ္တနော - ၏၊ ပရိဂ္ဂဟဋ္ဌာနေ-သိမ်းပိုက်အပ်ရာအရပ်၌၊ ဋ္ဌိတဿေဝ-တည်သော ငါး၏သာ၊ တေ-ထို လူတို့သည်၊ သာမိကာ-အရှင်တို့တည်း၊ ဟိ-မှန်၊ ဝေရူပါ- ဤသို့ သဘောရှိကုန်သော ငါးတို့သည်၊ [ အာကာသဋ္ဌ ငါး, တီရဋ္ဌငါးတို့သည်။ ] တတ္ထဂတိကာ - ထို ကောင်းကင်၌ ရောက်သော ငါး , ကမ်း၌ ရောက်သော ငါးတို့နှင့် အလားတူကုန်၏၊[တတ္ထ+ဂတာ တတ္ထဂတာ၊ တတ္ထဂတာဝိယာတိ တတ္ထဂတိကာ၊ ဏိကပစ္စည်း ဥပမာအနက်၌သက်။ ]ပေ၊ ပန-ဆက်၊ မစ္ဆော-သည်၊ ဂဃမာနော- သော်၊ အာဝါဋတော-မှ၊ ခုဒ္ဒကမာတိကံ-သို့၊ သစေ အာရုဟတိ-အကယ်၍ တက်သွားအံ့၊(ဝေံသတိ)၊ တတ္ထ-ထိုမြောင်းငယ်၌၊ နံ- ထို ငါးကို၊ ဂဏှာတော ပိ- ၏လည်း၊ အဝဟာရောယေဝ - ခိုးခြင်းသာတည်း၊ ပန - ဆက်၊ ခုဒ္ဒကမာတိကာတော - မှ၊ ဥဒကဝါဟကံ - သို့၊ ( အာရုဠှံစ- တက်လာသော ငါးကိုရင်း၊ ) တတော- ထို ရေကို ဆောင်ကြောင်း မြောင်း ကြီးမှ၊ တဠာကံ-သို့၊ အာရုဠှံစ-ကိုရင်း၊ ဂဏှာတော - ၏၊ အဝဟာရော နတ္ထိ။ [သဗ္ဗသာဓာရဏဖြစ်၍မည်သူမျှ မပိုင်သော အရပ်၌ နေသော ငါးကို ဖမ်းယူ သောကြောင့်တည်း။]

ယော - အကြင်ရဟန်းသည်၊ အာဝါဋတော-မှ၊ ဘတ္တသိတ္ထေဟိ-ထမင်း လုံးတို့ဖြင့်၊ ပလောဘေတွာ-ဖြားယောင်း၍၊ မာတိကံ- သို့၊ အာရောပေတွာ- တက်ရောက်စေ၍၊ ဂဏှာတိ - ၏၊ (တဿ - ထို ရဟန်း၏၊) အဝဟာရော- သာတည်း၊ ပန-ဆက်၊ တတော-ထိုမြောင်းမှ၊ ပလောဘေတွာ၊ပေ၊ပန-ကား၊ ကေစိ-အချို့လူတို့သည်၊ ကုတောစိဒေဝ - တစုံတခုသောလျှင် ဖြစ်သော၊ သဗ္ဗ သာဓာရဏဋ္ဌာနတော - အလုံးစုံသော လူတို့နှင့် ဆက်ဆံသော အရပ်မှ၊ မစ္ဆေ- တို့ကို၊ အာနေတွာ, ပစ္ဆိမဝတ္ထုဘာဂေ - နောက်ဆုံးတည်ရာ အဘို့ ဖြစ်သော၊ ဥဒကအာဝါဋေ-၌၊ ခိပိတွာ-ချ၍၊ ပေါသေတွာ-မွေးမြူ၍၊ ဒိဝသေ ဒိဝသေ-၌၊ ဒွတ္တိဏိ- ၂ကောင် ၃ကောင်သော ငါးတို့ကို၊ ဥဏ္ဍရိဘဂ်ဳာယ- လက်သုတ်ဟင်းလျာ အကျိုးငှါ၊ မာရေန္တိ-သတ်ကုန်၏၊ ဝေရူပံ-သော၊ မစ္ဆံ- ကို၊ (သာမည)၊ ဥဒကေဝါ- ၌သော်ငင်း၊ပေ၊ ယတ္ထကတ္ထစိ-အရပ်၌၊ ဌိတံ- တည်သောငါးကို၊ (ဝိသေသ-ကံ) ဂဏှာတော-၏၊အဝဟာရောဝေ၊[ကိုယ်ပိုင် အဖြစ်ဖြင့် မွေးထားအပ်သောကြောင့်တည်း။] ကဏ္ဍပေပိ ဧသေဝနယော။

ပန - ကား၊ နိဒါဃကာလေ - နွေအခါ၌၊ နဒိယာ - ၏၊ သောတေ - ရေ အယဉ်သည်၊ပစ္ဆိန္နေ-ပြတ်စဲလသော်၊ ကတ္ထစိ-သော၊နိန္နဋ္ဌာနေ-ချိုင့်ဝှမ်းသော အရပ်၌၊ ဥဒကံ-သည်၊ တိဋ္ဌတိ-၏၊ တတ္ထ-ထို ရေအိုင်၌၊ မနုဿာ-တို့သည်၊

မဏ္ဍနံ-တို့၏၊ဝိနာသာယ-ပျက်စီးခြင်းငှါ၊ မဒနဖလဝိသာဒီနိ-မူးရစ်ကြောင်း အသီး, အဆိပ် အစရှိသည်တို့ကို၊ [ရှေးနိသျယ၌"မဒနဖလ-သမင်စာသီး" ဟု ပေး၏၊] ပက္ခိပိတွာ-ထည့်ခပ်၍၊ ဂန္ဓန္တိ-န်၏၊ မဏ္ဍာ-တို့သည်၊ တာနိ-ထို မူးရစ်ကြောင်း အသီး,အဆိပ် အစရှိသည်တို့ကို၊ ခါဒန္တာ-ခဲစားကုန်လသော်၊ မရိတွာ-၍၊ ဥတ္တာနာ-ပက်လက်တို့သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ဥဒကေ-၌၊ ပိလဝန္တာ-ပေါ်ကုန်လျက်၊ တိဋ္ဌန္တိ၊ ယော-ရဟန်းသည်၊ တတ္ထ- ထိုရေအိုင်သို့၊ ဂန္တွာ-၍၊ ယာဝ-လေ၀၊သာမိကာ-တို့သည်၊နာဂစ္ဆန္တိ-န်သေး၊ တာဝ-ထိုမလာသေးမီ၊ ဇူမေ မဏ္ဍေ-တို့ကို၊ ဂဏှိဿာမိ-အံ့၊ ဇူတိ-ကြံ၍၊ ဂဏှာတိ-အံ့၊အဝဟာဝသေန-တန်ဖိုး၏အစွမ်းဖြင့်၊ ကာရေတဗ္ဗော-၏၊ ပံသုကူလသညာယ-ပံသုကူဟူသော အမှတ်သညာဖြင့်၊ ဂဏှာတော-၏၊ အဝဟာရော-သည်၊ နတ္ထိ၊ ပန-ထိုသို့ပင် အဝဟာရမရှိပါသော်လည်း၊ အာဟရာပေန္တေ- ဥစ္စာရှင်တို့က ပြန်၍ဆောင်စေလသော်၊ ဘဏ္ဍာဒေယျံ-သည်၊ (ဟောတိ)။

မစ္ဆပိသံ- ငါးတို့ကို သေစေတတ်သောအဆိပ်ကို၊ ပက္ခိပိတွာ- ၍၊ ဂတမနုဿာ - တို့သည်၊ ဘာဇနာနိ- တို့ကို၊ အာဟရိတွာ-၍၊ ပူရေတွာ-၍၊ ဂစ္ဆန္တိ၊ ယာဝ-လောက်၊ ပုနဝိ-လည်း၊ အာဂစ္ဆိဿာမ- အံ့၊ ဇူတိ-သို့၊ သာလယာ-အာလယရှိကုန်သည်၊ ဟောန္တိ-န်၏၊ တာဝ- လောက်၊ တေ-ထိုငါးတို့သည်၊ သဿာမိကမစ္ဆာဝ- ပိုင်ရှင်ရှိသော ငါးတို့သာတည်း၊ ပန- ကား၊ ယဒါ-၌၊ တေ-ထိုအဆိပ် ခပ်သွားသူတို့သည်၊ အမှာကံ-တို့အား၊ အလံ-တော်လေပြီ၊ ဇူတိ - သို့၊ နိရာလယာ - အာလယမရှိကုန်သည်၊ (ဟုတွာ)၊ ပက္ကမန္တိ- န်၏၊ တတော- ထိုအခါမှ၊ ပဋ္ဌာယ- ၍၊ ထေယျစိတ္တေန ဂဏှန္တဿ ဒုက္ကဋံ၊ ပံသုကူလသညိဿ (ဂဏှန္တဿ) အနာပတ္တိ၊ စ- ဆက်၊ မစ္ဆ ကစ္ဆပေသု- တို့၌၊ (ဝိနိစ္ဆယော- ကို၊ ဝိဒိတောယထာ - ကဲ့သို့၊) ဧဝံ- တူ၊ သဗ္ဗာယပိ- သော၊ သြဒကဇာတိယာ- ရေ၌ဖြစ်သော သတ္တာတို့၏အမျိုး၌၊ [ဥဒကေ+ဘဝါ သြဒ ကာ၊ သြဒကာနံ + ဇာတိ သြဒကဇာတိ၊ ] ဝိနိစ္ဆယော ဝေဒိတဗ္ဗော၊ ဇူတိ-တည်း၊.... ဥဒကဋ္ဌကထာ-သည်၊ နိဋ္ဌိတာ-ပြီ။

ဒုတိယအုပ် တခဏ်းရပ်။

---

တတိယအုပ် ဆက်ရိုက်နေပါပြီ၊

မောင်ကျော်
နယူးဘားမားပိဋကစာအုပ်ဆိုင်
ကျော်ပုံနှိပ်စက်၊ ၈၄ လမ်း ကွမ်းခြံ - မန္တလေး။